REFRENCE

हिंदी विश्व कोष

भाग - 18

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 2673

K2, N
152E5.18

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(NO-2673

k2.N
152E5.18

हिन्दी विश्वकोष

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 1666

अष्टादश भाग

मुण्डा—छोटानागपुर अञ्चलमें रहनेवाली द्राविड़ असभ्य जातिविशेष। इनके आचार-व्यवहार सन्थालोंकी ही वा कोल जातिसे मिलते जुलते है। मुण्डा शब्दका अर्थ ग्रामक मण्डल है। सन्थाल लोग इसके अनुरूप मांझी शब्दका व्यवहार करते हैं।

मानवजातिके उत्पत्ति-सम्बन्धमें मुण्डा लोगोंमें एक प्रवाद इस प्रकार है—ओटवोरम और शिवोङ्गा नामक स्वयम्भू तथा जगतके आदिपुरुषने पहले एक बालक और बालिकाकी सृष्टि की। पीछे सन्तानवृद्धिके लिये उन्हें एक निर्जन नैरि गुहामें भेज दिया। किन्तु यौवनसीमामें पदार्पण कर वे दोनों भाई बहनके जैसे प्रेममें दिन बिताने लगे। सृष्टिका विस्तार न हुआ देख स्वयम्भूने धानकी शराब प्रस्तुत की। उस शराबको पी कर वे दोनों मतवाले हो गये। पीछे उन्हींसे १२ पुत्रकन्या उत्पन्न हुईं। भाई बहनसे एक एक दम्पतीकी सृष्टि हुई। तब सृष्टिकर्त्ता शिवोङ्गाने उन लोगोंके खानेके लिये तरह तरहके खाद्यपदार्थ सामने रख दिये और जो जिसकी रुचि हो वह लेनेको कहा। तदनुसार प्रथम और द्वितीय दम्पतीने गाय और भैंसका मांस पसन्द किया। पीछे उसीसे हो, कोल और भूमिज जातिकी उत्पत्ति हुई। दूसरे दम्पतीने उद्भिज्ज खाद्य पसन्द किया—उस वंशसे उत्पन्न सन्तान ब्राह्मण और क्षत्रिय कहलाये। पीछे जिसने मछली और बकरा लिया उसके लड़के शूद्र; जिसने सीप और घोंघेका मांस लिया उसके वंशधर भुंइया और जिसने सूअर लिया वे संथाल हुए। जो थोड़े दम्पती बच रहे उन्हें कुछ भी नहीं मिला। इस पर प्रथम और द्वितीय दम्पतीने अपने अपने हिस्सेसे उन्हें थोड़ा थोड़ा दिया। वे लोग घासिया कहलाये। घासिया लोग परिश्रम नहीं करते केवल शिकार करके अपना गुजारा चलाते हैं।

मुण्डागण प्रधानतः १४ श्रेणियोंमें विभक्त हैं। इनमें खरियामुण्डा, महिलीमुण्डा, ओरांवमुण्डा, भूमिहारमुण्डा और मानकीमुण्डा ही प्रधान हैं। महिलीमुण्डा सूअरको पवित्र समझ कर उसकी पूजा करते हैं, इसीसे सूअरका मांस वे लोग नहीं खाते। किन्तु ये लोग इतने मांस-लोलुप हैं, कि सूअरका सिर बाद दे कर बाकी अंगका मांस खानेसे बाज नहीं आते।

मुण्डा लोग केवल पितृकुलमें विवाह नहीं करते, मातृकुलमें कोई छान बीन नहीं है। निम्न श्रेणीके लोगोंमें यौवन-विवाह प्रचलित है। सिन्दूरदान ही विवाहका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रधान संस्कार है। वर कन्याकी मांगमें और कन्या वरके कपालमें सिन्दूर लगाती है।

इन लोगोंमें गन्धर्व-विवाह भी प्रचलित है। किन्तु जो कन्या इस प्रकार अपने इच्छानुसार पति चुन कर विवाह करती है, उसके पुत्र सम्पत्तिके उत्तराधिकारी नहीं हो सकते। केवल भोजन वस्त्र उन्हें मिलता है। विधवा सगाई प्रथा वा पुनर्विवाह कर सकती है। इस विवाहमें वाएं हाथसे सिन्दूर दिया जाता है।

स्वामी और स्त्रीके इच्छा होने पर विवाह-सम्बन्ध टूट सकता है। छोड़ी हुई स्त्री फिरसे विवाह कर सकती है। स्त्री यदि उपपति ग्रहण करे, तो उपपतिको उसके स्वामीके विवाहका पण देना होगा।

मुण्डा लोगोंके धर्ममें शिवोङ्गा सूर्यस्वरुप हैं। ये सृष्टिकार्य्यका भार भिन्न भिन्न देवता पर सौंपते हैं। शिवोङ्गा स्वयं कुछ भी नहीं करते। किन्तु विपदके समय मुर्गेकी वलि दे कर शिवोङ्गाकी पूजा करते हैं। शिवोङ्गाके बाद 'बुरुवङ्गा' और 'मरङ्ग-बुरु' वा पाटसरना हो प्रधान देवता हैं। ये सब पर्वतवासी देवता हैं। छोटानागपुरके उच्च पर्वत पर इनका वास स्थान है। छोटानागपुरके निकट लोधमग्राममें 'महाबुरु' वा 'मरङ्ग-बुस' का प्रसिद्ध स्थान है। यहां हिन्दू मुसलमान सभी जातिके लोग इस देवताकी पूजामें शामिल होते हैं। एक पर्वतके ऊपर सिर्फ वलिदान दिया जाता है। पशुवलि देनेके बाद उसका सिर देवताके सामने रखा जाता है। पीछे पाहन वा ग्राम्य-पुरोहित उस मुण्डको अपने घर ले जाते हैं। मरङ्गबुरुको सभी वरुण वा जलदेवता समझ कर पूजते हैं। खास कर अनावृष्टिके समय इनकी पूजाकी जाती है।

इकिरवङ्गा कूप, पुष्करिणी आदि जलाशयोंके अधिष्ठात्री देवता, गर्हाएरा नदी और प्रस्रवणादिकी अधिष्ठात्री देवी, नाग वा 'नाएरा' स्वच्छन्दविहारी उपदेवताके नाम-मात्र हैं। ये सब खेतोंमें रहते हैं। मुण्डा लोगोंका विश्वास है, कि ये सब देवता लोगोंको कष्ट देते हैं, अतएव उनकी पूजा नहीं करनेसे कष्ट दूर नहीं होते। इकिरवङ्ग-की पूजामें सफेद बकरे और काले मुर्गेकी वलि और नागदेवताको अंडा चढ़ाया जाता है। देशवाली और कारासरना इनके वास्तुदेवता हैं। सरनाका अर्थ कुञ्जवन है। प्रत्येक ग्रामके भिन्न भिन्न देवता है। कृषक कभी कभी इनकी भी पूजा करतें है। इस पुरुषकी पूजामें भैंसेकी वलि और स्त्री-पूजामें मुर्गी वलि दी जाती है। कहीं कहीं गाय और सूअरकी भी वलि देते हैं। शिवोङ्गा या सूर्यकी स्त्री चन्दर, चन्दा वा चन्द्रा स्त्रियोंसे पूजी जाती हैं। नक्षत्रोंकी उत्पत्ति उन्हींसे हुई है। प्रवाद है, कि शिवोङ्गाकी स्त्री चनल किसी दूसरे पुरुषके प्रेममें फंस गई थी। इस पर शिवोङ्गाने गुस्सेमें आ कर उसे दो टुकड़े कर दिया। एक दिन स्त्री पर उन्हें तरस आया और सोलह कलाओं वा पूर्ण सौन्दर्यसे उसे विभूषित किया। इसकी पूजामें बकरेकी वलि दी जाती है।

हापरोमको ये लोग अपने पितरोंके प्रतिनिधि मानते हैं। इसलिये खानेसे पहले वे 'हापरोम' के लिये कुछ कुछ खाद्य पदार्थ अलग कर देते हैं। कभी कभी मुर्गेकी वलिसे भी उन्हें संतुष्ट किया जाता है। हापरोम इन लोगोंके वंशधरोंकी मङ्गल-कामना करते हैं।

मुण्डा लोगोंमें नाना प्रकारके उत्सव प्रचलित हैं। जैसे—१ला 'सरहुल' वा 'सर्जुम बाबा' वा वसन्तोत्सव; यह उत्सव सन्थाल और हो-लोगोंके जैसा है। चैत्रमास-में जब सखुएके पेड़में फूल लगते हैं, तब ग्रामवासी आनन्दपूर्वक मुर्गेकी वलि और सखुएके फूलकी माला-से 'सर्ज्जुम बाबा' की पूजा करके वसन्त उत्सव मनाते हैं।

२रा, वर्षाऋतुमें जब आकाश घनघटासे घिर आता है, तब ये लोग बतौली उत्सव करते हैं। प्रत्येक गृहस्थ एक एक मुर्गा वलि चढ़ाता है। इनका विश्वास है, कि जब तक यह उत्सव मनाया नहीं जाता, तब तक धान नहीं पकता।

३रा, आश्विन मासमें जब धान पक जाता है, तब ये लोग नना वा जोमनना उत्सव करते हैं। इस समय शिवोङ्गाके उद्देशसे एक सफेद मुर्गेकी वलि दी जाती है।

४था, माघमासमें 'खरिया' पूजा वा 'कलमसिह' उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव शीतकालमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनाज संग्रह करनेके समय किया जाता है। इस समय ५ मुर्गेकी बलि और विविध पुष्पफूल द्वारा ग्रामदेवताकी पूजाकी जाती है। सिंहभूमके हो-लोग इस उत्सवके समय मद्यपान तथा नाना प्रकारके व्यभिचार करते हैं। इन लोगोंके मृत-व्यक्तिका संस्कार बिलकुल हो-जातिके जैसा है। हो शब्द देखो।

मुण्डाख्या (सं० स्त्री०) मुण्डेत्याख्या यस्याः। महा-श्रावणिका, गोरखमुंडी।

मुण्डायस (सं० क्ली०) मुण्डञ्च तत् अयश्चेति मुण्ड-अयस अनाश्मायः सरसां जातिसंज्ञयोः। पा ५।४।९४) इति टच्। लौह, लोहा।

मुण्डार (सं० क्ली) एक नगरका नाम। यहां सूर्यकी उपासना प्रचलित थी।

मुण्डालग्राम—आसाम प्रदेशका एक गांव। यह राजा कान्तिचन्द्र द्वारा स्थापित हुआ है।

मुण्डाली—यशोर जिलेमें चाँचडेके पासका एक गण्डग्राम। यह मुड़ालो नामसे विख्यात है।

मुण्डासन (सं० क्ली०) योगके अनुसार एक प्रकारका आसन।

मुण्डावर—मान्द्राज-प्रदेशके अमलय शैलवासी आदिम असभ्य जातिविशेष। ये लोग जनसाधारणमें अपना मुख दिखाना नहीं चाहते। निरन्तर पर्वतके वनान्त-राल प्रदेशमें ये एक जगहसे दूसरी जगह जा कर छिपे रूपमें रहते हैं। इनके कोई निर्दिष्ट घर नहीं हैं। ये पेड़के पत्तेकी झोंपडी बना कर एक वर्ष तक उसमें रहते हैं। बाद उसके अपनी अपनी गौओंको ले कर वहांसे चल देते हैं।

मुण्डाहीर (मुण्डाहार) उत्तर-पश्चिम भारतवासी एक जाति।

मुण्डित (सं० क्ली०) मुण्ड्यते खण्ड्यते इति मुड़ि खण्डने कर्मणि क्त। १ लौह, लोहा। (त्रि०) २ वापित-तुण्ड, मुड़ा हुआ।

मुण्डितिका (सं० स्त्री०) मुण्डित स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप् अत इत्त्व। वृक्षविशेष, गोरखमुंडी, । पर्याय—अलम्बुषा, श्रावणी, पलङ्कषा, कदम्बपुष्पा, श्रवणा, भूतघ्नी, कुन्तला, अरुणा। इसका गुण—कटु, उष्णवीर्य, मधुर, लघु, मेध्य, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार और प्लीहादिरोगनाशक।

मुण्डिन् (सं० पु०) मुण्डयति केशान् वपति इति मुण्ड-णिनि। १ नापित, हज्जाम। २ योगाचार्यविशेष।

"महाकालश्च शूली च दण्डी मुण्डी स एव च।
अष्टाविंशतिसंख्याता योगाचार्या युगक्रमात्॥"
(शिवपु० वायु० १०।५)

(त्रि०) ३ मुण्डित, जिसका सिर मुड़ा हुआ हो।

"दिनेऽष्टमे तु विप्रेण दीक्षितोऽहं यथाविधि।
दन्ती मुण्डी कुशी चीरी धृताक्तो मेखलीकृतः॥"
(भारत १३।१४।३१४)

मुण्डिनी (सं० स्त्री०) कस्तूरी मृग।

मुण्डिभ (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि जो वाजसनेय-संहिताके कई मंत्रोंके द्रष्टा या कर्त्ता कहे जाते हैं।
(शतपथब्रा० १३।३।५)

मुण्डिया—सिवनीवासी स्वर्णाहरणकारी एक पहाड़ी जाति।

मुण्डी (सं० स्त्री०) मुण्डितिका, गोरखमुंडी।

मुण्डीरिका (सं० स्त्री०) मुण्डि बाहुलकात् ईरच् स्त्रियां ङीप् स्वार्थे कन् स्त्रियां टाप् (केऽणः। पा ७।४।१३) इति पूर्वस्य ह्रस्वः। मुण्डितिका, गोरखमुंडी।

मुण्डीवृक्षानुकारक (सं० पु०) मुचुकुन्द वृक्ष, मुचकुंदका पेड़।

मुण्डेश्वर तीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थभेद, दण्डिमुण्डीश्वर तीर्थ।

मुत् (सं० स्त्री०) वृद्धौषधि।

मुत्कल (सं० पुं०) राजतरंगिणीके अनुसार एक सामंत-का नाम।

मुत्कलिन् (सं० पु०) देवपुत्रभेद।

मुतअल्लिक़ (अ० त्रि०) १ सम्बन्ध रखनेवाला, लगाव रखनेवाला। २ सम्मिलित, मिला हुआ। (क्रि० वि०) ३ सम्बन्धमें, विषयमें।

मुतक्का (हिं० पु०) १ कोठेके छज्जे या चौकके ऊपर पाटनके किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीचा दीवार जो गिरनेसे रोकनेके लिये हो। २ खंभा। ३ मीनार, लाट।

मुतदायरा (अ० वि०) जो दायर किया गया हो।

मुतफन्नी (अ० वि०) बहुत बड़ा धूर्त्त, धोखेबाज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुतफर्रिक (अ० वि०) १ भिन्न भिन्न, अलग अलग। २ विविध, कई प्रकारका।

मुतबन्ना (अ० पु०) दत्तक पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का।

मुतमौवल (अ० वि०) धनवान्, सम्पत्तिशाली।

मुतरज्जिम (अ० पु०) अनुवादक, तरजुमा करनेवाला।

मुतलक (अ० क्रि० वि०) १ जरा भी, तनिक भी। (वि०) २ बिलकुल, निरा।

मुतवफ्फा (अ० वि०) परलोकवासी, स्वर्गीय।

मुतवल्ली (अ० पु०) किसी नाबालिग़ और उसकी संपत्ति का रक्षक, किसी बड़ी सम्पत्ति और उसके अल्पवयस्क अधिकारीका कानूनी संरक्षक।

मुतवातिर (अ० क्रि० वि०) लगातार, निरन्तर।

मुतसद्दी (अ० पु०) १ लेखक, मुंशी। २ जिम्मेवार, उत्तरदायी। ३ पेशकार, दीवान। ४ मुनीम, गुमाश्ता। ५ इन्तजाम करनेवाला, प्रबन्धकर्त्ता। ६ हिसाब लिखनेवाला, जमा-खर्च लिखनेवाला।

मुतसिरी (हिं० स्त्री०) कंठमें पहनेकी मोतियोंकी कंठी।

मुतहम्मिल (अ० वि०) बरदास्त करनेवाला, सहिष्णु।

मुताबिक (अ० क्रि० वि०) १ अनुसार, बमूजिब। (वि०) २ अनुकूल।

मुतालबा (अ० पु०) उतना धन जितना पाना वाजिब हो, प्राप्य धन।

मुताह (हिं० पु०) मुसलमानोंमें एक प्रकारका अस्थायी विवाह जो निकाहसे निकृष्ट समझा जाता है। इस प्रकारका विवाह प्रायः शिया लोगोंमें होता है।

मुताही (हिं० वि०) १ वह जिसके साथ मुताह किया गया हो। २ रखेली।

मुतेहरा (हिं० पु०) कंकणकी आकृतिका एक प्रकारका आभूषण। इसे स्त्रियां कलाई पर पहनती हैं।

मुत्तफ़िक (अ० वि०) रायसे इत्तफ़ाक करनेवाला, सहमत।

मुत्तसिल (अ० वि०) १ निकट, पास। (क्रि० वि०) २ लगातार, निरन्तर।

मुत्य (सं० क्ली०) मुक्ता रत्न।

मुथशिल—फलित ज्योतिषोक्त तृतीय योगका नाम।

मुद (सं० स्त्री०) मोदनमिति मुद-भावे क्विप्। हर्ष, आनन्द।

"उवाच धात्र्या प्रथमोदितं वचो ययौ तदीयामव लम्ब्य चांगुलिम्।
अभूच्च नम्रः प्रणिपातशिक्षयो पितुर्मुदं तेन ततान सोऽर्भकः॥"
(रघुवंश ३।२।५)

मुदकडोर—मैसूर राज्यके तलकाड़के पास कावेरी नदी-तीरवर्त्ती एक पर्वत। यहां हर साल माघके महीनेमें मल्लिकार्जुन देवताके उद्देश्यसे महासमारोहके साथ १५ दिन तक मेला लगता है। मेलेमें दश हजारसे अधिक मनुष्य समागम होते हैं।

मुदकर (सं० पु०) १ जनपदभेद। २ उस जनपदका रहनेवाला।

मुदगर (हिं० पु०) १ मुद्गर देखो। २ मुगदर देखो।

मुदरा (हिं० पु०) एक प्रकारका मादक पेय पदार्थ। यह अफीम, भाँग, शराब और धतूरेके योगसे बनता है। इसका व्यवहार पश्चिमी पंजाब और बलूचिस्तानमें होता है।

मुदर्रिस (अ० पु०) पाठशालाका शिक्षक, अध्यापक।

मुदा (सं० स्त्री०) मुद्-बञर्थे कः ततष्टाप्। हर्ष, आनन्द।

"तं मन्त्रं क्रियामाणं तु मन्त्रिभिस्तत्र भूभृता।
तत्पार्श्ववर्त्तिनी कन्या शुश्रावाथ मुदावती॥"
(मार्क०पु० ११६।३०)

मुदा (अ० अव्य०) १ तात्पर्य यह कि। २ मगर, लेकिन।

मुदाम (फा० क्रि० वि०) १ सदा, हमेशा। २ निरन्तर, लगातार। ३ ठीक ठीक, हूबहू।

मुदामी (फा० वि०) जो सदा होता रहे, सार्वकालिक।

मुदावत् (सं० त्रि०) मुदा हर्षः विद्यतेऽस्य अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। हर्षयुक्त, आनन्दित।

मुदवसु (सं० पु०) पुराणानुसार प्रजापतिके एक पुत्रका नाम।

मुदित (सं० त्रि०) मुद्-क्त, यद्वा मुदा अस्य जाता इतच्। १ आनन्दित, प्रसन्न, खुश।

"आर्त्तार्त्तीमुदिता हृष्टे प्रोषिते मलिना कृशा।
मृते म्रियेत या पत्यौ साध्वी ज्ञेया पतिव्रता॥"
(शुद्धित०)

(पु०) २ आलिङ्गनविशेष। कामशास्त्रमें इसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लक्षणं इस प्रकार लिखा है,—नायिका नायककी बाईं ओर लेट कर उसकी दोनों जांघोंके बीचमें जो अपना बायां पैर रखती है उसीको मुदित कहते हैं।

मुदिता (सं० स्त्री०) मोदते इति मुद्-सर्वधातुभ्य इन् संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वाद्गुणाभावः, मुदिः तस्य भावः तल्-टाप्। १ हर्ष, आनन्द। २ परकीयाके अन्तर्गत एक प्रकारकी नायिका जो पर-पुरुष प्रीति सम्बन्धी कामनाकी आकस्मिक प्राप्तिसे प्रसन्न होती है। ३ योगशास्त्रमें समाधि-योग्य संस्कार उत्पन्न करनेवाला एक परिकर्म। इसका अभिप्राय है, पुण्यात्माओंको देख कर हर्ष उत्पन्न करना। ये परिकर्म चार कहे गये हैं—मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा।

मुदिबेदु—मान्द्राजप्रदेशके कड़प जिलान्तर्गत मदनपल्ली तालुकका एक नगर। यह अक्षा० १४° १′ ३०″ उ० तथा देशा० ७९° ४४′ १०″ पू०के मध्य अवस्थित है।

मुदिर (सं० पु०) मोदन्ते अनेन प्रजा इति मुद्-(इदिमदिमुदीति। उण् १।५२) इति किरच्। १ मेघ, बादल। २ कामुक, वह जिसे कामवासना बहुत अधिक हो। ३ भेक, मेढ़क।

मुदिरफल (सं० पु०) विकण्टकवृक्ष, गोखरू।

मुदी (सं० स्त्री०) १ चन्द्र-किरण, कौमुदी। २ ह्रस्व गम्भारी वृक्ष, छोटी गंभारीका पेड़।

मुदकी—पञ्जाबके फिरोजपुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० ३०° ४७′ उ० तथा देशा० ७४° ५५′ १५″ पू० फिरोजपुरसे कर्णाल जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यहां शतद्रु नदीसे १३ कोस दूर सन् १८३५ ई०की १९वीं दिसम्बरको प्रसिद्ध प्रथम सिख-युद्ध हुआ था। वह युद्ध अङ्गरेज और सिख सेनाके बीच हुआ था। इसमें अंगरेजोंकी बहुत-सी सेना मारी गई थी। सिखोंने अपने असाधारण युद्धनैपुण्य और विक्रमका परिचय दिया था अन्तमें सिख पराजित हुए और उनके १७ कमान अंगरेजोंके हाथ लगे। अङ्गरेज सेनामेंसे जिनकी मृत्यु लड़ाईमें हुई थी उनके स्मरणार्थ एक एक स्मृतिस्तम्भ बनाया गया है। यहां सराय और सुन्दर प्रस्तर वेष्टित पुष्करिणी है। सिखयुद्ध देखो।

मुद्ग (सं० पु०) मोदते अनेन इति मुद् (मुदिग्रोर्ग गुगौ। उण् १।११७) १ पक्षिविशेष। पर्याय—जलवायस। (हेम) २ शमी धान्यभेद, मूंग। संस्कृत पर्याय—सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, मुक्तिप्रद, हयानन्द, सुफल, वाजिभोजन।

यह अन्न भादोंमें प्रायः सांवा आदि और अन्नोंके साथ बोई जाती है और अगहनमें कटती है। इसके पौधेकी टहनियां लताके रूपमें इधर उधर फैली होती हैं। एक एक सींकेमें सेमकी तरह तीन तीन पत्तियां होती हैं। फूल नीले और बैंगनी होते हैं। फलियां ढाई तीन अंगुलकी पतली होती हैं और गुच्छोंमें लगती हैं। फलियोंके भीतर ५-६ लंबे गोल दाने होते हैं। मुद्गके लिये बलुई मट्टी और थोड़ी वर्षाकी जरूरत है। इसके कई भेद हैं, हरा, काला, पीला। हरा या पीला मुद्ग अच्छा होता और सोनामूंग कहलाता है। इसका गुण रुक्ष, लघु, धारक, कफघ्न, पित्तनाशक, शीतवीर्य, कुछ वायुवर्द्धक, चक्षुका हितकर और ज्वरनाशक माना गया है। वनमूंगके भी प्रायः यही गुण हैं। अत्रिसंहिताके मतसे इसका गुण—शीतल, कषाय, मधुर, लघु, पित्तनाशक, रक्तशोधक और अतिशय रमणीय।

"प्रधाना हरितास्तत्र वन्य मुद्गास्तु मुद्गवत्।
कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः।
श्वेता रक्ताश्च निर्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्ववत्॥" (राजत०)

मुद्गगिरि (सं० पु०) मुङ्गेर और उसके आसपासके प्रान्तका प्राचीन नाम। मुङ्गेर देखो।

मुद्गदला (सं० स्त्री०) मुद्गपर्णी, वनमूंग।

मुद्गपर्णी (सं० स्त्री०) मुद्गस्येव पर्णान्यस्याः मुद्गपर्ण जातौ ङीष्। वनमुद्ग, वनमूंग। पर्याय—काकमुद्गा, सहा, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्जारगन्धिका, वनजा, रिङ्गिणी, हंखा, सूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या। गुण—शीतल, कास, वातरक्त, क्षय, पित्तदाह-ज्वरनाशक, चक्षुका हितकर, शुक्रवृद्धिकारक। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतसे गुण—तिक्त, स्वादु, शुक्रवर्द्धक, क्षय, शोथनाशक, लघु, ग्रहणी, अर्श और अतिसार रोगमें हितकर। मार्जारगन्ध भी इसका एक पर्याय है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुद्गभुज् (सं० पु०) मुद्गं भुङ्क्ते इति भुज्-क्विप्। घोटक, घोड़ा।

मुद्गभोजिन् (सं० पु०) मुद्गं भुङ्क्ते भुज-णिनि। अश्व, घोड़ा।

मुद्गमोदक (सं० पु०) मुद्गेन साधितो मोदकः। मोदक-विशेष, मोतीचूर। इसके बनानेका तरीका भावप्रकाश-में इस प्रकार लिखा है,—मूंगकी धूमसी (मूंगको जलमें भिगो कर उसकी भूसी निकाल लो। पीछे उसे धूपमें सुखा कर जांतेमें पीसो, इसीका नाम धूमसी है) को साफ जलमें घोलो, पीछे एक कड़ाहमें घी डाल कर आंच पर चढ़ावो। घी जब खौलने लगे, तब एक झंझरी हो कर उस घोले हुए मूंगके आटेको थोड़ा थोड़ा करके कड़ाहमें गिराते जाओ। अच्छी तरह भुन जाने पर उसे चीनीकी चाशनीमें डाल कर लड्डू बनाओ। इसी लड्डू-का नाम मोतीचूर वा मुद्गमोदक है। इसका गुण—लघु, धारक, त्रिदोषनाशक, मधुररस, शीतवीर्य रुचि-जनक, चक्षुका हितकर, ज्वरनाशक, बलकारक और तृप्तिकर माना गया है। (भावप्र०)

मुद्गर (सं० क्ली०) मुदं आनन्दं गिरति विकिरतीति ग अच्। १ मल्लिकाभेद, बेला। (पु०) २ कर्म्मार, एक प्रकारका बाँस। पर्याय—गन्धसार, सप्तपर्ण, अतिगन्ध, गन्धरान्ध, वटप्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट। इसका गुण—मधुर, शीतल, सुरभि, सौख्यदायक, मधुपा-नन्दकारक, कामवर्द्धक, पित्तनाशक। (राजनि०)

३ काठका बना हुआ एक प्रकारका गावदुमा दंड। यह मूठकी ओर बहुत भारी होता है। इसे हाथमें ले कर हिलाते हुए पहलवान् लोग कई तरहकी कसरतें करते हैं। इससे कलाइयों और बाहोंमें बल आता है। इस-की प्रायः जोड़ी होती है जो दोनों हाथोंमें ले कर बारी बारीसे पीठके पीछेसे घुमाते हुए सामने ला कर तानी जाती है। इसे मुगदर भी कहते है। ४ लोष्ट्रादिभेद, प्राचीनकालका एक अस्त्र जो दंडके आकारका होता था और जिसके सिरे पर बड़ा भारी गोल पत्थर लगा होता था। पर्याय—द्रुघन, घन, प्रघण।

"गदापट्टिशधारिण्या शूलमुद्गरहस्तया।
प्रस्थितौ सहधर्मिण्या महत्या दैत्यसेनया॥"
(भारत १।२११।३)

५ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली।

मुद्गरक (सं० पु०) मुद्गरमिवेति प्रतिकृतौ कन्। कर्म्मार, एक प्रकारका बाँस।

मुद्गरपर्णक (सं० पु०) नागभेद।

मुद्गरपिण्डक (सं० पु०) नागभेद।

मुद्गल (सं० क्ली०) मुदं गालयतीति गल-क। १ रोहिष नामक तृण। (पु०) २ हर्यश्व-राजपुत्र। (विष्णुपु० ४। १९ अ०) ३ गोत्रकारक मुनिका नाम। इनकी स्त्रीका नाम इन्द्रसेना था। ४ उपनिषद्भेद।

मुद्गल—निजाम-राज्यका एक नगर और दुर्ग। यह अक्षा० १६° ० ३४'' उ० तथा देशा० ७६° ३६' ४७'' पू०के मध्य अवस्थित है। दुर्गके उत्तर समतल भूमि पर नगर और दक्षिणमें पर्वतके ऊपर दुर्ग बसा हुआ है। दुर्गमें १२४६ ५० ई०में यादव वंशीय एक शासनकर्त्ता रहते थे। पीछे वह ओरङ्गलके राजाके अधिकारभुक्त हुआ। १४वीं सदीमें मुसलमानोंने उस पर दखल जमाया. जिस समय दिल्लीके बादशाह महम्मद तुग-लकके अधीनस्थ दाक्षिणात्यके शासन कर्त्ताओंने विद्रोही हो कर कुलबर्जमें बाह्मनी-राज्यकी प्रतिष्ठा की, उस समय मुद्गल नये राज्यका प्रधान प्रान्तदुर्ग था। बाह्मनीवंश के शासनकालमें उक्त दुर्गकी ख्याति सर्वत्र फैल गई थी। राज्यके ध्वंसप्राप्त होनेसे वह दुर्ग विजापुर-राजाओंके हाथ लगा। अनन्तर विजापुर राज्यके अव-सान पर औरङ्गजेबने उसे दखल किया।

पहले गोआ नगरीसे सेण्ट फ्रान्सिस जेभियर नामक एक ईसाई-याजकने मुद्गलमें आ कर एक रोमक कैथ-लिक उपनिवेश बसाया। विजापुरके राजाओंने ईसा-इयोंको उक्त स्थान निष्कर दे दिया था। आज भी वह उपनिवेश मौजूद है।

मुद्गलानी (सं० स्त्री) सेनापतिविशेष।

मुद्गवटक (सं० पु०) मुद्गेन कृतः वटकः। मूंगका वटक या बड़ा। इसके बनानेका तरीका इस प्रकार है,—मूंगकी दालको कुछ समयके लिये पानीमें छोड़ दे। बाद उसके उसे पानीसे निकाल अच्छी तरह पीसे। अनन्तर बड़े को तेलमें धीमी आंचसे पका कर उतार ले। इसका गुण हितकर, रुचिकारक, लघु तथा मूंगकी दालकी तरह गुणकारक माना गया है। (भावप्र०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुद्गवत् (सं० त्रि०) मुद्गविशिष्ट।

मुद्गष्ट (सं० पु०) वनमुद्ग, वनमूंग।

मुद्गष्टक (सं० पु०) मुद्गष्ट स्वार्थे कन्। वनमुद्ग, वनमूंग।

मुद्गाद्रवट (सं० पु०) मुद्गेनाद्रः। वटकविशेष, वड़ा। प्रस्तुत प्रणाली—मूंगकी दालको अच्छी तरह पीस कर उसका वड़ा वनावे। पीछे उसे तेलमें भून कर चूर्ण करे। उस चूर्णमें हींग, अदरक, छोटी इलायची, मरिच और भूना हुआ जीरा तथा नीवूका रस और अजवायन डाल दे। इसके वाद फिरसे मूंगकी दालको पीस कर एक हांड़ीके ऊपर किसी दूसरे वरतनमें उसे रख कर सिद्ध करे। जव अच्छी तरह सिद्ध हो जाय तव उसे गोल वना कर पूर्वोक्त हींग मिले हुए पदार्थमें मिलावे और तव तेलमें भूने। इसके वाद उसे क्वथिता नामक द्रव्यमें उतार रखे (हलदी और हींगको घी या तेलमें भून ले पीछे उसमें मट्ठा डाल कर मरिचके साथ पाक करे। इसीको क्वथिता कहते हैं।)

इस प्रकार जो वस्तु तैयार होती है। उसीका नाम मुद्गाद्रवटक है। इसका गुण रुचिकारक, लघु, वलकर, अग्निप्रदीपक, तृप्तिजनक, पथ्य और त्रिदोषनाशक माना गया है। (भावप्र० पूर्वख०)

मुद्दआ (अ० पु०) अभिप्राय, तात्पर्य।

मुद्दइया (अ० स्त्री०) मुद्दई देखो।

मुद्दई (अ० पु०) १ दावा करनेवाला, वादी। २ दुश्मन, वैरी।

मुद्दत (अ० स्त्री०) १ अवधि। २ वहुत दिन, अरसा।

मुद्दती (अ० त्रि०) वह जिसके साथ कोई मुद्दत लगी हो, वह जिसमें कोई अवधि हो।

मुद्दाअलेह (अ० पु०) वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय, वह जिस पर कोई मुकदमा चलाया गया हो।

मुद्दालेह (अ० पु०) मुद्दाअलेह देखो।

मुद्दे विहाल—वम्बईप्रदेशके विजापुर जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १६° १०´ से १६° ३७´ उ० तथा देशा० ७५° ५८´ से ७६° २५´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५६९ वर्गमील और जनसंख्या ७० हजारके करीव है। इसमें एक शहर और १५० ग्राम लगते हैं। १८७६ ७७ ई०में जो दुर्भिक्ष पड़ा था उससे यहांके अधिवासियोंकी अवस्था वड़ी शोचनीय हो गई थी, आज भी सुधरने नहीं पाई है। तालुकका उत्तरी भाग जहां कृष्णानदी वहती हैं, वहुत उपजाऊ है। प्रति ग्राममें सुन्दर सुन्दर कुएं देखे जाते हैं। यहां तरह तरहका अनाज उपजता है। एक दीवानी और २ फौजदारी अदालत भी है।

उक्त तालुकके अन्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० १६° २०´ उ० तथा देशा० ७६° ८´ दक्षिण मरहठा रेलवेके अलिमद्दी ष्टेशनसे १८ मील दूरमें अवस्थित है। १६७० ई०में वसरकोटके वर्त्तमान नादगुण्डाके पूर्वपुरुष परमन्नाने इस स्थानको वसाया। उनके पुत्र हुचप्पाने यहां एक दुर्ग वनवाया। १७६४ ई०में यह पेशवाके हाथ लगा। पीछे १८१८ ई०में वृटिश सरकारने इसे अपने साम्राज्यमें मिला लिया। यहां सव-जजकी अदालत, अस्पताल और तीन स्कूल हैं।

मुद्र (सं० क्ली०) मुद्रा।

मुद्रण (सं० पु०) १ किसी चीज पर अक्षर आदि अङ्कित करना, छपाई। २ नियमन, ठीक तरहसे काम चलानेके लिये नियम आदि वनाना और लगाना। ३ मुद्राङ्कण, ठप्पे आदिकी सहायतासे अङ्कित करके मुद्रा तैयार करना। ४ अक्षर निवद्धकरण (Typography)

मुद्रणा (सं० स्त्री०) १ मुद्रण देखो। २ अंगुलीमुद्रा, अंगूठी।

मुद्रणालय (सं० पु०) १ वह स्थान जहां किसी प्रकारका मुद्रण होता हो। २ छापाखाना, प्रेस।

मुद्रा (सं० स्त्री०) मोदतेऽनयेति मुद्-रक (स्फायितञ्चीत्यादि उण् २।१३) ततष्टाप्। १ प्रत्ययकारिणी, किसीके नामकी छाप, मोहर। २ अंगुलि-मुद्रा, अंगूठी।

"अथैनां मुद्रामंगुल्यां निवेशयता मया प्रत्यभिहिता।"

(शकुन्तला ६ अङ्क)

३ स्वर्णरौप्यादि-मुद्रिका, रुपया, अशरफी आदि। ४ चिह्न, निशान। ५ पांच प्रकारकी लिपियोंमेंसे एक, टाइपसे छपे हुए अक्षर।

"मुद्रालिपिः शिल्पलिपिलिपिर्लेखनीसम्भवा।
गुण्डिकाघृणसम्भूता लिपयः पञ्चधा स्मृताः॥"

(वाराहीतन्त्र)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विप्रगण जो कलमसे लिखते वा मुद्रासे जो अङ्कित करते तथा शिल्पगण जो निर्माण करते उसका सर्वदा पाठ और धारण करना चाहिये।

"लेखन्या लिखितं विप्रैर्मुद्राभिरङ्कितञ्च यत्।
शिल्पादिनिर्मितं यच्च पाठ्यं धार्यञ्च सर्वदा ॥"
(मुण्डमालातन्त्र)

६ पञ्चमकारके अन्तर्गत भृष्ट द्रव्यभेद, तान्त्रिकोंके अनुसार कोई चूना हुआ अन्न। तन्त्रमें भूने हुए चिउड़े, चावल, गेहूं और चनेको मुद्रा कहा है। यह मुद्रा मुक्ति देनेवाली है।

"पृथुकास्तण्डुला भृष्टा गोधूमचणकादयः।
तस्य नाम भवेद्देवि! मुद्रा मुक्तिप्रदायिनी ॥"
(निर्वाणतन्त्र ११ पटल)

उक्त मुद्राको निम्नोक्त दोनों मन्त्रोंसे शोधन कर लेना होता है। मन्त्र इस प्रकार हैं,—

"ओं तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः
दिवीव चक्षुराततम्।
ओं तद्विप्रासो विप्रण्यवो जागृवांसः समिन्धते
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥"

७ गोरखपंथी साधुओंके पहननेका एक कर्णभूषण। यह प्रायः कांच वा स्फटिकका होता है। कानको लौके बीचमें एक बड़ा छेद करके यह पहना जाता है। ८ मुखकी आकृति, चेहरेका ढंग। ९ अगस्त्य ऋषिकी स्त्री, लोपामुद्रा। १० वह अलङ्कार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थके अतिरिक्त पद्यमें कुछ और भी साभिप्राय नाम निकलते हैं। ११ विष्णुके आयुधोंके चिह्न जो प्रायः भक्त लोग अपने शरीर पर तिलक आदिके रूपमें अङ्कित करते या गरम लोहेसे दगाते हैं। भगवान्‌को प्रसन्न करनेके लिये उक्त नारायणी मुद्रा या चिह्न धारण करना होता है। मत्स्य कूर्म आदि चिह्न तथा चक्रादि आयुध चिह्न धारण करके हरिकी आराधना करना उचित है।

मुद्रा वा चिह्न-धारणकी नित्यता।

हरिकी अर्चना करनेसे पहले दोनों बाहुमें शङ्ख और चक्रका चिह्न लगाना चाहिये, नहीं तो वह पूजा फलदायक नहीं होती।

"अङ्कितः शङ्खचक्राभ्यामुभयोर्बाहुमूलयोः।
समर्च्चयेद्धरिं नित्यं नान्यथा पूजनं भवेत् ॥" (स्मृति)

गरुड़पुराणमें लिखा है—शुचि व्यक्तिको ही सभी कामोंमें अधिकार है। किन्तु यह शुचित्व हरिके आयुधादि धारण किये विना प्राप्त नहीं होता।*

पद्मपुराणके उत्तरखण्डमें लिखा है—शङ्खचक्रादि चिह्न हरिका प्रियतम है। इन सब चिह्नोंसे जो व्यक्ति अपने अङ्गको भूषित नहीं करता, वह सब धर्मोंसे भ्रष्ट हो कर नरकगामी होता है।†

केवल पुराणादि शास्त्र में ही नहीं, स्मृति आदिमें भी विष्णुकी अर्चनाके समय शङ्खचक्रादि चिह्न धारण करनेकी विधि है। जैसे,—

"धृतोर्द्ध्वपुण्ड्रः कृतचक्रधारी विष्णुं परं ध्यायति यो महात्मा।
स्मरेण मन्त्रेण सदा हृदि स्थितं परात्परं यन्महतो महान्तम् ॥
(यजुर्वेद कठशाखा)

"एभिर्वयमुरुक्रमस्य चिन्हैरङ्किता लोके शुभगा भवेम।
तद्विष्णोः परमं पदं ये गच्छन्ति लाञ्छिता इत्यादि ॥"
(अथर्ववेद)

मुद्राधारणका माहात्म्य।

पुराणादि धर्मशास्त्रोंमें मुद्राधारणकी बहुत-सी माहात्म्य-कथाएं लिखी हैं। बाहुल्य-भयसे उसमेंसे थोड़ासा यहां लिखा जाता है। स्कन्दपुराणमें सनत्कुमार और मार्कण्डेय-संवादमें लिखा है,—जो विष्णुभक्त व्यक्ति शङ्खचक्रादि चिह्नसे चिह्नित होते हैं, उनका विष्णुलोकमें वास होता है और कोई आधि व्याधि उन्हें नहीं छू सकती। जिनका शरीर नारायणके आयुध चिह्नसे भूषित है, कोटि पाप करने पर भी उनका यम कुछ नहीं कर सकता। इसी प्रकार शङ्ख, चक्र, गदा आदि चिह्नधारण करनेसे भी अनन्त फलोंकी प्राप्तिकी बात लिखी हुई है। भगवान् कहते हैं,—इस कलिकालमें जो

---

* "सर्वेकर्माधिकारश्च शुचीनामेव चोदितः।
शुचित्वञ्च विजानीयान्मदीयायुधधारणात् ॥"
(गरुड़पु०)

† "शङ्खचक्रादिभिश्चिह्नै र्विप्रः प्रियतमैर्हरेः।
रहितः सर्वधर्मेभ्यः प्रच्युतो नरकं व्रजेत् ॥"
(पद्मपु० उत्तरख०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"अमावस्याद्वयं यत्र रविसंक्रान्तिवर्जितम् ।
मलमासः स विज्ञेयो विष्णुः स्वपिति कर्कटे ॥"
(मलमासतत्त्व)

दो अमावस्याका शेष क्षण यदि एक सौर मासमें पड़ जाता है, तो मलमास होता है। मलमास होने पर दो चन्द्रमास होता है, इनमें पहला मल वा मलिम्लुच और दूसरा शुद्ध । दो चन्द्रमास होनेका तात्पर्य यह, कि शुक्लपक्षीय प्रतिपदका पूर्वक्षण अर्थात् पूर्व अमावस्याका शेष समय जिस सौरमासमे पड़ेगा, वह शुक्लपक्षीय प्रतिपदसे अमावस्या पर्यन्त तीस तिथि-रूप मास है। यह मास सौरमास कहलाता है। जैसे, सौर वैशाखमासमें एक अमावस्याका शेष होनेसे परवर्त्ती शुक्लपक्षीय प्रतिपदसे अमावस्या तकका मास मुख्य चान्द्र वैशाख होगा। मलमासका विषय स्थिर करनेमें पहले मास कितने प्रकारके हैं, उनके लक्षण क्या हैं, इत्यादि विषय जानना आवश्यक है। मास चार प्रकारका है—सौरमास, चान्द्रमास, नक्षत्रमास और सावनमास। चान्द्रमासके हिसाबसे मलमास होता है, इसीसे चान्द्रमासका विषय जानना जरूरी है।

तिथिघटित मास ही चान्द्रमास है। चान्द्रमास दो प्रकारका है,—मुख्यचान्द्र और गौणचान्द्र। शुक्लपक्षकी प्रतिपदसे अमावस्या पर्यंत इन तीस तिथियोंमें जो चांद्र मास होगा उसे मुख्यचान्द्र और कृष्णपक्षकी प्रतिपदसे पूर्णिमा पर्यन्त मासको गौणचान्द्र कहते हैं। कर्मविशेषमें कहीं मुख्यचान्द्र और कहीं गौणचान्द्र लिया जाता है।

मास शब्द देखो।

दो शुक्लपक्षीय प्रतिपदका पूर्वक्षण अर्थात् दो अमावस्याका शेष समय एक सौरमासमें पड़नेसे पूर्वोक्त साधारण लक्षणानुसार दोनों मासका एक ही नाम होता है। शुक्लपक्षीय प्रतिपदसे अमावस्या पर्यन्त तीस तिथि-स्वरूप मास एक नहीं, दो है। इनमेंसे पहला मल और दूसरा शुद्ध हैं। इसीसे तेरह महीनेका वर्ष होता है। कर्मयोग्य कालनिर्णयके लिये ही ऐसा नाम पड़ा है।

आषाढ़ मासकी शुक्लपक्षीय पञ्चमीमें मनसा-पूजा करनी होती है। आषाढ़मासमें यदि दो शुक्लपक्षीय पञ्चमी पड़े, तो किस शुक्लपक्षकी पञ्चमीमें पूजा होगी, इस प्रकार संशय होता है। आषाढ़मासकी पूर्णिमामें यदि किसीके पिताकी मृत-तिथि पड़े, तो किस पूर्णिमामें वह पितृश्राद्ध करेगा, इत्यादि संदेहको दूर करनेके लिये ही मलमास परिभाषा है।

"इन्द्राग्नी यत्र हूयेते मासादिः स प्रकीर्त्तितः ।
अग्नीषोमौ स्मृतौ मध्ये समाप्तौ पितृसोमकौ ॥
तमतिक्रम्य तु रविर्यदागच्छेत् कथञ्चन ।
आद्यो मलिम्लुचो ज्ञेयो द्वितीयः प्रकृतः स्मृतः ॥
तस्मिंस्तु प्रकृते मासि कुर्यात् श्राद्धं यथाविधि ॥"
(लघु हारीत)

शुक्लपक्षीय प्रतिपदसे अमावस्या पर्यन्त जिस मासमें रविका संक्रमण नहीं होता, वह मास पहलेकी तरह दो होता है। पहला मलिम्लुच और दूसरा शुद्ध मास। शुद्ध मासमें ही श्राद्धादि करने होंगे। आश्वलायन ब्राह्मणमें लिखा है,—"अर्द्धमासा वै अधस्तात् सन्तोऽकमायन्तु मासाश्च स्याम इति ते द्वादशाहं क्रतुमुपायन् त्रयोदशं ब्राह्मणं कृत्वा तस्मिन् मृष्ट्वोदतिष्ठन् तन्मासोऽनायतन इतरामनुपजीवति।"

अर्थात् अर्द्धमासको सकल मास करनेके लिये तेरह अर्थात् मलमासको ब्राह्मण बना कर द्वादशाहसाध्य-यज्ञ करना चाहिये। इससे वे (यज्ञ करनेवाले) उस मलमासमें अपने पापोंको विसर्जन कर अभिलषित फल पाते हैं।

मलमासके कोई नियम नहीं है। चैत्रमास आदिकी तरह मलमास अमुक मासके बाद और अमुक मासके पहले पड़ेगा, ऐसा कोई नियम नहीं है। मलमास अन्य मासका अवलम्बन करके ही रहता है।

शास्त्रमें कहा है, कि सभी मासोंका पाप इस मलमासमें जमा होता है। इसलिये मलमासमें कोई धर्मकर्म करना नहीं चाहिये। किन्तु नित्यकर्म और कुछ नैमित्तिक-कर्म जो मलमासमें कर्त्तव्य है उसे तो इस मासमें करना ही होगा, नहीं करनेसे काम चलता नहीं।

दिवा और रात्रिका परिमाण ६० दण्ड और तिथिका मान औसतसे ६० दण्ड है। अतएव औसतसे ३०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिनमें ३१ तिथि पड़ती है, इस प्रकार १२ महीनेमें १२ तिथि बढ़ जाती है। इस हिसाबसे ढाई वर्षमें ३० तिथि बढ़ गई। अब देखो, वैशाख, ज्येष्ठ इत्यादि क्रमसे ढाई वर्षके बाद जो चान्द्रकार्त्तिकमास होगा, उससे सौर-कार्त्तिकमासका ३० दिन अन्तर रहेगा। पांच वर्षके बाद देखा जाता है, कि सौर और चान्द्रमासमें ६० दिनका अन्तर हो गया है। इस प्रकार कभी सौर-आश्विन मासमें भी चन्द्रवैशाखमास हो सकता है। ऐसा होनेसे मासका जो साधारण लक्षण है उसमें व्यतिक्रम देखा जाता है। ३० तिथि बढ़नेसे ही मलमास होगा। मलमास होने पर एक ही नामके दो चान्द्रमास होते हैं। उसमें फिर ३० दिनसे अधिकका अन्तर नहीं हो सकता। हम लोगोंकी चान्द्रमासमें होनेवाली जितनी क्रियाएं हैं, वे कमसे कम ३० दिनके भीतर ही होंगी। चाहे मुख्यचान्द्र-आश्विनका कार्य सौर आश्विनमें हो चाहे सौर कार्त्तिकमें, इसका कोई ठीक नहीं।

हर तीसरे वर्षमें मलमास हुआ करता है। पहले जो ढाई वर्षकी बात कही गई है, वह प्रायिक अभिप्रायसे। फाल्गुनसे कार्त्तिक तक दशों महीने मलमास हो सकता है। माघमासमें मलमास हो भी सकता है, पर पौषमासमें कभी भी नहीं।

मलमास हर तीसरे वर्षमें होता है, यह पहले ही कहा जा चुका है। परन्तु अन्धुक भट्ट ६५५ शकमें ऐसा देख कर लिख गये हैं, कि अमावस्यामें तुलासंक्रान्ति, (सौर कार्त्तिकमासका आरम्भ), उसके बाद अमावस्याके दूसरे दिन अर्थात् शुक्लपक्षीय प्रतिपदमें वृश्चिकसंक्रान्ति (सौर अग्रहायण मासका आरम्भ), इसके बाद अमावस्याको धनुःसंक्रान्ति (सौर पौषमासका आरम्भ) हुई है। इसमें कार्त्तिक मासमें मलमासके सभी लक्षण आये हैं। इसके बाद भी फिर वैशाख मासमें मलमास हुआ है। अब प्रश्न होता है, कि एक वर्षमें दो मलमास किस प्रकार हुआ? इसके उत्तरमें शास्त्र कहते हैं, कि ऐसा हो नहीं सकता। एक वर्षमें दो मलमासका होना कभी भी संभव नहीं। इस हिसाबसे मलमासकी तीन प्रकारकी परिभाषा शास्त्रमें लिखी है, यथा—भानुलङ्घित, क्षय और मलमास। जब स्थान पर कार्त्तिक मास भानुलङ्घित, अगहन क्षय और वैशाख मल है।

भानुलङ्घित तथा मलमासके लक्षण एक-से हैं। फर्क इतना ही है, कि मलमासमें मासकी वृद्धि होती है, भानुलङ्घितमें नहीं होती। पर हां, यहां पर एक नियम है, वह यह है, कि वैशाख प्रभृति छः मासोंमेंसे किसी मासमें यदि मलमास देखा जाय, तो वैशाख आदिके मध्य ही मलमास होगा। आश्विन और वैशाखमें यदि मलमासके लक्षण दिखाई दें, तो वैशाख मास ही मलमास होगा, आश्विन मास नहीं। आश्विन मास भानुलङ्घित होगा।

जिस वर्षमें एक मलमास और एक भानुलङ्घित मास होता है उस वर्षमें एक क्षय मास भी हुआ करता है। जिस सौरमासके मध्य एक अमावस्याका भी अन्त्यक्षण पाया जाता है, वही क्षयमास है। कार्त्तिक, अग्रहायण और पौषको छोड़ कर अन्य मासमें क्षयमास नहीं होता।

मलमास, भानुलङ्घित मास और क्षयमास ये तीनों ही विवाहादि कार्यमें अनुपयुक्त हैं। परन्तु मलमासमें वार्षिक श्राद्ध, तिथिविशेषविहित देवपूजा आदि कार्य भी नहीं होते, भानुलङ्घित और क्षयमासमें होते हैं।

मुख्यकालानुष्ठेय प्रेतश्राद्ध, गर्भाधान, पुंसवनादि अन्न प्राशनान्त-संस्कार तथा समस्त संस्कारान्त वृद्धिश्राद्ध, मघा-त्रयोदशीश्राद्ध, शान्तिस्वस्त्ययन, मलमासमृतव्यक्तिका वार्षिक श्राद्ध, ये सब कार्य मलमासमें किये जा सकते हैं। एतद्भिन्न नैमित्तिक और काम्यकर्म मात्र ही मलमासमें निषिद्ध है।

'प्रायशो न शुभः सौम्यो ज्यैष्ठश्चाषाढ़कस्तथा।
मध्यमौ चैत्रवैशाखावधिकोऽन्यः सुभिक्षकृत्॥"

(मलमासतत्त्व)

वैशाख, ज्यैष्ठ और आषाढ़ मास मलमास होनेसे प्रायः अशुभ होता है। चैत्र और वैशाख मास मध्यम है। बाकी महीनोंमें मलमास होनेसे सुभिक्ष होता है।

मलय (सं० पु०) मलते धरति चन्दनादिकमिति मल (बलिमलितनिभ्यः कयन्। उण् ४।१६६) इति कयन् १ स्वनाम ख्यात पर्वत। पर्याय—आषाढ़, दक्षिणाचल, चन्दनाद्रि,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलयाचल। यह पश्चिमी घाटका वह भाग है जहां चन्दन बहुत उत्पन्न होता है। पुराणोंमें इसे सात कुल पर्वतोंमें गिनाया गया है। मलयगिरि देखो।

"महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः।
विन्ध्यश्च पारिपात्रश्च सप्तैवात्र कुला चलाः॥"
(मार्कण्डेयपु० ५७।१०)

२ मलावारदेश। ३ मलयदेशके रहनेवाले मनुष्य। ४ एक उपद्वीपका नाम। ५ सफेद चन्दन। ६ नन्दन-वन। ७ गरुड़के एक पुत्रका नाम। ८ शैलाङ्ग, पहाड़का एक प्रदेश। ९ ऋषभदेवके एक पुत्रका नाम। १० आराम। ११ छप्पयके एक भेदका नाम। इसमें २५ गुरु, ९८ लघु, कुल १२३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

मलय शब्द पवन, समीर, वायु आदि शब्दोंके आदि-में समस्त हो कर सुगंधित और 'दक्षिणी वायु'का अर्थ देता है।

मलय—१ मलय-उपद्वीपवासी जातिविशेष। ये लोग मलयभाषामें बोलचाल करते हैं। मदागास्करवासी 'होवा' जातिके साथ इनकी आकृति बहुत कुछ मिलती जुलती है। पेस्कल साहबने लिखा है, कि मरिलम् और बोर्वोके आविष्कार-कालमें मदागास्करमें मलय जातिका बास देखा गया था। शब्दतत्त्वविद् क्रोफोर्डने उक्त द्वीपकी प्रचलित भाषामें मलयभाषागत शब्दका प्रयोग देखा है। एतद्भिन्न अपरापर पुरातत्त्वविदोंका विवरण पढ़नेसे मालूम होता है, कि मलयजाति एक समय सुदूर मदागास्कर द्वीपमें भी रहती थी।

मलय उपद्वीप और उसके पश्चिमके द्वीपोंमें मलय जातिका बास देखा जाता है। ये लोग बहुत शाखा प्रशाखाओंमें विभक्त हैं। इनकी कथित मलय भाषामें भी बहुत पृथक्ता देखी जाती है। प्रोफेसर ए. एच. कीन् मलयजाति और मलयभाषाकी विस्तृत तालिका दे गये हैं।

जातितत्त्वविदोंने शरीरका रंग देख कर इस विस्तीर्ण मलयजातिको दो प्रधान शाखामें विभक्त किया है। इन-मेंसे पहली श्रेणीका रंग तामड़ा तथा बाल पतले होते हैं। दूसरी श्रेणीकी आकृति बिलकुल निग्रो जाति-सी है।

ऐसी समानताको देख कर बहुतेरे इन्हें भी निग्रो जातिमें शामिल करते हैं। अन्दामन द्वीपसे प्रशान्त महासागर तकके अधिवासिगण यद्यपि निग्रो वा निग्रिटो कहलाते हैं, तो भी उनके मध्य कमसे कम बारह थोक देखे जाते हैं। इनमेंसे किसी श्रेणीका कद बहुत छोटा अर्थात् ५ फुटसे भी कम है। फिर किसी किसीका शरीर ६ फुटसे भी ऊँचा देखा जाता है।

मि० पेस्कलने मलयजातिके लोगोंको मोङ्गलीय जातिमें शामिल किया है। मरिज वैगनरने पेस्कलके मतका अनुसरण करते हुए लिखा है, कि मलय और मोङ्गलीय जातिकी खोपड़ी, शरीर-गठन और रंग तथा अङ्ग प्रत्यङ्ग बिलकुल एक-सा है। और तो क्या, वे यदि एक तरहका पहनावा पहनें तो कौन मलय है और कौन मोङ्गलीय, इसका पता लगाना कठिन हो जाता है।

न्युगिनीवासी मलय जातिकी एक शाखाका नाम 'पापुयान' है। वालिस साहबका विश्वास है, कि पापुयान और मलयजातिके बीच कोई घनिष्ठता वा निकट सम्बन्ध नहीं है।

सुमात्राद्वीपके मध्यवर्त्ती मेनाङ्ग कावूका समतल-क्षेत्र ही मलयजातिका आदि वासस्थान था। वहांसे वे लोग धीरे धीरे विभिन्न देशोंमें फैल गये।

पहले मलय-उपद्वीप और बोर्नियो द्वीपमें आदिम असभ्य-जातिका बास था। मलयगणोंने यहां आ कर निर्विवाद अपना आधिपत्य जमाया। अधिवासिगण उन्हें लाख चेष्टा करने पर भी भगा न सके। धीरे धीरे वहां मलय-जातिकी जड़ मजबूत होती गई। अब उन्होंने दूरवर्त्ती देशोंको भी जितनेकी कामनासे कदम बढ़ाया। किन्तु वहां क्षमताशाली सुसभ्य जातिके रहनेसे उनकी गोटी जमने न पाई। केवल उन सब स्थानोंमें उपनिवेश बसा कर वे रहने लगे थे। मलय-उपद्वीपके सभी अधि-वासी मलय जातिके हैं। अलावा इसके थोड़े से पहाड़ी निग्रो भी यहां रहते हैं। मलयजातिका बास बहुतायतसे होनेके कारण इस स्थानका मलय उपद्वीप नाम पड़ा है।

प्राचीन मलय-राज्योंके राज्योपाख्यानसे जाना जाता है, कि पालेमबङ्ग नामक स्थानमें मलयजातिका आदि वासस्थान था। जातीय उन्नतिके साथ साथ उन्होंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जन्मभूमिका परित्याग कर विभिन्न स्थानोंमें एक एक छोटा राज्य बसाया। उन सब सम्प्रदायके अधिनायक राजा कहलाते थे। इस प्रकार अन्य स्थानमें उपनिवेश बसाने पर भी उनके राजवंश-प्रसङ्गके अनेक ऐतिहासिक आख्यान पाये जाते हैं। उक्त ग्रन्थसे मालूम होता है, कि यवद्वीपके साथ पालेमवङ्गका बहुत पहलेसे संस्रव था। अलावा इसके मजपहित द्वारा पालेमवाङ्ग जीते जानेसे बहुत पहले यवद्वीपवासीने जो पालेमवङ्ग जीता और वहां उपनिवेश बसाया था, उसका भी उल्लेख उक्त ग्रन्थमें देखा जाता है। मेनाङ्गकाबू, मलक्का आदि मलय-राज्यके राजवंशधरगण अपनेको पालेमवङ्ग-राजवंशसे उत्पन्न बतलाते हैं। आदिवासभूमि पालेमवङ्गमें रहनेके कारण ही प्राचीन मलयजातिने भारतीय हिन्दू और यवद्वीपवासीका आचार-व्यवहार सीखा था। यहां तक, कि उस प्राचीन युगमें मलय लोगोंने अपनी भाषामें भी संस्कृत और कवि भाषाके अनेक उपादान संग्रह कर लिये थे। उसी समयसे उन्होंने भारतीय राजतन्त्रके अनुकरण पर राज्यशासनप्रणालीको संगठित कर सुमात्राद्वीपमें एक धर्म और कर्मराज्य संस्थापन किया था।

मलयजातिके मध्य ४ प्रधान और कुछ अपेक्षाकृत छोटे छोटे थोक देखनेमें आते हैं। एतद्भिन्न दूसरी दूसरी श्रेणियां 'असभ्य' नामसे मशहूर हैं। प्रधान ४ के नाम हैं विशुद्ध 'मलय', 'यव' वासी, 'बुगि' और 'तगल'। इनमेंसे विशुद्ध मलयगण मलय-उपद्वीप, सुमात्रा और बोर्नियो द्वीपमें रहते हैं। मलय इनकी भाषा है। इनमें अरबी वर्णमाला विशेषरूपसे प्रचलित है। ये सभी मुसलमान-धर्मावलम्बी हैं। यववासी मलयजातिका वासस्थान यवद्वीप, सुमात्राका कुछ अंश, मदुरा, बाली और लम्बकका कुछ अंश है। यववासिगण भी मुसलमान-धर्मावलम्बी हैं, किन्तु बाली और लम्बकवासी मलय सबके सब हिन्दू हैं। कवि और यवनभाषा इनके मध्य प्रचलित है, किन्तु सभी देशी वर्णमालामें लिखना पढ़ना सीखते हैं। बूगी-जातिका वासस्थान सेलिविस द्वीप है। ये लोग बूगी और माकेसर भाषामें बोलचाल करते हैं। ये सभी मुसलमानधर्मावलम्बी हैं। तगल जातिका वासस्थान फिलिपाइन द्वीपपुञ्ज है। इनमेंसे अधिकांश ईसाधर्मके माननेवाले हैं। तगल इनकी मातृ भाषा है, किन्तु स्पेनीय भाषा भी काममें लाते हैं।

बट्टकवासी असभ्य मलयजाति, सुमात्रावासी विभिन्न मलयजाति, बोर्नियो द्वीपके यक (यक्ष), मलय-उपद्वीपके जकुल और उत्तर सेलिविसके सुलु, बौरू आदि द्वीपवासी अनार्य मलयजाति समझी जाती है।

पहले कहा जा चुका है, कि आकृतिमें मोङ्गोलीय जातिके साथ मलय जातिकी विशेष सदृशता है। केवल आकृतिमें ही नहीं, प्रकृतिमें भी यथेष्ट सदृशता देखी जाती है। इन दोनों जातियोंकी रीतिनीति और आचार-व्यवहार सभी समान हैं। मलयगणोंके शरीरका रंग ललाई लिये मटमैला है। शिरके बाल काले और खड़े होते हैं। ये लोग मूंछ रखते हैं, दाढ़ी बिलकुल मुंडवा लेते। शरीरका कद यूरोपवासियोंसे छोटा होता है। देह हृष्टपुष्ट होती है, पर गठन उतना सुन्दर नहीं है। अन्यान्य अङ्ग-प्रत्यङ्गके साथ तुलनामें हाथ पांव छोटे, छाती चौड़ी, मत्था गोल, ललाट चौड़ा, मुखमण्डल लम्ब, होंठ मोटे, आखें बड़ी बड़ी, कान खूब बड़े और बेढंगे, दांत बड़े बड़े और सफेद होते हैं। १५ वर्षकी उमर तक इनके बाल बच्चे देखनेमें खराब नहीं, पर उससे ऊपर बढ़नेसे वे कुरूप दिखाई देते हैं। युवतियां दो एक बच्चे जनने बाद ही कच्ची उमरमें बृद्धा-सी दिखाई देती हैं।

मलयजाति स्वभावतः लज्जाशील है, किन्तु उतनी धैर्यशील नहीं। अनेक समय ये लोग आपसमें लड़ाई झगड़ा किया करते हैं। इनका मनोगत भाव बाहरी चेहरे वा हावभावसे नहीं जाना जा सकता। ये लोग बड़े धीरभावसे दूसरेके साथ बातचीत और आहार व्यवहार करते हैं। बालकगण प्रवीणके सामने कभी भी चञ्चलता नहीं दिखलाते। उच्च श्रेणीकी मलयजाति बहुत भद्र है। गर्वित और असद्व्यवहारके प्रति क्रुद्ध हो कर उन्हें उचित दण्ड देते हैं। किन्तु इनके प्रति यदि सद्व्यवहार किया जाय, तो ये उदारता और दया दिखलाते है। ये वृद्ध पिता, माता और बड़ोंका यथायोग्य सम्मान करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलयजातिके अधिकांश लोग मुसलमानी-धर्ममें दीक्षित हुए हैं। सबसे पहले द्वीपपुञ्जकी एकिनिस जातिने १२०६ ई०में मुसलमानी धर्म ग्रहण किया। पीछे मलक्काकी मलयजातिने १२७६ ई०में, मलक्कावासीने १४७८ ई०में और सेलिबिसवासीने १४९५ ई०में उक्त धर्मको अपनाया। ये लोग जबरदस्ती मुसलमान नहीं बनाये गये है। अरबदेशीय वणिकोंने तथा अन्यान्य मुसलमान धर्म-प्रचारकोंने मलयजातिके साथ हेलमेल कर अपनी बुद्धिमत्ता और सभ्यतासे इन लोगोंके चितको आकर्षण कर लिया था। धीरे धीरे उन लोगोंके मध्य आपसमें आदानप्रदान होने लगा। इस प्रकार नाना कारणोंसे मलयजातिने स्वेच्छासे महम्मदका उपदेश अपनाया। मलय-उपद्वीपके अधिवासियोंमें कोई कोई आज भी मूर्त्तिपूजा करते देखे जाते हैं। यवद्वीपकी पहाड़ी जाति हिन्दूधर्मावलम्बी हैं, यह पहले ही कहा जा चुका है। इन लोगोंमें भी बहुतसे कुसंस्कार प्रचलित हैं। ये लोग वृक्ष, नदी, वायु आदिको भी देवता समझ कर पूजते हैं।

मलय लोगोंमें कोई देशीय साहित्य देखनेमें नहीं आता। पारस्य, अरब, श्याम आदि देशीय ग्रन्थादिको ये लोग पढ़ते हैं। इनलोगोंके मध्य केवल 'ह्यांतुया' नामक एक उपन्यासका प्रचार देखा जाता है।

मलय लोगोंके मध्य प्रचलित प्रथा,—यूरोपवासिगण सादर सम्भाषणके समय एक दूसरेका मुख चूमते हैं, मलयगण आपसमें नाक मलते हैं। अधिकांश लोग जूआ खेलना पसन्द करते हैं। मुर्गियोंकी लड़ाई इनके मध्य एक विशेष आमोदकी जिंस है। सुमात्रावासियों के मध्य गेंदका खेल प्रचलित है। मलयवासिगण अतिशय सङ्गीतप्रिय हैं। देशी वाद्ययन्त्रके मध्य लड़ाई के डंकेको छोड़ कर और कुछ भी नहीं है। इन लोगोंमें 'म्यौदं' नामक नाटक खेलते देखा जाता है।

ये लोग अपने हाथसे तरह तरहके हथियार बनाते हैं। तलवार, बर्छा, कमान आदि युद्धास्त्रको काममें लाते हैं।

मलयवासीका परिच्छद।—स्त्रीपुरुष दोनों ही 'सारों' नामक पोशाक पहनते हैं। इस सारीका घेरा ४ फुट और लंबाई ६ फुट होती है तथा यह कमरसे पैर तक लटका रहता है। जब ये घरमें रहते हैं, तब एकमात्र सारीको ही काममें लाते हैं। घरसे बाहर निकलनेके समय मलुआर (पाजामा) पहन लेते हैं। शिङ्गापुरी, सलुआ, चीन मलुआ आदि अनेक किस्मके पाजामे प्रचलित हैं। अलावा इसके बाजू अर्थात् जाकेट मलय-परिच्छदका एक प्रधान अङ्ग है। जो मक्का-तीर्थ जाते हैं वे सभी पगड़ी पहन लेते हैं।

मलय—द्वीपपुञ्ज, (Malay Archipelago) मलक्का प्रणालीके पूर्ववर्त्ती द्वीपसमूह। बङ्गोपसागरस्थ तेनसेरिम तीरवर्त्ती मारगुई द्वीपपुञ्ज भी कभी कभी इसी नामसे पुकारा जाता है।

मलय—तेनसेरिमके दक्षिण प्रान्तसे ले कर विषुवरेखा तक कमसे कम ५०० मील विस्तृत एक देशभाग। इसका परिसर ५० मीलसे १५० मील और भूपरिमाण ८३००० वर्गमील है। जङ्गलमय पर्वतमाला इसके मध्य भागसे होती हुई बहुत दूर तक चली गई है।

वर्त्तमान समयमें मलय-उपद्वीपका अधिकांश स्थान श्याम और अंगरेजोंके अधिकारमें है। इष्टइण्डिया कम्पनीने १७७५ ई०में पेनां, १७९८ ई०में वेलेस्ली प्रदेश, १८२३ ई०में शिङ्गापुर और १८२४ ई०में मलक्काको दखल किया। ये सब स्थान १८६७ ई० तक उक्त कम्पनीके ही दखलमें रहे। पीछे यह अंगरेजोंके कर्त्तृत्वाधीन एक शासनकर्त्ताके हाथ सौंपा गया। उस समय इसका नाम हुआ 'स्ट्रेट सेट्लमेण्ट'।

मलयके अधिकांश स्थानोंमें मलयजातिका वास है। इसके अतिरिक्त सोमां, यकुन आदि जातिका भी वास देखा जाता है। इनकी नाक चिपटी, होठ मोटे और बाल छोटे तथा घुँघराले होते हैं। यहां राइयत अथवा ओरङ्गलौत् नामक समुद्रवासी एक श्रेणीके लोग रहते हैं। ये लोग अकसर मछली खा कर अपना गुजारा चलाते हैं। ये नितान्त दुर्दान्त, असहिष्णु, सङ्गीतप्रिय और शिल्पकार्यमें निपुण हैं।

केदा, पेराक, सेलङ्गोर, नेग्री-सेम्बिलर और शुङ्गाई उजाङ्ग नामक राज्य उपद्वीपके मध्यवर्त्ती हैं। केदा राज्य ला नदीसे क्रियान् नदी तक विस्तृत है। केदाके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजाने २००००) रु० वार्षिक कर निरूपित करके पेनां अंगरेजोंके हाथ बेंच डाला। उक्त राजस्व अभी उनके उत्तराधिकारीको दिया जाता है।

पेराक अक्षा० ४° और देशा० ६° के मध्य विस्तृत है। सोनेको खानके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। यहांकी प्रायः सभी नदियोंमें सोना मिलता है। उपद्वीपस्थ सभी राजोंमें पेराक बड़ा है। खनिज द्रव्योंके मध्य टीन बहुतायतसे मिलता है।

सलङ्गोर राज्य अक्षा० २° ३४´ उ० और देशा० ३° ४२´ पू०के मध्य पड़ता है। समुद्रसे यह स्थान प्रायः १२० मील विस्तृत है। पहले यहांकी नदियां जलदस्युगणोंको आश्रय देती थीं।

शुङ्गाई उजोङ्गका क्षेत्रफल ७००० वर्गमील है। मलयजातिने यहांको आदिम असभ्य जातियोंको भगा कर अपना आधिपत्य जमाया है। यहां टीन काफी मिलता है। सोना और नीलकान्तमणि भी पाई जाती है।

मलयकेतु (सं० पु०) मुद्राराक्षस-वर्णित एक नायक, पर्वतकका पुत्र।

मलयगन्धिनी (सं० स्त्री०) मलयस्य गन्धः अस्त्यस्याः मलयगन्ध-इनि स्त्रियां ङीप्। उमाकी एक सखीका नाम।

मलयगिरि—पाल लहरा प्रदेशके अन्तर्गत एक पर्वत। इसका प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत मनोरम है। यह समुद्रपृष्ठसे प्रायः ३८९५ फुट ऊँचा है।

मलयगिरि (सं० पु०) पुराण-प्रसिद्ध सात कुलाचलोंमेंसे एक। इसका दूसरा नाम मलयाचल भी है। यहां चन्दन अधिक और उत्तम होता है। यह पश्चिमी घाटका वह भाग है जो मैसूरके दक्षिण और त्रावङ्कोरके पूर्वमें है। कोई कोई नीलगिरि पर्वतको भी मलयाचल कहते हैं। सूर्यदेवके उत्तरायणमें पदार्पण करने पर जब उत्तरीय भारत मलय-वायुके बहनेसे आनन्दको प्राप्त होता है उस समय हम लोग कहते हैं, कि दक्षिण-वायु मलयगिरिसे बहती आ रही है। किम्वदन्ती है, कि निम्ब अथवा अमरूदके पेड़में मलय-वायु लगनेसे वह चन्दनवृक्षमें परिणत हो जाता है। वैज्ञानिक मतसे यह दक्षिण-पूर्व मौनसून वायुमात्र है। वायु देखो।

२ मलयगिरिमें उत्पन्न चन्दन। ३ हिमालय पर्वतका वह देश जहां कामरूप और आसाम है।

मलयगिरि—एक प्रसिद्ध जैन-टीकाकार, उपदेश-पदके रचयिता हरिभद्रके शिष्य। शब्दानुशासन और उसकी वृत्ति, नन्द्यध्ययनटीका, कर्मप्रकृतिवृत्ति, राजप्रश्नीयोपाङ्गवृत्ति आदि ग्रन्थ इनके बनाये हुए मिलते हैं।

मलयगिरि (हिं० पु०) कामरूप, आसाम और दार्जिलिङ्गमें होनेवाला एक पेड़। यह दारचीनीकी जातिका बहुत ऊँचा पेड़ होता है। इसकी छाल दो अंगुलसे चार पांच अंगुल मोटी और लकड़ी भारी, पोलापन लिये सफेद रंगकी होती है। छाल और लकड़ी दोनोंसे अच्छी गन्ध आती है। लकड़ी बहुत मजबूत होती है और साफ करने पर चमकदार निकलती है। इसमें दीमक आदि कीड़े नहीं लगते। यह मेज, कुरसी, संदूक, इमारत आदि बनानेके काममें आती है। इसका बीज वसन्त ऋतुमें बोया जाता है।

मलयज (सं० पु० क्ली०) मलयात् जायते जन-ड। १ चन्दन। २ राहु। ३ मलयदेश-जातवायु। ४ रक्तचन्दन। ५ श्रीखण्डचन्दन। (त्रि०) ६ मलयजातमात्र, जो मलय पहाड़ पर होता हो।

मलयज—एक प्राचीन कवि।

मलयजरजस् (सं० क्ली०) मलयजस्य रजः। चन्दनका चूर्ण।

मलयतपना (सं० स्त्री०) भल्लातकवृक्ष।

मलयदेश (सं० पु०) देशभेद।

मलयद्रुम (सं० पु०) १ मदनवृक्ष, मैनो नामक पेंड़। २ चन्दन।

मलयध्वज (सं० पु०) राजभेद।

"उपयेमे वीर्यपणां वैदर्भीं मलयध्वजः।"

(भागवत ४।२८।२९)

मलयपवन (सं० पु०) मलयोद्भव वायु, दक्षिण दिशाकी वायु। वसन्तके प्रारम्भमें ही इस वायुका बहना आरंभ होता है। दक्षिणस्थ नीलगिररिके चन्दनादि वृक्षकी सुगन्ध लेती हुई बहता है, इसीसे इसको मलय-पवन कहते हैं। नीलगिरिका दूसरा नाम मलयपर्वत है। कोई कोई पश्चिम घाट पर्वतको भी मलयाचल कहते हैं।

मलयपर्वत (सं० पु०) मलयाचल, कुलपर्वत।

मलयप्रभ (सं० पु०) राजभेद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलयप्रभसूरि—एक जैनसूरि। इन्होंने मानतुङ्गसूरिकृत सिद्धजयन्तकी टीका लिखी है। उक्त टीका १२६० विक्रम-संवत्में रची गई थी।

मलयभूभृत् (सं० पु०) मलयपर्वत।

मलयभूमि (सं० स्त्री०) हिमालय-पर्वतस्थ स्थानभेद, हिमालयके एक प्रदेशका नाम।

मलयराज—एक प्राचीन कवि।

मलयवाट (सं० पु०) मलयानिल, मलय पवतकी ओरसे आनेवाली वायु।

मलयवासिनी (सं० स्त्री०) दुर्गा। (हरिवंश १०।२४५)

मलया (सं० स्त्री०) मल-कयन्-टाप्। १ निवृता, निसोथ। २ सोमराजी। ३ वकुची।

मलयागिरी (सं० पु०) मलयगिरि देखो।

मलयाचल—बम्बई प्रदेशके सह्याद्रि-पर्वतका एक अंश। स्कन्दपुराणके मलयाचल-खण्डमें यहांके देवतीर्थादिका विषय सविस्तार लिखा है।

मलयाचल (सं० पु०) मलयश्चासावचलश्चेति। मलय पर्वत।

"पुन्नागनागकरवीरकृतोपकारे
तस्मिन् गृहे कमलरेणवरूणे शयीत्।
यत्राहतानिलविकम्पितपुष्पदाम्नि
हेमन्तविन्ध्यहिमवन्मलयाचलानाम् ॥"
(सुश्रुत उत्तरत० ४७ अ०)

मलयाद्रि (सं० पु०) मलयपवत।

मलयानन्दसरस्वती—एक विख्यात पण्डित। आप शङ्कराचार्यके मतपोषक थे और आचार्यरूपमें उक्त मतका प्रचार कर गये हैं।

मलयानिल (सं० पु०) मलयस्य अनिलः। १ वसन्तकालीन वायु, वसन्तकालाकी हवा। पर्याय—वासन्त।

"स एष सुरभिः कालः स एव मलयानिलः।
सैवेयमवला किन्तु मनोऽन्यदिव दृश्यते ॥"
(साहित्यदर्पण ३।१२६)

२ सुगन्धित वायु। ३ मलयपवैतकी ओरसे आनेवाली वायु, दक्षिणको वायु।

मलयालम—भारतवर्षके दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित एक प्रदेश। यह चन्द्रगिरिसे कुमारिका अन्तरीप तक विस्तृत है। इसे केरल भी कहते हैं। केरल देखो।

हिन्दूशास्त्रमें लिखा है, कि परशुरामने समुद्रसे इस स्थानका उद्धार किया था। पीछे भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न राजाने इस पर अधिकार जमाया। कालीकटके अधिपति, कानपुरकी बेगम, त्रिवाङ्कोरके राजा, पुर्त्तगीज, ओलन्दाज, फरासी और टीपू सुलतान,—ये सब क्रमशः केरलके अधिश्वर हुए थे। वर्त्तमान समयमें यह एक एकमात्र वृटिश-गवर्मेण्टके अधीन है। मलयालमके प्रायः सभी स्थान पर्वतमालासे परिपूर्ण है। बीच बीचमें उपत्यका भी देखी जाती है। तामिल भाषामें मलय शब्दका अर्थ पर्वत और अलम शब्दका अर्थ उपत्यका है। इसी कारण इसका तामिल नाम 'मलयालम्' हुआ है। इसे केरल भी कहते हैं। केरल नामकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता, पर कोई कोई 'केरम' अर्थात् नारिकेल (नारियल) शब्दसे केरल नामकी उत्पत्ति बतलाते हैं। फिर किसी किसी का कहना है, कि केरल नामक यहां एक प्रबल राजा राज्य करते थे। शायद उन्हींके नामानुसार इस प्रदेशका नाम केरल रखा गया होगा।

यहांके प्रधान अधिवासी नायर जातिके है। ये लोग मलयाल-शूद्र नामसे भी प्रसिद्ध हैं। मलयालम इनकी भाषा है। किन्तु तामिल भाषाका भी प्रचार देखा जाता है। भारतके अन्यान्य प्रदेशोंसे भी आर्य और अनार्य जातिके नाना सम्प्रदाय इस स्थानमें आ कर बस गये हैं। ये लोग साधारणतः कनाड़ी, गुजराती, हिन्दु, स्तानी आदिमें बोलचाल करते हैं एतद्भिन्न यहां मापिल्ला नाम एक श्रेणीका मुसलमान भी रहता है। अरबदेशसे जिन सब मुसलमानोंने पहले मलबारमें उपनिवेश बसाया था, उन्हींके औरस और मलबारी रमणीके गर्भसे जो सन्तान उत्पन्न हुई वही 'मापिल्ला' कहलाई। मा का अर्थ माता और पिल्लाका अर्थ पुत्र है; अतः मापिल्ल का अर्थ मा का पुत्र होता है।

मापिल्ला जाति बहुत बलिष्ठ और साहसी है।

मलयालि—दाक्षिणात्यवासी एक पहाड़ी जाति। खेतीबारी और पशुपालन ही इनकी एकमात्र उपजीविका है। बहुतेरे शेवारय पहाड़के उपत्यकास्थित ग्रामोंमें रहते हैं। सुना जाता है, कि ये लोग १३वीं सदीमें काञ्चीपुरसे यहां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आ कर बस गये हैं। ये सबके सब हिन्दूधर्मावलम्बी हैं और तामिल भाषा बोलते हैं।

मलयाली (हिं० पु०) १ मलबार देशका, मलाबार देश-सम्बन्धी। २ मलाबार देशमें उत्पन्न। (स्त्री०) ३ मलाबार देशकी भाषा।

मलयू (सं० स्त्री०) मलपू-पृषोदरादित्वात् पस्य यत्वं। मलपू, कद्दूमर।

मलयेन्दुसूरि—एक जैन सूरि। इन्होंने महेन्द्रसूरि-विरचित मन्त्रराज नामक ग्रन्थकी टीका और यन्त्रराजरचना नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

मलयोद्भव (सं० क्ली०) मलयः उद्भव उत्पत्तिकारणं यस्य। चन्दन।

मलर (सं० पु०) बौद्धमतानुसार अति ऊर्द्ध्व संख्या।

मलरुचि (सं० त्रि०) दूषित रुचिका, पापी।

मलरोधक (सं० त्रि०) जो मलको रोके, कब्जियत करनेवाला।

मलरोधन (सं० क्ली०) विष्टम्भ, कब्जियत।

मलवदेश (सं० पु०) मालवदेश। मालव देखो।

मलवत् (सं० त्रि०) मल अस्त्यर्थे मतुप्, मस्य वः। मलयुक्त।

मलवद्वासस् (सं० त्रि०) मलवद्वासो यस्य। १ मलिन-वस्त्रविशिष्ट, मैला कपड़ावाला। २ ऋतुमती स्त्री, रजस्वला नारी।

मलवली—बम्बईप्रदेशका एक ग्राम। यहां प्राचीरवेष्टित एक मिट्टीका दुर्ग था। जिस समय अंगरेजों और टीपू सुलतानसे युद्ध चल रहा था उस समय यहां टीपूकी सेना रहती थी।

मलवर्त्तिका—प्राच्य जनपदभेद। भिन्न भिन्न पुराणमें इसका भिन्न भिन्न नाम देखा जाता है, यथा—वलवन्तिका, मानवर्त्तिका, नवदन्तिका आदि।

मलवा (हिं० पु०) बरसातमें होनेवाला हावरको जातिका एक पेड़। यह बहुत ऊंचा नहीं होता। इसकी लकड़ी चिकनी और नारंगी रंगकी होती है और मेज, कुर्सी आदि बनानेके काममें आता है।

मलवाना (हिं० क्रि०) मलनेका प्रेरणार्थक रूप, मलनेका काम दूसरेसे कराना।

मलवासिक—दक्षिण-भारतके अन्तर्गत एक प्राचीन जनपद। यह वर्त्तमान कटलाई नामक स्थानके पास है।

मलवाहिन् (सं० त्रि०) मल-वह-णिनि मलवहनकारी, मैला होनेवाला।

मलविनाशिनी (सं० स्त्री०) मलं विनाशयतीति विनश णिच् णिनि स्त्रियां ङीप्। १ शङ्खपुष्पी। २ क्षार।

मलविशोधन (सं० क्ली०) १ मलपरिष्कारकरण, मैल साफ करना। २ स्वर्ण आदिकी खाद देना।

मलविसर्ज्जन (सं० क्ली०) मलस्य विसर्ज्जनं। मलत्याग, पाखाना फिरना।

मलवेग (सं० पु०) अतीसार।

मलशुद्धि (सं० स्त्री०) मलशोधन, पेट साफ करना।

मलशैत्य (सं० क्ली०) श्लेष्मज रोग।

मलसा (हिं० पु०) घी रखनेका कुप्पा।

मलसी (हिं० स्त्री०) मिट्टीका वर्त्तन जिसमें प्रायः मुसलमान खाना पकाते हैं।

मलसूत (अ० पु०) भारी बोझ उठा कर गाड़ी वा नाव आदि पर लादनेका यन्त्र, दमकला।

मलहन (सं० स्त्री०) रुद्राश्वकी कन्या।

मलहन्ता (सं० पु०) मलहन्तृ देखो।

मलहन्तृ (सं० पु०) मलं हन्तीति हन तृच्। शालमली-कन्द, सेमलका मूसल।

मलहम (अ० पु०) ओषधियोंके योगसे बना हुआ चिकना चपकोला लेप जो घाव, फोड़े आदि पर लगाया जाता है, मरहम।

मलहर (सं० पु०) जंपालवृक्ष, जमालका पेड़।

मलहा (सं० स्त्री०) हरिवंशके अनुसार राजा रौद्राश्वकी कन्याका नाम।

मलहारक (सं० त्रि०) १ पापहारक, पाप हरनेवाला।

"अक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम्।
तमाहुः सर्वलोकस्य समग्रमलहारकम्॥" (मनु ८।३०८)

२ मेहतर, भंगी।

मला (सं० स्त्री०) मल-अच्-टाप्। १ भूम्यामलकी, भुइं आंवला। २ आम्रहरिद्रा, आंबाकी हलदी। ३ नाभिनाला, नाभिकी नाड़ी। ४ चमड़ा। ५ चमड़ेसे बना हुआ पदार्थ। ६ कसकुट। ७ बिच्छूका डंक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलाई (हिं० स्त्री०) १ दूधकी साड़ी। इसके बनानेकी रीति इस प्रकार है :—जब दूध धीमी आंचसे गाढ़ा हो जाता है तब उसके सार भागकी एक हलकी तह जमती जाती है। यही तह बार बार जमनेसे मोटी हो जाती है, इसीको मलाई कहते हैं। यह मुलायम और चिकनाईसे भरी होती है। जमाए जाने पर इसी मलाईको मथ कर मसका निकाला जाता है।

२ सार तत्त्व, रस। ३ एक रंगका नाम जो बहुत हलका बादामी होता है। ४ मलनेकी क्रिया या भाव। ५ मलनेकी मजदूरी।

मलाकर्षिन् (सं० पु०) मलं विष्ठां आकर्षति स्थानात् स्थानान्तरं नयति आ-कृष-णिनि। भंगी, मेहतर।

मलाकर्षी (सं० पु०) मलाकर्षिन् देखो।

मलाका (सं० स्त्री०) मलेन मनोमालिन्येन अकति कुटिलं गच्छतीति अक-अच्, स्त्रियां टाप्। १ कामिनी-स्त्री। २ वेश्या। ३ हस्तिनी, हथिनी। ४ दूती।

मलाख्यकिट्ट (सं० क्ली०) मल।

मलाजातक (सं० पु०) गंधमार्जार, गंधबिलाव।

मलाट (हिं० पु०) एक प्रकारका मोटा घटिया कागज। यह प्रायः खाकी रंगका होता है और कागजोंके बंडल बांधने या इसी प्रकारके और कामोंमें आता है।

मलाधिक्य (सं० क्ली०) श्लेष्मज रोग। इस रोगमें बहुत दस्त होता है।

मलान (हिं० वि०) म्लान देखो।

मलानि (हिं० स्त्री०) म्लानि देखो।

मलापकलण (सं० क्ली०) १ पापमोचन। २ मल साफ करना।

मलापह (सं० त्रि०) १ मलनाशक, मल दूर करनेवाला। २ पापनाशक।

मलापहा (सं० स्त्री०, मलं अपहन्तीति अप-हन-ड स्त्रियां टाप्। १ एक नदी। २ कुलथीका अंजन। ३ वनकुलथी।

मलाबार (सं० पु०) भारतके दक्षिणी प्रान्तका देश। मलबार देखो।

मलाभ (सं० त्रि०) कुत्सित, कदर्य।

मलामत (अ० स्त्री०) १ लानत, दुतकार। २ किसी पदार्थमेंका निकृष्ट या खराब अंश।

मलामती (फा० वि०) १ जो मलामत करनेयोग्य हो, दुतकारने या फटकारने योग्य। २ घृणित, जघन्य।

मलायन (सं० क्ली०) मलद्वार, गुदा।

मलार (हिं० पु०) संगीत-शास्त्रानुसार एक रागका नाम। मल्लार देखो।

मलारि (सं० पु०) मलस्य अरिर्नाशको रेचकत्वात्। क्षार।

मलारी (हिं० स्त्री०) वसन्तरागकी एक रागिनीका नाम। मल्लारी देखो।

मलाल (अ० पु०) १ दुःख, रंज। २ उदासीनता, उदासी।

मलावरोध (सं० पु०) मलविष्टम्भ।

मलावह (सं० क्ली०) मलं आवहतीति आ-वह-अच्।

मनुके अनुसार पापोंकी एक कोटि। इसमें कृमि-कीटों और पक्षियोंकी हत्या, मद्यके साथ एक पात्रमें लाये हुए पदार्थोंको खाना, फल, ईंधन और फूलकी चोरी और अभैर्य सम्मिलित हैं।

"कृमिकीटवयो हत्यामद्यानुगतभोजनम्।
फलेधः कुसुमस्तेयमधैर्यञ्च मलावहम्॥" (मनु० ११।७१)

मलाशय (सं० पु०) उदर, मलस्थान।

मलि (सं० स्त्री०) १ अधिकार। २ अधोनता।

मलिक (अ० पु०) १ राजा। २ अधीश्वर। ३ मुसल-मानोंकी एक जातिका नाम। इस जातिके लोग मध्यम श्रेणीके माने जाते हैं और खेती-बारी करके अपना गुजारा चलाते हैं। ४ किन्नरों और कथकोंके एक वर्ग-की उपाधि।

मलिका (अ० स्त्री०) १ रानी। २ अधीश्वरी। ३ मल्लिका देखो।

मलित (हिं० पु०) एक प्रकारकी छोटी कूंची। इससे सुनार नक्काशीके गहनोंको साफ करते हैं।

मलिन (सं० क्ली०) मलते धारयतीति मल (बहुलमन्य-त्रापि। उण् २।४९) इति इनच्, यद्वा (जोत्स्ना तमिस्रेति। पा ५।२।११४) इत्यत्र मलशब्दादिनजीमसचौ प्रत्ययौ निपात्येते इति काशिकोक्त्या इनच्। १ मलयुक्त वस्तु, मैली चीजें। २ एक प्रकारके साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं, पाशुपत। ३ मट्ठा। ४ टङ्कण, सोहागा। ५ दोष, पाप। ६ कृष्णागुरुकाष्ठ, काला अगर। ७ सद्यः-प्रसूत-गोदुग्ध, गौका ताजा दूध। ८ हंस। ९ दस्ता,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूठ। १० रत्नोंकी चमक और रंगका फीका तथा धुंधला होना। रत्नोंके लिये यह एक दोष समझा जाता है।

(त्रि०) ११ मलयुक्त, मैला। १२ दूषित, खराब। १३ जिसका रंग खराब हो गया हो, मटमैला। १४ पापात्मा, पापी। १५ धीमा, फीका। १६ विषण्ण, मलिन, उदासीन।

मलिनता (सं० स्त्री०) मलिन होनेका भाव, मैलापन।

मलिनत्व (सं० क्ली०) मलिनस्य भावः त्व। मलिनता, मालिन्य।

मलिनमुख (सं० पु०) मलिनं मुखं अग्रभागो यस्य। १ अग्नि, आग। २ गो-लांगुल, बैलकी पूंछ। ३ प्रेत। (त्रि०) मलिनं दूषितं मुखं यस्य। ४ क्रूर। ५ खल। ६ म्लानवदन, जिसका मुंह उदास हो।

मलिना (सं० स्त्री०) मलिन-टाप्। १ रजस्वला स्त्री। २ शर्करा, लाल खांड़। ३ वृहती, छोटी भटकटैया।

मलिनाई (हिं० स्त्री०) मलिनता, मैलापन।

मलिनाम्बु (सं० क्ली०) मलिनं कृष्णवर्णं अम्बु। १ मसी, स्याही। २ मलिन जल, गदला पानी।

मलिनास्य (सं० त्रि०) मलिनं दूषितं आस्यं यस्य। १ खल, दुष्ट। २ म्लान वदन, जिसका मुंह उदास हो।

मलिनिमन् (सं० त्रि०) मलिन-इमनिच्। १ अतिशय मलिन, बहुत मैला। २ मलिनता, मैलापन।

मलिनी (सं० स्त्री०) मलमस्या अस्तीति मल-इनि स्त्रियां ङीप्। १ रजस्वला स्त्री। २ म्लान, संकुचिता।

मलिनीकरण (सं० क्ली०) अमलिनं मलिनं करणं अभूततद्भावे च्विः ततो दीर्घः। १ निर्मल वस्तुको मैला करना। २ पापोंकी एक कोटिका नाम।

मलिम्लुच (सं० पु०) मली सन् म्लोचतीति म्लुच् गत्यां क। १ मलमास। जिस समय रवि दर्शान्तमासको अतिक्रम कर (दो अमावस्या जिस मासमें पड़ी है) मासान्तरमें राश्यन्तर संयोगको प्राप्त होते हैं उसे मलिम्लुच वा मलमास कहते हैं। इन दोनों मासोंमें पहला मास अशुद्ध और दूसरा शुद्ध मास है। मलमास देखो।

२ अग्नि, आग। ३ चौर, चोर। ४ वायु, हवा। ५ पञ्चयज्ञ न करनेवाला पुरुष।

मलिया (हिं० स्त्री०) १ मिट्टीके एक बरतनका नाम। इसका मुंह तंग होता है। इसमें घी, दूध, दही आदि पदार्थ रखे जाते हैं। २ गोटीके खेलमें वह त्रिकोण चक्र जो चौकके दोनों ओर बीचमें बना रहता है। इस खेलका नाम अठारह गोटी है। दो आदमी मिल कर यह खेल खेलते हैं। प्रत्येक पक्षमें अठारह गोटियां होती हैं। इनमें छः गोटियां मलियामें और बाकी बारह ढाई पंक्तियोंमें रखी जाती हैं। सिर्फ बीचका बिंदु खाली रहता है। गोटियां एक बिंदुसे दूसरे बिंदु तक लकीरोंके मार्गसे चलती हैं। जब एक गोटी दूसरी गोटीको पार करती है, तब वह पहली गोटी मानों मर जाती है। दोनों ओरकी सब गोटियां जब मलियासे चौकमें निकल आती हैं, तब यदि किसी पक्षवाला 'मलियामेट' शब्द कह दे, तो दोनों ओरकी मलिया मिटा दी जाती है और फिर गोटियां चौकमें ही रहती हैं। परन्तु यदि कोई मलियामेट न कहे तो गोटियां बराबर मलियामें आती जाती रहती हैं। २ चक्कर, घेरा।

मलियामेट (हिं० पु०) सत्यानाश, तहस नहस।

मलिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन मलिनं मल-इष्ठन्। १ अतिशय मलिन, बहुत अधिक मैला कुचैला।

मलिस (हिं० स्त्री०) सुनारोंका एक। औजार इसका आकार छेनी-सा होता है और इससे हंसुलीकी गिरह वा घुंड़ियां उभारी जाती हैं।

मलीदा (फा० पु०) १ चूरमा। २ एक प्रकारका ऊनी वस्त्र। यह बहुत मुलायम और गरम होता है। यह बुने जानेके बाद मल कर गफ और मुलायम बनाया जाता है। काश्मीर और पंजाबमें यह अधिकतासे तैयार होता है और वहींसे दूर दूर देशोंमें भेजा जाता है।

मलीन (हिं० वि०) १ मैला, अस्वच्छ। २ उदास।

मलीनता (हिं० स्त्री०) मलिनता देखो।

मलीमस (सं० क्ली०) मलमस्यास्तीति मल (ज्योत्स्नातमिस्रेति। पा ५।२।१४४) इति ईमसच् प्रत्ययेन निपातितः। १ लौह, लोहा। २ पुष्पकासीस, पीले रंगका कसीस। ३ पाप, दोष। (त्रि०) ४ मलिन, मैला। ५ कृष्णवर्ण, काला। ६ मलयुक्त, पापी।

मलीयस् (सं० स्त्री०) अतिशयेन मलिनः मल ईयसुन्। अत्यन्त मलिन, बहुत अधिक मैला कुचैला।

मलुक (हिं० स्त्री०) १ उदर, पेट। २ एक प्रकारका पशु।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलू (हिं० स्त्री०) १ मलघन नामक कचनारकी छाल। यह बहुत दृढ़ होती है और रँगने पर कूट कर उनमें मिलाई जाती है। २ मलघन नामक वृक्ष।

मलूक (सं० पु०) १ एक प्रकारका कीड़ा। २ एक प्रकारका पक्षी। ३ बौद्ध शास्त्रानुसार एक संख्यास्थान। ४ अमलूक देखो।

मलूक (हिं० वि०) सुन्दर, मनोहर।

मलूकदास—कड़ामानिकपुरके रहनेवाले एक भाषाके कवि। १८८५ सम्वत्में इनका जन्म हुआ था। इनकी [illegible] ललित होती थी।

में सराबोर हुआ। [illegible] देखो।

उत्साहसे अखाड़ेमें उतर अ[illegible]

राम भी मललदुन्दुभि सुन क[illegible]लनेवाला एक किस्म[illegible] [illegible]वास था, कि वस्तुओंके [illegible]से वायुमें विष फैलता है। [illegible] सविराम अर्थात् अँतरिया, तिजरा, [illegible]थियो आदि ज्वर, जो मलेरियाके अन्तर्गत हैं, फैलते हैं। परन्तु अब उन लोगोंने यह स्थिर किया है, कि मच्छड़ोंके काटनेसे मलेरियाका विष मनुष्योंके रक्तमें पहुंचता है। इसीसे सविराम ज्वरका रोग उत्पन्न होता है।

मलैसीजी—जयपुरके प्राचीन राजा। इनके पिताका नाम था पजोनी। महाराज पजोनीने कन्नोजके स्वयम्वरके समय पृथ्वीराजकी ओरसे युद्ध किया था। पजोनी और मलैसी ये दोनों उस युद्धमें शामिल थे। पीछे मलैसीजी आंबेरकी गद्दीके अधीश्वर हुए।

मलोला (अ० पु०) १ मानसिक व्यथा, दुःख। २ वह इच्छा जो उमड़ उमड़ कर मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे, अरमान।

मल्ल—देशभेद, मल्लजातिकी वासभूमि। महाभारतके भीष्मपर्वमें इस प्राचीन जनपदका उल्लेख देखनेमें आता है। यह सुप्राचीन मल्लराज्य अभी मालभूमि कहलाता है। कोई कोई विराटराज्यको मल्लराज्य बतलाते हैं।

मल्ल—एक प्राचीन जातिका नाम। इस जातिके लोग द्वन्द्वयुद्धमें बड़े निपुण होते थे, इसीलिये द्वन्द्वयुद्धका नाम मल्लयुद्ध और कुश्ती लड़नेवालेका नाम मल्ल पड़ गया है। महाभारतमें मल्लजाति, उनके राजा और देशका उल्लेख आया है। भारतवर्षके बहुतसे स्थानोंमें अर्थात् मूलतान (मल्ल-स्थान), मालव, मालभूमि आदिमें (मल्ल) मल्ल शब्द विकृत रूपमें मिलता है। त्रिपिटकसे कुशनगरमें मल्लोंके राज्यका होना पाया जाता है। मनुस्मृतिमें मल्लोंकी लिछिवी आदिके साथ संस्कारच्युत वा व्रात्य क्षत्रिय लिखा है। परन्तु मल्ल आदि क्षत्रिय जातियां बौद्ध मतावलम्बी हो गई थीं। त्रिपिटकमें इसका उल्लेख स्थान स्थान पर मिलता है। इससे साफ साफ मालूम होता है, कि ये लोग ब्राह्मणोंके अधिकारसे बाहर और व्रात्य थे और शायद इसीलिये स्मृतियोंमें इन्हें व्रात्य कहा गया है। नेपाल और बांकुड़ा जिलेके विष्णुपुर राज्यमें एक समय ऐसे महावीर्यशाली मल्लराजाओंका अच्छा प्रादुर्भाव था। मथुरापति कंसकी सभामें भी सैकड़ों मल्ल रहते थे। भगवान् श्रीकृष्णने मथुरा आ कर इन देशविख्यात मल्लगणोंका बल चूर चूर कर दिया था।

नेपाल, विष्णुपुर और मल्लयुद्ध देखो।

मल्ल—हिन्दीके प्रसिद्ध कवि। ये खींची असोचरवालेके यहां रहते थे। इनकी तोष कविकी श्रेणीमें गिनती की गई है। इनकी कविता बड़ी ललित होती थी, उदाहरणार्थ एक नीचे देते हैं।

आजु महादीननको सूखि गो दयाको सिन्धु
आजु ही गरीबनको सब गथ लूटि गो।
आजु दुजराजनको सकल अकाज भयो
आजु महराजनको धीरजहु छूटि गो॥
मल्ल कहै आजु सब मंगन अनाथ भये
आजु ही अनाथनको करम सो फूटि गो
भूप भगवन्त सुरधामको पयान कियो
आजु कविगनको कलप तरु टूटि गो॥

मल्ल (सं० पु०) मल्लते धरति बलमिति मल्ल-अच्। १ बाहुयोधी, पहलवान। २ पात्र, बरतन। ३ कपोल, गाल। ४ मत्स्यभेद, एक प्रकारकी मछली। ५ दीप। ६ वर्णसङ्कर जातिविशेष। मनुके मतसे यह जाति व्रात्य क्षत्रिय और सवर्णा स्त्रीसे उत्पन्न हुई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"झल्लो मल्लश्च राजन्यात् व्रात्यान्निच्छिविरेव च।
नटश्च करणश्चैव खसो द्रविड़ एव च॥"
(मनु १।२२)

'क्षत्रियाद्व्रात्यात् सवर्णायां झल्लमल्ललिच्छिविनटकरण-खसद्रविड़ाख्या जायन्ते' (कुल्लूक)

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लेट पिता और तीवर मातासे इस जातिकी उत्पत्ति लिखा है। पराशरके मतानुसार तन्तुवायु माता और कुन्दकार पितासे इस जातिकी उत्पत्ति है।

७ देशभेद। (भारत विराटप० १ अ०)

मल्लक—एक प्राचीन कवि।

मल्लक—विन्ध्यपर्वतके आस पास बसनेवाली एक प्राचीन जाति। (महाभारत भीष्म० ६।४३)

मल्लक (सं० पु०) मल्ल-इव-मल्ल-कन्, दृढ़त्वादस्य तथात्वं, यद्वा मल्ल धारणे ण्वुल्। १ दन्त, दांत। २ ब्राह्मणविशेष।

"विलोक्य वैकल्यहतौ वद्धौ तौ स्वामिनौ तथा।
कृष्णासि धेनुरुत्तस्थौ द्विजन्मा मल्लकाविधः॥"
(राजतर० ८।२३३०)

(पु० स्त्री०) मल्लते धारयति प्रदीपमिति मल्ल-ण्वुल्। ४ नारियलके छिलकेका बना हुआ पात्र। ५ दीपाधार, दीवट, चिरागदान। ६ प्रदीप, दीया। ७ बरतन, पात्र। ८ डब्बे या संपुटका पल्ला। ९ मल्लिका, एक प्रकारका बेला।

मल्लकसेन (मल्लनारायण)—कूचविहारके एक राजा। मुगल-बादशाह अकबरशाहके ये समसामयिक थे। इन्होंने मुगलसेनापति खानजहानसे हार खा कर दिल्लीश्वरको ५४ हाथी और राजकर भेंटमें दिये थे।

मल्लकूट—प्राचीन ग्रामविशेष। (श्रीहर्ष ३९ अ०)

मल्लक्रीड़ा (सं० स्त्री०) मल्लानां क्रीड़ा। मल्लयुद्ध, कुश्ती।

मल्लखंभ (हिं० पु०) मलखभ देखो।

मल्लखण्ड (सं० पु०) गुड़, शक्कर।

मल्लघटी (सं० स्त्री०) १ नृत्यकी एक क्रिया। २ नाट्य-रंगविशेष।

मल्लचन्द्र—एक प्राचीन राजा।

मल्लज (सं० क्ली०) मल्ले तदाख्ये देशे जायते इति जन-ड। मरिच, काली मिर्च।

मल्लजीघोड़पडे—एक महाराष्ट्र-सरदार।

मल्लजी भोंसले (मालोजी)—परम प्रसिद्ध महाराष्ट्र-केशरी शिवाजीके पितामह। इनके पिता बाबाजी भोंसले 'पटेल' गिरीमें नियुक्त थे। दौलताबादके निकट बेरुल (इलोरा) नामक इनका आदिस्थान है।

उम्र बढ़नेके साथ साथ उनकी बुद्धि भी बढ़ने लगी। पिता पुत्रकी ऐसी परिमार्जित बुद्धि तथा कार्यकुशलता देख कर उनको बहुत मानते थे। इसके बाद फलटनादियां देशमुख जगपाल राव नायक निम्बल्कर, तब यदि किसी बाईके साथ आपका विवाहशब्द कह दे, तो दोनों ओरकी में नये भावका सञ्चार होता है और फिर गोटियां चौकमें ही अन्त समय तक कार्यक्षेत्रमें विचरते रहे। सन् १५७७ ई०में अपनी २५ वर्षकी उम्रमें मूर्त्तजा निजामशाहके घुड़सवार सेनाके अध्यक्ष-पद पर नियुक्त हुए।

आप एक कट्टर हिन्दू थे। बहुत दिनों तक जब सन्तान आदि नहीं हुई, तब पुत्रप्राप्तिके लिये महादेव तथा कुलदेवीकी आराधना करने लगे। अन्तमें अहमदनगर-वासी शाह शरीफ नामक एक मुसलमान फकीर उनके पुत्रके लिये खुदासे 'दुआ' करने लगा। इस पर दीपाबाई गर्भवती हुईं। सन् १५९८ ई०में इस गर्भसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस पुत्रप्राप्ति पर आनन्दका ठिकाना न रहा। मल्लजीने उस मुसलमान फकीरकी इज्जत करनेके लिये अपने इस नवजात शिशुका नाम उस फकीरके नाम पर शाह रखा।

इस समय मल्लजी 'शिलेदार' पद पर नियुक्त हुए और राजकार्यमें बहुत उद्योग करने लगे। धीरे धीरे इनके सम्मान तथा ऐश्वर्यकी वृद्धि होने लगी। उनके प्रतिपालक यादवराव इस समृद्धिको देख इनसे ईर्षा करने लगे।

सन् १५९९ ई०में होलीके समय अपने पांच वर्षके बालकको ले कर निमन्त्रण पा कर यादवरावके घर गये। यादवराव शाहजीके रूपलावण्य पर मुग्ध हो चुके थे। उन्होंने दर्शक-मण्डलीके समक्ष सुलक्षण-सम्पन्न शाहजीको बगलमें अपनी सुशोभना कन्याको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बैठा कर कहा था, 'पुत्रि ! क्या तुम इस लड़केको पति स्वीकार करना चाहती हो ? प्रश्न क्या था ? यह उनका अपनी पुत्रीका विवाह-प्रस्ताव था। मल्लजीने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। किन्तु अन्तमें यादवरावने इनकार कर दिया।

जो हो, इस पर भी यह निरुद्यत नहीं हुए। किन्तु उन्होंने अपने पुत्रका विवाह उक्त रावकी पुत्रीके साथ देना निश्चय कर लिया था। इस समय निजाम-विराजमान यथासमय इनको अत्यन्त धन-सम्पत्ति हाथ लग दुन्दुभिको श्रवण यह भाव उत्पन्न हुआ, कि कहीं में सरावोर हुआ। सुन्दर करने लगें, इससे अपने धन- उत्साहसे अखाड़े में उतर आये। वहां आ कर इन्होंने राम भी मल्लदुन्दुभि सुन कर युद्ध ह धन दिया है। वाने लगे, मन्दिर बनवाने लगे। इन्होंने धार्मिक कार्यों में बहुत धन खर्च किया। इतने कार्यों में उलझे रहने पर भी यह अपने उद्देश-पथसे विचलित नहीं हुए। अपने पुत्रका विवाह और घुड़सवार-सेनाकी वृद्धि इनका उद्देश्य था।

निजामशाहीके जैसा ऋणग्रस्त राज्यमें किसी अर्थवानका ही प्राधान्य रहना चाहिये। अतएव पांचहजारी घुड़सवार-सैन्यका अध्यक्ष-पद और राजाकी उपाधि प्राप्त करनेमें इनको अधिक प्रयास न करना पड़ा। धीरे धीरे इन्हें सबनेरी, चाकन, पूना, सूवा आदि जिलोंमें जागीर मिल गई और इन जिलोंके अध्यक्ष भी नियुक्त हुए। सुलतानकी सिफारिससे यादवरावको अपनी पुत्रीका विवाह मल्लजीके पुत्र शाहजीसे करने पर राजी होना पड़ा। सन् १६०४ ई०में स्वयं सुलतानने अपनी उपस्थितिमें यह विवाह-कार्य सम्पन्न कराया। मल्लजी जो धनागार छोड़ गये थे, उसीसे शिवाजीने अपने समयमें इतना राज्यविस्तार किया था। शिवाजी देखो।

मल्लट—मेवारराज्यके गुहिलवंशीय एक राजा।

मल्लणगुब्बि—वीरशैवामृतपुराण नामक ग्रन्थके प्रणेता।

मल्लतरु (सं० पु०) पियालवृक्ष, चिरौंजीका पेड़।

मल्लताल (सं० पु०) सङ्गीत शास्त्रानुसार एक तालका नाम। इसमें पहले चार लघु और फिर दो द्रुतमात्राएं होती हैं। यह तालके मुख्य आठ भेदोंमेंसे एक माना जाता है।

मल्लतूर्य (सं० क्ली०) मल्लेर्वाद्यमानं तूर्यं मल्लाय तूर्यमिति वा। वाद्यविशेष, लड़ाईका डंका। पर्याय—महास्वन।

मल्लदेव (सं० पु०) कालज्ञान नामक वैद्यकग्रन्थके रचयिता।

मल्लदेव—१ दाक्षिणात्यके चेरराज्यके एक राजा।

२ एक प्राचीन हिन्दू-राजा, उमङ्गाधिपति राजा अभयदेवके पुत्र। ये चन्द्रवंशीय राजा थे।

मल्लदेव—मल्लप्रकाश नामक वैद्यकग्रन्थके प्रणेता। एतद्भिन्न कालज्ञान और तृतीयज्वराष्टक नामक दो खण्डग्रन्थ इनके बनाये हुए मिलते हैं।

मल्लद्वादशी (सं० स्त्री०) व्रतविशेष।

मल्लनाग (सं० पु०) नागो हस्तीव मल्लः, पूर्वनिपातः। १ कामसूत्रके प्रणेता वात्स्यायन मुनि। मल्लो बलीयान् नागः। २ अभ्रमातङ्ग, इन्द्रके हाथीका नाम। मल्लोनाग इव। ३ लेखदार, चिट्ठीरसां। ४ कामशास्त्रविशेष।

मल्लपुर (सं० क्ली०) नगरभेद, मल्लपुर।

मल्लपुर—मान्द्राजप्रदेशके उत्तर-सरकारके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यहांके देवतीर्थादिका सविशेष परिचय ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत मल्लापुर-माहात्म्यमें दिया गया है।

मल्लभट्ट—१ एक प्राचीन वैयाकरण। मल्लिनाथने नैषधचरितमें इनका मत उद्धृत किया है। भट्टमल्ल देखो।

२ आनन्दलहरी-टीकाके प्रणेता।

मल्लभू (सं० स्त्री०) मल्लानां भूर्भूमिः। मल्लभूमि, कुश्ती लड़नेकी जगह, अखाड़ा।

मल्लभूपति—दाक्षिणात्यके एक राजा, प्रोलन नायकके पुत्र। १०१७ शताब्दीमें उत्कीर्ण शिलालिपिमें इनकी दानशीलताका परिचय देखा जाता है।

मल्लभूम—बङ्गालके वांकुड़ा जिलेके विष्णुपुरराज। एक समय यह स्थान विष्णुपुरके मल्लराजाओंके अधिकारमें था। विष्णुपुर देखो।

मल्लभूमि (सं० स्त्री०) मल्लनां भूमिः स्थानं। मल्ल क्रीड़ा स्थान, अखाड़ा। पर्याय—अक्षवाट, रङ्गभूमि, रणस्थली मल्लभू, अक्षपाट। (जटाधर) २ मलद नामक देश।

"अयः पाले पायः पानं शालपले च भोजनम्।
शयनं तालपत्रे च मल्लभूमेरियं गतिः॥" (उद्भट)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल्लमल्ल—उदार-राघव और अव्ययसंग्रहनिघण्टुके प्रणेता। ये शाकल्यपदाङ्कितके रचयिता माधवसुधिके पुत्र थे।

मल्लमारराज—दाक्षिणात्यके एक राजा। इनके आज्ञानुसार जगन्नाथप्रसादने एक हिन्दूमन्दिरमें वृत्ति दान की थी।

मल्लय—कृष्णाजिलेके नरशरवपेट्ट ग्रामसे ११ मील दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां एक प्राचीन विष्णुमन्दिरमें एक बहुत पुरानी शिलालिपि देखी जाती है।

मल्लयात्रा (सं० स्त्री०) मल्लानां यात्रा। मल्लोंकी युद्ध यात्रा। इसका पर्याय माल्लवी है।

मल्लयार्य—दैवज्ञविलासके रचयिता।

मल्लयुद्ध (सं० क्ली०) मल्लानां युद्धं ६-तत्। मल्लोंका आपसी युद्ध। मल्ल पहलवानोंका एक नाम है। इनकी जो कुश्ती होती है, उसीको मल्लयुद्ध कहते हैं। इसका पर्याय नियुद्ध और बाहुयुद्ध है।

पहलेके (पहलवान) मल्ल लोग राजभवनोंमें आ कर तरह तरहकी कौशलपूर्ण कुश्ती या मल्लयुद्ध दिखाते थे। राजपरिवार तथा दर्शकवृन्द बड़े चावसे इनके कुश्तीके दांव पेचको देखा करते थे। जोड़ तोड़के पहलवान आपसमें कुछ कलाकी शल्य दिखा कर भी एक दूसरेको पछाड़ नहीं सकता था। यदि हीन बल हो तो एक दूसरेका प्राण ले लेता था।

महाभारतके विराट पर्वमें लिखा है,—युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डव जब विराट राजाके यहां अज्ञातवास कर रहे थे तब इन लोगोंने अपना नाम बदल बदल कर बताया था। इस तरह भीमने वृकोदर नामसे पाचक (रसोइया)के वेशमें अपना परिचय दे कर रन्धन-शालाका भार ग्रहण किया था। पीछे विराटको मालूम हुआ, कि भीमसेन मल्लयुद्धमें भी कुशल है। कुछ दिनोंके बाद किसी पर्वके उपलक्षमें एक पहलवानने विराट्भवनमें आ कर ललकारा। उसके साथ युद्ध करनेके लिये एक पहलवानकी जरूरत हुई। उन्होंने देखा, कि इससे युद्ध करनेके लिये पाचक रूपधारी वृकोदर ही उपयुक्त हैं। इससे उन्होंने आज्ञा दी, कि भीम तुम इसके साथ मल्लयुद्ध करो। भीमको डर हुआ, कि युद्ध करने पर मेरा गुप्तवेश प्रकट न हो जाये। इस डरसे इच्छा न रहने पर भी उन्होंने किसी तरह बड़े कष्टसे राजाज्ञाका पालन किया। जब यह दोनों वीर अखाड़ेमें उतरे, तो उनकी कुश्तीका कलाकौशल देखनेके लिये लोगोंने चारों ओरसे अखाड़ेको घेर लिया। जीमूत मल्ल असीम बलविक्रम सम्पन्न था। उसकी वहां बड़ी ख्याति थी, जब दोनों पहलवान लंगोटा कस कर मैदानमें उतरे तो दर्शक मण्डली हर्षोत्साहसे पुलकित हो उठी। राजाको प्रणाम कर दोनों अपने अपने दांव पेंच दिखाने लगे। कभी कोई हाथसे कभी पैरसे दांव पेंच दिखाते थे। [illegible] लगी। वार करता तो दूसरा उसको काट कर [illegible] कार्यकुशलता लेता था। इस तरह कई तरहकी का[illegible]के बाद फलगादियां कभी कोई किसीको लातसे [illegible], तब यदि किसी मुष्टिप्रहारसे दूसरे [illegible] शब्द कह दे, तो दोनों ओरकी एक दूसरेको खींच [illegible] है और फिर गोटियां चौकमें ही इस तरह बहुत देर [illegible] कौतूहलपूर्ण युद्ध [illegible] गया। वृकोदरने [illegible] सौ बार घुमा कर उसका प्राणहर [illegible] राजा तथा अन्यान्य दर्शकवृन्द सुप्रसि[illegible] वानके विनाशसे हर्षोत्फुल्ल हो भीमको [illegible] लगे। (महाभारत विराटपर्व १२ अ०)

इस मल्लयुद्धमें बहुतेरे दांव पेंच सीखनेकी आवश्यकता होती है। इन सब दांव पेचोंको जब तक नहीं जानता, तब तक वह मल्लयुद्धमें पारदर्शी नहीं कहा जा सकता।

श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्धमें लिखा है, कि कंसकी फौजमें चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशल नामके पांच महापराक्रमशील पहलवान् थे। कंस अपने कल बल छलसे या किसी तरह गुप्तरूपसे जब कृष्ण-बलरामको मार न सका, तो उसने स्थिर किया, कि कृष्ण बलरामको यहां बुलवा कर इन पांच वीरोंको ललकार उनका प्राण विनष्ट करायेंगे। उस समय कंसकी आज्ञासे एक बड़े मैदानमें अखाड़ा बना। उसके इर्द गिर्द दर्शक वृन्दोंके लिये अच्छे अच्छे और सुन्दर सुन्दर मञ्च बनाये गये। पुष्पमाला तथा चन्दन वार ध्वजा पताकाओंसे वह अखाड़ा सजाया गया। कंसने वह मल्लयुद्ध देखनेके लिये दूर दूर देशोंके अपने सगे सम्बन्धियोंको भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आमन्त्रित किया था। यथासमय वहां सभी एकत्र हुए और मल्लयुद्धकी प्रतीक्षा करने लगे। कृष्ण वलराम भी कंसदूत अक्रूर द्वारा निमन्त्रित हो कर कंसके घर आये। साथ ही नन्द तथा अन्यान्य श्रेष्ठ गोप भी राजा द्वारा आमन्त्रित हो कर मथुरामें पधारे। राजकर्मचारी तथा सामन्त राजोंके साथ स्वयं कंस अन्यान्य सरदारके साथ उस अखाड़ेके निकट वने सुरम्य मञ्चमें विराजमान हुआ।

यथासमय मल्लभेरी वज उठी। अखाड़ेके रणदुन्दुभिको श्रवण कर पहलवानोंका हृदय वीररसके उमङ्गमें सरावोर हुआ। सुन्दर वेश-भूषासे सुसज्जित वीर वड़े उत्साहसे अखाड़ेमें उतर आये। इसी समय कृष्णवलराम भी मल्लदुन्दुभि सुन कर युद्ध देखनेके लिये तुरंत वहां आ उपस्थित हुए। दुष्ट कंसने इन दो भाइयोंको मार डालनेके लिये उनके पथमें-ही एक हस्तीको नियुक्त किया था। इन दोनों भाइयोंने उस हस्तीका प्राणसंहार कर उसके दोनों दांतको दोनों भाई अपने अपने कन्धे पर धर कर उस अखाड़ेके पास आये। उस समय दर्शकमण्डली उन वीरोंसे दृष्टि हटा इन दो भाइयोंके रूपलावण्यकी अपूर्व छटा देखने लगी। इसका वर्णन श्रीमद्भागवतमें सुन्दरतासे किया गया है। उसका एक श्लोक इस प्रकार है,—

"मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्त्तिमान्
गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां शास्ता स्वपित्रोः शिशुः
मृत्युर्भोजपतेर्विराड़विदुषां तत्त्वं परं योगिनां।
वृष्णीणां परदेवतेति विदितो रङ्गं गतः साग्रजः॥"

(भागवत १०।४३।१७)

कृष्ण वलराम दर्शक हो कर वहां आये थे। किन्तु कंसकी साजिशसे उनको उस मल्लयुद्धमें उन वीरोंके साथ अखाड़ेमें उतरना पड़ा। युद्धका वाजा वजा। वीरोंका हृदय प्रफुल्लित तथा कायरोंका हृदय सिहर उठा। मल्लयोद्धाओंके हुंकारसे मेदिनी कांप उठी। दर्शकमण्डली गौरसे उस समयका दृश्य देखने लगी। पहले पहल चाणूरके साथ कृष्णका और मुष्टिकके साथ वलरामकी कुश्ती आरम्भ हुई। हाथ हाथसे, पैर पैरसे, छाती मूक्केसे परस्पर प्रतिघात होने लगे। विविध दांव पेंच आपसमें होने लगे। कोई किसीको पटकता कोई किसीको खींचता तथा कोई किसीको लात मुक्का थप्पड़ जमाता आदि एक दूसरेको पराजित करने पर तुला हुआ था। कुछ समय तक युद्ध करनेके वाद या यों कहिये, कि कृष्ण वलरामने उन मल्लोंको खेल खेला कर एक एक करके मार डाला। और तो क्या, कंस तथा उसके भाइयोंको भी कृष्णवलराम द्वारा प्राण विसर्जन करने पड़े थे। वे सव विचारे इसी उपलक्षमें अपने प्रिय-प्राण गंवा दिये।

महाभारतमें लिखा है,—युधिष्ठिरने जव राजसूय यज्ञ करनेका सङ्कल्प किया, तव इस कार्यमें प्रधान वाधक मगधके राजा जरासन्धको मार डालनेका विचार हुआ। इस उद्देश्यसे श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन वहांसे मगधके लिये रवाना हुए। इनका उस समय ब्राह्मणवेश था। कौशलपूर्वक जरासन्धके नगरमें घुस कर उसको युद्धके लिये ललकारा। पहले जरासन्धने भीमके साथ वाहुयुद्ध आरम्भ किया। यद्यपि जरासन्धने उस दिन उपवास किया था, तथापि वह ललकारको सहन न कर सका। कार्त्तिक कृष्ण त्रयोदशीके दिन उपवास रह कर उसने दिन रात भीमके साथ युद्ध किया। यद्यपि जरासन्ध घोर युद्धमें थक गया था; तथापि कृष्णकी उत्तेजनामें आ कर फिर युद्ध आरम्भ हुआ। अन्तमें जरासन्धको भीमने इसी युद्धमें मार डाला। इस युद्धमें किसीने भी अस्त्र शस्त्र नहीं लिया था, इसलिये यह युद्ध मल्लयुद्धमें परिगणित हुआ। जरासन्धकी मृत्युके वाद उसके सभी कैदखानेसे वहुतेरे कैदी राजा मुक्त हो गये।

प्राचीन पुराण ग्रन्थोंमें भी मल्लयुद्धके और कितने ही वर्णन पाये जाते हैं। पहले जमानेमें मल्लयुद्ध एक प्रधान युद्ध माना जाता था। इस समय भी भारतवर्षके कई प्रदेशोंमें मल्लयुद्ध हुआ करता है। सिवा भारतके अमेरिका, यूरोप, एशियाके अन्यान्य देशोंमें भी यह युद्ध होता है।

यूरोपके प्राचीन समृद्धशाली रोमराज्यमें भी इस मल्लयुद्ध या कुश्तीका वड़ा आदर था। वहांके 'कलोसियमा' नामक प्रसिद्ध नाट्यघरमें नाना प्रकारके ऐसी क्रीड़ाये दिखाई जा चुकी हैं। इसके सिवा कितने ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थियेटरोंमें भी युद्ध-क्रीड़ा दिखाई जाती है। रोम देखो।

सुदूर इंग्लैण्डमें भी मल्लयुद्धका अभाव न था और न इस समय है। वहां विवाहके समय प्रणय-प्रतिद्वन्द्वी युगल नायक परस्पर मल्लयुद्ध कर एक दूसरेको पराजित करता था और प्रणयिनीका प्रियपात्र तथा प्रेमास्पद बनता था। इस तरहके युद्धको अंग्रेजीमें 'डुयेल' युद्ध कहते हैं। इंग्लैण्डके फ्रान्सविजेता विलियम कङ्करने अपने शासनकालमें रणपरीक्षा तथा द्वन्द्वयुद्ध (Trial by battle or duel) नामसे एक स्वतन्त्र कानून बनाया था।

फिर यह बात भी सुनाई देती है, कि सिकन्दरने भी भारतमें आ कर पुरुराजके साथ मल्लयुद्धमें प्रवृत्त हुआ था।

मल्लरमड़ी—दक्षिण कनाड़ा जिलेका एक ग्राम। यह पिनाङ्गड़ीसे १२ मील उत्तर-पूर्व पड़ता है। यहांसे १॥ मील दक्षिण धर्मस्थल मन्दिर है। कहते हैं, कि यह मन्दिर ७५० वर्षका पुराना है। मन्दिरमें जो लिङ्ग स्थापित है वह मङ्गलूरके मध्यवर्त्ती कदिरी मन्दिरसे लाया गया था।

मल्लराज—रसरत्नदीपिका नामक अलङ्कारग्रन्थके प्रणेता।

मल्लराजवंश—विष्णुपुर और नेपालके प्राचीन राजवंश।

नेपाल और विष्णुपुर शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

मल्लराष्ट्र (सं० क्ली०) मल्लराज्य। यह माही और नर्मदा नदीके मुहाने पर अवस्थित है। पाश्चात्य भौगोलिक टलेमीने 'Maleo' शब्दमें इसका उल्लेख किया है।

मल्लवरम्—कृष्णाजिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह तमरीकोटसे ४ मील उत्तरमें अवस्थित है। यहां ६ राक्षसके कीर्त्तिचिह्न और २ प्रस्तरस्तम्भ वर्त्तमान हैं। इस ग्रामके निकटवर्त्ती किसी मैदानके मिट्टिके स्तूपसे दो सफेद मर्मरकी मूर्त्तियां पाई गई हैं। इनमेंसे एक सप्तस्कन्ध नागमूर्त्ति है जो चारों ओर अनुचरोंसे घिरी है।

मल्लवरम्—उत्तर अर्काड़ जिलेका एक ग्राम। यह तिरुपतिसे उत्तर १० मील पूर्वमें तथा तिरुपति रेल आफिससे ४ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। इस ग्रामके उत्तर-पूर्वांशमें दो शिलालिपि देखी जाती हैं।

मल्लवास्तु (सं० क्ली०) स्थानभेद।

मल्लवाह (सं० पु०) १ ताम्रवर्ण का तृणविशेष, तामड़ रंगकी एक घास। २ पल्लिवाहतृण, लाल रंगकी एक घास।

मल्लविद्या (सं० स्त्री०) मल्लयुद्धकी विद्या, कुश्तीकी विद्या।

मल्लवेन—बाल-मल्लवेन-सिद्धान्त नामक ज्योतिःशास्त्रके प्रणेता।

मल्लशाला (सं० स्त्री०) मल्लोंका क्रीड़ा-स्थान, अखाड़ा।

मल्लसेन—एक जैन-पण्डित। ये जनसाधारणमें हस्तिमल्लसेन नामसे परिचित थे। उनकी यह हस्ती उपाधि शायद उनके अगाध पाण्डित्य और स्थूलदेहकी परिचायक थी। उनके बनाये हुए अर्जुनराजनाटक, उदयनराजकाव्य, भरतराजनाटक, मेघेश्वर नाटक, मैथिलीपरिणय नाटक आदि काव्य और नाटक आज भी प्रचलित देखे जाते हैं।

मल्ला (सं० स्त्री०) मल्लते धारयति विलासादिकमिति मल्ल धारणे अच्-स्त्रियां टाप्। १ नारी, स्त्री। २ मल्लिका, चमेली। ३ पत्रवल्ली, एक लताका नाम। ४ लोठनराजपत्नी। (राजतर० ८।१६१७)

मल्ला (हिं० पु०) १ जुलाहोंके हत्था नामक औजारका ऊपरी भाग। इसे पकड़ कर मल्ला चलाया जाता है।

मल्लानकग्राम (सं० पु०) प्राचीन ग्रामभेद।

मल्लापुर (सं० क्ली०) नगरभेद।

मल्लार (सं० पु०) मल्लं ऋच्छति प्राप्नोतीति ऋ-अण्। सङ्गीतशास्त्रानुसार एक रागका नाम। कुछ आचार्य इसे छः प्रधान रागोंके अन्तर्भूत मानते हैं, पर दूसरे इसके बदले हिंडोला या मेघरागको स्थान देते हैं। इसकी पांच रागिनियां हैं, यथा—बेलावली, पूरवी, कानड़ा, माधवी, कोड़ा और केदारिका। यह राग वर्षा ऋतुमें गाया जाता है।

"वेलावती पूरवी च कानड़ा माधवी तथा।
कोड़ा केदारिका चैव मल्लारस्य प्रिया इमाः॥"

गानेका समय—

"मेघमल्लाररागस्य गानं वर्षासु सर्वदा।"

(सङ्गीत दामो०)

यह सम्पूर्ण जातिका राग है और इसके गानेकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋतु वर्षा और समय रातका दूसरा पहर है। इसका रंग श्याम, आकृति भयानक गलेमें सांपकी माला पहने, फूलोंके आभूषण धारण किये सस्त्रीक बतलाया गया है।

"शङ्खावदातं पलितं दधानं प्रलम्बकर्णः कुमुदेन्दुवर्णः।
कौपीनवासाः सविहारचारी मल्लाररागः शुचिशान्तमूर्त्तिः॥"

सङ्गीतदर्पणके रागाध्यायमें लिखा है, कि यह राग षड़रागोंमें चौथा है।

"भैरवः पञ्चमो नाटो मल्लारो गौड़मालवः।
देशाख्यश्चेते षड़् रागाः प्रोच्यते लोकविश्रुताः॥"

मेघमल्लारिका, मालकौशिक, पटमञ्जरी और आशावरी ये सब राग मल्लारसंश्रय हैं।

"मेघमल्लारिका मालकौशिकः पटमञ्जरी।
आशावरीति विज्ञेया रागामल्लारसंश्रया॥" (रागार्णव)

इस रागका स्थान विन्ध्याचल, वस्त्र केलेका पत्ता और मुकुट केलेकी कलिका कही जाती है। इसका अस्त्र धनुष, कटारी और छुरा बतलाया गया है।

मल्लारि (सं० स्त्री०) १ रागिणीभेद। कोई इसे वसन्तराग-की और कोई मेघरागकी पत्नी बतलाते हैं। (पु०) २ कृष्ण। ३ महादेव। ४ ग्रहलाघवके एक टीकाकार।

मल्लारि—१ वृत्तमुक्तावली और वृत्तमुक्तावली तरल नामक दो ग्रन्थोंके प्रणेता।

२ दिवाकर दैवज्ञके पुत्र। ये भी पिता जैसे विख्यात ज्योतिर्विद् थे। इनकी बनाई हुई गणेशकृत ग्रहलाघव-की टीकाका आज भी लोकसमाजमें आदर है।

मल्लारी (सं० स्त्री०) मल्लार ङीप्। वसन्तरागकी रागिणी।

"आन्दोलिता च देशाख्या लोला प्रथममञ्जरी।
मल्लारी चेति रागिण्यो वसन्तस्य सदानुगाः॥"
(सङ्गीतदामो०)

हलायुधने इसे मेघरागकी रागिनी और ओड़व जातिकी माना है। इसका स्वरग्राम—ध, नि, रि, ग, म, ध है।

इसका ध्यान—

"गौरी कृशा कोकिलकण्ठनादा गीतच्छलेनात्मपतिं स्मरन्ती।
आदाय वीणां मलिना रुदन्ती मल्लारिका यौवनदूनचिता॥"
(सङ्गीतदर्पण)

मल्लार्जुन (सं० पु०) राजभेद।

मल्लासुर—असुरभेद। इसने देवादिदेव महादेवके साथ घोर संग्राम किया था। मल्लारि माहात्म्यमें विस्तृत विवरण देखो।

मल्लासुर (सं० पु०) असुरभेद। श्रीकृष्णने इसका वध किया था, इसीसे इसका मल्लारि नाम हुआ है।

मल्लासोमयाजिन्—जीवन्मुक्ति-कल्याण नामक ग्रन्थके प्रणेता।

मल्लाह (अ० पु०) एक अन्त्यज जाति। ये लोग नाव चला कर और मछलियां मार कर अपना गुजारा चलाते हैं। धीवर देखो।

मल्लाही (फा० वि०) १ मल्लाह-सम्बन्धी, मल्लाहका। (वि०) २ मल्लाहका काम या पद।

मल्लि (सं० पु०) मल्लते धारयति विज्ञानमिति मल्ल (सर्वधातुभ्य इन्। उण् ४।११७) इति इन्। १ जैन शास्त्रा-नुसार चौबीस जिनोंमें उन्नीसवें जिनका नाम। इन्हें मल्लनाथ कहते हैं। जैन शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

(स्त्री०) २ मल्लिका।

मल्लि—वर्त्तमान बालजाति। पुराणमें यह मालव नामसे विख्यात है। अलेकसन्दरके समय यह जाति 'मल्लि' कहलाती थी।

मल्लि—एक तीर्थका नाम।

मल्लिक (सं० पु०) मल्यते धार्यते ऽसौ मल्ल-इन् स्वार्थे कन्। १ मलिन चंचुचरणयुक्त हंस, जिसके पैर और चोंच काली होती हैं। २ जमींदारोंकी एक उपाधि। ३ जोलाहोंकी ढरकी। ४ माघका महीना। मल्लिक देखो।

मल्लिका (सं० स्त्री०) मल्लिरेवेति-मल्लि स्वार्थे कन्, स्त्रियां टाप्। यद्वा मल्लिर्हंस इव शुक्लत्वात् मल्लि-इवार्थे कन्। एक प्रकारका बेला जिसे मोतिया कहते हैं। संस्कृत पर्याय—तृणशून्य, भूपदो, शतभीरु, तृण-शून्या, शीतभीरु, भद्रवल्ली, गौरी, वनभद्रिका, प्रिया, सौम्या, नारीष्टा, गिरिजा, सिता, मल्ली, मदयन्ती, चंद्रिका, मोदिनी। गुण—कटु, तिक्त, चक्षुष्मान, मुख-पाक, कुष्ठ, विस्फोटक, कण्डूति, विष, व्रणनाशक, कफ-नाशक, उष्ण, वृष्य, वातपित्त, असृक्‌व्याधि और अर्शो-नाशक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वामनपुराणमें इस पुष्पकी उत्पत्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—कामदेव जब महादेवका ध्यानभङ्ग करने आये तब ये उनकी नयनाग्निसे भस्म हो गये। भस्म होते समय उनके हाथसे धनुष पृथ्वी पर गिर पड़ा और पांच भागोंमें बंट गया। इसी धनुषकी मूठसे मल्लिका आदि अनेक प्रकारके पुष्पवृक्षोंकी उत्पत्ति हुई।

(वामनपुराण ६ अ०)

यह पुष्प जूही जातिका तथा सफेद होता है। आकृति और गन्धके अनुसार इसके भी मल्लिका, काटमल्लिका, बेलमल्लिका आदि भेद देखे जाते हैं। अन्यान्य फूलोंके जैसा इससे भी इतर तैयार होता है। २ एक प्रकारकी मछली। ३ एक प्रकार मिट्टीका वर्त्तन। ४ सुमुखी वृत्तिका-एक नाम। ५ यूथिका, जूही। ६ मङ्गल्या अगुरु, एक प्रकार का अगुरु जिसमें चमेलीकी-सी गंध होती है। ७ वच। ८ लक्षणाकन्द। ९ आठ अक्षरोंका एक वर्णिक छंद। इसके प्रत्येक चरणमें रगण, जगण और अन्तमें एक गुरु और लघु होता है।

मल्लिकाक्ष (सं० पु०) मल्लिका पुष्पमिव अक्षिणी यस्येति (अच्णोऽदर्शनात्। पा ५।४।७६) इति अच्। १ मलिन-चञ्चुचरणयुक्त हंस, एक प्रकारका हंस जिसके पैर और चोंच काली होती है। २ एक प्रकारका घोड़ा जिसकी आंख पर सफेद धब्बे होते हैं। ३ घोड़ेकी आंख परके सफेद धब्बे। ४ एक प्रकारका हंस जिसके पैर और चोंच धूसर तथा लाल होती है। (त्रि०) ५ सफेद आंख-वाला, कंजा।

मल्लिकाक्षि (सं० स्त्री०) श्वेतविन्दु चक्षुःयुक्त अश्व, एक प्रकारका घोड़ा जिसकी आंख पर सफेद धब्बे होते हैं।

मल्लिकाख्या (सं० स्त्री०) मल्लिकेति आख्या यस्याः। त्रिपुर-मालीपुष्प, एक प्रकारकी मल्लिका। पर्याय—मोहिनी, वटपत्रा, मोहना।

मल्लिकागन्ध (सं० क्ली०) मल्लिकाया इव गन्धो यस्य। मङ्गलागुरु।

मल्लिकाच्छदन (सं० क्ली०) आंखका वह परदा जो रोशनी-से आंख ठंढी रखनेके लिये लगाया जाता है।

मल्लिकापुष्प (सं० पु०) मल्लिकाया पुष्पमिव पुष्पं यस्य। १ कुटजवृक्ष, कुरैया। २ करुणवृक्ष, मीठा नीबूका गाछ। (क्ली०) ३ स्वनामख्यात मल्लिकापुष्प, बेलेका फूल।

मल्लिकामोद (सं० पु०) तालके साठ मुख्य भेदोंमेंसे एक भेदका नाम। इसमें चार विराम होते हैं।

मल्लिकार्जुन (सं० क्ली०) श्रीशैलस्थित शिवलिङ्ग।

मल्लिकार्जुन—मान्द्राज-प्रदेशके सालेम जिलेका एक बड़ा ग्राम। यह होसुसे बीस मील दूर पड़ता है। यहांका प्राचीन दुर्ग खंडहरमें पड़ा है। स्थानीय प्राचीन शिव-मन्दिरमें बहुत-सी शिलालिपियां खोदी हुई हैं पर सभी अस्पष्ट हैं। निकटवर्त्ती पर्वत शृङ्ग पर मोटे अक्षरोंमें लिखी हुई एक शिलालिपि तथा सूर्य, चन्द्र और नन्दी आदिकी प्रतिमूर्त्ति अङ्कित शिलाफलक देखे जाते हैं।

मल्लिकार्जुन—एक प्रधान हिन्दू राजा। मल्लोर जिलान्तर्गत कोचवलकोट नगरमें उनकी राजधानी थी। उक्त गांवमें एक पुराना दुर्ग है। कहते हैं, कि मल्लिकार्जुन गणपतिके पुत्र गजपति महाराजने इस दुर्गका निर्माण किया है।

मल्लिकार्जुन—विजयनगरके एक राजा। मदुरा और त्रिचिनापल्ली जिलेमें जो शिलालेख मिला है उससे ज्ञात होता है, कि उन्होंने कई एक गांव देव सेवाके लिये दान किये थे। विजयनगर देखो।

मल्लिकार्जुन (सं० क्ली०) हिमालय पर्वत पर स्थित एक शिवलिङ्ग।

मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र—गद्यवल्लरी नामक ग्रन्थके प्रणेता। ये शंकराचार्यका धर्म प्रचार करनेके लिये आचार्यके पद पर अधिष्ठित हुए थे।

मल्लिकार्जुनशृङ्ग (सं० क्ली०) स्थानभेद।

मल्लिगन्धि (सं० क्ली०) मल्लेरिव गन्धो यस्य (उप-मानाच्च। ५।४।१३८) इति इकारादेशः। अगुरु, अगर।

मल्लिगांव—खान्देशके अन्तर्गत एक नगर। नारुशङ्कर नामके एक महाराष्ट्र सर्दारने यहांका दुर्ग बनाया, उनके अधीन यहां अरबीसेना रहती थी। १८१८ ई०में यहांकी सेनाओंने आत्मरक्षामें असमर्थ हो कर अंगरेजोंको दुर्ग सौंप दिया।

मल्लितीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थभेद।

मल्लिदेव—चोलवंशीय एक राजा। ११६८ ई०की एक शिलालिपिमें इनका नाम मिलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल्लिनाथ—१ एक प्रसिद्ध टीकाकार। इनका असल नाम कोलाचल मल्लिनाथ था। लेकिन लोग इन्हें पेड्डभट्ट कहा करते थे। पेड्डु भट्ट नामसे मालूम होता है, कि ये दाक्षिणात्यके रहनेवाले थे। ये व्याकरण, काव्य, अलङ्कार, छन्द, अभिधान, नीति, ज्योतिष, स्मृति, दर्शन, वेद, उपनिषद आदि सभी शास्त्रोंमें पारदर्शी थे। आज कल भी लोग इनके नामको दोहाई देते हैं। जब कभी कोई विचित्र छटामय विषय देखनेमें आता है, तब शिक्षित व्यक्ति कहा करते हैं, कि यह मालूम होता है, मानो मल्लिनाथकी टीका हो।

अमरपदपारिजात नामक अमरकोषटीका, उदारकाव्य, एकावलीटीकातरल, किरातार्जुनीय ग्रन्थकी घण्टापथ नामक टीका, कुमारसम्भवकी सञ्जीवनीटीका, तार्किक रक्षाटीका, जीवातु नामक नैषधीय टीका, सञ्जीवनी नाम्नी मेघदूत और रघुवंश टीका, रघुवीरचरित और सर्वङ्कषा नाम्नी मेघदूत और रघुवंश टीका, रघुवीरचित और सर्वङ्कषा नाम्नी शिशुपालवधटीका प्रभृति इनके बनाये हुए काव्य, महाकाव्य और खण्डकाव्यकी टीका मिलती है।

२ एक प्राचीन हिन्दूराजा। ३ कल्पतरु और वैद्यरत्नमालाके प्रणेता। ४ शब्देन्दुशेखर और लघुशब्देन्दुशेखर नामक ग्रन्थकी टीकाके प्रणेता। ५ एक जैन तीर्थङ्कर। मल्लिनाथपुराणमें इनका विषय आया है।

जैन शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

मल्लिनी (सं० स्त्री०) अतिमुक्तक पुष्पवृक्ष, माधवीलता।

मल्लिपत्र (सं० क्ली०) मल्लेः पत्रमिव पत्रं यस्य। छत्रक, खुमी।

मल्लिबार (सं० क्ली०) स्थानभेद, मलवार देश।

मल्लिराव होल्कर—मल्हारराव होल्करके पौत्र। ये पितामहकी मृत्युके बाद सिंहासन पर बैठे सही, पर अधिक दिन तक राज्यसुखका भोग न कर सके। उनके मरने पर राजमाता अहल्याबाईके साथ दीवान गङ्गाधर यशोवन्तका विवाद खड़ा हुआ।

मल्ली (सं० स्त्री०) मल्लि कृदिकारादिति पक्षे ङीष्। १ मल्लिका। २ सुन्दरी वृत्तिका एक नाम।

मल्लीकर (सं० त्रि०) अमल्लमपि आत्मानं मल्लमिव करोतीति कृ-अच्। चौर, चोरी करनेवाला।

मल्लीनगर—प्राचीन नगरभेद।

मल्लु (सं० पु०) मल्लुते भयं धारयतीति मल्लु-बाहुलकात् उ। १ भालुक, भालू। २ बंदर।

मल्लूर (सं० पु०) मण्डूर, लौहकिट्ट, लौहमल।

मल्लेश्वर—गोदावरी जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह तनकूसे ५ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। रेड्डीवंशीय राजाओंके शासनकालमें (१३१८ से १४२७ ई०) यहां एकपुरानी वेदीके ऊपर मन्दिर बनाया गया है। मन्दिर में एक शिलालिपि उत्कीर्ण देखी जाती है।

मल्लोत—हिमालयश्रेणीके लवणशैल पर अवस्थित एक प्राचीन नगर। रावलपिण्डी माणिक्यालको घूम कर इस नगरमें आना होता है। प्रत्नतत्त्वविद् डा० कनिंहम इसे चीन-परिव्राजक यूएनचुवङ्ग वर्णित सिंहपुरकी राजधानी बतला गये हैं।

कलार-काहरसे ४॥ कोस दक्षिण-पूर्व तथा केतस नामक स्थानसे ६ मील पश्चिम एक गिरिशृङ्ग पर मल्लोत नामक दुर्ग मौजूद है। कहते हैं, कि मल्लुराज नामक किसी जञ्जुहा-सरदारने इस दुर्गको बनवाया था। किन्तु किस समय यहां जुजुहा जातिकी प्रधानता थी सो ठीक ठीक मालूम नहीं। गजनीपति महमूदने जब भारतवर्ष पर चढ़ाई को उस समय जुजुहाजातिने इस्लाम धर्म अवलम्बन किया था। अतएव महमूदसे पहले मल्लूके राजत्व और मल्लोत नगरकी श्रीवृद्धिकी कल्पना की जा सकती है।

प्रायः आठ सदी तक विधर्मी मुसलमान राजाओंके हाथमें पड़ कर मल्लोत नगरने अपनी श्रीवृद्धि खो दी। आज भी यहां हिन्दू प्रधानताके निदर्शन-स्वरूप एक देवमन्दिरका ध्वंसावशेष दृष्टिगोचर होता है। उसका गठनकार्य काश्मीरदेशीय मन्दिरादिके शिल्पकार्य जैसा दिखाई देता है। मन्दिरमें जो प्रतिमूर्त्ति हैं उन्हें देखनेसे मालूम होता है, कि एक समय यहां ब्रह्मण्यधर्मकी प्रधानता थी। कहते हैं, कि पहले उक्त मन्दिरमें महादेवकी मूर्त्ति भी विराजती थीं। चीन-परिव्राजक यूएन चुवङ्ग एक स्तूपका उल्लेख कर गये हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल्व (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन ।

मल्ह (सं० क्ली०) गो स्तन, गायका थन ।

मल्हण (सं० पु०) १ दामोदरके पुत्र । २ कविभेद ।

मल्हन—च्यवन ऋषिके गोत्रमें उत्पन्न छिन्दवंशके एक राजा । इनके पिताका नाम वैरवर्मन था । राजा मल्हनने चुलुकीश्वरवंशीय अनहिलदेवीको व्याहा था । इनके पुत्रका नाम था मल्ल । पिता जैसे वे भी औदार्यादि सद्गुणोंसे भूषित थे ।

मल्हनी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी नाव । इसका अगला भाग अधिक चौड़ा होता है ।

मल्हराना (हिं० क्रि०) चुमकारना, पुचकारना । नई गौओंको दुहते समय वे बहुत उछलती कूदती और लात चलाती हैं । इसके लिये दुहनेवाले उन्हें चुमकारते पुचकारते हैं जिससे वे शान्त हों और दुहने दें । इसीलिये मल्ह शब्दसे, जिसका अर्थ गोस्तन है, मल्हराना, मल्हाना, मल्हारना आदि क्रियाएँ चुमकारनेके अर्थमें बनी हैं ।

मल्हाना (हिं० क्रि०) चुमकारना, पुचकारना ।

मल्हार (हिं० पु०) मल्लार देखो ।

मल्हारना (हिं० क्रि०) मल्हाना देखो ।

मल्हारराव गायकवाड़—बड़ौदाके एक राजा । ये १८७० ई०की २९वीं नवम्बरको अपने भाई खण्डेरावकी मृत्युके बाद पितृसिंहासन पर बैठे । इस समय उनकी अवस्था ४२ वर्षकी थी । पिताका नाम था,—महाराज क्षीरोदराव गायकवाड़ सेनखासखेल शमशेर बहादुर जी, सी, एस, आई । वे द्वितीय गायकवाड़ मीलाजीसे पांच पीढ़ी नीचे थे ।

राज-दीवानके कार्यमें अकर्मण्यता देख कर अंगरेज कर्मचारी सर-सेमूर फिट्सजिराल्डने राजा खण्डेरावसे उनकी पदच्युतिके लिये अनुरोध किया । राजाके उनकी बात स्वीकार नहीं करने पर दोनोंमें विवाद खड़ा हो गया । आखिरकार दोनोंमें युद्ध चलने लगा । युद्धमें खण्डेराव मारे गये । इस समय मल्हार राव कारारुद्ध थे । राजा खण्डेरावको भाई मल्हार पर संदेह हो गया था, उसी कारण वे कैद कर लिये गये थे । बृटिश-सरकारने उन्हींको राजवंशका उत्तराधिकारी बनाना चाहा, इस कारण उन्हें कैदसे छुड़ा कर राज-सिंहासन पर बिठाया ।

मल्हारराव होलकर—एक महाराष्ट्र-सरदार । ये अपने बाहुबलसे होलकर राजवंशके प्रतिष्ठाता हो कर महाराष्ट्र-नेतृसमाजमें अच्छी सुख्याति कमा गये हैं । होलग्राममें रहनेके कारण उनकी वंशोपाधि 'होलकर' हुई थी । इनके पिता उक्त ग्राममें सामान्य चौगुल (पटेलके सहकारी)-का काम करते थे । महाराष्ट्रीय धांगड़ वा राखाल (शूद्र) इनकी जाति थी ।

महाराष्ट्र पेशवा १म बाजीरावके शासनकालमें मल्हारजी सिलेदार-पद पर नियुक्त हुए । इस पद पर रह कर यह एक अश्वारोहि-सेनादलकी रक्षा करते थे । धीरे धीरे उनका शौर्यवीर्य चारों ओर फैलने लगा । बाजीराव उन्हें एक उपयुक्त सरदार जान कर उत्तरीय देशोंको जीतनेके लिये सेनापति-पद पर वरण किया । १७२६ ई०में इन्होंने मालवके सूबेदार गिरिवर बहादुरको रणक्षेत्रमें मार डाला । अनन्तर आगरेके निकटवर्त्ती देशोंको जीत कर इन्होंने महाराष्ट्र-गौरव बढ़ाया था । इस के बादसे ही ये राजाके प्रेमभाजन बन गये थे । दिनों दिन पदोन्नति होनेसे दरबारमें इनका अच्छा चलने लगा । इसी समय ये सरदेशमुखी और चौथ वसूल करनेके लिये नियुक्त हुए । १७३३ ई०में पेशवाने इनके कार्यसे प्रसन्न हो कर इन्हें इन्दोर प्रदेशका जागोरदार बनाया । १७३५ ई०में इन्होंने अपनेसे उच्च दरजेके कर्मचारी कान्तजी कदम्बके कहने पर निजाम राज्यमें चौथ संग्रह करनेके लिये उपद्रव शुरू कर दिया । १७४८ ई०में इन्होंने निजामके सेनापति सफदरजङ्गको दलबल समेत यमपुर भेज दिया ।

१७५० ई०में इस कार्यके पारितोषिक स्वरूप इन्हें मालव-राज्यका कुछ अंश जागोरमें मिला । १७६१ ई०-की जगद्विख्यात पानीपतकी लड़ाईमें ये महाराष्ट्र-वाहिनी के साथ गये थे । १७६८ ई०में इनकी मृत्यु हुई । इससे पहले ही उनके पुत्र खण्डेरावका देहान्त हो चुका था । इस कारण पुत्रवधू अहल्याबाईने अपने पुत्र मल्लिरावको श्वशुरके सिंहासन पर अभिषिक्त किया और आप उसकी अभिभाविका हो कर राजकार्य चलाने लगी । मल्लिराव अकाल ही कराल कालके शिकार बने । अब उत्तराधिकारी ले कर अहल्याबाई और दीवान गङ्गाधर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यशोवन्तमें विवाद खड़ा हुआ। आखिर अहलग्याबाईने उनकी बात न मान कर तुकाजी होल्कर नामक मल्हारराबके एक प्रिय सिलेदारको राजसिंहासनका उत्तराधिकारी बनाया। अब राजसिंहासनका मूल होलकर-राजवंशसे निकल कर स्वतन्त्र घरमें जा लगा। तुकोजीके काशीराव, मलहारराव, यशोवन्त और इतोजी नामक चार पुत्र थे।

होलकर-राजवंश।

१ मलहारराव होल्कर।
२ मल्लिराव।
३ तुकोजी होल्कर।
४ काशीराव।
५ यशोवन्त।
६ मल्हारराव २य।
७ हरिराव होल्कर।

मल्हारराव होलकर—इन्दोरराज तुकाजी होलकरके पुत्र। १७६७ ई०में दौलतराव सिन्धियाके साथ युद्धमें इनका देहान्त हुआ।

मल्हार राव होलकर २य—इन्दोरके एक राजा, राजा यशोवन्त राव होलकरके पुत्र। १८११ ई०में पिता यशोवन्तकी मृत्युके बाद ये इन्दोर-राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। महदीपुरका युद्ध शेष होने पर वृटिश-सरकारके साथ १८१८ ई०में इनकी एक सन्धि हुई। १८३४ ई०में ये परलोकको सिधारे। पीछे उनके दत्तक पुत्र मार्त्तण्ड राव राजसिंहासन पर बैठे। किन्तु हरिराव होलकरने षड्यन्त्र करके उन्हें गद्दीसे उतार दिया। हरिहरराबके बाद खण्डेराव इन्दोरके सिंहासन पर अधिष्ठित हुए। उनके कोई पुत्र सन्तान न रहनेसे इष्ट-इण्डिया कम्पनीने मुलकरजी रावको सिंहासन पर बिठाया।

मवक्किल (अ० पु०) १ अपनी ओरसे वकील या प्रतिनिधि करनेवाला पुरुष, मुकदमेमें अपनी ओरसे कचहरी वा न्यायालयमें काम करनेके लिये अधिकारी प्रतिनिधि नियत करनेवाला पुरुष। २ किसीको अपना काम सुपुर्द करनेवाला, असामी।

मवर (सं० पु०) बौद्ध-मतानुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

मवरिखा (अ० वि०) लिखित, लिखा हुआ।

मवाजिब (अ० पु०) नियमित मात्रामें नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ।

मवाजी (अ० वि०) अनुमान किया हुआ। इस शब्दका प्रयोग रुपये और गांवके अंशोंका द्योतन करनेके लिये होता है।

मवाद (अ० पु०) १ सामग्री, सामान। २ पूय, पीव। ३ दुर्ग, किला। ४ दुर्गके प्राकार पर उगा हुआ पेड़।

मवासी (हिं० स्त्री०) १ छोटा गढ़, गढ़ी। (पु०) २ गढ़पति, किलेदार। ३ प्रधान, मुखिया।

मवित (सं० त्रि०) मव-कर्मणि-क्त। बद्ध, बंधा हुआ।

मवेशी (अ० पु०) पशु, ढोर।

मवेशीखाना (फा० पु०) मवेशी रखनेका बाड़ा।

मश (सं० पु०) १ गुन् गुन् शब्द। २ क्रोध। ३ मच्छड़।

मशक (सं० पु०) मशति ध्वनतीति मश-अच्, संज्ञायां कन्। १ कीटविशेष, मच्छड़। पर्याय—वज्रतुण्ड, सूच्यास्य, सूक्ष्ममक्षिक, रात्रिजागरद। मशक निवारक धूप यह है,—

"त्रिफलार्जुन पुष्पाणि भल्लातक शिरीषकम्।
लाक्षा सर्जरसश्चैव विड़ङ्गश्चैव गुग्गुलः।
एतैर्धूपैर्मक्षिकानां मशकानां विनाशनम्॥"

(गरुड़पुराण १८१ अ०)

त्रिफला, अर्जुनपुष्प, भल्लातक, शिरीष, लाक्षा, सर्जरस, विड़ङ्ग और गुग्गुल इन सब द्रव्योंको एकत्र कर धूप देनेसे कीट और मशकका उपद्रव शान्त होता है। सुश्रुतके मतसे मशक पांच प्रकारका है—सामुद्र, परिमण्डल, हस्तिमशक, कृष्ण और पार्वतीय। इनके काटनेसे शरीरमें खुजली होती है और दाने पड़ जाते हैं। पहाड़ी मशकके काटनेसे काटे हुए स्थानमें प्राणनाशक कीटके काटने सा लक्षण दिखाई देता है।

साधारणतः मशक दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं, डांस (Gnat) और डांस जातिका कीड़ाविशेष। इनके सिर्फ एक डंक होता है। उसी डंकसे अन्यान्य प्राणियों को काटते है। मशकके काटनेसे बहुत पीड़ा होती है। इसका कारण यह है, कि वे डंकसे जहरकी गांठसे जहर निकल कर खुभे हुए स्थानमें प्रवेश कराते है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुतसे ऐसे भी कीड़े हैं जिनकी गिनती डांसकी श्रेणीमें की गई है और वे मशक कहलाते हैं। अमेरिका महादेशके सिमुलियम (Simulium) श्रेणीभुक्त एक प्रकारका मशक है। मैकक्लार्ट साहबने लिखा है, कि इन मशकोंकी आंखें गोल और डैने चौड़े होते हैं। मस्तक परके केशर जो बारह स्थानोंमें देखे जाते हैं, गोल हैं।

ये सब मशक घासकी पत्तियोंका रस चूस कर जीवन धारण करते हैं। किन्तु मौका पा कर डांसकी तरह प्राणीका रक्त भी चूसते हैं। ये छोटी प्राणी हमेशा हवामें इधर उधर उड़ते दिखाई देते हैं। भ्रमणकालमें सामनेके पैरमें बल दे कर आगे बढ़ते हैं।

किसी अमेरिकावासी पण्डितने मशकके सम्बन्धमें जो लिखा है, वह इस प्रकार है--नर मशकोंके साथ मादाका कुछ पार्थक्य देखा जाता है। नर मशककी देह मादासे छोटी और गहरा लाल होता है। इनके मस्तक पर केशर होते हैं। मनुष्यका रक्त और पत्तोंका रस चूसनेके लिये डंक रहते हुए भी ये भीरु-स्वभावके है। कभी कभी ये मनुष्यके घरमें घुस कर उन्हें काटते हैं, पर रोशनीसे दूर भागते हैं। पाखाना आदि मैले कुचैले स्थानमें तथा जलसिक्त अथवा जलाभूमिमें ये रहना पसन्द करते हैं। मादा मशक बहुत साहसी होती है। यहां तक, कि जिस कोठरीमें रोशनी जलती है, वहां घुस कर लोगोंको काटती है। ग्रीष्म और शरत्कालमें इनका अधिक प्रादुर्भाव देखा जाता है।

नर-मशकके छोटे मस्तक पर अर्द्धचन्द्राकार दो आखें शोभती हैं। इनके दो पुट प्रायः जुटे रहते हैं। जोड़ स्थान पर सुन्दर केशर दिखाई देता है। नर और मादा मशकका केशर लम्बाईमें समान रहता है। नर-मशकका केशर १·७५ मिलिमिटर लम्बा और १४ डंकका होता है। इनमें १२ छोटे छोटे और समान लम्बाईके तथा बाकी २ कुछ बड़े होते हैं। मादा मशकके सिर्फ १३ डंक होते हैं। इन सभी डंकोंकी लम्बाई समान रहती है। नर और मादा दोनों जातिके मशकका केशर हमेशा हिलता रहता है।

पुटका बाहरी और भीतरी स्थान एक प्रकारके मैले तरल पदार्थसे परिपूर्ण है। इसके भीतर बहुत छोटे छोटे अंडे सरीखे पदार्थ हैं। ये पदार्थ उच्च श्रेणीके देहस्थित मेदके जैसा कार्य करते हैं। मादा-मशकका गठन भी नर जैसा है, पर इनका पुट (Capsule) कुछ छोटा होता है। नर और मादा मशककी सूंडमें कोई विशेष विभिन्नता नहीं दिखाई देती, किन्तु दोनोंके पैरकी संख्या समान होने पर भी बहुत विभिन्नता है। नर-मशकके पैर छोटे होते हैं; किन्तु नरका पैर २·७३ मिलिमिटर लम्बा और डंक २·१३ मिलिमिटर दीर्घ तथा अगला हिस्सा ऊपरकी ओर झुका रहता है।

मशकके श्रवणेन्द्रिय सम्बन्धमें जीवतत्त्वविदोंके मध्य मतभेद देखा जाता है। इनका मस्तक जैसा छोटा और उसके ऊपर जो अङ्ग प्रत्यङ्ग दिखाई देता है, उसमें श्रवणोपयोगी अंगका रहना सम्भव नहीं है। अतएव यह निश्चय है, कि किसी अन्य इन्द्रिय द्वारा इनकी श्रवण क्रिया सम्पन्न होती होगी। मस्तक पर दो पुटोंकी अवस्थिति देख कर यह सहजमें अनुमान किया जाता है, कि ईश्वरने इन्हें श्रवणेन्द्रिय कार्य निभानेके लिये वह अङ्ग दिया है। एतद्भिन्न इस अङ्गकी शिरा, धमनी इत्यादिका विशेषरूपसे पर्यवेक्षण करनेसे मालूम होता है, कि सचमुच इसीसे श्रवणेन्द्रियकी क्रिया सम्पन्न होती है।

नर-मशककी श्रवणशक्ति मादासे अधिक है। उसका कारण यह है, कि प्रकृतिके नियमानुसार पुरुष ही सभी जगह स्त्रीका अनुसन्धान किया करते हैं। अतएव सृष्टिरक्षाके लिये तमसाच्छन्न निशाकालमें मादा-मशकको तलाश करनेके लिये भन् भन् शब्दश्रवणके सिवा और कोई उपाय नहीं है। मालूम होता है, इसीलिये उस सर्वज्ञ विधाताने इन्हें ऐसी सुननेकी शक्ति दी है। रात्रिकालमें नर-मशकको सहजमें पकड़ नहीं सकते, इससे स्पष्ट प्रमाणित होता है, कि इन्हें श्रवण-शक्ति अधिक है।

गौर कर देखनेसे मालूम होता है, कि मादा-मशक अपने केशरोंसे स्पर्श-ज्ञान लाभ करती है। कारण, इनके पैर बहुत छोटे छोटे, केशर सूड़ डंकके समान लंबे और हमेशा हिलते डोलते रहते हैं किन्तु नर मशकका स्पर्श-कार्य उनके बड़े बड़े पैरोंसे ही होता है। मशकके उड़नेके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समयजो भन् भन् शब्द होता है, वह उनके मुखका शब्द नहीं है। घने डैनोंके चलनेसे ही ऐसा शब्द निकलता है।

वर्त्तमान वैज्ञानिक मशकके काटनेसे ही मलेरिया ज्वरकी उत्पत्ति वतलाते हैं।

२ महाभारतके अनुसार शक द्वीपमें क्षत्रियोंका एक एक निवासस्थान। ३ गार्ग्य गोत्रमें उत्पन्न एक आचार्यका नाम। यह एक कल्पसूत्रके रचयिता थे। ४ मस। नामक चर्म रोग। मनुष्यके शरीर पर कहीं कहीं काले रंगका उभरा हुआ मांसका छोटा दाना दिखाई देता है, उसीको मशक कहते हैं। यह पीड़ा नहीं देता और सदाके लिये रह जाता है। (सुश्रुत निदानस्था० १३ अ०)

"आवेदनं स्थिरञ्चैव यत्तु गात्रे प्रदृश्यते।
माषवत् कृष्णमुत्पन्नं मलिनं मशकं दिशेत्॥" (भावप्र०)

मशकरोग होने पर शस्त्र द्वारा उसे काट डालना चाहिये। पीछे उस काटे हुए स्थानको क्षार वा अग्निसे जला देना उचित है। ऐसा करनेसे यह रोग आरोग्य हो जाता है।

"चर्मकीलं जतुमणिं मशकांस्तिलकालकान्।
उत्कृत्य शस्त्रेण दहेत् क्षाराग्निभ्यामशेषतः॥"
(भावप्र०)

मशकके स्थान पर लसुनको पीस कर लगा देनेसे बहुत जल्द चंगा हो जाता है।

"लशुनानान्तु चूर्णस्य घर्षो मशकनाशनः।"
(गरुड़पु० १७५ अ०)

मशक (फा० स्त्री०) चमड़ेका बना हुआ थैला। इसमें पानी भर कर एक स्थानसे दूसरे पर ले जाते हैं।

मशककुटी (सं० स्त्री०) मशक सन्ताड़नार्थ चामरभेद, मच्छड़ हांकनेकी चौरी।

मशकजम्भन (सं० क्ली०) मशक-विताड़न, मच्छड़ हांकना।

मशकवरण (सं० क्ली०) मच्छड़ हांकनेकी चौरी।

मशकहरी (सं० स्त्री०) मशकं हरतीति हृ (हरतेरनुद्यमनेऽच्। पा ३।२।९) इति अच्। मशकनिवारक प्रावरणविशेष, मसहरी। पर्याय—चतुष्की।

मशकावती (सं० स्त्री०) १ नदीभेद। २ सागरभेद।

मशकिन् (सं० पु०) मशकाः सन्त्यस्यामिति मशक-इनि। उदुम्बरवृक्ष, गूलर।

मशक्कत (अ० स्त्री०) १ श्रम, मेहनत। २ वह परिश्रम जो जेलखानेके कैदियोंको करना पड़ता है।

मशखत (सं० पु०) मशक नामक रोग।

मशगूल (अ० वि०) प्रवृत्त, काममें लगा हुआ।

मशच्छद (सं० पु०) गुल्मभेद, एक प्रकारको लता।

मशरू (अ० पु०) एक प्रकारका धारीदार कपड़ा। यह रेशम और सूतसे बुना जाता है। मुसलमान स्त्री-पुरुष इसका पायजामा बना कर पहनते हैं। यह अधिकतर बनारसमें बनता है।

मशविरा (अ० वि०) परामर्श, सलाह।

मशहरी (सं० स्त्री०) मशक-हरी, मसहरी।

मशहूर (अ० वि०) प्रसिद्ध, विख्यात।

मशान (हिं० पु०) वह स्थान जहां मुरदा जलाया जाता है, मरघट।

मशान—वङ्गदेशमें प्रवाहित गण्डकनदीकी एक शाखा। यह सोमेश्वर पर्वतसे निकल कर चम्पारन जिला होती हुई सोमेश्वर दुर्ग तक चली गई है। वहां दूणनदीके जलसे इसका आयतन बहुत बड़ा हो गया है। इस नदीके जलसे गृहस्थ लोग अपना अपना खेत पटाते हैं। नदी खूब चौड़ी है। वर्षाऋतुके सिवा अन्य ऋतुमें इसमें जल नहीं रहता।

मशाल (अ० पु०) एक प्रकारकी मोटी बत्ती। इसके नीचे पकड़नेके लिये काठका एक दस्ता लगा रहता है। इसे हाथमें ले कर प्रकाशके लिये जलाते हैं। यह बत्तीकी बनाई जाती है और चार पांच अंगुलके व्यासकी तथा दो ढाई हाथ लंबी होती है। जलते रहनेके लिये इसके मुंह पर बार बार तेलकी धार डाली जाती है।

मशालची (फा० पु०) मशाल दिखानेवाला, मशाल जला कर हाथमें ले कर दिखलानेवाला।

मशीखत (अ० स्त्री०) शेखी, घमंड।

मशीन (अं० स्त्री०) किसी प्रकारका यन्त्र जिसकी सहायतासे कोई चीज तैयार की जाय।

मशीर (अ० पु०) मशवरा देनेवाला, सलाह देनेवाला।

मशुन् (सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मशूरी—युक्तप्रदेशके देहरादून जिलेके अन्तर्गत एक पहाड़ी नगर। यह अक्षा० ३०° २७′ उ० तथा देशा ७८° ५′ पू०के मध्य अवस्थित है। हिमालयके एक प्रदेश पर अवस्थित होनेके कारण इसका प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत मनोरम है। यहांकी जनसंख्या साढ़े छः हजारके करीब है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। इसके पास ही लन्दोरा नामक स्थानमें सेना रहती है। समुद्रपृष्ठसे शहरकी ऊंचाई ७४३३ फुट है। यह स्थान बड़ा ही स्वास्थ्यकर है। ग्रीष्मकालमें दूर दूर स्थानके लोग स्वास्थ्यलाभकी आशासे यहां आते हैं। यहां ईसाइयों-का गिरजा, पांच विद्यालय और साधारण पुस्तकालय है। सरकारी उद्भिज्ज्योद्यान (Botanical garden) यहांकी म्युनिस्पलिटीकी देखरेखमें है। शहरमें एक अस्पताल भी है।

मशोब्रा—पञ्जाबके कोथी राज्यके अन्तर्गत एक पर्वत और उसके नीचेमें अवस्थित एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० ३१° ८′ उ० तथा देशा० ७७° ७′ पू०के मध्य विस्तृत है। सिमलासे यह स्थान थोड़ी ही दूर पड़ता है। सामान्य ग्राम होने पर भी यहां ग्रीष्मकालमें सिमलासे अनेक दर्शकमण्डली आती हैं।

मश्क (अ० पु०) किसी कामको अच्छी तरह करनेका अभ्यास।

मश्शाक (अ० वि०) जिसे कोई काम करनेका खूब अभ्यास हो, अभ्यस्त।

मष (हिं० पु०) मख देखो

मषराण (सं० क्ली०) स्थानभेद।

मषि (सं० स्त्री०) १ काजल। २ सुरमा। ३ स्याही।

मषिकूपी (सं० स्त्री०) मषेः कूप-इव मषिकूप अल्पार्थे ङीष्। मस्याधार, दावात।

मषिधान (सं० क्ली०) धीयतेऽस्मिन्निति धा अधिकरणे ल्युट्, मषेर्धानः स्थानं। मस्याधार, दावात।

मषिपण्य (सं० पु०) लेखक, लिखनेका काम करनेवाला।

मषिप्रसू (सं० स्त्री०) १ दावात। २ कलम।

मषिमणि (सं० स्त्री०) दावात।

मषी (हिं० स्त्री०) मषि देखो।

मषीलेख्यदल (सं० पु०) मषीभिर्लेख्यं लेखनयोग्यं दलं यस्य। श्रीताल वृक्ष।

मष्ट (हिं० वि०) १ संस्कारशून्य, जो भूल गया हो। २ उदासीन, मौन।

मष्णार (सं० क्ली०) तीर्थभेद, ऐतरेय ब्राह्मणके अनुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

मसक (सं० पु०) मस्यते परिमीयतेऽसौ मस-कर्मणि घ, अल्पार्थे कन्। क्षुद्ररोगविशेष। मशक देखो।

मसक (हिं० पु०) १ मसा, मच्छड़। (स्त्री०) २ मशक देखो।

मसकना (हिं० क्रि०) १ खिंचाव या दवावमें डाल कर कपड़ेको इस प्रकार फाड़ना कि बुनावटके सब तन्तु टूट कर अलग हो जायं। २ किसी चीजको इस प्रकार दबाना कि वह बीचमेंसे फट जाय या उसमें दरार पड़ जाय। ३ जोरसे दबाना, जोरसे मलना। ४ किसी पदार्थका दबाव या खिंचाव आदिके कारण बीचमेंसे फट जाना। ५ चिन्तित होना, दुःखके कारण धंसना।

मसकरा (हिं० पु०) मसखरा देखो।

मसकला (अ० पु०) १ सिकलीगरोंका एक औजार। यह हंसियेके आकारका होता है। इसमें काठका एक दस्ता लगा रहता है। इससे रगड़नेसे धातुओं पर चमक आ जाती है। इससे तलवारें आदि भी साफ की जाती हैं।

मसकली (हिं० स्त्री०) मसकला देखो।

मसखरा (अ० पु०) १ बहुत हंसी मजाक करनेवाला, हंसोड़। २ विदूषक, नक्काल।

मसखरापन (अ० पु०) दिल्लगी, ठठोली।

मसखरी (फा० स्त्री०) दिल्लगी, हंसी।

मसखवा (हिं० पु०) मांसाहारी, वह जो मांस खाता हो।

मसजिद (फा० स्त्री०) (जुम्मा या जामा मसजिद) मुसलमान जिस घरमें खुदाकी इबादत किया करते हैं, उसको मस-जिद कहते हैं। इस मसजिदमें सभी तरहके इसलाम धर्म-के माननेवाले नमाज पढ़ने जाते हैं। जैसे हिन्दुओंका शिवालय या ठाकुरवाड़ी या ईसाइयोंका गिरजा है, वैसे ही मुसलमानोंका यह मसजिद है। महम्मदके चलाये इस इसलाम मजहबमें कर्मकाण्डकी कोई तिलमात्र न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहनेके कारण कोई बड़े मन्दिर बनवानेकी जरूरत नहीं जान पड़ी। इसलिये पहले पहल छोटी-सी एक कोठरीके रूपमें मसजिदकी नींव डाली गई। क्रमशः मुसलमानोंकी जैसे जैसे ताकत बढ़ती गई और जैसे जैसे धनबलसे बलवान होते गये, वैसे वैसे ये बड़ी बड़ी इमारतों, मकबरों और मसजिदोंको बनाने लगे। धीरे धीरे इनका हौसला बढ़ता गया। फिर क्या था, बड़ी बड़ी आलीशान इमारत तथा बड़े बड़े मकबरे, नवाबी महल, बादशाही महल बन गये। साथ साथ अपने राज्यका भी विस्तार करते गये। जब इसलाम बादशाहत पश्चिम यूरोपके स्पेन और अफ्रिकाके बर्बर राज्य तथा पूर्वमें भारत और भारत-महासागरके द्वीपपुञ्ज तक फैल गई थी, तब उन इसलामी विजेताओंके अपूर्व उत्साहसे कई स्थानोंमें गैर मुसलीमोंके लेहूके प्यासे इन मुसलमानोंकी कीर्तिध्वजा मसजिदके रूपमें बदल गई थी। भारतीय पठान, मुगल, तुर्क और सरासोन वगैरह मुसलमान सुलतान और बादशाह जिन मसजिदोंको बना कर अपनी कीर्त्ति स्थापित कर गये हैं, वे आज संसारमें अतुल ऐश्वर्यसम्पन्न मुसलमानोंके धर्मोन्मादकताका परिचय दे रही हैं। विजापुरकी जुम्मा-मसजिद तथा आगरेकी मोती-मसजिद इसलामी मजहबकी अतुलनीय कीर्त्ति हैं।

आम तौर पर खुदाकी इबादत करनेके लिये या धर्मसेवा करनेके लिये मसजिदमें जो स्थान नियत रहते हैं, उनकी फिहरिस्त नीचे दी जाती है।

इसके बाहर आंगन या शहन रहता है। इसके चारों ओर चहार-दीवारी (लीवान) रहती है। इस घिरी हुई जगहके ठीक बीचमें 'मीड़या' नामक स्थान रहता है। इसलाम मजहबका माननेवाला हरेक आदमी नमाज पढ़नेसे पहले यहां खुदाके लिये शीरनी चढ़ाते हैं। मसजिदका जो अंश मक्काकी ओर रहता है, वह पक्का बनता है। यानी उसमें छत अवश्य रहती है उसको 'मकसूर' कहते हैं। इस गृहका नीचला हिस्सा आंगनसे लगा नहीं रहता, बल्कि एक चहारदीवारीसे अलग कर दिया रहता है। इसी घरमें सभी मुसलमान आ कर नमाज पढ़ते हैं। इस घरके भीतर ठीक बीचमें एक मेहराब या किबला मक्काकी ओर बनाया जाता है। इसके निकट ही बगलमें एक उच्च चबूतरा रहता है; इसको 'मिम्बार' कहते हैं। इसके सामने ही और कुछ उच्च एक पटा हुआ स्थान रहता है। कभी कभी इमाम (धर्मयाजक) यहां ही बैठ कर भूतग्रेत शैतानको छुड़ानेके लिये दुआया तावीज दिया करता है। इसके बगलमें बने आसनों पर बैठ कर मुल्ला और मौलवी मुसलमानोंको कुरान सुनाया करते हैं।

महम्मदके मदीनेसे भागनेके बाद पचास वर्षों तक भी मसजिदके ऊपर कोई (चूड़ागृह) कोठरी बनानेका नियम नहीं था। इसके बाद एक कोठरी बनाई जाने लगी। इसी समयसे मसजिदके साथ साथ ऐसी एक या अधिक कोठरियां बनती हैं। यह कोठरी क्या छत पर जानेके लिये एक सीढ़ी परकी छत भी कही जा सकती है। इसकी ऊपरवाली सीढ़ी पर खड़े हो कर 'मुएद्दीन' बड़े जोरोंसे आम लोगोंको अजान दिया करता है। अजानका अर्थ है, नमाज पढ़नेके वक्तकी सूचना। यह आवाज सुन कर मुसलमान जान जाते हैं, कि नमाजका समय हो गया और मसजिदमें जा कर नमाज पढ़ते हैं। चौबीस घण्टेमें सात बार 'अजान' देनेका नियम है, दिनमें पांच बार और रातको दो बार। आम तौर पर दोनों आंखके अन्धे ही इस काममें मोकर्रर किये जाते हैं, क्योंकि आंखवाला व्यक्ति छत पर चढ़ कर कुलकामिनियोंको बुरी दृष्टिसे देख सकता है।

प्रायः सभी मसजिदोंके खर्चा धर्मप्राण मुसलमान ही दिया करते हैं। कितने ही लोग धन-दौलत और कितने ही लोग जमान जायदाद मसजिदके नामसे लिख देते हैं, जिसकी आयसे इसका खर्चा चलता रहता है। इस धन-दौलत या जमीन जायदादका निरीक्षण करनेवाला एक नाजिर मुकर्रर रहता है। इमाम या अन्य दूसरे नौकरके रखने और जवाब देनेका अखत्यार नाजिरको ही रहता है।

बड़ी बड़ी मसजिदोंमें दो इमाम मुकर्रर किये जाते हैं। ये प्रति शुक्रवारको इसलामधर्मके प्रचार करनेके लिये व्याख्यान दिया करते हैं। जो हरेक शुक्रवारको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्मप्रचारके लिये व्याख्यान देते हैं, वह खतीव और मिदरान या किबलाके पास खड़े हो कर जो कुरान पढ़ते हैं, वह रातिब कहे जाते हैं। रातिबको आम लोगोंके साथ नमाज पढ़ना पड़ता है। दूसरे भी उन्हींका अनुकरण कर नमाज पढ़ा करते हैं।

इमाम लोग धर्मयाजकका काम नहीं करते। वे लोग अपना खतन्त्र कोई काम करते हैं। पढावनी कर या किसी दुकानकी रखवारी कर वे अपनी जीविका चलाते हैं। सामान्यदोष देखने पर भी नाजिर उनको हटा देते हैं। हटाते ही उनका खिताव 'इमाम' भी छिन जाता है। सिवा इनके मस्जिदमें नौकर चाकर या दाइयां भी मुकर्रर होती हैं।

मुसलमानिनें घरमें रह कर ईश्वरकी उपासना किया करती हैं। किन्तु इस समय किसी किसी मसजिदमें अब स्त्रियोंके लिये भी स्थान बन गया है। यह सब स्थान चिक या किसी तरहके परदेसे घिरा रहता है। इसमें रह कर यदि मुसलमानिनें ईश्वरकी उपासना करें, तो दूसरा कोई पुरुष उनको देख नहीं सकता। मिस्रकी राजधानी कायरोंमें 'सिट्टजनाब' मसजिदमें और जेरुसलमकी अक्सा मसजिदमें मुसलमानिनोंके वास्ते ऐसे स्थान बनाये गये है।

तुर्क और हानिफ सम्प्रदायके मुसलमान जिस मसजिदमें नमाज पढ़ते हैं, उनके लिये उनमें वजू करनेके लिये एक जलकल या जलकुण्ड रहता है। इसी जलकुण्डमें लोग हाथ मुंह धोया करते तथा पाक होते हैं। इसीलिये जहां जलकल नहीं है या जलकल होने पर भी हमेशा जल मौजूद नहीं रहता वहां एक मट्टीका चहबच्चा बनाते हैं और उसको ऊपरसे ढक देते हैं। इसीसे चहबच्चेसे लोग वजू किया करते है। सुन्नी मुसलमान ऐसे जलसे वजू करनेमें कुछ भेद नहीं मानते।

पहले हम कह आये हैं, कि मुसलमान राज्य विस्तारके साथ साथ मसजिदोंका भी प्रचार बढ़ता गया। व्यवसाय और साम्राज्य विस्तारकी आयसे मुसलमान राजे विपुल धन खर्च कर मसजिद बना गये हैं। उन्होंने इन मसजिदोंको शाही महलकी तरह सुन्दर बनानेमें जरा भी त्रुटी नहीं की है। एक एक मसजिदकी सुनहली छत हली या मर्मर पत्थरोंकी बनावटको देख उस समयके भारतीय शिल्प तथा कलाकौशलका अपूर्व परिचय मिलता है। उनके प्रत्येक जोड़, खिलान, प्रत्येक द्वार-खिड़कियां, दीयार, और तो क्या,—भीतरकी लकड़ीके बने नक्काशीदार किवाड़, पर्दे तथा छतके नीचेके चन्दोवेका कारुकार्य कलाविद्याका परिचय स्थल कहनेमें भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी। खिड़कीके नक्काशी काम और चांदीके पत्तरोंसे मढ़े चिरागदान जो एक दिन उत्कर्षता पाते हुए सर्वसाधारणमें प्रचारित थे आज वे शिल्पकार्यकी अवनतिके कारण लोप होते जाते हैं। जो कठोर कालके प्रबल प्रवाहसे रक्षित हो आज भी मौजूद है, वह स्पर्द्धाके साथ प्राचीन भारतीय शिल्पकी आज भी मर्य्यादा रक्षा करते हैं।

किसी किसी मसजिदमें हाथकी लिखी पोथियां आज भी रखी दिखाई देती हैं। मोरक्को राज्यके येफनगरकी करुविन मसजिदमें कुरान आदि बहुतेरे मुसलमानी मजहबके ग्रन्थ सोने वा रूपेके नक्शे और मखमलोंसे विभूषित दिखाई देते हैं। इन ग्रन्थोंमें एक विख्यात दार्शनिक आरिष्टटल रचित प्रकृतिके इतिहास वा तवारिख (Natural History) और एवेरों आदि विख्यात टीकाकारोंके और बहुतेरे ग्रन्थ पाये जाते हैं। कुछ ग्रन्थ १०वीं शताब्दीसे भी पुराने हैं।

महम्मदकी जन्मभूमि मक्काके पूर्व और पश्चिमके देशोंमें इस्लाम धर्मका प्रचार होने पर वहां समय समय पर मसजिद बनाई गई। किन्तु दुःखकी बात है, कि वास्तुविद्याकी प्रणालीसे काम न लिया गया। हिन्दूमन्दिर या ईसाईमन्दिर अपने एक ही नियमसे बनाये जाते हैं, चाहे, वे जहां बनाये जायें। किन्तु मुसलमानोंकी मसजिदमें वैसा कोई नियम दिखाई नहीं देता। देशविदेशमें विशेष कर भारतके विभिन्न स्थानोंमें मुसलमानोंकी मसजिदें तरह तरहकी बनी हैं। इसका कारण यह है, कि नङ्गी तलवारवाले मुसलमानोंने जब जिस देशको जीता था, उस देशके देव या धर्ममंदिरोंको तोड़ कर उन्हींके ईंट पत्थरोंसे मसजिद बनाई थी। कभी कभी तो मन्दिरोंका कुछ अंश ही परिवर्त्तन कर उन विजेताओंके कीर्त्तिस्तम्भ मसजिद रूपमें परिणत कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिया गया। आज वही मसजिद महम्मदी धर्मके विस्तारका साक्ष्य प्रदान कर रही है। कहीं कहीं तो अट्टालिकाओंके बीचमें पड़ कर और गठन-प्रणालीकी न जाननेके कारण ही मसजिदें साधारण मसजिदोंसे भिन्न रूपमें बनी हैं। इन्हीं कारणोंसे कायरो नगरकी गृहसंलग्न मसजिद और भारतवर्ष तथा यूरोपीय तुर्कोंकी प्राचीनतम ध्वस्त कीर्त्तियोंके उपादानोंसे बनी मसजिदें एक स्वतन्त्र तरहकी हैं। सिवा इसके जिन देशोंमें मुसलमानोंको कीर्त्ति-ध्वंसका मौका नहीं मिला है, उन देशोंमें जो मसजिदें बनी हैं, वे ठीक मक्काकी मसजिदोंकी तरह बनी हैं। भारतसे कर्दोवा और सीरियासे मिस्र तक अरबी तरीकेसे बनी अनेक मसजिदें दिखलाई देती हैं। मरुभूमिका इन देशमें रहनेसे महम्मदके चेले शिल्पका काम जानते नहीं थे, इसीसे अरबकी मसजिदें मामूली तौर पर बनाई गईं। किन्तु जब उन्होंने कई देशोंको जीत लिया और जब यूनान, रोम और पुराने भारत साम्राज्यके कला-कौशलका नमूना देखा, तबसे उन्होंने ईर्षान्वित हो कर मसजिद बनानेकी परिपाटीको बदल दिया। मुगल बादशाहोंके अधिकारमें भारतीय मसजिदें वास्तुशिल्पकी चरमोत्कर्षता पा चुकी थीं। जेरुसलम और दमस्ककी मसजिदोंके कांचके 'मेजेक' पूर्वी शिल्पके नमूने हैं। इसीसे ये प्रत्नतत्व-विभागके आदरकी वस्तु हैं। किन्तु कुछ लोग इन्हें बाइजेण्टियम्‌वासी खृष्टानोंके शिल्पका नमूना बतलाते हैं।

मक्का और मदीनेकी सरल प्रणालीके अनुसार मुसलमानी राज्योंमें पहले जो मसजिदें बनाई गई थीं, उनकी फिहरिस्त नीचे दी जाती है।

(१) कायरोकी पुरानी अमर मसजिद—यह ६४२ ई०में बनी थी। सातवीं सदीके अन्तिम समयमें इसकी मरम्मत हुई और कुछ बढ़ाई गई।

(२) टिउनिस राज्य कैरावान सिदि उक्बा मसजिद—यह सातवीं सदीके अन्तिम समयमें बनी थी।

(३) अलजिरियाके बिसक्राके निकटकी सिदि उक्बा मसजिद—६८४ ई०में बनी थी।

(४) मोरक्को राज्य-फेजनगरकी एड्रिस मसजिद—आठवीं सदीके अन्तिम समयमें बनी थी।

(५) दमस्ककी मशहूर मसजिद—७०८ ई०में बनी। यहां ३९५-४०८ ई०में थियोदोसियस् द्वारा खृष्टानोंकी एक धर्मशाला बनाई गई। इसके बाद ६३६ ई०में दमस्क-नगर पर अरबोंका अधिकार हो गया। उस समयसे ७०८ ई० तक यह धर्मशाला खृष्टानों और मुसलमानोंके व्यवहारमें थी। इसी वर्ष खलीफा वलीदने इसको तोड़वा कर मसजिद बनवा ली।

(६) कडेसिरकी मशहूर मसजिद—इसका काम ७८४ ई०में खलीफा अबदुल रहमान द्वारा आरम्भ हुआ और ७९४ ई०में उसके पुत्र द्वारा सम्पन्न हुआ था। इस समय इसका कुछ अंश खृष्टानोंके गिरजेके रूपमें परिणत हुआ है।

(७) मिस्रकी राजधानी कायरो नगरकी अहमद ईब्न तुलुनकी मसजिद। यह ८७९ ई०में बनी थी।

(८) कायरो नगरको उल-अजहर मसजिद—सन् ९७० ई०में बनाई गई थी। यहांके मुसलमान धर्मगुरुका खिताब है शेख-उल-अजहर। यह एक हजार रुपया महीना पाता है। यहां छात्रोंको कुरान, धर्मशास्त्र, न्याय, दर्शन, काव्य, अलङ्कार, हकीमी आदिकी शिक्षायें मिलती हैं।

(९) पुरानी दिल्लीकी बड़ी मसजिद—यह सन् ११९६ ई०में बनी थी।

ऊपर लिखी हुई सभी मसजिदें प्रायः एक कायदेसे बनाई गई हैं। सिवा इनके मुसलमानी रियासतोंमें और भी बहुतेरी मसजिदें दिखाई देती हैं। इनमें,—जेरुसलमकी इराम-उल-शरीफा, कुब्बत-उल-शक्रा, उल-अक्सा आदि उल्लेखनीय हैं।

अफ्रिका महादेशमें इस श्रेणीकी मसजिदोंमें कायरोंकी मसजिदें सबसे बड़ी और शिल्पसौन्दर्यसे भरपूर हैं। इनमें (१) सन् १३५६—५९ ई०में बनी थी, सुलतान हसनकी मसजिद कहलाती है। (२) सन् १३२० ई०में बनाई गई। इसको सुलतान कलाउनने बनाया था और यह मूर्त्त स्थानमें कलाउन मसजिदके नामसे मशहूर है। (३) इब्राहिम आगा मसजिद। (४) सन् १३९९ ई०में सुलतान बर्कुक और खलीफोंके नामके बने मकबरे। (५) कैरवानका अबदुल्ला बदीवका मकबरा। (६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन् १४९६ ई०में सुलतान काइतबका मकबरा। (७) अलजीरिया नगरकी १०वीं सदीकी बनी मसजिदें कब्रों-की प्रतिष्ठाके लिये बनी थीं।

स्पेन राज्यके कार्डोवा समीपकी जहराकी मसजिद सन् ९४१ ई०में बनी थी। यह उस समयकी कारुकार्य खचित है। सिवा इसके उस राज्यकी टोलाडोर कृष्ट-डी-ला-लज आदि कई मसजिदें इस समयके गिरजोंके रूपमें परिणत हो गई है।

फारस राज्यके हारुन-उल-रसीदके राज्यमें जो सब खूबसूरत तथा नक्काशीके कामसे पूर्ण मसजिदें बनी थी, उनमें एक भी इस समय मौजूद नहीं। अर्जेरुम, ताब्रिज और इस्पाहन नगरकी बनी मसजिदें प्राचीन शिल्पकी अंशतः रक्षा कर रही हैं। सन् १५८५-१६२९ ई०में शाह आब्बास प्रथमकी बनाई 'मसजिदशाह' नामकी मसजिद फारसके शिल्पोन्नतिकी पराकाष्ठाका परिचय दे रही है। सुलतान हुसेनकी सन् १७३० ई०की मसजिदमें पुराने कलाकौशलके बहुतेरे नमूने पाये जाते हैं।

भारतवर्षमें मुसलमानोंने हजारों वर्षके राजत्वमें जो मसजिदें बनाई हैं, वे सभी शिल्प सौन्दर्यसे परि-पूर्ण तथा आलीशान हैं। विधर्मी मुसलमानोंने भारत-में आ कर जिन सब प्राचीनतम हिन्दू, जैन, बौद्ध मन्दिरोंको तोड़ा था, उन्हींकी ईंट और उन्हींके सामानों-से मसजिदें बनाई गई थीं। हिन्दुओंके देवमन्दिरोंको तोड़ना, अपवित्र करना मुसलमानोंका मुख्य उद्देश्य था। कहते हैं, कि प्राचीन दिल्लीकी बड़ी मसजिद जिस समय बनी थी, उस समय गुलाम-वंशने २७ हिन्दू-मन्दिरोंको तोड़ कर उनके शिल्पसमन्वित उपकरणोंसे ही बनाई थी। आज भी इस मसजिदमें हिन्दू और मुसलमानके तस्वीरोंका अपूर्व समावेश दिखाई देता है। अजमेरकी १३वीं सदीकी मसजिद भी इसी तरह हिंदूमन्दिरके सामानोंसे बनाई गई थी। सिवा इसके अहमदाबाद, माण्डु, मालदह, विजापुर, फतेहपुर आदि स्थानोंकी बहुतेरी मसजिदें हिन्दूमन्दिरोंके सामानोंसे बनाई गई हैं। इनकी आलोचना करने पर एक एक मस-जिदके सम्बन्धमें एक एक पोथा लिखा जा सकता है।

१७वीं सदीमें फ्लोरेन्स पत्थरकी बड़ी आमदनी हुई। इसीके साथ साथ वहांके भास्कर (*Mosaic worker*) यहां आने लगे। मुगल बादशाह उस समय भारतमें राज्य करते थे। उन्होंने ही इस सुन्दर और चिकने पत्थरसे बहुत धन खर्च कर आगरेका जगत्-विख्यात ताजमहल और मोती मसजिद बनाई थी। इन सबोंकी यह कीर्त्ति अवश्य ही इस समय अतुलनीय मालूम होती है। ताजमहल देखो।

काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरमें शाह हमदनकी बनाई एक लकड़ीकी मसजिद है। इसके खम्भे देवदारु-वृक्षके और नक्काशी काम किये हुए हैं।

मसजिदकुण्ड—बङ्गालके यशोहर (जैसोर) जिलेमें एक स्थानका नाम। यहां एक पुरानी मसजिद थी। यह टूटी फूटी रहने पर भी इसके ९ गुम्बज, चार कोनों पर चार शिखर और स्तम्भ-छत आज भी मौजूद हैं। बहु-तेरे साठ गुम्बजके बनानेवाले खानजहानको ही इसके बनानेवाला समझते हैं। यह स्थान कपोताक्ष तीरवर्त्ती चांदखालीसे ३ कोस दक्षिण है। यह अक्षा० २२° २८′ ४४″ उ० तथा देशा० ८९° १९′ ३०″ पूर्वके मध्य अव-स्थित है। सुन्दरवनको साफ कर खेती करनेके समय यह मसजिद पाई गई थी। इस मसजिदमें यहांके लोग शिरनी चढ़ाया करते हैं।

मसट—कलकत्तेके दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यह बालीगंज और गड़ियानगरके बीचमें बसा हुआ है। यहाँ प्रति वर्ष पूसके महीनेमें मुसलमान-साधु माणिक पीरके उद्देशसे तीन दिन तक एक मेला लगता है। आसपासके हिन्दू और मुसलमान मेलेके समय माणिक पीरकी पूजा करते हैं।

मसड़ी (अ० स्त्री०) कन्द।

मसड़ा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी।

मसती (हिं० पु०) हाथी।

मसनंद (हिं० स्त्री०) मसनद देखो।

मसन (सं० क्ली०) मस्यते इति मस-ल्युट्। सोमराजी वृक्ष।

मसन (हिं० पु०) एक प्रकारका टकुआ। इससे ऊनके कई तार एक साथ मिला कर बटे जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसनद (अ० स्त्री०) १ बड़ा तकिया, गाव तकिया । २ तकिया लगानेकी जगह । ३ अमीरोंके बैठनेकी गद्दी ।

मसनदनशीन (अ० पु०) मसनद पर बैठनेवाला अमीर ।

मसना (हिं० क्रि०) १ मसलना । २ गूंधना ।

मसरफ (अ० पु०) व्यवहारमें आना, काममें आना ।

मसरा (सं० स्त्री०) मस-बाहुलकात् अरच् स्त्रियां टाप् । मसूर, मसुरी ।

मसरूका (अ० वि०) चोरी किया हुआ, चुराया हुआ ।

मसरूफ (अ० वि०) काममें लगा हुआ, काम करता हुआ ।

मसल (अ० स्त्री०) लोकोक्ति, कहावत ।

मसलन् (अ० वि०) मिसालके तौर पर उदाहरणके रूपमें ।

मसलना (हिं० क्रि०) १ हाथसे दबाते हुए रगड़ना, मलना । २ आटा गूंधना । २ जोरसे दबाना ।

मसलहत (अ० स्त्री०) ऐसी गुप्त युक्ति अथवा छिपी हुई भलाई जो सहसा ऊपरसे देखनेसे जानी न जा सके

मसला (अ० पु०) लोकोक्ति, कहावत ।

मसलिन—जगत्प्रसिद्ध सूक्ष्म (बारीक) और मुलायम सूती वस्त्रका नाम । यह आजकलके मखमल कपड़ेसे भी अधिक मुलायम और कोमल होता है । अंग्रेज वणिक् मद्रास प्रेसिडेन्सीके मछलीपट्टम बन्दरसे यह कपड़ा पहले खरीद कर इंग्लैण्ड ले जाते थे । उनका विश्वास था, कि मछली या मसली अथवा अपभ्रंश मसलिच शब्दसे इस वस्त्रके नामकी उत्पत्ति हुई । कुछ लोगोंका कहना है, कि इस वस्त्रका तुर्क सुलतान बहुत उपयोग करते थे । इस वस्त्रकी बड़ी अच्छी पगड़ी होती थी । जब सतगांवमें बङ्गालके वाणिज्यका प्रभाव था, तब तुर्क मुसलमान वणिक् ढाकेसे मलमल तुर्क राजधानी मोसल नगरमें ले जाते थे । इसके बाद कालक्रमसे ढाकाका यह व्यवसाय कम हो गया । फलतः वहांके शौकीन तुर्क इसको स्वयं तय्यार करने लगे और उसका नाम मोसलसे मस्लीन हुआ ।

१६वीं सदीमें पहले एकमात्र भारतसे ही मस्लीनको रफ्तनी यूरोपमें हुआ करती थी । इसके बाद पैसली मैनचेष्टर ग्लासगोकी मिलोंमें तय्यार होने लगा । सन् १८५१ ई०में इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड और आयरलैण्डमें भी मस्लीनका कारबार आरम्भ हुआ । इस काममें इन देशोंको अपनी बालिकाओं और स्त्रियोंको उनके सूत तैयार करनेके पारिश्रमिक स्वरूप ६० लाख रुपया देना पड़ा था ।

पूर्वभारतमें जो मस्लीन तय्यार होता था, उसका सूता विलायती सूतेसे दृढ़ होने पर भी टिकाऊ नहीं होता था । क्योंकि ताजा कपाससे जो सूता बनता था वह विलायती सूतेसे हीन होता था । भारतीय वस्त्रकी सर्वोच्च ख्याति केवल यहांके तांतियोंके यत्न और कार्यकुशलतासे हुई है, ऐसा कह सकते हैं । यह विद्या आज भी इनके हाथमें है । इधर महात्मा गांधीजीके उद्योगसे भारतवर्षमें इन दो चार वर्षोंमें जिस तरह चर्खे और कर्घेका प्रचार हुआ है, उसे देख कर एक बार फिर वह दिन याद आने लगा है । इस समय हाथसे कते सूतेसे हाथसे बुने खद्दरका जोरोंसे प्रचार चल रहा है ।

भारतके विभिन्न स्थानोंमें तथा खास ढाकेमें तांती इस मस्लीनको बनाते थे । यह इतना बारीक था, कि रातको यदि पसार दिया जाता, यदि शीतसे भीज जाता, तो जहां पसारा गया था, वहां मालूम नहीं होता कि कोई कपड़ा है । किसी अंग्रेज कविने इस वस्त्रको वायुका जाल कह कर कल्पना की है ।

मसवई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका बबूलका गोंद । यह पहले मसोवा द्वीपसे आता था, इसीसे इसका यह नाम पड़ा । अभी यह अदनसे आता है ।

मसनारा (हिं० पु०) प्रसूताका वह स्नान जो प्रसवके उपरान्त एक मास समाप्त होने पर होता है ।

मसवासी (हिं० पु०) १ वह साधु आदि जो एक मासमें अधिक किसी स्थानमें न रहें । २ एक महीनेसे अधिक किसी पुरुषके पास न रहनेवाली स्त्री, गणिका ।

मसविदा (अ० पु०) १ वह लेख जो पहली बार काट छांटके लिये तैयार किया गया हो और अभी साफ करनेको बाकी हो, मसौदा । २ युक्ति, उपाय ।

मसहरी (हिं० स्त्री०) १ पलंगके ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला जालीदार कपड़ा । इसका उपयोग मच्छड़ आदिसे बचनेके लिये होता है । २ ऐसा पलंग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसके चारों पायों पर इस प्रकारका जालीदार कपड़ा लटकानेके लिये चार ऊंची लकड़ियां या छड़ लगे हों।

मसहार (हिं० पु०) मांसाहारी, मांस खानेवाला।

मसहूर (अ० वि०) मशहूर देखो।

मसा (हिं० पु०) १ शरीर पर कहीं कहीं काले रंगका उभरा हुआ मांसका छोटा दाना। यह वैद्यकके अनुसार एक प्रकारका चर्मरोग माना जाता है। यह प्रायः सरसों अथवा मूंगके आकारसे ले कर बैर तकके आकारका होता है। यह शरीरमें अपने होनेके स्थानके विचारसे अशुभ अथवा शुभ माना जाता है। मशक देखो। २ बवासीर रोगमें मांसके दाने जो गुदाके मुंह पर या भीतर होते हैं। इनमें बहुत पीड़ा होती है और कभी कभी इनमेंसे खून भी बहता है। ३ मच्छड़।

मसाउनडिही—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलान्तर्गत एक प्राचीन बड़ा ग्राम। यह गाजीपुर शहरसे १२ कोस पश्चिम गङ्गाके उत्तरी किनारे अवस्थित है। यह नगर अभी श्रीभ्रष्ट और जनसाधारणसे परित्यक्त होने पर भी प्राचीन कीर्त्तियां स्तूपाकारमें परिणत हैं। वह स्तूप १५००×१००० फुट है। इसके अन्तर्गत एक टूटे फूटे मन्दिरमें प्रतिमूर्त्ति दिखाई देती है। उस प्रतिमूर्त्तिमें जो शिलालिपि है उससे इस स्थानका प्राचीन नाम 'क्रेलु-लेन्द्रपुर' जाना गया है।

अलावा इसके बुधपुर और जोहरगञ्जके समीप (मसाउन डिहीसे आध कोस दक्षिण) वंजुलावन नामक स्थानके ध्वंसावशेषसे बौद्धयुगकी कुछ मुद्राएं और मौर्य अक्षरमालाके उत्पत्तिविषयक उपकरणादि पाये गये हैं। यहांसे दक्षिण-पूर्व गङ्गाके किनारे खेया नामक उच्चभूमि पर कुछ हिन्दू देवदेवियोंकी मूर्त्ति इधर उधर पड़ी नजर आती हैं। इस स्थानका प्राचीन नाम धनपुर है। यहां मौर्य अक्षरमें लिखित राजा धनदेवकी ताम्रमुद्रा पाई गई है।

मसान (हिं० पु०) १ वह स्थान जहां मुरदे जलाए जाते हों, मरघट। २ भूत पिशाच आदि। ३ रणभूमि, रण-क्षेत्र।

मसाना (अ० पु०) पेटमेंकी वह थैली जिसमें पेशाव जमा रहता है। मूत्राशय देखो।

मसानी (हिं० स्त्री०) स्मशानमें रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।

मसार (सं० पु०) मस भावे किप्, मसं परिमाणं ऋच्छतीति ऋ उण्। इन्द्रनील मणि, नीलम।

मसार—बिहार और उड़ीसाके शाहाबाद जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २५° ३३´ उ० तथा देशा० ८४° ३५´ पू०के मध्य आरासे ६ मील पश्चिम इष्ट-इण्डिया रेलवेसे दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या तीन हजारसे ऊपर है। चीनपरिव्राजक यूएनचुवङ्ग इस स्थानको देख गये हैं। उनके भ्रमण-वृत्तान्तमें इस स्थानको मोहोशोलो (महासार) लिखा है और गङ्गातीरवर्त्ती बतलाया गया है। किन्तु वर्त्तमान समयमें गङ्गा यहांसे ६ मील दूर हट गई है। पहले इस स्थान हो कर जो गङ्गानदी बहती थी उसका प्राचीन खात आज भी मौजूद है। यहांके पार्श्वनाथके मन्दिरमें ७ शिलालेख उत्कीर्ण हैं। उन्हें पढ़नेसे मालूम होता है, कि मसारका असल नाम 'महासार' है। इस स्थानका प्राचीन नाम शोणितपुर है। इसी शोणितपुरमें बाणासुर रहता था। यहीं पर ऊषादेवीके साथ श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धका विवाह हुआ। यहांके जैनमन्दिरमें बहुत सी हिन्दू-देवदेवियोंकी प्रतिमूर्त्ति और १३८६ ई०में खोदी हुई शिलालिपि पाई गई हैं। इस ग्रामसे पश्चिम जो ईंटेका स्तूप है उसमेंसे बहुत सी बौद्धमूर्त्तियां निकली हैं। वह स्तूप चेरु-राजवंशकी कीर्त्ति माना जाता है। इसके अलावा यहां बहुत-सी स्वच्छसलिला पुष्करिणी हैं। यहांके ध्वंसावशेषसे एक प्रकाण्ड मूर्त्ति पाई गई है। वह मूर्त्ति अभी आरानगरके सरकारी उद्यानमें रखी हुई है।

मसारक (सं० पु०) मसार-स्वार्थे कन्। इन्द्रनील मणि।

मसाल (अ० स्त्री०) मशाल देखो।

मसालची (फा० पु०) मशालची देखो।

मसालदुम्मा (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। इसकी दुम बिलकुल काली रहती है।

मसाला (हिं० पु०) १ किसी पदार्थको प्रस्तुत करनेके लिये आवश्यक सामग्री। २ आतिशबाजी। ३ तैल,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तल। ४ साधन। ५ ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्योंका योग या समूह।

मसाली (अ० स्त्री०) रस्सी, डोरी।

मसालेका तेल (हिं० पु०) एक प्रकारका सुगन्धित तेल। यह साधारण तिलके तेलमें कपूरकचरी, वालछड़ आदि सुगन्धित द्रव्य मिला कर बनाया जाता है।

मसालेदार (अ० वि०) जिसमें किसी प्रकारका मसाला लगा या मिला हो।

मसिंदर (अ० पु०) जहाजमेंका वह बहुत बड़ा रस्सा जो चरखी या दौड़में लपेटा रहता है और जिसकी सहायतासे जहाजका गिराया हुआ लंगर उठाया जाता है।

मसि (सं० पु० स्त्री०) मस्यते परिणमते इति मस् (सर्वधातुभ्यः इन्। उण् ४।११७) १ लिखनेकी स्याही, रोशनाई। पर्याय—मसिजल, पत्राञ्जन, मेला, कालि, अञ्जन, मसी, रञ्जनी, मलिनाम्बु, मशी। २ निर्गुण्डीका फल। ३ काजल। ४ कालिख।

मसिक (सं० पु०) सर्पविवर, सांपका बिल।

मसिका (सं० स्त्री०) शोफालिका, निगुंडो। इसका दूसरा रूप 'मलिका' भी देखा जाता है।

मसिकूपी (सं० स्त्री०) मस्याधार, दावात।

मसिजल (सं० क्ली०) लिखनेकी स्याही।

मसिदानी (हिं० स्त्री०) मसिपात्र, दावात।

मसिधान (सं० क्ली०) मसेर्धानं आधारः। मस्याधार, दावात।

मसिधानी (सं० स्त्री०) मसेर्धानी। मस्याधार, दावात। पर्याय—मसिमणि, मेलान्धु, वर्णकूपिका, मेलानन्दा, मेलाम्बु, मसिधान, मसिकूपी, मसिकूपिका।

मसिन (सं० क्ली०) मस्यते परिमीयते गणनयेति मस् (बहुलमन्यत्रापि। उण् २।४६) इति इनच्। सपिण्डक।

मसिपण्य (सं० पु०) मसिः कालिपण्य मस्य। लेखक, लिखनेका काम करनेवाला।

मसिपथ (सं० पु०) लेखनी, कलम।

मसिपात्र (सं० पु०) दावात।

मसिप्रसू (सं० स्त्री०) मसिं प्रकर्षेण सूते उद्गिरतीति प्र सू-क्विप्। १ मस्याधार, दावात। २ लेखनी, कलम।

मसिबंदा (हिं० पु०) मसिबिंदु।

मसिमणि (सं० स्त्री०) मस्याधारो मणिरिवेति। मस्याधार, दावात।

मसिमुख (सं० त्रि०) जिसके मुंहमें स्याही लगी हो, काले मुंहवाला।

मसियाना (हिं० क्रि०) पूरा हो जाना, भलीभांति भर जाना।

मसिवर्द्धन (सं० क्ली०) मसिं वर्द्धयतीति वृध्-णिच्-ल्यु। रसगन्ध।

मसिबिन्दु (सं० पु०) काजलका बुंदा। यह नजरसे बचनेके लिये बच्चोंको लगाया जाता है। इसका दूसरा नाम दिठौना भी है।

मसिल (हिं० पु०) मैनसिल देखो।

मसी (सं० स्त्री०) मसिकृदिकारादिति ङीष्। काली, स्याही।

मसीका (हिं० पु०) १ आठ रत्तीका मान, माशा। २ चवन्नी।

मसीजल (सं० क्ली०) मस्याजलं, राहोः शिर इतिवत् अभेदे षष्ठी। मसी, स्याही।

मसीजीविन् (सं० त्रि०) मसी-जीव-णिनि। जो स्याहीसे जीविका-निर्वाह करता हो।

मसीधानी (सं० स्त्री०) मस्याः धानी पात्रं। मस्याधार, दावात।

मसीना (सं० स्त्री०) मस् (बहुलमन्यत्रापि। उण् २।४६) इति इनच्, पृषोदरादित्वाद्धीर्घं स्त्रियां टाप्। स्वनामख्यात शस्यविशेष, तीसी।

मसीह (अ० पु०) ईसाइयोंके धर्मगुरु हजरत ईसाका एक नाम।

मसीहा कैरानवी—एक मुसलमान कवि। इसका असल नाम सादुल्ला था। सम्राट् अकबर शाहकी सभामें रह कर इन्होंने अयोध्याधिपति रामचन्द्रकी पत्नी सीतादेवीका उपाख्यान एक काव्यमें लिखा था।

मसुर (सं० पु०) मस्यते परिमीयतेऽसौ-मस् (मसेश्च। उण् १।४४) इति उरन्। मसूर, मसुरी। मसूर देखो

मसुरा (सं० स्त्री०) मस्यति पण्यत्वेन परिणमत्यस्या-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विति मस्-उरन् स्त्रियां टाप्। १ वेश्या, रंडी। २ व्रीहि-भेद, मसुरी नामका अनाज। मसूर देखो।

मसूद खाँ—मालवके एक मुसलमान राजा, सुलतान होसेनके पुत्र। १४३५ ई०में सुलतानके वजीर मालिक मोघीके लड़के महम्मद खाँने प्रथम युवराज गजनी खाँको विष खिला कर मार डाला और शासनभार अपने हाथ लिया। यह संवाद पा कर युवराज मसूद खां मालवसे भागे और गुजरातके राजा अह्मदकी शरणमें पहुंचे। तदनुसार सुलतान अह्मदने मसूद खांका पक्ष ले कर मालवाकी ओर युद्ध-यात्रा कर दी। शारङ्गपुर पहुंच कर उन्होंने महम्मद खांके विरुद्ध कुछ विश्वस्त और वहु-दर्शी कर्मचारीके अधीन एक दल सेना भेजी। खां जहान (मालिक मोघी)-ने यह संवाद पा कर वड़ी तेजीसे मान्दु-दुर्गमें आश्रय लिया। गुजरातके राजा भी इसी समय वहां जा धमके। कुछ दिन दुर्गमें अवरुद्ध रह कर वे शत्रुसेनाका आक्रमण व्यर्थ करने लगे। इसके वाद दोनों पक्षकी सेनामें मुठभेड़ हो गई। अह्मदशाहने अपने लड़के महम्मद खांकी अधिनायकतामें पांच हजार घुड़सवार सेना भेज कर शारङ्गपुरको दखल किया।

महम्मद खांने जव देखा कि दुर्गमें रहनेसे कोई फल नहीं, तव वे तारापुर-फाटकसे निकल कर शारङ्गपुरकी ओर चल दिये। राहमें मालिक हाजीने उन्हें रोकनेकी चेष्टा की पर अकृतकार्य हो वे वहांसे भागे।

गुजरातके राजा सुलतान अह्मदने मसूद खांको फिर-से मालव राजसिंहासन पर विठानेका वचन दिया था, पर वचन पूरा होनेके पहले ही मसूद इस लोकसे चल वसे।

मसूद (अमीर सुलतान)—गजनीके सम्राट् सुलतान महमूदके वड़े लड़के। सुलतान महमूदने छोटे लड़के महम्मदको वहुत प्यार करते थे, इस कारण उन्होंने मह-म्मदको ही अपनी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी वनाना चाहा। किन्तु वड़ा लड़का मसूद पीछे कहीं महम्मदको न सतावे, इस आशङ्कासे उन्होंने एक दिन मसूदको वुला कर पूछा, 'मसूद! तुम अपने भाई महम्मदके साथ भविष्यमें कौन वरताव करोगे?' मसूदने निडर हो कर उत्तर दिया, 'आपने अपने भाईके साथ जैसा वरताव किया है, मैं भी ठीक वैसा ही करूंगा।' सचमुच सुलतानने कभी भी अपने भाईके साथ अच्छा वरताव नहीं किया था। मसूदके मुंहसे ऐसा मुंहतोड़ जवाव सुन कर सुलतानने समझ लिया, कि अगर ये दोनों भाई एक जगह रहेंगे तो निश्चय ही आपसमें मर मिटेंगे, अतः दोनोंको दो जगह रखना ही अच्छा है। अतः उन्होंने इराक जीत कर मसूदको वहांका शासनकर्त्ता वनाया और भविष्यमें महमदके साथ विवाद करनेसे मना कर दिया। पिताकी वार वार मनाही सुन कर मसूदने उत्तर दिया, 'यदि महम्मद मुझे उतनी सम्पत्ति जितनी न्यायसे होनी चाहिये दे दे, तो मैं कभी भी उसके विरुद्ध हथियार नहीं उठाऊंगा।' मसूदका ऐसा कठोर वचन सुन कर महम्मदने समझ लिया, कि गजनीका राजसिंहासन पानेकी आशा अव तक भी मसूदके हृदय-से दूर नहीं हुई है। इस ऊहापोहमें पड़ कर सुलतान इराकका परित्याग कर पुनः गजनी आए। किन्तु यहां आ कर वे अधिक दिन तक राज-कार्य करने न पाये, थोड़े ही दिनोंके वाद उनकी मृत्यु हुई।

सुलतानकी मृत्युके वाद उनके इच्छानुसार महम्मद राज तख्त पर वैठे। मसूदने यह संवाद पाते ही खोरासनकी ओर कदम वढ़ाया और वहां पहुंच कर छोटे भाई महम्मदके पास एक पत्र लिख भेजा जिसका आशय यों था, 'मैं सिर्फ पितृदत्त इराक-राज्य पा कर संतुष्ट नहीं हूं, मेरे आदेशानुसार मेरे नाम पर ही खत्वा पाठ कराना।' महम्मद इस पर राजी नहीं हुए। वस फिर क्या था, दोनोंमें लड़ाईकी तैयारी होने लगी। राजहितैषियोंके शान्तिस्थापनकी लाख चेष्टा करने पर भी कोई फल नहीं निकला। महम्मद युसुफविन सवक्त-गिनको सेनापति वना कर रणक्षेत्रमें उतरे। ४२१ हिजरी-में नगीनावादमें रहते समय सवक्तगिन और अमीर अली खुशावन्दने वागी हो कर मसूदका साथ दिया और महम्मद पर चढ़ाई करके उसे कैद कर लिया। इस काम-के लिये पारितोषिक पानेकी आशासे दोनों ही मसूदके पास गये। किन्तु फल उल्टा हो गया। विश्वासघातकों-को आश्रय देना अनुचित समझ कर मसूदने अली खुशा-वन्दको कैद किया और सवक्तगिनको मरवा डाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद वे वे-रोकटोक नगीनाबादसे गजनी पहुंचे।

गजनीके सिंहासन पर बठ कर सुलतान मसूदने अपने भाई महम्मदकी आखें निकलवा डालीं। किन्तु वे विशेष दया और न्यायपरताके साथ प्रजापालन करते थे। उनके शासनकालमें राज्य भरमें जगह जगह मसजिद, विद्यालय और पान्थनिवास खोले गये थे। वे हर साल भारतवासी विधर्मी हिन्दुओंके विरुद्ध युद्धयात्रा करते थे। इस प्रकार एक बार भारत आक्रमणके बाद जब वे स्वराज्यको लौट रहे थे, तब राहमें नस्तीगिन, अली खुशावन्द और युसुम-बिन बक्तगिनके पुत्रोंने उन्हें पकड़ कर महम्मदके पास हाजिर किया। महम्मदने मसूदको कैद कर मार डाला। मसूदने सिर्फ १२ वर्ष राज्य किया था।

मसूदके बुद्धि-कौशल और पराक्रमके विषयमें एक अलौकिक उपाख्यान सुननेमें आता है। कहते हैं, कि एक दिन सुलतान महमूदने किरमाणके राजाके पास कुल मूल्यवान वस्तु भेंटमें भेजी। किरमाणकी खरिश नामक मरुभूमिमें एक डकैतोंका एक बदमाश दल रहता था। उस दलमें ८० आदमी थे। निराश्रय पथिकोंके प्रति अत्याचार करना और उनके द्रव्यादि लूटना ही उनका एकमात्र व्यवसाय था। सुलतानके दूतको मूल्यवान् उपहार लिये जाते देख वे अपने लोभको रोक न सके। दूतके साथ जितने सिपाही जाते थे प्रायः बहुतोंको मार कर उन्होंने उनका सर्वस्व लूट लिया और वहांसे वे भागे। जो दो एक बच गये थे उन्होंने सुलतानके पास जा कर इसकी खबर दी। सुलतान यह खबर पा कर बडे, विस्मित हुए। इसी समय मसूद हीरटसे लौटे थे। किन्तु जब वे पिताके पास गये तो पिताने जरा भी उसका सम्भाषण नहीं किया। इस पर मसूद उनके चरणोंमें गिर पडे, और अपराधका कारण पूछने लगे। पिताने कहा, 'मसूद! तुम्हारे जैसे पुत्र रहते राज्यमें डकैतोंकी नादिरशाही चल रही है, आश्चर्य है।' मसूद बोले, 'पिताजी! मैं हीरटमें रहता था, इसी समय खरिश-मरुभूमिमें डकैती हुई, इसमें मेरा अपराध क्या?' सुलतानने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और कहा, 'अगर तुम डकैतोंको मृत अथवा जीवित जिस किसी अवस्थामें हो, मेरे पास हाजिर करो, तभी मैं तुम्हारा मुंह देखूंगा, इस बीचमें नहीं।' अनन्तर मसूद दो सौ घुड़सवार सेना ले कर डकैतोंकी तलाशमें निकले। उन लोगोंके दुर्गके समीप जानेसे उन्हें मालूम हुआ, कि डकैत लोग उनके आनेकी खबर सुन कर अभी तुरत भाग गये हैं। अब मसूदने अपने ५० अनुचरोंको हुकुम दिया कि 'तुम लोग अपने अपने हथियारको जीनमें छिपा रखो और मुसाफिरके वेशमें चल चलो, रास्तेमें यदि उन डकैतोंसे मुलाकात हो जाय, तो किसी प्रकार कौशलसे उन्हें रोक रखना।' इतना कह कर मसूदने उन पचासोंको विदा किया और आप बाकी डेढ़ सौ सेनाके साथ उनके पीछे पीछे जाने लगे। डकैतोंको जब उन पचासों पर निगाह पड़ी, तब वे एकाएक उन पर टूट पडे,। दोनों पक्षमें युद्ध चलने लगा। इसी समय मसूद भी वहां जा धमके। सभी डकैत पकडे, गये, एक भी भागने नहीं पाया। उनमेंसे सिर्फ ४०को मसूदने बांध छान कर सुलतानके पास भेजा था, शेष सभी मार डाले गये थे।

मसूद २य अलाउद्दिन, सुलतान)—गजनीके सम्राट्। इनके पिताका नाम इब्राहिम था। १०६१ ई०में गजनीनगरमें मसूदका जन्म हुआ। १७ वर्ष तक न्यायपरताके साथ प्रजापालन करके १११५ ई०में ये परलोकको सिधारे। सुलतान सञ्जरकी बहिनके साथ इनका विवाह हुआ था।

सुलतान मसूद दयालु और उदार प्रकृतिके मनुष्य थे। धार्मिकता और न्यायपरताने उनको राजशक्तिको अलंकृत कर दिया था।

मसूद (मालिक)—गुजरातके बादशाह बहादुरखांके मित्र। जब बहादुर खां महमूद नगर पहुंचे, तब मालिक मसूद और अन्याय सामन्तोंने उनका साथ दिया था। वे सभी इमाद् उल-मुल्कके भयसे स्वदेशका परित्याग कर छिप कर अपना समय बिताते थे। अभी उन्होंने जब सुना कि बहादुर खां इमाद्-उल-मुल्कको परास्त करने आये हैं, तब मसूदने बहादुरखांका पक्ष लिया था।

मसूद ३य (सुलतान)—गजनीके एक सुलतान। इनका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असल नाम आला उद्दौला था। पिताकी मृत्युके बाद मसूद १६ वर्ष राज्य करके ११११४ ई०में परलोकको सिधारे।

मसूद (सिपा-सलार)—गजनीके एक मुसलमान साधु। ये इस्लाम-धर्मकी प्रतिष्ठा करनेमें प्राणत्याग करके सर्व-साधारणके पूज्य हो गये हैं। उत्तर-पश्चिम भारतके बहराइच जिलेमें इनका समाधि-मन्दिर विद्यमान है। यह मुसलमानोंके निकट एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है। भारत वर्षके पठान और मुगल-बादशाह यहां आ कर समाधिके ऊपर बहुमूल्य वस्तु चढ़ाते थे। सुलतान फिरोजशाह १३१४ ई०में मसूदका कब्रिस्तान देखने आये थे।

अबदर रहमान चिस्तीके बनाये हुए 'मीरट-इ-मसूदी' ग्रन्थमें इनकी जीवनी लिखी गई है। उक्त ग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है, कि धर्मात्मा मसूद सुलतान सबुक्तगीनके अधीन नौकरी करते थे। कुछ दिन बाद वे धर्मराज्यके कर्मचारी हुए। गजनीपति सुलतान महमूदके आदेशानुसार सेनापति सलार शाह मुजाफर खांको सहायतामें भारतवर्ष आये। उनकी स्त्री सितारमुसुल्ला भी उनके साथ आई थी। अजमीर नगरमें (४०५ हिजरी) सितार-मुसुल्लाके गर्भसे सलार मसूदका जन्म हुआ। बालक मसूदका सौन्दर्य और शरीरका लक्षणादि देख कर सबोंने अनुमान किया था; कि यह भविष्यमें एक असाधारण प्रतिभाशाली पुरुष होगा।

सुलतान महमूद बालक मसूदको मनोहर मूर्त्ति देख कर बड़े प्रसन्न हुए थे। यहां तक कि उन्होंने मूल्यवान् कपड़े और रत्न अलङ्कारादि भी जन्मोत्सवमें वितरण किये थे। जब मसूदकी उमर ४ वर्ष ४ मास ४ दिनकी हुई, तब वह मीर सैयद इब्राहिमके पास पढ़ने भेजा गया। मसूदकी ऐसी अस्वाभाविक धीशक्ति थी, कि ६ वर्षकी उमरमें ही उसने सब विद्या सीख ली। अनन्तर १०वें वर्षमें वे अपना सारा समय ईश्वरकी आराधनामें बिताने लगे। धीरे धीरे वे सभी विषयोंमें सुदक्ष हो गये। उनका चरित्र बिलकुल निर्मल था, कलङ्क लेशमात्र भी न था। पाप उनकी देहको छूने नहीं पाया था। उनकी पवित्र आत्मा सदा ईश्वरके ध्यानमें निमग्न रहती थी।

१२ वर्षकी उमरमें मसूदने रावलके अधीश्वर सातु-गानको हराया और सपरिवार कैद किया। सुलतान महमूदके सोमनाथ-आक्रमण कालमें सलार मसूद भी वहां गये थे। उन्होंने मन्दिरकी अनेक देवदेवीकी मूर्त्तियोंको तोड़ फोड़ कर स्वधर्ममें विशेष आस्था दिखलाई थी।

इस प्रकार मसूद धीरे धीरे महमूदके प्रियभाजन हो गये। यह देख कर उनके वजीर ख्वाजा हसान मैमन्दीके हृदयमें हिंसानल प्रज्वलित हो उठा। वे अपने कर्त्तव्य कार्यमें उदासीनता दिखलाने लगे जिससे राज्य भरमें अशान्ति फैल गई। महमूदने जब देखा कि वजीरको संतुष्ट रखे बिना राजकार्य सुचारुरूपसे चलना मुश्किल है; तब उन्होंने सराल मसूदको यहांसे हटा देना ही अच्छा समझा। तदनुसार सलार मसूदको कुछ दिनके लिये पिताके पास रहनेकी आज्ञा हुई। वहांसे विदा होते समय वे बड़े दुःखित थे किन्तु सुलतानका प्रेम उनके प्रति अक्षुण्ण था।

सेनापति सलार शाह यह खबर पाते ही काबुल नगरसे स्त्री समेत मसूदके शिविरमें उपस्थित हुए। मसूदको देखते ही उनकी आखें डबडबा आईं और उन्हें अपने साथ रहनेका अनुरोध किया, किन्तु मसूद राजी न हुए। उन्होंने सुदक्ष सेना और कुछ पारिषदको साथ ले भारतवर्षको और कदम बढ़ाया। सिन्धुनदीके किनारे पहुंच कर मसूदने अपने सहचरोंमेंसे २ अमीरको ५० हजार घुड़सवार सेना ले कर सिन्धुनदीके दूसरे पारके देश जीतनेका हुकुम दिया। तदनुसार दोनों अमीर सिन्धुनदी पार कर गये और वहांके राजा अर्जुनरायके प्रासादको ध्वंस कर पांच लाख स्वर्णमुद्राके साथ मसूदके समीप हाजिर हुए। अनन्तर मसूद दलबल समेत सिन्धुनदी पार कर उसीके किनारे छावनी डाल कर रहने लगे। यहां उनका अधिकांश समय आखेटमें व्यतीत होता था।

इसके बाद वे मूलतान नगर पहुंचे। यह नगर महमूदके आक्रमणसे मलियामेट हो गया था। किन्तु इसके पहले ही उक्त नगरके अधिपति राय अर्जुन और अनङ्गपाल मसूदके निकट दूत भेज चुके थे। दूतने आ कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूदसे कहा, 'महाशय! क्या दूसरेका राज्य नष्ट करना आप जैसा धर्मशील व्यक्तिके लिये उचित है? इसके लिये आपको अन्तमें पश्चात्ताप करना होगा।' मसूदने उत्तर दिया, 'सभी ईश्वरका राज्य है, वे जिस पर प्रसन्न रहते हैं उसीको राज्यका अधिकारी बनाते हैं। विधर्मी काफिरोंको मुसलमानी धर्ममें दीक्षित करना हमारा एकान्त कर्त्तव्य है। यदि वे मुसलमानी-धर्म माननेको राजी नहीं, तो निश्चय हो उन्हें यमपुरका द्वार देखना होगा।' इतना कह कर उन्होंने मूल्यवान् वस्त्रादि पारितोषिक दे दूतोंको विदा किया।

दूतोंके विदा होते न होते मसूदने मीर हुसेन अरब, अमीर वाजिद जाफर, अमीर तर्कान, अमीर नाकी, अमीर फिरोज और मराव मलक अहमदको बहुसंख्यक अश्वारोही सेनाके साथ अनङ्गपाल पर चढ़ाई करने भेजा। अनङ्गपाल अपनी सेना, जो बिलकुल तैयार थी, ले कर रणक्षेत्रमें उतर पड़े। तीन घंटे तक दोनोंमें तुमुल संग्राम चलता रहा। धर्मयोद्धाओंमेंसे बहुतेरे यमपुरको सिधारे। असंख्य हिन्दू इस युद्धमें मारे गये। आखिर अनङ्गपालने कोई उपाय न देख आत्मसमर्पण किया।

यहांसे मसूदने दिल्लीकी यात्रा कर दी। इस समय दिल्लीके सिंहासन पर राय महीपाल अधिरूढ़ थे। उनके पास युद्धोपयोगी हाथी और काफी सेना थी। इस कारण वे निर्भय हो कर मसूदके आगमनकी प्रतीक्षा करते थे। प्रबल प्रतापशाली मसूदकी सेना जब दिल्ली पहुंची तब महीपाल उन्हें रोकनेकी चेष्टा करने लगे। दोनों पक्षकी सेना दूर दूरमें रहती थी सही, पर युवक वीरपुरुषगण प्रति दिन मल्लयुद्ध चलाने लगे। इस तरह एक महीना बीत गया। मसूद भयभीत हो कर खुदाको याद करने लगे। इसी बीच उन्हें खबर मिली कि गजनीसे पांच अमीर दलबल समेत उनकी सहायतामें आ रहे हैं। महीपाल शत्रुसेनाकी वृद्धि देख हताश हो पड़े। अब दोनों पक्षकी सेनामें पुनः युद्ध चलने लगा। मसूदको सरीफ उल-मुल्कके साथ बातचीत करते देख महीपालके पुत्र गोपालने उन्हें ऐसी गदा जमायी कि उनके दो दांत टूट गये। भीषण आघात पा कर भी मसूद रणक्षेत्र नहीं छोड़ा, वरन् और भी दूने उत्साहसे रणक्षेत्रमें घूम घूम कर अपनी सेनाको उत्साहित करने लगे। आजका युद्ध बंद हो गया। दूसरे दिन फिर सवेरेसे युद्ध शुरू हुआ, दोनों पक्षकी असंख्य सेना यमपुर जाने लगी। महीपाल और श्रीपाल विशेष पराक्रम दिखा कर मृत्युमुखमें पतित हुए। दिल्लीका सिंहासन मसूदके हाथ लगा।

दिल्लीको जीत कर मसूद मीरट गये। मीरटके राजाने उनके बलविक्रमकी बात सुन कर पहले ही अधीनता स्वीकार कर ली थी। मसूद सन्तुष्ट हो उन्हें स्वराज्यमें प्रतिष्ठित करके कान्यकुब्जकी ओर बढ़े। इसके पहले सुलतान महमूदने जब राय जयपालको कान्यकुब्जके सिंहासन परसे उतार दिया, तब सलार मसूदने ही उन्हें फिरसे बिठाया था। इस कारण मसूदका आगमन सुन कर जयपालने नाना प्रकारके उपढ़ौकन भेज उनकी अभ्यर्थना की। इसके बाद जयपालसे मिल कर मसूद छलकी ओर रवाना हुए।

छल इस समय भारतवर्षके मध्य एक उन्नतिशील नगर था तथा हिन्दुओंका एक पवित्र स्थान समझा जाता था। मसूद यहां पर छावनी डाल कर चारो ओर सेना भेजने लगे। सलार शैफुद्दीन और मियान् राजब बहराइच जीतनेको गये। वहां उन्होंने जब देखा कि खानेको कोई चीज नहीं मिलती जिससे दलबल समेत रहना बिलकुल असम्भव है, तब मसूदको इसकी खबर दी। मसूद यह खबर पा कर वहांके जमींदारोंका कृषिकार्यमें उन्नति करनेके लिये उत्साहित करने लगे। इसके लिये उन्होंने स्थानीय प्रजाको फसलका दाम पेशगी दे दिया था।

अनन्तर मसूदने सुलतानुस-सलातीन और मीर बखतियारको दक्षिण भारतवर्ष भेजा। जाते समय कह दिया था, कि ईश्वर तुम लोगोंकी रक्षा करेंगे। यदि कोई काफिर इस्लामधर्म ग्रहण करे, तो उस पर दया दिखलाना, नहीं तो तलवारसे उनका शिर काट डालना।

एक दिन माणिकपुर और काराके राजाने बहुमूल्य उपढौकनके साथ कुछ दूत मसूदके निकट भेजे। दूतोंने मसूदको भेंट देकर निवेदन किया कि 'वंशपरम्परासे हम लोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस राज्यका उपभोग करते आ रहे हैं। यहां एक भी मुसलमानका वास नहीं है। माकिदनपति आलेक-सन्दरने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था सही, पर वे भी गङ्गा पार न कर केदारके साथ संधि करके ही स्वदेश लौट गये। सुलतान महमूद भी कान्यकुब्ज तक आ कर ही लौट गये थे। किन्तु आप लोग अन्यायपूर्वक इस राज्यको जीतनेके लिये प्रस्तुत हुए हैं, आप जैसे महात्माके लिये यह सचमुच एक निन्दनीय कार्य है। अतएव निवेदन है, कि आप अपने सम्मानकी रक्षा करते हुए स्वेच्छासे देश लौट जायँ, नहीं तो भारी मुश्किलमें पड़ जायँगे।' यह सुन कर मसूद आग बबूले हो गये और होंठोंको चबाते हुए बोले, 'तुम दूत हो, इसी लिये तुम्हारी जान बच गई। यदि कोई दूसरा यह खबर ले कर मेरे पास आया होता, तो कब उसे यमपुर भेज दिया रहता। जावो, अपने राजासे बोलो, कि उन-का देश उसी सर्वशक्तिमान् ईश्वरका राज्य है। वे जिसे चाहेंगे उसीको अधिकारी बनायँगे। मैं केवल देशभ्रमण करने नहीं आया हूं, वरन् इस राज्यको जीत कर विधर्मी काफिरोंको समूल उखाड़ने आया हूं।' दूतोंने लौट कर अपने राजासे कुल वृत्तान्त कह सुनाया। दूतके मुखसे मसूदकी तेजस्विताकी बात सुन कर हिन्दूराजगण डर गये। उस समय एक नाई भी वहां खड़ा था। उसने हाथ जोड़ कर राजासे कहा, 'यदि मुझे आज्ञा मिले, तो मैं इस कार्यका प्रतिविधान कर सकता हूं।' राजासे आज्ञा पाते ही उस नाईने विष खिलाकर मसूदका काम तमाम किया। इस समय मसूदकी उमर सिर्फ दश वर्षकी थी। इसी उमरमें भगवान्ने उन्हें विविध प्रकारके अस्वा-भाविक गुणोंसे भूषित किया था।

मसूद (हुसेन मिर्जा)—इब्राहिम हुसेन मिर्जाका छोटा भाई। हुसेन कुली खांने जब नगरकोटमें घेरा डाला, तब उन्होंने सुना, कि मिर्जागण दलबलके साथ उनका मुकाबला करने आ रहे हैं। अब उन्होंने मिर्जागणों-की गति रोकनेके लिये हिन्दुओंसे मेल कर लिया और उनसे सहायता मांगी। हुसेन कुली खांकी सेना-ने एकाएक मिर्जाकी सेना पर आक्रमण कर दिया। कुछ काल तक दोनोंमें युद्ध चलता रहा। आखिर मसूदका घोड़ा एक गड्ढेमें गिर पड़ा जिससे वे पकड़ गये कैदखानेमें ही हुसेन मसूदकी मृत्यु हुई।

मसूदा—राजपूतानेके अजमीर जिलान्तर्गत एक नगर और उसी नामके परगनेका सदर। यह अक्षा० २६° ५' उ० तथा देशा० ७४° ३२' पू०के मध्य अजमीर शहरसे २६ मील दूरमें अवस्थित है। यह स्थान इस्तिमरार-दारकी आवासभूमि है। शहरमें एक दातव्य औष-धालय मौजूद है।

मसूदी—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने ९१५ ई०में भारत, सिंहल और चीन-उपकूलवर्त्ती नाना स्थानोंमें परिभ्रमण कर एक विस्तृत उपाख्यान लिखा है। इनके बनाये हुए मादन-उल-जवाहिर, अखबार उज-जमान, किताब-उल-औषध आदि ग्रन्थोंका प्रत्नतत्त्व-विदोंके निकट विशेष आदर है। उक्त ग्रन्थ २० भागोंमें बटे हैं।

मिस्रदेशकी अति अद्भुत कीर्त्ति पिरामीडका वर्णन करते समय इन्होंने लिखा है, कि उसके भीतर किसी एक कमरेमें १ हजार दीनारकी प्राचीन स्वर्णमुद्रा थी। एतद्भिन्न उस ग्रन्थमें मिस्रके मुसलमान-राजा यविद-बिन अबदुल्लाके शासनकालमें स्थापित और भी बहुत-सी प्राचीन कीर्त्तियोंका उल्लेख है। ९५६ ई०में मसूदी-का देहान्त हुआ।

मसूम अलीशाह, मीर—विख्यात सुफी-मतके प्रवर्त्तक। ये दाक्षिणात्यवासी सैयद अली रजाके शिष्य थे। दक्षिण-भारतमें गुरुके निकट पाठ समाप्त करके इन्होंने धर्मतत्त्वकी आलोचनामें विशेष ध्यान दिया। धीरे धीरे वह एक धर्माचार्य कहलाने लगे।

करीम खांके शासनकालमें वे भारतवर्षका परित्याग कर सिराज आये। यहां उनकी वक्तृता सुन कर थोड़े ही दिनोंके अन्दर ३० हजार आदमी उनके मतावलम्बी हो गये। यह देख कर वहांके कट्टर धर्मयाजकोंने राजा करीम खांसे जा कहा, कि उक्त महात्मा यदि नगरसे जल्द न निकाले जायंगे, तो नगरमें अशान्ति फैलनेकी सम्भावना है। महात्माकी अद्भुत क्षमता देख कर सभी स्तम्भित हो गये थे, किन्तु उनकी शत्रुसंख्या दिन-पर-दिन बढ़ती ही जाती थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मसूम इस समय इसपाहन नगरमें जा कर रहने लगे। करीमकी मृत्युके बाद उन्होंने फिरसे अपने प्रधान शिष्य फयाज अलीको अपना धर्म प्रचार करनेके लिये राजधानी भेजा। थोड़े ही समयके मध्य फयाज यमपुर सिधारे। अब नूर अली शाह नामक एक युवक उस कार्यमें नियुक्त हुए। उदारता और दयालुताके कारण लोग इनकी अच्छी खातिर करते थे।

मीर मसूमके शिष्योंको आज भी बढ़ते देख इस्पाहनके धर्मयाजकोंने राजा अलीमर्दन खांसे जा कहा, 'महाराज! यह नव्य सम्प्रदाय हम लोगोंके सुप्राचीन विशुद्ध महम्मदीय-धर्मके विरोधी हैं। यह सुफीसम्प्रदाय शीघ्र ही राज्यमें महान् अनिष्ट उपस्थित करेगा। अतएव निवेदन है, कि आप इसका मूलोत्पाटन करके इस्लाम-धर्मका प्रचार कराइये, इसीमें राज्यकी उन्नति है।' पुरोहित सम्प्रदायके बहकानेसे राजाने विरोधी-सम्प्रदायमें जितने लोग थे उनकी दाढ़ी मूंछ और नाक काट डालनेका हुकुम दिया। इससे उद्धत सेनाओंने राज्यमें महा अनिष्टपातकी सम्भावना देख, दोनों पक्षके लोगोंकी नाक और दाढ़ी मूंछ काट डाली।

इसके बाद मसूम अली और नूरअली शाह पारस्यका परित्याग कर नाना स्थानोंमें पर्यटन करते हुए किरमाण शाहमें पहुंचे। यहां उनका प्रियतम शिष्य मुस्ताक अली मारा गया, नूरअली कैद किया गया और आप भी इबादत करते समय वहांके अधिवासियोंसे मारे गये।

इस प्रकार शत्रुओंसे उत्पीड़ित हो कर भी सुफी-सम्प्रदायने अपना अभीष्ट पथ नहीं छोड़ा, वरन् आगे बढ़ता ही गया। दिन पर दिन सुफी-सम्प्रदायकी वृद्धि देख कर वहांके सभी लोग संदेह करने लगे। फलतः नूर अली शिष्योंके साथ राज्यसे निकाला गया। उस समय उसके करीब ६० हजार शिष्य हो चुके थे। १७०० ई०के जून मासमें मुसलनगरमें विषप्रयोगसे उसकी मृत्यु हुई।

मसूम खाँ—सम्राट् अकबरशाहका जौनपुरका एक शासनकर्त्ता। यह १५७० ई०में उक्त नगरमें यमुनाके किनारे एक अट्टालिका बनवा गये हैं।

मसूम खाँ फरंखुदी—सम्राट् अकबरशाहका अनुगृहीत एक राजद्रोही। पिता मुइन् उद्दीन अहम्मद फरखुदीकी मृत्युके बाद यह हाजिरीके काम पर भर्त्ती हुआ। सम्राट्की इस पर बड़ी कृपा रहती थी, इस कारण गाजीपुर-प्रदेश इसको जागीरमें मिला। सम्राट्का प्रेमभाजन हो कर भी यह उनके विरुद्ध कार्रवाई करता था। टोडरमलके साथ विहार प्रदेशमें आनेसे उसका मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। कुछ समय बाद सम्राट्का भाई मिर्जा महम्मद हाकिम जब पञ्जाब पर चढ़ाई करने तैयार हुआ, तब सम्राट् खुदसे उसका दमन करनेके लिये वहां गये। इस सुअवसरमें मसूमने तरसन खांको परास्त कर जौनपुरसे निकाल दिया। अकबर शाह मसूमको बचपनसे ही प्यार करते थे। इस कारण राजद्रोहिताके लिये कोई विशेष दण्ड न दिया, केवल जौनपुरके बदलेमें अयोध्याप्रदेश प्रदान किया। यहां भी वह अपना दल पुष्ट करनेसे बाज नहीं आया। राजा बीरबर और शाह कुली महरमके बार बार निषेध करने पर भी जब उसने नहीं माना तब शाहबाजखां दलबलके साथ उसे उचित दण्ड देनेके रवाना हुआ।

शाहबाजसे हार खा कर मसूमने नगरमें आश्रय लिया; किन्तु उसके सहयोगी राजद्रोही नेताओंके भाग जानेसे वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। पीछे वह भी अपने बाल-बच्चेको वहीं पर छोड़ कर भागा। राहमें किसी जमींदारने उसका सर्वस्व लूट लिया। इसके बाद मकसुद नामक अपने एक मित्रसे कुछ धन पा कर उसने फिर बहराइच, महम्मदाबाद, जौनपुर आदि स्थानोंमें लूट पाट आरम्भ कर दिया। जौनपुरमें जागीरदारोंने इसे बहुत सताया था। आखिर उसने आजिज कोकाकी शरण ली। कुछ दिन बाद आजिज कोका उसे बादशाहके समीप ले गये। इस प्रकार नाना दोषोंसे दोषी और अत्याचारी होने पर भी अकबर शाहने उसके कुल अपराध माफ कर दिये। केवल यही नहीं, भविष्यमें सुखसे रहनेके लिये उसे चम्पारनके अन्तर्गत मिसी परगना भी जागीरमें मिला।

यहां आ कर भी उसका स्वभाव नहीं बदला। फिरसे उसको विद्रोहिताचरण करते देख आजिज उसे दण्ड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस राज्यका उपभोग करते आ रहे हैं। यहां एक भी मुसलमानका वास नहीं है। माकिदनपति आलेक-सन्दरने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था सही, पर वे भी गङ्गा पार न कर केदारके साथ संधि करके ही स्वदेश लौट गये। सुलतान महमूद भी कान्यकुब्ज तक आ कर ही लौट गये थे। किन्तु आप लोग अन्यायपूर्वक इस राज्यको जीतनेके लिये प्रस्तुत हुए हैं, आप जैसे महात्माके लिये यह सचमुच एक निन्दनीय कार्य है। अतएव निवेदन है, कि आप अपने सम्मानकी रक्षा करते हुए स्वेच्छासे देश लौट जायँ, नहीं तो भारी मुश्किलमें पड़ जायंगे।' यह सुन कर मसूद आग बबूले हो गये और होंठोंको चबाते हुए बोले, 'तुम दूत हो, इसी लिये तुम्हारी जान बच गई। यदि कोई दूसरा यह खबर ले कर मेरे पास आया होता, तो कब उसे यमपुर भेज दिया रहता। जावो, अपने राजासे बोलो, कि उन-का देश उसी सर्वशक्तिमान् ईश्वरका राज्य है। वे जिसे चाहेंगे उसीको अधिकारी बनायँगे। मैं केवल देशभ्रमण करने नहीं आया हूं, वरन् इस राज्यको जीत कर विधर्मी काफिरोंको समूल उखाड़ने आया हूं।' दूतोंने लौट कर अपने राजासे कुल वृत्तान्त कह सुनाया। दूतके मुखसे मसूदकी तेजस्विताकी बात सुन कर हिन्दूराजगण डर गये। उस समय एक नाई भी वहां खड़ा था। उसने हाथ जोड़ कर राजासे कहा, 'यदि मुझे आज्ञा मिले, तो मैं इस कार्यका प्रतिविधान कर सकता हूं।' राजासे आज्ञा पाते ही उस नाईने विष खिलाकर मसूदका काम तमाम किया। इस समय मसूदकी उमर सिर्फ दश वर्षकी थी। इसी उमरमें भगवान्ने उन्हें विविध प्रकारके अस्वा-भाविक गुणोंसे भूषित किया था।

मसूद (हुसेन मिर्जा)—इब्राहिम हुसेन मिर्जाका छोटा भाई। हुसेन कुली खांने जब नगरकोटमें घेरा डाला, तब उन्होंने सुना, कि मिर्जागण दलबलके साथ उनका मुकाबला करने आ रहे हैं। अब उन्होंने मिर्जागणों-की गति रोकनेके लिये हिन्दुओंसे मेल कर लिया और उनसे सहायता मांगी। हुसेन कुली खांकी सेना-ने एकाएक मिर्जाकी सेना पर आक्रमण कर दिया। कुछ काल तक दोनोंमें युद्ध चलता रहा। आखिर मसदका घोड़ा एक गड्ढेमें गिर पड़ा जिससे वे पकड़ गये कैदखानेमें ही हुसेन मसूदकी मृत्यु हुई।

मसूदा—राजपूतानेके अजमीर जिलान्तर्गत एक नगर और उसी नामके परगनेका सदर। यह अक्षा० २६° ५' उ० तथा देशा० ७४° ३२' पू०के मध्य अजमीर शहरसे २६ मील दूरमें अवस्थित है। यह स्थान इस्तिमरार-दारकी आवासभूमि है। शहरमें एक दातव्य औष-धालय मौजूद है।

मसूदी—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने ९१५ ई०में भारत, सिंहल और चीन-उपकूलवर्ती नाना स्थानोंमें परिभ्रमण कर एक विस्तृत उपाख्यान लिखा है। इनके बनाये हुए मादन-उल-जवाहिर, अखबार उज-जमान, किताब-उल-औषख आदि ग्रन्थोंका प्रत्नतत्त्व-विदोंके निकट विशेष आदर है। उक्त ग्रन्थ २० भागोंमें बटे हैं।

मिस्रदेशकी अति अद्भुत कीर्त्ति पिरामीडका वर्णन करते समय इन्होंने लिखा है, कि उसके भीतर किसी एक कमरेमें १ हजार दीनारकी प्राचीन स्वर्णमुद्रा थी। एतद्भिन्न उस ग्रन्थमें मिस्रके मुसलमान-राजा यविद-बिन अबदुल्लाके शासनकालमें स्थापित और भी बहुत-सी प्राचीन कीर्त्तियोंका उल्लेख है। ९५६ ई०में मसूदी-का देहान्त हुआ।

मसूम अलीशाह, मीर—विख्यात सुफी-मतके प्रवर्त्तक। ये दाक्षिणात्यवासी सैयद अली रजाके शिष्य थे। दक्षिण-भारतमें गुरुके निकट पाठ समाप्त करके इन्होंने धर्मतत्त्वकी आलोचनामें विशेष ध्यान दिया। धीरे धीरे वह एक धर्माचार्य कहलाने लगे।

करीम खांके शासनकालमें वे भारतवर्षका परित्याग कर सिराज आये। यहां उनकी वक्तृता सुन कर थोड़े ही दिनोंके अन्दर ३० हजार आदमी उनके मतावलम्बी हो गये। यह देख कर वहांके कट्टर धर्मयाजकोंने राजा करीम खांसे जा कहा, कि उक्त महात्मा यदि नगरसे जल्द न निकाले जांयगे, तो नगरमें अशान्ति फैलनेकी सम्भावना है। महात्माकी अद्भुत क्षमता देख कर सभी स्तम्भित हो गये थे, किन्तु उनकी शत्रुसंख्या दिन-पर-दिन बढ़ती ही जाती थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मसूम इस समय इसपाहन नगरमें जा कर रहने लगे। करीमकी मृत्युके बाद उन्होंने फिरसे अपने प्रधान शिष्य फयाज अलीको अपना धर्म प्रचार करनेके लिये राजधानी भेजा। थोड़े ही समयके मध्य फयाज यमपुर सिधारे। अब नूर अली शाह नामक एक युवक उस कार्यमें नियुक्त हुए। उदारता और दयालुताके कारण लोग इनकी अच्छी खातिर करते थे।

मीर मसूमके शिष्योंको आज भी बढ़ते देख इस्पाहनके धर्मयाजकोंने राजा अलीमर्दन खांसे जा कहा, 'महाराज! यह नव्य सम्प्रदाय हम लोगोंके सुप्राचीन विशुद्ध महम्मदीय-धर्मके विरोधी हैं। यह सुफीसम्प्रदाय शीघ्र ही राज्यमें महान् अनिष्ट उपस्थित करेगा। अतएव निवेदन है, कि आप इसका मूलोत्पाटन करके इस्लाम-धर्मका प्रचार कराइये, इसीमें राज्यकी उन्नति है।' पुरोहित सम्प्रदायके बहकानेसे राजाने विरोधी-सम्प्रदायमें जितने लोग थे उनकी दाढ़ी मूंछ और नाक काट डालनेका हुकुम दिया। इससे उद्धत सेनाओंने राज्यमें महा अनिष्टपातकी सम्भावना देख, दोनों पक्षके लोगोंकी नाक और दाढ़ी मूंछ काट डाली।

इसके बाद मसूम अली और नूरअली शाह पारस्यका परित्याग कर नाना स्थानोंमें पर्यटन करते हुए किरमाण शाहमें पहुंचे। यहां उनका प्रियतम शिष्य मुस्ताक अली मारा गया, नूरअली कैद किया गया और आप भी इबादत करते समय वहांके अधिवासियोंसे मारे गये।

इस प्रकार शत्रुओंसे उत्पीड़ित हो कर भी सुफी-सम्प्रदायने अपना अभीष्ट पथ नहीं छोड़ा, वरन् आगे बढ़ता ही गया। दिन पर दिन सुफी-सम्प्रदायकी वृद्धि देख कर वहांके सभी लोग संदेह करने लगे। फलतः नूर अली शिष्योंके साथ राज्यसे निकाला गया। उस समय उसके करीब ६० हजार शिष्य हो चुके थे। १७०० ई०के जून मासमें मुसलनगरमें विषप्रयोगसे उसकी मृत्यु हुई।

मसूम खाँ—सम्राट् अकबरशाहका जौनपुरका एक शासनकर्त्ता। यह १५७० ई०में उक्त नगरमें यमुनाके किनारे एक अट्टालिका बनवा गये हैं।

मसूम खाँ फरंखुदी—सम्राट् अकबरशाहका अनुगृहीत एक राजद्रोही। पिता मुइन् उद्दीन अहम्मद फरखुदीकी मृत्युके बाद यह हाजिरीके काम पर भर्त्ती हुआ। सम्राट्की इस पर बड़ी कृपा रहती थी, इस कारण गाजीपुर-प्रदेश इसको जागीरमें मिला। सम्राट्का प्रेमभाजन हो कर भी यह उनके विरुद्ध कार्रवाई करता था। टोडरमलके साथ बिहार प्रदेशमें आनेसे उसका मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। कुछ समय बाद सम्राट्का भाई मिर्जा महम्मद हाकिम जब पञ्जाब पर चढ़ाई करने तैयार हुआ, तब सम्राट् खुदसे उसका दमन करनेके लिये वहां गये। इस सुअवसरमें मसूमने तरसन खांको परास्त कर जौनपुरसे निकाल दिया। अकबर शाह मसूमको बचपनसे ही प्यार करते थे। इस कारण राजद्रोहिताके लिये कोई विशेष दण्ड न दिया, केवल जौनपुरके बदलेमें अयोध्याप्रदेश प्रदान किया। यहां भी वह अपना दल पुष्ट करनेसे बाज नहीं आया। राजा बीरबर और शाह कुली महरमके बार बार निषेध करने पर भी जब उसने नहीं माना तब शाहबाजखां दलबलके साथ उसे उचित दण्ड देनेके रवाना हुआ।

शाहबाजसे हार खा कर मसूमने नगरमें आश्रय लिया; किन्तु उसके सहयोगी राजद्रोही नेताओंके भाग जानेसे वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। पीछे वह भी अपने बाल-बच्चेको वहीं पर छोड़ कर भागा। राहमें किसी जमींदारने उसका सर्वस्व लूट लिया। इसके बाद मकसुद नामक अपने एक मित्रसे कुछ धन पा कर उसने फिर बहराइच, महम्मदाबाद, जौनपुर आदि स्थानोंमें लूट पाट आरम्भ कर दिया। जौनपुरमें जागीरदारोंने इसे बहुत सताया था। आखिर उसने आजिज कोकाकी शरण ली। कुछ दिन बाद आजिज कोका उसे बादशाहके समीप ले गये। इस प्रकार नाना दोषोंसे दोषी और अत्याचारी होने पर भी अकबर शाहने उसके कुल अपराध माफ कर दिये। केवल यही नहीं, भविष्यमें सुखसे रहनेके लिये उसे चम्पारनके अन्तर्गत मिसी परगना भी जागीरमें मिला।

यहां आ कर भी उसका स्वभाव नहीं बदला। फिरसे उसने विद्रोहिताचरण करते देख आजिज उसे दण्ड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देनेके लिये चले। यह संवाद पा कर मसूम बहुत डर गया और माफी मांगने लगा। पीछे वह आजिजके साथ राजदरबारमें हाजिर हुआ।

१५८२ ई०में मसूमने आगरा तक धावा किया। इस बार भी बादशाहकी माताके अनुरोधसे उसे रिहाई मिली; किन्तु यह कष्टमय जीवन उसे अधिक दिन वहन नहीं करना पड़ा। एक दिन शामको दरबारसे घर लौट रहा था, इसी समय राहमें किसी गुप्तचरने इसे मार डाला। बहुतोंका कहना है, कि बादशाहने ही गुप्त घातकसे इसका शिर कटवाया था।

मसूम (मीर)—एक मुसलमान ऐतिहासिक और कवि। इनके पूर्वपुरुष बुखरावासी तिर्मिजवंशके थे। जन्मभूमिका परित्याग कर वे कन्धारमें आ बसे। सुलतान महमूद इनके पिता मीर सैयद सफाईको बहुत मानते थे, इस कारण सुलतानके कहने पर वे भक्करमें आ कर बस गये। यहीं पर मीर मसूमका जन्म हुआ था।

पिताकी मृत्युके बाद मसूमने किब्जुवासी मुल्ला महम्मदके निकट लिखना पढ़ना सीखा। धीरे धीरे इनकी सुख्याति फैलने लगी। कुछ दिन बाद इन्होंने गुजरातके दीवान ख्वाजा निजाम उद्दीन अहमदसे कार्यभार ग्रहण किया। इस समय इन्होंने निजामको तबकत्-इ-अकबरी नामक ग्रन्थ बनानेमें मदद पहुंचाई थी। क्रमशः निजामके साथ पीर मसूमकी गाढ़ी मित्रता हो गई। वे मसूमको अपने साथ वहांके शासनकर्त्ता खां तथा अकबर बादशाहके निकट ले गये। गुणग्राही सम्राट्ने उन्हें पहले २५० सेनाका नायक बनाया। पीछे १०१२ हिजरीमें इरानके राजा शाह अब्बासके समीप दूत रूपमें भेजे गये। यहां उनकी बड़ी खातिर हुई थी।

अकबरनामा ग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है, कि उन्होंने गुजरात, मैसाना और कच्छयुद्धमें अपने बलवीर्यका विशेष परिचय दिया था। १०१५ हिजरीमें इरानसे लौटने पर जहांगीरने इन्हें भक्करके अधीन और १ हजारी सेनानायक-पद पर नियुक्त किया। वहीं उनकी मृत्यु हुई।

कविता-शक्तिके लिये उन्हें नासिकी उपाधि मिली थी। उनके बनाये हुए दीवान, मादन उल्फकर नामक मस नवि तारीख-व सिन्धु नामक इतिहास और मुफ्रिदत्त इ-मसूमी नामक हकीमी ग्रन्थ मिलते हैं। अलावा इसके खामसा, हुलन और नीज तथा परिसुरत आदि उत्कृष्ट काव्य इन्हींके बनाये हुए हैं। फतेपुरके सलीम-चिस्तीके मन्दिरमें आज भी उनकी रचित श्लोकावली प्रस्तर-फलकमें उत्कीर्ण है।

यह धार्मिक और दयालु थे। भक्करवासीकी भलाईके लिये बहुतसे जलस्तम्भ, सराय और अट्टालिका बनवा गये हैं। अलावा इसके इन्होंने अपने जीवनकालमें दीन दुःखियोंको भी आर्थिक सहायतासे संतुष्ट किया था।

मसूमाबेगम—सम्राट् बाबरकी कन्या और सम्राट् हुमायूंकी बहन। खोरासनके अधिपति महम्मद जमान मिर्जासे इसका विवाह हुआ था।

मसूर (सं० पु० स्त्री०) मस्यते परिमीयतेऽसौ मस् (मसेरूरन्। उण् ५।३) व्रीहिभेद, मसुरी नामका अनाज। संस्कृत पर्याय—मङ्गल्यक, मसूर, व्रीहिकाञ्चन, मसूरा, मसुरा, रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, शूर, कल्याणबीज, गुड़बीज, मसूरक, मङ्गल्या, मसूरका। (भावप्र०)

यह अन्न द्विदल और चिपटा तथा रंग मटमैला होता है। प्रायः इसकी दाल बनती है। दाल गुलाबी रंगकी और अरहरकी दालसे कुछ छोटी और पतली होती है। पकाने पर रंग अरहरकी दालकी-सी हो जाता है। यह दाल बहुत ही पुष्टिकारक समझी जाती है इसकी सूखी पत्तियां और डंठल चारेके काममें आते हैं। वैद्यकमें इसे मधुर शीतल, संग्राहक, कफ और पित्तका नाशक तथा ज्वरको दूर करनेवाला माना है। द्विजोंमें कुछ लोग इसकी दाल नहीं खाते। पुराणोंमें रविवारके दिन इसका खाना निषिद्ध कहा गया है। विधवाओंके लिये इसका खाना नितान्त वर्जित किया गया है।

मसूरक (सं० पु०) मसूर-इव प्रतिकृतिरिति मसूर-क, संज्ञायां कन् वा। उपाधानविशेष, गोल तकिया। पर्याय—चतुर, चातुर, अंगेऊ, चकगण्डु। (शब्दरत्ना०)

इस शब्दका क्लीवलिङ्गमें भी प्रयोग देखा जाता है।

मसूरकर्ण (सं० पु०) ऋषिभेद।

मसूरघृत (सं० क्ली०) ग्रहणी रोगमें घृतौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर, मसूरका काढ़ा ४ सेर, बेलसोंठ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१ सेर, इन्हें घीमें पकाना होगा । इस घीका सेवन करनेसे ग्रहणी रोग अति शीघ्र दूर होता है । (चक्रदत्त)

मसूरयूष (सं० पु० क्ली०) मसूरका बना हुआ काढ़ा या जूस । इसका गुण संग्राही, वृहण, स्वादु और प्रमेह-नाशक माना है ।

मसूरविदला (सं० स्त्री०) मसूरस्येव विशिष्टं दलमस्याः स्त्रियां टाप् । १ कृष्ण त्रिवृत, काली निसोथ । २ श्याम-लता । ३ आम्रातक वृक्ष, अमड़ा । ४ मेषशृङ्गी मेढ़ा-सिंगी ।

मसूरसूप (सं० पु०) भर्जित मसूर-कृत यूष, भुनी हुई मसुरीका जूस । इसका गुण संग्राही, शीतल, मधुर, लघु, कफ, पित्त और रक्त दोषनाशक तथा विषमज्वर-नाशक माना गया है ।

मसूरसंघाराम (सं० पु०) बौद्ध संघारामभेद ।

मसूरा (सं० स्त्री०) मस्यति परिणमतीति मस् ऊरन् स्त्रियां टाप् । १ वेश्या, रंडी । २ मसूरकी दाल । ३ मसूर-की बनी हुई बरी । ४ मेषशृङ्गी, मेढ़ासिंगी । ५ त्रिवृत्त, निसोथ ।

मसूरा (हिं० पु०) मसूड़ा देखो ।

मसूराभा (सं० स्त्री०) मसूरिका रोग ।

मसूरिका (सं० स्त्री०) मसूरेव मसूरा-कन् स्त्रियां टाप् अत इत्वं । १ कुट्टनी, कुटनी । २ शीतला माता, चेचक (The Small-pox) पर्याय—मापरोग, रक्तवटी, मसूरी ।

(शब्दरत्नावली)

इसका निदान इस तरह है,—

"कटूवम्ल लवणाक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः ।
दुष्ट निष्पावशाकाद्यैः प्रदुष्टपवनोदकैः ॥
क्रूरग्रहेक्षणाच्चापि देशे दोष समुद्भवाः ।
जनयन्ति शरीरेऽस्मिन् दुष्टरक्तेन संगताः ॥
मसूराकृति संस्थानाः पीड़का सा मसूरिका ॥" (भावप्र०)

कटु, अम्ल, लवण और क्षारद्रव्यका सेवन, विरुद्ध-भोजन, अध्यशन, दूषित अन्न, वायु और जलसेवन तथा क्रूरग्रहकी अशुभ दृष्टि द्वारा वातादि त्रिदोषका कुपित हो जाना और दुष्ट रक्तके साथ संसृष्ट हो कर देहमें मसूरकी तरह निकल कर पीड़ा उत्पन्न करता है । इसी रोगको मसूरिका रोग कहते हैं ।

इस रोगके पूर्व लक्षण ये हैं,—मसूरिका या शीतला होनेसे पहले ज्वर होता तथा देहमें खुजलाहट होती, शरीरमें वेदना हो जाती, चमड़ेकी सूजन, विवर्णता और आंखें लाल हो जाती हैं । यह रोग वातपित्तादि भेदसे कई प्रकारका होता है ।

वायुजनित शीतलाके लक्षण इस तरह हैं,—वायुके दोषसे होनेवाले शीतला रोगके फोड़े काले या लाल होते हैं । ये रुक्ष, अत्यन्त वेदनायुक्त, कठोर और देरसे पकता है । रोगीकी सन्धि, अस्थि और पर्वोंमें अधिक वेदना होती है, खांसी हो जाती है, कम्प होने लगता है, ग्लानि या भ्रम, तालू, जिह्वा, कण्ठका सूखना और पिपासाका लगना, भोजनमें अरुचि होना आदि ।

पित्तजनित शीतलाके लक्षण इस तरह हैं,—इसके फोड़े लाल, पीले या अरुणवर्णके होते है । इन फोड़ोंमें जलन और भयानक पीड़ा होती है,और ये शीघ्र पक जाते हैं । इससे रोगीका मलभेद, शरीरमें वेदना, जलन, पिपासा, अरुचि, मुखपाक, आंखें लाल हो जातीं और ज्वरका वेग बढ़ जाता है ।

रक्त दुषित होनेसे जो मसूरिका या शीतला होती है, उसके लक्षण—पित्तजनित हो जानेवाले लक्षणोंकी तरह इसके भी लक्षण दिखाई देते हैं ।

कफके दूषित होनेसे जो मसूरिका या शीतला रोग होता है, उसके लक्षण,—इसके फोड़े सादे रंगके होते हैं, अत्यन्त मुलायम, मोटा, खाज और सामान्य वेदना होती है । ऐसे रोगीका शरीर भारी हो जाता है, शिरमें पीड़ा होती है । कै होनेकी इच्छा, अरुचि, अधिक सोना, तन्द्रा और आलस्य हुआ करती है ।

सान्निपातिक मसूरिकाके लक्षण—त्रिदोषजनित मसू-रिकाके फोड़े नीले रंगके और बहुत ही पीड़ादायक होते हैं । इसका बीचला भाग नीचा हो कर फिर उठता है और देरसे पकता तथा मवाद देता है ।

सप्तधातुओंके मसूरियोंमें रस धातुकी मसूरिकाके लक्षण,—इसके फोड़ोंसे पानी निकलता और ये बुदबुदा-कारके होते हैं । इसको पनीसहामाता भी कहते है । यह विशेष भयका रोग नहीं है ।

रक्तगत मसूरिकामें फोड़े लोहितवर्णके होत हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह तुरत ही पक जाते हैं. इसका चमड़ा पतला होता तथा फूटने पर लेहू निकलने लगता हैं। यह रोग सहज-साध्य है; किन्तु रक्त दूषित होने पर कष्टसाध्य हो जाता है।

मांसगत मसूरिकाके फोडे कड़े और चिकने होते हैं। यह देरसे पकता है। इसका रोगी सदा पिपासित, खुजलाहट, जलन, शारीरिक वेदनासे बेचैन रहता है।

महागत मसूरिकाके फोडे मोटे और चिकने होते हैं। इसमें वेदना अधिक रहती है। जरा उठा हुआ और मण्डलाकार रहता है। इसमें रोगी अत्यन्त ज्वर, मोह, ग्लानि और सन्तापमें चूर रहता है। इस रोगके रोगी कदाचित ही बचते हैं।

अस्थिमज्जागत मसूरिका रोगके फोडे छोटे छोटे जैसा शरीर है उसी रंगके, सूखे और चिपटे होते हैं। यह जरा ऊपर उठा हुआ रहता है और इसके रोगी अत्यन्त मोह, वेदना, ग्लानि और मर्मस्थानकी वेदना अनुभव करते हैं। इस रोगमें शीघ्र ही प्राण नष्ट हुआ करता है।

शुक्रगत या वीर्यगत मसूरिका रोगके फोडे चिकने और मुलायम तथा इनमें बड़े जोरका दर्द होता है। रोगीके मोह, जलन, वेदना, ग्लानि, उन्मत्तता आदि लक्षण प्रकाशित करने पर समझना चाहिये कि यह रोग असाध्य हो गया है। किसी तरह इसके नीरोग होनेकी प्रत्याशा नहीं करनी चाहिये।

उक्त सप्तधातुगत मसूरिका या शीतला रोग दोषके संस्रवसे हुआ करता है। इसे अच्छी तरह पहचान कर इसका प्रतिकार करना चाहिये।

चर्मज मसूरिका रोगके रोगीका कण्ठ रुद्ध होने लगता, अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप और ग्लानि मालूम होती है। यह रोग अतीव कष्टसाध्य है।

रोमान्तिका मसूरिकाके रोगीको पहले ज्वर आता हैं। पीछे रोमकूप सदृश छोटी छोटी फुंसियां निकल आती हैं। इसे मोतीझरा कहते हैं। इसमें रोगीको खांसी और अरुचि उत्पन्न होती है। यह सुखसाध्य और आप ही आप आराम हो जाता है।

रक्तगत, रसगत, पित्तज, कफज और रक्तपित्तजनित मसूरिका सुखसाध्य हुआ करती है। इस तरहकी मसूरिका बिना दवादारु किये ही आराम हो जाती है। वायु-जनित, पैत्तिक और वात-कफजनित मसूरिका बड़ी ही कष्टसाध्य है। इसका लक्षण दिखाई देने पर बड़े यत्नसे इसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

सान्निपातिक मसूरिका सांघातिक होती है। इसके फोड़े दोषभेदसे मूंगेके रंगके या जामुनके रंगके होते हैं। कभी तो यह लौहजालकी तरह काले वर्णके और कभी 'अतसी' फलकी तरह दिखाई देते हैं। दोषभेदसे यह और कई रंगके होते हैं। जिन लोगोंको मसूरिका रोगसे पीड़ित होने पर खांसी, हिचकी, मेह, अत्यन्त ज्वर, वृथा प्रलाप, ग्लानि, मूर्च्छा, पिपासा, दाह, निद्राधिक्य और कण्ठमें घड़घड़ शब्दका होना, जोरोंसे सांस निकलना तथा नाक, मुंह, आंखसे खून बहना आदि लक्षण दिखाई दे, उनका रोग बिलकुल असाध्य हो गया, ऐसा समझना चाहिये। डाक्टर वैद्यको भी ऐसा रोगी नहीं लेना चाहिये।

मसूरिका रोगसे ग्रसित रोगी जब पिपासित हो कर नाकसे जोरसे सांस छोड़ता है, उसे वात दोषाभिभूत समझना चाहिये। इसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है।

इस रोगमें शोथकी बीमारी होने पर यह रोग असाध्य हो जाता है।

फिर कुछ मसूरिका शीघ्र दब जाती हैं और कुछ बड़े यत्न करने पर दबती हैं। फिर कुछ तो यत्न करने पर भी प्रशमित नहीं होतीं।

मसूरिकाकी चिकित्सा।

मसूरिका होनेके साथ साथ श्वेत चन्दनके क्वाथके साथ हिञ्चा शाकका रस पान करना चाहिये। केवल इस रसका ही सेवन करनेसे उपकार हुआ करता है। दशमूली, रास्ना, आंवला, खसखसकी जड़, दुरालभा, गुरुचि, धनिया, मोथा, आदि एक साथ कूट कर क्वाथ बना लेना चाहिये। इसके सेवनसे वातजनित मसूरिका आराम हो जाती है। फोड़ों पर मजीठ, वट, पाकड़, शिरीष और गूलरकी छालों-को एकत्र कर पीस कर लेप करनेसे बहुत फायदा होता है। फोडे जब पकने लगें, तब गुरुचि, मुलेठी, ईखका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूल और दाड़िम गुड़के साथ देने पर वायु प्रकुपित नहीं होती और जल्द पक जाते हैं। इस रोगमें शाली मूंग, मसूर, मीठी चीज और जरा सेंधा नमक सेवन किया जा सकता है।

पित्तजनित मसूरिका रोगमें पहले परवल मूलका क्वाथ और ऊखके मूलका रस प्रयोग करना चाहिये। नीम पित्तपापड़ा, आकनादि, परवलका पत्ता, श्वेतचन्दन, रक्त चन्दन, खसखसका मूल, कटकी, आंवला, अड़ूस और दुरालभा ये सब चीजें इकट्ठी कर क्वाथ बनाना चाहिये। ठण्डा होने पर इसमें जरा चीनी छींट कर उपयुक्त मात्रा से सेवन करने पर पित्तजनित मसूरिका दाह ज्वर आदि शीघ्र विदूरित होते हैं। रक्तजनित मसूरिकामें रक्त मोक्षण करनेसे शीघ्र उपकार होता दिखाई देता है। अड़ूस, मोथा, चिरैता, त्रिफला, इन्द्रयव और नीम आदिके क्वाथमें मधु डाल कर सेवन करनेसे बहुत जल्द उपकार होता है।

शिरीष और गूलरकी छाल, खदिर और नीमकी पत्ती पीस कर लेप करनेसे पित्तजनित मसूरिका नष्ट होती है। नीम, पित्तपापड़ा, आकनादि, परवलका पत्ता, कटकी, श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन, खसखसका मूल, आमलकी, अड़ूस और दुरालभा इसके क्वाथमें चीनी मिला कर खानेसे सब तरहकी मसूरिका, उससे पैदा होनेवाला ज्वर नष्ट होता है और भीतरकी छिपी मसूरिका भी बाहर आ जाती हैं।

काञ्चन छालके क्वाथमें स्वर्णमाक्षिकाचूर्ण डाल कर खानेसे मसूरिका रोग प्रशमित होता है। मुखमें, कण्ठमें व्रण या फोड़ा निकल आने पर आंवला और मुलेठीके क्वाथमें मधु मिला कर आंखको सींचना चाहिये। मुलेठी, त्रिफला, सूचामुखी, दारुहरिद्रा, दारुचीनी, नील कमल, खसखसका मूल, लोध और मंजीठा इसका प्रलेप देने और नेत्रोंमें सींचनेसे आंखोंकी मसूरिका नष्ट हो जाती हैं और फिर उत्पन्न नहीं होती। बहुवार वृक्षकी छालका प्रलेप देनेसे भी नेत्रोंकी मसूरिका नष्ट होती है। क्लेदयुक्त मसूरिका पञ्चवल्कलचूर्ण या भस्म अथवा गोमय चूर्ण द्वारा आच्छादित करनी चाहिये। करैलेकी पत्तीके रसमें हल्दीका चूर्ण छींट कर पान करनेसे रोमान्तिक या मोती झरेका ज्वर, विसर्प और फोड़े नीरोग होते हैं।

मसूरीरोगको वैद्यकमें शीतला रोग कहते हैं। शीतलादेवीके कूपित न होने पर ऐसा रोग नहीं होता, हिन्दुओंका ऐसा ही विश्वास है। मालूम होता है, कि इसीसे इसका नाम शीतला-रोग पड़ गया है।

"देव्या शीतलयाक्रान्ता मसूर्य्येव हि शीतला।
ज्वराय च यथा भूताधिष्ठितो विषमज्वरः॥
सा च सप्तविधा ख्याता तासां भेदं प्रचक्ष्महे॥"

(भावप्रकाश)

देवी शीतलाक्रान्त मसूरी रोगको ही शीतला रोग कहते हैं। जिस तरह भूत प्रेतोंकी वजह व्यक्ति ज्वर आदिसे पीड़ित हो जाते हैं उसी तरह शीतलाक्रान्त हो कर मसूरिकासे लोग पीड़ित हुआ करते हैं। शीतला सात प्रकारकी हैं। पहले ज्वर हो कर बड़े बड़े फोड़े उठ आते हैं। यह एक सप्ताहमें निकलते, दूसरे सप्ताहमें पूर्ण होते और तीसरे सप्ताहमें सूख कर विलुप्त हो जाते हैं। इनमें जो फूटते और बहते हैं उनके लिये बनगोंइठाकी भस्मका चूर्ण लगाना चाहिये। मक्षिकासे बचानेके लिये नीमकी पत्तीका प्रयोग करना चाहिये। पद्मकी नालका भी प्रयोग किया जा सकता है। यदि इसे ज्वर आ जाय, तो ठण्डा जल पीनेको देना चाहिये, कभी भी गरम जलका व्यवहार न करे। स्थान खूब साफ सुथरा, मनोरम और जहां आदमियोंकी भीड़ न हो ऐसे ही स्थानमें रोगीको रखना चाहिये। अपवित्र आदमीको रोगीके निकट जाने न देना चाहिये। इस रोगकी चिकित्सा करनेके लिये वैद्य बहुत कम दिखाई देते हैं। कोई कोई मनुष्य ही इस काममें समर्थ होते हैं।

जो लोग नीम, बहेराका बीज अथवा हल्दी शीतल जलमें पीस कर पीया करते हैं, उनको यह रोग कभी होता ही नहीं। मोचरसमें चन्दन घिस कर या अड़ूस रसमें मधु मिला कर मुलेठीको पीस कर पीनेसे भी यह रोग नहीं होता। शीतला होनेके साथ ही जायफल पत्रका रस अनुपानके साथ सेवन करना चाहिये और शीतलादेवीका कवच पहनना उचित है। उस घरके चारों ओर नीमकी पत्तियां लटका देनी या बांध देनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह तुरत ही पक जाते हैं. इसका चमड़ा पतला होता तथा फूटने पर लेहू निकलने लगता हैं। यह रोग सहज-साध्य है; किन्तु रक्त दूषित होने पर कष्टसाध्य हो जाता है।

मांसगत मसूरिकाके फोडे कड़े और चिकने होते हैं। यह देरसे पकता है। इसका रोगी सदा पिपासित, खुजलाहट, जलन, शारीरिक वेदनासे बेचैन रहता है।

महागत मसूरिकाके फोडे मोटे और चिकने होते हैं। इसमें वेदना अधिक रहती है। जरा उठा हुआ और मण्डलाकार रहता है। इसमें रोगी अत्यन्त ज्वर, मोह, ग्लानि और सन्तापमें चूर रहता है। इस रोगके रोगी कदाचित ही बचते हैं।

अस्थिमज्जागत मसूरिका रोगके फोडे छोटे छोटे जैसा शरीर है उसी रंगके, सूखे और चिपटे होते हैं। यह जरा ऊपर उठा हुआ रहता है और इसके रोगी अत्यन्त मोह, वेदना, ग्लानि और मर्मस्थानकी वेदना अनुभव करते हैं। इस रोगमें शीघ्र ही प्राण नष्ट हुआ करता है।

शुक्रगत या वीर्यगत मसूरिका रोगके फोडे चिकने और मुलायम तथा इनमें बड़े जोरका दर्द होता है। रोगीके मोह, जलन, वेदना, ग्लानि, उन्मत्तता आदि लक्षण प्रकाशित करने पर समझना चाहिये कि यह रोग असाध्य हो गया है। किसी तरह इसके नीरोग होनेकी प्रत्याशा नहीं करनी चाहिये।

उक्त सप्तधातुगत मसूरिका या शीतला रोग दोषके संसर्गसे हुआ करता है। इसे अच्छी तरह पहचान कर इसका प्रतिकार करना चाहिये।

चर्मज मसूरिका रोगके रोगीका कण्ठ रुद्ध होने लगता, अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप और ग्लानि मालूम होती है। यह रोग अतीव कष्टसाध्य है।

रोमान्तिका मसूरिकाके रोगीको पहले ज्वर आता हैं। पीछे रोमकूप सदृश छोटी छोटी फुंसियां निकल आती हैं। इसे मोतीझरा कहते हैं। इसमें रोगीको खांसी और अरुचि उत्पन्न होती है। यह सुखसाध्य और आप ही आप आराम हो जाता है।

रक्तगत, रसगत, पित्तज, कफज और सन्निपातजनित मसूरिका सुखसाध्य हुआ करती है। इस तरहकी मसूरिका विना दवादारु किये ही आराम हो जाती है। वायु-जनित, पैत्तिक और वात-कफजनित मसूरिका बड़ी ही कष्टसाध्य है। इसका लक्षण दिखाई देने पर बड़े यत्नसे इसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

सान्निपातिक मसूरिका सांघातिक होती है। इसके फोड़े दोषभेदसे मूंगेके रंगके या जामुनके रंगके होते हैं। कभी तो यह लौहजालकी तरह काले वर्णके और कभी 'अतसी' फलकी तरह दिखाई देते हैं। दोषभेदसे यह और कई रंगके होते हैं। जिन लोगोंको मसूरिका रोगसे पीड़ित होने पर खांसी, हिचकी, मेह, अत्यन्त ज्वर, वृथा प्रलाप, ग्लानि, मूर्च्छा, पिपासा, दाह, निद्राधिक्य और कण्ठमें घड़घड़ शब्दका होना, जोरोंसे सांस निकलना तथा नाक, मुंह, आंखसे खून बहना आदि लक्षण दिखाई दे, उनका रोग बिलकुल असाध्य हो गया, ऐसा समझना चाहिये। डाक्टर वैद्यको भी ऐसा रोगी नहीं लेना चाहिये।

मसूरिका रोगसे ग्रसित रोगी जब पिपासित हो कर नाकसे जोरसे सांस छोड़ता है, उसे वात दोषाभिभूत समझना चाहिये। इसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है।

इस रोगमें शोथकी बीमारी होने पर यह रोग असाध्य हो जाता है।

फिर कुछ मसूरिका शीघ्र दब जाती हैं और कुछ बड़े यत्न करने पर दबती हैं। फिर कुछ तो यत्न करने पर भी प्रशमित नहीं होती।

मसूरिकाकी चिकित्सा।

मसूरिका होनेके साथ साथ श्वेत चन्दनके क्वाथके साथ हिञ्जा शाकका रस पान करना चाहिये। केवल इस रसका ही सेवन करनेसे उपकार हुआ करता है। दशमूली, रास्ना, आंवला, खसखसकी जड़, दुरालभा, गुरुचि, धनिया, मोथा, आदि एक साथ कूट कर क्वाथ बना लेना चाहिये। इसके सेवनसे वातजनित मसूरिका आराम हो जाती है। फोड़ों पर मजीठ, वट, पाकड़, शिरीष और गूलरकी छालों-को एकत्र कर पीस कर लेप करनेसे बहुत फायदा होता है। फोड़े जब पकने लगें, तब गुरुचि, मुलेठी, ईखका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल और दाड़िम गुड़के साथ देने पर वायु प्रकुपित नहीं होती और जल्द पक जाते हैं। इस रोगमें शाली मूंग, मसूर, मीठी चीज और जरा सेंधा नमक सेवन किया जा सकता है।

पित्तजनित मसूरिका रोगमें पहले परवल मूलका क्वाथ और ऊखके मूलका रस प्रयोग करना चाहिये। नीम पित्तपापड़ा, आकनादि, परवलका पत्ता, श्वेतचन्दन, रक्त चन्दन, खसखसका मूल, कटकी, आंवला, अड़ूस और दुरालभा ये सब चीजें इकट्ठी कर क्वाथ बनाना चाहिये। ठण्डा होने पर इसमें जरा चीनी छींट कर उपयुक्त मात्रा से सेवन करने पर पित्तजनित मसूरिका दाह ज्वर आदि शीघ्र विदूरित होते हैं। रक्तजनित मसूरिकामें रक्त मोक्षण करनेसे शीघ्र उपकार होता दिखाई देता है। अड़ूस, मोथा, चिरैता, त्रिफला, इन्द्रयव और नीम आदिके क्वाथमें मधु डाल कर सेवन करनेसे बहुत जल्द उपकार होता है।

शिरीष और गूलरकी छाल, खदिर और नीमकी पत्ती पीस कर लेप करनेसे पित्तजनित मसूरिका नष्ट होती है। नीम, पित्तपापड़ा, आकनादि, परवलका पत्ता, कटकी, श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन, खसखसका मूल, आमलकी, अड़ूस और दुरालभा इसके क्वाथमें चीनी मिला कर खानेसे सब तरहकी मसूरिका, उससे पैदा होनेवाला ज्वर नष्ट होता है और भीतरकी छिपी मसूरिका भी बाहर आ जाती हैं।

काञ्चन छालके क्वाथमें स्वर्णमाक्षिकाचूर्ण डाल कर खानेसे मसूरिका रोग प्रशमित होता है। मुखमें, कण्ठमें व्रण या फोड़ा निकल आने पर आंवला और मुलेठीके क्वाथमें मधु मिला कर आंखको सींचना चाहिये। मुलेठी, त्रिफला, सूचामुखी, दारुहरिद्रा, दारुचीनी, नील कमल, खसखसका मूल, लोध और मंजोठा इसका प्रलेप देने और नेत्रोंमें सींचनेसे आंखोंकी मसूरिका नष्ट हो जाती हैं और फिर उत्पन्न नहीं होती। बहुवार वृक्षकी छालका प्रलेप देनेसे भी नेत्रोंकी मसूरिका नष्ट होती है। क्लेदयुक्त मसूरिका पञ्चवल्कलचूर्ण या भस्म अथवा गोमय चूर्ण द्वारा आच्छादित करनी चाहिये। करैलेकी पत्तीके रसमें हल्दीका चूर्ण छींट कर पान करनेसे रोमान्तिक या मोती झरेका ज्वर, विसर्प और फोड़े नीरोग होते हैं।

मसूरीरोगको वैद्यकमें शीतला रोग कहते हैं। शीतलादेवीके कूपित न होने पर ऐसा रोग नहीं होता, हिन्दुओंका ऐसा ही विश्वास है। मालूम होता है, कि इसीसे इसका नाम शीतला-रोग पड़ गया है।

"देव्या शीतलयाक्रान्ता मसूर्य्येव हि शीतला।
ज्वराय च यथा भूताधिष्ठितो विषमज्वरः॥
सा च सप्तविधा ख्याता तासां भेदं प्रचक्ष्महे॥"

(भावप्रकाश)

देवी शीतलाक्रान्त मसूरी रोगको ही शीतला रोग कहते हैं। जिस तरह भूत प्रेतोंकी वजह व्यक्ति ज्वर आदिसे पीड़ित हो जाते हैं उसी तरह शीतलाक्रान्त हो कर मसूरिकासे लोग पीड़ित हुआ करते हैं। शीतला सात प्रकारकी हैं। पहले ज्वर हो कर बड़े बड़े फोड़े उठ आते हैं। यह एक सप्ताहमें निकलते, दूसरे सप्ताहमें पूर्ण होते और तीसरे सप्ताहमें सूख कर विलुप्त हो जाते हैं। इनमें जो फूटते और बहते हैं उनके लिये बनगोंइठाकी भस्मका चूर्ण लगाना चाहिये। मक्षिकासे बचानेके लिये नीमकी पत्तीका प्रयोग करना चाहिये। पद्मकी नालका भी प्रयोग किया जा सकता है। यदि इसे ज्वर आ जाय, तो ठण्डा जल पीनेको देना चाहिये, कभी भी गरम जलका व्यवहार न करे। स्थान खूब साफ सुथरा, मनोरम और जहां आदमियोंकी भीड़ न हो ऐसे ही स्थानमें रोगीको रखना चाहिये। अपवित्र आदमीको रोगीके निकट जाने न देना चाहिये। इस रोगकी चिकित्सा करनेके लिये वैद्य बहुत कम दिखाई देते हैं। कोई कोई मनुष्य ही इस काममें समर्थ होते हैं।

जो लोग नीम, बहेराका बीज अथवा हल्दी शीतल जलमें पीस कर पीया करते हैं, उनको यह रोग कभी होता ही नहीं। मोचरसमें चन्दन घिस कर या अड़ूस रसमें मधु मिला कर मुलेठीको पीस कर पीनेसे भी यह रोग नहीं होता। शीतला होनेके साथ ही जायफल पत्रका रस अनुपानके साथ सेवन करना चाहिये और शीतलादेवीका कवच पहनना उचित है। उस घरके चारों ओर नीमकी पत्तियां लटका देनी या बांध देनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये । इस घरमें जूठी फूटी चीज कभी आने न देनी चाहिये। फोड़ोंमें दाह होने पर सूखे गोबरका चूर्ण देना चाहिये। चन्दन, अड़ूस, मोथा, गुरुचि, द्राक्षा इनका शीतल जल पीनेसे शीतला-ज्वर रुक जाता है। जप, होम, दान, स्वस्त्ययन और गो-ब्राह्मण, शिव तथा दुर्गाकी पूजासे शीतला रोग निवारित होता है। रोगीके निकट शुद्धाचारी ब्राह्मणके शीतलाष्टक पाठसे बड़ा उपकार होता है।

शीतला रोगका प्रभेद—कोद्रवा नामक शीतला वायु और कफसे कोद्रव (कोदों)को तरहकी होती हैं। कुछ लोग कहते हैं, कि यह पक जाता है, किन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं होता। जलशूकद्रवा नामक शीतला होनेसे शरीर छेदनेकी तरहका दर्द होता है। यह रोग सात दिन या बारह दिनके बाद विना दवा किये प्रशमित हो जाता हैं। विशेष औषधोपचार करनेकी आवश्यकता होने पर खदिराष्टकके क्वाथसे बहुत ही उपकार होता है।

उष्मा द्वारा सफेद सरसोंके दानेकी भांति फिर भी खुजलाहटके साथ जो फोड़े होते हैं, उसको पनीरुहा कहते हैं। यह सात दिनके बाद आप ही आप सूख जाते हैं।

जिस शीतला रोगमें पीली सरसोंकी तरह दाने निकलते हैं उसे सर्षपिका कहते हैं। इस रोगमें अभ्यङ्ग निषेध है। कुछ उष्मासे सफेद सरसोंके आकारका एक शीतला रोग होता है। यह प्रायः बालकोंको ही हुआ करता है। यह सहज सूख जाता है। जिस शीतला रोगमें फोड़े ज्वर हो कर दर्दके साथ लोहितवर्णके निकलते हैं, उसको षष्ठी शीतला कहते हैं। मगधमें इसको दाम कहते हैं। इस रोगमें तीन दिन ज्वर रहता है।

जिस शीतलामें सब फोड़े फैल कर एकमें मिल जाते हैं, उसको चर्मजा कहते हैं। युक्तप्रदेशमें यह चरमगोटी नामसे प्रसिद्ध है।

सात तरहका यह रोग होता है और यथाविधान शीतलादेवीकी पूजा करनेसे ही आराम होता है।

कुछ शीतला रोग जल्द ही अच्छे हो जाते हैं और कुछ देरसे। कुछ ऐसे हैं, जो यत्न करने पर भी आरोग्य नहीं होता।

यह सब शीतला रोग होने पर दैव पर ही भरोसा कर रहना ठीक है। विशुद्धाचारी ब्राह्मणसे शीतला-स्तोत्र पाठ कराना चाहिये। रोगीको भक्तिके साथ सुनना चाहिये। इससे ही मसूरिका (शीतला) रोग नीरोग होता है। शीतलास्तव इस तरह है। यथा,—

स्कन्ध उवाच।

"भगवन् देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम्।
वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम्॥"

ईश्वर उवाच।

"नमामि शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बरीम्।
मार्जनीकलसोपेतां शूर्पालंकृत मस्तकाम्॥
वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम्।
यामासाद्य निवर्त्तेत विस्फोटकभयं महत्॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीड़ितः।
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति॥
यस्त्वामुदकमध्येतु धृत्वा संपूजयेन्नरः।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च।
प्रनष्टचक्षुषः पुंस्त्वामाहु र्जीवितौषधम्॥
शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान्।
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी॥
गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति ते क्षयम्॥
न मन्त्रो नौषधं किञ्चित् पापरोगस्य विद्यते।
त्वमेका शीतले त्रात्री नान्यां पश्यामि देवताम्॥
मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्य संस्थिताम्।
यस्त्वां विचिन्तयेद्देवीं तस्य मृत्युर्न जायते॥
श्रोतव्यं पठितव्यञ्च नरैर्भक्तिसमन्वितैः।
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत्॥
शीतलाष्टकमेतद्धि न देयं यस्य कस्यचित्।
दातव्यं हि सदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितो हि यः॥"

इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे शीतलाष्टकस्तोत्रं समाप्तम्।

(भावप्रकाश मसूरिकारोगाधि०)

भक्तिपूर्वक यह स्तवपाठ ही शीतलाका एकमात्र औषधि है। शीतलारोग न होने पावे, इसके लिये टीका भी लगाई जाती है। गोस्तनज तथा नरगात्रज शीतलाके मवादसे ही यह टीका दी जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"धेनुस्तन्यमसूरिका नराणाञ्च मसूरिका ।
तज्जलं बाहुमूलाच्च शस्त्रान्तेन गृहीतवान् ॥
बाहुमूले च शस्त्राणि रक्तोत्पत्तिकराणि च ।
तज्जलं रक्तमिलितं स्फोटकज्वरसम्भवम् ॥"

(धन्वन्तरिकृत शाक्तेय ग्रन्थ)

गोके स्तनमें और मनुष्यके हाथमें जो शीतला निकल आती हैं, उनके मवादको किसी नोकदार अस्त्रके अग्र-भाग पर उठा लेना होगा। पीछे जिसको टीका देनी होगी, उसको बाहुके मूलमें छोटा छेद कर यह मवाद उसके रक्तमें मिला देना होगा। पीछे उसको ज्वर तथा शीतला निकल आयेगी। यह आप ही आप नीरोग हो जाता है। फिर इस समय बड़ी पवित्रताके साथ रहना पड़ता है। किसी तरहके अछूतको स्पर्श नहीं करना चाहिये। ऐसा होनेसे रोग बढ़ सकता है।

३ मसहरी यानी मच्छरोंसे त्राण पानेकी सामग्री।

"दंशांश्च मशकांश्चैव वर्षाकाले निवारयेत् ।
मसूरिकाभिः प्रावृत्य मञ्चशायिनमच्युतम् ॥"

(पद्मपुराण क्रियायोगसार १२ अ०) इस रोगका विस्तृत विवरण बसन्त शब्दमें देखो।

मसूरिकापीड़िका (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी माता या चेचक। इसमें मसूरकी दालके बराबर छोटे छोटे दाने निकलते हैं।

मसूरी (सं० स्त्री०) मसूर-स्त्रियां ङीष्। १ मसूरिका, माता, चेचक। २ त्रिवृत्, निसोथ। ३ रक्त त्रिवृत्त, लाल निसोथ।

मसूरी (हिं० पु०) सिमले, सिक्कम और भूटान आदिमें मिलनेवाला एक वृक्ष। यह कदमें छोटा होता है और प्रतिवर्ष शिशिर ऋतुमें इसके पत्ते झड़ जाते हैं। इसको लकड़ी सफेद, बढ़िया और बहुत मजबूत होती है। इससे सन्दूक तथा सजावटके अनेक प्रकारके सामान बनाए जाते हैं।

मसूल (अ० पु०) महसूल देखो।

मसूला (हिं० पु०) एक प्रकारकी पतली लम्बी नाव।

मसूस (हिं० स्त्री०) मन मसोसनेका भाव, कलपना।

मसूसन (हिं० स्त्री०) आन्तरिक व्यथा, मन मसूसनेका भाव।

मसूसना (हिं० क्रि०) १ बल देना, ऐंठना। २ निचोड़ना, बल देना। ३ किसी मनोवेगका रोकना; जब्त करना। ४ मन ही मन रंज करना, कुढ़ना।

मसृण (सं० त्रि०) मसृणेति दीप्यते इति मृणु दीप्तौ इगुपधेति क, पृषोदरादित्वात् साधुः। जो रूखा या कड़ा न हो, चिकना और मुलायम।

मसृणा (सं० स्त्री०) मसृण-स्त्रियां टाप्। उमा, अलसी।

मसोढ़ा (हिं० पु०) १ सोना चांदी आदि गलानेकी घरिया। २ मसूढ़ा देखो।

मसोसना (हिं० क्रि०) मसूसना देखो।

मसौदा (अ० पु०) १ काट छांट करने, दोहराने और साफ करनेके उद्देशसे पहली बार लिखा हुआ लेख, मसविदा। २ उपाय, युक्ति।

मसौदेबाज (अ० पु०) १ वह जो अच्छा उपाय निकालता हो, अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २ धूर्त्त, चालाक।

मस्कट—अरबदेशके समुद्रतीरवर्त्ती एक बन्दर। यह अक्षा० २३° ४८' उ० तथा देशा० ५८° ४०' पू०के मध्य अवस्थित है। दक्षिण और पश्चिममें ऊँची भूमि तथा पूर्वमें एक द्वीप रहनेसे यह बन्दर बहुत निरापद है। वाणिज्यपोत निरापदसे इसके उत्तरसे भीतर प्रवेश कर सकता है। नगरके चारों कोनमें चार दुर्ग हैं। शहरमें जितने मकान हैं, वे सभी एक खनके हैं; सिर्फ पुर्त्तगालोंके बड़े बड़े पत्थरके मकान दिखाई देते हैं। ये सब मकान पारस्य सागरकी रेतीली जमीन पर बने हुए हैं। नगरका जल एक बड़े नालेसे निकलता है। बन्दरमें बड़े बड़े जहाजोंके लंगर डालनेके लिये काफी जगह है।

यह नगर अरबवालोंके व्यवसाय-वाणिज्यका एक प्रधान स्थान है। यहांसे भारतवर्ष, सुमात्रा, मलय-उपद्वीप, लोहितसागर, अफ्रिका आदि देशोंके साथ वाणिज्य चलता है। अंगरेज और फरासी सौदागर पारस्य-उपसागरमें वाणिज्य करते समय इसी बंदरसे माल खरीद कर ले जाते थे। अलावा इसके पारस्यदेशके तथा अरबदेशके अन्यान्य बन्दरोंके साथ यहांका जोरों वाणिज्य चलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहां बादाम, पिस्ता, गोंद, हींग, गंधक, सोरा आदि पण्यद्रव्य ही प्रधान है। इसके अतिरिक्त कहवा, नारियलके तेल, मोम, मोटे रेशम, नील, चीनी, दारचीनी, मुक्ता, गैंड़ेके सींग, मिर्च आदिकी नाना स्थानमें रफ्तनी होती है। नगरके आस पासके स्थान उपजाऊ नहीं हैं। किन्तु साग सब्जी फल मूल आदि बाजारमें बहुतायतसे विकने आते हैं। गाय, भैंस और मुर्गी सस्ते दरमें विकती हैं। दूसरे दूसरे स्थानसे जो सब माल इस बन्दरमें आता है उस पर सैकड़े पीछे चार या पांच रुपया महसूल लगता है। किन्तु यहांसे जो सब माल दूर दूर देशोंमें भेजा जाता है, उस पर किसी प्रकारका महसूल नहीं है। मस्कटसे ३ मील पश्चिम माला नामक एक बड़ा शहर है। दोनों शहरोंमें जाने आनेकी सुविधाके लिये एक चौड़ी सड़क बनाई गई है।

पुर्त्तगीज जब भारतवर्ष व्यापार करने आये, उससे पहले मस्कटकी वाणिज्य-ख्याति सुदूर यूरोपमें फैली हुई थी। पुर्त्तगीजोंके उक्त बन्दर दखल करनेके बाद यहांका वाणिज्य व्यवसाय दिन पर दिन बढ़ने लगा। यहां तक कि यह नगर पूर्वी भूभागोंके मध्य एक बड़ा बन्दर समझा जाने लगा। पहले यह स्थान आरमुज (Ormuz) के शासनाधीन था। पीछे १५०७ ई० पुर्त्तगीजदलपति आलबुकार्कके हाथ आया। १६४८ ई० तक पुर्त्तगीजोंके ही अधिकारमें रहा। इस समय शहरमें धर्म-मन्दिर, विद्यालय इत्यादि बड़े बड़े मकान बनाये गये जिससे इसकी शोभा और भी बढ़ चली। अनन्तर पुर्त्तगीजोंने यहांके पण्यद्रव्य पर ज्यादा महसूल लगा दिया तथा अधिवासियोंके प्रति बुरी तरह पेश आने लगे। इसका फल यह हुआ, कि वे सबके सब विद्रोही हो गये। इस विद्रोहने ऐसा भयङ्कर रूप धारण किया, कि पुर्त्तगीजोंको बोरा बँधना ले कर वहांसे भागना पड़ा।

मस्कटके अधिवासी अरब जातिके हैं। ये लोग जहाज तथा कमान और बन्दूक चलानेमें बड़े सिद्धहस्त हैं। पुर्त्तगीजोंके यहांसे चले जाने पर वे लोग इतने प्रतापशाली हो उठे, कि भारतवर्षमें जितने यूरोपीय राजे थे, सभी भय खाने लगे। १७०७ ई०में उन्हें पेगूके राजासे जहाज बनानेकी आज्ञा मिली। इस प्रकार वह थे, उन्होंने मलबारके किनारे जितने देश थे एक एक कर सबों पर आक्रमण कर दिया। पारस्यवासियोंके साथ उनका लगातार युद्ध चलने लगा। १९वीं सदीके शुरूमें इन्होंने चोरी डकैती करना छोड़ दिया और अपने अपने बन्दरमें वाणिज्य-व्यवसायमें मन लगाया। वर्त्तमान समयमें इस नगरकी विशेष समृद्धि देखी जाती है।

अरबके दक्षिण पूर्ववर्त्ती सभी स्थान तथा अफ्रिकाके डेलगाडो अन्तरीपसे गार्डफुय अन्तरीप तक सभी उपकूलवर्त्ती राज्य मस्कटके इमामके शासनाधीन हैं। इसके सिवा मफिया, जंजिबार, रेम्बा, सकोट्रा आदि द्वीप भी उनके दखलमें थे। इमामकी राज्यशासनप्रणाली स्वेच्छाचार-दोषयुक्त होने पर भी प्रजाके प्रति कोई विशेष अत्याचारका प्रमाण नहीं मिलता। कोई भी विदेशीय लोग गहरी रातको शहरमें बेधड़क आ जा सकता है, दिनरात सड़क पर माल पड़ता रहता है, पर किसीका मजाल नहीं कि उसे छूवे। यहांकी नौसेना निकटवर्त्ती सभी राजाओंकी सेनासे श्रेष्ठ है।

मस्कट—मस्कट देशमें होनेवाला एक प्रकारका अनार। यह अफगानी बेदानेसे बहुत खराब होता है। बाहरी आकृतिमें कोई पृथकता नहीं रहने पर भी स्वादमें बहुत फर्क है। वणिकगण इसीको बेदाना बतला कर भोले भाले लोगोंको ठगते हैं।

मस्कर (सं० पु०) मस्कते गच्छत्यनेनेति मस्क-बाहुलकादरः यद्वा (मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः। पा ६।१।१५४) इति सुट् निपात्यते इति काशिका। १ वंश, खानदान। २ रन्ध्रवंश। ३ गति। ४ ज्ञान।

मस्कर—प्राचीन मौसरी वा मौखरी प्रदेशका एक नाम।

मस्करा—युक्तप्रदेशके हमीरपुर जिलान्तर्गत एक तहसील और उसका सदर। यह हमीरपुरसे १६॥ कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। महेशखेरा नामसे वर्त्तमान नाम निकला है। आज भी यहां महेशका भग्न-मन्दिर-स्तूप मौजूद है।

मस्करा (अ० पु०) मसखरा देखो।

मस्करी (सं० पु०) मस्कते इतस्ततो गच्छत्यनेनेति मस्क-बाहुलकादर, मस्करो दण्डः सोऽस्त्यस्येति मस्कर इनि,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यद्वा मा कर्त्तुं कर्म निषेद्धुं शीलमस्य (मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः। पा ३।१।१५४) इति इनि निपात्यते। १ वह जो चौथे आश्रममें हो। २ भिक्ष। ३ चन्द्रमा।

मस्करी (अ० स्त्री०) मसखरी देखो।

मस्करी—गौतमसूत्रका एक टीकाकार।

मस्खरा (अ० पु०) मसखरा देखो।

मस्जिद (फा० स्त्री०) मसजिद देखो।

मस्त (सं० क्ली०) मस्यते परिमीयते मस् परिमाणे क्त। मस्तक, सिर।

मस्त (फा० वि०) १ जो नशे आदिके कारण मत्त हो, मतवाला। २ जिसे किसीकी चिन्ता या परवाह न होती हो, सदा प्रसन्न और निश्चिन्त रहनेवाला। ३ अभिमानी, घमण्डी। ४ मदपूर्ण, जिसमें मद हो। ५ जो अपनी पूरी जवानी पर आनेके कारण आपेसे बाहर हो रहा हो, यौवनमदसे भरा हुआ। ६ परम प्रसन्न, आनन्दित।

मस्तक (सं० पु० क्ली०) मस्यते परिमीयते मस् (इस्थशिभ्यां तकन्। उण् ३।१४८) इत्यत्र 'बाहुल्यात् मस्यतेरपि तकन्' इत्युज्ज्वल दत्तोक्त्या तकन्। १ प्रधानाङ्ग, सिर। पर्याय—उत्तमाङ्ग, शिरस, शीर्ष, मुण्ड, शिर, वराङ्गक, पुण्ड्र, मौलि, कपाल, केशभू, मस्त। (राजनिघण्टु)

तन्त्रके मतानुसार मस्तकमें सहस्रदल पद्म हैं। इसी पद्मकी कर्णिकामें परमात्मा अवस्थित हैं।

"छत्राकारैः शिरोभिस्तु नृपा निम्नशिरा धनी।
चिपिटैश्च पितुर्म्मृत्युर्गवाढ्याः परिमण्डलैः॥
घटमूर्द्धा पापरुचिर्धनादैःऽपरि वर्ज्जितः॥"
(गरुड़पुराण ६६ अ०)

मस्तक छत्राकार होनेसे धनी, चिपटा होनेसे पिताको मृत्यु और गोधनसम्पन्न तथा घटाकार होनेसे पापी और धनहीन होता है।

२ अग्रभाग, अगला हिस्सा। ३ उच्च स्थान।

मस्तक—मनुष्य तथा अन्यान्य प्राणीके मुखमण्डल समाश्रित शिरोभाग अथवा मूलजीवदेहको आश्रय किये हुए केशमण्डित ग्रीवासंलग्न जो देहभाग ऊपर रहता है उसीको मस्तक कहते हैं। इसी मस्तकमें सुननेकी इन्द्रिय आंख, सूंघनेकी इन्द्रिय नाक, चखनेकी इन्द्रिय जीभ, होंठ, तालु, कपोल, कपाल आदि देहके अंश अवस्थित हैं।

मस्तिष्क ही मस्तकका उपादान है। मस्तिष्क नहीं रहनेसे आंख, कान आदि अङ्गप्रत्यङ्गका कार्य नहीं चल सकता। और तो क्या, समस्त शरीर ही निश्चेष्ट हो जाता है। इसीलिये किसी किसी शास्त्रकारने मस्तिष्कको ही ज्ञानका आधार बतलाया है। आंख जो देखती है, कान जो सुनता है, जीभ जो स्वाद लेती है, मुख जो खाता है, दांत जो चबाता है, गला जो निगलता है सभी काम मस्तिष्क द्वारा सम्पन्न होता है। यदि मस्तिष्क न होता तो यह सब काम होने नहीं पाता। मस्तकमें मस्तिष्क रहनेसे ही जीवकी सभी इन्द्रियां अपने अपने काममें आपे आप लग जाती हैं।

सुश्रुतादि वैद्यक ग्रन्थमें मस्तकके उपादानभूत अङ्गप्रत्यङ्गादिका विषय इस प्रकार लिखा है,—मस्तकांशमें प्रधानतः तीन प्रकारकी अस्थि देखी जाती हैं, कपाल, रुचक और तरुण। कपाल नामक अस्थि गण्ड, तालु, शङ्ख और मस्तकमें; रुचक दन्तमें और तरुण चक्षुकर्णादिमें मौजूद हैं। भिन्न भिन्न स्थानमें ये सब हड्डियां भिन्न भिन्न संख्यामें दिखाई देती हैं; जैसे—दोनों हनूमें २, दण्डमें ३२, नाकमें ३, तालुमें १, गालमें २, कानमें २, शङ्ख (रग)में २ और मस्तकमें ६। ये सब यथाक्रम सन्धिबन्धनमें आबद्ध हैं। जैसे—दन्तमूलमें ३२, नाकमें १, नेत्रमण्डलमें २, दोनों गण्डमें २, दोनों कानमें २, दोनों शङ्खमें २, दोनों हनुसन्धिमें २, दोनों भौंहके ऊपर दोनों बगलमें २, मस्तकके कपालखण्डमें ५ और मूर्द्धदेशमें सिर्फ एक सन्धि है। मस्तक और कपालकी अस्थिको तुन्निसेवनी कहते हैं। अलावा इसके मूर्द्धदेशमें कुल ३४ स्नायु हैं तथा हनुदेशमें ८, तालुदेशमें २, जिह्वामें १, ओष्ठमें २, नाकमें २, आंखमें २, गण्डमें ४, कानमें २, ललाटमें ४ और मस्तकमें १ पेशी हैं। कृकाटिका, विधुर, फणा, अपाङ्ग, आवर्त्त, शङ्ख, उत्क्षेप, स्थपनी, सीमन्त, शृङ्गाटक, अधिपति आदि मर्म तथा ५६ शिरा स्कन्धसन्धि और मस्तकके मध्यदेशमें अवस्थित हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एलोपैथिक मतानुसार वर्त्तमान शरीरतत्त्वोंका इस विषयमें यद्यपि एक मत नहीं है, तथापि उतनी पृथक्ता भी नहीं देखी जाती। वे लोग भी नृकरोटी (Cranium) और मुखमण्डलके समस्त फलको मस्तक कहते हैं। मस्तकके ऊपरी भागमें चमड़ेसे ढकी हुई जो करोटी वा कपाल नामक अस्थि तथा Dura mater नामक छोटी मातृका है, वह सामान्य कारण पा कर ही उत्तेजनाको प्राप्त होती है। इन सब के साथ मस्तिष्ककका संयोग रहनेसे जीवदेह शीघ्र ही विकृत हो जाती है। इन्द्रलुप्त, काउर, संन्यास, मृगी, उन्माद आदि रोग मस्तिष्ककके विगड़नेसे ही होते हैं। लगातार धूपमें घूमने तथा शरीरके भीतरी कीड़ेसे मस्तकमें जो रोग उत्पन्न होता है, अंगरेजीमें उसे Injuries of the head कहते हैं।

मस्तिष्क और शिरोरोग देखो।

मस्तकज्वर (सं० पु०) शिरोव्यथा, सिरमें दर्द।

मस्तकस्नेह (सं० पु०) मस्तकस्य स्नेहः। मस्तकका स्नेह, मस्तकके अन्दरका गूदा।

मस्तकाख्य (सं० पु०) मस्तकमिति आख्या यस्य। वृक्षका सिरा, पेड़का ऊपरी भाग।

मस्तगढ़—पञ्जाबके वशहर राज्यके अन्तर्गत एक दुर्ग। यह अक्षा० ३१° २०' उ० तथा देशा० ७७° ३६' पू०के मध्य मरालकि-काण्ड पर्वतके उत्तर ऊँचे शृङ्ग पर अवस्थित है। वशहरके गुरखाओंके अधिकारभुक्त होने पर यह दुर्ग भी उनके हाथ लगा था। यह समुद्रपृष्ठसे प्रायः ६ हजार फुट ऊंचा है।

मस्तगी (अ० स्त्री०) एक प्रकारका बढ़िया गोंद। यह एक प्रकारकी सदाबहार झाड़ीके तनोंको पाछ कर निकाला जाता है। उक्त झाड़ी भूमध्यसागरके आस पासके प्रदेशोंमें पाई जाती है। यह गोंद वार्निशमें मिलाया जाता है और ओषधिके रूपमें भी काम आता है। दांतोंके अनेक रोगमें यह बहुत उपकारी होता है। इससे दांतोंका हिलना, पीड़ा, दुर्गन्ध आदि दूर होती है। अलावा इसके और भी कई रोगोंमें इसका व्यवहार किया जाता है।

मस्तदारु (सं० क्ली०) मस्तं मस्तकमिव उच्चं दारु। देवदारु।

मस्तमूलक (सं० क्ली०) मूलमेव मूल स्वार्थे कन्, मस्तस्य मूलकः। मस्तकका मूल, गरदन।

मस्तरी (हिं० स्त्री०) धातु गलानेकी भट्ठी।

मस्ताइदखां (महम्मद शाकी) सुलतान बहादुर शाहके वजीर इनातुल्ला खांका मुंशी। इन्होंने 'म-अशिरी-आलम-गिरी' नामका ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थमें आलमगीर अर्थात् औरङ्गजेबके शासनकालकी घटनाएँ संक्षेपमें वर्णन की गई हैं। १० वर्ष तक बादशाहके साथ रह कर इन्होंने अपनी आंखोंसे अनेक विषय पर्यवेक्षण किये थे। औरङ्गजेबके उत्साहसे ही इन्होंने पुस्तक लिखनेमें हाथ लगाया था। उनकी मृत्युके तीन वर्ष बाद वह पुस्तक समाप्त हुई थी।

औरङ्गजेबके दाक्षिणात्यविजयका यथायथ वर्णन उक्त ग्रन्थमें रहने पर भी लेखक महाशयने सत्यका अपलाप करके बादशाहको जो सब विपद् झेलनी पड़ी थी उसका बिलकुल उल्लेख नहीं किया है। उसका कारण यह है, कि औरङ्गजेबने अपने शासनकालके १० वर्ष बादकी राज्यसम्बन्धीय कोई घटना तथा अपना जीवन-इतिहास लिखनेसे ग्रन्थकारोंको मना कर दिया था। किन्तु मस्ताइद खांने निषेध रहने पर भी दाक्षिणात्यविजयका वर्णन करना छोड़ा नहीं।

मस्ताजाव खा—एक मुसलमान-कवि। ये नवाब मस्ताजाव खां बहादुर नामसे मशहूर थे। इनके पिताका नाम था हाकिम रहमत्। इन्होंने 'गुलिस्तानी रहमत्' नामक ग्रन्थ लिखा। उक्त ग्रन्थमें इन्होंने अपने पिताका जीवनचरित और रोहिलवासी अफगानोंका इतिहास वर्णन किया है।

मस्ताना (फा० वि०) १ मस्तोंकासा, मस्तोंकी तरहका। २ मस्त, मत्त। (क्रि०) ३ मस्ती पर आना, मत्त होना।

मस्ति (सं० स्त्री०) मस-क्तिन्। परिमाण।

मस्तिक (हिं० पु०) मस्तिष्क देखो।

मस्तिकी (अ० स्त्री०) मस्तगी देखो।

मस्तिष्क (सं० क्ली०) मस्तं मस्तकं इष्यति स्वाधारत्वेन प्राप्नोति इष गतौ क, पृषोदरादित्वात् साधुः। मस्तकभव घृताकार स्नेहपदार्थ, मगज़, दिमाग। पर्याय—गोर्द, गोद, मस्तकस्नेह, मस्तुलुङ्गक। (हेम)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काजिह्वाया वि वृहामि ते।"

(ऋक् १०।१६३।१)

मस्तकके अभ्यन्तरका स्नेहवत् पदार्थ मस्तिष्क है। प्रचलित शब्दोंमें इसको ही मस्तिष्कका घी, मगज या दिमाग कहते हैं। हम लोग जो नित्य आहार करते हैं, पाकस्थली मेंपरिपक्व हो कर उसका कुछ अंश रस बन जाता है। क्रमसे यह रस शुक्र और रक्तके रूपमें परिणत हो जाता है और शरीरको पुष्ट करता है। यह वीर्य ऊर्द्धगामी हो कर अंतड़ियों द्वारा मस्तिष्कमें जाता है और मनुष्यकी स्मृति और धृतिशक्तिको बढ़ाता है। किन्तु अनियमित वीर्यक्षय होनेसे शरीरकी बल हानि और मस्तिष्कके शक्तियोंका ह्रास होते देखा जाता है। इसीसे साधु पुरुष तथा संन्यासियोंकी धृतिशक्तिकी वृद्धि तथा चञ्चल स्वभाववाले युवकोंके मैथुनादि दोषसे उक्त शक्तिका ह्रास होता दिखाई देता है।

मेरुदण्ड और उससे लगी मोटी शिराका मस्तिष्कसे घनिष्ट सम्बन्ध है। यही शुक्र या वीर्यप्रवाही शिरा कहलाती है। इसीसे मस्तिष्ककी सभी पीड़ायें या खराबियां मेरुदण्डकी समाश्रिता कही जाती हैं। मस्तिष्क और मेरुदण्डकी पीड़ाओं और खराबियोंको मालूम करनेसे पहले कई नामोंको जान लेना आवश्यक है। मस्तिष्कमें अस्वच्छन्दता या परवशता उत्पन्न होने पर क्रमानुसार भारीपन, (Heaviness) स्पन्दन (Throbbing), उत्ताप (Heat) चक्कर (vertigo) मेरुदण्डकी जलन (Burning) और खिंचाव (Tightness) मालूम होने लगता है।

मस्तिष्ककी क्रियामें खराबी उत्पन्न होनेसे या कोई परिवर्त्तन होनेसे नींदका न आना (*Insomnia*), प्रलाप यानी अकारण बक बक बोलना (Delirium), निद्रावेश (Stupor) और जड़ता (Coma) आदि दुर्लक्षण दिखाई देने लगता है। सिवा इसके इसकी पीड़ासे कई इन्द्रियोंकी भी विकलता उठ खड़ी होती है। जैसे आंखोंसे अग्निशिखा (Flashes)-का निकलना, आंखोंके सामने विविध वस्तुका आना जाना (*Muscae Volitantes*) दिखाई देना, कानोंके भीतर कई तरहके शब्दों (*Tinnitus Aurium*) का सुनाई देना, जिह्वाके आस्वादमें अन्तर, स्पर्श शक्तिकी वृद्धि (Hyperaesthesia) और कमी (Anaesthesia) और झिनझिनी (*Numbness*), सुड़सुड़ (Tickling) चुनचुनाना, (Itching), चींटी रेंगनेकी तरहका (Formication), स्पर्शानुभव, छेदनेकी तरहकी यन्त्रणा (*Pricking*) आदि स्पशशक्तिका व्यतिक्रम (*Paraesthesia*) दिखाई देता है। सिवा इसके मांसपेशियोंकी गतिविधिमें और भी कई तरहके परिवर्त्तन दिखाई देते हैं,—(१) सामान्य स्पन्दन (Twitching या Subsultus Tendinum), (२) कम्पन (Tremor), (३) दृढ़ता (Regidity), (४) आक्षेप (Spasms), (५) गुरुतर आक्षेप (*Convulsions*) और (६) अवशाङ्ग (*Paralys s*)। इन सब स्नायविक पीड़ाओंमें बिजलीकी चिकित्सा विशेष उपकारी है। जहां मांसपेशी अवश हो गई हो, वहां विरामयुक्त स्रोत (*Magneto-electric*) और कमी रहने पर अविरामस्रोत (*Voltaic*) की व्यवस्था की जा सकती है। अविरामस्रोत द्वारा क्षययुक्त पेशीकी पुष्टि होती है। स्नायुमण्डल और पेशियोंकी पीड़ा शान्त करनेके लिये जिन औषधियोंका प्रयोग किया जाता है, वे नीचे लिखी जाती हैं।

(१) मस्तिष्कको उत्तेजना देनेवाली औषधियां—मदिरा, अफीम, इत्थर, क्लोरोफारम, चरस, काफी कोको, बेलेडोना, ताम्रकूट, अङ्गघर्षण, हाउसाइमस, कर्पूर और बिजलीका स्तोत्र आदि।

(२) मस्तिष्ककी अवसादक औषधि,—अफीम, मर्फिया, क्लोराल हाइड्रास, विउहिल क्लोरल, मदिरा, इत्थर, क्लोरोफारम, चरस, बेलेडोना, एट्रोपिया, हप, लेटिउस, हाउसाइमस, सल्फोनेल, ब्रमिडिया आदि।

(३) स्नायुशूलमें—जेलसिमियम, फेनाजोन् और एग्जल जाइन अवसादक होनेसे व्यवहृत होता है। मज्जाकी पीड़ामें ष्ट्रीकनिया और नक्सभमिका उत्तेजकरूपमें और ब्रमाइडस, क्लोराल हाइड्रास, हाइड्रासिएनिक् एसिड, कर्पूर, नाइट्रेट् आफ एमाइल, अफीम, मर्फिया, कैलेबरबिन, कोनायम, नाइकोटाइन् और क्यूरा आदि भी अवसादक कही जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) स्नायुके बल देनेवाली औषधियां,—आर्सेनिक, फसफरस, हाइपोफस्फाइटस्, क्वीनाइन, नक्सभमिका, ष्ट्रीकनिया, सलफेट, भेलिरियनेट आफ कपर, क्लोराइड आफ बेरियम और गोल्ड।

(५) मेन्थल, थाइमल, क्लोराल हाइड्रास, कैम्फर मिक्सचर, कोकेन, इत्थर-स्प्रे, क्लोरोफारम्, अफीम, बेलेडोनिया और एकोनाइटका लिनिमेण्ट, पीड़ास्थानका क्षणिक अवसादक और चिकना करनेवाला तथा उत्तापसंस्पर्श, घर्षण, मर्द्दन और जलधारा आदि स्थान उत्तेजक कहे जाते हैं।

(६) एमोनिया, कार्ब्बनेट आफ हाइड्रास एमोनिया, ब्रमाइडस्, स्प्रीट, इत्थर, क्लोरोफारम्, हाइड्रोसियानिक एसिड पिपरमेण्ट, लेवेण्डर, केजुपटी और रु आदि तेल, मेन्थल, कर्पूर, हिङ्ग, एमोनायक्स, गैलवेनम्, भालिरियेम्, कस्तूरी, अफीम, मर्फिया, चरस, बेलेडोना, एट्रोपिया, केलेबारबिन, लोबिलिया, ष्ट्रामोनियम आदि आक्षेप-निवारक हैं।

मस्तिष्क रक्ताधिक्य, जलन, आघात अथवा उसमें पतला और दूषित रक्तका सञ्चालन, स्नायुशूल रोग, पाकस्थली, अंतड़ी, यकृत (तिल्ली) या जरायुकी विविध पीड़ा, मलेरिया जनित अथवा अन्यान्य ज्वर बुखारों और अनिद्रा, शिथिल स्वभाव, मनस्ताप, मानसिक और शारीरिक अत्यधिक परिश्रम, थकावट या काफी अफीमके व्यवहार और निरन्तर मदिरा पीने आदिके कारण मस्तिष्कमें पीड़ा मालूम होने लगती है इसे शिरःपीड़ा या शिरका दर्द (Headache या Cephalalgia) कहते हैं।

रक्तकी अधिकता या कमीसे होनेवाली मस्तिष्ककी किसी तरहकी पीड़ामें अथवा अजीर्ण या पित्ताधिक्यके कारण होनेवाला शिरदर्दके कारणके अनुसार इन रोगोंको यथाक्रम कञ्जेष्टिव, एनिमिक, नार्वस, डिष्पटिक और विलियम हेडेक कहते हैं।

मस्तिष्ककी पीड़ा क्षणिक, दीर्घकालस्थायी, फड़कन, कनकनाना, शूल (छेदनेकी तरह दर्द) उत्ताप और भारीपन आदि भावविशिष्ट होती रहती है। काफी, प्रकाश, शब्द और खाद्यविशेषके व्यवहारके कारण इसकी वृद्धि और कमी होती रहती है। कभी कभी यह पीड़ा एक ही बगल या कभी दोनों बगल होती है। एक ही बगल होनेवाली पीड़ाको अधकपारी और दोनों बगल होनेवाली पीड़ाको शिरःपीड़ा कहते हैं। शिरकी पीड़ा कभी कभी एक स्थानिक भी होती है, जिसमें शिरके एक ही जगहमें दर्द होता है।

शिरका घूमना या मेनियर्सडिजिज—स्पर्श, दर्शन, श्रवण और सेरिवेलमकी क्रिया सुन्दरतासे न होनेसे ही यह रोग उत्पन्न हुआ है, ऐसा समझना चाहिये। मस्तिष्ककी पीड़ा—मादकता सेवन, मानसिक परिश्रम, मलेरिया ज्वर, मूत्रनालीकी पीड़ा और मस्तिष्क क्षीण होनेसे यह पीड़ा उत्पन्न होनेकी सम्भावना रहती है।

मस्तिष्ककी सभी पीड़ाओंमें गर्भ और उदर पीड़ाजनित प्रत्यावर्त्तनिक व्याधियोंमें बेलेडोना द्वारा शरीर विषाक्त रहनेसे और यूरिमिया, डायबिटिस जण्डिस् और डिलिरियम् ट्रिमेन्स आदि रोगमें मस्तिष्कके विकारके कारण प्रलाप (अनट सनटका बोलना बकबक करना) आ उपस्थित होता है। यह प्रलाप कभी तेज (Furious) कभी धीमता (low muttering) होता है। इससे रोगी कभी जोरोंसे कभी अस्पष्टतापूर्वक असङ्गत बातें बकता रहता है। साथ ही होंठ और जीभकी फड़कन भी देखी जाती है। सामान्य भ्रमसे क्रमशः बोल-चालका बन्द हो जाना या अस्पष्टता आ जाती है। रोगीके बीच बीचमें ज्ञानकी बात कहने पर भी शय्यासे उठ जानेवाली इच्छा स्वतः प्रबल रहती है। संन्यास, युरेमिया और बहुमूत्र रोगमें मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता और रक्तकी कमी होनेसे मदिरा, अफीम, बेलेडोना, प्रुसिक एसिड, क्लोरोफारम् या कार्बोनिक अक्साइड द्वारा शरीर विषाक्त होने पर और आभ्यन्तरिक किसी यन्त्रके टूट-फूट जानेसे या मूर्च्छा, मनस्ताप आतपाघात या वज्राघात लगनेसे क्षीण मस्तिष्क रोगीको बाह्य वस्तुका ज्ञान, स्पर्श, वाक्योच्चारण और गमनागमन शक्तिका लोप हो जाता है। इसको Stupor या Coma कहते हैं।

शिथिलस्वभावसम्पन्न व्यक्तियोंके मादकता द्रव्यके व्यवहार करनेके बाद शीतलता, और उत्ताप, अति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भोजन, शरीरमें रक्तकी अधिकता या कमीका होना, दूषित वायुका सेवन, एलबुमिनिउरिया और जण्डिस (न्यावा) रोग, विकारयुक्त ज्वर और अभुक्त अवस्थामें सोना, आदि कारणोंसे मस्तिष्ककी खराबी हो जाती है। इस कारणसे निद्राकर्षण (Somnolence) रोग और ज्वर-में, पागलपनमें, चाय वा काफी पीनेके बाद डिलिरियम् ट्रिमेन्स, धनुष्टङ्कारमें, जलातङ्कमें, मेनिञ्जाइटिस पीड़ामें और गर्भावस्थामें स्वभावतः ही अनिद्रा (Insomnia) रोग आ उपस्थित होता है। मस्तिष्ककी उष्णता, रक्ताधिक्य, और रक्तशून्यता इसका एकमात्र कारण है।

कुछ रोगी स्वप्नावस्थामें विविध स्थलोंका परि-भ्रमण कर आश्चर्यजनक कार्य किया करते हैं। किन्तु निद्रा भङ्ग होने पर उनको उस स्वप्नदृष्ट अद्भुत कर्मोंका जरा भी स्मरण नहीं रहता। यौवनकालमें अत्यधिक भोजन, अधिक मनस्ताप और अत्यधिक पठनपाठनसे मस्तिष्क एक प्रकारसे विकृत हो जाता है। इसको Somnam-bulism कहते हैं।

मस्तिष्कमें किसी तरहकी चोट लगने या दूषित रक्तके सञ्चालनसे पेशीका सङ्कोचन या आक्षेप उपस्थित होता है। इस तरह वारम्वार आक्षेप होते रहनेसे सांस लेने या मस्तिष्कके रक्तसञ्चालनमें रुकावटें होती हैं। कभी कभी तो इससे अवशता और दर्शन, घ्राण, श्रवण, वाक्योच्चारण और स्मरणशक्तिकी हीनता उपलब्ध होती देखी गई है।

मानसिक शक्तिका ह्रास अथवा जिह्वा आदि वागे-न्द्रिय पेशियोंकी हीनताके कारण जड़ता उत्पन्न होने पर एफेसिया (Aphasia) नामक रोग उत्पन्न हो जाता है। शरीरके दक्षिण पार्श्वमें 'हेमिप्लिजिया' या 'प्यारा-लिटिक ष्ट्रोक' होने पर प्रायः ही एफेसिया वर्त्तमान रहता है। मस्तिष्कके वाम 'कर्णपाली' (Lobe)के अग्र-भागमें (जो अंश लेफ्ट मिड्ल आर्टर द्वारा परिपोषित होता है) कोई अदल बदल होनेसे यह लक्षण दिखाई देता है।

ऐफिमिया (Aphamia) या वाक्यका लोप—साधारण तौर पर कर्पोरा ष्ट्रायेटमके नीचे तक कोई परि-वर्त्तन होने पर वाक्यरोध होनेको सम्भावना रहती है। इससे रोगी कभी कभी वाक्शक्ति खो भी देता है। मृगी या संन्यास रोगके बाद इस रोगका उत्पन्न होना दिखाई देता है। स्मरणशक्तिका ह्रास (Amnesia) होने पर रोगी एक बातके बदले दूसरी बात कह देता है, कभी कभी व्यक्ति या स्थानविशेषका नाम भूल जाता है। किसी लिखावटको देख कर भले ही कुछ लिख लेता है; किन्तु उसने क्या लिखा, उसका उसे स्मरण नहीं रहता।

मानसिक प्रकृतिकी इस तरहकी विलक्षणतासे स्थलविशेषमें एक ही समय अवशता और बुद्धिशक्तिका ह्रास हो जाता है। इसके बाद स्मरणशक्तिका ह्रास इसके उपरान्त डिमेन्सिया (जड़ता)का लक्षण दिखाई देता है। पहले जिह्वा ही अवसन्न होने लगती है। दोनों कनिनिकायें असमान रूपसे फैली रहती हैं। कभी कभी उसमें अपाङ्गदृष्टि (Squinting) और अक्षि-पुटपात (Ptosis) विद्यमान रहता है। इस समय रोगीके चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रह जाती। वह ऐसा भाव प्रकट करता है, जिससे मालूम होता है, कि इसको चलने फिरनेकी शक्ति है ही नहीं। चलते समय उसके पांव मतवालेकी तरह इधर उधर पड़ते हैं। स्थिरतासे उसका पैर नहीं जमता। रोगवृद्धिके साथ साथ वाक् और चलने फिरनेकी शक्तिकी कमी, बुद्धिवृत्तिका ह्रास, सङ्कोचक पेशियोंकी अवशता, कनिर्सनका फैलाव, हाथ और पैरमें प्रत्यावर्त्तनिक स्पन्दन होता है। अन्तमें रोगीका मुखमण्डल आकुञ्चित, म्लान और निराश्रय भावापन्न हो उठता है। मस्तकका उत्ताप स्वाभाविक-से अधिक, फिर भी, शरीरके तापको कमी बोध होती है। इसको क्षिप्तावस्थाकी अवसन्नता (General para-lysis of the insane) कहते हैं।

मस्तिष्क और मज्जाकी वैधानिक पीड़ानिवन्धनसे हेमिप्लिजिया रोगकी उत्पत्ति होती है। अन्यान्य रोगों-में मस्तिष्क क्रियाके भावान्तरसे भी यह रोग हो जाता है। मृगी, कोरिया, हिष्ट्रिरिया और उपदंश रोग भी इस पीड़ाके कारण हैं।

मस्तिष्कके शुभ्रविधानकी कोमलता, उसमें सामान्य रूपसे शोणितविद्राव उत्पन्न होनेसे पीड़ाके आरम्भि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवसरों पर होता है। ४ वह स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओंके मस्तक, कान, आंख आदिके पाससे कुछ खास अवसरों पर, विशेषतः उनके मस्त होने समय होता है।

मस्तु (सं० क्ली०) मस्यति परिणमतीति मस् (सितनिगमिमसिसव्य विधाञ् क्रुशिभ्यस्तुन्। उण् १।७०) इति तुन्। १ दधिभवमण्ड, दहीका पानी। जितना दही हो उससे दूना जल डाल कर मथना चाहिये। इसीका नाम मस्तु है। इसे मट्ठा भी कह सकते हैं। इसका गुण उष्ण और अम्ल, रुचिकर, पित्तवर्द्धक, श्रमनाशक बलकर, तृष्णा, उदरी, प्लीहा और अर्थनाशक, श्रोतःशुद्धिकर, कफ और वायुनाशक, विष्टम्भ, शूल, पाण्डु, श्वास, विकार और गुल्मरोगमें विशेष उपकारी तथा लघु माना गया है। २ छेनेका पानी।

मस्तुलुङ्ग (सं० पु०) मस्तु इव लिङ्गं सादृश्यमस्य, पृषोदरादित्वात् इकारस्य उकारः। मस्तिष्क, मगज।

मस्तुलुङ्गक (सं० पु०) मस्तुलुङ्ग-स्वार्थे कन्। मस्तिष्क, मगज।

मस्तूरी (हिं० स्त्री०) धातु गलानेकी भट्ठी।

मस्तूल (पुर्त० पु०) बड़ी नावों आदिके बीचमें खड़ा गाड़ा जानेवाला वह बड़ा लट्ठा या शहतीर जिसमें पाल बांधते हैं।

मस्नद्-आला-आदिल खां—इस्लाम शाहका एक सभासद्। कुछ दिन बाद यह अकबर बादशाहके कर्मचारीपद पर नियुक्त हुआ। ८९० हिजरीमें नगरकोटमें जब घेरा डाला गया, उस समय यह होसेन कुली खां जहान्के अधीन वहां गया था। तबकत् पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह २ हजारी सेनानायक था।

मस्सा (हिं० पु०) मसा देखो।

महँक (हिं० स्त्री०) महक देखो।

महँकना (हिं० क्रि०) महकना देखो।

महगा (हिं० वि०) अधिक मूल्य पर बिकनेवाला, जिसकी कीमत साधारण वा उचितकी अपेक्षा अधिक हो।

महँगाई (हिं० स्त्री०) महँगा देखो।

महँगी (हिं० स्त्री०) १ महँगे होनेका भाव, महँगापन। २ महँगे होनेकी अवस्था। ३ दुर्भिक्ष, अकाल।

महँड़ा (हिं० स्त्री०) भुने हुए चने।

महंत (हिं० पु०) १ साधु मण्डली या मठका अधिष्ठाता, साधुओंका मुखिया। (वि०) २ श्रेष्ठ, प्रधान।

महंती (हिं० स्त्री०) १ महंतका भाव। २ महंतका पद।

महँदी (हिं० स्त्री०) मेंहदी देखो।

मह (सं० पु०) मह्यते पूज्यतेऽस्मिन्निति मह-(पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण। पा ३।३।११८) इति घ, यद्वा मह-अच् (उण् ४।१८८) १ उत्सव। महते पूज्यते इति। २ तेज। ३ यज्ञ। ४ महिष, भैंस। (त्रि०) ५ महत्, बड़ा। ६ अति, बहुत।

महक (सं० पु०) १ महत् व्यक्ति, श्रेष्ठ पुरुष। २ कच्छप, कछुवा। ३ विष्णु।

महक (हिं० स्त्री०) गंध, बू।

महकदार (हिं० वि०) जिसमें महक हो, महकनेवाला।

महकना (हिं० क्रि०) गंध देना, वास देना।

महकमा (अ० पु०) किसी विशिष्ट कार्यके लिये अलग किया हुआ विभाग, सरिश्ता।

महकाली (हिं० स्त्री०) पार्वती।

महकीला (हिं० वि०) सुगंधित, महकदार।

महक्क (सं० पु०) महः कायति प्रकाशयतीति महस् कै क, पृषोदरादित्वात् साधुः। बहुल आमोद, हदसे ज्यादा खुशी।

महचक्र (हिं० पु०) सूर्य।

महज (अ० वि०) १ शुद्ध, खालिस। २ केवल, मात्र।

महजरनाम (अ० पु०) हत्या अथवा हत्यारेके संबंधका साक्षीपत्र, हिंसा विषयक साक्षीपत्र।

महजित—मसजिद देखो।

महण (हिं० पु०) समुद्र।

महत् (सं० त्रि०) मह्यते पूज्यतेऽसौ इति मह (वर्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च। उण् २।८४) इति अति निपात्यते। १ बृहत्, बड़ा। पर्याय—विशङ्कट, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, वड्र, ऊरू, विपुल, पुल, विस्तीर्ण।

वैदिक पर्याय—व्रध्न, ऋष्व, बृहत्, उक्षित, तबस, तविष, महिष, अह्व, ऋभुक्षा, उक्षा, भ्विहायस्, यह्व, ववक्षिथ, विवक्षसे, अम्भृण, माहिण, गभीर, ककुह्, रभस, ब्राध्न, विरप्शी, अद्भुत, वंहिष्ठ, वहिषत्।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(पु०) २ प्रकृतिका पहला विकार। सत्त्व, रज और तमो गुणकी समानावस्थाका नाम प्रकृति है। जब प्रकृतिका विकार उपस्थित होता है, तब उक्त तीनों गुण विरूप हो जाते हैं और उसीसे महत्‌की उत्पत्ति है। इसी महत्‌से स्थावरजङ्गमात्मक जगत्‌की उत्पत्ति हुई है।

महतत्त्व शब्द देखो।

शङ्खादि शब्दके पहले महत् शब्दका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

"शङ्खे तैले तथा मांसे वैद्ये ज्योतिषिके द्विजे।
यात्रायां पथि निद्रायां महच्छब्दो न दीयते॥"

(भट्टि १।४ श्लोक-टीका० भरत)

शङ्ख, तैल, मांस, वैद्य, ज्योतिषिक, द्विज, यात्रा, पथ और निद्रा इन सब शब्दोंके पहले महत् शब्दका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

३ राज्य। ४ ब्रह्म। एकमात्र ब्रह्म ही महत् शब्दके अभिधेय हैं।

"श्रुतेन श्रोत्रियो भवति तपसा विन्दते महत्।"

(भारत ३।३१२।४४)

५ उदक, जल।

महत (हिं० पु०) महतत्त्व देखो।

महतवान (हिं० पु०) करघेमें पीछेकी ओर लगी हुई खूँटी। इसमें तानेको पीछेकी ओर कस कर खींचे रहनेवाली डोरी लपेट कर बरतलेमें बांधी जाती है। इसे हथेला भी कहते हैं।

महता (हिं० पु०) १ सरदार, गांवका मुखिया। २ लेखक, मुंशी।

महताब (फा० स्त्री०) १ चांदनी, चन्द्रिका। २ एक प्रकारकी आतिशबाजी। महताबी देखो। ३ जहाज पर रातके समय संकेतके लिये होनेवाली एक प्रकारकी नीली रोशनी। यह रोशनी काठकी एक नलीमें कुछ मसाले भर कर जलाई जाती है। (पु०) ४ चन्द्रमा, चांद। ५ एक प्रकारका जंगली कौवा, महालत।

महताब—हिन्दीके एक कवि। इन्होंने संवत् १८००में नखशिख नामक ग्रन्थ लिखा। ये साधारण श्रेणीके कवि थे। इन्होंने हिन्दू-पतिकी प्रशंसा की है जिनके यहाँ दास कवि थे। इन्होंने उन्हें राजाके स्थान पर बादशाह लिख दिया है।

महताब बाग—यमुनाके किनारे एक सुरम्य उद्यान। मुगल बादशाह शाहजहान्‌ने यहां पर एक बड़ा मकान बनाया था। उनकी इच्छा थी, कि मृत्युके बाद उनकी देह यहीं पर दफनाई जाय। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि उनके लड़के आलमगीर उस मकानकी बेश-कीमती चीजें दूसरी जगह उठा ले गये थे। इसका खण्डहर आज भी देखनेमें आता है।

महताबी (फा० स्त्री०) १ मोमबत्तीके आकारकी बनी हुई एक प्रकारकी आतिशबाजी। यह मोटे कागजमें बारूद, गंधक आदि मसाले लपेट कर बनाई जाती है। इसके जलनेसे बहुत तेज रोशनी होती है। रोशनी सफेद, लाल, नीली, पीली आदि कई तरहकी होती है। २ एक प्रकारका बड़ा नीबू, चकोतरा। ३ किसी बड़े प्रासादके आगे अथवा बागके बीचमें बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा। इस चबूतरे पर लोग रातके समय बैठ कर चांदनीका आनन्द लूटते हैं।

महतारी (हिं० स्त्री०) माता, मां।

महतिकान्ता (सं० स्त्री०) बृहती, छोटी कटाई।

महती (सं० स्त्री०) महत्-ङीष्। १ वल्लकीभेद, एक प्रकारकी वीणा। २ नारदकी वीणाका नाम। ३ बृहती, कँटाई। ४ वार्त्ताकी, बनभंटा। ५ कुशद्वीपस्थ नदीविशेष, कुशद्वीपकी एक नदीका नाम जो पारिपात्र पर्वतसे निकली है। ६ महत्व, महिमा। ७ वैश्योंकी एक जाति। ८ वह हिचकी जिससे मर्मस्थान पीड़ित हो और देहमें कंप हो। ९ योनिका बहुत फैल जाना। यह एक रोग माना जाता है।

महतीद्वादशी (सं० स्त्री०) महतीति ख्याता। द्वादशी, श्रावणद्वादशी।

"भासि भाद्रपदे शुक्ले द्वादशी श्रवणान्विता।
महतीद्वादशी ज्ञेया उपवासे महाफला॥"

(गरुड़पु० १४१ अ०)

भाद्रमासकी शुक्ला द्वादशीके दिन यदि श्रवणा नक्षत्र पड़े, तो उसी दिनका नाम महती द्वादशी है। यह द्वादशी बहुत पुण्यजनक है। इस दिन स्नान दान उपवास आदि पुण्यकर्म अनन्त फलदायक हैं।

महता (हिं० पु०) १ कुछ गयावाल पंडोंकी एक उपाधि।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२ कहार। ३ जुलाहोंका एक खूँटा। यह भांजके आगे गड़ा रहता है और इसमें भांजकी डोरी फँसाई रहती है।)

महत्कथ (सं० त्रि०) १ जो मोठी मीठी बातें करके बड़े आदमियोंको प्रसन्न करता हो, खुशामदी। २ जिसकी बोलीमें बड़प्पन है।

महत्क्षेत्र (सं० त्रि०) १ विस्तीर्ण क्षेत्रविशिष्ट। (क्ली०) २ विपुलक्षेत्र।

महत्तत्त्व (सं० क्ली०) महच्च तत् तत्त्वञ्चेति। १ सांख्योक्त चतुर्विंशति तत्त्वके अन्तर्गत द्वितीय तत्त्व, सांख्यके अनुसार चौबीस तत्त्वोंमेंसे दूसरा तत्त्व, बुद्धि तत्त्व।

प्रकृतिका प्रथम विकाश महत्तत्त्व है। दर्शनशास्त्रमें इसका विषय जो लिखा है वह यों है—इस महत् सृष्टिके प्रारम्भमें असंसारी और अशरीरी आत्माके सान्निध्यवशतः प्रकृतिके मध्य प्रथम प्रस्फुरण होता है। रजोगुणसे सृष्टि, सत्त्वगुणसे पालन और तमोगुणसे संहार हुआ करता है। इससे यह समझा गया, कि पहले सभी गुणोंके साम्यभङ्गसे रजोगुणने सत्त्वगुणको प्रकाश किया था। इसी कारण सत्त्वगुण सबसे पहले महत्तत्त्व आकारमें प्रादुर्भूत हुआ था। महत्तत्त्वको जाननेके लिये वर्त्तमान प्राणिसमूहको बुद्धिके बीजस्थान पर विचार करना होगा। इससे मालूम होगा, कि सभी विशेष विशेष बुद्धिका विकाशस्थान अन्तःकरण है। फिर यह भी देखा जायगा, कि प्रत्येक अन्तःकरण हरिहर-मूर्त्तिकी तरह त्रिमूर्त्तिमें मौजूद है। उनमेंसे एक मूर्त्ति वा परिणामका नाम 'मनन' और 'अध्यवसाय' तथा दूसरी मूर्त्तिका नाम 'अभिमान' और 'अहं' है। मैं, मैं हूं, वस्तु, वस्तु है, मेरा, मेरे करने योग्य इत्यादि प्रकारके निश्चयात्मक विकाशको अध्यवसाय और ज्ञानशक्ति कहते हैं। यह ज्ञानशक्ति सहजातत्त्वरूपमें जीवकी अन्तरात्मामें हमेशा मौजूद रहती है। ज्ञानशक्तिके समूहका नाम ही महान् है। महान् और पूर्णज्ञान दोनों एक है। पूर्णज्ञानशक्ति ही सांख्योक्त महत्तत्त्व और बुद्धितत्त्व कहलाता है।

जो महान् पुरुष इस महान् बुद्धितत्त्वमें पूर्णरूपसे प्रतिबिम्बित होते हैं वही महापुरुष सांख्योक्त ईश्वर अर्थात् सृष्टिकर्त्ता तथा पुराणादि शास्त्रके हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा, कार्यब्रह्म वा ईश्वर हैं। भूलोक, द्युलोक, अन्तरीक्षलोक, चन्द्रलोक, सूर्यलोक, ग्रहलोक, नक्षत्रलोक, ब्रह्मलोक आदि सभी लोकोंके सभी पदार्थ इन महापुरुषके अधीन हैं। यह महत्तत्त्व नामक व्यापक बुद्धि हमारे ज्ञानमें, तुम्हारे ज्ञानमें, उसके ज्ञानमें, चन्द्रलोकके मनुष्योंके ज्ञानमें, सूर्यलोकके मनुष्योंके ज्ञानमें, पशु और पक्षीके ज्ञानमें मौजूद है। हम लोग जिस प्रकार इस हाथ पैरवाले शरीरके ऊपर 'मेरा' यह अभिमान डाले हुए हैं, उसी प्रकार हिरण्यगर्भ वा ईश्वर भी सम्पूर्ण महत्तत्त्वके ऊपर मैं और मेरा यह अभिमान निक्षेप किये हुए हैं। जिस प्रकार हम लोगोंको अपने अपने शरीर पर अधिकार है, उसी प्रकार समस्त महत्तत्त्वके ऊपर हिरण्यगर्भका अधिकार है। हम लोग अपने अपने हाथ पांवको जिधर चाहें हिला डुला सकते हैं उसी प्रकार हिरण्यगर्भ भी अपने इच्छानुसार समस्त अन्तःकरणको फैलाते हैं।

कपिलने यद्यपि इसका सविस्तार वर्णन नहीं किया है, तथापि अन्यान्य ग्रन्थोंमें इसका विस्तृत विवरण देखा जाता है। कपिलने केवल "महादाख्यं आद्यं कार्यं तन्मनः" (सांख्यसू० १।७१) इस सूत्रमें महत्तत्त्व शब्द समझाया है। प्रकृतिका जो आद्य कार्य है, प्रथम विकाश वा प्रथम परिणाम है उसीको महत्तत्त्व कहते हैं। वही मन अर्थात् मननवृत्तिक अन्तःकरण है। यहां पर मनन शब्दका अर्थ है निश्चय। अन्तःकरण वा बुद्धिके जिस अंशमें निश्चयरूप वृत्ति उत्पन्न होती है, उसी अंशका नाम महान् और महत्तत्त्व है। वृत्ति शब्दसे अर्थ परिणामका बोध होता है, इसीलिये वह वृत्ति है।

इसे जाननेके लिये क्षण क्षणमें उत्पन्न होनेवाली विषयवासनामें लिप्त बुद्धिकी अवगाह खण्ड खण्ड विषयराशिका परित्याग कर निरवच्छिन्न केवल विशुद्ध बुद्धि ही महत्तत्त्व है, ऐसा समझना होगा। पहले केवल चिदात्मा पुरुष थे और कुछ भी न था। अतएव प्रकृतिके प्रथम विकाशमें अर्थात् महत्तत्त्व नामक बुद्धिमें चिदात्माकी अनुरञ्जनाके सिवा अन्य पदार्थकी अनुरञ्जना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं थी और न उसका परिच्छेद हो था। इसलिये वह अवच्छिन्न थी। पीछे प्रकृतिसे जितने मोटे पतले विकार उत्पन्न हुए उतनी ही वह विषयपरिच्छिन्न और मलिन होती गई। प्रकृतिका प्रथम विकार वा प्रथम स्फूर्त्ति ही जगद्बीज वा महान् है। इसका सांकेतिक नाम महत्तत्त्व है। सृष्टिका प्रारम्भ और महत्तत्त्वकी उत्पत्ति दोनों समान हैं। ज्ञेय नहीं होनेसे ज्ञानका आविर्भाव होना ही महत्तत्त्वका दूसरा लक्षण है। ज्ञेयके नहीं रहनेसे ज्ञानका विकाश होना, यह विषय किस प्रकार अनुभव करना होगा, महर्षि मनुने उसे अच्छी तरह समझा दिया है। यथा—

"आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः॥
ततः स्वयम्भूर्भगवान् व्यक्तो व्यञ्जयनिदम्।
महाभूतादिवृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः॥"

(मनु १ अ०)

यह जगत् प्रकृतिलीन था। प्रकृतिलीन रहना ही लय और प्रलय है। वह अवस्था आज्ञात, अलक्ष्य और अप्रतर्क्य थी अर्थात् उस समय प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द ये सब प्रमाण नहीं थे तथा प्रमाणका विषय प्रमेय पदार्थ भी नहीं था। वह अवस्था प्रायः महासुषुप्तिके सदृश थी।

जिस प्रकार हम लोगोंकी गाढ़ी नींद टूटने पर आंख खुलते न खुलते अज्ञान दूर हो जाता और ज्ञानका उदय होता है, उसी प्रकार नितान्त दुर्लक्ष्य प्रलय रूप जगत्की निद्रा भङ्ग होने पर प्रकृतिगर्भमें सूक्ष्म जगत्के अभिव्यञ्जक (अंकुर स्वरूप) अन्धकारको नष्ट करनेवाले सृष्टिकर्त्ता भगवान् स्वयम्प्रभ हिरण्यगर्भ वा महत्तत्त्वका आविर्भाव हुआ था। ज्यों ही जगत्की निद्रा भङ्ग हुई त्यों ही महान् विकाश उदय हुआ, सूक्ष्म जगत् उसके शरीरमें अङ्कित हो गया। मनुको इस उक्तिसे महत्तत्त्वका थोड़ा बहुत भाव समझमें आता है। महत्तत्त्व, हिरण्यगर्भ और ब्रह्म ये सभी समान हैं।

महत्तत्वसे अहंतत्त्वकी उत्पत्ति हुई है। पूर्वोक्त प्रथम परिणामके अर्थात् 'मैं हूं' इत्यादि सहजात निश्चयात्मिका वृत्तिके एक देशमें जो 'अहं वृत्ति' संलग्न है, वही सांख्यका अहंतत्त्व है। यह अहंवृत्ति जिससे वा जिसके परिणामसे उदय होता है वही अहंतत्त्व कहलाता है। यह अहंतत्त्व प्रत्येक आत्मामें मौजूद है। यह अहं एक गणनामें व्यष्टि और समस्त गणनामें समष्टि है। अहं, अभिमान और अहंतत्त्व सभी एक हैं। केवल नाममें फर्क है।

महतत्त्व और अहंतत्त्वमें प्रभेद यह है, कि महत्तत्त्वका मैं अलक्ष्योत्पन्न और अहंतत्त्वका मैं लक्ष्योत्पन्न है। पहले कह आये हैं, कि प्रकृतिका प्रथम परिणाम महत्तत्त्व है। महत्तत्त्वसे अहंतत्त्व तथा अहंतत्त्वसे एकादश इन्द्रियां और पञ्चतन्मात्रकी उत्पत्ति हुई है। प्रकृतिके ऐसे विरूप परिणामसे ही जगत्की सृष्टि होती है। जब दूसरी वार प्रकृतिका स्वरूपपरिणाम उपस्थित होता है, तब जगत्का लय होता है। तत्त्व जिस प्रकार प्रादुर्भूत होता है, लय होनेके समय भी उसी प्रकार लीन हुआ करता है। एकादश इन्द्रिय और पञ्चतन्मात्र अहंतत्त्वमें, अहं महत्तत्त्वमें तथा सबसे अन्तमें महत् प्रकृतिमें लीन होता है। (सांख्यद०)

विष्णुपुराणमें लिखा है,—प्रलयकालमें गुणसाम्य अर्थात् सत्त्व, रजः और तमोगुणकी निष्क्रिय अवस्था होती है। पीछे जब सृष्टिकाल उपस्थित होता है, तब परमेश्वर अपने इच्छानुसार परिणामी और अपरिणामी प्रकृति और पुरुषमें प्रविष्ट हो कर उन्हें क्षोभित अर्थात् सृष्टि करनेमें उन्मुख करते हैं। इसके बाद पुरुषाधिष्ठित गुणसाम्यसे गुणव्यञ्जन अर्थात् महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ। यह महत्तत्त्व तीन प्रकारका है, सात्त्विक, राजस और तामस। बीज जिस प्रकार त्वक् द्वारा आवृत है उसी प्रकार पूर्वोक्त गुणसाम्य (प्रधान तत्त्व)-से यह महत्तत्व आवृत है अर्थात् प्रधानतत्त्व महत्तत्त्वका व्यापक है। पीछे महत्तत्त्वसे अहंतत्यकी उत्पत्ति और क्रमशः इसी प्रकार सृष्टि हुआ करती है। (विष्णुपु० १।२ अ०)

२ कुछ तान्त्रिकोंके अनुसार संसारके सात तत्त्वोंमेंसे सबसे अधिक सूक्ष्म तत्व। ३ जीवात्मा।

महत्तम (सं० त्रि०) सबसे अधिक बड़ा वा श्रेष्ठ।

महत्तर (सं० पु० स्त्री०) अयमनयोरतिशयेन महान् महत्-तरप्। १ शूद्र। २ सम्मानार्ह उपाधिविशेष। (त्रि०) ३ अतिशय महत्, दो पदार्थों मेंसे बड़ा या श्रेठ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महत्तमपद (सं० पु०) श्रेष्ठपद, अच्छा ओहदा।

महत्त्व (सं० क्ली०) महतो भावः त्व। महतका भाव या धर्म, बड़प्पन। नैयायिकोंके मतानुसार द्रव्यके प्रत्यक्ष-विषयमें समवाय-सम्बन्धमें महत्व ही एकमात्र कारण है "महत्त्वं षड्विधे हेतुरिन्द्रियं करणं मतम्।" (भाषापरि०)

२ श्रेष्ठता, उत्तमता। ३ प्रकर्ष, अधिकता।

महदवी—मुसलमानका धर्म-सम्प्रदायविशेष। सम्राट् अकबर शाहके शासनकालमें इस सम्प्रदायके नेता इस्-लाम शाह और फैजीके पिता शेख मुबारक विशेषरूपसे निगृहीत हुए थे।

महदावास (सं० पु०) वृहद् अट्टालिका, बड़ा मकान।

महदाशा (सं० स्त्री०) महती चासौ आशा चेति कर्मधा०। उच्चाशा, ऊंची आकांक्षा।

महदाश्रय (सं० पु०) महतां आश्रयः। महतका आश्रय, बड़े लोगोंकी शरण लेना।

महदी अलीखां—अयोध्याके राजा नसिरुद्दीन हैदरका प्रधान मन्त्री। फतेगढ़के समीप खोदागञ्जमें कालीनदी-के ऊपर जो हिंडोलेके जैसा लोहेका पूल है उसे इन्होंने ही बनवाया था। कहते हैं, कि वह पुल बनानेमें सत्तर हजार रुपया और सात वर्षसे अधिक समय लगा था। १८३२ ई०में महदी अलीखां अपने पदसे हटा दिया गया। किन्तु महम्मद अली शाह जब तख्त पर बैठे तब फिरसे इसने अपना पद प्राप्त किया। १८३७ ई०में इसका देहान्त हुआ।

महदी इमाम—मुसलमानोंके एक इमाम। इनका असल नाम काशिम महम्मद था। मुसलमान लोग बारह इमामकी बड़ी भक्ति करते हैं। इन बारह इमामोंमें महदी ग्यारहवें थे। महदी इमाम ग्यारहवें असकरीके पुत्र थे। ८६६ ई०को २६वीं जुलाईको बागदादके मध्यवर्त्ती शर्मणराई नामक स्थानमें इनका जन्म हुआ था। सिया-सम्प्रदायभुक्त मुसलमानोंका कहना है, कि १० वर्ष की उमरमें यह एक जलाशयमें घुसे और फिर कभी नहीं निकले। इनकी माताने अपनी आंखोंसे यह घटना देखी थी। उनका विश्वास है, कि वे आज भी जीते जागते हैं। वे यह भी कहते हैं, कि अभी महदी इमाम किसी गुप्त स्थानमें छिपे हैं। समय आने पर ईसाइयोंके साथ एकत्र हो कर ईसाइयोंके पुनरभ्युदयके समय विधर्मी काफिरोंको मुसलमानी धर्ममें दीक्षित करनेके लिये उपस्थित होंगे।

महदी काशिम खाँ—सम्राट् अकबर शाहका एक चार हजारी सेनानायक। यह पहले सम्राट् बाबरके ३य पुत्र असकरीके अधीन काम करता था। हुमायूंके पारस्य देशसे लौटते समय महदीने उनका साथ दिया था। अकबर जब राजतख्त पर बैठे तबसे मसूदीको सेना नायक बनाया गया। तबकत् पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह उस समय पांच हजारी सेनानायक था।

९७३ हिजरीमें अकबर बादशाहके आदेशानुसार इसने खान जमान और अबदुल मजिद् आसफ खांका दमन करनेके लिये गड़ा (जब्बलपुर)-की ओर यात्रा कर दी। किन्तु वहांकी शोचनीय अवस्थाको देख कर यह निराश हो गया और मक्काको चल दिया। मक्कासे पारस्य और कन्धार होता हुआ यह सम्राट्के शासन-कालके १३वें वर्षमें रणस्तम्भगढ़ पहुंचा। यह संवाद पा कर बादशाह अकबरने रणस्तम्भमें घेरा डाला। काशिम खांने बचावका कोई उपाय न देख आत्मसमर्पण किया और बादशाहके पैरों पर गिर कर प्राण-भिक्षा मांगी। कहते हैं, कि इसने बादशाहको बहुतसे सुन्दर सुन्दर फारसके घोड़े नगरमें भेजे थे।

आखिर बादशाहने उसके कुल अपराध माफ किये और उसे फिरसे सेनानायक बना कर अपने गौरवकी रक्षा की। केवल यही नहीं, लखनऊ प्रदेश भी उसे जागीरमें मिला।

महदी काशिमने लाहोर नगरमें बाग-ई-महदी काशिम खां नामक एक बगीचा लगा कर अपना शेष जीवन बिताया था। १००१ हिजरीमें इसकी मृत्यु हुई।

महदी खाँ (मिर्जा)—नादिरशाहका विश्वस्त सचिव। यह मुंशी उल्-मुमालिक नामसे प्रसिद्ध था। 'तारीख-ई-नादिरी' और 'तारीख जहान् कुशा' नामक ग्रन्थ इसके बनाये हुए मिलते हैं। तारीख-ई-नादिरीका दूसरा नाम है 'नादिरनामा' अर्थात् नादिर शाहका इतिहास। सर विलियम जोन्सने उक्त ग्रन्थका फारसी भाषामें अनुवाद किया था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महदी ख्वाजा—सम्राट् बाबरशाहका जमाई। बाबरके मरने पर यह कुछ दिन तक राजतख्त पर बैठा था।

महदी मिर्जा—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इसके बनाये हुए 'माजमुआ मिर्जा महदो' ग्रन्थमें तैमूरवंशीय राजाओं की यशःकीर्त्ति गाई गई है। सम्राट् बाबर शाहके पितामहसे (१४२३ ई०में) ले कर सम्राट् बहादुर शाहके जीवन काल तकका हाल इस पुस्तकमें लिखा है।

महदूद (अ० वि०) जिसकी हद बंधी हो, सीमाबद्ध।

महदेश्वर (हिं० पु०) बैलोंकी एक जाति जो मैसूरमें पाई जाती है। इस जातिके बैल बहुत हृष्टपुष्ट और बलवान होते हैं।

महद्गत (सं० त्रि०) साधुजनाश्रित, जिसने श्रेष्ठ पुरुषका आश्रय लिया हो।

महद्गुण (सं० त्रि०) महत् गुणं यस्य। १ महागुणविशिष्ट। २ महतका गुण। ३ अतिशय गुण।

महद्धिक (सं० पु०) जैनियोंके एक देवताका नाम।

महद्बिल (सं० क्ली०) आकाश, शून्य।

महद्भय (सं० क्ली०) १ अतिशय भय, बहुत डर। २ अत्यन्ताभाव। ३ महत् व्यक्तिसे भय, बड़ोंका डर।

महद्भू (सं० स्त्री०) महद् भवतीति भू-किप्। बड़ा होना।

महद्युमन् (सं० क्ली०) १ सूर्य। २ तीर्थविशेष।

महद्वत् (सं० त्रि०) महत्-मतुप् मस्य व। महद्युक्त।

महद्वारुणी (सं० स्त्री०) महेन्द्रवारुणी लता।

महद्व्यतिक्रम (सं० पु०) महांश्चासौ व्यतिक्रमश्चेति। अतिशय व्यत्यय, बहुत उलट फेर।

महन् (सं० क्ली०) प्रभूत, अनेक।

महना (हिं० क्रि०) १ दही या मट्ठा आदि मथना, विलोना। (पु०) २ मथानी, रई।

महनिया (हि० पु०) मथनेवाला, वह जो मथता हो।

महनीय (सं० त्रि०) मह-अनीयर्। पूजनीय, पूजन करने योग्य।

महनु (हिं० पु०) विनाशक, मथन करनेवाला।

महन्दिपहाड़—बङ्गालका एक छोटा पहाड़।

महफिल (अ० स्त्री०) १ सभा, मजलिस। २ नृत्य गीत होनेका स्थान, नाच गान होनेको जगह।

महफूज (अ० वि०) सुरक्षित, जिसकी हिफाजत की गई हो।

महबूब (अ० पु०) वह जिससे प्रेम किया जाय, जिससे दिल लगाया जाय।

महबूब—उर्दू के एक कवि। इनका जन्म १७६१ सम्वत्में हुआ था। इनका कोई ग्रन्थ देखनेमें नहीं आया, पर छन्द बहुत देखे गये है। इनकी कविता अनुप्रासको लिए हुए जोरदार होती थी और वह पूर्णतया प्रशंसनीय है। इनकी गिनती तोषकी श्रेणीमें की गई है।

महबूबा (अ० स्त्री०) वह स्त्री जिससे प्रेम किया जाय, प्रेमिका, माशूका।

महमद—महम्मद देखो।

महमदी—मुहम्मदका मतानुयायी, मुसलमान।

महमन्द—पश्चिम सीमान्तवासी अफगान-जातिविशेष।

महमबेगम—शेख अह्मद जामकी पोती। यह अकबर बादशाहको ब्याही गई थी। महमबेगमके ही गर्भसे हुमायूं पैदा हुआ। यह दिल्ली-दुर्गके समीप 'दिनपना' नामक एक मसजिद बनवा गई है। शिलालिपि पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह १५६१ ई०में जीवित थी।

महमह (हिं० क्रि० वि०) सुगन्धिके साथ, खुशबूके साथ।

महमहण (हिं० पु०) विष्णु।

महमहा (हिं० वि०) सुगंधित, खुशबूदार।

महमहाना (हिं० क्रि०) सुगंधि देना, गमकना।

महमान (फा० पु०) मेहमान देखो।

महमानी (फा० स्त्री०) मेहमानी देखो।

महमाय (हिं० स्त्री०) पार्वती।

महमूदी (फा० स्त्री०) १ सलूमकी तरहका एक मोटा देशी कपड़ा। (पु०) २ एक प्रकारका पुराना छोटा सिक्का।

महमेज (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी लोहेकी नाल। यह जूतेमें पीछेका ओर एंड़ीके पास लगाई जाती है। इसकी सहायतासे घोड़ेके सवार उसे चलानेके लिये एड़ लगाते हैं।

महम्मद—(आबुल कासिम इब्न अबदुल्ला), अरबके प्रसिद्ध इस्लाम धर्मप्रवर्त्तक। इनका जन्म १०वीं नवम्बर ५७०-में हुआ था। परन्तु कोई कोई २२वीं अप्रेल ५७१ ई०-में बताते हैं। जो कुछ हो, इनका मक्कासे मदीना भागना (हिजरी प्रारम्भ ६२२ ई०) तथा पैगम्बर प्रसिद्धि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(करीब ६१० ई०) इन दोनोंकी आलोचना की जाय, तो निःसन्देह उनका जन्मकाल ५७० ई०में ही निरूपण किया जायेगा। कुरानमें लिखा है, कि उसी समय येमनके हवसी-शासक इब्राहिमने मक्का पर आक्रमण किया था। इसी आक्रमण-कालमें अरबवालोंने पहले पहल हाथीको देखा था तथा वे लोग वसन्तरोगके शिकार बने थे।

महापुरुषोंका जन्म अलौकिक दैवघटनायुक्त होता है, यह स्वतः सिद्ध है। महम्मदके जन्ममें भी ठीक यही बात थी। मुसलमान ग्रन्थकार परसियाके मग-पुरोहितोंका चिर-रक्षित पवित्र अग्नि-निर्वापण तथा संपूर्ण अरबमें उज्ज्वल आलोक विस्तार आदि भौतिक व्यापारोंकी सृष्टि करनेसे जरा भी बाज नहीं आये हैं। इस्लाम धर्म-प्रवर्त्तक महम्मदका जन्मकाल अलौकिक घटनाओंसे रंग डाला गया है। यह कार्य महम्मदके भक्त मुसलमानोंके सिवा दूसरेका नहीं है। हम लोगोंमें ऐसी शक्ति नहीं, कि अवतार या आदर्श पुरुषोंके गुण दोषका विचार कर सकें, पर सम्भव तथा असम्भव घटनाऐं जनसाधारणके लिये विवेचनीय हैं। प्रकृत-जीवनीको आश्रय कर महम्मदकी विशद जीवनीकी कीर्त्ति-गाथा लिखनेके लिये वाध्य हुए हैं।

महम्मदका जन्म ईसाजन्मसे लगभग ५०० वर्ष पीछे अरव देशके मक्का नगरमें हुआ था। यह स्थान ईसाकी जन्मभूमि पालेस्तिनके समीप ही है। अरववाले उस समय महम्मदको ईश्वरका अवतार समझते थे। ईसा और महम्मद-अवतारके मध्यकालीन समय और स्थान पर अगर विचार किया जाय, तो यही अनुमान होगा, कि अरववाले उस समय उच्छृङ्खल थे; अथवा पारसिक तथा ईसाधर्मसे प्रेरित होनेके कारण उनका धार्मिक विचार मिश्रित था। महम्मदने अरववालोंके इसी मत-विरोधके कारण एक पृथक् मत चलानेका बीड़ा उठाया था।

महम्मदसे पहले अरव का जातीय इतिहास अन्धकारमय ही समझना चाहिये। अरववालोंमें उस समय एक भी अभ्युदयका चिह्न नहीं देखा जाता है। अतएव महम्मदका जन्म और युवाकालसे ही अरवके जातीय इतिहासका द्वार खुल गया है। इतिहासके इस प्रारम्भिक कालमें समग्र अरव उपद्वीप एक स्वाधीन राज्य था। ६ठी शताब्दीके प्रारम्भमें यहां किण्डाइत राजाओंने मध्य अरवकी कुछ उन्नतशील जातियोंका संगठन किया और एक जातीय साम्राज्य स्थापित करना चाहा। यह विषय अरव इतिहासमें यद्यपि उल्लेखनीय नहीं है फिर भी प्रस्तावनारूपमें इसे स्थान देना अनुपयुक्त न होगा। अरवका प्रकृत इतिहास इस्लामधर्म स्थापनके साथ ही साथ आरम्भ हुआ है।

किण्डाइतवंशके अवसान पर अरवमें फिर शासन विशृंखल आरम्भ हुआ। इसी समय नेजद तथा हिज़ाज के भ्रमणशील निवासियोंने मौका पा कर मध्य अरव पर अपना आधिपत्य जमाया, पर इस समृद्धिका भोग उनके भागमें अधिक दिन तक न बदा था। पारस्य राजके अधीनस्थ होरा और अनवरके लखमिद वंशीय सामन्तगणोंने अरवमें धीरे धीरे पारस्यराज्य विस्तार करना आरम्भ कर दिया था तथा ग्रीकवालोंने गस्सानिदवंशीयको अरवका शासनभार पहले हीसे दे रखा था। इस प्रकार दो वैदेशिक शक्तियोंके एकत्र होनेसे संघर्ष उपस्थित हुआ। पारस्य राजाओंने ईसाइयोंको मार भगानेकी कोशिश की। ६ठी शताब्दीके अन्तमें तो नेजदसे ले कर येमेन पर्यन्त पारसियोंकी शक्ति अक्षुण्ण हो गई। परन्तु इस्लामधर्म तथा अरव-साम्राज्यका अभ्युदय निकेतन प्राचीन हिजाज, पश्चिममें नेजद प्रदेश ग्रीक, पारसिक, गस्सानिद तथा लखमिद आदि राजाओंके हाथ नहीं लगे। वे पूर्वपुरुषाओंकी तरह स्वाधीनता सुखका भोग कर रहे थे। महम्मदको जन्मभूमि मक्कामें काबा नामक एक प्रसिद्ध मन्दिरके आसपास रहनेवाली अन्यान्य जातियोंके साथ वानुकानन जातिने एक उपनिवेश बसाया। फिर दुल-उल-हिज्जकी पूर्णिमामें मक्का, अरफा और कोजा नगरीमें वार्षिकोत्सवके समय लोगोंकी भीड़ होने लगी जिससे एक महामेला संघटन हो गया। कहते हैं कि इस मेलेमें सिरिया मेसेन आदि देशी वस्तुओंका वाणिज्य प्रचार हो जानेसे मक्काकी ख्याति तथा वृद्धि जनसमाजमें फैल गई।

इस वाणिज्य-व्यापारमें कोराइस् (किनान जातिकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक शाखा) जातिने काफी धन कमाया और उसकी तूती तमाम बोलने लगी। मुसलमान कुलरवि महम्मद-का उदय इसी जातिके बानु हासेनके वंशमें हुआ था। महम्मदके पिता अवदुल्ला अपने धनी मानी समाजमें अग्रगण्य थे। जनसाधारण उन्हें अरब जातिके प्रसिद्ध आदिपुरुष इस्माइलका वंशधर जान कर खूब सत्कार करते थे।

कोराइसोंने उत्तरोत्तर अर्थ-वृद्धि कर पार्श्ववर्त्ती राज्योंमें अपनी धाक जमा ली। फिर शिक्षित तथा उन्नत समाजके संसर्गसे उन सबोंकी बुद्धि भी विशेष परिमार्जित हो गई। अरबके प्राचीन एवम् प्रसिद्ध उपासना-भवन 'काबा' बहुत दिनों तक हासेमवंशके अधीन सुरक्षित रहा। महम्मदके पूर्व पुरुषाओंने इस मन्दिरका याजकताका-कार्य पूर्ण प्रभाव-से परिचालित किया था।

महम्मदके पिता अवदुल्ला पुत्र-जन्मके पहले ही पर-लोकवासी हो चुके थे, इस कारण पुत्रमुख-दर्शनकी जो उनकी उत्कृष्ट आकाङ्क्षा थी, सो पूरी न होने पाई। इधर महम्मदकी माता अमीना भी पति-वियोगसे दो वर्ष बाद ही परलोक सिधारी। अब इस मातृ-पितृहीन बालक महम्मदका पोषण-भार इनके वृद्ध पितामह काबा-के पुरोहितके हाथ सौंपा गया। पीछे पुरोहितके मरने पर इनके चचा आबुतालिब आबदल इनकी देखभाल करने लगे। बाल्यकालमें महम्मद भेंड़ी चराते और मरु-देश जा कर बनजामुन तोड़ लाते थे। इसके सिवाय इनके बाल्यकालका और कुछ हाल मालूम नहीं होता। इस समय इन्होंने दीन-दुखियोंके साथ भ्रमण कर दारिद्र्य कष्टका अच्छा अनुभव किया था।

परवर्त्तीकालमें इन्हें अपने चचाके साथ सिरिया, दमस्कस्, बोगदाद तथा बोसरा आदि देशोंमें बाणिज्य-व्यवसायके लिये कई बार जाना पड़ा था। युवाकाल-में इन्हें युद्ध करनेकी भी इच्छा हुई थी। उस समय व्यापारियों तथा तीर्थयात्रियोंको दस्युसम्प्रदाय बुरी तरह सताता था। इसलिये अभिभावक चचाके आज्ञा-नुसार २० वर्षकी उमरमें ये दलबल सहित उसका दमन करनेको चल पड़े। इस सम्प्रदायका मूलो-च्छेदन करनेके लिये उन्होंने इधर उधर भ्रमण भी किया। उन लोगोंके साथ युद्धविग्रहादिमें लिप्त रहनेके कारण इनका यौवनकाल युद्धवासनासे प्रेरित हो उठा था। इनकी यह उद्दाम वीरत्वप्रभा इनके भविष्य धर्म-ज्ञानको पुष्ट करती थी।

युवाकाल इस प्रकार रणरङ्गसे रञ्जित होने पर भी ये कभी कभी एकान्तमें बैठे दिखाई देते थे। इनका हृदय निष्ठुरताके उपादानभूत मूर्त्तिपूजा तथा वृथा कर्म-काण्डके आडम्बरसे खिन्न हो जाता था। फिर भी इन्हें पितृपितामह-अनुष्ठित क्रियाकलापमें लीन होना ही पड़ता था। एक दिन काबा-मन्दिरके निर्माणकालमें इन्हें भी प्रसिद्ध कृष्ण प्रस्तर उठाना पड़ा था। यही सब देख सुन कर प्राचीन धर्ममें इनको अविश्वास होने लगा। अतएव इस प्रचलित धर्मको सुधारनेके लिये ये चिन्तित हो उठे।

बासरा प्रस्थानकालमें एक दिन वहांके नेष्टोरिय-मठा-ध्यक्ष बोहिराके साथ महम्मदका वार्त्तालाप हुआ था। इस वृद्ध धर्मयाजकने इनकी धर्माभिव्यक्ति और वाक्या-भाससे यह भली तरह समझ लिया, कि आगे चल कर यह युवक एक महापुरुष होगा। तदनुसार उस वृद्धने युवक-के अभिभावकसे भेंट की और कहा, "महाशय! एक समयमें यह बालक श्रेष्ठ पुरुष होगा, अतएव यत्नके साथ आप यहूदियोंके हाथसे इसे बचावें।

पचीस वर्षकी अवस्थामें महम्मद अपने अभिभावकके आज्ञानुसार खदिजा नाम्नी एक धनी विधवा रमणीके घर गये और उसका विषयकर्म जांचने लगे। पीछे इस रमणीकी ऐश्वर्यवृद्धिके लिये इन्होंने बाणिज्य-व्यापारमें ध्यान दिया। इस कारण उन्हें देश-विदेशोंमें भी भ्रमण करना पड़ा था। ईसाकी लीलाभूमि पालेस्तिन तथा समृद्धशाली प्राचीन सिरिया नगर भी उन्होंने इसी भ्रमण-कालमें देखा। यहां पूर्वतन धर्मयाजकोंकी प्रतिमूर्त्ति, हिजरकी पार्वत्यगुहा और मरासागर आदि नैसर्गिक चित्रसमूहको देख ये इस प्रकार भावमें विभोर हो गये मानो किसी ऐसी शक्तिसे अनुप्राणित होने पर हृदय आलोड़ित हो उठा हो। ईसा-अवतारकी अलौकिक लीला तथा सिरियाके धर्मविस्तारका स्मरण कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महम्मद बेसुध हो गये थे। पर उपरोक्त स्मृतियोंने इनके भग्न हृदय-तरुवरको फिरसे पल्लवित कर दिया।

महम्मद अपने पर एक बड़ा बोझ ले कर स्वदेश लौटे। यहां आ कर इन्होंने यौवनसुलभ प्रणयासक्त हो खदिजाका पाणिग्रहण किया। यद्यपि विधवा खदिजा अपने पतिसे कुछ बड़ी थी फिर भी विवाहका फल सुखमय ही हुआ।

खदिजाके सहवाससे महम्मद सुखी तो थे, पर केन्द्रीभूत धर्मलालसा उनके हृदयसे क्षणमात्र भी दूर न होती थी। विवाहोपरान्त करीब १५ वर्ष तक ये धर्मोन्नतिका चिन्तन एवं पर्वतके खोहमें आ आ कर सर्वदा चित्तसंयमकी चेष्टा किया करते थे। इस समय कार्यवशात् उन्हें फिर सिरिया तथा दक्षिण-अरब जाना पड़ा। विदेशयात्रामें इन्हें जो कुछ सामयिक बातें मालूम हुईं उनसे ये भलीभांति समझ गये, कि वहांके लोग मूर्त्ति पूजन-धर्मके विशेष पक्षपाती नहीं है। अगर मैं अपना मत प्रकट करूं तो धर्मपरिवर्त्तन वाले अनेकों मनुष्य मेरा अनुसरण कर सकते हैं। इसी उद्देश्य-सिद्धिके निमित्त इन्होंने कई ज्ञानी यहूदियों तथा ईसाइयोंसे बातचीत की जिनमें अबदुल्ला इब्न साल्म तथा वराकके नाम उल्लेखनीय हैं। वराक इनके सालेके लड़के थे। इन्होंने मूर्त्तिपूजन धर्मसे विरक्त हो कर पहले यहूदीधर्म और पीछे ईसाधर्मको स्वीकार किया था। विभिन्न धर्मावलम्बियोंके सहवाससे महम्मद अच्छी तरह समझ सके, कि अरबमें एक नवीन धर्म स्थापन करना बहुत जरूरी है।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि जबसे खदीजाके साथ महम्मदका विवाह हुआ, तबसे इनके हृदयमें धर्मसुधारकी भावना जग उठी। यह भावना भिन्न भिन्न मनुष्योंके वार्त्तालापसे बलवती होती गई तथा इसने मक्कामदीना एवं तारेफवासियोंके हृदयमें क्रान्ति उत्पन्न कर दी। महम्मदके अभ्युत्थानसे पहले मक्कावाले भी अन्यान्य देशवालोंकी तरह मूर्त्तिपूजक थे। बहुतेरे अपनी इच्छाके विरुद्ध पितृपुरुषाचरित पार्वणोत्सवमें योगदान करते थे। उस समय अरबवाले अनेक देवताओंकी उपासना नहीं करते, एकमात्र अल्ला हीको वे लोग सर्वजगत् नियन्ता और परमपिता समझते थे। सौगन्ध लेनेके समय, विपत्ति पड़ने पर तथा दीक्षित होनेके समयमें वे लोग अल्ला हीका नाम लेते थे। दस्ताविजों पर "विसमिक अल्लाहुम्मा" नामकी मोहर लगाते थे। निम्नतन देवताओंकी उपासना निश्चित समयको छोड़ और कभी भी नहीं करते, यहां तक कि नाम भी नहीं लेते थे। पूजा आदिमें विशेष भक्ति न रहने परभी पुण्याहके भोजनोत्सवमें उन लोगोंका एक महासम्मिलन बैठता था। इस सम्मिलनके पुण्यदिवसमें शत्रु, मित्र सभी एकत्रित होते और पारस्परिक मनोमालिन्य हटा कर आपसमें एक दूसरेको आलिङ्गन करते थे।

देवताओंमें अभक्ति होनेके कारण अरबवालोंका धर्मभाव दूर होता गया। पूर्वतन मद्यपान, पशुहिंसा, द्यूतक्रीड़ा, अवैध प्रेम, प्रतिहिंसा, आत्मकलह तथा दस्युप्रवृत्ति आदि व्यापार अरबवालोंका अङ्गभूषण हो गया था। यहां तक कि, इन लोगोंके काव्य भी अश्लील शब्दोंसे भरे रहते थे। अरबकी ऐसी उच्छृङ्खल अवस्थामें संस्कृत धर्मपरिवर्त्तन आवश्यक होने पर भी इस जातीय अभावकी ओर किसीका ध्यान नहीं जाता था। केवल तायेफ्के ओमय् इब्न आविल् सलत्, मक्काके जेद इब्न उमर, मदीनाके आबू कायेस इबल् आबि अनस् तथा आबू अमीर नामक महात्माओंने मूर्त्तिपूजन-मतके विरोधी हो कर किसी नये मतका अनुसरण करना चाहा था। किन्तु इनलोगोंकी भी चेष्टा यहीं तक रही, चिरप्रचलित धर्म मिटा देनेकी इच्छा किसीने भी नहीं की। पापसे मुक्त होनेके लिये इन लोगोंने ब्रह्मचर्यव्रतका अवलम्बन किया था।

ये लोग हानिफ् नामसे विख्यात रहने पर भी किसी विशेष मतके अवलम्बी न थे। यही कारण था, कि ये किसी स्वतन्त्र सम्प्रदायको स्थापना न कर सके। जनसाधारणके साथ शिष्ट वार्त्तालाप करने पर भी समाजसे इन लोगोंका कोई घनिष्ठ सम्बन्ध न था। सभी अपनी अपनी आत्मोन्नत्तिमें ही लगे रहते थे। जातीय उन्नत्तिकी ओर किसीका भी ध्यान नहीं जाता था। इसीलिये इन लोगोंका मत प्रचार न हो सका। मदीनामें केवल हनीफोंकी ही संख्या बढ़ी चढ़ी थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हनफियोंके देवताकी बहुत्वकल्पना स्वीकार करते हुए भी उन्होंने अल्लाको ही एकमात्र ईश्वर मान लिया था। देवशक्तियोंकी यह एकत्वकल्पना उनकी प्रज्ञाका फल नहीं, बल्कि संस्कारका फल था। यही मत आगे चल कर महम्मदीय-इस्लामधर्मके नामसे विख्यात हुआ।

इस ज्ञानमार्गका अवलम्बन उन लोगोंने तर्क, मीमांसा अथवा युक्तिसे नहीं, बल्कि अपने अपने विवेक-बलसे ब्रह्मचारी हो समस्त सांसारिक कामनाओंको तिलांजली देते हुए किया था। लोगोंने इसे मूर्त्ति-पूजा विरोधी मार्ग समझते हुए भी पापप्रक्षालन आदि कार्योंके लिये उपयोगी जान कर स्वीकार कर लिया था।

इस प्रकार बाइबिलमें लिखे हुए इब्राहिमका धममत (Ideas of Law and Gospel) फिरसे जनसाधारणमें फैल गया, तथा धीरे धीरे सब कोई प्राचीन धर्मसे नवीन धर्ममें आने लगे।

धर्मान्तरप्रयासी महम्मद भी इसी समय अपने साला बरका-इबन-नौफलके साथ आ कर हानिफ दलमें मिल गये। यह धर्म इन्हें हृदयानुकूल मालूम हुआ। अतएव उन्होंने उस विश्वव्यापी सर्वज्ञ जगदीश्वरको प्रणाम किया तथा अपने हृदयकी गूढ़ व्यथा सुनाते हुए कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़ रखनेकी प्रार्थना की।

इसके बाद बृद्ध जैद-इबन अमरके पथका अवलम्बन कर महम्मद अपना समय निर्जन हीराशैलशृङ्ग पर योगसाधनमें बिताने लगे। इस प्रकार वर्षों भगवद् भजन करनेके बाद इनका योग सिद्ध हुआ। हनिफी-मत इनके हृदयमें दखल जमाये हुए था। अब कभी तो ये मानसिक उत्तेजनाके समय ईश्वरके दर्शन करते और कभी ईश्वरके प्रेममें तल्लीन हो जाते थे। इस प्रकार उनका हृदय सुगभीर ईश्वर-प्रेममें डूब गया।

इस प्रकार चौबीसवें वर्षमें ईश्वरकी कृपासे महम्मद पैगम्बरके नामसे विख्यात हुए। अब ये साधारण योगीकी तरह गिरिगुहामें छिपे नहीं रहते, बल्कि जन-समाजमें सत्यधर्म अर्थात् इस्लाम (मुक्ति)-धर्मका प्रचार करनेके लिये बाहर निकल पड़े। बाइबिल-वर्णित ईसाई महात्माओंने पवित्र धर्मप्रचारके लिये जिस प्रकार आत्मजीवन उत्सर्ग कर दिया था, इस्लामधर्म-प्रवर्त्तक महम्मदने भी ठीक उसी प्रकार अपनी अभीष्ट वस्तुको जनसाधारणमें वितरण करनेके लिये कमर कसी। महम्मद को इस नये धर्मका प्रचार करनेमें और भी दो तरहसे सहायता मिल गई। एक तो यह है, कि हनिफीगण उस समय अपने नये धर्मकी प्रतिष्ठाके लिये एक पैगम्बरकी तलाशमें थे; दूसरे यहूदियोंके मनमें मूसाके आविर्भाव-की आशा लगी थी। दोनों मतावलम्बियोंने भिन्न भिन्न भावसे इसी एक महम्मदकी शरण ली। हनफियोंने इनके बचनको ईश्वरप्रोक्त और अनाभंङ्ग यहूदियोंने उसे मूसाका बचन समझा। इस प्रकार यह दोनों विभिन्न सम्प्रदाय महम्मदीय धर्मदीक्षा लेनेके बाद क्रमशः एक धर्मावलम्बी हो एक ही जातिमें मिल गये।

महम्मदीय धर्ममत प्रचार होनेके पहलेकी महम्मदके योगसाधन तथा मुक्तिलाभके सम्बन्धमें एक अलौकिक घटना इस प्रकार सुनी जाती है—हीराशृङ्ग पर जिस समय महम्मद चित्तवृत्ति निरोध कर कृच्छ्रातिकृच्छ्र योग-साधन कर रहे थे, उसी समय रमजान मासकी एक गहर रातको स्वर्गीय दूत जिब्राइल (Gabrial) इनके पास आया। महम्मद उस समय सोये हुए थे। दूतने अपने पाससे एक रेशमी-पत्र निकाल कर इनके सामने रख दिया। देवलिपि पढ़नेकी क्षमता उन्हें न रहने पर भी दूतने उन्हें दुबारा पढ़ने कहा। इस प्रकार मूसा, यीशु आदिकी नांई पहले उसी दूतसे महम्मदको ज्ञान प्राप्त हुआ और तभीसे ये पैगम्बर समझे जाने लगे।

४० वर्षकी अवस्थामें महम्मदने ज्ञानवितरण करने-के लिये फिर भी जनसमाजमें प्रवेश किया। सबसे पहले उन्होंने अपने परिवारको ही दीक्षित किया। इनकी प्रियतमा पत्नी खदीजा, बरका, आबुबक्कर तथा चचेरे भाई आली बेन् आबि तालेब आदिने इनके ईश्वरानु-मोदित वाक्य पर लट्ट हो कर इन्हें अल्लाका दूत समझा।

इसके बाद प्रायः तीन वर्ष तक पूर्वप्रचलित मूर्त्ति-पूजक मत-वालों तथा नवीन मत-वालोंके बीच घोर तर्क-वितर्क चलता रहा। एक दिन महम्मदने हासमवंशीय गणमान्य सज्जनोंको अपने यहां निमन्त्रित किया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा, "मैंने जो जिब्राइल-प्रोक्त मोक्षप्राप्तिके परम रत्न प्राप्त किये हैं उन्हें आप लोगोंके बीच वितरण करना चाहता हूं, इसीलिये आप लोग यहां बुलाये गये हैं। आप लोग मूर्त्तिपूजा छोड़ कर एकमात्र जगत्पिताकी ही उपासना करें। बहुदेवता-भक्तिको वृथा आडम्बर अनावश्यक है।' महम्मदकी इस एकेश्वरवादिताको न समझ सकनेके कारण लोगोंने इन्हें नास्तिक समझ कर टाल दिया। यहां तक कि इनके वृद्ध एवं ज्ञानी चचा आबु तालिबने भी इनसे यह पागलपनी छोड़नेके लिये अनुरोध किया। किन्तु उनके विवेकी एवं ज्ञानी पुत्र अलीने पिताके समक्ष ही महम्मदको प्रणाम कर इनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया और इनके धर्मप्रचारक होनेकी प्रतिज्ञा की।

महम्मदको इस प्रकार भिन्नमतके प्रचारमें कटिबद्ध देख कर आत्मीयगणोंने भी इनके चचाकी तरह लगती बातोंसे उनका तिरस्कार करना शुरू किया। इस प्रकारके दुर्वाक्योंसे वे व्याकुल हो गये और क्रोधित हो कर सिंहकी तरह गरज उठे, "यदि सूर्य दाहिने हाथ पर और चन्द्रमा बायें हाथ पर आ कर उदय हों, तो भी मैं पथभ्रष्ट नहीं हो सकता।"

गुरुजनोंसे इस प्रकार भर्त्सित तथा लांक्षित होने पर महम्मदने मक्काके प्रत्येक प्रधान नगरमें और भी उत्तेजित हो कर अपना धर्म प्रचार करना आरम्भ कर दिया। इनकी वक्तृताका प्रधान उद्देश्य था मूर्त्तिपूजाके ढोंगकी असारता तथा एकेश्वरवादकी सत्यता सिद्ध करना। कभी कभी ये काबा मन्दिरके दरवाजे पर कुरानके वचन लिख देते थे। विख्यात अरबी कवि लेबिस् इनकी इस अमानुषिक ज्ञान प्रतिभा पर मुग्ध हो कर इनका शिष्य तथा इस्लाम धर्म्म प्रचार करनेको तैयार हो गया था।

महम्मद जैसे नीतिविशारदके उपदेश तथा वाग्मिता पर मुग्ध हो बहुतेरे इनके मतके पक्षपाती तो हो गये, पर उन्होंने अपना चिरपोषित मूर्त्तिपूजन-मत नहीं छोड़ा। महम्मदका नवीन धर्ममत प्रकृत है या नहीं, इसकी परीक्षा करनेके लिये वे लोग इनसे कोई अलौकिक क्रिया दिखानेका अनुरोध करने लगे। इस पर महम्मद ने कहा था, "सुनो! मैं किसी अनैसर्गिक कार्य द्वारा अपने सत्य धर्मका अपलाप नहीं करना चाहता। मेरे सत्यधर्मका प्रचार सत्यपथसे ही होगा। वृथा आडम्बरसे धर्मका ह्रास होता है इसे निश्चय जानो। महम्मदने अपने जीवनमें एक बार एक अलौकिक क्रिया दिखलाई थी। उस क्रियाको इनके शिष्योंने अति रञ्जित कर जनसाधारणमें प्रकट किया था। कहते हैं, कि महम्मद एक दिन रातको मक्कासे जेरुजेलम् गये और वहांसे स्वर्गपुरीका दर्शन करके रातको ही मक्का लौट आये। वे गर्दभाकृति बोरक (विद्युत) पर चढ़ कर स्वर्ग गये थे। किन्तु कुरानमें इसे स्वप्नमाया बतलाया है।

इसी समय आबु ओविदा, महम्मदके मामा हामूजा, ओस्मान, ओमार आदि संभ्रान्त मक्कावासियोंने आबुबकरकी प्ररोचना पर महम्मदीय मतका अवलम्बन किया था। खदीजाके मरने पर महम्मदने आबूकी कन्या आमेसाका पाणिग्रहण किया। आबूने अपना सारा समय जमाई महम्मदके इस्लाम धर्मका प्रचार करनेमें बिताया था।

मक्कामें कुछ लोगोंके महम्मदीय धर्मावलम्बी होने पर भी दश वर्षके भीतर वहां इस्लामधर्मकी जड़ जमने न पाई। कोरेशवंशीय मक्कावासी यदि हसेमवंशावतंस महम्मद तथा उनके शिष्योंके विरुद्ध खड़े न होते, तो महम्मदीय इस्लामधर्मका कभी भी अरबमें प्रचार नहीं हो सकता था।

मूर्त्तिपूजकोंने महम्मदके शिष्यों पर ऐसा घोर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया कि वे लोग दलके दल अबिसीनीया आदि देशोंमें आत्मरक्षार्थ भाग गये। इस प्रकार दोनों पक्षके साम्प्रदायिकने धीरे धीरे भीषण आकार धारण किया जिससे वहां राष्ट्रविप्लवके चिह्न दिखाई देने लगे। मूर्त्तिपूजकोंने महम्मदका काम तमाम करनेका इरादा किया। इन लोगोंका यह षड़यन्त्र चारों ओर व्याप्त हो गया, मक्का नगरमें सनसनी फैल गई। मूर्त्तिपूजकों और इस्लाम धर्मावलम्बियोंमें तुमुल संग्राम छिड़ गया। महम्मद मक्कासे यथेच् नगर भागे। इन्हींके नामानुसार इस नगरका नाम 'मदीना' वा 'मदिनात् अल्नबि' पड़ा। सन् ६२२ ईस्वी १६वीं जुलाईको महम्मद मक्कासे मदीना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आये थे। उसी दिनसे मुसलमानोंका हिजरी संवत् गिना जाता है।

पहले ही लिख आये हैं, कि हनिफियोंकी संख्या मक्काकी अपेक्षा मदीनामें ही अधिक थी। पहलेसे ही इन लोगोंके हृदयमें इस्लामका बीज अंकुरित था। ये लोग महम्मदको बुलानेके लिये अपना आदमी भी मक्का भेज चुके थे। अभी महम्मदको स्वयं उपस्थित देख इनके आनन्दका पारावार न रहा। झुंडके झुंड लोग आ कर इनके शिष्य होने लगे। सबोंने एक स्वरसे प्रतिज्ञा की कि महम्मदके शत्रुओंको समूल ध्वंस करना ही हमारा एक मात्र कर्त्तव्य है और तभी हम लोग उनके सच्चे शिष्य हो सकते हैं।

इसके अनुसार मदीनावासियोंने महासमारोहसे अग्रसर हो कर महम्मदको बुलाया और राजकीय तथा धर्मसम्बन्धीय सभी कार्य उन पर सौंपा। उन लोगोंने इस नये मतका जनसाधारणमें प्रचार करनेके लिये महम्मदसे विशेष अनुरोध किया। मदीनावासी इस्लाम धर्मप्रचारके लिये हथियार उठानेसे भी बाज नहीं आये थे।

मदीनावालोंके इस प्रकार आग्रह तथा अकांक्षासे महम्मदका हृदय उच्च अभिलाषाओंसे भर गया। अब इन्हें मालूम हो गया, कि मेरा यह सनातन धर्म अति शीघ्र उच्चासन लाभ करेगा। इसके लिये वे काफिरोंसे युद्ध कर मोक्षधर्मका प्रचार करनेकी युक्ति ढूंढ़ने लगे। बाल्यकालकी युद्ध लालसा आज इनकी सहायक हुई। ये नंगी तलवार ले कर सदलबल विधर्मियोंमें धर्मस्थापन करने निकल पड़े तथा 'एक हाथमें खड्ग और दूसरेमें कुरान' इनके धर्मका मूल मंत्र हुआ। जब तक अरब तथा इसके आस पास प्रदेशवालोंने महम्मदको ईश्वरप्रेरित व्यक्ति और अल्लाको ही एकमात्र ईश्वर न मान लिया तब तक इन लोगोंकी तलवार नंगी ही रही।

महम्मदके शिष्योंने कई छोटे छोटे युद्धों तथा लूटपाटमें सफलता दिखा कर स्पर्द्धा प्राप्त की। अनन्तर मूर्त्तिपूजक कोरेसीदलके नेता आबुसेफियानके साथ हासेमवंशीय महम्मदके अनुयायियोंकी तीन बडी बड़ी लड़ाइयां हुई थीं। आबू तालेबकी मृत्युके बाद मक्काकी बागडोर फिर महम्मदके हाथ लगी। हासेमवंशके चिर-शत्रु आबूसाफियाने सिरिया जानेवाले वणिकोंको महम्मदके लुटेरे दस्यु संप्रदायसे बचानेके लिये एक हजार सेना भेजी। महम्मदके अनुयायी मदीनासे दश कोस बेदारकी उपत्यकामें लूटनेके उद्देशसे छिपे थे। आबू साफियाकी सेनाओंने यहां आते ही शत्रुदल पर आक्रमण कर दिया। परन्तु सिर्फ सौ मुसलमानोंने प्रायः हजारसे ऊपर कोरेसाइतोंको परास्त कर नाकोदम कर दिया था।

आबूसफियाने इस अपमानजनक सम्बादको पाते ही प्रतिहिंसाके लिये तीन हजार सेना इकट्ठी की और मदीनाकी ओर कदम बढ़ाया। मदीनाके समीप अहोद पर्वत पर दोनों दलमें मुठभेड़ हुई। महम्मदीय रक्तसे पहाड़ी प्रदेश तराबोर हो गया। कोराइस दलकी जीत तो हुई पर वे लोग अधिक दिन तक निश्चिन्त न रह सके। मुसलीमगण फिर भी उत्साहित हो कर रणक्षेत्रमें उतरे। इस बार आबूसेफियाने मदीनामें घेरा डाला परन्तु अलीने वीरोचित साहससे उन्हें मार भगाया। मुसलमानोंके बार बार भीषण आक्रमणसे मूर्त्तिपूजकोंकी महती क्षति हुई थी। आखिर वे सन्धि करनेको बाध्य हुए। दोनों पक्षकी सम्मत्तिसे दश वर्षके लिये अरबमें शान्ति स्थापित की गई।

महम्मद इस समय कोनोकाव, कोराइध, नादिर और खैबर प्रभृति निरीह यहूदी जातियोंको पराजित कर इस्लामधर्ममें दीक्षित करने लगे। उनके नगर तथा दुर्ग लूटे गये। अनेक प्रकारकी यातनाएं दे दे कर इन सब यहूदियोंके नगर और दुर्गको अधिकारमें कर लिया गया। जिन्होंने स्वेच्छासे इस्लाम धर्म ग्रहण किया, केवल वे-ही भयानक अत्याचारसे बच सके। स्वधर्म त्याग पाप है, ऐसा समझ जिन लोगोंने परधर्म ग्रहण करनेमें अनिच्छा दिखलाई, वे निर्वासित हो कर अन्तमें बुरी तरह मुसलमानोंके शिकार बने।

६२८ ई०में खैबरयुद्धमें महम्मदने अति निष्ठुरताका परिचय दिया और किनान-आबि-अल् हकाइक तथा होहय राजको पराजित और निहत कर हकाइककी पत्नी सफियाबिन होहयके साथ विवाह कर लिया। इस समय जैनाब नामकी एक खैबर रमणीने इनको विष खिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया। विषकी ज्वाला महम्मदके हृदयमें आजीवन जलती रही थी। खैबरको विजयकर महम्मदने फदक् वदी अल-कोरा आदि यहूदी उपनिवेशों पर अधिकार जमाया।

पूर्वोक्त वदर, ओहद और फोसिर युद्धके बाद कोराइसोंके साथ हौदेविय नगरमें जो सन्धि हुई थी, उसीसे इस्लाम धर्मको प्रतिष्ठा तथा मुसलमानोंके प्रभावका अनुमान हो जाता है। सन्धिके पश्चात् दोनों दलोंने शिर उठाया। परन्तु प्रतिहिंसारूपी वह्नि दिन पर दिन प्रज्वलित होती गई। ६२६ ई०में उमरात-अल्-कड़ा उत्सव के अवसर पर दो सहस्र सेनाओंके साथ महम्मद मक्का आये। मक्कावालोंने हथियारसे उनका स्वागत किया। फलतः मुसलमानोंके साथ कोराइसोंका घोर विरोध खड़ा हुआ। इस द्वेषवशतः कोराइसने महम्मदके भक्त अनुचर खोजायाको मार डाला।

खोजाहतोंने यह संवाद महम्मदसे जा कहा। महम्मद मक्कावालोंको दण्ड देनेके लिये चल पड़े। इनके आगमनसे मक्कावाले भयभीत हो गये। उन्होंने फिरसे आबु सोफियानको शान्ति-रक्षाके लिये महम्मदके पास भेजा। बहुत अनुनय विनय करने पर भी महम्मदका हृदय न पिघला। ६३० ई० (रहमान हि० ८.)-में महम्मदने १० हजार सेनाओंके साथ मक्कावालोंको दण्ड देनेके लिये यात्रा कर दी। राहमें सैकड़ों आदमी इनके साथी हो गये। इस वृहत् सेनाके आगमन-सम्वादसे ही तायेफवालोंने विना युद्धके आत्म समर्पण किया। आबुसोफियानकी प्रवंचनासे मक्का नगर भी शीघ्र ही महम्मदके हाथ आया। इन्होंने अपने अधोनस्थ कर्मचारियोंको हुकुम दिया, 'मक्कामें कोई भी रक्तपात न करे, प्राचीन काबा मन्दिर पर आघात होने न पावे और सभी इस्लामधर्मको ग्रहण कर पूर्व प्रथानुसार धर्म कर्मका पालन करे। केवल काबा मन्दिरके अभ्यन्तर तथा आस पास जो सब देवमूर्त्तियां हैं उन्होंको ध्वंस करना होगा। इस्लामधर्ममें मूर्त्तिपूजाका चिह्नमात्र भी रहने न पावे। प्रत्येक गृहस्थके कुलदेवताको मूर्त्ति और मक्काके बाहरवाले देवतीर्थोंको ध्वंस करना होगा।'

महम्मदके आज्ञानुसार कार्य होने लगा। बातकी बातमें मक्काका प्राचीन सौन्दर्य जाता रहा और नयी शोभासे, नये भावसे मक्का नगरमें धर्मसम्बन्धीय क्रिया-कलाप परिचालित होने लगा। जो सिया और जेरुजेलमके लिये जैसा संस्कार किया गया था महम्मदने मक्काके लिये भी वैसा ही किया।

मक्कामें इस्लाम धर्मकी प्रतिष्ठाके साथ साथ महम्मदने काबा मन्दिरके प्राचीन उत्सवादिके भी संस्कार किये। ६०२ ई०में दुल-अल-हिज्जके भोजनोत्सवमें इन्होंने स्वयं भाग लिया और बड़े समारोहके साथ इसका सम्पादन किया। इस समय इन्होंने इब्राहिमकी चलाई प्रथामें बहुत कुछ परिवर्त्तन किया और मलमास गणनाकी प्राचीन प्रथाको उठा कर चन्द्रमासके हिसावसे वर्षकी गणन करके नई पंजिका चलाई।

मक्काविजयके पश्चात् कोराइस जातियोंके साथ साथ और भी कितनी ही भ्रमणशील जातियोंने मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार कर ली। केवल ताइफवासी तकीफों तथा हवाजिन जातियोंने ही उद्धत मुसलमानोंके साथ युद्ध करनेका निश्चय किया। मक्का और ताइफके मध्य औटास नगरमें इन लोगोंने छावनी डाली। हेनाइनको उपत्यकामें दोनों दलमें भीषण युद्ध हुआ। प्रथम युद्धमें महम्मद-सेना तथा खुद महम्मदको भी बहुत तकलीफ उठानी पड़ी थी। यह देख कर खाजराजोंने प्रवल वेगसे शत्रुसेना पर आक्रमण कर दिया। थोड़े ही समयमें हवाजियोंने रणमें पीठ दिखाई। अब महम्मदने स्वयं उनका पीछा किया और ताइफ नगर तक खदेड़ा। चौदह दिन तक ताइफ नगरको घेरे रहने पर भी जब महम्मदका अधिकार वहां जमने न पाया, तब वे पुनः जीरानाको लौट आये। युद्धमें जो कुछ धन हाथ लगा, उसे महम्मदने वेदौइन जाति तथा मक्काके सम्भ्रान्त लोगोंमें बांट दिया। जिन लोगोंके लेहू और बलसे महम्मदने विजयपताका फहराई थी, उन्हें कुछ भी न मिला। जो हो, महम्मदके इस प्रकारके कार्यसे मक्काके गणमाण्य तथा दुर्द्धर्ष वेदौइन जाति वशीभूत हो गई थी।

कोराइस जातिकी अवनतिके साथ साथ इस्लाम धर्मका पूर्ण अभ्युदय हुआ। महम्मदने मक्काको इस्लाम धर्मका जेरुजेलम बनानेकी चेष्टा की। यद्यपि मूर्त्ति पूजन-धर्म और महाभोज आदि कई आचारोंको लोप न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके भी ये इब्राहिमका नाम मिटा ही देना चाहते थे, फिर भी अपने सनातन इस्लामधर्ममें मूर्त्तिपूजनका प्रश्रय देनेसे ये जरा भी संकुचित न हुए। धर्मके सिवा और भी अन्यान्य विषयोंको धर्ममें स्थान दे ये कोराइस सर्दारोंको अपने काबूमें करनेके लिये अग्रसर हुए।

कोराइसोंको अपने हाथमें लानेके लिये महम्मदने सरदार आबु-सोफियानको मक्काके दक्षिण एक विस्तृत प्रदेशका शासन भार सौंपा। इतना ही नहीं, उन्होंने यहां भी कहा था, कि जो सब कोराइस इस्लामधर्मके पक्षपाती होंगे तथा उसकी उन्नत्तिके लिये जीवन उत्सर्ग करेंगे वे ही मेरे कृपापात्र होंगे। महम्मदके इस वाक्य तथा उदारतासे कोराइसोंने इस्लामधर्मको स्वीकार कर लिया।

मक्कावालोंके ऊपर महम्मदकी ऐसी उदारता देख मदीनाके लोग बड़े दुःखित हुए। उन लोगोंने महम्मदसे कहा, 'हम लोगोंने भी अब पैगम्बरके कार्यमें आत्मोत्सर्ग कर दिया है, अतः हम लोग भी इस कार्यके लिये पुरस्कार पाने योग्य हैं। अपने प्रधान सहायकों तथा धर्मरक्षकोंके मुंहसे इस प्रकार हृदयग्राही वचन सुन कर महम्मदका हृदय पिघल आया और वे बोले, "तुम लोगोंने इस भयानक समयमें मेरी सहायता कर परमात्माकी आज्ञाका पालन किया है। यह और कुछ नहीं, केवल उन्हींकी कृपाका फल है। अन्तिम दिन तुम लोग उनसे अवश्य पुरस्कार पाओगे। मेरे साथ रह कर जो तुम लोगोंने ईश्वरके कार्य किये, इसके लिये मैं भी आजीवन तुम सबोंके साथ रहनेकी प्रतिज्ञा करता हूं। आजसे इस्लामधर्मका केन्द्र (मदीरात-अल्-इस्लाम) तथा मेरा वासस्थान मदीना ही हुआ।" महम्मदकी इस सहृदयतासे गद्गद हो मदीनावाले प्रेमाश्रु बहाने लगे और ईश्वरानुगृहीत इस व्यक्तिके सुख तथा दुःखमें भागी होनेका संकल्प किया। इस प्रकार अपनेको कोराइसोंकी अपेक्षा अधिक अनुगृहीत समझते हुए वे लोग वहांसे बिदा हुए।

जोरानाका लूटका माल जो उन्होंने लोगोंके बीच बांटा था, उसीसे बहुतेरे महम्मदके दलमें मिल गये थे। इधर मक्कावालोंके प्रति महम्मदका अधिक प्रेम देख खजिरीको महम्मदके प्रति द्वेष हो गया। महम्मदने मूर्त्तिपूजन प्रथाका लोप कर एकेश्वरवाद इस्लामधर्मकी स्थापना तो की, पर सांसारिक सुखलालसा उनके हृदयसे दूर न हो सकी। धर्मप्रवर्त्तक हो कर भी इस प्रकार धनऐश्वर्यकी आशा करना महम्मद जैसे ज्ञानी व्यक्तियोंके लिये उचित न था। इसी सुखलालसाने इनकी मृत्युके बाद इस्लामधर्मको कलङ्कित कर दिया था।

धर्मराज्यकी भित्ति दृढ़ करनेके लिये महम्मदने कर्मराज्यकी स्थापना की थी। आबु-सोफियानको राज्यदान, अपने उमियदवंशमें राजशक्तिका आरोप तथा कोराइस जातिको इस्लामधर्म-रक्षाका भार दे कर इनने जो पक्षपात दिखाया इससे खारोजियोंका द्वेष सहज हीमें प्रज्वलित हो सकता था। उनकी कार्यवलि उनके प्रवर्त्तित धर्मानुकूल बिलकुल न थी। अतएव यह स्पष्ट है, कि इस्लामधर्मके लिये जिस पवित्र जीवनकी आवश्यकता थी वह राज्यापहारी गर्वित इस महम्मदमें नाममात्र भी न था।

मक्का-विजयके बाद संपूर्ण अरब इस्लामधर्ममें दीक्षित हो गया। केवल नजरानवासी ईसाइयों, वहुदियनवासी मगीयों तथा यहूदियोंने ही इस धर्मको स्वीकार नहीं किया। पहले हो कह आये हैं कि होनाइन युद्धके बाद हवाजीनोंने इस्लामधर्म स्वीकार किया था। इस बार वे लोग महम्मदके शिष्य हो कर ताइफवासी तकीफोंका दमन करनेके लिये आगे बढ़े। आखिर तकीफोंने आत्मरक्षामें असमर्थ हो कर महम्मदकी शरण ली।

ताईफ दूतोंने महम्मदके पास आ निवेदन किया कि हमारे देशवासी मूर्त्तिपूजाके घोर अन्धकारमें निमग्न हैं। ऐसे निर्बोध दुष्ट संप्रदायको अगर मदिरापान तथा अललाट:वीकी पूजाआदि असत् क्रिया करने न दी जायगी तो वे सहजमें मनको प्रवोध नहीं दे सकते और तब नये धर्ममें इन लोगोंका लाना असम्भव हो जायेगा।"

इस पर महम्मदने गुस्सेमें आ कर उत्तर दिया, "विश्वस्त व्यक्तिमात्रको ही मद्यपानादि व्यसनक्रियाका अवश्य परित्याग करना होगा। वे मूर्त्तिपूजनकी तिलांजली दे कर एकमात्र भगवान्में आत्मसमर्पण करेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिनमें पांच वार भगवान्‌का भजन करना होगा। जो नमाज नहीं पढ़ सकते उन्हें मोतर्द्धिनकी तरह अजान देना होगा। सब किसीको कुरानके अनुसार धर्म कर्म-का पालन करना होगा। तब तकिफोंके लिये इतना किया जा सकता है, कि वे लोग अपने रब्बा मन्दिरकी अल्-लाटदेवीकी मूर्त्ति स्वयं न तोड़ दूसरोंसे तोड़वा सकते हैं।"

इसके बाद दूतगण स्वदेश लौटे। वहां पहले उन्हों-ने रब्बादेवीके मन्दिरमें प्रविष्ट हो कर म्लानमुखसे कपड़े द्वारा अपना मुँह ढँक लिया और सारी बातें देश-वासियोंसे कह सुनाईं। सर्वसम्मतिसे महम्मदके विरुद्ध युद्ध कराना ही स्थिर हुआ। परन्तु वे लोग महम्मदकी सेनाका प्रचण्ड प्रताप अच्छी तरह जानते थे, इसलिये उनके विरुद्ध युद्ध ठाननेका साहस न हुआ। पीछे जातीय सभाकी सलाहसे उन लोगोंने फिरसे सन्धि स्थापनका प्रस्ताव महम्मदके निकट पेश किया और यह भी कहला भेजा कि ताईफवासी इस्लाम धर्म स्वीकार करेंगे, परन्तु रब्बा मन्दिरको मह-म्मदकी सेना अथवा दूत ही आ कर ध्वंस कर जायें।

इतने दिनोंके बाद महम्मदकी धर्मयात्रा सफल हुई। अरबके परतन्त्र राजाओंने अब ग्रीस तथा पारसको अधीनता त्याग कर महम्मदकी शरण ली; तात्पर्य यह कि महम्मद अब अरबके एकच्छत्र राजा हो गये। अपने जीवनके शेषकाल (अर्थात् ६४२ ई०)-में ये धर्मराज्य फैलानेकी इच्छासे ग्रीसके साथ युद्ध करनेको तैयार हो गये। हौदेवियाके युद्धमें जयलाभ करनेके बादसे इनकी बड़ी ख्याति हो गई थी। अतएव इस समय झुण्डके झुण्ड लोग इनके अनुयायी हो गये जिससे इनके बलकी वृद्धि होने लगी। प्रायः सभी महम्मदीय अनु-चरोंने अपने दीक्षादाताका अनुसरण अस्त्र शस्त्रसे सुस-ज्जित हो कर किया था।

महम्मदने अपनी इस विशाल शक्तिका अनुभव कर आस पासके राजाओंको इस्लामधर्ममें दीक्षित होनेके लिये दूत भेजे। वेलका (प्राचीन मोआब) प्रदेशमें भी एक दूत भेजा गया था, पर वह मार डाला गया। महम्मदको इसकी खबर लगते ही उन्होंने दल बलके साथ वहांके अरबों पर चढ़ाई कर दी। वेलका पर ग्रीसका अधिकार था, इसलिये ग्रीस और महम्मदीय सेनाके साथ ६१६ ई०में युद्ध हो गया। मूतानगरमें मुसलमानोंकी सेना हार खा कर भागी। किन्तु खालिदकी वीरतासे उन्हें विशेष मुसीबतें न उठानी पड़ी थी। दूसरे वर्ष महम्मदने तीस हजार सेनाओंके साथ ग्रीष्म ऋतुमें ग्रीकोंके विरुद्ध युद्धयात्रा कर दी। ताबुक एदोम् सीमान्त तक पहुंचने पर जब महम्मदने देखा कि ग्रीसवाले लड़ने-को तैयार नहीं तब वे क्षुब्ध हो कर स्वदेश लौटे। परन्तु इनकी यात्रा निष्फल न गई। लौटती बार इन्होंने अनेकों उत्तरीय अरबके ईसाइयों तथा यहूदियोंको इस्लामधर्ममें दीक्षित किया। ६३१ ई०के मार्च मासमें अन्तिम तीर्थयात्रासे लौट कर महम्मद ग्रीक जातिके साथ फिरसे युद्धकी तैयारी करने लगे। परन्तु इस बारकी तैयारी करते करते इनकी जीवनलीला (८वीं जून ६३२ ई०) समाप्त हो गई।

महम्मद एक महापुरुष तो अवश्य थे, पर उनका जीवन अनेक कलङ्कोंसे कलुषित था। कुरानमें तो इन्होंने चारसे अधिक ब्याह निषेध किया है, परन्तु दुःख है, कि स्वयं आप ही इस साधुवादका अपलाप कर गये हैं। कोई कोई ऐतिहासिक कहते हैं, कि महम्मदने पन्द्रह विवाह किये थे। इनमेंसे कुछ स्त्रियोंको तो पत्न्या-धिकार भी प्राप्त न हो सका था। इनकी बारह स्त्रियों-के नाम नीचे दिये गये हैं।

महम्मदकी स्त्रियां।

	नाम		ई०सन्
१।	खुदिया	(खयालिदकी कन्या, ६५ वर्षकी अवस्थामें देहान्त हुआ)	६१६
२।	शुदा	(जमा खांकी कन्या)	६७४
३।	आयेशा	(आबु बकरकी कन्या)	६७७
४।	हाफ्सा	(उमद खत्ताकी कन्या)	६६५
५।	उम्शाल्मा	(आबु उन्मयकी कन्या, यह महम्मदकी अन्यान्य स्त्रियोंसे अधिक दिन तक जीवित रही)	६७९

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	नाम		ई०सन्
६।	उमहाविवा	(आबु सोफियानकी कन्या)	६६४
७।	जैनव	(महम्मदके नौकर जैयदकी विधवा स्त्री)	६४१
८।	जैनव	(खुजीमाकी कन्या)	६४१
९।	मैमुना	(हरितकी कन्या)	६७१
१०।	जवारिया	(हरितकी कन्या)	६७०, ५ मास
११।	सफिया	(होयर बिन् अख्तारकी कन्या)	६७०
१२।	मरिया कोप्ती	(इजिप्टदेशकी कन्या, इसके गर्भसे इब्राहिम का जन्म हुआ)	६४७

अनेक भक्तसुधियोंने महम्मदके इस बहुविवाहका समर्थन करते हुए कहाहै, कि देवदूतगण साधारण मनुष्योंकी तरह पार्थिव नियमोंके वशीभूत नहीं हैं। अतएव महम्मद अवतारी पुरुष थे।

जगत्के इतिहासमें असामान्य प्रभुता प्राप्त करनेवाले महम्मदकी जीवनीकी आलोचना करनेसे मालूम होता है, कि एकमात्र सांसारिक व्यापारको छोड़ और कोई भी दोष इनमें न था। अरबके एकच्छत्र राजा हो कर भी इन्होंने साधुजीवनके अनुष्ठित ब्रह्मचर्यकी सभी कठिनताओंका अवलम्बन किया था। खान, पान और वेशभूषा किसी विषयमें उनकी स्पृहा न थी। पर हां, धनरत्नादि पार्थिव ऐश्वर्यमें उनको कुछ कुछ आसक्ति देखी जाती थी। वे अपने जीवनके उद्देश्यानुकूल उपासनाके कठिन नियमोंका पालन कर गये हैं। एकमात्र परलोककी मुक्तिके लिये ही वे पैगम्बर हो कर धराधाम पर उतरे थे, ऐसी उनकी उक्ति थी। मदीनावालोंको पैगम्बरका महत्व यदि वे न दिखलाते तो कभी भी उनके इस्लामधर्मका प्रचार नहीं हो सकता था। साधारण पुरुषकी तरह स्त्रियोंको भी इन्होंने अपने धर्मव्रतकी अधिकारिणी बनानेसे न छोड़ा। इसके लिये परवर्त्ती मुसलमान-सम्प्रदायने इनकी तीव्र निंदा की है। महम्मदने अपनेको कभी भी ईश्वरप्रेरित व्यक्ति न बतलाया। ये अपने कार्यसे ही देवदूत कहलाये। परन्तु मुसलमानोंके पवित्र ग्रन्थ कुरानने ही महम्मदकी प्रतिभाको बहुत कुछ मेघाच्छन्न कर दिया है। इनके चलाये इस्लामधर्ममें प्रकृत धर्मत्त्वकी गभीरता न रहने पर भी सामाजिक प्रतिपत्तियोंकी पूर्ण शक्ति विराजती है।

इनके कर्मजीवनका सूत्रपात मदीनामें और उसकी परिपुष्टि तथा अवसान मक्कामें हुआ था। इन दोनों स्थानोंकी कार्यपरम्परा ऐतिहासिकोंका आलोच्य विषय होने पर भी उनकी धर्मप्रतिष्ठाके सम्बन्धमें कोई इष्टसाधक विषय नहीं है। कुरानमें जिन सब नियमोंको वे ईश्वरकी अभिव्यक्ति बतला गये हैं वे सब नियम सर्वसाधारणके निकट विवादास्पद हैं। प्रतिहिंसा और प्रवञ्चनाने जो कलङ्ककालिमा इनके जीवन पर पोती है वह मिट नहीं सकती।

नख्लाके युद्धमें भीषण नर-हत्या तथा फोसिरके युद्धमें छः सौ निरपराध यहुदियोंके प्राणविनाशने महम्मदके जीवनको सदाके लिये कलङ्कित कर दिया है। पर वे एक प्रभूत प्रतिभाशाली पुरुष थे, इसमें सन्देह नहीं। केवल अपनी आकाङ्क्षाको पूर्ण करनेके लिये ही वे ऐसे ऐसे कठोर कर्म कर गये हैं।

विस्तृत विवरण कुरान और मुसलमान शब्दमें देखो।

महम्मद १म—तुरुष्कके एक सुल्तान, सुल्तान बायजिदके पुत्र। बयाजिदकी मृत्युके बाद इनके पुत्रोंमें विरोध खड़ा हुआ जिससे ११ वर्ष तक तुर्कमें अराजकता फैली रही। पीछे १४१२ ई०में महम्मद पिताकी गद्दी पर बैठे। ये बड़े साहसी थे। इन्होंने अपने बाहुबलसे कोपादोकिया, सर्भिया, वालाचिया राज्यको जीता था। कन्स्टैन्टनोपल्के सम्राट् मानुएल पालि उलोग्ससे मित्रता होने पर इन्होंने अपने राज्यके कई प्रदेश उन्हें भेंटमें दिये थे। सन् १४१२ ई०को ४१ वर्षकी अवस्थामें एड्रिया-नोपल् नगरमें इनका देहावसान हुआ। इनके पुत्र २य मुराद राजसिंहासनके अधिकारी हुए।

महम्मद २य—तुर्क जातिके एक सम्राट्। इनने अपने बल और पराक्रमसे 'महत्'की उपाधि पाई थी। १४५१ ई०में पिता (२य मुराद)के मरने पर ये राजगद्दी पर बैठे और पुत्रसे भी बढ़ कर प्रजाका पालन करने लगे। जो भी हो, खेदका विषय यह है, कि ये गद्दी पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बैठते ही युद्धमें उलझ गये। कोनस्टैन्टी नोपलमें घेरा डालनेके समय इन्हें ग्रीकसे लड़ना पड़ा और १४५३ ई०में नगर पर इनका अधिकार हो गया।

कोनस्टैन्टी नोपलके अधःपतनके बाद महम्मदके प्रयत्न तथा सुशासनसे वहांके दार्शनिक तथा विज्ञ मनुष्योंने पाश्चात्य साहित्यमें बहुत उन्नति की। दो तुर्क साम्राज्य, बारह मिस्र राज्य तथा दो सौ नगरों पर अधिकार कर लेनेके बाद ये ग्रेट ऐन्ड ग्राण्ड सिगनरकी उपाधिसे विभूषित हुए। यह उपाधि इनके वंशधरोंने भी कुछ काल तक गौरवके साथ वहन की थी।

इसके बाद इटली जीतनेके लिये महम्मद युद्धकी तैयारीमें लगे। किन्तु दैवदुर्विपाकसे शूलरोगसे पीड़ित हो ये १४८१ ई०में यमपुरको सिधारे।

यह ईसा-धर्मके कट्टर विरोधी थे। ईसा-धर्मका मूलोच्छेद करनेके लिये इन्होंने ईसाइयोंको अनेक बार सताया था। ईसाइयोंको इस्लाम-धर्ममें लाना ही इनके अत्याचारका प्रधान उद्देश्य था। इसीलिये इन्होंने ८० हजार ईसाई नर-नारियोंको यमपुर भेजा था। ये अत्यन्त साहसी, बलवान्, तीक्ष्ण बुद्धिवाले और भाग्यवान् पुरुष थे। सद्गुणोंका समावेश रहने पर भी इनकी कठोरता, निष्ठुरता तथा अविश्वासने इनके जीवनको कलुषित बना दिया था।

महम्मद ३य—तुर्कके एक सम्राट्। पिता (३य मुराद)-के मरने पर १५९५में ये कोन्स्टैन्ट नोपलकी गद्दी पर बैठे। राजगद्दी पर बैठते ही इन्होंने अपने १९ भाइयों-का काम तमाम कर तथा १० गर्भवती विमाताओंको जलमें डुबा कर अपना राज्य निष्कंटक बना लिया। जर्मनके कैसर द्वितीय वड़लफासके विरुद्ध इन्होंने युद्ध-यात्रा की थी। हङ्गेरी जीतनेके लिये यह दो लाख सेना ले कर अग्रसर हुए थे। इस युद्धमें वहांके सम्राट्-के भाई मैक्सिस मिलनने बड़ी वीरतासे इनका सामना किया था। युद्धमें विजय प्राप्त न करने पर भी महम्मदीय सेनाने हङ्गेरी सेनाओंको बुरी तरह घायल किया।

हङ्गेरीसे लौट कर महम्मद ऐश्वर्य सुखमें मत्त हो गये। ये अपना अधिक समय अन्तःपुरमें रानियोंके साथ क्रीड़ा-कौतुकमें ही बिताया करते थे। १६०४ ई०में हैजेकी बीमारीसे इनकी मृत्यु हुई। मुगल सम्राट् औरङ्गजेबने जिस दोर्दण्ड प्रतापसे भारतवर्षमें इस्लाम-धर्मका प्रचार किया था ठीक उसी प्रकार ये बड़े साहससे प्राच्य जगत्में इस्लाम धर्मकी पताका फहराने-में वद्धपरिकर हुए थे।

महम्मद ४र्थ—इब्राहिमके पुत्र, तुर्कके एक सम्राट्। ये १६४९ ई०में कोनस्टैन्टी नोपलकी गद्दी पर बैठे। इस्लामधर्म प्रचार तथा मुसलमान राज्य-विस्तारके लिये इन्होंने भिनसीय जातिके विरुद्ध युद्ध-यात्रा की थी। दो लाख सेनाओंको युद्धमें मार कर काण्डिया पर इन्होंने अधिकार कर लिया तथा पोलैण्ड पर चढ़ाई कर दी। युद्धमें इनकी विजय तो हुई, पर वहां महम्मदीय शासन स्थापित न कर सके। दूसरे वर्ष पोलैण्डके राजा सोबेस्किने चोयेज़िमके युद्धमें इन्हें हराया और अपना राज्य लौटा लिया। १६८१ ई०में ये राज्यच्युत कर कारागारमें डाल दिये गये। यहीं पर १६९१ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद—एक मुसलमान टीकाकार। इसका प्रचलित नाम था बरान उस-शरियत। ये हिजरीकी ७वीं सदीमें वर्त्तमान थे। इनका लिखा हुआ 'वकाया' नामक ग्रन्थ देखनेमें आता है। वह ग्रन्थ 'हिदाया' नामक ग्रन्थकी प्रस्तावनास्वरूप है। उबेद-उल्ला बिल मशायुदकी 'शैर-उल-वकाय' नामक टीकाने मूलग्रंथको मात कर दिया है। शेषोक्त ग्रन्थ-में मूलश्लोक और इसकी विशद व्याख्या तथा दृष्टान्त दिया गया है। इसके सिवाय 'वकाय'की और भी अनेक टीकाएं हैं।

महम्मद—कन्दहारके एक राजा। ये खिलजी जातिके अफगान थे। १७१५में अपने पिता मीर वसके मरनेके बाद ये राज्याधिकारी हुए। १७१५में उन्होने इश्पाहन नगरमें घेरा डाला और परसियाके राजा सुलतान हुसैन शुफीको हराया। इतना ही नहीं, परसियाके राजाने प्रधान प्रधान कर्मचारियोंके साथ अश्रुपूर्ण नेत्रों-से इन्हें आत्मसमर्पण किया तथा अपना राज-मुकुट पहनाया था। इस घटनाके दो वर्ष बाद महम्मदने सफियाके बन्दी युवराजोंको प्राणदण्ड दिया। कुल ३९ राजवंशीय पुरुष विजेताके हाथसे यमपुर सिधारे। इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निहत राजपुत्रोंमें कोई भरी जवानीमें और कोई चढ़ती जवानीमें थे। कहा जाता है, कि महम्मदने उन्मत्त हो उस रातमें अपना मांस नोंच नोंच कर खाया था। इसी अवस्थामें १७२५ ई०को इनका देहान्त हुआ। इनकी मृत्युके पहले सुलतान हुसैनका पुत्र तहमास्प मिर्जा, जिसने इस्पाहनसे भाग कर आत्मरक्षा की थी, इस सुअवसरमें महम्मदके राज्य पर चढ़ाई करनेका आयोजन करने लगा। यह देख कर सभी डर गये और उन्होंने महम्मदके भतीजे अशरफको राजा बनानेका विचार किया। अशरफके सम्बन्धमें किसीका कहना है, कि इसने १७२५ ई० में महम्मदको मार कर राज्य-सिंहासन पर अधिकार किया था।

महम्मद अकबर—मुगल-सम्राट् अकबर शाहका एक नाम। अकबर देखो।

महम्मद अकबर—सम्राट् औरङ्गजेब आलमगीरका छोटा लड़का। इसने पिताके विरुद्ध हथियार उठाया था। आखिर यह जान ले कर परसियाको भागा। यहां १११५ हिजरीमें इसकी मृत्यु हुई।

महम्मद अकबर—एक मुसलमान ग्रंथकार, कुलवर्गाके महम्मद गेसू दराजका पुत्र। इसने 'आकायेद-अकबरी' नामक एक धर्मतत्त्व ग्रन्थ पारसी भाषामें लिखा था।

महम्मद अल् महदी—बर्बरराज्यके प्रथम खलीफा वा राजा। ९०८ ई०में ये राजतख्त पर बैठे। आलि और फतिमाके पुत्र होसेनके वंशधर होनेके कारण मुसलमान समाजमें इनकी अच्छी खातिर थी। इनके वंशधरोंने मिस्र देशका फतह किया था। ९३३में इनकी मृत्यु हुई। पीछे इनके लड़केने कायम बियामर अल्लाने ९४५ ई० तक राज्य किया था।

महम्मद अवद्—एक फारसी ग्रन्थकार। यह इमि असास् उल इस्लाम और फिखा सुनातफ वा जमायत नामक दो महम्मदीय स्मृतिग्रन्थ लिख गये हैं।

महम्मद आजिम—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने हैदर मालिकके बनाये हुए 'काश्मीर इतिहास'की परवर्त्ती घटनाके आधार पर एक इतिहास लिखा है। इस इतिहास में इन्होंने मुगल सम्राट् आलमगीरकी भूरि प्रशंसा की है।

महम्मद आदिल् शाह—दक्षिणात्यके बीजापुर राज्यके एक राजा, २य इब्राहिम आदिलशाहके पुत्र। १६२६ ई०में ये पितृ-सिंहासन पर बैठे। इनके राजत्वकालमें दिल्लीके मुगल-साम्राट् शाहजहांने दक्षिण देश पर आक्रमण किया। अहम्मद नगर मुगलोंके अधिकारमें आ जानेसे इन्हें अपना राज्य लूट जानेका भय हुआ। अतः इन्होंने निजाम शाहकी सहायता ले कर मुगलोंके विरुद्ध अस्त्र उठाया। मुगल-सम्राट्के विरुद्ध ये कई वार युद्धके लिये तैयार हुए थे, परन्तु हर वार इनकी महती क्षति हुई थी। इतना ही नहीं, एक वार तो इन्हें क्षतिपूर्त्तिके लिये प्रचुर धन भी देना पड़ा था।

१६३८ ई०में मुगलोंने फिर भी दक्षिण पर चढ़ाई कर दी। बीजापुर तीनों ओरसे घिर जानेके कारण वहांके राजा अपनी रक्षा बिलकुल न कर सके। दुर्दान्त मुगल सेनाओंने राजधानी तथा नगरको बुरी तरह उजाड़ डाला दौलताबाद आदि गिरिदुर्ग तथा राजधानी और निजाम राज्यका अधिकांश स्थान मुगलोंके अधिकारमें आये देख महम्मदने मुगल सम्राट्की शरण ली तथा थैली दे कर उनसे छुटकारा पाया।

यथार्थमें बिजापुरके यही अन्तिम राजा थे। इन्होंने अपने नाम पर मुद्रा भी चलाई थी। इसके परवर्त्ती राजगण नाममात्रके राजा थे।

महम्मदके राज्यकालके अन्तमें प्रधान सामन्तराज शाहजी भोंसलेके पुत्र शिवाजीने छल, बल और कौशलसे बिजापुरमें अपनी धाक जमाई। इनके अभ्युदयके साथ ही बिजापुरकी शक्ति ह्रास होने लगी। १६५६ ई०के नवम्बरमासमें महम्मदकी मृत्यु हुई। बीजापुरके 'गोलगुम्बज' नामक मकबरेमें ये दफनाये गये। पीछे इनका लड़का अली आदिलशाह राजतख्त पर बैठा। आदिलशाह-वंश और बीजापुर देखो।

महम्मद अफजल—मदीनात-उल औलिया नामक ग्रन्थके रचयिता। ग्रन्थकारने अपने ग्रन्थमें जगत्की सृष्टिसे ले कर इस्लामधर्मके प्रवर्त्तक महम्मदके पूर्ववर्त्ती पैगम्बरोंका इतिहास लिपिवद्ध किया है।

महम्मद अफजल (शेख)—एक मुसलमान कवि। गाजीपुर निवासी परीजादा शेख अबदुर रहीमका पुत्र। अपने गुरु कालपी निवासी मीर सैयद महम्मदकी आज्ञासे ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इलाहाबाद (प्रयाग)-में रहने लगे। वहां पारसी तथा अरबी भाषामें लड़कोंको शिक्षा देनेके लिये इन्होंने एक पाठशाला खोली। इनकी बनायी हुई अनेक पुस्तकें मिलती हैं। कविताशक्तिके लिये इन्हें अफजलकी उपाधि मिली थी। १६२८ ई०में ये परलोकवासी हुए।

महम्मद अनसर—एक मुसलमान जीवनी लेखक। इन्होंने १४४५ ई०में गुजरातके विख्यात सुफी शेख अहमद खट्टर-की जीवनीके आधार पर 'मलफूजात शेख अहमद यन्नावि' नामक ग्रन्थ लिखा। आज भी गुजरातमें उक्त सुफी-साधकका मकबरा मौजूद है।

महम्मद अमीन—अह्मदनगरके एक मुसलमान ऐति-हासिक, दौलत महम्मद अल् हुसैनी अल् बालखीके पुत्र। इन्होंने नवाब सिपाहदार खांके आश्रयमें 'आनफा उल् अखबार' नामक एक इतिहास लिखा। १०३६ हिजरीमें ग्रन्थ समाप्त होनेके कारण ही इन्होंने अपने ग्रन्थका यह नाम रखा। ग्रन्थके शेषमें नवाबकी बहुत तारीफ की गई है।

महम्मद अमीन—एक मुसलमान कवि। सम्राट् आलम-गीरकी युद्धविजय और दक्षिणप्रदेशके सौन्दर्य पर जो कविताएं इन्होंने लिखी थी, उन्हींको संग्रह कर 'अस-रार-उल मयानी' नामसे प्रकाश किया। नगरोंके वर्णन-में ये मुगल अधिकारके पहलेका सौन्दर्य ही वर्णन कर गये हैं। अतएव इस ग्रन्थको 'भारतीय उद्यानका प्राचीन सौन्दर्य' कहना अनुचयुक्त न होगा। क्योंकि, मुगलोंके अत्याचारसे बहुतों नगर मलियामेट हो गये थे। इसके सिवा 'हकीयत इलम् इलाही' नामक एक और धर्मतत्व ग्रन्थ इनकी बनाई हुई मिलती है।

महम्मद अमीन खां—एक मुगल सेनापति, महम्मद सैयद मीरजुमलाका लड़का। यह सम्राट् शाहजहां तथा आलमगीरके अधीन पांच हजारी सेनाओंका सेनापति था। गुजरातप्रदेशके अह्मदाबादमें १६८२ ई०को इसकी मृत्यु हुई।

महम्मद अमीन खां—एक मुगल-सचिव, निजाम उल्मूल्क आसफजाका भाई मीर बहा उद्दीनका लड़का। सम्राट् औरङ्गजेबके राजत्वकालमें यह अपनी जन्मभूमिका परि-त्याग कर भारतवर्ष आया और बादशाहके अधीन नौकरी करने लगा। विचक्षण तथा कूटबुद्धि देख कर सम्राट्ने इसे अपना प्रधान परामर्शदाता बनाया। पीछे सैयद हुसैन अली खांकी मृत्यु और अपने भाई सैयद अबदुल्ला खांके कारारोधके बाद सम्राट्ने इन्हें वजीरका पद दिया और इतिमद उद्दौला इनकी पदवी रही। किन्तु दूसरे ही साल ये रोगग्रस्त हो करालकाल-के शिकार बने।

महम्मद अमीन राज़ी—हफ्त आकलम नामक जीवनी कोष-के रचयिता। सम्राट् अकबरकी अमलदारीमें १५९४ ई०में ग्रन्थकी रचना शेष हुई। इस ग्रन्थमें यह नातिशीतोष्ण मण्डलस्थ सात ऋतुओंका वर्णन, प्रधान प्रधान नगरों-का विवरण तथा तत्कालीन प्रतिभाशाली व्यक्तियों और कवियोंकी जिवनी लिख गये हैं।

महम्मद अमीर खां—"मैलूद नादरी' नामक उर्दू ग्रंथके प्रणेता। आगरेमें इनका जन्म हुआ था। अब्दुल कादिर गिलानी नामक एक मुसलमान साधुकी जीवनीके अधार पर १८४७ ई०में इन्होंने उक्त ग्रन्थ समाप्त किया।

महम्मद अला उद्दीन् बिन् शेख अली अल् हिस्काफी—फतवाबुर अस मुख्तार नामक आईन-ग्रन्थके रचयिता। यह ग्रंथ 'तनवीर-उस-अवसार' नामक ग्रंथकी टीका है। इसके सिवा इसमें और भी कितने ही मुकदमोंका हाल लिखा हुआ है।

महम्मद अली खां—(अनसारी) तारीख-इ-मुजफरी और बहरुल मब्वाज नामक इतिहासके प्रणेता। यह हाजीपुर तथा तिरहुतकी फौजदारी अदालतके दारोगा थे।

महम्मद अली खां—एक रोहिला सरदार। रायपुरके रोहिला सरदार फैज उल्ला खांका बड़ा लड़का। यह १७४४ ई०-में अपनी पितृसम्पत्तिका अधिकारी हुआ। परन्तु थोड़े ही समयमें इसके भाई गुलाम महम्मदने इन्हें कैद कर गुप्तभावसे मार डाला। अंग्रेज सरकारने राजाके नाबालिग पुत्र अह्मद खांका पक्ष ले, गुलाम महम्मदको बिठुरमें कैद किया और कलकत्ता भेज दिया। १८६७ ई०-में ये मक्का-यात्राके बहानेसे दक्षिणमें टीपू सुल्तानसे मिले और वहांसे काबुलको भाग गये। यहां जमान शाहकी सहायतासे इन्होंने भारतवर्ष पर चढाई करनेकी चेष्टा की। अह्मद अली खांकी मृत्युके बाद १८५० ई०में सैयद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खां तथा ई० १८५५ में यूसुफ अली खांने रामपुरके मसनद पर धावा किया।

महम्मद अली खां—कर्नाटकके एक नवाब, अनवरुद्दीन खांके पुत्र। पिताके मरने पर नवाब नासिरजङ्ग तथा अंग्रेजोंकी सहायतासे १७५० ई०में ये राजसिंहासन पर बैठे। १७६५ ई०में इनका देहान्त हुआ।

महम्मद अली बिन हम्मीद—'तारीख इ हिन्द व-सिन्ध' वा 'चाच नामा' नामक इतिहासके लेखक।

महम्मद अली खां—टोंकका एक नवाब, पिण्डारी-सरदार अमीर खांका पुत्र। पिताके मरने पर १८३४ ई०में यह गद्दी पर बैठा। परन्तु लावाके हत्याकाण्डमें भाग लेनेसे अंग्रेज-सरकारने इसे गद्दीसे उतार दिया। १८७० ई०में इसका पुत्र इब्राहिम अलीखां बृटिश सरकारके राजनैतिक विभागसे नवाब बनाया गया।

महम्मद अली मीर—मीरट-उस-सफा नामक ग्रंथ-प्रणेता इनका वासस्थान बुर्हानपुरमें था।

महम्मद अली मिरजा—आगरेके एक मुसलमान कवि। इनकी काव्य रचनाशक्तिसे इन्हें 'माहिर' की उपाधि मिली थी। इनके पिता हिन्दू थे। मिर्जा जाफर मुअम्माई नामक एक भांड़के यहां इनके पिता नौकरी करते थे। भांड़के एक भी सन्तान न थी, इस कारण उसने अपने इसी हिन्दू नौकरके पुत्रको मुसलमानी धर्ममें दीक्षित कर अपन सारी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी बनाया। इस धर्मत्यागी बालक महम्मदने जाफरकी संरक्षतामें उच्च शिक्षा प्राप्त की। मिर्जा जाफरकी मृत्युके बाद महम्मद दनेशानन्द खाँके आश्रयमें रहने लगे। दनेशानन्दके मरने पर कर्म-जीवनसे अवसर पा कर ये निर्जन स्थानमें अपना समय बिताने लगे। इसी समय १६७८ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

ये उच्च श्रेणीके एक कवि थे। इनके बनाये अनेक काव्य ग्रंथोंमें 'गुल इ औरङ्ग' काव्य विशेष प्रशंसनीय है। इस काव्यमें इन्होंने सम्राट् औरङ्गजेबका राज्याभिषेक बड़ी सुन्दरतासे वर्णन किया है।

महम्मद अली शाह – अयोध्याके एक नवाब। ये नवाब नासिरुद्दौला नामसे प्रसिद्ध थे। इनके पिताका नाम था नवाब सयादत अली खां मुसेमान जा नासिर उद्दीनके मरनेके बाद १८३१ ई०में अंगरेज राजने इन्हें लखनऊकी गद्दी पर बिठाया। राजगद्दी पर बैठते ही उन्होंने अपना नाम 'अबुल फते मोइनुद्दीन सुल्तान जमान महम्मद अली शाह' रखा। १८४२ ई०में पांच वर्ष राज्य करनेके बाद लखनऊ नगरमें इनकी मृत्यु हुई। बादमें इनका लड़का सूर्य जा आमजाद अली शाह गद्दी पर बैठा।

महम्मद अब्दुल बाकी—'मआ सीर-इ-रहीमी' नामक इतिहासके प्रणेता।

महम्मद अबुल कासिम—बागदादके एक प्रसिद्ध भौगोलिक इन्होंने ९४३ ई०में अपनी जन्मभूमिका त्याग कर अफ्रिका परसिया तथा पश्चिम भारतमें भ्रमण कर एक ग्रन्थ लिखा था।

महम्मद इस्लाम—'फहतुन नाजिरीन नामक इतिहासके प्रणेता, महम्मद हफिजूल अन्सारीका लड़का। इसने १७७० ई०में अपनी पुस्तक समाप्त की।

महम्म-इ-बख्तियार—बङ्गालके सर्वप्रथम मुसलमान शासक इनका असल नाम था 'मालिक उल गाजी इख्तियारुद्दीन महम्मद इ-बख्तियार।' ये खिलिजा जातिके थे। इतिहासकारोंने इन्हें इनके पिता (महम्मद बख्तियार खिलजी) के नामसे परिचित कर बड़े भ्रममें डाल दिया है। ये विद्या, बुद्धि, सहिष्णुता, साहस, वीर्य तथा उदारता आदि सद्गुणोंसे विभूषित थे।

जन्मभूमिका त्याग कर ये गजनी राजाके दरबारमें नौकरीके लिये आये। पर यहां उपयुक्त वेतन न मिलनेसे हिन्दुस्तानको चल दिये। दिल्ली-राजदरबारमें भी जब इनकी इच्छा पूरी न हुई तब ये बदौन चले गये। वहां शासक सिपाहसलार हिजाबरुद्दीन हनन इ-आदिरके दरबारमें उपयुक्त वेतन पर नौकरी करने लगे।

इनके चचा महम्मद-इ-महमूदने पृथ्वीराजके साथ युद्धमें अच्छी ख्याति पाई थी। इस वीरताके कारण उन्हें कठमण्डी जागीर पुरस्कारमें मिली थी। आगे चल कर उस सम्पत्तिके उत्तराधिकारी महम्मद-इ-बख्तियार ही हुए।

कुछ दिनोंके बाद इन्होंने अयोध्याकी ओर प्रस्थान किया तथा भोजपुर, भीवली (भैली), मुङ्गेर और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिहार प्रदेशको जीता। इस समय इनके सद्गुणों तथा इनकी सेनाओंकी सुदक्षताका समाचार सुल्तान कुतुबुद्दीनके कानोंमें पहुंचा। सुल्तान कुतुबुद्दीनने बख्तियारका राजोचित सम्मान किया दिल्लीश्वरसे इस प्रकार अपनेको सम्मानित हुए देख बख्तियारने बिहारकी राजधानी लूटी। इस समय अनेक निरीह ब्राह्मण विजेता मुसलमानके हाथसे सताये गये और यमपुर सिधारे थे।

बिहार लूट कर महम्मदको जो कुछ धन हाथ लगा उसे उन्होंने कुतुबुद्दीनको भेंट किया। सुलतानने उनकी इस प्रभुभक्तिसे प्रसन्न हो उन्हें फिरसे राजपरिच्छदादि दे कर सम्मानित किया था। इसके बाद बख्तियारने बिहारकी यात्रा की।

इस समय बङ्गालमें सेनवंशीय राजा लक्ष्मणसेन राज्य करते थे। लक्ष्मणावती वा गौड़नगरमें उनकी राजधानी थी। वृद्ध राजा मुसलमानोंके ऐसे अमानुषिक अत्याचारसे बड़े मर्माहत हो गये। पीछे फिर कहीं ब्रह्महत्या न हो, यह डर उन्हें सदैव बना रहा। कामरूप, बङ्ग, लक्ष्मणावती और बिहार प्रदेशमें मुसलमानोंके अत्याचार-भयसे कांपने लगा।

मुसलमानी-इतिहास पढ़नेसे ज्ञात होता है, कि नदियामें राजा लक्ष्मणसेनकी राजधानी थी। इतिहासकारोंके हिसाबसे अगर इनका राजत्वकाल ८० वर्ष लिया जाय तो इनके जन्मकाल तथा सेन वंशधरोंके शासनकालमें बहुत फर्क पड़ जाता है। इसी भ्रमको दूर करनेके लिये किसी किसीने राजा लक्ष्मणसेनको आजन्म राजा अर्थात् सूतिकागृहसे ही राजा मान लिया है। जो हो, यथार्थमें इन्होंने अस्सी वर्षकी अवस्था तक राज्य किया था।

राजा लक्ष्मणसेनने बख्तियारके बङ्गाल आनेकी खबर सुन कर ज्योतिषियोंसे युद्धका फलाफल पूछा। ज्योतिषियोंने कहा कि, 'भविष्यमें तुर्क ही यहांके राजा होंगे।' अन्तमें बहुत वादविवादके बाद यही निश्चय हुआ, कि बिना लड़ाईके बङ्गाल तुर्कोंको समर्पण करना ही अच्छा है। अब वहांके ब्राह्मण तथा अपरापर हिन्दू जातियोंने कामरूप, जगन्नाथ और बङ्गालके अन्यान्य हिस्सोंमें भाग कर आश्रय लिया। किन्तु वृद्ध लक्ष्मणसेन ऐसा करना बिलकुल नहीं चाहते थे।

दूसरे वर्ष बख्तियारने फिरसे बिहारको लूट कर नदिया नगरकी ओर कदम बढ़ाया। नगरवासि इन्हें आततायी बिलकुल न समझ सके। ये छद्मवेशी अश्व-व्यवसायी बन कर केवल अठारह मनुष्योंके साथ नगरमें घुसे थे। अवशिष्ट सेना पास हीमें कहीं छिप रही थी।

अश्व-विक्रयके बहाने ये लोग राजप्रासादमें उपस्थित हुए। इस समय मध्याह्नकालमें सब कोई भोजन करनेमें व्यस्त थे। स्वयं राजा भी भोजन कर रहे थे। राजाने मुसलमानोंका इस प्रकार हठात् आक्रमण स्वप्नमें भी नहीं सोचा था। निरीह द्वारपालक आततायी मुसलमानोंके हाथसे यमपुर सिधारे। राजप्रासादमें बातकी बातमें कुहराम मच गया, यवनोंसे छू जानेके भयसे राजा अन्तःपुरके रास्ते बाहर निकल गये। कोई कोई कहते हैं, कि वृद्ध लक्ष्मणसेन जगन्नाथधाम और उनके वंशधरगण विक्रमपुर भाग गये थे। चन्द्रद्वीप राजवंश देखो।

महम्मद बख्तियारकी सेनाने क्रमशः नगरको घेर लिया। लक्ष्मणावतीमें उन्होंने अपनी राजधानी बसाई। इनके नाम पर यहां खुतबा पाठ तथा सिक्का चलने लगा। इनके यत्नसे क्रमशः मसजिद तथा विद्यालयकी भी स्थापना हुई।

कई वर्ष बाद इन्होंने कोच तथा मेच जातिको हराया। पीछे तुर्किस्तान तथा चीनको जीत कर नेपाल होते हुए ये फिर लक्ष्मणावती लौटे। 'तरकात् इ-नासिरी' पढ़नेसे मालूम होता है, कि इन्होंने भूटान, बङ्गाल आदि स्थानोंको जीत समुद्र तीर तक धावा मारा था। अन्तमें कामरूप पर आक्रमण करनेके समय इन्हें बहुत कष्ट झेलना पड़ा था। इस समय खुद महम्मद तथा बहुतसी सेनाने नदीमें डूब कर प्राण गँवाई।

वङ्गदेश देखो।

महम्मद इमाद—(फकि किमांनी ख्वाजा) एक मुसलमान हाकिम और कवि। सिराजराज शाहशुजाके राज्यकाल-(१३७१ ई०) में ये विद्यमान थे। इन्होंने मिस्वा-उल-हिदायत, मुनिस-उल-आब्रार, मसनवि-कतियत्, महब्बत नामा, मेनात नामा तथा पञ्च गञ्जप्रभृति काव्य लिखे थे। कविवर इलाही और दौलतशाहके लिखे अनुसार १३७१ ई०में इनकी मृत्यु हुई। किन्तु अपरापर लेखोंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनका मृत्युकाल १३६१ ई०में निश्चित होता है। जन्म-भूमि किरमानमें ही उनका मकबरा बना था।

महम्मद इमाम—एक मुसलमान मुफ्ती। ये खलीफा हारूं रसीदकी अमलदारीमें मौजूद थे। इनका प्रकृत नाम था आबू अबदुल्ला महम्मद बिन् हुसैन अल सैबानी। इराक अरबके अन्तर्गत वैसित नगरमें ६३६ ई०को इनका जन्म हुआ था। इन्होंने पहले हनिफा और पीछे आबू युसुफसे शिक्षा पाई थी। अपने अध्यापक इमाम आबू युसुफकी टिप्पनियोंको संग्रह कर इन्होंने अपने ग्रन्थमें जोड़ दिया। कहते हैं, कि इन्होंने ६६६ ग्रंथ लिखे थे। उनमें 'जामि-उल-कबीर', 'जामि-उस-सघीर', 'मबसूत फी फूरू इल हानिफिया', 'जियादत फी फुरु इल हानि-फिया', 'सियार-उल कबीर वल् सघीर' आदि छः ग्रंथ मुसलमान समाजमें जाहिर उल रिवायत नामसे प्रसिद्ध और विशेष आदरणीय हैं। खुरसान राज्यकी राजधानी राई (राय) नगरमें ८०२ ई०को इनकी मृत्यु हुई। परन्तु कोई कोई इनका मृत्यु-स्थान बागदाद बतलाते हैं।

महम्मद इस्माइल बुखारी—सखा उल बुखारी नामक ग्रन्थके प्रणेता। इनका असल नामक था आबा अब-दुल बिन इस्माइल आल बुखारी। बुखारा नगरमें जन्म तथा बास होनेके कारण इनका नाम अल बुखारी पड़ा। आईन व्यवसायी होनेके कारण महम्मद इस्माइल नामसे मशहूर हुए। इनका उपरोक्त ग्रंथ मुसलमान समाजमें दूसरा कुरान ही समझा जाता है। ८७० ई०में बुखारा नगरमें इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद इस्माइल (मौलवी)—निरात उल मुस्ताफिस् नामक ग्रंथके प्रणेता। मुसलमानोंके भिन्न सम्प्रदाय प्रवर्त्तक केरोली निवासी सैयद महम्मद मतकी व्याख्या कर इन्होंने अपनी पुस्तक रची है।

महम्मद इसहक़—सियार उल नवि व-आषाढ़ साहब नामक ग्रन्थके प्रणेता।

महम्मद इख्तियार (मालिक)—सुल्तान महम्मद विगाड़ा-के एक मित्र। सुल्तानने गद्दी पर बैठ कर इसे पांच हजारीका नायक बनाया। एक दिन यह अहमदाबादसे मथीपुर जा रहा था। राहमें दो पहर हो गया, इसलिये नमाज पढ़नेके लिये एक मुल्लाकी मसजिदमें घुसा। मुल्लाके साथ बातचीत करते करते इनकी सांसारिक बासनायें जाती रहीं। अतएव धन रत्नका त्याग कर यह सुल्तानके पास गया और अपनी विरागविषयक बासना उनसे कह सुनाई। पहले तो सुल्तान इसे पागल समझ कर चिकित्सा करने लगे। पीछे जब मालूम हुआ, सच-मुच विराग-बासनाने इसके हृदयमें स्थान कर लिया है, तब कोई उपाय न देख छोड़ दिया।

अनन्तर महम्मद भी अपनी पत्नीके साथ उसी मुल्लाके पास गये और उनके चरणोंमें गिर कर सेवा करने लगे। मुल्लाके यत्न तथा शिक्षासे मालिक की मानसिक वृत्तियां दिन पर दिन परिस्फुट होने लगीं। धीरे धीरे उनकी साधुताका परिचय चारों ओर फैल गया। ऐसा कहा जाता है, कि अमरुमवासी घासिया जातिके किसी एक व्यक्तिने इन्हें मार डाला था। सौराष्ट्र नगरमें उनका मकबरा आज भी मौजूद है। दाक्षिणात्य-वासी सैकड़ों मनुष्य इस मकबरेको देखने आते हैं।

महम्मद इब्न आलामूर—यूरोपके स्पेन राज्यान्तर्गत ग्रानडा प्रदेशके एक नूर (मुसलमान) राजा। इन्होंने आल्हाम्ब्राका विख्यात दुर्ग तथा राजप्रासाद निर्माण किया था। उपरोक्त दुर्गके एक शिलाफलक पर इनका नाम आबु अबदुल्ला लिखा हुआ है। ११६५ ई०में अर्जना नगरके बनिनसरके संभ्रान्तवंशमें इनका जन्म हुआ था। बड़े होने पर ये अर्जना तथा जायना नगरके शासक नियुक्त हुए। इस समय इन्होंने दाक्षिणात्यमें अपनी दया और न्यायपरता आदि गुणोंसे सर्वसाधारण-को मोहित कर लिया था। इब्न हुदायतकी मृत्युके बाद स्पेनीय मूर राज्यमें शासनविशृङ्खलता आरम्भ हुई। इसी सुअवसरमें महम्मदने कई देशों पर अधिकार कर लिया था। यही नहीं, कितने ही देशके अधिवासी इनकी उपस्थिति मात्रसे आत्मसमर्पण करनेसे बाध्य हुए थे।

इनके शासनकालमें स्पेन उन्नतिकी चरमसीमा पर पहुंच गया था। सबसे पहले इन्होंने अपने नाम पर सिक्का चलाया। १३वीं सदीमें इन्होंने आल्हाम्ब्रा दुर्ग बनानेमें हाथ लगाया। ७६ वर्षकी उमरमें भी उनकी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई थी। इस समय भी ये घोड़े पर चढ़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सैन्य संचालन करते थे। दुःख है, कि आल्हाम्ब्रा दुर्गका निर्माण ये शेष न कर सके। उनकी मृत्युके बाद परवर्त्ती मूरराज युसुफ अबुल हाजीने इसे समाप्त किया।

महम्मद इब्न मशाउद—एक मुसलमान कवि। इनका बनाया हुआ ग्रन्थ 'जिनात-उत-जमान' देखनेमें आता है।

महम्मद करीम—मुगल-सम्राट् बहादुर शाहके पौत्र तथा युवराज आजिम उस्सानके पुत्र। १७१२ ई०में इनके चचा सम्राट् जहांदार शाहने इनका काम तमाम किया।

महम्मद काजीम (मिर्जा)—एक मुसलमान ऐतिहासिक, सम्राट् आलमगीरके मुंशी, मिर्जा महम्मद अमीनके पुत्र। इनने 'आलमगीर-नामा' अपनी पुस्तकमें सम्राट् आलमगीरके राजत्वकालके दश वर्षका हाल वर्णन किया है। १६८६ ई०में उक्त ग्रन्थ समाप्त कर इन्होंने दिल्लीश्वरको भेंट किया। इस पर सम्राट्ने उन्हें तथा और दूसरे दूसरे ऐतिहासिकोंको अपनी जीवनी लिखनेसे मना कर दिया। इस ग्रन्थके सिवा उन्होंने महम्मद शाहनामा, रोजनामा और अखबरहसनिया नामक तीन ग्रन्थोंकी भी रचना की थी।

महम्मद काला—गुजरातके प्रसिद्ध सुलतान महम्मद बिगाड़ाके पुत्र। इनकी माताका नाम रानी रूपमञ्जरी था। अहमदाबादके माणिकचकमें अभी भी रानी रूपमञ्जरीका मकबरा मौजूद है।

महम्मद कासिम—'फरहङ्ग सूरुरी' नामक पारसी अभिधानके प्रणेता। इनके पिताका नाम प्रसिद्ध कवि हाजी महम्मद सुरूरी काशनी था। इन्होंने १४९६ ई०में उक्त ग्रन्थ समाप्त कर परसियाके राजा शाह अब्बास बहादुर खांके करकमलोंमें समर्पण किया।

महम्मद कासिम—सिन्धप्रदेशके एक मुसलमान शासनकर्त्ता। ये नासिरुद्दीन कब्बच वा फत्ता नामसे प्रसिद्ध थे। सिन्धमें इनके शासनकालका प्रकृत इतिहास नहीं मिलता। जनसाधारणके यादगारके लिये यहां सिन्धप्रदेशके प्राचीन मुसलमानोंके शासनकालकी घटनाएं खूलसेत-उल हिकायत, हाजनामा तथा हाजी महम्मदके इतिहाससे उद्धृत की गई है।

इराकके राजा खलीफा अबदुल मालिकके पुत्र वलीदके राज्यकालमें बासराके राजा हिजाज बिन् युसुफने ७०६ ई०में मेक्रोन जीतनेके लिये महम्मद हुसेनको दलबलके साथ भेजा। मेक्रोन पर अधिकार कर वहांकी वलूची जातियोंको इस्लामधर्ममें लानेके बाद इन्होंने फिरसे अपने सेनापति बुधमिनको देवल राज्य (वर्त्तमान ठट्ठप्रदेश) पर अधिकार करने भेजा। हिन्दूराजाने युद्धमें बुधमिनको मार डाला, परन्तु तब भी हिजाज हताश न हुए और फिरसे लड़ाईकी तैयारी करने लगे। तदनुसार ७१२ ई०में उनके भाई वकैल तकफीके पुत्र इमाद उद्दीन महम्मद बिन कासिमने छः हजार सेनाओंके साथ देवल पर चढ़ाई कर दी। युद्धमें देवलका राजा दाहिर मारा गया और राज्य मुसलमानोंके हाथ लगा।

महम्मद बिन कासिमके बाद सिन्धप्रदेशके शासक हुए अनसारीके वंशधर। अनन्तर लगभग ५ सौ वर्ष तक सुमारके राजोंने यहांका शासन किया। सुमारुवंशका अधःपतन होने पर मुसनावंशीय 'जाम' उपाधिधारी क्षत्रियोंने सिन्धुप्रदेशकी बागडोर अपने हाथ ली। इसी समय गोरी, गजनी तथा दिल्लीके पठानोंने सिन्ध पर आक्रमण किया। इस प्रकार एकके बाद एक मुसलमानोंके आक्रमणसे सिन्धुराज्य उजाड़-सा हो गया। मुसलमानोंने सिन्धके सिवाय और भी कई देशोंको जीता और उन स्थानोंका शासन करनेके लिये शासक नियुक्त कर दिया। इन शासकोंमें महम्मद कासिम भी एक थे।

ये तुर्कजातिके तथा शाह बुद्दीन महम्मदगोरीके क्रीतदास थे। उपरोक्त गोरीराजकी आज्ञासे १२०३ ई०में ये उच्च (वा मुल्तान)-प्रदेशके शासक नियुक्त हुए। इन्होंने दिल्लीके पठान-राजप्रतिनिधि सुल्तान कुतुबुद्दीन आइबककी कन्यासे विवाह किया था। १२१० ई०में श्वसुरके मरने पर इन्होंने अपने बाहुबलसे सिन्धके कई प्रदेशों पर अधिकार जमाया। इस प्रकार सुमनाराजवंशकी शक्ति चूर चूर कर महम्मद काशिम धीरे धीरे स्पर्द्धित हो उठे। अन्तमें दिल्लीके पठान राजवंशकी अधीनता तोड़ कर इन्होंने अपनेको एक स्वतन्त्र राजा घोषित कर दिया।

धीरे धीरे सिन्ध, मुल्तान, कोरम तथा सरस्वती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्यन्त इनका राज्य फैल गया। धन और जनकी भी इन्हें कमी न थी। स्वयं गजनीपति ताज उद्दीन अलयुदने इन पर दो वार चढाई की; किन्तु दोनों ही वार हार खा कर उन्हें लौटना पड़ा था। १२२५ ई०में दिल्लीके राजा शमसुद्दीन अल्तमसने इन पर चढाई करनेके लिये ससैन्य कदम वढ़ाया। महम्मद इस सम्वादको सुनते ही वहु-मूल्य रत्न तथा स्त्री पुत्र साथ ले नावसे भाग गये। दैव संयोगसे नाव डूव गई जिससे सवोंको अपने जीवनसे हाथ धोना पड़ा था।

महम्मद कासिम खां (वदाक्सानी)—एक मुसलमान कवि। यह मुगल-वादशाह अकवर तथा हुमायूं के शासनकालमें उनके अधीन नौकरी करते थे। इन्होंने जोसेफ तथा पोतिफाकी प्रेम काहिनी स्वरचित् युसुफ जेलेखा नामक काव्यमें वर्णन की है। १५७१ ई०में आगरानगरमें इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद कासिम खां (मीर)—वङ्गेश्वर मिर्जाफरके जमाई। सिराजुद्दौला जव भगवानगोलाकी ओर भाग रहे थे उस समय इन्होंने उन पर चढ़ाई कर दी और उनकी प्रियतमा स्त्री लुत्फ उन्निसाके अलङ्कारादि छीन कर नौ दो ग्यारह हुए। मीरकासिम देखो।

महम्द कासिम खां—निशापुरके एक धनाढ्य जमींदार। उजवक जातिके आक्रमणकालमें ये अपनी जन्मभूमिका त्याग कर भारतवर्ष आये। यहां वैराम खांके अधीन सेनानायकके पद पर नियुक्त हुए। सिकन्दर शूरके विरुद्ध युद्धमें इन्होंने अच्छी ख्याति पाई थी। पीछे तैमूर-के साथ जो युद्ध हुआ उसमें ये खान जमानके अधीन 'हरावल' बन कर गये थे। इसके कुछ समय वाद अर्थात् सम्राट् अकवरके राजत्वकालके प्रथम वर्षमें इन्होंने मेवाड़राज राणा उदयसिंहके शत्रु हाजी खांके विरुद्ध युद्ध-यात्रा कर दी। मुगल विद्वेषी शेर खाँके सेना-पति वीरवर हाजी खांने उक्त राणाको परास्त कर नगर तथा अजमेर पर अधिकार कर लिया। मुगलसेना जव हाजी खाँको दमन करने गई तब ये जान ले कर गुजरात भागे। इसी समय महम्मद कासिमने नगर तथा अज-मेरको जीत कर मुगल साम्राज्यमें मिला लिया।

वादशाहके शासनकालके पाचवें वर्षमें ये वैरामका पक्ष छोड़ कर चागताई सामान्तोंके दलमें मिल गये। पीछे शमसुद्दीन आत्गाके पक्षमें रह कर इन्होंने वैराम खांको परास्त किया। इस युद्धजयके पारितोषिकस्वरूप इन्हें मूलतान प्रदेश जागीरमें मिला।

अनन्तर कासिम मालवान्तर्गत शारङ्गपुर गये। यहां अकवरसे इनकी भेंट हुई। अव दोनों मिल कर अवदुल्ल खां उजवकको कैद करने चल दिये। इसके कुछ दिन ही वाद शाहपुरमें इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद कासिम खाँ (मीर अतिश)—एक मुगल सेना-पति। सम्राट शाहजहांके राजत्वकालमें ये सेनाध्यक्ष, तोपखानेके दारोगा और कोटाल पद पर नियुक्त थे। वाह्लिक तथा आन्धखुदके युद्धमें इन्होंने अपनी वीरता दिखा कर मुतानिद खां और आखता वेगीकी उपाधि पाई थी। युवराज औरङ्गजेवकी कन्दहार चढ़ाई करने-में ये चार हजार पदातिक और ढाई हजार अश्वारोही सेनाके अध्यक्ष वनाये गये थे। पीछे इन्होंने श्रीनगर राजके सान्तुर दुर्गको जीत कर तहस नहस कर डाला। युवराज दाराशिकोहने इन्हें ५ हजार अश्वारोहियों तथा ५००० पदातिकोंका अध्यक्ष वनाया था। इसके वाद इन्होंने गुजरातका शासक-पद और एक लाख रु० भी पारितोषिकमें पाया। ये औरङ्गजेवके विरुद्ध दारा-सिकोहकी ओरसे समगड़ युद्धमें लड़े थे। परन्तु अन्त-में औरङ्गजेवसे हार खा कर माफी मांगनी पड़ी थी। औरङ्गजेवने इन्हें मथुराका शासक वना कर भेजा। पर राहमें इनके भाईसे ही इनका प्राणनाश हुआ।

महम्नद कासिम (मीर)—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने नादिर शाहके भारत-आक्रमण कर 'इब्रातनामा' नामसे एक इतिहास लिखा।

महम्मद कासिम (सैयद)—'ऐज्जान-कौसियो नामक उर्दू ग्रंथके प्रणेता। वागदादवासी विख्यात मुसलममान-साधु अब्दुल कादिर जिलानीके सम्वन्धमें ही यह ग्रंथ लिखा गया है। दानापुरमें १८५५ ई०को उन्होंने उक्त ग्रंथ समाप्त किया था।

महम्मद कुली खां—इलाहावादके एक मुसलमान शासक, अयोध्याके नवाव सफदरजङ्गके भाई मिर्जा महसीनके पुत्र। १७५६ में इन्हींने युवराज अलि शौहर (पीछे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्राट् शाह आलम)के पिता २य आलमगीरसे बङ्गाल, विहार और उड़ीसाकी दीवानी पाई थी। इस समय इन्हें युवराजके साथ पटना दखल करनेके लिये जाना पड़ा। पटना पहुंचते ही कुली खांने नगरको घेर लिया। कुछ दिन घेरे रहनेके बाद इन्हें मालूम हुआ, कि इनके चचेरे भाई सुजाउद्दौलाने विश्वासघातकतासे इलाहाबाद पर आक्रमण कर दिया है। इस पर कुली खां १७६१ ई०में पटनासे लौटे और सीधे इलाहाबादको चल दिये। सुजा उद्दौलाने इन्हें जलालाबादके दुर्गमें कैद कर मार डाला।

महम्मद कुली कुतुबशाह (२य)—गोलकुण्डाके एक मुसलमान शासक। अपने पिता इब्राहिम कुतुबशाहके मरने पर ये १५८१ ई०में बारह वर्षकी अवस्थामें गद्दी पर बैठे। गद्दी पर बैठते ही इन्होंने विजापुरके आदिलशाहीवंशसे युद्ध ठान दिया। युद्धमें इनकी हार हुई। आखिर विजापुरके राजाको अपनी बहन दे कर मेल कर लिया। यह घटना १५८७ ई०में घटी थी।

गोलकुण्डाका जलवायु स्वास्थ्य अनुकूल न होनेके कारण वहांसे दस कोस दूर अपनी वीरवधू भाग्यमतीके नाम पर भाग्यनगर बसाया। पीछे उसे छोड़ वे हैदराबादमें रहने लगे।

परसियाके राजा शाह अब्बासने अपने पुत्रका विवाह कुलीकुतुबकी कन्यासे किया। ऐसे सम्भ्रान्त राजवंशमें कन्या दे कर इन्होंने सचमुच अपनेको सम्मानित समझा था।

दक्षिणप्रदेशके ये कुतुबशाही राजवंशके चतुर्थ सुल्तान थे। शासनकार्यमें इनकी असाधारण क्षमता थी। इसके सिवाय और भी कितने सद्गुणोंसे ये अलंकृत थे। इनके ३१वें वर्षके शासनकालमें तात्कालिक साहित्यको विशेष उन्नति हुई थी। स्वयं सुल्तानने 'कुल्लियत कुतुबशाह' नामक एक सुवृहत् ग्रंथकी रचना की। हिन्दी, दक्षिणी तथा पारसी भाषामें लिखी हुई अनेकों अमृतमयी विविध-विषयिणी कविता इस ग्रंथके कलेवरको बढ़ाती है। १६१२ ई०में इनकी मृत्यु हुई। बादमें इनके भाई महम्मद कुतुबशाह राजतख्त पर बैठे।

कुतुबशाही राजवंश देखो।

महम्मद कुतुबशाह—गोलकुण्डाके कुतुबशाहीवंशके ५म सुल्तान। कुतुबशाहीवंश देखो।

महम्मद कुली खां—सम्राट् अकबर शाहके एक तुर्कजातीय सेनापति। ये पहले बङ्गालके मुगल सेनानायक थे। बङ्गाल-सिपाही-विद्रोहके समय इन्होंने सिपाहियोंका साथ दिया था। थोड़े ही दिनोंमें इन्हें बलवायियोंका साथ छोड़ अकबरकी शरण लेनी पड़ी। कई बार इन्होंने काश्मीर राज्य पर चढ़ाई की थी। भोटराज अलीरायको इन्होंने ही हराया था।

महम्मद कुली बाई—एक मुगल सेनापति। बादशाह अकबरकी अमलदारीमें इन्होने मालवा, तकरोई और भद्रकके युद्धमें अपनी दक्षताका परिचय दिया था।

महम्मद खारिजमी (मौलाना)—खारिजमके एक कवि।

महम्मद खलील उल्ला खां—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने गजनीपति महम्मदकी आज्ञासे अमीर हमजाकी जीवनी लिखी थी।

महम्मद खां—एक मुसलमान इतिहासकार, अब्दुल खां फिरोजके पुत्र। 'मशीर कुतुबशाही' तथा तारीख-जमा-उल हिन्दके यही प्रणेता थे। ३० वर्षकी अवस्थामें यह २य कुली कुतुबशाहके अधीन नौकरी करते थे। बादशाहके मृत्युकाल अर्थात् १६१३ ई०में यह जीवित थे।

महम्मद खां—विजनौरके नवाब, याबित खांके प्रपौत्र। १८५१ ई०में ये विद्रोही हो गये थे।

महम्मद खां गक्कर (खोथर)—एक गक्कर सरदार। सुल्तान अङ्गम खांके पुत्र। ये विशेष युद्धकुशल थे।

महम्मद खां अशीरी—गुर्जरपति सुल्तान बहादुर शाहका भांजा, खानदेशके राजा आदिल खां फरुखीका पुत्र। १५२७—२८में इन्होंने गावैली दुर्गाधिप इमाद उल मुल्क पर आक्रमण किया तथा सुल्तान बहादुर शाहसे शत्रुको दण्ड देनेके लिये अनुरोध किया। इस समय पत्र द्वारा इमाद उल-मुल्कने पत्थर-मण्डित दुर्ग घेरे जानेकी खबर लिख भेजी। इस पर सुल्तानने नन्दावाड़में शत्रु-दलका सामना किया। सुल्तानने अपने भांजे महम्मद खांके साथ गलना-दुर्गकी ओर प्रस्थान किया तथा आगे चल कर दौलताबादमें छावनी डाली।

बहादुर शाहका सैन्य-बल देख कर दुर्गस्थ निजाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उलमुल्ककी सेना भयभीत हो गई और निकटवर्त्ती पहाड़ोंमें जा छिपी। गुजराती सेनाओंको यह मालूम होने पर उन्होंने फौरन पहाड़को चारों ओरसे घेर लिया तथा बड़ी निर्दयतासे उन्हें मार डाला। इस युद्धमें दक्षिणी सैन्यदलकी विशेष क्षति हुई थी।

अनन्तर सन्धि होनेके बाद भी निजाम उल-मुल्कने सन्धि-नियमोंको तोड़ दिया। इस पर १५२८ ई०में महम्मद खांने अपने मामाके साथ दक्षिणदेशकी ओर यात्रा कर दी। इस समय दोनों दलके दुर्गके पास पहुंचने पर वहांके राजा बागलाना बाहरजी सुल्तानका स्वागत करनेके लिये आगे बढ़े। पीछे उन्होंने सुलतान और उनके भांजे महम्मद खांको अपनी दो बहन समर्पण कर उनसे मेल कर लिया।

इसके बाद अपने मामाके साथ ये बुर्हानपुर-युद्धमें मालवा तथा माण्डुदुर्ग विजय करनेको चल पड़े। १५३२ ई०में इन्होंने सुल्तानसे छुट्टी ली। सुल्तानने इन्हें महम्मदशाहकी उपाधिसे भूषित किया था।

महम्मद खां तलपुर (मीर)—सिन्धुप्रदेशके एक राज्यच्युत अमीर। ये तलपुरके मीरवंशीय एक अन्तिम विख्यात राजा थे। सिन्धविजयके बाद अंग्रेजोंने इन्हें नजरबन्द किया। बम्बईप्रदेशकी व्यवस्थापिका सभाके सदस्य हो कर इन्होंने कई अच्छे अच्छे काम किये। १८७० ई०में हैदराबादमें इनकी मृत्यु हुई। इस समय इनकी अवस्था ६० वर्षकी थी।

महम्मद खां धारी—सम्राट् अकबर शाहके एक सभासद तथा प्रसिद्ध गायक।

महम्मद खां नियाजी—एक मुगल-सेनापति। सम्राट् अकबरने इन्हें ५०० सेनाओंका नायक बनाया। परन्तु जहांगीरके समयमें ये 'दो हजारी' पद तक पहुंच गये थे इनने शाहराज खांके साथ बङ्गाल पर चढ़ाई कर दी और ब्रह्मपुत्र युद्धमें अपनी वीरताका अच्छा परिचय दिया। शाहबाजने इन्हें काम पर नियुक्त रखनेके लिये प्रति वर्ष १ लाख रु० देनेका वचन दिया था। पश्चात् खानखानाके साथ इन्होंने ठट्टयुद्धमें मिर्ज्जा जानी बेगको मार कर युद्धमें विजय प्राप्त की थी।

खानखानाने इनकी वीरता तथा प्रतिभा पर मुग्ध हो कर इन्हें अपना मित्र बना लिया। जहांगीरने दाक्षिणात्य-विजयके समय इन्हें अपना प्रधान सेनानायक बनाया था। खर्फिके युद्धमें मालिक अम्बरको हरा कर ये सम्राट्के विशेष प्रियपात्र हो गये थे। वृद्ध होने पर भी इन्होंने युद्धसे मुंह नहीं मोड़ा। १००७ ई०में ये सदाके लिये चल बसे।

यह एक साधुचेता व्यक्ति थे। दीन दुःखियोंके ऊपर इनकी विशेष कृपा रहती थी। रात और दिनमें ये केवल ४ ही काम करते थे, दिनमें धर्म कर्म। कुरान पाठ और भोजन तथा रातमें निद्रा यापन। इसके सिवा और किसी भी कामकी ओर इनका ध्यान नहीं था। दिनमें जब तक ये 'बुजू' उपहार न दे लेते तब तक अन्नग्रहण नहीं करते थे। धर्मात्मा साधुकी तरह जीवन बिताते देख लोग इन्हें फकीर कहा करते थे। दरिद्रकी सेवा करना तो इनका जीवन व्रत ही था।

दक्षिण-प्रदेशकी यात्रामें इन्हें अधिक काल उधर ही बिताना पड़ेगा इसलिये वर्द्धा जिलान्तर्गत आष्टि विभाग इन्हें बादशाहकी ओरसे जागीरस्वरूप मिला। इन्होंने वहां अपना वासभवन बनवाया और अनेकों प्रासाद, मसजिद तथा उद्यानवाटिकाओंसे नगरका सौन्दर्य बढ़ा दिया। अभी यह स्थान जनशून्य और उजाड़-सा हो गया है।

इनकी मृत्यु इसी आष्टि नगरमें हुई। पहले इनके मकबरेमें बहुतेरे मुसलमान नमाज पढ़ने जाया करते थे। इनकी मृत्युके बाद शाहजहाँने इनके लड़के अहमद खांको ढाई हजारीके पद पर नियुक्त किया।

महम्मद खां (मीर)—पंजाबके मुसलमान शासक। ये सम्राट् अकबर तथा हुमायूंके अनुग्रहसे बहुत दिनों तक पंजाबके शासक रहे। १५७५ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

अपने शासनकालमें ये पारसी तथा तुर्की भाषामें दो 'दीवान' लिख गये हैं। इनकी जन्मभूमि गजनीमें थी, इस कारण लोग इन्हें गजनी कवि कहा करते थे। 'बुर्हान उल् इमान् नामा' नामक सुफी सम्प्रदायका ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआ है। ये खां कलानके नामसे भी मशहूर थे।

महम्मद खां बङ्गस (नवाब)—एक रोहिला-सरदार, फर्रुखा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बादके वङ्गस नवाववंशके प्रतिष्ठाता। सर्वसाधारण इन्हें गजनफार जङ्ग कहा करते थे। सम्राट् महम्मद शाहके राज्यकाल (१७३० ई०)में ये मालवाके शासक नियुक्त हुए। परन्तु महाराष्ट्रोंके साथ प्रतिपक्षता करनेमें असमर्थ होनेके कारण इन्हें १७३२ ई०में इलाहाबाद भेज दिया गया। १७३३ ई०में बुन्देल जातिका दमन करनेके लिये इन्होंने स्वसैन्य राजा क्षत्रशाल पर धावा मारा। पेशवा बाजीरावने इस समय अपनी महाराष्ट्रीय सेना क्षत्रशालकी सहायतामें भेजी। महम्मद पहले तो कई छोटे छोटे युद्धोंमें विजयी हुए पर अन्तमें हिन्दुओंकी सम्मलित सेनाओंसे हार खा जैतगढ़ दुर्गमें जा छिपे। राजा क्षत्रशालने दुर्गको भी घेर लिया और कई दिनों तक गोला बरसाते रहे। नवाबके लड़के कायम जङ्गने अफगान सेनाओंकी सहायतासे पिताको बचाया।

महम्मद खांकी कमजोरी देख कर मुगल सचिवने रोगीके बहानेसे उन्हें पदच्युत कर दिया तथा उनके स्थान पर उनके पुत्र कायमजङ्गको नियुक्त किया।

महम्मद खां शेवानी—रूस सीमान्तवासी एक तातार-वीर, चंगेज खांके पुत्र शेवानीके वंशधर। ये शाही बेग खां उजबकके नामसे भी मशहूर थे। इन्होंने अपने बाहुबलसे आक्सस नदीके दूसरे किनारे अवस्थित सभी स्थान, यहां तक कि खुरासान तथा १५०५ ई०में हीरट पर भी अधिकार कर लिया था। तैमुरवंशकी प्रधान शाखाके वंशधर भी रणभूमिमें इनके हाथसे यमपुर सिधारे थे। पापके इस प्रायश्चितस्वरूप १५१० ई०में इस शाह इस्माइलके हाथसे पराजित हुए और मार डाले गये। उक्त शाहराजने उनकी खोपड़ीको शराब पीनेका प्याला बनाया था।

महम्मद खां सुलतान—दिल्लीके राजा गयासुद्दीन बलबनके ज्येष्ठ पुत्र। ये महम्मद कायान या खां साहिब नामसे भी प्रसिद्ध थे। पिताके आज्ञानुसार पहले सीमान्त प्रदेश (मुल्तान, लाहोर, दीपालपुर प्रभृति स्थानों)के शासक नियुक्त हुए। ये बड़े विद्योत्साही पुरुष थे तथा काव्यमें भी इनका विशेष अनुराग था। इन्होंने स्वयं २० हजार सुमधुर और शोभावर्णनविषयक कविता संग्रह की थी।

इनके आश्रयमें रह कर प्रसिद्ध कवि खुशरू तथा ख्वाजा हसनने काव्यमें विशेष उन्नति की थी।

पारस्याधिपति अर्घुन खांके कन्दहार निवासी बलवन तैमुर खां चंगेजीने इसी समय २० सहस्र अश्वारोही सेनाओंके साथ भारतवर्ष पर चढ़ाई कर दी। दीपालपुर और लाहोर लूट जानेके बाद वे लोग जब मुल्तानकी ओर अग्रसर हुए तब महम्मद खां भी दलबलके साथ लाहोरके सम्मुखस्थ इरावतीके किनारे जा धमके। दोनों दलमें विपुल संग्राम छिड़ गया। महम्मद खां पराजित और निहत हुए। इनकी बाकी सेना भी जान ले कर भागी। भागी हुई सेनामें अमीर खुशरू भी एक थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'खिजिर खानी' में इस विपद घटनाका बहुत विशद रूपसे वर्णन किया है।

महम्मद खार ताड़ो—बंबई प्रेसिडेन्सीके हैदराबाद जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २४° १४′ से २५° १६′ उ० तथा देशा० ६८° १९′ से ६९° २२′ पू०के मध्य विस्तृत है। क्षेत्रफल ३१७७ वर्गमील है। सारा उपविभाग गुनि, बदोन, तांड़ोबाग तथा डेरा महब्बत नामक ४ तालुक तथा २७ तप्पाओंमें विभक्त है।

इस जिलेकी भूमि प्रायः सर्वत्र समतल है। जहां तहां उपवनाकार जङ्गलके होनेसे इस स्थानकी शोभा अपूर्व दिखाई पड़ती है। यहां बहुतसे खाल हैं, इसलिये जलका बिलकुल अभाव नहीं है। यहांकी मिट्टी साधारणतया ५ भागोंमें विभक्त की जा सकती है। यथा—१ उर्वरा, २ पंकिल, ३ बलुई, ४ रेतीली और ५ खारी मिट्टी।

उपरोक्त अधिकांश स्थानोंमें खेतीबारी होती है। नहर आदिके होनेसे कृषिकार्यकी विशेष उन्नति है। बदीन तालुकान्तर्गत लुथार दुर्ग यहांकी प्राचीन स्मृति है। मीर गुलाम अलीके राजत्वकालमें पोर महम्मदने पठानोंके आक्रमणसे देशवासियोंकी रक्षाके लिये ही इसे बनवाया था। मीर गुलाम अलीने इसका एक अंश नष्ट कर डाला था। पीछे वह मिट्टीसे मरम्मत किया गया।

२ उक्त उपविभागका प्रधान नगर। यह गुनि नहरके दक्षिण तट पर अक्षा० २५° २८′ उत्तर तथा देशा० ६१° ५५′ पू०के मध्य विस्तृत है। बिचार सदरके अवस्थित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होनेसे यह नगर समृद्धिशाली दिखाई देता है। नहर तथा पक्की सड़कसे आस पासके नगरमें स्थानीय वाणिज्य-द्रव्यकी आमदनी और रफ्तनी होती है।

मीर महम्मद खां तलपुर शाहवानीने मीर फते अली खांके राजत्वकालके ८वें वर्षमें इस नगरको वसाया था। मीर महम्मदको इसके चारों ओरके प्रदेश जागीरमें मिले थे। विसूचिकाके प्रादुर्भावसे यह नगर जनशून्य हो गया था। १८१३ ई०में मीर महम्मदकी मृत्यु हुई। मीर करमखां और गुलाम खांने यथाक्रमसे यहांका शासन किया। जिस समय अंग्रेजोंने सिन्ध पर अधिकार किया था उसी समय १८४३ ई०में मीर गुलामकी मृत्यु हुई। उनके पौत्र अल्ला वक्स मीरके पद पर अभिषिक्त हुए।

महम्मद खां लङ्गा—सुल्तानके चतुर्थ राजा, युवराज फिरोदके पुत्र। १५०२ ई०में अपने पितामह हसन खां लङ्गाके मरने पर महम्मद खां लङ्गा राज्याधिकारी हुए। इन्होंने २३ वर्ष तक राज्य किया था। सम्राट् बाबरने महम्मदकी मृत्युसे कुछ पहले १५२४ ई०में पञ्जाबको जीत कर दिल्लीकी चढ़ाई कर दी थी। वहां पहुंच कर उन्हों ने ठट्टके शासनकर्त्ता हुसैन अर्घुनको कहला भेजा, कि मुल्तानका युद्ध-भार आजसे तुम्हारे ही ऊपर सौंपा जाता है। तदनुसार हुसैन अर्घुन भी काफी सेनाके साथ सिन्धु नदी पार कर मुल्तान पहुंचे। परन्तु इसके पहले ही महम्मद खाका स्वर्गवास हो चुका था। अनंतर उनके लड़के २य हुसेन लङ्गाके तख्त पर बैठे।

महम्मद खां सरफुद्दीन ओगलू तकल—हीरटके एक मुसलमान शासक। इन्होंने हुमायूंको पलायनकालमें विशेष सहायता दी थी।

महम्मद खुदावन्द (सुल्तान)—परसियाके राजा १म शाह तहमास्पके ज्येष्ठ पुत्र। इतिहासमें ये सुल्तान सिकन्दर शाह नामसे विख्यात हैं। १५३१ ई०में इनका जन्म हुआ। १५६६ ई०में अपने भाई द्वितीय शाह इस्लामके मरने पर ये परसियाके सिंहासन पर बैठे। इन्हें कम सूझता था इसलिये इनका बड़ा लड़का हेमजा मिर्जा पिताका प्रतिनिधि हो कर राजकार्य चलाने लगा।

पिताकी मृत्युके बाद राज्यमें विशृङ्खलता उपस्थित हुई। इसी समय किसी गुप्तचरने इनका काम तमाम किया। इसके बाद खुरासेनके सरदारोंने हेमजाके द्वितीय पुत्र अब्बासको १७६८ ई०में परसियाके राजसिंहासन पर बिठाया।

महम्मद खुदावन्द (सुल्तान)—परसियाके एक राजा। ये चंगेज खांके वंशधर अर्घुन खांके पुत्र थे। १३०४ ई०में अपने भाई सुल्तान गजा खांके मरने पर ये परसियाके राजा हुए।

ये विशेष न्यायपरायण थे। परसियाके राजाओंमें सबसे पहले इन्होंने ही अलीके चलाये हुए मतका अनुसरण किया था। सर्वसाधारणको उक्त मतमें अपनी प्रगाढ़ भक्ति दिखानेके लिये इन्होंने अपने नामसे जो सिक्का चलाया उस पर द्वादश इमामका नाम अङ्कित रहता था। इन्होंने मिड़िया राज्यान्तर्गत सुल्तानिया नगरीकी प्रतिष्ठा कर वहां अपनी राजधानी बसाई। इनकी मृतदेह इसी नगरके दफनाई गई थी। मकबरेके गुम्बजका व्यासके गुम्बज ४१ फुट है।

महम्मदगढ़—१ मध्य भारतवर्षमें भूपाल एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। यह विदिशा तथा रोहितगढ़के बीचमें अवस्थित है। क्षेत्रफल २३ वर्गमील है।

यह स्थान पहले कुर्वाई राज्यके अधीन था। कुर्वाई के नवाब महम्मद दलील खांके मरने पर यह राज्य इनके दो लड़कोंके बीच बंट गया। छोटे लड़के आसानके भागमें महम्मदपुर और बरसौदा नामक स्थान पड़ा। आसानके मरने पर उनका लड़का बसौदाका और महम्मद खां महम्मदगढ़का अधिकारी हुआ। १८१६ ई०में सिगड़के राजाने इसका कुछ अंश छीन कर अपने राज्यमें मिला लिया। परन्तु अंगरेज-राजने बीचमें पड़ कर उसे फिर लौटा दिया। यहांके नवाब पठानजातिके अफगान हैं। राजाकी उपाधि नवाब है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २३° ३८' उ० तथा देशा० ७८° १२' पू०के मध्य विस्तृत है। यहां अफीम तथा अन्यान्य अनाजोंका जोरों कारबार चलता है।

महम्मद गयासुद्दीन—लखनऊ नगरके एक प्रसिद्ध आभिधानिक। इन्होंने १४ वर्ष कठिन परिश्रम करके १८२६ ई०में एक बड़ा कोष तैयार किया। इसके सिवा इन्होंने 'मिफताह उल् कुलुब', 'सार सिकन्दरानामा' तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'नक्शावाग' और वहार प्रभृति अनेक काव्य लिखे तथा काशीदासकृत महाभारतका फारसीमें अनुवाद किया है।लखनऊ जिलान्तर्गत मुस्तफावाद वा रामपुरमें इनका जन्म हुआ था।

महम्मद घज्जालो (इमाम)—एक प्रसिद्ध मुसलमान धर्माचार्य तथा हाकिम। ये आबू हमीद महम्मद जैत उद्दीन-अल-तुषी तथा हज्जत उल इस्लामके नामसे प्रसिद्ध थे। इन्होंने धर्म, आयुर्वेद तथा विज्ञान सम्बन्धीय अनेक उत्कृष्ट ग्रंथ लिखे हैं। उनमें 'किमि ए सयादत, 'याकुत-उल-तावीव' वा 'तफसीर जवाहिर उल कुरान', 'आका पद घज्जाली', 'अहिया-उल उलुम' तथा 'तुइफत-उल-फिलसफा' आदि ग्रन्थ प्रधान हैं। १०५८ ई०में तूस प्रदेशके घज्जाली नामक ग्राममें जन्म होनेके कारण इनका नाम घज्जाली पड़ा। १११११ ई०में इनकी मृत्यु हुई। इन्होंने अरबी और फारसी भाषामें कुल ६६ ग्रंथ लिखे हैं।

महम्मद घेसु दराज (सैयद)—दक्षिण प्रदेशके कुलवर्गा राज्यान्तर्गत दौलताबाद नगरवासी एक मुसलमान साधु। ये दिल्ली निवासी शेख चिरागुद्दीनके शिष्य थे। इनका जन्म १३२१ ई०को दिल्लीमें हुआ था। इनका असल नाम सदरुद्दीन हुस्सैनी था, पर पीछे ये घेसु दराजके नामसे ही विख्यात हुए।

बाह्मनी सुल्तानोंके शासनकालमे ये कुलवर्गा आये। युवराज अहमद शाह इनके व्याख्यानसे प्रसन्न हो इनका शिष्य बन गये। उन्होंने साधुके रहनेके लिये एक मसजिद बनवा दी।

१४२२ ई०में अहम्मद शाह गद्दी पर बैठे। इस समय साधुका गुण तमाम फैल गया। राजासे ले कर दीन दुःखी तक सभी इनके धर्मोपदेशका पालन करने लगे। धीरे धीरे जनसाधारणकी इन पर ऐसी प्रगाढ़ भक्ति हो गई, कि समस्त दाक्षिणात्यवासी अति भक्ति और सम्मानसे इनकी पूजा करने लगे। अहम्मद शाहके राज्यारम्भके कुछ समय बाद ही इनकी मृत्यु हुई। मृतदेह हसानाबाद (कुलवर्गा)में दफनाई गई थी। आज भी सैकड़ों मनुष्य इनके मकबरेमें आ कर इबादत करते हैं।

घेसुदराजका मकबरा दक्षिण प्रदेशमें देखने लायक चीज है। बाह्मनी सुल्तान तथा और भी कितने स्थानीय राजाओंने इस मकबरेके खर्च वर्चके लिये काफी धन दे दिया है। उन लोगोंके वंशधर भी सेवाइतरूपमें नियुक्त रह कर मकबरेके संस्कारादिमें धन खर्च कर उसकी सार्थकता दिखलाते हैं।

घेसुदराज सुफी-संप्रदायके कर्त्तव्याकर्त्तव्यका निरूपण कर 'वतुद-उल-अशीकीन' नामसे एक धर्मग्रन्थ तथा 'असमार उल अक्षर' नामसे पारसी भाषामें एक हितोपदेश ग्रन्थ लिख गये हैं।

महम्मद गोरी (घोरी)—घोर वा घूरराज्यमें जन्म होने तथा वहांकी प्रचलित भाषामें महम्मद वा अहम्मद नामसे विख्यात होनेके कारण ऐतिहासिकोंने इनका महम्मद-गोरी नाम रखा। इनका प्रकृत नाम था मालिक शाह-बुद्दीन। इन्हें मुइज्जुद्दीनकी उपाधि भी मिली थी।

मिनहाजके 'तवकात इ नासिरी' नामक ग्रंथमें इनका जीवनचरित जो लिखा है, वह इस प्रकार है,—

सुलतान गयासुद्दीन और मुइज्जुद्दीन दो भाई थे। वञ्जोरवंशमें उनका जन्म हुआ था। उनके पिताका नाम शनसवानी, पितामहका वहाउद्दीन समा और प्रपितामहका नाम नहरान था। इनकी माताका नाम किदानी मालिक वदरुद्दीनकी कन्या थी। माता प्यारसे गयासुद्दीनको 'हवसी' तथा मुइज्जुद्दीनको 'जानगी' नामसे पुकारती थी।

सुल्तान अलाउद्दीन हुसैनने फिरोजककी गद्दी पर बैठते ही गयास और मुइजको वजरिस्तानके दुर्गमें कैद रखा। अलाउद्दीनके बाद सुल्तान सैफुद्दीन राजा हुए। इन्होंने दोनों भाईको कारावाससे मुक्त कर पूर्ण स्वाधीनता प्रदान की। गयासुद्दीन फिरोजकके दरबारमें सैफुद्दीनका प्रियपात्र हो कर रहने लगा और मुइज्जुद्दीन अपने चचा मालिक फखरुद्दीनके पास चला आया।

सैफुद्दीनके मरने पर अमीर उमरावोंने मिल कर गयासुद्दीनको ही गद्दी पर बिठाया। पहले इनका नाम शमसुद्दीन था, पर राजा होनेके बाद ये 'सुलतान गयासुद्दीन कहलाये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाईके राजा होनेका संवाद सुन कर मुइज्जुद्दीन चचासे आज्ञा ले फिरोजकसे रवाना हुए। गयासुद्दीनने पहले इन्हें 'सर-इ-जान्दार' अर्थात् प्रधान राजचिह्नवाहक-का पद दिया और पीछे इस्तिया तथा कजुरान प्रदेशका शासक बनाया। गयासने घोरमें अपनी राजधानी बसाई। आबुल अब्बास आदि कई संभ्रान्त व्यक्तियोंने इसका घोर विरोध किया, पर गयासने अब्बासका शिर काट कर दो टुकड़े कर डाला। कहते हैं, कि उसी समयसे गयासकी समृद्धि और राजसीमा बढ़ने लगी। गयासने अपने भाईको गरमशिरके सर्वप्रधान और समृद्धशाली निगिनाबाद नगरका भार सौंपा।

मालिक फखरुद्दीन अपने भतीजेकी समृद्धि पर जलने लगे। अतः उन्होंने अपनेको ही प्रकृत उत्तराधिकारी घोषित करना स्थिर किया। घोरके अनेक अमीरोंने इन्हें इस कार्यमें साथ दिया। अब फखरुद्दीनने अपने भतीजोंके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। इसी सुअव-सरमें मालिक ताजुद्दीन यलदूज् फिरोजक पर अधिकार करनेके लिये ससैन्य रवाना हुए। जरोके क्षेत्रमें दोनों दल-में मुठभेढ़ हुई। यलदुजने समझा था, कि 'घोर-सेनाओं-को विध्वंस करनेको मुझमें पूरी शक्ति तो जरूर है, पर जय विजय ईश्वराधीन है, अतः मैं कर ही क्या सकता।' अकस्मात् एक घोरी वीरने इन पर ऐसा अस्त्र चलाया, कि इनका शरीर खंड खंड हो गया। अतएव घोरी-राजकी विजय-पताका फहराई।

दूसरे दिन घोरराज-शत्रु बालखके शासनकर्त्ताका मुण्ड भी दो टुकड़े करके ईर्षापरायण चचाके पास भेज दिया गया। फखर-उद्दीन भागनेकी चेष्टा कर ही रहे थे, कि एकाएक गयासुद्दीन और मुइज्जुद्दीनने ससैन्य उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। अब तो वे जालमें फँस गये, भाग कैसे सकते थे। दोनों भाइयोंने शिविरमें ला कर अत्यन्त आदरके साथ उन्हें सिंहासन पर बिठाया और आनुगत्य प्रकाशस्वरूप मेखला स्पर्श करके दोनों भाई पास हीमें खड़े हो गये। फखरुद्दीन लाजसे मर गये और उठ कर बोले, "तुम लोग क्यों इस प्रकार मेरी दुर्गति करते हो।" किन्तु दोनों भाइयोंने यथोचित सम्मान कर उनका संदेह दूर किया और आदरपूर्वक धामि-यान भेज दिया। पीछे गयासुद्दीनने हीरट, परसिया, किवार और वघलार आदि अनेक स्थानों पर अधिकार जमाया। इसी समय सुल्तान अला उद्दीन हुसैनकी कन्याके साथ गयासका विवाह हुआ। अब महम्मद गोरी इनकी नाकके वाल हो गये।

कुछ दिनोंके वाद गज-जातिय अमीरोंने अपने कौशलसे गोरी सेनाको परास्त किया। पीछे महम्मद गोरी स्वयं दलवलके साथ उतरे और वे भी परास्त हुए। गया सुद्दीन यह समाचार पाते ही गज-जातिको ध्वंस करनेमें तैयार हो गये। ५६६ हिजरीमें इन्होंने अपनी विजय-पताका फहराई।

गजनी पर अधिकार कर लेनेके वाद गयासुद्दीनने मह-म्मदगोरीको वहांका राजा वनाया। अव उन्होंने अपना नाम 'सुल्तान-उल-आजम् मुइज-उद-दुनियां अब्वूल मुज-फ्फर महम्मद' रखा। हिजरी ५७०में इन्होंने संपूर्ण गजनी प्रदेश तथा गरदेज पर अधिकार किया। दूसरे साल करामितके हाथसे मुल्तान छीन लिया और हिजरी ५७४ में भारत पर अधिकार करनेकी इच्छा प्रकट की।

फिरिस्तामें लिखा है—शाहवुद्दीन 'उच्चा' पर अधिकार करने आये। उच्चाराजने दुर्गमें आश्रय लिया। इस पर सुलतान दुर्गके पास ही छावनी डाल कर दुर्ग जीतनेका उपाय ढूढ़ने लगे। उन्होंने देखा कि सम्मुख समरसे फललाभकी संभावना नहीं है। इसी समय उन्हें मालूम हुआ, कि राजा रानीके वशीभूत हैं। गोरीराजने रानीको कहला भेजा, अगर रानी नगर छोड़ कर वाहर चली आवे तो मैं उनसे विवाह करूं और उन्हें विश्वकी रानी वना दूं।' रानी, चाहे भयसे हो अथवा गजनोपतिके विजय-विश्वाससे, इस प्रस्तावको स्वीकार कर नगरसे वाहर चली आई। दुष्टा रानीसे ही उच्चाराज-का प्राणान्त हुआ। राज्य मुसलमानोंके हाथ लगा। रानी और राजकुमारी इस्लामधर्ममें दीक्षित हुई। किन्तु शाहवुद्दीनने रानीसे विवाह नहीं किया। इसके लिये रानीको वहुत दुःख हुआ और थोड़े ही दिनोंके वाद रानी और राजकुमारी दोनों इस लोकसे चल वसीं।

मिनहाजमें लिखा है—मुल्तान और उच्चा पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार करनेके बाद सुलतान नहरवाला (अन-हलवाड़पत्तन) पर चढ़ाई करने गये। यहांके राजा युवक भीमदेवने बहुसंख्यक निषादी तथा अन्यान्य सेनाओंको साथ ले उनका सामना किया। मुसलमान लोग हार खा कर भागे। हिजरी ६७८में सुल्तानने नष्ट गौरव पुनः पानेकी चेष्टा की, पर आशा पूरी न हुई।

दूसरे साल सुल्तानने पुर्षोर (पुरुषपुर वा पेशावर) पर अधिकार किया। इसके दो वर्ष बाद वे लाहोर जीतनेके लिये अग्रसर हुए। इसी समय महम्मदी साम्राज्यके गौरव-रवि अस्ताचलचूड़ावलम्बी खुशरू मालिकने अपने पुत्र और एक बहुमूल्य हाथी भेज कर सुल्तानका अधीनता स्वीकार कर ली।

हिजरी ५७४में सुल्तान देवल तथा आसपासके स्थानोंको जीत कर विपुल धनके साथ स्वदेश लौटे।

हिजरी ५७१में इन्होंने फिरसे लाहोरकी यात्रा कर दी। राहमें जितने देश पड़े सबोंको वे लूटते गये। लौटती बारमें इन्होंने सियालकोट-दुर्ग-संस्कारका प्रबन्ध कर दिया।

सुलतानने फिरसे जो लाहोर प्रदेश पर अधिकार किया उसका कारण जम्बु राजाओंके इतिहासमें इस प्रकार लिखा है :—विक्रमाब्द ११५८में चक्रदेव पैत्रिक-सिंहासन जम्बुका अधिकारी हुआ। इनके राजत्वकालके मध्यवर्त्ती ५५५ हिजरीमें महम्मद-गजनीके वंशधर मालिक खुशरू गजनीको छोड़ लाहनोर चले आये। जम्बु-राजाओंको इस गोरीवंशसे सदा विद्वेष रहा करता था, पर ये लोग कुछ कर नहीं सकते थे। खुशरूने क्रमशः सम्पूर्ण पञ्जाबप्रान्तको अपने दखलमें कर लिया। मङ्गलनिवासी खोखर जाति जम्बुराजकी प्रजा होने पर भी खुशरूके उत्साहसे जम्बूराजकी अधीनता अस्वीकार कर दी। इस समय सुलतान मुइज्जुद्दीन गोरी गजनी जीत कर अपना राज्य फैला रहा था। राजा चक्रदेवने अपने छोटे भाई रामदेवको बहुमूल्य भेंटके साथ सुल्तानके पास भेजा। रामदेवने वहां जा कर राज्यकी अवस्था उन्हें कह सुनाई और यह भी सूचित किया, कि आपके लाहनोर जानेसे ही वह प्रदेश सहजमें हाथ आ जायगा। सुल्तानने जम्बु-प्रतिनिधिको यथेष्ट सम्मान किया। दूसरे वह प्रतिनिधिके कथनानुसार वे लाहनोर गये और उसे अपने दखलमें कर लिया। किन्तु जब उन्होंने देखा, कि वहांके लोग सहजमें वशीभूत होनेको नहीं है, तब आस पासके प्रदेशोंको वे लूटने और ध्वंस करने लग गये।

सुल्तानके वापिस आने पर खुशरूने खोखरजाति की सहायतासे पुनः सियालकोट-दुर्गको घेर लिया। किन्तु चक्रदेव दुर्गवासियोंकी सहायतामें थे, इस कारण मालिकका अधिकार वहां जमने न पाया। इसके कुछ ही दिन बाद वृद्ध राजा चक्रदेवका देहान्त हुआ। इस समय उनकी उमर ८० वर्षसे ऊपर थी। पीछे विक्रम सम्वत् १२२१में इनके पुत्र विजयदेव सिंहासन पर बैठे। इसी वर्ष सुलतान सिन्धु नद पार कर पञ्चनद आये। विहात नदीके किनारे राजकुमार नृसिंहदेवसे उनकी भेंट हुई। सुलतान राजकुमारके साथ वहांसे लाहनोरकी ओर चल दिये। इस बार वहां इनका अधिकार जम गया। नरसिंह सुलतानसे उपयुक्त खिलअत पा कर स्वदेश लौटे। खुशरू मालिक बन्दी हो कर गजनी लाये गये। हिजरी ५८१में गरजिस्तानके बलरवान दुर्गमें उनकी हत्या की गई।

तबकात-इ नासिरी (सामयिक इतिहास)-में लिखा है, कि उपरोक्त घटनाके बाद ही सुलतान बहुतसे सैन्य सामान्तोंके साथ तबरहिन्द (भाटिन्दा)-दुर्गको विजय करने गये थे। बदौनीके अनुसार उक्त दुर्गमें ही जयपाल की राजधानी थी।

मिनहाज ने लिखा है, कि सुल्तानने उक्त दुर्ग जीत कर मालिक जिया उद्दीनको वहांका अध्यक्ष बनाया। दुर्गकी रक्षामें तुलाजातीय १२०० अश्वारोही नियुक्त किये गये। सुल्तान गजनी देश लौट जानेकी इच्छा कर रहे थे, कि इसी समय इन्होंने सुना कि पृथ्वीराज ससैन्य दुर्ग पर अधिकार करने आ रहे हैं। भारतवर्षके प्रायः सभी हिन्दू राजाओंने इसमें योग दिया था। सुल्तानने भी तिरोई क्षेतमें पृथ्वीराजका सामना किया।

विशेष विवरण पृथ्वीराज शब्दमें देखो।

युद्धमें सुलतानकी हार हुई। यहां तक कि शत्रुके तीरसे घायल हो कर वे घोड़े परसे गिर रहे थे, इसी समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक खालज वीर उन्हें अपने कन्धे पर चढ़ा कर भीषण युद्ध क्षेत्रसे ले भागा जिससे उनकी जान बच गई।

मुसलमानी सेना रणस्थलमें सुलतानको न देख व्याकुल हो गई। पीछे रणस्थलमें पीठ दिखा कर जब वे भाग रही थी, तो राहमें उस वीर युवकके कंधे पर सुलतानको देख उन्हें जानमें जान आई। सुलतान ससैन्य गजनी लौटे। इसका बदला चुकानेके लिये सुल्तानने फिर भी दूसरे वर्ष भारतवर्षमें प्रवेश किया। इस बार इनके साथ एक लाख बीस हजार मुसलमान घुड़सवार थे। यहां आने पर जम्बूराज नृसिंहदेव और जयपाल भी इनके साथ मिल गये। सुल्तानने तबरहिन्द दुर्ग जीत कर तिरौरीमें छावनी डाली। तिरौरी रण-क्षेत्रमें घमसान लड़ाई छिड़ी। इस लड़ाईमें हिन्दुओंके भाग्यने किस प्रकार पलटा खाया, वह पृथ्वीराज शब्दमें सविस्तार लिखा जा चुका है। यहां पुनरुल्लेख नियोजन है।

पृथ्वीराजकी पराजयके बाद अजमेर, हांसी, सरस्वती आदि समग्र शिवालिक प्रदेश सुल्तानके हाथ लगे। कुतुबुद्दिन ऐबकको उन स्थानोंका शासक बना कर सुल्तान गजनी लौटे। कुतुबकी चेष्टासे थोड़े ही दिनोंमें कन्नौज, ग्वालियर, वाराणसी, बदाऊं, अनहलवाड़ आदि स्थानोंने गजनीपतिकी अधीनता स्वीकार की थी।

अनन्तर घूर वा घोरपति गयासुद्दीन महम्मदका हीरटमें देहान्त हुआ। इस समय मुइज्जुद्दीन खुरासनकी प्रान्त सीमामें तुस और सराके निकट रहते थे। बड़े भाईका मृत्यु-संवाद पा कर वह फौरन वहांसे हीरटको चल दिये। अन्त्येष्टिक्रिया करनेके बाद उन्होंने अपने चचेरे भाई गयासुद्दीन महम्मदको फरा, इसफिजार प्रदेश और बस्ता नगर तथा सुल्तान गयासुद्दीनके जमाई मालिक जिया उद्दीनको घोर, गारम्सिरप्रदेश, फिरोजक-का सिंहासन तथा दावरराज्य एवम् अपने भांजे मालिक नासिरुद्दीनको हीरट प्रदेश अर्पण किया। इसके बाद इन्होंने घोरके कुछ अमीर और मालिकको ले कर हिजरी ६०१में खारिजम प्रदेशकी ओर युद्धयात्रा कर दी। खारिजम्-पतिने शत्रुकी गतिको रोकना चाहा लेकिन जब उन्होंने देखा सुल्तानकी प्रचण्ड सेनाके सामने उनकी सेना क्षण भर भी ठहर नहीं सकती तब वे निराश हो अपनी राजधानी लौटे। इधर सुल्तान भी नगरद्वार आ धमके, पर विजय प्राप्त न कर सके। नगर निवासियोंने जइहून नदीसे एक नहर पूर्वकी ओर काट निकाली थी। इसीसे घोरके अनेक अमीर पकड़े और मारे गये। इधर रसद भी घट गई थी जिससे सुलतानको लाचारवश बालख लौट जाना पड़ा। आन्दखुदमें पहुंच कर जब सुल्तान शामको नमाज पढ़ रहे थे इसी समय तुर्किस्तान-के अमीर उन पर यकायक टूट पड़े किन्तु सुलतानकी सेनापतिने बड़ी वीरतासे शत्रुओंको मार भगाया। सेना-पतिने उनका पीछा भी करना चाहा था, पर सुलतानने यह कहते ही मना कर दिया, कि भगवान्की इच्छा अवश्य पूरी होगी। मैं विधर्मियोंके सम्मुख जाऊंगा और धर्मराज्य अवश्य स्थान करूंगा। सेनापति तदनुसार सदलबल जुजरवानकी ओर चल दिये। पथश्रमसे आक्रान्त तथा दुर्बल बहुत सी सेनाने सुलतानको छोड़ कर चली गई। दूसरे दिन जो कुछ बच गई, उसे ही ले कर सुलतानने अपनी राह ली। इस समय बहुत सी विधर्मी सेनाने आ कर सुलतानको घेर लिया। अब सुलतानके क्रीतदासोंने उनसे कहा, कि हम लोगोंके पास बहुत थोड़ी-सी सेना रह गई, इस कारण युद्ध-क्षेत्रसे भाग जाना ही हम लोगोंके हकमें अच्छा होगा। परन्तु सुलतानने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। विधर्मी मुगलसेनाके सामने मुट्ठी भर मुसलमानीसेना कब तक ठहर सकती थी, एक एक कर यमपुर जाने लगी। सुलतान भी मुगल सेनाके तीव्र शराघातसे जर्जर हो गये। इस समय तुर्क कृतदास अगर इन्हें आन्दखुद दुर्गमें उठा न ले जाते तो इस बार इनकी जान बचने न पाती।

दूसरे दिन अमरकन्दके सुलतान ओसमान और तुर्किस्तानके मालिकगण इनकी सहायतामें आये। विधर्मियोंने उपरोक्त सहायकोंको देख कर घरकी राह ली। सुलतान भी गजनीको लौटे। वे तुर्किस्तान जा कर जिससे तीन वर्ष युद्ध चला सकें, उसका आयो-जन करने लगे।

इस समय कुछ दुर्वृत्त खोखर तथा लाहोर और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुघशैल-निवासी पहाड़ी जाति बागी हो गई। विद्रोह दमन करनेके लिये सुलतानको फिर एक बार भारत वर्ष आ कर कुरानके मतानुसार धर्मयुद्ध करना पड़ा। विद्रोहियोंको उचित सजा मिली।

हिजरी ६०२में सुलतान लौटनेकी तैयारी करने लगे, पर लौट न पाये। विश्राम-स्थानमें एक मुलाहिदा (विधर्मी)-के शिष्यने इनको जान ले ली।

(तबकात्-इ-नासिरी)

तारीख-इ-अलफिर' के मतानुसार खोखर (गक्कर) जातिने ही इन्हें मार कर बदला चुकाया था।

इधर अबुल फजल तथा जन्बू-इतिहास-लेखकका कहना है, कि यद्यपि गोरी राजाकी मृत्यु तबकात् इ-अकबरी तथा फिरिस्ताके अनुसार खोखर जातिके हाथ-से ही हुई, पर वंशपरम्परागत भाटोंकी कहानीसे ऐसा मालूम नहीं होता। कहानीसे मालूम होता है, कि जब पृथ्वीराज बन्दी बना कर गजनी लाये गये, तब चांद कवि भी उनसे मिलने वहां आया था। चांद धीरे धीरे मुइज्जुद्दीनका विश्वासपात्र हो गया। एक दिन बातचीतमें चांदने मुइज्जुद्दीनसे कहा, कि पृथ्वीराज तीर चलानेमें बड़े सिद्धहस्त हैं, इसकी परीक्षा यदि चाहें, तो आप कर सकते हैं। सुलतानको भी यह देखनेकी बड़ी लालसा हुई। पृथ्वीराजने सुलतान पर निशाना करके ऐसा बाण चलाया, कि उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। आखिर चाँद और पृथ्वीराज दोनों ही मुसल-मानोंके हाथसे यमपुर सिधारे।

जो हो, शेषोक्त प्रवाद ठीक नहीं जँचता। मिनहाज महम्मद गोरीवंशके समसामयिक थे। इन्होंने सुल्तानके साथियोंसे ही सुन कर इनकी जीवनी लिखी है। अत-एव मिनहाज-लिखित तबकात्-इ-नासिरको ही प्रामा-णिक एवं प्रकृत समझना चाहिये।

महम्मद घौषजिलानी (हजरत शेख)—प्रसिद्ध मुसलमान साधु। मुल्तान जिलेके उच्चा नगरमें इनका मकबरा मौजूद है। यह मकबरा गिलानी जातिका एक पवित्र तीर्थ-स्थान समझा जाता है। महम्मद बागदाद-निवासी प्रसिद्ध साधु शेख अब्दुल कादिर जिलानी बगदादीके वंशधर थे। १३६४ ई०में अपनी जन्मभूमिको छोड़ कर ये उच्चा नगर चले आये। दाउदके पुत्रोंने इनका शिष्यत्व ग्रहण किया था।

महम्मद घौष (शेख)—ग्वालियरके एक प्रसिद्ध साधु। इन का प्रकृत नाम था हमी उद्दीन। फकीरी धर्मग्रहण करनेके बाद ये गौष उल-आलम कहलाने लगे। ऐसा कहा जाता है, कि ये बारह वर्ष तक चुनार पर्वतकी गुहामें ब्रह्मचारी हो कर ईश्वरके ध्यानमें मग्न थे। इस समय सिर्फ जंगली फलमूल ही इनका जीवनाधार था। योगसिद्ध हो जाने पर ये अपने घर लौटे। ये वाक्सिद्ध थे, जो जिसको कहते थे वह उसे अवश्य मिल जाता था। आसपासके राजाओंकी भी इनमें अटूट श्रद्धा था। बहुतोंने इन्हें जीवन रक्षार्थ भूमि भी दे दी थी। इनके दर्शनके लिये हिन्दू और मुसलमानोंकी सर्वदा भीड़ लगी रहती थी।

अनन्तर ये ग्वालियर गये और सर्वसाधारणको इस्लामधर्ममें लाने तथा ज्ञान वितरण करनेकी कोशिश करने लगे। इनकी भूसम्पत्तिसे ही इनका कुल खर्च वर्च चलता था। ये गुजरातके प्रसिद्ध संन्यासी बाजी उद्दीन-के गुरू थे। १५६२ ई०में ये परलोकवासी हुए।

इन्होंने 'जवाहिर उलखमसा' 'गुलजार अब्रार' आदि कई ग्रंथ लिखे। सैयद फजल उल्ला-कृत मुनकिब घौसिया में इनकी जीवनी विशद्रूपसे लिखी गई है।

महम्मद घौष खां (सराजुद्दौला)—कर्णाटकके एक नवाब। इन्होंने अपनी कविता शक्तिके कारण 'आदिम'की उपाधि पाई थी। १८४२ ई०में इन्होंने तजकिरा शुभ-बतान नामक ग्रंथमें दाक्षिणात्यके प्राचीन कवियोंकी जीवनी संग्रह की थी।

महम्मद घौष (जारिन)—चहार-दरवेश नामक पारस उपन्यासके प्रणेता। बीजापुरमें इनका जन्म हुआ था। लखनऊके नवाब आसिफुद्दौलाके शासनकालमें ये जीवित थे।

महम्मदजान—बङ्गालके नवाब, मुर्शिदकुली खांके नायक फौजदार। ये कटवा (मुर्शिदगंज) मौजाके प्रथम थानेदार वा नायब फौजदार नियुक्त हुए थे। पूर्व-नवाबके प्रिय पात्र होनेसे मुर्शिदकुली भी इन्हें बहुत चाहते थे। ये दृशंस स्वभावके थे। इनका दण्डविधान देख कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यमात्रका हृदय विदीर्ण हो जाता था। कहते हैं, कि डाकुओंको पकड़ पकड़ कर वे उनका शरीर दो टुकड़ोंमें चीर देते और तब राह परके वृक्षमें लटका देते थे। इस कठोर कर्मके लिये लोग इन्हें कुड़ालिया कहा करते थे। डाकुओंकी हत्याके लिये इनके साथ कुठारधारी घातक घुमा करता था। ऐसे कठोर अत्याचारसे वहां डाकुओं-का नाम निशान भी न रह गया।

एक बार मुर्शिदकुलीके प्रतिनिधि हो कर इन्होंने पावनाके सूबेदार फर्रुख शियरके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी। राजशाहीमें जब उदयनारायणके षड़यन्त्रका हाल मालूम हुआ, तब इन्होंने तथा लहरीमल्लने नवाब मुर्शिद कुली खाँकी आज्ञासे राजशाहीकी ओर यात्रा कर दी। उदयनारायणने अपनी हार अवश्यम्भावी जान कर आत्म हत्या कर डाली।

महम्मद जानि—असर-अह्मदी नामक ग्रन्थके प्रणेता। इस ग्रंथमें इस्लाम धर्म प्रवर्त्तक महमद तथा द्वादश इमामकी विस्तृत जीवनी लिखी है।

महम्मद तकी (इमाम)—अलीके वंशमें उत्पन्न प्रसिद्ध ९वें इमाम। ये ८वें इमाम अली मुसी रजाके पुत्र थे और मह-म्मद अल जवादके नामसे मशहूर थे।

इनका जन्म ८११ ई०में हुआ था। खलीफा ममूनकी कन्या उम्म उल फज्लको इन्होंने ब्याहा था। ८३५ ई०में विषप्रयोगसे इनका देहान्त हुआ। बागदाद नगर-में इनके पितामह इमाम मुशो काजमकी कब्रके पास ही इनकी मृतदेह दफनाई गई थी।

महम्मद तकि (मीर)—एक प्रसिद्ध मुसलमान कवि। यह फारसी तथा उर्दूमें अनेक ग्रन्थ लिख गये हैं। अकबराबादमें इनका जन्म हुआ था इसीलिये ये हिन्दु-स्तानी कविके नामसे प्रसिद्ध थे। कवित्व-शक्तिके कारण इन्हें मीरकी उपाधि मिली। ये मुगल सम्राट् शाह आलमके विशेष प्रियपात्र थे। इस कारण इन्हें सपरि-वार दिल्लीमें ही रहना पड़ता था। इनके लिखे छः दीवान और एक तजकिरा (कवितामाला) सर्वसाधारणके निकट विशेष आदरणीय हैं। १८१० ई०में लखनऊ नगर-में इनकी मृत्यु हुई। इनके पुत्र फैज अली भी कवि थे।

महम्मद तकी खां—बङ्गालके नवाब मीर कासिमके अधी-नस्थ एक सेनापति। ये ताब्रिज नगरसे हो कर बङ्गाल आये। यहां इनकी कार्यदक्षता तथा साहस देख कर नवाब विशेष आकृष्ट हो गये थे। यहां तक, कि इन्हें नवाबने वीरभूमका फौजदार बना कर वहांके राजस्व संग्रहका भार भी सौंप दिया था।

वीरभूमके युद्धमें नवाबने देशी सेनाओंकी अक-र्मण्यता देख तकी खांको एक दल उपयुक्त सेना संगठन करने कहा। तदनुसार तकी खां प्राणपणसे मालिक-के काममें उत्साह और सहानुभूति दिखलाते हुए थोड़े ही समयके अन्दर नवाबके श्रद्धाभाजन हो गये थे।

इतिहास पाठकमात्रको ही यह मालूम होगा कि मीर कासिम तथा अंग्रेज व्यापारियोंके बीच उस समय कैसा मनोमालिन्य चल रहा था। अंग्रेजोंको मार भगाने लिये ही इन्होंने एक षड़यन्त्र रचा। युद्ध अवश्यम्भावी जान कर इन्होंने सेनापति गुर्गिन खांको सलाहसे जगत सेठ दोनों भाई महतावराय तथा राजा स्वरूपचंदको कैद करनेकी इच्छा की। तदनुसार इन्होंने अपने वीरभूमके फौजदार महमद तकीखांको दलबलके साथ मुर्शिदाबाद जाने और दोनो सेठ भाइयोंको बन्दी कर मुंगेर भेज देनेका हुकुम दिया। खांने आज्ञा पाते ही मुर्शिदाबादको प्रस्थान किया और दोनों सेठोंके मकानको घेर लिया। इन्होंने छल-पूर्वक सेठ भाइयोंसे कहा, 'तुम लोगोंको नवाबके आज्ञा-नुसार मुंगेरमें रहना होगा। नवाबको तुम लोगों पर जुल्म करनेकी बिलकुल इच्छा नहीं है।' तकीखांकी बातमें पड़ वे दोनों मुंगेर जा कर रहने लगे। किन्तु इसके पहले ही राजा रामकृष्ण, राजवल्लभ तथा राजा कृष्णचंद्र प्रभृति स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियोंको कैदमें देख कर दोनों सेठोंको ताकिखांका गूढ़ रहस्य समझनेमें देर न लगी। अब उन्हें समुचित सुखमें रख कर नवाब अपने उद्देश्यकी पूर्त्तिमें लग गये।

कुछ दिनोंके बाद अंग्रेज और मीरकासिमसे युद्ध छिड़ा। मुसलमानी सेनाओं तथा सेनापतिओंकी परि-चालन-विशृङ्खलतासे पटनामें नवाब बुरी तरह परास्त हुए। वहांसे भाग कर मुसलमानी सेना उदे जर्मी-पार कर पलासीके दक्षिण महब्बत तकी खांके देन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहुंची। तकी खांने इन भागो हुई सेनाको इसलिये आश्रय न दिया, कि कहीं शिक्षित दल भी पीछे इसी प्रकार कर्त्तव्यसे विमुख न हो जाय। किन्तु इसका फल अच्छा नहीं हुआ, दोनोंमें मनमुटाव चलने लगा। भागी हुई सेना बहुत दूरमें छावनी डाल कर रहने लगी।

१७६४ ई०की १९वीं जुलाईको सारी अंग्रेजी सेनाने तकी खांके अन्यान्य दलोंकी परवाह न करते हुए आगे कदम बढ़ाया। मुसलमानकी ओरसे भी नायकके उत्साह पर अश्वारोहियों तथा गोलन्दाजोंने अदम्य उत्साहसे विपक्षी पर आक्रमण कर दिया। सेनापति स्वयं युद्धमें उपस्थित हो सेनाओंकी परिचालना करने लगे। अंग्रेजोंके लगातार गोला बरसाने पर भी मुसलमानी सेना डटी रही इसी समय हठात् अंगरेजोंको सेनामें विशृङ्खलता दिखाई दी। किन्तु तकी खांका घोड़ा मर गया था और उनका एक पांव भी गोलीसे घायल हो गया था। फिर भी उन्होंने इसकी परवाह न की और अच्छे अच्छे अश्वारोही सेनादलको ले कर अंगरेजों पर धावा बोल दिया। इनका स्कन्ध-देश घायल हो जाने पर भी अपनी सेनाको भयभीत होनेसे बचानेके लिये क्षतस्थानको वस्त्रसे ढक लिया और दूने उत्साहसे रणक्षेत्रमें कूद पड़े। उन्होंने समझ रखा था, कि इस बार अंगरेजोंको हटा देनेसे वे फिर कभी नहीं लड़ सकते, पर इनके भाग्यने पलटा खाया। दक्षिण भागमें छिपी हुई अंगरेजी सेनाओंने एकाएक गोली बरसाना आरम्भ कर दिया जिससे बहुत-सी मुसलमानी सेना यमपुर सिधारी। तकी खां भी एक गोलीके आघातसे यमपुर सिधारे। जो कुछ सेना बच गई वह भी जान ले कर भागी।

महम्मद ताहिर (इनायत खां)—एक मुसलमान कवि, जाफर खांके पुत्र। इन्होंने सम्राट् शाहजहांकी जीवनीको ले कर 'शाहजहांनामा' नामसे एक ग्रन्थ लिखा। इनकी कविता उच्च श्रेणीकी होती थी और इसीलिये इन्हें 'आसन'की उपाधि मिली थी। इन्होंने अन्यान्य ग्रंथोंके सिवा 'दीवान' और 'मसनवि'की भी रचना की थी। ई०में इनकी मृत्यु हुई।

प्रसिद्ध हर (नाशिरावादी)—तजकिरा महम्मद ताहिर नामक जीवनी-लेखक। ये परसियाके राजा १म अब्बासके राजत्वकालमें जीवित थे।

महम्मद पार्शा (खोजा)—युवराज अलाउद्दीनके समसामयिक एक कवि। १४७७ ई०में इनका देहावसान हुआ।

महम्मदपुर—विहारके सारन जिलान्तर्गत एक ग्राम। यहां धान आदिकी खेतीवारी अच्छी होती है।

महम्मदपुर—पटना जिलान्तर्गत एक नगर। यह स्थान अक्षा० २५° ३०′ उ० तथा देशा० ८५° ४६′ पू०के मध्य अवस्थित है।

महम्मदपुर—बङ्गालके यशोहर जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह मधुमती नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। एक समय यह स्थान अत्यन्त समृद्धिशाली था। १८३६ ई०में ज्वरके प्रकोपसे यह जनशून्य-सा हो गया। इसका वर्त्तमान नाम मामूदपुर है।

ऐसा कहा जाता है, कि भूषणाके विख्यात भूम्याधिकारी राजा सीताराम रायने १८वीं सदीमें इस नगरको बसाया था। आज भी उनके बनाये हुए दुर्गका ध्वंसावशेष, प्राचीन मन्दिर और जलाशय आदिका निदर्शन देखनेमें आता है। सीताराम राय देखो।

महम्मदपुर—अवध-प्रदेशके बाराबांकी जिलान्तर्गत एक परगना।

महम्मदपुर—अवध-प्रदेशके फैजाबाद जिलान्तर्गत एक नगर।

महम्मद फिकरी—अकबर शाहके एक सभासद। रुबाई कविता लिखनेके कारण इनकी ख्याति फैल गई थी। ये हिलातवासी एक तांतीके लड़के थे।

महम्मद मघ्रावी (शेख)—एक मुसलमान कवि। इनका प्रकृत नाम महम्मद शीरोन था। ये कट्टर सुफी मतावलम्बी थे। इसी कारण कमल खुजान्दीके साथ इनकी विशेष घनिष्टता हो गई थी। १४१६ ई०में ताब्रिज नगरमें इनकी मृत्यु हुई और शूरखाब नगरमें मकबरा तय्यार किया गया। साधारण मुसलमान इन्हें एक साधु समझते थे। इनकी लिखी 'कसायद मघ्राबि' नामक एक दीवान तथा और भी बहुत-सी पुस्तकें हैं।

महम्मद मसूम नामी (अमीर)—सम्राट् अकबरके एक सम्भ्रान्त सभासद। इनका जन्मस्थान भक्कर था। इन्होंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

युसुफ जेलेखाके आधार पर, हुसम-व-नाज, लैला मजनूके आधार पर परिसुरत तथा मखजन-उल-आस्रार, हफ्तपैकार और सिकन्दरनामाके आधार पर १० हजार श्लोकोंमें एक मसनविकी रचना की। इसके सिवा इनके वनाये हुए दो 'दीवान' तथा दो 'शाकि-नामा' ग्रन्थ भी मिलते हैं। एक समय यह एक हजार साथियोंके साथ परस्यिाके राजा अब्बासके दरवारमें उपस्थित हुए थे।

महम्मद महसीन-(मुल्ला)—काशानवासी एक कवि। इन्हों-ने तफ्सीर सूफी नामक एक ग्रन्थ लिखा था।

महम्मद महसीन—पैलानीके एक विद्रोही तहसीलदार। इन्होंने इमदाद अलीके साथ १८५७ ई०के गदरमें भाग लिया था। इसी कारण अंग्रेजोंने इन्हें पकड़ा तथा दूसरे वर्ष वान्दा नगरमें फांसी दे दी।

महम्मद महसीन-(हाजी)—हुगलीके एक विख्यात मुसल-मान फकीर। प्रभूत सम्पत्तिके अधिकारी होने पर भी ये विषयवासनासे परे थे। इनका स्वजातीय दीन दुःखियोंके साथ प्रेम तथा निस्वार्थ दान देख कर लोग इन्हें श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। इनके सम-सामयिक हुगलीके विख्यात धनी नवाव खां जहानखां इनकी ख्यातिके सामने फीके पड़ गये थे।

हाजी महम्मदका जन्म जिस संभ्रान्त मुसलमानवंश-में हुआ था उसकी वंश-व्याख्या इस प्रकार है :—

आगा फजल उल्ला नामक एक धनी पारसी १८वीं सदीमें व्यापार करनेके लिये भारतवर्ष आये। इनके पुत्र हाजी फैजुल्ला हुगली तथा मुर्शिदावादमें अपना वाणिज्य फैला कर वड़े प्रतिभाशाली हो उठे थे; किन्तु कालचक्रसे इनका धन नष्ट हो गया और अन्तमें ये दरिद्र हो गये। अतएव इन्हें हुगलीमें ही आ कर रहना पड़ा था। इसी समय एक धनशालिनी रमणीके साथ इनका प्रेम हो गया।

वह रमनी किस वंशकी थी और किस प्रकार हुगली-में आ कर रहने लगी, यह वतला देना यहां पर आव-श्यक है। इस्पाहन नगरके प्रसिद्ध मताहारवंशमें मताहार नामक एक प्रसिद्ध धार्मिक आगाने जन्म लिया था। वे औरङ्गजेव वादशाहके यहां कोषाध्यक्ष थे। वाद-शाहके ऐसे विश्वासी थे कि कोषकी चाभी भी उन्हींके पास रहती थी और सपरिवार दिल्लीके राज-प्रासादमें उन्हें रहनेका हुकुम मिला था।

कालक्रमसे वे पत्नीके अभिप्रायानुसार मुहर्रमका ताजिया वनानेके लिये वादशाहसे आज्ञा ले हुगलीमें ही आ कर रहने लगे। औरङ्गजेवने इन्हें यशोहर, चितपुर आदि और भी गांव जागीरमें दिये।* मुगल-साम्राज्य-की समृद्धिका त्याग कर इन्होंने हुगलीमें एक इमाम-वाड़ा बनानेका निश्चय किया। तदनुसार जाफर पम्वा नामक एक रुईके सौदागरसे वर्त्तमान इमामवाड़ेकी जमीन उन्होंने खरीद की। पहले वहां जाफरकी कोठी और आनरो वीवीका इमामवाड़ा था। ११०८ ई०में कुल असवावके साथ आगाने उस मकानको खरीद लिया और नाजिरगाजि हुसैनके नाम पर एक इमाम-वाड़ा वनवाया। अभी भी यहां इमाम हुसैनकी पूजा होती है।

आगा मताहारने अपना शेष जीवन सुखसे नहीं विताया। अपने जीवनकालमें ही उन्होंने एक तावीज अपनी प्यारी लड़की जन्नूजानको दे कर कहा था, कि इसे मेरे मरनेके पहले न खोलना। आगाकी मृत्युके वाद लड़कीने तावीजको खोला। तावीजमें एक दानपत्र था जिसमें लिखा था—"मेरी कन्या मन्नूजान ही मेरे मरनेके वाद सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी होगी।" आगाकी पत्नीने यह दानपत्र देख कर हाजी फैजुल्लासे सगाई कर ली। इसी दम्पतीसे महम्मद महसीनका जन्म हुआ। कोई कोई कहते हैं, कि इनका जन्मस्थान मुर्शिदावाद था। पिता-की मृत्युके वाद इनकी माताने हुगलीमें आ कर मता-हारसे सगाई की थी।

फिर यह भी सुना जाता है, कि १७३२ ई०में इनका जन्म हुआ था। युवाकालमें इन्होंने सिभोजी नामक एक मौलवीके निकट शिक्षा पाई थी। मौलवीसे देश-भ्रमणका वृत्तान्त सुन कर इन्हें भी देश पर्यटनकी इच्छा हुई। मुर्शिदावादमें कुछ दिन रहनेके वाद ये परसिया तथा अरव गये। अरवी और फारसी भाषामें इनकी

* कोई कोई कहते हैं, कि आगा मताहर काशीराजके यहां नौकरी करते थे। पुरस्कारस्वरूप इन्होंने यशोहर आदि जमीं-दारी पाई थी। इस मतान्तरका निर्णय करना भी कठिन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विशेष व्युत्पत्ति थी। बड़े होने पर ये भारतवर्ष, अरब, तुर्किस्तान, मिस्र तथा दक्षिण परसियाके गांव गांवमें घूम घूम कर विभिन्न जातियों तथा धर्मावलम्बियोंके साथ मिले थे।

इसी समय मन्नूजान खानमका स्वामी परलोकवासी हुआ। मन्नूजानके विशेष अनुरोध करने पर महम्मदको घर लौटना पड़ा। उनके हुगली पहुंचने पर मन्नूने अपनी सारी सम्पत्ति उन्हें दे दी।

अब महम्मद मुहसिन सर्वसाधारणकी दृष्टिमें आये। दरिद्रको अन्नदान उनके जीवनका महाव्रत था। बड़े बड़े अक्षरोंमें जो दानपत्र लिखा है उससे अनुमान होता है, कि सरकारी खजाना दे कर जो कुछ बचता उसे वे दरिद्रोंके बीच बांट देते थे।

महम्मद मिर्ज्जा—एक संसार-विरागी युवराज। ये अमीर तैमूरके पौत्र तथा मीरन शाहके पुत्र थे। संसारसे विरक्त हो ये अपने भाई समरकन्दाधिपति सलिल उल्ला खांके साथ रहने लगे। १४०८ ई०में मिर्ज्जा शाहरुकने समरकन्द पर अधिकार कर जब अपने पुत्र मिर्ज्जा उलघ बेगको वहांका अधिकारी बनाया, तब युवराज मिर्ज्जा महम्मदने अपना शेष जीवन उन्हींकी अधीनतामें बिताया था। १४४१ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद मुकिम—तबकात-इ-अकबरी वा तारीख निजामी नामक भारत-इतिहासके लेखक। १५९३ ई०में इन्होंने उक्त ग्रंथ समाप्त कर अकबर बादशाहको समर्पण किया। इनका प्रकृत नाम ख्वाजा निजाम उद्दीन अहमद था। ये हीरटवासी ख्वाजा महम्मद मुकिमके पुत्र थे। इनके पिताने मुगल-बादशाह बाबर शाहके अधीन दीवानका काम करके अच्छा नाम कमाया था। बाबर शाहकी मृत्युके बाद ये अहमदाबादके अधिपति मिर्ज्जा असकरीके वजीर हुए थे। कुछ समय इन्होंने अकबर शाहके अधीन भी काम किया था।

इनके पुत्र महम्मद अकबरशाहके यहां गुजरातका बक्सी हुआ था। इसी पद पर रह कर १५९४ ई०में उसका देहान्त हुआ। लाहोर नगरमें इरावतीके किनारे मकबरा तय्यार किया गया।

महम्मद मुजफ्फर—फार-राज्यके मुजफ्फरी राजवंशके प्रतिष्ठाता। इनका प्रकृत नाम मुबारिज उद्दीन था। ये परसियाके राजा सुल्तान आबु सैयद खांके अधीन एक उच्च पद पर नियुक्त हुए थे। १३३५ ई०में उक्त राजाके मरने पर जब राज्यमें विशृङ्खलता आरम्भ हुई तब इन्होंने येजदको अधिकार किया। १३५३ ई०में शाह शेख आबु-इजाकसे इन्होंने सिराज छीन लिया। पीछे इजाकको भी मार कर ये फार राज्यके अधीश्वर बन बैठे। १५५९ ई०में इनके लड़के शाह सुजाने इनसे विद्रोह कर इनकी आखें निकाल लीं और आप सिराज-सिंहासन पर बैठ गये। १३५४ ई०में मुजफ्फरकी मृत्यु हुई। १ मुबारिज उद्दीन महम्मद मुजफ्फर, २ शाह सुजा, ३ शाह अहमद, ४ सुल्तान अहमद, ५ शाह मनसुर, ६ शाह आहिया, ७ शाह जैन उल् आबिद्दीन इन सातोंने ७७ वर्ष तक प्रबल प्रतापसे फार राज्यका शासन किया था। परवर्त्ती दो राजाओंके कुछ महीने राज्य करने पर फार राज्य किसी दूसरे राजाके हाथ चला गया।

महम्मद (मुल्ला)—"शामस-वाजिग" तथा हवसी-फरिद-फिशारा-उलफयेद नामक ग्रन्थके लेखक। इनका जन्म-स्थान जौनपुर था। ये महम्मद फरुक्कोके पुत्र थे। १५६२ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद रजा—असरकात अलविया तथा इन्दिखार-उल-अहकाम नामक अरबी धर्म-शास्त्रके प्रणेता।

महम्मद रफिया वायेज—इस्पाहनवासी एक धर्मप्रचारक। ये मिर्ज्जा सायब और ताहिर वहिदके समसामयिक थे। इनके लिखे हुए फारसी भाषामें एक दीवान तथा उल-जनान नामक एक धर्मग्रन्थ मिलते हैं। इसके सिवा शाह अब्बास तथा तुरानके राजा एलान खांका युद्ध वर्णन कर इन्होंने एक दूसरा काव्य भी लिखा है।

महम्मद रफिउद्दीन (मुहाजिस)—दाक्षिणात्यवासी एक मुसलमान कवि। ये पहले सम्राट् अकबरके यहां सेनानायकका काम करते थे। १५९२ ई०में इनका दीवान ग्रंथ समाप्त हुआ। सम्राट्ने इनकी कवितासे प्रसन्न हो इन्हें यथेष्ट पुरस्कार दिया था।

महम्मद रेजा खां—बङ्गालके एक नायब सूबेदार। नवाब जाफर अली खांके मरने पर इनका पुत्र नजिमुद्दौला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब नवाब हुआ तब अंग्रेजोंने रेजा खांको मुर्शिदाबादका प्रधान सचिव बनाया। १७७२ ई०में कौंसिलके विचारानुसार रेजा खां कैद कर कलकत्ता लाये गये। इसके चार वर्ष बाद विचार-विभागमें विशृङ्खलता उपस्थित होनेसे वारेन हेष्टिंग्सने इन्हें फिरसे उक्त पद प्रदान किया था।

महम्मद लारी (मुल्ला)—तालिफ मुल्ला महम्मद लारी नामक ग्रंथके प्रणेता।

महम्मद लाद—'मुरियद उल् फजला' नामक अभिधानके प्रणेता।

महम्मद वकि (ख्वाजा)—एक मुसलमान साधु। दिल्लीमें कदम-रसूलके पास इनका मकबरा मौजूद है। १६०३ ई०में ये परलोकवासी हुए।

महम्मद वक्स—नौरतन (नवरत्न) नामक उर्दू काव्यके प्रणेता। हि० १२३० ई०में लखनऊपति गाजि उद्दीन हैदरके समयमें इन्होंने यह ग्रंथ समाप्त किया। इसके सिवाय 'गुलसन नौबहार' तथा 'चारचमल' नामक दो और भी किताबें इनकी लिखी हुई हैं। कविता शक्तिके कारण इन्हें 'महमूद'-की उपाधि मिली थी।

महम्मद वकिर—इस्पाहन नगरके एक प्रधान धर्मयाजक। (शेख-उल-इस्लाम), महम्मद तकिके पुत्र। देवतत्त्व, नीति, स्मृतिशास्त्र तथा साहित्य सम्बन्धमें आप जैसे किसी भी ज्ञानवान् पण्डितने परसिया राज्यमें जन्म नहीं लिया था। धर्मावलम्बियोंके धर्मतत्त्वकी मीमांसामें आप अद्वितीय थे।

इनका उज्ज्वल यश संपूर्ण परसिया राज्यमें विस्तृत था। स्वयं शाह सुलेमान इनके ज्ञानसे मोहित हो कर इन्हें अपनी कन्या देनेको प्रस्तुत हुए थे। परन्तु ये तो सांसारिक वासनाओंसे विरक्त थे अतएव शाहकी इच्छा पूरी न हो सकी। इनके बनाये हुए 'हक-उल्-यकीन' सियासंप्रदायकी एक उत्कृष्ट धर्मशास्त्र है। उसमें विभिन्न मतोंका खण्डन विचारपूर्वक किया गया है। इसके सिवाय बहर-उल-अनवर आदि अनेकों उत्कृष्ट ग्रन्थ इनके लिखे हुए मिलते हैं। इनकी मृत्यु १६६८ ई०में हुई।

महम्मद वकिर दमद (मीर)—आन्ध्रावासी एक विख्यात पंडित, सैयद हमू दमड़ीके पुत्र। इन्होंने परसियाकी राज-कन्यासे विवाह कर 'दमड़' उपाधि पाई थी। इस्पाहन नगरमें इन्होंने कई ग्रंथ लिखे, जिनमें 'उफ्क-उल-मुबीन' तथा 'सारा मुख्तसर'-की टीका प्रधान है। १६३० ई०में इनका देहान्त हुआ।

महम्मद वकिर (इमाम) अलीवंशके ५म इमाम, इमाम जैन उल आबेदिनके पुत्र। ६७६ ई०में इनका जन्म और ७३१ ई०में मरण हुआ। मदीनामें इनको दफनाया गया था।

महम्मद बिन अब्दुल अजीज—साहिद-बमानि नामक प्रसिद्ध तुर्की ग्रंथके प्रणेता। १६१२ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद बिन अब्दुल रहमान—कूफा नगरवासी एक प्रसिद्ध हाकिम और काजी। ७३५ ई०में ये परलोकवासी हुए।

महम्मद बिन आबु बखर—इस्लामधर्म-प्रवर्त्तक, महम्मदके साला तथा प्रथम खलीफा आबू बकरके पुत्र। खलीफा अलीने इन्हें मिस्र देशका शासक नियुक्त किया। सामान्तराज अमरु इब्न उल आशके साथ जो युद्ध हुआ था उसमें इन्हें परास्त और कैद कर राजा १म मुयानियरके समीप लाया गया। राजासे प्राणदण्डकी आज्ञा मिलने पर इनका शरीर गदहेके चमड़ेसे ढंक कर जला दिया गया।

महम्मद बिन अहमद—'तर्जुमा फतुह' नामक अरबी ग्रंथके प्रणेता। ११९९ ई०में इन्होंने एक अरबी ग्रन्थसे महम्मदका गृह-विच्छेद, अरबजातिका पराभव, महम्मदकी अवनति तथा आबु बकरकी खलीफापद प्राप्तिसे ले कर कर्बाला युद्धमें हुसैनकी मृत्युका हाल तर्जुमा किया है।

महम्मद बिन आली—आवनाई उल जनान नामक अरबी ग्रंथके प्रणेता। यह ग्रंथ इस्लाम धर्मप्रवर्त्तक महम्मद तथा उनके परिषदोंके वर्णनसे भरा है।

महम्मद बिन अमरु (अत तिमीमी)—प्रधान प्रधान सियाके जीवनी रचयिता।

महम्मद बिन इसा तिर्मिजी—जमातिर्मिजी नामक ग्रंथके प्रणेता। ये अल बुखारीके शिष्य थे। ८९२ ई०में इनका परलोकवास हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महम्मद विन ईसस—'रिसाला अल मुआजम फी आशा आर अल आजम' नामक ग्रंथके प्रणेता।

महम्मद विन इब्राहिम (सदर सिराजी कपि ल कुजात)—उल् हिपात नामक ग्रंथके टीकाकार। ये मुल्ला सदर-के नामसे भी प्रसिद्ध थे।

महम्मद विन इद्रिस (इमाम)—एक मुसलमान-ग्रंथकार। ये इस्लामधर्मके तृतीय सम्प्रदायके अधिष्ठाता थे। इन्हों-ने प्रवादमाला संग्रह कर एक पुस्तक लिखी थी।

महम्मद विन इजाक उल नादिम—किताव उल फिरिस्त नामक एक सुप्राचीन अरबी ग्रंथके प्रणेता। ९८१ ई०में यह ग्रंथ लिखा गया था। इस ग्रंथमें अलिफ-लयला वा 'एक हजार एक रजनी' नामक अरबी उपन्यासोंका उल्लेख है।

महम्मद विन कासिम—एक प्रसिद्ध सिन्धु-विजेता। खलीफा प्रथम वालीदके भाई तथा हिजाज विन युसुफ-के जमाई। इन्होंने ७११ ई०में उक्त खलीफाकी आज्ञासे सिन्ध पर ससैन्य चढ़ाई की थी। पहले इन्होंने देवल-वन्दर (या मनोरा वा ठट्ट) पहुंच कर नारायणकी ओर कदम बढ़ाया था। यहांके शासनकर्त्ताको छलसे वशी-भूत कर इन्होंने शेवान (शिवस्थान) दुर्गको जीता। इसके बाद वे नारायणकोट आये और वहांसे सिंधु-नद पार कर ७१२ ई०में हिन्दूराज दाहिर पर इन्होंने धावा बोल दिया। रावलदुर्गमें राजा दाहिरकी मृत्यु होनेके पश्चात् उनके आत्मीय स्वजनोंको मुसलमानोंने कैद कर लिया। केवल दाहिरके पुत्र जयसिंहने काश्मीर भाग कर अपनी जान बचाई थी। पीछे कासिमने ब्राह्मणा बाद पर अधिकार कर आलोर दुर्ग जीतना चाहा।

७१३ ई०में इन्होंने आलोर विजय कर दाहिरकी दो कन्याओंको दमस्कस भेज दिया। खलीफा सुलेमानने दोनोंको अन्तःपुरमें रखा। एक दिन खलीफाने उन्हें अपने कमरेमें बुलाया और उनकी रूप लावण्यता पर मोहित हो उनकी इच्छा पूरी करनेको कहा। इस पर कन्याओंने उत्तर दिया, "कासिमने पहले हम लोगोंका धर्म नष्ट कर आपके पास भेजा है। अतः हम लोग आप शाहजादेके उपयुक्त नहीं रहीं।" खलीफा यह सुनते ही आग बबूले हो गये और तुरन्त अपने नौकरों को हुकुम दिया, कि जाओ, आज ही कासिमको ताजे गौके चमड़ेसे लपेट कर अच्छी तरह सिलाई कर दो। खलीफाकी आज्ञा फौरन तामिल की गई। तीन दिन असह्य यन्त्रणा भोग कर कासिमके प्राण निकले।

कासिमकी मृतदेह जब खलीफाके सामने लाई गई, तब दोनों कन्याओंने प्रकृत घटना तथा कासिमको निर्दो-षिता कह सुनाई। इस पर खलीफाके क्रोधका पारावार न रहा। उन्होंने अपने अनुचरसे राजबालाओंके केश घोड़ेकी पूंछमें बांध कर घुड़दौड़ करनेका हुकुम दिया। इस प्रकार रास्तेकी रगड और खुरकी ठोकरसे दोनोंको प्राणवायु उड़ गई। पीछे मृतदेह नदीमें फेंकी गई और कासिमका शरीर दमस्कसमें ला कर दफनाया गया।

महम्मद विन करम उद्दीन—बहर उल फजाएल नामक पारसी अभिधानके प्रणेता।

महम्मद विन खवन्द शाह (विन महमूद)—एक विख्यात मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने 'रौजत उल सफा' नामक महम्मदीय कहानी पारसी भाषामें लिखी थी। ये सर्वसाधारणमें मीर खवन्द, अमीर खां वा मीर खोन्दके नामसे विख्यात थे। इनका जन्म १४३३ ई०में मावरुन्नहर नगरमें हुआ था। पिताका नाम था सैयद बुर्हान उद्दीन खवंदशाह। पिताकी मृत्युके बाद हीरटके राजा सुल्तान हुसैन मिर्जाके प्रधान मंत्री अमीर अली शेरके साथ इन-का परिचय हुआ। इन्होंके यत्न, दया तथा उत्साहसे महम्मदने अपना इतिहास-ग्रन्थ समाप्त किया। १४९८ ई०में बहुत दिनों तक रोग भुगत कर बालख नगरमें इन-की मृत्यु हुई। इतिहासके छः अंश तक लिख कर ये शय्याशायी हुए थे। पीछे इनके लड़के खोन्दा मीरने १५२३में ७वां भाग शेष किया। महम्मदीय इति-हासमें इस इतिहासको ऊंचा स्थान दिया गया है।

महम्मद विन ताहिर २य—खुरासनके ताहिरी जातीय अन्तिम राजा। ८७४ ई०के युद्धमें याकुब विन लाइसने इन्हें पकड़ कर कैद कर लिया। तभीसे खुरासनराज्य याकुबके हाथमें रहा।

महम्मद विन तुनिश (अलबुखारि)—अबदुल्लानामा नामक कास्पीय सागरोपकूलवर्त्ती उजबक तातार जाति-के इतिहास-प्रणेता। यह ग्रंथ इन्होंने निजामुद्दीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोकलत्सको समर्पण किया था । इस ग्रंथमें १४९४ ई०में शाहवेग खांकी अकससके आस पासके देशों पर चढ़ाई, तैमुरवंशकी पराजय तथा सम्राट् अकबरके समसामयिक अवदुल्लाका इतिहास आदिका विस्तृत विवरण किया गया है ।

महम्मद विन फराज—एक मुसलमान धूर्त्त साधु । यह अपनेको कब्रसे निकला हुआ मूसा बतलाया करता था । एक दिन खलीफा मुतयाकिलने इसे इस तरह पिटवाया कि जान निकल गई ।

महम्मद विन महमूद (अलइस्करूसी)—'फजलूल-अ- इष्ट्रूसी' नामक ग्रंथके प्रणेता । वाणिज्य व्यापारके लिये यह ग्रंथ विशेष उपयोगी है ।

महम्मद विन मूसा—अलजरर वल् मुकाविला नामक बीजगणितके प्रणेता ।

महम्मद विन मूर्त्तजा—'मुफती' नामक सिया-संप्रदायके धर्मशास्त्र-रचयिता ।

महम्मद विन याकुव (अलकुलिनी)—काफी नामक एक अरबी ग्रंथके प्रणेता । यह काफी-सियासंप्रदायके लिये विशेष आदरणीय है ।

महम्मद विन याकुव (फिरोजाबादी)—एक प्रसिद्ध आभिधानिक । इन्होंने 'कमूल-उल्-लुघाट् बहर उल्-मुहित' नामक ग्रंथ लिखा था । इस ग्रंथमें अरबी साहित्य समुद्रका इन्होंने मन्थन किया है । इनकी विद्या-बुद्धि देख कर भाषाविद् मात्र मोहित हो जाते हैं । यह ग्रंथ अरबके राजा विन अब्बासको उत्सर्ग किया गया था । १४७४ ई०में इनकी मृत्यु हुई ।

महम्मद विन याकुव (अल कलिनी अवराजि)—जमा-उल काफीके प्रणेता । यह गल्पग्रंथ रच कर इन्होंने 'रईस उल मुहुद्दिसीन'की उपाधि पाई थी । यह ग्रंथ तीस भागोंमें विभक्त है । इसको समाप्त करनेमें प्रायः बीस वर्ष लगे थे । इस ग्रंथके अतिरिक्त और भी अनेकों ग्रंथ इनसे बनाये हुए पाये जाते हैं । ९३९ ई०में बागदाद नगरमें इनकी मृत्यु हुई थी ।

महम्मद विन युसुफ—हीरटवासी एक हाकिम । इन्होंने अरबी भाषामें 'उल जवाहिर' नामक एक अभिधान लिखा था । वस्तुतः यह ग्रंथ शिल्प तथा विज्ञान विषयक एक विस्तृत कोष-ग्रंथ है ।

महम्मद विन युसुफ—तारिखी-हिन्द नामक इतिहासके प्रणेता । ये दिल्लीवासी ख्वाजा हसनके समसामयिक थे ।

महम्मद विन हुसेन—'बदार उल हिदाया' नामक अरबी आईन ग्रन्थके प्रणेता । इसके अतिरिक्त इन्होंने पारसी तथा अरबी-मिश्रित भाषामें हयात-उल फयाद नामक ग्रंथ भी लिखा है । १५८५ ई०में इनका देहान्त हुआ ।

महम्मद बुखारी (सैयद)—एक मुसलमान साधु । सम्राट् शाहजहाँके समयमें इनकी विशेष प्रतिष्ठा थी । ताजगंज-रोजाके पश्चिम द्वार पर इनका मकबरा मौजूद है ।

महम्द-इ बुखारी (सेख)—मुगल-सम्राट् अकबरके एक सेनापति । मिर्ज्जा अज़ीजकी ओरसे इन्होंने गुजरातमें युद्ध किया । पत्तनके युद्धमें ये दलबल समेत निहत हुए । सम्राट् अकबरने इनकी विद्वता तथा विश्वासिता पर प्रसन्न हो इन्हें भरण पोषणके लिये अजमेरमें एक तुजुल और शेख मुइन-इ-फिस्तीके समाधि-मन्दिरका खादिम बनाया था ।

महम्मद-इ वेग—मीरनका एक अनुरक्त दुराचारी । इस दुरात्माका पालन पोषण यद्यपि अलवर्द्दीकी महिषीने ही किया था, फिर भी यह वङ्गेश्वर सिराजुद्दौलाके हत्याकाण्डमें लिप्त था । यह नर-पिशाच तेज तलवारको हाथमें लिये सिराजके कारागृहमें घुसा और उसका सर उतार लिया ।

महम्मद वेग खां (हाजी)—अवधप्रदेशके एक सहकारी शासनकर्त्ता । यह 'माशीर तालिबीके प्रणेता मिर्ज्जा आबू तालिब खांके पिता थे । इस्पाहनके समीप अब्बासाबादमें इनका जन्म हुआ था । यह तुक-वंशोद्भव थे ।

परसियाके राजा नादिर शाहके अत्यचारसे पीड़ित हो हाजी जन्मभूमिको छोड़ कर भारतवर्ष आये । इनके गुणका परिचय पा कर गुणग्राही नवाब अबुल मनसूर खांने इन्हें आश्रय दिया । १७५० ई०में अवधके सहकारी शासक राजा लवण रायके मरने पर नवाबके भतीजे महम्मद कुली खां इस पद पर नियुक्त हुए । इस समय नवाबकी आज्ञासे हाजी साहब उनके प्रधान सहायक हो कर गये थे । सुजा उद्दौलाके विद्रोहसे जब महम्मद कुली मारे गये, तब ये जान ले कर मुर्शिदाबाद भागे । वहीं पर १७६९ ई०को इनका परलोकवास हुआ ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महम्मद शफिया—मेर-उल-वदीयात् नामक इतिहासके प्रणेता। दिल्ली नगरमें इनका हुआ था। इनके इतिहास-में मुगल-सम्राट् अकबरसे ले कर नादिर शाह तक भारतवर्षमें जो सब घटनाएं घटीं उनका सविस्तार वर्णन है। मुगल-सम्राट् महम्मद शाहके राजत्वकाल में किसी सम्भ्रान्त उमरावके कहनेसे यह ग्रंथ लिखा गया था।

महम्मद शरफ—वङ्गालके एक मुसलमान काज़ी। ये अपने पाण्डित्य, धर्मज्ञान, साधुताके लिये विख्यात थे। सम्राट् औरङ्गजेबने इनके सद्गुणोंका विषय पा कर इन्हें काजी बनाया। मुर्शीद कुली खां अपने विचार-कार्यमें हमेशा इनसे सलाह लिया करते थे।

एक समय किसी मुसलमान फकीरने चूनाखालीके जमींदार वृन्दावनसे भिक्षा मांगी। वृन्दावन फकीरके व्यवहार पर बहुत गुस्साया और उसे दरवाजे पर-से निकाल दिया। बादमें वह वृन्दावनके घरके सामने ही कुछ ईंटोंसे एक दीवार बना कर उसीको मसजिद समझने लगा। अब वह लोगोंसे उस मसजिदमें आ कर नमाज पढ़नेका अनुरोध करता फिरता था। जब कभी वृन्दावन घरसे निकलता, उसी समय वह बड़े जोरोंसे अजान देता था।

इस पर वृन्दावन बड़े बिगड़े। उन्होंने उस दीवार-को तोड़ फोड़ कर फकीरको वहांसे मार भगाया। इस पर फकीरने मुर्शीदकुलीके पास नालिश की। सभा-धिष्ठित प्रधान काजी शरफने वृन्दावनको प्राणदण्डकी आज्ञा दी। किन्तु कुली खांकी प्राणदण्ड देनेकी बिलकुल इच्छा न थी। उन्होंने काजीसे बहुत अनुनय बिनय किया कि प्राणदण्ड छोड़ कर कोई दूसरा दण्ड उसे मिलना चाहिये। इस पर धर्मावतार काजीने कहा, कि अपराधीके प्राण निकलनेमें जितना समय लगेगा, केवल उतनेही समयकी अपेक्षा की जा सकती है। पर दूसरा दण्ड नहीं मिल सकता।

कुली खांके सब यत्न निष्फल हुए। सुलतान अजी मुस्सानने भी बादशाहसे वृन्दावनकी जान बकसीस मांगी; पर काजीने तो पहले ही वृन्दावनके प्राण तोरसे ले लिये थे। अजीमुस्सानने यह हत्या-संवाद औरङ्ग-जेबके पास लिख भेजा और यह भी जताया कि काजीने क्षिप्त हो कर वृन्दावनको मार डाला है। बादशाहने उस पत्र पर अपने हाथसे 'काजी शरफ खुदाकी तरफ' ऐसा लिख कर भेज दिया।

औरङ्गजेबके मरने पर काजीने नौकरी छोड़ दी। कुली खांके लाख प्रार्थना करने पर भी उन्होंने नहीं माना।

महम्मद शारीफ हुक्कानी—'आयनक एदिल' नामक रस-मय काव्यके प्रणेता। यह ग्रंथ १६८५ ई०में समाप्त हुआ था।

महम्मद शरीफ (ख्वाजा)—परसियाके राजा १म शाह तहमास्प सफाविरके मंत्री। १५३८ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद शाकि—एक मुसलमान ऐतिहासिक।

मुस्ताइद खां देखो।

महम्मद शाला (शेख)—'बिहार-चमन' नामक ग्रन्थके प्रणेता।

महम्मद शाला (मीरकाशफी) एक मुसलमान कवि। ये सम्राट् जहांगीर और शाहजहांके यहां पाले पोसे गये थे। इनका बनाया हुआ मजमुआ राज नामक तर्जिबंद ग्रंथ १६२१ ई०में समाप्त हुआ। १६५० ई०को आगरेमें इनकी मृत्यु और कब्र हुई।

महम्मदशाला कम्बु—अमलशाला नामक ग्रंथके प्रणेता।

महम्मद शाला (मिर्जा)—ताब्रिजवासी एक उमराव। १५९२ ई०में परसिया छोड़ कर ये भारतवर्ष आये। इन्हों दिल्लीमें सम्राट् अकबरसे भेंट की। सम्राट्ने इनकी सम्मानरक्षाके लिये पहले इन्हें मनसबके पद पर पीछे गुजरातके शासक पद पर नियुक्त किया। इस समय महम्मदने सिपाहीदार खांकी उपाधि प्राप्त की। १५९९ ई०में युवराज मुरादके मरने पर युवराज दानियलने निजामसे अहमद नगरका अधिकार प्राप्त किया तथा सिपाहीदार खांको यहांका शासनकर्त्ता बनाया।

महम्मद शाला (मिर्जा)—'लताएफ खयाव' नामक ग्रंथ-के प्रणेता। इस ग्रंथमें उन्होंने पूर्ववर्त्ती महाकवियोंकी अच्छी अच्छी कवितायें संग्रह की हैं।

महम्मद शाह—दिल्लीके एक मुसलमान बादशाह। ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खिजिर खांके पौत्र तथा फरीद उद्दीनके पुत्र थे। १४३४ ई०में अपने चचा मुबारककी हत्या कर ये सिंहासन पर बैठे। बारह वर्ष राज्य करनेके बाद १४४६ ई० में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मदशाह—गुजरातके एक राजा। १४४३ ई०में अपने पिताके मरने पर ये सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इनकी स्त्रीने विष खिला कर इन्हें १४५१ ई०में मार डाला।

महम्मद शाह—मालवाधिपति होसङ्ग शाहके पुत्र। १४३४ ई०में ये अपने पिताकी गद्दी पर बैठे। नौ मासके बाद इनके मंत्री मालिक मुघिशके पुत्र महम्मदने इन्हें विष खिला कर मार डाला और आप महमूद शाह खिलजीके नामसे राज्य करने लगे।

महम्मद शाह—परसियाके एक राजा, अब्बास मिर्जाके पुत्र तथा फथ् आबुशाहके पौत्र। १६३४ ई०में ये सिंहासन पर बैठे और १८४७ ई०में परलोकवासी हुए।

महम्मद शाह (आदिल वा आदिली)—१म शूरवंशीय एक अफगान वीर। ये शेरशाहके भाई और निजाम खां शूरके पुत्र थे। इनका प्रकृत नाम मुबारिज खां था। १५५४ ई०में सलीम शाहके नाबालिग पुत्र फिरोजको राज्य-च्युत तथा मार कर यह महम्मद शाह आदिलके नामसे राजतख्त पर बैठा।

महम्मद स्वयं मूर्ख था, इसीलिये विद्वानोंका संसर्ग बिलकुल नहीं चाहता था। मूर्खोंकी ही राजदरबारमें चलती थी। उनमें सभी मुसलमान थे, सिर्फ एक हिन्दू था। यह हिन्दू था सही पर बहुत दुराचारी था। सलीम शाह इसे बाजारका अध्यक्ष बना गये थे। अब महम्मद ने इसीको राज्यका सर्वेसर्वा बनाया। धीरे धीरे हिन्दू-क्षमता बढ़ने लगी। इस पर अफगान कर्मचारी जलने लगे और महम्मदके कट्टर दुश्मन हो गये। अन्तमें उन्हों-ने राजाके जमाई इब्राहिम शूरको १५५५ ई०में गद्दी पर बिठाया।

महम्मद बचावका कोई रास्ता न देख चुनार भाग गये। १५५६ ई०में बङ्गालके राजा बहादुर शाहके साथ यह मुङ्गेर-युद्धमें गया था और वहीं मर गया। इसने केवल ११ मास राज्य किया था।

महम्मद शाह (सैयद)—जमा-उल-दस्तुर नामक आईन ग्रंथके प्रणेता, पाण्डुआवासी सैयद वालीके पुत्र। १८०० ई०में इन्होंने अपना ग्रंथ समाप्त किया।

महम्मद शाह—तैमुर शाहके पुत्र और अहमद शाह अब-दालीके पौत्र। इन्होंने दोस्त महम्मद द्वारा काबुलसे भगाये जाने पर हीरट पर अधिकार किया। कुछ दिन राज्य करने पर १८२९ ई०में ये परलोकवासी हुए। पीछे इनका पुत्र कामरान सिंहासन पर बैठा।

महम्मद शाह (बाह्मनी १म)—दक्षिण प्रदेशके बाह्मनीवंशके ५म सुलतान, सुलतान अलाउद्दीन हुसैनके कनिष्ठ पुत्र। १३७८ ई०में अपने भाई दाऊदको मार कर ये कुलबर्गा नगरकी राजगद्दी पर बैठे। प्रायः बीस वर्ष राज्य कर इन्हों-ने १३९७ ई०में ज्वररोगसे प्राणत्याग किया। पीछे इनके पुत्र गयासुद्दीन राजगद्दी पर आसीन हुए। ये साहित्य-प्रेमी थे और साहित्यकी उन्नतिमें हमेशा लगे रहते थे। इनको पद्यसे विशेष प्रेम था और आप भी अच्छे अच्छे पद्य बनाते थे। इनके साहित्यिक प्रेमसे अरब और परसियाके अनेकों कवि इनके पास आया करते थे। विचारपति मीर फैज्जुला अंजूने एक दिन एक छोटीसी कविता राजाको पढ़ सुनाई। राजाने प्रेमसे गद्गद हो एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा दे उन्हें विदा किया। इनके शासन-कालमें विख्यात कविवर हाफिजने दक्षिण प्रदेश जानेकी इच्छा प्रकट की, पर कालचक्रसे यह लालसा उनकी पूरी न होने पाई।

महम्मदशाह (२य)—बाह्मनीवंशीय १३वें सुल्तान, हुमायूं शाहके पुत्र। १४६३ ई०में अपने भाई निजाम शाहके मरने पर ये पिताकी गद्दी पर बैठे। इस समय इनकी उमर सिर्फ नौ वर्षकी थी। अतः रानी माताके आज्ञानुसार ख्वाजा जहान और ख्वाजा महमूद गवान राज्यकार्यकी पर्यालोचन करने लगे। इन्होंने बीस वर्ष राज्य कर १४८२ ई०में परलोककी यात्रा की।

महम्मद शाहने सुदीर्घ काल तक राज्य तो किया, पर इनके राज्यकालमें आत्मकलह, विवाद विसंवाद, तथा बाह्मनीवंशका गौरव रविका म्लान होता भी सुनाई देता है। जो जो राजा इनके पूर्व पुरुषोंको कर दिया करते थे अभी वे स्वाधीन हो गये। इनके बाद इनके पुत्र सुलतान (२य) महमूद शाह सिंहासन पर बैठे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Acc No-218 1666

महम्मद शाह (१म)—गुजरातके एक अधिपति इनका प्रकृत नाम वेकार थे । ये महम्मद शाहके पुत्र एवम् कुतुवुद्दीन वा कुतुव शाहके भाई थे । अपने चचा दाऊद शाहके मरने पर १४५६ ई०में ये गुजरातके सिंहासन पर बैठे। १४८७ ई०में अहमदावादके चारों ओर इन्होंने दीवार तथा बुर्ज बनवाया । नगरको सुरक्षित कर फाटकके ऊपर एक शिला पर इन्होंने इस प्रकार लिखवा दिया था, "इसके अन्दर रहनेवाले व्यक्तिको किसी भी विपत्तिकी आशंका नहीं है।" दक्षिणप्रदेश जीतनेके लिये दो वार इन्होंने यात्रा की थी। ५५ वर्ष राज्य कर यह १५११ ई०में परलोकवासी हुए । अहमदावादके समीप मरकिज नामक स्थानमें इनका मकवरा बनाया गया। पीछे इनका २य पुत्र मुजफ्फर शाह सिंहासन पर बैठा।

महम्मद शाह (२य)—गुजरातके एक मुसलमान राजा। इनका नाम नासिर खां था। ये २य मुजफ्फर शाहके तृतीय पुत्र थे। अपने ज्येष्ठ भाई सिकन्दर शाहको मार कर १५२६ ई०में ये गद्दी पर बैठे । इन्होंने केवल तीन मास राज्य किया था। इनके भाई वहादुर शाहने जौनपुरसे लौट कर इन्हें गद्दी परसे उतार दिया और आप गद्दी पर बैठे। १५२७ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद शाह (३य)—गुजरातके एक राजा, वहादुर शाहके भाई और लतीफखांके पुत्र। १७३७ ई०में मीरन महम्मद शाहके मरने पर ये सिंहासनाधिकारी हुए। पुर्त्तगेज लोग समुद्रतीरवासी मुसलमानों पर प्रायः आक्रमण किया करते थे। अतएव १७४० ई०में इन्होंने सूरतदुर्गका निर्माण किया। १५५३ ई०में राजाके अपने धर्मोपदेशकने दौलत नामक एक व्यक्तिसे इन्हें सुप्तावस्थामें मरवा डाला। इन्होंने १८ वर्ष राज्य किया था। इसी साल दिल्लीके राजा सलीम शाह तथा अहमदावादके सुल्तान निजाम शाहकी मृत्यु हुई थी। उक्त घटना आज भी मुसलमानसम्प्रदायमें "जवाल खुशरोयल" अर्थात् 'राजसंहार' नामसे मशहूर है। इनके बाद २य अहमद शाह सिंहासन पर बैठे।

महम्मद शाह (२य)—मालवाके एक सुल्तान, नासिरुद्दीनके तृतीय पुत्र। महम्मद शाह अपने पिताके मरने पर १५११ ई०में गद्दी पर बैठे। १५३१ ई०में गुजरातके राजा वहादुर शाहने मालव राज्य पर अधिकार कर महम्मद और उनके सात पुत्रोंको कैद किया और अपने कारागारमें रखा। अन्तमें चम्पारन-दुर्ग भेजते समय रहमें उनकी मृत्यु हो गई। यह मृत्यु स्वाभाविक कारणसे हुई वा किसी गुप्तघातकसे, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। पीछे मालवदेश गुजरात-राजाके हाथ लगा। वहादुर शाहके वाद कादिर खां तथा शूजा खां ने क्रमानुसार मालवाका शासन किया। शुजाके वाद इनके पुत्र वहादुर १५६० ई० तक राज्य करते रहे। इसी समय सम्राट् अकवरने पूर्णरूपसे मालवा पर अधिकार कर लिया।

महम्मद शाह—दिल्लीका एक वादशाह, औरङ्गजेवका पोता और जहानसाहका लड़का। इसका यथार्थ नाम, महम्मद रोशन अखतर है। जहानदार शाहकी मृत्युके वाद वालक रोशन अखतर अपनी वालिदा माता मरिया मुकानियोंके साथ दिल्लीके किलेमें ही रहता था। वाल्यकालमें ही यह अपनी गुण-गरिमासे सभीके प्रियपात्र वन गये।

रफी उल्लाने कुल तीन महीने दो दिन ही राज्य कर अपनी इहलीला समाप्त की। उस समय अवदुल्ला और हुसेन ये दोनों सैयद भ्राता मुगलराज्यके मालिक थे। सैयद अवदुल्लाने शीघ्र ही महम्मदको वुलानेके लिये आदमी भेजा। १५वीं जिलकदा सन् ११३१ हिजरीमें (१७२६ ई०में १८ वर्षकी उम्रमें) महम्मदने सिंहासनलाभ किया। 'अवदुल मुजफ्फर नासिरुद्दीन महम्मद शाह वादशाहे-गाजी' नामसे सिक्का तय्यार होने लगे।

इस वादशाहकी मां वुद्धिमती तथा राजकार्यमें वड़ी दक्ष थी। उसकी आज्ञासे यह स्थिर हुआ, कि फरुखसियरके राज्यच्युत होनेके वादसे महम्मद शाहके सिंहासन लाभकी तारीख गिनी जायेगी। वादशाहकी माताके लिये १५ हजारकी वृत्ति नियत हुई।

सैयद अब्दुल्लाके नौकर ही पूर्ववत्, राजकार्य चलाने लगे। न कोई निकाला गया और न कोई भर्त्ती ही किया गया। और तो क्या वादशाहके देह-रक्षक भी अब्दुल्लाके ही नौकर थे। सैयदकी आज्ञाके विना वादशाह कोई काम नहीं कर सकता था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीरजुमला प्रधान जज बना और सैयदके प्रियपात्र रतनचन्द दावानो, माल महकमा और प्रबन्ध आदि कार्योंमें प्रधान हुआ। शहर आदिकी नियुक्ति भी रतनचन्दके हाथ ही थी। और तो क्या उसकी मोहरके विना कोई कुछ काम करता न था।

छबीलाराम उस समय इलाहाबादका सूबेदार था। यह सैयदका प्राधान्य स्वीकार नहीं करता था। इससे सैयदने उसके विरुद्ध फौजोंको भेजा था। अचानक छबीलारामकी मृत्यु हो गई। इसके बाद उसका भतीजा छबीलारामका उत्तराधिकारी बना। इसका नाम गिरिधर था। यह गिरिधर बादशाहके विरुद्ध सैन्ययोजनाकरने लगा। यह समाचार पा कर सैयद भाई महम्मद शाहको फतेपुरसे आगरा लाये। सैयदोंने यमुनामें पुल बांध कर इलाहाबाद पर आक्रमण करनेका आयोजन किया।

गिरिधरको जब यह समाचार विदित हुआ तब उसने सैयदोंके पास आदमी भेज कर सुलह कर लेनी चाही। सैयदोंने उसको अयोध्याकी सूबेदारी तथा 'बहादरी' का खिताब देना चाहा, किन्तु गिरिधरको उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। गिरिधर युद्धकी तैयारी करने लगा। इलाहाबादके किलेको उसने मजबूत बनाया। इसकी यह हालत देख कर अन्य जमीन्दारोंने उत्तेजित हो राज्यकर देना बन्द कर दिया। सैयदोंको बड़ी चिंता हुई। स्थिर हुआ, कि बादशाहकी ओरसे अभयदान मिलने पर गिरिधरको किला समर्पण करनेमें कोई उज्र नहीं होगा। बादशाह दिल्लीको लौट गया। किन्तु तुरन्त यह सुना, कि गिरिधर अपनी प्रतिज्ञा पर अटल नहीं। इस समय बादशाहने इलाहाबादके लिये फिर प्रस्थान किया। गिरिधरने यह सुन कर बादशाहको कहला भेजा, कि रतनचन्दको भेज कर यदि झगड़ा निबटायें, तो मैं राजी हूं। इसके अनुसार सैयदोंने रतनचन्दको ही भेजा और इन्होंने आ कर यह झगड़ा तय किया।

रतनचन्दने इलाहाबाद पहुंच गिरिधरसे यह प्रतिज्ञा की, कि हम तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नहीं करेंगे। ऐसे ही गिरिधरने भी राजभक्तिकी प्रतिज्ञा की। इसके बाद उसे अयोध्याकी सूबेदारीके सिवा कई फौजदारियां भी मिलीं। तुरन्त ही गिरिधरने अयोध्याके लिये प्रस्थान किया। महम्मद शाहके राज्यके शुरूमें गिरिधरका विद्रोह और उसके साथ सन्धि ही प्रधान घटना है।

उधर सैयदोंके प्रभावसे बादशाहको बड़ा कष्ट होने लगा। बादशाह केवल उन दोनों सैयदोंके हाथकी कठपुतली बना था। बादशाह होने पर भी वह सैयदोंका गुलाम जैसा था। बादशाहकी माता जो एक विदुषी रमणी थी अपने पुत्रको सैयदोंके चंगुलसे निकालनेके लिये सदा चिन्तित रहने लगी। ये माता और पुत्र दोनोंने इतिमाद उद्दौलाकी मारफत निजाम-उल मुल्कको कहला भेजा, कि मैं नाममात्रको बादशाह हूं। राजकार्यसे मेरा कोई ताल्लुक नहीं। केवल शुक्रवारा जुम्माका नमाज पढ़ लिया करता हूं। निजाम खान्दान मुगल साम्राज्यका सदासे हित-चिन्तक रहा। इससे बादशाहको यह आशा थी, कि वह मेरा जरूर उद्धार करेगा।

निजाम-उल-मुल्कको यह मालूम हो गया, कि सैयद अपने इस चाल चलनसे धर्मराज्य तथा मुगलशासनको डुबा देना चाहते हैं। देर न कर वह आगरेके लिये रवाना हो गया। दक्षिणकी राहमें उसे जो नगर मिलते गये उन पर कब्जा कर अपनी ताकत बढ़ाता गया।

निजाम-उल-मुल्कके इस कार्य तथा उसकी बढ़ती हुई ताकतको देख कर सैयद दोनों भाई बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने स्थिर किया, कि बड़ा अबदुल्ला खां दिल्लीमें रहेगा और हुसेन अली बादशाहको ले कर निजाम-उल-मुल्कको शक्तिको नष्ट करनेके लिये दक्षिणकी ओर जाये। इस यात्राके लिये अत्यधिक फौजोंकी जरूरत थी, चेष्टा करने पर भी सैयद सैनिक भर्त्ती न कर सके। केवल किसी तरह ५० हजार सैनिक एकत्र कर हुसैन दक्षिणकी ओर दौड़ा।

इस समय हुसैनके मार डालनेकी साजिश चल रही थी। इतमादुद्दौला, महम्मद और सयादत खां इस साजिशके मुखिया थे। हुसेन फौजोंके साथ फतेहपुरसे तोरा नामक स्थानमें पहुंचे। इतमादुद्दौला बीमारीका बहाना कर बादशाहके खेमेसे बाहर चला गया। बादशाह अपने सोनेवाले कमरेमें चले गये और हुसेन भी शाही खेमेसे निकल अपने खेमेमें सोनेके लिये जा रहा था। दरवाजे पर जो आया, तो देखा, कि हैदर खां कुछ कहना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहता है ; खड़ा हो कर हैदरकी बात सुनने लगा। हैदरने इतमादुद्दौलाकी कितनी शिकायतें कर एक दरखास्त हुसेनके हाथमें दी। इस दरखास्तको ले कर हुसेन अली पढ़ने लगा, इस समय हुसेनके देह-रक्षक भी अलग दूर खडे थे। मौका देख कर हैदर खांने हुसेन पर आक्रमण कर दिया। इसीकी तलवारकी चोट खानेसे ही इसका प्राणान्त हो गया।

हुसेनका भांजा नुरूल्ला भी साथ ही था। नुरूल्लाकी तलवारसे हैदरका खातमा हुआ। इस समय चारों ओर अशान्ति मच गई। मुगल सैयदोंकी सैन्य पर गोली और तीर बरसाने लगे। यह दारुण समाचार पा कर हुसेनका भतीजा इज्जत खां तुरन्त ही अपने हाथी पर चढ़ पांच सौ घुड़सवारोंके साथ बादशाहके खेमेकी ओर बढ़ा।

बादशाहको खतरेमें समझ स्यादत खां इतमादुद्दौलाकी सलाहसे बादशाहके पास पहुंचा। स्यादतको बादशाहकी माताने बादशाहके पास जानेसे रोका; किन्तु स्यादत रुका नहीं और उसने बादशाहके पास पहुंच उसे बाहर ला कर एतमादुद्दौलाके हाथी पर बैठाया। विश्वासी और प्रभुभक्तकी तरह एतमादुद्दौला बादशाहकी रक्षा करने लगा। बडे, सैयद पक्षकी फौजोंने इज्जत खाँकी अधीनतामें मुगलों पर आक्रमण किया। बादशाहकी ओरसे भी प्रत्याक्रमण होने लगा। मुगल सैन्य और सैयद सैन्यके बीच कुछ देर तक लड़ाई होती रही। गोलीकी चोट खा कर इज्जत खां मर गया। इसके बाद उसकी फौजें भी भाग खड़ी हुई। महम्मद शाहकी जय हुई।

बादशाह अपने खेमेमें लौट आये। एतमादुद्दौलाने उदारता पूर्वक रतनचन्दको बुला भेजा। राहमें कितने ही मुगलोंसे वे बच कर पहुंचे। एतमादुद्दौलाने प्राणदण्ड न दे कर उसे कैद कर लिया। राय शिरोमणि दास नामका एक कायस्थ अपना शिर मुण्डन कर संन्यासी बन कर मुगलोंसे बचा। यह सैयदोंका नायब था।

एतमादुद्दौलाको आठ हजारी मनसबदारी, आठ हजारी दुआस्प और वजीर-पद मिला। जिस जिसने बादशाहका साथ दिया था, उसको उसको वेतन वृद्धि हुई।

सैयद अबदुल्ला अपने भाईके मरनेकी खबर पा कर बड़ा दुःखित हुआ। दिल्लीके अमीर उमरावोंको हाथमें कर बादशाहके विरुद्ध अस्त्र उठानेका दृढ़ निश्चय किया। उधर हुसेन अलीके मरने पर दिल्लीके जमींदारोंने अबदुल्लाके विरुद्ध सर उठाया। वे सैयदोंकी जो कुछ चीजें पाते, वह लूट लेते थे। खैर, इससे अबदुल हुसेन दबनेवाला आदमी न था। उसने तुरन्त ही दिल्लीके सूबेदार नजिमुद्दीन खांको खबर भेजी, कि बहुत जल्द सेना तय्यार करो। गजिमुद्दीन खांने राजकार्य चलानेके लिये व्यवस्था ठीक करनेके लिये अबुल हुसेनके आदमियोंको जहान्दार शाहके पुत्रोंके पास भेज दिया। किन्तु उन सबोंने सैयदकी बातोंका जरा भी ख्याल न किया। अन्तमें रफी-उस शानके पुत्र सुलतान इब्राहिमने बादशाह होने और सैयदोंकी रक्षा करनेका भार लेना स्वीकार किया। सन् ११३२ हिजरी (सन् १७२० ई०)में ९वीं जिलहज्जको सुलतान इब्राहिम अबुल फतेह, जहीरुद्दीन महम्मद इब्राहिम नामसे दिल्लीके तख्त पर बैठा। इसके दो दिन बाद सैयद अबदुला हुसैनको अमीरकुमार और आठ हजारी मनसबदारी, नजिमुद्दीन खांको दूसरा बख्शी, सलाबत खांको तीसरा बख्शी और बैराम खांको चौथा बख्शी बनाया। कैदखानेमें जो और अमीर सड़ते थे, वे सब छोड़ दिये गये। तथा नये बादशाहके हुकम ऊंचे ओहदों पर फिर बहाल किये गये। ८०) मासिक बेतन पर घुड़सवार सैनिक भर्त्ती होने लगे। बहुतेरे सैनिक भर्त्ती करनेके लिये चालीस पचास हजार रुपया पेशगी तौर पर भी बांटा गया।

उधर महम्मद शाहको भी इन सब बातोंकी खबर लग चुकी थी। उन्होंने अपनी फौजोंको ले कर दिल्लीकी ओर बढ़ना शुरू किया। सैयद अब्दुल हुसैनको फौजोंको कितने ही सिपाही बादशाह महम्मद शाहकी फौजोंमें भर्त्ती हो गये थे। किन्तु उन्होंने जब देखा, कि सैयद फिर अपनी फौज ले महम्मद शाह पर चढ़ाई करने आ रहा है। तब वे सब दलके दल महम्मद शाहकी फौजोंसे निकल दिल्ली पहुंच सैयदकी फौजमें मिल गये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१२वीं महरमको अबदुल हुसैनने अपनी फौजोंके

नामक एक राजकर्मचारीको मार डाला। शेख मुइज्जुद्दीन कैद कर लिया गया। फिर खम्बातको लूटा और किले पर कब्जा कर लिया। सुलतानको देवगिरिमें ही इसकी खबर लग गई। देवगिरिके शासनकी कोई सुव्यवस्था न कर वह दलबल वहांसे चल दिया। और तो क्या, वहां एक भी शाही फौज रखी न गई।

सुलतानने भड़ौंच आ कर नर्मदाके किनारे छावनी डाल दी। उसने और उसके सेनापति मालिक युसुफ बघ्राने दोनों ओरसे बलवाइयों पर चढ़ाई कर दी। बलवाइयोंका सरदार चमार तघी खम्बात, नहरवाला, अशावल और काड़ा होते हुए करनौल पहुंचा। सुलतान भी उसके पीछे पीछे दौड़ा जा रहा था। नहरवालाके निकट दोनों दलोंमें एक खण्ड युद्ध हो गया। तघी वहांसे काण्डवराही, करनूल और ठट्ट होता हुआ दम्भोलमें आ पहुंचा। यहां उसको आश्रय मिला। जिस समय तघीके पीछे पीछे सुलतान दौड़ रहा था, उस समय देवगिरीको खाली देख हसन गांगूने चढ़ाई कर दी। वहां लड़ाईमें इमादुल-मुल्क मारा गया। शाही फौजें भाग खड़ी हुईं। धारानगरीमें जो बागी थे, वह भी हसन गांगूकी फौजमें आ मिले।

जिस समय यह घटना हुई उस समय सुलतान नहरवालामें था। उसने अहमद आजिजको देवगिरि भेजना चाहा, किन्तु अलाउद्दीनकी फौज अधिक जान आजिज वहां न गया। अतः देवगिरि सदाके लिये अलाउद्दीन हसन गांगूके अधिकारमें आ गया।

देवगिरि हाथसे निकल जानेसे सुलतानको बड़ा दुःख हुआ, किन्तु कोई उपाय न था। करनाल और कांगड़ाके किलेको जीतना तथा गुजरातमें शान्ति स्थापित करना ही उसका एकान्त उद्देश्य था। सुलतान करनाल किलेके सामने आया। वहांके अधिकारियोंने आत्मसमपर्ण कर दिया। तघी सुलतानको अधिक सेना देख कर जाम राजाओंकी शरणमें पहुंचा। सुलतान करनाल और कांगड़ा पर कब्जा कर जाम राजाओंकी ओर झुका। राहमें ही सुलतान बीमार हो गया। इसी समय दिल्लीमें मालिक बीरकी मृत्यु हो गई। सुलतानको इससे और भी दुःख हुआ। उसने राजकार्य संभालनेके लिये अहमद अयाज और मालिक मकबूलको दिल्ली भेज दिया। इधर सुलतानको बीमार सुन कर जगह जगहके लोग उसे देखने आ गये। कोण्डालमें आदमियोंका ठट्ट जमा हो गया।

सुलतान अच्छा हुआ और फिर लड़ाईकी तय्यारी करने लगा। सिन्धुनद पार करनेके लिये देवलपुर, मुलतान, उच्छ, शिविस्थान आदिसे नावें मगाई गईं। बागी तघीको शरण देनेवाले सुमराधिपतिको वशमें करना उसका उद्देश्य था। इसी समय फरगनाके अमीर अलतुन बहादुरके भेजे पांच हजार सवार आ कर सुलतानकी फौजमें मिल गये।

इतनी फौजोंको ले कर सुलतान आगे बढ़ा, यहां मुहर्रमके लिये उसने फाका किया था। दूसरे दिन खाना खानेके बाद तबियत खराब हो गई। दिनों दिन उसकी बीमारी बढ़ती गई। १३५० ई०में उसको मौतने आ घेरा। सिन्धुनदीके तीर पर अपनी इहलीला संवरण कर ली।

महम्मद शाह तुगलक (२य)—दिल्लीका एक सुलतान, फिरोज शाह तुगलकका पुत्र। सन् १३५० ई०में इसका जन्म हुआ। इसका यथार्थ नाम नासिरुद्दीन था। सन् १३८७ ई०में पिताके जीते जी यह दिल्लीके तख्त पर बैठा। इसका ऐसा व्यवहार देख अमीर उमराओंको अच्छा न लगा। फल यह हुआ कि यह तख्तसे उतार दिया गया। इसके बाद नगरकोटमें जा कर रहने लगा। यहां इसने अपना बल बढ़ाया और बहुतेरी फौजोंको ले कर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी और उसे कब्जा कर लिया। अब फिर एक बार यह तख्त पर बैठा। सन् १३९४ ई०में तीन वर्ष ७ मास राज्य करनेके बाद इहलोकसे चला गया। जलेश्वरका गिरिदुर्ग इसीका बनवाया हुआ था।

इसकी मृत्युके बाद सन् १३९४ ई०में इसका पुत्र हुमायूं शाह अलाउद्दीन सिकन्दर शाह नाम रख कर दिल्लीके तख्त पर बैठा। केवलमात्र ४५ दिन राज्य करनेके बाद अला उद्दीनकी मृत्यु हो गई। इसके उपरान्त इसका भाई महमूद शाह तुगलक १० वर्षकी उम्रमें दिल्लीके तख्त पर बैठा। सुलतान नाबालिग था। यह देख पुरानी शत्रुतावश मौका पा कर दिल्लीके निकटके अमीर उमरा या जमींदार बागी हो कर आजाद हो गये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी समय अमीर तैमूरने भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया था।

कुछ इतिहासकारोंने इसको सुलतान महमूद शाहके नामसे भी लिखा है। इसके बारेमें जीवनीके लेखकोंने चचा और भतीजेकी जीवनी एक साथ लिख कर भ्रम-में डाल दिया है।

फिरिस्ताकी रायसे सन् १३९९ ई०में और सराफुद्दीन येजदीकी रायसे सन् १३९८ ई०में सुलतान महम्मदकी अमलदारीमें तैमूर भारतमें आया। महम्मद शाह हार कर गुजरात चला गया। तैमूर दिल्लीके तख्त पर बैठा। कुछ ही दिनके बाद तैमूर दिल्लीसे बहुत धन-दौलत ले कर फारस लौटा। इसके फारस चले जानेके बाद फिरोज शाहके पौत्र नसरत खां दिल्ली नगरी पर अधिकार कर 'नसरत शाह'-के नामसे तख्त पर बैठा। इसके बाद १४०० ई०में इकबाल खां बादशाह हुआ। इसके उपरान्त सन् १४०५ ई०में कन्नौजसे आ कर महम्मद शाह फिर दिल्लीका तख्त पर बैठा। नासिरुद्दीन दूसरी बार दिल्लीका बादशाह हुआ सही, किन्तु पहले जो आजाद हो चुके थे, उन लोगोंने मंजूर नहीं किया। सन् १४१३ ई०में महम्मद शाह तुगलक मर गया। अब दौलत खां लोदीने दिल्लीके शाही तख्त पर अधिकार कर लिया। यहां हीसे दिल्लीसे तुर्कोंका राज्य उठ गया।

महम्मद शाह पूरबी—फिरोज शाहका पुत्र। पिताके मरने पर यह १४९४ ई०में राजतख्त पर बैठा। एक वर्ष कुछ महीने राज्य करनेके बाद सिद्धिबदर नामक एक व्यक्तिने इसकी हत्या कर सिंहासनको दखल किया। १४९५ ई०में बदरने 'मुजफ्फर शाह'-की उपाधि पाई।

महम्मद शाह शर्कि सुलतान—जौनपुरका एक राजा, इब्राहिम शाह शर्किका बेटा। पिता सुलतान इब्राहिम शाह शर्किके मरने पर यह १४४० ई०में जौनपुरके सिंहासन पर बैठा। १७ वर्ष राज्य करनेके बाद १४५७ ई०में इसकी मृत्यु हुई। पीछे उसका बड़ा भाई विखान खां 'महम्मद शाह शर्कि'-की उपाधि धारण कर पितृराज्य-का अधिकारी हुआ।

महम्मद शाही—बङ्गालके अन्तर्गत एक भूसम्पत्ति। नवाब मुर्शिदकुली खांके समय यह चाकला भूषणा कहलाता था। सीताराम रायके उच्छेदके बाद नलदी आदि उत्कृष्ट परगने राजशाही जमींदारीमें मिला लिये गये थे।

महम्मद शेख—जामि जहान नामा और नफस रहमाणी तथा चिहालरिसाला नामक धर्मग्रन्थके प्रणेता।

महम्मद सदर उद्दीन—तुर्क जातिके सर्वप्रथम कवि। यह अरबी और पारसी भाषामें कुछ ग्रंथ लिख गये हैं। १२७० ई०में इनकी मृत्यु हुई।

महम्मद सुफि (मुल्ला)—एक प्राचीन कवि। सुफी साम्प्रदायिक मत पर इनका विशेष विश्वास था। अहमद-नगरवासी सैयद जलाल इ-बुखारी इनका शिष्य था। इनकी बनाई हुई शाकिनामाकी श्लोकावली बहुत मनोरम है।

महम्मद सुलतान (१म)—कोन्सटैण्टिनोपूलका एक बाद शाह। इसके पिताका नाम मुस्ताफा (२य) और चचाका नाम अहमद (३य) था। १७३० ई०में यह चचाके राज्यका अधिकारी बना। इसका बलविक्रम देख कर सबोंने समझ रखा था, कि ये खोये हुए राज्यों-का पुनरुद्धार करेगा। किन्तु नादिर शाहके साथ इसकी जो लड़ाई हुई उसमें यह जर्जिया और अरमेनिया छोड़ने को बाध्य हुआ। १७५४ ई०में यह परलोकको सिधारा। पीछे इसका भाई २य ओसमान राजतख्त पर बैठा।

महम्मद सुलतान (२य)—कोन्सटैण्टिनोपूलका बादशाह। इसके पिताका नाम अबदुल हमीद (अहमद ४थ) था। १७८५ ई०में इसका जन्म हुआ। १८०८ ई०में ३य सलीम और ४र्थ मुस्ताफा नामक इसके दो चचा जब राजतख्त परसे उतार दिये गये, तब यही राजतख्त पर बैठा। ओसमान (१म) इस वंशका आदिपुरुष था। यह ओसमानसे १८ पीढ़ी नीचे तथा उल्लिखित वंशका तीसवां राजा था।

१८३९ ई०में इसका देहान्त हुआ। पीछे उसका लड़का अबदुल मजीद तुरुष्कके सिंहासन पर बैठा। महम्मदके शासनकालकी बहुत-सी घटनायें उल्लेख करने लायक हैं। १८२१ ई०म ग्रीसवालोंने जब तुरुष्क-के बादशाहकी अधीनता अस्वीकार कर दी, तब दोनोंमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विपुल संग्राम छिड़ गया। आखिर ग्रीसवालोंने अपने-को स्वाधीन वतलाते हुए घोषणा कर दी। १८२८ ई०में रूसोंके साथ युद्ध उपस्थित हुआ। इस युद्धमें मह-म्मदकी सेना बुरी तरह परास्त हुई थी। अब रूसराज दलवलके साथ कोन्सटैण्टनोपूलकी ओर वढ़ा, तुर्कोंने अपने राज्यका कुछ अंश दे कर मेल कर लिया। परन्तु यूरोपके अन्यान्य राजाओंने उन्हें वहांसे मार भगाया।

महम्मद सुस्तारी—हाकुल-यकीन नामक धर्मग्रन्थके प्रणेता। सुस्तार नगरमें इसका जन्म हुआ था। उक्त ग्रन्थका पारसियोंके निकट वहुत आदर है।

महम्मद सैयद—'तहफत उल-मजलिस' नामक ग्रन्थके प्रणेता। आप शेख अह्मद खाटूके समसामयिक थे।

महम्मद हकीम (मिर्जा)—हुमायूं वादशाहका लड़का और अकवर वादशाहका वैमात्र भाई। १५५४ ई०का काबुल नगरमें इसका जन्म हुआ। अकवरने इसे काबुल-का शासक वना दिया था, परन्तु इस पर भी यह संतुष्ट न था। आखिर इसने वागी हो कर १५६६ और १५८१ ई०में दो वार पञ्जाव पर चढ़ाई कर दी। उसे दण्ड देनेके लिये खुद वादशाह अकवर पंजाव गये। मुगल-सेनाके सामनेवह कव तक ठहर सकता था, जान ले कर भागा। १५८५ ई०को काबुल नगरमें ही इसकी मृत्यु हुई। पीछे राजा भगवान दास और उनके लड़के मानसिंहने कुछ समय तक काबुलका शासन किया था।

महम्मद हसन—दिल्लीवासी एक कवि। आप अकवर वादशाहके शासनकालमें १६०४ ई०को महम्मद और उनकी वेगमोंका विवरण तथा मुसलमान महापुरुषोंकी जीवनी लिख कर कवित्व-शक्तिका अच्छा परिचय दे गये हैं।

महम्मद हसन वुरहान—कुरहान इ-काटा नामक पारसी अभिधानके प्रणेता। १६५१ ई०को इन्होंने उक्त ग्रन्थकी रचना कर हैदरावादके निजाम अवदुल्ला कुतुव शाहके नामसे उत्सर्ग किया।

महम्मद हादी—वादशाह जहांगीरका प्रतिपालित एक सम्भ्रान्त उमराव। इसने तुजफ जहांगिरी नामक प्रसिद्ध इतिहासके शेष अंशको समाप्त किया था। इसका पहला अंश स्वयं वादशाह जहांगीरने और विचला अंश मतमिद खांने लिखा था।

महम्मद हानीफ—अलीका तीसरा लड़का। फतीमाके गर्भसे उत्पन्न हसन और हुसैनका वैमात्र भाई होनेके कारण इसे इमामका पद नहीं मिला किन्तु हुसैनके मरने पर वहुतोंने इसीको खलीफा वा इमाम समझ रखा था। इसका दूसरा नाम था महम्मद विनाली। ८१ हिजरीमें इसकी मृत्यु हुई।

महम्मद हासिम (काफी खां)—एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक। इन्होंने तारीख काफी-खान् और मुन्तखव-उल-लुवाव नामक दो भारतवर्षके इतिहास-ग्रन्थ लिखे हैं। वाद-शाह आलमगीरकी अमलदारी शेष होने पर ये दिल्ली नगरमें रह कर मुगलराज्यका इतिहास लिखने लगे। उक्त ग्रन्थमें १५१६ ई०को वावरशाहके आक्रमणसे ले कर वादशाह महम्मद शाहके राज्यरोपण तककी घटनाओं-का वर्णन है।

महम्मद हुसेन—आकाएद हसेन नामक धमग्रन्थके प्रणेता।

महम्मद हुसेन (मिर्जा)—तैमूरराजवंशोद्भव महम्मद सुलतान मिर्जाका लड़का। यह अपने भाइयोंसे मिल कर वादशाह अकवरके विरुद्ध खड़ा हो गया था। इस पर वादशाह वड़े विगड़े और उन सवोंको शम्मलपुर दुर्गमें कैद किया। पीछे षड्यन्त्र करके वे सवके सव वहांसे भागे और चम्पानेर, सूरत तथा भरोंच पर अधि-कार कर वैठे। वादशाह उन्हें दण्ड देनेके लिये चल पड़े। कर्णालके समीप माहेन्द्री नदीके किनारे अपने भाई इब्राहिमका पराभव सुन कर हुसैन दाक्षिणात्यको भागा। पीछे वहांसे फिर लौट कर उसने गुजरात और आस पासके स्थानोंको अधिकार कर लिया। नौरङ्ग खांकी अधीनस्थ मुगलसेनाने खम्वामें उसे परास्त किया। अनन्तर वह वख्तियार उल-मुल्कके साथ मिल गया। प्रतिहिंसापरायण अकवरके हाथसे वह कव तक वच सकता था। रायसिंह नामक एक हिन्दूने उस-का काम तमाम किया।

महम्मद हुसेन (शेख)—अरवदेशीय एक मुसलमान कवि। काव्यशास्त्रमें विशेष व्युत्पत्ति होनेके कारण इन्हें 'शहरत'-की उपाधि मिली थी। सिराज नगरमें इन्होंने लिखना पढ़ना सीखा था। अच्छी तरह तालिम पानेके वाद ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष आये। यहां युवराज आजिमशाहने इन्हें राजहकीम-के पद पर नियुक्त किया। असामान्य पाण्डित्य पर प्रसन्न हो कर बादशाह फर्रुखसियरने इसे हकीम उलमुल्ककी उपाधि दी थी।

महम्मदशाहकी अमलदारीमें ये मक्काको गये थे। वह से लौट कर दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई। इनका बनाया हुआ ५००० श्लोकोंका एक दीवान ग्रन्थ मिलता है।

महम्मद हुसेन (लसकर खां) सम्राट् अकबर शाहका एक सभासद्। यह मीर बख्शी और अमीर आर्ज-पद पर नियुक्त था। १५६७ ई०में मुजफ्फर खांके बहकानेसे इस-की पदच्युति हुई। एक दिन नशेमें चूर हो कर यह बादशाहकी सभामें पहुंचा और सभासदोंको गाली गलौज देने लगा। इस अपराध पर अकबरने इसे घोड़े की पूछमें बंधवा कर अच्छी सजा दी और पीछे कारा-गारमें कैद रखा। इसके बाद यह बङ्गीय सेनादलका अधिनायक बनाया गया। तकराई युद्धमें आहत हो कर उड़ीष्यामें इसकी मृत्यु हुई। इस समय यह २ हजारी मनसबदार था।

महम्मदाबाद—१ युक्तप्रदेशके आजमगढ़ जिलेकी एक तह-सील। यह अक्षा० २५° ४८′ से २६° ८′ उ० तथा देशा० ८३° ११′ से ८३° ४०′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरि-माण ४२७ वर्गमील और जनसंख्या तीन लाखसे ऊपर है। इसमें माऊ, मुबारकपुर और महम्मदपुर नामक तीन शहर और ६७१ ग्राम लगते हैं। तोंस और छोटी सरयू-के सिवाय यहां और भी बहुतसे जलाशय हैं।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २६° २′ उ० तथा देशा० ८३° २४′ पू०के मध्य विस्तृत है। जन-संख्या प्रायः ८७७५ है। यह शहर बहुत पुराना मालूम होता है। कहते हैं, कि १५वीं सदीके आरम्भमें इस पर मुसलमानोंने दखल जमाया था। यहां एक अस्पताल, एक तहसील, एक मुंशिफी और पुलिस-स्टेशन है। अलावा इसके यहां दो स्कूल भी हैं।

महम्मदाबाद—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेकी एक तह-सील। यह अक्षा० २५° ३१′ से २५° ५४′ उ० तथा देशा० ८३° ३६′ से ८३° ५८′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरि-माण दो लाखसे ऊपर है। इसमें २ शहर और ६६४ ग्राम लगते हैं। तहसीलके उत्तर धान और ईखकी अच्छी फसल लगती है।

२ उक्त तहसीलका सदर। यह अक्षा० २५° ३७′ उ० तथा देशा० ८३° ४७′ पू० गाजीपुरसे बक्सर जाने-के रास्ते पर अवस्थित है। जनसंख्या ७२७० है। यहां एक अस्पताल, एक मुंशिफी और दो स्कूल हैं।

महम्मदी—१ युक्तप्रदेशके खेरी जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७° ४१′ से २८° १०′ उ० तथा देशा० ८०° २′ से ८०° ३६′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६५१ वर्गमील और जनसंख्या ढाई लाखसे ऊपर है। इसमें महम्मदी नामक एक शहर और ६०७ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका एक सदर। यह अक्षा० २७° ५८′ उ० तथा देशा० ८०° १४′ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ६२७८ है। १७वीं सदीके शेषमें बरबारके सैयदोंने इसे दखल किया था। मुगल-साम्राज्यकी अव-नतिके समय वे लोग स्वाधीनभावसे राजकार्य चलाते थे। इनका कोई पूर्वपुरुष हरदोई राज्यके सोमवंशीय राजपूतराजसे परास्त हुआ था। पीछे सैयदोंने उन्हें हरा कर इस्लामधर्ममें दीक्षित किया और एक दासी-कन्याके साथ उनका विवाह करा दिया। धर्मत्यागी वह राजपूत आखिर अपने प्रतिपालकके वंशधरकी कुल सम्पत्तिका अधिकारी बन बैठा। १७६३ ई० तक वे इस सम्पत्तिका भोग करते रहे। पीछे १८५७ के गदरमें भाग जानेके कारण उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

महयाथ्य (सं० पु०) पूजा, अर्चना।

महय्य (सं० त्रि०) पूजनीय, सम्मान करने लायक।

महर (हिं० पु०) १ एक आदरसूचक शब्द, जो ब्रजमें बोला जाता है। इसका व्यवहार विशेषतः जमींदारों और वैश्यों आदिके संबंधमें होता है। २ एक प्रकारकी चिड़िया। ३ महरा देखो। (वि०) ४ सुगंधित, महमहा।

महरबान (फा० पु०) मेहरबान देखो।

महरम (अ० पु०) १ मुसलमानोंमें किसी कन्या या स्त्रीके लिये उसका कोई ऐसा बहुत पासका संबंधी जिसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ उसका विवाह न हो सकता हो। २ रहस्यसे परिचित, भेदका जाननेवाला। (स्त्री०) ३ अंगिया। ४ अंगियाकी कटोरी।

महरा (हिं० पु०) १ कहार। २ श्वसुरके लिये आदरसूचक शब्द। (वि०) ३ श्रेष्ठ, बड़ा।

महराई (हिं० स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रधानता।

महराज (हिं० पु०) महाराज देखो।

महराजा (हिं० पु०) महाराज देखो।

महराण (डिं० पु०) समुद्र।

महराना (हिं० पु०) १ महरोंके रहनेका स्थान, महरोंके रहनेकी जगह। २ महाराणा देखो।

महराव (हिं० स्त्री०) मेहराव देखो।

महरि (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका आदरसूचक शब्द। इसका व्यवहार व्रजमें प्रतिष्ठित स्त्रियोंके संबंधमें होता है। २ ग्वालिन नामक पक्षी, दहिंगल। ३ गृहस्वामिनी, मालकिन।

महरी (हिं० स्त्री०) ग्वालिन नामक पक्षी, दहिंगल।

महरू (हिं० पु०) १ चंडू पीनेकी नली। २ एक प्रकारका वृक्ष।

महरूम (अ० वि०) वंचित, जिसे प्राप्त न हो।

महरेटा (हिं० पु०) १ महरका बेटा, महरका लड़का। २ श्रीकृष्ण।

महरेटी (हिं० स्त्री०) वृषभानु महरकी लड़की, श्रीराधिका।

महरेणु (सं० क्ली०) देशभेद।

महर्घता (सं० स्त्री०) महंगे होनेका भाव, महंगी।

महर्त्विज् (सं० पु०) १ ऋत्विक्भेद। यज्ञमें अध्वर्यु, ब्रह्मन्, होता और उद्गाता ये चारों महर्त्विज् कहलाते हैं।

महर्द्धि (सं० त्रि०) १ विपुल धनशाली, बहुत धनवान्। (स्त्री०) २ प्रचुर धन, बहुत उन्नति।

महर्द्धिक (सं० त्रि०) १ विपुल धनशाली, बहुत धनी। २ दैवशक्तिसम्पन्न।

महर्द्धिप्राप्त (सं० पु०) १ गारुड़देशके राजा। (त्रि०) २ विपुल वित्तसम्पत्तिशाली, बहुत धनी।

महर्द्धिमत् (सं० त्रि०) दैवशक्ति द्वारा धनशाली।

महर्लोक (सं० पु०) महश्चासौ लोकेश्चेति कर्मधारयः। पुराणानुसार भू, भुवः आदि चौदह लोकोंमेंसे एक। १४ लोकोंमेंसे ७ ऊर्द्ध्वलोक और ७ अधोलोक हैं। महर्लोक इन ऊर्द्ध्वलोकोंमेंसे चौथा है।

"भूर्भुवस्वर्महश्चैव जनश्च तप एव च।
सत्यलोकश्च सप्तैते लोकास्तु परिकीर्त्तिताः॥"

(अग्निपुराण)

कल्पवासी सभी लोक इस लोकमें अवस्थान करते हैं

"चतुर्थे तु महर्लोके तिष्ठन्ते कल्पवासिनः।" (देवीपु०)

महर्षभ (सं० पु०) महांश्चासौ ऋषभश्चेति कर्मधा०। १ वृहत् षण्ड, बड़ा सांढ़। (त्रि०) २ अति श्रेष्ठ।

महर्षभी (सं० स्त्री०) महती चासौ ऋषभा चेति कर्मधा०। कपिकच्छु, कौंछ।

महर्षि (सं० पु०) १ बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि, ऋषीश्वर। २ एक राग। यह भैरवके आठ पुत्रोंमेंसे एक माना जाता है।

महर्षिका (सं० स्त्री०) शुक्लकण्टकारी, सफेद भटकटैया।

महल (अ० पु०) प्रासाद, बहुत बड़ा और बढ़िया मकान जिसमें राजा वा रईस रहते हैं।

महलसरा (हिं० स्त्री०) अन्तःपुर, रनिवास।

महलाठ (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। इसकी दुम लंबी, ठोर काली, छाती खैरी, पीठ खाकी रंगकी और पैर काले होते हैं।

महली पटैला (हिं० पु०) एक प्रकारकी बड़ी नाव। इस पर केवल लकड़ी या पत्थर आदि लादा जाता है।

महल्ल (सं० पु०) १ वृद्धलोक, बूढ़ा मनुष्य। २ खोजा।

महल्लक (सं० पु०) महतः स्त्रीरक्षादिरूपान् विपुलान् भारान् लाति गृह्णाति ला (आतोऽनुप सर्गे कः। पा ३।२।३) इति कः ततः स्वार्थे कन्, यद्वा महान्तं चरित्रगुणं लकात आस्वादयतीति लक-आस्वादने अच्। अन्तःपुररक्षक, खोजा। पर्याय—सौविदल्ल, कञ्चुकी, स्थापत्य, सौविद, विदाङ्ग, सौविदल्लक, अन्तर्वंशिक।

महल्ला (अ० पु०) शहरका कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुतसे मकान आदि हों।

महल्लिक (सं० पु०) महान्तं चरित्रगुणं लिखतीवेति महत् लिख-क पृषोदरादित्वात् साधुः। अन्तःपुररक्षक, खोजा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महस् (सं० क्ली०) मह्यते पूज्यतेऽनेनेति मह (अत्यविच मितमिनमीति। उण् ३।११७) इति असच्। १ ज्ञान। २ प्रकार।

महस (सं० क्ली०) मह्यते पूज्यतेऽस्मिन्निति मह (सर्वधातुभ्योऽसुन्। उण् ४।१८८) इति असुन्। १ उत्सव। २ तेज। ३ यज्ञ। ४ आनन्द, खुशी। ५ उदक, जल। (त्रि०) ६ पूज्यमान, आदरणीय। ७ महत्, बड़ा।

महसिल (अ० पु०) तहसील वसूल करनेवाला, उगाहनेवाला।

महसीर (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली। महासीर देखो।

महसूल (अ० पु०) १ वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशेष कार्यके लिये ले, कर। २ भाड़ा, किराया। ३ मालगुजारी, लगान।

महसोन (सं० पु०) एक व्यक्तिका नाम।

महस्वत् (सं० त्रि०) महस् मतुप्। १ आनन्दवर्द्धक। २ महत्, बड़ा। ३ ज्योतिर्विशिष्ट। (पु०) ४ राजभेद।

महा (सं० स्त्री०) मह्यते पूज्यते इति मह-घ-स्त्रियां टाप्। १ गोपवल्ली। २ स्त्रीगावि, गाय। ३ (त्रि०) अत्यन्त, बहुत अधिक। ४ सर्वश्रेष्ठ, सबसे बढ़ कर। बहुत बड़ा, भारी। ब्राह्मण, पात्र, यात्रा, प्रस्थान, तैल और मांस इन शब्दोंमें 'महा' शब्द लगानेसे इन शब्दोंके अर्थ कुत्सित हो जाते हैं।

महाअरंभ (हिं० वि०) बहुत शोर, बहुत हलचल।

महाअहि (सं० पु०) शेषनाग।

महाई (हिं० स्त्री०) १ मथनेका काम। २ नीलकी मथाई, नीलके रंगको मथनेका काम। ३ मथनेका भाव। ४ मथनेकी मजदूरी।

महाउत (हिं० पु०) महावत देखो।

महाउर (हिं० स्त्री०) महावर देखो।

महाकङ्कर (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

महाकच्छ (सं० पु०) महान् विपुलः कच्छो जलप्रायो देशोऽस्य। १ समुद्र। २ वरुण। ३ पर्वत। ४ जनपदभेद, एक प्राचीन देशका नाम।

महाकटभी (सं० स्त्री०) श्वेतकटभीवृक्ष।

महाकण्टकिनी (सं० स्त्री०) महती चासौ कण्टकिनी चेति कर्मधा०। विश्वसारक, एक प्रकारका सीज।

महाकण्टा (सं० स्त्री०) शेवन्तीवृक्ष, गुलाब।

महाकथहचक्र (सं० क्ली०) चक्रभेद। तन्त्रसारमें इस चक्रका विवरण लिखा है। मन्त्र लेते समय इस चक्रसे मन्त्रका उद्धार कर लेना होता है।

मन्त्र और अकथह चक्र देखो।

महाकदम्ब (सं० पु०) केलिकदम्ब।

महाकनकतैल (सं० क्ली०) शिरके एक रोगका तेल। प्रस्तुत प्रणाली—कटुतैल ४ सेर, धतूरेकी पत्तियोंका रस ४ सेर, पुनर्णवाका रस ४ सेर, थहरके पत्तोंका रस ४ सेर, दशमूलका काढ़ा ४ सेर, पालिधाका रस ४ सेर, वरुण छालका रस ४ सेर; चूर्णके लिये सोंठ मरिच, सैन्धव, पुनर्णवा, कर्कटशृङ्गी, पीपर और गजपीपर प्रत्येक ४ तोला। तेल बनानेकी प्रणालीसे इस तेलका पाक करना होता है। इससे शिरका दर्द और शोथ जाता रहता है।

महाकन्द (सं० पु०) महांश्चासौ कन्दश्चेति। १ रसोनक। २ मूलक। ३ चाणक्यमूलक। ४ लाल लहसुन। ५ प्याज।

महाकन्य (सं० पु०) ऋषिभेद, एक प्रवरकार ऋषिका नाम।

महाकपाल (सं० पु०) १ राक्षसभेद, एक दानवका नाम। २ शिवानुचरभेद, शिवके एक अनुचरका नाम।

महाकपि (सं० पु०) १ राजभेद। २ शिवके एक अनुचरका नाम। ३ एक बोधिसत्त्वका नाम।

महाकपित्थ (सं० पु०) महांश्चासौ कपित्थश्चेति। विल्ववृक्ष, बेलका पेड़।

महाकपिल पञ्चरात्र—एक प्राचीन धर्मग्रन्थ। स्मार्त्त रघुनन्दन और विट्ठल दीक्षितने इसका मत उद्धृत किया है।

महाकपोत (सं० पु०) दर्वीकर सर्पविशेष, सुश्रुतके अनुसार २६ प्रकारके बहुत ही विषधर सर्पोंमेंसे एक प्रकारका सांप।

महाकपोल (सं० पु०) शिवानुचरभेद, शिवके एक अनुचरका नाम।

महाकम्बु (सं० पु०) महान् कम्बु ग्रीवा यस्य। शिव,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकर (सं० पु०) १ वृहत् हस्त, लंबा हाथ। २ अधिक खजाना, ज्यादा लगान। ३ बुद्धभेद, एक बोधिसत्त्व-का नाम। (त्रि०) ४ वृहत् हस्तयुक्त, जिसके बड़े बड़े हाथ हों। ५ महारश्मि।

महाकरञ्ज (सं० पु०) महांश्चासौ करञ्जश्चेति। करञ्ज-विशेष। इसका व्यवहार औषधके रूपमें होता है। वैद्यकमें इसे तीक्ष्ण, उष्ण, कटु तथा विष, कंडु, कुष्ठ, व्रण और त्वचाके दोषोंका नाशक माना गया है। संस्कृत पर्याय—पड्ग्रन्था, हस्तिचारिणी, उदकीर्ण, विषघ्नी, काकघ्नी, मदहस्तिनी, शारङ्गेष्टा, मधुमती, रसायनी, हस्तिरोहणक, हस्तिकरञ्जक, सुमनस्, काक-भाण्डी, मधुमञ्जा।

महाकरभ (सं०पु०) बौद्धोंके अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

महाकरम्भ (सं० पु०) एक प्रकारका पत्रविष।

महाकरुण (सं० त्रि०) महती करुणा यस्य। बहुत दयालु।

महाकरुण पुण्डरीक (सं० क्ली०) बौद्धसूत्र-ग्रन्थभेद।

महाकरुणाचन्द्रि (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

महाकर्कारु (सं० पु०) गुल्मभेद, एक प्रकारकी लता।

महाकर्ण (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ नागभेद, एक नागका नाम। (त्रि०) ३ वृहत् कर्णयुक्त, जिसके बड़े बड़े कान हों।

महाकर्णा (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेयकी एक मातृका नाम।

महाकर्णिकार (सं० पु०) महांश्चासौ कर्णिकारश्चेति। आरग्वध वृक्ष, अमलतास।

महाकर्म (सं० क्ली०) १ वृहत् कर्म, बड़ा काम। (पु०) २ विष्णु। (त्रि०) महत् कर्म यस्य। ३ महत् कर्मयुक्त।

महाकला (सं० स्त्री०) अमा नामक कला। इस दिन पितृकर्म प्रशस्त है।

महाकलोप (सं० पु०) कोई विशेष मतानुसारी सम्प्रदाय-भेद।

महाकल्प (सं० पु०) १ समयभेद, पुराणानुसार उतना समय जितनेमें एक ब्रह्माकी आयु पूरी होती है। २ शिव, महादेव। कल्प देखो।

महाकल्पतरु नाथ—एक जैन अर्हत्।

महाकल्याणगुड़ (सं० पु०) गुड़ौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पीपर, पिपरामूल, गजपीपर, धनिया, विड्ङ्ग, यमानी, मरिच, त्रिफला, वनयमानी, नीलीवृक्ष, जीरा, सैन्धव, शाम्भर लवण, सामुद्र लवण, सौवर्चल, विट् लवण, दारुचीनी, तेजपत्र, छोटी इलायची, काला जीरा, निशोथ ८ पल, गुड़ १२॥ सेर, तिलका तेल ८ पल, आँवलेका रस ८ पल, कुल मिला कर तीन प्रस्थ होना चाहिये। पीछे यथाविधान धीमी आंचेमें पाक करे। इसकी मात्रा पक्वडुमर फलके समान बतलाई गई है। कोई कोई आंवले वा बेरके बराबर भी इसकी मात्रा बतलाते हैं। चिकित्सकको चाहिये, कि वे रोगीके बलाबलके अनुसार मात्रा स्थिर कर दें। नियमपूर्वक इस औषधका सेवन करनेसे सब प्रकारके ग्रहणीरोग, बीस प्रकारके प्रमेह, उरोघात, प्रतिघात, दुर्बलता, अग्नि-मान्द्य तथा सब प्रकारके ज्वर नष्ट होते हैं। विशेषतः शरीरकी कान्ति, मति और बलवृद्धि, पाण्डुरोग, रक्तपित्त और मलरुद्धता नष्ट होती है। धातुक्षीण, वृद्ध स्त्रीप्रसङ्ग द्वारा क्षीण, क्षयरोगी और वन्ध्या स्त्रीके लिये यह विशेष लाभदायक है। ग्रहणी रोगमें तो इसे रामबाण ही सम-झना चाहिये। (भावप्र० ग्रहणीरोगाधि०)

महाकल्याणघृत (सं० क्ली०) घृतौषध विशेष। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर, शतमूलीका रस १६ सेर, दूध १६ सेर, चूर्णके लिये जीरा, श्वेत बहेड़ा, मजीठ, असगंध, हल्दी, काकोली, क्षीरकाकोली, मुलेठी, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, और देवदारु प्रत्येक वस्तु ८ तोला। घृत-पाकके नियमानुसार इसका पाक करना होगा। दाहा धिकारमें यह घृत अति उत्कृष्ट माना गया है। (रसेन्द्र)

महाकवि (सं० पु०) महाकाव्यके प्रणेता। जो महा-काव्यका प्रणयन कर यशस्वी हो गये हैं, वे ही महाकवि नामसे प्रसिद्ध हैं। बाल्मीकि, कालिदास, माघ, भारवि, श्रीहर्ष आदि महाकवि कहलाते हैं।

महाकात्यायन (सं० पु०) गौतमबुद्धके एक शिष्यका नाम।

महाकान्त (सं० पु०) १ शिव। (त्रि०) २ अतीव रमणीय, बहुत सुन्दर।

महाकान्ता (सं० स्त्री०) पृथ्वी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकान्तार—प्राचीन जनपदभेद। महाराज समुद्रगुप्तने यहांके अधिपति व्याघ्रराजको परास्त किया था।

महाकाय (सं० पु०) महान् कायोऽस्य। १ नन्दी, शिवका द्वारपाल। २ हस्ती, हाथी। महान् कायः शरीरमिति। ३ वृहत् शरीर। (त्रि०) ४ वृहत् शरीर-विशिष्ट, बड़ा शरीरवाला।

महाकाया (सं० स्त्री०) कुमारानुचर मातृविशेष।

महाकार (सं० त्रि०) १ सुवृहत्, बहुत बड़ा। २ वृहदाकार, बड़ा कदवाला।

महाकारण (सं० पु०) सर्व कर्मका नियन्ता वा कारणभूत परमेश्वर।

महाकार्त्तिकी (सं० स्त्री०) महती चासौ कार्त्तिकी चेति। रोहिणी नक्षत्रयुक्त कार्त्तिकी पूर्णिमा।

"प्राजापत्यं यदा ऋक्षं तथैतस्यां नराधिपः।
सा महाकार्त्तिकी प्रोक्ता देवानामपि दुर्लभा॥"

(पद्मपु० २।३ अ०)

कार्त्तिकी पूर्णिमाके दिन रोहिनी नक्षत्रका योग होनेसे महाकार्त्तिकी होती है। यह दिन देवताओंके लिये भी दुर्लभ है। इस दिन स्नान दानादि करनेसे अक्षय पुण्य होता है।

महाकाल (सं० पु०) महांश्चासौ कालश्चेति कर्मधा०। १ विष्णुस्वरूप अखण्ड दण्डायमान काल। जैसे,—

"कालो घटवान् महाकालत्वात्" (सिद्धान्तलक्षण)

२ महादेव। सर्वभूतका कलन अर्थात् संहार करते हैं, इससे इनका नाम महाकाल है।

"कलनात् सर्वभूतानां महाकालः प्रकीर्त्तितः।
महाकालस्य कलनात् त्वमाद्या कालिका परा॥"

(महानिर्वाण ४।३१)

३ प्रमथगणविशेष। (मेदिनी) ४ उज्जयिनीस्थित शिवलिङ्गभेद। कथासरितसागरमें लिखा है,—उज्जयिनी नगर पृथ्वीका भूषण है। यहांका सुधाधवलित सौम्यसौधावली सौन्दर्य गर्वसे मानो इन्द्रकी अमरावतीका परिहास कर रही है। और तो क्या,—भगवान् कैलाशनाथ कैलाशको भूल कर स्वयं यहां महाकालके रूपमें विराज रहे हैं।

"अस्तीहोज्जयिनी नाम नगरी भूषणं भुवः।
हसन्तीव सुधा धौतैः प्रासादैरमरावतीम्॥
यस्यां वसति विश्वेशो महाकालवपुः स्वयम्।
शिथिलीकृतकैलासनिवासव्यसनो वपुः॥"

(कथासरित्सा० ११।३१-३२)

प्राचीन नाटक आदि पुस्तकोंमें भी उज्जयिनीके शिवलिङ्गका उल्लेख मिलता है। महाकवि कालिदासने अपने मेघदूतमें प्रियाविरह-विधुर यक्ष द्वारा अपनी पत्नीका समाचार लानेके लिये मेघको अलकापुरी भेजते समय उज्जयिनीके इन महाकाल शिवको प्रणाम करके जानेको कहा है।

काव्य नाटकादि ग्रन्थोंमें इस शिवलिङ्ग मूर्त्तिको महाकाल, महाकालनाथ, महाकाल-निकेतन, महाकाल वपु आदि विविध नामोंसे सम्बोधन किया गया है।

उज्जयिनी देखो।

महाकवि भवभूतिने अपने उत्तर रामचरित नाटककी प्रस्तावनामें कालप्रियनाथके नामसे सम्भवतः इन्हीं महाकालका परिचय दिया है,—"अद्य खलु भगवतं कालप्रियनाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामः।"

(उत्तररामचरित १म अङ्क)

उज्जयिनी नगरीमें शिप्राके पूर्व ओर पिशाच मुक्तेश्वरघाटके पूर्व-दक्षिणमें इन महाकालका प्रकाण्ड मन्दिर विराजमान है। ५ महाभारतोक्त तीर्थविशेष। इस तीर्थमें पहुंच संयतभावसे रह कर कोटितीर्थ स्पर्श करनेसे अश्वमेध-यज्ञका फल होता है।

"महाकालं ततो गच्छेत् नियतो नियताशनः।
कोटीतीर्थमुपस्पृश्य हयमेधफलं लभेत्॥"

(महाभारत ३।८२।४७)

६ लताविशेष। इसका पर्याय—उरुकाल, किम्पाक, काकमर्दक काकमर्द, देवदालिका, दाला, दलिका, जलङ्ग, घोषकाकृति।

"अन्तर्मलिनदेहे न वहिराह्लादकारिणा।
महाकालफलेनेव कः खलेन वञ्चितः॥" (उद्भट)

७ शिवपुत्रभेद। उनकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कालिकापुराणमें लिखा है,—देवोंने शङ्करके वीर्यधारणके लिये अग्निको आज्ञा दी। अग्नि तैयार हुई, यथासमय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिववीर्य अग्निमें डाला गया। किन्तु डालते समय इसके दो विन्दु अग्निके बाहर पर्वत पर गिर गये। इन्हीं दो विन्दुओंसे शङ्करके दो पुत्र उत्पन्न हुए। ब्रह्माने एकका महाकाल और दूसरेका भृङ्गी नाम रखा। भृङ्गी और महाकाल दोनों ही काले रंगके थे। भगवान् शङ्कर इन दोनोंका रक्षणावेक्षण करते रहे।

एक दिन किसी एक निभृत स्थानमें शङ्कर शङ्करीके साथ क्रीड़ा कर रहे थे। भृङ्गी और महाकपाल उस गुप्त स्थान पर पहरा देते थे। सम्भोगके बाद शङ्करी जब बाहर निकलीं, तब उक्त दोनों भाई की निगाह उन पर पड़ गई। इस पर शङ्करीने लज्जाके मारे शिर झुका लिया। भृङ्गी और महाकाल भी माताको उस अवस्थामें देख कर बहुत लजा गये। ऐसे निभृत समयमें किसीको भी ऐसा अधिकार न था कि शङ्करीको देखें। अतएव शङ्करी पहले तो बहुत लज्जित हुई, पर पीछे उन दोनों पर बहुत बिगड़ीं। उनका क्रोध देख कर दोनों भाई बहुत डर गये। शङ्करीने उन्हें उसी समय शाप दिया। उस शापसे भृङ्गी और महाकालने मनुष्य योनिमें जन्म लिया और उनका मुख बन्दर-सा हो गया।

भृङ्गी और महाकालकी मानुषी माताका नाम तारावती था। तारावती रूपवती थीं। एक दिन वह किसी उच्च सौधशिखर पर खड़ी थीं मानो वासन्ती प्रतिमा भूतलमें अवतीर्ण हुई हो। शङ्कर शङ्करीके साथ गगन मार्गसे जा रहे थे। इस समय शङ्करने तारावतीको देखा। उन्होंने शङ्करीसे कहा, 'प्रिये! यह मानुषी मूर्त्ति तुम्हारे महाकाल और भृङ्गीकी माता तारावतीकी है। मैं तुम्हारे सिवा किसीको भी अपना अङ्कशायिनी बनाना नहीं चाहता। अतएव तुम तारावतीके शरीरमें प्रवेश करो जिससे मैं फिर भृङ्गी और महाकालको उत्पन्न करूं।' भवकी बातको भवानीने स्वीकार कर लिया और तारावतीके शरीरमें प्रवेश किया। शिवके संसर्गसे तारावती गर्भवती हुईं। यथासमय भृङ्गी और महाकाल फिर उत्पन्न हुए, किन्तु उनका वानरत्व नहीं गया। यानी दोनोंका बन्दरका-सा ही मुंह रह गया।

कालिकापुराणमें लिखा है—महाकाल और भृङ्गीने मर्त्यमें आ कर वैताल भैरव नामसे जन्म लिया। महादेवने स्नेहवशतः महाकालको अपने भक्त वलिसुत वाणरूपमें उत्पन्न किया।

कालिकादेवीकी पूजा करनेके बाद दाहिनी ओर इसमहाकालकी पूजा करनी पड़ती है। इनके तीन नेत्र, आकृति धूम्रवर्ण, दोनों हाथोंमें दण्ड और खट्वाङ्ग, मुख दंष्ट्रान्वित, भयङ्कर और कटि व्याघ्रचर्मसे आवृत है। देहाकृति स्थूल (मोटा) है। वदनका वस्त्र लाल है। केश ऊपरको उठे हुए हैं। गलेमें मुण्डमाला है। कपाल जटासे भरा हुआ है और चन्द्रखण्डकी तरह धक-धक चमकता है। इन महाकालका ध्यान—

"महाकालं यजेद्देव्या दक्षिणे धूम्रवर्णकं।
विभ्रतं दण्डखट्वाङ्गौ दंष्ट्राभिमुखं शिशुं॥
व्याघ्रचर्मावृतकटिं तुन्दिलं रक्तवाससं।
त्रिनेत्रमुर्द्ध्वकेशञ्च मुण्डमालाविभूषितम्।
जटाभारलसच्चन्द्रखण्डमुग्रं ज्वलन्निभं॥"

कुमारीकल्पमें महाकालका मन्त्र इस तरह लिखा है,—"हुं क्षौं कां रां लां वां क्रों महाकाल भैरव सर्वविघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं फट स्वाहा।"

मन्त्रोच्चारण पूर्वक पाद्यादि द्वारा महाकालकी पूजा सम्पन्न करनेके बाद मूलमन्त्रसे देवीको तीन बार तर्पण करे। पीछे पञ्चोपचारसे उनकी पूजा करनी होती है।

कालीतन्त्रमें लिखा है—मन्त्रसे महाकालकी पूजा करनेके बाद देवीकी पूजा करनी चाहिये।

"महाकालं यजेद् यत्नात् पश्चाद्देवीं प्रपूजयेत्।"

(कालीतन्त्र)

तन्त्रसारमें महाकालके मन्त्रोद्धारके बारेमें इस तरह लिखा है,—

"कवचं क्षौं समुद्धृत्य यां रां लांवाञ्च क्रान्ततः।
महाकाल भैरवेति सर्वविघ्नान्नाशयेति च॥
नाशयेति पुनः प्रोच्य मायां लद्मीं समुद्धरेत्।
फट् स्वाहया समायुक्तो मन्त्रः सर्वार्थसाधकः॥"

(तन्त्रसार)

महाकालके इस तरह मन्त्र जापसे सर्वसिद्धि लाभ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है। किसी तरह दुःखरोग, आपद विपद आ पड़ने पर यह तन्त्रोक्त महाकाल-मन्त्र विधिपूर्वक जपनेसे उसकी शान्ति होती है।

३ शिवानुचर भेद। ४ आचार्यभेद। ५ गुल्मभेद। ६ आम्रवृक्षभेद।

महाकालवेय (सं० पु०) सम्प्रदायभेद।

महाकाली (सं० स्त्री०) महाकाल पत्न्यर्थे स्त्रियां ङीष्। महाकालकी पत्नी। इसके पांच मुख और आठ भुजाएं मानी जाती हैं। देवीभागवतमें लिखा है, कि यह देवी पराशक्तिकी तामसीशक्ति है।

"तस्यान्तु सात्त्विकी शक्ति राजसी तामसी तथा।
महालक्ष्मीः सरस्वती महाकालीति ताः स्त्रियः॥"
(देवीभा० १।२।२०)

२ दुर्गाकी एक मूर्त्तिका नाम। ३ शक्तिकी एक अनुचरीका नाम। ४ जैन मतानुसार षोड़श विद्यादेवीके अन्तर्गत एक। यह अवसर्पिणीके पांचवें अर्हतकी देवी हैं।

महाकालेय (सं० क्ली०) सामभेद।

महाकालेश्वर (सं० पु०) उज्जयिनीस्थ शिवलिङ्गभेद।

महाकालेश्वर रस (सं० पु०) रसौषधविशेष। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—लोहा, दस्ता, तांवा, अवरक, पारा, गंधक, सोनामक्खी, हिंगुल, विष, जायफल, लवङ्ग, दारचीनी, इलायची, नागेश्वररस, धतूरेका बीज और जयपालका बीज प्रत्येक १ तोला, मरिच ३ तोला इन्हें भांगकी पत्तीके रसमें २१ बार भावना दे कर १ रत्तीकी गोली बनावे। अनुपान अदरकका रस माना गया है। बच्चों और बूढ़ोंके लिये आध रत्तीकी मात्रा बतलाई गई है। इसका सेवन करनेसे खांसी, दमा और गलेका रोग जाता रहता है। (भैषज्यरत्ना० कासाधिका०)

महाकालोप (सं० पु०) सम्प्रदायविशेष।

महाकाव्य (सं० क्ली०) महच्च तत् काव्यञ्चेति कर्मधा०। काव्यशास्त्रविशेष। पर्याय—सर्गबन्ध।

रसात्मक वाक्यका नाम काव्य है। श्रुति पुष्ट्यादि दोष देहकी विकृति खञ्जत्वादिकी तरह इस काव्यका अपकर्ष साधक है। फिर माधुर्यादि गुण, गौड़ी, पाञ्चाली आदि रीति तथा अनुप्रास, उपमा प्रभृति शब्द और अर्थालङ्कार शब्द भी इसका उत्कर्ष विधायक है।

"काव्यं रसात्मकं वाक्यं दोषास्तस्यापकर्षकाः।
उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालङ्काररीतयः।"
(साहित्यदर्पण २।५)

रसगङ्गाधरके मतसे आनन्दविशेषजनक जो वाक्य है, वही काव्य है।

"आनन्दविशेष-जनकवाक्यं काव्यम्॥" (रसगङ्गाधर)

कौस्तुभके मतसे—

"कवि वाङ् निर्मितं काव्यं।
सा च मनोहर-चमत्कारिणी रचना॥"

अर्थात् जो कविकी कवित्वपूर्ण बातोंमें रचा हुआ मनोहर, फिर भी चमत्कारपूर्ण होता है, उसी रचनाको काव्य कहते हैं।

उक्त लक्षणान्वित काव्य दो प्रकारका है; दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य। जो काव्य केवल अभिनयके उपयोगी हैं, उन सबको दृश्य और जो केवल श्रवण करनेके उपयोगी हैं, वे श्रव्यकाव्य हैं।

फिर यह श्रव्यकाव्य भी दो तरहका है। कितने ही खण्डकाव्य और कितने ही महाकाव्य हैं। इस समय महाकाव्यके सम्बन्धमें कुछ कहेंगे। महाकाव्य क्या है और वह किस तरह रचा जायेगा तथा इसकी किस विषय पर रचना होगी?

जो सब काव्य एक एक सर्गसे ग्रंथित है और अलङ्कार शास्त्रानुसार जिनके सारे अवयव संगठित हैं, वही महाकाव्य कहलानेके योग्य हैं।

साहित्यदर्पणके मतसे महाकाव्य सर्ग द्वारा ग्रथित या आवद्ध होगा। किन्तु इस सर्गका बहुत छोटा या बहुत बड़ा होना दोषावह है। इसकी संख्या आठसे कम न हो सकेगी। वरं आठसे भी अधिक सर्ग द्वारा महाकाव्यका विभाग करना उचित है। कविके इच्छानुसार सर्गके अन्तर्गत कविताओंको किसी एक छन्दमें रचना कर अन्तमें वृत्तान्तकी योजना करनी चाहिये। सर्गोंमें कोई सर्ग अधिकांश नाना तरहके छन्दों या वृत्तोंमें विरचित देखा जाता है। प्रत्येक सर्गके अन्तमें भावी सर्गमें जो वर्णन किया जायेगा, उसका आभास रहना ही चाहिये।

महाकाव्यमें शृङ्गार, वीर अथवा शान्त इन्हीं तीनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसोंमें एक रस अङ्गी रहेगा। सिवा इसके हास्य, करुण, वीभत्स आदि रस इसमें अङ्गरूपसे वर्णित होंगे। किसी ऐतिहासिक घटना अथवा दूसरे किसी साधुकी चरित-रचनामें इसका प्रणयन-कार्य निर्वाह करना होता है। इससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार वर्गोंका आवश्यकतानुसार समावेश करना चाहिये। फिर इसमें एक सर्गमें इसके प्रतिपाद्य विषय-की वर्णना होगी। इसमें नाटकोक्त सन्धि अर्थात् मुखादि पञ्चकका प्रयोग करना होता है।

महाकाव्यके आदिमें नमस्कार, आशीर्वाद अथवा वस्तुनिर्देश रहना चाहिये। कहीं कहीं दुष्टोंकी निन्दा और साधुजनका गुणकीर्त्तन भी दिखाई देता है। महा-काव्यके वर्णन करनेका विषय बहुत है। इनमें निम्न लिखित साधारणतः विशेष आवश्यक हैं। यथा,—सन्ध्या सूर्य, चन्द्र, प्रदोष, रात्रि, पथ, दिवस, प्रातःकाल और मध्याह्नकाल, मृगया, पर्वत, ऋतु, वन, सागर, सम्भोग, विप्रलम्भ, मुनि, स्वर्ग, पुरी, यज्ञ, युद्ध, प्रयाण, विवाह, मन्त्रणा और पुत्रोत्पत्ति आदि। सिवा इसके जल-केलि और मधुपान आदि भी इसके वर्णनीय विषय हैं।

जो काव्य रचना करते हैं, उनके नामानुसार अथवा जिस घटना पर काव्य रचा जाता हो, उस घटना अथवा काव्यका नायक अथवा कोई दूसरे नामसे महाकाव्यका नामकरण करना होगा। कविके नाम—माघ, भारवि आदि। घटना और वृत्तान्तका नाम—कुमारसम्भव आदि। नायकके नाम—रघुवंश आदि। अन्य नाम यथा भट्टि इत्यादि। किन्तु काव्यके अन्तर्गत सर्गोंके नाम रखनेमें उपादेय कथाओंके आधार पर रखना चाहिये।

महाकाव्यका नायक देव अथवा धीरोदात्त गुणसम्पन्न सद्वंशजात कोई क्षत्रिय होना चाहिये। धीरोदात्त कौन हैं? जो हर्ष और शोकके वशीभूत नहीं होते, जिनका गर्व विनयकी आड़में है, जो प्रतिज्ञा पालनमें तत्पर रहते हों, जो आत्मश्लाघा नहीं करते, जो क्षमाशील गम्भीर स्वभावके हैं वे ही व्यक्ति धीरोदात्त कहे जा सकते हैं। यथा,—युधिष्ठिर, राम आदि।

महाकाश (सं० पु०) १ एक पर्वतका नाम। (त्रि०) २ महादीप्तियुक्त, बहुत चमक दमकवाला।

महाकाशी (सं० स्त्री०) मतङ्गजोंका देवताभेद।

महाकाश्यप (सं० पु०) गौतम बुद्धके एक शिष्यका नाम।

महाकीटपर्वत (सं० पु०) गन्धमादनके अन्तर्भुक्त एक पर्वतका नाम।

महाकुक्कुटमांसतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, काढ़ेके लिये उड़द ४ सेर, दशमूल ६। सेर, बिजबंदका मूल २५ पल, केतकी मूल २५ पल, मुर्गेका मांस ३० पल, झाटीका मूल २५ पल, पाकार्थ जल १२८ सेर, शेष ३२ सेर। चूर्णके लिये जीवकादि अष्टवर्ग, पिपरामूल, मुलेठी, कुट, उड़द, अल-कुशीका बीज, अंडोका मूल, सोया, विट, सैन्धव और शाम्भर लवण, पीपर, असगंध, गुलञ्च, अजवायन, इन्द्र-जौ, शतमूली, कचूर, सोंठ, मोथा, पुनर्णवा, हरिद्रा, दार-हरिद्रा, कटाई और भटकटैया प्रत्येक दो तोला। पीछे तैलपाकके विधानानुसार इसका पाक करें। इस तेलकी मालिश करनेसे पक्षाघात श्रवणशक्ति और दृष्टिशक्तिकी अल्पता, हस्तकम्प, शिरःकम्प, बधिरता, कर्णनाद, दण्डा-पतानक, मन्यास्तम्भ, हनुस्तम्भ, सूतिकारोग, अन्त्रवृद्धि और वातरक्त आदि नाना प्रकारकी पीड़ायें बहुत जल्द आरोग्य होती हैं।

महाकुण्ड (सं० पु०) शिवानुचरभेद, शिवके एक अनु-चरका नाम।

महाकुमार (सं० पु०) युवराज, शाहजादा।

महाकुमुदा (सं० स्त्री०) महती चासौ कुमुदा चेति कर्मधा०। काश्मरी, गंभारी।

महाकुम्भी (सं० स्त्री०) महतो चासौ कुम्भी चेति। काय-फल।

महाकुल (सं० त्रि०) महत् कुलं वंशोऽस्य। १ उत्तम-कुलजात, वह जो बहुत उत्तम कुलमें उत्पन्न हुआ हो। पर्याय—कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु, कुल्य, अभिजात, कौलेयक, जात्य, माहाकुल, कौलेय, कौलेयक, कुलज, साधुज, कुलश्रेष्ठ।

(क्ली०) २ उत्तम कुल, उत्तमवंश।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकुलीन (सं० क्ली०) महाकुलस्य अपत्यं महाकुल (महाकुलादञ् खञौ। पा ४।१।१४१) इति पक्षे ख। महाकुल, उत्तम वंश।

महाकुष्ठ (सं० क्ली०) महच्च तत् कुष्ठञ्चेति। कुष्ठके अठारह भेदोंमेंसे वह जिसमें हाथ पैरकी उंगलियां गल कर गिर जाती हैं। कपाल, उदुम्बर, मण्डल, सिध्म काकणक, पुण्डरीक और ऋक्षजिह्व ये सात महाकुष्ठ हैं।

कापालकुष्ठका लक्षण—चमड़ के ऊपर खपडे की तरह कुछ काला और कुछ लाल, रूखा, कर्कश तथा तकलीफ देनेवाला चिह्न दिखाई देनेसे उसे कापालकुष्ठ कहते हैं। इस रोगको असाध्य समझना चाहिये।

औदुम्बर—जो कुष्ठ गूलरके जैसा लाल होता है। जिसमें जलन और खुजलाहट मालूम होती है तथा जिसके ऊपरके रोएं तामडे, रंगके दिखाई देते हैं, उसका नाम औदुम्बर है।

मण्डल—जो कुष्ठ कुछ सफेदी लिये लाल होता है, चिकनाहट मालूम होती है तथा जो मण्डलाकारमें निकल कर एक दूसरेसे मिल जाते हैं उसे मण्डलकुष्ठ कहते हैं।

सिध्म—जिस कुष्ठका चमड़ा कद्दू के फूलके जैसा सफेद और तामड़े रंगका होता है तथा घिसने पर जिससे धूलीके जैसा निकलता है उसका नाम सिध्म-कुष्ठ है। यह रोग प्रायः वक्षस्थलमें हुआ करता है।

काकणक—जिस कोढ़का रंग घुंघची फलके जैसा गहरा लाल और दोनों बगल काला अथवा बीचमें काला और दोनों बगल लाल होता है तथा जो बहुत कष्ट देता है अथवा पक जाता है उसे काकणक कुष्ठ कहते हैं। यह कोढ़ त्रिदोषके बिगड़नेसे उत्पन्न होता है।

पुण्डरीक—जिस कुष्ठका चित्ता लाल कमलके पत्ते-के जैसा सफेदी लिये लाल होता है; उसे पुण्डरीक-कुष्ठ कहते हैं।

ऋक्षजिह्व—जो कुष्ठ तक्षककी जीभके जैसा कर्कश, तकलीफ देनेवाला तथा किनारेमें लाल और काला होता है, उसे ऋक्षजिह्व कहते हैं। यही सात प्रकारका महा-कुष्ठ है। (भावप्र०) विशेष विवरण कुष्ठरोग शब्दमें देखो।

कुष्ठरोग दुश्चिकित्स्य है, इसमें महाकुष्ठको एक तरह-से असाध्य कहा जा सकता है। यह रोग महापातकसे उत्पन्न होता है। जिसे यह रोग होता है उसे पहले शास्त्रानुसार प्रायश्चित्त करके ब्रह्मचर्य अवलम्बन करते हुए रोगकी चिकित्सा करनी चाहिये। दैव द्वारा ही यदि यह रोग आरोग्य हो जाय तो बहुत अच्छा, नहीं तो चिकित्सासे आरोग्यता पानेकी कम आशा। यदि किसी-की इस रोगसे मृत्यु हो जाय, तो उसका प्रायश्चित्त करके दाहादि करना होगा। यदि कोई बिना प्रायश्चित्त के उसका दाहादि संस्कार करे, तो लाश ढोनेवाले सबोंको प्रायश्चित्त लेना होगा।

महाकूट (सं० पु०) पुराणानुसार एक देशका नाम।

महाकूटेश्वर—शिलालिपि वर्णित एक प्राचीन नगर।

महाकूप (सं० पु०) महाश्चासौ कूपश्चेति। वृहत् कूप, बड़ा कुआं। इसका पर्याय अरघट्ट है।

महाकूर्म (सं० पु०) नरपतिभेद, एक राजाका नाम।

महाकूल (सं० त्रि०) ऊंचा किनारावाला।

महाकृच्छ्र (सं० क्ली०) १ कृच्छ्रातिकृच्छ्र। २ विष्णुका एक नाम। (भारत शान्तिप०)

महाकृत्यापरिमल (सं० पु०) मन्त्रविशेष।

महाकृष्ण (सं० पु०) १ दर्वीकर सर्पविशेष, सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका बहुत जहरीला सांप। २ मूषिक विशेष, एक प्रकारका चूहा।

महाकृष्णा (सं० स्त्री०) कृष्ण अपराजिता।

महाकेतु (सं० त्रि०) १ दीर्घ पताकायुक्त, जिसमें लंबी पताका फहराती हो। (पु०) २ शिव, महादेव।

महाकेश (सं० त्रि०) १ सुवृहत् केशशाली, जिसके बड़े बड़े बाल हों। (पु०) २ शिव, महादेव।

महाकेशरी (सं० स्त्री०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—सोना, दस्ता, लोहा, पारा, मुक्ता, दारचीनी, छोटी इला-यची, तेजपत्र और नागकेशर इनका बराबर बराबर भाग ले कर अच्छी तरह चूर्ण करे। पीछे उसे उतने ही घृत-कुमारीके रसमें घोंट कर दो माशेकी गोली बनावे। इसका सेवन करनेसे तीन दिनमें शुक्रमेह और पुराना मधुमेह नष्ट होता है। इसका पथ्य दूध और अन्न है। (रसेन्द्रसारस० सोमरोगाधि०)

महाकोट—एक प्राचीन नगर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकोश (सं० पु०) १ सुवृहत् कोशयुक्त । (Scro tum) २ शिव ।

महाकोशफला (सं० स्त्री०) महान् कोशः फले यस्याः । देवदाली लता, घघर वेल ।

महाकोशा (सं० स्त्री०) १ एक नदीका नाम । २ मत-ङ्गजोंका देवताविशेष ।

महाकोशातकी (सं० स्त्री०) महती चासौ कोशातकी चेति । हस्तिघोषा, ननुआं, घीआ-तरोई नामकी तरकारी । यह स्निग्ध, रक्त, पित्त और वायुदोषनाशक मानी गई है ।

महाकौषीतक (सं० क्ली०) आश्वलायनगृह्यसूत्रोक्त वैदिक ग्रन्थविशेष ।

महाकौष्ठील (सं० पु०) गौतम बुद्धके एक शिष्यका नाम ।

महाक्रतु (सं० पु०) वहुत वड़ा यज्ञ । जैसे—राजसूय, अश्वमेध आदि ।

महाक्रम (सं० त्रि०) विष्णुका एक नाम ।

महाक्रोध (सं० त्रि०) १ मूर्त्तिमान् क्रोधके जैसा । (पु०) २ शिव, धूर्जटी ।

महाक्रीतन (सं० पु०) शालपर्णी ।

महाक्रीतनिका (सं० स्त्री०) शालपर्णी ।

महाक्ष (सं० पु०) १ महादेव । २ विष्णु ।

(भारत १३।१४६।५१)

महाक्षत्रप (सं० पु०) १ श्रेष्ठ क्षत्रप । २ राजाकी एक उपाधि । क्षत्रप-राजवंश देखो ।

महाक्षपणक—काश्मीरके रहनेवाले एक पण्डित । आप अनेकार्थध्वनि मञ्जरी और एकाक्षरकोष नामक दो अभि धान लिख गये हैं ।

महाक्षार (सं० पु०) तेजस्कर क्षारविशेष ।

महाक्षीर (सं० पु०) इक्षुवृक्ष, ईख ।

महाक्षेत्र—कालिकापुराण-वर्णित एक तीर्थका नाम । यह सुमदना नदीके पूर्व और ब्रह्मक्षेत्र तीर्थके पश्चिममें अवस्थित है । यहां आदित्य नामक भैरवकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है । देवमन्दिरके पूरव त्रिसोता नामक नदी तथा कपोत और करुण नामक दो कुण्ड हैं । दोनों कुण्डमें स्नान कर निकटवर्त्ती विभ्राट पर्वत पर सूर्यकी पूजा करनेसे अशेष पुण्य प्राप्त होता है और अन्तमें सूर्य-लोककी प्राप्ति होती है । (कालिकापु०)

महाक्षोभ्य (सं० पु० बौद्धोंके अनुसार एक वहुत वड़ी संख्या ।

महाखदिरघृत (सं० क्ली०) घृतौषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—घी १६ सेर ; काढ़ेके लिये खैरकी छाल ५०० पल, शीशमके पेड़की छाल १०० पल, असनकी छाल १०० पल, करञ्जकी छाल, नीमकी छाल, वेंतकी छाल, क्षेत्रपर्पटी, कूटजकी छाल, अड़ूसकी छाल, विड़ङ्ग, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, अमलतास, गुलञ्च, त्रिफला और निसोथ प्रत्येक ५० पल, जल ६४० सेर, शेष ८० सेर, चूर्णके लिये अतीस, अमलतास, कटकी, अकवन-का मूल, मोथा, खसखसका मूल, त्रिफला, परवलका पत्ता, नीमकी छाल, पित्तपापड़ा, दुरालभा, लाल चन्दन, पीपर, गजपीपर, पद्मकाष्ठ, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, वच, गोपालकर्कटी, शतमूली, श्यामालता, अनन्तमूल, इन्द्रजौ, अड़ूसकी छाल, मूर्वाका मूल, गुलञ्च, चिरायता, मुलेठी और गूगर प्रत्येक द्रव्य एक पल । पीछे घृत-पाकके नियमानुसार इस घृतका पाक करे । इसके सेवनसे कुष्ठरोग आरोग्य होता है ।

(चरकचिकित्सा ७ अ०)

महाखर्व (सं० पु०) एक वहुत वड़ी संख्या जो सौ खर्वकी होती है ।

महाखल्वल (सं० पु०) सम्प्रदायभेद ।

महाखात (सं० त्रि०) १ विस्तृत खातयुक्त, वहुत लंवा चौड़ा गड्ढा । (क्ली०) २ सुप्राचीन खातादि, पुराने जमानेके गड्ढे ।

महाख्यात (सं० त्रि०) विख्यात, मशहूर ।

महाग (सं० त्रि०) महान् उच्चगतिर्यस्य । उन्नत, समृद्ध ।

महागङ्गा (सं० स्त्री०) नदीभेद, महाभारतके अनुसार एक नदीका नाम ।

महागज (सं० पु०) दिग्गज ।

महागण (सं० पु०) १ महासमुद्र । २ लोकसङ्घ, लोगों-का समूह । ३ अतिथिपुंज, अभ्यागतोंका समूह ।

महागणपति (सं० पु०) १ गणेशका एक नाम । २ शिव-के एक अनुचरका नाम ।

महागणेश (सं० पु०) गणेशका एक नाम ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महागति (सं० स्त्री०) १ उत्कृष्ट गति, जाने योग्य पथ। २ महापथ, बड़ा रास्ता। (स्त्री०) ३ बौद्धमतसे अत्यन्त छोटी संख्या।

महागद (सं० पु०) महांश्चासौ गदश्चेति। १ ज्वर। २ महारोग। वातव्याधि, प्रमेह, कुष्ठ, अर्श, भगन्दर, अश्मरी, मूढ़गर्भ और उदरी ये आठ महागद माने गये हैं। ये सभी दुःस्साध्य रोग हैं। ३ औषधविशेष, निसोथ, गुलञ्च, मुलेठी, रक्ता, लवणवर्ग, सोंठ, पिप्पली और मरिच इन्हें अच्छी तरह पीस कर मधुके साथ गोशृङ्गमें रखे। इस अगदका पान, अञ्जन, अभ्यङ्ग, और नस्यमें व्यवहार करनेसे विषदोष जाता रहता है। (त्रि०) महती गदा अस्य। ४ महागदाविशिष्ट, जिसके पास बहुत भारी गदा हो।

महागदमहीरुह (सं० पु०) वृक्षभेद, एक प्रकारका पेड़।

महागन्ध (सं० पु०) महा गन्धोऽस्य। १ कूटजवृक्ष। २ जलवेतस, जलबेंत। ३ हरिचन्दन। ४ बोल, एक प्रकारका सुगंधित गोंद। (त्रि०) ५ गन्धयुक्त, खुशबूदार।

महागन्धक (सं० क्ली०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा २ तोला और गन्धक २ तोला इन्हें एक साथ पीस कर काजल बनावे। पीछे उसे जलमें घोल कर गाढ़ा करे और तब लोहेके बरतनमें रख कर धीमी आंच पर चढ़ावे। जब थोड़ा गरम हो जाय, तब उसमें जायफल, जायित्री, लवङ्ग और नोमकी पत्ती प्रत्येक दो तोला डाल कर अच्छी तरह घोंटे। इसके बाद उसे एक घोंघेमें रख कर दूसरे घोंघेसे ढंक दे और ऊपरसे मिट्टीका लेप चढ़ावे। अनन्तर उसे गोंइठेकी आंचमें पकावे। जब कुछ लाल हो जाय, तब अच्छी तरह परिष्कार कर लेवे। इसकी मात्रा ६ रत्ती है। रोगकी अवस्थाके अनुसार अनुपान बतलाया गया है। इसका सेवन करनेसे ग्रहणी, अतीसार, सूतिकारोग तथा ज्वर आदि विविध पीड़ाओंकी शान्ति होती है। (भैषज्यरत्नावली ग्रहणीरोगाधिका०)

महागन्धा (सं० स्त्री०) महान् गन्धो यस्या स्त्रियां टाप्। १ नागबला। २ केविका पुष्प, केवड़ा। ३ चामुण्डाका एक नाम।

महागय (सं० त्रि०) महद्देवता कर्त्तृक गेय वा यज्ञगृहयुक्त।

महागर्त्त (सं० पु०) विष्णु।

महागर्भ (सं० पु०) १ शिव। २ महोदर। ३ दानवभेद।

महागल (सं० त्रि०) दीर्घग्रीवयुक्त, जिसकी गरदन ऊंट या बगुलेकी सी लंबी हो।

महागव (सं० पु०) महांश्चासौ गौश्चेति (गोरतद्धितलुकि। पा ५।४।९२) इति समासान्तटच्, गोसदृशत्वादस्य तथात्वं। गवय, गायके जैसा वह पशु जिसके गलेमें झालर न हो। गवय देखो।

महागिरि (सं० पु०) १ बड़ा पहाड़। २ कुबेरके आठ पुत्रोंमेंसे एक। यह पिताके शिवपूजनके लिये सूंघ कर कमलपुष्प लाया था। इसी दोष पर कुबेरने इसे शाप दिया जिससे यह कंसका भाई हुआ। पीछे यह कृष्णके हाथसे मारा गया था।

महागोत (सं० पु०) शिव।

महागुण (सं० त्रि०) १ उत्तमगुणविशिष्ट, जिसमें अच्छे अच्छे गुण हों। (पु०) २ श्रेष्ठगुण। ३ आचार्यभेद।

महागुद (सं० पु०) एक प्रकारके कीड़े, जो कफसे उत्पन्न होते हैं।

महागुनी (हिं० पु०) महोगनी देखो।

महागुरु (सं० पु०) महांश्चासौ गुरुश्चेति। अतिगुरु। पुरुषके पिता, माता तथा आचार्य ; अविवाहिता कन्याके पिता, माता और विवाहिता कन्याके स्वामी ही एकमात्र महागुरु हैं।

महागुरुके निपात अर्थात् महागुरुके मरने पर अक्षारलवणभोजन और अङ्गास्पर्श, इन दोनों विषयोंमें अशौचका गुरुत्व होता है। अर्थात् किसीको स्पर्श न करे और न नमकीन वस्तु ही खाये। आचार्य महागुरुका यदि देहान्त हो, तो तीन दिन अशौच मानना होता है, इस कारण पूर्वोक्त विधान आचार्यसम्बन्धमें नहीं है। पिता, माता और दत्ता कन्याके स्वामिसम्बन्धमें ही पूर्वोक्त नियम लागू है।

"त्रयः पुरुषस्यातिगुरवो भवन्ति, माता पिता आचार्यश्चेति, इति विष्णुसूत्रं" पत्युर्महागुरुत्वमाह—

"नातो विशिष्टं पश्यामि बान्धवं वै कुलस्त्रियाः।
पतिर्बन्धुर्गतिर्भर्त्ता दैवतं गुरुरेव च॥"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शातातपः—"गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वत्राभ्यागतो गुरुः॥"
एक पदेन दत्तस्त्रीणां पितुमातृव्यावृत्तिः। सपिण्डमरणं प्रकृत्य-आश्वलायनः—त्रिरात्रं अक्षारलवणान्नाशिनः स्युर्द्वादशरात्रं महागुरुषु। आचार्यश्च—
उपनीय ददद्वेदमाचार्यः स उदाहृतः। इति याज्ञवल्क्योक्तः तन्मरणे त्रिरात्राशौचत्वेन नैताद्वङ् नियमः।"
(शुद्धितत्त्व)

महागुरुके मरने पर एक वर्ष तक कालाशौच होता है। सपिण्डीकरण होने पर यह अशौच जाता रहता है। यदि एक वर्षमें सपिण्डीकरण न हो, तो जब तक सपिण्डकरण नहीं होगा, तब तक अशौच रहेगा। यदि किसीका एक वर्षमें अपकर्ष सपिण्डीकरण हो; तो सपिण्डीकरणके बाद ही कालाशौच दूर होगा। 'यावत् पूर्णो न वत्सरः' इस शास्त्रोक्त वाक्य द्वारा यह जाना जाता है, कि एक ही वर्ष विहित काल है, इसीसे वर्ष कहा गया है। विशेष विधानानुसार जब सपिण्डीकरण होगा, तभी अशौच जायेगा। महागुरुनिपातमें किसी काम्यकर्मका अनुष्ठान नहीं करना चाहिये। अलावा इसके आर्त्विज्य अर्थात् ऋत्विकका कार्य, पौरोहित्य, ब्रह्मचर्य, अन्य व्यक्तिका श्राद्ध, परान्नभोजन, गन्ध, माल्य, मैथुन, तीर्थयात्रा, विवाह, अध्यापन, तर्पण, शिवपूजा, ब्रह्मयज्ञ, श्राद्ध और दैवकार्य इन सब कर्मोंका अनुष्ठान विशेष निषिद्ध है।

"महागुरुनिपाते च काम्यं किञ्चिन्न चाचरेत्।
आर्त्विज्यं ब्रह्मचर्यञ्च यावत् पूर्णो न वत्सरः॥
अन्यश्राद्धं परान्नञ्च गन्धं माल्यञ्च मैथुनं।
वर्जयेद् गुरुपाते च यावत् पूर्णो न वत्सरः॥
तीर्थयात्रां विवाहञ्चाध्यापनं तर्पणन्तथा।
संवत्सरं न कुर्वीत महागुरुनिपातने।
अपिच—विशेषतः शिवपूजां प्रभृतपितृको द्विजः।
यावद् वत्सरपर्यन्तं मनसापि न चाचरेत्॥
महागुरुनिपाते तु काम्यं किञ्चिन्न चाचरेत्॥
महागुरुनिपाते तु काम्यं किञ्चिन्न चाचरेत्।
आर्त्विजं ब्रह्मयज्ञञ्च श्राद्धं दैवयुतञ्च यत्॥"
(शुद्धितत्त्व)

महागुल्मा (सं० स्त्री०) महान् गुल्मो यस्याः। सोमवल्ली, सोम लता।

महागुहा (सं० स्त्री०) महती गुहा यस्याः। पृश्निपर्णी, पिठवन।

महागृष्टि (सं० स्त्री०) उच्च ककुदयुक्ता गाभी, वह गाय जिसके ऊंचा कुब्बड़ हो।

महागोधूम (सं० पु०) महांश्चासौ गोधूमश्चेति। वृहद् गोधूम, बड़े दानेका गेहूं।

"गोधूमः सुमनोऽपि स्यात्त्रिविधः स च कीर्त्तितः।
महागोधूम हत्याख्यः पश्चाद्देशात् समागतः॥" (भावप्र०)

गोधूमका दूसरा नाम सुमन है। गेहूं तीन प्रकारका होता है। बड़े बड़े दानेवाले गेहूंको महागोधूम कहते हैं। यह मधुर रस, शीतवीर्य, वातघ्न, पित्तनाशक, गुरु, कफजनक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, स्निग्ध, भग्नसन्धानकारक, सारक, ओजोगुणवर्द्धक, शरीरका उपचयकारक, वर्णप्रसादक, रुचिजनक और शरीरका स्थिरतासम्पादक माना गया है। इसमें जो कफजनक गुण बतलाया गया है, वह सिर्फ नये गेहूंमें, पुरानेमें नहीं।
(भावप्र०) गोधूम देखो।

महागोपा (सं० स्त्री०) शारीवा, अनन्तमूल।

महागौरी (सं० स्त्री०) १ नदीभेद, पुराणानुसार एक नदी जो विन्ध्य पर्वतसे निकली है।

"करतोया महागौरी दुर्गा चान्तःशिरा तथा।
विन्ध्यपादप्रसूतास्ता नद्यः पुण्यजलाः शुभाः॥"
(मार्कण्डेयपु० ५६।२५)

२ दुर्गा।

महाग्रन्थिक (सं० पु०) वह औषध जिसके सेवनसे रोग निश्चित रूपसे रुक जाय और बढ़ने न पावे। ३ शतग्रन्थियुक्त कीटभेद, वह कीड़ा जिसमें सौ गांठ हों।

महाग्रह (सं० पु०) राहु।

महाग्राम (सं० पु०) १ महाजनसङ्घ, श्रेष्ठ पुरुषोंका समूह। २ काश्मीरका एक ग्राम। ३ सिंहलद्वीपकी प्रधान राजधानी।

महाग्रीव (सं० पु०) महती दीर्घा ग्रीवा कन्धरा यस्य। १ उष्ट्र, ऊंट। २ शिव, महादेव। ३ शिवके एक अनुचरका नाम। ४ पुराणानुसार एक देशका नाम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

५ उस देशके अधिवासी। (त्रि०) ५ वृहद्ग्रीवायुक्त, लम्बी गरदनवाला।

महाग्रीविन् (सं० पु०) उष्ट्र, ऊँट।

महाघट (सं० पु०) जलपात्रविशेष, पानी रखनेका एक बरतन।

महाघस सं० पु०) भोजनपटु शिवानुचरभेद।

महाघास (सं० पु०) महतो देशस्य महत्या भूमेर्वा घासः महद् देश वा। महतीभूमिकी घास।

महाघूर्णा (सं० पु०) महती घूर्णा शरीरभ्रमणं यस्याः। सुरा, शराब। महतो चासौ घूर्णा चेति। अतिशय भ्रमि, बहुत भ्रमण करनेवाला।

महाघृत (सं० क्ली०) १११ वर्षका पुराना घी जो बहुत गुणकारी माना जाता है। वैद्यकमें इसे कफनाशक, बलकारक और मेधाजनक माना गया है।

"पेयं महाघृतं भूतैः कफघ्नं पवनाधिकैः।
वल्यं पवित्रं मेध्यञ्च विशेषात्तिमिरापहम्।
सर्वभूतहरञ्चैव घृतमेतत् प्रशस्यते॥"

(सुश्रुतसू० ४५ अ०)

महाघोर (सं० त्रि०) महांश्चासौ घोरश्चेति। अतिशय भयानक, बहुत डरावना।

"यमद्वारे महाघोरे तप्ता वैतरणी नदी।
ताञ्च तर्त्तुं ददाम्येनां कृष्णां वैतरणीञ्च गाम्॥"

महाघोष (सं० क्ली०) महान् घोषः कोलाहलो यस्मिन्। १ हट्ट, हाट। २ अतिशय घोषणा, भारी शब्द। (त्रि०) ३ वृहच्छब्दयुक्त।

महाघोषस्वरराज (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

महाघोषा (सं० स्त्री०) महाघोष-टाप्। १ कर्कटशृङ्गी, काकड़ासिंगी।

महाघोषानुगा (सं० पु०) तन्त्रोक्त देवताविशेष।

महाघोषेश्वर (सं० पु०) यक्षराजभेद।

महाङ्ग (सं० पु०) महान्ति दीर्घाणि अङ्गान्यस्य। १ उष्ट्र, ऊंट। २ गोक्षुरक, गोखरू। ३ रक्तचित्रक, लाल चिता। (त्रि०) ४ वृहदयवयुक्त, बड़ा अंगवाला।

महाचक्र (सं० क्ली०) १ वृहत् चक्र, बड़ा चक्र। २ भवचक्र। ३ दानवभेद।

महाचक्रप्रवेशज्ञानमुद्रा (सं० स्त्री०) मुद्राविशेष।

महाचक्रवल (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक पर्वतका नाम।

महाचक्रवर्त्तिता (सं० स्त्री०) ससागरा धराका अधीश्वरत्व, राजचक्रवर्त्तीका काम।

महाचक्रवर्त्ती (सं० पु०) बहुत बड़ा चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट्।

महाचक्रवाड़ (सं० पु०) पर्वतभेद, एक पहाड़का नाम।

महाचक्री (सं० पु०) १ कुचकी, वह जो षड़यन्त्र रचनेमें बहुत प्रवीण हो। २ विष्णु।

महाचञ्चु (सं० स्त्री०) महती चञ्चुरग्रं यस्याः। शाकविशेष, चेंचु नामक साग। पर्याय—वृहच्चञ्चु, विषारि, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु, दीर्घपत्री, दिव्यगंधा। गुण—कटु, उष्ण, कषाय, मलशोधन, गुल्म, शूल, उदर, अर्श और विषनाशक तथा रसायन। (पु०) २ वृहच्चञ्चुयुक्त पक्षी, लंबी चोंचवाली चिड़िया।

महाचण्ड (सं० पु०) महांश्चासौ चण्डश्चेति। १ यम भृत्य, यमके दूत। २ शिवके एक अनुचरका नाम। (त्रि०) ३ प्रचण्ड, भयानक।

महाचण्डा (सं० स्त्री०) चामुण्डाका एक नाम।

महाचतुरक (सं० पु०) चतुर चूड़ामणि।

महाचन्दनादि तैल (सं० क्ली०) यक्ष्मादि कासरोगका एक प्रकारका तेल। प्रस्तुत प्रणाली—तिल तैल १६ सेर, काढ़ेके लिये रक्तचन्दन, शालपर्णी, चकवंड, भटकटैया, कटाई, गोखरू, मूंग, उड़द, भूमिकुष्माण्ड, असगंध, आंवला, शिरीषकी छाल, पद्मकाष्ठ, खसखसकी जड़, सरलकाष्ठ, नागेश्वर, मूर्वामूल, प्रियंगु, उत्पल, वाला, विजबंद, पद्ममूल, अमलतास, पद्मनाल, शालूक, कुल मिला कर ५० पल, सफेद विजबंद ५० पल, पाकार्थ जल ६४ सेर, शेष १६ सेर; बकरीका दूध, शतमूलीका रस, लाक्षारस, कांजी और दहीका पानी प्रत्येक १६ सेर तथा हरिण, बकरे और सियारका मांस प्रत्येक ८ सेर; प्रत्येकका पाकार्थ जल ६४ सेर, शेष १६ सेर (काढ़ा अलग अलग होगा); चूर्णके लिये श्वेतचन्दन, अगुरु, काकला, नखी, शैलज, नागेश्वर, तेजपत्र, दारुहरिद्रा, मृणाल, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, श्यामालता, अनन्तमूल, रक्त कमल, तगरपादुका, कुट, लिफला, परूष-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फल, मूर्वामूल, नालुक, देवदारु, सरलकाष्ठ, पद्मकाष्ठ, खसखसकी जड़, धवका फूल, बेलसोंठ, रसाञ्जन, मोथा, शिलारस, वाला, मजीठ, लोध, सौंफ, जीवन्ती, प्रियंगु, कपूर, इलायची, कुंकुम, पद्मकेशर, रास्ना, जैत्री, सोंठ और धनियां प्रत्येक ४ तोला। इसके बाद (वातरोगोक्त) महासुगन्धित (लक्ष्मीविलास) तेलके गन्धद्रव्य द्वारा यथानियम इस तेलका पाक करे। पाक हो जाने पर उसे उतार कर कपड़ेसे छान ले। बादमें ऊपरसे कुछ कुंकुम, मृगनामी और कपूर डाल दे। यह तेल वात और पित्तहर, वृष्य और धातुपुष्टिकर माना गया है। राजयक्ष्मा, रक्तपित्त और धातु दुर्बलतासे उत्पन्न रोगोंमें इस तेलकी मालिश करनेसे बहुत उपकार होता है।

महाचपला (सं० स्त्री०) आर्या छन्द। इसके दोनों दलोंमें चपला छन्दके लक्षण होते हैं।

महाचमु (सं० स्त्री०) सेनादल, वाहिनी, फौज।

महाचम्पा (सं० स्त्री०) जनपदभेद, एक देशका नाम।

महाचर्या (सं० स्त्री०) बोधिसत्त्वका अवलम्बनीय जीवन-पथ।

महाचल (सं० पु०) महान् अचलः। महापर्वत, बड़ा पहाड़।

महाचार्य (सं० पु०) १ आचार्योत्तम। २ शिव। ३ अद्वैत-विद्याविजय और चण्डमारुतके प्रणेता।

महाचित्ता (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

महाचित्रपाटल (सं० क्ली०) गुल्मभेद।

महाचीन—१ चीनसाम्राज्यका अंशविशेष। २ उस देशका रहनेवाला।

महाचुंचु (सं० पु०) वृहच्चुंचु क्षुप, बड़ी चिनियारी।

महाचुन्द (सं० पु०) बौद्ध संन्यासिभेद।

महाचूड़ा (सं० स्त्री०) स्कन्दकी एक मातृकाका नाम।

महाचूत (सं० पु०) महाराजाम्रवृक्ष।

महाचैतसघृत (सं० स्त्री०) घृतौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—काढ़ेके लिये शणबीज, निसोथका मूल, रेंड़ीका मूल, दशमूल, रास्ना, पोपर और सोहिंजनका मूल प्रत्येक २ पल, पाकार्थ जल ६४ सेर, शेष १६ सेर; चूर्णके लिये भूमिकुष्माण्ड, मुलेठी, मेद, महामेद, काकोली, क्षीरकाकोली, चीनी खजूरका रस, दाख, शतमूली, ताड़का रस, गोखरू और स्वल्प चैतसघृतोक्त वाला कल्कीमूल, त्रिफला, रेणुक, देवदारु, एलवालुक, शालपर्णी, तगरपादुका, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, श्यामलता, अनन्तमूल, प्रियंगु, नीलोत्पल, इलायची, मजीठ, दन्तीमूल, अनारका बीज, नागेश्वर, तालिशपत्र, वृहती, मालतीका नवपुष्प, विड़ङ्ग, पिठवन, कुट, रक्तचन्दन और पद्मकाष्ठ इन २८ वस्तुओंका चूर्ण १ सेर। यथानियम घृतपाक करना होगा। इससे सभी प्रकारका अपस्मार और उन्माद रोग नष्ट होता है। यह खांसी दमाको दूर करनेवाला तथा शुक्रवर्द्धक माना गया है। प्रतिदिन २ तोला करके शक्कड़ और कुछ गरम पानीके साथ सेवन करनेसे बहुत उपकार होता है।

महाच्छद (सं० पु०) महान् छदः पत्रमस्य। १ देवताड़ वृक्ष। २ वृहत् पत्र, हाथीकंद।

महाच्छाय (सं० पु०) महती छायाऽस्य। १ वटवृक्ष, वटका पेड़। (त्रि०) २ वृहच्छायायुक्त।

महाच्छिद्रा (सं० स्त्री०) महाच्छिद्र मस्याः। १ महामेदा। (त्रि०) २ वृहच्छिद्रयुक्त, बड़ा छिद्रावाला। (क्ली०) ३ कायप्रत्यङ्गरूप नवद्वार, शरीरका नवद्वार।

महाज (सं० पु०) महांश्चासौ अजश्चेति। १ वृहच्छाग, बड़ा बकरा। (त्रि०) महतो जायते इति महत् जन कर्त्तरि ड पृषोदरादित्वात् साधु। २ महाकुलोद्भव, जिसका उच्च कुलमें जन्म हो।

महाजटा (सं० स्त्री०) महती जटाऽस्याः। १ रुद्रजटा। २ वृहत् जटा, बड़ी जटा।

महाजतु (सं० पु०) शिव, महादेव।

महाजन (सं० पु०) महांश्चासौश्चेति। १ साधु।

"वेदा विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना नासौ मुनिर्यस्य मतं नभिन्नं।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः॥"

(भारत ३।३१२।११२)

२ धार्मिक, वेद वाक्यमें श्रद्धालु और ख्यातापन्न व्यक्ति। ३ मन्वादि। ४ धनी, व्यक्ति दौलतमंद। ५ उत्तमर्ण, रुपये पैसेका लेन देन करनेवाला व्यक्ति। ६ बनिया।

महाजनी (हिं० स्त्री०) १ रुपयेके लेन देनका व्यवसाय, हुंडी पुरजेका काम। २ एक प्रकारकी लिपि जिसमें मात्राएं आदि नहीं लगाई जातीं। यह लिपि महाजनोंके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां वही खाता लिखनेमें काम आती है। इसे मुड़िया भी कहते हैं।

महाजनीय (सं० त्रि०) वाणिज्योपयोगी, महाजन-सम्पर्कीय।

महाजम्बीर (सं० पु०) वृहज्जम्बीर वृक्ष, कमला नींबू।

महाजम्बु (सं० स्त्री०) महती चासौ जम्बुश्चेति। वृहज्जम्बु, बड़ा जामुन।

महाजम्बू (सं० स्त्री०) महती चासौ जम्बुश्चेति। वृहज्जम्बू, बड़े जामुनका गाछ। संस्कृत पर्याय—राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, पिकप्रिया, कोकिलेष्टा, महालीला, वृहत्फला। इसका गुण उष्ण, मधुररस, कषाय, श्रमनाशक, आस्यजड़तानाशक, स्वरकर, विष्टम्भी, शोषशमन, भ्रम और अतीसारवर्द्धक, श्वास, कफ तथा कासनाशक माना गया है। (राजनि०)

महाजम्भ (सं० पु०) शिवके एक अनुचरका नाम।

महाजय (सं० पु०) १ नागभेद। (त्रि०) २ जयशील, जयी। (स्त्री०) ३ दुर्गा।

महाजयराज—मध्यभारतका एक सामन्तराज।

महाजल (सं० पु०) समुद्र।

महाजव (सं० पु०) महान् जवो वेगो यस्य। १ गवय, नील गाय। २ शिकारी मृग। (त्रि०) ३ अतिवेगयुक्त, वेगवाला। (भागवत ७।८।२८)

महाजवा (सं० स्त्री०) १ एक नदीका नाम। २ कुमारकी अनुचरी एक मातृकाका नाम।

महाजाति (सं० स्त्री०) महती जाति-रसग्रा इति यद्वा महती जातिरिव तदाकृतित्वात्। १ वासन्तीपुष्पलता। महती जातिरिति। २ श्रेष्ठवर्ण।

महाजातीय (सं० त्रि०) महत् (प्रकारवचनजातीयर। पा ५।३।६९) ततः (आन् महतः समानाधिकरणजातीययोः। पा ६।३।४६) इति महत आकारादेश। महत् प्रकार, बहुत किस्मका।

महाजानु (सं० पु०) १ महाभारतके अनुसार ब्राह्मण-भेद। २ शिवके एक अनुचरका नाम।

महाजाबाल (सं० क्ली०) एक उपनिषद्का नाम।

महाजाली (सं० स्त्री०) जालयति आच्छादयतीति जाल आच्छादने पचाद्यच्, स्त्रियां ङीष्, महांश्चासौ जालश्चेति स अस्या अस्ति अर्श आद्यच्, ततः ङीष्। १ पीतवर्ण घोषा, पीली सौंफ। २ आवर्त्तकी लता। ३ राजकोशातकी, घीया-तरोई।

महाजिह्व (सं० पु०) १ महादेव। २ एक दैत्यका नाम।

महाज्ञान (सं० क्ली०) परम ज्ञान।

महाज्ञानगीता (सं० स्त्री०) तन्त्रोक्त देवताभेद।

महाज्ञानयुता (सं० स्त्री०) मनसादेवीका नामान्तर।

महाज्ञानी (सं० त्रि०) १ साधु। २ भविष्यद्वक्ता, भविष्यकी बातोंको जाननेवाला। (पु०) ३ शिव।

महाज्यैष्ठी (सं० स्त्री०) महती चासौ ज्यैष्ठी चेति। पूर्णिमाभेद। नक्षत्र विशेषादियुक्त ज्यैष्ठकी पूर्णिमा तिथिमें विशेष विशेष नक्षत्रका योग होनेसे महाज्यैष्ठी होती है। तिथितत्त्वमें यह महाज्यैष्ठी ५ प्रकारकी बतलाई गई है। जैसे—

१। "ऐन्द्रे गुरु शशीचैव प्राजापत्ये रविस्तथा।
पूर्णिमा गुरुवारेण्य महाजैयष्ठी प्रकीर्त्तिता।
ऐन्द्रे ज्येष्ठायां प्राजापत्ये रोहिण्यां।" (तिथित०)

यदि ज्यैष्ठ मासकी पूर्णिमा तिथिको ज्यैष्ठा नक्षत्रमें वृहस्पति वा चन्द्र तथा रोहिणी नक्षत्रमें रवि रहें तथा उस दिन यदि वृहस्पतिवार पड़े, अथवा नहीं भी पड़े तो भी महाज्यैष्ठी होगी। "विना गुरुवारेणापि"

२। 'ऐन्द्रे गुरु शशीचैव प्राजापत्ये रवि स्तथा।
पूर्णिमा ज्यैष्ठमासस्य महाज्यैष्ठी प्रकीर्त्तिता।"

अनुराधा नक्षत्रमें यदि वृहस्पतिवार वा चन्द्र रहे और रोहिणी नक्षत्रमें रविके रहते रहते यदि ज्यैष्ठी पूर्णिमा पड़ जाय तो भी महाज्यैष्ठी होगी। इसमें वृहस्पतिवारकी आवश्यकता नहीं।

३। "ऐन्दे मैत्रे यदा जीवस्तत् पञ्चदशके रविः।
पूर्णिमा शत्रुचन्देण महाज्यैष्ठी प्रकीर्त्तिता॥" (तिथित०)

ज्येष्ठा और अनुराधा नक्षत्रमें वृहस्पति और उससे पन्द्रहवें नक्षत्रमें यदि रवि रहे तथा इन्द्रदैवत नक्षत्रमें चन्द्रमाके रहनेसे यदि ज्येष्ठपूर्णिमा हो, तो उसे महाज्यैष्ठी कहत हैं।

४। "ऐन्द्रर्क्षे त्वथवा मैत्रे गुरुचन्द्रौ यदा स्थितौ।
पूर्णिमा ज्यैष्ठमासस्य महाज्यैष्ठी प्रकीर्त्तिता॥"
(तिथितत्त्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐन्द्र नक्षत्र अथवा अनुराधा नक्षत्रमें गुरु और चन्द्रके रहनेसे उस दिन यदि ज्येष्ठ मासकी पूर्णिमा हो, तो महाज्यैष्ठी होगी।

५। "ज्यैष्ठे संवत्सरे चैव ज्यैष्ठमासस्य पूर्णिमा।
ज्येष्ठाभेन समायुक्ता महाज्यैष्ठी प्रकीर्त्तिता॥"
(तिथितत्त्व)

जिस वर्ष षष्टि संवत्सरके मध्य ज्यैष्ठी पूर्णिमामें ज्येष्ठानक्षत्र पड़े, तो उसे भी महाज्यैष्ठी कहते हैं।

यह महाज्यैष्ठी अतिशय पुण्यजनक है। इस दिन तीर्थादिमें स्नान दानादि करनेसे अशेष पुण्य प्राप्त होता है।

विशेषतः इस दिन भगवान् पुरुषोत्तमके दर्शन करनेसे विष्णुलोककी प्राप्ति होती है तथा गङ्गास्नान करनेसे मोक्षलाभ होता है।

"महाज्यैष्ठ्यान्तु यः पश्येत् पुरुषः पुरुषोत्तमम्।
विष्णुलोकमवाप्नोति मोक्षं गङ्गाम्बुमज्जनात्॥"
(तिथितत्त्व)

महाज्योतिष्मती (सं० स्त्री०) महती चासौ ज्योतिष्मती चेति। स्वनामख्यात लता, बड़ी मालकंगनी। संस्कृत पर्याय—तेजोवती, बहुरसा, कनकप्रभा, तीक्ष्णा, सुवर्णनकुली, लवणा, अग्निदीप्ता, तेजस्विनी, सुरलता, अग्निफला, अग्निगर्भा, कङ्गुनी, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, वायसादनी, गीलता, श्रोलता, सौम्या, ब्राह्मी, लवणकिंशुका, पारावतपदी, पीता, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती और धीरा। इसका गुण—तिक्ततर, रुक्ष, कुछ कटु, वातकफनाशक, दाहप्रद, दीपन, मेधा और प्रज्ञाकारक। (राजनिघण्टु)

महाज्योतिः (सं० पु०) १ शिव, महादेव। (त्रि०) २ ज्योतिर्विशिष्ट।

महाज्वराङ्कुश (सं० पु०) विषम ज्वराधिकारमें रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—शोधित पारा ॥. तोला, शोधित विष ॥. तोला, शोधित गन्धक ॥. तोला, शोधित धतूरेका बीज १॥ तोला, स्वर्णजीवन्ती ६ तोला इन सब द्रव्योंको एकत्र भलीभांति चूर कर २ रत्तीकी गोली बनावे। इसका अनुपान बिजौरे नीबूका बीज और अदरकका रस है। इस औषधका सेवन करनेसे त्रिदोषज्वर, एक दिनमें, दो दिनमें, तीन दिनमें और चार दिनमें आनेवाला विषमज्वर तीव्र जीर्णज्वर जाता रहता है। (भावप्र० ज्वराधिकार)

दूसरा तरीका—पारा, गन्धक, तांबा, हिंगुल, हरिताल, लोहा, दस्ता, सोनामाखी, मैनसिल, अबरक, गेरूमट्टी, सोहागा और दन्तिबीज इन सब द्रव्योंको एक साथ चूर्ण करे। पीछे तुलसीपत्रका रस, चितापत्ररस, सिद्धिपत्ररस और इमलीकी पत्तियोंका रस, इन सब रसोंमें उसे तीन बार भावना दे कर पीछे छायामें सुखा ले। इसकी माला चनेके बराबर बतलाई गई है। चिकित्सकको दोषका बलाबल देख कर अनुपान स्थिर करना चाहिये। इसका सेवन करनेसे नाना प्रकारके ज्वर अतिशीघ्र दूर होते हैं। (भैषज्यरत्ना० ज्वराधि०)

महाज्वाल (सं० पु०) महती ज्वाला शिखा अस्य। १ होमाग्नि, हवनकी अग्नि। २ नरकविशेष।

"स्नुषां सुतामापि गत्वा महाज्वाले निपात्यते॥"
(विष्णुपुराण २।६।१२)

जो लोग अपनी पुत्रवधू या कन्याके साथ गमन करते हैं वे इस भयङ्कर ज्वालाविशिष्ट नरकमें पतित होते हैं। ३ महादेव।

महाज्वाला (सं० स्त्री०) महती ज्वाला दीप्तिर्यस्याः। १ जैनियोंकी एक विद्यादेवीका नाम। २ महती ज्वाला। ३ बृहदग्निशिखा, वह अग्नि जिसमें खूब ज्वाला हो।

महाञ्जि (सं० त्रि०) महदञ्जि यस्य। वृहत् पुण्ड्रयुक्त।

महाटवि (सं० पु० स्त्री०) १ देशभेद। २ उस देशके रहनेवाले मनुष्य।

महाड़—१ बम्बईके कोलाबा जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १७° ५१' से १८° १६' उ० तथा देशा० ७३° १७' से ७३° ४५' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४५६ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें महाड़ नामक एक शहर और २४६ ग्राम लगते हैं। यहांका अधिकांश स्थान पहाड़ी उपत्यका और वनविभागसे परिपूर्ण है। एकमात्र महाबलेश्वर गिरिशृङ्गकी शोभा लोगोंके मनको मोहती है। सावित्री नामकी नदी यहांसे निकल कर खेती-बारीमें बहुत लाभ पहुंचाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १८° ५' उ० तथा देशा० ७३° २१' पू०के मध्य सावित्री नदीके दाहिने किनारे अवस्थित हैं। अलीबागसे इसकी दूरी ५३ मील है। जनसंख्या आठ हजारके लगभग है। नगरसे एक कोस उत्तर-पश्चिम पालका विख्यात बौद्ध-गुहामन्दिर अवस्थित है। प्रत्नतत्त्वविद्गण इसे ११वीं शताब्दीका बतलाते हैं। पुर्त्तगीज-प्रवर दि-कैट्रो १५३८ ई०में इस स्थानकी वाणिज्य-वृद्धिका उल्लेख कर गये हैं। महाराष्ट्र-राजधानी रायगढ़के समीप रहनेसे इस नगरमें सभी समय महाराष्ट्र-सरदार आते जाते थे। १७७१ ई०में यह नगर दुर्गादिसे परिशोभित और धनजनसे पूर्ण था। १७९६ ई०में यहां नानाफड़नवीस, बाजीराव और अङ्गरेजको जो सन्धि हुई, उसके अनुसार बाजीरावको पेशवा-पद और नाना फड़नवीसको मन्त्रीका पद मिला था। १८०२ ई०में होलकरने जब पूना पर धावा मारा, तब पेशवाने इसी नगरमें आ कर आत्मरक्षा की थी। १८१८ ई०में यह नगर अंगरेजोंके दखलमें आया।

यहां समुद्रोपकूल-वाणिज्यका कारबार पूर्ववत् जारी है। मलबार, गोआ, कोङ्कण और बम्बईके वाणिज्य द्रव्य समुद्रके रास्तेसे सावित्रीके मुहानेमें आते हैं। आमदनी द्रव्योंमें अधिकांश पहाड़ी रास्तेसे दक्षिण भारतमें भी भेजा जाता है। महाबलेश्वर जानेके लिये यहांसे एक अच्छी सड़क दौड़ गई है। शहरमें १८६६ ई०को म्युनिस्पलिटी जारी हुई है। यहां एक अस्पताल, सबजजका इजलास, एक मिडिल स्कूल तथा चार और भी दूसरे दूसरे स्कूल हैं।

महाड़कर—एक प्राचीन टीकाकार।

महाढ्य (सं० पु०) महान् आढ्यः शोभासम्पन्नः। १ कदम्ब। (त्रि०) २ अतिशय धनयुक्त, धनी।

महातङ्क (सं० पु०) १ मदात्यय रोग। २ महाव्याधि।

महातत्त्व (सं० क्ली०) ज्ञानतत्त्व, सांख्योक्त द्वितीय तत्त्व। महत्तत्त्व देखो।

महातत्त्वा (सं० स्त्री०) दुर्गादेवीकी एक अनुचरीका नाम।

महातपःसप्तमी (सं० स्त्री०) एक प्रकारका उत्सव। महासप्तच्छ्र देखो।

महातपन (सं० पु०) नरकभेद।

महातपश्चित (सं० क्ली०) सत्रभेद।

महातपस् (सं० त्रि०) १ घोर तपस्याकारी, कड़ी तपस्या करनेवाला। २ विष्णु। ३ एक मुनिका नाम। ४ सह्याद्रि-वर्णित एक राजा।

महातप्तकृच्छ्र (सं० स्त्री०) एक व्रत। इसमें तीन दिन तक गरम दूध, गरम घी या गरम जल पी कर चौथे दिन उपवास किया जाता है।

महातमःप्रभा (सं० स्त्री०) महती तमसां प्रभा प्रकाशोऽस्यां। नरकविशेष। यह नरक घोर तमसाच्छन्न है।

"घनोदधिघनवाततनुवातनभःस्थिताः।
रत्नशर्करावालुका पङ्कधूमतमःप्रभाः।
महातमःप्रभा वेत्यधोऽधो नरकभूमयः॥" (हेम)

महातमस् (सं० क्ली०) अविद्या। अविद्यासे ही तामिस्र, अन्धतामिस्र, महातमः आदि होता है।

"सोऽनुविष्टो भगवता यः शेते सलिलाशये।
लोकसंस्थां यथापूर्वं निर्म्ममे संस्थया स्वया॥
ससर्ज्ज छायया विद्यां पञ्चपर्वाणमग्रतः।
तामिस्रमन्धतामिस्रं तमो मोहो महातमः॥"
(भाग० ३।२०।१८)

विशेष विवरण महात्मय शब्दमें देखो।

महातरु (सं० पु०) महांश्चासौ तरुश्चेति। १ स्नुही वृक्ष, मनसाका पेड़। २ वृहद्वृक्ष, बड़ा पेड़।

महातल (सं० क्ली०) महच्च तत् तलश्चेति। पाताल-विशेष, चौदह भुवनोंमेंसे पृथ्वीके नीचेका भुवन वा तल।

"अतलं वितलञ्चैव नितलञ्च तलातलम्।
महातलञ्च सुतलं सप्तमञ्च रसातलम्॥" (शब्दमाला)
"पातालमेतस्य हि पादमूलं पठन्ति पार्ष्णि प्रपदे-रसातलम्
महातलं विश्वसृजोऽथ गुल्फौ तलातलं वै पुरुषस्य जङ्घे॥"
(भागवत २।१।२६) पाताल देखो।

महातपश्चित (सं० क्ली०) सत्रभेद।

महातारा (सं० स्त्री०) तारयति संसारादिति तृ-णिच्-अच्, स्त्रियां टाप्, ततः महती चासौ तारा चेति कर्मधा०। बौद्धोंकी एक देवीका नाम। पर्याय—तारा, महाश्री, ओंकारा, स्वाहा, श्री, मनोरमा, तारिणी, जया,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनन्ता, शिवा, लोकेश्वरा, आत्मजा, खदूरवासिनी, भद्रा, वैश्या, नीलसरस्वती, शङ्खिनी, वसुधारा, धनंदा, त्रिलोचना, लोचना। (हेम)

महातालकेश्वर (सं० पु०) कुष्ठरोगकी एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—बांसके पत्ते और हरितालको चूर्ण कर कोंहड़ेके जलमें तथा घृतकुमारीके रसमें तीन बार भावना दे। पीछे कांजी, खट्टे दही और पुनर्णवाके रसमें तीन दिन मल कर खड़ीके समान बना ले। इसके बाद एक हांड़ीमें पलाशकी राख भर दे और हरतालको राखमें रख कर हाड़ीका मुंह ढक्कनसे ढक दे। पीछे उसे अच्छी तरह लीप पोत कर ३२ पहर तक पाक करे। अनन्तर हरताल १ भाग, शोधित ताम्र २ भाग इन्हें खलमें पीस बालुकयन्त्रमें नियमानुसार इस औषधको पकावे। चिकित्सकको रोगकी अवस्था और शरीरका बलाबल देख कर मात्रा और अनुपान स्थिर करना चाहिये। इसके सेवनसे अठारह प्रकारके कुष्ठ, विसर्प आदि रोग अति शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। (भैषज्यरत्ना० कुष्ठचि०)

महाताली (सं० स्त्री०) महान् अनेकः तालः यत्र स्त्रियां ङीप्। आवर्त्तकी लता।

महातिक्त (सं० पु०) महानतिशयस्तिक्तरसो यत्र। १ महानिम्ब, बकायन। २ अतिशय तिक्त रसयुक्त, जो खूब तीता हो। ३ किराततिक्तक, चिरायता। (स्त्री०) ४ यवतिक्त लता, शंखिनी नामकी लता। ५ पाठा, पाढ़ नामकी लता। ६ कन्दर्पसारतैल।

महातिक्तकघृत (सं० क्ली०) कुष्ठरोगकी एक प्रकारकी औषध। प्रस्तुत प्रणाली—सप्तपर्ण, आरग्वध, अतिविषा, कटुकी, गुलंच, त्रिफला, पटोल, नीबू, पर्पटिक, दुरालभा, मोथा, चन्दन, त्रायमाणा, पद्मकाष्ठ, हरिद्रा, उपकुल्या, विशाला, मूर्वा, शतावर, श्यामलता, इन्द्रजौ, अड़ूस, वच, मुलेठी, भूनिम्ब और गृष्टिका, समान भाग ले कर चूर्ण करे। उस चूर्णसे चौगुना घी, घीसे दूना आंवलेका रस और रससे चौगुना जल एकत्र मिला कर घृतपाकके नियमानुसार पाक करे। इसके सेवनसे कुष्ठ, विषमज्वर, रक्तपित्त, उन्माद, अपस्मार, गुल्म, पीड़का, गलगण्ड, गण्डमाला, श्लीपद, पाण्डुरोग, विसर्प आदि रोग बहुत जल्द जाते रहते हैं। कुष्ठरोगमें यह बहुत उपकारी है। (सुश्रुत चिकित्सि कुष्ठचि० ७ अ०)

महातिक्ता (सं० स्त्री०) महती गुरुतरा तिक्ता। १ यवतिक्ता, शंखिनी नामकी लता। २ पाठा, पाढ़।

महातिथिम (सं० पु०) बौद्धके मतसे बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महातिथि (सं० पु०) षष्ठी तिथिभेद।

महातीक्ष्ण (सं० त्रि०) १ अत्यन्त तीक्ष्ण या तेज। २ बहुत कड़वा या झालदार।

महातीक्ष्णा (सं० स्त्री०) भल्लातक वृक्ष, भिलावां।

महातीर्थ—प्राचीन तीर्थ विशेष। वर्त्तमान समयमें यह महेता नामसे विख्यात है।

महातुम्बी (सं० स्त्री०) महालाबु, बड़ा कद्दू।

महातुष्टिज्ञानमुद्रा (सं० स्त्री०) मुद्राभेद।

महातेजस् (सं० क्ली०) महदतिशयं तेजोऽस्य। १ पारद, पारा। (पु०) २ कार्त्तिकेय। ३ अग्नि। ४ महादेव। (त्रि०) ५ अतिशय तेजस्वी, बड़ा प्रतापवान्।

"स्वारोचिषश्चौत्तमिश्च तामसो रैवतस्तथा।
चाक्षुषश्च महातेजा विवस्वत् सुत एव च॥" (मनु १।३२)

६ सह्याद्रिखण्ड वर्णित दो राजाका नाम।

महातेजोगर्भ (सं० पु०) तपस्याका एक भेद।

महातैल (सं० पु०) तैलविशेष।

महातोद्य (सं० क्ली०) गभीर निनादकारी वृहत् आनाह-यन्त्र।

महात्मन् (सं० त्रि०) महानात्मा स्वभावो यस्य। १ उत्तम स्वभावयुक्त, जिसकी आत्मा या आशय बहुत उच्च हो। पर्याय—महेच्छ, उद्भट, उदार, उदात्त, उदीर्ण, महाशय, महानस्। (पु०) २ परमात्मा।

"युगपत्तु प्रलीयन्ते यदा तस्मिन् महात्मनि।
तदायं सर्वभूतात्मा सुखं स्वपिति निर्वृतः॥" (मनु १।५४)

३ महत्तत्त्व।

"मनः पृथिव्यां तामद्भिस्तेजसापोऽनिलेन तत्।
खे वायुं धारयंस्तच्च भूतादौ तं महात्मनि॥"
(भागवत ६।७।२५)

४ पितरोंका एक गण। ५ महादेव, शिव। ६ बहुत बड़ा साधु, संन्यासी या विरक्त। ७ दुष्ट, पाजी।

महात्यय (सं० पु०) १ घोर विपद। २ महानाश वा ध्वंस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महात्याग (सं० पु०) १ वदान्यता, वदनियत। २ दान। ३ निस्पृहता।

महात्यागमय (सं० त्रि०) वैराग्ययुक्त, सर्वत्यागी।

महात्यागिन् (सं० त्रि०) १ त्यागशील, जिन्होंने संसारसे माया ममता आदि एकदम छोड़ दिया है।। २ शिव।

महात्यागी (सं० त्रि०) महात्यागिन् देखो।

महात्रिककुद् (सं० पु०) स्तोमभेद।

महात्रिपुरसुन्दरीकवच (सं० क्ली०) मन्त्रयुक्त धारणोविशेष।

महात्रिफला (सं० स्त्री०) वहेड़ा, आँवला और हड़ इन तीनोंका समूह।

महात्रिफलाद्यघृत (सं० क्ली०) नेत्ररोगकी घृतौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर; काढ़ेके लिये त्रिफला और अड़ूसका रस ४ सेर अथवा अड़ूसका मूल २ सेर; जल १६ सेर, शेष ४ सेर, भृङ्गराजरस ४ सेर, शतमूलीका रस ४ सेर, बकरीका दूध ४ सेर, गुलञ्च रस ४ सेर अथवा पहलेके जैसा उनका काढा ४ सेर ले कर पुनः पुनः उनके साथ पाक करे। पीछे उसमें पीपर, चीनी, द्राक्षा, त्रिफला, नीलोत्पल, मुलेठी, छीरककोली, गाम्भारीकी छाल और कण्टकारी कुल मिला कर १ सेर ऊपरसे डाल दे। इसका सेवन करनेसे अदृष्टि आदि नेत्ररोग नष्ट होते हैं।

महात्रिशूल (सं० क्ली०) त्रिशूलविशेष।

महादंष्ट्र (सं० त्रि०) बृहत् दन्तयुक्त, जिसके बड़े बड़े दाँत हों। (पु०) २ राक्षसभेद। ३ विद्याधर।

महादण्ड (सं० पु०) महान् दण्डस्ताड़नसाधनमस्य। १ यमदूतभेद। महान् दण्डः। २ यमके हाथका बड़ा दण्ड।

"यस्माज्जानन् स मन्दाज्मा मामसौ नोपसर्पति।
तस्मात्तस्मै महादण्डो धार्य्यः स्यादिति मे मतिः॥"

(भारत ५।१९४।३७)

महादण्डधारी (सं० पु०) यमराज।

महादन्त (सं० पु०) महांश्चासौ दन्तश्चेति। १ गजदन्त, हाथी-दांत। पर्याय—ईशादण्ड। २ वृहद्दण्डमात्र, बड़ा डंडा। ३ महादेव।

महादन्ता (सं० स्त्री०) नागबला, नागबेल।

महादशमूलतैल (सं० क्ली०) शिरोरोगका एक तैल। प्रस्तुत प्रणाली—कटुतैल १६ सेर; काढ़ेके लिये दशमूल १२॥ सेर, जल ६४ सेर, शेष १६ सेर, बिजौरेका रस १६ सेर, अदरकका रस १६ सेर, धतूरेका रस १६ सेर; चूर्णके लिये पीपर, गुलञ्च, दारुहरिद्रा, सोयां, पुनर्णवा, सोहिंजनकी छाल, पिप्पलिका, कटकी, करंजबीज, कृष्णजीरा, सफेद सरसों, वच, सोंठ, पीपर, चितामूल, कचर, देवदारु, विजवंद, रास्ना, हुरहुर, कायफल, संभालूका पत्ता, चई, गेरुमट्टी, पिपरामूल, शुष्कमूला, यमानी, जीरा, कुट, वनयमानी और विद्धड़क मूल प्रत्येक १ पल। इन सब द्रव्योंको तेलमें पका कर पीछे रोगके अनुसार उसका प्रयोग करना होगा। इसका सेवन करनेसे कफ, खांसी और शिरका दर्द जाता रहता है। यह प्रत्यक्ष फल देनेवाला तेल है।

(भैषज्य० शिरोरोग०)

महादाड़िम्बाद्यघृत (सं० क्ली०) प्रमेहरोगनाशक घृतौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर; काढ़ेके लिये अनारका बीज २ सेर, जल १६ सेर, शेष ४ सेर; यवतण्डुल २ सेर, जल १६ सेर शेष ४ सेर, शतमूलीका रस ४ सेर, गायका दूध ४ सेर; चूर्णके लिये दाख, पिंडखजूर, त्रिफला, रेणुक, जीवक, ऋषभक, काकला, क्षीरकाकला, मेद, महामेद, ऋद्धि, वृद्धि, देवदारु, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, मजीठ, कुट, इलायची, भूमिकुष्माण्ड, विजबंद, शिलाजतु, दारचीनी, खसखसकी जड़ और काला अवरक प्रत्येकका चूर्ण ३ तोला। घृत पाकके नियमानुसार इस घृतका भी पाक करना होगा। रोगके तारतम्यानुसार मात्रा स्थिर करनी होगी। इसका सेवन करनेसे श्लेष्मज और सन्निपातज बीस प्रकारके प्रमेह जाते रहते हैं। (भैषज्य० प्रमेहाधिका०)

महादान (सं० क्ली०) महच्च तत्दानञ्चेति कर्मधा०। तुलापुरुषादि सोलह प्रकारका दान। हेमाद्रिके दानखण्डमें इस महादानका विस्तृत विवरण लिखा है। सोलह प्रकारके दान ये सब हैं—

"आद्यन्तु सर्वदानानां तुलापुरुषसंज्ञितम्।
हिरण्यगर्भदानञ्च ब्रह्माण्डः तदनन्तरम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पपाददानञ्च गोसहस्रन्तु पञ्चमम्।
हिरण्यकामधेनुश्च हिरण्याश्वस्तथैव च॥
पञ्चलाङ्गलकं तद्वद्धरादानन्तथैव च।
हिरण्याश्वरथस्तद्वद्धे महस्तिरथस्तथा॥
द्वादशं विष्णुचक्रञ्च ततः कल्पलतात्मकम्।
सप्तसागरदानञ्च रत्नधेनुस्तथैव च।
महाभूतघटस्तद्वत् षोडशः परिकीर्त्तितः॥"

(मलमासतत्त्वधृत मत्स्यपुराण)

सोलह महादानोंमें तुलापुरुष दान पहला है, इसके बाद २ हिरण्यगर्भ, ३ ब्रह्माण्डदान, ४ कल्पपादपदान, ५ गोसहस्रदान, ६ हिरण्यकामधेनु, ७ हिरण्याश्व, ८ पञ्चलाङ्गलक, ९ धरादान, १० हिरण्याश्वरथ, ११ हेमहस्तिरथ, १२ विष्णुचक्र, १३ कल्पलता, १४ सप्तसागरदान, १५ रत्नधेनु और १६ महाभूतघटदान। यही सोलह दान महादान हैं।

जो उक्त सोलह प्रकारके महादान करते हैं, उन्हें अन्तमें अनन्त स्वर्गकी प्राप्ति होती है।

कूर्मपुराणके मतसे महादान दश प्रकारका है। जैसे,—

"कनकाश्वतिला गावो दासीरथ महीगृहाः।
कन्या च कपिला धेनुर्महादानानि वै दश॥"

१ सोना, २ सोनेका घोड़ा, ३ तिल, ४ गो, ५ दासी, ६ रथ, ७ मही, ८ गृह, ९ कन्या और १० कपिला धेनु। ये दश दान भी महादान कहे गये हैं।

२ वह दान जो ग्रहण आदिके समय डोम, चमार आदि छोटी जातियोंको दिया जाता है।

महादानपुर—मद्रास प्रदेशके त्रिचनापल्ली जिलान्तर्गत एक नगर। यहां जैन और शैव-कीर्त्तिका ध्वंसावशेष देखनेमें आता है।

महादारु (सं० क्ली०) महत् दारु यस्य। १ देवदारु। महत् दारु। २ वृहत्काष्ठ।

महादिकटभी (सं० स्त्री०) श्वेतकिणिही-लता।

महादिवाकीर्त्य (सं० क्ली०) सामभेद।

महादित्य (सं० पु०) मौखरिवंशके एक राजा।

महादीर्घ (सं० पु०) सरल देवदार।

महादुग्धा (सं० स्त्री०) वनस्पतिभेद।

महादुन्दु (सं० पु०) रणवाद्यविशेष, लड़ाईका डंका।

महादुर्ग (सं० क्ली०) १ महाविपद। २ जो अत्यन्त कष्टसे भी पूरा न हो सके।

महादुर्गालोक (सं० पु० देवलोकविशेष।

महादूत (सं० पु०) यमदूत।

महादूषक (सं० पु०) सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका धान।

महादृति (सं० पु० चमड़ेकी थैली।

महादेव (सं० पु०) महाश्चासौ देवश्चेति कर्मधा० अथवा महतां देवादीनां देवः ६-तत्। शिव। यह अष्टमूर्त्तिके अन्तर्गत सोममूर्त्ति हैं। यथा—"महादेवाय सोममूर्त्तये नमः।"

ब्रह्मादि देवताओं और महामान्य ब्रह्मवादी मुनियोंके भी जो देव हैं, उन्हींका नाम महादेव है। महती मूलप्रकृति देवी जगत्में पूजी जाती हैं, किन्तु ये उनसे भी अधिक पूजनीय हैं, इसीसे इनका महादेव नाम पड़ा है।

"ब्रह्मादीनां सुराणाञ्च मुनीनां ब्रह्मवादिनां
तेषाञ्च महतां देवो महादेवः प्रकीर्त्तितः।
महती पूजिता विश्वे मूलप्रकृतिरीश्वरी
तस्या देवः पूजितश्च महादेवः स च स्मृतः॥"

महादेवके पांच मुख हैं। पांच मुख होनेका कारण ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें इस प्रकार लिखा है,—पूर्व समयमें विष्णुने अति मनोरम किशोररूप धारण किया। ब्रह्मा अनन्त आदि अनेक मुखवाले देवताओंने बहुत देर तक उस मनोहर रूपको टक लगा कर देखा और उनका स्तव किया। परन्तु एक मुख और दो नेत्रवाले शिव उन्हें देख कर तृप्त न हुए। अतः उन्होंने सोचा, कि यदि उनके भी अनेक नेत्र और मुख होते, तो वे भी उस मनोहरमूर्त्तिको देख कर तृप्त हो सकते थे। बस फिर क्या था, इस वासनाके उदय होते ही उनके और भी चार मुख निकल आये। प्रत्येक मुखमें तीन तीन नेत्र थे। अब उनके पांच मुख और पन्द्रह नेत्र हो गये। इसी समयसे इनका पञ्चवक्त्र और त्रिलोचन नाम पड़ा।

महादेव परब्रह्मस्वरूप हैं। उनके वे तीन नेत्र सत्त्व, रज और तम गुणोंसे युक्त हैं। उनके सात्त्विक नेत्रसे सात्त्विकोंका, राजससे राजसोंका और तामससे तामसोंका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पालन होता है। पीछे इस विश्व ब्रह्माण्ड पर जब प्रलय उपस्थित होता है, तब उन्हींके ललाट-फलकस्थ तृतीय तामस नेत्रसे क्रोधाग्नि निकल कर समस्त विश्वसंसार-को दग्ध करता है।

महादेव सतीकी भस्मको शरीरमें लगाते और प्रेम-वशसे उनकी अस्थिमाला गलेमें पहनते हैं। आत्माराम हो कर ये एक वर्ष तक सतीकी शवदेहको कंधे पर चढ़ा रोते हुए पागलकी तरह सभी स्थानोंमें घुमे थे। उसी समयसे वे अपने अंगमें विभूति लगाते हैं। महादेवका प्रधान अस्त्र त्रिशूल है और उनके धनुषका नाम पिनाक है। इनके एक दूसरे प्रसिद्ध अस्त्रका नाम पाशुपत है। महादेवने प्रसन्न हो कर यही अस्त्र अर्जुनको दिया था। त्रिपुरका विनाश करके वे त्रिपुरारि नामसे प्रसिद्ध हुए। समुद्रमन्थनसे उत्पन्न विष पीनेके कारण उनका नीलकण्ठ नाम पड़ा। परशुरामने महादेवसे अस्त्रविद्या सीखी थी। महादेव सदा योगमग्न रहते, इसी कारण वे दिगम्बर हैं। सिर पर जटा है, गिरिकन्दर उनको बहुत प्रिय है। चन्दन, कीचड़, ढेला और सोना उनके लिये समान है। एक दिन गरुड़से भय खा कर कुछ सर्पोंने महादेवकी शरण ली। महादेवने उन्हें अभयदान दे कर अपने अंगमें आश्रय दिया। तभीसे उनका अल-ङ्कार नाग है। इस विश्वसंसारके आधार पर भगवान् भूतभावनको वहन करनेकी क्षमता और किसीमें भी नहीं है, इस कारण स्वयं विष्णु उनके वाहनरूपमें वृषभ हो कर विराजते हैं। वे सभी भोग सुखों पर लात मार कर प्रसन्न वदनसे श्मशानमें वास करते हैं।

शिव देखो। (ब्रह्मवैवर्त्त)

महादेव—१ अद्भुतदर्पण नामक नाटकके प्रणेता। २ बुधमनोहरा नामक मुग्धबोधटीकाके रचयिता। इन्होंने स्वयंप्रकाश तीर्थके निकट विद्या सीखी थी। ३ अव्यय-कोष नामक व्याकरणाभिधानके प्रणेता। उक्त ग्रन्थमें इन्होंने सिद्धान्त कौमुदी और तत्त्वबोधिनीका मतानु-सरण किया है। ४ आश्वलायनश्रौतसूत्रव्याख्याके रचयिता। ५ मल्लमल्लकृत उदारराघव ग्रन्थके टीकाकार। कादम्बरीटीकाके प्रणेता। ८ चान्द्रलोक नामक अलङ्कार और रसोदधि नामक रसतरङ्गिणी टीकाके रचयिता। तिथिनिर्णय, तिथिरत्न और निर्णयसिद्धान्त नामक तीन ग्रन्थके प्रणेता। ९ धर्मतत्त्वसंग्रहके रचयिता। १० निबन्धसर्वस्वके प्रणेता। ११ महारसायनविधि नामक वैद्यकग्रन्थके रचयिता। १२ यजमानवैजयन्तीके प्रणेता। १३ योगसूत्रटीका और हठयोग प्रदीपिका-टीकाके प्रण-यनकर्त्ता। १४ राजसिंह-सुधासिन्धु नामक काव्यके रचयिता। ग्रन्थकारने अपने प्रतिपालक राजसिंहके नामानुसार ग्रन्थका नाम रखा है। १५ सन्तानदीपिका नामक ज्योतिःशास्त्रके रचयिता। १६ सुबोधिनी नामक ग्रन्थके प्रणेता। १७ स्वात्मप्रबोधके रचयिता। १८ होराप्रदीपके रचयिता। १९ एक ज्योतिषी। इनके पिता-का नाम काह्नजित था। इन्होंने कुञ्जप्रदीप, महादेवी, मुहूर्त्तप्रदीप, मुहूर्त्तसिद्धि, मेघमाला और सारसंग्रह नामक कई ज्योतिर्ग्रन्थ लिखे हैं। १६६१ ई०में इन्होंने स्वरचित मुहूर्त्तप्रदीपकी एक टीका रची थी। २० धुन्धुकके पुत्र। इन्होंने दुर्गसिंहकृत कातन्त्रवृत्तिकी शब्दसिद्धि नामक एक टिप्पनी लिखी है। २१ नारायणके पुत्र। इन्होंने काम्येष्टिप्रयोगहिरण्यक नामक ग्रन्थकी रचना की। २२ लुनिगके पुत्र। १२६४ ई०में इन्होंने श्रीपतिकृत ज्योतिष-रत्नमालाकी एक टीका प्रणयन की। २३ सोमनाथके पुत्र। इन्होंने उज्ज्वल हिरण्यकेशिसूत्रटीका, प्रयोगवैज-यन्ती नामक हिरण्यकेशिकल्पसूत्रटीका, श्रौतचन्द्रिका और हिरण्यकेशिसूत्रप्रयोगरत्न नामक कुछ टीका लिखी हैं। ये सोमयाजी उपाधिसे भूषित थे।

महादेव—औरङ्गलके काकतीय वंशीय एक राजा, गणपति के पिता।

महादेव—बेड़मेले और पलिगारके एक दण्डनायक (शासनकर्त्ता)। ये पश्चिम चालुक्यराज ३य सोमेश्वरके सामन्त थे।

महादेव—आसामप्रदेशके गारो पार्वतीय जिलेके दक्षिण-पूर्व में प्रवाहित एक नदी। नदीगर्भमें कोयलेकी खान पाई गई है।

महादेव उग्रसार्वभौम—देवगिरिके यादववंशीय एक राजा, जैत्रपालके पुत्र। अपने भाई कृष्णके बाद ये सिंहासन पर अधिष्ठित हुए। इन्होंने १२६०से १२७२ ई० तक राज्य किया। शिलालिपि पढ़नेसे मालूम होता है, कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्होंने कोङ्कणराज सोमेश्वरको परास्त कर कोङ्कणराज्य जीता था। अलावा इसके इन्होंने कर्णाट-राज और गुर्जरपति वीशलदेवके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी। तैलिङ्ग-की काकतीयवंशकी वीरनारी महाराणी रुद्रमा इनकी समसामयिक थी।

चतुर्वर्गचिन्तामणिके प्रणेता हेमाद्रि इनके श्री-करणाधिप और मन्त्रणादाता थे।

महादेवकवीशाचार्यसरस्वती—दानकेलिकौमुदीके रच-यिता।

महादेवकोलि—सह्याद्रि-उपत्यकावासी निम्नश्रेणीकी जातिविशेष। पूनासे थूसा पर्यन्त विस्तीर्ण माविल, खोड़ा, नाहिर, दङ्ग आदि उपत्यकामें इनका वास देखा जाता है। ये कुल २४ थोकोंमें विभक्त हैं, फिर प्रत्येक थोकमें स्वतन्त्र श्रेणीविभाग है। अपने अपने थोकमें आदान प्रदान नहीं चलता। ग्राम्य और पालित गो तथा सूअरको छोड़ कर ये लोग अन्यान्य जन्तुका मांस खाते हैं।

महादेवजोसी—अश्लेषा-शान्तिविधानके रचयिता।

महादेवतीर्थ—एक योगी, श्रीकण्ठतीर्थके गुरु।

महादेवद्विवेदिन्—एक विख्यात टीकाकार। इन्होंने कात्यायन-श्रौतसूत्रकी टीका, श्रौतपद्धति, याज्ञिकदेवकृत कात्यायनस्रौतसूत्रपद्धतिकी टीका और त्रिकण्डिकासूत्र विवरण नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

महादेव दीक्षित—वौधायनसोमप्रयोगके प्रणेता।

महादेव दैवज्ञ—गोलनिर्णयके रचयिता।

महादेव पण्डित—१ हरिवंशोद्योतकके रचयिता। २ हिक्-मत्प्रकाश और हिक्मतप्रदीप नामक ग्रन्थके प्रणेता। ३ रसपद्धति नामक वैद्यकग्रन्थकी टीकाके रचयिता।

महादेव पहाड़—मध्यप्रदेशके होसङ्गावाद जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी। सतपुरा गिरिमालाके मूलांशसे निकल कर इसका स्वतन्त्र नाम हो गया है। पुर्णभवा और शोणभद्रा नामकी दो नदिया पर्वतको घेरे हुई हैं। इस स्थानका प्राकृतिक सौन्दर्य उतना खराब नहीं है। पांचमड़ीका स्वास्थ्यवास प्रायः हजार फुटसे ऊंचे शृङ्ग पर वसा हुआ है।

महादेव पुण्यस्तम्भकर—एक विख्यात नैयायिक, मुकुन्दके पुत्र और श्रीकण्ठ दीक्षितके शिष्य। इन्होंने न्यायकौस्तुभ नामक चिन्तामणिके प्रत्यक्षखण्डका विवरण लिखा है। आलावा इसके भवानन्दी-प्रकाश, सर्वोपकारिणी भवा-नन्दी टीका, लौगाक्षी भास्कर कृत पदार्थप्रकाशका पदार्थ-प्रकाशभाष्य और मितभाषिणी नामक न्यायवृत्ति रची है।

महादेवमणि (सं० पु०) महामेधा।

महादेवपोखरा—नेपालका एक गिरिशृङ्ग।

महादेवभट्ट दिनकर—एक विख्यात नैयायिक, वालकृष्णके पुत्र और नीलकण्ठके शिष्य। इन्होंने अपने पितासे सहायता ले कर न्यायसिद्धान्तमुक्तावलिप्रकाश वा दिन-करी (टीका)-की रचना की है।

महादेव भट्ट पट्टवर्द्धन—१ कवीन्द्र-चन्द्रोदयोद्धृत एक कवि।

महादेव-मङ्गलम्—१ उत्तर अर्काट जिलेका एक प्राचीन ग्राम। यह पोलुर तालुक सदरसे ३॥० कोस पूर्वमें अवस्थित है। यहां पाण्ड्य और चोल-राजाओंका वनाया हुआ कुछ प्राचीन मन्दिर विद्यमान हैं।

२ उक्त तालुकसे ४॥० कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित एक वड़ा ग्राम।

महादेवरस—वनवासिराज-विज्जलके अधीनस्थ एक सामन्त।

महादेव वाजपेयी—सुवोधिनी नामक वौधायन-कल्पसूत्र-भाष्यके प्रणेता। इन्होंने भवस्वामीका मतानुसरण कर उक्त ग्रन्थ लिखा है। त्र्यम्बकाध्वर-यज्ञमें ये अध्वर्यु थे।

महादेव वादीन्द्र—रससार-गुणकिरणावली-टीकाके रच-यिता, शङ्करके शिष्य।

महादेवविट्—गिरनारके एक हिन्दू राजा, कालजितके पुत्र। आप कालनिर्णयसिद्धान्तके प्रणेता रघुरामके प्रतिपालक थे।

महादेव विद्यावागीश—आनन्द-लहरीटीका और नैषधचरित टीकाके प्रणेता।

महादेववेदान्तवागीश—विपरीत-प्रत्यङ्गिरस्तोत्रके प्रणेता।

महादेव वेदान्तिन्—निजविनोद नामक टीकाके रचयिता।

महादेवशर्मा—अद्भुतसारके प्रणेता।

महादेवशास्त्री—१ उन्मत्त-राघव नाटकके रचयिता। २ तत्त्वमानस-स्तोत्रके प्रणेता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महादेव सरस्वती वेदान्तिन्—स्वयम्प्रकाशानन्द सरस्वतीके शिष्य। इन्होंने तत्त्वचन्द्रिका, तत्त्वानुसन्धान और उसकी टीका, सांख्य सूत्रवृत्ति, सांख्यप्रवचन-वृत्तिसार और १६६४ ई०में विष्णुसहस्रनामकी टीका लिखी है।

महादेव सर्वज्ञवादीन्द्र—एक विख्यात पण्डित, न्यायसार-विचारके प्रणेता राघव-भट्टके गुरु। ये शायद १२५० ई०में विद्यमान थे।

महादेव हरिवंश—बृहज्जातक प्रकाशके रचयिता। इन्होंने १५२१ ई०में राजा रामभद्रकी सभामें विद्यमान् रह कर उक्त ग्रन्थ लिखा था।

महादेवानन्द—अद्वैतचिन्ता-कौस्तुभके प्रणेता।

महादेवाश्रम—१ एक योगी, तर्कदीपिकाके प्रणेता विश्वनाथाश्रमके गुरु।

२ सांख्यकारिकावृत्तिके प्रणेता।

महादेवी (सं० स्त्री०) महादेवस्य पत्नीति, पत्न्यर्थे ङीष् यद्वा महती चासौ चेति। १ दुर्गा। इनके नामकी व्युत्पत्ति—

"पूज्यते या सुरैः सर्वैर्महांश्चैव प्रमाणतः।
धातुर्महेति पूजायां महादेवी ततः स्मृताः॥" (देवीपुराण)

मह धातुका अर्थ पूजा है, सभी देवगण इनकी पूजा करते हैं इसलिये इनका नाम महादेवी पड़ा है।

२ राजाकी प्रधान पत्नी या पटरानीकी एक पदवी जो हिन्दू कालमें प्रचलित थी।

महादेवीत्व (सं० क्ली०) राजाकी पटरानीका कर्म या भाव।

महादेवीय (सं० त्रि०) महादेव सम्पर्कीय, महादेवरचित।

महादेवेन्द्र सरस्वती—परमामृतके रचयिता। इन्होंने प्रज्ञानेन्द्रसे विद्याशिक्षा प्राप्त की थी।

महादैत्य (सं० पु०) महांश्चासौ दैत्यश्चेति। १ भौत्य मन्वन्तरके एक दैत्यका नाम। (गरुड़पु० ७८ अ०)

२ द्वितीय चन्द्रगुप्तके पितामह एक राजा।

महादैर्घतमस (सं० क्ली०) सामभेद।

महाद्भुत (सं० त्रि०) अत्यद्भुत, अचरज।

महाद्युति (सं० त्रि०) १ उज्ज्वल आलोक, चमकीली रोशनी। २ चन्द्र-मण्डलके जैसा अत्यन्त उज्ज्वल-ज्योतिःप्रकाश।

महाद्योत (सं० स्त्री०) तान्त्रिकोंकी एक देवीका नाम।

महाद्रावक (सं० पु०) द्रावयी रोगानिति द्रु-णिच्-ण्वुल्, महांश्चासौ द्रावकश्चेति। औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—अड़ूस, चितामूल, अपाङ्ग, इमलीकी छाल, कुम्हड़ेका डंठल, सीजका मल, तालजटा, पुनर्णवा और बेंत इसकी भस्मको कागजी नीबूके रसमें मिला कर छान ले। पीछे उसे कड़ी धूपमें सुखने दे। अनन्तर यह सूखा हुआ क्षार २ पल, फिटकरी १ पल, निशादल २ पल, सैन्धव ४ तोला, सोहागा २ तोला, हीराकस १ तोला, मुद्राशङ्ख १ तोला, समुद्रफेन १ तोला, इन सब द्रव्योंके चूर्णको वकयन्त्रमें चुआ कर अरक तय्यार करे। इसीका नाम महाद्रावक है। इसके द्वारा रसादिका जारण होता है। इस अरकका चार पांच बुंद जलमें डाल कर सेवन करनेसे यकृत, प्लीहा और गुल्मादि नाना प्रकारके रोग नष्ट होते हैं। (भैषज्यरत्नावली)

दूसरा तरीका—शुद्ध स्वर्णमाक्षिक, सैन्धव, रसाञ्जन, समुद्रफेन, सज्जीमिट्टी और सम्भलक्षार, प्रत्येक १ तोला, सोहागा ७ तोला, निशादल और फिटकरी प्रत्येक ३॥ तोला, यवक्षार १४ तोला, कसीस, पुष्पकसीस, धातुकसीस कुल १४ तोला, इनके चूर्णको वकयन्त्रमें चुआ लेनेसे महाद्रावक बनता है। यह प्लीहा और यकृद्रोगमें बहुत लाभदायक है।

महाद्रावकरस (सं० पु०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—यवक्षार २ भाग, फिटकरी ३ भाग, इसे गायके बछड़ेके मूतमें पीस कर सुखा ले। पीछे किसी सीसेके बने बरतनमें चिथड़े और मिट्टीका प्रलेप दे कर उसमें उक्त चूर्णको रख छोड़े। अब उस बरतनको सीसेके बने किसी दूसरे बरतन पर औंधे मुंह बैठा कर दोनोंके मुखमें लेप लगा दे। नीचेकी हांड़ीके पेंदेमें एक छेद और नीचे गड्ढा रहेगा। गड्ढेमें एक और बरतन रखना जरूरी है। अब सबसे ऊपरवाले बरतनके पेंदे पर आग बाल दे। आगकी गरमीसे बरतनमें जो द्रव्य है वह गलने लगेगा और उसका रस टपक कर गड्ढेमें रखे हुए बरतनमें गिरेगा। अनन्तर उस रसमें लवङ्ग चूर्ण वा जारित ताम्र मिला कर १ रत्तीकी गोली बनावे। इस औषधका सेवन करनेसे प्लीहा और यकृद् द्रवीभूत हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है। प्लीहा और यकृद्रोगमें यह एक उत्कृष्ट औषध है। श्वित्र और दद्रु आदि रोगोंमें इसका स्थानिक प्रयोग भी किया जाता है। किन्तु इसमें आगकी तरह जलन होती है। अतएव इसमें दधिका प्रलेप देना उत्तम है।

महाद्रुम (सं० पु०) महांश्चासौ द्रुमश्चेति। १ अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़। २ वृहद्वृक्ष, बड़ा पेड़। ३ ताल वृक्ष, ताड़का गाछ। ४ मधुक वृक्ष, महुएका पेड़। ५ शाकद्वीपपति भव्यके सप्तम पुत्रका नाम। (मार्कण्डेयपु० ५३।२१) ६ वर्षभेद। (लिङ्गपु० ४६।२६)

महाद्रोण (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ सुमेरु पर्वत

महाद्रोणा (सं० स्त्री०) महती चासौ द्रोणा चेति द्रोणपुष्पी।

महाद्वीप (सं० पु०) पृथ्वीका वह बड़ा भाग जो चारों ओर नैसर्गिक सीमाओंसे घिरा हुआ हो और जिसमें अनेक देश हों और अनेक जातियां वास करती हों। जैसे—एशिया, अफ्रिका।

महाधन (सं० त्रि०) १ बहुमूल्य, बेशकिमती। २ बहुत धनी, दौलतमन्द। (पु०) ३ स्वर्ण, सोना। ४ कृषि, खेती। ५ धूप, सुगंध धूप।

महाधातु (सं० पु०) सुवर्ण, सोना।

महाधिपति (सं० पु०) तान्त्रिकोंके एक देवताका नाम।

महाधी (सं० त्रि०) १ महाज्ञानी। २ विशिष्ट बुद्धि-सम्पन्न, ज्ञानवान्।

महाधीर (सं० पु०) सह्याद्रिवर्णित दो राजा।

महाधृति (सं० पु०) राजपुत्रभेद।

(भागवत ९।१३।१६)

महाध्वनि (सं० पु०) १ पुराणानुसार एक दानवका नाम। २ बड़े जोरका शब्द।

महाध्वनिक (सं० पु०) अध्वनि गच्छतीति अध्वन्-ठक्, महांश्चासौ आध्वनिकश्चेति। पुण्यार्थं हिमालयावधि महापथ गमन द्वारा सम्पादित मृत्यु, वह जो पुण्यकार्यके लिये हिमालयमें गया हो और वहीं मर गया हो। "भृग्वग्निजलसंग्रामदेशान्तरस्थसंन्यासान शनाशनिमहाध्वनिकाना-मुदकक्रिया कार्या सद्यःशौचं भवतीति" (शुद्धितत्त्व) इनकी मृत्यु होने पर उदकक्रिया तथा सद्यःशौच होता है।

महाध्वर (सं० पु०) श्रेष्ठ यज्ञ।

महान् (स० त्रि०) १ बहुत बड़ा, विशाल। २ वराहमदन-वृक्ष। ३ उष्ट्र, ऊंट। ४ एक प्रकारका शालिधान।

महाधात्री (सं० स्त्री०) आमलकी वृक्ष।

महानक (सं० पु०) आनद्धयन्त्रविशेष, प्राचीनकाल का एक प्रकारका बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

महानख (सं० पु०) १ दीर्घनख, बड़ा नाखून। २ शिव, महादेव।

महानगर (सं० क्ली०) १ बड़ा नगर। २ नगरभेद।

महानग्न (सं० त्रि०) १ सब प्रकारसे उलङ्ग, एकदम नङ्गा। २ अनाच्छादित, जिसके शरीर पर कपड़ा न हो। ३ प्रणयी, प्रेम करनेवाला। ४ उपपति, स्त्री का यार। (पु०) ५ प्राचीनकालका एक कर्मचारी जो बहुत ऊँचे पद पर होता था।

महानग्नी (सं० स्त्री०) गृहकर्त्री, घर पर काम काज करने वाली स्त्री वा दासी।

महानट (सं० पु०) महांश्चासौ नटः नर्त्तकश्चेति, उद्धत-नर्त्तकत्वादस्य तथात्वं। शिव, महादेव।

महानद (सं० पु०) १ नदविशेष। (मार्कपु० ५७।२१) २ तीर्थविशेष। (वृहन्नील० २१।२३)

महानदी (सं० स्त्री०) महती चासौ नदी चेति। पुरुषोत्तमक्षेत्रके अन्तर्गत कटकके उत्तरमें प्रवाहित एक नदी। इसका दूसरा नाम चित्रोत्पला है। चित्रोत्पला नामकी एक दूसरी भी नदी कटक जिलेमें बहती है। यह महानदी विन्ध्यपर्वतसे निकली है। इसमें स्नान करनेसे सभी पाप जाते रहते हैं।

"नदी तत्र महापुण्या विन्ध्यपादविनिर्गता।
चित्रोत्पलेति विख्याता सर्वपापहरा शुभा॥"

(पुरुषोत्तमतत्त्व)

२ गङ्गा।

"अम्बजमम्बुनि जातं जातु न जायते अम्बुजादम्बु।
मुरहर तव विपरीतं पादाम्बुजान्महानदी जाता॥"

(उद्भट)

महानदी—मध्यप्रदेश और उड़ीसाके सामन्तराज्य हो कर प्रवाहित एक नदी। यह रायपुर जिलेके अक्षा० २०° १′ उ० तथा देशा० ८२° पू०से निकल कर ५२० मीलका रास्ता तै करके बङ्गोपसागरमें गिरी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रायगढ़से २५ मील दक्षिण छत्तीसगढ़की पहाड़ी अधित्यका भूमि होती हुई यह शिहोया ग्रामके समीप चली गई है। वहां इसका आकार बहुत छोटा है। शिवनारायणके समीप शिवनाद, जोङ्ग और हासद्रु नामक तीन शाखाएं इससे मिलती हैं। इसलिये यहां पर महानदीका आकार कुछ बड़ा हो गया है। इसके बाद मलहार नगरको पार कर यह मान्द और केलू नदी-में मिल गई है। पद्मपुरके समीप पर्वतमालामें टक्कर खा कर इसकी धारा प्रखर हो गई है। यहां पर नाव द्वारा नदी पार करना खतरनाक है। जहां यह इबा नामक नदीसे मिली है, वहां इसकी गति दूनी हो गई है। बादमें पहाड़ी प्रदेश होती हुई यह सम्भलपुरके दक्षिण शोणपुरके समीप तेल नामक नदीमें मिलती हैं।

अनन्तर महानदी वक्रगतिमें पहाड़ी देशको पार कर ढोलपुर होती हुई उड़ीसाके सामन्त राज्योंमें बह गई है। यहां ऊंचे स्थानसे गिरनेके कारण इसकी गति इतनी तेज है, कि नाव द्वारा नदी पार करनेका साहस नहीं होता। आस पासके पहाड़ी प्रदेश और वनविभाग-ने महानदीको और भी भयावह बना दिया है।

इस प्रकार मध्यप्रदेशसे क्रमशः पूर्वकी ओर आ कर ७ मील पश्चिम नराज नामक स्थानके समीप गिरिकन्दर-को भेद करती हुई चली गई है। यहां इसका आकार कुछ बड़ा हो गया है। बादमें यह कटक जिला होती हुई विभिन्न शाखा प्रशाखामें फलस पैण्टके निकट बङ्गोपसागरमें गिरती है।

महानदीके मुहानेकी जो सब बड़ी बड़ी नदियां इसके कलेवरको बढ़ाती हैं उनमें कटजुरी, जोतदार, पाइका विरूपा और चितरतला प्रधान हैं। अलावा इसके कोआखाई, बड़ी और छोटी देवी, केलो, ब्राह्मणी और नून नामक शाखा नदियां उल्लेख करने योग्य हैं। फिर केन्द्रोपाड़ा, गोबरी, पटामुण्डी, तालदण्डा, माछगांव, हाइलेभल आदि नहर भी वाणिज्यकी सुविधाके लिये काटी गई हैं। १८५८ ई०में कप्तान थारिसने इसकी जल-गतिका पता लगा कर लिखा है, कि नराजकन्दरसे प्रति सेकेण्डमें १८००००० घनफुट जल गिरता है।

२ दशपल्ला सामन्तराज्यके अन्तर्गत एक छोटी नदी। यह मान्द्राज प्रदेशके गञ्जाम जिलान्तर्गत आस्का नगरके समीप ऋषिकुल्या नदीसे मिलती है। रासेलकोण्डा और गुमसर नगर इसके किनारे अवस्थित हैं।

महानदी (छोटी)—मध्यप्रदेशके मण्डला जिलेसे निकली हुई एक नदी। जब्बलपुर और रेवाके सीमान्तसे होती हुई यह ५० कोसका रास्ता तै करके शोणनदीमें गिरती है। नदीके दोनों किनारे शालके वन हैं। देवगिरिके समीप एक कोयलेकी खान और एक गरम सोता देखनेमें आता है।

महानन (सं० पु०) १ बृहत् मुख, बड़ा मुंह। २ श्रेष्ठ वा सुन्दर मुख।

महानन्द (सं० पु०) महान् आनन्दो ऽत्र। १ मुक्ति, मोक्ष। संसारदुःखमोचन ही आनन्दकी शेष सीमा है इसलिये महानन्दका अर्थ मुक्ति हुआ। महान् आनन्दः कर्मधा०। २ अतिशय आह्लाद। ३ मगध देशका एक प्रतापी राजा। इसके डरसे सिकंदर आगे न बढ़ कर पंजाब हीसे अपने देश लौट गया था। ४ दश अंगुलकी मुरली। इस वाद्यके देवता ब्रह्मा माने गये हैं।

महानन्द— १ नक्षत्रेष्टि प्रयोगके रचयिता। २ विश्व-नाथके पुत्र। इन्होंने 'वासिष्ठि शान्ति' नामक ग्रंथकी रचना की।

महानन्दधीर—काव्यकलाप चम्पूके रचयिता।

महानन्दा (सं० स्त्री०) महान् आनन्दोऽस्याः। १ सुरा, शराब। २ माघ शुक्लानवमी।

"माघमासस्य या शुक्ला नवमी लोकपूजिता।
महानन्देति सा प्रोक्ता सदानन्दकरी नृनाम्।
स्नानं दानं जपो होमो देवार्च्चन मुपोषणम्।
सर्वं तदक्षयं प्रोक्तं यदस्यां क्रियते नरैः॥" (तिथितत्त्व)

चान्द्र माघ मासकी शुक्ला नवमीका नाम महानन्दा है। यह तिथि मानवोंको आनन्द देनेवाली है। इस तिथिमें स्नान, दान, जप, होम, देवपूजा और उपवास आदि जो कुछ सदनुष्ठान किया जाता है, वह अक्षय होता है। इस तिथिमें जिस किसी पापकर्मका अनुष्ठान किया जायगा वह भी अक्षय होता है। अतएव इस दिन पापा-नुष्ठान कभी भी नहीं करना चाहिये।

महानन्दा—बङ्गालमें प्रवाहित एक नदी। यह दार्जिलिङ्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिलेमें महालदिराम नामक हिमालय पहाड़से निकल कर जलपाईगोड़ी और दार्जिलिङ्ग जिलेके मध्य होती हुई सिलिगुड़ीके समीप नववलासन नदीमें मिली है। इसके वाद तितलिया ग्राम तक आ कर दङ्क, पीतानु, नागर, मेछी और कङ्काई आदि नदियोंके साथ मिल गई है। कलियागञ्ज, हल्दीवाड़ी, कृष्णगञ्ज और वरसोई ये चार प्रधान हाट महानन्दाके किनारे अवस्थित है।

पूर्णिया जिलेमें आ कर इसकी गति टेढ़ी हो गई है और इसी टेढ़ी गतिसे यह मालदह जिले तक आई है। यहां पर टाङ्गन, पुनर्भवा और कालिन्दी नदी इससे मिलती है। वर्षाऋतुको छोड़ कर और सभी ऋतुओंमें इसका जल सूख जाता है।

अन्तमें यह नदी मालदह जिलेके दक्षिण और राजशाही जिलेके गोदागड़ी थानाके उत्तर पद्मासे मिलती है। पहले यह नदी पूर्णिया नगर हो कर वहती थी, पर अभी वह गति परिवर्त्तित हो कर पश्चिमामुखी हो गई है।

महानन्दि (सं० क्ली०) आ सम्यक् नन्दतीति आनन्द (सर्व धातुभ्य इन्। उण् ४।११७) इति इन्। १ नन्दिवर्द्धन-राजपुत्र। रघुनन्दनने शुद्धितत्त्वमें सोच विचार कर स्थिर किया है, कि कलिमें महानन्दि तक क्षत्रिय राजा राज्य करेंगे। वाद उनके शूद्र राजा होगा*। किन्तु यह मत सर्वावादिसम्मत नहीं है, कारण आज भी भारतके नाना स्थानोंमें क्षत्रियवंश विद्यमान हैं।

२ अजातशत्रुके एक पुत्रका नाम।

महानय (सं० पु०) उष्ट्र, ऊँट।

महानरक (सं० क्ली०) महान् अतिशय यातनाप्रदो नरकः। वहुत कष्ट देनेवाला नरक। नरक देखो।

"तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ।
नरकं कालसूत्रञ्च महानरकमेव च॥" (मनु ४।८८)

महानल (सं० क्ली०) महांश्चासौ नलश्चेति। १ देवनल, नरकट। महांश्चासौ अनलश्चेति। २ वृहदग्नि, भयानक आग। ३ तीर्थभेद। (वृ० नील० २१) ४ पारद, पारा।

महानवमी (सं० स्त्री०) महतीचासौ नवमीचेति। चान्द्र-आश्विनकी शुक्ला नवमी।

"प्रावृट्काले विशेषेण आश्विने ह्यष्टमीयुतः।
महाशब्दो नवम्यान्तु लोके ख्यातिं गमिष्यति॥"
(तिथितत्त्व)

आश्विन मासकी शुक्ला अष्टमी और नवमी तिथिको महाष्टमी और महानवमी कहते हैं। इसका दूसरा नाम दुर्गानवमी भी है। इस तिथिमें दुर्गातन्त्र मन्त्र द्वारा देवी भगवती दुर्गाका पूजन और उन्हें वलि चढ़ाई जाती है। यह तिथि देवीको अतिशय प्रिय है।

"दुर्गातन्त्रेण मन्त्रेण कुर्य्युर्दुर्गा महोत्सवम्।
महानवम्यां शरदि वलिदानं नृपादयः॥" (तिथितत्त्व)

महानवमीके दिन सभीको दुर्गापूजा अवश्य करनी चाहिये। जो नवम्यादि कल्प और प्रतिपदादि कल्पानुसार दुर्गापूजा कर सकते हैं, वे इस तिथिमें विविधोपचारसे पूजा करें। परन्तु जो असमर्थ हैं उन्हें कमसे कम पुष्प और विल्वपत्र द्वारा भी देवीपूजा करनी चाहिये। पूजा करनी ही होगी, यही शास्त्रकी व्यवस्था है। महानवमीके दिन पूजा होनेसे उसको महानवमी-कल्प कहते हैं। यह तिथि जिस दिन घटिका व्यापिनी होगी, उसी दिन महानवमी पूजा करनी चाहिये। घटिका शब्दका अर्थ है मुहूर्त्त अर्थात् जिस दिन मुहूर्त्तकाल होगा उसी दिन पूजा होगी, उसके पहले दिन नहीं।

"यस्त्वेकस्यां महाष्टम्यां नवम्यां वाथ साधकः।
पूजयेद्वरदां देवीं सर्वकाम फलप्रदाम्॥
व्रतोपवासस्नानादौ घटि कैका यदा भवेत्।
तामेव तिथिमाश्रित्य कुर्यात् कर्मयतन्द्रितः॥
अत्र घटिका पदं मुहूर्त्तपरं" (तिथितत्त्व)

दुर्गापूजा देखो।

* चत्वारिंश तथा भाव्यो राजा वै नन्दिवर्द्धनः।
चत्वारिंशत्त्रयश्चैव महानन्दिर्भविष्यति॥
महानन्दिसुतश्चापि शूद्रायां कलिकांशजः।
उत्पत्स्यते महापद्मः सर्वक्षत्रान्तको नृपः॥
ततः प्रभृति राजानो भविष्याः शूद्रयोनयः।
(मत्स्यपु० २४६ अ०)

अपि महानन्दिसुतः शूद्रागर्भोद्भवो ऽतिलुब्धो महापद्मनन्दः परशुराम इवापरोऽखिलक्षत्रियान्तकारी भविता ततः प्रभृति शूद्रा भूपाला भविष्यन्ति। तेन महानन्दिपर्यन्तं क्षत्रिय आसीत्।
(शुद्धितत्त्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रायगढ़से २५ मील दक्षिण छत्तीसगढ़की पहाड़ी अधित्यका भूमि होती हुई यह शिहोया ग्रामके समीप चली गई है। वहां इसका आकार बहुत छोटा है। शिवनारायणके समीप शिवनाथ, जोङ्क और हासद्रु नामक तीन शाखाएं इससे मिलती हैं। इसलिये यहां पर महानदीका आकार कुछ बड़ा हो गया है। इसके बाद मलहार नगरको पार कर यह मान्द और केलू नदी-में मिल गई है। पद्मपुरके समीप पर्वतमालामें टक्कर खा कर इसकी धारा प्रखर हो गई है। यहां पर नाव द्वारा नदी पार करना खतरनाक है। जहां यह इवा नामक नदीसे मिली है, वहां इसकी गति दूनी हो गई है। बादमें पहाड़ी प्रदेश होती हुई यह सम्भलपुरके दक्षिण शोणपुरके समीप तेल नामक नदीमें मिलती हैं।

अनन्तर महानदी वक्रगतिमें पहाड़ी देशको पार कर ढोलपुर होती हुई उड़ीसाके सामन्त राज्योंमें बह गई है। यहां ऊंचे स्थानसे गिरनेके कारण इसकी गति इतनी तेज है, कि नाव द्वारा नदी पार करनेका साहस नहीं होता। आस पासके पहाड़ी प्रदेश और वनविभाग-ने महानदीको और भी भयावह बना दिया है।

इस प्रकार मध्यप्रदेशसे क्रमशः पूर्वकी ओर आ कर ७ मील पश्चिम नराज नामक स्थानके समीप गिरिकन्दर-को भेद करती हुई चली गई है। यहां इसका आकार कुछ बड़ा हो गया है। बादमें यह कटक जिला होती हुई विभिन्न शाखा प्रशाखामें फलस पैण्टके निकट बङ्गोपसागरमें गिरती है।

महानदीके मुहानेकी जो सब बड़ी बड़ी नदियां इसके कलेवरको बढ़ाती हैं उनमें कटजुरी, जोतदार, पाइका विरूपा और चितरतला प्रधान हैं। अलावा इसके कोआखाई, बड़ी और छोटी देवी, केलो, ब्राह्मणी और नून नामक शाखा नदियां उल्लेख करने योग्य हैं। फिर केन्द्रोपाड़ा, गोवरी, पटामुण्डी, तालदण्डा, माछगांव, हाइलेभल आदि नहर भी वाणिज्यकी सुविधाके लिये काटी गई हैं। १८५८ ई०में कप्तान थारिसने इसकी जल-गतिका पता लगा कर लिखा है, कि नराजकन्दरसे प्रति सेकेण्डमें १८००००० घनफुट जल गिरता है।

२ दशपल्ला सामन्तराज्यके अन्तर्गत एक छोटी नदी। यह मान्द्राज प्रदेशके गञ्जाम जिलान्तर्गत आस्का नगरके समीप ऋषिकुल्या नदीसे मिलती है। रासेलकोण्डा और गुमसर नगर इसके किनारे अवस्थित हैं।

महानदी (छोटी)—मध्यप्रदेशके मण्डला जिलेसे निकली हुई एक नदी। जब्बलपुर और रेवाके सीमान्तसे होती हुई यह ५० कोसका रास्ता तै करके शोणनदीमें गिरती है। नदीके दोनों किनारे शालके वन हैं। देवगिरिके समीप एक कोयलेकी खान और एक गरम सोता देखनेमें आता है।

महानन (सं० पु०) १ बृहत् मुख, बड़ा मुंह। २ श्रेष्ठ वा सुन्दर मुख।

महानन्द (सं० पु०) महान् आनन्दो ऽत्र। १ मुक्ति, मोक्ष। संसारदुःखमोचन ही आनन्दकी शेष सीमा है इसलिये महानन्दका अर्थ मुक्ति हुआ। महान् आनन्दः कर्मधा०। २ अतिशय आह्लाद। ३ मगध देशका एक प्रतापी राजा। इसके डरसे सिकंदर आगे न बढ़ कर पंजाब हीसे अपने देश लौट गया था। ४ दश अंगुलकी सुरली। इस वाद्यके देवता ब्रह्मा माने गये हैं।

महानन्द— १ नक्षत्रेष्टि प्रयोगके रचयिता। २ विश्व-नाथके पुत्र। इन्होंने 'वासिष्ठि शान्ति' नामक ग्रंथकी रचना की।

महानन्दधीर—काव्यकलाप चम्पूके रचयिता।

महानन्दा (सं० स्त्री०) महान् आनन्दोऽस्याः। १ सुरा, शराब। २ माघ शुक्लानवमी।

"माघमासस्य या शुक्ला नवमी लोकपूजिता।
महानन्देति सा प्रोक्ता सदानन्दकरी नृनाम्।
स्नानं दानं जपो होमो देवार्च्चन मुपोषणम्।
सर्वं तदक्षयं प्रोक्तं यदस्यां क्रियते नरैः॥" (तिथितत्त्व)

चान्द्र माघ मासकी शुक्ला नवमीका नाम महानन्दा है। यह तिथि मानवोंको आनन्द देनेवाली है। इस तिथिमें स्नान, दान, जप, होम, देवपूजा और उपवास आदि जो कुछ सदनुष्ठान किया जाता है, वह अक्षय होता है। इस तिथिमें जिस किसी पापकर्मका अनुष्ठान किया जायगा यह भी अक्षय होता है। अतएव इस दिन पापा-नुष्ठान कभी भी नहीं करना चाहिये।

महानन्दा—बङ्गालमें प्रवाहित एक नदी। यह दार्जिलिङ्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिलेमें महालदिराम नामक हिमालय पहाड़से निकल कर जलपाईगोड़ी और दार्जिलिङ्ग जिलेके मध्य होती हुई सिलिगुड़ीके समीप नववलासन नदीमें मिली है। इसके बाद तितलिया ग्राम तक आ कर दङ्क, पीतानु, नागर, मेछी और कङ्काई आदि नदियोंके साथ मिल गई है। कलियागञ्ज, हल्दीवाड़ी, कृष्णगञ्ज और वरसोई ये चार प्रधान हाट महानन्दाके किनारे अवस्थित है।

पूर्णिया जिलेमें आ कर इसकी गति टेढ़ी हो गई है और इसी टेढ़ी गतिसे यह मालदह जिले तक आई है। यहां पर टाङ्गन, पुनर्भवा और कालिन्दी नदी इससे मिलती है। वर्षाऋतुको छोड़ कर और सभी ऋतुओंमें इसका जल सूख जाता है।

अन्तमें यह नदी मालदह जिलेके दक्षिण और राजशाही जिलेके गोदागड़ी थानाके उत्तर पद्मासे मिलती है। पहले यह नदी पूर्णिया नगर हो कर बहती थी, पर अभी वह गति परिवर्त्तित हो कर पश्चिमामुखी हो गई है।

महानन्दि (सं० क्ली०) आ सम्यक् नन्दतीति आ-नन्द (सर्व धातुभ्य इन्। उण् ४।११७) इति इन्। १ नन्दिवर्द्धन-राजपुत्र। रघुनन्दनने शुद्धितत्त्वमें सोच विचार कर स्थिर किया है, कि कलिमें महानन्दि तक क्षत्रिय राजा राज्य करेंगे। बाद उनके शूद्र राजा होगा*। किन्तु यह मत सर्ववादिसम्मत नहीं है, कारण आज भी भारतके नाना स्थानोंमें क्षत्रियवंश विद्यमान हैं।

२ अजातशत्रुके एक पुत्रका नाम।

महानय (सं० पु०) उष्ट्र, ऊँट।

महानरक (सं० क्ली०) महान् अतिशय यातनाऽदो नरकः। बहुत कष्ट देनेवाला नरक। नरक देखो।

"तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ।
नरकं कालसूत्रञ्च महानरकमेव च॥" (मनु ४।८८)

महानल (सं० क्ली०) महांश्चासौ नलश्चेति। १ देवनल, नरकट। महांश्चासौ अनलश्चेति। २ वृहदग्नि, भयानक आग। ३ तीर्थभेद। (वृ० नील० २१) ४ पारद, पारा।

महानवमी (सं० स्त्री०) महतोचासौ नवमीचेति। चान्द्र-आश्विनकी शुक्ला नवमी।

"प्रावृट्काले विशेषेण आश्विने ह्यष्टमीयुतः।
महाशब्दो नवम्यान्तु लोके ख्यातिं गमिष्यति॥"
(तिथितत्त्व)

आश्विन मासकी शुक्ला अष्टमी और नवमी तिथिको महाष्टमी और महानवमी कहते हैं। इसका दूसरा नाम दुर्गानवमी भी है। इस तिथिमें दुर्गातन्त्र मन्त्र द्वारा देवी भगवती दुर्गाका पूजन और उन्हें बलि चढ़ाई जाती है। यह तिथि देवीको अतिशय प्रिय है।

"दुर्गातन्त्रेण मन्त्रेण कुर्य्युर्दुर्गा महोत्सवम्।
महानवम्यां शरदि बलिदानं नृपादयः॥" (तिथितत्त्व)

महानवमीके दिन सभीको दुर्गापूजा अवश्य करनी चाहिये। जो नवम्यादि कल्प और प्रतिपदादि कल्पानुसार दुर्गापूजा कर सकते हैं, वे इस तिथिमें विविधोपचारसे पूजा करें। परन्तु जो असमर्थ हैं उन्हें कमसे कम पुष्प और बिल्वपत्र द्वारा भी देवीपूजा करनी चाहिये। पूजा करनी ही होगी, यही शास्त्रकी व्यवस्था है। महानवमीके दिन पूजा होनेसे उसको महानवमी-कल्प कहते हैं। यह तिथि जिस दिन घटिका व्यापिनी होगी, उसी दिन महानवमी पूजा करनी चाहिये। घटिका शब्दका अर्थ है मुहूर्त्त अर्थात् जिस दिन मुहूर्त्तकाल होगा उसी दिन पूजा होगी, उसके पहले दिन नहीं।

"यस्त्वेकस्यां महाष्टम्यां नवम्यां वाथ साधकः।
पूजयेद्वरदां देवीं सर्वकाम फलप्रदाम्॥
व्रतोपवासस्नानादौ घटि कैका यदा भवेत्।
तामेव तिथिमाश्रित्य कुर्यात् कर्मणयतन्द्रितः॥
अत्र घटिका पदं मुहूर्त्तपरं" (तिथितत्त्व)

दुर्गापूजा देखो।

* चत्वारिंश तथा भाव्यो राजा वै नन्दिवर्द्धनः।
चत्वारिंशत्त्रयश्चैव महानन्दिर्भविष्यति॥
महानन्दिसुतश्चापि शूद्रायां कलिकांशजः।
उत्पत्स्यते महापद्मः सर्वक्षत्रान्तको नृपः॥
ततः प्रभृति राजानो भविष्याः शूद्रयोनयः।
(मत्स्यपु० २४६ अ०)

अपि महानन्दिसुतः शूद्रागर्भाद्भवो ऽतिलुब्धो महापद्मनन्दः परशुराम इवापरोऽखिलक्षत्रियान्तकारी भविता ततः प्रभृति शूद्रा भूपाला भविष्यन्ति। तेन महानन्दिपर्यन्तं क्षत्रिय आसीत्।
(शुद्धितत्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महानस (सं० क्ली०) महच्च तत् ज्ञानश्चेति (अनोऽस्माय: सरसां जातिसंज्ञयोः । पा ५।४।९४) इति संज्ञायां टच् । रन्धनगृह, पाकशाला, रसोईघर । सुश्रुतमें महानसका विषय इस प्रकार लिखा है—प्रशस्त दिशामें और प्रशस्त स्थानमें रन्धनशाला बनानी चाहिये । उसमें हवा आने जाने तथा धुआं निकलनेके लिये दो चार झरोखे भी अवश्य होने चाहिये । रन्धनपात्र साफ सुथरा होना चाहिये । जहां तक हो सके, अपने ही आदमीको रसोई बनानेमें नियुक्त करें । आहार ही प्राणियोंकी स्थितिका मूल है । अतः राजाको उचित है, कि वे पाकशालामें कुलीन, धार्मिक, स्निग्ध, सर्वदा कार्यतत्पर, निर्लोभ, सरल, कृतज्ञ, प्रियदर्शन ; क्रोध, कार्कश्य, मात्सर्य, मत्तता और आलस्यवर्जित, जितेन्द्रिय, क्षमाशील आदि सद्गुणयुक्त व्यक्तिको नियुक्त करें । महानसकी परिचर्या करनेवालोंमें भी शुचि, दयाशील, दक्ष, विनीत, प्रियदर्शन और पवित्र, नख और केशहीन, स्नान, दृढ़, संयमी आदि गुण रहने चाहिये । (सुश्रुत कल्पस्था १ अ०)

पाकराजेश्वरमें लिखा है—घरके अग्निकोणमें पाकशाला बनावे । उसमें झरोखे, चूल्हे आदि अवश्य रहें । मिट्टीके बरतनको अच्छी तरह साफ कर उसमें पाक करे । यों तो प्रायः सभी धातुके बरतनमें पाक किया जा सकता है, पर मिट्टीका बरतन ही पाकके लिये श्रेष्ठ बत लाया गया है । मिट्टीके बरतन यदि न हो, तो लोहेके बरतनमें पाक कर सकते हैं । लोहेके बरतनमें पकाया हुआ अन्न खानेसे चक्षुरोग और अर्श विकार जाता रहता है । कांसेके बरतनमेंका पाक हितकर, ताम्रपात्रका अम्लपित्तवर्द्धक तथा सुवर्ण और रौप्यपात्रका पाक श्रेष्ठ गुणयुक्त और सकलदोषनाशक है ।

महानसाध्यक्ष (सं० पु०) महानसस्य अध्यक्षः । रसवत्यधिकारी पुरुष, रन्धनशालाका अध्यक्ष जिसे रसोइया कहते हैं ।

महानसिकावोढ़ (सं० पु०) राजशालाधिकृत पुरुष, रसोइया ।

महानाग (सं० पु०) सुरपुन्नाग वृक्ष ।

महानाटक (सं० क्ली०) महच्च तत् नाटकञ्चेति । १ नाटकविशेष । इसका लक्षण—

"एतदेव यदा सर्वैः पताकास्थान कैर्युतम् ।
अङ्कैश्च दशभिर्धीरा महानाटकमूचिरे ॥
एतदेव नाटकं यथा बालरामायणं ॥" (साहित्यद०)

नाटकके लक्षणोंसे युक्त दश अंकोंवाले नाटकको महानाटक कहते हैं ।

२ स्वनामख्यात हनूमद्रचित रामचरितग्रन्थविशेष । यह ग्रन्थ अति सुललित है ।

"एष श्रीलहनूमता विरचिते श्रीमन् महानाटके
वीरश्रीयुतरामचन्द्रचरिते प्रत्युद्धृते विक्रमैः ।
मिश्र श्रीमधुसूदनेन कविना सन्दर्भ सञ्जीकृते
स्वर्गारोहननामकोऽत्र नवमो यातोऽङ्क एवेत्यसौ ॥"

(महानाटकका शेष श्लोक)

महानाड़ी (सं० स्त्री०) महती चासौ नाड़ी चेति । कण्डरा, मोटी नस ।

महानाद (सं० पु०) महान् नादोऽस्य । १ हस्ती, हाथी । २ वर्षुक मेघ, बरसनेवाला बादल । महांश्चासौ नादश्चेति । ३ महाशब्द । ४ सिंह । ५ कर्ण, कान । ६ उष्ट्र, ऊंट । ७ शङ्ख । ८ काहलवाद्य, बड़ा ढोल । ९ महादेव, शिव । (त्रि०) १० महाशब्दयुक्त ।

"तत्कालमेव प्रतिमं महोरगनिषेवितम् ।
अभिगम्य महानादं तीर्थनैव महोदधिम् ॥"

(रामा० ४।४०।३९)

महानाद—त्रिवेणीसे चार कोस पश्चिममें स्थित एक गण्ड ग्राम । यहां जटेश्वर शिव और वशिष्ठगङ्गा नामकी एक पुण्यसलिला पुष्करिणी है । जनसाधारण इस कुण्डकी गङ्गाके समान भक्ति करते हैं । वशिष्ठगङ्गा और शिवस्थापनादिके विषयमें यहां एक उपाख्यान इस प्रकार प्रचलित है,—एक समय इस गांवमें एक दक्षिणावर्त्त शंख गिरा । हवा लगनेसे उससे एक बड़ा शब्द हुआ जो देवताओंके कान तक पहुंच गया । शब्द सुन कर देवगण वहां आ पहुंचे और जटेश्वर शिव तथा वशिष्ठगङ्गाकी प्रतिष्ठा की । उसी महानादसे इस गांवका महानाद नाम पड़ा । यहां योगियोंकी कुछ कुटियां भी देखी जाती हैं । बौद्धोंके समय यहां अनेक बौद्धश्रमण रहते थे । आज भी यहां धर्मठाकुरका 'जात' होता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महानानात्व (सं० क्ली०) यज्ञ प्रक्रियाका प्रकरणभेद।

महानाभ (सं० पु०) १ हिरण्याक्षके एक पुत्रका नाम। २ दानवभेद। ३ एक प्रकारका मन्त्र जिससे शत्रुके फेंके हुए शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।

महानामन् (सं० पु०) १ शाक्यमुनिके एक आत्मीयका नाम। २ महावंशके रचयिता एक प्रसिद्ध बौद्ध।

महानाम्निक (सं० त्रि०) महानाम्नी परिशिष्ट सम्बन्धीय।

महानाम्नी (सं० स्त्री०) सामवेद परिशिष्टभेद।

महानाम्नीव्रत (सं० क्ली०) वेदोक्त व्रतविशेष।

महानाराचरस (सं० पु०) पारा, ताम्र, गन्धक, जयपाल और त्रिफला प्रत्येक एक तोला, कटकी तीनों प्रकारका क्षार प्रत्येक आध तोला, इन्हें एक साथ मिला कर गोली बनावे। गोलीका परिमाण दोषके बलाबलके अनुसार स्थिर करना होगा। अनुपान गरम जल है। इसका सेवन करनेसे गुल्म और ज्वर अति शीघ्र दूर होता है।

दूसरा तरीका—पारा, सोहागा और मरिच प्रत्येक एक भाग, गन्धक, पीपर, सोंठ प्रत्येक २ भाग कुल मिला कर जितना हो उतना ही छिलका रहित दन्तीबीज मिला कर २ रत्तीकी गोली बनावे। यह सिद्ध विरेचक है। इसका सेवन करनेसे गुल्मादिरोग अति शीघ्र आरोग्य होते हैं। (रसेन्द्रसारस० गुल्मादि)

महानारायण (सं० पु०) विष्णु।

महानारायणतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर; काढ़ेके लिये शतमूली, शालपर्णी, पिठवन, कचूर, वच, रेंड़ीका मूल, कण्टकारीका मूल, नाटाकरञ्जका मूल, प्रत्येक १० पल; पाकार्थ जल ६४ सेर, शेष १६ सेर, गायका दूध और बकरीका दूध ८ सेर करके, शतमूलीका रस ४ सेर; चूर्णके लिये पुनर्णवा, वच इलायची, जटामांसी, शालपर्णी, विजवन्द, असगंध सैन्धव और रास्ना प्रत्येक ४ तोला तैलपाकके नियमानुसार इस तेलका पाक करना होगा। इस तेलकी मालिश करनेसे मनुष्य, घोड़े और हाथीके सभी प्रकारके वात, हृच्छूल, पार्श्वशूल, गण्डमाला, वातरक्त, हनुग्रह, कमला, पाण्डु और अश्मरी आदि विविध रोग दूर होते हैं। (भैषजरत्ना वातव्याधिरोगाधि०)

महानारायणोपनिषत् (सं० स्त्री०) उपनिषद्भेद।

महानास (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ वृहत्नासायुक्त, बड़ी नाकवाला।

महानिद्र (सं० त्रि०) गाढ़निद्राभिभूत, जो गाढ़ी नींदमें हो।

महानिद्रा (सं० स्त्री०) महती सुदीर्घा चासौ निद्रा चेति। मरण, मौत।

महानिधान (सं० पु०) बुभुक्षित धातुभेदी पारा जिसे "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं।

महानिनाद (सं० पु०) नागभेद।

महानिमित्त (सं० क्ली०) महत् कारण।

महानिम्ब (सं० पु०) महांश्चासौ निम्बश्चेति। निम्बवृक्षविशेष, बकायन। संस्कृत पर्याय—कैटर्य, पवनेष्ट, पर्वत। गुण—ग्राही, कषाय, अम्ल, शीतल, रुक्ष, तिक्त, कफ, पित्त, भ्रम, छर्दि, कुष्ठ, हल्लास, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म, अर्श तथा मूषिकविषनाशक। (भावप्र०)

महानियम (सं० पु०) विष्णु।

महानियुत (सं० क्ली०) बौद्ध मतसे एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महानिरय (सं० पु०) एक नरकका नाम।

महानिरष्ट (सं० पु०) कोषहीन वृष, दामड़ा।

महानिर्वाण (सं० क्ली०) १ परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्धगण माने जाते हैं। २ आधुनिक तन्त्रभेद।

महानिशा (सं० स्त्री०) महती घोरा निशा। निशामध्यभाग, दो पहर रात। पर्याय—निशार्द्ध, निशीथ। स्मृतिशास्त्रके मतसे डेढ़ पहरके बाद और दो पहर तकके समयको महानिशा कहते हैं।

"महानिशातु विज्ञेया मध्यमं प्रहरद्वयम्।
तत्र स्नानं न कुर्वीत काम्य नैमित्तिकादृते॥"

(तिथितत्त्व)

मध्यम दो पहरका नाम महानिशा है। काम्य और नैमित्तिक कार्यको छोड़ कर इस महानिशिमें स्नान नहीं करना चाहिये। इस समय कोई वस्तु खाना भी मना है, खानेसे ब्रह्महत्याका पाप लगता है। महानिशिमें पारण भी निषिद्ध है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवलके मतसे—रातके दो पहरके बाद शेष दण्ड तथा तृतीय प्रहरका प्रथम दण्ड, ये दोनों ही दण्डकाल महानिशा है। "महानिशा रात्रिमध्यमदण्डद्वयात्मिका सा द्वितीयप्रहरशेषदण्ड तृतीयप्रहरपूर्वमदण्डरूपा।

"महानिशा द्वे घटिके कोटि सूर्यसमप्रभः।" इति देवलोक्ता महानिशा" (तिथितत्त्व)

माघमासकी कृष्ण चतुर्दशीके महानिशाकालमें भगवान् महादेव कोटि सूर्यकी तरह प्रभायुक्त शिवलिङ्ग रूपमें प्रकट हुए थे।

"माघकृष्ण-चतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः॥" (तिथितत्त्व)

तान्त्रिकोंके मतसे प्रथम प्रहरके बाद तृतीय पहर तकका समय महानिशा है। किन्तु एक पहरके बाद यदि दो घंटा बीत जाय, तो उसे अतिनिशा कहते हैं। यह महानिशाकाल तान्त्रिकोंके जप और पूजा करनेका उपयुक्त समय है। इस महानिशाकालमें ही कालीकी पूजा होती है।

"गते तु प्रथमे यामे तृतीयप्रहरावधि।
महानिशायां जप्तव्यं रात्रिशेषे जपेन्नतु॥

आपच—निशा तु परमेशानि सूर्ये चास्तमुपागते।
प्रहरे च गते रात्रौ घटिके द्वे परे च ये॥
महानिशा समाख्याता ततश्चातिमहानिशा।
अर्द्धरात्रे गते देवि पशुभावेन पूजयेत्।
दशदण्डे तु या पूजा तत् सर्वमक्षयं भवेत्॥"

(तन्त्रसा, गुप्तसाधनत० ६ अ०)

महानिशीथ (सं० पु०) जैन-सम्प्रदायभेद।

महानीच (सं० पु०) महानतिशयः नीचः। १ रजक, धोबी। (त्रि०) २ अतिशय हीनवर्ण, घोर काले रंगका।

महानीबू (हिं० पु०) विजौरा नीबू।

महानीम (हिं० स्त्री०) १ बकायन। २ तुनका पेड़।

महानील (सं० पु०) महान् नीलः नीलवर्णः। १ भृङ्गराज पक्षी। २ नागविशेष। ३ मणिविशेष, एक प्रकारका नीलम जो सिंहल द्वीपमें होता है। इसका लक्षण—

"यस्तु वर्णास्य भयस्त्वात् क्षीरे शतगुणे स्थितः।
नीलतां तनुयात् सर्वं महानीलः स उच्यते॥"

(गरुड़ पुराण ७२ अ०)

इसे नीलकान्तमणि भी कहते हैं। जिस नीलमणिको दूधमें रखनेसे दूध नीला हो जाता है उसे महानील कहते हैं।

४ एक प्रकारका गुग्गुल। ५ एक प्रकारका सांप। ६ एकपर्वतका नाम जो मेरु पर्वतके पास माना जाता है।

महानीलकण्ठरस (सं० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिमि मछलीके पित्तमें भावित सीसक १ तोल सोना १ तोला, रससिन्दूर १६ तोला, अबरक २४ तोला, इन सब द्रव्योंको एकत्र कर घृतकुमारी, ब्राह्मीशाक, संभालू, कचूर, मुण्डिरी, शतमूली, गुड़ूची, तालमखाना, तालमूली, वृद्धदारक और चिता इनकी भावना दे। पीछे उसमें त्रिकटु, मोथा, चिता, इलायची, लवङ्ग और जातिफल प्रत्येकका चूर्ण ८ तोला डाल कर २ रत्तीकी गोली बनावे। इसके सेवनसे विषमवातरोग, ४० प्रकारके पित्तरोग तथा अन्यान्य सभी रोग विनष्ट हो कर रतिशक्ति बढ़ती है। यथेष्ट आहार मिलने पर कन्दर्पके समान रूपवान्, मेधावी और भीमके समान विक्रम पुत्र उत्पन्न होता है। इस तेलके सेवनसे वांझपन दूर हो जाता है। औषध सेवनके बाद २१ दिन तक मैथुन कर्म नहीं करना चाहिये। (रसेन्द्रसारस०)

महानीलतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल १६ सेर, बहेड़ेका रस ६४ सेर; आमलकीका रस ६४ सेर; चूर्णके लिये घोषालताका मूल, काली झंटीका मूल, तुलसी पत्र, कृष्णशणका फल, भीमराज, काकमाची, मुलेठी और देवदार प्रत्येक १० पल, पीपर, त्रिफला, रसाञ्जन, प्रपौण्डरीक, मजीठ, लोध, काला अगर, नील कमल, आम्रकेशी, कृष्णमर्दन, मृणाल, रक्तचन्दन, नीलकाष्ठ, भल्लातक, हीराकसीस; मल्लिकापुष्प; सोमराजी, अशनकी छाल, शल्ल, मदनकी छाल, चितामूल, अर्जुनपुष्प, गाम्भारीपुष्प, आम्रफल और जायफल, प्रत्येक ५ पल। तैलपाकके विधानानुसार पाक करना होगा। अथवा सभी रस जब तक सूख न जाय, तब तक घाममें छोड़ देना होगा। यह तैल पीने, नस लेने और सिर पर लगानेसे सभी प्रकारका शिरोरोग और बालोंका असमयमें पकना दूर होता है तथा चक्षुके तेज और आयुकी वृद्धि होती है। (भैषजरत्नावली क्षुद्ररोगाधिकार)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महानीला (सं० स्त्री०) महती चासौ नीला नालवर्णा चेति । महाजम्बु, बड़ा जामुन ।

महानीली (सं० स्त्री०) नील (नीलादोषधौ । पा ४।१।४२) इति वार्त्तिकोक्त्या ङीष् ; ततः महती चासौ नीला चेति । १ नीली अपराजिता । पर्याय—अमरा, जनिनीलिका, तुत्था, श्रीफलिका, मेला, केशार्हा, भर्त्सपत्रिका । गुण—गुणाढ्य, रङ्गश्रेष्ठ, सुवर्णदायक । २ नीली अपराजिताका पेड़ । ३ बडे. जामुनका वृक्ष ।

महानीलोत्पल (सं० पु०) इन्द्रनील मणि ।

महानुभाव (सं० त्रि०) महान् अनुभावो माहात्म्यं यस्य । महाशय, कोई बड़ा और आदरणीय व्यक्ति ।

"सुकृती पुण्यवान् धन्यो धर्मी च धर्मवानपि ।
महाशयो महेच्छः स्यान्महानुभाव इत्यपि ॥"
(शब्दरत्नाकर)

महानुभावता (सं० स्त्री०) महानुभाव होनेका भाव, बड़प्पन ।

महानुराग (सं० त्रि०) ऐकान्तिक प्रेम वा आसक्ति ।

महानुशंसव (सं० त्रि०) अत्यधिक स्वच्छन्दता वा सुयोगसम्पन्न ।

महानृत्य (सं० पु०) महान् नृत्यः यस्य । १ शिव, महादेव । २ अतिशय नृत्य, खूब नाच । (त्रि०) ३ अतिशय नृत्ययुक्त, खूब नाचनेवाला ।

महानेत्र (सं० त्रि०) १ प्रशस्त चक्षुयुक्त, सुन्दर नेत्रवाला । (पु०) २ शिव ।

महानेमि (सं० पु०) काक, कौआ ।

महान्तक (सं० पु०) १ मृत्यु । २ शिव ।

महान्धकार (सं० पु०) १ अविद्यारूप अन्धकार । २ घोर अन्धकार ।

महान्ध्र (सं० पु०) १ एक देशका नाम । २ उस देशका रहनेवाला मनुष्य ।

महान्ध्रक (सं० पु०) विदेहके एक राजा ।

महान्याय (सं० पु०) १ मुख्य नियम । २ श्रेष्ठ विधि, अच्छा तरीका ।

महान्वय (सं० त्रि०) सम्भ्रान्तवंशसम्भूत, जिसका उच्च कुलमें जन्म हुआ हो ।

महापक्ष (सं० पु०) १ एक प्रकारका राजहंस ।

महापक्षी (सं० स्त्री०) १ पेचक, उल्लू । २ गरुड़ । (त्रि०) ३ वृहत् परिवार वा बहु-सङ्गीयुक्त, जिसके बहुत परिवार वा बहुत दोस्त हों ।

महापगा (सं० स्त्री०) नदीभेद ।

महापङ्क (सं० क्ली०) महच्च तत् पङ्कश्चेति । अतिशय पंक, गहरा कीचड़ ।

महापङ्क्ति (सं० स्त्री०) वैदिक छन्दोभेद ।

महापञ्चमल (सं० क्ली०) पञ्चानां विल्वादि मलानां समाहारः, ततः महच्च तत् पञ्चमलश्चेति । वृहत् पञ्चमल ; बेल, अरनी, सोनापाढ़ा, काश्मरी और पाटला इन पांचों वृक्षोंकी जड़ोंका समह । इसका व्यवहार वैद्यकमें होता है ।

महापञ्चविष (सं० क्ली०) पञ्चानां विषाणां समाहारः ततः महच्च तत् पञ्चविषश्चेति । वृहद्विषपञ्चक, श्रृङ्गी, कालकूट, मुस्तक, वालनाग और शङ्खकर्णी इन पांचों विषोंका समह ।

महापञ्चाङ्गुल (सं० पु०) रक्तैरण्डवृक्ष, लाल अंडीका पेड़ ।

महापण्डित (सं० पु०) दार्शनिक वा नैयायिक पण्डित चूड़ामणि ।

महापत्र (सं० पु०) १ वृहत् पत्रयुक्त गुल्मभेद । २ शाकवृक्ष, सागून ।

महापत्रा (सं० स्त्री०) महान्ति पत्राण्यस्याः १ महाजम्बु, बड़ा जामुन । २ नागबला । (त्रि०) ३ वृहत् पत्रयुक्त, जिसमें बड़े बड़े पत्ते हों ।

महापथ (सं० पु०) महांश्चासौ पन्थाश्चेति (आन्महत इति । पा ६।३।४६) इति महत आकारादेशः (ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे । पा ५।४।७४) इति समासान्तोऽकारः । १ प्रधान पथ, बहुत लम्बा और चौड़ा रास्ता । पर्याय—घण्टापथ, संसरण, श्रोपथ, राजवर्त्म, उपनिष्क्रमण, उपनिष्कर । २ मृत्युपथ, परलोकका मार्ग । ३ सुषुम्ना नाड़ी ।

"सुषुम्ना शून्यपदवी ब्रह्मरन्ध्रं महापथः ।
श्मशानं शाम्भवी मध्य मार्गश्चेत्येक वाचकाः ॥"
(हठयोगदीपिका० ३।४)

४ शिव, महादेव । ५ याज्ञवल्क्यस्मृतिके अनुसार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२१ नरकोंमेंसे १६वां नरक जिसे ब्रह्मरन्ध्र नरक कहते हैं। ६ हिमालयके एक तीर्थका नाम।

महापथगम (सं० पु०) महापथस्य महापथे वा गमः गमनं। मरण, देहान्त।

महापथिक (सं० पु०) महाप्रस्थानकारी, वह जो मरनेके उद्देश्यसे हिमालय पर्वत पर जाय।

महापद (सं० पु०) महाव्रज।

महापदपङ्क्ति (सं० स्त्री०) वैदिक छन्दोभेद।

(ऋक्प्राति० १६।२६)

महापद्म (सं० पु०) महत् पद्मं तादृशं चिह्नं शिरसि यस्य। १ आठ नागोंमेंसे एक नागका नाम। पर्याय—अतिशुक्ल, दशविन्दुक मस्तक। मनसा पूजाके समय इस नागकी पूजा करनी होती है। २ फनवाली जातिके अन्तर्गत एक प्रकारका सांप। ३ कुवेरकी नौ निधियोंमेंसे एक निधि, पद्मिनी विद्याकी आठ निधियोंमेंसे एक।

"यस्या वत्से! प्रभावेन विद्यायास्तां ग्रहाण मे।
पद्मिनी नाम विज्ञेयं महापद्माभिपूजिता॥"

(मार्क०पु० ६४।१५)

४ महाभारत-कालके एक नगरका नाम जो गङ्गाके किनारे पर था। ५ एक प्रकारका दैत्य (हरिवंश २३२।३) ६ दिक्करीभेद, आठ दिग्गजोंमेंसे एक दिग्गज जो दक्षिण दिशामें स्थित है। ७ सौ पद्मकी संख्या। ८ शुक्लपद्म, सफेद कमल। ९ नरकभेद। १० जैन मतसे नागोंके अधिकृत निधिविशेष। ११ नन्द राजाका एक नाम। (विष्णुपुराण) १२ नन्द राजाके एक पुत्रका नाम। १३ कुवेरके अनुचर एक किन्नरका नाम। १४ हाथीकी एक जाति।

महापद्मकघृत (सं० स्त्री०) विस्फोटकरोगका घृतविशेष।

महापद्मपति (सं० पु०) नन्दराजका एक नाम।

महापद्मविसर्प (सं० पु०) बालविसर्परोग।

महापद्मसरस् (सं० क्ली०) काश्मीरका एक ह्रद। इसका वर्त्तमान नाम उल्लर है।

महापद्मसलिल (सं० क्ली०) काश्मीर देशके उल्लर नामका ह्रद।

महापद्मनन्दि—महानन्दिके औरस और शूद्राणीके गर्भसे उत्पन्न एक कुमारका नाम।

महापद्य (सं० पु०) महाकाव्य।

महापद्यषटक—कालिदास-कृत भोजराजकी गुणवर्णन-सूचक षट्श्लोकात्मक कविताविशेष।

महापन्थक (सं० पु०) बौद्धशिष्यभेद।

महापनस (सं० पु०) सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका सांप।

महापराक्रम (सं० त्रि०) महावीर्यवान्, बड़ा साहसी।

महापराह्ण (सं० पु०) अपराह्णका शेष समय।

महापरिनिर्व्वाण (सं० क्ली०) निर्व्वाणविशेष, महामोक्ष।

महापर्ण (सं० पु०) १ ब्रह्मराक्षस। २ एक प्रकारका शालवृक्ष।

महापवित्र (सं० त्रि०) १ अत्यन्त पवित्र। (पु०) २ विष्णु।

महापशु (सं० पु०) गाय आदि पशु।

महापाकजानि—सूर्यारुणशतकके प्रणेता, जगन्नाथ पण्डितके शिष्य।

महापाटल (सं० पु०) एक प्रकारका पेड़।

महापात (सं० पु०) तीरका दूरमें गिरना।

महापातक (सं० क्ली०) महदतिशयितं पातकं। पापविशेष। यह पाप पांच प्रकारका है। यथा—ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुपत्नी-गमन और इन सब पापचारियोंके साथ संसर्ग।

"ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह॥"

(मनु ११।५४)

जो ऊपर लिखे महापातक करते हैं, उन्हें नरककी गति होती है। नरकभोगके बाद वे कठिन रोगसे ग्रस्त होते हैं। इस प्रकारके रोग वे सात जन्म तक भोगते हैं। पीछे इस महापातककी शान्ति होती है।

"महापातकजं चिह्नं सप्तजन्मसु जायते।
बाधते व्याधिरूपेण तस्य कृच्छ्रादिभिः समः॥"

(शातातपीय कर्मवि०)

महापातकज चिह्न सात जन्म तक विद्यमान रहता है तथा यह पातक व्याधिरूपमें पीड़ा देता है। तप्तकृच्छ्रादि चान्द्रायणका अनुष्ठान करनेसे इसकी शान्ति होती है। तुला, मकर और मेष अर्थात् कार्त्तिक, वैशाख और माघ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मासमें प्रातःस्नान कर हविष्यभोजन और ब्रह्मचर्यका अनुष्ठान करनेसे भी महापातक विनष्ट होता है।

"तुलामकरमेषेषु प्रातःस्नानं विधीयते।
हविष्यं ब्रह्मचर्यञ्च महापातकनाशनम्॥"
(मलमासतत्त्व)

पुराणमें लिखा है,—'कृष्ण कृष्ण' यह मङ्गलमय नाम जिसके मुखसे हमेशा निकलता है, उसके सभी पाप दूर होते हैं।

"कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्त्तते।
भस्मीभवति राजेन्द्र महापातककोटयः॥" (पुराण)

रोग मात्र ही पापज है। विना पापके रोग हो नहीं सकता। महापातकज रोगका विषय इस प्रकार लिखा है—

"पूर्वजन्म कृतं पापं नरकस्य परिक्षये।
बाधतेव्याधिरूपेण तस्य कृच्छ्रादिभिः समः॥
कुष्ठन्तु राजयक्ष्मा च प्रमेहो ग्रहणी तथा।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीकासा अतीसारभगन्दरौ॥
दुष्टव्रणं गण्डमाला पक्षाघातोऽक्षिनाशनं।
इत्येवमादयो रोगा महापातोद्भवाः स्मृताः॥"

पूर्वजन्मका किया हुआ पाप नरकभोगके बाद व्याधिरूपमें पीड़ा देता है। मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, कास, अतीसार, भगन्दर, दुष्टव्रण, गण्डमाला, पक्षाघात और अक्षिनाशन, ये सब रोग महापातकके फलसे उत्पन्न होते हैं। अर्थात् महापातक करनेसे उक्त रोग मनुष्यके शरीरमें पैदा होते हैं। धर्मशास्त्रानुसार पहले इस रोगका प्रायश्चित्त और पीछे चिकित्सा करनी चाहिये।

महापातकिन् (सं० त्रि०) महापातकमस्त्यस्येति महापातक इनि। पञ्च प्रकार महापातक-युक्त, पांच तरहका महापाप करनेवाला।

महापातकी मात्र ही पतित हैं, इस कारण मरने पर इनकी दाहादि क्रिया नहीं होगी। यहां तक कि इनकी मृत्यु पर अश्रुपात तक भी करना निषिद्ध है। महापातकीके श्राद्धादि कुछ भी नहीं होंगे। यदि कोई मोहवशतः अग्निकार्य, अशौच-ग्रहण और श्राद्धादि कार्य करे, तो उसे भी प्रायश्चित्त करना होगा।

"महापातकिनो ये च पतितास्ते प्रकीर्त्तिताः।
पतितानां न दाहः स्यान्नान्त्येष्टिर्नास्थिसञ्चयः॥
न चाश्रुपातः पिण्डो वा कार्यं श्राद्धादिकं क्वचित्।
एतानि पतितानान्तु यः करोति विमोहितः।
तत्तकृच्छ्रद्वयेनैव तस्य शुद्धि र्न चान्यथा॥"

इसमें विशेषता यह है, कि यदि उस महापातकीने अपने पापका प्रायश्चित्त कर लिया हो, तो उसके दाह, अशौच और श्राद्धादि सब कुछ होंगे। यदि मरनेके पहले प्रायश्चित्त न किया गया हो, तो मरनेके बाद करके दाहादि करना चाहिये। यही शास्त्रकी व्यवस्था है।

पारिभाषिक महापातकी।—

"पितरं मातरं भार्यां गुरुपत्नी गुरुं परम्।
यो न पुष्णाति कापट्यात् स महापातकी शिव॥"
(ब्रह्मवैवर्त्तपु० गणपतिख० ४४ अ०)

पिता, माता, भार्या, गुरुपत्नी और गुरु इनका भरणपोषण जो व्यक्ति नहीं करते वे महापातकी हैं।

अन्यविध—

"कृतप्राणप्रतिज्ञाञ्च नीचैर्यां प्रतिमां द्विजः।
दुर्गां न प्रणमेद्यत्तु स महापातकी स्मृतः॥"
(देवीपु० व्यासनारायणस०)

नीच द्वारा प्रतिष्ठित देव-प्रतिमा और भगवती दुर्गाको जो प्रणाम करते हैं वे भी महापातकी हैं।

"जातिभेदो न कर्त्तव्यः प्रसादे परमात्मनः।
योऽशुद्धबुद्धिं कुरुते स महापातकी भवेत्॥"
(महानि० ३।९२)

परमात्माके प्रसादमें जातपांतका विचार नहीं करना चाहिये, करनेसे महापातक होता है।

महापातकी (सं० त्रि०) वह जिसने महापातक किया हो।

विशेष विवरण महापातकिन् शब्दमें देखो।

महापात्र (सं० पु०) १ प्रधान मंत्री। २ महाब्राह्मण वा कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक कर्मका दान लेता है। ३ एक विख्यात गायक। ये अकबर बादशाहके दूतका रूप धारण कर उड़िष्याधिपति मुकुन्ददेवकी सभामें गये थे।

महापाद (सं० त्रि०) १ वृहत् पदयुक्त, ऊंचा ओहदावाला। (पु०) २ शिव, महादेव।

महापाप (सं० क्ली०) महच्च तत् पापञ्चेति। महापातक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"महापापेषु सर्वं स्यात् तदर्द्धं स्तूपपातकं ।
दद्यात् पापेषु षष्ठांशं ज्ञात्वा व्याधबलाबलम् ॥"
(मलमासत०)

महापाप्मन् (सं० त्रि०) अतिशय पापात्मा, घोर पापी।

महापारणिक (सं० पु०) बुद्धशिष्यभेद।

महापारुषक (सं० पु०) वृक्षभेद।

महापारेवत (सं० क्ली०) महच्च तत् पारेवतञ्चेति। फलवृक्षविशेष, बड़ी खजूरका पेड़। पर्याय—स्वर्णपारेवत, साम्राणिज, खारिक, रक्तरैवतक, बृहत्पारेवत, द्वीपज, द्वीपखर्जूर। इसका गुण मधुर, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वृष्य, मूर्च्छा और भ्रमनाशक माना गया है।
(राजनि०)

महापार्श्व (सं० पु०) १ दानवभेद। २ राक्षसभेद।

महापाल (सं० पु०) राजपुत्रभेद।

महापाश (सं० पु०) महान् पाशोऽस्य। १ यमदूतविशेष। (बृहद्धर्मपु० ५६ अ०) महांश्चासौ पाशश्चेति। २ बृहत् पाश, बड़ा जाल।

महापाशुपत (सं० पु०) १ बकुल, मौलसिरी। (वैद्यकनि०) २ पशुपतिके उपासक शैवसम्प्रदायविशेष। स्कन्दपुराणमें लिखा है, कि शिवभक्तमात्र ही महापाशुपत कहलाते हैं।

"हरेर्यश्चावयोर्भेदं न करोति महामतिः।
शिवभक्तः स विज्ञेयो महापाशुपतश्च सः॥"
(स्कन्दपु०)

किन्तु वामनपुराणमें मतभेद देखा जाता है। वह इस प्रकार है—

आद्यं शैवं परिख्यातमन्यत् पाशुपतं मुने।
तृतीयं कालवदनं चतुर्थं च कपालिनं॥
शैवश्चासीत् स्वयं शक्तिर्वशिष्ठस्य प्रियः सुतः।
तस्य शिष्यो बभूवाथ गोपायन इति श्रुतः॥
महापाशुपतश्चासीद्धरद्राजो तपोधनः।
तस्य शिष्योऽयुभद्राजा वृषभः सोमकेश्वरः॥
कालस्यो भगवानासीदापस्तम्बस्तपोधनः।
तस्य शिष्यो वको वैश्या नाम्ना क्राथेश्वरो मुने॥
महाव्रती च धनदस्तस्य शिष्यश्च वीर्यवान्।
ऊर्णोदर इति ख्यातो जात्या शूद्रो महातपाः॥"

उक्त मतभेदको प्रमाणित करनेके लिये वशिष्ठादि भी उक्त मतके विशिष्ट उपासक माने गये हैं।

महापाशुपतव्रत (सं० क्ली०) शिवव्रतविशेष।

महापासक (सं० पु०) पसति बाधते निराकरोति परकालेश्वरादिकमिति, पस-ण्वुल्, ततः महांश्चासौ पासकश्चेति। बौद्धभिक्षुक। पर्याय—चेलुक, श्रामणेर, प्रव्रजित, गोमीन, महोपासक।

महापिचुमर्द (सं० पु०) पर्वतनिम्ब, वकायन।

महापिण्डतैल (सं० क्ली०) वातरक्ताधिकारोक्त तैलौषध विशेष। प्रस्तुत प्रणाली—कटुतैल ४ सेर, काढ़ेके लिये गुलञ्च, सोमराजी, गन्ध-भादुल प्रत्येक १२॥० सेर; जल ६४ सेर, शेष १६ सेर। क्वाथ पृथक् पृथक् होगा, दूध १६ सेर। चूर्णके लिये शिलारस, धूना, सम्हालू, त्रिफला, भंग, कटाई, दन्तीमूल, कंकोला, पुनर्णवा, चितामूल, पिपरामूल, कुट, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, चन्दन, रक्तचन्दन, करञ्ज, श्वेतसर्षप सोमराजी बीज, चाकुन्दका बीज, अड़ सकी छाल, नीमकी छाल, पटोलपत्र, अलकुशीका बीज, असगंध और सरलकाष्ठ, प्रत्येक २ तोला। यथानियम इस तेलकी मालिश करनेसे वातरक्त और कुष्ठादि विविध प्रकारकी पीड़ा दूर होती है।

महापिण्डीतक (सं० पु०) पिण्डीं तनोतीति तन-ड, संज्ञार्थे कन्, ततः महांश्चासौ पिण्डीतकश्चेति, पिण्डाकारफलत्वादस्य तथात्वं। कृष्णवर्ण महामदनवृक्ष, मैनाका पेड़। पर्याय—वाराह। गुण—श्रेष्ठ, कटु, और तिक्तरस, कफ, हृद्रोग और आमाशयरोगनाशक।
(राजनि०)

महापिण्डीतरु (सं० पु०) महांश्चासौ पिण्डीतरुश्चेति। वृक्षविशेष, बड़े मैनेका पेड़। पर्याय—श्वेत पिण्डीतरु, करहाट, क्षीर, शल्लकीपतरु, शूर, पिण्डी तरु। इसका गुण—कषाय, उष्ण, त्रिदोषनाशक, चर्मरोग और रक्तदोषनाशक माना गया है। (राजनि०)

महापितृयज्ञ (सं० पु०) प्राचीनकालका एक प्रकारका श्राद्ध या पितृयज्ञ जो शाकमेधमें दूसरे दिन होता था।

महापित्तान्तकरस (सं० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—जैत्री, जायफल, जटामांसी, तालीश, माक्षिक, लोहा, अबरक और मैनसिल प्रत्येक बराबर बराबर भाग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुल मिला कर जितना हो उतनी चांदीकी भस्म मिला कर जलके साथ दो रत्तीकी गोली बनावे। अनुपान रोगीके बलाबलके अनुसार स्थिर करना होगा। इसके सेवनसे पित्तरोग, शूल, अम्लपित्त, पाण्डु, हलीमक, अर्श, भ्रम, वमन और क्षितरोग नष्ट होता है।

(रसेन्द्रसारस० वातरक्तरोगाधि०)

महापीठ (सं० क्ली०) सती-अङ्गके प्रसिद्ध इक्कावन पीठ। पीठ देखो।

महापीलु (सं० क्ली०) पीलति प्रतिष्ठभते विषपित्तादिकमिति पील (मृगय्वादयश्च। उण् १।३।८) इति कु, ततो महान् पीलुरिति कर्मधा०। एक प्रकारका पीलु वृक्ष। पर्याय—बृहत्पीलु, महाफल, राजपीलु, महावृक्ष, मधुपीलु। इसके फलका गुण—मधुर, वृष्य, विषनाशक, पित्तप्रशमन, रुचिकर, आमनाशक और प्रदीपक।

महापीलुपति (सं० पु०) इन्द्र।

महापुंस (सं० पु०) महात्मा।

महापुट (सं० क्ली०) औषध पकानेका एक पुट। भावप्रकाशमें महापुटपाकका विषय इस प्रकार लिखा है—दो हाथ लंबा, चौड़ा और गहरा तथा चौकोन एक गड्ढा बनावे। उसमें एक हजार बनगोंइठे सजा कर रखे। पीछे मट्टीके एक बरतनमें औषध भर कर अच्छी तरह उसका मुंह बंद कर दे और तब उसे गड्ढेमें रखे हुए गोंइठेके ऊपर रख छोड़े। इसके बाद और भी पांच सौ बनगोंइठे उसमें डाल कर आग बाल दे। इसीको महापुट कहते हैं। (भावप्र०)

महापुण्य (सं० पु०) १ पवित्र, पुण्यमय। २ एक बोधिसत्त्वका नाम।

महापुण्या (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम।

महापुत्र (सं० पु०) पौत्र, पोता।

महापुमान् (सं० पु०) पर्वतभेद। (भारत भीष्मपर्व)

महापुर (सं० क्ली०) १ वह नगर जो दुर्ग आदिसे भली भांति रक्षित हो। २ तीर्थविशेष। इस तीर्थमें स्नान करनेसे मुक्ति होती है। (भारत १३ पर्व)

महापुराण (सं० क्ली०) महच्च तत् पुराणञ्चेति। विशेष लक्षणयुक्त व्यास प्रणीत अठारह संख्यामें विभक्त पुराणविशेष। विशेष विवरण पुराण शब्दमें देखो।

महापुरी (सं० स्त्री०) राजधानी।

महापुरुष (सं० पु०) महांश्चासौ पुरुषश्चेति। १ श्रेष्ठ नर, महात्मा (योगी ऋषि आदि)। बृहत्संहितामें लिखा है, कि स्वक्षेत्र, उच्चगृह अथवा केन्द्रमें मङ्गलादि पञ्चग्रहके रहनेसे पांच प्रकारके महापुरुष जन्म लेते हैं।

(बृ० स० ६९ अ०)

२ नारायण, भगवान।

"ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरेण्यम्।
भृत्यार्त्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष! ते चरणारविन्दं॥" (आह्निकतत्त्व)

३ महामेदा। ४ दुष्ट, पाजी।

महापुरुषदन्ता (सं० स्त्री०) महापुरुषस्य दन्ता इव मूलानि यस्याः। शतमूली।

महापुरुषदन्तिका (सं० स्त्री०) महापुरुषदन्ता स्वार्थे कन् स्त्रियां टाप् अत इत्वं। १ महाशतावरी। २ मेदा।

महापुरुषविद्या (सं० स्त्री०) मंत्रविशेष।

महापुरुषीय—वैष्णव सम्प्रदायविशेष। शङ्करदेव नामक किसी महापुरुषसे प्रवर्त्तित होनेके कारण इसका नाम महापुरुषीय सम्प्रदाय हुआ है। १३७० शकमें आसाम प्रदेशके अन्तर्गत अलीपोखरी नामक ग्राममें शिरोमणिभूयां-कुसुमवर नामक एक कायस्थके घर शङ्करदेवका जन्म हुआ। सुना जाता है कि उनके पिताका पूर्व निवास युक्तप्रदेशमें था। पिताकी देख रेखमें शङ्करने बचपनसे ही संस्कृत शास्त्रादिमें विशेष व्युत्पत्ति लाभ की थी। पीछे वे तीर्थको निकले। काशी, उत्कल, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानोंमें परिभ्रमण करते हुए नवद्वीप पहुंचे। यहां उन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभुसे वैष्णवधर्ममें दीक्षा प्राप्त की। हरिनामग्रहण उनका मूलमंत्र हुआ था। अनन्तर घर लौट कर आसाम प्रदेशमें वे वैष्णवधर्मका प्रचार करने लगे। आज भी उस प्रदेशके कितने भद्र मनुष्य उनके चलाये धर्ममतका अनुसरण कर चलते हैं।

शङ्करदेव जातिभेद नहीं मानते थे, सभीको हरिनाम मंत्रमें दीक्षा देते थे। एक समय उन्होंने एक मुसलमानको भी 'जय हरिदास' मंत्र दे कर अपना शिष्य बनाया था। बलाई नामक एक मिकिर और गोवर्द्धन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नामक एक नागा जातिको भी उन्होंने अपने धर्ममें दीक्षा दी थी।

कूचविहारके बहुतसे लोग इनके धर्ममतके अनुयायी थे। उनके प्रधान शिष्यका नाम था माधवदेव। महापुरुषीय शूद्र महन्त भी ब्राह्मणको मन्त्र दे सकता है।

शङ्करदेवके दो प्रधान सत्र वा अखाड़े हैं। एक नौगांव जिलेके बड़दोवा ग्राममें और दूसरा गौहाटी जिलेके बडपेटा ग्राममें। दोनों सत्रोंमें हरिकीर्त्तन आदि करनेके बड़े बड़े घर हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्यकाल, अपराह्न और रात्रिकालमें सैकड़ों आदमी मिल कर नामकीर्त्तन करते हैं। वहां बीचमें बीचमें साम्प्रदायिक तथा वैष्णवोंका पवित्र श्रीमद्भागवत ग्रंथ भी पढ़ा जाता है।

इस सम्प्रदायमें जो संसारत्यागी हैं वे केवलिया भक्त कहलाते हैं। बड़पेटा सत्रमें कमसे कम डेढ़ सौ केवलिया भक्त रहते हैं। वे लोग प्रतिदिन चार बार करके हरिकीर्त्तन करते हैं। इस सत्रमें स्त्रियां भी हैं। कीर्त्तनादिके समय वे पुरुषोंके साथ नहीं मिलतीं, अलग रह कर ही गाती बजाती हैं। इस सत्रमें शङ्करदेव तथा उनके प्रियतम शिष्य माधवका समाधि मन्दिर विद्यमान है। एक एक सत्रमें एक एक खण्ड पत्थर पर शङ्करदेवका चरणचिह्न अंकित देखा जाता है। शङ्करदेव नाम घोषा नामक ग्रंथ लिख गये हैं। कोई कोई कहते हैं, कि उक्त ग्रन्थ अधूरा छोड़ कर ही वे परलोकवासी हुए थे। पीछे उनके शिष्य माधवदेवने उसे शेष किया था।

महापुष्प (सं० पु०) १ कुन्दवृक्ष। २ कृष्णमुद्ग, काला मूंग। ३ रक्त काञ्चन, लाल कनेर। ४ लवणवृक्ष, अमलोनी नामकी घास। ५ सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका कीड़ा। (त्रि०) महापुष्पविशिष्ट।

महापुष्पा (सं० स्त्री०) महत् प्रशस्तं पुष्पमस्याः। १ अपराजिता। २ महाकोशातकी, घीआ-तरोई।

महापूजा (सं० स्त्री०) दुर्गाकी वह पूजा जो आश्विनके नवरात्रमें होती है।

"शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्मिन् पर्व्वे विशेषेण पुरश्चरणतत्परः॥"
(शाक्तानन्दतरङ्गिणी)

महापूत (सं० त्रि०) अति पवित्र।

महापूर्ण (सं० त्रि०) १ सम्पूर्ण, पूरा। (पु०) २ गारुड़ोंके एक अधिपतिका नाम।

महापृष्ठ (सं० पु०) महत् विपुलं पृष्ठं यस्य। १ उष्ट्र, ऊंट। २ वृहत् पृष्ठ, चौड़ी पीठ। ३ ऋग्वेदके एक अनुवाकका नाम जो अश्वमेध यज्ञके सम्बन्धमें है।

महापैङ्ग (सं० क्ली०) आश्वलायन-गृह्यसूत्रोक्त वैदिकग्रन्थविशेष।

महापैशाचिकघृत (सं० क्ली०) घृतौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर; चूर्णके लिये जटामांसी, हरीतकी, भूतकेशी, स्थलपद्म, अलकुशीका बीज, वच, जयित्री, काकोली, कटकी, छोटी इलायची, वाराहीकन्द, सौंफ, सोयां, गुग्गुल, अपराजिता, आमलकी, रास्ना, गन्धरास्ना और शालपर्णी कुल मिला कर एक सेर; पाकार्थ जल १६ सेर। पीछे घृतपाकके विधानानुसार इसका पाक करना होगा। इस घृतको पीनेसे उन्माद और अपस्मरादि नाना रोग नष्ट होते हैं तथा बुद्धि और स्मृति भी प्रखर होती है। (भैषज्यरत्ना० उन्मादाधिका०)

महापैठीनसि (सं० पु०) एक प्राचीन स्मृतिकार।

महापोटगल (सं० पु०) शरतृणविशेष, नरकट।

महाप्रकाश (सं० पु०) अवतार आदिका आविर्भाव वा विकाश।

महाप्रकृति (सं० स्त्री०) महती श्रेष्ठा प्रकृतिर्जगन्मूलकारणं। भगवती दुर्गा। ये ही सृष्टिका मूल कारण मानी जाती हैं।

"चितिश्चैतन्यभावाद्वा चेतना वा चितिः स्मृता।
महत् व्याप्य स्थिता सर्वं महा वा प्रकृतर्मता॥"
(देवीपुराण ४५ अ०)

महाप्रजापति (सं० पु०) विष्णु।

महाप्रजापती—शाक्यमुनिकी चाची, गौतमी। इन्होंने शाक्यसिंहका लालनपालन किया था।

महाप्रज्ञापारमितासूत्र (सं० क्ली०) बौद्धोंके एक ग्रन्थका नाम।

महाप्रणाद (सं० पु०) चक्रवर्त्तीभेद।

महाप्रताप (सं० त्रि०) अतिशय प्रभावयुक्त, अत्यन्त प्रभावशाली।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाप्रतिभान (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद ।

महाप्रतिहार (सं० पु०) उच्चपदस्थ रक्षिविशेष, प्राचीन-कालका एक उच्च कर्मचारी जो प्रतिहारों अथवा नगर या प्रासादकी रक्षा करनेवाले चौकीदारोंका प्रधान होता था ।

महाप्रदान (सं० क्ली०) बृहत् दान ।

महाप्रपञ्च (सं० पु०) परिदृश्यमान जगत्प्रपञ्च ।

महाप्रभ (सं० त्रि०) महती प्रभा यस्येति । अतिशय दीप्ति-युक्त, जिसमें बहुत चमकदमक हो ।

"ततश्चक्रं महाघोरं सहस्रारं महाप्रभम् ।"

(हरिव० भविष्यप० २९।१२)

महाप्रभा (सं० स्त्री०) महती चासौ प्रभा चेति । १ महती दीप्ति, बहुत चमक दमक । २ वर्त्तिकालोक, बत्तीकी रोशनी । ३ पुराणानुसार एक नदीका नाम ।

महाप्रभाव (सं० पु०) अत्यधिक वीर्यशाली, बड़ा बलवान् ।

महाप्रभु (सं० पु०) महांश्चासौ प्रभुश्चेति । १ परमेश्वर । २ चैतन्य ।

"वन्देऽनन्ताद्भूतैश्वर्यं श्रीचैतन्यं महाप्रभुम् ।
नीचोऽपि यत्प्रसादात् स्यात् सदाचारप्रवर्त्तकः ॥"

(हरिभक्तिवि० ३ वि०)

३ राजा । ४ संन्यासी वा साधु । ५ इन्द्र । ६ शिव । ७ विष्णु । ८ वल्लभाचार्य जीकी एक आदर सूचक पदवी ।

महाप्रलय (सं० पु०) महांश्चासौ प्रलयो जगतामवसानञ्चेति । त्रिलोकनाश । पर्याय—संहार ।

कालिकापुराणमें इस प्रलयका विषय इस प्रकार लिखा है,—मन्वन्तर शब्दका अर्थ मनुका अधिकार काल है । एक एक मनु जितने दिन तक प्रजापालन करते हैं उतने दिनका नाम मन्वन्तर है । इकहत्तर दैवयुगका एक एक मन्वन्तर होता है । चौदह मन्वन्तरका एक कल्प और वही कल्प विधाताका एक दिन है । ब्रह्माका एक दिन बीतने पर जगत्में बहुत भारी प्रलय उपस्थित होता है । इस समय महामाया योगनिद्रा ब्रह्माका आश्रय लेती हैं । वह लोकपितामह ब्रह्मा भी अमिततेजा विष्णुके नाभि-कमलमें प्रविष्ट हो कर सुखसे सो जाते हैं । अनन्तर विष्णु स्वयं त्रैलोक्यसंहर्त्ता रुद्ररूपी हो कर पहलेकी तरह समस्त भुवनमण्डलको विनष्ट करने लगते हैं । जब वे वायु और वह्निकी सहायतासे त्रिलोकदाह करनेमें प्रवृत्त होते हैं, तब कृशानुतापसे व्याकुल हो कर महर्लोकवासिगण जनलोक चले जाते हैं । अनन्तर रुद्र प्रलयकालीन जलद-जाल द्वारा महावृष्टि करके भ्रुवलोक पर्यन्तव्यापी उत्तुङ्ग तरङ्गाकुल जलराशिसे भुवनमण्डलको परिपूर्ण कर देते हैं । पीछे वे त्रैलोक्यको अपने उदरमें रख कर नाग-पर्यङ्क पर सो जाते हैं । जब कालानलसे समस्त भुवन दग्ध हो जाते तथा त्रैलोक्यग्राससे परितृप्त परमेश्वर योगनिद्राके वशीभूत होते हैं, तब अनन्त पृथिवीको छोड़ कर उनके समीप चले जाते हैं । अब पृथिवी आधार-रहित हो क्षण भरमें कूर्मपृष्ठ पर गिर कर खण्ड खण्ड हो जाती है । तब कूर्म अपने पैरोंसे ब्रह्माण्डके नीचे जलके ऊपर बहती हुई पृथ्वीको अपनी पीठ पर उठा लेते हैं । पृथिवी ब्रह्माण्ड खण्ड पर गिर कर चूर चूर हो जायेगी, इस भयसे कूर्मरूपी नारायण उसे अपने ऊपर रख लेते हैं । पृथिवी जब चञ्चल जलराशिके संसर्गसे डगमगाने लगती है, तब कूर्म उसे थामनेके लिये बहुतों ब्रह्माण्ड फैला देते हैं ।

अनन्तर क्षीरोदसमुद्रमें जहां नारायण लक्ष्मीके साथ सो रहे हैं वहां अनन्त पहुंच कर उन त्रैलोक्य-ग्रासतृप्त परमेश्वरको अपने मध्यमफणसे धारण करते हैं । उनका पूर्ण फण पद्माकारमें भगवान्को ऊपरसे ढके रहता है तथा दक्षिण फण उनका उपादान (तकिया), उत्तरफण पादोपाधान (पैरका तकिया) और पश्चिम फण तालवृन्त (पंखा) हो कर रहता है । इस फणसे अनन्त उनको पंखा करते हैं । इस प्रकार अनन्त अपनी देहको विष्णु-की शय्या बना देते हैं । उस समय नारायणके नाभि-कमलमें ब्रह्मा और जठरके भीतर त्रैलोक्य विराजित रहते हैं । इसीका नाम महाप्रलय है ।

(कालिकापु० २७ अ०) प्रलय शब्द देखो ।

महाप्रवृद्ध (सं० पु०) वर्द्धित आयतन ।

महाप्रसाद (सं० पु०) महांश्चासौ प्रसादश्चेति । १ विष्णुका नैवेद्य आदि ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"पादोदकञ्च निर्माल्यं नैवेद्यञ्च विशेषतः।
महाप्रसाद इत्युक्त्वा ग्राह्यं विष्णोः प्रयत्नतः॥"
(एकादशीत०)

विष्णुके पादोदक, निर्माल्य और नैवद्यको महाप्रसाद कहते हैं।

२ जगन्नाथजीका चढ़ा हुआ भात। २ अतिशय प्रसन्नता। महान् प्रसादोऽस्य। ४ शिव। ५ मांस। ६ अखाद्य पदार्थ।

महाप्रसूत (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महाप्रस्थान (सं० क्ली०) प्रस्थीयतेऽस्मिन्निति प्र-स्था-ल्युट्। महत् प्रस्थानं, महापथः तत्र गमनं। १ महापथ-गमन, शरीर त्यागनेकी इच्छासे हिमालयकी ओर जाना। कलियुगमें यह निषिद्ध बतलाया गया है। किसीको मरनेकी इच्छा होते हुए महाप्रस्थान नहीं करना चाहिये। मोहवशतः यदि कोई ऐसा करे, तो उसे प्रायश्चित्त करना होगा।

"समुद्रयात्रास्वीकारः कमण्डलुविधारणम्।
द्विजानामसवर्णासु कन्यासूपयमस्तथा॥
देवरेण सुतोत्पत्तिर्मधुपर्के पशोर्वधः।
मांसादनं तथा श्राद्धे वानप्रस्थाश्रमन्तथा।
दत्तायाश्चैव कन्यायाः पुनर्दानं वरस्य च।
दीर्घकालं ब्रह्मचर्यं नवमेधाश्वमेधकौ।
महाप्रस्थानगमनं गोमेधञ्च तथा मखं।
इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः॥"
(उद्वाहतत्त्वं)

२ मरण, मौत।

महाप्रस्थानिक (सं० त्रि०) १ महाप्रस्थान-सम्बन्धीय। २ महाभारतका १७वां पर्व।

महाप्राज्ञ (सं० पु०) अतिशय ज्ञानी, बड़ा ज्ञानवान्।

महाप्राण (सं० पु०) महान्तो दीर्घकालस्थायिनः प्राणा यस्य। १ द्रोणकाक, काला कौआ। २ वर्णविशेष। ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स और ह ये सब वर्ण महाप्राण हैं। "वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमाः प्रथम तृतीययमौ य र ल वा श्चाल्पप्राणाः अन्ये महाप्राणाः" (सिद्धान्तकौ०)। (त्रि०) ३ महाबल, बड़ा ताकतवर।

महाप्रीतिवेगसंभवमुद्रा (सं० स्त्री०) मुद्रा-विशेष।

महाप्रीतिहर्षा (सं० स्त्री०) तान्त्रिकोंके मतानुसार एक देवताका नाम।

महाफणक (सं० पु०) नागभेद।

महाफल (सं० पु०) महत् पूजादौ प्रशस्तं पूज्यं वा फलमस्य। १ बिल्ववृक्ष, बेलका पेड़। २ नारिकेल वृक्ष, नारियलका गाछ। ३ तालवृक्ष, ताड़का पेड़। ४ पीलू वृक्ष, एक फलदार पेड़का नाम। महच्च तत्फलञ्चेति। (क्ली०) ५ वृहत् फल।

"श्रोत्रियायैव देयानि हव्यकव्यानि दातृभिः।
अर्हत्तमाय विप्राय तस्मै दत्तं महाफलम्॥"
(मनु ३।१२८)

महाफला (सं० स्त्री०) १ इन्द्रवारुणी। २ राजजम्बु, बड़ा जामुन। ३ कटुतुम्बी, छोटा कड़ुवा कद्दू। ४ महाकोशातकी, घीआ तरोई। ५ मधुर मातुलङ्ग, कमलानीबू। ६ बनबीजपूरक। ७ नीली, नीलका पौधा। ८ नागबला, गुलसकरी।

महाफेज खां—गुजरातके अधिपति सुलतान महमूद बिगाड़ाके अधीनस्थ अहमदाबाद प्रदेशके एक फौजदार। इनका प्रकृत नाम जमाल-उद्दीन-शिलादार था। सुलतान २य मुजफ्फर और बहादुर शाहके राज्यकालमें इन्होंने विशेष प्रतिष्ठा पाई थी।

महाफेजखाना—मुसलमानोंकी कचहरीका एक घर। यहां पूर्वावर्त्ती मुकदमेकी नत्थी रहती है।

महाफेणा (सं० स्त्री०) महती फेणा। हिंडीर, समुद्रफेन। २ काटल नामकी मछलीका कांटा।

महावनिज् (सं० पु०) श्रेष्ठ व्यवसायी, बड़ा तिजारती।

महावन्ध (सं० पु०) योगप्रकरणसे हाथ पांवका बांधना।

महावन्ध्या (सं० स्त्री०) चिरवन्ध्या रमणी, बांझ स्त्री।

महावभ्रु (सं० पु०) खोहमें रहनेवाला एक प्रकारका जानवर।

महावर्वरिका (सं० स्त्री०) भार्गी, वरंगी।

महावल (सं० क्ली०) महादतिशयितं बलं सामर्थ्यमस्मात् महत् बलमस्येति वा। १ सीसक, सीसा। (पु०) २ बुद्ध। ३ पितरोंके एक गणका नाम।

"महान् महात्मा महितो महिमावान् महाबलः।
गणाः पञ्चैव ते पितॄणां पापनाशनाः॥"
(मार्कण्डेयपु० ९१।४६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४ वायु। ५ तामस और रौच्य मन्वन्तरके इन्द्रका नाम। ६ शिवके एक अनुचरका नाम। ७ नागभेद। ८ वंश। ९ तम्बाकूका पौधा। १० धामिनका पेड़। (त्रि०) ११ बलीयान्, अत्यन्त बलवान्।

महावल—१ एक जैन राजा। २ एक कवि। शाश्वतकृत कोषके अन्तिम भागमें इनका नाम आया है।

महावलशाक्य (सं० पु०) एक राजाका नाम।

महावला (सं० स्त्री०) १ बलाभेद, पीली सहदेइया। पर्याय—ऋष्यप्रोक्ता, अतिबला, पीतपुष्पी। २ पेटका, पेटारी। ३ पिप्पली, पीपल। ४ नीली वृक्ष, नीलका पौधा। ५ धामनवृक्ष, धौंका पेड़। ६ कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम। ७ एक बहुत बड़ी संख्याका नाम। ८ शिवलिङ्गभेद।

महावलाक्ष (सं० क्ली०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महावलातैल (सं० क्ली०) तैलौषध विशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, बिजबन्दके मूलका क्वाथ ३ सेर, मिलित दशमूलका क्वाथ ३२ सेर, जौ, कुलसोंठ और कुलथी उड़दका काढ़ा मिला कर ३२ सेर, दूध ३२ सेर; चूर्णके लिये जीवक, ऋषभक, मेद, महामेद, कंकोली, क्षीरकंकोली, मूंग, कलाय, जीवन्ती, मुलेठी, सैन्धव, अगुरु, श्वेत धूना, सरलकाष्ठ, देवदारु, मजीठ, लाल चन्दन, कुट, इलायची, पीला चन्दन, जटामांसी, शैलज, तेजपत्र, तगरपादुका, अनन्तमूल, वच, शतमूली, असगंध और पुनर्णवा कुल मिला कर १ सेर। इन सब द्रव्योंमें तैलपाकके विधानानुसार यह पाक करना होगा। इस तैलकी मालिश करनेसे सभी प्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं। (भैषज्यरत्ना० वातव्याधिरोगाधिकार)

महावलादि (सं० पु० पाचन विशेष। प्रस्तुत प्रणाली—गोपवल्लीका मूल १ तोला, सोंठ १ तोला, इन दोनोंको ३२ तोले जलमें डाल कर लकड़ीकी आंचसे सिद्ध करे। जब जल ८ तोला रह जाय, तब उसे उतार ले। इसीका नाम महावलादि पाचन है। दो वा तीन दिन इस पाचनका सेवन करनेसे शीत, कम्प, दाह और विषम ज्वर नष्ट होते हैं। (भैषज्यरत्ना० ज्वराधिकार)

महावलि (सं० पु०) १ दैत्यपति बलि। २ आकाश। ३ मन। ४ गुफा। ५ जलपात्र।

महाबलिन् (सं० त्रि०) अतिशय बलशाली, बहुत बड़ा ताकतवर।

महावलिपुर—मन्द्राज प्रदेशके चेङ्गलपट जिलान्तर्गत एक अति प्राचीन ग्राम। यह अक्षा० १२° ३६′ ५५″ उ० तथा देशा० ८०° १३′ ५५″ पू० मन्द्राज शहरसे ३२ मील दक्षिण और चेङ्गलपटसे १५ मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। स्थानीय लोग इसे महाबलिपुर, मावलिपुर, मामल्लपुर और मल्लपुर भी कहा करते हैं। अंगरेजोंने इसका The Seven Pagodas नाम रखा है। यहां श्रीकृष्णरथ, धर्मराज वा धर्मरथ, भीमरथ, अर्जुनरथ और द्रौपदीरथ इन पांच नामोंके पांच बड़े बड़े पत्थरके महल हैं। वे सब महल सिर्फ एक बड़े खंभे पर टिके हुए हैं। अलावा इसके समुद्रके किनारे विष्णु और शिवके दो मन्दिर पृथक् पृथक् हैं। इन्हीं सात नामोंसे अंगरेजोंने इसका The Seven Pagodas वा सात मन्दिर नाम रखा है।

दक्षिण भारतमें यही सब रथादि सर्वप्रधान तथा देखने लायक हैं। प्रत्नतत्त्वविद्मात्रको ही कमसे कम एक बार यह स्थान अवश्य देख आना चाहिये। यहां देखने तथा आलोचना करनेके अनेक पदार्थ हैं।

यहांके प्रत्नतत्त्व साधारणः तीन भागोंमें विभक्त हो सकते हैं:—१ला ग्रामके दक्षिणमें अवस्थित ५ रथ; २रा ग्रामके पश्चिममें विस्तृत गुफा और एकस्तम्भगठित मूर्त्ति प्रभृति, ३रा समुद्रतीरस्थ विष्णु और शिवमन्दिर। इनमें शेषोक्त मन्दिर समुद्रगर्भशायी हो गया है।

यहांके भास्कर और शिल्प-नैपुण्यमें कृष्णमण्डप सर्वश्रेष्ठ और मनोरम है। इस मण्डपमें श्रीकृष्णका गोवर्द्धन धारण और इन्द्रके क्रोधसे व्रजस्थ गो और गोपियां जो व्याकुल हो गई थीं उनके चित्त बड़े ठिकानेसे खींचे गये हैं। श्रीकृष्णके निकट गायें अपने बछड़ेको दूध पिला रही हैं। दाहिनी बगलमें एक जीवन्त वृषकी मूर्त्ति खड़ी है, देखनेसे ही चमत्कृत होना पड़ता है। ऐसी सजीव मूर्त्ति और कहीं भी देखनेमें नहीं आती। अंगरेज दर्शक श्रीकृष्णकी जगह इन्द्रको और इन्द्रके क्रोधकी जगह बलके प्रति मरुद्गणोंके क्रोधका उल्लेख कर बड़े भ्रममें पड़ गये हैं।

कृष्णमण्डपसे थोड़ी दूर उत्तर अर्जुनका 'तपो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मण्डप' है। यह तपोमण्डप ६६ फुट लंबे और ४३ फुट ऊंचे एक बड़े पत्थरका बना हुआ है। इसका भास्कर-कार्य देखने लायक है। भारतवर्षमें ऐसा कहीं भी नजर नहीं आता। स्थापत्य और शिल्पविद् फार्गुसन्साहबने इसकी गठन देख कर लिखा है, कि यहांके स्थापत्यमें नाना प्रकारका प्रभाव दिखाई देता है। इसकी यदि सम्यक् आलोचना की जाय, तो भारतीय देवतत्त्वका एक अभिनव अध्याय बन सकता है। ठीक किस समय यह पुराकीर्त्ति सम्पन्न हुई है, इसका पता लगाना कठिन है। पर हां, इतना जरूर कह सकते हैं, कि १०वीं शताब्दीसे दो एक वर्ष पहले इसका निर्माणकार्य शेष हुआ है। रास्तेके किनारे पत्थरके सत्रके निकट एक दल वानरकी मूर्त्ति है। पत्थर पर वानरका स्वभावोचित क्या ही चमत्कार हावभाव खींचा गया है। इसके समीप दक्षिण ओर जहां बहुत-सी गुहा खोदित हैं, उसीके मध्य ध्यानस्थ विराट् पुरुषकी मूर्त्ति मौजूद है। मूर्त्तिकी लम्बाई डेढ़ हजार फुटसे कम नहीं होगी। ऐसी बड़ी ध्यानस्थ मूर्त्तिको भारतवर्षमें किसीने भी नहीं देखा होगा। इससे बहुतेरे दैत्यपति बलिकी मूर्त्ति और कोई जैनकीर्त्ति समझते हैं।

इस विराट् मूर्त्तिके समीप १४-१५ गुहा और मन्दिर हैं। प्रत्येक गुहा एक एक ऋषिका आश्रम समझी जाती है। इसमें कारीगरी और आधुनिक शिल्प-नैपुण्यका अभाव नहीं है।

फार्गुसन साहबने लिखा है, कि यहांका समुद्रतीरवर्त्ती पञ्चरथ ही सर्वप्राचीन और पुराकीर्त्तिका ज्वलन्त निदर्शन है। इस पञ्च रथमें एक रथ शेष चारसे बहुत दूरमें है। उसके चारों ओर शैलमाला है, उसीको लोग अर्जुनका रथ कहते हैं। इस अर्जुन रथको छोड़ कर बाकी चार रथ उत्तर दक्षिणकी ओर पास ही पास इस भावमें खड़े हैं मानो एक बड़े पत्थर वा पहाड़को काट कर वे तय्यार किये गये हों। उत्तर ओरवाला पहला रथ उतना बड़ा नहीं है। वह एक पर्णशाला माल है। इसका बाहरी घेरा ११ वर्गफुट और ऊंचाई १६ फुट है। यह सम्पूर्ण होने पर भी इसके बीचमें सिंहासन वा कोई देवमूर्त्ति नहीं है। उसके दक्षिणांशमें उसीके जैसा एक दूसरा रथ दिखाई देता है। उसकी लम्बाई १६ फुट, चौड़ाई ११ फुट और ऊंचाई २० फुट है। तीसरे रथका आकार भिन्न प्रकारका है। इसकी लम्बाई ४२ फुट, चौड़ाई २० फुट और ऊंचाई २५ फुट है। इसके बाहरी भागमें अच्छी कारीगरी है, किन्तु भीतरी भागमें एक जगह ऐसा है मानो किसी दैव-दुर्घटनासे समस्त अंश पूरा नहीं होने पाया। भूमिकम्पसे अथवा किसी और कारणसे वह फट गया है। अन्तिम रथ देखनेमें बड़ा ही कौतुकप्रद है। यह २७ फुट लंबा, २५ फुट चौड़ा और ३४ फुट ऊंचा है। इसके बाहरी भागमें यथेष्ट स्थापत्य मौजूद हैं, किंतु भीतरी भागमें उतनी कारोगरी नहीं हैं। किसी किसीका अनुमान है, कि ऊपरी भाग शेष हो जाने पर पीछे कहीं वह फट न जाय, इस भयसे किसीको भी भीतर जा कर काम करनेका साहस नहीं हुआ।

उक्त चारों रथसे कुछ दूर अर्जुनरथ अवस्थित है। इस रथकी बनावट उन चारोंसे कुछ और तरहकी है। यह रथ सत्र या गोपुर किस भावमें बनाया गया है ठीक ठीक नहीं कह सकते। कोई कोई समझते हैं, कि वे सभी रथ बौद्धोंके विहारके ढंग पर बने हुए हैं।

उक्त अपूर्व रथोंके स्थापयिता कौन हैं? उसका आज तक भी पता नहीं चला है। इन सब रथोंसे ६ठों या ७वों सदीके अक्षरोंमें खोदित शिलालिपि अविष्कृत तो हुई है पर उसमें रथनिर्माताका कोई परिचय नहीं है। अभी प्रवाद है, कि कुरुम्बरोंने वे सब रथ बनवाये है। वे लोग पहले बौद्ध वा जैन धर्मावलम्बी थे। पीछे चालुक्य राजाओंके प्रभावसे शैव वा वैष्णवधर्म ग्रहण करनेको बाध्य हुए। इतिहासकारोंका अनुमान है, कि चालुक्य राजाओंके यत्नसे तथा उक्त कुरुम्बगणोंके हाथसे वे सब रथ बनाये गये हैं। कोई कोई कहते हैं, कि कुरुम्ब लोग पहले जिस ढंगसे अपना अपना घर बनाते थे, उसी ढंग पर उक्त रथ बनाये गये हैं। नीलगिरिके पहाड़ी आज भी जिस ढंगसे घर बनाते हैं, भीमरथ ठीक उसी ढंग पर बना हुआ है। द्रौपदीरथ देखनेसे ही मालूम होता है, कि दक्षिण भारतमें जिस प्रकार आटचाला बनाई जाती है उसी प्रकार इसकी भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनावट है। दाक्षिणात्यमें आज भी जिस तरीकेसे देवालय बनाया जाता है, अर्जुन और धर्मराजरथ भी उसी तरह बने हुए हैं। जो कुछ भी हो, वे सब कीर्त्तियां हजार वर्ष पहलेकी बनी हुई हैं इसमें संदेह नहीं।

पहले ही लिख आये हैं, कि उक्त रथको छोड़ कर यहां और भी कितनी खोदित गुहा हैं। वे सब गुहा उत्तर भारतीय गुहा-मन्दिर जैसे कारुकार्यविशिष्ट तो नहीं हैं पर उतने खराब भी नहीं हैं। वे सब शायद ६ठी शताब्दीके बने होंगे।

बलिराजकी महामूर्त्तिके समीप उसके अनुचर वामनपञ्चराजकी मूर्त्ति, उसकी स्त्रियोंकी मूर्त्ति, चार वीर, पांच संन्यासी तथा गुहामन्दिरके मध्य ऋषिमूर्त्ति विराजित हैं। उसके चारों ओर सिंह, बाघ, चीता, हरिण आदिकी मूर्त्तियां भी शोभा देती हैं।

यहांकी शैलमालाके मध्यभागमें बुद्ध और उनके शिष्योंकी मूर्त्ति है। पास होमें नागराज वासुकी और सर्पच्छत्र भी दिखाई देता है। दाहिनो ओर कुछ राजाओं, रानियों, गरुड़ और तरह तरहके पशुपक्षियोंकी मूर्त्ति मौजूद है।

बुद्ध और उनके शिष्यकी मूर्त्तिके समीप कुछ हाथी और सुगठित मूर्त्ति नजर आती हैं। इन सब मूर्त्तियोंमें कारीगरने अपनी कारीगरी अच्छी तरह दिखलाई है। फार्गु साहबका कहना है, कि यहांके मन्दिरादि ११वीं सदीके और खोदित गुहा उससे भी कुछ बादकी बनी होगी।

यहांका समुद्रतीरवर्त्ती शिवमन्दिर अभी समुद्रगर्भशायी होने पर भी वराहस्वामीका मन्दिर आज भी प्राचीन कीर्त्तिकी घोषणा करता है। इस मन्दिरमें शिवलिङ्ग और नारायणकी मर्त्ति एकमें जुड़ी हुई है। महाबलिपुरसे रोमक, चीन, पारस्य आदि स्थानोंके प्राचीन सिक्के निकाले गये हैं। यहांसे एक कोस उत्तर शालुवांकुप्पं नामक ग्राम है। वहां भी कुछ गुहा, शिलालिपि और स्थापत्यके निदर्शन मौजूद हैं।

महाबली (सं० त्रि०) महाबलिन देखो।

महाबलेश्वर (सं० क्ली०) शिवलिङ्गभेद, गोकर्णशलिङ्ग।

महाबलेश्वर—बम्बई प्रदेशमें सतारा जिलेके जौली उपविभागान्तर्गत एक स्वास्थ्यनिवास। यह अक्षा० १७° ५६' उ० और देशा० ७३° ४०' पू० पश्चिमघाट पर्वतकी महाबलेश्वर-शाखाके ऊपर अवस्थित है।

पश्चिमघाट पर्वतसे इसकी ऊंचाई ४७०० फुट है। यह स्थान जनसाधारणके लिये विशेष प्रीतिकर है। गिरिश्रृङ्गकी निर्मल निर्झरिणीकी सलिलराशि, प्रशान्त प्रकृतिकी अपूर्व सुन्दरता और सान्ध्य विहारोपयोगी प्रशस्त मैदान वा पथ इस स्थानकी रमणीयताको बढ़ाता है। यहां बैलगाड़ी आने जानेका चौड़ा रास्ता भी बनाया गया है। इस कारण जो कमजोर दुर्बल व्यक्ति यहां स्वास्थ्यलाभकी आशासे आते हैं, उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता। बम्बईसे ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे-लाइन पूना तक आई है। यहांसे मुसाफिर घोड़े गाड़ीकी सवारीसे उक्त स्थानमें जाते हैं। जब देखा गया, कि इतनी दूरसे सवारी द्वारा जानेमें दुर्बल रोगियोंको कष्ट होता है, तब सावित्री नदीके मुहानेसे ले कर दासगांव तक हवाई जहाज आने जानेका रास्ता निकाला गया है। दासगांवसे समतल क्षेत्र और घाट-श्रेणी पार कर ३५ मीलका रास्ता तै करनेसे महाबलेश्वर जाया जाता है।

१८२८ ई०में बम्बई प्रदेशके शासनकर्त्ता सर जान मैकमने सताराके राजाको कुछ दे कर यह स्वास्थ्य-प्रद गिरिप्रदेश खरीदा था। आज भी मैकम पेट नामक ग्राम उनकी स्मृतिकी घोषणा करता है। इस स्थानकी ऊंचाई थाना जिलेके मैथरेन (२४६० फीट)से अधिक रहनेके कारण यहांका आदर दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। वर्षाकालमें यहां अधिक वर्षा होती है, इस कारण उस समय बहुत कम लोग आते हैं। वसन्त और शरत्कालमें यह विशेष स्वास्थ्यप्रद और सौन्दर्यपूर्ण रहता है। इस समय बम्बई गवर्मेण्टके प्रधान प्रधान राजकर्मचारी इस शैलावासमें आ कर राजकार्यकी पर्यालोचना करते है।

म्युनिस्पलिटीके अधीन रह कर इस नगरने काफी उन्नति की है। यहां गिरजा, पाठागार, औषधालय, होटल और बहुतसे समितिगृह हैं। १८६४ ई०में यहांका विख्यात फ्रेरीहाल और पाठागार स्थापित हुआ। इसके अलावा अङ्गरेजोंके रहने लायक सौसे ऊपर बंगले बनाये गये हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाबलेश्वर वर्त्तमान कालमें एक प्रधान शैवतीर्थ समझा जाता है। स्कन्दपुराणमें सह्याद्रिखण्डके महाबलेश्वरमाहात्म्यमें, कृष्ण माहात्म्यमें और पद्मपुराणीय कार्त्तिक-महात्म्यमें इस स्थानका माहात्म्य सविस्तार लिखा है।

महाबलेश्वर-माहात्म्यमें लिखा है,—

पाद्मकल्पमें महाबल और अतिबल नामक दो बलिष्ठ दैत्य रहते थे। उनके उपद्रवसे पृथिवी थर्रा गई थी। हरिहर ब्रह्मादि सभी देवगण मिल कर उनका वध करने आये। दोनों दलमें घनघोर युद्ध चला। आखिर विष्णुके हाथसे अतिबल मारा गया। भाईको मरा देख महाबलने अत्यन्त क्रुद्ध हो घमसान मायायुद्ध ठान दिया। देवताओंने बचावका कोई रास्ता न देख महामायाकी शरण ली। महामायाने देवताओंकी रक्षाके लिये महाबलको मोहित किया। अब महाबलने देवताओंको सम्बोधन कर कहा, 'देवगण! मैं तुम लोगोंसे संतुष्ट हो गया। जो इच्छा हो वर मांगो।' 'हम लोगोंके हाथसे तुम्हारी मृत्यु हो, यही हम लोग चाहते हैं' देवताओंने कहा। इस पर दैत्य राजी हो गया और बोला, 'शिव! इस सह्याद्रिके ऊपर आपको मेरे नामसे लिङ्गरूपमें रहना होगा। यहां आपके मस्तकसे पञ्चगङ्गाकी उत्पत्ति होगी। विष्णु! आप भी मेरे भाईके नामसे लिङ्गरूप धारण करें। पद्मयोनि! आप मेरी सेनाके नामसे कोटिश नाम धारण कर इस क्षेत्रमें विराजें। वेद और वेदगण भी यहां रह कर लोगोंके भोग और मोक्षदायक बनें। बृहस्पतिके कन्याराशिमें जानेसे जो व्यक्ति इस तीर्थमें आयेगा, उसका दारिद्र्य दुःख रहने नहीं पायेगा।' पीछे महाबलके प्रार्थनानुसार महाबलेश्वर, अतिबलेश्वर और कोटीश्वर ये तीन लिङ्ग आविर्भूत हुए।

ब्रह्माने निकटवर्त्ती ब्रह्मारण्यमें आ कर यज्ञमण्डप बनाया और देव ऋषि आदिको बुला कर एक महायज्ञका अनुष्ठान किया। उस यज्ञके प्रभावसे कृष्णा, वेणी ककुद्मती गायत्री और सावित्री इस पञ्चगङ्गाकी उत्पत्ति हुई। इस पञ्चगङ्गाके सङ्गममें स्नान करनेसे सभी पाप जाते रहते हैं।

पहली तीन नदी पूर्वसमुद्रमें और शेषोक्त दो पश्चिम समुद्रमें गिरती हैं। अलावा इसके लोगोंको मुक्ति देनेवाले और भी ८ तीर्थ उत्पन्न हुए। इन आठ तीर्थोंके नाम हैं ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु, चक्र, हंस, आरण्य, मलापह और शिवमुक्तिप्रद।

यहां पर कोई स्वतन्त्र लिङ्गमूर्त्ति नहीं है। पर्वतके जिस जिस अंश हो कर धारा निकली है, वह वह अंश लिङ्ग माना गया है। यहां पर आधुनिक कालमें एक बड़ा मन्दिर बनाया गया है।

वर्त्तमानकालमें महाराष्ट्रोंके निकट यह एक प्रधान तीर्थ समझे जाने पर भी किसी प्राचीन पुराणमें और तो क्या, ज्योतिर्लिङ्ग-समूहमें भी इस महाबलेश्वरका उल्लेख नहीं है। शिवाजी और उनके वंशधरगण मन्दिर-संस्कार और देवसेवाके लिये काफी जमीन दे गये हैं। उसी समयसे इस स्थानका माहात्म्य प्रचारित हुआ है।

महाबाध (सं० त्रि०) अत्यन्त व्यथा वा यन्त्रणादायक।

महाबार्हत (सं० त्रि०) महाबृहती-सम्बन्धीय।

महाबाहु (सं० त्रि०) महान्तौ बाहू यस्य। १ दीर्घ बाहु, लम्बी भुजावाला। २ बली, बलवान्। (पु०) ३ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ४ विष्णु। ५ दानवभेद।

महाबीज (सं० पु०) १ उत्पत्तिका प्रधान कारण। २ मूलबीज। ३ शिव। ४ पारद, पारा।

महाबीज्य (सं० क्ली०) वस्तिदेश, पेड़ू।

महाबुद्ध (सं० पु०) एक प्रकारके बुद्ध। ये साधारण बुद्धोंसे श्रेष्ठ माने जाते हैं।

महाबुद्धि (सं० त्रि०) १ अतिशय बुद्धिमान्, जिसकी बुद्धि बड़ी तीव्र हो। (पु०) २ राक्षसभेद।

महाबुध्न (सं० त्रि०) विस्तृत तलयुक्त, जिसका तल चौड़ा हो।

महाबृहती (सं० स्त्री०) १ एक वैदिक छन्द। यह तीन पादका होता है और इसके प्रत्येक पादमें १२ वर्ण होते हैं। २ गुल्मभेद।

महाबोधि (सं० पु०) बुध्यते सर्वं जानातीति बुध (सर्वधातुभ्य इन्। उण् ४।११७) इति इन्, महांश्चासौ बोधिश्चेति। बुद्धदेव।

महाबोधिसङ्घाराम (सं० पु०) बौद्ध-सङ्घारामभेद।

बोधगया देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाबोध्यङ्गवती (सं० स्त्री०) तन्त्रोक्त देवताभेद ।

महाब्रह्मन् (सं० पु०) परम ब्रह्म ।

महाब्राह्मण (सं० पु०) महानतिशयनिन्दितः ब्राह्मणः । १ निन्दित ब्राह्मण, निकृष्ट ब्राह्मण । २ वह ब्राह्मण जो मृतक कृत्यका दान लेता हो, कट्टहा । साधारणतः लोकमें ऐसा ब्राह्मण निन्दित माना जाता है ।

महाभट (सं० पु०) महांश्चासौ भटेश्चेति । अतिशय शूरवीर, बड़ा भारी योद्धा ।

"तदोजसा दैत्यमहाभटार्पितं चकासदन्तःख उदीर्णदीधिति ॥"

(भागवत ३।१९अ०)

महाभक्त-पाकवटी (सं० स्त्री०) वटिकौषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—सोनामाखी, पारा, गंधक, हरताल, मैनसिल, अबरक, कान्तलौह (कांतसार), निसोथ, दन्तीमूल, मोथा, चीता, सोंठ, पीपर, मरिच, हरीतकी, जमानी, काला जीरा, हींग, कटकी, सैन्धवलवण, जायफल और यवक्षार, प्रत्येक २ तोला इन्हें अच्छी तरह चूर कर एक साथ मिलावे । पीछे अदरक, सम्हालू, सूर्यावर्त्त, ज्योतिष्मती, प्रत्येकके रसमें सात सात बार भावना दे कर एक रत्तीकी गोली बनावे । इसका अनुपान लवङ्गचूर्ण है । आमरोग, चिराग्निमान्द्य, कोष्ठबद्ध, शोथ, उदरीरोग, अजीर्ण, शूल और त्रिदोषज्वरमें यह औषध बहुत लाभदायक है । (रसेन्द्रसारस० अजीर्णाधि०)

महाभद्र (सं० पु०) १ पर्वतभेद । २ मेरु पर्वतके उत्तर एक सरोवरका नाम ।

'अरुणोदं सरः पूर्वं मानसं दक्षिणे तथा ।
शीतोदं पश्चिमे मेरोर्महाभद्रं तथोत्तरे ॥"

(मार्क०पु० ५५।३)

महाभद्रा (सं० स्त्री०) महद् भद्रं मङ्गलं यस्याः टाप् । १ गङ्गा । २ काश्मरी ।

महाभय (सं० क्ली०) १ अतिशय भय, बड़ा भारी डर । (पु०) २ महाभारतके अनुसार अधर्मके एक पुत्रका नाम । जो निर्ऋतिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था ।

महाभया (सं० स्त्री०) पुराणानुसार एक नदीका नाम ।

महाभरी (सं० स्त्री०) वचविशेष, महाभरी वच । यह कफनाशक मानी गई है ।

महाभल्लातकगुड़ (सं० क्ली०) औषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—नीमकी छाल, श्यामालता, अतीस, कटकी, बला, डमर, त्रिफला, मोथा, पित्तपापड़ा, अनन्तमूल, वच, खैरकी लकड़ी, लाल चन्दन, अकवन, सोंठ, कचूर, वरुणी अड़ सके मूलकी छाल, चिरायता, गुडूचीके मूलकी छाल, विद्धड़क, गोपालकर्कटीका मूल, मुरगामूल, विड़ङ्ग, इन्द्रजौ, विष, चितामूल, हस्तिकर्ण, पलासकी छाल, गुलञ्च, घोड़नीमकी छाल, परवलका पत्ता, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, पीपर, अमलतासके फलकी मज्जा, कलियाकी लता, ओल, चीनाघास, मजीठ, चाकुन्दका बीज, तालमूली, प्रियंगु, कटफल, शरपुङ्खा, शिरीषकी छाल प्रत्येक दो पल, पाकार्थ जल ६४ सेर, शेष ८ सेर, भल्लातक ३ हजार, जल ६४ सेर, शेष १६ सेर दोनों प्रकारके काढ़ेको अच्छी तरह छान कर एक साथ मिला दे । पीछे उसमें पुराना गुड़ १२॥० सेर और १ हजार भल्लातककी मज्जा दे कर पाक करे । इसके बाद त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, सैन्धव और यमानी, प्रत्येक एक पल; दारचीनी, तेजपत्र, इलायची और नागेश्वर प्रत्येक दो तोला, इन्हें अच्छी तरह चूर्ण कर उक्त काढ़ेमें डाल दे । अनन्तर गुड़पाकके विधानानुसार पाक करके उसे एक घीके बरतनमें रखे । इसका अनुपान गुलञ्चका क्वाथ और दूध तथा पथ्य उष्ण अन्न है । चिकित्सकको रोगीका बलाबल देख कर मात्रा स्थिर करनी चाहिये । इस गुड़का सेवन करनेसे सभी प्रकारके कुष्ठ, वातरक्त, उदावर्त्त, अर्श, पाण्डु आदि विविध रोग अति शीघ्र आरोग्य होते हैं । कुष्ठाधिकारमें यह एक अत्युत्तम औषध मानी गई है । (भैसज्यरत्ना० कुष्ठाधि०)

महाभाग (सं० त्रि०) महान् भागः यस्य । १ बड़ा भाग्यवान्, किस्मतवर । (पु०) २ बड़ा भाग्य, किस्मत ।

महाभागवत (सं० पु०) १ परम वैष्णव । २ उपपुराणभेद, महाभागवतपुराण । भागवत देखो । ३ बारह महाभक्त अर्थात् मनु, सनकादि, नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शम्भु । ४ २६ मात्राओंके छन्दोंकी संज्ञा ।

महाभागा (सं० स्त्री०) दाक्षायिणीका एक नाम ।

महाभागिन् (सं० त्रि०) शौभाग्यशाली, किस्मतवर ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाभागो (सं० त्रि०) महाभागिन् देखो।

महाभाग्य (सं० क्ली०) महच्च तत् भाग्यञ्चेति। प्रबल भाग्य, शुभादृष्ट।

महाभार (सं० पु०) महान् भारः। अतिशय भार, भारी बोझा

महाभारत (सं० क्ली०) महत् भारतं, यद्वा महान्तं भारं तनोतीति महाभार तन ड। व्यासप्रणीत इतिहासशास्त्र। इसकी नाम-निरुक्ति इस प्रकार है :—

"एकतश्चतुरो वेदा भारतञ्चेतदेकतः।
पुरा किल सुरैः सर्वैः समस्य तुलया धृतम्॥
चतुर्भ्यः सरहस्येभ्यो वेदेभ्योऽभ्यधिकं यदा।
तदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् महाभारतमुच्यते।
महत्त्वाद् भारतत्वाच्च महाभारतमुच्यते॥"

(भारत-आ० प० १ अध्याय)

प्राचीन समयमें देवताओंने सम्मिलित हो कर एक ओर चारों वेद और दूसरी ओर इस महाभारतको तराजूके पलड़ों पर रखा था। वजनमें यह महाभारत ही अधिक हुआ उसी समयसे इसका नाम महाभारत पड़ा। यह महत्व और गुरुत्वमें वेदको अपेक्षा बढ़ा चढ़ा है। सुतरां इसी महत्त्व और गुरुत्वके कारण ही इसका नाम महाभारत हुआ।

पर्वाध्याय।

प्रचलित महाभारतको अनुक्रमणिकाके अनुसार महाभारत प्रधानतः अठारह पर्वोंमें समाप्त हुआ है। इन पर्वोंमें १०० पर्वाध्याय हैं। जैसे,—

१ पहला अनुक्रमणिका पर्व, २ पर्व-संग्रहपर्व, ३ पौष्यपर्व, पौलोम पर्व, ५ आस्तीक पर्व, ६ आदिवंशावतरणपर्व, ७ विचित्र सम्भव पर्व, ८ जतुगृह दाहपर्व, ९ हिड़िम्ब पर्व, १० वकवध पर्व, ११ चैत्ररथ पर्व, १२ पाञ्चालीका स्वयंवर पर्व, १३ क्षत्रिययुद्धमें जयलाभ पूर्वक पाण्डवोंका वैवाहिक पर्व, १४ विदुरागमन पर्व, १५ राज्यलाभ पर्व, १६ अर्जुनवनवास पर्व, १७ सुभद्राहरण पर्व, १८ यौतुकाहरण पर्व, १९ खाण्डवदाह पर्व, २० सभाक्रियापर्व, २१ मन्त्रणा पर्व, २२ जरासन्धवध पर्व, २३ दिग्विजय पर्व, २४ राजसूयिकपर्व, २५ अर्घ्याभिहरण पर्व, २६ शिशुपालवध पर्व, २७ द्यूत पर्व, २८ अनुद्यूत पर्व, २९ अरण्ययात्रा पर्व, ३० किर्म्मीरवध पर्व, ३१ अर्जुनाभिगमन पर्व, ३२ किरातार्जुनयुद्ध पर्व, ३३ इन्द्रलोकगमन पर्व, ३४ धर्म और करुणारसयुक्त नलोपाख्यान पर्व, ३५ कुरुराज युधिष्ठिरकी तीर्थयात्रा पर्व, ३६ यक्षयुद्ध पर्व, ३७ निवातकवच युद्ध-पर्व, ३८ अजगर पर्व, ३९ मार्कण्डेय समस्या पर्व, ४० द्रौपदी और सत्यभामा संवाद पर्व, ४१ घोषयात्रा पर्व, ४२ द्रौपदी-हरण पर्व, (इस पर्वमें जयद्रथ द्वारा द्रौपदीका हरण, पतिव्रता सावित्रीके अद्भुत चरितका वर्णन और रामोपाख्यान सम्मिलित है) ४३ कुण्डलाहरण पर्व, ४४ आरणेय पर्व, ४५ विराट् पर्वमें पाण्डवोंका विराट् नगरमें आना और अज्ञातवासका पर्व, ४६ कीचकवध पर्व, ४७ गोहरणपर्व, ४८ अभिमन्यु और उत्तराका वैवाहिक पर्व, ४९ सैन्योद्योग पर्व, ५० सञ्जययान पर्व, ५१ चिन्तान्वित धृतराष्ट्र पर्व, ५२ गुह्यतम अध्यात्मज्ञान विषयक सनत सुजात पर्व, ५३ यान-सन्धि पर्व, ५४ भगवद्यान पर्व (इस पर्वमें मातलिका उपाख्यान, गालव चरित, कृष्णका प्रवेश और विदुला पुत्रका शासन आदि वर्णित है), ५५ कृष्ण और कर्णका संवाद पर्व, ५६ कुरुपाण्डवका निर्वाण पर्व, ५७ रथातिरथ संख्या पर्व, ५८ कोपवर्द्धन, उलूक दूताभिगमन पर्व, ५९ अम्बोपाख्यान पर्व, ६० अद्भुत भीष्माभिषेक पर्व, ६१ जम्बूद्वीप सन्निवेश पर्व, ६२ द्वीपविस्तारको कीर्त्तनात्मा भूमि पर्व, ६३ भगवतगीता पर्व, ६४ भीष्मवध पर्व, ६५ द्रोणाभिषेक पर्व, ६६ संशप्तकवध पर्व, ६७ अभिमन्युवध पर्व, ६८ प्रतिज्ञापर्व, ६९ जयद्रथवध पर्व, ७० घटोत्कचवध पर्व, ७१ लोमहर्षण द्रोणवध पर्व, ७२ नारायणास्त्र त्याग पर्व, ७३ कर्ण पर्व, ७४ शल्यवध पर्व, ७५ तालाबप्रवेश पर्व, ७६ गदायुद्ध पर्व, ७७ सारस्वत तीर्थकीर्त्तन पर्व, ७८ अत्यन्त बीभत्स सौप्तिक पर्व, ७९ सुदारुण ऐषीक पर्व, ८० जल प्रादानानिक पर्व, ८१ स्त्रीविलाप पर्व, ८२ कुरुगणका श्राद्धपर्व, ८३ ब्राह्मणवेशधारी चार्वाक राक्षस-वध पर्व, ८४ धोमद्धर्म राजका अभिषेक पर्व, ८५ गृहपरिभाग पर्व, ८६ शान्ति पर्व, ८७ राजधर्मानुशासन पर्व, ८८ आपद्धर्म पर्व, ८९ मोक्षधर्म पर्व, इसमें शुभ प्रश्नाभिगमन, ब्रह्मप्रश्नानुशासन, दुर्वासा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रादुर्भाव और मायाके साथ कथोपथन वर्णित है), ९० अनुशासनिक पर्व (इसमें धीमान भीष्मको स्वर्गारोहणकी बात लिखी है), ९१ पीछे सर्वपापप्रणाशक आश्वमेधिक पर्व, ९२ आध्यात्मविषयक अनुगीता पर्व, ९३ आश्रमवास पर्व, ९४ पुत्रदर्शन पर्व, ९५ नारदागमन पर्व, ९६ महाप्रास्थानिक पर्व, ९७ स्वर्गारोहणिक पर्व, ९८ खिल नामक हरिवंश पर्वान्तर्गत हरिवंश पर्व, ९९ विष्णु पर्व (इसमें शिवचर्य्या और कृष्ण द्वारा कंस वधका उल्लेख है), १०० पीछे अति अद्भुत भविष्यपर्व, महामति व्यासने सौ पर्वोंको लिखा है। सूतकुलोद्भव लोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवाने नैमिषारण्यमें क्रमसे अठारह पर्वोंको संक्षेपमें वर्णन किया। उसी संक्षिप्त विवरणको हम यहां उल्लेख करते हैं।

पौष्य, पौलोम आस्तीक आदिवंशावतरण, सम्भव, लक्षागृहदाह, हिडिम्बवध, चैत्ररथ, द्रौपदीका स्वयंवर, वैवाहिक, विदुराका आगमन, राज्यलाभ, अर्जुनका वनवास, सुभद्राहरण, यौतुकाहरण, खांडववनदाह और मयदर्शन—ये सब विषय आदि पर्वमें वर्णित हैं।

पर्वों के विषयोंका वर्णन।

पौष्यपर्व।

इसमें उतङ्कका माहात्म्य वर्णित है। पैलोम पर्वमें भृगुवंशका सविस्तार वर्णन है। आस्तीक पर्वमें गरुड़ तथा सर्पोंकी उत्पत्ति, और समुद्रमन्थन, उच्चैःश्रवाकी उत्पत्ति और महाराज परीक्षितके पुत्र जन्मेजयके सर्पयज्ञानुष्ठानके समय भरतवंशीय महात्माओंके सम्बन्धकी महाभारतीय कथा वर्णित है।

सम्भव पर्व।

इसमें राजाओं और अन्यान्य वीरों तथा द्वैपायनकी उत्पत्ति, देवताओंके अंशावतार, दैत्य, दानव, नाग, यक्ष, सर्प, गन्धर्व, पक्षी और अन्यान्य विविध प्राणियोंकी उत्पत्ति तथा भरतके नामानुसार भारतवंशख्याति, शकुन्तलाका वृत्तान्त, शान्तनुराजके घर गङ्गाके गर्भसे वसुओंकी उत्पत्ति और स्वर्गारोहण, भीष्मका जन्म और उनका राज्यत्याग, ब्रह्मचर्यावलम्बन और प्रतिज्ञापालन, भीष्मकर्त्तृक चित्राङ्गदकी रक्षा और चित्राङ्गदके मारे जाने पर उनके छोटे भाई विचित्रवीर्यकी रक्षा तथा राजसिंहासन पर स्थापन, अणीमाण्डव्यके शापसे धर्मकी नरयोनिमें उत्पत्ति, वरदानके बलसे कृष्णद्वैपायनसे धृतराष्ट्र और पाण्डुका जन्म तथा पाण्डवोंकी उत्पत्ति, पाण्डवोंके वारणावर्त यात्राके सम्बन्धमें दुर्योधनकी कुमन्त्रणा और उसके द्वारा पाण्डवोंके पास पुरोचनका भेजना, हितानुष्ठानके लिये राहमें विदुर द्वारा म्लेच्छ भाषामें धीमद्धर्मराजके प्रति हितोपदेश देना, विदुरके वाक्यके फलस्वरूप सुरङ्गका तय्यार किया जाना, पांच पुत्रोंके साथ सोई हुई निषादी और पुरोचनका लक्षागृहदाह, निविड़वनमें हिडिम्बा राक्षसीको पाण्डवोंका देखना, महाबल भीम द्वारा हिडिम्बका वध, घटोत्कचकी उत्पत्ति, पाण्डवोंका व्यासका दर्शन और व्यासके आज्ञानुसार एक ब्राह्मणोंके घर पाण्डवोंका अज्ञातवास, बकराक्षसवध और उनके दर्शनसे गांववालोंका विस्मयान्वित होना, द्रौपदी और धृष्टद्युम्नकी उत्पत्ति, एक ब्राह्मणके मुंहसे द्रौपदीका स्वयंवर होना सुन कौतुहलाक्रान्त हो पाण्डवोंका पाञ्चाल देशकी ओर यात्रा करना (पाञ्चाल अब पञ्जाब कहलाता है), गङ्गाके किनारे अङ्गारपर्ण नामक गन्धर्वको अर्जुनका जीतना, उसके साथ मैत्री स्थापित करना तथा उसके मुंहसे तपती, वशिष्ठ और और्वकी कथा सुन कर पाण्डवोंका वहांसे पाञ्चाल नगरमें जाना, वहां सारे राजाओंके बीच लक्ष्यभेद कर द्रौपदीको पाना और वहां युद्ध होने पर भीमसेन और अर्जुन द्वारा शल्य, कर्ण और अन्यान्य मदान्ध वीरोंका पराजित होना, भीमार्जुनके अलौकिक तेज देख और उन्हें पाण्डव समझ कृष्ण और बलरामका भार्गव-गृहमें आगमन। द्रौपदीके पांच पति होंगे—यह सुन कर द्रुपदराजका विमर्ष होना, इस पर पञ्चेन्द्रका उपाख्यान, द्रौपदीका देवकृत अमानुषिक विवाह, धृतराष्ट्र द्वारा विदुरको पाण्डवोंके पास भेजना, विदुरका आना और भगवान् श्रीकृष्णका दर्शन पाना, पाण्डवोंका खाण्डवप्रस्थमें वास करना और अर्द्धराज्य शासन, नारदकी आज्ञाके अनुसार द्रौपदीके घरमें जाना और पांचों भाइयोंका नियम बांधना, सुन्दोपसुन्दकी कथा, द्रौपदीके साथ युधिष्ठिर जिस घरमें थे, उस घरमें नियम तोड़ कर ब्राह्मणोंके उपकारार्थ अर्जुनका गाण्डीवको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लानेके लिये जाना, नारदकी नियम-रक्षाके लिये अर्जुनका वन गमन ; पार्थके वनवासके समय नागकन्या उलूपीके साथ राहमें ही समागम और पुण्यतीर्थमें जाना, वभ्रुवाहनका उत्पन्न होना, अर्जुन द्वारा तपस्वी ब्राह्मणके शापसे ग्राहयोनिमें उत्पन्न हुई पञ्चस्वरूपा अप्सराका शापविमोचन, प्रभासतीर्थमें अर्जुनके यहां श्रीकृष्णका समागम, कृष्णके आज्ञानुसार द्वारकामें जा कर अर्जुनसे कामयान द्वारा सुभद्राका हरण, कृष्णका उपढौकन ले कर खाण्डवप्रस्थमें गमन, अभिमन्युका जन्म, द्रौपदीके पुत्र होना, कृष्ण और अर्जुनका जलविहारके लिये यमुनामें जाना और वहां चक्र और धनु प्राप्ति, खाण्डवदाह, मयदानव और भुजङ्गोंका अग्निसे रक्षा पाना, शार्ङ्गीके गर्भसे मन्दपाल नामक महर्षिका पुत्रोत्पादन आदि विषय आदि पर्वमें वर्णित है। इस पर्वमें २२७ अध्याय और ८८८४ श्लोक हैं।

२ सभापर्व।

इसमें बहुतेरे वृत्तान्तोंसे परिपूर्ण महाभारतके दूसरे पर्वका नाम सभापर्व है। पाण्डवोंका सभानिर्म्माण करना, किङ्करदर्शन, नारद द्वारा लोकपाल-सभा वर्णन, राजसूय यज्ञारम्भ, जरासन्धवध, कृष्ण द्वारा गिरिदुर्गमें बंधे राजाओंका मुक्त करना, पाण्डवोंकी दिग्विजय, राजसूय यज्ञमें उपढौकन ले कर राजाओंका आगमन, अर्घदानके लिये वादानुवादमें शिशुपालका वध, यज्ञका ऐश्वर्य्य देख दुःखी और ईर्षान्वित दुर्योधनका भीम द्वारा सभामें ही उपहास, इससे दुर्योधनका क्रोधित होना, द्यूतक्रीड़ाका अनुष्ठान, धूर्त्त शकुनि द्वारा पाशक्रीड़ामें युधिष्ठिरकी पराजय, द्यूतार्णवमें डूबती स्नूषा द्रौपदीका महाप्राज्ञ धृतराष्ट्र द्वारा उद्धार, द्यूतक्रीड़ाके लिये दुर्योधनका पुनः पाण्डवोंको बुलाना, द्यूतमें दुर्योधनकी जीत तथा पाण्डवोंका वनवास गमन—आदि विषय सभापर्वमें वर्णित है। इस पर्वमें ७८ अध्याय और २५११ श्लोक हैं।

३ वनपर्व।

३ वनपर्व। यह पर्व बहुत बड़ा है। महामती पाण्डवोंके वन-गमन करने पर धर्मपुत्रके पीछे पुरवासियोंका जाना, धौम्यमुनिके आज्ञानुसार अनुगत ब्राह्मणोंके भरण-पोषणार्थ अन्न और औषधिकी प्राप्तिके लिये धर्मराजका सूर्यकी आराधना करना, सूर्यके प्रसादसे अन्नकी प्राप्ति, धृतराष्ट्र द्वारा हितवादी विदुरका परित्याग, विदुरका पाण्डवोंके यहां जाना और धृतराष्ट्रकी आज्ञाके अनुसार पुनः विदुरका लौटना, कर्णका उपहास वाक्य, वनवासी पाण्डवोंका वध करनेके लिये दुर्योधनकी कुमन्त्रणा, यह जान कर व्यासका दुर्योधनके समीप आना और दुर्योधनका वनगमन निषेध करना, सुरभिका उपाख्यान, मैत्रेयका हस्तिनापुरमें आना और धृतराष्ट्रको शापदान, भीमसेन द्वारा संग्राममें किर्म्मीका वध, शकुनी द्वारा पाण्डवोंका छला जाना सुन कर पाञ्चाल और वृष्णिका युधिष्ठिरके पास आना, अर्जुन द्वारा क्रोधान्वित कृष्णका ठण्ढा होना, कृष्णके निकट द्रौपदीका विलाप, कृष्णका पाञ्चालीको सान्त्वना देना, सौभवधाख्यान, कृष्ण द्वारा पुत्रके साथ सुभद्राका द्वारकामें जाना, धृष्टद्युम्न द्वारा द्रौपदी तनयोंका पाञ्चाल देशमें लाना, पाण्डवोंका रमणीय द्वैत-वनमें जाना, युधिष्ठिर, भीम और वेदव्यासका आगमन और युधिष्ठिरको प्रतिस्मृति नामकी विद्या देना, व्यासके वहांसे चले जाने पर पाण्डवोंका काम्य-वनमें प्रवेश, दिव्यास्त्र-प्राप्तिके लिये अर्जुनका प्रवास, किरातरूपी महादेवके साथ अर्जुनका युद्ध, अर्जुनका लोकपाल-दर्शन और अस्त्रप्राप्ति तथा उनका अस्त्र-शिक्षाके लिये महेन्द्रलोकमें जाना, यह सुन कर धृतराष्ट्रका चिन्तित होना, युधिष्ठिरका परमतत्त्वज्ञ बृहदश्व नामक महर्षिका दर्शन, उनके सामने कातर हो कर युधिष्ठिरका परिताप और विलाप करना, नलोपाख्यान।—(इसमें नलका चरित और दमयन्तीका विपदकालमें भी मर्यादाका पालन करना वर्णित है)। महर्षि बृहदश्वसे युधिष्ठिरका अक्षहृदय नामका विद्य पाना, स्वर्गसे लोमश ऋषिका पाण्डवोंके यहां आना और उनका स्वर्गस्थ अर्जुनका वृत्तान्त कहना, अर्जुनका समाचार सुन कर पाण्डवोंकी तीर्थयात्रा, तीर्थयात्राका फल और पुण्य-कथन, महर्षि नारदकी पुलस्त्य तीर्थ-यात्रा और पाण्डवोंका तीर्थमें जाना, इन्द्रकी प्रार्थनासे कर्णको कुण्डल-प्रदान, गयासुरका यज्ञ, अगस्त्यका उपाख्यान और वातापि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भक्षण, सन्तानके लिये अगस्त्य ऋषिका लोपामुद्रा नाम्नी स्त्रीका परिग्रह, कौमार ब्रह्मचारी ऋष्यशृङ्गका चरित, जमदग्निके पुत्र परशुरामका चरित्र, कार्त्तवीर्यका वध, हैहय-वध, प्रभासतीर्थमें वृष्णियोंके साथ पाण्डवोंका सम्मिलन, सुकन्याका उपाख्यान, शर्यातिके यज्ञमें च्यवन मुनि द्वारा अश्विनीकुमारद्वयके यज्ञीय सोमरसका दान, अश्विनीकुमारों द्वारा च्यवनमुनिका यौवन प्राप्त, मान्धाताका उपाख्यान, जन्तु नामक राजपुत्रका उपाख्यान, सोमकराज द्वारा बहुपुत्र लाभार्थ पुत्रविनाश द्वारा याग और सौ पुत्रोंका पाना, अत्युत्तम श्येन-कपोतका आख्यान, इन्द्र, अग्नि और धर्म द्वारा शिविराजकी परीक्षा, अष्टावक्रीय उपाख्यान, जनक राजाके यज्ञमें नैयायिक प्रवर वरुणात्मज वन्दीके साथ विप्रर्षि अष्टावक्रका वादानुवाद, अष्टावक्रके साथ विवादमें वन्दीकी पराजय, पराजय करनेके बाद अष्टावक्रका अपने पिता कहोड़को सागरसे डूबनेसे बचाना, यवक्रीतका उपाख्यान, महानुभव रैभ्यका उपाख्यान, पाण्डवोंका गन्धमादनको यात्रा और नारायणाश्रममें वास। वहां रहते हुए सौगन्धिक आहरणार्थ द्रौपदी द्वारा नियुक्त भीमके कदली-वनके पथमें हनुमानका दर्शन, भीम द्वारा पद्मवनका ध्वंस, वहां राक्षस, मणिमत् महावीर यक्षोंसे भीमका तुमुल संग्राम, भीम द्वारा जटासुर नामक राक्षसका वध, वृषपर्वा नामक राजर्षिके पास पाण्डवोंका जाना, फिर वहांसे पाण्डवोंका आर्ष्टि-सेनाश्रममें जाना और वहां ही रहना, पाञ्चाली द्वारा भीमका उत्साहवर्द्धन, भीमका कैलाश पर चढ़ना और महाबली मणिमत् आदि राक्षसोंसे घोरतर युद्ध करना, पाण्डव और कुबेरका सम्मिलन, भ्राताओंके साथ अर्जुनकी भेंट, सव्यसाचि अर्जुनको दिव्यअस्त्रप्राप्ति, इन्द्रकार्यार्थ हिरण्यपुरवासी निवात कवच नामक दानवों और पुलोमपुत्र कालकेयोंके साथ अर्जुनका युद्ध और उन सबोंका अर्जुन द्वारा वध होना, महाराज युधिष्ठिरके सामने अर्जुनका अस्त्र दिखानेका उद्योग करना और देवर्षि नारद द्वारा अस्त्र दिखाना बाद करना, पाण्डवोंके गन्धमादनसे उतरना, इसी महावनमें पर्वताकार अजगर सर्प द्वारा भीमका पकड़ा जाना, युधिष्ठिरके प्रश्नोंके कहनेसे भीमका उद्धार, पाण्डवोंके काम्यवनमें फिर आना, पुरुषश्रेष्ठ पाण्डवोंको देखनेके लिये वसुदेवका काम्यवनमें आना, मार्कण्डेय समस्याघटित बहुतेरे उपाख्यान, इन सब महर्षियों द्वारा वेण-पुत्र पृथुराजका उपाख्यानकीर्त्तन, महानुभव तार्क्ष्य ऋषि और सरस्वतीका संवाद, मत्स्योपाख्यान, मार्कण्डेय समस्या और पुरावृत्त कीर्त्तन, इन्द्रद्युम्नका उपाख्यान, धुन्धुमारका उपाख्यान, पतिव्रतोपाख्यान, अङ्गिराका उपाख्यान, द्रौपदी और सत्यभामाका कथोपकथन, पाण्डवोंका फिर द्वैतवनमें प्रवेश, घोषयात्रा, इसमें गन्धर्वों द्वारा दुर्योधनका पकड़ा जाना, लज्जाभिभूत दुर्योधनको अर्जुनका छुड़ाना, युधिष्ठिरका मृगस्वप्न दर्शन और काम्यकवनमें फिर जाना, सविस्तार व्रीहिद्रौणिक उपाख्यान, दुर्वासा-उपाख्यान, आश्रमसे जयद्रथ द्वारा द्रौपदीका हरण और भीम द्वारा जयद्रथका पञ्चशिखीकरण, रामोपाख्यान, सावित्रीका उपाख्यान, इन्द्रके लिये कर्णका अपने दोनों कुंडलोंको उतार कर दे देना, इससे प्रसन्न हो कर इन्द्रका पुरुषघातिनी-शक्ति कर्णको देना, आरण्यका उपाख्यान, धर्म द्वारा अपने पुत्रका अनुशासन, वरलाभके बाद पाण्डवोंका पश्चिम ओर जाना इत्यादि। वनपर्वमें इन्हीं सब विषयोंका उल्लेख है। इसमें २६६ अध्याय और ११८६४ श्लोक हैं।

४ विराट् पर्व।

विराट् राज्यमें उपस्थित होनेके बाद श्मशानमें शमीवृक्षका दर्शन, उस पर पाण्डवोंका अस्त्र रखना, नगरमें जा कर छद्मवेशमें उनका वहां रहना, कामाभिभूत दुर्वृत्त कीचकके पाञ्चालीके प्रति विषय भोगकी प्रार्थना और भीम (वृकोदर) द्वारा उसका वध, पाण्डवोंको खोजनेके लिये दुर्योधनका चारों ओर चतुर चरोंका भेजना, उन चरों द्वारा पाण्डवोंका अनुसन्धान न पाना, प्रथमतः त्रिगर्तीय सैन्य द्वारा विराट्का गोधन-हरण और इसके लिये इन लोगोंके साथ विराटराजका लोमहर्षण महासंग्राम, भीम द्वारा गोधन विराट्का उद्धार, तथा पाण्डवों द्वारा गोधनका लौटाना, कौरवों द्वारा गो ग्रहण, अर्जुनके साथ युद्ध करनेमें सभी कौरवोंकी हार, किरीटीका विक्रम प्रदर्शन कर गोधनका लौटा ले आना,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्नेह कर विराट्का अर्जुनको उत्तराका दान तथा सुभद्रा पुत्र अभिमन्युके साथ उत्तराका विवाह। विराट् पर्वमें यही सब विषय हैं। इसमें ६७ अध्याय और श्लोक-संख्या २०५० है।

५ उद्योग पर्व।

पाण्डवोंका उपप्लव्य नामक स्थानमें एकत्र होना और दुर्योधन तथा अर्जुनका श्रीकृष्णके समीप पहुंचना और दोनोंकी सहायताकी प्रार्थना करना, कृष्णका पूछना, कि किसको क्या चाहिये, एक ओर मेरी दश करोड़ नारायणी सेना है और दूसरी ओर मैं अकेला अस्त्रहीन रहूंगा। मन्दभाग्य दुर्योधन सैन्यवर-की प्रार्थना, दूसरी ओर अर्जुनको अयुध्यमान कृष्णका पाना, मद्रराज पाण्डवोंके साथ आ रहे थे, राहमें खबर पा कर दुर्योधनका जाना और उनका आगत स्वागत कर उनको प्रसन्न करना, फिर उनसे सहायताकी वर प्रार्थना करना, मद्रराज शल्यका सहायता स्वीकार कर पाण्डवों-के समीप आना, शल्यका युधिष्ठिरको सान्त्वना देना और इन्द्रविजयवर्णन, पाण्डवोंका दुर्योधनके पास पुरोहितका भेजना, पाण्डवोंके भेजे पुरोहितके मुंह से इन्द्रविजय विषयक वाक्य सुन कर विदुरके कहनेसे धृतराष्ट्रका शान्तिस्थापनके लिये सञ्जयको दूत बना कर भेजना, श्रीकृष्ण और पाण्डवोंकी बातोंको सुन कर चिन्तासे धृतराष्ट्रका निद्रात्याग करना, विदुरके मुंहसे धृतराष्ट्रका विचित्र और हितकर वाक्य सुनना, सनत्-कुमार ऋषिके मुंहसे शोकाकुल धृतराष्ट्रका अध्यात्म-विषयक शास्त्र सुनना, प्रातःकाल राजसभामें सञ्जयका कृष्ण और अर्जुनके कहे वाक्यको कहना, महामति कृष्णका सन्धिस्थापनके लिये दुर्योधनके यहां जाना, दोनों पक्षकी हितकामनासे कृष्णका सन्धिका प्रस्ताव करना और दुर्योधनका अग्राह्य करना, दम्भोदभवका आख्यान, मातलीका अपनी पुत्रीके लिये वर खोजना, महर्षि गालवका चरित्रवर्णन, विदुलापुत्रका अनुशासन, कर्ण और दुर्योधन आदिको दुष्ट मन्त्रणा जान कर राजाओंके समीप कृष्णका योगीश्वरत्व दिखलाना, कर्णको कृष्णका अपने रथमें बैठाना और उत्तम शिक्षा देना, गर्हित कर्ण द्वारा कौशलपूर्वक कृष्णका प्रत्याख्यान करना, हस्तिनापुरसे उपप्लव्यमें आ कर पाण्डवोंके पास कृष्णका सब वृत्तान्त कहना, कृष्णका बात सुन कर हितकर कार्यकी मन्त्रणा कर पाण्डवोंकी संग्रामसज्जा, हस्तिनापुरसे युधिष्ठिरके लिये रथ, घोडे, हाथी, पैदल सैनोंका आयो-जन करना, सैन्यसंख्या, महायुद्धके आरम्भ होनेसे एक दिन पहले दुर्योधनका उलूक नामक व्यक्तिको दूत बना कर पाण्डवोंके पास भेजना, रथातिरथसंख्या, अम्बोपा-ख्यान, उद्योगपर्वमें ये सब वृत्तान्त लिखे गये हैं। इसमें ८६ अध्याय और ६६६८ श्लोक हैं।

६ भीष्म पर्व।

सञ्जय द्वारा जम्बूखण्डका निर्म्माण कथन, युधि-ष्ठिरके सैन्योंका अत्यन्त विषाद और अर्जुनका मोह, दशाहव्यापी घोरतर सुदारुण युद्धके समय योगविषयक नाना हेतुवाद द्वारा महामती कृष्णका अर्जुनके मोहको तोड़ना, कृष्णका रथसे उतरना और निर्भय चित्तसे चक्र लिये भीष्मको वध करनेके लिये दौड़ना, वाक्यरूपदण्डसे कृष्ण द्वारा अर्जुनको चोट पहुंचाना, अर्जुनका शिखण्डीको आगे कर भीष्म पर तीर छोड़ना और भीष्मका भूपतित होना, भीष्मका शरशय्याशयन। ये सब भीष्मपर्वमें लिखे गये हैं। इस पर्वमें ११७ अध्याय और ५८८४ श्लोक हैं।

७ द्रोण पर्व।

प्रतापशाली द्रोणाचार्यका सेनापति बनना, दुर्योधनके लाभार्थ द्रोणाचार्यका युधिष्ठिरको पकड़ लानेकी प्रतिज्ञा करना, नारायणीसेना द्वारा युद्ध-स्थलसे अर्जुनका हटाया जाना, महाराज भगदत्तका अपने हाथीके साथ रणस्थलमें अद्भुत इन्द्रतुल्य विक्रम प्रकाश, अर्जुन द्वारा भगदत्तका बध, जयद्रथ प्रभृति महारथियों द्वारा अप्राप्त यौवन अकेले अभिमन्युका बध। अभिमन्युके बधके बाद क्रोधान्वित अर्जुन द्वारा रण-भूमिमें सात अक्षौहिणी सैन्य और जयद्रथका बध, महाराज युधिष्ठिरके आज्ञानुसार महाबाहु भीम और सात्यकि द्वारा देवताओंके अलङ्घनीय कुरुसैन्यमें घूसना, हतावशिष्ट नारायणी-सेनाका विनाश, अलम्बुष, श्रुतायु, जलसन्ध, भूरिश्रवा, विराट, द्रुपद और घटोत्कच आदि अनेक वीर पुरुषोंका बध, द्रोणाचार्यका बध, युद्धमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रोणाचार्यके मरनेके बाद क्रोधान्वित अश्वत्थामाका भयङ्कर आग्नेयास्त्र (नारायणास्त्र)-का प्रयोग करना, रुद्रमाहात्म्य-वर्णन, व्यासका आगमन और कृष्ण-अर्जुन-का माहात्म्य वर्णन,—इस पर्वमें ये विषय विशेषरूपसे वर्णित हुए हैं। सिवा इसके अनेकों राजाओंके मरनेका वृत्तान्त भी लिखा गया है। इस पर्वमें १७० अध्याय और ८६०० श्लोक हैं।

८ कर्णपर्व।

श्रीमद् मद्रराजका सारथिके काममें नियुक्त होना, पौराणिक त्रिपुरका मरण-वृत्तान्त वर्णन, युद्धयात्राके समय मद्रराज और कर्णका परस्पर वाक्-युद्ध, कर्णको तिरस्कार करनेके लिये शल्य द्वारा हंस और कौएका आख्यान, अश्वत्थामा द्वारा पाण्ड्यराजका विनाश, दण्डसेन और दण्डका वध, सर्वधनुर्द्धारी वाक्तियोंके सम्मुख द्वैरथ-युद्धमें कर्ण द्वारा धर्मराज युधिष्ठिरका प्राणसंकट, युधिष्ठिर और अर्जुनका परस्पर कोप, कृष्ण द्वारा अर्जुनका अनुनय, वृकोदरका रण-स्थलमें पूर्व प्रतिज्ञाके अनुसार दुःशासनके वक्षःस्थल-को फाड़ कर उसका रक्तपान करना, द्वैरथ युद्धमें अर्जुन द्वारा कर्णका बध। इस पर्वमें इन्हीं सब विषयोंका समावेश है। इसमें ६६ अध्याय और ४६६४ श्लोक हैं।

९ शैल्यपर्व।

कर्णके बध होने पर शल्यका सेनापति होना, नाना रथियोंके पृथक् पृथक् रथयुद्धका वर्णन, कौरव पक्षीय प्रधान प्रधान योद्धाओंका बध, धर्मराज द्वारा शल्यका बध, प्रायः सारी सेनाओंके मारे जानेके बाद दुर्योधनका तालाबमें प्रवेश और जलस्तम्भ कर वहां रहना, व्याधोंका दुर्योधनके छिपनेका हाल भीमसे कहना, धर्मराजकी तिरस्कार पूर्ण बातोंको सुन दुर्योधनका तालाबसे निकलना, जहां भीमके साथ दुर्यो-धनका गदा-युद्ध हुआ वहां सब लोगोंका आना, इसके बाद बलरामका आगमन, सरस्वती-तीर्थ और अन्यान्य तीर्थोंका माहात्म्य-वर्णन, उस रणभूमिमें दुर्योधनके साथ भीमका तुमुल गदा-युद्ध, युद्धस्थलमें भीमकी गदा-से दुर्योधनकी जंघा तोड़ना,—इस पर्वमें ये ही सब विषय वर्णित हुए हैं। इसमें ५६ अध्याय और ३२२० श्लोक हैं।

१० सौप्तिकपर्व।

पाण्डवोंके रणस्थल त्याग करनेके बाद दुर्योधन टूटी हुई जांघकी अवस्थामें जहां पड़ा था वहां सन्ध्याको कृतवर्मा, कृप और अश्वत्थामाका उपस्थित होना, दुर्योधनकी अवस्थाको देख अश्वत्थामा-का क्रोधित होना और प्रतिज्ञा करना, कि धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चालगण और अन्यान्य मन्त्रियोंके साथ पाण्डवोंका विनाश जब तक न करूंगा, तब तक शरीरसे कवच न उतारूंगा। इसके बाद उन तीनों रथियोंका वहांसे जाना और सूर्यास्तसे पहले एक महावनमें प्रवेश करना और एक वटवृक्षके नीचे जा कर एक उल्लूको रातके समय कौओंका विनाश करते देखना, यह देख अश्वत्थामाका पितृ-वध स्मरण करना और क्रोध कर मनमें यह कल्पना करना, कि सो जाने पर पाञ्चालोंका विनाश करूंगा। इसके बाद पाण्डवोंके खेमेमें अश्व-त्थामाका जाना और खेमेके दरवाजे पर पर्वताकार गगन-स्पर्शी भयङ्कर राक्षसको देखना। राक्षसका भीतर घुसनेमें बाधा डालने पर द्रोणपुत्र अश्वत्थमाका वीरुपक्ष रुद्रकी आराधना कर कृप, कृतवर्माके साथ खेमेमें प्रवेश और सोते हुए धृष्टद्युम्न और सपरिवार पाञ्चालों तथा द्रौपदी तनयोंका संहार करना। कृष्णके चातुर्यसे सात्यकि और पञ्चपाण्डवोंकी रक्षा, बाकी सबोंका विनाश, अश्वत्थामा का अपने हाथोंसे पाञ्चालोंको मारना, धृष्टद्युम्नके सारथीका इस भयङ्कर दुर्घटनाका वृत्तान्त पाण्डवोंसे कहना, शोकार्त्ता और पुत्र तथा भ्रातृबधकातरा द्रौपदी-का पतियों पर अनशन कर त्याग करनेका दृढ़ संकल्प करना, भीम पराक्रमी भीमसेनका द्रौपदीके कहनेके अनु-सार उसके प्रियसाधनके लिये क्रोधित हो कर गदा ले कर अश्वत्थामाके पीछे पीछे दौड़ना, द्रोणपुत्रका भीमका भयतुर होना और दैवप्रेरित क्रोधपूर्वक 'पृथ्वी पाण्डव-रहित हो' ऐसा कह नारायणास्त्रका छोड़ना, इस पर कृष्ण-का अश्वत्थामाको मना करना, अश्वत्थामाका विद्रोहा-चरण देख अर्जुनका उसी अस्त्रसे निवारण करना, अश्व-त्थामा और द्वैपायन व्यासका परस्पर शापका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदान प्रदान, जयश्रीप्राप्त पाण्डवोंका द्रोणपुत्रके सिर-से मणि ले कर हृष्टान्तःकरणसे द्रौपदीको देना—इस पर्वमें इन्हीं सब विषयोंका वर्णन है। इसमें १८ अध्याय और ८७० श्लोक हैं।

११ स्त्रीपर्व।

प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र पुत्रके शोकसे सन्तप्त हो कर भीमके विनाशकी कामना करना, कृष्ण-प्रदत्त लौहमय भीमकी मूर्त्तिको धृतराष्ट्रका तोड़ना, पीछे धृतराष्ट्रके शोक सन्तप्तहृदयको शान्त करनेके लिये विदुरका नाना प्रकारके सान्त्वना वाक्यका प्रयोग करना, धृतराष्ट्रका अन्तःपुरमें प्रवेश कर अन्तःपुर-वासिनी रमणियोंको साथ ले रणभूमिमें जाना तथा वीर पत्नियोंको अतिकरुण रुदन करते देख धृतराष्ट्र और गांधारीका क्रोधित और मोहित होना, वीर क्षत्राणियों-के अपने पति, पुत्र और भ्राताओंको भूपतित देखना, गांधारीको पुत्रशोकसे अभिभूत हुआ देख कृष्णका सान्त्वना देना, धार्मिकप्रवर महाप्राज्ञ युधिष्ठिरका शास्त्रानुसार युद्धमें मारे गये वीरोंका शवदाह करना, पीछे तिलाञ्जलि देते समय कुन्तीका कर्णको अपना पुत्र बताना। इसमें इन्हीं सब विषयोंका समावेश है। यह पर्व करुणाश्रुप्रवर्त्तक और हृदयविदारक है। इसमें २७ अध्याय और ७७० श्लोक हैं।

१२ शान्तिपर्व।

यह पर्व ज्ञानगर्भ तथा विविध उपदेशपूर्ण उपाख्यानोंसे परिपूर्ण है। इसमें धर्मराज युधिष्ठिरका पिता, भ्राता, प्रभु, साले, मामा आदि सभीका संहार करके निर्वेदको प्राप्त होना, शरशय्याशायी भीष्मका युधिष्ठिर आदि राजाओंको धर्मका उपदेश देना और उनका आपद्धर्म कहना आदि विषय हैं जिनको सुन सभी लाभ उठा सकते हैं।

इस पर्वमें निम्नलिखित विषय विशेष रूपसे वर्णित हुए हैं। नारदसे युधिष्ठिरका कर्णकी उत्पत्ति कहना, कर्णके प्रति अभिशाप, कर्णका अस्त्रलाभ, स्वयं-वरमें दुर्योधनका कन्याहरण करना, कर्णका विक्रम दिख-लाना, स्त्री-जातिके प्रति युधिष्ठिरका अभिशाप, युधि-ष्ठिरका विलाप करना, ऋषि-शकुनिका संवाद, नकुल-वाक्य, सहदेववाक्य, द्रौपदीवाक्य, अर्जुनवाक्य, भीमसेनवाक्य, युधिष्ठिरको देवस्थानका उपदेश, युधि-ष्ठिरको व्यासका उपदेश, श्येनजित्का उपाख्यान, राजिक उपाख्यान, नारद पर्वोपाख्यान, सुवर्णष्ठीवीका उपाख्यान, प्रायश्चित्त वर्णन, युधिष्ठिरके प्रति व्यासका उपदेश, युधिष्ठिरका नगरमें आना, चर्वाककी धर्मनिन्दा, चर्वाकवधोपाय कथन, युधिष्ठिरका राज्याभिषेक, भीम-की यौवराज्य-प्राप्ति, श्राद्धकार्यका वर्णन कृष्णके प्रति युधिष्ठिरका स्तव, गृह विभाग, युधिष्ठिरके प्रश्न, युधिष्ठिर द्वारा रचित महापुरुषोंका स्तव, परशुरामका उपाख्यान, कृष्ण, युधिष्ठर आदिका भीष्मके पास जाना, युधिष्ठिर आदिका विदा होना, सूत्राध्याय, वर्णाश्रम धर्मकीर्त्तन, ऐलकश्यपका कथोपकथन, मुचुकुन्द-उपाख्यान, कैकयी-का उपाख्यान, वासुदेव नारदका कथोपकथन, कालक-वृक्षीय-उपाख्यान, युधिष्ठिरके प्रति भीष्मका मन्त्रणा-स्थान-कीर्त्तन, दुर्गपरीक्षा, राष्ट्रगुप्ति-कीर्त्तन, उत्तथ्य गीता-कीर्त्तन, वामदेवगीता, इन्द्राम्बरीष-संवाद, शत्रु-समाक्रान्त व्यक्तिका कर्त्तव्य-कथन, सेनापति कैसा होना चाहिये उसके विषयमें वक्तव्य, इन्द्रबृहस्पतिका संवाद, सत्यानृत्यकीर्त्तन, व्याघ्र-गोमायुका संवाद, उष्ट्रग्रीवो-पाख्यान, सरितसागरका संवाद, ऋषि और कुत्तेका संवाद, दन्तकीर्त्तन, दन्तोत्पत्ति कथन, प्रह्लादविप्रका वृत्तान्त, ऋषभगीता कथन।

आपद्धर्म पर्वाध्याय—राजर्षि वृत्तान्तकीर्त्तन, कायव्य और दस्युका संवाद, शाकुलोपाख्यान, विड़ाल और चूहेका संवाद, ब्रह्मदत्त पूजनीका संवाद, कणिकका उपदेश, विश्वामित्र-निषादका संवाद, कपोतलुब्धक-संवाद, भार्याप्रशंसा कीर्त्तन, इन्द्रोत-परीक्षितका कथोपकथन, गृध्रगोमायुका कथोपकथन, पवनशाल्मली-का संवाद, आत्मज्ञान-कथन, दमका गुणवर्णन, तप-कथन, सत्यकथन, लोभोपाख्यान, नृशंस-प्रायश्चित्तका विवरण, खड्ग उत्पत्तिका विवरण, षड्जगीता और कृतघ्नोपाख्यान।

मोक्षधर्म पर्वाध्याय—पिङ्गलागीता, पितापुत्रका संवाद, संपाकगीता, मङ्किगीता, बोध्यगीता, प्रह्लाद और अजगर-का संवाद, शृगाल काश्यपका संवाद, भृगु-भरद्वाज-संवाद,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचारविधि, जापकोपाख्यान, मनुबृहस्पतिका संवाद, सर्वभूतोत्पत्ति, गुरुशिष्य संवाद, कृष्णका माहात्म्य-कीर्त्तन, पञ्चशिखजनक संवाद, इन्द्र और प्रह्लादका संवाद, वालिवासवका संवाद, इन्द्र और नमुचीका संवाद, वलिदान संवाद, लक्ष्मीवासवका संवाद, देवल जैगीषव्य संवाद, वासुदेव उग्रसेनका कथोपकथन, शुकानुके प्रश्न, मृत्यु और ब्रह्माका संवाद, धर्मके लक्षण, तुलाधार जाजलीसंवाद, चिरकालिक उपाख्यान, द्युमत्सेन सत्यवत्-संवाद, स्युमरश्मि और कपिलका संवाद, कुण्डधार उपाख्यान, यज्ञनिन्दा, प्रश्नचतुष्टय कीर्त्तन, योगाचार वर्णन, नारद और देवल ऋषिका संवाद, माण्डव्य और जनकका संवाद, पितापुत्रका संवाद, हारीतगीता, वृत्रगीता, वृत्रवध, ज्वरोत्पत्ति, दक्षयज्ञका विनाश, दक्ष द्वारा महादेवके सहस्र नामका कीर्त्तन, पंचभूतकीर्त्तन, समङ्ग-नारदका संवाद, सगरारिष्ट नेमीका संवाद, भवभार्गवका संवाद, पराशरगीता, हंसगीता, योगविधि वर्णन, सांख्ययोग-कथन, वशिष्ठ-करालजनक संवाद, याज्ञवल्क्यजनक-संवाद, जनकपंचशिख-संवाद, सुलभाजनक-संवाद, वेदव्यास शुकका संवाद, धर्ममूलवर्णन, शुकोत्पत्ति, शुकजनक-संवाद, शुकनारदका संवाद, शुकका अभिपतन, नारायण-माहात्म्य-वर्णन, व्यासोत्पत्तिका वर्णन, उञ्छवृत्त्युपाख्यान।

इस पर्वमें ये विषय विशदरूपसे वर्णित हैं। इसमें ३३६ अध्याय और १४७०७ श्लोक हैं।

१३ अनुशासन पर्व।

कुरुराज युधिष्ठिर भीष्मके मुखसे धर्मका निर्णय सुन कर शान्त हुए। इस पर्वमें धर्म और अर्थसम्बन्धी समस्त व्यवहार, विविध दानका पृथक् पृथक् फल, पात्रविशेषसे दानकी उत्कर्ष विधि, आचार व्यवहार-निरूपण, सत्यकी पराकाष्ठा, गोब्राह्मणका माहात्म्य, देशकालके भेदसे धर्मरहस्य और भीष्मकी स्वर्गप्राप्ति लिखी हुई है। इस १३वें पर्वमें १४६ अध्याय और ८००० श्लोक हैं।

१४ आश्वमेधिक पर्व।

सम्वर्त्त और मरुत्तका उत्तम उपाख्यान, सुवर्णकीष-सम्प्राप्ति, पहले अस्त्राग्नि द्वारा दग्ध और पीछे कृष्ण द्वारा पुनःसञ्जीवित परीक्षितका जन्म, यज्ञमें अश्वमोचन करके उसके साथ जानेवाले अर्जुनके साथ कई जगह अमर्षण राजाओंका युद्ध, चित्रवाहन राजाकी कन्या चित्राङ्गदाके गर्भसे उत्पन्न अपने पुत्र बभ्रुवाहन द्वारा अर्जुनका जीवनसंशय, अश्वमेध महायज्ञके समय नकुलाख्यान। यही सब विषय महाभारत आश्वमेधिक पर्वमें लिखे हैं। इस पर्वमें १०३ अध्याय और ३३२० श्लोकसंख्या है।

१५ आश्रमवासिक पर्व।

इस पर्वमें गान्धारीके साथ राजा धृतराष्ट्र और विदुर राज्यका परित्याग कर आश्रमधर्मका पालन करनेके लिये जंगल चल दिये। यह देख कर गुरु सुश्रुषापरायणा साध्वी कुन्ती भी पुत्रका राज्य छोड़ कर धृतराष्ट्रकी अनुगामिनी हुईं। जंगलमें राजा धृतराष्ट्रने युद्धमें मारे गये और परलोकवासी पुत्र, पौत्र और अन्यान्य वीर राजाओंको फिरसे आये हुए देखा। धृतराष्ट्र कृष्ण-द्वैपायनकी कृपासे इस उत्तम और आश्चर्य घटनाको देख कर गान्धारीके साथ परम सिद्धिको प्राप्त हुए, उनका कुल शोक जाता रहा। जितेन्द्रिय सञ्जय और विदुरने धर्मको आश्रय करके सद्गति पाई। धर्मराज युधिष्ठिरने नारदके मुखसे वृष्णिगणके कुलक्षयका हाल सुना। यही सब विषय आश्रमवासाख्य पर्वमें वर्णन किया गया है। इस पर्वमें ४२ अध्याय और १५०६ श्लोक हैं।

१६ मौषलपर्व।

जो रणस्थलमें अस्त्राघातको आसानीसे सहन करते थे, वे यादव वीर ब्रह्मशापरूप दण्डसे दण्डित हो कर समुद्रके किनारे नशेकी हालतमें परका तृणरूपी शराघातसे मारे गये। इसी प्रकार रामकृष्ण भी समस्त यदुवंशका उच्छेद कर अपने सर्वसंहारकारी उपस्थित कालसे बचने न पाये थे। पीछे नरश्रेष्ठ अर्जुन यादवशून्य द्वारकाको देख कर बड़े दुःखित हुए। उन्होंने अपने मामा नरश्रेष्ठ वासुदेवका सत्कार कर सुरापानसभामें यदुवंशीय वीरोंको मरा पाया। अर्जुन, राम और कृष्ण आदि प्रधान प्रधान यदुवंशियोंका अग्नि-संस्कार आदि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके द्वारकासे आबाल वृद्धवनिताके साथ आ रहे थे कि राहमें घोर विपदने उन्हें एकाएक घेर लिया। इस समय उनके गाण्डीव धनुष और दिव्यास्त्रने कोई काम नहीं दिया, वे मानों बिलकुल अप्रसन्न हो रहे थे। पीछे यादव रमणियोंके अपहरण और पराक्रमकी अनित्यता देख कर वे बड़े मर्माहत हुए और युधिष्ठिरके समीप लौट कर व्यासके वाक्यानुसार संन्याससे आश्रम ग्रहण करनेकी इच्छा प्रकट की। इस मौषल पर्वमें इन्हीं सब विषयोंका वर्णन है। इसमें ८ अध्याय और ३२० श्लोक हैं।

१७ महाप्रास्थानिक पर्व।

पुरुषश्रेष्ठ पाण्डवोंने राज्यका परित्याग कर द्रौपदीके साथ महाप्रस्थानका अवलम्बन किया। पीछे लोहित सागरके किनारे उन्हें अग्निके दर्शन हुए। उसी जगह अग्निके आदेशानुसार अर्जुनने उस महाप्रभावशाली अग्निकी पूजा करके अपना गाण्डीव धनुष उन्हें प्रदान किया। अनन्तर युधिष्ठिर, पहले द्रौपदी और पीछे एक एक कर सभी भाइयोंको निपतित देख मायाममताका परित्याग करते हुए अकेले चलने लगे। इस पर्वमें यही सब विषय वर्णित हैं। इसमें ३ अध्याय और ३२३ श्लोकसंख्या हैं।

१८ स्वर्गारोहण पर्व।

महाप्राज्ञ धर्मराजको लानेके लिये जब स्वर्गसे देवयान पहुंचा तब वे अपने एकमात्र साथी कुत्तेको छोड़ कर देवयान पर चढ़नेको राजी न हुए। महात्मा युधिष्ठिरकी ऐसी अविचलित धर्मनिष्ठाको देख कर धर्मने कुत्तेका रूप परित्याग कर उन्हें साक्षात् दर्शन दिये। युधिष्ठिर धर्मके साथ स्वर्ग गये। वहां देवदूतने जब छल करके उन्हें नरकका दर्शन कराया तब उन्हें भारी दुःख हुआ। धर्मात्मा युधिष्ठिरने उस नरकमें यमके वशवर्त्ती अपने भाइयोंकी करुण ध्वनिको सुना। इन्द्र और धर्मने 'ऐश्वर्य भोगका यह फल है' कह कर उन्हें आश्वासन दिया। अनन्तर युधिष्ठिरने आकाशगङ्गामें स्नान कर मानवदेवका परित्याग किया। पीछे देवलोकमें स्वधर्मोपार्जित स्थान पा कर देवराज और अन्यान्य देवोंसे पूजित हो सुखपूर्वक रहने लगे। इस पर्वमें इन्हीं सब विषयोंका वर्णन है। इसमें ५ अध्याय और २०६ श्लोक हैं।

१८ पर्वोंका हाल संक्षेपमें कहा गया। इसका खिल हरिवंश और भविष्य पर्व कहलाता है। महर्षि व्यासने उसमें बारह हजार श्लोकोंकी रचना की है। अठारह अक्षौहिणीने मिल कर अठारह दिन तक युद्ध किया था। यही युद्ध महाभारतयुद्ध कहलाता है।

महाभारतकी अनुक्रमणिकामें जो प्रति पर्वमें श्लोकसंख्या दी गई है, उसके साथ मुद्रित महाभारतकी श्लोकसंख्याका मेल नहीं खाता। यहां तक कि एशियाटिक सोसाइटी और बम्बईसे जो महाभारत प्रकाशित हुआ है उसमें भी श्लोकसंख्यामें विभेद देखा जाता है। नीचे एक तालिका दी गई है उसीसे मालूम हो जायेगा, कि कितना प्रभेद है।

पर्व	पर्वसंग्रहमें श्लोकसंख्या	सोसाइटीकी श्लोक संख्या	बम्बई मुद्रितका श्लोक
१। आदि	८८८४	८४७६	८६२३
२। सभा	२५११	२७०६	२७१२
३। वन	११८६४	१७४७६	१६६५६
४। विराट	२०५०	२३७६	२२३२
५। उद्योग	६६६८	७६५६॥	६६१४
६। भीष्म	५८८४	५८५६	५८६६
७। द्रोण	८६००	६६४६	६६४४
८। कर्ण	४६६४	५०४६	५०१५
६। शल्य	३२२०	३७६१	३६३८
१०। सौतिक	८७०	८११	८०३
११। स्त्री	७७०	८२७॥	८२५
१२। शान्ति	१४७०७	१३६४३	१३७७४
१३। अनुशासन	८०००	७७६६	७७०१
१४। आश्वमेधिक	३३२०	२६००	१०८८
१५। आश्रमवास	१५०६	११०५	१०८८
१६। मौषल	३२०	२६२	२८७
१७। महापास्थानिक	३२०	१०६	११०
१८। स्वर्गारोहण	२०६	३१२	३२०
१६ खिलहरिवंश	१२०००	१६३७४	१६३५४

महाभारतकी अनुक्रमणिकामें अश्वमेध पर्वकी जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्लोकसंख्या दी गई है प्रचलित अश्वमेध पर्वमें उससे बहुत कम हैं। इससे बहुतोंकी धारणा थी, कि अश्वमेध पर्वका अन्तिम २३वां अध्याय लुप्त हो गया है। कुछ दिन हुए, बम्बईसे पण्डित वामनशास्त्री इसलामपुरकरने जो पराशरसंहिता प्रकाश की है, उसके मुखबंधमें शास्त्री महाशयने लिखा है, कि मलयालम् अक्षरमें लिखित एक अतिप्राचीन महाभारत ग्रन्थमें २३ अध्याय हैं। इसके अतिरिक्त वृद्ध गौतमस्मृति नामक अभिहित धर्मशास्त्रमें भी इन्होंने उतने ही अध्याय देखे हैं।

महाभारत पढ़नेकी विधि।

महाभारतमें लिखा है, कि जो ब्राह्मण चतुर्वेद, वेदाङ्ग और उपनिषत् आदिमें पारदर्शी हैं फिर भी यह महाभारतीय आख्यान नहीं जानते, उन्हें विद्वान् कभी भी नहीं कहा जा सकता। असाधारण प्रज्ञासम्पन्न व्यासदेवने इस महाभारतको अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और अति विस्तृत धर्मशास्त्र बतलाया है। जिस प्रकार नर कोकिलका शब्द सुन कर कर्कश काकका शब्द सुननेकी इच्छा नहीं होती, उसी प्रकार यह उपाख्यान सुननेसे दूसरा कोई भी उपाख्यान सुननेका जी नहीं चाहता। एक महाभारतसे ही सभी प्रकारका कवित्व लाभ होता है। जिस प्रकार जरायुज, स्वेदज, अण्डज और उद्भिज्ज ये चारों प्रकारकी प्रजा अन्तोरक्षमें हो वास करती है, उसी प्रकार सभी पुराण इस आख्यानके अन्तर्गत हैं। जिस प्रकार मनकी क्रियायें इन्द्रियकी आश्रयस्वरूप हैं, उसी प्रकार यह उपाख्यान दानअध्ययन आदि क्रिया तथा शमदम आदि गुणके आश्रय-स्वरूप हैं। जिस प्रकार बिना भोजनके शरीरधारण करना कठिन है उसी प्रकार इस आख्यानके आश्रयके बिना कोई भी आख्यान नजर नहीं आता। जो अवहितचित्तसे महाभारत सुनते हैं उन्हें सभी तीर्थोंका फललाभ होता है। ब्राह्मण दिनमें जो सब पाप करते हैं, शामको महाभारतका नाम कीर्त्तन करनेसे वे सब पाप नष्ट हो जाते हैं। फिर रातको कायमनोवाक्य द्वारा जो पाप किया जाता है, वह पाप सबेरे महाभारतका नाम कीर्त्तन करनेसे शरीरमें रहने नहीं पाता। एक वह व्यक्ति जो बहुश्रुत और वेदविद् ब्राह्मणको सुवर्णशृङ्गयुक्त एक सौ गौ दान करता है और दूसरा इस पवित्र भारत कथाको प्रति दिन सुनता है उन दोनोंको समान फल प्राप्त होता है। (भारत आदिपर्व २ अ०)

महाभारत किस विधिसे पढ़ना और सुनाना चाहिये उसका विषय इस प्रकार लिखा है। एक दिन जनमेजयने वैशम्पायनसे पूछा था, 'भगवन्! किस नियमसे महाभारत सुनना चाहिये तथा सुननेसे कौन सा फल प्राप्त होता है, पारणके समय किस किस देवताकी पूजा करनी चाहिये, प्रत्येक पर्वकी समाप्तिमें कौन कौन द्रव्य दान करना उचित है तथा कैसे व्यक्तिको वक्ता बनाना चाहिये, ये सब विषय कृपापूर्वक मुझे बतला दीजिये।'

उत्तरमें वैशम्पायनने कहा था, "स्वर्गीय देवगण क्रीड़ा करनेके लिये पृथ्वी पर उतरे थे, पीछे अपना अपना कार्य शेष करके स्वस्थानको चले गये। रुद्रगण, साध्यगण, विश्वदेवगण, आदित्यगण तथा अन्यान्य स्थावरजङ्गम और सुरासुर समस्त जगत् इस महाभारतमें एक आधार पर लक्षित हुए हैं। उनकी प्रतिष्ठाका श्रवण तथा नामकीर्त्तन करनेसे उसी समय महापातक दूर हो जाते हैं। आत्मसंयमपूर्वक जो इस महाभारतका इतिहास सुनते हैं उन्हें फिरसे मृत्युलोकमें जन्म नहीं लेना पड़ता। महाभारत सुन कर भीष्मादि महापुरुषोंके उद्देशसे श्रद्धापूर्वक दान करनेसे परमपुण्य लाभ होता है।

साध्यानुसार सरलचित्तसे शुश्रूषापरायण, सत्यरत, दान्त, शुचि आदि गुणसे युक्त हो महाभारत सुनना चाहिये। श्रवणकालमें बाहरी किसी ओर मनको नहीं दौड़ाना चाहिये। शुचि, सुशील, शुक्लवस्त्रपरिधायी, संस्कार सम्पन्न, सब शास्त्रोंमें ज्ञानवान्, श्रद्धाशील असूयाहीन, जितेन्द्रय, रूपवान्, सौभाग्यवान्, समगुणविशिष्ट, सत्यवादी, दाता और मान्य व्यक्तिको महाभारतका पाठक वा वक्ता बनाना चाहिये।"

भारत पढ़नेका नियम।—पाठकको चाहिये कि वे कुशके आसन पर बैठ सुस्थचित्त और समाहित हो रस और भावका समन्वय विधान तथा पदोंका सुस्पष्ट विन्यास करते हुए पाठ करें। पाठके समय बिलम्ब, आयास, सत्वरता अधैर्य, अनुत्साह आदि पाठ-दोषोंका परिहार करना आवश्यक है। पाठके समय पहले नारायण, नर, नरोत्तम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और देवी सरस्वतीको प्रणाम कर पीछे जयका उच्चारण करे। जो ऊपर लिखे गये नियमानुसार महाभारतका पाठ करते हैं उनके निकट नियमस्थ और शुचि हो महाभारत सुननेसे अशेष पुण्य प्राप्त होता है।

महाभारत पढ़नेके समय कर्त्तव्य।—महाभारत पढ़नेके समय प्रति पर्वमें जाति, देश, सत्त्व, माहात्म्य और धर्म प्रवृत्तिके अनुसार ब्राह्मणोंको जो दान करना होता है उसका विधान इस प्रकार कहा गया है। पहले ब्राह्मणको स्वस्तिवाचन करा कर कार्य आरम्भ करे। पर्व समाप्त होने पर अपने साध्यानुसार उनकी पूजा करना उचित है। आदि पर्व समाप्त होने पर पाठकको यथाविधि वस्त्र और गन्धयुक्त मधु पायस भोजन करावे। आस्तीक पर्व शेष होने पर फल, मूल, घृत और मधुमिश्रित पायस भोजन तथा गुड़ोदक-दान, सभापर्व शेष होने पर अपूप और मोदकके साथ हविष्यान्न भोजन, वन पर्वके शेषमें तरह तरहके जंगली फलमूलादिका दान, विराटपर्वके शेषमें विविध वस्तु, उद्योग पर्वमें सब प्रकारके अभीष्ट और गन्धमाल्यादि, भीष्म पर्वमें उत्कृष्ट दान और अन्नदान, द्रोण पर्वमें अच्छी तरह भोजन करा कर शर, धनुष और खड्गदान, कर्ण-पर्वमें अच्छा तरह ब्राह्मण भोजन, शल्यपर्वमें मोदक, गुड़ोदन और अपूपयुक्त आहार; गदापर्वमें मूंग मिला हुआ अन्न, स्त्री पर्वमें रत्न, ऐषिकपर्वमें घृतोदन, हविष्यान्न भोजन, आश्वमेधिक पर्वमें इच्छानुसार भोजन, आश्रमवासमें हविष्यान्न भोजन, शान्ति पर्वमें मौषल, महाप्रस्थानिक पर्वमें गन्धमाला और अनुलेपनदान तथा स्वर्ग पर्वमें हविष्य भोजन कराना चाहिये। पीछे हरिवंशपाठ शेष होने पर हजार ब्राह्मणोंको खिलाना उचित है।

श्रेयस्काम पुरुषको श्रद्धा और यत्नपूर्वक महाभारत सुनना चाहिये। जिसके घरमें महाभारत है वह व्यक्ति मानो नित्य जयशील है। महाभारत सभी शास्त्रोंमें प्रधान तथा मोक्ष और तत्त्व प्राप्तिका निदान है। पृथ्वी, गौ, सरस्वती, ब्राह्मण, विष्णु और भारतसंहिता इनका नाम लेनेसे अवसाद उपस्थित नहीं होता। वेद, रामायण और महाभारतके आदि और अन्तमें अर्थात् सभी जगह नारायणका वर्णन है।

(हरिवंश पर्वसंग्रह-अध्याय)

यूरोपीय मत।

महाभारतके सबंधमें यूरोपीय संस्कृत विद्वानोंने यथेष्ट आलोचना की है। किन्तु उनका मत इस देशके पण्डितोंके मतसे नहीं मिलता, उनका मत सचमुच आश्चर्यजनक है। उनके अभिप्रायका सार मर्म नीचे लिखा जाता है।

प्रसिद्ध जर्मन पण्डित वेवर (Weber) साहबके मतसे—'महाभारतको प्राचीन ग्रन्थ नहीं कह सकते। १ली शताब्दीमें लिखित क्रिसोसटोम ग्रन्थको छोड़ कर उसके पूर्ववर्त्ती किसी ग्रन्थमें महाभारतका स्पष्ट प्रसङ्ग नहीं मिलता। यहां तक कि पाणिनिके समयमें भी महाभारत नहीं रचा गया था। क्योंकि, पाणिनिके युधिष्ठिर, हस्तिनापुर, वासुदेव आदिका उल्लेख करने पर भी उन्होंने 'महाभारत' 'पाण्डु' अथवा 'पाण्डव' शब्दका उल्लेख तक भी नहीं किया है। आश्वलायन और शाङ्खायन गृह्यसूत्रमें भारत और महाभारतका उल्लेख रहने पर भी वह अंश प्रक्षिप्त ही समझा जायेगा। वाजसनेयसंहितामें इन्द्रको ही 'अर्जुन' कहा गया है। यजुर्वेदकी आलोचना करनेसे मालूम होगा, कि कुरु और पाञ्चालमें किसी प्रकारका विरोध नहीं था। दोनों में गाढ़ी मित्रता थी। शतपथ-ब्राह्मण देखनेसे ही जाना जाता है, कि परिक्षितके लड़के जनमेजयका चरित उस समय भी जनसाधारणके स्मृति पथ पर समुज्ज्वल था। उनके अभ्युदय और अधःपतनको उस समय भी जनसाधारण भूले नहीं थे। समस्त महाभारत तीन अंशोंमें विभक्त किया जा सकता है,—१ले मूल अंशमें महाभारतका वर्णन, २रे अंशमें प्राचीन आख्यान और उपाख्यान संग्रह तथा ३रे आधुनिक अंशमें क्षत्रियका कर्त्तव्य, विशेषतः ब्राह्मणोंका श्रेष्ठता-प्रसङ्ग है। इसी अंशमें शक, यवन, पह्लवादिका उल्लेख देखा जाता है। महासमरका वर्णन ही महाभारतका मूल उद्देश्य है, किन्तु इस सम्बन्धमें २०००० हजारसे अधिक श्लोक नहीं हैं। यह अंश रामायणके मूल अंशके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समयकी रचना है। किन्तु रामायणका रूपकांश इससे भी बहुत पीछे रचा गया है। वेदमें ब्राह्मण और उपनिषदमें जिस इतिहासका उल्लेख है, उसी वपुल आख्यायिकाका सारसंग्रह ही महाभारतका दूसरा अंश है। तीसरे अंशमें पह्लव आदि आधुनिक नामका उल्लेख देख कर वेवरसाहवने नोल्डको साहवका मतानुसरण कर लिखा है, कि पार्थिव शब्दसे १ली सदीमें 'पह्लव' शब्दकी उत्पत्ति हुई। २रीसे ४थी सदीके मध्य भारतवासीने इस शब्दको काममें लाया होगा। कहनेका तात्पर्य यह कि जब मेगेस्थिनिजने महाभारतका कोई प्रसङ्ग उल्लेख नहीं किया तथा १ली शताब्दीमें डूयनक्रिससष्टमने उल्लेख किया है, तब यह स्पष्ट है, कि ईसाजन्मसे पहले ३रीसे १ली शताब्दीके मध्य मूल महाभारत रचा गया होगा। किन्तु इसका तीसरा अंश उससे भी बहुत पीछे (ब्राह्मण्य धर्मके अभ्युदयके समय) अर्थात् ३री और ४थी शताब्दीके मध्य रचा गया है, इसमें सन्देह नहीं।

स्रोडर (Schroeder)-ने महाभारतकी जो आलोचना की है वह इस प्रकार है—

जिस समय ब्रह्मा सर्वप्रधान देवता समझे जाते थे, उस समय (ईसाजन्मसे पहले ७००—५०० वा ४०० ई०-में) (महाभारतके) आदि कविने जन्मग्रहण किया। वह गायक कुरुभूमिके रहनेवाले थे। उन्होंने लोगोंके मुखसे कुरुवंशके पराभव और अज्ञातपूर्व एक जातिके हाथसे उनकी पराजय कहानी सुनी थी। उसी वियोगान्त घटनाके आधार पर उन्होंने देशीय वीरोंको क्षात्रधर्मका आदर्श तथा यादव वीर कृष्णके साथ पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य आदि विजातियोंको नीच कुलोद्भव और अन्यायरूपसे जयकारी बतला कर चित्रित किया था। वही प्राचीन भारत-गान आश्वलायन गृह्यसूत्रमें गाया गया है। उसके बहुत समय बाद जब कृष्णने अवतार लिया, तब पाण्डुवंशियोंकी सहायतासे कृष्णभक्त पुरोहितोंने बुद्धके विरुद्ध कृष्ण वा विष्णुको खड़ा किया। उन लोगोंकी चेष्टा सफल हुई। ४थी शताब्दीमें विष्णु ही प्रधान देव हुए। उनके अनुरक्त पुरोहितोंने भारत काव्य ले कर उसे विलकुल बदल डाला। उनके प्रधान सहाय पाण्डुवंशधर थे। अतएव आदि भारतमें जहां जहां उनको अपकीर्त्तिका वर्णन था वहां वहां उनकी तारीफ तथा उनके विपक्ष कुरुओंकी निंदा की गई। पाण्डुवंश यथार्थमें दाक्षिणात्य वंशोद्भव होने पर भी इस समय कुरुवंशकी एक शाखा माने गये।

१८८९ ई०में अमेरिकाकी प्राच्य-सभाकी पत्रिकामें अध्यापक हापकिन्स (E, W, Hopkins)ने 'Position of Ruling Caste in Ancient India' नामसे एक लम्ब चौड़ा प्रबन्ध प्रकाशित किया। उस प्रबन्धमें उन्होंने अध्यापक लासेन और स्रोडरके मत विरुद्ध बहुत सी आलोचना की है। उनका कहना है, कि स्रोडरने दिखलाया है, कि यजुर्वेदसे भी पहले भारतकाव्य रचा गया। क्योंकि यजुर्वेदमें ही कुरुपाञ्चालकी नातेदारीका हाल लिखा है और उसी नातेदारीसे दोनोंमें महासमर भी छिड़ा। अध्यापक लासेनने भी बहुत पहले प्रकाशित किया था, कि कुरुपाञ्चालका युद्धकीर्त्तन करना ही आदि भारतकाव्यका उद्देश्य था। किन्तु उक्त दोनों महाशयका मत अभी माननीय नहीं है। स्रोडरका विपर्यय सिद्धान्त भी प्रतिपन्न नहीं होता। एक बार शुभ्रवर्णमें चित्रित हो कर दूसरी बार परवर्त्ती कवियोंके हाथसे कृष्णवर्णमें चित्रित हुआ है, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। परवर्त्ती कवियोंकी यदि पाण्डुवंशकी बड़ाई करनेकी इच्छा रहती, तो वे पाण्डुवंशके सभी दोष उड़ा सकते थे। किन्तु ऐसा नहीं है, कविने दोनों पक्षको दोषी ठहराया है। यथार्थमें आदि भारतका विपर्यय साधन करके वर्त्तमान भारतकी सृष्टि स्वीकार किये विना आदि भारतके परिवर्त्तनसे वर्त्तमान भारतकी परिपुष्टि स्वीकार की जा सकती है। आदि समाज-चित्र और परवर्त्ती समाज चित्रकी आलोचना करनेसे ही बहुत कुछ मालूम हो जायेगा। धर्मकी निम्न गतिके साथ नीतिज्ञानको ऊंची गति होती है। परवर्त्ती धर्मज्ञान पूर्वतनकी अपेक्षा बहुत सरल और विशुद्ध मालूम होगा। किंतु परवर्त्ती नीति पूर्वतनसे बहुत कुछ उच्च भावापन्न और कठोर नियमवद्ध है। आदि भारतकी गल्प सभीको मालूम है। यह गल्प प्राचीन नीतिजड़ित तथा परिवर्द्धित नीति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानसे विभिन्न है। अतः प्राचीन आख्यायिकाको उड़ा देना जैसा सहज नहीं है, पूर्वतन धर्मचित्रको अलग करना भी वैसा ही असम्भव है। इसीलिये परवर्त्ती कविने पहलेकी बातोंको न उड़ा कर उसमें अपनी समयोपयोगी परिवर्द्धित नीतिको शामिल कर दिया है। इससे महाभारतका आकार पहलेसे कुछ बढ़ गया। किंतु प्राचीन लोगोंके निकट जो सरल और धर्म्म समझा जाता था, नीतिज्ञानसम्पन्न आधुनिककी निगाहमें वह यशस्कर नहीं भी समझा जा सकता है। जैसे आदि गल्पमें लिखा है, कि अर्जुनने निराश्रय अवस्थामें कर्णको मारा था। हो भी सकता है, पूर्वनीतिने इसे दोष न समझा हो, पर वर्त्तमान नीति इसे कभी भी माननेको तैयार नहीं। "समान समानमें अर्थात् जोड़में न्याय युद्ध करो" यही हुआ परवर्त्ती कवियोंका वचन। किन्तु अर्जुन जैसे धर्मात्मा व्यक्ति निराश्रयका प्राणवध कर अन्यायकार्य कर सकें, इसे परवर्त्ती नैतिक उचित नहीं समझते। इसीलिये उन्होंने प्रकाशित किया, कि जब यह स्वयं भगवान्का आदेश था तब फिर न्याय और अन्यायकी क्या बात रही? परवर्त्ती कविकी इच्छा थी, पाण्डुवंशकी कीर्त्तिघोषणा और सन्नीतिका प्रवर्त्तन। कहीं कहीं पर कविने नीतिके निकट कीर्त्तिकी बलि दे दी है अर्थात् नीतिके निकट कीर्त्तिको तुच्छ समझ रखा है। यहां तक कि, कुरुगण पाण्डवोंको लगती बातोंमें गाली दे कर कहते है, 'जब दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, तब उसमें तीसरेको पड़नेकी क्या जरूरत, और इस प्रकार मित्रका पक्ष ले कर शत्रुका निधन करना क्या धर्म है?" अर्जुन हंसते हुए उत्तर देते हैं, 'क्या आश्चर्य! तुम लोग मुझे व्यर्थका दोषी ठहराते हो! जब देखा, मेरा बांधव शत्रुके हाथसे सताया जा रहा है, तब शत्रुको आघात करना क्या कर्त्तव्य नहीं? यदि प्रत्येक स्वयं युद्ध करे, तो फिर विवाद ही किस लिये? युद्धनीति ऐसा नहीं कहती।' सचमुच ऐसा मालूम पड़ता है, कि कुरुओंका अभिप्राय कौन अच्छा और कौन बुरा है इसे पृथक् करनेके लिये गठित नहीं हुआ है। किन्तु पाण्डुवंशमें नीतिकी परिपुष्टि इसे बतलाये देती है। अध्यापक हापकिनिसने अन्तमें यह स्थिर किया कि महासमरकी कहानीमें यदि कुछ भी सत्य रहे, तो यह स्वीकार करना होगा कि बहुत दिनोंके प्रतिष्ठित अभिजात कुरुवंशमें उच्चतर सभ्यताका लक्षण परिस्फुट था, किन्तु नवोदित इतर पाण्डुवंशमें वह प्राचीनता बिलकुल न थी। इसके बहुत दिन बाद यह फिरसे सभ्यसमाजमें आधिपत्य फैला कर प्रतिष्ठित हुआ था। कहानी और चरित्रसमूहका सम्यक् परिवर्त्तन करना परवर्त्ती कवियोंकी बिलकुल इच्छा न थी। सन्नीतिका प्रचार करनेके लिये ही परवर्त्ती कवियोंने विवर्त्तन और परिवर्द्धन किया है। कोई कोई कहते हैं, कि कुरु-पाञ्चाल-युद्ध ही मूल बात है, पीछेसे पाण्डुप्रसङ्ग जोड़ दिया गया है। किन्तु इसकी भी कोई भित्ति नहीं है। पाण्डुपाञ्चालका परस्पर सम्बन्ध महासमरका कारण है, यह भले ही कहा सकता है। फिर किसीने भारतके धृतराष्ट्रको वैदिक धृतराष्ट्रके साथ मिलानेका प्रयास किया है, किन्तु यह भी समीचीन नहीं है कारण, यजुर्ब्राह्मणके धृतराष्ट्र प्रकृत थे, पाण्डुवंश उस समय बिलकुल अज्ञात था। भारतकाव्यके पाण्डुवंश प्रकृत हैं, कुरुराजकी छायामात्र चित्रित है। सच पूछिये तो, उस समयके कुरुराज दुर्योधन थे। अभी कुरुवंशका प्रभाव जाता रहा, नाममात्रको रह गया है। पाण्डुवंशके पुरोहितोंने पाण्डुवंशकी विजयघोषणाके समय उनका गौरव बढ़ानेके लिये ही कुरुवंशको वेदका प्रभावशाली कुरु बतलाया था और इसी कारण इन्होंने वेदके धृतराष्ट्रको राजा कुरुकी जगह बैठाया हैं। यथार्थमें वेदोक्त धृतराष्ट्रके बहुत पीछे पांडुवंशका अभ्युदय हुआ। इसी प्रकार वे ब्राह्मणोक्त जनमेजयको वर्त्तमान भारत नायकका पुत्र बतलानेसे बाज नहीं आये हैं। वे जानते थे, कि जो जितने पुराने हैं उनका उतना ही आदर होता है और जिनका जितना आदर होता है वे उतने ही उत्तरोत्तर गौरवप्रकाशक हैं। इस महाकाव्यकी परीक्षा कर देखनेसे मालूम होगा, कि दो कारणोंसे इस महाकाव्यका आकार बड़ा हो गया है। पहला कारण है, महाकाव्यके बीच बीचमें उपाख्यानादि पूर्वतन विषयोंका समावेश और दूसरा अस्वाभाविक रूप अभिनव घटनाका संयोजन। शान्तिपर्वमें पहले कारणके परिपोषक अनेक विषय हैं, फिर स्वर्गा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitised by eGangotri

रोहनपक्षमें शेषोक्त प्रसङ्गकी भरमार है। इस प्रसङ्गमें अध्यापकने और भी कहा है, कि इस महाकाव्यसे भारतके दो सामाजिक चित्र देखे जाते हैं, पहला ढाई हजार वर्ष पहलेकी अर्द्ध पुष्ट अवस्था और दूसरा उसके हजार वर्ष बादकी अवस्था।*

अध्यापक डाः बुहर (Dr. Buhler)ने महाभारतका इतिहास आलोचना करते करते एक प्रबन्धमें लिखा है, ३रीसे ५वीं शताब्दी तक वर्त्तमान स्मृतिग्रन्थोंकी तरह महाभारत भी एक उत्कृष्ट दृष्टान्तपूर्ण स्मृतिग्रन्थ समझा जाता था। १८८४ ई०में अध्यापक लाडविगने गूढ़ आलोचना करके लिखा है, कि महाभारतको जो इतिहास समझते हैं, वे भूल करते हैं, इसमें सन्देह नहीं। महाभारतमें ऐतिहासिकताका यथेष्ट अभाव है। अध्यापक होल्‌जमान (*Prof Holtzman*) लाडविगके मतका बहुत कुछ समर्थन करते हुए "महारभात—प्राच्य और प्रतीच्य" इस नामसे चार खण्डोंमें विभक्त एक बड़ी पुस्तक लिख गये हैं।

१८९५ ई०में डा० डाह्लमान (Dr, Dahlmann)ने Das Mahabharata als Epos und Rechtsbuch अर्थात् "महाभारतकाव्य और धर्म ग्रन्थ" इस नामसे एक पुस्तक लिखी। उन्होंने आश्वलायनके गृह्यसूत्र, पाणिनिके व्याकरण, पतञ्जलिके महाभाष्य तथा अश्वघोषके बुद्ध चरित तथा बौद्धोंके जातक और जैनोंकी धर्म कथाके उपाख्यानोंकी सदृशता देख कर तथा अन्यान्य बातोंकी आलोचना कर स्थिर किया है, कि वर्त्तमान महाभारतका काव्यांश ईसाजन्मसे ५ सदी पहले अति सामान्य परिवर्त्तित आकारमें वर्त्तमान था। उन्होंने महाभारतकी क्रमपुष्टि आलोचना कर यह दिखलाया है, कि महाभारतके उपाख्यान-अंशका पहले नीतिकथारूपमें प्रचार था। किन्तु अभी उसमें दूसरे दूसरे विषयोंका समावेश हो जानेसे वह ऐसा हो गया है, कि उसमेंसे उपाख्यान अंश बाद दे कर नीति कथाको चुन लेना एक प्रकार असम्भव है। पितृहीन पाण्डवोंने दुष्ट दुर्योधनके हाथसे कष्ट पा कर आखिर महासमरमें स्वार्थसाधन किया। अधर्म द्वारा धर्मका उत्पीड़न और पीछे धर्मको जयघोषणा करना ही नीति-कथाका उद्देश्य है। आगे चल कर इस दृष्टान्तको अलङ्कारसे सजानेके लिये इसमें बहुत-सी बातें जोड़ दी गई हैं। नायक युधिष्ठिर दुर्दशाके मारे कहीं अधीर न हो जावें, इसलिये किसी कविने नलोपाख्यानकी सृष्टि की है। इसी प्रकार किसी कविने गान्धर्वविधानमें विवाहकी वैधता प्रमाणित करनेके लिये शकुन्तलोपाख्यान, आसुर-विवाहके उदाहारणस्वरूप माद्री, लक्षणा, सुभद्रा, अम्बा और अम्बालिकाका हरण प्रकाशित किया। शायद इसी प्रकार नियोग-प्रचार द्वारा सन्तानोत्पादनके दृष्टान्तस्वरूप पराशर द्वारा सत्यवतीके, व्यास द्वारा अम्बालिकाके और देवगण द्वारा कुन्तीमाद्रीके पुत्रलाभका विवरण प्रकाशित हुआ होगा। अलावा इसके वैष्णव और शैव धर्मकी प्रधानताकी घोषणा करनेके लिये दार्शनिक तत्त्व और अनेक प्रकारके उपाख्यानोंकी सृष्टि हुई। डाक्टर डाह्लमनने और भी लिखा है, कि द्रौपदीके स्वतन्त्र सत्ता ही न थी, अविभक्त सम्पत्तिका बिना विसम्वादके किस प्रकार भ्रातृगण भोग कर सकते इसे दिखानेके लिये ही पत्नीरूपमें द्रौपदीका चित्र कल्पित हुआ है। अध्यापक होल्‌जमनने दुर्योधन शब्दकी व्युत्पत्तिमें भ्रम दिखलाते हुए स्थिर किया है, कि कौरवके शत्रुओंने पाण्डवको प्रसन्न करनेके लिये महाभारतके इतिहास-अंशमें बहुत जटिलता दिखलाई है। उनके मतसे पाण्डवभक्त कविने दुर्योधन शब्दका दुष्ट वा कुत्सितयोद्धा अर्थ लगाया है। किन्तु इसका असल अर्थ है जिसे युद्धमें आसानीसे परास्त न किया जा सके। पाण्डवको प्रसन्न रखनेके लिये ही पाण्डव पक्षकी सततता और नाना प्रकारके जटिल विधि निषेधादि प्रतिष्ठित और समर्थित हुए हैं। किन्तु डाः डाह्लमन अध्यापक होल्‌जमनके इस मतको आभ्रान्त बतला कर माननेको तैयार नहीं हैं। उन्होंने भी ऐतिहासिकताके अभावके सम्बन्धमें अध्यापक लाडविगके मतको समर्थन किया है।

१८९५ ई०में अध्यापक लाडविगने महाभारतके सम्बन्धमें एक बहुत लंबा चौड़ा प्रबन्ध लिखा। उस प्रबन्धमें उन्होंने कहा है, कि पञ्चपाण्डव ग्रीष्म, वर्षा, शरत्, हेमन्त और वसन्त इन पांच ऋतुओंकी मूर्त्ति हैं।

*Journal of the American oriental society for 1884.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुर्योधन शीत ऋतु हैं, द्रौपदी पृथिवी है, युद्धादि ऋतु-परिवर्त्तन है, पाशा खेलनेकी जगह (जुआखाना) शीत ऋतुसंचारक नाक्षत्रिक अवस्थान है तथा खेलमें जय ही पृथिवी पर शीतका आविर्भाव है, इत्यादि।

कुछ दिन हुए, अध्यापक जाकोबिने बौद्ध धर्मका उत्पत्ति विषयक जो प्रबन्ध लिखा है उसमें वे प्रसङ्गतः महाभारत-रचनाकालका उल्लेख कर गये हैं। उन्होंने कहा है, कि महाभारतको लोग चाहे कितना ही प्राचीन क्यों न कहे, पर वे इसे खृष्टपूर्व दो वा तीन शताब्दीसे पहलेका कभी भी नहीं कह सकते। इसके समर्थनमें उनका कहना है, कि महाभारतमें शक वा यवनजातिको कहीं भी पंजाबवासी नहीं बतलाया गया है और न उसमें पञ्जाबमें बुद्ध अथवा पारसिक प्रभावका कोई उल्लेख ही है।

भारतकी आलोचना।

पाश्चात्य पण्डितोंने महाभारतके सम्बन्धमें जो आलोचना की है और आज करते भी हैं, उसके साथ हम लोगोंका मत नहीं मिलता। फिर उनकी आलोचना बिलकुल भित्तिहीन और अमूलक है, ऐसा भी नहीं कह सकते। आदि महाभारत भिन्न भिन्न स्थानमें भिन्न भिन्न मनुष्यके हाथ पड़ कर बड़ा हो गया है, इसमें संदेह नहीं। महाभारतमें लिखा है—

"मन्वादि भारतं केचिदास्तिकादि तथापरे।
तथोपरिचराद्यन्ये विप्राः सम्यगधीयते॥
विविधं संहिताज्ञानं दीपयन्ति मनीषिणः।
व्याख्यातुं कुशलाः केचिद् ग्रन्थान् धारयितुं परे॥"
(आदि० १।५२-५३)

कोई ब्राह्मण 'नारायणं नमस्कृत्य' इत्यादि प्रथम मंत्रसे, कोई आस्तिक पर्वसे और कोई उपरिचर राजाके उपाख्यानसे इस महाभारतका आरम्भ हुआ समझ कर पढ़ते हैं। इस प्रकार पण्डित लोग कई तरहसे संहिताका भावार्थ लगाते हैं। कोई तो ग्रन्थव्याख्यानमें पटु हैं, और कोई ग्रन्थका अर्थ लगानेमें ही निपुण हैं।

अतः यह कहना होगा, कि बहुत पहलेसे ही महाभारतका कौन अंश आदि और कौन अंश अन्त था, इसका कोई ठीक नहीं। आदि पर्वके १म अध्याय में लिखा है—

"इदं शतसहस्रन्तु लोकानां पुण्यकर्मणाम्॥१०१
चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद्भारतं प्रोच्यते बुधैः॥१०२
ततोऽध्यर्द्धशतं भूयः संक्षेपं कृतवानृषिः।
अनुक्रमणिकाध्यायं वृत्तान्तानां सपर्वणाम्॥" १०३

पुण्यात्मा लोगोंके लिये यह शतसहस्र (लाख) श्लोकात्मक महाभारत रचा गया है। किन्तु व्यासदेवने पहले पहल २४००० श्लोकमयी भारतसंहिताकी रचना की थी। पण्डितोंका कहना है, कि उपाख्यान-अंशको छोड़ महाभारतकी संख्या इ नी ही होती है। पीछे संक्षेपमें सर्वार्थका सङ्कलन करके उन्होंने १५० श्लोकोंका अनुक्रमणिकाध्याय रचा।

उक्त चौबीस श्लोकोंका ग्रन्थ ही भारतसंहिता कहलाता है। इस भारतसंहिताको ही हम लोग आदि महाभारत समझते हैं। यही संहिता कृष्णद्वैपायन वेदव्यासकी रचना है। यह अति प्राचीन ग्रन्थ है—आश्वलायन और सांख्यायनगृह्यसूत्रमें इसीको भारत बतलाया है—

"सुमन्तुजैमिनिवैशम्पायनपैल सूत्रभाष्यभारतधर्माचार्य्याः...
ये चान्ये आचार्यास्ते सर्वे तृप्यन्त्विति।"
(आश्वगृह्य ३।४)

अर्थात् उपनयनकालमें सुमन्त, जैमिनी, वैशम्पायन, पैल, सूत्रभाष्य और भारतधर्माचार्य तथा अन्यान्य जितने आचार्य हैं सभी तृप्त होवें (ऐसा कहना होता है)।

आश्वलायनने दूसरी जगह श्राद्धादि पितृकार्यमें भी इतिहास पुराणादि पढ़नेकी व्यवस्था दी है।

"आयुष्मतां कथाः कीर्त्तियन्तो माङ्गल्यानीतिहासपुराणानीत्याख्यापयमानाः।" (आश्वगृह्य ४।६)

बहुतेरे पण्डितोंका कहना है, कि उस आदिभारतसंहिताका ही आश्वलायन गृह्यसूत्रमें 'इतिहास' नाम रखा गया है। महाभारतमें भी लिखा है—

"इतिहासाः सवैयाख्या विविधाः श्रुतयोऽपि च।
इह सर्वमनुक्रान्तमुक्तं ग्रन्थस्य लक्षणं॥" (१।१।५०)

व्याख्याके साथ सभी इतिहासों और विविध श्रुतियोंका यथाक्रमसे इस ग्रन्थमें वर्णन किया गया है, यही इस ग्रन्थका लक्षण है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्त्तमान महाभारतसे ही हम लोगोंको पता चलता है, कि यह इतिहासरूप भारतकाव्य एक दूसरेके मुखसे ही प्रकाशित हुआ था।* प्रचलित महाभारतमें लिखा है—

"क्षेत्रे विचित्रवीर्यस्य कृष्णद्वैपायनः पुरा।
उत्पाद्य धृतराष्ट्रञ्च पाण्डुं विदुरमेव च ॥९५
जगाम तपसे धीमान् पुनरेवाश्रमं प्रति।
तेषु जातेषु वृद्धेषु गतेषु परमां गतिं ॥९६
अब्रवीद्भारतं लोके मानुषेऽस्मिन् महानृषिः।
जनमेजयेन दृष्टः सन् ब्राह्मणैश्च सहस्रशः ॥९७
शशास शिष्यमासीनं वैशम्पायनमन्तिके।
स सदस्यैः सहासीनः शृावयामास भारतम् ॥९८
कर्मान्तरेषु यज्ञस्य चोद्यमानः पुनः पुनः।
विस्तरं कुरुवंशस्य गान्धार्या धर्मशीलतां ॥९९
क्षत्तुः प्रज्ञां धृतिं कुन्त्याः सम्यग् द्वैपायनोऽब्रवीत्।
वासुदेवस्य माहात्म्यं पाण्डवानाञ्च सत्यतां ॥१००
दुर्वृत्तं धार्त्तराष्ट्रानामुक्तवान् भगवानृषि।" (१।१ अ०)

पुराकालमें धीमान् कृष्ण-द्वैपायन विचित्रवीर्यके क्षेत्रमें धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुरको उत्पादन करके तपस्याके लिये अपने आश्रममें लौटे। जब उक्त तीनों वीर वृद्ध हो कर परलोकवासी हुए, तब उन महामतिने मनुष्यलोकमें इस 'भारत' को सुनाया था। पीछे जनमेजयके सर्पयज्ञमें हजारों ब्राह्मण और स्वयं जनमेजयके आग्रह करने पर वेदव्यासने यज्ञमें आये हुए वैशम्पायनको महाभारत सुनाने कहा था। तदनुसार प्रतिदिनका यज्ञकार्य्य शेष होने पर वैशम्पायन उन्हें महाभारत सुनाया करते थे। कुरुवंशका विवरण, गान्धारीकी धर्मशीलता, विदुरकी प्रज्ञा, कुन्तीका धैर्य्य, कृष्णका माहात्म्य, पाण्डवोंकी सत्यनिष्ठा और धृतराष्ट्रके पुत्रों अर्थात् कौरवोंकी दुर्वृत्तता आदि सभी विषय द्वैपायन ऋषिने सविस्तार सुनाये थे।

कुरुपाण्डव-प्रसङ्गको ले कर ही पहले पहल भारतसंहिता रची गई थी। महाभारतके मतसे उस संहितामें २४००० श्लोक हैं। यथार्थ प्रचलित महाभारतका उपाख्यान-अंश यदि बाद दिया जाय और कुरु पाण्डवोंका विवरण लिया जाय, तो २०००० श्लोक हो सकते हैं। उसीको हम लोग आदि और अति प्राचीन भारत कह सकते हैं। जनमेजयके सर्पयज्ञमें वही आदि भारत सबसे पहले सबके सामने सुनाया गया था। पीछे नैमिषारण्यमें कुलपति शौनकके द्वादश वार्षिक यज्ञमें सूत लोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवाने दूसरी बार यह भारतसंहिता लोगोंको सुनाई थी। जनमेजयका सर्पयज्ञ दीर्घकालस्थायी नहीं था, अतएव लोगोंके चित्तविनोदनार्थ २४००० श्लोकात्मक भारतसंहिताका गान ही उतने समयके लिये यथेष्ट था। किन्तु बारह वर्षवाले लंबे यज्ञमें उतने श्लोकोंसे काम नहीं चलता, इसी कारण उसे बढ़ानेकी कोशिश करनी पड़ी थी। अर्थात् ऋषियोंके चित्तविनोदनार्थ उग्रश्रवाने भारत-गानके समय उसमें बहुतसे उपाख्यान जोड़ कर उन्हें सुनाया था। महाभारतके प्रारम्भमें उग्रश्रवाने कहा है,—

कुरु, पुरु, यदु, शूर विश्वगश्व, अणुह, युवनाश्व, कुकुत्स्थ, रघु, विजय, वीतिहोत्र, अङ्ग, भव, श्वेत, बृहद्गुरु, उशीनर, शतरथ, कङ्क, दुलिदुह, द्रुम, दम्भोद्भव, वेन, सगर, सस्कृति, निमि, अजेय, परशु, पुण्ड्र, शम्भु, देवावृध, देवाह्वय, सुप्रतिम, सुप्रतीक, बृहद्रथ, सुक्रतु, निषधापति नल, सत्यव्रत, शान्तभय, सुमित्र, सुबल, जानुजङ्घ, अनरण्य, अर्क, प्रियभृत्य, बलबन्धु, निरामर्द, केतुशृङ्ग, बृहद्बल, धृष्टकेतु, बृहत्केतु, दीप्तकेतु, अविक्षित्, चपल, धूर्त्त, कृतबन्धु, धृढ़षुधि, महापुराणसम्भाव्य, प्रत्यङ्ग, प्रवहा, श्रुति, इत्यादि हजारों राजाओंके कर्म, विक्रम, दान, माहात्म्य, आस्तिक्य, सत्य, शौच, दया और आर्जवादीका विवरण विद्वान सत्कवियोंने पुराणमें गाया है। (आदि पर्व १ अ०, २३२ से २४२ श्लोक)

अधिक सम्भव है, कि उग्रश्रवाने उन प्राचीन आख्यायिकाओंको भारतसंहिताप्र-सङ्गमें कीर्त्तन किया था। उनके समयमें जहां जितने प्राचीन आख्यान और उपाख्यानादि प्रचलित थे, वे सभी भारतसंहितामें शामिल किये गये। इस प्रकार संहिताका आकार पहलेसे कहीं बढ़ गया और वही संहिता उक्त यज्ञमें आये हुए

* आदिपर्व १म अध्याय, १०, ११, १७, २० और २६ श्लोक देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हजारों ऋषियोंके निकट इसी 'महाभारत' नामसे प्रसिद्ध हुई। यहां तक कि, उग्रश्रवाके महाभारत-गानसे ऋषिवृन्द इतने प्रसन्न हो गये थे, कि उन्होंने इसे पञ्चम वेद मान लिया था। पीछे जो जिस विषयको अच्छा समझते थे वे उसे इस महाभारतमें शामिल करने लगे। आदि पर्वके द्वितीय अध्यायके शेषांशमें साफ साफ लिखा है, कि यह महाभारत अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और धर्मशास्त्र माना गया है। दिलचस्प उपाख्यान, श्रेष्ठतम इतिहास, सभी पुराण और आख्यान इसके अन्तर्गत है। यह सर्वप्रधान काव्य है। इसकी बराबरी कोई भी काव्य नहीं कर सकता। (महाभारत आदि २ अ०)

इस शेषोक्त विवरणसे मालूम होता है, कि प्राचीन कवियोंने जहां जो कुछ अच्छी रचना देखी उसे कुल अथवा उसका सार मात्र ले कर इस महाभारतमें जोड़ दिया है। यहां तक, कि बहुतसे कवि अपनी अपनी रचनाका वेदव्यासके नामसे प्रचार कर धन्य हो गये हैं, इसमें सन्देह नहीं। महाभारतमें परवर्त्तीकालके नाना कवियोंकी रचना रहनेसे एक विषयका बार बार उल्लेख (जैसे आदिपर्वके १३से १५ अध्याय तथा ४५से ४८ अध्याय तक जरत्कारुका उपाख्यान), एक उपाख्यान कहते कहते विना किसी कारणके दूसरे उपाख्यानका प्रसङ्ग (जैसे गौष्य पर्वमें आरुणि और उपमन्युका उपाख्यान), विना पूर्व सूचनाके व्यक्ति विशेषका सहस्र वाक्य-समावेश (जैसे आदिपर्वके २४वें अध्यायमें रुरु और प्रमतिका कथोपकथन)। १२वें अध्यायके शेषमें रुरु कहते हैं, कि उन्होंने अपने पिता प्रमतिसे आस्तीकोपाख्यान सुना था। किन्तु इस सम्बन्धकी और कोई बात नहीं मिलती। पीछे १३वें अध्यायमें उग्रश्रवा कहते हैं, कि मैंने पितासे आस्तीकोपाख्यान जैसा सुना है, वैसा कहता हूं। अलावा इसके कई जगह पर असम्बन्ध उपाख्यान भी वर्णित देखा जाता है (जैसे पौष्यपर्वमें सर्पयज्ञके अनुष्ठानकी सूचनाके बाद ही पौलमपर्वमें भृगुवंशका वर्णन)।

इस प्रकार महाभारतका बड़ा आकार होने पर परवर्त्ती व्यास वा सङ्कलनकर्त्ताने उसमें वेदव्यास-गणेश-संवाद मिला दिया था, इसमें संदेह नहीं। उन्होंने जनताको यह कह कर समझाया था, कि ऐसा बड़ा ग्रन्थ सामान्य लेखकके हाथका नहीं हो सकता। ग्रन्थमाहात्म्यका प्रचार करनेके उद्देशसे गणपति महाभारतके लेखकरूपमें कीर्त्तित हुए। किन्तु आदि भारतसंहिता लिखी नहीं गई, एक दूसरेके मुंहसे इसका प्रचार हुआ, यह पहले ही कह आये हैं।

बहुतोंका विश्वास है, कि महाभारतने बहुत आधुनिक समयमें ऐसा विराट् आकार धारण किया है, और तो क्या बहुतेरे इस महाभारत नामको नितान्त आधुनिक समझते हैं। उसका कारण यह है, कि बालिद्वीपमें महाभारतका जो कविभाषामें प्राचीन अनुवाद है, वह 'बारत युद्ध' कहलाता है, उसमें महाभारतका उल्लेख नहीं है। यहां तक कि बेबर आदिका विश्वास है, कि पाणिनिके समयमें भी 'महाभारत' इस नामका कोई ग्रन्थ ही न था। किन्तु हम लोगोंके ख्यालसे यह लाख श्लोकका विराट् महाभारत उतना आधुनिक ग्रन्थ नहीं है। बुद्धके आविर्भावसे बहुत पहले यह महाग्रन्थ प्रचलित था, ललितविस्तर और आदिपालि भाषामें लिखित बहुतों बौद्ध-ग्रन्थसे इसका पता लगता है।

"महान् ब्राह्मपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु" (पा ६।२।३८)

अर्थात् व्रीहि, अपराह्ण, गृष्टी, श्वास, जाबाल, भार, भारत, हैलिहिल, रौरव, प्रवृद्ध ये दश शब्द पीछे रहनेसे उनके पहले 'महत्' शब्दका प्रयोग होता है, जैसे महाव्रीहि, महाभारत।

उक्त सूत्रमें पाणिनिने स्पष्टतया महाभारतका नाम लिया है। वे जो महाभारतप्रतिपाद्यविषयसे अवगत थे, वह अष्टाध्यायीका ४।१।१४५, ४।३।९८, ६।३।७५, ८।३।३५ आदि सूत्र पढ़नेसे मालूम होता है।

५वीं शताब्दीमें भारतवर्षसे सभी हिन्दूधर्मग्रन्थ यवद्वीपमें लाये गये। वे सब धर्मग्रन्थ आज भी बालिद्वीपमें मूल और अनुदित आकारमें मौजूद हैं। वहां महाभारतका सम्पूर्ण अनुवाद नहीं है। पर हां, महासमरके आधार पर कविभाषामें 'भारतयुद्ध' नामक काव्य रचा गया है—वही काव्य वहांके हिन्दूसमाजमें सर्वत्र आदृत है। भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य पर्वको ले कर यह ग्रन्थ तय्यार हुआ है। इस ग्रन्थका विशेष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचार रहनेसे ही महाभारतका नाम जनसाधारण नहीं जानते। पर हां, जिनके घरमें संस्कृत महाभारत है, उनकी बात दूसरी है। आज तक बालिद्वीपमें आदि, विराट्, उद्योग, भीष्म, आश्रमवास, मौषल, महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहण पर्वका संस्कृत अंश पाया गया है।

कोई कोई सभा, वन, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, अश्वत्थामा, सौप्तिक, स्त्रीविलाप और अश्वमेधयज्ञ पर्वके नामोंसे अवगत हैं। हमलोगोंका विश्वास है, कि यदि अनुसन्धान किया जाय, तो बालिद्वीपसे सभी मूल महाभारत निकल सकते हैं। इत्यादि प्रमाणके अनुसार हमलोग महाभारतको आधुनिक ग्रन्थ नहीं मान सकते। बुद्धके आविर्भावके बाद इस महाभारतमें कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ।

संस्कृत शास्त्रज्ञ पुराविदोंका विश्वास है, कि बौद्ध-विप्लवमें दूसरे दूसरे संस्कृत धर्मशास्त्रोंके साथ साथ महाभारत भी नष्ट होने पर था। परन्तु मालविकाग्निमित्र नाटकके नायक विदिशाधिपति अग्निमित्रने ही इसका उद्धार किया। इन सुङ्गसम्राट्ने हिन्दूधर्मकी पुनः प्रतिष्ठाके लिये अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान किया था। कुरुयज्ञमें महाभारत-पाठकी आवश्यकता आन पड़ी थी। इसलिये उन्होंने देश देशके प्रधान प्रधान पण्डितोंको बुला कर महाभारत-ग्रन्थ तय्यार किया। इस समय कोई ऐसा भी नहीं कह सकते कि महाभारतसे अनेक प्राचीन आख्यान अलग कर दिये गये, समयोपयोगी भाषाका प्रचार हुआ तथा अति सामान्यभावमें नई बातें नहीं जोड़ी गई हैं। पर हां, दो चार श्लोक इसमें ऊपरसे अवश्य दिये गये हैं। इन दो चार श्लोकोंके लिये महाभारतकी प्राचीनता नष्ट हो जायगी ऐसा कदापि नहीं हो सकता। प्रक्षिप्त अंश उनमेंसे चुन लेना कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे शान्तिपर्वके २१८वें अध्यायमें नास्तिकमत-खण्डनके उपलक्षमें 'क्षणिक विज्ञानवादी सौगतोंकी निन्दा' तथा अनुशासनपर्वके १४२वें अध्यायमें मुण्डितमस्तक काषायवास (बौद्ध) भिक्षुकोंको स्वेच्छाचारी तपस्वी कहना। राजा अग्निमित्र बौद्धविद्वेषी एक कट्टर ब्राह्मणभक्त थे। अतः उनके बनाये महाभारतमें बौद्धनिन्दासूचक दो चार श्लोकोंका रहना असम्भव नहीं। इसके लिये यदि कोई कहे कि महाभारत इस समयका ग्रन्थ है, तो उनकी भूल है। महाभारतमें ऐसे कितने पुराणाख्यान हैं जो प्रचलित रामायणसे प्राचीन प्रतीत होते हैं। फिर महासमरके उपलक्षमें रचित भारतसंहिता रामायणसे बहुत पीछे रची गई। कारण, रामायणके समय संस्कृत भाषा ही जनसाधारणकी प्रचलित भाषा समझी जाती थी। आर्यसभ्यताका प्रसार उस समय भी दाक्षिणात्यमें सर्वत्र नहीं था। किन्तु महाभारतमें पाण्डवोंके वारणावर्त्तमें रहते समय विदुरको म्लेच्छभाषामें कथोपकथन और समस्त दाक्षिणात्यमें आर्यसभ्यताकी आलोचना करनेसे साफ साफ मालूम होता है, कि रामायणसे बहुत पीछे भारतसंहिता रची गई। क्षत्रिय राजाओंकी उपदेशमूलक राजनीति और धर्मशास्त्रीय नाना विषय उससे बहुत पीछे रचे गये, यह पहले ही कह आये हैं।

शेषोक्त अंशमें शक यवनादिका उल्लेख रहनेसे कोई कोई इस अंशको आधुनिक समझते हैं। फिर भी वे सब जातियां जब पंजाबवासी नहीं मानी गई हैं, तब भारतमें शकयवनाधिकारसे बहुत पहले वह अंश रचा गया है, इसमें सन्देह नहीं।

महाभारतमें सभी शास्त्रोंका समावेश है, इस कारण जो जिस भावको ग्रहण करना चाहते हैं वे वही भाव ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि महाभारत सम्बन्धमें पाश्चात्य पण्डितोंके मध्य इतना मतभेद देखा जाता है। और तो क्या, कुरुक्षेत्रके प्रसिद्ध महासमर तक भी बहुतेरे उड़ा देना चाहते हैं। किन्तु जब यह महासमर प्रकृत ऐतिहासिक घटना है और डेढ़ हजार वर्ष पहलेसे ही चला आ रहा है, तब फिर इसे किस प्रकार उड़ा सकते हैं। यहां तक, कि ५५६ शकमें २य पुलकेशिके शिलाफलकमें भारतयुद्धसे एक स्वतन्त्र अब्द प्रचलित था, उसके बहुतसे प्रमाण भी मिलते हैं। इस शिलाफलकके मत ५५६ शकसे ३७३५ वर्ष पहले भारतयुद्ध छिड़ा था। इस हिसाबसे आजसे ५०३० वर्ष पहले भारतयुद्ध हुआ था, इसमें जरा भी सन्देह नहीं।

महाभारत जितना प्राचीन है, इसका खिल वा परिशिष्ट स्वरूप हरिवंश उतना प्राचीन नहीं है। महाभारतमें वैष्णव धर्मका हाल रहने पर भी हरिवंशमें उसका पूर्ण प्रभाव देखा जाता है। उस समय शाक्तगण भी अपना सर उठाये हुए थे। "ह्रीं श्रीं गार्गीञ्च गान्धारीं योगिनां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योगदां सदा" इत्यादि उक्ति उसकी पोषक है। विशेषतः १ली शताब्दीमें रचित मृच्छकटिकमें हरिवंशका आभास और उसके मध्य बौद्धप्रभावका निदर्शन नहीं रहनेसे हरिवंशको भी बुद्धाविर्भावके पहलेका ग्रन्थ कह सकते हैं।

महाभारतकी टीका।

महाभारतकी बहुत-सी टीकाएं पाई जाती हैं जिनमें देवस्वामी, वैसम्पायन और विमलबोधकी टीका बहुत प्राचीन है। इसमें व्यासकूटका अर्थ और दुरूहस्थानका अर्थ लिखा है। इसके अतिरिक्त अर्जुनमिश्रकी भारत अर्थदीपिका, आनन्दपूर्ण मुनि विद्यासागरकी व्याख्यारत्नावली, चतुर्भुजमिश्रकी टीका, देवबोधकी ज्ञानदीपिका, नन्दकिशोरकी गूढ़ार्थ प्रकाशिका, नन्दनाचार्यकी भारतदीपिका, नारायणसर्वज्ञकी भारतार्थ प्रकाश, नीलकण्ठचातुर्धरकी भारतभावदीप, परमानन्द भट्टाचार्यकी मोक्षधर्मटीका, यज्ञनारायणकी भारतटीका, रत्नगर्भकी टीका, लक्ष्मणभट्टकी भारतदीपिका, श्रीनिवासाचार्य रचित टीका, रामानुजकी व्याख्याप्रदीप, आनन्दतीर्थकी महाभारततात्पर्यनिर्णय-टीका, महाभारतटिलक और महाभारतनिर्वाचन नामक अज्ञात ग्रन्थकार रचित दो टीकाएं पाई जाती हैं।

महाभारतका अनुवाद।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि बहुत दिन हुए यवद्वीप में भीम, द्रोण, कर्ण और शल्यका कविभाषामें 'वारत वा भारतयुद्ध' नामसे अनुवाद हुआ था। भारतवर्षमें भी प्रायः सभी भाषाओंमें महाभारतका अनुवाद वा मर्मानुवाद देखा जाता है। हालकनाड़ामें कुमारव्यासका अनुवाद मिलता है। इस ग्रन्थका १२वीं शताब्दीमें बल्लालवंशीय विष्णुवर्द्धनके समय अनुवाद हुआ था। १२वीं शताब्दीमें मराठी भाषामें भी महाभारतका अनुवाद हुआ। उत्कल भाषामें बहुतसे प्राचीन अनुवाद देखे जाते हैं। कृष्णानन्द वसु, अनन्तमिश्र, नित्यानन्दघोष, द्विजकविन्द्र, उत्कलकवि सारण, षष्ठीवर, गङ्गादाससेन, राजेन्द्रदास, गोपीनाथ दत्त, राजारामदत्त आदिने महाभारत लिख कर अच्छी ख्याति पाई है। इनमेंसे कितने काशीरामदासके पूर्ववर्ती हैं। जबसे काशीरामदासका महाभारत प्रकाशित हुआ तबसे पूर्वतन कवियोंका नाम बहुत कुछ लोप हो गया है। काशीरामके बाद उनके लड़के नंदरामदास, द्वैपायन दास, निमाई पण्डित, त्रिलोचन चक्रवर्त्ती, वल्लभदेव, लोकनाथ दत्त, मधुसूदन नापित, शिवचन्द्रसेन, भृगुराम दास आदिके नाम उल्लेखनीय हैं। ये लोग अङ्गरेजी अमलदारीके पहले विद्यमान थे। अङ्गरेजी अमलदारीके बाद जो सब अनुवाद प्रकाशित हुए उनमें कलकत्तावासी कालीप्रसन्न सिंह द्वारा प्रकाशित बङ्गला गद्यानुवाद ही सर्वप्रधान है।

महाभारतिक (सं० त्रि०) महाभारताभिज्ञ, महाभारततत्त्वको सम्पूर्णरूपसे जाननेवाले।

महाभाष्य (सं० क्ली०) पतञ्जलि-कृत पाणिनि व्याकरणसूत्रका विशद भाष्य। फिर भर्त्तृहरि, कैयट आदिने इस भाष्यकी टीका भी लिखी है। पतञ्जलि देखो।

महाभासुर (सं० पु०) १ विष्णु। (त्रि०) २ अतिशय दीप्तियुक्त, जिसमें चमक दमक हो।

महाभिक्षु (सं० पु०) १ भिक्षुश्रेष्ठ। २ शाक्यमुनि, भगवान् बुद्ध जो संसारकी सब कामनाको परित्याग कर भिक्षु हुए थे।

महाभिजन (सं० पु०) उच्चवंश, सम्भ्रान्तवंश।

महाभिजनजात (सं० त्रि०) सम्भ्रान्त वंशसम्भूत, जिसका उच्चमें जन्म हुआ हो।

महाभिज्ञा-ज्ञानाभिभू (सं० पु०) बुद्ध।

महाभिमान (सं० पु०) अतिशय अभिमान, बड़ा भारी घमण्ड।

महाभिष (सं० पु०) इक्ष्वाकुवंशीय राजपुत्रभेद।

(भाग० ९।२२।२)

महाभिषव (सं० पु०) बड़े आडम्बरसे सोमरसका चुआना।

महाभिषेक (सं० पु०) प्रधान अभिषेक-क्रिया, राजपद पर निर्वाचन।

महाभिष्यन्दिन (सं० त्रि०) अत्यन्त आर्द्रताकारक, बड़ा सम्मान करनेवाला।

महाभीत (सं० त्रि०) महान् अतिशयो भी[ः]। अतिशय भययुक्त, बड़ा डरपोक। (पु०) २ राजा शान्तनुका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक नाम। ३ शिवके भृंगी नामक द्वारपालका एक नाम।

महाभीता (सं० स्त्री०) लज्जालुवृक्ष, लजालू।

महाभीति (सं० स्त्री०) महती भीतिः। १ अतिशय भय, भारी डर। (त्रि०) २ महाभयग्रस्त, जो बहुत डरता हो।

महाभीम (सं० पु०) महानतिशयो भीमः, भीषणाकृतित्वात् शिवांशसम्भूतत्वाच्च तथात्वं। १ राजा शान्तनुका नामभेद। २ भृङ्गिनामक शिवद्वारपाल। (त्रि०) ३ अतिशय भयानक, अत्यन्त डरावना।

महाभीरु (सं० पु०) महान् अतिशयो भीरुः। १ ग्वालिन नामका बरसाती कीड़ा। (त्रि०) २ अतिशय भयशील, अत्यन्त डरपोक।

महाभीषणक (सं० त्रि०) अतिशय भयावह, डरावना।

महाभीष्म (सं० पु०) महानतिशयो भीष्मः। राजा शान्तनुका एक नाम।

महाभुज (सं० त्रि०) महान्तौ भुजौ यस्य। महाबाहु, आजानुलंबित बाहु, जिसकी बाहें बहुत लंबी हों।

महाभूत (सं० क्ली०) महच्च तत् भूतञ्चेति कर्मधा० पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थौल्यादस्य तथात्वं। १ पृथिव्यादि पञ्चभूत। पक्षी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पञ्चतत्त्व हैं। २ स्थावर जङ्गमांश।

महाभूतदान (सं० क्ली०) शास्त्रोक्त दानविशेष।

महाभूमि (सं० स्त्री०) महती भूमिः। १ विपुल भूमि। २ महादेश।

महाभूषण (सं० क्ली०) मूल्यवान् अलंकार, कीमती जेवर।

महाभृङ्ग (सं० पु०) महांश्चासौ भृङ्गश्चेति। नील भृङ्गराज, नीले फूलवाला भङ्गराज।

महाभृङ्गराजतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, आनूपदेशोत्पन्न सुधौत भृङ्गराजरस १६ सेर; चर्णके लिये मजीठ, पद्मकाष्ठ, लोध, रक्तचन्दन, गेरुमट्टी, विजबंद, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, नागेश्वर, प्रियङ्गु, मुलेठी, प्रपौण्डरीक और श्यामालता, प्रत्येक द्रव्य एक एक पल। इन्हें दूधके साथ पीस कर पाक करे। पीछे तैलपाकके विधानानुसार इसका पाक करना होगा। यह तेल शिर पर लगानेसे बालोंका गिरना बंद हो जाता है तथा मन्यास्तम्भ, गलग्रह, शिरोरोग, कर्णरोग और चक्षुरोग आदिमें यह तेल विशेष लाभदायक है। (भैषज्यरत्नाकर क्षुद्ररोगाधि०)

महाभैरव (सं० पु०) महान् भैरवः। शरभरूपी महादेव।

"योऽसौ महाभैरवाख्यः सकायः शारभो हरः।
भैरवः पृथगेवायं गणाध्यक्षो हरात्मजः॥"

(कालिकापुराण ४६ अ०)

महाभैरवी (सं० स्त्री०) तान्त्रिकोंके अनुसार एक विद्या का नाम।

महाभोग (सं० त्रि०) महान् आभोगः विशालता यस्य। महाविशालताविशिष्ट, अतिशय विशाल।

"ततस्तत्र महाभोगं सच्छायस्कन्धसुन्दरम्।
गुहचन्द्रो ददर्शासावेकं न्यग्रोधपादकम्॥"

(कथासरित्सागर १७।२०६)

महाभोगा (सं० स्त्री०) महान् आभोगः परिपूर्णतास्याः वा महान् भोगः सुखरूपमस्याः। १ दुर्गा।

"महार्थसाधनी देवी महाभोगा ततः स्मृता॥"

(देवीपु० ४५ अ०)

भगवती दुर्गा महाथ का साधन करती हैं इसलिये उनका महाभोग नाम पड़ा है। (पु०) २ सर्प, सांप। ३ वृहत् परिधिविशिष्ट, बड़े घेरेका।

महाभोगी (सं० पु०) महत् चक्र वा फणाधर, बड़े फणवाला साँप।

महाभोज (सं० पु०) १ एक राजाका नाम। २ राजचक्रवर्त्ती। ३ बड़ा भोज।

महाभोट (सं० पु०) भोट वा तिब्बत राज्य।

महाभौम (सं० पु०) पुराणानुसार एक राजाका नाम।

महाभ्र (सं० क्ली०) घनमेघ, गहरी घटा।

महाभ्रवटी (सं० स्त्री०) वटिकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—अबरक, तांवा, लोहा, गंधक, पारा, मैनसिल, सोहागा, यवक्षार और त्रिफला प्रत्येक ८ तोला। ये सब द्रव्य शोधित होने चाहिये। पीछे उसमें आध तोला विष डाल कर अंगरी पत्तो, केशुरिया, सोमराज, भृङ्ग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज, विल्वपत्र, पालिधापत्र, गनियारी, विद्धड़क, तुम्बुरु, सम्हालू, नाटाकरञ्ज, धतूरेका पत्ता, श्वेत अपराजिता, जयन्ती, अदरक, गीमासाग, अड़ूस और पान इन्हें ८ तोले रसमें पृथक् पृथक् रूपसे भावना दे। पीछे जब कुछ जल रह जाय, तब उसमें ८ तोला मरिचका चूर्ण डाल कर एक रत्तीकी गोली बनावे। अनुपान दोषके अवस्थानुसार स्थिर करना होगा। इसके सेवनसे सब प्रकारको ग्रहणी, अतीसार और सूतिका आदि रोग अति शीघ्र दूर होते हैं।

दूसरा तरीका—अबरक, लोहा, तांबा, राजपट्ट, पारद गंधक, सोहागा, मरिच, यवक्षार, हरताल, हरीतकी, आमलकी, बहेड़ा और विष प्रत्येक एक भाग। पीछे उसे अच्छी तरह चूर्ण कर गीमा साग और पानके रसके साथ सात बार भावना दे कर ६ रत्तीकी गोली बनावे। इसके सेवनसे सूतिकाज्वर, खांसी और सूजन आदि स्त्री-रोग बहुत जल्द जाते रहते हैं।

(रसेन्द्रसारसंग्रह सूतिकारोगाधिका०)

महामख (सं० पु०) महान् मखः। महायज्ञ, मानवोंके प्रतिदिन अवश्य कर्त्तव्य महायज्ञ।

"बलिकर्म स्वधाहोम स्वाध्यायातिथिसत्क्रियाः।
भूतपित्रमरब्रह्ममनुष्याणां महामखाः॥"

(याज्ञवल्क्य १।१०२)

महामञ्जूषक (सं० पु०) स्वर्गीय पुष्पभेद।

महामणि (सं० पु०) मूल्यवान् रत्न।

महामणिचूड़ (सं० पु०) नागभेद।

महामण्डल (सं० पु०) राजभेद।

महामण्डलिक (सं० पु०) नागभेद।

महामण्डूक (सं० पु०) महान् मण्डूकः। पीतमण्डूक, सोना बेंग।

महामण्डलेश्वर (सं० पु०) राजाकी उपाधिविशेष।

महामत (सं० त्रि०) सम्मानके योग्य।

महामति (सं० त्रि०) महती मतिर्यस्य। १ अति बुद्धिमान, चतुर।

"किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते।
यत्प्रमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु॥" (चण्डी)

(पु०) २ गणेश। ३ बृहस्पतिग्रह। ४ यक्षराजभेद। ५ बोधिसत्त्वभेद। (स्त्री०) करुणाकरकी पत्नी और पद्मनाभकी माता।

महामत्त (सं० त्रि०) अतिशय मत्त, मतवाला।

महामत्ता (सं० स्त्री०) महाकरञ्जका पेड़।

महामत्स्य (सं० पु०) तिमि प्रभृति बड़ा सामुद्रिक मत्स्य।

महामद (सं० पु०) महान् मदो यस्य। १ मत्त हस्ती, मस्त हाथी। महान् मदः। २ अतिशय हर्ष, बहुत प्रसन्न। (त्रि०) ३ अतिशय हर्षयुक्त मदविशिष्ट।

महामधुफला (सं० स्त्री०) पीला कद्दू।

महामनस् (सं० त्रि०) महत् प्रशस्तं मनो यस्य। महाशय, महामति, उदार मनोयुक्त।

"इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां शर्ध उग्रम्।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥"

(ऋक् १०।१०३।९)

२ महाशालका पुत्र।

महामनस्क (सं० त्रि०) १ उच्चान्तःकरणविशिष्ट, महामति। (पु०) २ एक राजाका नाम। ३ शरभजातीय जीवविशेष, टिड्डीकी जातिका एक जीव।

महामनुष्य (सं० पु०) एक प्राचीन कवि।

महामन्त्र (सं० पु०) १ इष्ट मन्त्र। २ मन्त्रसम्बलित प्रसिद्ध वेदग्रन्थ।

महामन्त्रानुसारिणी (सं० स्त्री०) बौद्धोंके एक देवताका नाम।

महामन्त्री (सं० पु०) १ प्रधान मन्त्रणादाता। २ राजाका प्रधान या सबसे बड़ा मन्त्री।

महामन्दार (सं० पु०) वृक्षभेद।

महामयूरी (सं० स्त्री०) बौद्धोंकी एक देवीका नाम।

महामरकत (सं० पु०) १ श्रेष्ठ मरकतमणि, उत्कृष्ट पन्ना। २ मरकत मणि शोभित अलंकार।

महामलयपुर—मद्रासके पासका एक प्राचीन जनस्थान पहाड़को काट कर यहां सात पागोदे बनाये गये हैं।

महाबलिपुर देखो।

महामह (सं० पु०) महोत्सव, बहुत बड़ा उत्सव।

महामहावारुणी (सं० स्त्री०) महती चासौ महावारुणी चेति। भगास्नानका एक योग। गौणचान्द्र चैत्रकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण त्रयोदशीके दिन शनिवार, शतभिषा नक्षत्र तथा शुभयोग होनेसे महावारुणी होती है। इस दिन गंगास्नान करनेसे तीन करोड़ कुलका उद्धार होता है तथा स्नानदानादि विशेष शुभ फलप्रद है। फाल्गुन पूर्णिमाके बाद कृष्ण त्रयोदशीके दिन वारुणी और उसमें पूर्वोक्त योग लगनेसे महावारुणी होती है।

"शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महामहेति विख्याता त्रिकोटीकुलमुद्धरेत्॥"
(तिथितत्त्व)

महामहिमन् (सं० त्रि०) महान् महिमा यस्य। १ अतिशय महिमान्वित, बड़ा प्रतापवान्। (पु०) २ अतिशय महिमा। ३ आश्चर्य प्रभाव।

महामाहात्म्यवत (सं० त्रि०) प्रभूत शक्तिसम्पन्न, बड़ा बलवान्।

महामहेश्वर कवि—एकावली नामक अलङ्कारशास्त्रके प्रणेता।

महामहेश्वरायतन (सं० क्ली०) देवलोकभेद।

महामहोपाध्याय (सं० पु०) १ श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओंका गुरु। २ एक प्रकारकी उपाधि जो आज कल भारतमें संस्कृतके विद्वानोंको ब्रिटिश-सरकारकी ओरसे मिलती है।

महामांस (सं० क्ली०) महत् गर्हितं मांसं, अत्र मांसशब्दस्य पूर्वप्रयुक्ततया महच्छब्दस्य गर्हितार्थत्वं। मनुष्यके शरीरका मांस। शङ्ख, तैल, मांस आदि शब्दोंके पहले महत् शब्दका प्रयोग निषिद्ध है। इस कारण मांस शब्दके पहले महत् शब्दका प्रयोग रहनेसे श्रेष्ठ अर्थ न समझा जा कर गर्हित अर्थ समझा जाता है।

"शङ्खे तैले तथा मांसे वैद्ये ज्योतिषिके द्विजे।
यात्रायां पथि निद्रायां महच्छब्दो न दीयते॥"
(भट्टिटीका)

गाय, हाथी, घोड़े भैंस, वराह, ऊंट, उरग इन सात प्रकारके जन्तुओंके मांसको भी महामांस कहते हैं। महाष्टमी तिथिमें भगवती दुर्गादेवीको महामांस द्वारा पूजा करनेसे साधकके सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।

"अष्टम्यां रुधिरैर्मांसैर्महामांसैः सुगन्धिभिः।
पूजयेद्बहुजातीयैर्बलिभोजनैः शिवाम्॥" (तिथितत्त्व

"गोनरेभाश्वमहिष-वाराहोष्ट्रोरगोद्भवम्।
महामांसाष्टकं देवि देवताप्रीतिकारणम्॥"
(कौलार्च्चनदीपिका)

२ गो-मांस, गो-का गोश्त।

महामांसविक्रय (सं० पु०) नरमांस-विनिमय, नरमांसका बेचना।

महामांसी (सं० स्त्री०) रुदन्तीवृक्ष, संजीवनी नामका पौधा।

महामाई (हिं० स्त्री०) १ दुर्गा। २ काली।

महामात्य (सं० पु०) राजाका प्रधान या सबसे बड़ा अमात्य, महामन्त्री।

महामात्र (सं० त्रि०) महती मात्रा मर्यादा-परिमाणं यस्य। १ प्रधान, श्रेष्ठ। २ समृद्ध, सम्पन्न। ३ धनवान्, अमीर। (पु०) ४ प्रधान अमात्य, महामात्य। ५ राज्यका प्रधान कर्मचारी, प्रधान व्यक्ति। राज्यकी समस्त देखरेख जिसके हाथ हो अर्थात् जिसकी बड़ी क्षमता हो वही महामात्र कहलाता है।

"दूषिते हि महामात्रे रिपुरुग्रोऽपि धीमता।
स्वपक्षे यस्य विश्वास इत्थम्भूतश्च निष्क्रियः॥"
(कामन्दकी ६।६९)

६ हाथियोंका निरीक्षक। ७ महावत। ८ महादेव।

महामात्री (सं० स्त्री०) महामात्र-ङीष्। १ आचार्यपत्नी। २ महामात्रकी स्त्री।

महामानसिका (सं० स्त्री०) महामानसी; जैनियोंकी एक विद्यादेवीका नाम।

महामानसी (सं० स्त्री०) महत् मानसं भक्तान् प्रति सदयं चेतो यस्य। जैनियोंकी एक विद्यादेवीका नाम।

महामानिन् (सं० त्रि०) अतिशय अभिमानी, बड़ा भारी घमंडी।

महामानी (सं० त्रि०) महामानिन् देखो।

महामाया (सं० पु०) १ विष्णु। २ शिव। ३ असुरभेद। ४ विद्याधरभेद। (स्त्री०) ५ गङ्गा। ६ शुद्धोदनकी पत्नी और बुद्धकी माताका नाम। ७ आर्या छन्दका तेरहवां भेद। इसमें १५ गुरु और २७ लघु वर्ण होते हैं। अघहन घटन-पटीयस्त्वेन विसदृश प्रीतीतिसाधनं माया महती चासौ मायाचेति यद्वा महती माया विश्वनिर्माण शक्तिर्यस्याः ८ दुर्गा। (राजनि०) इसको लक्षण—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"गर्भान्तर्ज्ञानसम्पन्नं प्रेरितं सूतिमारुतैः ।
उत्पन्नं ज्ञानरहितं कुरुते या निरन्तरम् ॥
पूर्वातिपूर्वसंबद्ध-संस्कारेण नियोज्य च ।
आहारादौ ततो मोहं ममत्वं ज्ञानसंशयम् ॥
क्रोधोपरोधलोभेषु क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा पुनः पुनः ।
पश्चात् कामे नियोज्याशु चिन्तायुक्तमहर्निशम् ॥
आमोदयुक्तं व्यसनासक्तं जन्तुं करोति या ।
महामायेति सा प्रोक्ता तेन सा जगदीश्वरी ॥"
(कालिकापु० ६ अ०)

गर्भके मध्य जीवके तत्त्वज्ञानका उदय होने पर भी पीछे जब वह प्रबल सूतिमारुत द्वारा उत्पन्न होता है, तब उसे जो तत्त्वज्ञानशून्य बना देती और पूर्व जन्मके संस्कार बलसे आहारादि कार्यमें प्रवृत हो कर मोह, ममता और संशय उत्पादन करती है, जो जीवको बार बार क्रोध, लोभ और मोहमें डाल कर आमोदयुक्त और व्यासनासक्त बनाती हैं उन्हींका नाम महामाया है। महामाया इसी मायाबलसे जगदीश्वरी कहलाती हैं।

जगत्में मायाका प्रभाव बड़ा ही आश्चर्य है। नहीं होनेवाले कामको जो कर दिखलाती हैं उन्हींका नाम माया है। इस संसारमें सुख दुःख और मोह आदि जो कुछ देखनेमें आता है वह इसी महामायाका प्रभाव है। महामायाके प्रभावसे ही जगतकी सृष्टि हुआ करती है।

"महामायाप्रभावेन संसारस्थितिकारिणां।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥" (चण्डी)

जगत्कारणभूता अविद्याको ही माया कहते हैं। इसके अधिष्ठात्री देवी भगवती दुर्गा ही महामाया हैं। यही देवी जगत्को मोहित करती है।

"महामाया हरेश्चैतत् तया संमोह्यते जगत्।"
(मार्कण्डेयपु० ८१।४१) माया देखो।

(त्रि०) ६ मायावी।

महामायाधर (सं० पु०) विष्णु।

महामायाशम्बर (सं० क्ली०) तन्त्रभेद।

महामायूरी (सं० स्त्री०) बौद्धदेवीभेद। महामयूरी देखो।

महामारकत (सं० पु०) महामरकत देखो।

महामारी (सं० स्त्री०) महतः दुर्दान्तान् दानवादीन् मारयति इति मृङ्-णिच्-अण्-ङीष्। १ महाकाली।

"व्याप्तं तयैतत् सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारी स्वरूपया ॥
सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥"
(मार्कण्डेयपु० चण्डी)

म्रियन्ते प्राणिनो यस्या इति-मृङ्-घञ्-ङीष्; महती-मारी। २ अतिशय मरक, वह संक्रामक और भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें। जैसे हैजा, चेचक, प्लेग इत्यादि। जहां महामारी हुई हो उस स्थानको छोड़ देना चाहिए तथा इससे छुटकारा पानेके लिये माहात्म्य दुर्गापाठ, शान्तिस्वस्त्ययन और होमादि करना उचित है। ऐसा करनेसे महामारीकी तुरत शान्ति होती है।

महामार्जारगन्धिका (सं० स्त्री०) वनमुद्ग, जंगली मूंग।

महामाल (सं० पु०) शिव, महादेव।

महामालिका (सं० स्त्री०) छन्दोभेद। इसके प्रति चरणमें १८ वर्ण रहते हैं जिनमेंसे ६, ८, ११, १४ और १७वां वर्ण गुरु और शेष वर्ण लघु होते हैं।

महामालिनी (सं० स्त्री०) नाराच छन्दका एक नाम।

महामाष (सं० पु०) महांश्चासौ माषश्चेति। राजमाष, बड़ा उड़द। राजमाष देखो।

महामाषतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, काढ़ेके लिये श्लथ पोट्टलीबद्ध उड़द ४ सेर, दशमूल ६। सेर, श्लथ पोट्टलीबद्ध बकरेका मांस ३० पल, इन्हें एक साथ मिला कर ६४ सेर जलमें पाक करे। जब १६ सेर जल बच रहे, तब उसे उतार ले। दूध १६ सेर, चूर्णके लिये अलकुशीका मूल, रेड़ीका मूल, सोया, सैन्धव, विट्, शाम्भर लवण, जीवनीय वर्ग, मजीठ, चव्य, चितामूल, कायफल, त्रिकटु, पिपरामूल, रास्ना, मुलेठी, सैन्धव, देवदारु, गुलञ्च, कुट, असगंध, वच और कचूर, प्रत्येक दो तोला। पीछे तैलपाकके विधानानुसार पाक करना होगा। इस तैलका व्यवहार करनेसे पक्षाघात, अर्दित, बधिरता, हनुग्रह और सब प्रकारके वातव्याधिरोग दूर होते हैं। वातव्याधिमें तो इस तैलको रामबाण ही समझना चाहिये। बिना मांसके भी एक प्रकारका महामाषतैल तैयार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया जाता है। उस तैलको निरामिष महामाषतैल कहते हैं। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, काढ़ेके लिये दशमूल ८ सेर, जल ६४ सेर, शेष १६ सेर, उड़द ८ सेर, दुग्ध १६ सेर; चूर्णके लिये असगंध, कचूर, देवदारु, विजवंद, रास्ना, गन्धभादुली, कुट, फालसेका फल, वरड़ी, कुष्माण्ड, भूमिकुष्माण्ड, पुनर्णवा, खट्टानीवू, जीरा, मंगरैला, होंग, सोयां, शतमूली, गोखरू, पिपरामूल, चितामूल, जीवनीयगण और सैन्धव कुल मिला कर एक सेर। तैलपाकके विधानानुसार इस तैलका पाक करना होगा। इसके व्यवहारसे पक्षाघात, हनुस्तम्भ, अर्दित, अववाहुक विश्वची, खञ्जता, पङ्गुत्व आदि वातरोग नष्ट होते हैं। (भैषज्यरत्नावली वातव्याधि०)

महामाहेश्वर (सं० पु०) शिवके एक उपासकका नाम।

महामीन (सं० पु०) मत्स्यविशेष।

महामुख (सं० पु०) महत् मुखमस्य। १ कुम्भीर। २ महादेव। ३ सिन्धुराजके एक सैनिकका नाम। ४ वृहन्मुख, बड़ा मुंह। ५ नदीका मुहाना, वह स्थान जहां नदी गिरती है। (त्रि०) महत् मुखं यस्य। ६ महत् मुखविशिष्ट, बड़ा मुंहवाला।

महामुद्गलाचार्य—श्रीरामचन्द्रार्याष्टोत्तरशतकके प्रणेता।

महामुचिलिन्द (सं० पु०) वृक्षभेद।

महामुचिलिन्दपर्वत (सं० पु०) पर्वतभेद।

महामुण्ड (सं० क्ली०) बोल नामक गन्ध द्रव्य।

महामुण्डिनिका (सं० स्त्री०) महाश्रावणिका, गोरखमुंडी। पर्याय—महामुण्डिका।

महामुद्रा (सं० स्त्री०) १ योगके अनुसार एक प्रकारकी मुद्रा या अंगोंकी स्थिति। २ एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महामुनि (सं० पु०) महांश्चासौ मुनिश्चेति। १ मुनियोंमें श्रेष्ठ, बहुत बड़ा मुनि। २ कपटी व्यक्ति, धोखेबाज। ३ अगस्त्य ऋषि। ४ बुद्ध। ५ कृपाचार्य। ६ काल। ७ व्यासदेव।

"श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किंवा परैरीश्वरः।
सद्योहृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात्॥"
(भागवत १।१।२)

८ तुम्बुरुका वृक्ष। ९ एक जिनका नाम। १० औषध। ११ धन्याक, धनिया।

महामूढ़ (सं० त्रि०) महान् मूढ़ः। अतिशय मूढ़, बड़ा बेवकूफ।

महामूर्ख (सं० पु०) अतिशय अज्ञ, अत्यन्त निर्बोध।

महामूर्त्ति (सं० पु०) महती मूर्त्तिर्यस्य। विष्णु।

महामूर्द्धन् (सं० पु०) महान् मूर्द्धा यस्य, व्यापकत्वात् तथात्वं। १ शिव। २ ऋद्धि। ३ वृद्धि। (त्रि०) ४ वृहन्मस्तकयुक्त, जिसका सिर बड़ा हो।

महामूर्द्धा (सं० स्त्री०) महामूर्द्धन देखो।

महामूल (सं० पु०) महत् स्थूलं मूलं यस्य। १ राजपलाण्डु, प्याज। २ छिलिहिण्ड, छिरेटा।

महामूल्य (सं० क्ली०) महच्च तत् मूल्यं चेति कर्मधा० १ महार्घ, महंगा। (त्रि०) महत् मूल्यं यस्य। २ बहुमूल्यविशिष्ट, जिसका मूल्य अधिक हो। (पु०) ३ माणिक, मणि।

महामूषिक (सं० पु०) महान् मूषिकः। वृहदुन्दुरु, बड़ा चूहा। पर्याय—मूषी, विघ्नेशवाहन, महाङ्ग, शस्यमारी भूफल, भित्तिपातन।

महामृग (सं० पु०) महान् मृगः पशुः। १ हस्ती, हाथी। २ शरभ, टिड्डी। ३ बड़ा सिंह।

महामृगाङ्करस (सं० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—सोना १ भाग, रससिंदूर २ भाग, सोनामक्खी ५ भाग, प्रवाल ७ भाग, सोहागा १ भाग इन्हें अच्छी तरह चूर्ण कर लवङ्गके काढ़ेमें तीन दिन तक भावना दे पीछे उसे लवणपूर्ण भाण्डमें रख कर मुंह बंद कर दे और चार पहर पाक करके उतार ले। अनन्तर उसमें ६४ अंश शोधित हीरा, हीरेके अभावमें १६ अंश वैक्रांत मिलावे। इसका अनुपान घी, मिर्च और पीपलका चूर्ण बतलाया गया है। इसके सेवनसे खांसी, दमा, सब प्रकारके ज्वर, गुल्म, विद्रधि, मन्दाग्नि, स्वरभेद, अरुचि, वमि, मूर्च्छा, भ्रम, त्रिदोष, पाण्डु, कमला आदि रोग जाते रहते हैं। (रसेन्द्रसारस० यक्ष्मारोगाधि०)

महामृत्यु (सं० पु०) १ यम। २ शिव।

महामृत्युञ्जय (सं० पु०) महामृत्युं यमं जयतीति जि-खच्-मुम्च्। शिवका मन्त्रविशेष। यह मन्त्र मानवको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुको बढ़ाता है। यह मन्त्र यदि सिद्ध हो जाय, तो मानव निरामय हो कर दीर्घायु होते हैं। मृत्युञ्जय तन्त्रमें इसके मन्त्रादिका विषय इस प्रकार लिखा है।

"यदि हते महती प्रीतिस्तवास्ति कुलभैरव।
कथयस्व विशेषेण महामृत्युञ्जयाभिधम्॥
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि महामृत्युञ्जयाभिधम्।
आयुर्वृद्धिकरं पुंसां मृत्योर्मृत्युकरं परम्॥
यस्य विज्ञानमात्रेण चिरजीवी निरामयः।
नित्यमष्टशतं जप्त्वा मृत्युं मृत्युपथं नयेत्॥"

(मृत्युञ्जयतन्त्र)

महामृत्युञ्जय मन्त्रका प्रतिदिन १०८ बार जप करनेसे मृत्यु जय होती है अर्थात् वह दीर्घायु होता है।

कठिनसे कठिन रोगमें यदि महामृत्युञ्जय शिवपूजा की जाय, तो वह रोग अवश्य दूर होता है। महामृत्युञ्जय शिवपूजासे बढ़ कर दुःसाध्य रोगकी और कोई चिकित्सा ही नहीं है। इससे प्रत्यक्ष फल दिखाई देता है।

मृत्युञ्जय देखो।

महामृत्युञ्जयरस (सं० पु०) रसौषधविशेष इसकी प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गन्धक, लौह, अवरक, तांबा, मैनसिल, विषमुष्टि, कौड़ी, नूतिया, शङ्ख, रसाञ्जन, जायफल, कट्की साचिक्षार, यवक्ष..., जयपाल, सोंठ, पीपल, मिर्च, हींग सैन्धव लवण इनका बराबर बराबर भाग ले कर चूर्ण करे। पीछे सूर्यावर्त्त और विल्वपत्रके रसमें ७ बार भावना दे। इसके बाद फिरसे सूर्यावर्त्तरसमें घोंट कर २ रत्तीकी गोली बनावे। अनुपान दोषके बलाबलके अनुसार स्थिर करना होगा। इसके सेवनसे प्लीहा, यकृत्, गुल्म, अष्ठीला, अश्रमास, शोथ, उदरी, वातरक्त और विद्रधि आदि रोग प्रशमित होते हैं।

(रसेन्द्रसारस० प्लीहाधि०)

महामृत्युञ्जयलौह (सं० क्ली०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गंधक और अवरक प्रत्येक ४ माशा, लोहा १ तोला, तांबा २ तोला, यवक्षार, सैन्धव, विट्, कौड़ीकी भस्म, शङ्खकी भस्म, चितामूल, हरताल, हींग, कट्की, रोहितककी छाल, निसोथ, इमलीकी छालकी भस्म, गोपाल कर्कटीका मूल, अपाङ्गकी भस्म, तालजटाकी भस्म, अम्लबेंत, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, प्रियङ्गु, इन्द्रयव, हरीतकी, वनयवानी, यवानी, तूतिया, शरपुङ्ख और रसाञ्जन, प्रत्येक ४ माशा। इन्हें एकत्र पीस कर अदरक और गुलञ्चके रसमें भावना देनी होगी। पीछे उसमें २ पल मधु डाल कर ६ रत्तीकी गोली बनावे। दोषके अनुसार चिकित्सकको अनुपान स्थिर करना चाहिये। प्रतिदिन सबेरे इसका सेवन करनेसे प्लीहा, ज्वर, खांसी, विषमज्वर, गुल्म, शोथ आदि विविध रोग शान्त होते हैं। (भैषज्यरत्नावली प्लीहायकृदधि०)

महामृध (सं० पु०) भीषण युद्ध।

महामेघ (सं० पु०) महान् मेघ इव। १ शिव। महान मेघः। २ अतिशय मेघ, काली घटा।

महामेघस्वान (सं० क्ली०) वज्रपातके जैसा निदारुण शब्द।

महामेघौघनिर्घोष (सं० त्रि०) जीमूतमन्द्रका गभीर शब्दपरम्परा विशिष्ट।

महामेघनिवासी (सं० पु०) शिव। ये स्थिर तुषारावृत कैलास शिखर पर वास करते हैं।

महामेद (सं० पु०) मेदयति स्निग्धीकरोतीति मिद्-णिच्, अच् महान् मेदः। १ अष्टवर्गमेंसे एक प्रसिद्ध औषधि। पर्याय—पुरोद्भव २ बृहत् मेद। ३ निम्बवृक्ष, नीमका पेड़।

महामेदा (सं० स्त्री०) मेदयतीति मिद्-णिच्-घञ्-टाप्, महती मेदा। अष्टवर्गमेंसे एक प्रसिद्ध ओषधि, स्वनामख्यात कन्दशाक। पर्याय—वसुच्छिद्रा, जीवनी, पाशुरागिणी, देवेष्टा, सुरामेदा, दिव्या, देवमणि, देवगन्धा, महाच्छिद्रा, वृक्षार्हा। इसका गुण हिम, रुचिकर, कफ और शुक्रवृद्धिकारक, दाह, अस्र, पित्त, क्षय, वात और ज्वरनाशक माना गया है। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतसे—महामेदाख्य कन्द मौरंग देशमें पाया जाता है। प्रधान प्रधान मुनि इसे महामेद कहते हैं। यह देखनेमें अदरकके समान होता है। इसकी लता चलती है। इसको नाखूनसे काटनेसे मेदोधातुकी तरह इससे रस निकलता है। मेदके बहुतसे प्रसिद्ध नाम हैं। यथा—खलपपर्णी, मणिच्छिद्रा, मेदा, मेदोभवा और अध्वरा। मेद और महामेद दोनों ही गुरु, मधुर रस, शुक्रजनक, स्तनदुग्धवर्द्धक, कफकारक, शरीरका उपचयकर, शीतल तथा रक्तपित्त, वायु और ज्वरनाशक हैं।

(भावप्रकाश)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महामेधा—सह्याद्रिवर्णित एक राजा।

महामेरु (सं० पु०) श्रेष्ठ मेरु पर्वत।

महामैत्र (सं० पु०) मित्रस्य भवः मित्र-अण्-मैत्रं, महद्भिः सह महद्वा हृदि मैत्रमस्येति। एक बुद्धका नाम।

महामैत्री (सं० स्त्री०) प्रगाढ़ बन्धुता, गाढ़ी मित्रता।

महामैत्रीसमाधि (सं० पु०) बौद्ध-मतसे समाधि अवलम्बनके लिये योगप्रकरणविशेष।

महामोद (सं० पु०) कंदपुष्पका गाछ।

महामोदकारी (सं० पु०) एक वर्णिक वृत्ति। इसके प्रत्येक चरणमें ६ यगण होते हैं। इसका दूसरा नाम क्रीड़ाचक्र भी है।

महामोह (सं० पु०) मोहः भ्रान्तिज्ञानं अतथाभूते वस्तुनि तथात्वज्ञानमित्यर्थः महान् मोहः। १ भोगेच्छारूप ज्ञान। २ संसारमूल कारण रागरूप मोह। महान् मोहो यस्मादिति। ३ महामोहजनक कामराजबीज।

"ससर्जाग्रे ऽन्धतामिस्रमथ तामिस्रमादिकृत्।
महामोहञ्च मोहञ्च तमश्चा ज्ञानवृत्तयः॥"

(भागवत ३।१२।२)

सांसारिक सुखोंके भोगका नाम महामोह है। यह अविद्याका नामान्तर माना गया है।

पञ्चपर्वा अविद्याके मध्य यह एक प्रकार है। ब्रह्माने पहले पहल अविद्याकी सृष्टि की। पीछे इसी अविद्यासे तमः, मोह, महामोह आदिको उत्पत्ति हुई।

पूर्वोक्त श्लोककी टीकामें श्रीधरस्वामी लिखते हैं, "ब्रह्मा स्वसृष्टौ अविद्यासृष्टीः ससर्ज, तत्र तमोनाम स्वरूपा प्रकाशः, मोहो देहाद्यहं बुद्धिः, महामोहः भोगेच्छा।"

"तमो ऽविवेको मोहः स्यादन्तः करणविभ्रमः।
महामोहश्च विज्ञेयो ग्राम्यभोगसुखैषणा॥"

(भागवतटीका स्वामी ३।१२।२)

महामोहा (सं० स्त्री०) दुर्गा।

महामोहन (सं० त्रि०) अतिशय महामोहविशिष्ट।

महामौद्गल्यायन (सं० पु०) बुद्धके एक शिष्यका नाम।

महाम्बुक (सं० पु०) शिव, महादेव।

महाम्बुज (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महाम्बुद (सं० पु०) शिव, महादेव।

महाम्ल (सं० क्ली०) महत् अम्लं अम्लरसयुक्तं, यद्वा महान् अम्लः अम्लरसो यस्मिन्। १ तिंतिड़ीक, इमली। (त्रि०) २ अतिशय अम्लरसयुक्त, बहुत खट्टा।

महायक्ष (सं० पु०) यक्षयते पूजयति इति यक्ष-अच्, महान् यक्षः। १ अर्हत् उपासकविशेष। २ यक्षपति। ३ एक प्रकारके बौद्धदेवता।

महायक्ष-सेनापति (सं० पु०) तान्त्रिकोंके अनुसार देवमूर्त्तिविशेष।

महायक्षी (सं० स्त्री०) यक्षरानी।

महायज्ञ (सं० पु०) महान् यज्ञः। १ विष्णु। २ वेदपाठादिरूप पञ्चप्रकार यज्ञ। देवपाठ, होम अतिथिपूजा, तर्पण और बलि ये पांच महायज्ञ हैं।

"पाठो होमश्चातिथीनां सवर्यातर्पणं बलिः।
एतैः पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकैः॥"

(अमर २।७।१४)

यह पञ्च महायज्ञ नित्यप्रति करना अवश्य कर्त्तव्य है।

वराहपुराणमें लिखा है—दिव्य, भौम्य, पैत्र, मानुष और ब्राह्म इन पांच प्रकारके यज्ञोंका नाम महायज्ञ है। जो इस पञ्च महायज्ञका अनुष्ठान करते हैं वे विशुद्ध होते हैं।

"द्विव्यो भौमस्तथा पैत्रो मानुषो ब्राह्म एव च।
एतैः पञ्च महायज्ञा ब्रह्मणा निर्मिताः पुरा॥
इतरेषान्तु वर्णानां ब्राह्मणैः कारिता शुभाः।
एवं कृत्वा नरो भुक्त्वा स्याद्धरित्री विशुध्यते॥"

(वराहपुराण)

मनुष्य नित्य जो पाप करता है, उसका नाश इस पञ्चमहायज्ञके अनुष्ठानसे हो जाता है। इसलिये सबोंको इस महायज्ञका अनुष्ठान प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये।

विशेष विवरण पञ्चमहायज्ञमें देखो।

महायज्ञभागहर (सं० पु०) विष्णु।

महायन्त्र (सं० क्ली०) एक प्रकारका यन्त्र।

महायम (सं० पु०) यमराज।

महायमक (सं० क्ली०) श्लोकभेद। इसके प्रत्येक चार पादमें एक प्रकारकी शब्दात्मक वर्णमाला दी जाती हैं; किन्तु उनके अर्थमें प्रभेद पड़ता है।

महायमलपत्रक (सं० पु०) काञ्चन वृक्ष, कचनारका पेड़।

महायशस् (सं० पु०) महत् यशो यस्य, बिभाषामहतात्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न कप्। १ भूतकी एक तरहकी पूजा। २ शिव। (त्रि०) ३ अतिशय यशोयुक्त, बड़ा यशस्वी।

"एवं स संक्रमस्तत्र स्वर्गलोके महायशाः।
ततो ददर्श शक्रस्य पुरीन्तामरावतीम्॥"
(भारत ३।४२।४१)

(स्त्री०) ४ स्कन्दकी एक मातृकाका नाम

महायशस्—गोभिलीयश्राद्ध-कल्पभाष्यके प्रणेता। रघुनन्दनने इनका मत उद्धृत किया है।

महायशस्क (सं० त्रि०) महत् यशो यस्य, (शेषोद्विभाषा। पा ५।४।१५४) इति समासान्त कप् प्रत्ययः। अतिशय यशोविशिष्ट, बड़ा यशस्वी।

महायस (सं० त्रि०) १ महाफलक। २ महालौहयुक्त।

महायात्रा (सं० त्रि०) १ महातीर्थकी यात्रा, काशीयात्रा। २ महाप्रस्थान, मृत्यु।

महायान (सं० क्ली०) १ एक विद्याधरका नाम। २ बृहत् यान, बड़ी सवारी। ३ श्रेष्ठ शकट, बड़ी बैलगाड़ी।

महायान—बौद्धसम्प्रदाय विशेष। शुद्धोदनके पुत्र शाक्यबुद्ध निर्वाणवादरूप प्रकृष्ट मोक्षका उपाय जनसाधारणमें प्रवर्त्तन कर गये हैं। उनके बाद शिष्यों और अनुयायियोंमें मतभेद हो गया उसी मतभेदसे महायान मतकी उत्पत्ति हुई।

महायान शब्दका प्रकृत अर्थ है श्रेष्ठ वाहन, अर्थात् यह संसार और परलोकयात्राका प्रकृष्ट उपाय बतलाता है, इसीसे इस सम्प्रदायका मत महायान नामसे प्रसिद्ध हुआ। अतः महायान कहनेसे परागति ही समझी जाती है। इस परागतिके उपायनिर्देशक बौद्धयतिगण महायानी या महायानसम्प्रदायभुक्त कहलाते हैं।

प्राचीन अर्थात् शाक्यबुद्धप्रवर्त्तित आदिम बौद्धधर्मरक्षामें यत्नवान् बौद्धसम्प्रदाय केवल सद्धर्माचारनिरत श्रावकोंको ही जीवन्मुक्तिलाभके अधिकारी बतलाते हैं। इस मतको विश्वास करनेवाले व्यक्तिमात्र ही आगे चल कर हीनयान मतावलम्बी कहलाये *। फिर भी, महायान मतावलम्बिगण सब जीवोंकी मुक्ति तथा बोधिसत्त्व पदप्राप्तिका विषय निरूपण कर गये हैं। अतः हम लोग इस महायान-सम्प्रदायको बोधिसत्त्वयान भी कह सकते हैं। प्रकृत बुद्धमार्गसेवीकी मुक्ति अनिवार्य है—उन्हें फिर कभी भी संसारका दुःख नहीं भोगना पड़ता।

सुप्राचीन वैदिक युगमें देवयान और पितृयान नामक दो पारलौकिक गतिका उल्लेख देखनेमें आता है। किस प्रकार जीवात्माकी देवलोक या पितृलोकमें गति होती है अर्थात् किस प्रकार वे परब्रह्ममें लीन होते हैं, यही विषय उक्त दोनों यानमें लिखा है। उसी प्रकार हम लोग बौद्ध युगमें महायान, हीनयान, तन्त्रयान और वज्रयान, कालचक्रयान नामक और भी कई एक यानोंका उल्लेख देखते हैं। देवयान और पितृयान देखो।

महायानगण प्रकृतिसत्त्वाके पूर्ण विकाशार्थ जीवात्माके तीन कार्योंकी कल्पना कर गये हैं—१ धर्मकाय—निराकार और स्वयम्भू, ध्यानी, आदि या त्रिरोचन-बुद्धरूप। २ सम्भोगकाय—ध्यानी बोधिसत्त्व या लोचन और ३ निर्माणकाय—मानुषी बुद्ध अर्थात् जिन्होंने प्रकृष्ट पथका अवलम्बन कर मनुष्यशरीरसे बुद्धत्त्व लाभ किया है, जैसे शाक्यमुनि। वाडेल साहबका कहना है, कि महायान या बोधिसत्त्वयानमें उसी प्रकार जनसाधारणको उन्नतिके लिये जिन तीन यानोंका उल्लेख है, उनमेंसे पहला श्रावकयान है अर्थात् केवलमात्र पुण्यवान् धर्म श्रोतागण हो छागरूप यान पर चढ़ कर भवनदीको पार कर सकते हैं। २रा प्रत्येक बुद्धयान अर्थात् निर्जनवासी ध्यानी बुद्धगण हरिणरूपी यान पर चढ़ भवसागरको पार करते हैं और ३रा बोधिसत्त्वयान—बोधिसत्त्वगण हाथी पर चढ़ कर भवसमुद्रके अतलस्पर्शी तलदेशको मथते हुए पूर्णप्रज्ञाधिष्ठित हो जीवनयात्रा पार करनेमें समर्थ होते हैं। यथार्थ ज्ञानालोकमें सभी जीवोंकी मुक्ती ही महायानका उद्देश्य है।

हीनयानगण श्रावक या जिन्होंने बुद्धसे धर्मोपदेश सुना है, उनके सिवा और किसीको भी निर्वाणमुक्ति नहीं स्वीकार करते। किन्तु महायान क्या यति, क्या गृही सबोंकी मुक्ती स्वीकार कर गये हैं।

जीवात्माकी मङ्गल कामनाके लिए महायान-सम्प्रदायने

* 'हीनयान' शब्द किसी प्राचीन बौद्धग्रन्थमें नहीं मिलता। उत्तरदेशीय महायान मतावलम्बियोंने अपनी श्रेष्ठताकी घोषणा करनेके लिए अपनेको 'महायान' तथा दक्षिणदेशीय प्राचीन बौद्ध मतको हीन समझ कर 'हीनयान' नामसे घोषित किया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवगतिका मुख्य उपायस्वरूप सभी मनुष्योंका उपयुक्त मत विशदरूपसे जनसामाजमें प्रकाशित किया है। किस समय और किस मनीषी बौद्ध यति द्वारा यह नया पथ निकाला गया था; बौद्धप्राधान्यके इतिहासमें इसका कोई प्रकृत प्रमाण नहीं मिलता।

बहुतेरे अनुमान करते हैं, कि शाक्य बुद्धकी मृत्युसे सौ वर्ष बाद वैशालीमें महासाङ्घिक नामक अन्य मतावलम्बी जिस एक बौद्ध सम्प्रदायका आविर्भाव हुआ था, उसके स्थविरगण पूर्वतन मतके संस्कारसाधनमें बद्धपरिकर हुए थे। क्रमशः उसी संस्कारसम्पन्न महासाङ्घिक सम्प्रदायसे 'महायान' मतका आविर्भाव हुआ। १ली शताब्दीमें अश्वघोषरचित 'महायानश्रद्धोत्पाद-शास्त्र' नामक महायान मतके उत्पत्तिविषयक प्रबन्धसे उसकी प्राचीनताका आभास मिलता है। ७० ई०सन्में अश्वघोषका रचा हुआ एक काव्यग्रन्थ चीनदेश लाया गया। सुतरां उससे भी पहले यदि अश्वघोषके आविर्भाव कालकी कल्पना की जाय, तो ई०सन्के पहले ही महायान मतकी प्रतिष्ठा तथा प्रचार होना सम्भव प्रतीत होता है।

१ली शताब्दीमें महायानमतका विस्तार सूचित होने पर भी यथार्थमें माध्यमिक मतके प्रवर्त्तयिता नागार्जुनसे ही इसका प्रचार तथा प्रसार निरूपित होता है। नागार्जुनके पहले बौद्ध यतियोंके मध्य वस्तुसत्ता और सत्ताभास तथा स्थिति और ध्वंस इस मतको ले कर बड़ा ही गोलमाल चलता था; उन्होंने मध्यपथका अवलम्बन कर अर्थात् सिद्धान्ताभास द्वारा इसकी पूर्वपक्षमीमांसा और अर्थवैपरीत्यसे मिला कर दोनों मतका खण्डन किया, इसीलिये उनका प्रवर्त्तित मत माध्यमिक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने इस सम्प्रदायका प्रज्ञापारमिता नामक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ रचा। इसके अलावा वे बुद्धावतंसक, समाधिराज और रत्नकूटसूत्र नामक और भी तीन ग्रन्थोंमें बौद्धधर्मका प्राधान्य कीर्त्तन कर गये हैं। प्रज्ञापारमितामें कितने ही स्वर्गीय या आध्यात्मिक बुद्ध और बोधिसत्त्वका उल्लेख है। बुद्ध या बोधिसत्त्वका बहुत्व महायान सम्प्रदायके प्रवर्त्तित मतसे बहुत कुछ मिलता जुलता है। माध्यमिक देखो।

किसीका विश्वास है, कि नागार्जुन महायान-मतावलम्बी अश्वघोषके शिष्य थे। उनका माध्यमिक मत महायान मतका प्रधान सहायक हुआ था। फिर किसीका कहना है, कि वे राहुलभद्र नामक एक ब्राह्मणके शिष्य थे। उक्त ब्राह्मण-सन्तान पहले ब्राह्मण-धर्मावलम्बी थे। पीछे उन्होंने महायान-बौद्धमतको ग्रहण किया। साधूत्तम कृष्ण तथा गणेशके अनुग्रहसे उनके धर्माभिव्यक्ति हुई थी। इस अस्फुट ऐतिहासिक तत्त्वके रूपककी आलोचना करनेसे स्पष्ट मालूम होता है, कि उन्होंने भगवान् श्रीकृष्णप्रोक्त भगवद्गीता और शैवमतका अनुसरण कर महायान मतके कलेवरकी पुष्टि की थी। सुतरां नागार्जुन-प्रवर्त्तित मतमें जो स्वतः ही ब्राह्मण्याभास झलकता है, उसमें सन्देह करनेका कोई कारण नहीं।

अनेक प्रकारके प्रवादसे जाना जाता है, कि नागार्जुन ६० वर्ष तक जीवित रह कर सुखावती नामक स्वर्गमें गये। अन्यान्य प्रवादके मतसे वे पांच सौ वर्ष तक विद्यमान थे। यदि राजतरङ्गिणीका उपाख्यान स्वीकार किया जाय, तो नागार्जुन तुरुष्क राजाओंके परवर्त्तिकालमें आविर्भूत हुए थे, ऐसा अनुमान किया जाता है।

नागार्जुन देखो।

महायान मतकी उत्पत्ति तथा परिवृद्धिके प्रकृत इतिहासकी आलोचना करनेसे मालूम होता है, कि शकराज कनिष्कने साम्प्रदायिक धर्मविरोधका खंडन करनेके लिए ३य महासङ्घका अनुष्ठान किया। उसी समयसे ३य सम्प्रदायकी यथेष्ट परिपुष्टि हुई। जलन्धरके निकटवर्त्ती कुवन सङ्घारामें, दूसरेके मतसे काश्मीरके अन्तर्गत कुंडल वनविहारमें इस धर्मसभाका अधिवेशन हुआ।

साम्प्रदायिक मतभेदके कारण बौद्धशास्त्रसमूहकी विशृङ्खलता देख कर संस्काराभिलाषी राजा कनिष्कने जो महासभा की थी, उसके कालनिर्णयादिके सम्बन्धमें विभिन्न बौद्धसम्प्रदायके मध्य विशेष मतभेद देखा जाता है। चीनपरिव्राजक यूएनचुवंग उन प्रवादोंके आधार पर जो सब घटना लिख गये हैं, उन पर भी पूरा निर्भर नहीं किया जा सकता। तिब्बतीय धर्मग्रन्थमें लिखा है, कि राजाने साम्प्रदायिक धर्मशास्त्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समूहका संग्रह करनेके लिए एक महासभा बैठाई। सभाके कार्यनिर्वाहके लिए पार्श्व या पार्श्विकके अधीन पांच सौ बोधिसत्त्व नियुक्त हुए। इस महासङ्घसे क्रमशः सौत्रान्तिक-टीका, विनय-विभाषा और अभिधर्मविभाषा सङ्कलित हो कर अठारह बौद्धसमितिकी सम्मतिके अनुसार जनसाधारणमें प्रचारित हुई। उसी समय विनय, सूत्र तथा अभिधर्म नामक बौद्धशास्त्रग्रन्थ संगृहीत, परिशोभित और लिपिवद्ध हुआ था।

उक्त महासभा केवल शास्त्र और उसकी टीकाकी रचनाके लिए ही बैठी थी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। पर हां बौद्ध धर्मके मूलसत्यके रक्षणार्थ १८ विभिन्न समितियां जो एकमत हुई थीं, उसमें कोई सन्देह नहीं। बाह्य या आभ्यन्तर घटनाका अनुशीलन करनेसे अनुमान किया जाता है, कि श्रावक या हीनयान मतने इस सभामें विशेष प्रतिपत्ति लाभ की थी। किन्तु महायान मत एकबारगी छोड़ दिया गया।

इस महासङ्घकी कार्यपरम्परा न मालूम होने पर भी यह निश्चय है, कि सिंहलवासी बौद्धगण इस सभाकी परिगृहीत धर्मप्रणालीसे बिलकुल पृथक् थे। इस बातको महायान प्रभृतिउत्तर भारतीय बौद्धसम्प्रदाय मुक्त कण्ठसे स्वीकार करते हैं। किंतु इस महासभाका प्रधान लक्षण यह हुआ, कि उस समयसे विभिन्न बौद्धधर्मसङ्घके मध्य जो बहुकालस्थायी मतभेद चला आता था, वह बिलकुल जाता रहा। जो महायानसम्प्रदाय इतने दिनोंसे क्षीण ज्योतिरूपमें विद्यमान था, उसने थोड़े ही दिनोंके मध्य परिपुष्ट हो कर बौद्धसमाजमें सिर ऊंचा किया।

माध्यमिकमतके प्रतिष्ठाता नागार्जुन महायानमतके पृष्ठपोषक थे। उन्होंने अपने मतमें हिंदूधर्मशास्त्र तथा हिन्दूदर्शन सन्निवेशित किया था, यह पहले ही कहा जा चुका है।

इस नवोदित सम्प्रदायकी समेवत चेष्टासे बहुत बड़ा शास्त्र सङ्कलित हुआ। उन्होंने बौद्ध त्रिपिटकसे सम्यक् या आंशिक भावमें किसी मतको ग्रहण तो नहीं किया, पर प्राचीन बौद्धसूत्रसमूहका परित्याग अथवा उस पवित्र गाथा समूहकी उतनी अश्रौद्धिकता नहीं दिखलाई। उन्होंने केवल बुद्धप्रकटित सत्यसमूहकी टीकाटिप्पनीको सन्निवेश करनेमें ही उस विस्तीर्ण सत्यपथको अन्धकारावृत कर डाला है। हीनयानगण उस नवीन मतके पृष्ठपोषक नहीं हुए, वे बराबर इसकी निन्दा ही करते रहे। यही कारण है, कि नवीन मतावलम्बियोंने अर्हतोंको नीचा आसन दे कर बोधिसत्त्वोंको ऊंचे आसन पर बैठाया है।

शून्यवाद ही महायान मतका प्रधान लक्षण है। इसी शून्यता या "सर्वं शून्यं" वचनको ही वे बौद्धधर्मकी मूलसत्ता स्वीकार करते हैं। यथार्थमें यह शून्यवाद प्राचीन त्रैविद्यासूत्रोक्त अनात्मवादकी विवृति मात्र है। वे कहते हैं, कि शाक्य बुद्धने कहा है—वस्तुसत्ताकी प्रकृति नहीं है, इसलिये इसके आदि अन्त भी नहीं है। यही कारण है कि बहुत दिन तक वह पूर्ण शान्तिमें विराजित और सम्पूर्णरूपसे निर्वाणमें निमग्न रहती है। किंतु विरुद्धवादिगण इस सत्यवाक्यकी अवहेला कर इसका विश्वास नहीं करते।

इस शून्यताका सम्पूर्णरूपसे ध्वंस वा विनाश नहीं है। बौद्धशास्त्रमें शून्यता, महाशून्यताके भेदसे अठारह भेद कहे गये हैं, किन्तु तिब्बतीय बौद्ध लामागण ७० प्रकारके भेद बतलाते हैं।

पहले ही कहा जा चुका है, कि नागार्जुनसे ही महायान कालमें योग और भक्तिमार्गका प्रवेश होना शुरू हुआ उसी भक्तिमें लीन हो महायानगण लाखों मनुष्यको विह्वल कर अपने मतानुयायी बनानेमें समर्थ हुए थे। इस प्रकार बौद्ध इतिहासमें प्राचीन धर्ममतकी अपेक्षा महायान मतका गुरुत्व अधिक हो गया। धीरे धीरे महायान-सम्प्रदायने अन्यान्य बौद्धसम्प्रदायका दमन कर अपना कलेवर पुष्ट किया और दाक्षिणात्यके बौद्धगण सदाके लिये एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय गिने जाने लगे—उन्होंने पूर्वतन सत्यपथका बिलकुल परित्याग नहीं किया।

नागार्जुनके बाद वसुबन्धु ही महायानमतके प्रचारमें आगे बढ़े। न्याय शब्द देखो।

जो कुछ हो, महायानोंको बौद्धधर्मका शीर्ष स्थान अधिकार करनेमें सैकड़ों वर्ष तक विरुद्धवादी बौद्धसम्प्रदायके साथ वाक्वितण्डा करनी पड़ी थी। भक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा योगधर्ममें अभ्यस्त और हिन्दूदर्शनाभिज्ञ महायानोंका मत खण्डन करनेके लिये हीनयानोंको भी हिन्दूदर्शन पढ़ना पड़ा था। क्योंकि दर्शनशास्त्र सुलभ न्याय, मीमांसा या युक्तिका खण्डन उन्हीं सब शास्त्रोंके ज्ञानानुकूल है। इस प्रकार परस्परमें उच्च स्थान पानेकी चेष्टासे बौद्धोंके मध्य चार दार्शनिक सम्प्रदायका आविर्भाव हुआ। यथा—वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक।

उनमेंसे वैभाषिक और सौत्रान्तिकगण हीनयानमतके तथा योगाचार और माध्यमिकगण महायान मतके प्रतिपोषक थे।

वैभाषिक और सौत्रान्तिक-गण भूत, भौतिक, चित्त तथा चैत्तिक इन्हीं चारोंको स्वीकार करते हैं। वैभाषिकोंके मतसे अभिधर्मके सिवा सूत्रकी कोई बलवत्ता नहीं है। स्वयं शाक्यमुनिने ही मानुषसत्ता ले कर जन्म ग्रहण किया था। वे अपनी साधनाके बलसे बुद्धत्व तथा निर्वाणको प्राप्त हुए थे। अपने स्वभावज ज्ञान द्वारा सत्यलाभ ही बुद्धत्वका स्वर्गीय लक्षण है। सौत्रान्तिकगण इसके प्रतिकूलमें अभिधर्मकी उपेक्षा कर सूत्रको ही प्रामाण्य बतलाते हैं। वे बुद्धको दशबल, चातुर्वैशारद्य तथा त्रिमृत्युपस्थानसमन्वित और सब भूतोंमें समदयावान् मानते हैं। इसके अलावा वे बुद्धशरीरमें धर्मकाय और सम्भोगकायको आरोप कर गये हैं।

इधर योगाचार और माध्यमिकगण विज्ञानवादी थे। वे वस्तुसत्ता बिलकुल स्वीकार नहीं करते। उनके मतसे जड़जगत् प्रकृत भ्रमात्मक और नामरूपका विकारमात्र है। वेदान्तवादीके पारमार्थिक और व्यवहारिक सत्यकी तरह वे भी परमार्थ तथा संवृति नामक दो सत्यको स्वीकार करते हैं। संवृति प्रज्ञाशक्ति (बुद्धि)-के सिवा और कुछ भी नहीं है। इसीलिए सभी माया भ्रमात्मक या स्वप्नसादृश है। उनके मतसे वस्तुसत्ताकी उत्पत्ति वा विनाश नहीं है। सुतरां आत्माका जन्म वा निर्वाणलाभ भी असम्भव है। जिन्होंने निर्वाण प्राप्त किया है और जिन्होंने नहीं किया है इन दोनोंमें कोई विशेष पार्थक्य नहीं रह सकता। यथार्थमें जीवदेह और भोगदेहकी सभी अवस्था स्वप्नवत् है।

माध्यमिकोंने मायावादका परित्याग कर सांख्याचार्यके प्रधान तथा प्रकृतिके अनुकरण पर प्रज्ञा और उपायको व्यवस्था की है। युक्ति और अनुमान द्वारा वस्तुसत्ताका अस्तित्व अस्वीकार करने पर भी वे यथार्थमें बौद्धधर्मके नैतिकमार्गसे विचलित नहीं हुए।

पहले ही कह आये हैं, कि नागार्जुनने माध्यमिक सत्ताका प्रचार किया। उनके समसामयिक कुमारलब्धने सौत्रान्तिक मत फैलाया था। पूर्ववर्णित अश्वघोष भी महायान सम्प्रदायके एक महारथि थे। नागार्जुनके बाद आर्यदेवका नाम प्रसिद्ध हुआ। वे महायान-मतके प्रचारके लिये बहुतसे दार्शनिक ग्रंथ लिख गये हैं। इसके बाद नालन्दा विहारमें नागाह्वय (तथागतभद्र) नामक और भी एक बौद्ध स्थविरका नाम देखनेमें आता है।

उत्तर और दक्षिण बौद्धसमाजकी अवस्था तथा पृथकता देख कर फाहियान ५वीं शताब्दीके आरम्भमें लिख गए हैं, कि अभिधर्म और विनय सेवकमण्डली अभिधर्म तथा विनयपिटकको और महायान मतावलंबी प्रज्ञापारमिता, मंजुश्री तथा अवलोकितेश्वरकी उपासना करते थे। उन्होंने पाटलिपुत्र नगर आ कर दो बड़े सङ्घाराम देखे थे, उनमेंसे एक हीनयान और दूसरा महायान मतावलम्बियोंका वासस्थान था। महायान सङ्घाराममें रहते समय उन्होंने महासाङ्घिक मतका एक सम्पूर्ण विनयग्रन्थ संस्कृत भाषामें देखा था। मठवासियोंसे पूछने पर उन्हें मालूम हुआ, कि महासाङ्घिक मतके साथ महायान मत बहुत कुछ मिलता जुलता है। यहांके महायानगण अपने धर्ममतकी पुस्तकोंके अलावा सर्वास्तिवाद और संयुक्ताभिधर्महृदय, परिनिर्वाण, वैपुल्यसूत्र, अभिधर्म प्रभृति महासाङ्घिक मतपोषक ग्रन्थको भी आलोचना करते थे।

२री और ३री शताब्दीसे पाण्डित्यपूर्ण बौद्धदर्शनका प्रचारत होने लगा। इस समय गान्धारवासी आर्य असङ्ग और वसुबन्धु नामक दो विख्यात बौद्धभाइयोंका आविर्भाव हुआ।

असङ्ग पहले महीशासक मताचारी थे। बादमें वे महायान मतमें दीक्षित हुए। ईसवीसनसे पहले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचारित पतञ्जलिका बनाया हुआ योगशास्त्र पढ़नेसे उनके मनमें योगका उदय हो आया। तदनुसार वे योगाचार या योगाचार्य नामक एक महायान-शाखाका उद्भव कर गए हैं। उन्होंने अपने जीवनका अवशिष्ट समय अयोध्या और मगधमें बिताया था। राजधानी राजगृहमें उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने एक योगशास्त्र लिखा है। चीनपरिव्राजक यूएन चुवङ्गके मतसे असङ्गने ही महायानके मध्य तन्त्रका प्रचार किया।

उनके छोटे भाई वसुबन्धु बाल्यावस्थामें सङ्घभद्र नामक काश्मीरवासी एक हीनयानके निकट पढ़ते थे। बादमें वे काश्मीरसे अयोध्या आये और कट्टर सर्वास्तिवादी बन गए। पहले तो उन्होंने अपने भाईके बनाये योगशास्त्रकी तीव्र निन्दा की पर पीछे वे महायानमतका अवलम्बन कर नालन्दा-मठके आचार्य हो गये। कुछ दिन वहीं रहनेके बाद उन्होंने वृद्धावस्थामें नेपाल (मतान्तरसे अयोध्या) जा कर देहरक्षा की। उनका अभिधर्मकोष बौद्धदर्शनका एक प्रधान ग्रंथ है। इसके अलावा वे बहुतसे महायानग्रंथोंकी टीका लिख गये हैं।

असङ्ग और वसुबधुके बाद दिङ्नाग, गुणप्रभ, स्थिरमति, सङ्घदास, बुद्धदास, धर्मपाल, शीलभद्र, जयसेन, चन्द्रगोमिन, चन्द्रकीर्त्ति, गुणमति, वसुमित्र, यशोमित्र, भव्य, बुद्धपालित, रविगुप्त प्रभृति बौद्धाचार्योंके नाम पाये जाते है। ये सब महायान-सम्प्रदायके अलङ्कारस्वरूप थे। इनके रचित धर्मशास्त्र तथा टीका बौद्ध समाजकी बड़े ही आदरकी वस्तु है।

६ठी और ७वीं शताब्दीमें बौद्धविज्ञानकी उन्नतिकी पराकाष्ठा देखी गई। उस समय दोनों सम्प्रदायने धर्मचर्चाकी ओर विशेष ध्यान दिया था।

७वीं शताब्दीके अन्तमें परिव्राजक इत्सिंह अपने भारतभ्रमण ग्रन्थमें लिख गये हैं, कि उनके पहले महामति धर्मकीर्त्ति बौद्धधर्म रक्षामें विशेष यत्नवान् थे। ये प्रसिद्ध हिन्दूदार्शनिक कुमारिल भट्टके समसामयिक थे।

७वीं शताब्दीमें ही उत्तरदेशीय बौद्धसमाजमें अर्थात् महायानोंके मध्य तान्त्रिकताका स्रोत प्रवाहित था। तान्त्रिकोंके संमिश्रणसे बौद्धसमाजमें प्रकृति (शक्ति), मातृडाकिनी, योगिनी प्रभृतिके उत्सवका प्रचार हुआ। ये स्वर्गीय मातृकाएं हिन्दू-देवदेवियोंकी पत्नीरूपमें गृहीत न हो कर 'स्वर्गस्थ बोधिसत्त्वोंकी पत्नी निर्द्धारित हुई थीं। साथ साथ भौतिकप्रक्रिया, चक्र-धारणी प्रभृति अनुष्ठानका भी अभाव नहीं था। उन्होंने भी दुष्टग्रहका प्रकोप निवारण करनेके लिये मन्त्रयुक्त कवचादि धारण करनेको सीखा था। अन्तमें यही मन्त्रयान कहलाने लगा।

आलोचना द्वारा जाना जाता है, एक समय मथुरा, काबुल, काश्मीर, कार्लि, नासिक, अमरावती, उद्यान, पञ्जाब, नालन्दा प्रभृति स्थानोंमें महायानधर्मकी प्रधानता प्रतिष्ठित हुई थी। इसका प्रमाण शिलाफलक और बौद्धसङ्घाराम अब भी दे रहा है। ७वीं शताब्दीमें कन्नौजराज हर्षवर्द्धन, शिलादित्य महायान मतके पृष्ठपोषक तथा हीनयानोंके घोर विरोधी हुए थे। हर्षचरित पढ़नेसे जाना जाता है, कि उनकी विधवा बहन राज्यश्री बौद्धभिक्षुणी हुई थी।

उसी समयसे हिन्दूप्राधान्यकी पुनः सूचना हुई। कर्णसुवर्णराज शशाङ्क और काश्मीरराज दुर्लभवर्द्धनके समयसे ही हिन्दूधर्मकी धीरे धीरे उन्नति तथा बौद्धधर्मकी अवनति होने लगी। इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि ८वीं शताब्दीके मध्यभागसे ही यथार्थमें बौद्धोंका अधःपतन हुआ।

६४० ई०को तिब्बतमें जो महायान-मत प्रचारित हुआ, उसमें भी तान्त्रिकताका प्रभाव देखा जाता है। यह तान्त्रिकतापूर्ण महायान-मत ही पीछे 'मन्त्रयान' नामसे प्रसिद्ध हुआ। बङ्गालके सभी पालराजा इसी मन्त्रयानमिश्रित महायानके पृष्ठपोषक थे। उनके समयमें सारा बङ्गाल-विहार मन्त्रयान-मतमें ही दीक्षित हुआ था। पहले ही कहा जा चुका है, कि शून्यवादके सिवा महायानोंके और सभी अनुष्ठान हिन्दूधर्मानुकूल थे, सुतरां उक्त मतावलम्बी तान्त्रिकमें विशेष प्रभेद नहीं था। इसीलिये जब बङ्गालमें सेनराजाओंका अभ्युदय और हिन्दूधर्ममें जब उनका अनुराग हुआ, तब जनसाधारणमें भी अनायास तान्त्रिकपथ फैल गया। इसमें उन्हें कुछ विशेष असुविधा न हुई। इस प्रकार मन्त्रयान मतावलम्बी बहुतसे बङ्गवासी हिन्दूराजाके प्रभावसे हिन्दूतान्त्रिक समझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाने लगे थे। मगधके नालन्दामें उस समय भी जो सब बौद्धतान्त्रिकगण थे, उनमेंसे बहुतोंने मुसलमानोंके अत्याचारसे स्वदेश छोड़ कर नेपालमें आश्रय लिया और अधिकांश मनुष्य मुसलमानोंके हाथसे मारे गये। इस तरह बुद्धकी जन्मभूमिसे बौद्धधर्म जाता रहा। नेपालमें जिन्होंने शरण ली, वे पुनः तान्त्रिक आचार्योंके शिष्य बन गये। वही तान्त्रिक आचार्यगण वज्राचार्य नामसे प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपनी अपनी प्रधानताकी रक्षाके लिए जो मत प्रचार किया, वही वज्रयान कहलाया। अब भी नेपालमें वज्रयान और तिब्बतमें कालचक्रयान प्रचलित है।

हीनयान और बौद्ध शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

महायानदेव (सं० पु०) चीन-परिव्राजक यूएनचुवंगकी उपाधि।

महायानपरिग्राहक (सं० पु०) महायान-मतावलम्बी।

महायानप्रभास (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

महायानसूत्र (सं० क्ली०) महायानोंके कुछ सूत्रग्रन्थोंके नाम।

महायाम (सं० क्ली०) सामभेद।

महायाम्य (सं० पु०) विष्णु।

महायावनाल (सं० पु०) देवधान्यवृक्ष, ज्वारका पौधा।

महायुग (सं० क्ली०) सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारों युगोंका समूह। मानवोंका यह चार युग देवताओंका एक युग होता है। युग देखो।

महायुत (सं० पु०) एक बड़ी संख्या जो सौ अयुतकी होती है।

महायुध (सं० पु०) महान् आयुधो यस्य। १ शिव, महादेव। (त्रि०) २ महा आयुधयुक्त, जिसे बड़ा शस्त्र या हथियार हो।

महायोगिन् (सं० पु०) १ श्रेष्ठ योगी। २ विष्णु। ३ शिव।

महायोगी (सं० पु०) महायोगिन् देखो।

महायोगेश्वर (सं० पु०) पितामह और पुलस्त्य आदि ऋषि।

पितामहः पुलस्त्यश्च वसिष्ठः पुलहस्तथा।
अङ्गिराश्च क्रतुश्चैव कश्यपश्च महानृषिः।
एते.....महायोगेश्वराः स्मृताः॥

पितामह, पुलस्त्य, वशिष्ठ, पुलह, अङ्गिरा, क्रतु और कश्यप ये सब ऋषि महायोगेश्वर कहलाते हैं।

महायोगेश्वरी (सं० स्त्री०) १ नागदमनी, नागदौना। २ दुर्गा।

महायोनि (सं० स्त्री०) योनिरोगविशेष, वैद्यकके अनुसार स्त्रियोंका एक प्रकारका रोग। इस रोगमें उनकी योनि बहुत बढ़ जाती है। यह रोग अत्यन्त दुःखदायक है। योनिरोग देखो।

महायौगिक (सं० पु०) २९ मात्राओंके छन्दोंकी संज्ञा।

महायौधाजय (सं० स्त्री०) सामभेद।

महार्घ्य (सं० त्रि०) पूज्य, पूजने लायक।

महारक्षस् (सं० क्ली०) भीषण राक्षस।

महारक्षा (सं० स्त्री०) बौद्ध-कुलदेवीभेद। महाप्रतिसरा, महामायूरी, महासहस्रप्रमर्दिनी, महाशीतवती और महामन्त्रानुसारिणी ये पांच महारक्षा हैं।

महारक्षित (सं० पु० बौद्ध-आचार्यभेद।

महारक्त (सं० क्ली०) प्रवाल, मूंगा।

महारजत (सं० क्ली०) महच्च तत् रजतञ्चेति। १ सुवर्ण, सोना। २ धुस्तूर, धतूरा। ३ बृहद् रौप्य।

महारजन (सं० क्ली) रज्यतेऽनेनेति रञ्ज करणे ल्युट् (अनिदिता मिति। पा ६।४।२४) इत्यत्र 'रजकरजनरजः सूपसंख्यानं कर्त्तव्यं' इति काशिकोक्त्या न लोपः, महच्च तत् रजनञ्चेति कर्मधा०। १ कुसुम्भपुष्प, कुसुमका फूल। २ स्वर्ण, सोना।

महारण (सं० पु०) महायुद्ध, घोर लड़ाई।

महारण्य (सं० क्ली०) महत् अरण्यं। बृहद्वन, बड़ा वन। पर्याय—अरण्यानी, कान्तार।

'प्रविश्य तु महारण्यं दण्डकारण्यमात्मवान्।
रामो ददर्श दुर्द्धर्षस्तापसाश्रम मण्डलम्॥ (रामायण ३।१।१

महारत (फा० स्त्री०) अभ्यास, मश्क।

महारतिवल्लभमोदक (सं० पु०) मोदकोषधिविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—सिद्धिबीजचूर्ण ५ पल, घी ४ पल, शक्कड़ १६ पल, शतावरीका रस ३२ पल, दूध ३२ पल, सिद्धिरस वा उसका काढ़ा ३२ पल, बकरीका दूध ३२ पल इन्हें एक साथ मिला कर पाक करे। पीछे उसमें आंवला, जीरा, मंगरेला, मोथा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, वानरीवीज (अलकुशीका बीया), गोरक्षतण्डुला, तालांकुर, केशराज, शृङ्गाटक, त्रिकटु, धनिया, अवरक, रांगा, हरीतकी दाख, कंकोली, क्षीरकंकोली, पिंडखजूर, कोकिलाक्षवीज, कटुकी, मुलेठी, कुष्ठ, लवङ्ग, सैन्धव, यमानी, वनयमानी, जीवन्ती और गजपिप्पली, प्रत्येकका चूर्ण २ तोला डाल दे। अनन्तर यथाविधान यह मोदक तैयार हो कर जब ठण्ढा हो जाय तब उसे सुगंधित करनेके लिये २ पल मधु तथा मृगमद और कपूरका चर्ण छोड़ दे। इसका सेवन करनेसे रक्तपित्त आदि विविध रोगोंको शान्ति तथा बल, वीर्य और रतिशक्तिकी वृद्धि होती है। (भैषज्यरत्ना० वाजीकरणाधि)

महारत्न (सं० क्ली०) महच्च तत् रत्नञ्चेति। मुक्तादि नवरत्न। मोती, हीरा, वैदुर्य, पद्मराग, गोमेद, पुष्पराग, मरकत, प्रवाल और नीलरत्न ये नौ प्रकारके महारत्न हैं।

महारत्नप्रतिमण्डित (सं० पु०) कल्पभेद।

महारत्नमय (सं० त्रि०) महार्घ्य रत्न-विशिष्ट।

महारत्नवत् (सं० त्रि०) महार्घ्य रत्नसम्पन्न।

महारत्नवर्षा (सं० स्त्री०) तान्त्रिकोंकी एक देवीका नाम।

महारथ (सं० पु०) रमन्ते लोका यस्मिन्निति रम (हनि कुषिनीरमिका शिभ्यः क्थन्। उण् २।२) इति क्थन्, महांश्चासौ रथश्चेति। १ शिव। महान् रथोऽस्य। २ अयुत धन्वीके साथ अस्त्रशस्त्रमें निपुण योद्धा।

"एको दशसहस्राणि योधयेद् यस्तु धन्विनाम्।
अस्त्रशस्त्रप्रवीणश्च महारथ इति स्मृतः॥"

(गीताटीकामें स्वामी)

जो अकेला दश हजार योद्धाओंसे लड़ सके उसीको महारथ कहते हैं। महान् रथः। ३ वृहद् रथ, बड़ा रथ। ४ राजविशेष।

महारथत्व (सं० क्ली०) महारथस्य भाव त्व। महारथका भाव वा धर्म, महारथका कार्य।

महारथी (सं० पु०) महारथ देखो।

महारथ्या (सं० स्त्री०) राजपथ, प्रधान रास्ता।

महारम्भ (सं० क्ली०) १ लवण। (त्रि०) २ जिसका आरम्भ करनेमें बहुत अधिक यत्न करना पड़े।

महरव (सं० पु०) महान् रवो यस्य। भेक, बेंग।

महारश्मिजालावभासगर्भ (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

महारस (सं० पु०) महान् अधिको रसोऽस्य रुचिप्रदत्वात् तथात्वं। १ काञ्जिक, कांजी। २ खजूर, खजूर। ३ कोषकार। ४ कसेरू। ५ इक्षु, ऊख। ६ पारद, पारा। ७ कान्तलौह, कांतीसार लोहा। ८ हिंगुल, ईंगुर। ९ स्वर्णमाक्षिक, सोनामक्खी। १० अभ्रक। ११ रौप्यमाक्षिक, रूपामक्खी। १२ जम्बूवृक्ष, जामुनका पेड़। (त्रि०) १३ महारसविशिष्ट, जिसमें खूब रस हो।

महारसवत् (सं० त्रि०) १ उत्कृष्ट आस्वादयुक्त, जिसमें बढ़िया स्वाद हो। (पु०) २ खाद्यविशेष।

महारसशार्दूल (सं० पु०) रसौषधविशेष। बनानेका तरीका—शोधित अवरक, तांवा, सोना, गंधक, पारा, मैनसिल, सोहागा, यवक्षार, हरीतकी, आंवला और बहेड़ा प्रत्येक ८ तोला; दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, जैत्री, लवङ्ग, जटामांसी, तालिशपत्र, स्वर्णमाक्षिक और रसाञ्जन, प्रत्येक ४ तोला। पान और गोमा सागमें सात वार भावना दे कर उसमें ८ तोला मिर्च छोड़ दे। इसका अनुपान और मात्रा दोषके बलाबलके अनुसार स्थिर करनी होगी। इसका सेवन करनेसे सूतिकारोग, ज्वर, दाह, वमिभ्रम, अतीसार, अग्निमान्द्य आदि रोग जाते रहते हैं। (रसेन्द्रसारसंग्रह सूतिकारोगाधिकार)

महारसाष्टक (सं० क्ली०) महारसानां अष्टकम्। अष्ट धातुविशेष। पारद, अभ्रक, हिंगुल, वैकान्त, स्वर्णमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक, शङ्ख और कान्त लौह यही अष्ट धातु हैं।

"दरदः पारदः सस्यो वैकान्तं कान्तमभ्रकम्।
माक्षिकं विमलञ्चेति स्युरेतेऽष्टौ महारसाः॥" (राजनि०)

महारसोनपिण्ड (सं० क्ली०) आमवात रोगको औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—लशुन १०० पल, बिना भूसीके तिल ५० पल, इन्हें मट्ठेके साथ पीस कर १६ सेर गायके दूधमें मिला दे। पीछे उसमें त्रिकटु, धनिया, चव्य, चितामूल, गजपीपल, वनयमानी, दारचीनी, इलायची और पिपरामूल, प्रत्येक १ पल, चीनी ८ पल, मिर्च ८ पल, कुट, ४ पल, मंगरेला ४ पल, मधु ४ पल, अदरक, ४ पल, घी २ पल, तिलतैल ८ पल, शुक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(कांजी) १० पल, सफेद सरसों ४ पल, रैंची ४ पल, हींग २ तोला और पञ्चलवण प्रत्येक दो तोला। इन्हें एक साथ मिला कर घाममें सुखा ले। पीछे उसे घीके घड़ेमें रख कर धानके ढेरमें १२ दिन तक रख छोड़े। प्रतिदिन सवेरे शरीरके बलानुसार उचित मात्रामें सेवन करे। इसका अनुपान सुरा, सौवीरक, सीधु या दूध, दही और पीठीको छोड़ कर जो पचा सके वही खाना उचित है। एक महीने तक इस महौषधका सेवन करनेसे वातज, कफज और पित्तज नाना प्रकारकी व्याधि अर्थात् प्रमेह, अर्श, गुल्म, कोढ़, क्षय, शोथ योनिशूल आदि रोग जाते रहते हैं। टूटी हुई हड्डीको जोड़ने और आमवातको दूर करनेमें यह विशेष फलदायक है।

महाराज (सं० पु०) महांश्चासौ राजा प्रभावविशेषवानिति। १ पूर्वजिनविशेष। महत्या दीप्त्या राजते अंगुलिषु शोभते इति राज-अच्। २ नख, नाखून। ३ राजाओंमें श्रेष्ठ, बहुत बड़ा राजा। ४ ब्राह्मण, गुरु, धर्माचार्य या और किसी पूज्यके लिये एक संबोधन। ५ एक उपाधि जो आधुनिक भारतमें बृटिश सरकारकी ओरसे बड़े बड़े राजाओंको दी जाती है। ६ रुद्र-सम्प्रदायी, वल्लभाचारी और गोकुलके गोसांई आदि हिन्दू-सम्प्रदायके आचार्यों को उनकी शिष्यमण्डली 'महाराज' का उपाधि देती है। मथुरा, वृन्दावन, गुजरात, मालवा, बम्बई, उदयपुर और आस पासके श्रीजीद्वारमें आचार्य महाराजाओंका वास है। इन सब महाराजाओंमें श्रीजीके महाराज ही सबसे श्रेष्ठ हैं। ये लोग वैष्णवधर्मावलम्बी हैं, श्रीकृष्णकी बालगोपाल-मूर्त्तिकी उपासना करते हैं।

इस सम्प्रदायके लोग कभी कभी अपने दीक्षागुरु महाराजको पूजा करनेको इच्छासे उन्हें अपने घर लाते हैं। श्रीकृष्णकी रासयात्रा और होली पर्वमें प्रायः महाराज ही हिंडोले पर झूल झूल कर अपनी शिष्याणीके साथ फाग खेलते हैं।

वल्लभाचारी साम्प्रदायिक मतसे महाराजगण सभी शिष्याणीके पतिस्वरूप हैं। पहले उत्सवके समय रमणियां महाराजके घर आया करती थीं। कुछ स्त्रियां तो बार बार उनके घर आ कर अपनी कुललज्जा खो देती थीं। १८५५ ई०में वल्लभाचारियोंने एक सभा करके अपनी कुलवती भार्याको गुरुके घर भेजनेका एक समय निर्दिष्ट कर दिया। उस समय प्रायः महाराजगण देवमन्दिरादि पूजाकर्ममें लगे रहते थे। १८६२ ई०में महाराजके चरित्र पर संदेह किया गया और उक्त प्रथा उठा दी गई।

वल्लभाचार्य देखो।

महाराज—सह्याद्रि-वर्णित एक राजा।

महाराजक (सं० पु०) राजते इति राज-बुन्, महांश्चासौ राजकश्चेति। महाराजिकगण।

महाराजगञ्ज—सारण जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह छपरासे १२॥ कोस उत्तर-पश्चिम अक्षा० २६° ७' उ० तथा देशा० ८४° १०' पू०के मध्य अवस्थित है। रावलगञ्जकी तरह यहां भी जोरों वाणिज्यव्यापार चलता है। जनसंख्या तीन हजारसे ऊपर है।

महाराजगञ्ज—पटना जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यहां पटना, गया और शाहाबाद जिलेके सभी प्रकारके अनाज बिकनेको आते हैं। पटना नगरका यही स्थान वाणिज्यकेन्द्र समझा जाता है।

महाराजगञ्ज—युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलेकी उत्तरीय तहसील। यह अक्षा० २६° ५४' से २७° २६' उ० तथा देशा० ८३° ७' से ८३° ५७' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १२३६ वर्गमील और जनसंख्या पांच लाखसे ऊपर है। तोलपुर, विनायकपुर और हवेली परगनेके अंशको ले कर यह उपविभाग संगठित हुआ है। इसमें सिसवा बाजार नामक १ शहर और १२६५ ग्राम लगते हैं। तहसीलका उत्तरीय भाग जंगलसे आच्छादित है। पहाड़ी प्रदेशमें एकमात्र गोरखा, नेपाली और थारु जातिका वास देखा जाता है।

महाराजगञ्ज—युक्तप्रदेशके रायबरेली जिलेकी उत्तरीय तहसील। इनहुना, बछरावान, सिमरौता, कुल्हारबाग, मोहनगञ्ज और हरदोई परगने ले कर यह तहसील संगठित हुई है। यह अक्षा० २६° १७' से २६° ३६' उ० तथा देशा० ८०° ५६' से ८१° ३४' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४६५ वर्गमील और जनसंख्या तीन लाखके करीब है। इसमें ३६ ग्राम लगते हैं, शहर एक भी नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाराजगञ्ज—अयोध्याप्रदेशके उनाव जिलेके अन्तर्गत एक नगर।

महाराजचूत (सं० पु०) महता मिष्टादिगुणेन राजते आद्रियते इत्यच्, ततः कर्मधारयः। उत्तम आम्र; बढ़िया आम। पर्याय—महाराजाम्रक, स्थूलाम्र, मन्मथानन्द, कङ्क, नीलकपित्थक, कामायुध, कामफल, राजपुत्र, नृपात्मज, महाराजफल, काम, महाचूत। कच्चेका गुण—कटु, अम्ल, पित्त और दाहवर्द्धक। पक्केका गुण—स्वादु, मधुर, पुष्टि, वीर्य और वलप्रद।

महाराजद्रुम (सं० पु०) महाराजोऽतिश्रेष्ठो द्रुमः। आरग्वधवृक्ष।

महाराजनगर—अयोध्याप्रदेशके सीतापुर जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह लाहारपुरसे खेरी जानेके रास्ते पर, सीतापुर नगरसे ८ कोस पूर्वमें अवस्थित है। मुसलमानी अमलदारीमें यह नगर वसाया गया है। उस समय इसका नाम इस्लामपुर था। पीछे राजा तेजसिंह नामक किसी गौड़ीय राजपूतने इसे जीत कर महाराजपुर नामसे घोषित किया। आज भी यह स्थान उन्हीं लोगोंके अधिकारमें है।

महाराजनगर—मध्यभारतके बुन्देलखण्डके अन्तर्गत चरखाड़ी सामन्तराज्यका एक नगर।

महाराजनृपतिवल्लभरस (सं० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—कांतीसार लोहा ६ तोला, अवरक, तांबा, मुक्ता और सोनामक्खी प्रत्येक दो तोला, सोना, चांदी, सोहागा, कर्कटशृङ्गी, गजपीपल, दन्तमूल, मिर्चा, तेजपत्र, यमानी, अतिवला, मोथा, सोंठ, धनिया, सैन्धवलवण, कपूर, विड़ङ्ग, चिता, विष, पारा, गन्धक प्रत्येक १ तोला, निसोथका चूर्ण २ तोला, लवङ्ग, जायफल, जैत्री, दारचीनी प्रत्येक ४ तोला कुल मिला कर जितना हो उसका आधा विट्लवण तथा सबके समान इलायची उसमें मिलावे। पीछे वकरीके दूधमें ७ वार और टाबा नीवूके रसमें सात वार भावना दे कर १० रत्तीकी गोली वनावे। गोलीको छायामें सुखा लेना होगा। इसका सेवन करनेसे मन्दाग्नि, संग्रहणी, आम, कोष्ठवद्ध, कृमि, पाण्डु, छर्दि, अम्लपित्त, हृद्रोग, गुल्म, उदरी, भगन्दर, अर्श, पित्तरोग आदि रोग जाते रहते हैं।

दूसरा तरीका—सोनामक्खी, लोहा, अवरक, रांगा, चांदी, सोना, सोहागा, सोंठ, तांवा, पिपरामूल, दारचीनी, यमानी, सैन्धवलवण, अतिवला, मोथा, धनियां, गंधक, पारा, कपूर और कर्कटशृङ्गी प्रत्येक एक एक माशा, हींग २ माशा, मरिच ४ माशा, जैत्री, लवङ्ग और तेजपत्र, प्रत्येक १ तोला, छोटी इलायची १२ तोला ३ माशा, विट्लवण ४ तोला, इन सब वस्तुओंको वकरीके दूधमें अच्छी तरह पीस कर ४ रत्तीकी गोली वनावे। इसका सेवन करनेसे आनाह, ग्रहणी और पूर्वोक्त रोग अति शीघ्र नष्ट होते हैं।

(रसेन्द्रसारस० ग्रहणीरोगाधि०)

महाराजपुर—मध्यप्रदेशके मण्डला जिलान्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम। यह अक्षा० २२° ३५′ उ० तथा देशा० ८०° २४′ पू० नर्मदा और वंजारा नदीके संगमस्थल पर अवस्थित है। पहले यह स्थान ब्रह्मपुत्र नामसे प्रसिद्ध था। १७३७ ई०में राजा महाराज शाहने इसे अपने नाम पर बसाया। प्रतिवर्ष यहां एक मेला लगता है।

महाराजपुर—सन्थाल परगनेके राजमहल विभागान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह अक्षा० २५° ११′ ४५″ उ० तथा देशा० ८७° ४७ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां इष्ट-इण्डियन-रेलवेका एक स्टेशन है।

महाराजपुर—मध्यप्रदेशके ग्वालियर राज्यान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह अक्षा० २६° २८′ उ० तथा देशा० ७८° ७ पू०क मध्य अवस्थित है। जनसंख्या चार सौके करीब है। १८४३ ई०को २६वीं दिसम्बरको अंगरेज-सनापति सर ह्यु गाफने यहां पर मरहठोंको परास्त किया था। मरहठोंने रणक्षेत्रमें ५६ कमान और वारूद तथा गोला गोली छोड़ कर ग्वालियरके दुर्गमें आश्रय लिया। इस युद्धकी विजयकीर्त्तिकी घोषणा करनेके लिये उन सब कमानोंको धातुसे कलकत्तेमें एक स्मृतिस्तम्भ बनाया गया है।

महाराजप्रसारिणीतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ६८ सेर, काढ़ेके लिये भल्लातक ३०० पल, असगंध, रेंड़ीका मूल, विजवंद, शतमली, रास्ना, पुनर्णवा तथा दशमलका प्रत्येक द्रव्य और फरहदकी छाल प्रत्येक द्रव्य १०० पल करके, देवदारु ५०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पल, शिरीषकी छाल ५० पल, लाख २५ पल, लोध २५ पल इन्हें एक साथ ८४०० सेर पानीमें पाक करे। जब १२८ सेर पानी रह जाय, तब उसे उतार ले। पीछे उसमें कांजी ६४ सेर (यद्यपि कांजीका परिमाण २६ आढ़क बतलाया गया है, तो भी ६४ सेर ही देना चाहिये, नहीं तो तेलसे केवल कांजीकी ही गंध निकलेगी) दूध ४० सेर, दही ४० सेर, दहीका पानी १६ सेर, ईखका रस ३२ सेर, बकरेका मांस ३०० पल, पाकार्थ जल १८० सेर, शेष ६८ सेर, मजीठ ६० पल, जल ६० सेर; शेष १५ सेर पहले इन्हीं सब द्रव्योंके साथ तैलपाक करे। पीछे उस में भल्लातककी गुठली (असह्य होने पर लाल चन्दन) पीपल, सोंठ, मिर्च, प्रत्येकका रस ६ पल, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, सरलकाष्ठ, सोयां, कर्कटशृङ्गी, वच, कचूर, मोथा, नागरमोथा, पद्मपुष्प, भेट, पिपरामूल, मजीठ, असगंध, पुनर्णवा, दशमूल, चकवंद, रसाञ्जन, गन्धतृण, हरिद्रा, जीवनीयगण प्रत्येक २ पल। पहले इन सबका चूर्ण डाल कर तेलपाक करना होगा। लवङ्ग, गंधबोल, तेजपत्र, धूना, शैलज, प्रियंगु, खसखसकी जड़, सौंफ, जटामांसी, देवदारु, लवणखोटि (लोवान) नालुका, काष्ठखोटी, छोटी इलायची, कन्दूरखोटी, मुरा-मांसी, तीन प्रकारकी नखी (पहला गूलरपत्रके जैसा, दूसरा उत्पलके जैसा, तीसरा घोड़ेके खुरके जैसा), दारचीनी; तेजपत्र, चव्य, खट्टासी, चम्पेकी कली, दौनेका फूल, रेणुक, चोर कंकोली और झंटी, प्रत्येक ३ पल इन सबके चूर्ण और गन्धोदकके साथ दूसरी-बार पाक करना होगा। गन्धोदक साधनका नियम—तेजपत्र, पत्रक, खसखसकी जड़, मोथा, सुगंधवालाका मूल, प्रत्येक २५ पल, कुट ११॥ पल जल १०० सेर शेष ५० सेर, दूसरा पाक इसी गन्धजलके साथ होगा।

इस गन्धजल और चन्दन जलके साथ पीछेका लिखा हुआ कल्कपाक करना होगा। चन्दनाम्बु प्रस्तुत करने-का नियम,—५० पल चन्दनको ५० सेर जलमें सिद्ध कर जब २५ सेर जल बच रहे, तब उसे उतार ले। पूर्वोक्त गन्धजल ५० सेर और चन्दनजल २५ सेरके साथ नागे-श्वर, कुट, दारचीनी, केशर, श्वेतचन्दन, गठिवन, लता-कस्तूरी, लवङ्ग, अगुरु, कंकोल, जयित्री, जायफल, इला-यची और लवङ्ग, प्रत्येक ३ पल, मृगनाभि ६ पल, कपूर १॥ पल इन्हें तेलमें डाल कर पाक करे। पीछे इसमें मृगनाभि ६ पल और कपूर १॥ पल छोड़ दे।

महाराज-प्रसारिणीतैलमें जो कांजी देनेका विषय कहा गया है, वह निम्नोक्त शुक्तका लक्ष्य करके। शुक्त बनानेका नियम—अनाजका मांड़ ४ सेर, कांजी ८० सेर, दही २ सेर, गुड़ २ सेर, अम्लमूलक (कांजीके नीचेका अन्न) १ सेर, अदरक, २ सेर, पिपरा, जीरा, सैन्धव, हरिद्रा और मिर्च, प्रत्येक २ पल, इन्हें एकत्र कर घीके बरतनमें ८ दिन तक रख छोड़े। पीछे उसमें दारचीनी, तेजपत्र, इलायची और नागेश्वर प्रत्येकका चूर्ण ६ तोला डालना होगा। इसीको शुक्त कहते हैं।

इसी शुक्तसे तैलपाक करना होगा। विशेष अभिज्ञ वैद्यको बड़ी सावधानीसे तथा शुचि हो कर यह तैलपाक करना चाहिये। यह महाराजप्रसारिणी तैल राजसेव्य है। इसकी शक्ति अन्यान्य प्रसारिणी तेलकी अपेक्षा बढ़ी चढ़ी है। इसके व्यवहारसे सभी प्रकारकी वात-व्याधि जाती रहती है।

(भैषज्यरत्ना० वात व्याधिरोगाधि०)

महाराजवटी (सं० स्त्री०) वटिकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गंधक और अबरक, प्रत्येक दो तोला, वृद्धदारक, रांगा, लोहा प्रत्येक १ तोला, सोना, कपूर और तांबा प्रत्येक ८ तोला, गांजा, शतमूली, श्वेतधूंप, लवङ्ग, तालमखाना, भूमिकुष्माण्ड, तालमूली, शूकशिम्बी, जातिफल, जैत्री, विजबंद और गोपवल्ली प्रत्येक दो मांशा इन्हें तालमूलीके रसमें पीसे। पीछे नियमानुसार इसे तैयार कर ४ रत्तीकी गोली बनावे। इसका अनुपान मधु है। इसके सेवनसे सब प्रकारके वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सान्निपातिक ज्वर, खांसी, दमा, कमला, प्रमेह और रक्तपित्त आदि रोगोंकी शान्ति होती है। यह बल और पुष्टिकर है। इस औषधका सेवन कर यदि नित्य स्त्री प्रसङ्ग किया जाय, तो शुक्र और बलका ह्रास नहीं होता। (रसेन्द्रसारस० ज्वराधि०)

महाराजाधिराज (सं० पु०) १ बहुत बड़ा राजा, अनेक राजाओंमें श्रेष्ठ। २ एक प्रकारकी पदवी जो ब्रिटिश भारतमें सरकारकी ओरसे बड़े राजाओंको मिलती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाराजिक (सं० पु०) महती राजिः पङ्क्तिरस्य (शेषाद्यि-भाषा। पा ५।४।१५४) इति कप्। गणदेवताविशेष, एक प्रकारके देवता जिनकी संख्या कुछ लोगोंके मतसे २३६ और कुछ लोगोंके मतसे ४००० है।

महाराजोपचार (सं० पु०) महाराजार्थं उपचारः, महाराजानामुपचारो वा। राजार्हपूजोपकरण, महाराजाके योग्य पूजाकी सामग्री, चामर, छत्र पादुका आदि।

ततश्च चामरच्छत्रपादुकादीन् परानपि।
महाराजोपचारांश्च दत्त्वादर्शे प्रदर्शयेत्॥"
(विष्णुधर्मोत्तर)

देवपूजामें महाराजोचित उपचार सामग्री दे कर पूजा करनी होती है। ऐसा करनेसे अशेष पुण्यलाभ होता है।

हरिभक्तिविलासके अष्टम विलासमें इसका विशेष विवरण लिखा है।

महाराज्ञी (सं० स्त्री०) १ दुर्गा। २ महारानी।

महाराज्य (सं० क्ली०) बहुत बड़ा राज्य, साम्राज्य।

महाराणा (सं० पु०) उदयपुर वा चित्तौर राजवंशकी उपाधि। मेवार, चित्तौर और उदयपुर देखो।

महारात्र (सं० क्ली०) द्विपहर रात्रि, आधी रात।

महारात्रि (सं० स्त्री०) महत्यां प्रलयावस्थायां रातिं आत्मस्वरूपं ददाति सुप्तशक्त्या सर्वान् जीवान् आत्मरूपेण अवस्थापयति त्रायते पञ्चपर्व्वलक्षणाया अविद्यायाः सकाशात् रक्षतीति त्रै-इ। १ ब्रह्मलयोपलक्षिता महाप्रलय-रात्रि। जब कि ब्रह्माका लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है तब उसीको महारात्रि कहते हैं।

"ब्रह्मणाञ्च निपाते च महाकल्पो भवेन्नृप।
प्रकीर्त्तिता महारात्रिः सा एव च पुरातनैः॥"
(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्र०ख० ५ अ०)

२ दुर्गा। ३ तान्त्रिकोंके अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्त्तोंका समय जो बहुत ही पवित्र समझा जाता है। कहते हैं, कि इस समय जो पुण्य कृत किया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

"अर्द्धरात्रात् परं यच्च मुहूर्त्तद्वय मुच्यते।
सा महारात्रिरुदिता तदत्तमक्षयं भवेत्॥" (तन्त्रशास्त्र)

४ आश्विनकी शुक्लाष्टमी, दुर्गाष्टमी, नवरात्र।

"शुक्लाष्टमी चाश्विनस्य नवरात्रं तु तत्र वै।
महारात्रिर्महेशानि कालरात्रिं शृणु प्रिये॥"
(शक्तिसङ्गमतन्त्र)

महाराम—१ आसामप्रदेशके खासिया पहाड़ी प्रदेशके अन्तर्गत एक सामन्त राज्य। यहांके सर्दारगण सियेम कहलाते हैं। राजा उकिसन सिंह १८८४ ई०में राज्य करते थे। यहांके निवासी खनिज लोहेका अस्त्र शस्त्र बनाना जानते हैं।

२ उक्त प्रदेशके अन्तर्गत एक दूसरा सामन्तराज्य। यहांकी आय १०४० रु० है। सर्दार सियेम सिंह १८८५ ई०में मौजूद थे। इस पहाड़ी भूमिसे अनेक प्रकारका द्रव्य निकलता है।

महारामायण (सं० क्ली०) बृहत् रामयण, बड़ा रामायण।

महारावण (सं० पु०) पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएं थीं। अद्भुत रामायणके अनुसार इसे जानकीजीने मारा था।

महारावल—राजपूताना, जैसलमेर और डूंगरपुर राजवंशकी उपाधि। मारवाड़, जयपुर और योधपुर देखो।

महाराष्ट्र—भारतवर्षके दक्षिण-पश्चिमान्तवर्त्ती एक विस्तीर्ण जनपद। इसके उत्तरमें सूरतप्रदेश और शतपुरा गिरिश्रेणी, पश्चिममें अरब समुद्र, दक्षिणमें कर्णाट प्रदेश और पूर्वमें गोण्डावन तथा तैलिङ्ग है। पूर्व ओरकी सीमा स्पष्टरूपसे बतलानेमें यह कहना पड़ता है, कि गङ्गा और वर्द्धा (वरदा) नदी, माणिकदुर्ग, माहुरनगर, नान्देड़, बिदर और तालिकोट नगर महाराष्ट्रदेशकी पूर्वसीमा पर अवस्थित है। कृष्ण और मालभद्रा नदी तथा बेलगांव जिलेका दक्षिणांश और सदाशिवगढ़ (करवाड़) ये सब देश इसकी दक्षिणसीमाके रूपमें गिने जाते हैं। कृष्णनदीके दक्षिणी किनारे जिस भूमिखण्डको 'दक्षिण-महाराष्ट्र' कहते हैं, अंगरेज ऐतिहासिक ग्राण्ट-डफ-साहबने उसे महाराष्ट्रदेशके अन्तर्गत बतलाया है। यथार्थमें यह प्रदेश महाराष्ट्र-देशके ही अन्तर्भुक्त है। इस विशाल देशका क्षेत्रफल लगभग एक लाख पचीस हजार वर्गमील है। इस देशकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जनसंख्या करीब तीन करोड़ है। महाराष्ट्र प्रदेश साधारणतः पथरीला और उपजाऊ है। यहांका जल-वायु भारतवर्षके अनेक स्थानोंके जलवायुकी अपेक्षा स्वास्थ्यकर है।

प्राकृतिक दृश्य।

सह्यपर्वत महाराष्ट्रदेशको पूर्वपश्चिम दो भागोंमें बांटता है। उनमेंसे पूर्वाञ्चलका नाम 'देश' और पश्चिमाञ्चल 'कोङ्कण' है। शेषोक्त प्रदेशकी लम्बाई उत्तरमें दमनगङ्गासे ले कर दक्षिणमें सदाशिवगढ़ तक लगभग चार सौ मील है और चौड़ाई कुल मिला कर ५० मील है। यह प्रदेश अत्यन्त वन्धुर, अनुर्वर तथा पर्वतोंसे परिपूर्ण है। कोङ्कणका जो अंश पश्चिमघाट गिरिमालाके समीप अवस्थित है, उसे 'कोङ्कणघाटमाथा' कहते हैं। घाटमाथाका पाददेशस्थित भूभाग बोल-चालमें "तलकोङ्कण" या निम्न कोङ्कण नामसे प्रसिद्ध है। यहांके अधिवासी साधारणतः सरलहृदय, कष्ट-सहिष्णु, उद्यमशील, शिकारी तथा शान्तप्रकृतिके हैं।

विस्तृत विवरण कोङ्कण शब्दमें देखो।

कोङ्कणके पूर्व पश्चिमघाट-पर्वत श्रेणी अपनी विशाल देहको ऊंचा किए हुए प्राचीराकारमें अवस्थित है। इस पर्वतका दृश्य अत्यन्त गम्भीर, भयानक और सुन्दर है। कहीं ओषधिपूर्ण शैलश्रेणी विद्यमान है, कहीं सात महीने तक वर्षा ही होती रहती है और कहीं वन्य-जन्तुओंका भीषण गर्जन हमेशा सुनाई देता है। इस प्राचीरवत् शैलश्रेणीमें कहीं कहीं पर मनुष्योंके आने जानेके लिए कई एक बहुत तंग रास्ते हैं जो 'घाट' कहलाते हैं। ये सब पार्वत्यपथ अत्यन्त विघ्नपूर्ण और दुरारोह हैं। स्थानीय मनुष्योंके सिवा दूसरे कोई भी उस पथसे विचरण नहीं कर सकते। इस सङ्कट-मय रास्तेको पार कर सह्याद्रिके समीप जानेसे पर्वत और वनसे घिरे हुए अनेक छोटे छोटे गांव नजर आते हैं। यह भूमिखण्ड 'कोङ्कणघाटमाथा' (शीर्ष) कहलाता है। इसीका एक अंश "मालव" नामसे प्रसिद्ध है। महात्मा शिवाजीकी मालवी-सेना इसी प्रदेशसे संगृहीत होती थी। घाटमाथाकी चौड़ाई कहीं भी २०-२५ मीलसे ज्यादा नहीं है। इस प्रदेशका अधिकांश वन्धुर, जङ्गलमय तथा हिंस्रजन्तुसे परिपूर्ण है। वर्षाकालमें यह प्रदेश बड़ा ही डरावना मालूम पड़ता है और वर्षाके अधिकांश समयमें यहां बदली छाई रहती है। यहांकी गिरिशिखरमालाएं इस प्रकार अवस्थित हैं, कि थोड़े परिश्रमसे ही वे सब अत्यन्त दुर्भेद्य दुर्गमें परिणत की जा सकती हैं। घाटमाथाकी शिखरावली पर आज भी छत्रपति शिवाजीके बनाये सिंहगढ़ प्रभृति सैकड़ों दुर्ग नजर आते हैं। ऐसा सुदृढ़ प्रदेश पृथ्वी पर बहुत कम देखनेमें आता है। इस-प्रदेशके मनुष्य स्वभावतः मृगयाकुशल, लक्ष्यबेधमें निपुण बलशाली, साहससम्पन्न और धर्ममें गभीर विश्वासयुक्त हैं, इसमें सन्देह नहीं है।

कोङ्कण-घाटमाथासे उतर कर पूर्वकी ओर जानेसे क्रमशः शैलविरल, नदनदीसमन्वित, सुविशाल और कहीं कहीं समतल क्षेत्र देखनेमें आता है। इस प्रदेश, को महाराष्ट्रीयगण 'देश' कहते हैं। देश या पूर्व महाराष्ट्र देश कोङ्कणकी तरह ऊसर नहीं है। ताप्ती, गोदावरी और कृष्णानदी तथा वेणगङ्गा, नीरा, भीमा, मञ्जिरा आदि उपनदियां पूर्व महाराष्ट्रदेशको कुछ कुछ उपजाऊ बनाती हैं। फिर भी वर्षाकालके सिवा दूसरे समयमें इस प्रदेशकी अधिकांश भूमि मरुभूमिकी तरह उद्भिज्जशून्य रहती है। इस अञ्चलमें जाड़े, गर्मी और तूफानका प्रकोप भी कुछ कम है। धान, गेहूं, ज्वार और बाजड़ा यहांकी प्रधान उपज है। ईख, कपास, चीनाबादाम और तंबाकूकी खेती तथा बिक्री होती है।

पूर्व महाराष्ट्रप्रदेश भी एकबारगी पर्वतशून्य नहीं है। "चान्दोर गिरिश्रेणी" "अहमदनगर शैलमाला" "शम्भूशिखरावली" और पूनाकी दक्षिणस्थित शैलपंक्ति, इन चारोंने सुदृढ़ प्राकारकी तरह महाराष्ट्रदेशको दुर्भेद्य बना रखा है। यह प्रदेश दश जिलोंमें विभक्त है। गोदावरी, भीमा, नीरा और माननदीके तीरवर्ती प्रदेशोंमें बड़े ही सुन्दर महाराष्ट्री घोड़े पाये जाते हैं। ये घोड़े छोटे कदके, गुसवर, अत्यन्त कष्टसहिष्णु और भारी बोझ ढोने तथा पर्वतमय प्रदेशमें बहुत तेज चलनेवाले होते हैं। महाराष्ट्रोंके अभ्युदयके पक्षमें ये बड़े ही कामके हुए थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिवासी।

महाराष्ट्रदेशके अधिवासी साधारणतः मराठा या मरहट्ठा कहलाते हैं। किन्तु महाराष्ट्रमें "मराठा" कहनेसे पूर्वमहाराष्ट्रवासी क्षत्रिय और कृषक ही समझे जाते हैं। उत्तर-भारतकी तरह दक्षिणमें भी चातुर्वर्ण्य व्यवस्था है। महाराष्ट्रीय ब्राह्मण पञ्चद्राविड़के अन्तर्भुक्त हैं। ये प्रधानतः देशस्थ, कोङ्कणस्थ, कहाड़ और देवरुथ इन्हीं चार श्रेणीमें विभक्त हैं। इन चार श्रेणियों-में कन्याका आदानप्रदान शिष्टाचारविरुद्ध तथा अत्यन्त विरल होने पर भी ये एक दूसरेके यहां विना रोक टोक-के खाते पीते हैं। जो मद्य, मांस और मत्स्य नहीं खाते महाराष्ट्रमें वे ही प्रकृत ब्राह्मण गिने जाते हैं। इसीलिये मत्स्याहारी शेवणी या सारस्वत ब्राह्मणोंको महाराष्ट्र-की ब्राह्मणश्रेणीमेंसे कोई भी ऊंचा आसन नहीं देते। महाराष्ट्रीय ब्राह्मण बुद्धिमान्, विश्वस्त तथा कार्यदक्ष होते और शास्त्रोक्त सोलह प्रकारके संस्कारोंका यत्न-पूर्वक अनुष्ठान करते हैं। शिवाजीके उच्चपदस्थ कर्म-चारियोंमेंसे बहुतेरे देशो ब्राह्मण ही थे। महात्मा राम-दास स्वामी, एकनाथ स्वामी, ज्ञानेश्वर, मुकुन्दराम, आदि बड़े बड़े कवि, पण्डित और धर्मोपदेशक साधु-पुरुष देशस्थ ब्राह्मणश्रेणीभुक्त थे। महाराज शाहूके राजत्वकालसे कोङ्कणके ब्राह्मणोंकी प्रतिपत्ति बढ़ने लगी। पूनाके पेशवा और दक्षिण-महाराष्ट्रके प्रसिद्ध सरदारगण कोङ्कणके ही वासी थे। बुन्देलखण्ड और मध्यभारत अञ्चलमें कहाड़गण बहुत बढ़े चढ़े थे। 'झांसीकी रानी लक्ष्मीबाई कहाड़-ब्राह्मणवंशकी थी। महाराष्ट्रदेशके बहुत प्रसिद्ध कवि मरोपन्त भी इसी कहाड़-श्रेणीके ब्राह्मण थे। ग्वालियर-महाराज सिन्धिया-के दरबारमें शेणवियोंका ही अधिकतर चला बना है। महाराष्ट्रमें हजार पीछे लगभग ३५० ब्राह्मण लिखे पढ़े हैं। उनमेंसे सैकड़े पीछे अंगरेजी भाषा जानते हैं। महाराष्ट्र-ब्राह्मणरमणियोंमें परदा-रिवाज कुछ भी नहीं है। ये बड़ी ही श्रमशीला और गृहधर्ममें सुनिपुण होती हैं। इनमेंसे हजार पीछे २७ पढ़ी लिखी है।

महाराष्ट्रवासी कायस्थगण प्रभु कहलाते हैं। शिवाजीके समयमें इन्होंने कार्यदक्षता, बुद्धिमत्ता, साहस तथा स्वदेश हितैषितागुणसे यथेष्ट ख्याति प्राप्त की थी। बङ्गाल विहार आदिकी तरह महाराष्ट्रमें भी ये लोग मसि-जीवी हैं। पहले असिजीवी कायस्थोंकी संख्या अधिक थी। इसीलिए ये सब बहुत दिनोंसे क्षत्रिय ही कहे जाते हैं। प्राचीन कालमें बहुत जगह क्षत्रियत्व ले कर बड़ा ही गोलमाल हुआ था। वर्त्तमान समयमें इन लोगोंमें हजार पीछे लगभग १६० मनुष्य अंगरेजी और ३३० मराठी भाषा लिख पढ़ सकते हैं। प्रभु-रमणियोंके मध्य सैकड़े पीछे ६ लिखना पढ़ना जानती हैं। इनमें अंगरेजी शिक्षाका भी खूब प्रचार हुआ है। हजारमें ६ प्रभु रमणी अंगरेजी भाषा भी जानती हैं। इन लोगोंमें परदेकी प्रथा प्रचलित है।

महाराष्ट्रमें मराठोंकी संख्या (बेरार छोड़ कर) लगभग आठ लाख है। ये दो श्रेणीमें विभक्त हैं। उनमें-से जो केवल मराठा या कुलीन मराठा कहलाते हैं, वे ही क्षत्रिय होनेका दावा रखते हैं। पूर्ण इतिहास पढ़ने-से अनेक मराठा परिवारको ही क्षत्रिय कहना पड़ता है। ये नाटे, बलिष्ठ, समरप्रिय, बुद्धिमान् तथा स्वाधीनता प्रयासी होते हैं। श्रद्धालुता, दृढ़चित्तता, अनालस्य, आतिथेयता और कलह-प्रियता इनके चरित्रकी विशेषता है। ये बाल्य-विवाहके पक्षपाती और विधवा-विवाहके विरोधी हैं। ये जनेऊ भी पहनते हैं। मराठा ९६ कुलमें बटे हैं। कुलके नामानुसार ही उनकी उपाधि होती है। नीचे सबोंकी तालिका दी जाती है,—सुरवे, पवार (प्रमार), भोंसले, घोरपड़े, राने, शिन्दे, शालुंके, सिसोदे, जगताप, मोरे, मोहिते, चौहान, दभाड़े, गायकवाड़ सावन्त, महाड़ीक, तावड़े, धूलप (धुमाल, धुले), बनवे, शिरके, तोयर, यादव, दलवी, सालवे, मुलीक, पालवे, कदम, नलौड़े, बाघ, राउत, निसीम, पारवे, कासरे, माली, माने, मराड़े, काठे, कासले, निम्बालकर, धड़म, वारंगे, दलपते, गवाली, नवसे, घरत, नाइक, घोर, विचारे, सितोल, धाड़, गवसे, सकपाल, नकासे, राव, दुधे, पाटक, सीगवन, घाटगे, पाताड़े, बाघमारे, आपराधे, भोवर, जोशी, कलपाते, दर-वार, केशरकर, कामरे, कांठे, काठवटे, रणदिवे (रणाद्वीप)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकम, भाते, कम्बले, ठाकुर, भोहर, भोगले, साङ्गल, नामजादे, जाम्बले, चिरकुले, धुरे, परव, दिवटे, फांकड़े, शेलके, वागवान, गांवड़, मोकल, तामटे, वुलके, धावड़े, जालिन्धरे, जशवन्त, जगपाल, पटेल, जगले, धुमक, सीरगरे, घरत और अहिराव। इनमेंसे भोंसले, सावन्त, खानविलकर, सुरवे, घोरपड़े, चौहान, शिरके, मोरे, मोहिते, निम्बालकर, अहिराव, शालोंके, माने, यादव, महाड़ीक, पवार, दलवी, घाटगे आदि परिवार वंश-मर्यादामें श्रेष्ठ गिने जाते हैं। मराठा क्षत्रियोंके मध्य प्रदेशकी प्रथा प्रचलित है।

जो सब मराठा कृषिजीवी, व्रात्य-भावापन्न अथवा सङ्कर होते हैं, वे कुनवी कहलाते हैं। ये युवा अवस्था होने पर ही कन्याका विवाह करते हैं। निम्नश्रेणीके कुनवियोंमें विधवा-विवाह भी प्रचलित है। कुनवी क्षत्रियत्वका दावा नहीं करते, अपनेको शूद्र वतलाते हैं। मराठा क्षत्रिय इनकी कन्यासे विवाह करते, किन्तु ये किसी भी कुलीन मराठेका जमाई नहीं हो सकते। देशस्थ और कोङ्कणस्थ कुनवियोंमें कन्याका आदान-प्रदान नहीं चलता। ऐसा विवाह इनके मध्य निषिद्ध नहीं है, किन्तु वर कन्याका वासस्थान दूर होनेके कारण वे इसे असुविधाजनक समझते हैं। कुनवी धनवान् और प्रभावशाली होने पर अपनेको मराठा ही कहना पसन्द करते हैं। ये भी परिश्रमी, आतिथेय, स्वल्पसन्तुष्ट और श्रद्धालु होते हैं। कुनवी रमणियोंमें परदेकी प्रथा उतनी चालू नहीं है। सुरापानका मराठों और कुनवियोंमें खूब प्रचार है, किन्तु शिष्टाचारके विरुद्ध जरूर है। ज्वार और वाजड़ेकी मोटी मोटी रोटी (भाकरी) मराठों और कुनवियोंकी प्रधान खाद्य है।

धर्म और देवदेवी।

उल्लिखित तीन प्रधान जाति ही तामोमय शैवधर्म की उपासक हैं। मल्लारी नामक असिधारी भयङ्कर शिव ही अधिकांश मराठोंके कुलदेवता हैं। मराठा लोग शिवपूजामें राजपूतोंकी तरह मदिरा और लेहू उत्सर्ग करते हैं। अष्टभुजा, षोड़शभुजा तथा अष्टदशभुजा महिषमर्दिनीकी पूजा भी सभी जगह प्रचलित है। तुलजापुरकी भवानीदेवी सभी महाराष्ट्रवासियोंकी आराध्या हैं। कोल्हापुरमें महालक्ष्मीके उपासकोंकी संख्या भी कम नहीं है। कोङ्कणस्थ ब्राह्मणोंकी कुल-देवी योगेश्वरीदेवी हैं। ये गणपतिके भी उपासक हैं। महाराष्ट्रवासियोंका विश्वास है, कि भूत, प्रेत और बेताल गणेशके अज्ञाकारी हैं। भवानीको ग्रामकी रक्षक समझ कर ही सभी ग्रामोंमें उनकी प्रतिमूर्त्ति प्रतिष्ठित हैं। सातो मातृकाएं महामारी आदिको दूर करनेके लिए ही पूजी जाती हैं। खण्डोवा देशरक्षकदेव हैं। ये ईश्वर और महादेवके अवतारस्वरूप कहे जाते हैं। जेजूरी नामक स्थानमें इनका प्रधान मन्दिर अवस्थित है, वहीं इनकी लिङ्गमूर्त्ति विराजमान है। दूसरी जगह इनकी अश्वारूढ़ असिधारी अन्यमूर्त्ति भी देखनेमें आती है। महालसादेवी इनकी सहधर्मिणी हैं। ये स्वामीके साथ युद्धके वेशमें एक ही आसन पर घोड़े पर बैठी हैं। कहाड़-ब्राह्मणगण इनकी धातुकी बनी मूर्त्तिका पूजन करते हैं। धान रोपने और फसल काटनेके पहले भैरवकी पूजा होती है। ये ग्रामरक्षक हैं। मारुति या हनूमान्‌की पूजा दक्षिणापथमें बहुत प्रचलित है। प्रायः प्रत्येक ग्रामके बाहर इनका मन्दिर रहता है। ये अनेक समय देवता भी कहलाते हैं। नारियल इनकी बड़ी ही प्रिय वस्तु है। मारुति रामचन्द्रके एकनिष्ठ सेवक तथा आदर्श ब्रह्मचारी कह कर सम्मानित हैं। स्त्रियां इन्हें स्पर्श करके नहीं पूजतीं। कार्त्तिककी पूजा और दर्शन स्त्रियोंके वैधव्यका कारण कहा जाता है। इस देशकी तरह महाराष्ट्रमें भी षष्ठीदेवीकी पूजा प्रचलित है। बेताल मल्ल और व्यायाम करनेवालोंका देवता है। शिव-रात्रिके दिन इनका पूजन होता है। बेंतमें बेतालका वास है।

महाराष्ट्रदेशमें विष्णुभक्त भी कम नहीं है। उस देशके वैश्यगण अकसर वैष्णव-धर्मावलम्बी हैं। प्रसिद्ध भक्त कवि तुकाराम वैश्यजातिके थे। ब्राह्मणकवि और धर्मोपदेशक ज्ञानेश्वरने भी विष्णु भक्ति प्रवर्त्तित की। नामदेव, वामनपण्डित, मोरोपन्त प्रभृति बहुतसे सुप्रसिद्ध भक्त ग्रंथकारोंने विष्णु तथा कृष्णभक्तिका प्रचार किया। इस महादेशके सर्वप्रधान तीर्थक्षेत्र पण्ढरपुरमें कृष्ण और रुक्मिणीकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। राधाकी उपासना महाराष्ट्रोंमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत कम है। शैव शाक्त आदि सभी महाराष्ट्र-वासियोंके लिये पण्ढरपुर अत्यन्त पवित्र तीर्थक्षेत्र है। जगन्नाथकी नाईं वहां जातिभेदका बन्धन और विचार नहीं है। गोदावरीके तीरवर्त्ती प्रदेशमें एकनाथस्वामी-की प्रवर्त्तित दत्तात्रेय-उपासना और कृष्णानदीके किनारे रामदास स्वामीकी प्रचारित रामोपसनाका प्रभाव बहुत देखा जाता है। उपासक सम्प्रदाय एकसे ज्यादा होने पर भी अद्वैतवादने महाराष्ट्रदेशमें सर्वत्र ही विशेष प्रतिष्ठा लाभ की है। द्वैतवादी महाराष्ट्रोंकी संख्या बहुत कम है। जीव और ब्रह्मके अभेदज्ञानके कारण सब जीवोंमें समदर्शिता अपेक्षाकृत अधिक मात्रामें महा-राष्ट्रसमाजमें नजर आती है। महाराष्ट्रमें जातीय एकता और राष्ट्रोन्नतिसाधनमें अद्वैतवादकी विशेष सहायता-का प्रयोजन पड़ा था।

चैत्र मासमें नववर्षोत्सव, ज्यैष्ठमें सावित्रीव्रत, आषाढ़में शयनैकादशी, श्रावणमें नागपञ्चमी, भाद्रमें गणेशचतुर्थी, आश्विनमें दशहरा (विजयादशमी), कार्त्तिकमें दीपावली, अग्रहायणमें चम्पाषष्ठी, पौषमें मकरसंक्रान्ति और फाल्गुन मासमें दोल, ये सब इस देशके प्रधान धर्मोत्सव हैं। पण्ढरपुर, कोल्हापुर, गोकर्ण, जेजूरी, आलन्दी, तुलजापुर प्रभृति स्थान महाराष्ट्र देश-के तीर्थक्षेत्र गिने जाते हैं।

उक्त सभी धर्म-सम्प्रदायके सिवा महाराष्ट्रमें और भी एक विशेष धर्मसम्प्रदाय है। यह सम्प्रदाय लिङ्गायत् नामसे प्रसिद्ध है। महाराष्ट्रीय वैश्योंके मध्य बहुतेरे इसी धर्मके अनुयायी हैं। जैन-धर्मावलम्बी वैश्य भी महाराष्ट्र-में हैं। लिङ्गायत् वीर शैव नामसे अपना परिचय देते हैं। ये ब्राह्मणके प्राधान्य और श्रेष्ठत्वको नहीं मानते अबालवृद्धवनिता सबके सब गलेमें छोटा शिवलिङ्ग पहनते हैं। इनके गुरुको "जङ्गम" कहते हैं। जङ्गम या गुरु इष्टदेवता शिवकी अपेक्षा इस सम्प्रदायके लोगोंके निकट विशेष पूजनीय हैं। इनकी क्रियाकर्मपद्धति भी स्वतन्त्र है। इस सम्प्रदायमें भी ब्राह्मणादि वर्णभेद है।

अन्यान्य जाति।

महाराष्ट्रके वैश्यवणिक् १२ शाखाओंमें विभक्त हैं। इनमें हजार पीछे ४४४ मनुष्य लिख पढ़ सकते हैं। स्त्रियोंके मध्य हजारमें लगभग ८५ शिक्षिता हैं।

शूद्र जाति महाराष्ट्रदेशमें कोली (मत्स्यजीवी), भाण्डारी (ताड़ीरस प्रस्तुतकारी), महार (डोम), धेड़ (कसाई), रामोशी (आरण्य दस्यु) प्रभृति बहुत-सी श्रेणियोंमें विभक्त है। ये अनार्योंसे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। इनका विवरण उन्हीं सब शब्दोंमें देखो। महाराष्ट्रमें भील जातिकी संख्या भी कम नहीं है। खान्देशमे इनका वास अधिक है। ये मराठी भाषामें बातचीत करते हैं। ये लक्ष्यभेदमें सुपटु हैं और आध कोसकी दूरी परकी वस्तुको भी धनुशरकी सहायतासे अनायास विद्ध कर सकते हैं।

पल्लिसमाज।

महाराष्ट्रदेशमें गण्डग्रामको अकसर 'गांव' कहते हैं। जिस ग्राममें बड़ी हाट या बाजार नहीं होता वह 'मौजा' और जहां होता है वह 'कसबा' कहलाता है। इन सब ग्रामों और पल्लीके अधिवासी प्रधानतः कृषिजीवी हैं। वे 'उपरी' और 'मीरासदार' इन दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं। मीरासदार लोग पुरुषानुक्रमसे जमीन पर दखल जमाते हैं। जो इच्छुक होने पर भी जमीन बेच नहीं सकते और जिन्हें थोड़े दिनके लिए ही जमीनका बन्दोबस्त मिलता है वे ही 'उपरी' कहलाते हैं। मीरासदार अपने इच्छानुसार जमीन बेच और दान कर सकते थे, किन्तु १९०२ ई०से गवर्मेण्टने प्रजासे यह अधिकार छीन लिया है।

गांवमें जो मण्डल या प्रधान हैं, उनका नाम पाटिल या ग्रामरक्षक है। इनके सहायक चौगुला कहलाते हैं। ये साधारणतः ब्राह्मण भिन्न है, किन्तु मराठाजातिके हैं। पाटिलके दूसरे सहायकका नाम कुलकरनी या ग्राम-लेखक है। गांवकी कुल जमीनका हिसाब किताब रखना इन्हींका काम है। इसीलिये वे गांवके जमीनका पचीसवां हिस्सा निष्कर भोग करते हैं। महकूमेके अधिकारीको देशमुख या 'देशाई' कहते हैं। देशलेखकका दूसरा नाम देशपाण्डे या कानूनगो भी है।

कुलकरनी आदि कर्मचारीगण अकसर ब्राह्मणजाति-के ही होते हैं। महाराष्ट्रमें जमींदार नहीं है। पूर्वोक्त कर्मचारीगण देशकी राजशक्तिसे राजस्व संग्रह कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजसरकारको भेज देत और वेतनके वदले 'कमीशन' पाते हैं।

महाराष्ट्रका पल्लिसमाज भारतके अन्यान्य प्रदेशोंके जैसा नहीं है। वहां साधारणतः वढ़ई (सूत्रधर) लोहार (कर्मकार), महार (डोम) माङ्ग (ये हिन्दुओं-में सर्वनिम्नश्रेणीस्थ और चर्मव्यवसायी है) कुम्हार (कुम्भकार), चमार (चर्मकार) परोट (रजक), ह्वावी (नापित), भट (पुरोहित), मौलाना (मुल्ला) गुरव, कोली (जलवाहक)—ये वारह श्रेणीके मनुष्य पल्लिसमाजके प्रधान अङ्ग हैं। ये ग्रामवासी कृषकों-की यथासाध्य सहायता करते और वर्षके अन्तमें या फसल काटनेके समय कृषकोंसे उसका एक अंश पाते हैं। वढ़ई और लोहार कृषकोंके खेतीवारी करनेके सामान विना कुछ लिये ही वना देते हैं। महार ग्राम-रक्षक या चौकीदारका काम करते हैं। माङ्ग लोग कृषकोंके प्रयोजनानुसार चमड़ेकी डोरी और जलमोट आदि वना देते हैं। इन सव कामोंके लिए वे प्रत्येक कृषकसे २० अंटिया धान पाते हैं। सिर्फ "महार' को ही इससे दूगुने पारिश्रमिक मिलते हैं। पल्लि-समाजमें इनका स्थान पहला है।

कुम्भकार, चर्मकार, रजक और नापित ये सव यथाक्रम मृत्पात्र, पादुकासंस्कार, वस्त्रपरिस्कार और क्षौरकार्य द्वारा ग्रामवासी कृषकोंको सहायता कर फसल काटनेके समय उनसे १५ अंटिया करके धान पाते हैं।

भट हिन्दूकी पुरोहिताई करते हैं। यहां सोनार-ब्राह्मण, धोवी-ब्राह्मण आदि विभिन्न श्रेणीके ब्राह्मण नहीं हैं। मौलाना मुसलमानोंका विवाहादि काम कराते हैं। कुनवी यदि क्षत्रियदेवताको कोई भी पशु वलि-स्वरूपमें उत्सर्ग करना चाहें तो उसका सिर मौलाना को ही काटना पड़ता है। इसके लिये वह प्रत्येक पशु पर दो पैसे और निहत पशुका हृदयांश पाता है। जव तक मौलाना मन्त्र पढ़ कर मांस शुद्ध नहीं कर देता, तव तक प्रायः कोई भी मराठा उसे भेष्य नहीं समझता। गुरव पत्तेकी पुड़िया वना कर अपना गुजारा चलाते हैं। कोलि भैंसेकी पीठ पर पानी लाद कर गांवके कृषकोंका कष्ट दूर करते हैं। इन चार श्रेणीके लोगों-को सूत्रधार प्रभृतिके प्राप्त पारिश्रमिकका आधा मिलता है।

इतिहास।

महाराष्ट्रदेशका अधिकांश प्राचीनकालमें दण्ड-कारण्य कहलाता था। सवसे पहले अगस्त्य मुनि विन्ध्याद्रिको पार करके इस भयङ्कर अरण्य प्रदेशमें आये वहीं अपना आश्रम वनाया। उन्होंने वहांके किसी एक प्रधान निशाचरको साथ कर जव उस प्रदेशको निर्विघ्न कर दिया, तव वहुतसे ऋषिगण भी वहां आ कर वस गये। इसके वाद इक्कीस वार पृथ्वीको निः-क्षत्रिय कर महावीर परशुरामने वीरहत्याके पापसे मुक्ति-लाभ करनेके लिए अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान और महर्षि कश्यपको सारी पृथ्वी प्रदान कर दी और आप तपस्या करनेके लिये पश्चिम समुद्रके तीरवर्त्ती कोङ्कणप्रदेशमें जा रहने लगे। उनकी चेष्टासे धीरे धीरे यह अञ्चल आर्योंके वासोपयोगी वन गया। उन्होंने आर्यावर्त्तसे ब्राह्मण ला कर कोङ्कणमें प्रतिष्ठित किया। त्रेतायुगके अन्तमें रघुकुलतिलक रामचन्द्रने दक्षिणापथके अनेक राक्षसोंका विनाश कर उक्त प्रदेशको निरविघ्न कर दिया। प्रवाद है, कि उनके राजत्वकालमें अयोध्या-प्रदेशसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यगण क्रमशः दक्षिणदेश जा कर वस गये।

महाराष्ट्र शब्दकी उत्पत्ति पहले पहल किस समय हुई, इसका निश्चय करना दुरूह है। रामायणमें यह देश सभी जगह दण्डकारायण और महाभारतमें दण्डदेश या दण्डकराज्य कहलाता है। कोङ्कण प्रदेश महाभारत के अपरान्त (उत्तरकोङ्कण) और गोकर्ण (दक्षिण-कोङ्कण) नामसे प्रसिद्ध था। मार्कण्डेयपुराण, शक्ति सङ्गमतन्त्र, रत्नकोष, वृहत्संहिता आदि समीचीन ग्रन्थोंमें महाराष्ट्र और इसके अन्तर्गत कोङ्कण, नासिक कोल्हापुर, वनवासी प्रभृति प्रदेशोंका नाम मिलता है।

महाराष्टदेशके नाना स्थानोंमें जो सब शिलाशासन और प्राचीन मुद्रादि मिली हैं, उनके लिखित विवरण पढ़ कर प्रत्नतत्त्ववित् डा० रामकृष्ण गोपाल भाण्डार कर महोदयने यह सिद्धान्त किया है, कि ईस्वीसन् ४००

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वष पहले राट्ट, रठ्ठ, राष्ट्रिक और भोज उपाधिधारी क्षत्रियगण महाराष्ट्र देशमें वास और आधिपत्य करते थे। यही तीन जातियां कालक्रमसे साहस और पराक्रमवशतः उत्तर महाराष्ट्र प्रदेशमें 'महारठ्ठ' 'महाराष्ट्रिक' और 'महाभोज' नामसे सिद्ध हुई। ये लोग अपनेको शिनिप्रवर सात्यकिके वंशधर बतलाते थे। शिलालिपियोंमे उनकी रमणियां 'महारट्ठिनी' और 'महाभोजी' कही गई हैं। महारट्ठजातिके साथ महाभोज जातिकी कन्याका आदानप्रदान प्रचलित था। उसी प्राचीन महारठ्ठ और महाराष्ट्रिक शब्दसे वर्त्तमान समयमें महाराष्ट्र, मराठा और मरहट्टा शब्दकी उत्पत्ति हुई है। इस रठ्ठ जातिके अन्तर्गत कुछ परिवार या कुल इकट्ठे हो कर कालक्रमसे "कूड़" (संस्कृत कूट) या कुलमें परिणत हुआ था। इस संस्कृत कुलमें जिन्होंने जन्म लिया, वे पहले "रठ्ठकूड़" (संस्कृत राष्ट्रकूट) और आर्यावर्त्त जा कर "राठोर" नामसे प्रसिद्ध हुए।

मराठोंके प्राचीन नामानुसार उनका वासप्रदेश ईस्वी-सन् ३०० वर्ष पहले महारठ्ठ देश कहलाता था। महारठ्ठ देशका आयतन वर्त्तमान महाराष्ट्रके जैसा बड़ा न था। पूना, सतारा और अहमदनगर यह तीन जिला और सोलापुर जिलेका पश्चिमाञ्चल प्राचीन कालमें "महारट्ठ" देशके नामसे प्रसिद्ध था। कालक्रमसे महाराष्ट्र जातिके वंशविस्तार तथा क्षमतावृद्धिके साथ साथ कोङ्कण, कोलवन, गोण्डवन, खानदेश, विदर्भ, उत्तर-कर्णाट प्रभृति प्रदेश भी महाराष्ट्र-देशके अन्तर्भुक्त हुए।

अशोकके पांचवें अनुशासनमें और दीपवंश, महावंश आदि बौद्ध-इतिहास-ग्रन्थमें लिखा है, कि महाराज प्रियदर्शी अशोकके आदेशानुसार महोरट्ठ, अपरान्त (उत्तरकोङ्कण) और वनवासी (दक्षिण महाराष्ट्र) प्रदेशमें भोज तथा राष्ट्रिक जातिके और प्रतिष्ठान पुरवासियोंके मध्य बौद्धधर्म प्रचारके लिए बहुत से बौद्धयाजक भेजे गये।

उस समय वर्त्तमान महाराष्ट्रदेश तगर, आशीर, प्रतिष्ठान, विदर्भ, कुन्तल, अपरान्त और वनवासी आदि बहुत-से छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त था। अनन्तर ईस्वी सन् २५० वर्ष पहले मिस्रदेशीय वणिकगण वहां वाणिज्य करनेके लिए आये। नगरके अधिपति राजाधिराज उपाधिधारी और क्षत्रिय थे। उनका प्रभाव बहुत दूर तक फैला हुआ था। आशीर नामक स्थानमें भी एक एक छोटा राज्य था। प्रवाद है, कि ईस्वी सन् १६०० वर्ष पहले कोशलदेशसे कुछ क्षत्रिय परिवार महाराष्ट्रमें आ कर बस गये। आशीर राजवंश पूर्वोक्त कोशलदेशसे आये हुए क्षत्रवंशसम्भूत थे। विदर्भ देशमें यज्ञसेन नामक राजाका राज्य था। मगधपति शुङ्गवंशीय पुष्प मित्रके साथ उनका जो युद्ध हुआ था, उसका विवरण कालिदास प्रणीत मालविकाग्निमित्र नाटकमें वर्णित है।

सातवाहन-वंश।

ईस्वी सन् १०० वर्ष पहले सात वाहन (शालिवाहन) वंशका अभ्युदय हुआ। इस वंशके राजाओंने उपर्युक्त राज्योंको विनष्ट कर रट्ठ, महारट्ठ, भोज और रट्ठकूड़ प्रभृति जातिको हरा दिया और सारे दक्षिणपथका सार्वभौम आधिपत्य लाभ किया। कहते हैं, कि जब शालिवाहनने आशीर-पतिको भी बन्धु वर्गोंके साथ मार डाला तब उक्त राजवंशीय एक महिला राजाके बहुत छोटे बच्चेको ले कर भाग गई और शतपुरा पहाड़ पर छिप कर प्राणरक्षा की। यही बालक अन्तमें चित्तौरके राणावंशके प्रतिष्ठाता हुए।

नासिक और कोल्हापुर प्रभृति स्थानोंसे प्राप्त प्राचीन मुद्रा और शिला शासनादि पढ़नेसे जाना जाता है, कि ईस्वी-सन् ७३ वर्ष पहलेसे कर २१८ ई० तक शालिवाहन या सातवाहनवंशियोंने महाराष्ट्रदेशका राज्य शासन किया। तैलङ्ग या अन्ध्रदेशके अन्तर्गत धनकटक (गण्टुरेके निकटवर्त्ती वर्त्तमान धरकोट) नगरमें उनकी राजधानी थी। महाराष्ट्रदेशमें प्रतिनिधि शासनकर्त्ताके रूपमें भेजे जाते थे। गोदावरीके किनारे प्रतिष्ठानपुरमें उनकी राजधानी थी। उनके शासनकालमें महाराष्ट्रदेश शकजाति द्वारा आक्रान्त हुआ था। उस समय सातवाहनवंशीय भूपतिगण कुछ हीनबल हो गये थे। उसी समय शकजातियोंने महाराष्ट्रके नाना स्थानोंको अधिकार कर लगभग १५३ वर्ष राज्य किया। भारतवर्ष शब्दमें इसका विवरण देखो। आखिर १३३ ई०में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"न मूत्रं फेनिलं यस्य विष्ठा चाप्सु निमज्जति।

अर्थात् मूत्रत्यागके समय जिनकी फेनरेखा (झाग) नहीं देखी जाती उन्हें अपुत्रक समझना चाहिये। इस प्रकार मूत्रपरीक्षा विषयक सैकड़ों श्लोक हैं जिनसे विज्ञ चिकित्सकगण प्राच्य और पाश्चात्य मूत्रविज्ञानके उत्कर्षापकर्षका विचार कर सकते हैं।

वर्त्तमान पाश्चात्य चिकित्सकोंने मूत्रतत्त्वके संबंधमें बहुतसे ग्रन्थ लिखे हैं, यहां संक्षेपमें लिखा जाता है।

जीवोंके लिङ्गद्वार हो कर प्रवाहित शारीरिक जलीय मल ही मूत्र है। हम लोग खानेके समय जो जल पीते हैं उसका तथा खाद्यद्रव्यका जलभाग कुछ तो पसीनेमें परिणत होता और कुछ मूत्ररूपमें परिणत हो कर लिङ्गद्वारसे बाहर निकल जाता है। शारीरिक असुस्थताके कारण कभी कभी मूत्रमें विकृति देखी जाती है। सुस्थ शरीरका मूत्र जलके समान स्वच्छ और तरल, सामान्य रोगमें पीलापन लिये लाल और मेहादि दोष दुष्ट होनेसे वह अस्वच्छ और अपेक्षाकृत गाढ़ा होता है। रोगविशेषमें रक्तस्राव भी हुआ करता है।

द्रव्यरसका विकृतिप्राप्त जल-भाग पहले वृक्क (Kidney)-में आ कर जमा होता है। पीछे वहांसे bladder वा मूत्राशयमें चालित होनेसे तलपेट टन टन करने लगता है। इसी समय स्वभावतः मूत्रत्यागकी इच्छा होती है। यह मूत्र शरीरत्यक्त दूषित ज़लीय मलके सिवा और कुछ भी नहीं है।

मूत्रपरीक्षा।

शरीरके भीतरके अन्यान्य यन्त्रोंकी तरह मूत्रयन्त्रमें भी जलन और पीड़ा हुआ करती है। इस समय मूत्रका रंग कई तरहका हो जाता है और उसमें शर्करादि नाना प्रकारके पदार्थ दिखाई देते हैं। स्वभावतः मूत्रके हजारवें भागमें ९६७ भाग जल, १४॥ भाग युरिया, आध भाग युरिक एसिड, १० म्युकस तथा ८ भाग सलफेट और फस्फेट आफ सोड़ा, पोटास, मगनेसिया और क्लोराइड आव-सोडियम रहता है। वृक्कमें पीड़ा होनेसे उन सब पदार्थोंका न्यूनाधिक्य तथा अन्यान्य अस्वाभाविक वस्तु भी दिखाई देती है।

रासायनिक।

मूत्रकी परीक्षा करते समय उसके वर्ण, स्वच्छता, अस्वच्छता, गन्ध और नीचे कोई अधःक्षेप है वा नहीं, पहले इसीकी ओर लक्ष्य करना परमावश्यक है। पीछे उसका आपेक्षिक गुरूत्व तथा वह अम्लाक्त है वा क्षारयुक्त, जानना होता है। अम्लरसयुक्त मूत्रमें नीलवर्णका लिटमस (blue litmus paper) कागज और क्षारयुक्त मूत्रमें (alkaline urine) लोहित वर्णका लिटमस कागज डुबानेसे वह यथाक्रम लाल और नीलवर्णमें तथा क्षारयुक्त मूत्रमें टर्मारिक पेपर डुबानेसे वह पाटलवर्णमें पलट जाता है। अभी यह परीक्षा बंद कर दी गई है। मूत्रक्षारमें यदि एमोनियाकी अधिकता रहे, तो पूर्वोक्त भींगे और परिवर्त्तित कागज सुखानेके बाद फिरसे यथाक्रम लाल और पीले हो जाते हैं। पहले मूत्रके स्वाभाविक पदार्थोंकी परीक्षा करना आवश्यक है। अधिक परिमाणमें युरेटस रहनेसे मूत्र अस्वच्छ और गदला दिखाई देता है, किन्तु आंच पर चढ़ानेसे वह साफ हो जाता है। क्लोराइड परीक्षाके लिये पहले मूत्रको नाइट्रिक एसिड (Nitric acid) द्वारा सामान्य अम्लाक्त कर ले, पीछे उसमें नाइट्रेट आफ सिलभर-लोशन मिलावे, इससे शुभ्र क्लोराइड आफ सिलभर अधःक्षिप्त देखनेमें आयेगा। युरिया परीक्षाके लिये वाटरबाथमें मूत्रको गरम कर ले। पीछे उसमें नाइट्रिक एसिड मिलानेसे नाइट्रेड आव युरिया नीचे बैठ जायगा। अणुवीक्षण यन्त्रके द्वारा उसकी परीक्षा करनेसे वह चौकोन वा छः कोनवाले खपड़ेकी तरह दिखाई देता है। २४ घंटेके मध्य युरिया कितना निकला है उसे जाननेके लिये एक स्वतन्त्र यन्त्र बना है। कष्टिक सोडा और ब्रोमिन सोल्युशनको मूत्रके साथ मिलानेसे उसमेंसे क्रमशः नाइट्रोजन गैस निकलता है। उसीके परिमाण द्वारा युरियाका अंश निकाला जा सकता है।

मूत्रमें यदि (Uric acid) युरिक एसिडकी परीक्षा करनी हो, तो मूत्रको आंच पर चढ़ा कर गाढ़ा कर ले। पीछे उसमें Hydrochlorid एसिड डाले। कुछ समय बाद Uric acid का Crystals नीचे बैठ जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अणुवीक्षणकी सहायतासे अर्थात् ऊपर कहे गये Murexide Test द्वारा परीक्षा की जा सकती है।

सलफेटस रहनेसे नाइट्रेट आफ बैरेटालोशन मिलाने पर सलफेट आफ बैरेटा नीचे बैठ जाता है। फोस्फेटस और एमोनिस-मागनेसियम टेष्ट द्वारा एमोनिया और मागनेसियमकी परीक्षाके समय शुभवर्णका अधःक्षेप देखा जाता है।

मूत्रमें अस्वाभाविक पदार्थ सञ्चित रहनेसे परीक्षा द्वारा उसका निर्णय किया जा सकता है। उन पदार्थोंका विषय संक्षेपमें नीचे लिखा जाता है।

अण्डलाला (Albumen)—मूत्रमें रक्त, रक्तका सिरम, काहल, लिम्फ, पूय वा शुक्र रहनेसे उत्ताप, नाइट्रिक एसिड संमिश्रण और पाइक्रिक एसिड परीक्षा द्वारा एलबुमेन (अण्डलाला) का अस्तित्त्व जाना जा सकता है।

एक टेष्ट-ट्यूबका तिहाई भाग मूत्रसे भर कर स्पिरिट लैम्प द्वारा उसे गरम करनेसे मूत्रके ऊपर दूधके जैसा सफेद और गाढ़ा पदार्थ दिखाई देता है। मूत्रमें अधिक फोस्फेटस रहनेसे ताप द्वारा वह अधःस्थ और ऊपर कहे गये वर्णमें परिणत होता है। नाइट्रिक एसिड मिलानेसे फोस्फेटस गल जाता है, किन्तु एलबुमेन नहीं गलता। अधिक एलबुमेन रहनेसे वह उत्ताप द्वारा अत्यन्त गाढ़ा और सफेद हो जाता है।

एक दूसरे टेष्ट-ट्यूबमें कुछ मूत्र ले कर उसमें ५ वा ६ बुंद नाइट्रिक एसिड डालनेसे यदि वह सफेद हो जाय तो, जानना चाहिये, कि उसमें एलबुमेन अथवा युरेटस (मूत्रका अम्लज उपादानविशेष) है। आंच देने पर यदि वह गल जाय तो युरेटस, नहीं तो एलबुमेन जानना होगा। मूत्रमें पाइक्रिक एसिड मिलानेसे नाइट्रिक एसिड परीक्षाके तरह अधःक्षेप होता है।

पित्त Bile)—मूत्रमें पित्त है वा नहीं, Gmelin's और Pettenkofer's test नामक परीक्षा द्वारा वह जाना जाता है। पित्त शब्द देखो।

सिष्टिन, ल्युशिन और टाइरोसिन रहनेसे मूत्रका अधःस्थ पदार्थ सब्ज रंगका दिखाई देता है।

शर्करा (Sugar)—मूत्रमें चीनीका अंश कितना है उसे मालूम करनेके लिये Moor's test, Trommer's test, Fehling's test, Hassal's test, Fermention test, Dr. Johnson's वा Pieric acid test और Bismuth test आदि विभिन्न परीक्षाका आविष्कार हुआ है।

१ मुर्सटेष्ट—एक ट्यूबमें समान भाग मूत्र और लाइकर पोटाश रख कर उसे गरम करनेसे वह पाटलवर्णमें परिणत हो जाता है। वर्ण जैसा गाढ़ा होगा उसीके अनुसार मूत्रशर्कराका परिमाण स्थिर किया जा सकता है।

२ ट्रोमस टेष्ट—मूत्रमें कुछ बुंद सलफेट आव कपार लोशन मिला कर उसका आधा लाइकर पोटाश मिलावे। पीछे उसे गरम करनेसे लोहिताभ पाटल सब अक्साइड आव कपार नीचे बैठ जायगा।

३ फेलिंस्टेष्ट—पोटाश टार्ट, लाइकर सोडो, सलफेट आव कपार और परिष्कृत जल द्वारा 'फेलिंस् ष्टाण्डार्ड सोल्युशन' तैयार कर उसे (२०० सौ ग्रेन) एक कांचके बरतनमें गरम करे। जब तक उसका नीलापन दूर न हो जाय, तब तक उसमें क्रमशः मूत्रको नाप कर ढाले। जितने मूत्रसे २०० ग्रेन सोल्युशनका वर्ण पलट जाय उतने मूत्रमें १ ग्रेन शर्करा रहती है। अनुभव २४ घंटों अर्थात् दिनरातके मूत्रमें कितनी शर्करा निकलती है, इसीसे उसका पता लगाया जा सकता है। इसमें उत्ताप देनेसे लोहिताभ वा पाटलवर्णका सब अक्साइड आव कपार नीचे जम जायगा।

४ ह्याजेल्सटेष्ट—अनुवीक्षण द्वारा शर्करा मिले हुए मूत्रमें टोरोवली नामक एक प्रकारका सूक्ष्म उद्भिज्ज दिखाई देता है। मूत्रमें झाग आने अथवा सड़ जाने हीसे टोरिउला कोष (Torula cells) समूह दिखाई देता है, किन्तु स्वाभाविक मूत्रमें वैसा पदार्थ नहीं दिखाई देता।

५ फार्मेण्टेसन टेष्ट—शर्करायुक्त मूत्रमें थोड़ा जर्मन इष्ट मिला कर उत्तप्त स्थानमें रख दे, इससे कार्बनिक एसिड गैस उत्पन्न होगा।

६ डा० जोनसन्स वा पाइक्रिक एसिड टेष्ट—लाइकर पोटासी और पाइक्रिक एसिडको मिला कर मूत्रके साथ उत्तप्त करनेसे वह गाढ़ा लाल हो जाता है।

७ विस्मथ टेष्ट—विस्मथ, ग्लिसारिन, सोल्यु-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शन आव सोडियम हाइड्रास और जल तीनोंको एकत्र कर मूत्रके साथ गरम करनेसे काला अधःक्षेप दिखाई देगा।

८ शर्करायुक्त मूत्रको नील और कार्बनेट आव सोडाके साथ गरम करनेसे वह क्रमशः सब्ज, लाल और अन्तमें पीला हो जाता है। इसको Indigo Carmine test कहते हैं।

दग्धाम्लरस (Acetone)—मूत्रमें स्वभावतः सामान्य परिमाणमें एसिटोन रहता है। बहुमूत्ररोगमें अचैतन्यावस्था उपस्थित होने पर उसकी वृद्धि होती है। टिंक्चिल मिलानेसे वह लाल वर्णमें पलट जाता है। डा० लीवर (Dr. Lieber)-का कहना है, कि पोटाश आइयोटाइड २० ग्रेन और लाइकर पोटाश १ ड्रामको एक साथ उत्तप्त कर उसमें एसिटोनयुक्त मूत्र मिलानेसे मूत्र उसी समय पीला हो जाता है।

रावर्टके ग्रन्थमें उक्त परीक्षाप्रथा अवलम्बित होने पर भी एसिटोन परीक्षाकालमें चिकित्सक उस पर विश्वास नहीं करते।

वर्त्तमान चिकित्सक Legal's test नामक परीक्षाका अनुसरण कर एसिटोन निर्णय करते हैं। कुछ मूत्र में ताजा तैयार किया हुआ गाढ़ा सोडियमनाइट्रेप्रुसिड साल्युशन (Concentrated solution of sodium nitro-prusside) २ वा ३ बूंद तथा लाइकर सोडा कई बूंद मिलानेसे मत्र तांमड़े रंगका और कुछ मिनटके बाद पीला हो जाता है। किन्तु उक्त वर्णमें पलटनेके पहिले यदि उसमें एसेटिक एसिड अधिक मात्रामें ढाल दिया जाय, तो एसिटोनयुक्त मूत्र सुन्दर सिन्दूर वर्णका हो जाता है। फिर बिना एसिटोन मिला हुआ मूत्र स्वभावतः पीले रंगमें रूपान्तरित होता है।

मूत्रमें अन्यान्य पदार्थ भी रह सकते हैं। काइल वा चर्बी रहनेसे इथर द्वारा वह गलाया जाता है। रक्त, पीप, म्युकस और वृक्ककांश (Renal cast) रहनेसे अनुवीक्षणकी सहायता द्वारा इसका पता लगाया जा सकता है। म्युकस एपिथेलियम और पीप रहनेसे मूत्र गदला दिखाई देता है। लाइकर पोटाश मिलानेसे पीप रस्सीके समान हो जाती है, किन्तु म्युकसमें वैसा नहीं होता। मूत्रमें रक्त रहनेसे वह लोहित वा धूम्रवर्णका होता है तथा रासायनिक परीक्षा द्वारा उसमें अण्डलाला दिखाई देती है।

आणुवीक्षणिक।

उपरोक्त अस्वाभाविक पदार्थोंके परीक्षाकालमें मूत्रको कुछ देर तक रख देनेसे जो विभिन्न प्रकारका अधःक्षेप जमा होता है अनुवीक्षण द्वारा यदि अच्छी तरह देखा जाय, तो उससे बहुत-सी बातें जानी जा सकती हैं। वे अधःक्षिप्त वस्तु ऐसे विभिन्न आकारको धारण करती ,, कि उसे देखनेसे ही आश्चर्यान्वित होना पड़ता है।

१ मूत्राम्ल (Uric acid) मूत्रके नीचे सुरकीके चूर्णके जैसा जम जाता है। वह देखनेमें तामड़े वा पाटलवर्णका होता है। म्युरेक्सिड टेष्ट द्वारा युरिक एसिडकी परीक्षा की जाती है। यन्त्रकी सहायतासे उसमें भिन्न भिन्न आकारके दाने दिखाई देते हैं। उनमेंसे कुछ तो चौकोन और कुछ अंडाकार वा पीपेकी तरह होता है।

२ मूत्राम्लज उपादान (Urates)—अर्थात् युरेट आव सोडियम, एमोनियम और लाइम जो मूत्रके नीचे पाया जाता है वह सुरकीके चूरके जैसा तथा पोला; तामड़े रंगका, सफेद अथवा पाटल रंगका होता है। उत्ताप देनेसे अदृश्य वा गल जाता है। युरेट आव सोडियम और एमोनिम सूक्ष्म सूक्ष्म दानेदारका-सा रूप धारण करता है। ये सब देखनेमें गोल और अस्वच्छ रेणुवत् होते हैं तथा उनके चारों ओर सूत्र और रेखा जैसी शिराओं (Spine)-से आवृत रहती हैं।

३ अग्जोलेट आव लाइम (Oxalates)—लोहिताभ और अम्लरसविशिष्ट पदार्थ। इस अधःक्षेपका ऊपरी भाग बहुत सफेद, पर निचला भाग धूसरवर्ण कोमल पदार्थके जैसा दिखाई देता है। उत्ताप अथवा लाइकर पोटाश द्वारा वह नहीं गलता, किन्तु कोई मिनरल एसिड मिलानेसे अदृश्य हो जाता है। अणुवीक्षण द्वारा परीक्षा करनेसे उनमेंसे कुछ अष्टकोणविशिष्ट (Octahedra) वा मन्दिराकार (Pyramidical) और कुछ डम्बलके जैसे (Dumb-cell) दिखाई देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४ फोस्फेटस (Phosphates)—क्षारयुक्त मूत्रको कुछ देर तक रखनेसे उसके नीचे फोस्फेटसका अधःक्षेप होता है। इससे मूत्र गदला दिखाई देता है। आंच पर चढ़ानेसे उसका गदलापन और भी बढ़ जाता है, परन्तु एक बुंद नाइट्रिक एसिड डाल देनेसे फोस्फेटस गल जाता है। इस प्रकार मूत्रमें प्रधानतः दो प्रकारके दाने देखे जाते हैं। उनमेंसे पहला फोस्फेट आव लाइम ष्टेलर फोस्फेटस नामसे और दूसरा फोस्फेट आव एमोनियम और मागानेसियम त्रिकोणाकार (Triple phosphates) नामसे परिचित है।

५ कार्बनेट आव लाइमका भी कभी कभी अधःक्षेप होता है। इसके दाने बिलकुल स्वतन्त्र हैं।

६ सिष्टिन (Cystine) वा कोषज पदार्थ अधिक रहनेसे मूत्र स्वभावतः तेलकी तरह गदला और पीताभ हरिद्वर्ण दिखाई देता है। उसमें थोड़ा अम्लरस भी पाया जाता है। कष्टिक एमोनिया और मिनरल एसिड द्वारा वह गल जाता है। अणुवीक्षण द्वारा वे सब छः कोनवाले खपड़ेकी तरह परीक्षित हुए हैं।

७ ल्युसिन (Leucine)—यह देखनेमें गाढ़ा हरित् वा कृष्णवर्ण तैलविन्दुकी तरह है।

८ टाइरोसिन—सूचिकाके जैसे दाने।

९ चर्बी—पाललिक (Pancreas) की पीड़ामें मूत्रमें चर्बी रहती है। वह मूत्र अस्वच्छ और दूधके समान दिखाई देता है। इधर मिलानेसे वह साफ हो जाता है। अणुवीक्षण द्वारा बहुत बारीक रेणु दिखाई देते हैं।

१० म्युकस और एपिथेलियम—मूत्रमें सभी समय प्रायः श्लैष्मिक झिल्लीका त्वक् (Epithelium) और श्लैष्मिक पदार्थ (Mucens) विद्यमान रहता है। पीपके साथ अनेक समय इसका भ्रम होता है। अणुवीक्षण द्वारा एपिथेलियम अंकुरयुक्त बृहत् कोषके जैसा दिखाई देता है। शल्कके जैसा होनेसे उस स्क्वेमस (Squamous) और लम्बाकृति होनेसे उसे Columnar कहते हैं। एपिथेलियम और पीपकी पृथक्ता पहले ही लिखी जा चुकी है।

मूत्रयन्त्रकी पीड़ाओंका वर्णन करनेसे पहले उन सब व्याधियोंमें प्रधानतः कौन कौन औषध और मुष्टियोग प्रयोग किया जा सकता है नीचे उसीकी एक संक्षिप्त तालिका दी गई है।

साधारण औषध।

१ मूत्रकारक औषध (Diuretics)—स्निग्ध पानीयसेवन, टैप द्वारा उदरका जल निकालना, कमरमें सरसोंका लेप (Sinapism), शुष्क कार्पि सैन्धव लवण और सोरा मिले हुए जलकी तलपेटमें पट्टी, तेल और जलकी मालिश, नाभिकुण्डमें खटमलोंका दाव रखना, आदि कार्य द्वारा मूत्रवृद्धि होती है। औषधके मध्य एसिटेट वा नाइट्रेट आव पोटाश, एसिटेट वा नाइट्रेट आव एमोनिया, आइओडाइडस, लिथियर लवण, जिन नामक मद्य नाइट्रिक इथर, डिजिटेलिस, ष्ट्रोफैन्थस, इस्कुइल, सेनेगा, साइट्रेट आव कैफिन, स्कोपेरियम, स्पार्टिन कलचिकम्, बकु, युभायरसाई, पैरिरा, टार्पेण्टाइन, बैलसम, कोपेवा, क्युवेव, बेञ्जयिक एसिड और टिं कैन्थराइडिस आदि मूत्रकारक माने जाते हैं।

२ मूत्रनिवारक औषध (Anti-diuretics)—बेलेडोना, अफीम, कोडिन और आर्गट।

३ मूत्रयन्त्रकी श्लैष्मिक झिल्लीमें काम करनेवाली औषध ये सब हैं, पैरिरा, बकु, ट्रिटिकम-रेपेन्स, नाना प्रकारका बैलसम, बेञ्जयिक एसिड और बेञ्जयेट आव एमोनिया, कोपेवा, तारपीन तेल, चन्दनका तेल आदि।

४ मूत्रयन्त्रमें कंकर वा पथरी होनेसे निम्न लिखित औषधका व्यवहार किया जा सकता है। यथा—(क) युरिक एसिड कैलक्युलाइ गलानेके लिये एसिटेट वा साइट्रेट आव पोटाशियम, पाइपारयेजिन और लिथियर लवण समूह, (ख) सफफेटिक कैलक्युली होनेसे बेञ्जयिक और साइलिसिलिक एसिड का व्यवहार करना उचित है।

५ मूत्राधारमें पीड़ा होनेसे रोमाइडस, अफीम, मर्फिया, हाइयोसाइमस और बेलडोना आदि औषधोंका प्रयोग करे। विशेष विशेष स्थलमें—पैरिरा, बकु, युभायर्साई आदिका प्रयोग किया जा सकता है। नक्सभमिका और ष्टिकनिया बलकारक माना गया है। हमेशा मूत्रत्याग होनेसे बेलेडोना विशेष फलप्रद है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रविकृतिके कारण रोग और उसकी चिकित्सा।

डा० चेनीर (Dr. Cheyne)-के मतसे पेय द्रव्योंके रसका तिहाई भाग मूत्ररूपमें निकल जाना आवश्यक है। किन्तु पसीना निकलनेके तारतम्यानुसार पेशावकी मात्रामें भी विलक्षणता देखी जाती है। इसके अतिरिक्त चबाने, चूसने लायक आदि अन्यान्य द्रव्य जो हम लोग खाते हैं, वह भी पेय जलीय पदार्थका बहुत कुछ अंश ग्रहण करनेको बाध्य है। अतएव यथार्थमें कितना जल पीनेसे उसका कितना परिमाण मूत्ररूपमें बाहर निकलेगा वा निकल सकता है इसका निर्णय करना बिलकुल असम्भव है। पर हां, पेशाव अधिक हुआ वा रुक गया, यह पेशाव करनेवाला ही कह सकता है।

मूत्र अधिक निकलने अथवा उसका ह्रास होनेसे जानना होगा, कि कोई न कोई रोग अवश्य हुआ है। जिससे पेशाव सरल और सहजसे हो, मनुष्यमात्रको इस विषयमें लक्ष्य रखना एकान्त कर्त्तव्य है। जिससे मूत्राघात उपस्थित हो, ऐसे विषयको यत्नपूर्वक छोड़ देना चाहिये। लगातार आलस्यमय जीवन बिताना, अत्यन्त कोमल और गरम बिछावन पर सोना, शुष्क अथच उद्दीपक वस्तु खाना तथा उत्तेजक और अवरोधक गुणविशिष्ट मद्यादि पीना, ये सब मूत्रकृच्छ्र रोगीके लिये विशेष अहितकर हैं। जिनके मूत्रकृच्छ्र रोग हुआ है तथा उससे पथरी होनेकी सम्भावना है उनके लिये मूत्र-रोधक द्रव्यमात्र तथा जिससे मूत्रकृच्छ्रता उत्पादन कर सकें, ऐसी वस्तु खाना निषिद्ध है।

मूत्रको अधिक देर तक रोक न रखना चाहिये; नहीं तो वह शरीरके अभ्यन्तरस्थ जलीयांशमें पुनः सम्मिलित हो कर शरीरको क्लेदयुक्त बना देता है। इस प्रकार बार बार मूत्रके सञ्चित और उसके प्रथम जलीयांशके ऊर्द्ध्वगत होनेसे मूत्रस्थलीमें मूत्रका अंश क्रमशः गाढ़ा हो जाता है और उसीसे पथरी आदि रोगोंकी उत्पत्ति होती है। मूत्रस्थलीमें Stone वा gravel सञ्चित होनेसे पेशाव करनेके समय बहुत कष्ट होता है। जो आलसी और अकर्मण्य है उनके कष्टकी सीमा नहीं रहती। कितने रोगी इस रोगके शिकार बन गये हैं, उसकी शुमार नहीं। जिसका जीवन किसी तरह बच गया है, वह अत्यन्त कष्टसे समय बिताता है।

कभी कभी लोग लज्जाके कारण पेशाव रोकनेको बाध्य होते हैं, पर इससे मूत्रसञ्चय होनेके कारण मूत्रकोष अत्यन्त बढ़ जाता है। उस समय इसको धारकता-शक्ति शिथिल हो जाती है। इस कारण मलमूत्र त्यागके समय वेगको नहीं रोकना चाहिये। उससे स्वास्थ्यमें बड़ी हानि पहुँचती है। लज्जाके कारण मूत्रघातरोगकी उत्पत्ति विशेषतः स्त्रियोंमें बहुत देखी जाती है। वृद्धावस्थामें अथवा उपदंशादि रोगके बाद मूत्रमार्गके शिथिल पड़ जानेसे मूत्रावरोधका व्याघात होता है। नीचे मूत्र और तत्सम्बन्धीय पीड़ादिके कारण संक्षेपमें लिखे जाते हैं।

मूत्रमें शुक्लांश (Albumen) विद्यमान रहने तथा दुर्बलताके कारण जब शोथ आदि लक्षण दिखाई देते हैं, तब उसे साण्डशुक्ल मूत्र (Albuminuria) रोग कहते हैं। मूत्रके साथ रक्त, अन्नरस (Chyle), लसीका (Lymph), पीप वा शुक्रका मिश्रण; डिपथिरिया (त्वच्छादन), हैजा, न्युमोनिया और सस्फोटक ज्वर; मूत्रयन्त्र अथवा गर्भके दबावके कारण वृक्क-धमनीमें रक्तकी अधिकता; रक्तकी अपरिष्कृति (अर्थात् ब्राइटिस डिजिज और गर्भावस्थामें रक्तके मध्य अनेक अनिष्टकर पदार्थोंका संमिश्रण); बहुत दिन तक सीसकघटित औषध वा द्रव्यका व्यवहार; शोताद (Scurvy) मले-रिया ज्वर, रक्ताल्पता (Anaemia), बहुमूत्ररोग, उप-दंशरोगके कारण शरीरमें नाना परिवर्त्तन और रक्तकी हीनता तथा अधिक परिमाणमें एलबुमेन (अण्डलाला)-युक्त द्रव्योंका खाना आदि कारणोंसे इस रोगकी उत्पत्ति हुआ करती है।

इस रोगसे पीड़ित रोगी स्वभावतः शीर्ण हो जाता है। मुखमण्डल क्रमशः पांशुवर्ण और स्फीत होता है। मूत्रकी अल्पता और उसका आक्षेपिक गुरुत्व स्वाभा-विकसे न्यून अर्थात् १·१० हुआ करता है। परीक्षा द्वारा एलबुमेन (अण्डलाला) पाया जाता है। कभी कभी समूचा शरीर सूज आता है। इस समय रोगीका शिर चकराने लगता और वह कमजोरी मालूम करता है।

गर्भावस्थामें मूत्रमें एलबुमेन रहना एक गुरुतर पीड़ा-का लक्षण समझा जाता था। किसी किसी गर्भिणीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गर्भकालका आक्षेप रोग ही प्राचीन चिकित्सकोंके मतसे इसका मूल कारण समझा जाता था। किन्तु अभी परीक्षा द्वारा स्थिर हुआ है, कि सैकड़े पीछे २०के मूत्रमें एलबुमेन विद्यमान रहता है और वह कभी कभी आक्षेप रोगके बाद ही मूत्रमें देखा जाता है। गर्भावस्थामें पक्षाघात, अन्धता (Amaurosis), शिरःपीड़ा, भ्रमि (शिर घूमना), रक्तस्राव, सूतिकाक्षेत्रज उन्मत्तता आदि पीड़ाओंके साथ भी मूत्रमें अण्डलाला पाई जाती है। प्रसवके बाद मूत्रमें प्रायः एलबुमेन नहीं रहता।

गर्भिणीके मूत्रमें एलबुमेन रहनेके दो कारण हैं, १ला गर्भावस्थामें स्वभावतः ही भ्रूणके पुष्टिवर्द्धनार्थ और २रा विवृद्ध जरायु कर्त्तृक भेइन वा शिरामें रक्तपरिचालनाका व्याघात होनेसे रक्तमें अधिक परिमाणमें एलबुमेन रहता है। इसी कारण गर्भके पांच महीने तक प्रायः मूत्रमें एलबुमेन नहीं देखा जाता। प्रथम गर्भवतीको अकसर यह रोग हुआ करता है। क्योंकि, उनका उदर सहजमें नहीं फैलता जिससे उदरस्थ शिराके ऊपर अधिक दवाव पड़ता है। चिकित्सकगण इसे पूर्ववर्त्ती (Predisposing) कारण ही वतलाते है, यदि ऐसा नहीं होता, तो प्रायः सभी स्त्रियोंको यह पीड़ा हो सकती थी। इसके अतिरिक्त कोई हठात् परिवर्त्तन, हिमसेवन वा तज्जनित हठात् पसीनेका सूख जाना आदि उद्दीपक कारणोंसे भी (Exciting causes) अण्डलाला निकला करती है।

गर्भावस्थाका एलबुमिन्युरिया प्रसवके बाद ब्राइटाख्य रोगमें (Bright's disease)-में परिवर्त्तित हो सकता है। पेशावके साथ शरीरसे एलबुमेनके बाहर निकलनेसे भ्रूणको पुष्टिमें बहुत बाधा पहुंचती है। इसी कारण अकसर इस रोगाक्रान्त गर्भवतीका गर्भपात होते देखा जाता है।

इस रोगका प्रधान लक्षण शोथ है। जरायुके ऊपर दवाव पड़नेसे पैरमें रस जम सकता है। किन्तु जब मुँह और हाथ फुल जाता है, तब मूत्रके एलबुमेनकी परीक्षा कर चिकित्सा करना उचित है। इस समय कभी कभी समूचा शरीर फूट जाता है। शिरःपीड़ा, भ्रमि, दृष्टिका अभाव, आदि लक्षणोंसे भी रोगकी अवस्था जानी जाती है।

मूत्रपरीक्षाकालमें केवल एलबुमेन ही पाया जाता है, सो नहीं। अणुवीक्षण द्वारा देखनेसे उसमें एपिथिलियेल सेल, ट्यूब काष्ट और रक्तकणिका (Blood-Corpuscle) नजर आती है।

रोगका कारण निर्णय कर मूत्र और पसीना लानेवाली औषधकी व्यवस्था करे तथा रोगीको वलकारक पथ्य दे। मूत्र लानेवाली ओषधियोंमें ये सब प्रधान हैं,—टिं डिजिटेलिस ३ वा ४ बुंद, टिंफेरिपरक्लोराइड १० से १५ बुंद, एसिटेट आव पोटाश १० से १५ ग्रेन। इन्हें १ औंस जलमें मिला कर प्रति दिन ३ वार करके पीनेसे बहुत लाभ पहुंचता है। एलबुमेनका परिमाण ह्रास करनेके लिये गालिक एसिड, टिंष्टिल, पार्थिवाम्ल, फिटकरी और पोटाश आइओडाइडका व्यवहार करना चाहिये। शरीर और पैरको गरम रखनेके लिये सर्वदा फ्लानेलको काममें लाना चाहिये।

हाथ पैरकी कौषिक झिल्लीसे रक्तका जल-भाग निकल जानेसे ही शोथ उत्पन्न होता है। गर्भावस्थामें रक्तका परिवर्त्तन और विवृद्ध जरायुके चाप द्वारा रक्तके परिचालनका व्याघातही इसका कारण है। इस शोथमें एपिस मेलिफिका वा माक्षिकविष अव्यर्थ महौषध है। उपरोक्त मूत्रकारक औषधका भी प्रयोग किया जा सकता है। १ बुंद माक्षिक विषके टिंचरको १ औंस जलमें अच्छी तरह मिलावे, प्रति दिन आध ड्राम १ छटांक जलमें मिला कर दिनमें तीन वार करके सेवन करनेसे बहुत लाभ पहुंचता है। होमियोपाथ गण इसके विशेष पक्षपाती हैं।

पूर्वोक्त औषधका सेवन करनेसे यदि पीड़ाकी शान्ति न हो, वरन् दिनों दिन वृद्धि ही देखी जाय, तो अकाल प्रसव कराना ही उचित है, नहीं तो कठिन सूतिकाक्षेत्रज आक्षेप वा वृक्कमें (Kidney) ब्राइटस रोग उत्पन्न हो सकता है। ७वें वा ८वें मासमें अकाल प्रसव करनेसे गर्भस्थ सन्तानके नष्ट होनेका डर नहीं रहता, वरन् इस प्रकार रोगसे पीड़ित प्रसूति यदि पूर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कालमें प्रसव करे, तो प्रायः मृत-सन्तान ही भूमिष्ठ होती है।

सुस्थावस्थामें मूत्रमें एलबुमोज वा पेप्टोन नहीं मिलता, किन्तु दीर्घकालस्थायी अजीर्ण रोगमें तथा अस्थिमज्जाप (Osteomyelitis), अभ्यन्तर पूय (*Empyema*), सपूय अन्त्रावरण प्रदाह (*Peritonitis*), क्षयकास (*Phthisis*), फुस्फुसप्रदाह (*Pneumonia*), शीताद (Scurvy) आदि व्याधियोंमें मूत्रमें पेप्टोन पाया जाता है। इस रोगका ऐसा कोई विशेष लक्षण नहीं जिससे रोगके अस्तित्वका पता लग सके। मूत्र हिलानेसे उसमें बहुत फेन आता है और परीक्षा द्वारा एलबुमेन पाया जाता है।

मूत्रयन्त्र अथवा उसके वस्तिकोटर (*Pelvis*)-में पीपका सञ्चार, मूत्राधार अथवा मूत्रमार्गमें प्रदाह, प्रदर-रोग (Leucorrhaea) और मूत्रमार्गके समीप स्फोटकके विकाश आदि कारणोंसे मूत्रके साथ पीप निकलती है। इसे (*Pyuria*) या पोप मिश्रितमूत्ररोग कहते हैं। इसमें मूत्र गदला और दुर्गन्धयुक्त होता है। लाइकर पोटाश मिलानेसे रज्जुवत् पोप और उत्ताप होनेसे एलबुमेन पाया जाता है। अणुवीक्षण द्वारा पीपका कण दिखाई देता है। पीपके तारतम्यानुसार रोगके लक्षणमें भी कमी वेशी देखी जाती है।

मूत्रयन्त्रके वस्तिकोटर (*Pelvis*)से पोप निकलने पर भी मूत्र पीपमिश्रित और अम्लाक्त तथा श्लैष्मिक झिल्लीके त्वक्में परिपूर्ण रहता है। इस समय कमरमें हमेशा दर्द मालूम होता है। मूत्राधारसे पोप निकलनेसे मूत्रत्यागके बाद रज्जुवत् पोप तथा मूत्रमार्गमें पीप रहनेसे मूत्रत्यागके पहले ही पीप निकल पड़ती है। प्रदरजनित मूत्रमें पीप रहनेसे कैथिकर नामक नलयन्त्र द्वारा मूत्र निकलनेके समय उसमें पोप नहीं दिखाई देती। अधिक दिन यह पीड़ा स्थायी होनेसे मूत्रयन्त्र आक्रान्त हो सकता है।

रोगका मूल कारण बतला कर पहले चिकित्सा द्वारा उसीकी यन्त्रणा दूर करना उचित है। पीछे पीपकी उत्पत्ति रोकनेके लिये फिटकरी, गालिक एसिड, डिकक्सन, युभायसीं वा बकु, बैलसम, कोपेवा, तारपिनका तेल और सङ्कोचक औषधोंका प्रयोग करना चाहिये। मूत्राशयमें जलन (Cystitis) देनेसे मृदु कार्बलिक वा जिङ्क (दस्ताधातु) लोशन द्वारा पिचकारी तथा वहां पर उष्ण स्वेद और प्रलेप दे। रोगीके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये बलकारक आहार, जलवायु-परिवर्त्तन, समुद्रजलमें स्नान, बलकारक औषध (Tonics) काडलिभर आयलकी व्यवस्था करे।

अजीर्णताके कारण रक्तके मध्य अधिक चर्बीके सञ्चय तथा मूत्रवाह प्रणाली (Ureters)-के मध्यस्थित लसीका-नाड़ीके स्फीति-जन्य विदारणसे ही अन्नरसाश्रित मूत्र (*Chylous Urine*) रोगकी उत्पत्ति स्वीकार की जा सकती है। इस सम्बन्धमें डा० ल्युइस और कर्निहमका कहना है, कि Filaria sanguinis Hominis नामक पराङ्गपुष्टकारी सूक्ष्म कीट मूत्रवाह प्रणालीकी लसिका नालीके मध्य प्रवेश कर एकत्र लोष्ट्राकारमें अवस्थान करते हैं। उनके दबावसे उक्त नाली भिन्न हो मूत्रसह लसिका और अन्नरसके निकलनेमें सहायता पहुंचाती है। डा० मानसन (Dr. *Manson*)-ने परीक्षा द्वारा उस कीटजातिके *Diurna*, *Nocturna* और *Perstans* नामक तीन प्रकारके भेद निर्देश किये हैं अर्थात् वे सब कीड़े दिन रात रक्तमें रहते हैं। फिर ये तीनों कीट भी भिन्न भिन्न आकारके होते हैं। मादा ३।४ इञ्च लम्बी और बालकी तरह पतली तथा नर उससे कुछ छोटा होता है। उनका डिम्ब $\frac{१}{१६००}$ से $\frac{१}{६००}$ लम्बा होता है। वे सब डिम्ब अण्डाकारसे क्रमशः लम्बे होते हैं। यह अवस्था उनकी भ्रूण (Embryo) कहलाती है।

उक्त विभिन्न श्रेणीके कीटोंके अवस्थानानुसार मूत्रमें भी दिनमानादिक्रमसे अन्नरस (Chyle) देखा जाता है। ग्रीष्मप्रधान देशोंमें ही प्रधानतः इस रोगका प्रादुर्भाव हुआ करता है। बाल वृद्ध युवा तथा विशेषतः स्त्रीजाति ही इस रोगसे आक्रान्त होती है।

इस व्याधिसे आक्रान्त होनेसे पहले किसी प्रकार का भी लक्षण दिखाई नहीं देता। हठात् यह व्याधि आक्रमण कर देती है। उस समय मूत्र लोहिताभ श्वेत-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्णका हो जाता है। कभी कभी फेनयुक्त तथा बरतन में रखनेसे ऊपरी भागमें दूधकी छालीके जैसा पदार्थ दिखाई देता है। रासायनिक परीक्षा द्वारा उसमें साण्ड-शुक्र, रक्ततान्त (Fibrin) और चर्बी पाई गई है। इथर मिलानेसे उसका कुछ अंश गल जाता है। अणुवीक्षण की सहायतासे उसके मध्य तैलविन्दु, शस्यवत्कोष, परा-ङ्गपुष्टप्राणी और लोहितवर्ण रक्तकणिका दृष्टिगोचर होती है। उत्ताप देनेसे मूत्र शिथिलभावमें संयत होता और उससे दूधसी गंध निकलती है। रोगीके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें कोई विशेष व्यतिक्रम नहीं देखा जाता, केवल उसकी देह शीर्ण और दुर्बल हो जाती है। वह कमरमें उदरके नीचे और मूत्रमार्गमें वेदनाका अनुभव करता है। कभी कभी संघत काइल द्वारा भी मूत्रवरोध होता है।

मूत्रमें पोप वा फोस्फेट रहने पर भी इस रोगके साथ भ्रम हो सकता है। उस समय रासायनिक प्रक्रिया द्वारा प्रकृत रोगका पता लगाये विना काम नहीं चलता। बहुकालव्यापी यह रोग विलकुल आरोग्य हो जाने पर भी फिरसे अथवा बीच बीचमें हो सकता है। कभी कभी अकस्मात् रोगीको मृत्यु भी हो जाती है।

कभी कभी रोग विना चिकित्साके भी आरोग्य हो जाता है। औषधोंमें पोटाश आइओडाइड, पाइको नाइटेट आव पोटाशियम, टिं-ष्टिल और मानग्रोभ वृक्षकी छालका व्यवहार कर सकते हैं। लवणाक्त जलमें स्नान और वलकारक पथ्यसे भी बहुत उपकार होता है। थोड़ा मांसका जूस भी दिया जा सकता है। शरीरमें फिलेरिया कीटको न घुसने देनेके लिये गरम जलको ठंढा करके पीना और खाद्य द्रव्यादिको जलसे पाक करना चाहिये।

सरक्त-मूत्र रोग निम्नोक्त कारणसे उत्पन्न हुआ करता है। १ आघात, २ तारपिनका तेल वा कन्था-रिस नामक स्पेन देशीय माक्षिक औषध (Canthari-dis)-का सेवन अथवा मूत्रपथरी, कर्कटरोग, एम्बलि-जम, साण्डशुक्रमूत्र (Acute Bright's disease)-से मूत्रयन्त्रका रक्ताधिक्य वा प्रदाह; ३ मूत्राधारका रक्ता-धिक्य वा प्रदाह अथवा उसमें अर्बुद (Polypus) शिराप्रसारण (Varicose veins) अथवा कर्कटरोग; ४ प्रमेह (Gonorrhaea) वा किसी दूसरे कारणसे मूत्रमार्गमें प्रदाह; ५ धूम्ररोग (Purpura), शीताद (Scurvy), वसन्त और हैजा आदि विषज रोगोंसे रक्तका तारल्य और परिवर्त्तन; ६ दारुण मनस्ताप और ७ ग्रीष्मप्रधानदेशमें मूत्रयन्त्रमें पराङ्गपौष्टिक कीटका संस्थान ही प्रधान कारण है। कभी कभी प्रातिनिधिक उपसर्गका भी कारण दिखाई देता है। ग्रीष्मप्रधान मोरिसस द्वीपमें इस संक्रामक रोगका प्रादुर्भाव हुआ करता है।

इस रोगमें मूत्र लाल दिखाई देता है। हमेशा वा कभी कभी मूत्रके साथ रक्त गिरता है। अङ्गचालना, अश्वारोहण वा द्रव्यविशेषके खानेसे यह रोग बढ़ता है। मूत्रयन्त्रसे रक्त निकलने पर मूत्र धूम्रवर्णका दिखाई देता है। मूत्रयन्त्रके वस्तिगह्वर और मूत्रवाहप्रणालीसे निक-लते समय लंबा और कीटाकृति संयत रक्त तथा मूत्रा धारसे रक्तस्राव होने पर पेशाव करनेके बाद रक्त गिरता है। मूत्रमार्ग (Urethra) से निकलने पर पहले ही रक्त निकलता है। अणुवीक्षण द्वारा रक्तकणिका तथा रासायनिक द्वारा शुक्रांश पाया जाता है। इस समय उस स्थानमें वेदना होती तथा रक्तस्रावके सभी लक्षण दिखाई देते हैं। कभी कभी सैनिक तथा गुल्मवायु (हिष्टिरिया) रोगाक्रान्त स्त्रियां बड़े कौशलसे मूत्रके साथ रक्त मिला देती हैं। ऐसी हालतमें रक्तस्रावके लक्षण रोगनिर्णयके सहकारी होते हैं। यह रोग अकसर आरोग्य हो जाता है।

एसिड गालिक, सुगर आव लेड, पाइरो-गालिक एसिड, एसिड सलफ्युरिक डिलके साथ टिं ओपियाई, हमामेलिस आदि औषध सेवनीय है। वहिर्देशमें आर्ग-टिन इञ्जेक्सन करनेसे बहुत लाभ पहुंचता है। मूत्रा-धारमें होनेसे शीतल जलकी पिचकारी तथा मूत्रमार्गमें होनेसे एक साउण्ड वा कैथिटर यन्त्रको कुछ देर तक लगा कर रखनेसे बहुत उपकार होता है।

उपरोक्त लोहित सभी रक्त कणिकाएं जब गल कर मूत्रके साथ बाहर निकलती हैं, तब उसे हिमाटिन्युरिया (Haematinuria) वा Haemoglobinuria कहते हैं। इसमें स्नायुमण्डलकी क्रियाके व्यतिक्रम होनेके कारण मूत्रयन्त्रस्थ रक्तनालियां स्फीत हो उनके मध्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया। तब अलाउद्दीनने मौका देख कर अपना दावा बढ़ाया। देशके अन्यान्य हिन्दू राजा देवगिरिके राजाकी सहायतार्थ तैयार हो रहे थे। रामचन्द्र राव और कुछ दिन अवरुद्ध अवस्थामें रहते तो प्रतिवेशी नरपतियोंकी सहायतासे वे उन्मुक्त हो सकते थे। किन्तु दुर्ग-रक्षाके लिए कृतसङ्कल्प होने पर उन्हें मालूम हुआ, कि अवरोध-से पहले जिन बोरोंको उन्होंने शस्यपूर्ण समझ कर भण्डारमें रखवाये थे, वे असलमें नमकके बोरे थे। दैव-दुर्विपाकसे सहसा रसद घट जानेसे उन्हें अलाउद्दीनसे दबना पड़ा। उन्होंने ६०० मन मोती, २ मन रत्न, १००० मन चांदी और ४००० हजार रेशमके थान तथा अन्यान्य बहुमूल्य पदार्थ दे कर अलाउद्दीनसे सन्धि मोल ली। इसके सिवा एलिचपुर जिला मुसलमानोंको देना पड़ा और नियमित कर दे कर दिल्लीश्वरकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। तब अलाउद्दीन घेरा उठा कर अपने देशको चल दिये।

इसके बाद अलाउद्दीनने अपने वृद्ध चचा जलालउद्दीन खिलजीको किस तरह मार कर दिल्लीका सिंहासन हथि-याया, यह इतिहास-प्रसिद्ध बात है। उनके बादशाह होने पर रामदेव रावने कई वर्ष तक दिल्लीको कर नहीं भेजा। इस कारण अलाउद्दीनने मालिक काफूरकी अधीनतामें तीस हजार अश्वारोही सेना उनके विरुद्ध युद्धार्थ भेजी। १३०७ ई०में सेना देवगिरिके पास पहुंची। मालिक काफूरने उन्हें कैद करके दिल्ली भेज दिया। वहां छः मास तक कैद रखनेके बाद अलाउद्दीनने उन्हें सम्मान-के साथ लौट जानेकी अनुमति दी। इसके बाद रामदेव रावने बराबर दिल्लीश्वरसे मेल रक्खा।

१३०९ ई०में रामदेव रावकी मृत्यु हुई और शङ्कर राव राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने दिल्लीश्वरके साथ विरुद्ध आचरण किया, जिससे १३१२ ई०में वे मालिक काफूरके हाथ मारे गये।

इस समय देवगिरिमें मुसलमानोंका आधिपत्य हो गया। अलाउद्दीनकी मृत्युके बाद दिल्लीके दरबारमें जो गड़बड़ी फैली थी, उस मौके पर रामदेवके जामाता हरपालदेवने विद्रोही हो कर दाक्षिणात्यसे मुसलमान शासकोंको मार भगाया। १३१८ ई०में अलाउद्दीनके तृतीय पुत्र मुबारकको इस विद्रोह दमनके लिए दाक्षिणात्य आना पड़ा। हरपाल मुसलमानोंके हाथ पकड़े और मार डाले गये। इस तरह महाराष्ट्रदेशसे हिन्दूराज्य विलुप्त हुआ। मुसलमान लोग दिनों दिन प्रबल हो उठे और सारे महा-राष्ट्रमें अपना प्रभुत्व फैलाने लगे।

महाराष्ट्र देशके प्राचीन हिन्दू राजवंशका इतिहास अब तक संक्षेपमें कहा गया। मुसलमानोंके आगमन पर्यन्त जो जो प्रधान घटनाएं महाराष्ट्रदेशमें हुई हैं, उनकी तालिका नीचे दी जाती है।

रामायण-काल.....महाराष्ट्रदेशमें	अनार्य-निवास।
महाभारत-काल.....महाराष्ट्रमें	आर्य-उपनिवेशकी प्रतिष्ठा।
ईस्वी पूर्व ३५० से ७३ तक	अशोकके उद्योगसे बौद्धधर्मका प्रचार। देशीय रठ्ठ, भोज, राष्टिक, महारठ्ठ रठ्ठकुड़ आदि जातियोंका अधिपत्य।
ई०-पूर्व ७३से२१८ ई० तक	सातवाहन-वंशका राजत्व।
२१८ ई०से ६०० ई० तक	आभीर, राष्ट्रकूट आदिका आधिपत्य।
६०५ ई०से ७४७ ई० तक	पूर्व चालुक्य।
७४८ ई०से ९७३ ई० तक	राष्ट्रकूट।
९७३ से ११८९ ई० तक	उत्तर-चालुक्य।
११८७ से १३१८ ई० तक	यादव-वंश।

उस जमानेका साहित्य।

महाराष्ट्र देशमें बहुत प्राचीन समयमें पालिभाषा प्रचलित थी। सातवाहनवंशके राज्यकालमें महाराष्ट्र नामक प्राकृत भाषाका इस देशमें तथा मालवादि प्रदेशमें भी प्रचार था। प्राकृतप्रकाशके कर्त्ता वररुचिका मत है, कि इस महाराष्ट्री भाषासे शौरसेनी, मागधी और पैशाची आदि देशीय भाषाओंकी उत्पत्ति हुई है। साहित्य-दर्पणके रचयिताने "गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत्' अर्थात् नाटकमें महाराष्ट्री भाषामें सङ्गीतादिकी रचना करनेका विधान किया है। सातवाहनकी सप्त-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शतीके सिवा सेतुबन्ध आदि दो एक काव्य-ग्रन्थ भी इसी प्राचीन महाराष्ट्री भाषामें रचे गये थे। वर्त्तमान मराठी भाषाको उसी प्राचीन महाराष्ट्रीकी दुहिता समझना चाहिए। इस भाषाके १० भागोंमें ६ भाग शब्द संस्कृत वा संस्कृतमूलक हैं। इस भाषाके साहित्य संस्कृत ग्रन्थ बहुतसे मौजूद हैं। यादववंशीय राजाओंके राज्य-कालमें आधुनिक मराठी भाषामें जो जो ज्ञानगर्भ पुस्तकें रची गईं उनका परिचय पहले ही दिया जा चुका है। मुसलमानी जमानेमें भी महाराष्ट्र-साहित्य क्रमशः परिपुष्ट हो रहा था, यथास्थानमें विवरण दिया गया है।

मुसलमान अधिकार-बाह्मनी राजवंश।

पाठकोंको महाराष्ट्रदेशके मुसलमानी जमानेका इतिहास 'बाह्मनी' 'निजामशाही' आदि शब्दोंमें मिलेगा। यहां सिर्फ वे ही बातें कही जायगीं, जिन घटनाओंके साथ महाराष्ट्रियोंकी भावी उन्नतिका सम्बन्ध था।

मुसलमानोंके देवगिरिके हिंदूराज्य ध्वंस करने पर १३२० ई०में दिल्लीमें जो विद्रोह उपस्थित हुआ, उसके साथ दाक्षिणात्यके छोटे छोटे हिंदू राजाओंका गुप्त सम्बन्ध था। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि उस समय दाक्षिणात्यमें उन लोगोंने भी विद्रोह उपस्थित किया था। उस विद्रोहके दमनार्थ महम्मद तुगलकको दाक्षिणात्य जाना पड़ा। इस घटनाके बाद २५ वर्ष बीतने भी न पाये, कि महाराष्ट्रियोंने मौका देख कर १३४७ ई०में पुनः पराधीनताकी बेड़ी तोड़ फोड़नेके लिये कार्रवाई कर दी। इसी समय स्थानीय मुसलमानोंने भी दिल्लीके मुसलमानोंके विरुद्ध चलनेके लिए कमर कस ली। मुहम्मद तुगलक इस विद्रोहका दमन न कर सके। मौके पर हुसेन गाङ्गू नामक एक मुसलमानने दाक्षिणात्य में नये राज्यकी स्थापना कर दी। इस राज्यके स्थापन करनेमें महाराष्ट्रके छोटे छोटे राजाओंकी विशेष सहायता थी। परन्तु कार्योद्धारके बाद हुसेनने उनकी मित्रताको बिलकुल भुला दिया। हिंदुओंने सोचा था, दिल्लीके साथ सम्बन्ध विच्छेद कर देनेसे ही वे दाक्षिणात्यमें मुसलमानोंके साथ प्रतिद्वन्द्वितासे जीत जायंगे। इसी भरोसे पर उन्होंने हुसेनकी सहायता की थी। हुसेन भी महमूद गजनवी जैसे हिंदूधर्मके विद्वेषी न थे। वे सिया सम्प्रदायके थे, जिससे कि हिन्दूधर्म की दो-एक बातें मिलती जुलती हैं। सुन्नीसे सिया मत बहुत कुछ उदार है। हुसेन गाङ्गू के चरित्रमें अगर यह उदारता विशेष रूपसे परिस्फुटित न होती, तो वे शायद ही हिन्दुओंसे इतनी सहानुभूति प्राप्त कर सकते। हिन्दुओंके जातीय जीवनमें तब अवसाद उपस्थित हुआ था। यादववंशके राजत्वकालमें बहुतसे दिग्विजय करके वे श्रान्त क्लान्त तथा बहु विलासी हो गये थे। इसी कारण राजनीति कौशल और सामरिक अध्यवसायमें वे दाक्षिणात्यके तरुणवीर्य मुसलमानोंका मुकाबला न कर सके। हुसेन गाङ्गू ने उन लोगोंके साथ विश्वासघातकता करके भी अपने राज्यकी उन्नति करनेमें सफलता पाई। महाराष्ट्रके उत्तरमें नर्मदासे ले कर दक्षिणमें कृष्णा तक तथा पश्चिममें सह्याद्रिसे ले कर तैलङ्ग और गोएडवन तक यह मुसलमानीराज्य विस्तृत हुआ। कोङ्कणके हिन्दूराजाओंने बहुत दिनों तक मुसलमानोंके प्राधान्यकी परवाह नहीं की थी।

हुसेनके बाद उनके पुत्र महम्मदशाह (१३५८—१३७५ई०) बाह्मनी राज्यके अधिपति हुए। इनके जमानेमें महाराष्ट्रमें नये सिक्के चले, जिसमें हिन्दूराजाओंने बाधा पहुंचाई। वे नये सिक्कोंको गला देने लगे। इस समाचारको पा कर महम्मदशाहने बहुत-से हिन्दुओंको कठोर दण्ड दिया इस सुलतानके साथ युद्ध करके जब उनकी आंखे खुलीं तब वे समझ गये, कि दिल्लीके बादशाहके विरुद्ध हुसेन गाङ्गू को सहायता दे कर उन्होंने अच्छा नहीं किया। तब वे फिर दिल्लीके बादशाह तुगलकको दाक्षिणात्य पर आक्रमण करके मुहम्मदका उच्छेद करनेके लिए बुलानेका प्रयत्न करने लगे। परन्तु फिरोजशाहने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। हिन्दुओंने फिर एक बार महम्मदके साथ बलकी परीक्षा की। इस युद्धमें हिन्दुओंने तोपोंसे काम लिया था, ऐसा उल्लेख मिलता है। सत्तर हजार हिन्दू इस युद्धमें मारे गये। मुसलमान लोग जीत तो गये पर झगड़ेका अन्त नहीं हुआ। १३६६ ई०में हिन्दुओंने फिर मुसलमानोंके साथ युद्ध किया। अबकी बार भी हार गये। इसके बाद राज्यके आभ्यन्तरीण विप्लव-निवारणमें सुलतानके कुछ दिन बीत गये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महम्मदशाहके बाद जितने भी सुलतान हुए, उनके विस्तृत विवरणके साथ इस इतिहासका कोई सम्बन्ध नहीं है। उनके राजत्व-कालमें भी दाक्षिणात्यमें हिन्दू मुसलमानोंका विवाद मिटा नहीं। सिया सुन्नी सम्प्रदाय भी परस्पर लड़ता झगड़ता रहा। मध्य-एशियासे धर्मान्ध मुसलमानोंकी आतम ज्यादा न होनेसे दाक्षिणात्यमें मुसलमानोंका क्रमशः ह्रास होने लगा। कुछ ही दिनोंमें इस्लामधर्म पर हिन्दू धर्मका प्रभाव पड़ा। बहुतसे मुसलमान हिन्दू देव-देवियोंके प्रति श्रद्धा करने लगे।

१५२६ ई०में बाह्मणीवंशका विलोप हो गया। इस वंशके सुलतानोंने कुल १७६ वर्ष महाराष्ट्रमें राज्य किया था। ईसाकी १५वीं शताब्दीमें इसके समान प्रबलपराक्रान्त राजवंश सारे भारतमें और नहीं था। दिल्लीके बादशाहगणको भी इन राजाओंके प्रति टेढ़ी नीगाह करनेका साहस नहीं होता था। इस वंशके प्राचीन राजाओंने जैसी सुव्यस्था की थी; उससे इनका राज्य और भी स्थायी रह सकता था। परन्तु पीछेके सुलतानगण जरा जरासे कारणों पर दूसरोंके राज्य हड़पने पर उतारू हो गये और इस तरह राज्य-विस्तारकी कोशिश करने लगे, तथा नये जीते हुए राज्योंकी समुचित व्यवस्था न कर सके। सूबेदार लोग बहुत जगह बलवान् हो उठे और सुलतान हीनबल होने लगे। महम्मद गवानके मन्त्रित्वकालमें इन विषयों पर एक बार ध्यान गया था। परन्तु उनकी व्यवस्थासे राजकर्मचारियोंको आजादी पर चोट पहुंची, जिससे वे उसके घोर विरोधी हो उठे। इस कारण गवानको मृत्युके बाद फिर चारों तरफ विशृङ्खलता फैल गई। जिस साल बाह्मनी राज्यका लोप हुआ, उसी साल बाबरने उत्तर-भारतमें मुगल-साम्राज्यका सूत्रपात किया था। मुगलोंने ही अन्तमें बाह्मनी राज्यकी अन्तिम शाखाको काट डाला।

प्रजाके सुख-दुःखके प्रति बाह्मनी-वंशके राजाओंका ध्यान था। बिना कारण वे हिन्दुओंको कष्ट न देते थे। हिन्दू लोग उनके शासन कालमें कभी उच्च पद पर नियुक्त नहीं हुए, न उन्हें सामरिक विभागमें ही नियुक्त होनेका अधिकार था। वे खेती बारी और कम तनखाहमें नौकरी करके ही अपना गुजारा चलाया करते थे। ये विधर्मी राजा उनके धर्म पर आघात न करते थे। उस समय राज्यमें जो विद्रोह हुआ था, उसमें हिन्दुओंने प्रकाश्य रूपसे बिलकुल ही योग नहीं दिया था, न उनकी इसमें सहानुभूति ही थी। इस वंशके राज्य-कालमें महाराष्ट्रमें तुर्की, इरानी, हबसी, मुगल आदि विभिन्न वंशके मुसलमान आ कर बसे थे। धीरे धीरे इनकी प्रतिष्ठा ऐसी बढ़ी कि पासमें अगर विजयनगरका हिन्दू राज्य न रहता तो महाराष्ट्रकी अवस्था बहुत शोचनीय हो जाती। कुछ भी हो, मुसलमान व्यापारियोंके प्रयत्नसे इस समय देशके वैदेशिक वाणिज्यने बहुत कुछ उन्नति कर ली थी। मुसलमान लेखकोंका कहना है, कि बाह्मनी राज्यमें चोर डकैत और राहजानियोंका डर बिलकुल न था। मुसलमानोंकी कोशिशसे बड़ी बड़ी इमारतें भी बन गई थीं, जिससे देशके स्थापत्य शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हुई। मुसलमान बालकोंकी शिक्षाके लिए बाह्मनी सुलतानोंने ग्राम ग्राममें पाठशालाएं खोल दी थीं। पूर्त्तकार्य्य भी उनकी लापरवाही न थी। बिदर और कुलबर्गामें उनकी राजधानी थी।

बाह्मनीवंश देखो।

बरिदशाही वंश।

बाह्मनीवंशके सुलतानोंका गौरवसूर्य जितना ही अस्ताचलकी ओर बढ़ने लगा, उतनी ही उनके राज्यमें सिया और सुन्नी सम्प्रदायोंमें झगड़ेकी आग धधकने लगी। इस मौके पर महम्मदशाहके राज्यकालमें (१४८२-१५१८ ई०) महाराष्ट्रोंने एक बार विद्रोह करके मस्तक उठाया था, किन्तु कासिम बरिद नामक एक मुसलमान सरदारके प्रयत्नसे वह विद्रोह दब गया। सुलतानने सरदारके इस कार्यसे खुश हो कर उनकी तरक्की कर दी। वे बिदर प्रान्तकी सूबेदारी पा कर १४९२ ई०में सुलतानके प्रभुत्वको अस्वीकार कर स्वाधीन हो गये। यह सरदार बरिदशाहीवंशके आदि पुरुष हैं। इनके वंशधरोंने "शाह" उपाधि ग्रहण की थी। अहमदनगर और बीजापुरके सूबेदारोंके साथ कलह होनेसे बरिदशाही राज्य बहुत कुछ क्षीण हो गया था। अन्तमें दाक्षिणात्यमें औरङ्गजेबकी सूबेदारीके समय उन्हींके आदेशसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीर जुमलाकी कोशिशसे इस राज्यका अस्तित्व जाता रहा।

इमादशाही वंश।

इस वंशके आदिपुरुष एक तेलगू ब्राह्मण थे। विजयनगरके राजाका पक्ष ले कर युद्धके समय ये बाह्मनीवंशके सुलतानकी सेनाके हाथ पकड़े गये थे। उन्हें सपरिवार मुसलमान बना लिया गया था। तबसे वे फतेह-उल्ला नामसे परिचित हुए। ये अपने कार्यदक्षता गुणके बल पर महम्मद गवानके प्रियपात्र हो गये और इमाद उल्मुल्क उपाधि प्राप्त कर बरार प्रान्तके सूबेदार बन गये। १४८४ ई०में फतेह उल्लाने 'इमाद शाह' नाम धारण कर स्वतन्त्रताकी घोषणा कर दी। इनके वंशधर अधिक दिन राज्य न कर पाये थे। अहमदनगरके सूबेदार ही इस वंशके ध्वंस होनेके कारण हुए। (१५७२ ई०)

निजामशाही राजवंश।

दिमप्पा बहिरु (भैरव-बहिरओ) नामक एक ब्राह्मण विजयनगरमें वास करता था। इमादशाही वंशके आदिपुरुषकी तरह उस ब्राह्मणका लड़का भी युद्धमें पकड़ा जा कर मुसलमानोंके हाथ कैद हुआ और मुसलमान बना लिया गया। यह ब्राह्मणका लड़का बादमें मालिक नायब निजाम उल-मुल्कके नामसे परिचित हुआ। महम्मद गवानके कार्यकालमें आपने उच्च पद प्राप्त किया था। मालिक नायबके पुत्र मालिक महम्मद निजामशाही वंशके आदिपुरुष थे। इनके समयमें बाह्मनीवंशके अधःपतनके पूर्व लक्षणोंको देख कर मराठोंने नाना स्थानोंमें सिर उठानेकी कोशिश की थी। राज्यमें शान्ति स्थापनके लिए मन्त्री महम्मद गवानको किसी किसी स्थानमें देशकी रक्षाके लिए इन्हीं लोगोंको नियुक्त करना पड़ा था। पश्चिम महाराष्ट्रके नाना स्थानोंमें मराठोंका ही आंशिक आधिपत्य स्थापित हो गया था। वे मुसलमानोंके प्रतिनिधि बन कर देशका शासनकार्य चला रहे थे। मालिक महम्मदने दौलताबाद प्रान्तकी सूबेदारी पाते ही मराठा-दुर्ग-रक्षकोंको पूरी तरहसे अपने वशमें लानेकी कोशिश की। परन्तु सुलतानकी सनद रहने पर भी उन लोगोंने मालिक महम्मदकी परवाह न की, न दखल दिया। अहमदने तब एक एक करके उन सबके विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ कर दिया। पहले जुन्नरके अन्तर्गत शिवनेरी दुर्ग (महात्मा शिवाजीका जन्मस्थान)में घेरा डाला। कई मास अवरोध कायम रहा पर फिर भी मराठोंने पराजय स्वीकार नहीं किया। मालिक अहमदने उन लोगोंसे जब अनेक विद्रोह-अपराध पर क्षमा प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा की, तब मराठोंने विरोध त्याग दिया। पीछे पुरन्दर, मनोरञ्जन, चन्दनबन्दन, लोहगढ़, तोरणा आदि महाराष्ट्रके प्रधान दुर्ग इनके हस्तगत हुए। राजापुर तक कोङ्कणदेश भी इन्होंने जीत लिया। स्वाधीनता लाभके पहलेसे ये जुन्नरमें रहते थे। अहमदने अपने शासनाधीन प्रदेशमें ऐसा सुशासन प्रवर्त्तित किया कि, लोग लाठीकी मूठों पर सोना बांध कर प्रकाश्य भावसे चाहे जहां जा आ सकते थे। १४८९ ई०में इन्होंने बाह्मनीवंशके सुलतानकी अधीनता अस्वीकार कर दी। दौलताबाद और जुन्नर इन दोनोंके बीच विङ्कुर नामक एक ग्राम था। उस ग्रामको इन्होंने विशाल नगर बना दिया। उनके नामानुसार उस नगरका नाम महमदनगर पड़ा (१४८४ ई०)। मालिक अहमदने 'निजामशाह' उपाधि ग्रहण करके राज्यशासन करना प्रारम्भ कर दिया। इनके समान संयतेन्द्रिय व्यक्ति मुसलमान समाजमें उस समय दूसरा कोई न था। द्वन्द्वयुद्ध द्वारा विवादकी मीमांसाका मार्ग दाक्षिणात्यमें इन्हींके समयमें प्रवर्त्तित हुआ था। फल-स्वरूप, महाराष्ट्रके गांवोंमें भी तलवार घुमानेका अनुराग बढ़ने लगा और प्रायः सर्वत्र ही तलवार घुमानेके लिए रङ्गशालाएं स्थापित हो गईं।

अहमशाहके बाद उनके पुत्र सप्तमवर्षीय बुहरनशाह निजामशाही राज्यके अधिपति हुए। आदिलशाही और इमादशाही सुलतानोंके साथ युद्धमें ये पराजित हो गये। कम्बरसेन (कुमारसेन) नामक एक ब्राह्मण बुहरनके दरबारमें बहुत दिनोंसे प्रधान मंत्रीका कार्य करते थे। इस सुलतानके समयमें मराठोंने राजनैतिक क्षेत्रमें समधिक प्रसिद्धि पा ली थी। सम्भाजी चिटनीसको "प्रताप राव" उपाधि दे कर बुहरनशाहने उन्हें महाराष्ट्रमें दूत बना कर भेजा था। पार्वत्य प्रदेशवासी मराठे अधीनता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार न करके प्रायः विद्रोहादि किया करते थे। इस कारण सुलतानने पेशवा कंवरसेनके परामर्शानुसार उन्हें उच्च राजकार्य्यमें नियुक्त करके शन्त किया। इसी समयसे महाराष्ट्र लोग दिनों दिन राजकार्य्यमें समधिक दक्षता दिखा कर अपने भावी अभ्युदयका मार्ग साफ करने लगे। बुरहन शाह सियामतके विशेष पक्षपाती थे, इससे सुन्नी सम्प्रदायके लोग सनक गये। फल यह हुआ, कि राज्यमें लड़ाई-दंगा और अशान्ति होने लगी। ४७ वर्ष राज्य भोगनेके बाद १५५३ ई०में सुलतानकी मृत्यु हुई।

इस वंशके तृतीय सुलतान हुसेन निजामशाहके शासनकालमें दक्षिणापथमें हिंदू मुसलमानोंका झगड़ा चरम सीमा तक पहुंच गया। दाक्षिणात्यकी सभी मुसलमान-शक्तिने इकट्ठी हो कर एकमात्र हिन्दू-राज्य विजयनगरका ध्वंस कर डाला। १५६४ ई०में तालकोट-के युद्धमें रामराजके मारे जानेसे हिन्दू लोग हिम्मत हार गये। मुसलमानोंको कुमारिका अन्तरीप तक अधिकार फैलानेका मौका मिल गया। इसी समय आर्यावर्त्तमें मुगल-सम्राट् अकबर एक एक करके सारे हिंदू-राज्यों पर आक्रमण कर हिन्दूजातिका विनाश कर रहे थे। गत एक हजार वर्षके भीतर हिन्दू जातिके लिए ऐसा दुःसमय और सारा हिन्दुस्तान प्रायः यवन स्थानमें ऐसा परिणत हो गया था, कि भारतवर्षमें स्वधर्मनिष्ठ हिन्दुओंके लिए कोई आश्रय न रह गया।

इसके बाद मुर्तजा निजामशाहका जमाना आया। इनके जमानेमें विजयनगरके राज्य विभागको ले कर मुसलमानोंमें युद्ध विग्रहका सूत्रपात हुआ। नतीजा यह हुआ कि मराठोंको सिर उठानेका मौका मिला। इसी समय पुर्त्तगीजोंने भी आ कर पश्चिम भारतमें उपद्रव मचाना शुरू कर दिया। निजामशाहके सरदारोंको शराबकी भेंट दे कर इन लोगोंने भारतमें उपनिवेश स्थापन करनेकी आज्ञा प्राप्त कर ली। मुर्त्तजाने रेवा पर अधिकार करके इमादशाहीवंशका अस्तित्त्व ही मिटा दिया। इनके जमानेमें खानदेश भी निजामशाह राज्यके अन्तर्गत हो गया।

१५८६ ई०से १५९४ ई० तक मीरन् हुसेन, इस्माइल और बुहरन निजाम शाहने महाराष्ट्रके उत्तरभागका शासन किया। इनके शासनकालमें सिया और सुन्नियोंमें झगड़ा बढ़ा था। फलस्वरूप मीरनको भी प्राण देने पड़े थे। इस्माइलका राज्यकाल मुसलमानोंके आपसके कलहमें ही समाप्त हुआ। एक दल मुसलमानोंने दिल्ली-के बादशाह अकबरकी सहायताके लिए प्रार्थना की थी। बुहरन भी धर्मसम्बन्धी कलहको निवृत्ति न कर सके थे। इनकी सेना कुरला नामक स्थानमें पुर्तगीजोंसे युद्ध-में पराजित हुई थी।

इसके बाद हुसेन निजाम शाहकी लड़की सुलताना चांदबीबीका शासनकाल ही विशेष प्रसिद्ध है। इस असाधारण गुणशालिनी रमणीने मुगलोंसे अपने राज्य-की रक्षा जिस तरह की थी, वह वर्णनातीत है।

विस्तृत विवरण चांदबीबी शब्दमें देखो।

चांदबीबीके बाद निजामशाहीका इतिहास इस राज्यके मंत्रियोंके कार्यकलापसे ही भरा पड़ा था। अहमदनगर मुगलोंके अधीन हो जाने पर परिन्दा किलेमें निजामशाही राज्यकी राजधानी स्थानान्तरित कर दी गई। इस समय मालिक अम्बर नामक एक मुसलमान सरदार (जो अत्यन्त बुद्धिमान् और विश्वासी था)-की चेष्टासे निजामशाहीका नष्टप्राय गौरव कुछ दिनके लिये रक्षित हुआ था। मुसलमानोंके परस्परके झगड़ेसे मरहठोंको बड़ा लाभ हुआ, इनकी शक्ति और प्रतिपत्ति विशेषरूपसे वृद्धि हुई। मरहठोंकी सहायता-से निजामशाहीकी रक्षा सरदार अम्बरने की थी। शिवाजीके पितामह मालोजी भोंसले और मातामह लुखजी यादव रावने उससे कुछ पहलेसे निजामशाही दरबारमें प्रतिपत्ति लाभ की थी। बीजापुरके आदिल-शाही दरबारमें भी मरहठोंने अपनी प्रतिपत्ति और प्रभुत्व प्रतिष्ठामें कोई कसर न रखी।

मुगल-सम्राट् अकबरके और कुछ दिनों तक जीवित रहने पर निजामशाहीका अस्तित्व शीघ्र ही विनष्ट हो जाता, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। किन्तु उसकी मृत्यु हो जानेसे जहांगीरके दिल्लीके सिंहासनको प्राप्त करनेमें जो परस्पर कलह हुआ, उससे मालिक अम्बरने मरहठोंकी सहायतासे फिर अहमद नगर पर अपना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार जमा लिया और मुगल-प्रतिनिधि तथा सरदार खानखानाको पराजित किया। इसके बाद वह राज्यके भीतरी संस्कारों और प्रजाके उन्नतिसाधनमें प्रवृत्त हुआ। उसकी प्रजाहितैषिता आज भी उस देशकी प्रजाके मुंहसे सुनाई देती है। भूमिकी मालगुजारीके सम्बन्धमें प्रजाके हितके लिये जो सब संस्कार हुए उसमें भी सवाजी आनन्द राव, शिवाजीपन्त, मुत्सुद्दी और सखाराम मोकाशी प्रभृति मरहट्ठे कर्मचारियोंने निजामशाही राज्यको कई तरहसे सहायता दे कर अमरकीर्त्ति प्राप्त की है। मालिक अम्बरके इजारा पदपद्धतिका उन्मूलन करनेसे प्रजा अति सुखी हुई। खजाना वसूलीका भार ब्राह्मण-कर्मचारियोंके हाथ सौंपना ही अम्बरको उचित जंचा था। इन सब नई व्यवस्थाओंसे प्रजाके सुखी और सन्तुष्ट होने पर मालिक अम्बर मुगलोंके विरुद्ध शक्तिसंवाद करनेमें शीघ्रतापूर्वक समर्थ हुए थे।

इधर जहांगीरने अहमदनगर पर पुनः अधिकार कर लेनेके लिये फिर सैन्य भेजा। इस समय मालिक अम्बरने गुजरातके मुगल-सरदार अब्दुल्ला खांको पराजित किया था। मुगलोंने उस समय भेदसे बीजापुरके आदिलशाही सुलतान और अनेक महरठोंको फोड़ कर मालिक अम्बरसे अलग कर दिया। निरुपाय हो मालिक अम्बरको मुगलोंके साथ युद्ध करना पड़ा। फलतः मुगलोंने अहमदनगर और उसके समीपके गांवों पर कब्जा कर लिया। इसके बाद शाहजहां ससैन्य काश्मीर पर चढ़ाई करनेके लिये चला। यह देख मौका पा कर अम्बरने दक्षिणसे मुगलोंको भगा कर निजामशाही राज्यका उद्धार किया। फिर शाहजहांके दक्षिण लौटने पर मालिक अम्बरको पराजित होना पड़ा। इसके बाद मुगलोंके साथ मालिक अम्बरका झगड़ा न हुआ। सन १६२६ ई०में अस्सी वर्षकी उम्रमें मालिक अम्बरको मृत्यु हो गई। इसके ऐश्वर्य, औदार्य, ईश्वरनिष्ठा, सदाचार और न्यायपरताने मरहठोंके चित्तको आकर्षित कर लिया था।

मालिक अम्बरके बाद उसका पुत्र फतह खां निजामशाही राज्यका एकमात्र कर्णधार हुआ। वह पिताकी तरह बुद्धिमान् और कार्यदक्ष नहीं था, तथापि मालिकको राज-रक्षाके विषयमें यत्नवान् था; किन्तु अदूरदर्शी सुलतानने अन्यान्य परामर्शदाताओंके अनुरोधसे उसको कैद कर लिया। इस कार्यसे निजामशाहीके दूसरे सरदार भी भयभीत हुए। लुखजी यादवराव इससे पहले एक बार मुगलोंके पक्षावलम्बन करने पर भी इस समय निजामशाही राज्य-रक्षाकी ही चेष्टा करते थे। किन्तु सुलतानने सन्देह कर गुप्त सलाह करनेके बहानेसे बुला कर मरवा डाला। यादवरावके एक युवक पुत्र थे। ये भी इसी दुर्घटनामें मारे गये। इस घटनासे सारी मरहठा-सेना सुलतान पर क्रोधित हो उठी। लुखजीके भ्राताने मुगलोंका साथ दिया। उनके दामाद शाहजी भोंसले राज्यरक्षा विषयमें हताश हो कर पूनाके चारों ओरके प्रदेशोंको यथासम्भव शीघ्र अपने अधिकारमें करने लगे। ये निजामशाही और आदिलशाही दोनों राज्यके शासनाधीन प्रदेशोंको हस्तगत करने लगे। इधर मुगल सैन्यने राजधानी पर अधिकार कर लिया। इस समय राजकर्मचारी जो जिस प्रदेशका शासन करते थे वे उसे अपने अपने अधिकारमें कर स्वतन्त्ररूपसे शासन करने लगे। इस समय मरहठे सरदारोंमें कुछ एकताका सञ्चार हुआ था। शाहजी भोंसले इनके नेता थे। जूनानगरमें श्रीनिवास नामक एक अमलदार था। उसने शाहजीके साथ मिल कर शामगढ़ हस्तगत कर लिया। इसके बाद क्रमशः सैन्य संग्रह कर सङ्गमनसे अहमदनगर और दौलताबाद तक सारे प्रदेश उसके हाथ आ गये। शाहजीने बिजापुर राज्यके जिन प्रदेशोंको जीता था, उनका पुनरुद्धार करनेके लिये बिजापुर पतिने मुरारराव नामक एक ब्राह्मण सेनापतिकी अधीनतामें सेना भेजी। इस सैन्यदलने पूनाको बहुत क्षतिग्रस्त कर दिया था।

इस समय खानजहां लोदी उत्तर भारतमें दिल्लीके बादशाहके विरुद्ध बलवा कर महाराष्ट्रमें भाग आया। शाहजी आदि मरहठे सरदार लोदीके साथ मिल गये। किन्तु जब शाही फौज दक्षिणमें उपस्थित हुई, तब लोदीको परित्याग कर उन्होंने शाहजहांकी अधीनता स्वीकार कर ली। फलतः शाहजीको बादशाहकी ओरसे पांच हजारी मनसबदारी मिली। लोदी अब निजामराज्यमें भागा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वहां उसको निजामने आश्रय दिया। इससे मुगलोंने निजामको पराजित किया। ठीक इसी समय सन् १६२९ ई०में महाराष्ट्र देश लगातार दो वर्षकी अनावृष्टिसे जर्जरित हो गया। बहुतेरे भूखों मरे, देशके पशुपक्षी मर गये, कितने ही लोगोंने भाग कर आत्मरक्षा की। जो देशमें रह गये, वे महामारीके कारण पञ्चत्वको प्राप्त हुए। इधर मुगलोंकी बन गई। इन्होंने इस देशको खार क्षार करना स्थिर कर लिया था। ऐसे समय निजामने प्रसिद्ध मालिक अम्बरके पुत्र फतेह खांको कैदसे छुड़ा कर मंत्री बना लिया। फल यह हुआ, कि फतेह खांने अब सुलतानको ही कैद कर लिया और उसे मरवा डाला। सुलतानके प्रियतम सरदारोंको इसी घटनामें प्राणत्याग करना पड़ा था। फतेह खां ऐसा कठिन काम करने पर भी स्वयं राज्यभोग नहीं कर सका। वह निजामशाही धनवैभवके साथ मुगलोंके अधीन हो गया।

फतेह खांके इन सब कामोंसे शाहजीके मनमें घोर घृणाका सञ्चार हुआ। उन्होंने निजामशाहीकी रक्षाके लिये विजापुरकी आदिलशाही सुलतानसे साहाय्यकी प्रार्थना की। साहाय्य प्राप्त होने पर उन्होंने देवगिरि या दौलतावादके किलेको फिर हस्तगत करनेके लिये यात्रा कर दी। किन्तु मुगलोंसे युद्ध करनेमें उनको विफलता हुई। मुगलोंने निजामशाही राज्यके उत्तराधिकारी दश वर्षके राजपुत्रको कैद कर दिल्ली भेजा। (सन् १६३३ ई०)

फिर भी शाहजी भोंसले निरस्त्र न हुए। उन्होंने दो वर्ष तक मुगलसैन्यसे कलह कर निजामशाहीकी पुनः प्रतिष्ठाके लिये प्राणपणसे चेष्टा की। इस कार्य्यमें उन्होंने जैसा अलौकिक शौर्य और साहस प्रकट किया था, साम,दान दण्ड विभेद नीतिका जिस तरह उन्होंने प्रयोग किया था, वह उनके अल्पवयस्क महात्मा शिवाजीके लिये उदाहरण स्वरूप हो गया था। शाहजीने सह्याद्रिके निम्न दुर्गम प्रदेशको हस्तगत कर मुगलोंके विरुद्धाचरणकी व्यवस्था की। यथासम्भव युद्धका आयोजन सम्पन्न होने पर उन्होंने राजवंशीय एक दश वर्षके बालकको निजामशाही राज्यके उत्तराधिकारी विघोषित कर राज्यसिंहासन पर बैठाया और बहुतेरे बुद्धिमान और कार्यदक्ष ब्राह्मणोंकी सहायतासे राज्यकार्य्य सञ्चालन करने लगे। अल्प समयमें ही सारे कोङ्कण प्रदेशके साथ निजामशाहीके बहुतेरे प्रदेश शाहजीके हाथ आ गये। मुगलोंको दक्षिण विजय करनेके लिये वृहत् युद्धायोजन करना आवश्यक हो गया।

शाहजीके अध्यवसाय और कार्यकलापको देख दिल्लीसे शाहजहां स्वयं सैन्य परिचालन करनेके लिये दक्षिणमें आया। शाहजीने मुगलोंकी सागर प्रवाहिनी सेनाको देख विजापुरके सुलतानको मुगलोंके विरुद्ध भड़काया। सुलतानने मुरारपन्त और रणदुल्ला खांको शाहजीकी सहायताके लिये भेज दिया। कुछ दिन युद्ध होनेके बाद शाहजहांने सुलतानको खबर भेजी, कि जब तक शाहजीको सहायता न दोगे, तब तक विजापुर पर शाही-सेना आक्रमण नहीं करेगी। सुलतानने बादशाहके इस भुलावे पर कर्णपात नहीं किया। शाहजीने अपने सैन्यको छोटे छोटे दलोंमें विभाजित किया और अव्यवस्थित युद्धनीतिको अवलम्बन कर मुगलोंको तंग कर डाला। इधर मुगलोंने भी शाहजीको अपदस्थ करनेमें जरा भी त्रुटि नहीं की। सैन्यसज्जा विशेष होनेकी वजह मुगल सब जगह विजयी होने लगे। शाही सैन्यके उपद्रवसे तंग आ कर विजापुरके सुलतानने शाहजीका साथ छोड़ शाहजहांके साथ सुलह कर ली। शाहजीने कोङ्कण जा कर आश्रय ग्रहण किया। मुगलोंने वहां भी उनका पीछा किया। शाहजी क्लान्त हो गये थे, अतः उन्हें मुगलोंका विरुद्धाचरण परित्याग करना पड़ा। मुगलोंकी अधीनतामें मनसबदारी करनेकी उनकी इच्छा थी। किंतु शाहजहांने इस प्रस्तावको रद्द कर शाहजीको विजापुरके सुलतानके दरबारमें रहनेका आदेश दिया। मुगलोंने निजामशाहीके अन्तिम उत्तराधिकारी वंशधरको (सन् १६३७ ई०) कैद कर आगरेको भेज दिया। इस तरह निजामशाही राजके उत्तराधिकारीकी समाप्ति हुई।

आदिलशाही वंश।

इस वंशके आदिपुरुष युसूफ आदिलशाह कुस्तुस्तुनियाके राजवंशमें जन्मग्रहण करने पर भी भाग्यवश स्वदेश निर्वासित तथा नौकरोंके साथ वास करनेको बाध्य हुआ। सन् १४५९ ई०में वह सामान्य वेशमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतमें आ कर बाह्मनी राजाके प्रधान मन्त्री महम्मद गवानकी अधीनतामें काम करने लगा। कुछ ही समयमें अलौकिक कार्यफलसे उसकी पदोन्नति हुई। इसने बिजापुरकी सूबेदारीके समय महम्मद शाह बाह्मनीकी मृत्यु हो जानेके बाद स्वाधीनताकी घोषणा कर नये राजवंशकी प्रतिष्ठा की। युसूफ आदिलशाहकी चेष्टासे बिजापुर सौधमालाओंसे परिशोभित हुआ था। सिया-पन्थी मुसलमानोंको इसने आश्रय दिया था। पुर्त्तगीजोंसे गोनानगर छीन लेनेमें यह समर्थ हुआ था। शौर्य, विद्या और व्यवहारचातुर्य्यतामें तथा राजनीतिज्ञतामें उस समय केवल महम्मदके सिवा और कोई इसकी बराबरीमें न था। इसने मुकुन्द राव नामक एक मरहठेकी बहनसे अपनी शादी की थी। इस हिन्दू रमणीसे इसका बड़ा प्रेम था। इसके गर्भसे उत्पन्न इस्माइल ही इसके बाद राजाका उत्तराधिकारी बना। धर्मके सम्बन्धमें युसूफका समान ख्याल था। हिन्दुओंको खास कर मरहठोंको विशेष आश्रय देता था। योग्यता दिखा कर कितने ही ब्राह्मण और क्षत्रिय इसके राजत्वकालमें उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए थे। राजदरबारमें और सरकारी कागज पत्र लिखनेके लिये फारसीकी जगह महाराष्ट्र भाषाका प्रयोग करनेका इन्होंने ही आदेश दिया था। अहमदनगर, सोलापुर, पारिन्दा, मीरज आदि सुदृढ़ दुर्ग आज भी इसकी कीर्त्ति घोषणा कर रही है। सन् १५१० ई०में इसकी मृत्यु हुई।

इस्माइलने अल्पवयस्क होने पर भी मुकुन्द रावकी बहन या अपनी माके साथ दक्षतापूर्वक विद्रोही मुसलमानोंका दमन करते हुए राजशासन किया था। दक्षिण-देशके सभी सुलतान मिल कर इस्माइलको हरानेमें समर्थ हुए। विजय नगरके राजाके साथ इस्माइलका सदा युद्धमें ही दिन बीता था। इस्माइलने चम्पामहल और मुद्गलका किला बनाया था। २६ वर्ष तक युद्ध-विग्रह तथा राजशासन कर इसने इहलोकका परित्याग किया। यह न्यायपरायण दूरदर्शी और दयालु था।

सन् १५३४ ई०में इस्माइलका पुत्र इब्राहिम राज्य-सिंहासन पर बैठा। इसने सिया मुसलमानोंको भगा कर सुन्नी मुसलमानोंको आश्रय दान किया। इब्राहिमने दरबारकी भाषा फारसीको हटा कर फिर मराठी भाषामें कागजपत्र या अदालती कारंबाई करनेकी आज्ञा दी। इसीसे राजकर्मचारियोंमें मरहठोंकी अधिक संख्या हो गई। इसी समयसे बिजापुरके मरहठोंकी प्रतिपत्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। निम्बालकर, घाटगे, घोरपड़े, डफले, माने और सावन्त आदि मरहठा-परिवारोंका गौरवरवि उसी समय उदित हुआ था। निजामशाह, कुतुबशाह और विजयनगरके राजाके साथ इब्राहिमका युद्ध हुआ। विजयनगरके राम राजाकी सहायता कर निजामशाहने इब्राहिम आदिलशाहको पराजित किया था। इसी समय पुर्त्तगीजोंने मीरज तक उपद्रव मचा दिया था। किन्तु इब्राहिमने उनको दमन किया था। अन्तिम उम्रमें इब्राहिम दुराचारी तथा उन्मत्त हो गया था। यहां १५५७ ई०में परलोक सिधारा।

इसके बाद आदिलशाह बिजापुरकी गद्दी पर बैठा। इसकी चेष्टासे प्राचीन बलवैभव-सम्पन्न बिजयनगर राज्यका सर्वनाश हुआ था। अलीने सत्पथमें बहुत खर्च किया था। गगनमहल, जुम्मा मसजिद, शाह बुरुज, महाबुरुज आदि बिजापुरकी सब इमारतें अली आदिलशाहकी ही कीर्त्ति हैं। इतिहास-प्रसिद्ध चांदबीबी इसीकी स्त्री थी। इसके जमानेमें फिर सिया मुसलमानोंका प्राबल्य हो गया। फिर भी मरहठोंकी शक्ति कम न हुई। इसके राजस्व विभागमें मरहठे ब्राह्मण ही थे।

सन् १५८० ई०में इसके बाद अलीके भतीजा इब्राहिम द्वितीय शाह सिंहासनारूढ़ हुआ। इसकी अमलदारीमें प्रजा सुखस्वच्छन्दतापूर्वक रहती थी। इब्राहिम विलासी तथा गीतवाद्यप्रिय होने पर भी वीर और बुद्धिमान् था। धर्मविषयक ज्ञान और समदर्शीके गुणसे इसने "जगत्गुरु"-की उपाधि ग्रहण की थी। महाराज टोडरमलके द्वारा प्रवर्त्तित (लगान) राजस्व-व्यवस्था इस सुलतानकी चेष्टासे समूचे बिजापुर राज्यमें प्रचलित हुआ। राज्यकी सामरिक और अन्यान्य जगहों पर सुलतानने मरहठोंको अधिक नियुक्त किया था। ईसाई भी इसके अनुग्रहसे वञ्चित नहीं हो सके। धर्मविषयमें अकबरसे भी कहीं अधिक इसको इतिहासमें स्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिला है। अच्छी अच्छी इमारतोंके बनानेमें भी इसका बड़ा नाम है। विजापुरमें इसने ५२ लाख रुपया खर्च कर भास्करशिल्पके आदर्शस्वरूप एक मसजिद बनवाई थी। इसका कार्य ३६ वर्ष तक होता रहा। इसके जमानेमें अहमदनगरके निजामशाहके साथ आदिलशाहियोंका एक बार युद्ध हो गया था। इसमें इब्राहिमको ही विजयलक्ष्मी प्राप्त हुई थी।

(सन् १६२६-५६ ई०में) इब्राहिमके पुत्र मुहम्मद आदिलशाहका शासनकाल दक्षिणके इतिहासमें अधिक प्रसिद्ध है। अधिक दिनों तक मरहठोंने विजातियोंको अधीनतामें रह उनकी जुतियोंकी ठोकर गुजर कर इस समय पुनः स्वतन्त्रताके लिये पूर्ण चेष्टा की। राजनीतिकुशल अकबर और शाहजहांने भी एक बार महाराष्ट्र देश पर अधिकार करनेके लिये चेष्टा करनेमें त्रुटि नहीं की। किन्तु मरहठोंका अभ्युदय बन्द न हो सका।

महम्मद आदिलशाहके शासनकालके प्रारम्भमें बंकापुरके शासक कदमराव नामक एक मरहठेने विद्रोहकी घोषणा कर स्वाधीनता प्राप्त की। सुलतानने उसके विरुद्ध सेना भेज कर उसको तहस नहस कर दिया। इसके अमलमें शाहजहांने निजामशाही राजका विनाश कर आदि शाहीराज पर भी कुदृष्टि की थी। मुरार राव आदि कई मरहठे सरदारोंने निजामशाही राजकी रक्षाके लिये चेष्टा करनेके लिये महम्मदको सलाह दी। शाहजी भोंसले इस समय निजामशाही राजकी रक्षाके लिये प्राणपणसे चेष्टा कर रहे थे। नूरजहांके भाई आसफ खांकी अधीनतामें मुगलोंके विजापुर अवरोध करने पर मुरार रावने उन पर बार बार आक्रमण कर उन्हें ऐसा तंग कर दिया, कि मुगलोंको विजापुरकी सीमाको छोड़ कर भाग जाना पड़ा। मुरारराव परिन्दा किलेमें जा कर वहांसे "मुल्क-इ-मैदान" या रणभूमिका राजा नामकी जो प्रसिद्ध तोप थी उसको विजापुर ले आये। यह दुर्ग पहले निजाम शाहीके अधीन था। निजाम शाहकी आज्ञासे यह वृहत् तोप अहमदनगरमें ढाली गई थी। यह वजनमें ४ सौ मन थी। बालिकोटके युद्धमें इसका व्यवहार हुआ था। यह चौदह फीट लम्बी और उतनी ही चौड़ी थी। दो फीट चार इञ्चका गोला इसमें व्यवहार होता था। विजापुरके लोग अब भी इस तोपकी पूजा करते हैं। कड़क बिजली नामक और एक तोप विजापुरमें लानेका भार मुरारराव पर दिया गया था। किन्तु वह पथमें ही कृष्णानदीमें डूब गई। आज भी कृष्णानदीमें उसका अस्तित्व दिखाई देता है।

आसफ खांके पराजित होने पर शाहजहांने मुहब्बत खांको दक्षिण भेजा। मुहब्बतके दौलताबाद पर आक्रमण करने पर मुरार राव और रणदुल्ला खां निजामशाहकी सहायताके लिये भेजे गये। उस समय प्रबल प्रचण्ड शाही सैन्य विजापुर पर आक्रमण करनेमें प्रवृत्त हुआ। इस विपत्तिके समय शाहजी भोंसलेकी तरह राजकाज धुरन्धर और बुद्धिमान् सरदारकी आवश्यकता महम्मद आदिलको प्रतीत हुई। शाहजीको भी उस प्रबल प्रचण्ड सैन्यके आगे अकेले अधिक देर तक ठहरना असम्भव था। शाहजीके पास उस समय १२ हजार सुशिक्षित सेना थी। इसी कारणसे इन्होंने विजापुरके सुलतानसे मित्रता स्थापित की। इन दोनोंके सम्मिलनसे महम्मद खांको पराजय स्वीकार करनी पड़ी।

सन् १६३५ ई०में मुरारराव की शक्ति दिनों दिन अधिक परिमाणसे बढ़ती देख महम्मद आदिल शाहने गुप्तघातकद्वारा उनको मरवा डाला। इसके बाद शाहजी और रणदुल्ला खांने शाही सैन्यको बहुत तङ्ग किया था, किन्तु अन्तमें मुगलोंने शाहजीको जर्जरित तथा निजामशाहीको विनष्ट कर दिया। फिर महम्मद आदिलशाहने कर देना स्वीकार कर शाहजहांसे सन्धि कर ली।

मुगलोंके साथ सन्धि करनेके बाद आदिल शाहने राज्यको भीतरी संगठन करनेकी चेष्टा की। इन्होंने कर्नाटकके विद्रोही जमीन्दारोंको वशीभूत करनेके लिये रणदुल्ला खां और शाहजी भोंसलेको भेजा। कुछ दिनके बाद कर्नाटकका समूचा राज्यभार शाहजी भोंसलेको मिला। शाहजीने कर्नाटकको एक स्वतन्त्र हिन्दूराज्य संगठित करनेकी चेष्टा की। किन्तु इनके कार्यकी गति धीर और सतर्कतापूर्ण थी। उधर शाहजीके पुत्र शिवाजी घाटमाथाके मानलियोंकी सहायतासे पूनाके निकटके प्रदेशोंको जीत कर स्वाधीन मरहठा साम्राज्यको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठा करने लगे। उन्होंने तरुण हृदयके असीम तेज-बलसे धीरे-धीरे थोड़े ही दिनमें बहुतेरे दुर्गों पर अधिकार कर लिया। अन्तमें आप प्रकट रूपसे विजापुरके राजाके विरुद्ध खड़े हुए। इस पर विजापुरका सुलतान उनका दमन करनेमें प्रवृत हुआ। इधर मुस्तफा खां नामक एक सरदारसे शाहजीका मनमुटाव हो गया। इस कारणसे तथा पुत्रदोषके कारण सुलतानने उन्हें कैद कर लिया और वे तीन वर्ष जेलमें रहे। इसके बाद शिवाजीने मुगलसम्राट्से पिताकी मुक्तिका परवाना ला कर पिताको कारागारसे छुड़ाया। यह सन् १६५३ ई०की घटना है।

इसके बाद भी आदिलशाह शिवाजीका दमन करनेकी चेष्टा करता ही रहा। किन्तु सफलता होनेसे पूर्व ही इहलोकका उसने परित्याग किया। इसके शासनकालमें विजापुरनगर अत्यन्त विस्तृत तथा सौन्दर्यपूर्ण हो उठा था। इसके विलासी होने पर भी प्रजा-रक्षामें यह उदासीन नहीं रहता था। इसके पास ढाई लाख पैदल, ८० हजार अश्वारोही और ५०० सौ हाथीसे परिपूर्ण सेना रहती थी। २० करोड़ रुपया प्रतिवर्ष सरकारी खजानेमें आता था। विजापुरकी एक मसजिदका गुम्बज या शिखर इसके हुक्मसे इस तरह बनाया गया है, कि वैसा गुम्बज पृथ्वीके किसी हिस्सेमें दिखाई नहीं देता। इसकी निर्माणकुशलता देखने पर प्रसिद्ध पण्डित फरगुसनने कहा था, कि पाश्चात्य स्थापत्य विज्ञानिकोंको भी इसके सामने हार माननी पड़ती है।

महम्मद शाहके बाद उसका पुत्र अली (द्वितीय) आदिल शाहने विजापुरकी गद्दी प्राप्त की। इस कार्यमें उसने मुगल-सम्राट्की आज्ञा न मानी। इससे राजकुमार औरङ्गजेबने दक्षिणके सूबेदारके रूपमें विजापुर पर आक्रमण किया। किन्तु इस युद्धके समाप्त होनेसे पहले ही दिल्लीसे शाहजहांकी सांघातिक बीमारीका संवाद पा कर चतुर औरङ्गजेब सुलतानसे सन्धि कर तुरत दिल्लीको रवाना हुआ।

इस समय आदिलशाहके राजत्वमें दो प्रधान प्रबल शत्रुओंने प्रबलता प्राप्त की थी। इनमें प्रथम शिवाजी भोंसले और दूसरा मुगलसम्राट् औरङ्गजेब था। जब निजामशाहके राजत्वको मुगलोंने विनष्ट कर दिया तब उसका एक अंश विजापुरपतिओंके अंशमें पड़ा था। पूना और सूपा परगना तथा कोङ्कणका कुछ अंश विजापुरके अधीनमें था। प्रथमोक्त दोनों परगना सुलतानने शाहजीको जागीरके रूपमें दिया था। कर्नाटकमें शाहजीके नियुक्त होने पर उनके पूना और सूपाका शासनभार शिवाजी पर पड़ा। इन दोनों प्रदेशोंको शिवाजीने नये सांचेमें ढाल दिया। शिवाजी क्रमशः नये प्रदेशोंको जीत कर स्वाधीन महाराष्ट्रकी प्रतिष्ठाका आयोजन करने लगे। इस पर शिवाजीका दमन आवश्यक समझ अली आदिलशाहने बारह हजार सैन्योंके साथ अफजल खांको भेजा। किन्तु उससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। शिवाजीके हाथसे अफजल मारा गया और उसकी सेना पराजित हुई। सन् १६५९ ई०के दूसरे वर्षमें आदिल सिद्दी जौहर नामक एक सेनापतिको उसने शिवाजीका दमन करनेके लिये फिर भेजा। किन्तु शिवाजीने कौशलसे उसको वशीभूत कर लिया। इस पर क्रोधित हो स्वयं आदिलशाहने युद्धयात्रा की। इस यात्राके फलसे पाह्नाला नामक दुर्ग शिवाजीके हाथसे निकल सुलतानके हाथ आया। किन्तु दुर्गसे शिवाजीके दुर्गम पहाड़ी जंगलोंमें चले जाने पर सुलतानको लौट आना पड़ा।

इसके बाद सिद्दी जौहर विद्रोही हो उठा। जब तक सुलतान इसका दमन भी न कर पाये थे, कि दूसरा बेदनूर अञ्चलमें भद्रनायक नामक एक जमींदारने बलवा मचा दिया। अलीने उसको भी दमन किया, किन्तु इधर शिवाजीकी शक्ति द्रुत गतिसे बढ़ने लगी। मुगल भी उनके आचरणसे तंग आ गये थे। उनके विनाश करनेके लिये मुगल और पठान अपनी अपनी सेना ले कर आये। एक ही समय मुगलोंकी ओरसे जयसिंह तथा दूसरी ओरसे विजापुरके खावसखां शिवाजीकी शक्तिको चूर करनेके लिये आगे बढ़े। शिवाजीकी प्राणपणसे चेष्टा तथा महाराष्ट्रसैन्यके असीम साहस दिखलाने पर भी इस घोर संकटमें विजयश्री प्राप्त न कर सके। अन्तमें शिवाजीने मुगलोंसे सन्धि कर ली। सन्धिमें इन्होंने कहा, कि मैं विजापुरके साथ युद्ध करनेमें सहायता दूंगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फलतः विलम्ब न कर मुगलसेना शिवाजीकी सहायतासे विजापुरकी ओर बढ़ी और विजापुर पर आक्रमण होने लगे। अचानक सिर पर शत्रु देख आदिल शाहने युद्धको यथाशीघ्र तय्यारी की। सर्जा खां और खवास खां ये दोनों प्रधान सेनापति प्राणपणसे युद्ध करने लगे। इस विपद्के समय कुतुब शाहके विजापुरकी सहायताके लिये आगे आने पर जयसिंहको बार बार परास्त और मुगल सैन्यको नितान्त जर्जरित होना पड़ा। एक युद्धमें सर्जा खांकी मृत्यु हो गई। निहत होने पर भी मुगल-सैन्यको परास्त होना पड़ा। दूसरे जयसिंह बहुत कष्टसे मृत्युमुखसे छुटकारा पा कर दिल्लीकी ओर भागे।

इस तरह अली आदिलशाहने प्राणपणसे अपने राज्यकी रक्षा कर सन् १६७२ ई०में इहलोकका परित्याग किया। यह विलासी होने पर भी प्रजाकी ओरसे उदासीन नहीं रहता था। यह कवि और विद्वानोंके आश्रयदाता था। विजापुर दरबारमें मन्त्रियोंमें परस्पर घोर ईर्ष्या द्वेष चल रहा था किन्तु अलीके चातुर्यपूर्ण शासनके फलसे यह उनको अमलदारोंमें प्रकट न हो सका। शिवाजीके घोर विद्रोह करने पर भी उसके आश्रयमें कितने ही मरहट्ठे सरदार और ब्राह्मण रहते थे।

सिकन्दर अली आदिल शाह इस वंशका अन्तिम राजा था। पिताकी मृत्युके समय यह ५ वर्षका था। इसीसे मन्त्रियोंकी ईर्ष्याकी अग्नि भभक उठी और इससे राज्यभरमें बड़ी गड़बड़ी मच गई। मन्त्रियोंके कलहसे शत्रुओंको बड़ा लाभ पहुंचा। शिवाजीने पहनाला दुर्ग पर फिर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। बहलोल खांने शिवाजीके विरुद्ध युद्ध कर उन्हें बहुत तंग किया। खावास खांने कौशलपूर्वक मुगलसूबेदार बहादुर खांके साथ सन्धि कर ली। यह सन्धि अधिक दिन तक टिक न सकी। पठान सैनिकोंने वेतन न पाने पर दंगा मचा दिया। मुगल-सरदार दिलेर खांने मौका पा कर विजयपुर पर आक्रमण किया। किन्तु उस समय तक आदिलशाही राजाकी आयु कुछ शेष थी इसीसे शिवाजी विजयपुर दरबारको विशेष सहायता दे कर दिलेर खांके विरुद्ध उठ खड़े हुए। फलतः दिलेर खांको असफल हो कर दिल्लीकी शरण लेनी पड़ी।

सन् १६८३ ई०में स्वयं बादशाह औरङ्गजेब बहुतेरी फौजोंको ले कर दक्षिण विजयके लिये रवाना हुआ। शिवाजीके पुत्र शम्भाजी पिताकी नीति अवलम्बन कर उस समय विजापुरकी रक्षा कर रहे थे। सिकन्दर उस समय १६ वर्षका था। दरबारमें कोई भी बुद्धिमान् दरबारी न था। अतः जब औरङ्गजेबने विजापुरको घेर लिया तब समूचे राजमें हाहाकार मच गया। सुलतान सिकन्दर निरुपाय हो कर मुगलसैन्यके शरणापन्न हुए। औरङ्गजेबने उसे १ लाख वार्षिक वृत्ति दे कर औरङ्गाबादके किलेमें बन्द कर रखा। विजापुरने १६७ वर्ष तक आत्मगौरवकी रक्षा कर १६८६ ई०की १५वीं अक्टूबरको मुगलोंके हाथ आत्मसमर्पण कर दिया। औरङ्गजेबने सन् १७०१ ई०में हतभाग्य सिकन्दरको विष दे कर इह जगत्से आदिलशाहीवंशकी जड़ उखाड़ कर फेंक दी।

कुतुबशाही वंश।

कुतुबशाही-वंशने गोलकुण्डाप्रदेशमें १५१२-से १६८७ ई० तक राज किया था। यह प्रदेश महाराष्ट्र-देशके अन्तर्गत न होने पर भी यहांके सुलतानोंके अधीन रह कर अनेक मरहट्ठा परिवारोंने विशेष उन्नति की थी। सन् १७०० ई०में महाराष्ट्र जातिका जो अभ्युदय हुआ, उसके साथ मरहट्ठा-परिवारका घनिष्ट सम्बन्ध था। इस कारण इस राजवंशके सम्बन्धमें कई बातोंका लिखना आवश्यक है।

कुली कुतुबशाह इस वंशका आदिपुरुष था। यह बाहमनी सुलतानका सूबेदार और सरदार था। अन्तमें उक्त सुलतानको भीरुता देख उसने स्वतन्त्रताकी घोषणा कर गोलकुण्डामें पृथक् एक राजवंशकी प्रतिष्ठा की। तैलङ्गके हिन्दू-राजाओंके साथ युद्ध कर उनको स्वतन्त्रताके अपहरण करनेमें उसका बहुत समय व्यतीत हुआ।

उसके छोटे लड़के जमसेद कुतुब शाहकी अमलदारीमें मरहठोंने दरबारमें प्रतिपत्ति लाभ की। जमसेदके सहायक सेनापतियोंमें जगदेव राव नामक मरहठा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरदारने विशेष यश अर्जन किया था। परवर्त्ती सुलतान इब्राहिम कुतुबशाहके सिंहासनारोहणके उपलक्ष्यमें जो गड़बड़ी मची थी, उसमें जगदेव रावने इब्राहिमको सबसे अधिक सहायता की थी। और तो क्या, इब्राहिमको उस ने सिंहासनारूढ़ कराया था यह कहनेमें भी अत्युक्ति नहीं। इससे इब्राहिम कुतबशाहने अपना मन्त्रिपद दे कर जगदेव रावको विशेष पुरस्कृत किया था। इस समय राय राव नामक एक मरहठा-सरदारने अपनी कार्यदक्षता दिखला कर सुलतानको विशेष प्रीति लाभ की थी। इन दो सरदारोंके यत्नसे गोलकुण्डा-दरबार और सामरिक विभागमें बहुतेरे मरहठे भर्त्ती हो गये। मुसलमान-सरदारोंने यह देख असन्तोष प्रकट किया और सुलतानके सामने मरहठोंकी सदा शिकायत किया करते थे। सुलतानने पहले तो उनकी बातों पर ध्यान तक न दिया, किन्तु पीछे विचलित हो कर राय रावको प्राणदण्डकी आज्ञा दी। जगदेव रावने वहांसे भाग कर निजाम शाहके राज्यमें आश्रय लिया। किन्तु वहांसे भी कुछ ही दिनोंमें उनकी ऐसी ख्याति बढ़ी, कि स्वयं निजाम साहबको भी भयभीत होना पड़ा। समग्र देश पर अधिकार कर मुसलमान-वंशके विलुप्त करनेकी जो इच्छा परवर्त्ती मरहठोंके हृदयमें बलवती हुई थी; इस समय उसकी प्रकाशतः सूचना मिली। क्रमशः जगदेव राव क्षमताशाली हो उठे। इसके बाद उन्होंने बहुतेरे मरहठा, मुसलमान, अरबी, इरानी और हबशी-सैन्यको ले कर कुतबशाही राज्य पर टूट पड़े; किन्तु इस युद्धमें जगदेव रावको ही पराजय हुई। उस समय वे आदिल शाहकी अधीनतामें कार्य करने लगे। उनकी सहायतासे कुतब शाहने भी निजाम शाहको बारम्बार युद्धमें जर्जरित कर दिया। वहांके नायकों (जमींदारों)-के साथ साजिश कर उन्होंने तैलङ्गदेशके अन्तर्गत अधिकांश किलों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। उस समय कुतुब शाहने डर कर जगदेव रावके साथ सन्धि और मित्रता स्थापित कर सब बखेड़ोंको तय कर दिया। शिवाजी और शाहजीके पहले जगदेव राव जैसा महापराक्रमशाली वीर मरहठा-सरदार और कोई पैदा न हुआ था। इस समय बिजापुरके सुलतानके अधीन जो मरहठा सरदार थे वे भी कुतुब शाहके राज्यमें घुस कर विविध प्रकारसे उपद्रव करने लगे। इब्राहिम कुतुब शाहको अमलदारीके अन्तिम भागमें मुरार राव नामक एक ब्राह्मणने मन्त्रित्व लाभ किया था। राजनीति-कुशलतामें वे सारे दाक्षिणात्यके सभी मुसलमानोंको परास्त कर नेता बने थे।

इसके बाद आबू-हुसेन कुतुब शाहके अमलमें (सन् १६५८-८७ ई०) मरहठोंकी बड़ी उन्नति हुई। मदनपन्त नामक एक ब्राह्मणने मन्त्रीका पद पाया। मुरारपन्तकी चेष्टासे मालगुजारीमें सुधार होनेसे प्रजा खूब खुशी थी। मुसलमान कर्मचारिगण उनका विरुद्धाचरण करके भी कृतकार्य न हो सके। कुतब शाहने अन्तमें मुगलोंके हाथसे रक्षा पानेके लिये शिवाजीके पुत्र शम्भाजीसे सन्धि कर ली। इससे मुगल बड़े क्रुध हुए। स्वयं औरङ्गजेबने उसके विरुद्ध यात्रा कर गोलकुण्डाको दिल्लीमें मिला लिया।

जातीय अभ्युदयके कारण।

पाठक! इस इतिहासके पढ़नेसे यह स्पष्ट मालूम होगा, कि तीन सौ वर्ष राजत्वकालका प्रथमार्द्ध व्यतीत होने पर ही मरहठोंके अभ्युदयका बीज वपन हुआ था। इस समयसे पहले मुसलमान अपने राज्यमें किसी ऊंचे पद पर हिन्दुओंको नियुक्त करते न थे। इधर उनके एकमात्र आश्रयस्थल विजयनगरके राज्य पर बारंबार आक्रमण कर हिन्दू-शक्तिका मूलोच्छेद किया जा रहा था। फिर भी, महाराष्ट्रदेशमें उनका शासन स्थायी न हो सका। जिन सब कारणोंसे मुसलमानोंका अधःपतन और मरहठोंका अभ्युदय हुआ था, वे इस तरह हैं:—

१ मुसलीम-सभ्यता हिन्दू-सभ्यता पर अपना अधिकार न जमा सकी। स्थापत्यशिल्प आदि इन दो एकके सिवा प्रायः किसी विषयमें हो हिन्दू-सभ्यता पर प्रभाव विस्तार करनेकी शक्ति मुसलमानोंको न थी। मुसलमानी-सभ्यता महाराष्ट्रके ग्रामों या सामाजिक आचार-विचार व्यवहार आदि जातित्वकी भित्तियोंका विनाश कर न सकी। मुसलमानी-सभ्यताके संघर्षसे महाराष्ट्र-सभ्यताने अपने अस्तित्वकी रक्षा करनेमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समर्थ हो "योग्यतमका संरक्षण" विषयक नियम यथार्थमें प्रतिपन्न किया था। वरं मुसलमान ही हिंदू-सभ्यताके वशीभूत हो गये थे।

२ मुसलमानोंका हिंदू-रमणीके पाणि-ग्रहणका प्रयास। पहले वर्णित इतिहासमें दिखाई देगा, कि प्रसिद्ध प्रसिद्ध मुसलमानोंमें बहुतेरे हिन्दू-रमणोके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। जो कीर्त्ति और बुद्धिमत्ता हिन्दूरमणी गर्भजात सन्तानोंने दिखाई थी वैसी बुद्धिमत्ता दक्षिणमें आये हुए विशुद्ध मुसलमान वंशधर नहीं दिखा सके। अनेक मुसलमान स्वजातीय रमणोकी अपेक्षा हिन्दू-रमणीके साथ दाम्पत्यसम्बन्ध स्थापन अधिकतर उत्तम समझते थे। इस तरहके दाम्पत्य संयोगसे उत्पन्न मुसलमानोंके हृदयमें हिन्दू विद्वेषभाव वैसी प्रबलता लाभ नहीं कर सकता था। अनेक प्रसिद्ध मुसलमान सरदार मूलतः ब्राह्मण थे; पीछे धर्मत्याग करनेको बाध्य किये गये। किन्तु फिर भी हिन्दूजातिके प्रति अनुराग एकदम विलुप्त नहीं हो गया था। बाह्मनी राजत्वके अन्तमें इस तरहकी घटनाओंकी अधिकतासे मरहठोंको मुसलमान-दरबारमें घुसनेमें बड़ी सुविधा हुई और वे सब तरहके राजकार्यमें दक्षता प्राप्त कर सके।

३ हिन्दू-स्त्रियोंसे व्याह करनेके फलसे ही मुसलमानोंको कई पीढ़ियोंमें हो उनके हृदयमें हिन्दुओंके प्रति जो विद्वेषभाव था, वह विलुप्त हो गया; किन्तु हिन्दुओंके लिये मुसलमानी-पाणिग्रहण निषेध रहनेसे वे किसी तरह ही मुसलमानोंके साथ मिल न सके। इसी कारण मौका पाते ही मुसलमानोंकी जड़ खोद डालनेमें उन्होंने जरा भी अनाकानी नहीं की।

४ उत्तरभारतमें जिस तरह अफगानिस्तान और इरानसे स्वधर्मोन्मत्त मुसलमान दल दलमें आ कर वहां हिन्दू विद्वेष अक्षुण्ण रख सकनेमें समर्थ हुए थे, उस तरह महाराष्ट्रमें नहीं हो सका। उत्तर-भारतकी तरह दक्षिणमें नित्य नये इरानी सैन्योंके समागमकी सुविधा न थी। इससे मुसलमानोंको कुछ ही दिनके बाद मरहठोंकी सहायता बाध्य हो कर लेनी पड़ती थी। क्योंकि बिना इनकी सहायताके राजकार्य चल नहीं सकता था। आदि निवाससे अधिकांश सम्बन्धविच्छेद होनेसे मुसलमानोंको कई विषयोंमें हिन्दू मरहठों पर निर्भर करना पड़ा था।

५ उत्तर-भारतमें मुसलमानी दरबारोंमें फारसीभाषा व्यवहृत होती थी, किन्तु पूर्वोक्त कारणसे दक्षिणमें ऐसा न हो सका। यदि हुआ भी तो अधिक दिन तक स्थायी न हो सका। फलतः दरबारमें मराठी भाषाकी प्रधानता थी। मरहठोंके जातीय भाव अक्षुण्ण रखनेका यह एक कारण है।

६ बाह्मनी राज्यके आरम्भसे सिया सुन्नियोंका झगड़ा, वैदेशिक मुसलमानोंके साथ दाक्षिणात्य मुसलमानोंका कलह—इन कारणोंसे मुसलमानोंमें एकताका विनाश हो गया।

७ विजयनगरमें हिन्दूराजकी वजहसे मुसलमानोंके स्वेच्छाचारमें बाधा तथा मरहठोंके जातीय भाव सुरक्षित रखनेमें आंशिक सहायता मिलना ही ७वां कारण है।

८ महाराष्ट्रदेशका भौगोलिक अवस्थान भी मरहठोंके लिये स्वाभाविक स्वातन्त्र्यप्रियता प्रदान करनेवाला है। महाराष्ट्रदेशका ग्राम्य समूह प्रायः छोटे प्रजातन्त्र राज्यकी तरह गठित हुआ है। यथासमय सरकारी मालगुजारी चुका देनेमें भीतरी शासनके काममें राजाको हस्तक्षेप करनेकी जरूरत ही नहीं होती थी। इसी कारणसे देशमें प्रतिष्ठित राजशक्तिके विनाशके लिये मरहठोंके राजनीतिक स्वतन्त्रताके खो देने पर भी ग्राम्यसंगठनके फलसे उनके हृदयसे स्वाभाविक स्वतन्त्राद्धारका अंकुर विदूरित नहीं हुआ। कार्यदक्षता, अध्यवसाय, राजनीतिक, दूरदर्शिता आदि गुणमें भी वे भारतीय अन्य जातियोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ थे। इसी कारणसे राजपूतोंकी तरह मरहठे अपने प्रनष्ट स्वातन्त्र्यका उद्धार कर ही बैठ न गये, वरं समूचे भारतवर्षमें हिन्दू-साम्राज्यकी प्रतिष्ठा करनेमें अग्रसर हुए थे।

यही सब कारण अधिकांश उत्तर-भारतमें भी मौजूद थे। फिर भी मरहठोंकी तरह आसमुद्र हिमाचलव्यापी हिन्दूसाम्राज्यकी स्थापनाकी चेष्टा न की गई। मालूम होता है, कि अन्तिम दोनों कारणोंके अभावसे ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा हुआ था। मरहठोंकी स्वातन्त्र्यप्रियताका नमूना मुसलमानी राजमें इतिहासके पन्नोंमें भरा पड़ा है। अतएव यहां धर्म और साहित्यगत उन्नतिका संक्षिप्त परिचय प्रदान करनेसे भी महाराष्ट्र जातिके अभ्युदयका अव्यवहित कारण पाठकोंको हृदयङ्गम हो सकता है।

महाराष्ट्र-धर्मोन्नति।

राजपूतों और सिखोंकी तरह मरहठोंका अभ्युदय किसी व्यक्ति विशेषकी चेष्टासे या केवल जातीय पौरुष-गुणसे नहीं हुआ है। वे अभिनव धर्मामृत पान करनेसे बलवान् हो अभ्युदयके मार्गमें अग्रसर हुए थे। इसीसे राजपूतों और सिखोंकी अपेक्षा इनको सफलता विशेष रूपसे हुई थी। फलतः समग्र जातिकी बहुत दिनोंकी शिक्षा और साधना विविध तरहकी तथा विभिन्न सम्प्रदायकी क्रमिक धर्मोन्नति और बहुसंख्यक असाधारण पौरुषेय तथा अतुल बुद्धिवैभव आदि समताके फलसे महाराष्ट्र जातिका अभ्युदय हुआ था। इसी कारणसे उनकी उन्नति राजपूतों और सिखोंकी तरह एक देशीय न हो कर जगत्के आन्यान्य सभ्य जातियोंकी तरह सर्वाङ्गीण रूपसे साधित हुई थी। अच्छी तरह रोपा हुआ पेड़ बड़ा होने पर जिस प्रकार फलफूलोंसे युक्त हो दर्शकोंके मनको मोहता है और कुछ दिन बाद फल फूलके झड़ जाने पर निस्तेज हो जाता है उसी प्रकार महाराष्ट्रीयगण मुसलमानोंके कवलसे छुटकारा पानेके बाद उन्नतिके सोपान पर चढ़ कर अतुल ऐश्वर्य और विस्तृत भूभागके अधीश्वर हुए थे। वहांकी प्रायः सभी श्रेणियोंमें असंख्य समर-कुशल, दिग्विजयी वीर, असाधारण प्रतिभासम्पन्न राजनैतिक धर्मसंस्कारक, भगवद्भक्त योगी, स्वभावजात कवि और समाजसंस्कारक महापुरुषोंने जन्म ले कर महाराष्ट्रीय सभ्यताको परिपुष्टि की थी। अभी उन सब गुणोंके अभावसे वे लोग ऊपर बतलाये गये पेड़की तरह निष्प्रभ हो गये हैं।

धर्मके विना कभी भी किसी जाति वा साहित्यकी उन्नति और श्रीवृद्धि नहीं होती। जिन सब कारणोंसे महाराष्ट्रदेशमें अब्राह्मण शूद्रोंकी इस प्रकार सर्वविषयणी उन्नति हुई थी, उनमेंसे धर्मसंस्कार ही प्रधान कारण था। महाराष्ट्रीय जातिके अभ्युदयका इतिहास वहांके धर्मोपदेशक भक्त कवियोंके जीवनकी कार्यावलीके साथ घनिष्टभावमें सम्बन्ध रखता है। अंगरेज-इतिहास लेखक हिन्दूहृदयके धर्मभाव सम्बन्धमें अनभिज्ञतानिबन्धन सुप्रणीत इतिहास ग्रन्थोंमें भी इन सब विषयोंका समावेश नहीं कर सके हैं। इसी कारण हमें यहां पर स्वतन्त्र भावमें इस विषयका उल्लेख करना पड़ा।

बौद्धयुगके अवसानकालमें श्रीमत् शङ्कराचार्यके यत्नसे चतुर्वर्ग मूलक प्राचीन वैदिक धर्मने प्रवर्त्तित और सुसंस्कृत हो कर महाराष्ट्रदेशमें जो आकार धारण किया था वही महाराष्ट्र जातिकी उन्नतिका पथ परिष्कार कर देता है। इस धर्मको महाराष्ट्रदेशमें भागवत धर्म कहते हैं। भागवत धर्मसे वैदिक यागयज्ञादि और बौद्धोंके शुष्क ज्ञानमार्गका माहात्म्य ह्रास हो कर भक्ति प्रधान हरिसंकीर्त्तन, भजन-पूजनादि कार्य्य और जीव-ब्रह्मका विश्वास प्रधान अंगरूपमें गिना जाने लगा। बौद्धधर्मके प्रभावसे जो जातिभेदका मूल शिथिल हो गया था, अभी वह भी दृढ़ हो गया और उसीसे वंश परम्परागत गुणकर्मका उन्नति होने लगी। इस प्रथाका कुफल दूर करनेके लिये इस नवधर्मके प्रवर्त्तकोंने वर्त्तमान कालके संस्कारोंकी तरह कहीं भी ब्राह्मण-प्राधान्यका लोप करनेकी चेष्टा न कर अपने कौशलसे ब्राह्मणभिन्न जातिको मर्यादा वृद्धिका रास्ता निकाला। पहले ब्राह्मण-सेवा ही शूद्रोंके पक्षमें मुक्तिका एकमात्र उपाय-स्वरूप था। अभी उसके बदलेमें इस ऐश्वरीक तत्त्वपूर्ण सरसधर्ममें ब्राह्मणोंकी तरह शूद्रादिका भी अधिकार हो गया। इस धर्मसेवाका उत्कर्ष दिखा कर समाजमें सम्मानलाभका पथ भी परिष्कार कर दिया गया। ऐसी नूतन व्यवस्थाके फलसे महाराष्ट्र देशमें रामदास और एकनाथस्वामी आदि ब्राह्मणसन्तानोंने जैसा सम्मान पाया था, संन्यासिपुत्र ज्ञानेश्वर, वैश्यप्रवर तुकाराम, शूद्रजातिके नामदेव और बोधले बाबा तथा अन्त्यज बोखा आदि भगवद्भक्तोंने भी वैसा ही सम्मान पाया, उससे किसी भी अंशमें कम नहीं। परंतु आजन्म ब्राह्मण-तनया मुक्ताबाई और कर्मावाईकी तरह जनाबाई और मीराबाई आदि शूद्र जातीय रमणियां भी भक्तिके प्रभावसे आबालवृद्धवनिताकी श्रद्धाभाजन हुई थीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब तक यह अद्वैतवादमूलक भक्तिप्रधान असाम्प्रदायिक भागवत-धर्म संस्कृत भाषामें रचित ग्रन्थोंमें ही आवद्ध रहा, तब तक सर्वसाधारणने इसका कोई अमृतमय सुफल नहीं पाया। १२वीं और १३वीं शताब्दीमें आदि कवि मुकुन्दराज, ज्ञानेश्वर और नामदेव आदि प्रसिद्ध साधु पुरुषोंने स्वदेशीय आपामर लोगोंके बीच उदार भागवत धर्मका प्रचार करनेका बीड़ा उठाया। इससे महाराष्ट्रदेशमें मानो नवजीवनका बीज बोया गया। सबसे पहले मराठी भाषामें मुकुन्दराजने विवेकसिन्धु और परमामृत नामक ग्रंथ लिख कर ब्रह्म, माया, जीवात्मा, परमात्मा तथा मुक्तिके चारों प्रकारके भेदका विषय जिससे देवभाषानभिज्ञ लोग जान सकें उसका प्रबन्ध कर दिया। इस काममें ज्ञानेश्वरने बहुत कुछ मदद पहुंचाई थी। ज्ञानेश्वरने भी भ्रातृत्ववृत्तिबोध, सोपानमार्ग, अमृतानुभव, अनुगीताकी टीका आदि लिख कर मानवजीवनका अति महत् उद्देश्य क्या है, वह स्वदेश-वासियोंको समझाया। ये लोग आचण्डाल आदिके बीच ब्रह्मज्ञान वितरण करते थे। ज्ञानेश्वरने जो भावार्थदीपिका नामक श्रीमद्भगवद्गीताकी टीका लिखी है वह बहुत लंबी चौड़ी है। यही टीका भक्तिमूलक अद्वैतमत प्रचार करनेका मूल है। १६वीं शताब्दीमें इस ज्ञानेश्वरीका पुनः प्रचार करके ही एकनाथस्वामी अपने देशमें धर्मभावको जगानेमें समर्थ हुए थे। वणिक्-पुत्र 'तुका' ज्ञानेश्वरका ग्रंथ पढ़ कर 'तुकाराम बाबा' नामसे तमाम पूजे जाने लगे। यह ग्रंथ महाराष्ट्रवासीको आत्मशक्तिके प्रति निर्भर रहने और मराठी भाषाके प्रति अनुराग दिखलानेके लिये शिक्षा देता है। नामदेवकी कवितावली भी इन सब सद्भावोंके परिपोषणमें सहायता करती है। किन्तु आदि कवियोंके इन सब ग्रंथोंका महाराष्ट्र-समाजमें प्रचार होनेसे पहले ही—उन लोगोंका बोया हुआ बीज अंकुरनेसे पहले ही, उत्तर दिशासे मुसलमानी आक्रमणकी प्रबल तरङ्गमाला महाराष्ट्रदेशमें उमड़ आई। इससे आदि कवियोंका सुमहान् उद्देश सिद्ध होनेमें भारी धक्का पहुंचा। इतना होने पर भी उनका बोया हुआ बीज नष्ट नहीं हुआ। वरन् सैकड़ों शाखा-प्रशाखाओंमें निकल कर उसने महाराष्ट्रवासीका त्रिताप दूर करनेमें सहायता पहुंचाई। किन्तु कुछ दिनके लिये अर्थात् ढाई सौ वर्ष तक मुसलमानोंके कठोर शासनचक्रसे जर्जरित हो कर महाराष्ट्रदेशसे आर्यधर्म और आर्यविद्या विलुप्त-सी हो गई तथा अधिवासियोंका जातीय जीवन निष्क्रान्त हो गया।

इस दुःसमयमें एकनाथस्वामी, मुक्तेश्वर, दासोपन्त, आनन्दतनय, वामनस्वामी, रघुनाथस्वामी, गङ्गाधर बाबा, केशवस्वामी, रङ्गनाथस्वामी, मोरयादव, जयरामस्वामी, तुकाराम और रामदास आदि उदार चरितवाले धर्मोपदेशक कविगण आविर्भूत हो कर महाराष्ट्र-समाज और साहित्यका जो अशेष उपकार कर गये हैं, वह इतिहासमें सुवर्णाक्षरमें लिख रखनेके योग्य है।

वे लोग अपने अपने सुखदुःखके प्रति जरा भी ख्याल न कर गांव गांवमें घूमने और भागवत-धर्मका अर्थ समझा कर लोगोंका अज्ञानान्धकार दूर करने लगे। स्वधर्मालोचनाविमुख, परधर्मावलम्बनप्रयासी, विपन्न जातिको स्वधर्मका सुगमपंथ दिखला कर और प्रेमभक्तिकी शिक्षा दे कर वे लोग शुष्क प्राणमें अमृत सींचने लगे। इधर विधर्मी शासक-सम्प्रदायका निर्यातन और उदार देवभाषाके पक्षपाती कुसंस्कारपरायण, शुष्ककर्मकाण्डके उपासक ब्राह्मण पण्डितोंके विराग और सामाजिक उत्पीड़नको सहन करते हुए उन्होंने स्वदेशवासीके कल्याणके लिये कोई कसर उठा न रखा। पीछे उन्होंने विविध अध्यात्म ग्रंथोंकी रचना कर जातीय साहित्यके पुष्टिवर्द्धन और महाराष्ट्र जातिके अमरता-लाभका उपाय निकाला। प्राचीन ग्रीक और लाटिन भाषासे अङ्गरेजी आदि प्रचलित भाषामें बाइबिल आदि धर्मग्रंथोंका अनुवाद हो जानेसे १६वीं शताब्दीमें यूरोपमें जिस प्रकार देशव्यापी धर्मान्दोलनने समस्त पाश्चात्य जातिकी मोहनिद्रा तोड़ी थी और उन्नतिका पथ परिष्कार किया था, महाराष्ट्रदेशमें भी उसी प्रकार एकनाथ, मुक्तेश्वर आदिके यत्नसे रामायण, महाभारत, एकादशस्कन्ध भागवत और श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रंथोंका सरल भाषामें अनुवाद होनेसे उसे पढ़ कर मरहठोंकी स्वधर्मप्रीति बहुत कुछ बढ़ गई। साधुपुरुषोंकी कथकता, संकीर्त्तन और धर्मोप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा हुआ था। मरहठोंकी स्वातन्त्र्यप्रियताका नमूना मुसलमानी राजत्वमें इतिहासके पन्नोंमें भरा पड़ा है। अतएव यहां धर्म और साहित्यगत उन्नतिका संक्षिप्त परिचय प्रदान करनेसे भी महाराष्ट्र जातिके अभ्युदयका अव्यवहित कारण पाठकोंको हृदयङ्गम हो सकता है।

महाराष्ट्र-धर्मोन्नति।

राजपूतों और सिखोंकी तरह मरहठोंका अभ्युदय किसी व्यक्ति विशेषकी चेष्टासे या केवल जातीय पौरुष-गुणसे नहीं हुआ है। वे अभिनव धर्मामृत पान करनेसे बलवान् हो अभ्युदयके मार्गमें अग्रसर हुए थे। इसीसे राजपूतों और सिखोंकी अपेक्षा इनको सफलता विशेष रूपसे हुई थी। फलतः समग्र जातिकी बहुत दिनोंकी शिक्षा और साधना विविध तरहकी तथा विभिन्न सम्प्रदायकी क्रमिक धर्मोन्नति और बहुसंख्यक असाधारण पौरुषेय तथा अतुल बुद्धिवैभव आदि समताके फलसे महाराष्ट्र जातिका अभ्युदय हुआ था। इसी कारणसे उनकी उन्नति राजपूतों और सिखोंकी तरह एक देशीय न हो कर जगत्के आन्यान्य सभ्य जातियोंकी तरह सर्वाङ्गीण रूपसे साधित हुई थी। अच्छी तरह रोपा हुआ पेड़ बड़ा होने पर जिस प्रकार फलफूलोंसे युक्त हो दर्शकोंके मनको मोहता है और कुछ दिन बाद फल फूलके झड़ जाने पर निस्तेज हो जाता है उसी प्रकार महाराष्ट्रीयगण मुसलमानोंके कवलसे छुटकारा पानेके बाद उन्नतिके सोपान पर चढ़ कर अतुल ऐश्वर्य और विस्तृत भूभागके अधीश्वर हुए थे। वहांकी प्रायः सभी श्रेणियोंमें असंख्य समर-कुशल, दिग्विजयी वीर, असाधारण प्रतिभासम्पन्न राजनैतिक धर्मसंस्कारक, भगवद्भक्त योगी, स्वभावजात कवि और समाजसंस्कारक महापुरुषोंने जन्म ले कर महाराष्ट्रीय सभ्यताको परिपुष्टि की थी। अभी उन सब गुणोंके अभावसे वे लोग ऊपर बतलाये गये पेड़की तरह निष्प्रभ हो गये हैं।

धर्मके बिना कभी भी किसी जाति वा साहित्यकी उन्नति और श्रीवृद्धि नहीं होती। जिन सब कारणोंसे महाराष्ट्रदेशमें अब्राह्मण शूद्रोंकी इस प्रकार सर्वविषयणी उन्नति हुई थी, उनमेंसे धर्मसंस्कार ही प्रधान कारण था। महाराष्ट्रीय जातिके अभ्युदयका इतिहास, वहांके धर्मोपदेशक भक्त कवियोंके जीवनकी कार्यावलीके साथ घनिष्टभावमें सम्बन्ध रखता है। अंगरेज-इतिहास लेखक हिन्दूहृदयके धर्मभाव सम्बन्धमें अनभिज्ञतानिबन्धन सुप्रणीत इतिहास ग्रन्थोंमें भी इन सब विषयोंका समावेश नहीं कर सके हैं। इसी कारण हमें यहां पर स्वतन्त्र भावमें इस विषयका उल्लेख करना पड़ा।

बौद्धयुगके अवसानकालमें श्रीमत् शङ्कराचार्यके यत्नसे चतुर्वर्ग मूलक प्राचीन वैदिक धर्मने प्रवर्त्तित और सुसंस्कृत हो कर महाराष्ट्रदेशमें जो आकार धारण किया था वही महाराष्ट्र जातिकी उन्नतिका पथ परिष्कार कर देता है। इस धर्मको महाराष्ट्रदेशमें भागवत धर्म कहते हैं। भागवत धर्मसे वैदिक यागयज्ञादि और बौद्धोंके शुष्क ज्ञानमार्गका माहात्म्य ह्रास हो कर भक्ति प्रधान हरिसंकीर्त्तन, भजन-पूजनादि कार्य्य और जीव-ब्रह्मका विश्वास प्रधान अंगरूपमें गिना जाने लगा। बौद्धधर्मके प्रभावसे जो जातिभेदका मूल शिथिल हो गया था, अभी वह भी दृढ़ हो गया और उसीसे वंश परम्परागत गुणकर्मका उन्नति होने लगी। इस प्रथाका कुफल दूर करनेके लिये इस नवधर्मके प्रवर्त्तकोंने वर्त्तमान कालके संस्कारोंकी तरह कहीं भी ब्राह्मण-प्राधान्यका लोप करनेकी चेष्टा न कर अपने कौशलसे ब्राह्मणभिन्न जातिको मर्यादा वृद्धिका रास्ता निकाला। पहले ब्राह्मण-सेवा ही शूद्रोंके पक्षमें मुक्तिका एकमात्र उपाय-स्वरूप था। अभी उसके बदलेमें इस ऐश्वरीक तत्त्वपूर्ण सरसधर्ममें ब्राह्मणोंकी तरह शूद्रादिका भी अधिकार हो गया। इस धर्मसेवाका उत्कर्ष दिखा कर समाजमें सम्मानलाभका पथ भी परिष्कार कर दिया गया। ऐसी नूतन व्यवस्थाके फलसे महाराष्ट्र देशमें रामदास और एकनाथस्वामी आदि ब्राह्मणसन्तानोंने जैसा सम्मान पाया था, संन्यासिपुत्र ज्ञानेश्वर, वैश्यप्रवर तुकाराम, शूद्रजातिके नामदेव और बोधले बाबा तथा अन्त्यज बोखा आदि भगवद्भक्तोंने भी वैसा ही सम्मान पाया, उससे किसी भी अंशमें कम नहीं। परंतु आजन्म ब्राह्मण-तनया मुक्ताबाई और कर्माबाईकी तरह जनाबाई और मीराबाई आदि शूद्र जातीय रमणियां भी भक्तिके प्रभावसे आबालवृद्धवनिताकी श्रद्धाभाजन हुई थीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब तक यह अद्वैतवादमूलक भक्तिप्रधान असाम्प्रदायिक भागवत-धर्म संस्कृत भाषामें रचित ग्रन्थोंमें ही आवद्ध रहा, तब तक सर्वसाधारणने इसका कोई अमृतमय सुफल नहीं पाया। १२वीं और १३वीं शताब्दीमें आदि कवि मुकुन्दराज, ज्ञानेश्वर और नामदेव आदि प्रसिद्ध साधु पुरुषोंने स्वदेशीय आपामर लोगोंके बीच उदार भागवत धर्मका प्रचार करनेका बीड़ा उठाया। इससे महाराष्ट्रदेशमें मानो नवजीवनका बीज बोया गया। सबसे पहले मराठी भाषामें मुकुन्दराजने विवेकसिन्धु और परमामृत नामक ग्रंथ लिख कर ब्रह्म, माया, जीवात्मा, परमात्मा तथा मुक्तिके चारों प्रकारके भेदका विषय जिससे देवभाषानभिज्ञ लोग जान सकें उसका प्रबन्ध कर दिया। इस काममें ज्ञानेश्वरने बहुत कुछ मदद पहुंचाई थी। ज्ञानेश्वरने भी भ्रातृत्ववृत्तिबोध, सोपानमार्ग, अमृतानुभव, अनुगीताकी टीका आदि लिख कर मानवजीवनका अति महत् उद्देश्य क्या है, वह स्वदेश-वासियोंको समझाया। ये लोग आचण्डाल आदिके बीच ब्रह्मज्ञान वितरण करते थे। ज्ञानेश्वरने जो भावार्थदीपिका नामक श्रीमद्भगवद्गीताकी टीका लिखी है वह बहुत लंबी चौड़ी है। यही टीका भक्तिमूलक अद्वैतमत प्रचार करनेका मूल है। १६वीं शताब्दीमें इस ज्ञानेश्वरीका पुनः प्रचार करके ही एकनाथस्वामी अपने देशमें धर्मभावको जगानेमें समर्थ हुए थे। वणिक्-पुत्र 'तुका' ज्ञानेश्वरका ग्रंथ पढ़ कर 'तुकाराम बाबा' नामसे तमाम पूजे जाने लगे। यह ग्रंथ महाराष्ट्रवासीको आत्मशक्तिके प्रति निर्भर रहने और मराठी भाषाके प्रति अनुराग दिखलानेके लिये शिक्षा देता है। नामदेवकी कवितावली भी इन सब सद्भावोंके परिपोषणमें सहायता करती है। किन्तु आदि कवियोंके इन सब ग्रंथोंका महाराष्ट्र-समाजमें प्रचार होनेसे पहले ही—उन लोगोंका बोया हुआ बीज अंकुरनेसे पहले ही, उत्तर दिशासे मुसलमानी आक्रमणकी प्रबल तरङ्गमाला महाराष्ट्रदेशमें उमड़ आई। इससे आदि कवियोंका सुमहान् उद्देश सिद्ध होनेमें भारी धक्का पहुंचा। इतना होने पर भी उनका बोया हुआ बीज नष्ट नहीं हुआ। वरन् सैकड़ों शाखा-प्रशाखाओंमें निकल कर उसने महाराष्ट्रवासीका त्रिताप दूर करनेमें सहायता पहुंचाई। किन्तु कुछ दिनके लिये अर्थात् ढाई सौ वर्ष तक मुसलमानोंके कठोर शासनचक्रसे जर्जरित हो कर महाराष्ट्रदेशसे आर्यधर्म और आर्यविद्या विलुप्त-सी हो गई तथा अधिवासियोंका जातीय जीवन निष्क्रान्त हो गया।

इस दुःसमयमें एकनाथस्वामी, मुक्तेश्वर, दासोपन्त, आनन्दतनय, वामनस्वामी, रघुनाथस्वामी, गङ्गाधर बाबा, केशवस्वामी, रङ्गनाथस्वामी, मोरयादव, जयरामस्वामी, तुकाराम और रामदास आदि उदार चरितवाले धर्मोपदेशक कविगण आविर्भूत हो कर महाराष्ट्र-समाज और साहित्यका जो अशेष उपकार कर गये हैं, वह इतिहासमें सुवर्णाक्षरमें लिख रखनेके योग्य है।

वे लोग अपने अपने सुखदुःखके प्रति जरा भी ख्याल न कर गांव गांवमें घूमने और भागवत-धर्मका अर्थ समझा कर लोगोंका अज्ञानान्धकार दूर करने लगे। स्वधर्मालोचनाविमुख, परधर्मावलम्बनप्रयासी, विपन्न जातिको स्वधर्मका सुगमपंथ दिखला कर और प्रेमभक्तिकी शिक्षा दे कर वे लोग शुष्क प्राणमें अमृत सींचने लगे। इधर विधर्मी शासक-सम्प्रदायका निर्यातन और उदार देवभाषाके पक्षपाती कुसंस्कारपरायण, शुष्ककर्मकाण्डके उपासक ब्राह्मण पण्डितोंके विराग और सामाजिक उत्पीड़नको सहन करते हुए उन्होंने स्वदेशवासीके कल्याणके लिये कोई कसर उठा न रखा। पीछे उन्होंने विविध अध्यात्म ग्रंथोंकी रचना कर जातीय साहित्यके पुष्टिवर्द्धन और महाराष्ट्र जातिके अमरता-लाभका उपाय निकाला। प्राचीन ग्रीक और लाटिन भाषासे अङ्गरेजी आदि प्रचलित भाषामें बाइबिल आदि धर्मग्रंथोंका अनुवाद हो जानेसे १६वीं शताब्दीमें यूरोपमें जिस प्रकार देशव्यापी धर्मान्दोलनने समस्त पाश्चात्य जातिकी मोहनिद्रा तोड़ी थी और उन्नतिका पथ परिष्कार किया था, महाराष्ट्रदेशमें भी उसी प्रकार एकनाथ, मुक्तेश्वर आदिके यत्नसे रामायण, महाभारत, एकादशस्कन्ध भागवत और श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रंथोंका सरल भाषामें अनुवाद होनेसे उसे पढ़ कर मरहठोंकी स्वधर्मप्रीति बहुत कुछ बढ़ गई। साधुपुरुषोंकी कथकता, संकीर्त्तन और धर्मोप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देशसे समस्त जातिके निस्तेज प्राणमें अतुल बलका संचार हो आया। अब मुसलमानोंके अत्याचारसे स्वधर्मकी रक्षा करनेके लिये वे लोग अपने प्राणको न्योछावर करने तय्यार हो गये। उक्त साधुगण जन-साधारणको संसारमें रह कर सदाचार ज्ञान, भक्ति और सब जीवों पर समान दृष्टि रखनेकी शिक्षा देते थे। ईश्वरके प्रेममय स्वरूप, सब जीवोंमें उनका अधिष्ठान, साधनमार्गमें विभिन्नता रहते हुए भी साध्यविषयके अभिन्नत्व सम्बन्धमें विश्वास, ये सब उन साधुपुरुषोंके उपदेशसे महाराष्ट्रवासियोंके चित्तमें अच्छी तरह मुद्रित हो गये। केवल यही नहीं, उनके उपदेशसे महाराष्ट्र वासियोंमें एकताका भी संचार हो गया था।

राजपूत जातिके मध्य जिस प्रकार एकताका अभाव देखा जाता है, मरहठोंमें वैसा नहीं है। शौर्य, साहस, सहिष्णुता, सरलता और दूरदर्शिता आदि विविध सद्-गुणोंकी तरह एकता भी महाराष्ट्रजातिका एक स्वाभव-सिद्ध गुण है। किन्तु उन लोगोंके मध्य मराठा क्षत्रियोंमें विवादप्रियता वा भ्रातृविरोधिता अत्यन्त प्रबल है। इसी दोषसे मुसलमान शासनकर्त्ता विविध कौशलसे उनके मध्य विवाद वह्नि सुलगाने और उन पर अपना प्रभुत्व अक्षुण्ण रखनेमें समर्थ हुए थे। किन्तु पूर्वोक्त साधु-पुरुष और भक्त कवियोंके उपदेश तथा धर्मप्रचार-गुणसे आपसकी विवाद वह्नि बढ़ने न पाई और उनके जातीय अभ्युत्थानका सूत्रपात हुआ।

नये धर्मामृतका आस्वाद चख कर उस समय मर-हठोंकी धर्मपिपासा ऐसी बढ़ गई थी, कि साधुपुरुषोंके धर्मोपदेशपूर्ण कथकता और संकीर्त्तन सुननेके लिये दूर दूर देशके लोग एक जगह जमा होते थे। शिवरात्रि, रामनवमी, जन्माष्टमी और प्रसिद्ध महापुरुषोंके आवि-र्भाव और तिरोभावादि पर्वोंमें जब एक एक साधुपुरुषके आश्रममें अपरापर साधु-संन्यासिगण शिष्यमण्डलीके साथ आते और मधुर वीणा तथा मृदङ्गादि बजा कर संकीर्त्तन और भक्तिका माहात्म्य गाते थे उस समय वहां हजारोंकी भीड़ लग जाती थी। इस प्रकार वर्ष-में कई बार होता था। इससे धीरे धीरे आपसमें सहा-नुभूतिका सञ्चार होने लगा। आखिर पण्ढरपुरमें सार्व-जनिक धर्ममहोत्सवमें वह भाव परिपुष्ट हो कर मर-हठोंके स्वाभाविक सम्मिलन और शक्तिका पूर्ण विकाश हुआ।

आषाढ़ी और कार्त्तिकी एकादशी उपलक्षमें महाराष्ट्र-देशके प्रधान तीर्थ पण्ढरपुरमें प्रतिवर्ष बड़ा मेला लगता है। जिस समयकी बात कही जाती है, उस समय भी देशके सभी साधुसंन्यासी इस मेलेमें पण्ढरपुर आते थे। वे आपसमें तर्कवितर्क कर अपने अपने धर्म-मतको मार्जित और गठित करनेकी कोशिश करते थे। इन सब विभिन्न देशसे आये हुए साधुपुरुषोंके एकत्र दर्शनलाभ और तीर्थाधिष्ठात्री देवताकी पूजा करनेके लिये लाखों नरनारियां पण्ढरपुर आती थीं। महाराष्ट्र-देशमें खास कर पण्ढरपुरमें धर्मोत्सवके समय जात-पांतका विचार नहीं किया जाता था। आज भी वहां ब्राह्मणसे ले चण्डाल तक सभी एक जगह जमा होते और हरिकीर्त्तन करते हैं। उस समयके नवदीक्षित सभी श्रेणीके मरहठे भीमानदीके विस्तृत बालुकातट पर इकट्ठे हो कर नाच गानके साथ हरिकीर्त्तन करते थे। भक्तहृदयके आनंदोच्छ्वाससे चारों ओर प्लावित हो जाता था। उस भक्तितरङ्गमें गोता मार कर प्रेमविवश-चित्तसे ब्राह्मण चाण्डाल आपसमें आलिङ्गन करते हुए हरिकीर्त्तन करते थे। इससे उनका आपसका मनो-मालिन्य दूर हो जाता और एकताका सञ्चार होता था। आजकल जिस प्रकार जातीय महासमिति और प्रादे-शिक समितिके वार्षिक अधिवेशनके फलसे भारतवर्षके विभिन्न सम्प्रदायकी शिक्षितमण्डलीमें सहानुभूतिका संचार होता है, उसी प्रकार उस समयके साधुपुरुषों-के यत्नसे महाराष्ट्रदेशमें होता था। अन्तमें मरहठों-के इस प्रबल स्वधर्मानुरागने उन्हें स्वधर्मरक्षाके लिये मुसलमानोंका मूलोच्छेद करनेमें उत्साहित किया था। जो लोग इस महत् कार्यको करनेके लिये अग्रसर हुए थे उनके अधिनायकका नाम था महात्मा शिवाजी।

महाराष्ट्रदेशकी तरह इस समय भारतवर्षके दूसरे दूसरे प्रदेशोंमें भी भक्तिप्रधान उदार सार्वजनिक धर्म और सार्वजनिक धर्म-महोत्सवादिका प्रवर्त्तन हुआ था। किन्तु महाराष्ट्रमें इस आन्दोलनसे जैसा अच्छा फल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकला वैसा और कहीं भी नहीं। महाराष्ट्रोंका स्वाभाविक स्वाधीनतानुराग और सम्मिलन प्रवलता ही ऐसे फलभेदका एक प्रधान कारण था।

मध्ययुगका साहित्य।

१६वीं और १७वीं शताब्दीके साहित्याचार्योंने ज्ञानविस्तार द्वारा महाराष्ट्र-जातिके अभ्युदयका पथ परिष्कार कर दिया था। जो समझते हैं, कि एक दल अशिक्षित डकैतोंके लूट मारके फलसे ही महाराष्ट्रदेशमें मुसलमान शासनका मूल शिथिल हो गया था तथा आखिरमें इन्हीं डकैतोंकी शक्तिके प्रभावसे उत्तर-भारतमें मुगल साम्राज्यकी नींव गिरने पर थी, वे भारी भूल करते हैं। उनकी भूल नीचेका विवरण पढ़नेसे आपे आप सुधर जायेगी। जनसाधारणके मध्य धर्म और साहित्यके ज्ञानविस्तारके फलसे ही महाराष्ट्र-साम्राज्यकी नींव डाली गई थी, इसमें सन्देह नहीं। पहले कह आये हैं, कि मुकुन्दराज और ज्ञानेश्वर इस विभागके पथदर्शक थे। किन्तु उनका ग्रंथ मुसलमान-विप्लवके समय विलुप्तप्राय हो गया था जिससे महाराष्ट्र-जाति सुप्त अवस्थामें अपना समय विताती थी। एकनाथस्वामीने इस सुप्त जातिको जगानेका बीड़ा उठाया। १५४७ ई०में उनका जन्म हुआ। उनका पहला काम था विलुप्तप्राय ज्ञानेश्वरी (भावार्थदीपिका)-का पाठसंशोधन करके उसका बहुल प्रचार करना। एकनाथ और उनके गुरु जनार्दनस्वामी दोनों ही राजकार्यमें निपुण और समर-विद्यामें विशारद थे। जनार्दनस्वामी पहले निजाम शाहके मंत्री थे। पीछे संन्यास-ग्रहण कर उन्होंने महाराष्ट्रमें दत्तात्रेयोपासना प्रवर्त्तित की। एकनाथने भी कुछ दिन तक मुसलमान-राजाके यहां नौकरी की थी। दोनोंको ही सुलतानकी ओरसे समरक्षेत्रमें उतरना पड़ा था। पीछे दोनोंने ही शेष जीवन स्वदेशसेवामें—ज्ञान और धर्मके प्रचारमें लगाया।

ज्ञानेश्वरीका उद्धार करनेके बाद एकनाथने मराठी-भाषामें रुक्मिणी-स्वयम्वर (१७१० श्लोक), भावार्थ-रामायण (४० हजार श्लोक), स्वात्मसुख, चतुःश्लोकी भागवत, हस्तामलक, श्रीमद्भागवतका एकादश स्कन्ध (२० हजार श्लोक) आदि ग्रंथ तथा सैकड़ों पदावलीकी रचना कर जातीय ज्ञानभाण्डारकी पुष्टि की। उनकी रचना बहुत सरल, गम्भीर और प्रीतिप्रद होती थी। उनका सदाचारप्रभाव महाराष्ट्र समाजकी अन्तर्बल वृद्धिका सहाय हुआ था। सभी श्रेणियोंमें ब्रह्मज्ञानका प्रचार करनेके लिये उन्होंने ग्रंथरचनामें एक अभिनव मनोरम पद्धतिका प्रणयन किया था। चण्डाल तक भी उनकी प्राञ्जल रचना पढ़ और सुन कर मुग्ध होता था।

इस समय दासोपन्त नामक एक और प्रसिद्ध ग्रंथकारने जन्म लिया। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीताकी जो वृहत् टीका लिखी उसका नाम 'गीतार्णव' रखा गया। गीतार्णव सचमुच समुद्रके जैसा विशाल ग्रंथ है। उसमें १ लाख २५ हजार श्लोक हैं। इन व्यासकल्प प्रतिभाशाली ग्रंथकारका १६०८ ई०में देहान्त हुआ। महाराज शिवाजीके पिता राजा शाहजीके गुरु आनन्दतनय भी इस समयके एक कवि थे। हंसराज नामक किसी साधु पुरुषने इस समय 'वाक्यवृत्ति' और ज्ञानेश्वर-प्रणीत 'अमृतानुभव' नामक ग्रंथकी सरल व्याख्या लिख कर जनसाधारणका बड़ा उपकार किया। भक्तचरित लेखक उद्धवविट् आदि और भी कितने छोटे बड़े कवि इस युगमें हो गये हैं।

१६०८ ई०में रामदास, तुकाराम, मुक्तेश्वर और विट्ठल कविका जन्म हुआ। इसके दूसरे वर्ष एकनाथस्वामी इहलोकसे चल बसे। उस समयके राजनीति क्षेत्रमें राजा शाहजी तथा धर्म और साहित्यक्षेत्रमें एकनाथ आदि साधु ग्रन्थकारोंने जो सब कार्य आरम्भ किये थे, रामदास, तुकाराम आदि साधुपुरुषों और शिवाजी, तानाजी मालुसरे और मयूरपन्त आदि राजनीतिविदोंने उनका शेष किया था। रामदास और तुकारामके समय मरहठोंमें सब प्रकारके गुणोंका अपूर्व विकाश छा गया था। इसके बाद एक सदीके अन्दर महाराष्ट्रदेशमें जितने पुरुषोंका आविर्भाव हुआ था, पृथ्वीके और किसी भी देशमें इस थोड़े समयके अन्दर उतने नवरत्नोंका आविर्भाव नहीं हुआ।

१७वीं सदीके प्रथम कवि विलासप्रिय राजयोगी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रङ्गनाथस्वामी थे। उनके बनाये हुए ग्रंथोंमें वृहद्भाव्य-वृत्ति, भगवद्गीताकी टीका और योगवाशिष्ठका भाषान्तर उल्लेखनीय है। मधुर पदविन्यासके गुणसे निम्नोक्त तीन ग्रंथोंका विशेष आदर है।

रङ्गनाथके भतीजे श्रीधर एक लोकप्रिय कवि थे। उनके बनाये पाण्डवप्रताप, हरिविजय, रामविजय, शिवलीलामृत और जैमिनीय अश्वमेध ये पांच ग्रन्थ बड़े ही मनोरम हैं। ऐसा ग्रन्थ महाराष्ट्रीय दक्षिण-पथमें बहुत कम देखनेमें आता है। महाराष्ट्र-रमणी-समाजमें और संस्कृत भाषानभिज्ञ पाठकमण्डलीमें श्रीधरसे बढ़ कर और किसी भी कविका सम्मान नहीं हुआ। श्रीधरने जितने ग्रन्थ बनाये उनमेंसे कोई भी ५० हजार श्लोकसे कमका नहीं है। एकनाथके पोते मुक्तेश्वर रामायण और महाभारतके आधार पर दो स्वतन्त्र काव्यग्रन्थ लिख गये हैं। मुक्तेश्वरका रामायण विशेष प्रशंसनीय नहीं होने पर भी महाभारतमें उनकी कविप्रतिभाका जैसा परिचय पाया जाता है वैसा महाराष्ट्र-साहित्य भरमें किसीका नहीं है। साधकप्रवर 'वहिरापिसा'ने इस समय श्रीमद्भागवतका दशम स्कन्ध मराठी भाषामें अनुवाद किया।

१७वीं शताब्दीके दूसरे श्रेष्ठ कवि वामन पण्डित थे। वे भी बहुतसे ग्रन्थ रच गये हैं। वामन पहले घोर द्वैतवादी, कर्मकाण्डके एकान्त पक्षपाती और कट्टर वैष्णव थे। देवभाषा भिन्न प्राकृत जनकथित भाषामें बोलचाल करना वे पाप समझते थे। नाना देशोंमें पर्यटन कर उन्होंने बहुतसे विजयपत्रोंका संग्रह किया था। किन्तु रामदास स्वामीके निकट उनका दर्प चूर्ण हुआ। तभीसे वे अद्वैतमतको अवलम्बन कर भक्तिमार्गके प्रचारमें लग गये। रामदास स्वामीके उपदेशसे उन्होंने संस्कृतका परित्याग कर देशीय भाषामें ग्रन्थ लिखना आरम्भ कर दिया। मराठी भाषामें यथार्थदीपिका नामक उन्होंने जिस टीकाकी रचना की उसमें बड़ी दक्षताके साथ सांख्य, जैन, बौद्ध आदि मतोंका खण्डन और अद्वैतावादका समर्थन किया गया है। ज्ञानेश्वरके भावार्थदीपिकाका प्रसाद-गुण जैसे ओतप्रोतभावमें विद्यमान है यथार्थदीपिकामें भी वैसा ही पाण्डित्य और तर्क विचारका बाहुल्य देखा जाता है। षड्दर्शन और अष्टादश पुराण वामनके करतलगत थे। निगमसार, जीवतत्त्व, कर्मतत्त्व, वेदतत्त्व, ब्रह्मस्तुति, नामसुधा, कृष्णलीला आदि विषयोंमें उन्होंने मौलिक ग्रन्थकी रचना की है। यथार्थदीपिकाको छोड़ कर अन्यान्य ग्रन्थोंमें प्रसादगुण यथेष्ट देखा जाता है। उनके बनाये हुए भर्तृहरिके तीन शतकका अनुवाद अनेक जगह मूलग्रन्थकी अपेक्षा बहुत सरस हुआ है। महाराष्ट्रदेशमें वामन जैसे उत्कृष्ट काव्यानुवाद और विद्वान् 'न भूतो न भविष्यति' अर्थात् न हुए न होंगे। सरलार्थपूर्ण यमक रचनाका चातुर्य उनकी प्रतिभाका एक प्रधान गुण है।

विट्ठल कवि वामनके पूर्ववर्ती तथा महाराष्ट्रीय भाषामें यमक, चित्रकाव्य और कूटश्लोक रचनाके प्रथम पथप्रदर्शक थे। उन्होंने विह्वण चरित, रसमञ्जरी, विद्वज्जीवन, सीता-स्वयम्वर, रुक्मिणी-स्वयम्वर और बहुसंख्यक पदावलीकी रचना कर महाराष्ट्र साहित्यकी सेवा कर गये हैं। जयराम स्वामीका शान्तिपञ्चीकरण तथा केशव स्वामी, आनन्दस्वामी और मोरयादेव आदि कवियोंकी भक्तिज्ञानपूर्ण कवितावली भी उल्लेखनीय है।

अभी तुकाराम और रामदासका नामोल्लेख करनेसे ही इस युगके कवियोंका परिचय एक प्रकारसे शेष हो जाता है। तुकारामका चरित और उनके रचित अभङ्गका विषय पाठकोंको अच्छी तरह मालूम होगा। तुकाराम शब्द देखो। उनकी अभङ्ग नामक भक्तिपूर्ण कवितामाला पढ़ कर बम्बई-शिक्षाविभागके भूतपूर्व डिरेक्टर सर अलेकजण्डर ग्राण्ट महोदयने कहा है—जिन्होंने तुकारामका अभङ्ग पढ़ा है, उसके निकट नीतितत्त्वकी प्रशंसा करना वृथा है।

गोदावरीके किनारे जम्बूग्राममें १६०८ ई०को रामदासका जन्म हुआ। बचपनसे रामकी उपासनामें इनका विशेष अनुराग था। ध्रुव-प्रह्लादिका चरित्र सुन कर बचपनमें ही उनके हृदयमें ईश्वर-दर्शनकी लालसा बलवती हो गई थी। विवाहसे पहले ही वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर द्वार छोड़ कर पञ्चवटी चले गये और वहां द्वादश-वर्षव्यापी तपस्याका आरम्भ कर दिया। तपस्या और योगसाधनके बाद बारह वर्ष तक भारतके नाना स्थानों-में घूमते रहे। बादमें स्वदेश लौट कर ग्रंथरचनामें लग गये। उनके उपदेश और रचनासे महाराष्ट्रमें युगान्तर उपस्थित हुआ। पूर्ववर्त्ती साधु-पुरुषोंके यत्नसे महा-राष्ट्रमें नूतन धर्मोत्साह और ज्ञानानुरागका संचार होनेसे समाजमें जिस नये बलका सञ्चार हुआ था उसे इन्होंने देशकी भलाईमें लगाया। इन्होंने सबसे पहले वैदेशिक-शासनके विरुद्ध उत्तेजनापूर्ण कवितावली लिख कर मरहठोंको स्वराज्यस्थापनमें उत्साहित किया था। दासबोध नामक ग्रंथमें उन्होंने जातीय शिक्षोपयोगी सभी विषयोंका उपदेश भर दिया है। परमार्थसाधन जीवका मुख्य उद्देश्य होने पर भी पार्थिवविषयमें अमनो-योग अकर्त्तव्य है। "स्कूल मेन"-के अनावश्यक ज्ञानके हाथसे बेकनने जिस प्रकार यूरोपवासीका उद्धार कर उनके चित्तको अधिक फल देनेवाले ज्ञानकी ओर खींचा था, उसी प्रकार रामदासने भी आधिभौतिक विषयकी प्रयोजनीयता प्रतिपादन करके महाराष्ट्रवासीके वैराग्य और उदासीनताका निराकरण और उन्हें राष्ट्रोन्नतिका पथ प्रदर्शन किया। बैकनके Advancement of Learning नामक ग्रंथसे रामदासका दासबोध ग्रंथ किसी अंशमें कम नहीं है, वरं आधिभौतिक और आध्यात्मिक उन्नतिके एकता-विधान कौशलमें यदि इसे उच्च स्थान भी दिया जाय, तो कोई दोष नहीं। राम-दासके 'पंचीकरण', 'मनोबोध' और रामायणादि ग्रंथ भी कम प्रसिद्ध नहीं है। किन्तु दासबोध ही उनका सर्वप्रधान ग्रंथ समझा जाता है। उनके इस ग्रंथमें अक्षरपरिचय और लिपिपद्धतिसे ले कर स्थापत्यविद्या तक प्रायः सभी लौकिक ज्ञानका उपदेश देखा जाता है। देशकी दुरवस्थादिके वर्णन, पराधीन जातिको अवलम्बनीय नीति, राजनीति आदि विषयोंके साथ ब्रह्मनिर्वाणलाभके सभी उपाय इस ग्रंथमें वर्णित हैं। उद्यान-रचना, पण्यशाला-स्थापन (कारखाना) और दुर्गनिर्माण-पद्धति विषयोंमें भी रामदासने अच्छा उपदेश दिया है। देशकी दुरवस्था और उसके निवारणके उपाय सम्बन्धमें उन्होंने जो लिखा है उसका एक अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। इसीसे पाठकोंको मालूम होगा, कि रामदासने साहित्यक्षेत्रमें कैसे विषयोंकी अव-तारणा की थी। उन्होंने लिखा था,—'मुसलमान लोग बहुत दिनोंसे अत्याचार करते आ रहे हैं। हिन्दुओंमें ऐसा एक भी वीर नहीं जो उन्हें उचित दण्ड दे सके। दुष्टोंके अत्याचारसे देव-ब्राह्मणका उच्छेद, सभी धर्म-कर्म भ्रष्ट, तीर्थक्षेत्र विध्वस्त, ब्राह्मणोंके वासस्थान अप-वित्रीकृत, समस्त देश विप्लवपूर्ण और धर्म विलुप्त हो गया है। पापियोंका बल बढ़ जानेसे धार्मिकगण दुर्बल हो गये हैं और देवगण अत्याचारके भयसे छिप रहे हैं। ब्राह्मणगण तिलकमाला आदिका परित्याग कर मुसल-मानोंके अनुकारी हो गये हैं। सबोंका पूर्वसम्मान लोप हो गया है। मुसलमान लोग दुर्बल प्रजाके प्रति कटु भाषाका प्रयोग करते और उन्हें बुरी तरह सताते हैं। अतएव धर्मरक्षाके लिये सभी अपने अपने जीवन-को विसर्जन कर दो, देशका म्लेच्छभाव दूर करो और सभी मराठा मिल कर एकमतावलम्बी हो जाओ। अपने महाराष्ट्रधर्मको फैलाओ, देवद्रोहियोंको कुत्ते समझ कर मार भगाओ। देवताओंको अपने मस्तक पर रख कर एक उद्यमसे सभी उठ खड़े हों और तुमुल-संग्राम ठान दो। अध्यवसायके साथ सभी चारों ओरसे म्लेच्छों पर टूट पड़ो। स्वदेशद्रोहियोंका विनाश कर देशकी रक्षा करो। धर्मस्थापनके लिये नये देशको फतह करो तथा चारों ओर महाराष्ट्र-धर्म और महा-राष्ट्र राज्य फैलाओ। अभी समय है, सतर्क हो जाओ, नहीं तो पीछे पछताओगे।'

रामदासके शिष्यगण जब इस उत्तेजनामयी वाणीको ओजस्विनी भाषाकी कवितामें मरहठोंके दरवाजे दरवाजे गाने लगे, तभी नूतन महाराष्ट्र साम्राज्यकी नींव डाली गई। महात्मा शिवाजी जैसे उद्यमशील क्षत्रिय युवकने रामदासका शिष्यत्व स्वीकार किया, स्वधर्म और स्वदेशरक्षाकी प्रबलाकांक्षाने सारी महा-राष्ट्र जातिको उन्नत कर दिया। शिवाजीके नेतृत्वमें महाराष्ट्रवासी दक्षिणपथसे मुसलमानी राज्यकी जड़ उखाड़ फेंक देनेके लिये बद्धपरिकर हुए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानेश्वर और मुकुन्दराजने परमार्थज्ञान और भक्ति-सूत्रके अवलम्बन पर महाराष्ट्र-साहित्यकी प्राणप्रतिष्ठा की थी। परवर्त्ती कवियोंकी चेष्टासे वह क्रमशः परिपुष्ट हो कर आखिर रामदासके असामान्य प्रतिभाबलसे अपूर्वविजयश्रीमें विभूषित हुआ। उस समय महाराष्ट्र-साहित्यके इस पूर्णविकाशकालमें बहुसंख्यक भक्तरमणियोंने सात्त्विकभावपूर्ण कविता लिख कर मातृभाषाको अलंकृत किया था। शेख महम्मद नामक एक मुसलमान-कविने योगसंग्राम नामक ग्रंथकी रचना और तुकारामकी तरह पण्ढरपुरके विट्ठलदेवकी उपासनामें अपना तन मन लगा दिया था। इसी समय मराठी गद्यरचनाका भी सूत्रपात हुआ। मरहठा सरदारों द्वारा अनुष्ठित युद्धादिकी विजयवार्त्ताके आधार पर गीतिकविता रचनाकी प्रथा भी इसी समयसे प्रवर्त्तित हुई। फलतः महाराष्ट्रियोंके जातीय अभ्युदयसे कुछ पहले महाराष्ट्र-साहित्यकी इस प्रकार पूरी उन्नति हुई थी।

अभ्युदय।

महाराष्ट्रीय जातिके अभ्युदयकी उपादान-सामग्री किस प्रकार मुसलमानोंके शासनकालमें ही परिपुष्ट हुई थी, धर्म और साहित्यगत उन्नतिके फलसे किस प्रकार महाराष्ट्र जनसाधारणका चित्त सुसंस्कृत और आत्मनिर्भरशील हो उठा था, किस प्रकार मुसलमानोंके आत्मकलह और दुर्बलताकालमें मराठागण दीवानी, फौजदारी और देशरक्षा आदि कामोंमें कार्यदक्षता और बुद्धिमत्ता दिखलाते हुए मुसलमानोंके दाहिने हाथ बन गये थे, उसीका विवरण यहां तक लिखा जा चुका। इसी समयमें रामदासने पार्थिवज्ञानपूर्ण अपूर्व वीररसप्रधान साहित्यकी सृष्टि करके किस प्रकार स्वदेशवासीके हृदयमें स्वाधीनताका बीज बो दिया था, वह भी पाठकको मालूम ही है। अभी किस प्रकार विभिन्न नेताके अधीन यह महाजाति उन्नति पथ पर बढ़ने लगी और किस प्रकार फिरसे उनकी अवनति हुई वह पाठकगणको शिवाजी शम्भाजी, राजाराम, शाहु, पेशवा माधव राव, रघुनाथ राव, सदाशिव राव, माधव राव नारायण, बाजी राव, सिन्दे (सिन्धिया), होलकर आदि शब्द पढ़नेसे भलिभांति मालूम होगा। यहां पर तत्संक्रान्त कुछ प्रयोजनीय विषयोंका संक्षेपमें उल्लेख किया जाता है।

ऊपर लिखी घटनामें जो शामिल थे, सबसे पहले स्वदेशका उद्धार करना जिनके जीवनका महाव्रत था, उन्हें बहुत सी कठिनाइयां झेलनी पड़ी थीं। स्वदेशमें जो सब मराठा सुलतानके अधीन रह कर अच्छे अच्छे ओहदे पर थे तथा जागीर पा कर चैनसे दिन बिताते थे उनमेंसे बहुतेरे शिवाजी-प्रमुख स्वदेशोद्धारकामी मरहठोंके विरुद्ध खड़े हुए। क्योंकि, उन लोगोंको संदेह था, कि शायद स्वदेशोद्धार कामियोंकी चेष्टा सफल न हो। इस कारण अनिश्चित-स्वाधीनताके लिये अपनी नौकरी पर लात मार कर विद्रोहमें शामिल होना उन्होंने अच्छा नहीं समझा। इन स्वदेशविरोधियोंमेंसे मोरे, सुरवे, दलवी, सावन्त, शिरके आदि बाहुबलसे तथा मोहिते, माने, गुजर आदि कौशलसे स्वपक्षमें लाये गये थे। वैदेशिक शत्रुओंमें विजापुरके पठानवंशीय सुलतान और उत्तर भारतके मुगल इस स्वाधीनतालोलुप मरहठोंके प्रधान विरोधी थे। दोनों शक्तिके साथ एक समयमें युद्ध करना अच्छा न समझ कर शिवाजी प्रमुख मराठाओंने विजापुरके सुलतानके विरुद्ध चढ़ाई कर दी और मुगलोंसे मेल कर लिया। १६६२ ई० तक वे लोग विजापुरके सुलतानकी सेनाओंको परास्त करते रहे। जब उन्होंने देखा, कि सुलतानकी बार बार पराजयसे आत्मशक्ति कुछ बढ़ गई तब मुगलोंको भी धीरे धीरे वे लोग दक्षिणापथसे हटानेकी कोशिश करने लगे। किन्तु उनकी यह चेष्टा सहजमें फलवती न हुई। मरहठोंने साइस्ताको परास्त तो किया, पर उन्हें भी मुगलपक्षीय सेनापति जयसिंहके हाथसे अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी। उसका फल यह हुआ, कि दलपति शिवाजी दिल्ली जानेको बाध्य हुए। वहां जा कर उन्हें ऐसी मुसीबतें उठानी पड़ीं, कि नवप्रतिष्ठित महाराष्ट्रराज्यका अंकुर ही नष्ट होना चाहता था। किन्तु कर्मचारियोंकी विश्वस्तता और देशीय जनसाधारणकी सहानुभूतिसे वीर शिवाजीके उन्नतिपथमें जरा भी बाधा न पहुंची। कुछ दिन बाद शिवाजी अपने असाधारण चातुर्य बलसे दिल्लीसे भागे। अब उन्होंने फिरसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुगलोंके साथ युद्ध ठान दिया। मराठोंने अलौकिक उत्साह और बलवीर्य दिखलाते हुए सिंहगढ़ आदि बहुतसे दुर्ग मुगलोंके हाथसे छीन लिये। दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबको भी शिवाजीकी स्वतन्त्रता स्वीकार करनी पड़ी। महाराष्ट्रमें स्वाधीन हिन्दू राजाका स्वतन्त्र सिक्का चलने लगा। मराठोंको इस पर भी संतोष नहीं हुआ। इस समय स्वदेशवासियोंमेंसे कितने उनके साथ मिल गये थे, इस कारण आत्मवृद्धि देख कर वे लोग खान्देशसे मुगलोंको भगानेकी कोशिश करने लगे। सालर और चन्दरमें मुगलोंकी पूरी तरह हार हुई (१६७० ई०में)।

अब शिवाजीका ध्यान विजापुरके शासनसे दक्षिण-महाराष्ट्रके उद्धारकी ओर दौड़ा। युद्धमें बार बार हार खा कर विजापुरके सुलतानने आखिर महाराष्ट्रोंकी अधीनता स्वीकार कर ली। अब १६७४ ई०की ६ठी जूनको बड़ी धूमधामसे मुसलमानप्लावित भारतवर्षमें स्वाधीन हिन्दू राजा शिवाजी राज-सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। रायगढ़में स्वाधीन महाराष्ट्रकी राजधानी हुई। महाराष्ट्रदेशमें गो, ब्राह्मण और सनातनधर्म निष्कण्टक हुआ। इस स्वाधीन राजाको मरहठा लोग 'स्वराज्य' कहते थे।

अभिषेकके समय अन्यान्य परराष्ट्रके दूतोंकी तरह इष्ट इण्डिया कम्पनीके दूत भी रायगढ़में उपस्थित हुए थे। अंगरेज और पुर्त्तगीज आदि पाश्चात्य जातियोंके साथ मित्रता करके शिवाजीने पाश्चात्य नौविद्या और जलयुद्धका कौशल सीखा। पीछे उन्होंने कोली नामक धीवर जातिको ले कर एक महाराष्ट्रीय नौसेना दलका संगठन किया। अन्तमें इसी नौसेनाके हाथसे अंगरेजों और पुर्त्तगीजोंको कई बार परास्त होना पड़ा था।

इससे बाद शिवाजीके सैन्यदलने कर्णाटकको जीत कर स्वराज्यकी सीमा बढ़ाई। इस प्रकार मरहठोंका उत्कर्ष देख मुसलमान जलने लगे और उनका दमन करनेको तुल गये। बहुत जल्द लड़ाई छिड़ गई। मुगल-सेनापति दिलेर खांको शिवाजीके हाथ पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इस चढ़ाईके बाद ही अधिक परिश्रमके कारण शिवाजीका स्वास्थ्य खराब हो गया। फलतः थोड़े ही दिनोंके मध्य अर्थात् १६८० ई०की ५वीं अप्रैलको महाराष्ट्र-शिरोमणि वीरशिवाजी इस लोकसे चल बसे।

शिवाजीकी चेष्टासे महाराष्ट्र राज्य मजबूत नींव पर खड़ा हो गया था। उन्होंने मुगल-पठानकी तरह राजाके हाथ कुछ इख्तियार न सौंप कर आठ मन्त्रियोंके ऊपर राजकार्यका कुल भार सौंपा था। ये आठ मन्त्री "अष्ट प्रधान" कहलाते थे। राजाको इन आठ मन्त्रियोंकी सलाह लिये बिना कोई काम करनेका अधिकार नहीं था। उन आठोंके नाम भी उन्होंने प्राचीन संस्कृत भाषाकी पद्धतिके अनुसार रखे थे। नीचे उनके नाम, काम और वेतनका विवरण दिया गया है :—

	संस्कृत नाम	पारसी नाम	कार्य	कर्मचारीके नाम		वेतन
१	पन्तप्रधान	पेशवा	प्रधान मन्त्रित्व	मोरोत्रिमल पिङ्गले	वार्षिक	१५००० होन
२	पन्त अमात्य	मजुमदार	राजस्व उगाहना और हिसाब रखना	नीलसोमदेव	,,	१२००० ,,
३	पन्त सचिव	सुरनीस	दफ्तरखानेका अध्यक्ष	अन्नाजी दत्त	,,	१०००० ,,
४	मन्त्री	बांकानवीस	प्राइभेट सेक्रेटरी	दत्ताजी पन्त	,,	,,
५	सुमन्त	दबीर	परराष्ट्रसचिव	सोमनाथ पन्त	,,	,,
६	सेनापति	सरनोबत	सर्वसेनाध्यक्ष	प्रतापराव गुजर और हम्बीरराव	,,	,,
७	न्यायाधीश	——	प्रधान विचारपति	बालाजी पन्त और नीराजी रावजी	,,	,,
८	पण्डित राव	——	धर्माध्यक्ष	रघुनाथ पण्डित	,,	,,

मुगलोंकी राज्य-व्यवस्थाका मूलसूत्र सामरिक विभागके कर्मचारियोंके हाथ सौंपा था। इससे प्रजाके शुभ अशुभका विचार अच्छी तरह नहीं होता था। किन्तु शिवाजीका लक्ष्य था प्रजावृद्धि। इसीसे उन्होंने राजकार्यको १८ भागोंमें विभक्त किया था। प्रत्येक विभागमें स्वतन्त्र परिदर्शक कर्मचारी था। शिवाजीने कर्म-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चारियोंको नगद रुपये देनेकी प्रथा निकाली। सेनापतियों और सचिवोंको भी जागीर देना शुरू कर दिया गया। सभी राजकीयपद कर्मचारीके जीवनव्यापी किये गये। मुसलमानी जमानेमें अन्यान्य पैतृक सम्पत्तिकी तरह पिताके पद पर भी पुत्रका अधिकार रहता था। इससे प्रजाके प्रति अत्याचार और राजकार्यकी उन्नति होने नहीं पाती थी। आठ प्रधान मन्त्रियोंसे मन्त्रिसभा संगठित कर प्रत्येक राजकार्यमें उनसे सलाह लेनी पड़ती थी। आगे चल कर अष्ट प्रधान पद्धति उठा दी गई जिससे महाराष्ट्र राज्यकी विशेष क्षति हुई थी।

शिवाजीकी शासनप्रणालीमें एक और विशेषता थी वह थी देश देशमें दुर्गका निर्माण। वैदेशिक आक्रमणसे देशको बचानेके लिये स्वराज्यके उत्तर, पश्चिम और दक्षिणमें उन्होंने ३।४ सौ दुर्ग बनवाये थे। वे सब दुर्ग प्रायः मण्डलाकारमें महाराष्ट्रभूमिको चारों ओरसे घेरे हुए हैं। समुद्रके किनारे जलमें भी द्वीपके ऊपर दुर्ग बनवा कर उन्होंने सिद्दी, अंगरेज, पुर्त्तगीज आदिके आक्रमणसे बचनेका प्रबन्ध भी कर दिया था। महाराष्ट्रके सानुतल प्रदेशमें प्रसिद्ध नगरोंकी रक्षाके लिये चहारदीवारी भी बनाई गई थी। प्रत्येक दुर्गमें एक मराठा जातिका हवलदार और उसकी अधीनतामें एक ब्राह्मण सबनीस (सेनालेखक) और प्रभुकायस्थका कारखाननवीस कर्मचारी रहता था। दुर्गरक्षा, दुर्गसंस्कार, दुर्गाधीन प्रदेशकी राजस्व व्यवस्था और दुर्गमें रसद जुटानेका भार भी उन्हीं पर सौंपा गया था। प्रत्येक दुर्गमें सभी वर्णोंके कर्मचारी समान संख्यामें रहते थे, इससे वर्णगत विद्वेषादि बढ़ने नहीं पाता था। परवर्त्तीकालमें यह प्रथा भी उठा दी गई। एक एक दुर्ग और प्रदेशमें एक ही वर्णके कर्मचारियों पर कुल काम सौंपा गया। इससे जातिभेदजनित मात्सर्यका उदय हुआ और मूलशक्तिका प्रभाव धीरे धीरे जाता रहा।

सामरिक विभागमें स्वाधीन महाराष्ट्र राज्यकी प्रतिष्ठार्थमें जो नूतन संस्कार प्रवर्त्तन किया गया था उसीसे महाराष्ट्र जातिका सौभाग्य-गर्व अनेकों विघ्न बाधाओंके रहते हुए भी दीर्घकाल तक अक्षुण्ण रहा। भारतमें सभी जगह सेनापतियोंको तनखाहके बदलेमें जागीर मिलती थी। स्वयं सेनापति ही सैनिकोंको तनखाह देते थे। इससे प्रकृत सेनादलके साथ राजाका विशेष परिचय नहीं रहता था। जब सभी सेनापति बागी हो जाते थे, उस समय सेनादल भी राजा का पक्ष न ले कर सेनापतिका ही पक्ष लेता था। महाराष्ट्रमें सबसे पहले इसी कुप्रथाका संस्कार हुआ। सामान्य पदातिसे ले कर प्रधान सेनापति तक सभी राजसरकारसे ही नगद रुपये तनखाहमें पाने लगे। शताधिप जुम्लेदारका वेतन एक सौ होन (साढ़े तीन रुपयेका एक होन), एक हजारी सरदारका ५ सौ होन और पांच हजारी सेनापतिका २॥ हजार होन स्थिर हुआ। महाराष्ट्रमें घुड़सवार सेना दो भागोंमें विभक्त थी। जो राजसरकारसे घोड़े और अस्त्रशस्त्र ले कर युद्ध करते थे वे बारगीर और जो अपने घोड़े, ढाल, तलवार और बन्दूक ले कर युद्ध करते थे वे शिलेदार कहलाते थे। शिलेदारी करना मरहठा लोग अति गौरवका कार्य समझते थे। इन्हें भी महीनवारी तनखाह ६ होनसे १२ होन तक मिलती थी। तनखाह नियत समयमें देनेका प्रबन्ध था। सेनादलमें स्त्री, दासी, कलवार आदिका प्रवेश निषिद्ध था। लूटका माल सैनिकोंको नहीं मिलता था, राजसरकारमें जमा किया जाता था। इन सब नियमोंका कोई उल्लङ्घन न कर सके, इसके लिये गुप्तचर नियुक्त रहता था। जो रणक्षेत्रमें वीरता दिखलाते थे, उन्हें राजकोषसे सुवर्णादि अलङ्कार पुरस्कारमें मिलता था। शिवाजीकी चेष्टासे महाराष्ट्रीय नौसेनादलों और जंगी जहाजोंकी ऐसी चल बनी, कि हबसी, पुर्त्तगीज और अङ्गरेज आदि जलयुद्ध-कुशलजातियोंको भी उनके निकट पराभव स्वीकार करना पड़ा था। १६६५ ई०में शिवाजीके अधीन ३०से १५० टन तक माल लाद कर ले जानेके लिये ८५ छोटे और ३ बहुत बड़े जहाज थे। इससे ६ वर्षके बाद महाराष्ट्रराज्यके जंगी जहाजकी संख्या १६० तक हो गई थी। इन्हीं सब जहाजोंके बलसे मरहठे लोग सिद्दी और पुर्त्तगीजोंको दमन करने तथा अङ्गरेजोंके हाथसे बम्बईके निकटस्थित कनेरी (Kennery) द्वीपका उद्धार करनेमें समर्थ हुए थे। काह्होगी आङ्गे,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दरियासागर, मैनाक भण्डारी और इब्राहिम खाँ आदिके नाम महाराष्ट्र एडमिरल वा नौसेनाध्यक्षोंके मध्य इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध हैं।

नवप्रतिष्ठित महाराष्ट्र-राज्यकी राजस्व व्यवस्था भी प्रजाके पक्षमें सुखकर थी। पहले प्रजामण्डली उपजका ३ भाग मालगुजारीमें देती थी, पर अब नगद रुपये देनेका नियम जारी हुआ। पहले ठेकेदारोंके ऊपर मालगुजारी उगाहनेका भार था, पर इस समयसे सरकारी कर्मचारी स्वयं उगाहने लगे। दीवानी मुकदमेका फैसला ग्राम्य पंचायत द्वारा ही होता था। विशेषज्ञ अङ्गरेज राजनीतिज्ञ भी कहते हैं, "In provinces in which the laws of Shivaji remained in force, there was nothing to improve but much to imitate;" समूचा राज्य बारह महालोंमें विभक्त था। महालके अध्यक्ष वार्षिक ४ सौ होन पाते थे। राज्यकी वार्षिक आय ५३ लाख रुपयेकी थी। अलावा इसके मुगल राज्यसे कर (चौथ) और लूटका माल भी आता था। मरहठोंको धर्मोन्मादकताके फलसे यह नया राज्य प्रतिष्ठित होने पर भी इसलाम धर्म पर आघात करनेकी मरहठोंने कभी भी कोशिश नहीं की। मुसलमानोंकी मसजिदकी देख भाल, खर्च वर्चा और मुसलमानीप्रजाकी आध्यात्मिक उन्नतिके लिए शिवाजीने भूमिदानकी व्यवस्था कर दी थी।

इस विप्लवपूर्ण समयमें भी महाराष्ट्रपतिका देशमें विद्याप्रचारकी ओर विशेष ध्यान था। टोल-पाठशाला आदि खोलनेके लिए शास्त्रज्ञ ब्राह्मणोंको राजकोषसे वार्षिक वृत्ति मिलती थी। संस्कृत और मराठी भाषामें ग्रन्थ-रचनाके लिये ग्रन्थकार राजासे पुरस्कार पाते थे।

शिवाजीकी मृत्युके बाद महाराष्ट्र-समाजका नेतृत्व दुर्भाग्यवशतः सम्भाजीके हाथ आया। एकनाथ और रामदास आदि ब्राह्मणोंके धर्मभावकी उत्तेजनासे, तानाजी मालुसरे और प्रताप राव आदि क्षत्रिय वीरोंके बाहुबलसे तथा बालाजी चिटनीस आदि कायस्थोंके नीतिकौशलसे शिवाजी जैसे प्रतिभाशाली धर्मप्राण राजाके नेतृत्वाधीनमें महाराष्ट्रराज्य जिस परिमाणमें उन्नतिकी चरमसीमा तक पहुंच गया था उनके दुर्वृत्त पुत्र सम्भाजीके कर्मदोषसे वह उसी परिमाणमें रसातलको चला गया। सम्भाजी शौर्य और सामर्थ्य हीन तो नहीं थे, पर उनकी घोर व्यसनासक्ति और प्रकृष्ट राजनीतिज्ञानके अभावसे सारे महाराष्ट्र समाजको विपन्न होना पड़ा था। शाहजादा अकबरको उन्होंने आश्रय दिया था, इस कारण औरङ्गजेब स्वयं १२ लाख (काफी खांके मतसे २० लाख) सेना ले कर दक्षिणपथ जितनेके लिये १६८३ ई०में नर्मदा नदी पार हुए। सम्भाजीको व्यसनासक्त देख कर जंजीरामें सिद्दीने और गोआमें पुर्त्तगालोंमें सर उठाया। इन सब शत्रुओंके साथ जो युद्ध हुआ था उसमें सम्भाजीने असाधारण वीरता दिखलाई थी। किन्तु उनको यह मालूम नहीं था, कि बहुतसे शत्रुके उपस्थित होने पर एकसे युद्ध और दूसरेसे सन्धि करना उचित है। इस विषयमें वे अष्ट प्रधानकी सलाह भी नहीं लेते थे। सिद्दी, पुर्त्तगीज और अंगरेज आदि शत्रुओंके साथ युगपत् समर आरम्भ करके भी उन्होंने असाधारण शौर्य बलसे सबोंसे अनुकूल संधिपत्र ले लिये थे। इन सब युद्धप्रसङ्गमें महाराष्ट्रीय नौसेनाने अलौकिक समर कौशल दिखलाया था। गोआके निकट कोण्डदुर्गमें पुर्त्तगीजोंके साथ जो युद्ध हुआ उसमें मरहठोंने पुर्त्तगीजोंके दो सौ यूरोपीय और एक हजार देशीय सैनिकोंके सिर काट डाले थे। औरङ्गजेब उस समय यदि दक्षिणपथमें न रहते तो सम्भव था, महाराष्ट्रगण पुर्त्तगीजोंको समूल नष्ट कर देते।

१६८३ ई०में औरङ्गजेबकी मुगलसेनाके साथ बागलानमें मराठोंका घोर युद्ध हुआ। मराठोंने इस युद्धमें मुगलोंको नितान्त जर्जरित कर दिया। सुप्रसिद्ध निजाम उल मुल्क जब बहुतसे प्रसिद्ध सेनापतिओंके साथ रामसेज दुर्ग जीतनेको गये, तब उन्हें मराठोंके हाथसे हार खा कर लौट जाना पड़ा। शिवाजीके शिष्य हम्बीर राव मोहिते इस समय मराठा सैन्यदलके अधिनायक थे। कोङ्कण जीतनेके लिये मुगलोंके कदम बढ़ाने पर महाराष्ट्रीय सैन्यदलने अव्यवस्थित युद्धनीतिका अवलम्बन कर उन्हें ऐसा विपन्न कर डाला, कि भागनेका रास्ता भी नहीं मिला। असंख्य मुगलसेना मराठा सैनिकके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाथसे और रसदके अभावमें परलोक सिधारी। इस प्रकार वार वार परास्त होनेसे मुगलोंने मराठोंके साथ कलह छोड़ दिया और विजापुर तथा गोलकुण्डा आदि का अस्तित्व मिटानेके लिये संकल्प किया। दो तीन वर्ष तक मुगलसेनाको महाराष्ट्रके विरुद्ध कोई कार्रवाई करनेका साहस नहीं हुआ। मूर्ख सम्भाजी इस अवकाशका यथोचित सद्व्यवहार न करके पुनः व्यसनासक्त हो गये। उनकी विलासिता और अव्यवस्थाके दोषसे राजकोष खाली पड़ गया, राजस्व भी वसूल नहीं होने लगा। शिवाजीकी प्रवर्त्तित नियमावली भी उपेक्षित होने लगी। इन सब कारणोंसे देशमें अराजकता फैल गई।

१६८७ ई०में औरङ्गजेबने फिरसे मरहठोंके साथ युद्ध ठान दिया। वाईके निकट मुगल सरदार सर्जे खांके साथ जो युद्ध हुआ उसमें सेनापति हम्बीरराव एक गोलेके आघातसे पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। इस समय एक दल मुगलसेना कर्णाटक जीतनेके लिये रवाना हुई। सम्भाजीने भी अपना सैन्यदल वहां भेजा। युद्धमें मुगलोंकी हार हुई, किन्तु इधर महाराष्ट्र-रक्षाका कोई भी उपाय नहीं किया गया। कर्णाटकसे प्रधान सेनादलके लौटनेसे पहले मुगल लोग महाराष्ट्रमें भारी ऊधम मचा रहे थे। १७८८ ई०के शेष भाग तक सम्भाजी बड़ी वीरतासे मुगल-सम्राट्के साथ युद्ध करते रहे। पीछे उनका मन विलासिताकी ओर झुका। युद्धादिको छोड़ छाड़ कर वे सङ्गमेश्वर चले गये और वहीं आमोद प्रमोदमें समय बिताने लगे। यह संवाद पा कर मुगल-सेनापति उन्हें अनायास कैद कर दिल्ली ले गये। वहां बादशाहने उन्हें निष्ठुरभावसे मरवा डाला। इस प्रकार मरहठा लोग मुगलोंको बार बार परास्त करके भी सुयोग्यनेताके अभावमें सुफल लाभ न कर सके।

पेशवा और सम्भाजी देखा।

स्वाधीनताके लिये युद्ध।

महात्मा शिवाजीके पुत्रके इस शोचनीय परिणाम पर महाराष्ट्र समाजमें सनसनी फैल गई। उन्होंने सम्भाजीके लड़के शाहुजीको जो बहुत छोटे थे, गद्दी पर बिठा कर मुगलोंके विरुद्ध युद्धघोषणा कर दी। किन्तु दुर्भाग्यवशतः थोड़े ही दिनोंके अन्दर किसी विश्वासघातक मराठाके दोषसे रायगढ़ मुगलोंके हाथ चला गया। उसके साथ साथ छोटा बालक शाहु अपनी माता एसुबाईके साथ मुगलोंके हाथ बन्दी हुआ। अष्टप्रधानोंने बड़ी मुशकिलसे भाग कर अपनी जान बचाई। इसके बाद एक एक करके प्रायः सभी दुर्ग मुगलोंके हाथ आने लगा। १२ लाख मुगलसेनाने महाराष्ट्रको चारों ओरसे घेर लिया। बहुतोंने तो यह समझा, कि महाराष्ट्र-राज्य शून्यमें विलीन हो गया। किन्तु ज्ञान और धर्मकी नीव पर जो राज्य खड़ा था, वह उस घोर संकटकालमें भी नष्ट नहीं हुआ। इधर इस दुर्घटनामें सभी महाराष्ट्र वीरोंने प्रकृत पौरुष, स्वदेशप्रीति और स्वदेश-रक्षामें अपने सद्गुणोंका अच्छा परिचय दिया।

इसके बाद सम्भाजीके छोटे भाई राजाराम राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। वे व्यसनारहित, दयालु और परार्थपरायण थे। किन्तु क्षत्रियजनोचित प्रखर तेज उनमें बिलकुल नहीं था। रायगढ़ दुर्ग शत्रुके हाथ जाने पर वे अष्टप्रधानकी सलाहसे कर्णाटकके अन्तर्गत जिञ्जिदुर्गमें अपनी राजधानी उठा ले गये। अमात्य रामचन्द्र पन्त पर विशालगढ़ और पन्हाड़ा दुर्गमें रह कर महाराष्ट्ररक्षाका भार सौंपा गया। सम्भाजी घोरपड़े और धनाजी यादव नामक दो सेनापतिके हाथ जिञ्जि और महाराष्ट्रके मध्यभागमें घूम घूम कर मुगलसेनाको रसद बंद करनेका भार रहा। राजारामने जिञ्जी जा कर नये अष्टप्रधानको निर्वाचन किया। अब वे शिवाजीके चलाये हुए नियमोंके अनुसार कुल काम करने लगे। इधर सम्भाजीके मारे जाने तथा विजापुर और गोलकुण्डाके अस्तित्व लोप पर मुगल बादशाह औरङ्गजेबके आनन्दका पारावार न रहा, उनका उत्साह पहलेसे दूना हो गया। अब उन्होंने हिन्दुओं पर वीभत्स अत्याचार करना शुरू कर दिया। कहते हैं, कि वे विजयोन्मत्त हो कर हिन्दूसैन्यदलका धर्म नष्ट करनेमें उतारू हो गये थे। किन्तु इससे विपरीत फलकी सम्भावना देख उन्हें उस संकल्पको त्यागना पड़ा। जो कुछ हो, मुगलोंके हाथसे अपना धर्म जाते देख महाराष्ट्रवीर सबके सब बागी हो गये। उन लोगोंके राजा राजाराम (शिवाजीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कनिष्ठ पुत्र) उस समय स्वदेशसे विताड़ित हो कर मुसलमानोंके भयसे मान्द्राजप्रान्तके 'जिञ्जी' दुर्गमें रहते थे। रायगढ़ आदि प्रधान प्रधान दुर्गों पर मुगलोंने कब्जा कर लिया था। मरहटोंमें सुशिक्षित सैन्यकी संख्या भी बहुत थोड़ी थी। समाजमें दो चार विश्वासघातक देश-वैरीका अभाव नहीं था। किन्तु इन सब प्रतिकूल अवस्थामें रहते हुए भी वे लोग स्वधर्म और स्वराज्यकी रक्षाके लिये बद्धपरिकर हुए, धर्मोत्साहसे प्रमत्त हो प्रचण्ड सागरतरङ्ग सदृश मुगलसेनाकी गति रोकनेके लिये आगे बढ़े। जो कोई एक बल्लम भी किसी तरह पा लेता था, वही मुगलोंके पीछे दौड़ पड़ता था। उन लोगों को और भी उत्साहित करनेके लिये राजारामने जिंजीसे विविध पुरस्कारकी घोषणा कर दी। अब उनकी भीषण रणोन्मत्तता देख औरङ्गजेबके भी छक्के छूट गये। मरहठोंके स्वधर्म और समधर्मियोंकी रक्षार्थ प्राणविसर्जनका संकल्प करने पर शाही सेनाकी जगह जगह हार होने लगी। बारह लाख सुशिक्षित सेना ले कर मुट्ठी भर मराठो सेनाके साथ सत्तरह वर्ष तक लगातार युद्ध कर के भी औरङ्गजेबने विजयकी कोई आशा न देखी।

इस समय सन्ताजी घोरपड़े और धनाजी यादव इन दोनों सेनापतिने असाधारण वीरता दिखलाई थी। ये दोनों शिवाजीके समयसे ही महाराष्ट्रीय सामरिक विभागमें काम करते थे। इनकी कर्णार्जुनके साथ यदि उपमा दी जाय तो, कोई अत्युक्ति न होगी। मुसलमान इतिहास-लेखक काफी खां कहते हैं—"सन्ताजी मुगलसरदारोंको नाकों दम लाया था। उनके सामनेसे कोई भी मुगल-सैनिक जीता नहीं लौट सकता था। बड़े बड़े मुगल-योद्धा भी उनके सामने दहल जाते थे। उनके साथ युद्धमें जयलाभ कर सके, ऐसा एक भी सरदार मुगलपक्षमें नहीं था।' एक बार सन्ताजी श्येन पक्षीकी तरह मुगलके खेमे पर टूट पड़े और उसके ऊपरका स्वर्ण-कलस ले कर ही लौटे। उस समय औरङ्गजेब खेमेमें नहीं थे, नहीं तो उनकी जान पर आ बनती। धनाजीमें भी कम वीरता न थी। उनके नाममात्रसे मुगल तुरङ्गदलमें भीतिका संचार हो गया था। कहते हैं, कि उनका नाम सुननेसे ही मुगलोंका घोड़ा चमक कर पानी पीना छोड़ देता था।

इधर भीमा नदीके किनारे शाही सेना छावनी डाल कर पड़ी हुई थी। उधर धनाजी और सन्ताजी आदि महाराष्ट्रवीर दक्षिणमें कर्णाटकसे उत्तर खानदेश तक सभी देशोंमें विप्लव खड़ा कर एक एक करके सभी मुगलथानाओंको जीतने लगे। विशाल मुगलसेना जब उनका पीछा न कर सकी, तब वे कर्णाटकमें राजारामको पकड़नेकी कोशिश करने लगी। यह ले कर १६९४ ई०को उमेरी नामक स्थानमें दोनोंमें मुठभेड़ हुई। सन्ताजीके हाथ मुगल सरदार कासिम खाँ मारे गये।

उधर बादशाही सेनाने जुलफकर खाँकी अधीनतामें जिंजी दुर्गमें घेरा डाल दिया था। पांच वर्ष तक घेरा डाले रहने पर भी राजाराम और उनके सहचरोंने पराजय न स्वीकार की। आखिर बादशाहके जिंजी जीतनेके लिये कठोर आदेश देने पर मुगलसेनाने प्राणपणसे युद्ध करके जिंजीको अधिकार किया। किन्तु दुर्गमें प्रवेश कर उन्होंने देखा, कि राजाराम और उनके सचिवगण उसके पहले ही दुर्गसे भाग गये हैं। यह घटना १६९८ ई०में घटी।

राजाराम जिंजीसे भाग कर महाराष्ट्र लौटे और सतारामें राजधानी बसाई। वहांसे सभी सरदारोंको साथ ले उन्होंने मुगलोंके विरुद्ध युद्धयात्रा कर दी। इस अभियानके फलसे उत्तर महाराष्ट्रके जो सब प्रदेश मुगलोंके शासनाधीन थे, वहांसे सरदेशमुखी और चौथ वसूल किया गया।

इसी समय १७०० ई०में राजारामकी मृत्यु हुई; किन्तु इस दुर्घटना पर भी महाराष्ट्र वीर जरा भी विचलित न हुए। १६८०से १७०० ई० तक बीस वर्षके भीतर एक एक करके शिवाजी, सम्भाजी और राजाराम इस लोकसे चल बसे। तिस पर भी मराठोंके उत्साह और उत्कर्षका जरा भी ह्रास न हुआ।

"छिन्नोऽपि रोहति तरुश्चन्द्रः क्षीणोऽपि वर्द्धते।"

इस न्यायके अनुसार मराठोंका अध्यवसाय और विक्रम दिनों दिन बढ़ने लगा। धनाजी और रामचन्द्र पन्तप्रमुख महाराष्ट्र-वीरोंने जरा भी मुगलोंको चैनसे बैठने न दिया। उनके आकस्मिक आविर्भाव और तिरोभाव, शीतग्रीष्म वर्षाके समान उत्साह, क्षुधा, तृष्णा और विश्रामके प्रति अमनोयोग तथा फिरसे समरोद्यम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि देख कर मुगल-सेनापति स्तम्भित हो गये और कहने लगे "मरहठे लोग आदमी नहीं हैं—ये तो भूत हैं।" इसके बाद बादशाहने स्वयं मरहठोंके विरुद्ध चढ़ाई की, पर कोई फल न निकला।

मरहठोंकी कालान्तक मूर्त्ति संहार न होती देख मुगलसैनिक लौट जानेको बाध्य हुए। किन्तु मरहठोंके विक्रमसे उनका भागना भी उनके लिये बहुत कष्टकर हो उठा। वृद्ध सम्राट् बिलकुल हताश हो गये और राहमें 'वृथा जन्म गया' कह कर प्राणत्याग किया। यह १७०७ फरवरीकी घटना है। अब दक्षिणपथमें हिन्दूधर्म प्रायः निष्कण्टक हो गया। स्वधर्म और स्वदेशकी रक्षाके लिये प्रबल पराक्रान्त मुगल बादशाहके साथ ऐसी प्रतिकूल अवस्थामें लगातार युद्ध करनेका भारतकी और किसी भी जातीको साहस न हुआ। अकृत्रिम धर्मोत्साह और गभीर स्वदेशभक्ति यदि समग्र जातिकी नस नसमें भरी न होती तो, कभी भी ऐसा दुसाध्य कार्य नहीं हो सकता था। फलतः इस समय महाराष्ट्रदेशमें स्वधर्मानुराग और स्वदेशप्रीतिका ऐसा अपूर्व विकाश था, कि वैसा शिवाजीके समयमें भी नहीं दिखाई दिया था। फलतः शिवाजी जो राष्ट्रीय भावका बीज वपन कर गये थे, उस बीजने आज अंकुरित और पल्लवित हो दुर्द्धर्ष मुगलोंके दांत खट्टे कर दिये थे।

सम्भाजीकी हत्याके बाद उनके स्त्री पुत्रको मुगलगण बन्दी कर ले गये थे। उनको उद्धार करनेके लिये मराठागण पंद्रह वर्ष तक लगातार चेष्टा करते रहे, पर कृतकार्य न हो सके। औरङ्गजेबके मरने पर मरहठोंका बल, दर्प और साहस ऐसा बढ़ गया, कि नये बादशाह १७०८ ई०में उन्हें कारामुक्त करनेको बाध्य हुए। उन्होंने समझ रखा था, कि शाहके देश लौटने पर राजारामके पुत्रके साथ उनका कलह खड़ा होगा। इससे नव प्रतिष्ठित महाराष्ट्र-राज्य खार क्षार हो जायगा और तब दाक्षिणात्यमें फिरसे मुगल-साम्राज्य स्थापनका उन्हें अवसर मिलेगा। औरङ्गजेबका भी ऐसा ही विश्वास था। कारण, तरुण सम्राट्की तरह वे भी महाराष्ट्रशक्तिका मूल तत्त्व क्या है, उसे समझ न सके थे। महामति समर्थदासने महाराष्ट्रसमाजमें जो स्वधर्मानुरागका बीज वपन किया था उसके इतने थोड़े समयमें नष्ट होनेकी बिलकुल सम्भावना न थी।

चार वर्षके अन्दर ही मरहठोंने अपने अपने गृहविवादको निबटा लिया। परवर्त्ती चार वर्षोंके भीतर उन्होंने देशकी भीतरी शान्ति-शृङ्खलाका विधान और यथोपयुक्त बलका संग्रह किया। पेशवा शब्द देखो।

इसके बाद सारे भारतवर्षमें हिन्दूधर्मकी विजय-पताका फहरानेके लिये वे लोग प्राणपणसे लग गये। १७१८ ई०में दिल्लीश्वरको काबू करके पेशवा बालाजी विश्वनाथने उनसे दाक्षिणात्यकी देशमुखी और चौथ उगाहनेकी सनद ले ली। यही सनद आगे चल कर मरहठोंके स्वधर्म और स्वराज्य विस्तारकी प्रधान उपाय-स्वरूप हुई। हिन्दूधर्मरक्षाके लिये "हिन्दूपत् बादशाही" अर्थात् स्वाधीन हिन्दू साम्राज्य-स्थापनकी आवश्यकता इसके पहले ही मालूम हो गई थी। हिन्दूधर्मका निग्रह करके मुसलमान लोग स्वधर्मानुरागी मरहठोंके बड़े विद्वेषी हो गये थे। इस कारणसे भी इस समय 'मुगल-शाही'की जगह भारतवर्षमें 'हिन्दूशाही'का स्थापन उन लोगोंका प्रधान लक्ष्य हुआ।

चौथ।

मुगलोंके शासनकालमें देशकी शान्ति-रक्षा और बाहरी शत्रुओंके आक्रमणसे राज्यको बचानेके आयोजनमें साधारणतः राजस्वका चतुर्थांश व्यय किया जाता था। महात्मा शिवाजीकी चेष्टाके फलसे महाराष्ट्रशक्तिने जब देशमें प्रधानता प्राप्त की, तब महाराष्ट्र-राजे दुर्बल पड़ोसी राज्यकी शान्तिरक्षा और शत्रुओंके आक्रमणसे बचानेका भार लेने लगे। इन पड़ोसी-आश्रित राज्योंके राजस्वका चतुर्थांश या "चौथ" इनको मिलने लगा। फलतः इसी "चौथ"से मरहठे राजे दूसरे राज्यकी रक्षाके लिये रखी गई सेनाओंका व्यय निर्वाह करते थे।

इस तरहका चौथ ले कर अपनी सेनाओंके पोषणके व्ययभारको लाघव करनेकी कल्पना पहले पहल महात्मा शिवाजीने ही की थी। वे बहुत दिनोंसे बिजापुर और गोलकुण्डाके सुलतानोंसे और मुगल-सम्राट्से उनके राज्यकी रक्षा करने तथा उसके बेतन स्वरूप उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'चौथ'के लिये प्रार्थना करते थे। अन्तमें सन् १६६८ ई०में मुगलोंके आक्रमणके भयसे भयभीत हो दक्षिणके सुलतानोंने चौथस्वरूप आठ लाख रुपये शिवाजीको देना स्वीकार किया। इस पर शिवाजीने उनकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया उस समय केवल शिवाजीकी सहायतासे ही विजापुर और गोलकुण्डाके सुलतानोंने मुगलोंके भीषण आक्रमणसे रक्षा पाई थी। इस तरह सर्वसम्मतिसे पहले पहल दक्षिणमें "चौथ"-की प्रथा प्रचलित हुई।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि आत्मरक्षानीतिके वशवर्त्ती हो कर राजनीतिज्ञ शिवाजीने इस चौथ-प्रथाका उद्भावन किया था। उन्होंने समझ लिया था, कि दूसरे राज्यकी रक्षाका भार ले उसके बदलेमें चौथ न लेनेसे भारतमें महाराष्ट्र-शक्तिकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकेगी। कारण, इसके द्वारा प्रथमतः परराष्ट्रके व्ययसे महाराष्ट्रोंकी सैन्य-संख्या और सामरिक बल बढ़ेगा। दूसरे जो राज्य महाराष्ट्र-सैनिकोंसे रक्षित होगा, उन सब राज्योंसे महाराष्ट्र राजशक्तिकी विशेष कोई अनिष्टकी आशङ्का न रहेगी। तीसरे 'चौथ' नामसे शान्ति रक्षाका वेतन होने पर भी कार्यतः वह सामन्तोंके निकट प्रधान राजशक्तिका प्राप्त 'कर' समझा जाने लगा। इतिहासज्ञ पाठकोंको अविदित नहीं, कि ईस्वीसन्से १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मार्क्विस आफ वेलेसली साहबके द्वारा प्रवर्त्तित "सब्सिडियरी सिष्टम" भी इसी नीतिके आधार पर हुआ था। जो हो, सन् १६८० ई०में शिवाजीके स्वर्गारोहणसे पहले ही दक्षिण-भारतकी सभी हिन्दू-मुसलमान राजशक्तियोंकी सम्मतिसे उनकी रक्षाका भार ग्रहण और उसके बदलेमें चौथ वसूल करनेकी प्रथाने जोड़ पकड़ लिया था।

शिवाजीकी मृत्युके बाद सम्राट् औरङ्गजेब मरहठोंकी स्वतन्त्रताको अपहरण कर उनकी शक्तिको चूर्ण-विचूर्ण करनेके लिये यथासाध्य चेष्टा करने लगे। किंतु स्वाधीनता-प्रिय महाराष्ट्रीय वीरोंके असाधारण शौर्य-गुणसे उसके सब यत्न ही विफल हुए। बीस वर्ष युद्ध करनेके बाद सन् १७०५ ई०में सम्राट्ने उनको सनद प्रदान की थी। वर उन्होंने देशकी अशान्ति दूर करनेके लिये उसने उन लोगोंको दक्षिण-भारतस्थित मुगल-शासित प्रदेशके सरदेशमुखी सत्त्व या समग्र राजस्वके दशमांश—वार्षिक १ करोड़ अस्सी लाख रुपया देना स्वीकार किया। इसके लिये सरदेशमुखकी तरह अपने सैन्य द्वारा दक्षिण-भारतके शाही प्रदेशोंकी शान्तिरक्षाका भार उन्हें लेनेको कहा गया। किन्तु इस पर मरहठे सम्मत और सन्तुष्ट नहीं हुए। वे सरदेशमुखीके साथ शिवाजीकी चलाई उस 'चौथ'-प्रथाके प्रवर्त्तनके लिये बादशाहसे प्रार्थना करने लगे। क्योंकि उस समय देशमें जिस तरह असंख्य राज्यों और स्वातन्त्र्यप्रिय पुरुषोंका आविर्भाव हुआ था, उससे यथोपयुक्त सैन्य न रखनेसे देशमें शान्ति तथा मरहठोंकी रक्षाकी सम्भावना न थी। किन्तु सम्राट्के चौथप्रथाके स्वीकार न करने पर फिर दोनों पक्षोंमें युद्ध आरम्भ हुआ। अन्तमें १७१० ई०में औरङ्गजेबके पुत्र फर्रुखसियरने आंशिक रूपसे और उसके बाद सन् १७१९ ई०में सम्राट् महम्मद शाहने सम्पूर्णरूपसे मरहठोंको सरदेशमुखी सत्त्व तथा चौथ प्रथाके चलानेके लिये सनद प्रदान की। बाजीराव पेशवाके पिता बालाजी विश्वनाथ स्वयं दिल्ली जा कर शेषोक्त सनद ले आये।

सनद लाभ करके भी मरहठे सर्वत्र चौथ प्रथाको प्रचलित कर न सके। दिल्लीके बादशाहके सूबेदारोंने और दूसरे स्वातन्त्र्य-प्रिय राजाओंने भी बिना युद्धके महाराष्ट्रोंके रक्षणाधीन स्वीकार करनेमें असम्मति प्रकट की। निजाम-उल-मुल्क इनमें प्रधान था। इसीलिये बीस वर्षों तक उसके साथ मरहठोंको लड़ना पड़ा था। बाजीराव पेशवाने इस युद्धमें विशेष प्रसिद्धिलाभ किया था। क्योंकि मरहठोंके एकमात्र वे ही नेता थे। मरहठोंसे बारंबार आक्रान्त हो कर निजामको उनकी रक्षणाधीनता और चौथ प्रथाको स्वीकार करना पड़ा था। इसके बाद दक्षिणके सभी छोटे बड़े राजाओंको भी मरहठोंकी प्रधानता स्वीकार करनी पड़ी। फलतः बालाजी विश्वनाथने मुगलोंसे अपने स्वदेश-वासियोंके लिये जो सनद प्राप्त की थी, उनकी जीवनव्यापी चेष्टाके फलसे ही मरहठे उस यथार्थ फलभोगके अधिकारी हुए थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि देख कर मुगल-सेनापति स्तम्भित हो गये और कहने लगे "मरहठे लोग आदमी नहीं हैं—ये तो भूत हैं।" इसके बाद बादशाहने स्वयं मरहठोंके विरुद्ध चढ़ाई की, पर कोई फल न निकला।

मरहठोंकी कालान्तक मूर्त्ति संहार न होती देख मुगलसैनिक लौट जानेको बाध्य हुए। किन्तु मरहठोंके विक्रमसे उनका भागना भी उनके लिये बहुत कष्टकर हो उठा। वृद्ध सम्राट् बिलकुल हताश हो गये और राहमें 'वृथा जन्म गया' कह कर प्राणत्याग किया। यह १७०७ फरवरीकी घटना है। अब दक्षिणपथमें हिन्दूधर्म प्रायः निष्कण्टक हो गया। स्वधर्म और स्वदेशकी रक्षाके लिये प्रबल पराक्रान्त मुगल बादशाहके साथ ऐसी प्रतिकूल अवस्थामें लगातार युद्ध करनेका भारतकी और किसी भी जातीको साहस न हुआ। अकृत्रिम धर्मोत्साह और गभीर स्वदेशभक्ति यदि समग्र जातिकी नस नसमें भरी न होती तो, कभी भी ऐसा दुसाध्य कार्य नहीं हो सकता था। फलतः इस समय महाराष्ट्रदेशमें स्वधर्मानुराग और स्वदेशप्रीतिका ऐसा अपूर्व विकाश था, कि वैसा शिवाजीके समयमें भी नहीं दिखाई दिया था। फलतः शिवाजी जो राष्ट्रीय भावका बीज वपन कर गये थे, उस बीजने आज अंकुरित और पल्लवित हो दुर्द्धर्ष मुगलोंके दांत खट्टे कर दिये थे।

सम्भाजीकी हत्याके बाद उनके स्त्री पुत्रको मुगलगण बन्दी कर ले गये थे। उनको उद्धार करनेके लिये मराठागण पंद्रह वर्ष तक लगातार चेष्टा करते रहे, पर कृतकार्य न हो सके। औरङ्गजेबके मरने पर मरहठोंका बल, दर्प और साहस ऐसा बढ़ गया, कि नये बादशाह १७०८ ई०में उन्हें कारामुक्त करनेको बाध्य हुए। उन्होंने समझ रखा था, कि शाहके देश लौटने पर राजारामके पुत्रके साथ उनका कलह खड़ा होगा। इससे नव प्रतिष्ठित महाराष्ट्र-राज्य खार क्षार हो जायगा और तब दाक्षिणात्यमें फिरसे मुगल-साम्राज्य स्थापनका उन्हें अवसर मिलेगा। औरङ्गजेबका भी ऐसा ही विश्वास था। कारण, तरुण सम्राट्की तरह वे भी महाराष्ट्रशक्तिका मूल तत्त्व क्या है, उसे समझ न सके थे। महामति रामदासने महाराष्ट्रसमाजमें जो स्वधर्मानुरागका बीज वपन किया था उसके इतने थोड़े समयमें नष्ट होनेकी बिलकुल सम्भावना न थी।

चार वर्षके अन्दर ही मरहठोंने अपने अपने गृहविवादको निबटा लिया। परवर्त्ती चार वर्षोंके भीतर उन्होंने देशकी भीतरी शान्ति-शृङ्खलाका विधान और यथोपयुक्त बलका संग्रह किया। पेशवा शब्द देखो।

इसके बाद सारे भारतवर्षमें हिन्दूधर्मकी विजयपताका फहरानेके लिये वे लोग प्राणपणसे लग गये। १७१८ ई०में दिल्लीश्वरको काबू करके पेशवा बालाजी विश्वनाथने उनसे दाक्षिणात्यकी देशमुखी और चौथ उगाहनेकी सनद ले ली। यही सनद आगे चल कर मरहठोंके स्वधर्म और स्वराज्य विस्तारकी प्रधान उपायस्वरूप हुई। हिन्दूधर्मरक्षाके लिये "हिन्दूपत् बादशाही" अर्थात् स्वाधीन हिन्दू साम्राज्य-स्थापनकी आवश्यकता इसके पहले ही मालूम हो गई थी। हिन्दूधर्मका निग्रह करके मुसलमान लोग स्वधर्मानुरागी मरहठोंके बड़े विद्वेषी हो गये थे। इस कारणसे भी इस समय 'मुगल-शाही'की जगह भारतवर्षमें 'हिन्दूशाही'का स्थापन उन लोगोंका प्रधान लक्ष्य हुआ।

चौथ।

मुगलोंके शासनकालमें देशकी शान्ति-रक्षा और बाहरी शत्रुओंके आक्रमणसे राज्यको बचानेके आयोजनमें साधारणतः राजस्वका चतुर्थांश व्यय किया जाता था। महात्मा शिवाजीकी चेष्टाके फलसे महाराष्ट्रशक्तिने जब देशमें प्रधानता प्राप्त की, तब महाराष्ट्र-राजे दुर्बल पड़ोसी राज्यकी शान्तिरक्षा और शत्रुओंके आक्रमणसे बचानेका भार लेने लगे। इन पड़ोसी-आश्रित राज्योंके राजस्वका चतुर्थांश या "चौथ" इनको मिलने लगा। फलतः इसी "चौथ"से मरहठे राजे दूसरे राज्यकी रक्षाके लिये रखी गई सेनाओंका व्यय निर्वाह करते थे।

इस तरहका चौथ ले कर अपनी सेनाओंके पोषणके व्ययभारको लाघव करनेकी कल्पना पहले पहल महात्मा शिवाजीने ही की थी। वे बहुत दिनोंसे बिजापुर और गोलकुण्डाके सुलतानोंसे और मुगल-सम्राट्से उनके राज्यकी रक्षा करने तथा उसके वेतन स्वरूप उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'चौथ'के लिये प्रार्थना करते थे। अन्तमें सन् १६६८ ई०में मुगलोंके आक्रमणके भयसे भयभीत हो दक्षिणके सुलतानोंने चौथस्वरूप आठ लाख रुपये शिवाजीको देना स्वीकार किया। इस पर शिवाजीने उनकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया उस समय केवल शिवाजीकी सहायतासे ही विजापुर और गोलकुण्डाके सुलतानोंने मुगलोंके भीषण आक्रमणसे रक्षा पाई थी। इस तरह सर्वसम्मतिसे पहले पहल दक्षिणमें "चौथ"-की प्रथा प्रचलित हुई।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि आत्मरक्षानीतिके वशवर्त्ती हो कर राजनीतिज्ञ शिवाजीने इस चौथ-प्रथाका उद्भावन किया था। उन्होंने समझ लिया था, कि दूसरे राज्यकी रक्षाका भार ले उसके बदलेमें चौथ न लेनेसे भारतमें महाराष्ट्र-शक्तिकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकेगी। कारण, इसके द्वारा प्रथमतः परराष्ट्रके व्ययसे महाराष्ट्रोंकी सैन्य-संख्या और सामरिक बल बढ़ेगा। दूसरे जो राज्य महाराष्ट्र-सैनिकोंसे रक्षित होगा, उन सब राज्योंसे महाराष्ट्र राजशक्तिकी विशेष कोई अनिष्टकी आशङ्का न रहेगी। तीसरे 'चौथ' नामसे शान्ति रक्षाका वेतन होने पर भी कार्यतः वह सामन्तोंके निकट प्रधान राजशक्तिका प्राप्त 'कर' समझा जाने लगा। इतिहासज्ञ पाठकोंको अविदित नहीं, कि ईस्वीसन्से १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मार्क्विस आफ वेलेसली साहबके द्वारा प्रवर्त्तित "सब्सिडियरी सिष्टम" भी इसी नीतिके आधार पर हुआ था। जो हो, सन् १६८० ई०में शिवाजीके स्वर्गारोहणसे पहले ही दक्षिण-भारतकी सभी हिन्दू-मुसलमान राजशक्तियोंकी सम्मतिसे उनकी रक्षाका भार ग्रहण और उसके बदलेमें चौथ वसूल करनेकी प्रथाने जोड़ पकड़ लिया था।

शिवाजीकी मृत्युके बाद सम्राट् औरङ्गजेब मरहठोंकी स्वतन्त्रताको अपहरण कर उनकी शक्तिको चूर्ण-विचूर्ण करनेके लिये यथासाध्य चेष्टा करने लगे। किंतु स्वाधीनता-प्रिय महाराष्ट्रीय वीरोंके असाधारण शौर्य-गुणसे उसके सब यत्न ही विफल हुए। बीस वर्ष युद्ध करनेके बाद सन् १७०५ ई०में सम्राट्ने उनको सनद प्रदान की थी। वर उन्होंने देशकी अशान्ति दूर करनेके लिये उसने उन लोगोंको दक्षिण-भारतस्थित मुगल-शासित प्रदेशके सरदेशमुखी सत्त्व या समग्र राजस्वके दशमांश—वार्षिक १ करोड़ अस्सी लाख रुपया देना स्वीकार किया। इसके लिये सरदेशमुखकी तरह अपने सैन्य द्वारा दक्षिण-भारतके शाही प्रदेशोंकी शान्तिरक्षाका भार उन्हें लेनेको कहा गया। किन्तु इस पर मरहठे सम्मत और सन्तुष्ट नहीं हुए। वे सरदेशमुखीके साथ शिवाजीकी चलाई उस 'चौथ'-प्रथाके प्रवर्त्तनके लिये बादशाहसे प्रार्थना करने लगे। क्योंकि उस समय देशमें जिस तरह असंख्य राज्यों और स्वातन्त्र्यप्रिय पुरुषोंका आविर्भाव हुआ था, उससे यथोपयुक्त सैन्य न रखनेसे देशमें शान्ति तथा मरहठोंकी रक्षाकी सम्भावना न थी। किन्तु सम्राट्के चौथप्रथाके स्वीकार न करने पर फिर दोनों पक्षोंमें युद्ध आरम्भ हुआ। अन्तमें १७१० ई०में औरङ्गजेबके पुत्र फर्रुखसियरने आंशिक रूपसे और उसके बाद सन् १७१९ ई०में सम्राट् महम्मद शाहने सम्पूर्णरूपसे मरहठोंको सरदेशमुखी सत्त्व तथा चौथ प्रथाके चलानेके लिये सनद प्रदान की। बाजीराव पेशवाके पिता बालाजी विश्वनाथ स्वयं दिल्ली जा कर शेषोक्त सनद ले आये।

सनद लाभ करके भी मरहठे सर्वत्र चौथ प्रथाको प्रचलित कर न सके। दिल्लीके बादशाहके सूबेदारोंने और दूसरे स्वातन्त्र्य-प्रिय राजाओंने भी बिना युद्धके महाराष्ट्रोंके रक्षणाधीन स्वीकार करनेमें असम्मति प्रकट की। निजाम-उल-मुल्क इनमें प्रधान था। इसीलिये बीस वर्षों तक उसके साथ मरहठोंको लड़ना पड़ा था। बाजीराव पेशवाने इस युद्धमें विशेष प्रसिद्धिलाभ किया था। क्योंकि मरहठोंके एकमात्र वे ही नेता थे। मरहठोंसे बारंबार आक्रान्त हो कर निजामको उनकी रक्षणाधीनता और चौथ प्रथाको स्वीकार करना पड़ा था। इसके बाद दक्षिणके सभी छोटे बड़े राजाओंको भी मरहठोंकी प्रधानता स्वीकार करनी पड़ी। फलतः बालाजी विश्वनाथने मुगलोंसे अपने स्वदेश-वासियोंके लिये जो सनद प्राप्त की थी, उनकी जीवनव्यापी चेष्टाके फलसे ही मरहठे उस यथार्थ फलभोगके अधिकारी हुए थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केवल यही नहीं, शाही सनदके अनुसार उत्तर-भारतमें चौथ उगाहनेकी क्षमता मरहठोंको नहीं थी। इससे बाजीरावके पूर्व समग्र भारतसे चौथ वसूल करनेकी कल्पना अन्य किसीके मस्तिष्कमें उदय नहीं हुई। वीर श्रेष्ठ बाजीरावने ही सर्वप्रथम समग्र भारतवर्षको चौथ प्रथाके सूत्रमें आवद्ध कर कन्याकुमारीसे हिमालयके शिखर पर स्थित 'अटक' तक समूचे देशकी शान्ति रक्षा या शासन और पालन करनेका भार वहन करनेकी महनीय आकांक्षा की थी। महाराज शाहुके मन्त्रिमण्डली और फौजें बाजीरावकी इस महती आकांक्षाको देख चकित स्तम्भित हो उनको इससे प्रतिनिवृत्त करानेकी चेष्टा करने लगी। किन्तु बाजीरावने यह कह कर मरहठोंमें उत्साहानल प्रज्ज्वलित किया, कि भारतमें हिन्दूशक्ति और हिन्दूधर्मका पुनः प्राधान्यकी प्रतिष्ठा करना और विधर्मी शासनका अन्त करना प्रत्येक महाराष्ट्र-सन्तानका आवश्यक कर्त्तव्य है। इसके विषयमें महाराज शाहुके दरवारमें उन्होंने ओजस्विनी भाषामें जो भाषण किया, उसको सुन कर समस्त महाराष्ट्र-सरदारोंने एक मत हो कर भारतमें हिन्दूप्राधान्य-स्थापनमें अग्रसर होना ही अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। शिवाजीके द्वारा प्रवर्त्तित चौथ प्रथाकी सहायतासे भारतवर्षमें हिन्दूसाम्राज्य स्थापनके लिये अग्रगमन-नीतिका (Forward policy) प्रचार ही बाजीरावके चरित्रका विशेषत्व है। इस नीतिके अनुसरण करनेमें सारे मरहठोंको एकतासूत्रमें बांधना ही उनके चरित्रका प्रधान महत्व है। उसी महत्वके प्रभावसे हिन्दुस्तानमें सौ वर्ष पर्यन्त हिन्दुओंका प्राधान्य परिरक्षित हुआ था।

महाराज शाहुकी आज्ञासे बालाजी विश्वनाथके पुत्र बाजीराव दिल्लीपतिकी दी हुई सनद हाथमें ले कर कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए। अटकसे दक्षिण रामेश्वर तक समग्र भूभागमें हिन्दूसाम्राज्य प्रतिष्ठा करनेके लिये स्वदेशवासियोंको उन्होंने उत्साहित किया। इसी समय दाक्षिणात्यमें निजाम-उल-मुल्क बहुत प्रतापान्वित हो उठे थे। उनकी कुटिलतासे या घरफोड़ी नीतिके फलसे मरहठोंमें कई बार गृहविवाद उपस्थित हुआ था। किन्तु बाजीरावने कई युद्धोंमें उसका और दिल्लीके बादशाहका दर्प चूर्ण किया था और यमुनासे तुङ्गभद्रा तक समस्त देशोंसे चौथ वसूल करनेकी व्यवस्था की। दिल्ली दरबार और निजामके सारे उद्यम नष्ट हुए। पेशवा देखो।

महाराष्ट्र सामन्त-मण्डल।

बाजीरावने जिस नीतिका अवलम्बन कर कार्यारम्भ किया था, उसके फलसे महाराष्ट्रदेशमें एक अभिनव सामन्तमण्डलकी सृष्टि हुई। इस सामन्तमण्डलको अङ्गरेजीमें (The Maratha Confederacy) कहते हैं। कनफेडेरेसी कहनेसे सामन्तका भाव नहीं मालूम होता, किन्तु पहले पहल जब यह मण्डल स्थापित हुआ, तब उसमें राजमण्डलकी अपेक्षा सामन्तमण्डलका भाव ही अधिक था। महाराष्ट्र राज्यके छत्रपतिके प्रधान मन्त्रीके रूपमें मण्डलान्तर्गत जिस किसी सामन्तको पदच्युत करनेका अधिकार पेशवाको था। पीछे केन्द्रशक्तिके दुर्बल होनेसे सामन्तोंने बहुत कुछ स्वतन्त्रताका अवलम्बन किया था। शिवाजीके आठ प्रधानके बदलेमें जिस तरह इस नूतन मण्डलकी सृष्टि हुई थी वह इतिहासप्रिय पाठकोंसे छिपा नहीं है। महाराष्ट्र-इतिहासका यह अंश समझनेसे पहले पाठकोंको शाहुजीके दरबारमें बाजीरावने जो व्याख्यान दिया था, उसका स्मरण करना होगा।

पेशवा शब्दमें व्याख्यान देखो।

औरङ्गजेबके साथ बीस वर्ष तक अनवरत युद्ध कर मरहठे अपनी स्वातन्त्र्य रक्षामें कृतकार्य हुए और बालाजी विश्वनाथकी अद्भुत चेष्टाके फलसे राज्यमें आभ्यन्तरीण शान्तिकी स्थापना हुई। इसके बाद मरहठोंकी उन्नतिके लिये किस प्रथाका प्रयोजन है—यह समस्या बाजीरावके सामने उपस्थित हुई थी। शिवाजी द्वारा प्रवर्त्तित नियमावलीको अनुसरण कर इतने दिनों तक मरहठे विपद्में भी आत्मसंरक्षण करनेमें समर्थ हुए थे, किन्तु इस घोरविपद्से पार होनेके बाद उन्होंने देखा, कि मरहटोंके स्वदेशमें बंधे रहने पर उनका मङ्गल नहीं होगा। मुसलमानोंकी शक्तिका केन्द्रस्थल दिल्ली पर अधिकार न कर सकनेसे यवनोंका प्रभाव और देशके म्लेच्छभाव दूर होनेकी सम्भावना नहीं। दिल्लीमें जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक मुसलमान-शक्ति अक्षुण्ण रहेगी तब तक मरहठे निश्चिन्त हो कर शान्तिरक्षा न कर सकेंगे। क्योंकि दिनों दिन क्षीण होते रहने पर भी उसकी अनेक शाखायें भारतवर्षके विभिन्न प्रदेशोंमें परिव्याप्त हो रही थी। इस शाखाशक्तिसमूहके क्रमशः स्वातन्त्र्य अवलम्बन करने पर भी वे अपनेको मुगलसाम्राज्यका प्रधान अवयव समझते थे। उनकी यह धारणा थी, कि भारतवर्षका शासनाधिकार भी न्यायानुसार उन्हींको मिलना चाहिये। केन्द्रशक्तिका ह्रास होने पर भी वे अपने बाहुबलसे भारतके विविध अंशोंमें मुसलमान गौरव अक्षुण्ण रखेंगे—ऐसा उन्होंने सङ्कल्प किया था। इस शाही शक्तिका विनाश होने पर भी वे अपना प्रभुत्व अक्षुण्ण रखनेमें विरत नहीं हुए।

मरहठोंने सोचा, कि शिवाजीके समयसे ५० वर्ष अनवरत चेष्टा करने पर जब मुसलमान शक्तिको दमन करनेमें हम समर्थ हुए हैं, हमने स्वदेश स्वतन्त्रताको लौटा लिया है, तब सूबेदारोंको प्रभुत्व क्यों करने देंगे। दूसरे मुसलमानोंकी केन्द्रशक्तिके विनष्ट होने पर भारतवर्ष एक तरह विना राजाका हो गया था। सभी मुगलसम्राट्के स्थानको अपने बाहुबल और बुद्धि चातुर्यसे अधिकारमें लेनेकी चेष्टा कर रहे थे। मरहठोंके साथ युद्ध करनेसे ही मुगल-सिंहासन शक्तिहीन और शून्यप्रायः हुआ था। ऐसी दशामें उनके रहते मुसलमान आ कर मुगलसिंहासनको अधिकार कर ले—मरहठे यह कैसे सह सकते थे। इसीसे देशमें फैले हुए मुसलमानोंका उच्छेद साधन कर महाराष्ट्र साम्राज्यका विस्तार करना मरहठोंने अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। महाराष्ट्रकेशरी शिवाजीके समयमें ही इस नीतिका सूत्रपात हुआ था। उन्होंने महाराष्ट्रके स्वाधीनता-सम्पादनके बाद दक्षिण कर्नाटक प्रदेशको भी विजय किया था। इसी समयसे कन्या कुमारी अन्तरीप तक मरहठोंका प्रसार हुआ था। इस समय उत्तरमें नर्मदाको पार कर दिल्लीके राजनीति क्षेत्रमें प्रवेश करनेका अधिकार प्राप्त करनेकी इच्छासे मरहठे वीरोंके लिये नितान्त स्वाभाविक था।

बालाजी विश्वनाथ और उनके वंशधरोंके मनमें भी ऐसी धारणा हुई थी। बाजीरावने शाहुके दरबारमें जो व्याख्यान दिया था, उसका भी मम ऐसा ही था। मरहठोंके दिल्लीके सिंहासन पर अधिकार न करने पर भी जब दूसरा इस पर अधिकार कर लेना चाहे, तब मरहठोंके ही दिल्ली पर अधिकार कर लेनेमें क्षति क्या है? पेशवोंके मनमें १८वीं शताब्दीके अन्त तक यही भाव जमा हुआ था। समग्र भारतमें हिन्दूसाम्राज्यकी स्थापनामें कैसी दिक्कत उठानी पड़ेगी, शिवाजीके समयमें इसका अनुमान किया जा नहीं सकता था। किन्तु पेशवोंके लिये यह बहुत तरहसे सहज हो गया था। विशेषतः दिल्लीके प्रति समस्त जातिकी कुदृष्टि करा दे सकने पर स्वदेशके छोटे छोटे मुसलमान राजाओंका नष्ट करना सहज हो जायेगा—यही सोच कर वे अग्रगमननीतिको विशेष पक्षपाती थे। प्रतिनिधि परशुराम त्रिम्बक आदि कई राजपुरुष बाजीरावकी आकर्षताको न देख सकनेके कारण या अन्य किसी कारणसे भारतमें हिन्दू साम्राज्यके स्थापनके घोर विरोधी थे।

परिणाम देख कर विचार करनेसे कहना होगा, कि प्रतिनिधिकी अपेक्षा पेशवाकी नीति ही अधिकतर श्रेयस्कर थी। क्योंकि, दिल्लीकी शक्तिके क्षीण होते ही भारतीय क्षमताशाली व्यक्तियोंने ही बादशाही गौरवके उत्तराधिकार या समस्त भारतका प्रभुत्व लाभ करनेकी चेष्टा की थी। ऐसे समयमें उस प्रतियोगिताके क्षेत्रसे दूर रहना मरहठोंके लिये कठिन था। उच्चाकांक्षा या दुराकांक्षाकी अपेक्षा आत्म-रक्षिणी नीतिके वशवर्त्ती हो कर उन लोगोंको इस पथका अनुसरण करना पड़ा था। पचास वर्षके बाद वृटिश राज्य-स्थापक क्लाइव भी इसी तरहके विचार और कार्यप्रणालीका अनुसरण करने पर बाध्य हुए थे। बालाजी विश्वनाथने सैयदोंके सहाय द्वारा दुर्बल बादशाहसे जिस तरह चौथ और सरदेश-मुखीकी सनद मिली थी, सन् १७५५ ई०में क्लाइवने भी उसी तरह शाह आलमसे दीवानीकी सनद प्राप्त की थी।

बाजीरावने शाहुके दरबारमें जो भाषण दिया था और भविष्यमें कर्त्तव्यके लिये जिस नीतिका अनुसरण करना स्थिर किया था, उसके फलसे महाराष्ट्रसाम्राज्यमें एक सामन्तमण्डलीकी सृष्टि हुई। उनकी स्थिर की हुई

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नीतिके अनुसार ही काय करना कर्त्तव्य समझ कर पेशवाने तदुपयोगी कार्य करनेका आयोजन किया। महाराज शाहु शिवाजीकी तरह प्रतिभासम्पन्न न होने पर भी बुद्धिमें कम न थे। उन्होंने पेशवाकी नीतिका मर्म समझ करके ही उसका समर्थन किया। किन्तु इस प्रणालीको कार्यमें परिणत करनेकी क्षमता उनमें नहीं थी। समरकुशलता तथा शौर्यगुण उनमें जरा भी न था। फिर भी, उस समय शौर्यके सिवा दूसरे गुणों-का आदर वैसा नहीं होता था। बाजीराव शौर्यगुणके आधार पर थे, इसीसे महाराज शाहुने बाजीरावको प्रधान मन्त्री या यों कहिये, दूसरी तरहसे उनको महाराष्ट्रसाम्राज्यका नेतृत्व प्रदान किया था। प्रतिनिधिके पक्षके कितने ही सरदार उनके अधीनमें कार्य करना नहीं चाहते थे। यदि महाराज शाहु स्वयं नेतृत्व करते, तो महाराष्ट्रदेशके सभी वीर उनके आदेश पालनमें साग्रह आगे बढ़ते। किन्तु शाहुजी नेतृत्व ग्रहण करने में असमर्थ थे। इसीसे प्रतिनिधि आंग्रे, दभाड़े, गायकवाड़, आदि बूढे सरदारोंने नये पेशवाके अधीन कार्य करनेमें अनिच्छा प्रकट की। महाराज शाहुके आज्ञा-पालनमें अन्यथाचरण करनेवाला उस समय कोई भी न था फिर भी, उन बूढे सरदारोंके साथ पेशवाका कभी सौहार्द न था। इससे उन सरदारोंकी सहानुभूति प्राप्त न हुई। इसी अभावके कारण पेशवा को दूसरे मन्त्रिमण्डलकी स्थापना करनी पड़ी। इस तरह पेशवाकी चेष्टासे भिन्द, होलकर, पवार और पटवर्द्धन आदि नये सरदारोंकी सृष्टि हुई। इस नये सरदारोंकी सृष्टि एक और कारणसे अनिवार्य हो उठी थी। दिल्लीके सिवा मध्य भारत, मालव, वङ्ग, गुजरात, कोङ्कण (जञ्जिरा) दक्षिण कर्नाट आदि स्थानोंमें मुसलमान-शक्तिके छोटे छोटे केंद्र थे। उन केन्द्रोंको बिना सर्वनाश किये महाराष्ट्र साम्राज्यकी निर्विघ्नता और उद्देश्यकी पूर्त्ति होनेकी सम्भावना नहीं थी। इसी कारणसे इन केन्द्रोंकी मुसलमान शक्तियोंका दमन करनेके लिये प्रत्येक स्थानमें एक एक महाराष्ट्रीय सरदार नियुक्त करनेका प्रबन्ध किया गया था। इसीसे इन सब सरदारोंको कुछ स्वतन्त्रता प्रदान कर मुसलमान शक्तियोंके वक्षस्थल पर महाराष्ट्रीय नई राजधानी कायम करनेकी आज्ञा दी गई। इस तरह मध्यभारतमें शिन्द, मालवा, पवार और होल्-करको रखा गया। स्थिर हुआ, कि भोंसलेको नागपुर-में वङ्गीय मुसलमानों पर शासन करनेका अधिकार देनेकी आज्ञा दी जाय। सेनापति दभाड़ेको गुजरात-का भार दिया गया। कोङ्कणमें आंग्रे सिद्दी पुर्त्तगीजों और अन्यान्य पश्चिमीय डाकुओंको दमन करनेके लिये रखे गये। निजाम समग्र दक्षिणका सूबेदार था, पेशवा-ने उसका दमन करनेका भार स्वयं अपने ऊपर लिया। भारतके अति दक्षिणांशमें पहले कुछ दिनों तक भोंसले, पीछे घोरपड़े, और इसके बाद पटवर्द्धन सरदार हिन्दू-प्राधान्य-रक्षाके लिये प्रस्तुत हुए। इस तरह समग्र भारत-साम्राज्यमें महाराष्ट्रीय शासन प्रवर्त्तित करनेका उपाय पेशवा बाजीराव और उनके पुत्र बालाजी बाजी-रावकी चेष्टासे किया गया। फलतः ग्वालियर, धार-वाड़, इन्दोर, नागपुर, पूना, कोलावा, मोरज प्रभृति नगरोंमें महाराष्ट्र-साम्राज्यकी नई राजधानियां कायम हुईं। क्रमशः शिवाजीके सङ्कीर्ण महाराष्ट्र-समाजका स्थान इस तरह एक विशाल महाराष्ट्र समाज बन गया। इस समाजके पेशवा ही नेता हुए। दुर्भाग्यकी बात इतनी ही थी, कि महाराज शाहु यह नेतृत्व पद ग्रहण करनेमें समर्थ नहीं हो सके। इसलिये जिसने इस स्कीम (उपाय) की रचना की है, उसी पर यानी पेशवा पर इसको कार्यमें परिणत करनेका भार देना पड़ा था। फलतः शाहुके आदेश और इच्छासे पेशवा पर ही महा-राष्ट्र समाजके नेतृत्वका भार अर्पित हुआ। बाजीरावके बाद इस दायित्वपूर्ण कामका भार बालाजीके हाथ सौंपा गया। आंग्रे, दभाड़े, भोंसले और गायकवाड़ प्रभृति विशेष मर्य्यादाशाली सरदारोंकी इच्छाके विरुद्ध शाहु बालाजीको नेतृत्व प्रदान पर बाध्य हुए। क्योंकि उस समय शाहुकी समझमें बालाजीकी अपेक्षा महाराष्ट्रमें कोई योग्यतर व्यक्ति नहीं था। फिर उस समय महा-राष्ट्र-समाजका नेतृत्व करनेके लिये अपेक्षाकृत योग्य व्यक्तिकी आवश्यकता थी। बालाजी बाजीरावने अपनी असीम शक्तिसे महाराष्ट्रसाम्राज्यको बढ़ाया था। किंतु पुराने और नये सामन्त-मण्डल पर वे यथोचित प्रभुत्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रख न सके। इसीसे एक ओर नया देश जीत कर महाराष्ट्र साम्राज्यकी उन्नति, दूसरी ओर सरदारोंके परस्पर झगड़े और उद्दामव्यवहारसे साम्राज्यकी जड़ खोखली होने लगी।

फलतः परवर्त्ती पेशवाओंकी कमजोरीसे सामन्तमण्डलके क्रमशः स्वाधीन होने पर भी, भारतके मुसलमानोंके दमनका कार्य बहुत कुछ सुसाधित हुआ था। उनके बीचमें परस्पर झगड़ा न होने पर यह निश्चय था, कि इस देशसे वैदेशिक शक्तिका सम्पूर्ण ह्रास हो जाता, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। भारतवर्षके हजार वर्षके इतिहासमें और किसीके ऐसा असाध्य साधन करनेका जिक्र दिखाई नहीं देता जैसा महाराष्ट्रके राजाओंने किया था। यवनमय भारतको वैदेशिक शक्तियोंकी पराधीनतारूपी जंजीर उनके द्वारा छिन्न भिन्न हो गई थी, यह बात किसी तरह अस्वीकार नहीं की जा सकती। गत सहस्र वर्षोंमें केवल मरहठोंने ही सबसे पहले इस तरहकी चेष्टाको कार्यरूपमें परिणत किया था। भारतवर्षमें इस तरहकी चेष्टा और किसीने भी न की थी। यही कारण है, कि ये अच्छी तरह सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

जो हो, इस सामन्तमण्डलकी सृष्टि होनेके बाद गुजरात, कटक, बेरार, मध्यप्रदेश, मालवा, बुन्देलखण्ड, दिल्ली, आगरा, दोआब, रुहेलखण्ड, बङ्ग, कर्णाटक, मैसूर, पञ्जाब, तञ्जोर, अयोध्या आदि कई स्थानोंमें मुसलमानोंके साथ मरहठोंने पचास वर्षों तक महासमर किया था। इन स्थानोंमें मुसलमानोंके सिवा अन्य कई देशी और वैदेशिक शक्तियोंके साथ भी उनको युद्ध करना पड़ा था। कोल्हापुरके सम्भाजीके सरदार महाराज शाहुकी शक्ति ह्रास और सेनापति दभाड़े पेशवाके ईर्षावश शत्रुओंके साथ कभी कभी मिल जाते थे। शाहु और पेशवाको कभी कभी स्वदेशके इन लोगोंसे भी युद्ध करना पड़ता था। राजपूतानेके क्षत्रिय राजे मरहठोंका चक्रवर्त्तित्व स्वीकार नहीं करते थे तथा बादशाहके हुक्मसे चौथ नहीं देते थे, इससे कई बार उन लोगोंसे भी मरहठोंको युद्ध करना पड़ा था। सिवा इसके पारस्परिक झगड़ेमें भी महाराष्ट्रोंके साथ सैन्य भेज राजपूत राजे युद्ध करनेसे बाज न आते थे। वैदेशिक शत्रुओंमें गोवाके पूर्त्तगीज पश्चिम समुद्रके तीर मरहठोंके शासनमें बाधा उपस्थित करते थे। यह देख कर कि दिल्लीका सिंहासन मरहठोंको मिल रहा है, जो अनुतप्त हुए थे, उनमें नादिर शाह और अब्दाली आदि साहसी वीर पुरुष भारतको लूटते हुए उनके क्षोभके आंशिक निवारणमें यत्नशील हुए थे। इन सब बाहरी शत्रुओंसे भारतको बचानेका भार भी मरहठोंके सर पर था। फलतः इन सब बहुसंख्यक मुसलमानोंके कार्यमें बाधा देनेमें भी उनका बहुत समय खर्च हुआ था। दीर्घकालके परिश्रम करनेके बाद उनको सफलता प्राप्त हुई। इससे मुसलमान-शक्ति नितान्त निर्बल हो गई थी। उस समय उपस्थित विपदको देख कर मुसलमान एक बार जो तोड़ कर आत्मरक्षाके लिये प्राणपणसे चेष्टा करने लगे। उस समय मरहठोंके हार जाने पर भी मुसलमानोंके नष्ट गौरवका पुनरुद्धारकी आशा सदाके लिये विलुप्त हो गई। माधवरावकी अमलदारीमें मरहठोंने नये बलको प्राप्त किया। दुर्भाग्यके कारण अकाल उपस्थित होने पर माधवरावकी मृत्यु हुई। इस समय और भी एक शक्ति धीरे धीरे अपनी प्रधानता प्राप्त कर रही थी। असाधारण कौशलसे वही शक्ति आज भारत पर शासन कर रही है।

बाजीरावने नया सामन्तमण्डल कायम किया और फिर देश-विजय-कार्यमें वे अग्रसर हुए। उनके सामन्तोंकी चेष्टासे नित्य नये नये देश जोते जाने लगे। इस समय शाहुके आठ प्रधान यदि उन सब नये जोते देशोंके भीतरी शासनका संस्कार कर वहां अपने शासनकी जड़ मजबूत कर लेते, तो महाराष्ट्र-साम्राज्यका कभी विलोप नहीं होता। किन्तु उदासीनता तथा अकर्मण्यताके वशीभूत हो तथा कुछ बाजीरावके प्रति विद्वेषके कारण वे इस काममें चित्त नहीं लगा सके। महाराज शाहुकी दृष्टि इधर न जा सकी। बाजीराव जैसे रणकुशल थे, वैसे राजनीतिक अन्य विषयोंमें निपुण नहीं थे। इससे देश पर देश जीत कर महाराष्ट्र साम्राज्य बढ़ने लगा। चौबीस देशोंके सिवा अन्य देशोंकी शासन शृङ्खलाकी कोई चेष्टा नहीं की गई। उधर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाजीरावके रणपाण्डित्यको देख हिंसानल बड़े जोरोंसे प्रज्वलित हो उठा।

बाजीरावके पुत्र बालाजीरावने भीतरी शासनके शृङ्खला विधानमें बहुत दक्षता दिखलाई थी। फिर दो एक जगह भ्रान्त नीतिका अवलम्बन ले कर उन्होंने समाजकी बहुत कुछ क्षति की। राज्यके भीतरी शत्रु-स्वरूप प्रतिपक्षियोंमें अन्यतम रघुजी भोंसले उनके कार्य-में बाधा डालते थे। उनको और किसी तरह वशमें न आते देख बालाजी बाजीरावने बङ्गालके सूबेदार अलीवर्दी खांका पक्ष अवलम्बन कर उनको तंग किया था। भीतरी शत्रु दबानेके लिये एक सामान्य शत्रुका साहाय्य लेना बालाजी रावके प्रति गर्हित कार्य हुआ, ऐसा बहुत लोगोंका मत है। कुछ दिनके बाद होल्कर आदि सरदारोंने भी बालाजीकी दिखाई नीतिका ही अनु-सरण किया। उन्होंने पेशवाकी शक्तिको चूर्ण करनेके लिये महाराष्ट्र समाजके घोरशत्रु रुहेला सरदार नजीब खांको कौशलसे पेशवाके रोषानलसे बचा कर अपने हाथों स्वजातिके सर्वनाशका पथ परिष्कृत किया था। पेशवा शब्दमें विस्तृत विवरण देखो। पुराने सामन्तोंमें आंग्रे प्रतिनिधि और गायकवाड़ आदि पेशवाके विरोधी थे, यह पहले बता चुके हैं। पेशवा-ने अपने बाहुबलसे इन लोगोंको कई बार वशीभूत किया था सही; किन्तु इन लोगोंने कभी भी सम्पूर्ण वश्यता स्वीकार नहीं की। गृह-विवादमें मत्त हो आंग्रेके लिये पेशवाको अधिक दिन तक असुविधा सहन करनी न पड़ी। प्रतिनिधि वंशके लोग दिनों दिन बलहीन हो पेशवाके कार्यमें अधिक दिनों तक बाधा न दे सके। गायकवाड़ और नागपुरके भोंसले अन्त तक पेशवाको बाधा देते रहे। होलकर आदि नये सामन्त भी पेशवा-की अधीनतासे निकलनेकी चेष्टा करते रहे। किन्तु ये लोग अन्तिम पेशवा बाजीरावके पहले तक इस विषयमें कोई काम भी प्रकाश्यरूपसे करनेमें साहसी नहीं हुए। फिर मौका मिलने पर लुके छिपे पेशवाके विरुद्धा-चरण करनेमें भी कुण्ठित नहीं होते। मल्हार राव होलकरने सबसे पहले इस विषयमें पथ दिखलाया था। फिर अन्य सरदारोंने भी इसी पथका अनु-सरण किया था। फलतः अपने हाथों मरहठोंका पराभव हुआ। माधव रावने सरदारोंके असन्तोषको निवारणकी चेष्टा की थी। उन्होंने सभीको समझा दिया था कि, महाराष्ट्र साम्राज्यकी उन्नतिमें सब किसी-का समान हक है। उनके उदारता पूर्ण व्यवहारसे पेशवाके सरदारोंके मनमें जिस मात्सर्य्यका सञ्चार हुआ था उसका बहुत कुछ अंश दूर हो गया। इसी-कारणसे मरहठे अपने हाथों होनेवाली क्षतिकी पूर्त्ति बहुत जल्द हो कर सके। दुर्भाग्यवश माधव राव भी दीर्घजीवी न हुए। इसके बाद नानाफड़नवीसके मन्त्रित्वके समयमें भी सरदारोंको पेशवोंके प्रति मात्सर्य प्रकट करनेका मौका हाथ नहीं आया। अन्तिम बाजी रावके समयमें सारे महाराष्ट्र राज्यमें ही अराजकता फैल गई। अशान्त चित्त सामन्तदल पेशवाका पक्ष समर्थन कर न सका। सामन्तोंकी शक्ति ह्रास करनेके लिए बाजी रावने अङ्गरेजोंकी सहायता ली। उस समय सामन्तों-की शक्ति लाघव हुई थी सही, किन्तु उन सामन्तोंके साथ साथ बाजी रावका भी सौभाग्यसूर्य सदाके लिये अस्त हो गया। फिर उन दोनोंके साथ-साथ महाराष्ट्र साम्राज्य भी विलीन हो गया। उनके सामन्त-मण्डल आज भी वृटिश-शासनकालमें अपनी स्वतन्त्रता-की रक्षा कर हिन्दूधर्मको आश्रय दान कर रहा है।

महाराष्ट्रजातिकी चरमोन्नति।

सामन्तोंके इस अन्तर्विप्लवके चित्रको हृदयसे निकाल कर महाराष्ट्र साम्राज्यके बाह्य चित्रों पर दृष्टि-पात करने पर समग्र जातिके असाधारण उत्साहके परि-चयसे विस्मित होना पड़ता है।

सन् १७४०-४१ ई०में बाजीरावके पुत्र बालाजी राव मरहठोंका नेतृत्व करने लगे। उनके साधारण बुद्धि-बलसे महाराष्ट्र समाजके विभिन्न शक्तिसमूह मुख कुछ कालके लिये एकाग्र हुआ था। रामदास और शिवाजी-के जीवनका प्रधान व्रत इसी समय सफल हुआ। बाला-जी बाजीराव ही सभी मरहठोंको एकत्र कर सारे महा-राष्ट्र धर्मका विस्तार करनेमें समर्थ हुए थे। उनकी ही चेष्टासे देशमें प्राचीन आर्य विद्याकी चर्चा फैलने लगी। उन्होंने वेद, स्मृति, दर्शनशास्त्र, पुराण, ज्योतिष,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैद्यक प्रभृति विविध शास्त्रोंमें विद्वान् ब्राह्मणोंकी परीक्षा प्रति वर्ष लेते और उनको पुरस्कृत करनेका भी आयोजन करते थे। इसके उपलक्षमें वा प्रति वर्ष २६ लाख रुपये तक खर्च कर देते थे। काशी, रामेश्वर, मिथिला आदि बहुत दूर दूरके विद्यार्थी पुरस्कार पानेकी लालचसे पूनाको परीक्षामें प्रतिवर्ष सम्मिलित होते थे। समागत ब्राह्मणोंकी परीक्षा लेने और पुरस्कार वितरण करनेके लिये एक अलग आलय बनाया गया था। पुरस्कारके लोभसे देशमें ब्राह्मण सन्तानोंने शास्त्रज्ञान-लाभमें मनोनिवेश किया था। क्रमशः प्रतिवर्ष पूनामें ३०-४० सहस्र विद्वान् ब्राह्मणोंका समावेश हुआ करता था। देशमें शास्त्र चर्चाका स्रोत वेगसे प्रवाहित होने लगा। कवि, शिल्पी, चित्रकार और गीतवाद्यविशारद व्यक्ति भी राजाश्रय-लाभसे वञ्चित नहीं होते थे। देशके कृषिवाणिज्यकी उन्नतिकी ओर भी बालाजी बाजी रावकी विशेष दृष्टि थी।

पहले दस वर्षके भीतर महाराष्ट्रराज्यकी भीतरी शासनशृङ्खला और महाराष्ट्रशक्तिको दृढ़ करके बालाजीका हिन्दूसाम्राज्य स्थापनका जो सुमहान संकल्प था। उसे वे कार्यमें परिणत करनेके लिये तनमनसे लग गये। मरहठोंने बालाजी जैसे राजनीति-कुशल शासनकर्त्ता और सुदक्ष सेनानायक पा कर अपनी अलौकिक क्षमतासे सारे संसारको कंपा दिया था। बालाजीके उपदेशानुसार १७५० ई० तक ग्यारह वर्षके भीतर उन लोगोंने कमसे कम ४२ बार युद्धयात्रा की थी। प्रायः सभी यात्राओंमें बालाजी उन लोगोंके साथ थे। अयोध्या, बिहार और बङ्गदेशसे मुसलमानी शासनकी जड़ उखाड़ कर उत्तरमें अटकसे दक्षिणमें रामेश्वर तक आसमुद्र-हिमाचलव्यापी 'हिन्दूपत् बादशाही' (हिन्दूसाम्राज्य) स्थापन करनेके लिये महाराष्ट्रगण बड़े व्यग्र हो गये थे। यही कारण था, कि उन्होंने दक्षिण और उत्तर-भारतवर्षके हिन्दू-राजाओंके विरुद्ध कभी भी युद्धयात्रा नहीं की—केवल उन्हें छत्रपतिका सार्वभौमत्व स्वीकारने और कर देनेके लिये बाध्य किया था। मुसलमानोंके हाथसे मुक्तिपुरी अयोध्या, श्रीक्षेत्र, वाराणसी और पवित्र प्रयागक्षेत्रका उद्धार करनेके लिये मरहठोंने जी जानसे कोशिश की थी। यहां तक, कि वे मुसलमानोंको उक्त क्षेत्रोंके बदलेमें कुछ निज अधिकृत देश भी देनेको तैयार हो गये थे। किन्तु दुर्भाग्यवशतः कई कारणोंसे उनकी चेष्टा फलवती न हुई। फिर भी प्रत्येक हिन्दू-संतानको उनके उद्यमकी प्रशंसा अवश्य करनी चाहिये। ऐसा पवित्र उद्यम 'हिन्दूसूर्य' उपाधिधारी राणा लोगोंने भी कभी नहीं दिखलाया था।

१७५०से १७६१ ई० तक मरहठोंने अपने संकल्पको कार्यमें परिणत करनेके लिये प्राणपणसे चेष्टा की थी। उनकी चेष्टा बहुत कुछ सफल भी हुई थी। उन लोगोंके अध्यवसाय और उच्चाकांक्षाकी ओर ध्यान देनेसे विस्मित होना पड़ता है। बालाजीके चचेरे भाई श्रीमन्त भाउसाहबने समुद्रवलयाङ्किता भारतभूमिको पार कर कुस्तुसतुनियामें महाराष्ट्र-विजयपताका फहरानेकी इच्छा प्रकट की थी। पानीपतकी लड़ाईमें अहमदशाह अबदालीके साथ बलपरीक्षामें यदि मरहठोंके भाग्यने पलटा न खाता तथा परवर्त्ती दैवविड़म्बना उन पर टूट न पड़ती, तो भावसाहबका अभिलाष पूर्ण होना असम्भव न था।

बालीजी बाजीरावके यत्नसे भारतवर्षमें मरहठोंका चक्रवर्त्तित्व सर्वत्र स्वीकृत हुआ था। पञ्जाब, अजमीर, मालव, नागपुर, बेरार (विदर्भ), महाराष्ट्र, कर्णाट और गुजरात आदि प्रदेशोंमें उनका आधिपत्य बद्धमूल हो गया था। बङ्गाल, राजपूताना और अन्यान्य छोटे छोटे राज्योंसे नियमितरूपमें उन्हें चौथ मिलता था। महिसुर, हैदराबाद, मारवाड़ और अयोध्यादि प्रदेशोंके राजा उन्हें कर देते थे। दिल्लीके सिंहासन पर मरहठोंने अपने पसन्दके आदमीको बादशाहके रूपमें स्थापित कर अपने हाथका खिलौना बना लिया था। भारतवर्षमें अब उनके एक भी भीतिप्रद शत्रु न रह गया। महाराष्ट्रसाम्राज्यमें तमाम मानो शान्तिदेवीका राज्य था। यह शान्ति यदि कुछ दिन अक्षुण्ण रहती, तो देशके अन्तर्वाणिज्य और बहिर्वाणिज्य विस्तार तथा कलाविद्याके विशिष्ट संस्कारकी ओर मरहठोंका ध्यान दौड़ता, इसमें सन्देह नहीं। किंतु दैवविड़म्बनासे उनकी आशा पर पानी फिर गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतवर्षमें जो मुसलमान-शासनका प्रभाव जाता रहा और सर्वत्र हिन्दूओंकी तूती बोलने लगी उससे मुसलमान-समाजके अधिनायक बड़े उद्विग्न हो गये। जिन दिल्लीश्वरके प्रतापसे एक दिन सारा भारतवर्ष कंप उठा था, जिनके आदेशसे महाराष्ट्रपति शम्भाजी निहत और उनके पुत्र शाहु परिवार समेत बन्दी हुए थे, कालचक्रके अद्भुत परिवर्त्तनसे उन्हींके वंशधरोंको आज मरहठोंके हाथका खिलौना देख उनके परितापकी सीमा न रही। वे लोग महाराष्ट्रशक्तिकी सर्वग्रासिनी मूर्त्तिको देख कर बहुत डर गये। पीछे उन्होंने आत्म-रक्षाके लिये उनसे मेल करना ही अच्छा समझा। पर भीतर ही भीतर उनके विरुद्ध कार्रवाई भी करते रहे। अहमदशाह अबदालीके पास भारतवर्ष पर आक्रमण करनेके लिये उन्होंने चुपके निमंत्रण-पत्र भेजा। बादशाही स्थापनकी दुराकांक्षाने फिरसे उनके चित्तक्षेत्र पर अधिकार जमाया। थोड़े ही दिनोंके मध्य कुरुक्षेत्रके विस्तृत समरप्राङ्गणमें अहमदशाह, नजीब खां रोहिला, सुजाउद्दौला, कुतुबशाह, अहमद खां, दुन्दे खां आदि रोहिला, पठान और दुर्रानी-सरदारगण अपनी अपनी चतुरङ्गिणी सेनाके साथ युद्धार्थ उतर पड़े।

मरहठोंने भी विपुलवाहिनीके साथ उनका मुकाबला किया। दोनों तरफसे प्रायः ढाई लाख वीरपुरुष भारतके भाग्यका निर्णय करनेके लिये समरप्राङ्गणमें उपस्थित हुए थे। दुःखका विषय है, कि राजपूतानेके हिंदूराजे मरहठोंकी चलती पर जलते थे, इस कारण उन्होंने उनका साथ न दे कर मुसलमानोंका ही साथ दिया। जाटके सरदार सूरजमल्ल भी युद्धारम्भसे कुछ पहले मरहठोंका पक्ष छोड़ कर सुजाउद्दौलाके साथ मिल गया। दिल्लीका आधिपत्य पानेमें असमर्थ हो मरहठोंके साथ उनका स्वार्थसंघर्ष भी चला था। इन सब कारणोंसे मरहठोंको एकमात्र आत्मशक्ति पर निर्भर करके ही वैदेशिक शक्तिका मुकाबला करना पड़ा। स्वधर्मरक्षाके लिये एक लाख सत्तर हजार महाराष्ट्रवीर अपने प्राणको न्योछावर करने तैयार हुए। युद्धके पहले उनका उत्साह, विधर्मियोंके प्रति विद्वेष, हिन्दूधर्मरक्षाके लिये प्राणविसर्जनमें अनुराग और आग्रह, युद्धका शोचनीय परिणाम आदि विषय मल्हार राव होलकरके आदेशानुसार लिखित बखरमें बड़ी ही मर्मस्पर्शिनी भाषामें लिखे गये हैं। इस भयानक युद्धके विषयमें दोनों पक्षको भारी संशय था, इस कारण बीचमें सन्धिका प्रस्ताव भी उठा। किन्तु मुसलमान लोग उस सन्धिमें जो सब स्वत्व मांगने लगे, उसे महाराष्ट्रवीर देनेको बिलकुल तैयार न हुए। उस घोर आपत्कालमें महाराष्ट्र सेनापति यदि शत्रुपक्षकी कुछ भी शर्त्त मान कर उस समय लड़ाई बंद कर देते और पीछे मौका देख कर प्रथम मरहठायुद्धमें पराजित अंगरेजोंकी तरह 'सन्धिपत्र पर कलकत्ते (महाराष्ट्रीय पक्षमें पूना)-के कर्त्तृपक्षका हस्ताक्षर और सम्मति नहीं थी" आदि आपत्ति कर संधि तोड़ देते, तो भारतवर्षका इतिहास इतने थोड़े दिनोंके मध्य अन्य मूर्त्ति धारण करता या नहीं, संदेह है। किंतु पूर्वोक्त बखर-लेखकका कहना है, कि कुरुपाण्डवके लीलाक्षेत्रमें कृष्णसहाय धर्मराज (युधिष्ठिर)-के विजयभूमिमें पदार्पण करनेसे स्वधर्मानुरागी मरहठोंका मुसलमानोंके प्रति विद्वेष बहुत बढ़ गया था, इस कारण वे सन्धि-प्रस्ताव पर सहमत नहीं हुए। जो कुछ हो, युद्ध अनिवार्य हो उठा। १७६१ ई०के प्रारम्भमें पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्र वैभवकी पूर्णाहुति हुई। भारतमें हिन्दू-साम्राज्यस्थापनकी उच्चाकांक्षा कुछ दिनके लिये विलीन हो गई।

युद्धके बाद मुसलमानोंने जिन सब महाराष्ट्रवीरोंको कैद किया था, उनके सिर काट डाले। इतना ही नहीं, जिन्होंने उनका शरण लो था, उन पर भी उन्होंने दया न दरसाई। इस प्रकार हतभागोंका कटा हुआ सिर पर्वतके समान ढेर लग गया और निष्ठुर अफगानियोंके आनन्दका ठिकाना न रहा।

इस युद्धमें जय पा कर भी अबदालीको महती क्षति हुई थी। उत्तर भारतके मुसलमानोंको इस युद्धके पुरस्कार स्वरूप कुछ भी नहीं मिला। दिल्लीका गौरव पुनरुद्दीप्त होनेकी बात तो दूर रहे, बादशाहकी अवस्था दिनों दिन शोचनीय होती गई। पूर्वाञ्चलमें अङ्गरेज और दक्षिण भारतमें हैदर अली तथा पञ्जाबमें सिखजातिका अभ्युदय हुआ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस दुर्घटनासे मरहठोंकी जो क्षति हुई उसकी शुमार नहीं। उनके प्रधान प्रधान सेनापति और लाखसे ऊपर सैनिक इस संग्रामानलमें भस्मीभूत हुए। महाराष्ट्र देशके प्रायः सभी सरदारों और सम्भ्रान्त जागीरदारोंने पानीपतकी लड़ाईमें प्राण विसर्जन किये। बहुसंख्यक मरहठा परिवारका अस्तित्व बिलकुल लोप हो गया। महाराष्ट्रके एक भी परिवारने इस घटनामें आत्मीयवियोगसे अव्याहति न पाई। अतएव घर घर कुहराम मच गया। बालाजी बाजी रावके बड़े लड़के विश्वास राव और उनके चचेरे भाई भाऊ साहब भी युद्धमें मारे गये थे। अपनी विशाल दिग्विजयी सेनाकी ऐसी शोचनीय दशा सुन कर बालाजी रावका हृदय टूट गया। पुत्र विश्वासराव और भाऊसाहबके शोकसे तथा प्रजाकी हाहाकार ध्वनि सुन कर वे उन्मादग्रस्त हो थोड़े ही दिनोंके अन्दर पञ्चत्वको प्राप्त हुए। उनके जैसे दूरदर्शी नेताके अभावसे महाराष्ट्र समाजका मेरुदण्ड भग्नप्राय हो गया।

इस युद्धमें मरहठोंकी जो अपार धनसम्पत्ति, असंख्य वीर पुरुष और अपरिमेय युद्धसामग्री नष्ट हुई थी उसकी चिन्ता करनेसे भी हृदय अवसन्न हो जाता है। भारतवर्षकी किसी दूसरी जाति पर यदि इस प्रकार विपत्तिका पहाड़ टूट पड़ता, तो वह उसी समय धराशायी हो जाती, इसमें संदेह नहीं। किन्तु महाराष्ट्रसमाजके मूलमें जो भारतव्यापी हिन्दूसाम्राज्य स्थापन और स्वधर्मके प्रतापको अक्षुण्ण रखनेके लिये प्रविल बासनाबीज निहित था उसीने इस घोर विपद् कालमें भी उनकी प्राणरक्षाकी थी। पानीपतके भाग्यविपर्ययसे मरहठोंकी अग्रगति कुछ दिनके लिये रुक तो गई, पर जिन्होंने समझा था, कि इससे अधःपतन होगा, वे युद्धके पांच मास बाद ही असाधारण अध्यवसायसम्पन्न महाराष्ट्र-सेनाको दिल्लीके चारों ओर अपने आधिपत्य स्थापनमें पुनः प्रवृत्त देख बड़े विस्मित हुए।

बालाजी बाजीरावके मरने पर महाराष्ट्र समाजकी अधिनायकताको ले कर पूनामें गृहविवाद खड़ा हुआ। बालाजीके चचेरे भाई रघुनाथराव (दादासाहब) दूसरा विवाह आनन्दीबाईके साथ करके उसके वशीभूत हो रहे थे। स्त्रीके कहनेसे उन्होंने राज्यके आधे भाग पर दावा किया। इसीसे आपसमें झगड़ा खड़ा हुआ। इस समय बालाजीके लड़के माधव राव नवालिग थे। फिर भी उन्होंने चचेके हाथ आत्मसमर्पण करके घर-झगड़ेको शान्त किया। पर दुष्ट रघुनाथको इस पर भी संतोष नहीं हुआ। वह माधवरावको कैद कर निष्कण्टक राज्य करने लगा।

इधर पानीपतकी लड़ाईमें मरहठोंका शक्तिह्रास हुआ देख हैदराबादके निजाम अपना अधिकार फैला रहे थे। इस पर रघुनाथने उनके विरुद्ध लड़ाई ठान दी, पर स्वयं परास्त हुए; किन्तु पेशवाका हाथी युद्धक्षेत्रसे भागना नहीं जानता था, इस कारण रघुनाथकी लाख चेष्टा करने पर भी हाथी वहांसे न टला। फलतः दादासाहबको शत्रुके हाथ बन्दी होना पड़ा। युवक माधवराव बन्दीके वेशमें वहीं पर खड़े थे। वे चचाको दुर्दशा देख बड़े दुःखित हुए और अपने रक्षिवर्गके साथ समरक्षेत्रमें कूद पड़े। वृद्ध मलहार राव होलकरने इस समय निजाम पर आक्रमण न करके पूनाका सिंहासन अपनानेके लिये माधवरावसे कहा। माधव रावने उत्तर दिया, "चचाको शत्रुके हाथ झोंक कर किस मुखसे पूना लौटूंगा?" युवकके इस महत्त्वपूर्ण उत्तर पर वृद्ध मलहारराव लज्जित हो गये। माधव रावने अपने शौर्यबलसे निजामको परास्त कर चचा रघुनाथका उद्धार किया। इस घटनासे माधवके प्रति दादा साहबका बहुत स्नेह हो गया और प्रसन्न हो कर इन्हें राजसिंहासन दे दिया।

माधवराव तेजस्वी, क्रोधी और धार्मिक थे। वह किसी भीको अन्याय आचरण पर माफ नहीं करते थे। कहते हैं, कि एक दिन उनके मामाने किसी अनाथा युवतीके प्रति बुरी निगाह डाली। माधवको इसका पता लग गया, सो उन्होंने बेंतसे उसे खूब पिटवाया था। उनकी माताने अपने भाईकी ओरसे बहुत अनुनय विनय किया, पर माधवने एक भी न सुनी। क्योंकि वे राजधर्मसे विच्युत होना नहीं चाहते थे। उन्होंने 'बेगार' पकड़नेकी प्रथाको बिलकुल उठा दिया था। एक दिन उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतवर्षसे जो मुसलमान-शासनका प्रभाव जाता रहा और सर्वत्र हिन्दूओंकी तूती बोलने लगी उससे मुसलमान-समाजके अधिनायक बड़े उद्विग्न हो गये। जिन दिल्लीश्वरके प्रतापसे एक दिन सारा भारतवर्ष कांप उठा था, जिनके आदेशसे महाराष्ट्रपति शम्भाजी निहत और उनके पुत्र शाहु परिवार समेत बन्दी हुए थे, कालचक्रके अद्भुत परिवर्त्तनसे उन्हींके वंशधरोंको आज मरहठोंके हाथका खिलौना देख उनके परितापकी सीमा न रही। वे लोग महाराष्ट्रशक्तिकी सर्वग्रासिनी मूर्त्तिको देख कर बहुत डर गये। पीछे उन्होंने आत्म-रक्षाके लिये उनसे मेल करना ही अच्छा समझा। पर भीतर ही भीतर उनके विरुद्ध कार्रवाई भी करते रहे। अहमदशाह अबदालीके पास भारतवर्ष पर आक्रमण करनेके लिये उन्होंने चुपके निमंत्रण-पत्र भेजा। बादशाही स्थापनकी दुराकांक्षाने फिरसे उनके चित्तक्षेत्र पर अधिकार जमाया। थोड़े ही दिनोंके मध्य कुरुक्षेत्रके विस्तृत समरप्राङ्गणमें अहमदशाह, नजीब खां रोहिला, सुजाउद्दौला, कुतुबशाह, अहमद खां, दुन्दे खां आदि रोहिला, पठान और दुर्रानी-सरदारगण अपनी अपनी चतुरङ्गिणी सेनाके साथ युद्धार्थ उतर पड़े।

मरहठोंने भी विपुलवाहिनीके साथ उनका मुकाबला किया। दोनों तरफसे प्रायः ढाई लाख वीरपुरुष भारतके भाग्यका निर्णय करनेके लिये समरप्राङ्गणमें उपस्थित हुए थे। दुःखका विषय है, कि राजपूतानेके हिंदूराजे मरहठोंकी चलती पर जलते थे, इस कारण उन्होंने उनका साथ न दे कर मुसलमानोंका ही साथ दिया। जाटके सरदार सूरजमल्ल भी युद्धारम्भसे कुछ पहले मरहठोंका पक्ष छोड़ कर सुजाउद्दौलाके साथ मिल गया। दिल्लीका आधिपत्य पानेमें असमर्थ हो मरहठोंके साथ उनका स्वार्थसंघर्ष भी चला था। इन सब कारणोंसे मरहठोंको एकमात्र आत्मशक्ति पर निर्भर करके ही वैदेशिक शक्तिका मुकाबला करना पड़ा। स्वधर्मरक्षाके लिये एक लाख सत्तर हजार महाराष्ट्रवीर अपने प्राणको न्योछावर करने तैयार हुए। युद्धके पहले उनका उत्साह, विधर्मियोंके प्रति विद्वेष, हिन्दूधर्मरक्षाके लिये प्राणविसर्जनमें अनुराग और आग्रह, युद्धका शोचनीय परिणाम आदि विषय मल्हार राव होलकरके आदेशानुसार लिखित बखरमें बड़ी ही मर्मस्पर्शिनी भाषामें लिखे गये हैं। इस भयानक युद्धके विषयमें दोनों पक्षको भारी संशय था, इस कारण बीचमें सन्धिका प्रस्ताव भी उठा। किन्तु मुसलमान लोग उस सन्धिमें जो सब स्वत्त्व मांगने लगे, उसे महाराष्ट्रवीर देनेको बिलकुल तैयार न हुए। उस घोर आपत्कालमें महाराष्ट्र सेनापति यदि शत्रुपक्षकी कुछ भी शर्त्त मान कर उस समय लड़ाई बंद कर देते और पीछे मौका देख कर प्रथम मरहठायुद्धमें पराजित अंगरेजोंकी तरह 'सन्धिपत्र पर कलकत्ते (महाराष्ट्रीय पक्षमें पुना)-के कर्त्तृपक्षका हस्ताक्षर और सम्मति नहीं थी" आदि आपत्ति कर संधि तोड़ देते, तो भारतवर्षका इतिहास इतने थोड़े दिनोंके मध्य अन्य मूर्त्ति धारण करता या नहीं, संदेह है। किंतु पूर्वोक्त बखर-लेखकका कहना है, कि कुरुपाण्डवके लोलाक्षेत्रमें कृष्णसहाय धर्मराज (युधिष्ठिर)-के विजयभूमिमें पदार्पण करनेसे स्वधर्मानुरागी मरहठोंका मुसलमानोंके प्रति विद्वेष बहुत बढ़ गया था, इस कारण वे सन्धि-प्रस्ताव पर सहमत नहीं हुए। जो कुछ हो, युद्ध अनिवार्य हो उठा। १७६१ ई०के प्रारम्भमें पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्र वैभवकी पूर्णाहुति हुई। भारतमें हिन्दू-साम्राज्यस्थापनकी उच्चाकांक्षा कुछ दिनके लिये विलीन हो गई।

युद्धके बाद मुसलमानोंने जिन सब महाराष्ट्रवीरोंको कैद किया था, उनके सिर काट डाले। इतना ही नहीं, जिन्होंने उनका शरण लो था, उन पर भी उन्होंने दया न दरसाई। इस प्रकार हतभागोंका कटा हुआ सिर पर्वतके समान ढेर लग गया और निष्ठुर अफगानियोंके आनन्दका ठिकाना न रहा।

इस युद्धमें जय पा कर भी अबदालीको महती क्षति हुई थी। उत्तर भारतके मुसलमानोंको इस युद्धके पुरस्कार स्वरूप कुछ भी नहीं मिला। दिल्लीका गौरव पुनरुद्दीप्त होनेकी बात तो दूर रहे, बादशाहकी अवस्था दिनों दिन शोचनीय होती गई। पूर्वाञ्चलमें अङ्गरेज और दक्षिण भारतमें हैदर अली तथा पञ्जाबमें सिखजातिका अभ्युदय हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दुर्घटनासे मरहठोंकी जो क्षति हुई उसकी शुमार नहीं। उनके प्रधान प्रधान सेनापति और लाखसे ऊपर सैनिक इस संग्रामानलमें भस्मीभूत हुए। महाराष्ट्र देशके प्रायः सभी सरदारों और सम्भ्रान्त जागीरदारोंने पानीपतकी लड़ाईमें प्राण विसर्जन किये। बहुसंख्यक मरहठा परिवारका अस्तित्व बिलकुल लोप हो गया। महाराष्ट्रके एक भी परिवारने इस घटनामें आत्मीयवियोगसे अव्याहति न पाई। अतएव घर घर कुहराम मच गया। बालाजी बाजी रावके बड़े लड़के विश्वास राव और उनके चचेरे भाई भाऊ साहब भी युद्धमें मारे गये थे। अपनी विशाल दिग्विजयी सेनाकी ऐसी शोचनीय दशा सुन कर बालाजी रावका हृदय टूट गया। पुत्र विश्वासराव और भाऊसाहबके शोकसे तथा प्रजाकी हाहाकार ध्वनि सुन कर वे उन्मादग्रस्त हो थोड़े ही दिनोंके अन्दर पञ्चत्वको प्राप्त हुए। उनके जैसे दूरदर्शी नेताके अभावसे महाराष्ट्र समाजका मेरुदण्ड भग्नप्राय हो गया।

इस युद्धमें मरहठोंकी जो अपार धनसम्पत्ति, असंख्य वीर पुरुष और अपरिमेय युद्धसामग्री नष्ट हुई थी उसकी चिन्ता करनेसे भी हृदय अवसन्न हो जाता है। भारतवर्षकी किसी दूसरी जाति पर यदि इस प्रकार विपत्तिका पहाड़ टूट पड़ता, तो वह उसी समय धराशायी हो जाती, इसमें संदेह नहीं। किन्तु महाराष्ट्रसमाजके मूलमें जो भारतव्यापी हिन्दूसाम्राज्य स्थापन और स्वधर्मके प्रतापको अक्षुण्ण रखनेके लिये पवित्र वासनाबीज निहित था उसीने इस घोर विपद् कालमें भी उनकी प्राणरक्षाकी थी। पानीपतके भाग्यविपर्ययसे मरहठोंकी अग्रगति कुछ दिनके लिये रुक तो गई, पर जिन्होंने समझा था, कि इससे अधःपतन होगा, वे युद्धके पांच मास बाद ही असाधारण अध्यवसायसम्पन्न महाराष्ट्र-सेनाको दिल्लीके चारों ओर अपने आधिपत्य स्थापनमें पुनः प्रवृत्त देख बड़े विस्मित हुए।

बालाजी बाजीरावके मरने पर महाराष्ट्र समाजकी अधिनायकताको ले कर पूनामें गृहविवाद खड़ा हुआ। बालाजीके चचेरे भाई रघुनाथराव (दादासाहब) दूसरा विवाह आनन्दीबाईके साथ करके उसके वशीभूत हो रहे थे। स्त्रीके कहनेसे उन्होंने राज्यके आधे भाग पर दावा किया। इसीसे आपसमें झगड़ा खड़ा हुआ। इस समय बालाजीके लड़के माधव राव नवालिग थे। फिर भी उन्होंने चचेके हाथ आत्मसमर्पण करके घर-झगड़ेको शान्त किया। पर दुष्ट रघुनाथको इस पर भी संतोष नहीं हुआ। वह माधवरावको कैद कर निष्कण्टक राज्य करने लगा।

इधर पानीपतकी लड़ाईमें मरहठोंका शक्तिह्रास हुआ देख हैदराबादके निजाम अपना अधिकार फैला रहे थे। इस पर रघुनाथने उनके विरुद्ध लड़ाई ठान दी, पर स्वयं परास्त हुए; किन्तु पेशवाका हाथी युद्धक्षेत्रसे भागना नहीं जानता था, इस कारण रघुनाथकी लाख चेष्टा करने पर भी हाथी वहांसे न टला। फलतः दादासाहबको शत्रुके हाथ बन्दी होना पड़ा। युवक माधवराव बन्दीके वेशमें वहीं पर खड़े थे। वे चचाको दुर्दशा देख बड़े दुःखित हुए और अपने रक्षिवर्गके साथ समरक्षेत्रमें कूद पड़े। वृद्ध मलहार राव होलकरने इस समय निजाम पर आक्रमण न करके पूनाका सिंहासन अपनानेके लिये माधवरावसे कहा। माधव रावने उत्तर दिया, "चचाको शत्रुके हाथ झोंक कर किस मुखसे पूना लौटूंगा?" युवकके इस महत्त्वपूर्ण उत्तर पर वृद्ध मलहारराव लज्जित हो गये। माधव रावने अपने शौर्यबलसे निजामको परास्त कर चचा रघुनाथका उद्धार किया। इस घटनासे माधवके प्रति दादा साहबका बहुत स्नेह हो गया और प्रसन्न हो कर इन्हें राजसिंहासन दे दिया।

माधवराव तेजस्वी, क्रोधी और धार्मिक थे। वह किसी भीको अन्याय आचरण पर माफ नहीं करते थे। कहते हैं, कि एक दिन उनके मामाने किसी अनाथा युवतीके प्रति बुरी निगाह डाली। माधवको इसका पता लग गया, सो उन्होंने बेंतसे उसे खूब पिटवाया था। उनकी माताने अपने भाईकी ओरसे बहुत अनुनय विनय किया, पर माधवने एक भी न सुनी। क्योंकि वे राजधर्मसे विच्युत होना नहीं चाहते थे। उन्होंने 'बेगार' पकड़नेकी प्रथाको बिलकुल उठा दिया था। एक दिन उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रधान सेनापतिने उनके नियमका उल्लङ्घन कर बेगार पकड़वाया था, इस पर माधव इतने बिगडे, कि आखिर उसे माफी ही मांगनी पड़ी थी। प्रजाको सुखी करनेके लिये माधवरावने बहुतसे हितकर काम किये थे। सुप्रसिद्ध न्यायपरायण पण्डित रामशास्त्री विचारपतिके पद पर प्रतिष्ठित थे। मलहार राव होल्करके मरने पर उनकी पुत्रवधू प्रातःस्मरणीया अहल्याबाईको अधिकारच्युत करके अर्थलुब्ध दादा साहबने होलकर राज्यको खास करनेके लिये बहुत कोशिश की थी, पर न्यायपरायण माधव रावने इस काममें बाधा डाली जिससे रघुनाथकी चेष्टा पूरी न होने पाई।

इस समय हैदराबादके निजामके दीवान रुखमतउद्दौलाने अपनी इमारत बनानेके लिये एक ब्राह्मणकी जमीन जबरदस्ती ले ली थी। ब्राह्मणने निजामके पास इसकी नालिश की, पर कोई फल नहीं हुआ। बादमें वह ब्राह्मण पेशवाकी शरणमें पहुंचे। इस विषयका प्रतीकार करनेके लिये पेशवाने कई पत्र निजामके पास भेजे, पर निजामने उस ओर कान नहीं दिया। इस पर माधवरावने नवाबका होश ठंढा करनेके लिये अपनी सेना सजाई। मराठा फौजके राजधानीके समीप पहुंचने पर नवाबकी नींद टूटी। अब वे संधिके लिये प्रार्थना करने लगे। इस पर माधवने कहा, 'ब्राह्मणकी भूमि ब्राह्मणको लौटा देनेसे ही आपका कुशल है। इस अभियानके व्ययस्वरूप आप जो देंगे वही मैं ले लूंगा। किन्तु आपको कुरान छू कर वंशपरम्पराक्रमसे उस ब्राह्मणको उसकी भूमिका उपस्वत्व भोगनेकी सनद लिख देनी होगी।' नवाबके यह प्रस्ताव मान लेने पर महाराष्ट्र सेना पूना लौटी।

माधवरावके यत्नसे मरहठोंमें फिरसे नवजीवनका संचार हुआ था। पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्रोंका सर्वनाश हुआ है, समझ कर जिन्होंने सर उठानेकी कोशिश की थी उनका माधवरावने थोड़े ही दिनोंके अन्दर अच्छी तरह दमन किया। नागपुरके भोंसलोंने इस समय एक गृहविवाद खड़ा कर दिया था। किंतु माधवरावके नीतिकौशलसे पुनः मरहठोंमें मेल हो गया। दाक्षिणात्यमें दुर्द्धर्ष हैदर अली, निजाम अली, अर्काटके नवाब और कुटिलनीतिकुशल अङ्गरेज महाराष्ट्रशक्तिके सामने सिर झुकाते थे। मध्यभारत और राजपूतानेके राजे महाराष्ट्र-विक्रम पर स्तम्भित हो पुनः पेशवाको कर देने लगे। जाट लोगोंने भी अपनी हार स्वीकार की। केवल यही नहीं, १७७० ई०में दिल्लीका दरवाजा भी मराठोंके सिंहनादसे कांपने लगा। पानीपतमें पराजयके बाद मराठा इतने दिनोंके अन्दर चर्मण्वती (चाम्बेल) नदी पार कर सकेंगे, यह रोहिलोंने स्वप्नमें नहीं सोचा था। शौर्यशाली सिखोंके अफगान-दमनमें प्रवृत्त होनेसे रोहिलोंने दिल्ली, आगरा और गङ्गा यमुनाकी अंतर्वेदीमें अपना अधिकार जमाया था। उन लोगोंकी स्पर्द्धा इतनी दूर तक बढ़ गई थी, कि उन्होंने आखिर दिल्लीके शाह आलमको वृत्ति देना बंद कर दिया और बेगमोंके प्रति बुरी तरह पेश आये। इधर दिल्लीश्वर अंगरेजोंके साथ युद्धमें हार खा कर उनके आश्रयमें इलाहाबादमें रहनेको बाध्य हुए थे। मरहठोंने रोहिलोंका दमन करके मुगलवंशधर शाह आलमको उनके पैतृक सिंहासन पर बिठाया। १७७१ ई०की २५वीं दिसम्बरको मरहठोंकी सहायतासे दिल्लीमें बड़ी धूमधामसे उनका अभिषेक हुआ। दिल्लीवासी रोहिलोंके उद्धत व्यवहार पर बहुत मर्माहत हो गये थे। अब वे अपने प्रकृत बादशाहको सिंहासन पर अधिरूढ़ देख फूले न समाये। उत्तर-भारतमें मरहठोंकी क्षमता पूर्ववत् फैल गई।

इसके बाद मरहठा लोग मुसलमानोंके हाथसे अयोध्या, वाराणसी और प्रयागका उद्धार करनेका उद्योग कर रहे थे। इसी समय दाक्षिणात्यसे पेशवा माधवरावकी अस्वस्थताकी खबर आई। मरहठोंके दुर्भाग्यवशतः २८ वर्षकी उमरमें माधवराव यक्ष्मारोगसे आक्रान्त हुए। उनके प्रधान सेनापतियोंको उत्तर-भारतमें अपना प्रभुत्व फैलाते देख, दक्षिण-पथमें हैदर-अलीने उपद्रव मचा दिया था। इस कारण अपने सेनापतियोंको राजधानी लौट जानेके लिये माधवरावने हुकुम दिया। सेनापतियोंके दाक्षिणात्य पहुंचनेके पहले ही महाराष्ट्रपति माधवरावका जीवन-प्रदीप बुझ गया। उसके साथ साथ मरहठोंकी आशारूपी लता भी निर्मूल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो गई। एकच्छत्र हिन्दू-साम्राज्य स्थापनका सुयोग सदाके लिये जाता रहा। अङ्गरेजोंको अपनी क्षमता फैलानेका मौका मिला।

१७७२ ई०में माधवरावके छोटे भाई नारायणराव, जिनकी उमर १६ वर्षकी थी, राजसिंहासन पर बैठे। दादासाहब (रघुनाथराव) उनके नामसे राजकार्य चलाने लगे। आनन्दीबाईकी कुमंत्रणासे उनकी मति भ्रष्ट हो गई। उस पापीयसीकी प्ररोचनासे १७७३ ई०के भाद्रमासमें नारायणराव बड़ी बुरी तरह मार डाले गये। अब पूनामें फिरसे अन्तर्विप्लव खड़ा हो गया। सुचतुर अंगरेज लोग इसी मौकेमें पूर्वकृत संधिको तोड़ कर स्वार्थ-साधनमें लग गये। नारायणरावके सद्योजात औरस-पुत्रको गद्दीसे उतार कर दुराचार रघुनाथको सिंहासन पर प्रतिष्ठित करनेके लिये अंगरेज वद्धपरिकर हुए। नारायणरावके मारे जाने पर जब पूनामें गोलमाल खड़ा हुआ, उसी समय उन्होंने महाराष्ट्र राज्यके एक बन्दरको अन्यायपूर्वक अधिकार कर लिया था। मरहठे लोग आज तक उनके साथ सद्व्यवहार करते आ रहे थे। किंतु इस समय अङ्गरेजोंका राज्यलोभ ऐसा दुर्निवार हो उठा था, कि वे लोग अपना मतलब निकालनेके लिये पूना दरबारमें उत्कोचप्रदान, विद्रोहकी उत्तेजना, राजपुरुषोंके मध्य विद्वेष-सञ्चार आदि विविध उपायका अवलम्बन करने लगे। अतः मरहठोंके साथ उनका युद्ध अनिवार्य हो गया। छः वर्षके बाद यह युद्ध शेष हुआ। अङ्गरेजोंने ऐसा अन्याय युद्ध और कभी भी नहीं किया था। पृथ्वीकी कोई भी सुसभ्य जाति ऐसे अधर्म युद्धमें प्रवृत्त हुई होगी, ऐसा मालम नहीं होता।

इस समय पूनामें मरहठोंके मध्य एक भी नेता न रह गये। मन्त्रिमण्डलमें मतभेद हो गया था। सभी अपना अपना मतलब निकालनेमें तुले हुए थे। राजकोष खाली पड़ गया था और जातीय ऋणका परिमाण बढ़ जानेसे पूना दरबारकी अवस्था बड़ी शोचनीय हो गई थी। इस समय एक दूसरी विपदने आ घेरा;—भाऊसाहब जो पानीपतमें मारे गये थे उनकी लाश वहां पर नहीं मिली। इसलिये बहुतोंने समझा, कि वे आत्मरक्षाके लिये कहीं छिप रहे होंगे। यह अफवाह चारों ओर फैल गई। इसी समय बाजीगोविन्द नामक एक व्यक्ति अपनेको भाऊसाहब बतला कर राजसिंहासनका दावा करने लगा। कहनेकी आवश्यकता नहीं, अङ्गरेज लोग उसके पक्षमें मिल गये। किंतु थोड़े ही दिनोंके अन्दर वह धूर्त्त पकड़ा गया। पूनाके दरबारने उसके विचारके लिये पंचायत या कमीशन बैठाया। धूर्त्तकी पोल खुल गई और उसे प्राण-दण्ड मिला। इस घटनाके शेष होते न होते कोल्हापुर-पतिने पेशवाके राज्यमें उपद्रव आरम्भ कर दिया। जो कुछ हो, ऐसे दुःसमयमें भी महाराष्ट्र राजमन्त्री नानाफडनवीसके मन्त्रणाकौशलसे तथा मरहठोंके अध्यवसायगुणसे अंगरेजोंकी कई वार हार हुई। उन्होंने दो बार पेशवासे क्षमा मांगी। आखिर मरहठोंने उनसे दो वार मेल किया, इस पर भी अङ्गरेज कम्पनीकी अवाध्यता घटी नहीं। उन्होंने विलायत और कलकत्तेके कर्त्तृपक्षकी असम्मतिका उल्लेख करते हुए पुनः सन्धि तोड़ दी। अतएव दोनोंमें फिरसे युद्ध छिड़ गया। दुर्भाग्यवशतः होलकरने भी इस समय विद्रोही हो कर अङ्गरेजरक्षित रघुनाथका पक्ष लिया। महाराष्ट्रदेशका ऐसा दुर्भाग्य औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद और कभी भी नहीं हुआ था। आखिर अङ्गरेजोंने मरहठोंके हाथ युद्धमें नितान्त जर्जरित हो कर अपनी पराजय स्वीकार कर ली। उनका दर्प अच्छी तरह चूर्ण हुआ। रघुनाथ और आनन्दीबाई बन्दी भावमें कालयापन करने लगी।

अनन्तर नारायणरावके छोटे लड़के सवाई माधवराव (माधवराव नारायण)-को राजा बना कर नानाफड़नवीस सुचारुरूपसे राजकार्य चलाने लगे। निजाम और टीपू सुलतान मरहठोंकी प्रधानता स्वीकार करनेको बाध्य हुए। अब माधोजी शिन्दे उत्तर-भारतको गये। वहां उन्होंने गुलाम कादिरके पैशाचिक अत्याचारसे दिल्लीश्वर और उनकी पुरमहिलाओंको बचा कर उस प्रान्तके विद्रोही मुसलमानोंको बादशाहकी अधीनता स्वीकार करनेसे बाध्य किया। बादशाहने उन्हें (१७८९ ई०) 'आलिजा बहादुर'-की उपाधिके साथ अपने राज्यमें गो-हत्या नहीं करनेकी सनद दी। राजपूतानेमें भी मरहठोंका आधिपत्य निष्कण्टक हुआ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काशी, प्रयाग और अयोध्या-उद्धारकी चेष्टा इस समय भी एक बार हुई थी ; किन्तु कोई फल न निकला। जो कुछ हो, मरहठोंकी ऐसी वैभवोन्नति इससे पहले और कभी भी नहीं हुई थी। अभी साम्राज्यमें जैसी शान्ति विराजती थी, कि बाजीरावके भी समयमें वैसी न थी। यद्यपि पेशवा माधवरावकी उमर थोडी थी, तो भी महाराष्ट्रीय सरदारमण्डली उनकी फरमाबरदार थी। उत्तरमें शतद्रु से ले कर दक्षिणमें तुङ्गभद्रा तक विस्तृत महाराष्ट्र-समाजमें एक भी शत्रु नजर नहीं आता था। प्रातःस्मरणीया अहल्याबाईके सुशासनसे मालव, बेरार, नागपुर, गुजरात, महाराष्ट्र, कोङ्कण आदि प्रदेशोंकी प्रजा सुखी थी।

अधःपतन।

दुर्भाग्यवश ऐसी अवस्था सदाके लिये न रही। कालचक्रके परिवर्त्तनसे अनेक प्रतिकूल घटनाएं घटीं जिससे महाराष्ट्रोंके सौभाग्यसूर्य अस्ताचलके पथिक होने चले। १७६४ ई०से लगायत १८०० ई०के मध्य माधोजी शिन्दे आदि प्रधान प्रधान सेनापति और नानाफड़नवीस आदि राजनीतिज्ञ व्यक्तिगण एक एक कर परलोक सिधारे। पेशवा सवाई माधवरावका भी २१ वर्षकी अवस्था (१७९५ ई०)-में देहान्त हुआ। ऐसी लगातार दुर्घटनासे थोड़े ही दिनोंके मध्य राजकार्य-धुरन्धर व्यक्तियों और समर-कुशल सेनापतियोंके अभावसे महाराष्ट्र-समाज शक्तिहीन हो पड़ा। अनेक जगह 'अबला यत्र प्रबला बालो राजा निरक्षरो मन्त्री' हो गया। अतः सुकर्णधारके अभावसे महाराष्ट्रोंका राष्ट्रपोत कालसागरमें डूब गया।

इस समय तरुणावस्थामें बाजीराव महाराष्ट्र-सिंहासन पर बैठा। यह रघुनाथराव और आनन्दीबाईका पुत्र था। माता पिताके सभी गुण उसमें पाये जाते थे। फल यह हुआ, कि कपटाचार और दुर्वृत्तताने वारुणी और वाराङ्गणा राजसभामें प्रवेश किया। शौर्य, साधुता और स्वदेशप्रीति धीरे धीरे लुप्त होने लगी। सामरिक खर्चको घटा कर वह विलासव्यसनमें राजस्व-का अधिकांश उड़ाने लगा। छोटी छोटी बातोंके लिये उसने राजभक्त कर्मचारियोंकी हत्या करना, उन्हें कठिन कठिन दण्ड देना और प्रजाको लूटना आदि आरम्भ कर दिया। उसके जैसा लंपट कापुरुष महाराष्ट्र-समाजमें इसके पहले कोई भी नहीं हुआ था। अङ्गरेजोंकी कुटिल नीतिका मर्म समझनेकी उसमें बिलकुल शक्ति न थी। आगे चल कर उसने सेनापतियोंको जागीरको जब्त करनेके लिये अङ्गरेजोंसे सहायता मांगी। ऐसे व्यक्तिके हाथसे राज नष्ट होना असम्भव नहीं। यशोवन्तराव होलकरने एक बार अङ्गरेजोंको परास्त कर महाराष्ट्र-पराक्रमण दिखलाया था। उनके मरने पर होलकरराज्य बालककी क्रीड़ाभूमि हो गया। शिन्दे रात दिन आमोद-प्रमोदमें लिप्त रहता था। नागपुरमें भोंसलेगण आपस-में लड़ कर खून बहाने लगे। राष्ट्रीय अधःपतनका इतिहास पृथ्वी भरमें प्रायः एक-सा था।

जो नानाफड़नवीस बहुत दिन राज्यरक्षा करके सारे महाराष्ट्र-समाजके कृतज्ञताभाजन हो गये थे, उनको कैद करना ही बाजीरावका पहला काम था। इस कामके लिये वह शिन्देको दो करोड़ रुपया देनेको राज़ी हुआ। शिन्देने नानाको कैद कर बाजीरावके हाथ सौंपा। बादमें उसने जब पूर्व कथनानुसार दो करोड़ रुपया मांगा, तब पेशवाने उसे पूना लूट कर उतनी रकम इकट्ठी करनेका हुकुम दिया। तदनुसार शिन्देने नगरके प्रधान प्रधान व्यवसायियोंका खजाना लूट कर दो करोड़ रुपये जमा किये। इसके कुछ दिन बाद ही बाजीरावने जैसा मनमाना काम शुरू कर दिया, कि शिन्देको बाध्य हो कर नानाफड़नवीसको कारामुक्त करना पड़ा। किंतु नानाको अधिक दिन जीवित रह कर राजकार्यका संस्कार करनेका अवसर नहीं मिला।

महाराष्ट्र राज्यकी विशृङ्खलता देख कर शत्रुओंने मस्तक ऊंचा किया। निजामके दीवान मशरुनुलमुल्क खुर्दकी लड़ाईमें कैदी बन कर पूनामें रहता था। इस समय बाजीराव उसे छोड़ देने तथा युद्धमें जितने देश हाथ लगे थे उन्हें निजामको वापिस करनेमें बाध्य हुए। शिन्दे और होलकरके बीच इस समय अनबनी चल रही थी। बाजीराव दोनोंमें मेल तो क्या कराते उस आगको और भी सुलगानेकी प्राणपणसे कोशिश करने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगे। इस पर सरदार लोग बड़े विगोड़े। उन्हने बाजीरावसे दोनोंमें मेल करा देनेके लिये बार बार अनुरोध किया, पर कोई फल न निकला। उधर होलकरके भाईको बिना किसी कारणके हाथीके पैर तले फेंक कर मरवा डाला। यह संवाद सुन कर यशोवन्तरावने ससैन्य पूना पर धावा बोल दिया। पूनाके समीप जा कर उन्होंने बाजीरावको खबर दी, 'मैं श्रीमान्‌के चरणोंमें प्रतीकार प्रार्थना करने आया हूं, युद्ध करना मेरा बिलकुल उद्देश्य नहीं है।' मूर्ख बाजीरावने इस पर भी साम्यनीतिका अनुसरण न कर होलकरके विरुद्ध सेना भेज ही दी और आप सिंहगढ़में जा छिपे। अङ्गरेजोंसे सहायता मांगनेसे भी वे बाज नहीं आये। इधर यशोवन्तरावने युद्धमें पेशवासेनाको हरा कर पूना लूटा और दादा साहबके दत्तकपुत्र अमृतरावको सिंहासन पर बिठा कर स्वदेश लौटा।

बाजीरावने अङ्गरेजोंका आश्रय लिया। १८०२ ई०की ३१वीं दिसम्बरको अङ्गरेजोंके साथ उनकी जो सन्धि हुई उसमें शर्त इस प्रकार थी,—

(१) अङ्गरेजोंको बाजीरावकी रक्षाके लिये पूनामें दश हजार सेना हर वक्त मौजूद रहेगी। सेनाके खर्च-बर्चके लिये पेशवा वार्षिक २६ लाख रुपये आयका राज्यांश अङ्गरेजोंको देंगे। (२) अङ्गरेज यूरोपीय शत्रुओंको अपने राज्यमें आश्रय नहीं दे सकते। (३) भारतीय दूसरे दूसरे राजाओंके साथ कलह उपस्थित होने पर बिना अङ्गरेजोंकी सम्मतिके बाजीराव उनके साथ युद्ध वा संधि नहीं कर सकते।

इस प्रकार अङ्गरेजोंकी सहायतासे बाजीरावने पुनः पूनामें प्रवेश किया। अङ्गरेजोंने मराठा सरदारोंको सूचित किया, कि आप लोगोंके अधिनायक जिस संधिसूत्रमें हम लोगोंके निकट आवद्ध हैं, आप लोग भी आजसे उसी सन्धिसूत्रमें आवद्ध हुए। किंतु सरदारोंने इस प्रस्तावको मंजूर नहीं किया और कहा, 'हम लोगोंसे सलाह लिये बिना जब यह संधि की गई है तब हम लोग उसे क्यों मानने चले।' फलतः अङ्गरेजोंके साथ मराठोंका फिरसे युद्ध छिड़ गया। यही युद्ध इतिहासमें द्वितीय मराठायुद्ध कहलाता है।

इस प्रकार हठात् युद्ध आरम्भ होगा, सरदारोंने यह स्वप्नमें भी नहीं सोचा था। अंगरेज पहलेसे ही युद्धके लिये तैयार थे। कर्णल मालकम और ड्यूक आव वेलिंगटन आदि अङ्गरेज-सेनापतियोंने एक ही समय में और एक ही भावमें भिन्न भिन्न स्थानमें सरदारों पर आक्रमण करनेका संकल्प किया। इधर शिन्देके साथ विवादवशतः होलकरने पहले इस युद्धमें साथ नहीं दिया। गायकवाड़ने पहले ही सामन्तमण्डलके साथ स्वतन्त्र संधि कर ली थी। अतः शिन्दे और भोंसलेकी एकत्रित सेनाके साथ अङ्गरेजोंका युद्ध आरम्भ हुआ। बेरारमें आढ़गांव नामक एक स्थान है, वहीं वेलिङ्गटनने दोनों सेनाको परास्त किया। अब अङ्गरेज होलकरका मुकाबला करने चले। होलकरको भी कई युद्धोंमें अङ्गरेजोंके निकट अपनी हार माननी पड़ी। धीरे धीरे कई सरदारोंने ही अङ्गरेजोंका सार्वभौमत्व स्वीकार किया। यह घटना १८०५ ई०में घटी। विस्तृत विवरण शिन्दे और होलकर शब्दमें देखो।

उन्होंने हृदयसे सार्वभौमत्व स्वीकार नहीं किया। बाजीरावको भी अगरेजोंके प्रति प्रेम न था। वे शिन्दे, होल्कर और भोंसलेको अंगरेजोंके विरुद्ध युद्धघोषणा करनेके लिये छिप कर उत्साहित कर रहे थे। स्वयं भी युद्धको तय्यारी करने लगे। अंगरेजोंने मरहठोंके एकत्र होनेसे पहले ही प्रत्येक महाराष्ट्र-शक्ति पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया था। क्योंकि अंगरेजोंको बाजीरावके साजिशका पता लग चुका था। इस युद्धको तीसरा मरहठा-युद्ध कहते हैं। स्वयं बाजीरावने इस युद्धको आरम्भ किया। सन १८१७ ई०में उन्होंने किरकी (Kirki) स्थानमें अङ्गरेजोंकी छावनी पर आक्रमण किया। इसमें बाजीरावकी ही हार हुई। इसके बाद बाजीराव भाग गये। इनके भाग जाने पर भी उनके सेनापति बापू गोखलेने अङ्गरेजोंके साथ कई जगहोंमें युद्ध किया, किन्तु हारते ही गये। बेरारमें बाजीराव पकड़े गये। उन्होंने इच्छा-पूर्वक अपना राज्य अंगरेजोंके हाथ दे देना स्वीकार कर लिया। अंगरेजोंने उनको आठ लाख वार्षिक वृत्ति देना स्वीकार किया। सिताराके छत्रपति प्रतापसिंह बाजीरावके साथ ही थे। अंगरेज इनको १४ लाख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वार्षिक वृत्ति देते थे। इसीलिये पिण्डारियोंसे अंगरेजोंका युद्ध हुआ। इसका विशेष विवरण पिण्डारी शब्दमें पढ़िये। मरहठे सरदार पिण्डारियोंके पृष्ठपोषक थे।

सन् १६४६ ई०में महात्मा शिवाजीने जिस स्वराज्यकी भित्ति कायम की थी, उसे सन् १८१८ ई०में नराधम बाजीराव अंगरेजोंके हाथ सौंप कर परमार्थ साधनके लिये वार्षिक आठ लाख वृत्ति ले कर ब्रह्मावर्त्तको गये। उसका परमार्थ कहां तक सिद्ध हुआ, यह परमात्मा ही जाने।

फलतः परमार्थ साधन-सम्बन्धमें रामदास स्वामीके उपदेशको न मान कर ही मरहठे अवनतिके गड्ढेमें गिरने लगे। पवित्र महाराष्ट्र-धर्मके पालनसे विमुख होनेसे उनका अधःपतन आरम्भ हुआ। सदाचार, निस्पृहता, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि सात्त्विक नीति जो ज्ञानेश्वर और रामदास द्वारा प्रवर्त्तित महाराष्ट्रधर्मकी भित्तिस्वरूप थी वह मरहठोंके स्मृतिपथसे अन्तर्हित होने लगी। उनके द्वारा प्रवर्त्तित धर्म हिन्दू-साम्राज्य स्थापनका पक्षपाती हो कर भी परमार्थ मार्गका अन्तरायस्वरूप न था। इसी लिये गीतामें कहे हुए कर्मयोगकी तरह वह अतीव कष्टसाध्य था। कोई भी समाज अधिक दिनों तक कठोर धर्मके पालनमें समर्थ नहीं हुआ। फलतः मरहठे भी अधिक दिनों तक इस धर्मका पालन न कर सके। निष्काम कर्त्तव्यनिष्ठाके ह्राससे 'महाराष्ट्री धर्म' (महान् राष्ट्रके उपयोगी स्वत्त्वगुणप्रधान हिन्दूधर्म भी मरहठोंके पालनीय धर्म) यह गौरवपूर्ण पवित्र नाम भी परवर्त्ती इतिहाससे विलुप्त हुआ और कर्मकाण्डबाहुल्य राजस हिन्दू धर्मने उसका स्थान अधिकार किया। चित्तशुद्धिकी अपेक्षा सोपचार पूजार्चना बहुत कुछ पुण्यजनक समझी जाने लगी। ऐसी दशामें समाजमें ईर्ष्या, विद्वेष, कपटता और स्वार्थसाधनेच्छाकी बलवती होना कोई अस्वाभाविक नहीं। निष्काम धर्मकी जंजीर ढीली होनेसे यह सब बातें उसमें पैदा हो गई थीं। मल्हार राव होल्करकी अवैध स्वार्थपरताके कारण मरहठोंका भाग्यसूर्य अस्त हो गया। रोहेलोंका दमन करनेमें होलकर ही मरहठोंके प्रधान अन्तराय हुए थे। अङ्गरेजोंके साथ युद्ध करते समय उन्होंने स्वार्थानुरोधसे पापी रघुनाथ और अङ्गरेज कम्पनीका साहाय्य किया था। नागपुरके भोंसलेके दुर्व्यवहारसे भी महाराष्ट्र समाजकी कम क्षति नहीं हुई। नारायण रावकी हत्यामें आनन्दीरावकी अपेक्षा नागपुरके भोंसले किसी अंशमें कम न थे। इनकी स्वार्थपरता और क्रूरताकी वजहसे सारा महाराष्ट्रसमाज दुःखित और क्षतिग्रस्त हुआ था। बङ्गालमें उन्होंने ही महाराष्ट्र नामको कलङ्कित किया था। पहले महाराष्ट्र-युद्धमें ये रिश्वत ले स्वदेशके अनिष्टसाधनमें प्रवृत्त हुए थे। सेंधियाने बहुत दिनों तक विश्वस्तरूपसे कार्य किया। अन्तमें इन्होंने भी स्वार्थपरतामें पड़ कर स्वदेशका बहुत कुछ अनिष्ट किया था। स्वयं पेशवा भी सब जगह निष्काम कर्त्तव्यनिष्ठा दिखा न सके। फलतः सात्त्विक महाराष्ट्रधर्म उपेक्षित तथा महाराष्ट्रसमाज अन्तःसारशून्य हो रहा था। फिर भी, हिन्दूसाम्राज्य स्थापित कर हिन्दूधर्मको निष्कण्टक करनेकी पवित्र वासनासे वह बहुत दिनों तक समृद्ध अवस्थामें रहा। भारतकी और किसी जातिके हृदयमें उस महनीय वासनाका उदय नहीं हुआ। इसीसे उनकी उन्नति भी न हो सकी। इस तरहकी उच्चाशासे हृदय पूर्ण न होनेसे वह बारंबार हवाके झकोरेसे इस तरह दीर्घकाल तक अपने प्रतापको अक्षुण्ण नहीं रख सकते थे।

शासनपद्धति।

इस कौतूहलपूर्ण विषयका जाननेके लिये पाठक उत्सुक होंगे, कि मरहठोंका राजस्व निर्द्धारण करनेकी व्यवस्था, मालगुजारी वसूल करनेका नियमावली, नमक, मादकद्रव्य और अन्यान्य पदार्थोंका कर वसूल करनेके नियम कैसे थे; विदेशसे कर वसूल करनेके समय कौनसी नीति काममें लाई जाती थी; नौकरोंका वेतन चुकानेका तरीका, जातीय ऋण ग्रहण और उसका परिशोध करनेकी व्यवस्था, दावानी फौजदारी मामलोंका विचारपद्धति, सैन्य-संग्रह, दुर्ग-रक्षा करनेका प्रणाली, नौविभागका सैनिक निर्वाचन, पुलिसविभाग, डाक विभाग, टकसाल, कारागार, धर्मार्थ दान, वृत्तिनिर्द्धारण, चिकित्सा, विद्या और औषधि क्रियामें राजसाहाय्य,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगवधाजीव (सं० पु०) मृगवधः आजीव उपजीविका यस्य। मृगजीवी व्याध, बहेलिया।

मृगवन (सं० क्ली०) १ पश्वादिपरिवृत राजरक्षित उपवन-विशेष, राजाका वह वन जिसमें तरह तरहके जन्तु रहते हैं। २ श्वापदसङ्कुल वन्यप्रदेश, हिंसक जन्तुओंसे भरा हुआ जङ्गल।

मृगवनतीर्थ (सं० स्त्री०) नर्मदा नदीके तट पर अवस्थित एक तीर्थका नाम। यहां स्नान करनेसे सभी पाप नष्ट होते हैं।

मृगवल्लभ (सं० पु०) मृगाणां वल्लभः प्रियः। कुन्दुरु तृण।

मृगवादि (सं० पु०) मृगतृष्णाका जल।

मृगवाहन (सं० पु०) मृगो वाहनमस्येति। १ वायु। २ राजभेद। (सह्याद्रि० ३३।१२५)

मृगवीथि (सं० स्त्री०) ज्योतिषके अनुसार शुक्रकी नौ वीथियोंमेंसे एक। इसमें शुक्रग्रह अनुराधा, ज्येष्ठा और मूला पर आता है। फिर किसीके मतसे श्रवणा, शत-विषा और पूर्वभाद्रपद नक्षत्रमें मृगवीथि होती है।

मृगवैदिक (सं० क्ली०) आसनविशेष।

मृगव्य (सं० क्ली०) मृगान् विध्यति अत्र इति व्यध (अन्येष्वपि दृश्यते। पा ३।२।४८) इति काशिकोक्त्या अधिकरणे ड। मृगया, शिकार।

मृगव्याध (सं० पु०) १ मृगान्वेषी व्याध। २ नक्षत्र-भेद (Sirius) ३ शिव। ४ ग्यारह रुद्रमेंसे एक।

मृगशायिका (सं० स्त्री०) मृगकी शायित अवस्था, हरिणकी वह अवस्था जब वह लेटा रहता है।

मृगशाव (सं० पु०) मृगशिशु, हरिणका बच्चा।

मृगशिर (सं० क्ली०) मृगशिरा नक्षत्र।

मृगशिरस् (सं० पु० क्ली०) मृगस्येव शिरोऽस्य। सत्ता-ईस नक्षत्रोंके अन्तर्गत पाँचवां नक्षत्र। पर्याय—मृग-शीर्ष, आग्रहायणी। (अमर) इस नक्षत्रके अधिपति चन्द्रमा हैं। यह तिर्यङ्मुख नक्षत्र है। इस नक्षत्रमें जन्म लेनेसे जातकका देवगण होता है। यह नक्षत्र सर्पजाति-का है। इसका आकार बिल्लीके पैरके जैसा है और यह तीन ताराओंसे मिल कर बना है। कन्यालग्नका बीस पल बीतनेसे आकाशमें इस नक्षत्रका उदय होता है।

"मूषिकाशनपदाकृतौ विधौ व्योममध्यमिलिते वितारके।
शारदेन्दुमुखि! कन्यकोदयादीक्षणानलकलाः कलावति॥"

मृगशिरा नक्षत्रके पूर्वार्द्धमें अर्थात् ३० दण्डके बीच वृषराशि तथा अपरार्द्धमें मिथुनराशि होती है। इस नक्षत्रमें उत्पन्न मनुष्य मृगचक्षु, सुन्दर कपोलवाला, अत्यन्त बलवान्, राजप्रिय, साहसी, अतिशय कामुक, स्थिरप्रकृतिका, अल्पधर्मविशिष्ट, मित्र-पुत्रसे युक्त और थोड़ा धनवान् होता है। (कोष्ठीप्र०)

बृहज्जातकके मतसे वह चपल, चतुर, भीरु स्वभाव-का, कार्यपटु, उत्साही, धनी और भोगी होता है। मृग-शिरा नक्षत्रमें जन्म होनेसे अष्टोत्तरी दशाके मतानुसार रविकी दशा होती है। इस नक्षत्रका दशाभोग काल २ वर्ष है तथा प्रति पादमें ६ मास, प्रति दण्डमें १२ दिन और प्रति पलमें १२ दण्ड करके भोग होता है। यह साधारण नियम है। इस नियममें नक्षत्रमान ६० दण्ड-का माना गया है। जहां नक्षत्रमान ६० दण्डसे कम बेशी होता है, वहां २ वर्षको नक्षत्रमानसे भाग देने पर जो भोगफल होगा वही एक एक दण्डका भोगकाल है। विंशोत्तरी मतसे इस नक्षत्रमें जन्म होनेसे मङ्गलकी दशा होती है।

मृगशिरा (सं० स्त्री०) सर्वे सान्ता अकारान्ताश्चेति मृग-शिरोऽदन्त, मृगशिर-टाप्। मृगशिरानक्षत्र।

मृगशीर्ष (सं० पु० क्ली०) मृगस्य शीर्षमिव शीर्षमस्य। मृगशिरा नक्षत्र।

मृगशीर्षक (सं० त्रि०) मृगशीर्ष स्वार्थे कन्। मृगशीर्ष।

मृगशीर्षन् (सं० पु०) शीर्षस्य शीर्षन् इत्यादेशः ततो मृगस्येव शीर्षास्य। मृगशिरा नक्षत्र।

मृगशृङ्ग (सं० क्ली०) मृगस्य शृङ्गं। हरिणका सींग। इसकी भस्म हृद्रोगमें बहुत उपकारी है।

मृगशृङ्गवती (सं० पु०) उपासक सम्प्रदायभेद।

मृगश्रेष्ठ (सं० क्ली०) व्याघ्र, बाघ।

मृगशृङ्ग (सं० क्ली०) मृगकी हड्डी।

मृगसत्र (सं० क्ली०) उन्नीस दिनका एक सत्र।

मृगहन् (सं० स्त्री०) मृगं हन्ति हन-क्विप्। व्याध, बहे-लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृगा (सं० स्त्री०) मृगमांसतुल्यः रसोऽस्ति अस्याः मृग-अर्श-आदिभ्योऽच । सहदेवी लता ।

मृगाक्षी (सं० स्त्री०) मृगस्येव अक्षि तद्वत्पुष्पं वा अक्षिणी नयने अस्याः, अक्षि (अक्ष्नोऽन्यतरस्यां । पा ५।४। ७६) इति अच् स्त्रियां ङीष् । १ विशाला । मृगलोचन-तुल्यनेत्रयुक्ता, हरिणकेसे नेत्रोंवाली ।

मृगाखर (सं० पु०) वन्यपशुका गर्त्त, जंगली जन्तुके रहनेका मान ।

मृगाङ्क (सं० पु०) मृगः अङ्को यस्य । १ चन्द्रमा ।

"विनिद्रपद्मालिगतालिकैतवान् ।
मृगाङ्कचूडामणिवर्जनार्जितम् ॥" (नैषध १।७८)

चन्द्रमामें मृगचिह्न है, इस कारण उनका मृगाङ्क नाम पड़ा । चन्द्रमा पर पृथिवीकी छाया पड़ती है, उसी छायाको बहुत दूर रहनेके कारण लोग चन्द्रकलङ्क कहते हैं । यथार्थमें वह कलङ्क नहीं है, पृथ्वीकी छायामात्र है ।

"लोकच्छायामयं लक्ष्म तवाङ्के शशसंस्थिम् ।
न विदुः सोमदेवापि ये च नक्षत्रयोनयः ॥" (हरिवंश)

'यथा दर्पणं प्राप्य परावृत्ता नयनरश्मयः ग्रीवास्थमेव मुखं दर्पणगतमिव पश्यन्ति एवं चन्द्रमण्डलं प्राप्य परावृत्तास्ते दूरत्वदोषात् पृथिवीमव्यक्तरूपामिव चन्द्रमण्डलगतां पश्यन्ति स एव चन्द्रे कलङ्क इत्युपचर्यते' (टीका) २ कर्पूर, कपूर । ३ वायु, हवा ।

मृगाङ्कगुप्त—नवसाहसाङ्कचरितके प्रणेता पद्मगुप्तके पिता ।

मृगाङ्कज (सं० पु०) मृगाङ्क जन-ड । १ कस्तूरी । २ चन्द्रज, बुध ।

मृगाङ्कदत्त (सं० पु०) अयोध्याराज अमरदत्तके पुत्र तथा अष्टाङ्गहृदयटीकाके प्रणेता अरुणदत्तके पिता ।

मृगाङ्करस (सं० पु०) औषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—पारा एक भाग, सोना एक भाग, मुक्ता दो भाग, गन्धक दो भाग और सोहागा एक भाग, इन्हें कांजीमें पीस कर लवणके भाण्डमें भर चार पहर तक पाक करे । इसकी मात्रा ४ रत्ती है । यह औषध मिर्च, पीपल और मधुके साथ चाटनेसे राजयक्ष्मरोग नष्ट होता है । यह औषध खानेके बाद अविदाही घृत, पक्व व्यञ्जन और लघुमांस पथ्य है । इसके अलावा महामृगाङ्क और राजमृगाङ्करस भी बतलाया गया है । इस महामृगाङ्करसकी प्रस्तुत प्रणाली—सोनेकी भस्म १ भाग, पारेकी भस्म २ भाग, मुक्ताकी भस्म ३ भाग, गन्धक ४ भाग, सोनामक्खी ५ भाग, मूंगा ६ भाग और सोहागेका लावा १ भाग, इन्हें एकत्र कर टावा नीवूके रसमें तीन दिन मल कर गोलाकार बनावे । पीछे उसे कड़ी धूपमें सुखा कर मूषाके मध्य लवणयन्त्रमें ४ पहर पाक करे । जब ठंढा हो जाय, तब औषधको निकाल कर उसके साथ हीरा एक भाग, (अभावमें वैक्रान्त) मिलावे । इसकी मात्रा २ रत्ती और अनुपान मिर्च वा पीपल चूर्णके साथ घृत है । इस औषधके सेवनकालमें घृतादि बलकर द्रव्य खाना तथा क्षयरोगोक्त विधिके अनुसार चलना आवश्यक है । इसका सेवन करनेसे यक्ष्मा, स्वरभेद और कासादि नाना प्रकारका रोग शान्त होता है ।

राजमृगाङ्करस—पारा ४ तोला, सोना १ तोला, तांबा १ तोला, मैनसिल २ तोला, हरताल २ तोला, गंधक २ तोला, इन्हें एक साथ पीस कर बड़ी बड़ी कौड़ीमें भरे । पीछे बकरीके दूधमें सोहागा पीस कर उससे सभी कौड़ियोंका मुंह बन्द कर दे तथा मट्टीके भांड़में रख कर ऊपरसे अच्छी तरह लेप चढ़ा दे । पीछे लेप सूख जाने पर गजपूटमें पाक करे और ठंढा हो जाने पर औषध चूर्णको बाहर निकाल ले । इसकी मात्रा २ रत्ती और अनुपान घृत, मधु वा १० पीपल अथवा १६ मिर्च है । इसका सेवन करनेसे सभी प्रकारका क्षय दूर होता है । (भैषज्यरत्ना० राजयक्ष्मरोगाधि०)

मृगाङ्कलेखा (सं० स्त्री०) विद्याधर-राजकन्याभेद ।

मृगाङ्कवती (सं० स्त्री०) उज्जयिनीके राजा धर्मध्वजकी स्त्रीका नाम । २ विद्याधरराज मृगाङ्कसेनकी स्त्रीका नाम ।

मृगाङ्कक (सं० पु०) मृगाङ्क, चन्द्रमा ।

मृगाङ्गजा (सं० स्त्री०) १ मृगनाभि, कस्तूरी । २ वारुणीलता ।

मृगाङ्गना (सं० स्त्री०) मृगाणामङ्गना । हरिणी, हिरनी ।

मृगाजीव (सं० स्त्री०) १ मृगनाभि, कस्तूरी । २ वारुणी लता । ३ व्याध ।

मृगाटवी (सं० स्त्री०) मृगकानन, मृगवन ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगाण्डजा (सं० स्त्री०) मृगाण्डात् जायते इति जन-ड कस्तूरी।

मृगाद् (सं० स्त्री०) मृगान् अत्तीति अद् क्विप्। १ सिंह २ तरक्षु, चीता। ३ व्याघ्र, बाघ।

मृगादन (सं० पु०) अत्तीति अद-ल्युु, मृगस्य अदनः छोटा बाघ, चीता।

मृगादनी (सं० स्त्री०) मृगैरद्यते भुज्यतेऽसौ इति अद-कर्मणि ल्युट्, स्त्रियां ङीष्। १ इन्द्रवारुणी, इन्द्रयान। २ सहदेवी, सहदेई। ३ मृगेर्वारु, सफेद इन्द्रायन। ४ कर्कटी ककड़ी।

मृगाधिप (सं० पु०) मृगाणामधिपः। सिंह, शेर।

मृगाधिपत्य (सं० क्ली०) वनजन्तु पर प्रभुत्व।

मृगाधिराज (सं० पु०) मृगाणामधिराजः। सिंह, शेर।

मृगान्तक (सं० पु०) मृगाणामन्तकः नाशकः। चित्र-व्याघ्र, चीता।

मृगार (सं० पु०) १ अथर्वेदके ४।२३—२६ सूक्तके मन्त्रद्रष्टा ऋषि। २ प्रसेनजित् राजाके मन्त्री।

मृगारसूक्त (सं० क्ली०) मृगार ऋषि-द्रष्ट सूक्त।

मृगारि (सं० पु०) मृगाणामरातिः। १ कुक्कुर, कुत्ता। २ मृगशत्रु।

"मार्गं मार्गं मृगयति मृगारातिरामे विरामे।
शोकं शोकं गतवतिगते लक्ष्मणे लक्ष्मणेन॥"

(महानाटकं)

मृगारि (सं० पु०) मृगाणामरिः। १ सिंह। २ व्याघ्र, बाघ। ३ रक्तशिग्रु वृक्ष, लाल सहिंजनका पेड़। (राजनि०) ४ कुक्कुर, कुत्ता।

मृगारेष्टि (सं० क्ली०) तैत्तिरीयसंहिता ४।७।१५ तथा अथर्वेदके ४।२३—२८ सूक्तका नामान्तर।

मृगावती (सं० स्त्री०) १ यमुनातीरवर्त्ती दाक्षायणी नगरी। २ पुराण, इतिहास और आख्यायिकादि-कथित बहुतसी राजकन्याएँ।

मृगाविध (सं० पु०) मृगान् विध्यति इति व्यध-क्विप् (अन्येषामपि दृश्यते। पा ६।४।१३७) इति दीर्घश्च। १ व्याध। २ मृगावेधनशील वह जो मृग मारता हो।

मृगाश (सं० पु०) सिंह।

मृगाशन (सं० पु०) मृगाश देखो।

मृगास्य (सं० त्रि०) १ मृगतुल्य मुख, हरिण जैसा मुख-वाला। १ मकरक्रान्ति।

मृगित (सं० त्रि०) मृग-क्त। अन्वेषित।

मृगी (सं० स्त्री०) मृग-जातौ ङीष्। १ मृगजाति, मादा हरिण, हिरनी। २ कश्यप ऋषिकी क्रोधवशा नाम्नी पत्नीसे उत्पन्न दश कन्याओंमेंसे एक। यह पुलह ऋषिकी पत्नी थी और इसीसे मृगोंकी उत्पत्ति हुई है।

"क्रोधान्च जज्ञिरे कन्या द्वादशैवात्मसम्भवाः।
ता भार्या पुलहस्य स्युर्मृगी मन्दा इरावती॥
भूता च कपिला दंष्ट्रा कषा तिष्या तथैव च।
श्वेता च सरमा चैव सरसा चेति विश्रुताः॥
मृग्यास्तु हरिणाः पुत्रा मृगाश्चान्ये शशास्तथा।
न्यङ्कवः शरभा ये च पुरवः पृषताश्च ये॥"

३ तीन अक्षरका एक छन्द। ४ अपस्मार नामक रोग। ५ कस्तूरिका, कस्तूरी। ६ पीले रंगकी एक प्रकारकी कौड़ी जिसका पेट सफेद होता है।

मृगीकुण्ड (सं० क्ली०) एक तीर्थका नाम।

मृगीत्व (सं० क्ली०) मृगीका भाव या धर्म।

मृगीदृश् (सं० स्त्री०) मृगीव दृक् यस्याः। हरिण-नयना स्त्री, वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण-सी हों, मृग नयनी।

मृगीपति (सं० पु०) १ श्रीकृष्ण। २ नर-मृग।

मृगीलोचना (सं० स्त्री०) मृग्याइव लोचने यस्याः। हरिण-नयना स्त्री, मृगनयनी।

मृगू (सं० स्त्री०) राममार्गवेयकी माता।

मृगेक्षण (सं० क्ली०) मृगस्य ईक्षणं। १ मृगका दर्शन। २ मृगचक्षु, मृगकी-सी आंख। (त्रि०) ३ मृग जैसी आंखवाला।

मृगेक्षणा (सं० स्त्री०) मृगैरीक्ष्यते प्रियत्वात् इति ईक्ष-ल्युट् स्त्रियां टाप्। १ मृगैर्वारु, सफेद इन्द्रायण। (राजनि०) २ मृगनयना स्त्री।

मृगेन्द्र (सं० पु०) मृगाणामिन्द्रः श्रेष्ठः। १ सिंह, पशु-राज।

"मृगाणाञ्च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्।"

(गीता १०।३०)

२ छन्दोविशेष।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगेन्द्रचटक (सं० पु०) मृगेन्द्र इव विक्रमी चटकः। श्येन-पक्षी, बाज चिड़िया।

मृगेन्द्रता (सं० स्त्री०) मृगेन्द्रस्य भावः तल् टाप्। मृगेंद्र-का भाव या धर्म, सिंहत्व।

मृगेन्द्रमुख (सं० क्ली०) छन्दोभेद। इस छन्दके प्रति चरणमें तेरह अक्षर रहते हैं जिनमेंसे १, २, ३, ४, ६, ९ और ११ अक्षर लघु और शेष गुरु होते हैं।

मृगेन्द्राणी (सं० स्त्री०) १ वकवृक्ष। २ सिंहनी।

मृगेन्द्राशी (सं० स्त्री०) मृगेन्द्रेण अश्यते इति अश् घञ्, गौरादित्वात् ङीष्। वासक, अड़ूस। (राजनि०)

मृगेन्द्रासन (सं० क्ली०) सिंहासन।

मृगेन्द्रास्य (सं० त्रि०) १ सिंहमुख। (पु०) २ शिव।

मृगोल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली। यह युक्तप्रांत, बंगाल, पंजाब तथा दक्षिणकी नदियोंमें पाई जाती है। इसकी आखें सुनहरी होती हैं। यह डेढ़ हाथ-के लगभग लंबी और तौलमें नौ या दस सेर होती है।

मृगेश (सं० पु०) सिंह।

मृगेष्ट (सं० पु०) मुद्गरपुष्पवृक्ष, गन्धराज फूलका पेड़।

मृगैर्वारु (सं० स्त्री०) मृगस्य प्रिया इव वारुः। श्वेत इन्द्रवारुणी, सफेद इन्द्रायन। पर्याय—मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफली, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा, चित्र चित्रफला, पथ्या, विचित्रा मृगचिर्भिटा, कुम्भिनी, देवा, कटुफला, लघुचिर्भिटा। गुण—दुर्जर, गुरु, मन्दानल-कारक और रक्तपित्तहारक। (राजनि०)

मृगेश्वर (सं० पु०) मृगाणामीश्वरः। मृगेन्द्र, सिंह।

मृगेष्ट (सं० पु०) मृगाणामिष्टः। मुद्गर पुष्पवृक्ष, गंधराज फूलका पेड़।

मृगोत्तम (सं० पु०) मृगश्रेष्ठ, सिंह। २ मृगशिरानक्षत्र।

मृगोत्तमाङ्ग (सं० क्ली०) मृगशिरानक्षत्र।

मृग्य (सं० त्रि०) मृग्यते अन्विष्यतेऽसौ मृग-कर्मणि यत्। अन्वेषणीय, खोजने लायक।

मृच्चय (सं० पु०) १ मरणशील, क्षणस्थायी।

मृच्चय (सं० पु०) मृत्तिकाराशि, मिट्टीकी ढेर।

मृच्छकटिक (सं० क्ली०) राजा शूद्रकका बनाया हुआ एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक। शूद्रक देखो।

मृच्छिलामय (सं० त्रि०) मृच्छिला-विकारे मयट्। मृत्तिका वा शिलाविकार।

मृज (सं० पु०) मृज्यतेऽसौ इति मृज कृत्य ल्यूटोबहुल मिति कर्मणि क। वाद्यविशेष, मुरज नामका बाजा।

मृजा (सं० स्त्री०) मृज्यते इति मृज् (भिदादिभ्योऽङ्। पा ३।३।१०४) इति अङ्, टाप् च। मार्जन।

मृजानगर (सं० क्ली०) नगरभेद।

मृजापुर—युक्तप्रदेशके अन्तर्गत एक जिला और नगर। (भ० ब्रह्मखण्ड० ४७।१७२-७४) मीर्जापुर देखो।

मृजावत् (सं० त्रि०) मृजा-मतुप् मस्य व। पवित्रा-न्वित।

मृजाहुसेन अली—त्रिपुराबासी एक मुसलमान जमींदार। इष्ट इण्डिया कम्पनीके दशसाला बन्दोबस्तके कागजमें इसका नाम पाया जाता है। अतएव वह उससे एक सदी पहले विद्यमान था। त्रिपुराके अन्तर्गत बरदाखातमें इसकी जमींदारी थी। कवित्वशक्तिके लिये यह बहुत कुछ प्रसिद्ध था। सैयद जाफर खाँ नामक एक सुकवि इसीके समयमें विद्यमान थे। कहते हैं, हुसेन अली कालीपूजा बड़ी धूमधामसे करता था।

मृज्य (सं० त्रि०) मृज्यते यत् इति मृज् (मृजेर्विभाषा। पा ३।१।११३) इति क्यप्। मार्ज्य, मार्जन करने योग्य।

मृड़ (सं० पु०) मृड़ति हृष्यतीति मृड़ इगुपधत्वात् कर्त्तरि क। १ शिव, महादेव।

मृड़ङ्कण (सं० पु०) मृड्नति सुखयतीति मृड़ (मृड़ः कीकन् कंकणौ। उण् ४।२४) इति कङ्कण। बालक।

मृड़न (सं० क्ली०) सुखीकरण, आनन्दित करना।

मृड़य (सं० त्रि०) सदय, दयालु।

मृड़ा (सं० स्त्री०) मृड़-टाप्, ङीप् च। दुर्गा।

मृड़ाकु (सं० पु०) एक ऋषि।

मृड़ानी (सं० स्त्री०) दुर्गाका एक नाम।

मृड़ीक (सं० पु०) मृड़तीति मृड़ (मृड़ः कीकन् कङ्कौ। उण् ४।२४) इति कीकन्। हरिण, हिरन।

मृणाल (सं० पु० क्ली०) मृण्यते हिंस्यते भक्षणाद्यर्थं यत् मृण् (तिमिविशिविड़ि मृणिकुलिकपिपलिपञ्चिभ्यः कालन्। उण् १।११७) इति कालन्। पङ्कजादिका नाल, कमलका डंठल जिसमें फूल लगा रहता है। संस्कृत पर्याय—पद्मनाल,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, बिसिनी नलिनीरुह। गुण—शीतल, तिक्त, कषाय, पित्तदाह, मूत्रकृच्छ्र, विकार और रक्तवमननाशक। (राजनि०) २ उशीर खस। ३ वीरण मूल, खसकी जड़। ४ कमलकी जड़, मुरार।

मृणालक (सं० पु०) मृणाल-स्वार्थे कन्। मृणाल, कमलनाल।

मृणालकण्ठ (सं० पु०) जलचर पक्षिविशेष।

मृणालमूल (सं० क्ली०) पद्मकन्द।

मृणालवत् (सं० त्रि०) मृणाल-मतुप् मस्य व। मृणाल-विशिष्ट, जिसमें कमलनाल लगा हो।

मृणालाद्यतैल (सं० क्ली०) वातरक्ताधिकारमें तैलौषध-विशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, चूर्णके लिये पद्मनाल, नीलोत्पल, शालूक, अनन्तमूल, सुगंधबला, नागकेशर, रक्तचन्दन, श्वेतचन्दन, चिरायता, पद्मबीज, केशर, पढ़ार, कट्की, अनन्तमूल, प्रियंगु, पित्तपापड़ और अडूस कुल मिला कर १ सेर; गन्धतृण मूलका रस ४ सेर, दूध २ सेर। पीछे यथाविधान तेलपाक करना होगा। इस तेलका वस्तिक्रिया, नस्य, अभ्यङ्ग और पीनेमें प्रयोग करनेसे पित्तजन्यरोग नष्ट होता है।

(भावप्र० वातरक्ताधिकार)

मृणालिन (सं० पु०) मृणालमस्तीतित्यर्थे इनि। पद्म, कमल।

मृणालिनी (सं० स्त्री०) मृणालानि अस्याः सन्तीति मृणाल-(पुष्करादिभ्यो देशे। पा ५।२।१३५) इति इनि, ङीष् च। १ पद्मिनी, कमलिनी। २ पद्मयुक्तदेश, वह स्थान जहं कमल हों। ३ पद्मसमूह। ४ पद्मलता।

मृणाली (सं० स्त्री०) मृणाल-गौरादित्वात् ङीष्। मृणाल, कमलका डंठल।

मृत (सं० क्ली०) मृ-क्त। १ मृत्यु, मरण। २ याचित वस्तु, मांगी हुई वस्तु। (त्रि०) ३ याचित, मांगा हुआ। ४ गतप्राण, मरा हुआ। पर्याय—परासु, प्राप्त-पञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, प्रमीत। कलियुगमें मृत व्यक्ति ही धन्य है।

"धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रवसितं सत्यञ्च दूरे गतं।
पृथ्वी मन्दफला जनाः कपटिनो लौल्ये स्थिता ब्राह्मणाः॥
मर्त्या स्त्रीवशगाः स्त्रियश्च चपला नीचा जना उन्नता।
हा कष्टं खलु जीवितं कलियुगे धन्या नरा ये मृताः॥"

(गरुड़पु० ११५ अ०)

मृतक (सं० क्ली०) मत-स्वार्थे कन्। १ शव, मुर्दा। २ मरणाशौच।

"यदि स्यात् सूतके सूतिर्मृतं के च मृतिस्तथा।
शेषेणैव भवेच्छुद्धिरहःशेषेद्विरात्रकम्॥" (शुद्धितत्त्व)

मृतककर्म (सं० पु०) वह कृत्य जो मृतक पुरुषकी शुद्धि-गतिके लिये किया जाता है, प्रेतकर्म।

मृतकधूम (सं० पु०) भस्म, राख।

मृतकल्प (सं० त्रि०) मृत (ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः। पा ५।३।६७) इति कल्पप्। मृतप्राय, रोग, शोक, दारिद्र आदि कष्टसे मृतके समान जीवनधारणकारी।

मृतकान्तक (सं० पु०) मृतकस्य अन्तकः भक्षकत्वात्। शृगाल, गीदड़।

मृतगृह (सं० क्ली०) १ मुमूर्षु गङ्गायात्रीके रहनेके लिये गृह (Moribund house)। २ समाधिस्थान, कब्र।

मृतजीव (सं० पु०) मृतश्चासौ जीवश्चेति नीललोहितादिवदुविशेषणसमासः। १ तिलकवृक्ष। २ मरा हुआ प्राणी।

मृतजीवनी (सं० स्त्री०) १ दुग्धिका, दुधिया घास। २ वह विद्या जिससे मुर्दको जिलाया जाता है।

मृतजीविन् (सं० पु०) दुग्धिका, दुधिया घास।

मृतण्ड (सं० पु०) मृतः अण्डः कारणत्वेन यस्य शकन्ध्वादित्वात् पररूपं। सूर्यपिता।

मृतधर्मा (सं० त्रि०) नष्ट हो जानेवाला, नश्वर।

मृतप (सं० पु०) मृतरक्षक, शवदेहकी रक्षा करनेवाला।

मृतपा (सं० पु०) १ शवरक्षक। २ शव-वस्त्रशय्यादिग्राही, नदीके किनारे श्मशान पर लाश ले जानेवाले नीच श्रेणी-के लोग।

मृतभ्रज् (सं० त्रि०) नष्टवीर्य।

मृतमत्त (सं० पु०) मृतेन शवेन मत्तः भक्ष्यलाभात्। शृगाल गीदड़।

मृतमनस् (सं० त्रि०) हतचैतन्य, उदास।

मृतवत्सा (सं० स्त्री०) मृता वत्स्या यस्याः। १ मृतापत्या, वह स्त्री जिसकी सन्तति मर मर जाती हो। २ योनि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यापद्दोषभेद। शुक्रशोणितके विगड़नेसे योनिव्यापद्से ही मृतवत्सा दोष उत्पन्न होता है। योनिव्यापद् देखो।

मृतवस्त्रभृत् (सं० त्रि०) मृतके परिच्छदादि पहननेवाला।

मृतवार्षिक (सं० त्रि०) अहोरात्रिव्यापी वर्षणसंबंधीय।

मृतशब्द (सं० पु०) मृत्युसंवाद।

मृतसंस्कार (सं० पु०) मृतस्य संस्कारः। मृतव्यक्तिकी संस्कारदाहादि अन्त्येष्टि-क्रिया।

मृतसञ्जीवनी (सं० क्ली०) मृतव्यक्तिका प्राणदान, मुर्दे को जिला देना।

मृतसञ्जीवनरस (सं० क्ली०) ज्वररोगनाशक रसौषध विशेष। बनानेका तरीका—रस १ तोला और गंधक २ तोला, इन्हें खलमें अच्छी तरह घोंट कर काजल बनावे। पीछे उसमें अबरक, लोहा, तांबा, विष, हरताल, कौड़ी-की भष्म, मैनसिल, हिङ्गुल और सोनामक्खी, प्रत्येक १ तोला तथा अतीस १ तोला, चितामूल १ तोला, हस्तिशुण्डका मूल १ तोला और त्रिकटु १ तोला डाल कर अच्छी तरह पीसे। बादमें अदरक, निसोथ और सिद्धि नामक प्रत्येक द्रव्यके रसमें तीन दिन तक भावना दे। इसके बाद फिरसे मथ कर चिथड़े और मट्टीसे पोते हुए बोतलमें वा शीशीमें रख कर बालुका यन्त्रमें पाक करे। दो पहरके बाद उसे निकाल कर अदरकके रसमें फिरसे घोंटनेसे मृतसञ्जीवनरस तैयार होता है।

"ओं अघोरेभ्यश्च घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च सर्वतः सर्वेभ्यो नमोऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।" इस अघोर मन्त्रसे रसरक्षा और पूजा करके दो पहर तक आंच दे। दूसरे दिन ठंढा हो जाने पर उसे फिरसे अदरकके रसमें मल कर सुखा ले। २ या ३ रत्ती प्रति दिन अदरकके रसमें सेवन करनेसे कठिन रोग आरोग्य होता है।

मृतसञ्जीवनी (सं० स्त्री०) मृतं मृतशस्यं जीवयतीति जीव-ल्युट्, ङीप् च। १ गोरक्षदुग्धा, दुधिया घास। २ मृतजीवनार्थिका विद्या। इस विद्यासे मृतव्यक्ति जीवन लाभ कर सकता है, इसीसे इसको मृतसञ्जीवनी कहते हैं। दैत्यगुरु शुक्राचार्य इस विद्यामें पारदर्शी थे। देव-ताओंने यह विद्या जाननेके लिये कचको शुक्रके पास भेजा था। कच बड़ी आसानीसे यह विद्या सीख कर देवलोकको लौटा। पीछे इन्द्रादि देवताओंने कचसे यह विद्या सीखी थी। (भारत १।७०-८० अ०) मृतसञ्जी-वनी मन्त्र जपनेसे सर्वार्थ सिद्ध होता है।

मृतसञ्जीवनी (सं० स्त्री०) ज्वररोगकी औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—एक वर्षका पुराना गुड़ ३२ सेर, कूटी हुई बावलेकी छाल २० पल, अनारकी छाल, अड़ूसकी छाल, मोचरस, वराक्रान्ता, अतीस, असगंध, देवदारु, बेलकी छाल, परवलकी छाल, शालपर्णी, पिठवन, बृहती, कण्टकारी, गोखरू, बेर, ग्वालककड़ीका मूल, चितामूल, केवांचका बीज और पुनर्नवा प्रत्येकका चूर्ण १० पल तथा जल २५६ सेर। इन्हें एक साथ मिला कर एक भाँड़में रखे और ऊपरसे ढक्कन द्वारा ढक दे। १६ दिनके बाद उसमें सुपारी ४ सेर और धतूरेका मूल, लवङ्ग, पद्मकाष्ठ, खसकी जड़, रक्तचन्दन, सोयां, यमानी, मिर्च, जीरा, कृष्णजीरा, कचूर, जटामांसी, दारचीनी, इलायची, जायफल, मोथा, सोंठ, गठिवन, मेथी, मेढा-सिंगी और सफेद चन्दन प्रत्येक दो पलको अच्छी तरह कूट कर डाल दे। अनन्तर पहलेके जैसा फिरसे ४ दिन तक उसी भांड़में रख कर ढक दे। इसके बाद यथा-विधान बकयन्त्रमें चुआ कर मद्य तैयार करे। इसे पीनेसे देहकी दृढ़ता तथा बल, वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है। सान्निपातिक ज्वरमें तथा विसूचिका रोगमें हिमाङ्ग के समय इस 'मृतसञ्जीवनी' का बार बार प्रयोग किया जा सकता है।

मृतसञ्जीवनीरस (सं० पु०) रसौषधविशेष। प्रस्तुत-प्रणाली—विष १ भाग, सोहागा ½ भाग, जायफल ३ भाग, तांबा ४ भाग इन्हें सोंठके काढ़ेमें खल करके दो माशेकी गोली बनावे। इसका अनुपान सोंठ, पीपल, मिर्च, सैन्धवलवण, चिता वा अदरकका रस है। रोगीके शरीरमें कपूर और चन्दन लगाना तथा कांसेके बरतनमें करके जलसेक करना उचित है। पथ्य शालिधान्यका अन्न, मट्ठा और ईखका रस है। इसका सेवन करनेसे महाघोर सान्निपातिक ज्वर, त्रिदोषज्वर, विषमज्वर, आमवात, वातशूल, गुल्म, प्लीहा, जलोदर, शीत, दाह, ज्वर, अग्निमान्द्य और वातरोग नष्ट होता है।

दूसरा तरीका—पारा एक भाग और गन्धक दो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाग, इनका काजल बना कर अबरक, लोहा, तांबा, विष, हरताल, कौड़ी, मैनशिला, हिंगुल, चिता, वलात्मिका, अतीस, सोंठ, पीपल, मिर्च, सोनामक्खी, प्रत्येक एक भाग, अदरकका रस, सिद्धिकी पत्तियोंका रस और सम्हालूकी पत्तियोंका रस, इन तीनों प्रकारके रसमें तीन तीन दिन भावना दे कर शीशीमें बंद रखे। पीछे वालुकायन्त्रमें दो पहर तक पाक करके अदरकके रसमें मले। सान्निपातिक विकारसे रोगी यदि मृतप्राय हो जाय, तो यह औषध उसे अच्छा कर देती है। भगवान् शङ्करने स्वयं यह औषध प्रस्तुत की है।

(रसेन्द्रसारसंग्रह ज्वराधि०)

तीसरा तरीका—पीपल १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, हिङ्गुल २ भाग इन्हें जंवीरी नीबूके रसमें घोट कर मूली-बीजके समान गोली बनावे। अनुपान शीतल जल है। इसका सेवन करनेसे ज्वरातिसार, विसूचिका और सन्निपात ज्वर आरोग्य होता है। इसे मृतसञ्जीवनी गोली भी कहते हैं।

चौथा तरीका—पारा और गन्धक समभाग, विष चतुर्थांश, अबरक सबोंके समान, इन्हें धतूरेके रसमें पीस कर रस्नाके रसमें एक पहर तक घोंटे। पीछे धवफूल, अतीस, मोथा, सोंठ, जीरा, सुगंधवाला, यमानी, धनिया, बेलसोंठ, अकवन, हरीतकी, पीपल, कूटज-वल्कल, इन्द्रजौ, कपित्थ, अनार और सुगंधवाला प्रत्येक दो तोला, इन्हें चौगुने जलमें पाक कर चतुर्थ भागावशेष क्वाथमें तीन दिन भावना दे कर बालुकायन्त्रमें धीमी आंचसे पकावे। इसकी मात्रा ४ रत्ती और अनुपान सोंठ, अतीस, मोथा, देवदारु, पीपल, वच, यमानी, सुगंधवाला, धनिया, कूटज-वल्कल, हरीतकी, धवकूल, इन्द्रजौ, बेलसोंठ, अकवन और मोचरस, समान भाग ले कर चूर्ण करे। पीछे मधुके साथ इसका सेवन और लेपन करनेसे असाध्य ज्वरातिसार रोग नष्ट होता है।

(रसेन्द्रसारस०)

मृतसञ्जीवनीसुरा (सं० स्त्री०) एक वाजीकरण औषध। प्रस्तुत प्रणाली—नया गुड़ १२॥० सेर, बावलेकी छाल, बेरकी छाल और सुपारी प्रत्येक २ सेर, अदरक एक पाव, कुल मिला कर जितना हो उससे आठ गुना जल। पहले गुड़को घोल कर पीछे यथाक्रम अदरक, बावलेकी छाल और बेरकी छाल उसमें डाले और अच्छीं तरह मिलावे अनन्तर सुपारी और लोध डाल कर ढक्कनसे बरतनका मुंह बंद कर दे और २० दिन उसी अवस्थामें रख छोड़े। अनन्तर मिट्टीके मोहिका यन्त्रमें और मयूराक्षेपित मंत्रमें धीमी आंचसे गरम करे। पीछे उस बरतनमें सुपारी, एलवालुक, देवदारु, लवङ्ग, पद्मकाष्ठ, खसकी जड़, रक्तचन्दन, दारचीनी, इलायची, जायफल, मोथा, गठिवन, सोंठ, सोयां, यमानी, मिर्च, जीरा, मंगरेला, कपूर, जटामांसी, मेथी, मेढ़ासिंगी, रक्त चन्दन प्रत्येक ४ तोला, अच्छी तरह कूट कर डाल दे। इसके बाद सुरा प्रस्तुत करनेकी प्रणालीके अनुसार चुआवे। उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे बल, अग्नि, पुष्टि, स्मृति और रतिशक्ति आदि बढ़ती है। यह सबसे उमदा वाजीकरण है।

मृतसञ्जीविन् (सं० त्रि०) मृतको जिलानेवाला।

मृतसूत (सं० पु०) रससिन्दूर।

मृतसूतक (सं० क्ली०) १ मृतवत्सा, मृत सन्तान उत्पन्न करनेवाली स्त्री। २ जारित पारद, भस्म किया हुआ पारा।

मृतस्नात (सं० त्रि०) ज्ञातिबन्ध्वादीनामन्यतमस्मिन् मृते सति मृतमुद्दिश्य विधिना स्नातः। मृतोद्देशसे स्नात, जिसने किसी सजाति या बंधुके मरने पर उसके उद्देश्यसे स्नान किया हो। पर्याय—अपस्नात। २ संस्कारार्थं स्नापित मृत, वह मुरदा जिसे दाहके पूर्व स्नान कराया गया हो। ३ जिसे मरनेके कुछ समय पहले स्नान कराया गया हो।

मृतस्नान (सं० क्ली०) मृत मुद्दिश्य स्नानं। मृतोद्देशसे स्नान, किसी भाई बंधुके मरने पर किया जानेवाला स्नान। २ मृतकका स्नान।

मृतस्वभोक्तृ (सं० पु०) मृतवत् स्वराज्याधनादिकं मुञ्जतीति मुच्-(वासरूपोऽस्त्रियां। पा ३।१।९४) इति पक्षे तृच्। १ राजर्षि। २ राजा कुमारपालका एक नाम।

मृतहार (सं० पु०) मृतवहनकारी, मुरदा ढोनेवाला।

मृतहारिन् (सं० पु०) शववाही, मुरदा ढोनेवाला।

मृताङ्ग (सं० पु०) शवदेह, लाश।

मृताङ्गार (सं० पु०) मुरदेकी भस्म।

मृताण्ड (सं० पु०) पक्षियोंका दृश्यमान प्राणहीन अण्ड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृताधान (सं० पु०) चिताके ऊपर शव रखना।

मृतामद (सं० क्ली०) मृतः नष्टः आमदः अस्मात्। तुत्थ, तूतिया।

मृतालक (सं० क्ली०) मृतमालयति इति अल्-णिच् ण्वुल्। १ आढ़की, अरहर। २ गोपीचन्दन।

मृताशन (सं० त्रि०) शवदेह-भक्षणकारी, मुरदा खानेवाला।

मृताशौच (सं० क्ली०) वह अशौच जो किसी आत्मीय, संबंधी, गुरु, पड़ोसी आदिके मरने पर लगता है और जिसमें शुद्ध होने तक ब्रह्मचर्यके साथ देवकर्म तथा गृहकर्मसे अलग रहना पड़ता है।

मृताहन् (सं० क्ली०) मृतस्य अहः। मृताहदिन, मृत्यु दिन वा तिथि। मृताहदिनमें पितृ आदिका श्राद्ध करना होता है।

मृति (सं० स्त्री०) मृ-क्ति। मरण, मृत्यु।

मृतिमन (सं० पु०) हैजा।

मृतोत्थापनरस (सं० क्ली०) आयुर्वेदोक्त औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, मैनसिल १ भाग, विष १ भाग, हिंगुल १ भाग, अबरक १ भाग, ताँबा १ भाग, लोहा १ भाग, हरिताल १ भाग और सोनामक्खी १ भाग इन्हें एक साथ चूर कर विजौरा, जामुन, सम्हालू, बलात्मिकाकी पत्तियां, प्रत्येकके रसमें ३ दिन मर्दन कर भूधरयन्त्रमें पाक करे। एक दिन पाक करके पीछे चीतामूलके क्वाथमें २ पहर तक घोटते रहे। मात्रा आध रत्ती तथा अनुपान कपूर, हींग और त्रिकटुके साथ अदरकका रस है। इसका सेवन करानेसे मृतप्राय व्यक्ति भी जी जाता है। पथ्य दूध बताया गया है। (भैषज्यरत्ना० ज्वराधिकार)

मृतोद्भव (सं० पु०) समुद्र, महासागर।

मृत्कण (सं० क्ली०) मृत्तिकाखण्ड, मिट्टीका टुकड़ा।

मृत्कपाल (सं० क्ली०) भृष्ट खर्पर, जली हुई मिट्टी।

मृत्कर (सं० पु०) करोतीति कृ-अच्, मृदां करः, घटादिनिर्मातृत्वादस्य तथात्वं। कुम्भकार, कुम्हार।

मृत्कांस्य (सं० क्ली०) शराव, ढकन।

मृत्किरा (सं० स्त्री०) मृदं किरतीति क (इषुपदशीप्रीकिरः कः। पा ३।१।१३५) इति क, (मृत इद्धातोः। पा ७।१।१००) इति इत्। घुंघरू।

मृत्खलिनी (सं० स्त्री०) चर्मकषा वृक्ष, चमरखा।

मृत्ताल (सं० क्ली०) मृदं तालयति प्रतिष्ठापयतीति तल्-णिच्, (कर्मण्यण। पा ३।२।१) इति अण्। आढ़की, अरहर।

मृत्तालक (सं० क्ली०) मृत्ताल संज्ञायां कन्। १ आढ़की, अरहर। २ सौराष्टमृत्तिका, गोपीचन्दन।

मृत्तिका (सं० स्त्री०) मृदेव इति मृद्- (मृदस्तिकन् पा ५।४।३९) स्वार्थे तिकन्, स्त्रियां टाप्। १ तुवरी, अरहर। (राजनि०) २ मृद्, मिट्टी। पर्याय—मृदा, मृति। (भरत)

मृत्तिकाविज्ञानकी उत्पत्ति विशेषतया वास्तुविद्या और कृषिविद्याकी उन्नतिके लिये हुई है। कैसी मिट्टीमें कौन कौन उद्भिद् अच्छी तरह लग सकता है और उस मिट्टीके गुण तथा उत्पादिका-शक्ति कैसी है, इत्यादि विषयोंकी कृषिवेत्ताओंने पर्य्यालोचना की है। वास्तुशास्त्रज्ञ स्थपति (Engineer) गण अट्टालिका, प्रासाद और देवमन्दिरादि निर्म्माण करनेके समय मिट्टीकी स्थिरताका पर्य्यवेक्षण कर उनकी नींव डालते हैं। मिट्टी यदि बलुई अथवा हल्की हो तो दीवार बैठ जानेका बहुत डर रहता है, इसी कारण वे लोग मिट्टीकी तहोंके गुणागुण जान कर गृह-निर्म्माण किया करते हैं।

हिन्दुओंके प्राचीन वेदादि शास्त्रोंमें मिट्टीकी पवित्रता आदि गुणोंका वर्णन है। वाजसनेय-संहिताके "यत्पुरुषं व्यदधुः" मन्त्रका पाठ कर वेश्याके द्वारकी मिट्टी ले कर भगवतीका स्नान करानेका दुर्गोत्सव पद्धतिमें पाया जाता है। यागादिमें मिट्टीसे वेदी बनानेका आदेश है। गंगाकी मृत्तिकाको तो हिन्दूमात्र पवित्र समझते हैं। मिट्टीके शिवलिङ्गकी पूजा हिन्दुओंके घर घर होती है। इनके अतिरिक्त नदी, नहर और बड़े बड़े तालाबके किनारेकी पवित्र मिट्टीसे देवदेवीकी मूर्त्तियाँ बनाई और पूजी जाती हैं। प्राचीन समयमें मिट्टीकी प्रतिमूर्त्ति (Terra cotta figure) और मृत्फलक (Terra-cotta tablets) बनाये जाते थे, इससे प्राचीन सभ्यजातिके मिट्टीके उत्तम व्यवहारका पता चलता है। बच्चोंके खेलनेकी पुतली तथा रसोईके बरतन आदि विभिन्न मिट्टीसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनारका बीज, देवदारु, पुनर्णवा, ग्वालकक्कड़ीका मूल, यवक्षार, कुट, विड़ङ्ग, चितामूल, हबूषा, चव्य और वच प्रत्येक २ तोला ; पाकका जल १६ सेर। मात्रा २से ३ तोला; अनुपान मांसका जूस और दूध बतलाया गया है। इसके सेवनसे यकृत्, प्लीहा आदि नाना प्रकारके रोग शान्त होते हैं। (भैषज्यरत्ना० प्लीहारोगाधि०)

महारौद्र (सं० पु०) १ अत्यन्त रौद्र, कड़ी धूप। २ शिव, महादेव। ३ बाईस मात्राओंके छन्दोंकी संख्या।

महारौद्री (सं० स्त्री०) दुर्गा।

महारौरव (सं० पु०) रुरूणामयं इति रुरु-अण्, महान् रौरवः तत्र गता जीवाः क्रव्यन् नामकै रुरुभिः पीड्यन्ते अतएवास्य तथात्वं। नरकविशेष। जो इस नरकमें पतित होते हैं उन्हें क्रव्याद नामक रुरु (कुक्कुर) गण अत्यन्त पीड़ा देते है इसलिये इस नरकका नाम महारौरव पड़ा है। अग्निपुराणमें लिखा है, कि जो लोग देवताओंका धन चुराते या गुरुकी पत्नीके साथ गमन करते हैं, वे ही इस नरकमें भेजे जाते हैं। (अग्निपु०)

२ सामभेद।

महारौहिण (सं० पु०) दानवभेद।

महार्घ (सं० त्रि०) महान् अधिकः अर्घो मूल्यमस्य। १ महामूल्य, बेशकीमती। (पु०) महान् अर्घो मूल्यं यस्य। २ जिसका मूल्य ठीकसे अधिक हो, महंगा। ३ महासोम लता। ४ लावकपक्षी।

महार्घता (सं० स्त्री०) महार्घस्य भावः तल् टाप्। महामूल्यत्व, महामूल्यका भाव वा धर्म।

महार्घ्य (सं० त्रि०) १ महामूल्य, बड़े मोलका। (पु०) २ लावकजातीय पक्षिविशेष।

महार्चिस् (सं० पु०) महद् अर्चिर्यस्य। अग्नि।

महार्णव (सं० पु०) महान् सुविशालः अर्णवः। १ महासमुद्र, बहुत बड़ा समुद्र। महान् अर्णव इव प्रसादादिगुणबाहुल्यात् तथात्वं। २ शिव, महादेव। ३ पुराणानुसार एक दैत्य जिसे भगवान्ने कूर्म अवतारमें अपने दाहिने पैरसे उत्पन्न किया था।

"सौराष्ट्रा दरदाश्चैव द्राविड़ाश्च महार्णवाः।
एते जनपदाः पादे स्थिता वै दक्षिणेऽपरे॥"
(मार्कण्डेयपु० ५८।३२)

महार्थ (सं० पु०) १ दानवभेद। २ महाभाग्य।

महार्थक (सं० त्रि०) अतिशय मूल्यवान्, बेशी दामका।

महार्थवत् (सं० त्रि०) महार्थ अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। महार्थयुक्त, जिसका गूढ़ अर्थ हो।

महार्द्रक (सं० क्ली०) महद् आर्द्रकम्। १ वनार्द्रक, जंगली अदरक। इसका गुण अग्नि, दीपन, धारक, रुक्ष, वायु और कफनाशक माना गया है। २ शुण्ठी, सोंठ।

महार्द्ध (सं० पु०) महान् विपुलोऽर्द्धोऽस्य। वृक्षविशेष।

महार्बुद (सं० क्ली०) महद् अर्बुदम्। दशार्बुद, सौ करोड़ या दश अर्बुदकी संख्या।

महार्ह (सं० क्ली०) महान् अर्हः मूल्यं मर्यादा यस्य। १ श्वेतचन्दन, सफेद चन्दन। (त्रि०) २ महामूल्यवान्, बेशकिमती। ३ महापूजा योग्य।

"यस्माद्भागार्थिनो भागान् नाकल्पयत मे सुराः।
वराङ्गाणि महार्हाणि धनुषा शातयामि वः॥"
(रामायण १।६६।१०)

महाल (अ० पु०) १ वह स्थान जहां बहुत-से बड़े मकान हों, मुहल्ला। २ भाग, पट्टा। ३ बन्दोबस्तके कामके लिये किया हुआ जमीनका एक विभाग, जिसमें कई गांव होते हैं।

महालक्ष्मी (सं० स्त्री०) १ महता लक्ष्मीः। राधा, नारायणकी शक्ति।

"यन्मायया मोहिताश्च ब्रह्मविष्णुशिवादयः।
वैष्णवास्तां महालक्ष्मीं पराराधां वदन्ति ते।
यदर्द्धाङ्गा महालक्ष्मीः प्रिया नारायणस्य च॥"
(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्र० ख० ५१ अ०)

२ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें तीन रगण होते हैं।

महालक्ष्मीपुर—प्राचीन नगरभेद।

महालय—पुराणवर्णित रौद्रतीर्थभेद। यहां देवादिदेव महादेवके उद्देश्यसे स्नान और पूजादि करनेसे सब पाप जाता रहता है। स्कन्दपुराणके महालय-माहात्म्यमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।

महालय (सं० पु०) महतां जैनानामालयः, महान् आलय इति वा। १ विहार। २ तीर्थ। ३ परमात्मा। ४ आश्विनका कृष्णपक्ष जिसमें पितरोंके लिये तर्पण और श्राद्ध आदि किया जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"येयं दीपान्विता राजन् ख्याता पञ्चदशी भुवि ।
तस्यां दद्यान्न चेद्दत्तं पितॄणां वै महालये ॥
महालये कन्यागतापरपक्षे ॥" (तिथितत्त्व)

५ वृहदालय, बड़ा मकान । ६ पुराणानुसार एक तीर्थका नाम ।

महालया (सं० स्त्री०) महालय स्त्रियां टाप् । आश्विन कृष्ण अमावस्या । इस दिन पितरोंके लिये पार्वणश्राद्ध करना होता है । जो तर्पण कृष्ण पतिपद्से शुरू होता है वह इसी महालयके दिन शेष होता है ।

महालस (स० पु०) अतिशय अलस, बड़ा आलसी ।

महालसा (सं० स्त्री०) प्रसिद्ध टीकाकार नारायणकी माता ।

महालिकटभी (सं० स्त्री०) महान्तः अलयः तेषां कटभी आश्रयीभूतवृक्षः । श्वेतकिणिही वृक्ष, चिरचिटेका पौधा ।

महालिङ्ग (सं० पु०) महान् पूज्यतमो विपुलो वा लिङ्गो-ऽस्य । १ शिव, महादेव ।

"अकरोत् स महाहर्म्यैर्महालिङ्गैर्महावृषः ।
महात्रिशूलैर्महतीं महामाहेश्वरो महीम् ॥"
(राजत० २।१३७)

२ हिमालयस्थित शिवलिङ्गभेद । (त्रि०) ३ वृहल्लिङ्गयुक्त, जिसका लिङ्ग बड़ा हो ।

महालिङ्गयोगी—लिङ्गलीला-विलासचरित्रके प्रणेता ।

महालिङ्गशास्त्री—उणादिरूपावलीके रचयिता ।

महालीलसरस्वती (सं० स्त्री०) लीलया सरस्वती, महती लीलसरस्वती कर्मधा० । तान्त्रिकोंके अनुसार तारादेवीका एक नाम ।

"लीलया वाक्प्रदा चेति तेन लीलसरस्वती ।
तारास्त्ररहिता त्यर्णा महालीलसरस्वती ॥" (तन्त्रसार)

महालुगि—एक विख्यात ज्योतिर्विद । नारायणकृत-मार्त्तण्ड वल्लभग्रन्थमें इनका नामोल्लेख है ।

महालोक (सं० पु०) महर्लोक देखो ।

महालोध्र (सं० पु०) महान् लोध्रः । लोध्रविशेष, पठानी लोध ।

महालोभ (सं० पु०) महान् लोभो यस्य । १ काक, कौआ । (त्रि०) अतिशय लोभी, बड़ा लालची ।

महालोमन् (सं० पु०) १ शिव । २ वृहद्रोमयुक्त, जिसके बड़े बड़े बाल हों ।

महालोल (सं० पु०) महदतिशयं लोलं लौल्यमस्य । १ काक, कौआ । (त्रि०) अत्यन्त चंचल ।

महालोह (सं० क्ली०) महदतिशयगुणवत् लोहं । अयस्कान्त, चुम्बक पत्थर ।

महावंश (सं० पु०) १ प्रसिद्ध वंश । २ पालि भाषामें लिखित प्रसिद्ध सिंहलीय राजाका इतिहास । इस ग्रन्थमें ईस्वीसन् ५४३के पहलेसे ईस्वीसन १७५० तककी अनेक ऐतिहासिक घटना लिखी हैं । यह ग्रन्थ भिन्न भिन्न ग्रन्थकारोंसे रचा गया है । महानामने इसके प्रथम भागकी रचना की है । इस ग्रन्थके पढ़नेसे सिंहलमें बौद्धप्राधान्य-विस्तार तथा धातुसेन बुद्धदास आदि राजाओं द्वारा आतुरालयस्थापनादि और राजनैतिक उन्नतिका यथेष्ट प्रमाण मिलता है ।

महावंशावली—ध्रुवानन्दमिश्र-विरचित बंगालके बल्लाली कौलीन्यका एक सामाजिक इतिहास ।

महावंश्य (सं० त्रि०) महद्वंशोत्पन्न, जिसका जन्म उच्चकुलमें हुआ हो ।

महावकाश (सं० पु०) अतिशय अवकाश, काफी समय ।

महावक्त्र (सं० त्रि०) १ वृहत् मुखविशिष्ट, बड़ा मुंहवाला । (पु०) २ दानवभेद ।

महावक्षस् (सं० पु०) महत् वक्षः विराड़ देहो यस्य । १ महादेव । (त्रि०) २ वृहद् वक्षोयुक्त, चौड़ी छातीवाला ।

महावज्रकतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—सफेद सरसों, करञ्ज, सप्तपर्णी, पूतिकरञ्ज, हल्दी, दारुहल्दी, रसाञ्जन, कुटज, चक्रमर्द, मृगादनी (ग्वालककड़ी), लाख, सर्जरस, अर्क, अपराजिता, आरग्वध, स्नुही, शिरीष, तुवर, अरुष्कर, वच, कुष्ठ, विड़ङ्ग, मजीठ, लाङ्गली, चित्रक, मालती, तितलौकी, गंधाली, मूलक, सैन्धव, करवीर, गृहधूम, विष, कम्पिल, सिन्दूर, तूतिया और गजपीपल, बराबर भाग ले कर जितना हो उससे दूने गायके मूतमें उसे अच्छी तरह पीसे । पीछे उसे चौगुने करञ्जतेल या सरसोंके तेलमें पाक करे । इसीको महावज्रकतैल कहते हैं । इस तेलकी मालिश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेसे सभी प्रकारके कोढ़, गण्डमाला, भगन्दर और नाड़ीव्रण आदि रोग नष्ट होते हैं। (सुश्रुत कुष्ठचिकि०)

महावट (हिं० स्त्री०) पूस माघकी वर्षा, वह वर्षा जो जाड़ेमें हो।

महावणिज् (सं० पु०) महा वणिक्। श्रेष्ठ वणिक्।

महावत (हिं० पु०) हाथी हांकनेवाला, फीलवान।

महावतारी (सं० पु०) २५ मात्राओंके छन्दोंकी संख्या।

महावद (सं० पु०) ब्रह्मवादी।

महावध (सं० पु०) वज्र।

महावन (सं० क्लो०, महद् विपुलं वनं। वृहद्वन, घोर जङ्गल। पर्याय—अरण्यानी, महारण्य, महाटवी।

महावन—१ युक्तप्रदेशके मथुरा जिलान्तर्गत एक तहसील। यह अक्षा० २७° १४' से ७° ४१' उ० तथा देशा० ७७° ४१' से ७७° ५७' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २४० वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। इसमें ४ शहर और १६२ ग्राम लगते हैं। यहांकी प्रधान उपज जुआर, रूई, बारला, चना और गेहूं है।

२ उक्त तहसीलके चार शहरोंमेंसे एक बड़ा शहर और तीर्थक्षेत्र। यह अक्षा० २७° २७' उ०से ७७° ४५' पू०के मध्य यमुनाके बाएं किनारे अवस्थित है। जनसंख्या पांच हजारसे ऊपर है।

यह वनभूमि श्रीकृष्णका लीलाक्षेत्र समझी जाती है। इस कारण बहुत दिनोंसे इसका आदर चला आ रहा है। सुप्राचीन जैन, बौद्ध, शैव, गाणपत्य और वैष्णव आदि हिन्दू धर्म सम्प्रदायकी पुराकीर्त्तिका निदर्शन जो इधर उधर पड़ा है वह विभिन्न साम्प्रदायिक प्रभावका अस्तित्व सूचित करता है। मथुरा देखो।

किसी समसामयिक इतिहास-लेखकका वृत्तान्त पढ़नेसे मालूम होता है, कि १२३४ ई०में दिल्लीके बादशाह सुलतान शमसुद्दीनने जो कालिञ्जर जीतनेके लिये सेनादल भेजा था उसने इसी महावनमें छावनी डाली थी। रूप गोस्वामीके वृन्दावन उद्धारकालमें यह ८४ वनोंके अन्तर्गत समझा जाने लगा। १८०४ ई०में महाराष्ट्रराज यशोवन्त राव होलकर फर्रुखाबाद रणक्षेत्रमें पराजित हो कर इसी स्थानके निकट यमुना जरी पार कर गये थे। इसके दूसरे ही वर्ष प्रसिद्ध पठान-डकैत अमीर खांने यहींसे यमुना पार कर अपनी दस्युवृत्तिको चरितार्थ किया था।

कालक्रमसे यह प्राचीन स्थान महारण्यमें परिणत हुआ। इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि मुगल-बादशाह शाहजहां इस वनभूमिमें शिकार करने आये थे और चार बाघोंका शिकार किया था। प्रसिद्ध गोकुल नगरी इसके उपकण्ठमें अवस्थित है। महावनके ध्वस्त और श्रीहीन होने पर यहांके सभी लोग आध कोस दूर हट कर यमुनाके किनारे गोकुलमें बस गये। पुराणमें श्रीकृष्णके बाल्यलीलाक्षेत्र गोकुलका ही उल्लेख देखनेमें आता है। आज भी वहांके लोग महावनके ध्वंसावशेषको ही कृष्णलीलाका आदि स्थान बतलाते हैं। शायद यही स्थान पहले गोकुल कहलाता होगा। अभी वर्त्तमान जनसमाकीर्ण नदीतटवर्त्ती उपकण्ठ ही गोकुल कहलाता है।

इस महावनके मध्य नन्दालय ही देखनेलायक है। बादशाह औरङ्गजेबके जमानेमें मुसलमानोंने उस प्राचीन नन्द-प्रासादके चारों ओर दीवार खड़ी कर वहां एक मसजिद बनवाई। आज भी हिन्दू और बौद्धकीर्त्तिके सैकड़ों निदर्शन उस मसजिदमें देखे जाते हैं। यह स्थान 'अस्सीखंभा' कहलाता है। ८० खंभोंके मध्य सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, और कलियुग नामक चार खंभोंमें कालवैचित्र्यज्ञापक चित्रावली दिखलाई गई है। अलावा इसके बाकी खंभोंमें भी कितने हिन्दू चित्र खोदित हैं। फादर टिफन थलार ११वीं सदीके मध्यभागमें महावन देख कर लिख गये हैं, कि उस वृहत् अट्टालिकाका एक अंश हिन्दुओंके मन्दिर और दूसरा अंश मुसलमानोंकी मसजिद रूपमें व्यवहृत होता था।

पहले ही कह आये हैं, नदीतीरवर्त्ती गोकुलग्राम महावन-ध्वंसके बाद बसाया गया है। यहां बहुत ही कम प्राचीन कीर्त्तिका निदर्शन देखनेमें आता है। अधिकांश अट्टालिका और मन्दिरादि जो श्रीकृष्णके लीलास्थलरूपमें वर्णित हो कर तीर्थ समझे जाने लगे हैं, वे भी नितांत आधुनिक कालके मालूम नहीं होते। १४७९ ई०में यहां वल्लभाचार्य नामक एक ज्ञानी वैष्णवका आविर्भाव हुआ। उन्होंने अपने नामसे वल्लभाचार्य मत चलाया। यहां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वल्लभाचार्य सम्प्रदाय वा गोकुलस्थ गोसाइयोंका प्रधान अड्डा होनेसे यह स्थान बहुत कुछ प्रसिद्ध हुआ। गुजरात वा बम्बईवासी सभी हिन्दू-वणिक् इसी संप्रदायके शिष्य हैं। अतएव उनके द्वारा नवप्रतिष्ठित गोकुलनगरीकी शोभा बढ़ाई गई हो, इसमें आश्चर्य ही क्या? यथार्थ में वल्लभाचार्यके अभ्युदयसे गोकुलनगरीकी समृद्धिकी कल्पना की जाती है। गोकुल और वल्लभाचार्य देखो।

महावन—हजारा जिलेके पेशावर सीमान्तवर्त्ती यागिस्थान नामक प्रदेशके अन्तर्गत एक पर्वत। यह इसलामशैलश्रृङ्गके पूरब ओर सिन्धुनदके दाहिने किनारे अवस्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्रपृष्ठसे ७४०० फुट है। इसका दक्षिणभाग घने जंगलोंसे ढका है इसीसे इस पर्वतका महावन नाम हुआ है।

यह गिरिश्रृङ्खला विशेष स्वास्थ्यप्रद है। किन्तु यहां दुर्द्धर्ष अफगान जातिका वास होनेके कारण किसीको भी इसके ऊपर चढ़नेका साहस नहीं होता।

महावन्ध (सं० क्लो०) योगप्रक्रियासे हाथ और पांवका बांधना।

महावप (सं० पु०) महामेघ।

महावर (हिं० पु०) लाखसे बना हुआ एक प्रकारका लाल रंग, यावक। इससे सौभाग्यवती स्त्रियां अपने पांवोंको चित्रित कराती हैं।

महावर—हजारीबाग जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी। यह पूर्वपश्चिममें प्रायः १४ मील विस्तृत है। पर्वत पर चढ़ना बहुत खतरनाक है। किन्तु ऊपरकी अधित्यकाभूमि प्रायः १ मील चौड़ी है। शकरीनदी इस पर्वतके पश्चिम हो कर बह गई है। यहां कोकलहाट नामक ६०० फुट ऊंचा एक जलप्रपात है। उस प्रपातके सामने प्रतिवर्ष मेला लगता है।

महावरा (सं० स्त्री०) व्रियतेऽसौ देवादिभिरिति वृ-अच्, टाप् महती वरा। १ दूर्व्वा, दूब। २ मूर्वा, मरोड़फली।

महावरा (अ० पु०) मुहावरा देखो।

महावराह (सं० पु०) महान् ईश्वरोऽपि सन् वराहः, महांश्चासौ वराहश्चेति वा। वराहरूपी भगवान्।

"महावराहो गोविन्दः सुसेनः कनकाङ्गदी।"

(भारत १३।१४९।१६)

२ शूरपुरके एक राजा।

महावरी (हिं० स्त्री०) महावरकी बनी हुई गोली या टिकिया जिससे स्त्रियोंके पैर चित्रित किये जाते हैं।

महावरेदार (अ० वि०) मुहावरेदार देखो।

महावरोह (सं० पु०) महान् अवरोहः शिफानां अधोऽवतरणं यस्य। प्लक्षवृक्ष, पाकरका पेड़।

महावर्षाभू (सं० स्त्री०) श्वेतपुनर्नवा।

महावल—एक जैन राजा।

महावल—गिरनरप्रदेशके अन्तर्गत एक गिरिकन्दर। यह गिरनर दुर्गसे आठ कोस पर अवस्थित है। गुर्जराधिप सुलतान महमूद बिगड़ा जूनागढ़ और गिरनर-दुर्ग जीतनेकी आशासे ससैन्य यहां आये। वहांके हिन्दू-राजा राव मण्डलिकने अपने बचावका कोई रास्ता न देख दलबलके साथ महाबल-पर्वत पर आ कर आश्रय लिया। वहां युवराज तुगलक खांने उन्हें ससैन्य हराया। इसके चारों ओर उच्च शिखर मानों स्वभावतः दृढ़ दुर्गरूपमें गठित है। यहांका प्राकृतिक दृश्य उतना खराब नहीं है। स्थान विशेष स्वास्थ्यप्रद है।

महावल्क (सं० पु०) जातीफलवृक्ष, जायफलका पेड़।

महावल्ली (सं० स्त्री०) महती चासौ वल्ली चेति। १ माधवीलता। २ उत्तमालता, अच्छी लता। ३ श्वेत लाबू, सफेद कद्दू। ४ कटुवल्लिका, कटकी।

महावस (सं० पु०) महती वसा वपास्य। शिशुमार, मगर नामक जलजन्तु।

महावसु (सं० त्रि०) १ प्रभूत धनशाली, बड़ा दौलतमन्द। (पु०) २ इन्द्रावरुणका एक नाम। ३ रौप्य, चांदी।

महावाक्य (सं० क्ली०) महद्वाक्यं। १ 'सोऽहं' शब्द। २ शङ्कराचार्यजीके मतानुयायियोंके मतसे 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'प्रज्ञानं ब्रह्म' और 'अयमात्मा ब्रह्म' इत्यादि उपनिषद्के वाक्य। ३ दान आदिके समय पढ़ा जानेवाला संकल्प।

महावात (सं० पु०) अतिशय वायु, जोरकी हवा, तूफान।

महावातव्याधि (सं० पु०) रोगभेद।

महावात्सप्र (सं० क्ली०) सामभेद।

महावादी (सं० त्रि०) विरुद्धवादी, विरुद्ध बोलनेवाला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महावामदेव्य (सं० क्ली०) शान्तिकर्मोंके समय पढ़ा जानेवाला एक प्रकारका साम।

महावायु (सं० पु०) १ प्रबल झटिका, भारी तूफान। २ वायुभूत।

महावारुणी (सं० स्त्री०) वरुणो देवताऽस्या वरुण-अण् ङीप्, महती वारुणी। गंगा-स्नानका एक योग। गौण-चान्द्र चैत्रमासकी कृष्ण त्रयोदशीके दिन वारुणी योग होता है। इस दिन यदि शनिवार और शतभिषा नक्षत्र हो, तो महावारुणी होती है। करोड़ सूर्यग्रहणमें गंगा-स्नान करनेसे जो फल होता है, वही फल महावारुणीमें गंगास्नान करनेसे होता है।

"वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी।
गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा॥
शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता।
गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समं॥"

(तिथितत्त्व)

इस दिन स्नान-दान आदि पुण्यकार्य अनन्त फल-दायक है।

महावार्त्ताकिनी (सं० स्त्री०) महावार्त्ताकुवक्ष, जंगली बैंगनका गाछ।

महावार्त्तिक (सं० क्ली०) कात्यायनकृत पाणिनि-सूत्रका वार्त्तिक।

महावार्षिका (सं० स्त्री०) वृक्षभेद।

महावालभिद् (सं० त्रि०) स्तोत्रभेद।

महावास्तु (सं० क्ली०) महायतन।

महावाहन (सं० क्ली०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महावाहु—सह्याद्रि-वर्णित एक राजा।

महाविक्रम (सं० त्रि०) महान् विक्रमो यस्य। १ प्रबल पराक्रमशाली, बड़ा प्रतापवान्। (पु०) २ सिंह। ३ नागभेद।

महाविक्रमिन् (सं० पु०) १ बोधिसत्वभेद। (त्रि०) २ महाविक्रमयुक्त, जिसकी खूब विक्री हो।

महाविघ्न (सं० पु०) प्रबल विघ्न, बड़ी बाधा।

महाविज्ञ (सं० त्रि०) महान् विज्ञः। अतिशय ज्ञानी, बड़ा ज्ञानवान्।

महाविदेह (सं० पु०) पुण्यक्षेत्रभेद।

महाविदेहा (सं० स्त्री०) योगशास्त्रके अनुसार मनकी एक बहिर्वृत्ति।

महाविद्या (सं० स्त्री०) विद्यते ज्ञायते इति विद्-क्यप् टाप्, महती विद्याज्ञानं तत्त्वसाक्षात्कारो वा यस्याः। देवीविशेष। इन महाविद्याकी संख्या दश है, यथा—काली, तारा, षोड़शी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गा, और कमलात्मिका। इन्हें सिद्धविद्या भी कहते हैं। इन महाविद्याका मन्त्र देनेमें नक्षत्रविचार, कालादिशोधन, मन्त्रका शत्रु और मित्र आदि दोष कुछ भी नहीं होता। इनका मन्त्रमात्र भी दिया जा सकता है।

"काली तारा महाविद्या षोड़शी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्या प्रकीर्त्तिताः॥
नात्र सिद्धाद्यपेक्षास्ति न नक्षत्रविचारणा।
कालादिशोधनं नास्ति न चामित्रादिदूषणम्॥
सिद्धविद्यातया नात्र युगसेवा परिश्रमः।
नास्ति किञ्चिन्महादेवि दुःखसाध्यं कथञ्चन॥"

(चामुण्डातन्त्र)

तन्त्रमें लिखा है—काली, नीला महादुर्गा, त्वरिता, छिन्नमस्ता, वाग्वादिनी अन्नपूर्णा, प्रत्यङ्गिरा, कामाख्या, वासली, बाला, मातङ्गी और शैलवासिनी ये सब देवी भी महाविद्या हैं।

"अथ वक्ष्याम्यहं या या महाविद्या महीतले।
दोषजालैरसंस्पृष्टा स्ताः सर्वा हि फलैः सह॥
काली नीला महादुर्गा त्वरिता छिन्नमस्तका।
वाग्वादिनी चान्नपूर्णा तथा प्रत्यङ्गिरा पुनः॥
कामाख्या वासली बाला मातङ्गी शैलवासिनी।
इत्याद्याः सकला विद्याः कलौ पूर्णफलप्रदाः॥
सिद्धमन्त्रतया नात्र युगसेवापरिश्रमः।
अथ चैता महाविद्याः कलिदोषान्न बाधिताः॥"

(तन्त्रसार) दशमहाविद्या देखो।

मुण्डमालातन्त्रमें लिखा है—ये सभी महाविद्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दशावतार हुई थीं। इनमेंसे काली कृष्णरूपमें, तारिणी रामरूपमें, काली कूर्ममें, धूमावती मीनमें, छिन्नमस्ता नृसिंहमें, भैरवी वराहमें, सुन्दरी जामदग्न्यमें, भुवनेश्वरी वामनमें, कमला बौद्धमें और दुर्गा कल्किरूपमें अवतीर्ण हुई थीं। २ गङ्गा। (काशीख० २९।१३९)

महाविद्युत्प्रभ (सं० पु०) नागभेद।

महाविद्येश्वरी (सं० स्त्री०) दुर्गामूर्त्तिभेद, दुर्गाकी एक मूर्त्तिका नाम।

महाविनायक—उड़ीसाके कटक जिलान्तर्गत वारुणीवन्त शैलका एक शृङ्ग। यह शृङ्ग देवताके समान पवित्र और पुण्यतीर्थ माना जाता है। कटकसे यह शृङ्ग दिखाई पड़ता है।

महाविन्दुघृत (सं० पु०) घृतौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—घी २ सेर; चूर्णके लिये सोजका दूध २ पल, कमलाका चूर १ पल, सैन्धव ४ तोला, निसोथ १ पल, आंवलेका रस ॥ आध सेर, जल ४ सेर। नियमपूर्वक धीमो आंचमें पका कर इस औषधिको प्रस्तुत करे। प्लीहा, गुल्म आदि उदररोगोंमें यह विशेष उपकारी है। पूर्वोक्त दोनों रोगोंमें इसकी मात्रा २ तोला बतलाई गई है। चिकित्सकको रोगके अवस्थानुसार इस औषधका प्रयोग करना चाहिये।

महाविपुला (सं० स्त्री०) आर्याछन्दोभेद।

महाविभूत (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महाविभूति (सं० त्रि०) १ महाऐश्वर्ययुक्त, बड़ा प्रतापी। (पु०) २ विष्णु।

महाविराज (सं० पु०) विशेषेण राजते प्रकाशते इति विराज किप् महांश्चासौ विराट् चेति। महाविष्णु।

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्रकृतिख० ५१ अ०)

महाविल (सं० क्ली०) महच्च तत् विलञ्चेति। १ आकाश। २ वृहच्छिद्र, बड़ा छेद। ३ अन्तःकरण।

महाविवाह (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महाविशिष्ट (सं० त्रि०) अति प्रसिद्ध, बड़ा नामी।

महाविष (सं० पु०) महत् अत्युत्कटं विषमस्य। १ कालसर्प, वह सांप जिसके काटते ही तुरन्त मृत्यु हो जाय। २ महाविष, एक प्रकारका कन्द। (त्रि०) ३ महाविषविशिष्ट, बड़ा जहरीला।

महाविषुव (सं० क्ली०) विषु साम्यमस्त्यत्रेति विषु 'वप्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यं।' (पा ५।२। १०८) इत्यस्य वार्त्तिकात् वा प्रत्ययः महच्च तद् विषुवञ्चेति अस्मिन् समये दिवारात्रयोः समत्वात् तथात्वं। मेषसंक्रान्ति। सूर्य जब मीनराशिसे मेषराशिमें आते है, तब उसे महाविषुवसंक्रान्ति कहते हैं। इस समय दिनरातका मान समान रहता है। इसीलिये इसका नाम महाविषुव हुआ है। इसका दूसरा नाम चैत्र-संक्रान्ति भी है। चैत्रमाससे वैशाखमास तक जिस समय सूर्य संक्रम होता है, उसीको महाविषुवसंक्रान्ति कहते हैं। यह संक्रमण दिन बहुत ही पुण्यजनक है। इस दिन मसूर और नीमपत्र खानेसे सर्पभय जाता रहता है।

"महाविषुवमाख्यातं कृतिभिश्चैत्रचिह्नितम्।"
तस्मिन् मसूरनिम्बपत्रद्वयभक्षणं, यथा कृत्यचिन्तामणौ
"मसूरं निम्बपत्राभ्यां योऽत्ति मेषगते रवौ।
अपि रेषान्वितस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति॥"
(तिथितत्त्व)

इस दिन सत्तू और जल पूर्ण घड़ा दान करना होता है। जो इस प्रकार दान करते हैं, वे परम गतिको प्राप्त होते हैं। जलपूर्ण घड़ा दान करनेका मन्त्र—

"एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः।
अस्य प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथाः॥
वैशाखे यो घटं पूर्णं सभोज्यं वै द्विजन्मने।
ददाति सुरराजेन्द्र स याति परमां गतिम्॥" (तिथितत्त्व)

पितृ आदिके उद्देशसे जलपूर्ण घड़ा, जूता, छाता आदि दान करनेसे बहुत पुण्य होता है। जो इस संक्रान्तिके दिन उक्त दान करते उनके सभी पाप जाते रहते हैं।

"यो ददाति हि मेषादौ शक्तून्सघटान्वितान्।
पितॄनुद्दिश्य विप्रेभ्य सर्वपापैः प्रमुच्यते॥"
तत्र छत्रपादुकादिदानं—
"विप्रेभ्यः पादुकाच्छत्रं पितृभ्यो विषुवे शुभम्॥"
(तिथितत्त्व)

महाविषुवचक्र (सं० क्ली०) महाविषुवस्य चक्रम्।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नक्षत्रघटित नराकार चक्र। एक मनुष्यदेहको अङ्कित करके उसके मस्तक पर ७ नक्षत्र, मुखमें ३, हृदयमें ५ और दोनों हाथ तथा दोनों पैरमें तीन तीन करके १२ नक्षत्र विन्यास करना होगा। इसीका नाम महाविष्णुचक्र है। सभी नक्षत्रोंके १, २ इत्यादि रूपसे यथाक्रम विन्यास करना होता है। पीछे उस मनुष्यके किस अङ्गमें कौन नक्षत्र पड़ा है, उसे देख कर फल निर्णय करना होगा। फल इस प्रकार है—मस्तक पर राजसुख, मुखमें पटुता, हृदयमें धनाध्यक्षता, दाहिने हाथमें अर्थलाभ, बायें में महादुःख, दाहिने पैरमें सुख और बाएं पैरमें भ्रमण। इस प्रकार अपने अपने नक्षत्र द्वारा फल जानना होगा। जिस किसी नक्षत्रका इस चक्रके अनुसार फल जानना हो, वह नक्षत्र उस पुरुषके किस अंग पर पड़ा है, पहले वही स्थिर कर पीछे उस अङ्गके सुखदुःखादिका जैसा फल ऊपर बतलाया गया है, उसीसे फल निर्णय करना होगा। (ज्योस्तित्त्व)

महाविष्णु (सं० पु०) महांश्चासौ विष्णुः सर्वव्यापकश्चेति। महाविराट्। (भागवतामृतकणिका)

महाविहङ्ग (सं० पु०) गरुड़।

महाविहार (सं० पु०) सिंहलद्वीपके अनुराधापुरस्थ बौद्धसङ्घारामभेद। यहां बोधिवृक्ष प्रतिष्ठित हैं।

महावीचि (सं० पु०) न विद्यते वीचिः सुखं यत्र, महान् वीचिश्च। मनुके अनुसार एक नरकका नाम।

"नरकं कालसूत्रञ्च महानरकमेव च।
सञ्जीवनं महावीचिं तपनं संप्रतापनम्॥" (मनु ४।८७)

नरक देखो।

महावीज (सं० पु०) पियाल वृक्ष, चिरौंजीका पेड़।

महावीर्य (सं० क्ली०) वीर्याय साधु इति यत्, महत् वीर्य्यं। विटप, मुष्क और वङ्क्षणका मध्य भाग।

महावीत (सं० पु०) पुराणानुसार पुष्कर द्वीपके एक पर्वतका नाम। (लिङ्गपु० ५३।२६)

महावीर (सं० पु०) वीन् पक्षिण ईरयतीति ईर-क, ततो महांश्चासौ वीरश्चेति कर्मधा०। १ गरुड़। २ सिंह। ३ गौतम बुद्धका एक नाम। ४ मनुके पुत्र मखानलका एक नाम। ५ वज्र। ६ श्वेत तुरङ्ग, सफेद घोड़ा। ७ सज्ञान पक्षी, बाज। ८ हनुमानजी। ९ देवता। १० करवीरपुष्प वृक्ष, कनेरका गाछ। ११ एकवीर वृक्ष। १२ कोकिल, कोयल। १३ जैनोंके चौबीसवें जिनेन्द्र। महावीर स्वामी देखो। (त्रि०) १३ बहुत बड़ा वीर।

महावीरचरित (सं० क्ली०) महाकवि भवभूति-प्रणीत प्रसिद्ध श्रीरामचरिताख्यान।

महावीरचरित्र (सं० क्ली०) जैनतीर्थङ्कर महावीरकी जीवनी।

महावीर वर्द्धमान ज्ञातपुत्र—बौद्धाचार्यभेद।

महावीर स्वामी—जैनोंके चौबीस तीर्थङ्करोंमेंसे अन्तिम तीर्थङ्कर, चौबीसवें जिनेन्द्र। 'भगवान् महावीर' नामसे भी इनकी प्रसिद्धि है। पर्याय—वीर अतिवीर, वर्द्धमान और सन्मति। हरिवंश-सूर्य राजा सिद्धार्थके औरस और महारानी त्रिशलाके गर्भसे भगवान् महावीरका जन्म हुआ था। 'जैन-हरिवंशपुराण' तथा 'महावीरपुराण'-में लिखा है,—सिद्धार्थ नामक एक प्रबलपराक्रान्त प्रजाप्रिय नरपति थे, जो मति-श्रुत-अवधिज्ञानके स्वामी तथा जैन धर्मके परम भक्त और बड़े ही दानशूर थे। हरिवंश वा नाथवंशके आप सूर्य थे और काश्यप कुलके तिलक। उनकी पटरानीका नाम त्रिशलादेवी था। महारानी त्रिशला अत्यन्त गुणवती, रूपवती, जैनधर्म-भक्त और पतिको अति प्रिय थी। त्रिशलाका एक नाम प्रियकारिणी भी था। वे पूर्व सञ्चित पुण्यके प्रतापसे ही ऐसे मोक्षगामी और जगत्के कल्याणकारी तीर्थङ्कर पुत्रको जन्म देनेमें समर्थ हुई थीं। एक दिन त्रिशला सो रही थीं, सोतेमें रात्रिके शेषभागमें उन्होंने सोलह शुभ स्वप्न देखे, जो भगवान् महावीर जैसे अहिंसाधर्म-प्रचारक पुरुष-पुङ्गवके गर्भमें आनेकी सूचना देते थे।

आषाढ़ शुक्ला ६, उत्तराषाढ़ नक्षत्रमें श्री महावीर स्वामीकी आत्मा १६वें स्वर्ग (अच्युतस्वर्ग)-से चयन पूर्वक माता त्रिशलाके गर्भमें आई। जिस समय महावीर स्वामी गर्भमें थे, उस समय स्वर्गकी देवियां माताकी सेवा करती और नाना प्रकार मनोरम कथाएं सुनाया करती थीं। अनन्तर चैत्र शुक्ला त्रयोदशीके दिन तीर्थङ्कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महावीरका जन्म हुआ। आपके शरीरका रंग सुवर्ण-सदृश, दीप्तिमान मुखमण्डल, वज्रके समान अस्थियां और परम रूपवान् सुदृढ़ शरीर था। जन्म होते ही सौधर्म और ईशान इन्द्रने आपको क्षीरसागरमें अभिषेक पूर्वक स्नान कराया और बड़ा भारी उत्सव किया। उसी समय उनका वीर और वर्द्धमान नाम रक्खा गया। जैसा कि कहा है:—

"अयं स्यान्महतां वीरः कर्मारातिनिकंदनात्।
श्रीवर्द्धमाननामासौ वर्द्धमानगुणाश्रयात्॥"

उस कालमें जैसे अन्य बालकोंको ५ वर्षकी अवस्थामें अक्षरारम्भ और ८ वर्षकी अवस्थामें गुरुके निकट उपासकाध्ययन आदि ग्रन्थ पढ़ने पड़ते थे, वैसे महावीरस्वामीको पढ़नेकी आवश्यकता न हुई; क्योंकि पूर्व-संस्कारसे महावीर जन्मसे ही मति-श्रुत-अवधिज्ञानके धारक थे, जिससे अन्य शास्त्र पढ़ना उनके लिए व्यर्थ था। उन्होंने किसीका शिष्यत्व ग्रहण नहीं किया था। आठ वर्षकी अवस्थामें स्वामीने गृहस्थोंके उपयुक्त द्वादशव्रत ग्रहण किये। *

महावीर कुमारावस्थामें ही बड़े वीर और साहसी थे। एक वार सौधर्म इंद्रने अपनी सभामें स्वामीके बल-की प्रशंसा की। संगम नामक एक देवको विश्वास न हुआ। वह परीक्षा करनेके लिये एक बड़े भारी काले नागके रूपमें आया, और जहां राजकुमारोंके साथ श्री-महावीर खेल रहे थे, वहां जा कर जिस वृक्ष पर कुमार चढे थे, उससे लिपट गया। अन्य सब कुमार भयभीत हो वृक्षसे कूद कर भागे; परंतु वीर कुमारको कुछ भी भय न हुआ। वे उस सर्पको पकड़ कर उसके साथ क्रीड़ा करने लगे। इनके इस तरहके बलको देख वह देव अति प्रसन्न हुआ और बहुत भांति स्तुति कर स्वर्गलोक गया।

सम्यक्त्व और व्रत तथा अवधिज्ञानके प्रभावसे कुमारका पूर्ण उदासीन-चित गृह-जालमें न ठहरा, वह जलमें कमलकी तरह संसारसे निर्लिप्त रहा। इसी तरह पिता-माता और कुटुम्बियोंको आनन्दित करते हुए तथा राजकार्यका पर्यवेक्षण करते हुए स्वामीने ३० वर्ष व्यतीत कर दिये। विवाह करनेकी तरफ उन्होंने बिलकुल ही ध्यान न दिया, बालब्रह्मचारी रह कर पवित्र जीवन बिताया।

एक दिन, काललब्धि और चरित्रमोहनीय कर्मके विशेष क्षयोपशम होनेसे, स्वामीके मनमें सहसा वैराग्यका उदय हुआ। उस समय अवधिज्ञानसे स्वामीने विचार किया—मैंने इस सहसा नश्वर जगत्में भील, मारीचराज-पुत्र, तिर्यञ्च (पशु आदि), नरक आदि भव धारण कर व्यर्थ ही अनेक कष्ट उठाये। परन्तु कहीं पर भी आत्मानंदका अनुभव न किया। अहो! मुझ मूढ़के इतने दुर्लभ दिन इस जगत्में विना महाव्रतके यों ही चले गये। मैंने इस भवमें भी तीन ज्ञानके धारी और आत्मज्ञानी हो कर इस गृह-जालमें इतने दिन वृथा ही खो दिये। जो लोग ज्ञान पा कर निर्दोष तपका आचरण करते हैं, उन्हींका ज्ञान सफल है, दूसरोंके लिये ज्ञानाभ्यासादि मात्र क्लेशरूप ही है। ज्ञानवानोंको कोई भी पाप नहीं करना चाहिये, क्योंकि मोहसे दुर्द्धर राग और प्राण जाने पर भी मोहादि निंद्य-कर्मरूप द्वेष उत्पन्न होते हैं। जिनके वश हो कर यह प्राणी महाघोर पाप कर लेता है और पापसे चिरकाल दुर्गतिमें दुःख पाता है। ज्ञानियोंको उचित है, कि पहले प्रगट वैराग्यरूपी खड्गसे सर्व अनर्थके कारण दुष्ट मोह-रूपी शत्रुओंका संहार करें। अहो! इस मोहका जीतना गृहस्थियोंसे नहीं हो सकता, इसलिये पापके समान गृहके बंधनको भी दूरसे छोड़ देना चाहिये। वे ही इस जगत्में पूज्य महान् और धैर्यवान् हैं, जो युवा अवस्थामें दुर्जय कामरूपी शत्रुको अच्छी तरह नाश कर डालते हैं। ऐसा विचार कर गृहवासको कैदखानेके समान जान कर स्वामीने इसको त्याग कर तपोवनमें जाना निश्चय किया।

इसके बाद प्रभु अपने माता पितादि कुटुम्बियोंसे ममता छोड़ कर आत्मामें स्थिर हो अपने स्वरूपका अनुभव करने लगे। अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधि-दुर्लभ, धर्म इन द्वादश शुभ भावनाओंका शुभ चिन्तवन

* "अष्टमे वत्सरे देवो गृही धर्मार्थये स्वयं।
आददौ स्वस्य योग्यानि व्रतानि द्वादशैवहि॥"
(महावीर-चरित्र)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए स्वामी संसार त्याग करनेका दृढ़ निश्चय करने लगे। यथा—

"यद्यनेनापवित्रेण पवित्रा गुणराशयः।
कैवल्याद्याः प्रसिद्ध्यंति तत्कार्ये का विचारणा॥"

"यदि इस अपवित्र शरीरसे पवित्र गुणोंके समूह केवलज्ञान केवलदर्शनादि सिद्ध हो सकते हैं, तो इस कार्यके करनेमें विचार ही क्या करना?

स्वामीके इन पवित्र विचारोंका पता लौकन्तिक देवों-को लगा; वे तुरन्त ही आ कर भगवान्‌की प्रशंसा करने लगे, जिससे उनका निश्चय और भी दृढ़ हो गया। भग-वान उसी समय राजपाट, माता-पिता, कुटुम्बादि सर्वस्व त्याग कर तपस्या करके मोक्ष प्राप्त करनेके उद्देशसे वन-को चल दिये।

नगरके लोग धन्य-धन्य करने लगे। पिता पूर्ण ज्ञानी थे, उन्होंने ऐसा ही होनहार जान कर सन्तोष धारण किया। परन्तु माता त्रिशलाको तीव्र मोह था; वे अनेक सखियोंके साथ रोती हुई भगवान्‌के पीछे पीछे चलीं। यथा—

"रोदनं चेति कुर्वाणा बन्धुभिः सममार्त्तधीः।"

आखिर जब बुद्धिमानोंने संसारका स्वरूप समझाया, तब माताका चित्त कुछ कुछ स्थिर हुआ और वे सखियों सहित अपने मन्दिरको लौटीं।

इसके बाद भगवान् महावीरने अपने हाथोंसे मस्तक-के तथा श्मश्रुके केश उपाड़ डाले और शिशुवत् नग्न हो कर (मार्गशीर्ष कृष्णा १०मीको) त्रयोदश प्रकार चारित्र धारण कर मुनि हो गये।

अनन्तर बहुत दिन बाद भगवान् विहार करते हुए एक बार उज्जयिनी नगरीके बाहर श्मशान भूमिमें पहुंचे और वहीं तप करने लगे। उज्जयिनीमें उन दिनों ११वें रुद्र स्थाणु निवास करते थे, इनकी ही स्त्रीका नाम पार्वती था। पहले ये बड़े भारी तपस्वी थे। जब इनको मंत्रादि विद्याएं सिद्ध हो गईं, तब ये कामाशक्त हो विच-लित हो गए। श्मशानमें महावीरस्वामीको ध्यानमग्न देख कर आप विचार करने लगे, कि ऐसे पुरुषका मन कितना ध्यानमें दृढ़ है, इस बातकी परीक्षा करनी चाहिये। बस, आप अपनी विद्याके बलसे नाना प्रकारके उपसर्ग करने लगे। सर्पों और बिच्छुओंका डंसना, धूल, मिट्टी, पानीका बरसना, बिजलीका कड़कना, स्त्रियोंका हावभाव और शृङ्गार दिखाना, पिशाचोंका नाचना आदि घंटों तक स्थाणुने अनेक उपाय किये कि किसी तरह प्रभुका मन ध्यानसे चलायमान करें और उनके क्रोधादि पैदा हो जावे। परंतु किसी तरह भी वे सफल काम न हुए। भगवान् महावीर उसी तरह तपस्यामें दृढ़ रहे, जिस तरह विना उपसर्गके रहते थे। उन्होंने अपनी आत्माको अजर, अमर, अविनाशी, अच्छेद्य अनुभव कर शरीरकी क्रियाओंको पुद्गलकी क्रिया जान कुछ भी क्षोभ न किया। स्थाणु अपनी परीक्षामें हार गये और अनेक प्रकार विनती कर क्षमा प्रार्थना की। फिर यहांसे विहार करते हुए वे कौसांबी नगरी गये। वहां एक सेठ वृषभसेन बहुत धनी थे। उनके यहां प्रभुने आहार ग्रहण किया। इस प्रकार भ्रमण करते हुए वैशाख शुक्ला दशमीको अपराह्नके समय 'जृम्भिका' ग्रामके बाहर 'ऋजुकूला' नामक नदीके किनारे पहुंचे और वहां 'शालमूवृक्ष'के नीचे विराजमान हो कर प्रभु ध्यानमग्न हो गये। वहां भगवान्‌ने चार घातिया कर्मोंको नष्ट कर 'केवलज्ञान' प्राप्त किया।

अनन्तर इंद्रादि देवोंने समवशरण रचा, उसमें प्रभु अंतरीक्ष (अधर) सिंहासन पर विराजे। भगवान्‌के दर्शनार्थ विदेहदेशमें प्रसिद्ध इन्द्रभूति, वायुभूति, अग्नि-भूति नामक बड़े दिग्गज ब्राह्मण पंडित अपने सैकड़ों शिष्योंको ले कर आये और प्रभुके शिष्य हो गये। प्रभुके शिष्योंमें २८००० मुनि और ३६००० अर्जिकाएं तथा एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएं थीं। सबमें मुख्य थे इंद्रभूति, जिनका प्रसिद्ध नाम गौतमस्वामी हुआ। सुधर्माचार्य, वायुभूति, अग्निभूति आदि ११ गण-धर और हुये। अर्जिकाओंमें मुख्य सती चन्दना हुई। भगवान्‌का दिव्य उपदेश जीवोंके पुण्यके उदयसे दिन रातमें चार बार छः छः घड़ीके लिये धाराप्रवाह मेघकी ध्वनिके समान होता था। इस उपदेशको देव, देवी, मनुष्य, स्त्री, पशु आदि समस्त प्राणी द्वादश सभाओंमें बैठ कर अपनी अपनी भाषामें सुनते थे। श्रोताओंमें मुख्य राजगृह नगरके स्वामी राजा श्रेणिक थे। प्रभुने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३० वर्ष तक अनेक देशोंमें इसी तरह धर्मोपदेश करते हुये विहार किया और सब जगहोंसे हिंसाका प्रचार बन्द कर अहिंसाधर्मका प्रचार किया। अनेकोंने मिथ्यात्व त्याग कर सम्यग्ज्ञानका लाभ किया। प्रभुकी दिव्यध्वनिमें जो सारगर्भित उपदेश हुआ था, उसको गौतमस्वामी गणधरने आचारांग आदि द्वादश प्रकारके महान् ग्रन्थोंमें रचा। उन्हींका कुछ अंश आधुनिक प्राप्त ग्रन्थोंमें उपलब्ध है।

कार्त्तिक कृष्णा अमावस्याके प्रातःकाल प्रभु विहार-प्रदेशके पावापुरीके वनसे शुक्लध्यानपूर्वक चार अघातिया कर्मोंका नाश कर मुक्तधाममें चले गये। अपने साध्यकी सिद्धि करके परमात्मपदका लाभ किया। शरीरको छोड़ते ही क्षणमात्र शुद्ध आत्माने उसी ही ध्यानाकारको धारण किये हुये निर्वाण-भूमिकी सीध पर ही जा कर लोकाग्रभागमें निवास किया और अनंत कालके लिये परम सुखी हो गये।

वह स्थान, जहांसे श्रीप्रभुने निर्वाण प्राप्त किया था, सम्पूर्ण जैनियोंका अति माननीय और पूजनीय (विहार स्टेशनसे ६ मील दूर) पोखरपुर (पावापुर) है। उस ग्रामके बाहर एक वृहत् सरोवरके मध्यमें एक जिनमंदिर है, जिसमें भगवान्की चरण-पादुकाएं शोभित हैं। प्रतिवर्ष निर्वाणके दिन (अर्थात् कार्त्तिक कृष्णा अमावस्याको) वहां बड़ा भारी मेला होता है। बहुत दूर दूरके अनेक जैनयात्री वहां दर्शन-पूजनार्थ आते हैं।

जिस दिन महावीर स्वामीको निर्वाण प्राप्त हुआ था, उसी दिन गौतमस्वामीने केवलज्ञानरूप लक्ष्मीकी प्राप्ति की। उस दिन बड़ी भारी पूजनकी महिमा हुई। श्रावकोंने नगर-नगरमें दीपोत्सव किया। तभीसे दीवालीका यह उत्सव प्रचलित है। श्रीमहावीरस्वामीने अपनी आयुके ७२ वर्ष अति ही पवित्रताके साथमें परम अहिंसा धर्मका पालन करते हुए बिताये।

महावीरस्वामी ऐतिहासिक महापुरुष थे और ऐसे धर्मके प्रचारक थे, जो बौद्धधर्मसे भिन्न था। इसका प्रमाण बौद्धोंके प्राचीन ग्रन्थ त्रिपिटक, महावग्ग, महापरिनिव्वासणसुत्त, दिग्घनिकाय आदि ग्रन्थोंमें मिलता है, जिनमें महावीरस्वामीको नातपुत्त (ज्ञातपुत्र) लिखा है। Oldsteeg वोल्डन वर्गकी "The Budhe" नामक पुस्तकमें स्पष्ट लिखा है, कि नातपुत्त महावीरको कहा गया है, कि जिन्होंने निर्ग्रन्थ मतका प्रचार किया है।

महावीरस्वामीकी प्रशंसामें डाक्टर रवीन्द्र नाथ ठाकुरने कहा है—

"Mahavira proclaimed in India the message of salvation that religion is a reality and not a mere social convention;—that salvation comes from taking refuge in that true religion and not from observing the external ceremonies of the community—that religion can not regard any barrier between man and man as an eternal verity."

जिस पवित्र धर्मका उपदेश श्रीमहावीरस्वामीने दिया उसके प्रतापसे भारतका बहुत उपकार हुआ है। यज्ञमें होनेवाली ऐसी पशु-हिंसा, जिससे रक्तकी नदियां बह जाती थीं, बिलकुल बंद हो गई है। इस बातको प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ बालगंगाधर तिलकने भी अपने व्याख्यानमें स्पष्ट कहा है:—"यज्ञ यागादिकोंमें पशुओंका बध हो कर जो 'यज्ञार्थं पशुहिंसा' आजकल नहीं होती है जैनधर्मने यही एक बड़ी भारी छाप (मुहर) ब्राह्मणधर्म पर मारी है। पूर्वकालमें यज्ञके लिये असंख्य पशुओंकी हिंसा होती थी, उसके प्रमाण मेघदूतकाव्य तथा और भी अनेक ग्रन्थोंसे मिलते हैं।"

जैन-पुराणोंमें लिखा है, कि महावीरस्वामी जैनधर्म-प्रचारक मात्र थे, प्रवर्तक नहीं। उनके पूर्व भी ऋषभनाथसे ले कर पार्श्वनाथ पर्यन्त २३ तीर्थङ्कर और हो गये हैं, उन्होंने भी समय समय पर जैनधर्मका विस्तार और प्रचार किया था। जैनधर्म अनादि है।

कुछ भी हो, जैनधर्म हमें सिखलाता है, कि सर्वोच्च पवित्र जीवन ही आत्मोन्नतिका यथार्थ उपाय है और उसकी सत्यता अहिंसामें ही विद्यमान है। जगत्में अहिंसा ही एक ऐसा धर्म है, जो संसारके सम्पूर्ण प्राणिमात्रको सुख-शान्ति पहुंचा सकता है।

ईसासे ५२७ वर्ष पहले भगवान् महावीरने निर्वाण प्राप्त किया था। उसी समयसे जैनोंका वीर-निर्वाण-संवत् प्रचलित हुआ।

"जैनधर्म" शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महावीरा (सं० स्त्री०) महावीर-टाप्। क्षीरकंकोली।

महावीर्य्य (सं० पु०) महद् विश्वसृष्टये विपुलं वीर्यमस्य। १ ब्रह्मा। महद्वीर्य तपोबलमस्य। २ बुद्धदेव। ३ वाराही कंद। ४ वितथके एक पुत्रका नाम। ५ विराजपुत्र। ६ बौद्धभिक्षुभेद। ७ जैनोंके एक अर्हतका नाम। ८ तामस रौच्य मन्वन्तरके एक इन्द्रका नाम। ९ बृहद्रथ वा बृहदुक्थके एक पुत्रका नाम। १० भवन्मन्यु-राजपुत्र। ११ एकवीर वृक्ष। (त्रि०) १२ अतिशय बलयुक्त, बड़ा भारी बलवान्।

महावीर्य्या (सं० स्त्री०) महावीर्य-टाप्। १ सूर्यकी पत्नी संज्ञाका एक नाम। २ वनकार्पासी वनकपास। ३ महाशतावरी। ४ शुक्लदूर्वा, सफेद दूब।

महाबुद्ध—नेपालकी बुद्धमूर्त्तिभेद।

महावृक्ष (सं० पु०) महान् वृक्षः। १ स्नुहीवृक्ष, थूहर। २ सेहुण्डवृक्ष, सेंहुड़का पेड़। ३ करंजवृक्ष। ४ तालवृक्ष, ताड़का पेड़। ५ महापीलु वृक्ष। ६ बृहद्वृक्ष, बड़ा पेड़।

महावृद्ध (सं० त्रि०) अतिशय वृद्ध, बहुत बूढ़ा।

महावृन्द (सं० क्लो०) संख्याभेद। लाख वृन्दका एक महावृन्द होता है।

महावृष (सं० पु०) १ सुरम्य पर्वतके पासका एक तीर्थ। २ जातिभेद।

महावृषा (सं० स्त्री०) मुशलीभेद, सिया मुशली।

महावृहती (सं० स्त्री०) महावार्त्ताकी, बन बैंगन।

महावेग (सं० पु०) महान् अमोघो दुर्वारो वा वेगो यस्य। १ शिव, महादेव। २ अतिशय जव, बड़ा बेग। ३ गरुड़। ४ मर्कटविशेष, बन्दर। (त्रि०) ५ अतिशय वेगयुक्त, प्रबल वेगशाली।

"विकर्षन्तौ महावेगौ गर्जमानौ परस्परम्।
पश्य त्वं युधि विक्रान्तावतौ च नररात्तसौ॥"
(भारत १।१५५।१२)

महावेगलब्धस्थान—गरुड़ोंके एक राजाका नाम।

महावेगवती (सं० स्त्री०) महावेग अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व, स्त्रियां ङीष्। १ अति वेगविशिष्टा, जिसमें खूब वेग हो। २ वृक्षविशेष।

महावेगा (सं० स्त्री०) स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका-का नाम।

महावेदि (सं० स्त्री०) श्रेष्ठ वेदी, पीठरूप उच्चस्थान।

महावेध (सं० पु०) योगप्रक्रियाके अनुसार हस्तपादादिका संस्थानभेद।

महावेल (सं० त्रि०) १ महातरङ्ग वा स्रोतयुक्त। २ विस्तृत तीरयुक्त।

महावैपुल्य (सं० क्लो०) अतिशय विपुलता।

महावैर (सं० क्लो०) चिरशत्रु, बड़ा भारी दुश्मन।

महावैराज (सं० स्त्री०) सामभेद।

महावैश्वदेव (सं० क्लो०) ग्रहभेद।

महावैश्वनरव्रत (सं० क्लो०) सामभेद।

महावैश्वामित्र (सं० क्लो०) सामभेद।

महावैष्णव (सं० क्लो०) सामभेद।

महाव्याधि (सं० पु०) महांश्चासौ व्याधिश्चेति। महारोग कुष्ठादि। महारोग देखो।

महाव्याहृति (सं० स्त्री०) महती चासौ व्याहृतिश्चेति। प्रणव और स्वाहायुक्त तीन व्याहृति। होम करनेमें महाव्याहृति होम करना होता है। "ओं भूः स्वाहा, ओं भुवः स्वाहा, ओं स्वः स्वाहा" इन तीन व्याहृतियोंको महाव्याहृति कहते हैं। वैदिक होम करनेमें यह महाव्याहृति होम करना ही होगा। सिर्फ तान्त्रिक होममें महाव्याहृति होम नहीं करना होता।

"ओंकारपूर्विकास्तिस्रः महाव्याहृतयोऽव्ययाः।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयो ब्रह्मणो मुखम्॥"
(मनु २।८१)

महाव्युत्पत्ति (सं० स्त्री०) भोट भाषामें रचा गया एक संस्कृत-अभिधान।

महाव्यूह (सं० पु०) १ एक प्रकारकी समाधि। २ देवपुत्रभेद।

महाव्रण (सं० क्लो०) महच्च तत् व्रणश्चेति। दुष्टव्रण। यह रोग महापातकज है। इसके होनेसे प्रायश्चित्त करना उचित है। दुष्टव्रण देखो।

महाव्रत (सं० क्लो०) महच्च तत् व्रतञ्च ति। १ द्वादशवार्षिक व्रत, वह व्रत जो बारह वर्षों तक चलता रहे। २ आश्विनकी दुर्गा-पूजा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"महाव्रतं महापुण्यं शङ्कराद्यैरनुष्ठितम् ।
कर्त्तव्यं सुरराजेन्द्र देवीभक्तिसमन्वितैः ॥" (तिथितत्त्व)

३ माघमासमें जब सूर्य उदय होते हैं उस समय का गंगा-स्नान ।

"वासुदेवं हरिं कृष्णं श्रीधरञ्च स्मरेत्ततः ।
दिवाकर जगन्नाथ प्रभाकर नमोऽस्तु ते ।
परिपूर्णं कुरुष्वेदं माघस्नानं महाव्रतम् ॥"
(मलमासतत्त्व)

(त्रि०) ४ महाव्रतधारी, महाव्रत करनेवाला ५ श्रेष्ठव्रतमात्र, पाशुपतादि व्रत ।

महाव्रतवत् (सं० त्रि०) महाव्रत अस्त्यर्थे मतुप मस्य व । महाव्रत नामक सामविशिष्ट ।

महाव्रतिक (सं० त्रि०) १ महाव्रतपालनकारी, महाव्रत करनेवाला । २ पाशुपत व्रतावलम्बी, जो पाशुपतव्रत करता हो ।

महाव्रतिन् (सं० पु०) महाव्रतं योगनियमाद्यनुष्ठानादिकमस्यातीति व्रत इनि । १ शिव, महादेव । २ उरस्कट । (त्रि०) २ महाव्रतयुक्त, जिसने महाव्रत धारण किया हो ।

"एतच्छ त्वापि समशास्ते महाव्रतिनस्तदा ।
ऊचुर्निश्चयदत्तं ते चत्वार संहयायिनः ॥"
(कथासरित्सार ३७।५६)

महाव्रती (सं० त्रि०) महाव्रतिन् देखो ।

महाव्रतीय (सं० त्रि०) महाव्रतसम्बन्धीय ।

महाव्रात (सं० त्रि) महालोकयुक्त, मनुष्योंकी भीड़ ।

महाव्रीहि (सं० पु०) व्रीहिधान्य विशेष, साठी धान ।

महाशकुनि (सं० पु०) चक्रवर्त्तिभेद ।

महाशक्ति (सं० पु०) महत्यः शक्तयः मातृगणादयो महद्वा सामर्थ्यञ्च यस्य । १ कार्त्तिकेय । महती शक्तिः । २ अतिशय पराक्रम, अधिक बल । ३ शिव, महादेव । ४ कृष्णपुत्रभेद, पुरानानुसार कृष्णके एक पुत्रका नाम । (त्रि०) ५ महापराक्रमशाली, बड़ा बलवान ।

महाशङ्ख (सं० पु०) महान् शङ्ख इव वृहच्छुभ्रत्वात् । १ संख्याविशेष, एक बहुत बड़ी संख्याका नाम । दश निखर्वका एक महाशङ्ख होता है । २ ललाट । ३ निधिविशेष, नौ निधियोंमेंसे एक । ४ कनपटीका हड्डी । इस महाशङ्खकी मालासे किया हुआ जप प्रशस्त होता है ।

"महाशङ्खमयी माला नीलसारस्वते विधौ ।
नृललाटास्थिखण्डेन रचिता जपमालिका ।
महाशङ्खमयी माला ताराविद्याजपे प्रिये ॥" (तन्त्रसार)

५ बड़ा शंख । ६ सर्पभेद । ७ मनुष्यकी ठठरी ।

महाशङ्खद्रावक (सं० पु०) प्लीहा और यकृत् रोगनाशक औषधभेद । प्रस्तुत प्रणाली—इमलीकी छाल, पीपलकी छाल, सीजकी छाल, अकवनकी छाल और अपामार्ग, हरएकका अलग अलग क्षारजल तैयार करके लवण बनावे । पीछे सोहागा, यवक्षार, साज्जिक्षार, पञ्चलवण, हींग, हरताल, लवङ्ग, निशादल, जायफल, गोदन्ती, सोनामक्खी, गंधबोल, त्रिष, समुद्रफेन, सोरा, फिटकरी, शङ्खचूर्ण, शङ्खनाभिचूर्ण, प्रस्तरचूर्ण, मैनसिल और हीराकस, इनका समान भाग ले कर चूर्ण करे । अनन्तर बेतसके रसमें भावना दे कर उसे कांचकी कुप्पी में रखे । बादमें कपड़ेसे ढक कर उसे सात दिन तक गरम स्थानमें रख छोड़े । इसके बाद धीमी आंचमें वारुणीयन्त्रमें पका कर नीचे उतार ले । ठण्ढा होने पर किसी कांचके बरतनमें जल डाल कर उसीमें इसको अच्छी तरह रख दे । पानके साथ प्रतिदिन एक रत्ती सेवन करनेसे खांसी, दमा, प्लीहा, अजीर्ण, ग्रहणी, रक्तपित्त, गुल्म, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, आठों प्रकारका शूल, आमवात, वातरक्त, खञ्जवात, धनुष्टङ्कार, उदरामय, आमाशय, क्रिमिकोष्ठता आदि रोग नष्ट होते हैं । यह ऐसा अग्निवर्द्धक है, कि ठूस कर खा लेनेके बाद यदि इसका सिर्फ रत्ती भर सेवन किया जाय, तो फौरन उसे पचा देता है । (भैषज्यरत्नाकर)

महाशङ्खवटी (हिं० स्त्री०) उदररोगमें उपकारी औषधभेद । प्रस्तुत प्रणाली—शङ्खभस्म, पञ्चलवण, इमलीके छिलकेकी राख, त्रिकटु, हींग, विष, पारा और गंधक इनके बराबर बराबर भागको एकत्र कर अपाङ्ग और चितामूलके काढ़ेमें, नीबूके रसमें तथा अम्लवर्ग द्वारा भावना दे । औषधमें अम्लरस दिखाई देनेसे भावना देनेकी जरूरत नहीं । इस औषधमें लोहा और रांगा मिलानेसे महाशङ्खवटी बनती है । प्रतिदिन दो रत्तीकी गोली पानके साथ खानेसे अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अर्श, पाण्डु, प्रमेह,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शूल, वातरक्त, महाशोथ आदि रोग जाते रहते हैं। भर पेट खाया हुआ अन्न सिर्फ एक गोली खानेसे पच जाता है।

दूसरा तरीका—उक्त द्रव्यसमूहको पूर्वोक्तरूपसे पाक कर गोली बनावे। इसमें लोहा और रांगा मिलानेकी आवश्यकता नहीं। इसके सेवनका समय भोजनके बाद बतलाया गया है। इससे अर्श और ग्रहणी आदि रोगोंका नाश तथा अग्निका अतिशय उद्दीपन होता है।

सारकलिकाधृत महाशङ्खवटीकी प्रस्तुत प्रणाली और प्रकारकी है। जैसे,—पिपरामूल, चितामूल, दन्तिमूल, पारद, गंधक, पीपल, यवक्षार, साचिक्षार, सोहागा पंचलवण, मिर्च, सोंठ, विष, वनयमानी, गुलञ्च, हींग और इमलीके छिलकेकी भस्म, प्रत्येक १ तोला करके, शङ्खभस्म २ तोला, इन्हें अम्लवर्गके रसमें भावना दे कर बेरकी आंठीके समान गोली बनावे। यह खट्टे अनारके रस, नीबूके रस, मट्ठ, दहीके पानी, सीधु, कांजी अथवा उष्ण जलके साथ सेवनीय है। यह अग्निवर्द्धक तथा अर्श, ग्रहणी, क्रिमि, पाण्डु, कमला आदि रोगनाशक है। पथ्य शशक और पणादिका जूस बतलाया गया है। (भैषज्यरत्नाकर)

महाशठ (सं० त्रि०) महांश्चासौ शठश्चेति। १ अतिशय धूर्त, बड़ा धोखेबाज। (पु०) २ राजधुस्तूर, पीला धतूरा।

महाशण (सं० पु०) स्वनामख्यात वृक्षविशेष, सन नामक पौधा।

महाशणपुष्पिका (सं० स्त्री०) शणपुष्पी नामक क्षुपविशेष, बनसनई नामका पौधा। इसका गुण—कषाय, उष्ण और रसनियामक। (राजनि०)

महाशणा (सं० स्त्री०) आरण्यशण, बनसनई।

महाशता (सं० स्त्री०) महत् शतञ्च मूलानि यस्याः, टाप्। महाशतावरी, बड़ी शतावरी।

महाशतावरी (सं० स्त्री०) महती चासौ शतावरी चेति। वृहच्छतावरी, बड़ी शतावरी। पर्याय—शतवीर्य्या, सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुष दन्तिका, वीरा, तुङ्गिनी, बहुपत्रिका, ऊर्द्ध्वकण्ठी, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्य्या। इसका गुण—मधुर, पित्तनाशक, शीतल, तिक्त, मेह, कफ और वातघ्न, रसायन तथा वश्यताकर। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतसे यह मेध्य, हृद्य, वृष्य, रसायन, अर्श और ग्रहणी रोग नाशक मानी गई है।

महाशन (सं० पु०) १ असुरभेद। (त्रि०) २ बहुभोजी, पेटू।

महाशफर (सं० पु०) पार्वतमीन, चेल्हवा मछली।

महाशब्द (सं० पु०) महांश्चासौ शब्दश्चेति। १ वृहच्छब्द, भयानक शब्द। (त्रि०) २ महाशब्दयुक्त।

महाशमी (सं० स्त्री०) बड़ी शमीका पौधा।

महाशम्भु (सं० पु०) महाशिव।

महाशय (सं० त्रि०) महान् आशयः अभिप्रायः मनो वा यस्य। १ महानुभाव, उच्च आशयवाला। पर्य्याय—महेच्छ, उदात्त, महामनाः, उन्नट, उदार, उदीर्ण, महात्मा।

(पु०) महान् आशयः जलानामाधारः। २ समुद्र।

महाशयन (सं० क्ली०) महाशय्या।

महाशय्या (सं० स्त्री०) महती चासौ शय्या चेति। राजशय्या, राजाओंकी शय्या या सिंहासन।

महाशर (सं० पु०) महांश्चासौ शरश्चेति। स्थूलशर, रामशर। रामशर देखो।

महाशल्क (सं० पु०) महान् वृहत् शल्को यस्य। १ चिङ्गट मत्स्य, झिंगा मछली। २ वृहच्छल्क, बड़ा छिलका। (त्रि०) ३ वृच्छल्कयुक्त, जिसमें बड़े बड़े छिलके हों।

महाशस्त्र (सं० क्ली०) भीषण वा तीक्ष्ण शस्त्र।

महाशाक (सं० क्ली०) महच्च तत् शाकञ्चेति। वृहत् शाकविशेष।

महाशाक्य (सं० पु०) श्रेष्ठ शाक्यवंश।

महाशाख (सं० त्रि०) वृहत् शाखायुक्त, जिसमें बड़ी बड़ी शाखाएं हों।

महाशाखा (सं० स्त्री०) महती शाखा यस्याः। नागबला, गंगेरन।

महाशान्ति (सं० स्त्री०) विघ्न बाधाओंको दूर करनेके लिये मन्त्रका अनुष्ठान।

महाशाल (सं० पु०) १ बड़ा घर। २ महागृहस्थ। (त्रि०) ३ वृहद् गृहयुक्त, बड़ा घरवाला।

महाशालि (सं० पु०) महांश्चासौ शालिश्चेति। स्थूल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शालि, मोटा धान। पर्याय—सुगन्धिक। इसका गुण—गुरु, बलकर, चक्षु हितकर तथा बलवर्द्धक।
(अत्रिस० १५ अ०)

महाशालीन (सं० त्रि) अति विनीत, बड़ा नम्र।

महाशालवण (सं० क्ली०) व्याधि दूर करनेका एक उपाय।

महाशासन (सं० पु०) १ राजादेश, राजाकी आज्ञा। २ सचिवभेद, राजाका वह मन्त्री जो उसकी आज्ञाओं या दानपत्रों आदिका प्रचार करता हो।
(त्रि०) ३ महाशक्तियुक्त, अत्यन्त बलवान्।

महाशिर—स्वनामख्यात मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। इसका मस्तक देहकी अपेक्षा बड़ा होता है, इसीसे इसका महाशिर नाम हुआ है। कहीं कहीं इसे महाशेल वा महाशोल भी कहते हैं।

उत्तर-ब्रह्मपुत्र, गंगा, काश्मीरकी तोहोनदी, यमुना और पंजाबकी दूसरी दूसरी नदियोंमें यह मछली पाई जाती है।

इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है। इस कारण बहुतेरे पहाड़ी नदीके किनारे आ इसका शिकार करते हैं। एक एक मछली आध मनसे अधिक बोझल होती है। इसके दांत बहुत तेज होते हैं। घोंघा, केंकड़ा और तरह तरहकी मछली ही इसका प्रधान भोजन है। यह कीड़े, फतिंगेको भी बड़े चावसे खाती है। हरिद्वारके स्नानघाटमें पिण्डपूजाके समय ये सब मछलियां पिण्ड खाने आती हैं।

महाशिरस् (सं० पु०) १ एक प्रकारकी मछली। २ फणवाले सांपकी एक जाति। ३ गोधेयक जातिभेद, ग्वालोंकी एक जाति।

महाशिरःसमुद्भव (सं० पु०) जैनियोंके छठे वासुदेव।

महाशिरोधर (सं० त्रि०) वृहद् ग्रीवा, लम्बी गरदन।

महाशिला (सं० स्त्री०) शस्त्रभेद, एक हथियारका नाम।

महाशिव (सं० पु०) महांश्चासौ शिवः कल्याणरूपी च। महादेव।

महाशीतवती (सं० स्त्री०) बौद्धोंकी पांच महादेवियोंमेंसे एक देवीका नाम।

महाशीता (सं० स्त्री०) महत्यधिका शीता शीतवीर्य्या। १ शतमूली। २ वनस्पतिविशेष। (त्रि०) ३ अतिशीत वीर्य्ययुक्त, जिसका वीर्य बहुत ठण्ढा हो।

महाशीर्ष (सं० पु०) शिवानुचरभेद, शिवके एक अनुचरका नाम।

महाशील (सं० पु०) जन्मेजयके एक पुत्रका नाम।

महाशुक्ति (सं० स्त्री०) मुक्ताप्रसविनी शुक्ति, वह सीप जिससे मुक्ता निकलती है। २ वृहत् शुक्ति, बड़ी सीप।

महाशुक्ला (सं० स्त्री०) महती चासौ शुक्ला शुक्लवर्णा च। १ सरस्वती। (त्रि०) २ अतिशुभ्रवर्णयुक्त, जो खूब उजला हो।

महाशुण्डी (सं० स्त्री०) हाथीसूंड़ नामक क्षुप।

महाशुभ्र (सं० क्ली०) महान् शुभ्रो वर्णोऽस्य। १ रजत, चांदी। (त्रि०) २ अतिशय शुभ्रवर्णयुक्त, जो खूब उजला हो।

महाशूद्र (सं० पु०) महान् शूद्रः। १ आभीर, ग्वाला। २ शूद्रोंके मध्य ग्वाला या नाई।

महाशूद्री (सं० स्त्री०) महाशूद्रस्य भार्य्या इति (अजाद्यतष्टाप्। पा ४।१।४) इत्यत्र महत् पूर्वस्य प्रतिषेधः इति काशिकोक्तया पुंयोगलक्षणा ङीष्। आभीरी, ग्वालिन।

महाशून्य (सं० क्ली०) आकाश।

महाशून्यता (सं० स्त्री०) महाशून्यस्य भावः तल्-टाप्। १ व्योमका भाव। २ योगियोंकी निरुद्धावस्था।

महाशैरीष (सं० क्ली०) सामभेद।

महाशैल (सं० पु०) पर्वतभेद।

महाशोण (सं० पु०) नदीभेद, सोन नदी।

महाशोल (सं० पु०) एक प्रकारकी मछली। यह मछली स्वादिष्ट तथा बलकर मानी गई है।

महाशौण्डी (सं० स्त्री०) महती चासौ शौण्डी चेति। सफेद किणिही वृक्ष, कटभीका पेड़।

महाशौषिर (सं० पु०) मुखक्षतरोगभेद।

महाश्मन् (सं० पु०) पद्मराग मणि।

महाश्मशान (सं० क्ली०) महच्च तत् श्मशानञ्चेति, अत्र हि जीवानां मरणे समूल-कर्मनाशतः पुनर्जन्ममरणाद्यभावादस्य तथात्वं। काशी। यहां मृत्यु होनेसे सब पाप विनष्ट होते हैं। कर्मके फलसे जीवोंके जन्म और मृत्यु होती है। यदि मृत्युसे सब प्रकारके कर्मोंका ध्वंस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता है, तो फिर जन्म-मृत्युकी सम्भावना नहीं रहती।

महाश्यामा (सं० स्त्री०) महती चासौ श्यामा चेति। १ श्यामालता। २ शिंशपा वृक्ष, शीशमका पेड़। ३ वृक्षपादिवृक्ष।

महाश्रम (सं० पु०) तीर्थभेद। यहां स्नान करनेसे सब पाप नाश होते हैं।

महाश्रमण (सं० पु०) महान् श्रेष्ठश्चासौ श्रमणो बौद्धभिक्षुश्चेति। भगवान् बुद्धका एक नाम। पर्याय—सर्वार्थसिद्ध, कुलिशासन, गोपेश।

महाश्रय (सं० पु०) अक्षोट वृक्ष, अखरोटका पेड़।

महाश्रावक (सं० पु०) शाक्य बुद्धका प्रधान शिष्य।

महाश्रावणिका (सं० स्त्री०) महती चासौ श्रवणिका चेति। स्वनामख्यात महाक्षुप, गोरखमुण्डी। पर्याय—महामुण्डी, लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोड़ा, चोड़ा, पलङ्कषा, नदीकदम्ब, मुण्डाख्या, महामुण्डणिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकदम्ब, अलम्बुषा। इसका गुण—उष्ण, तिक्त, ईषत, मधुर, वायुप्रशमक, स्वरवर्द्धक, रेचक तथा रसायन। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतसे इसका पर्याय—मुण्डी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणहा, मुण्डितिका, श्रवणशीर्षिका, महाश्रवणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, तपस्विनी। इसका गुण—पाकमें कटु, उष्णवीर्य, मधुर, लघु, मेध्य, पाण्डु, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा और मेदोरोगनाशक। (भावप्र०)

महाश्रावणी (सं० स्त्री०) महाश्रावणिका, गोरखमुण्डी।

महाश्री (सं० स्त्री०) महती श्रीरिव। बुद्धशक्तिविशेष, बुद्धकी एक शक्तिका नाम। पर्याय—तारा, ओंकारा, स्वाहा, श्री, मनोरमा, तारिणी, जया, अनन्ता, शिवा, लोकेश्वरात्मजा, खदूरवासिना, भद्रा, वैश्या, नीलसरस्वती, शङ्खिनी, महातारा, वसुधारा, धनन्ददा, त्रिलोचना, लोचना।

महाश्रुति (सं० पु०) गन्धर्वभेद।

महाश्व (सं० पु०) श्रेष्ठ अश्व, बड़ा तथा सुन्दर घोड़ा।

महाश्वशाला (सं० स्त्री०) राजाकी अश्वशाला या अस्तबल।

महाश्वास (सं० पु०) १ श्वास रोगभेद, एक प्रकारका श्वास रोग। २ मृत्युकालीन चरमश्वास, वह अन्तिम सांस जो मरनेके समय चलता है।

महाश्वासारिलौह (सं० पु०) खांसी दमे आदिकी एक महौषधि। प्रस्तुत प्रणाली—लोहा ४ तोला, अबरक १ तोला, चीनी ४ तोला और मधु ४ तोला, इन्हें तथा त्रिफला, मुलेठी, दाख, पीपल, बेरकी आंठीका गूदा, वंशलोचन, तालीशपत्र, विड़ङ्ग, इलायची, कुट और नागेश्वर, नामक द्रव्य, इनके एक तोले सूक्ष्म चूर्णको लोहेकी खरलमें अच्छी तरह पीसे। इसको मात्रा आध माशेसे २ माशे तक बतलाई गई है। मधुके साथ इसका सेवन करनेसे महाश्वास, पांच प्रकारकी खांसी और रक्तपित्तादि रोग जाते रहते हैं।

(भैषज्यरत्नाकर हिक्काश्वसाधि०)

महाश्वेत (सं० पु०) १ अतिशय श्वेत, बहुत साफ। २ महाशण पुष्पिका, सफेद चिचड़ा। ३ शुभ्र शर्कराखण्ड, चीनी।

महाश्वेतघण्टी (सं० स्त्री०) महाराणापुष्पका पेड़।

महाश्वेता (सं० स्त्री०) महत्यतिशया श्वेता, महान् श्वेतो वर्णो यस्या वा। १ सरस्वती। २ दुर्गा।

"श्वेतं शुक्लं शिवस्थानं यस्माच्चेह समागता।
महाभाव समुत्पन्ना महाश्वेता ततः स्मृता॥"

(देवीपु० ४५ अ०)

३ कृष्ण भूमिकुष्माण्ड, भुइँकुम्हड़ा। पर्याय—क्षीरविदारिका, क्षीरविदारी, ऋक्षगन्धिका, क्षीरवल्ली, क्षीरकन्दा, क्षीरिका। ४ श्वेतापराजिता, सफेद अपराजिता। ५ सिता, चीनी। ६ श्वेत किणिही वृक्ष, सफेद चिचड़ाका पेड़। ७ कादम्बरी-वर्णित हंस नामक गन्धर्वराजकी स्त्री गौरीके गर्भसे उत्पन्न कन्या।

महाषष्टिक (सं० पु०) साठी धान।

महाषष्ठी (सं० स्त्री०) महती चासौ षष्ठी च महामङ्गलदात्री षष्ठी वा। दुर्गा। ये बालककी रक्षा करती हैं इसलिये इनका महाषष्ठी नाम पड़ा है। महाषष्ठीकवच लिख कर बालकके दाहिने हाथमें बांधनेसे उसकी सारी विपद् दूर होती है।

कवचका मन्त्र,—"ओं दुं दुं दुं दुर्गे दुर्गे नाशय नाशय हन हन दह दह मथ मथ वध वध सर्वहिंसान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाषष्ठीरूपेण बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविनं कुरु कुरु श्रीं ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ॥" (योगिनीतन्त्र)

महाषट्पलघृत (सं० पु०) घृतौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—घी ४ सेर, दशमूलका काढ़ा ४ सेर, अदरकका रस ४ सेर, चुक्र ४ सेर, दूध ४ सेर, दहीका पानी ४ सेर, कांजी ४ सेर ; चूर्णके लिये सचल लवण, पंचकोल, सैन्धव लवण, हवूष, विटलवण, वनयमानी, यवक्षार, हींग, जीरा, उद्भिद्लवण, मंगरेला और यमानी प्रत्येक ४ तोला। इस घृतका अन्न वा केवल घृतके साथ सेवन करना चाहिये। क्रिमि, ज्वर और ग्रहणी आदि रोगोंमें यह बहुत उपकारी है।

(भैषज्यरत्नाकर, ग्रहण्यधिकार)

महाषोढ़ान्यास (सं० पु०) मुद्राभेद।

महाष्टमी (सं० स्त्री) महत्या महादेव्या अष्टमी, महती अष्टमीति वा। आश्विन मासकी शुक्लाष्टमी। चान्द्र आश्विन मासमें ही यह अष्टमी होगी। यह तिथि भगवती दुर्गादेवीको अतिशय प्रिय है, इस कारण इसे दुर्गाष्टमी भी कहते हैं।

"आश्विने शुक्लपक्षस्य भवेद् या अष्टमी तिथिः।
महाष्टमीति सा प्रोक्ता देव्याः प्रीतिकरा परा ॥"

(कालिकापुराण ५९ अ०)

इस महाष्टमी तिथिमें भगवती दुर्गाका तरह तरहके उपहार तथा मांसादि द्वारा पूजन करना चाहिये। इस तिथिमें पूजा और उपवास दोनों ही करने होते हैं। बालक, वृद्ध और रोगीको छोड़ कर और सबोंको उपवास करना उचित है। परन्तु उपवासमें विशेषता यह है, कि जो पुत्रवान् व्यक्ति हैं उन्हें इस अष्टमी तिथिमें निरम्बु उपवास नहीं करना चाहिये। बाकी सबोंके लिये निरम्बु उपवास बतलाया गया है। महाष्टमीका उपवास करनेसे सभी पाप विनष्ट हो कर पुण्यका संचार होता है। कहा भी है,—

पगलेकी चौदस, पगलीकी आठ,
ए करिये जनम काट। (खना)

पगलेकी चौदस अर्थात् शिवचतुर्दशी तथा पगलीकी आठ या महाष्टमी करके जन्म कटावो अर्थात् यह करनेसे सभी पाप नष्ट होते हैं। अष्टमीका उपवास करके नवमीके दिन पारण करना होता है। इस महाष्टमी तिथिमें देवीके उद्देशसे विभवानुसार दो पहर रातमें पूजा करनी चाहिये। इस समयकी पूजा अनन्त फल देनेवाली है। (तिथितत्त्व)

महासंख्या (सं० स्त्री०) बहुत बेशी संख्या।

महासंज्ञा (सं० स्त्री०) एक बहुत बड़ी संख्यका नाम।

महासंवितिकाफल (सं० क्ली०) काबुलमें होनेवाला सेव-फल।

महासंस्कारी (सं० पु०) १७ मात्राओंके छन्दोंकी संज्ञा।

महासती (सं० स्त्री०) सच्चरिता पतिव्रता स्त्री।

महासतोबृहती (सं० स्त्री०) वैदिक छन्दोभेद, एक वैदिक छन्दका नाम।

महासतोमुखा (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष, एक प्रकारका छन्द।

महासत्ता (सं० स्त्री०) वस्तुका यथार्थ अस्तित्व।

महासत्त्र (सं० क्ली०) सोमयोगभेद।

महासत्त्व (सं० पु०) १ महाबल वा महाशक्ति। २ वृहदाकार जीव, बड़े आकारका जीव। ३ एक बोधिसत्त्वका नाम। ४ कुबेर। ५ शाक्यमुनि। (त्रि०) ६ सत्त्वगुणशाली, जिसका अन्तःकरण उच्च हो।

महासत्य (सं० पु०) यमराज।

महासन (सं० क्ली०) सिंहासन।

महासन्धिविग्रह (सं० पु०) शान्तिस्थापन और युद्धसंघटनादि कार्यका प्रधान मन्त्री।

महासन्न (सं० पु०) महान् अतिशयः सन्नो विषण्णः, कुदेहवत्त्वात्, यद्वा महतो हिमाद्रेर्महादेवस्य वा आसन्नः निकटवर्त्ती। १ कुबेर। २ अति निकट, बहुत करीब।

महासप्तमी (सं० स्त्री०) आश्विनकी शुक्ला सप्तमी।

महासफर (सं० पु०) महांश्चासौ सफरश्चेति। १ वृहत् प्रोष्ठी मत्स्य, बड़ी सौरी मछली। २ पाव त्य मत्स्य, चेल्हवा मछली।

महासमङ्गा (सं० स्त्री०) महती चासौ समङ्गा च। वृक्ष विशेष, कंगही वा कंघी नामक पौधा। पर्याय—ओदनिका, ओदनाह्वया, वृक्षका, रुहा, वृद्धवला, तण्डुला, भुजङ्गजिह्वा शीतपाकिनी, शीतवला, शीतावला, वलीतरा, वला, खिरहिट्टी, व्यालजिह्वा। इसका गुण—मधुर, अम्ल, दोषत्रयनाशक। (राजनि०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महासमाप्त (सं० पु०) अत्यूर्द्ध संख्याभेद, एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महासमुद्र (सं० पु०) महासागर।

महासम्भव (सं० पु०) जगद्भेद।

महासम्मत (सं० त्रि०) १ अतिशय सम्मानित, बड़ा आदरणीय। २ बौद्धमतसे वर्त्तमान युगका प्रथम धरणीश्वर।

महासम्मतीय (सं० पु०) बौद्धसम्प्रदायभेद।

महासम्मोहन (सं० त्रि०) १ अतिशय मुग्धताकर, बहुत मुग्ध करनेवाला। (क्ली०) २ तन्त्रभेद।

महासरस्वती (सं० स्त्री०) श्रेष्ठा सरस्वती।

महासरोज (सं० क्ली०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम। दश निखर्वका एक पद्म और दश पद्मका एक महापद्म होता है।

महासर्ग (सं० पु०) महांश्चासौ सर्गश्चेति। जगत्की वह रचना जो महाप्रलयके उपरान्त फिर होती है।

महासर्ज (सं० पु०) महांश्चासौ सर्जश्च। १ असन-वृक्षभेद, पीतशालका पेड़। २ पनसवृक्ष, कटहलका पेड़।

महासर्प (सं० पु०) १ फणवाला साँप। २ सामभेद।

महासह (सं० पु०) सहते इति सह-अच्, महान् सहः। कुब्जकवृक्ष, बाणपुष्प।

महासहस्रप्रमर्द्द (सं० पु०) १ बौद्धदेवताभेद। २ बौद्ध-सूत्रभेद।

महासहस्रप्रमर्द्दिनी (सं० स्त्री०) महासहस्रप्रमर्द्द देखो।

महासहा (सं० स्त्री०) महासह-स्त्रियां टाप्। १ माष-पर्णी, जंगली उड़द। २ अम्लानवृक्ष, इमलीका पेड़।

महासांख्यायन (सं० पु०) महासाङ्खका गोत्रापत्य।

महासांघिक (सं० पु०) बौद्धसम्प्रदायभेद।

महासागरप्रभागम्भीरधर (सं० पु०) गरुड़ोंके एक राजा-का नाम।

महासाधनभाग (सं० पु०) १ राजकार्यका प्रधान। (Executive minister or officer) २ प्रधान मन्त्री।

महासाधु (सं० त्रि०) बड़ा साधु।

महासाध्वी (सं० स्त्री०) महासती, पतिव्रता।

महासान्तपन (सं० क्ली०) महत् सान्तपनं। व्रतविशेष, जाबालके मतसे सात दिनमें होनेवाला एक व्रत। इस व्रतका अनुष्ठान करनेमें पहले दिन गोमूत्र, दूसरे दिन गोबर, तीसरे दिन दूध, चौथे दिन दही, पांचवें दिन घी, छठे दिन कुशोदक पान और सातवें दिन निरम्बु (बिना पानी पी कर) उपवास करना होता है; यह व्रत बहुत कष्टसाध्य है। प्रायश्चित्तविवेकमें लिखा है, कि जो व्रत सात दिनमें शेष होता उसे सान्तपन और उससे तिगुने अर्थात् इक्कीस दिनमें शेष होता उसे महासान्तपन कहते हैं। जहां सात दिनमें महासान्तपन बतलाया गया है वहां सान्तपन दो दिनमें और जहां सात दिनमें सांत-पन कहा है वहां महासान्तपन इक्कीस दिनमें शेष होता है। यह महासान्तपन व्रत करनेसे भारीसे भारी पाप नष्ट होता है। अशक्तोंके लिये छः धेनुदान महासान्त-पन व्रत करनेके समान फलदायक है।* सान्तपन देखो।

महासान्धिविग्रहिक (सं० पु०) महांश्चासौ सान्धि-विग्रहिकश्चेति। राज्यका शान्तिस्थापक और युद्धका व्यवस्थापक सचिव वा मन्त्री।

महासामन् (सं० क्ली०) सामभेद।

महासामन्त (सं० पु०) सामन्त प्रदेशके अधीन राजा।

महासामराज (सं० क्ली०) सामभेद।

महासार (सं० पु०) महान सारः स्थिरांशो यस्य। दुष्खदिर, एक प्रकारका खैर।

महासारथि (सं० पु०) १ अरुण। २ श्रेष्ठ सारथि।

---

* "पृथक् सान्तपनैर्द्रव्यैः षड्हंसोपवासकः।
सप्ताहेनैव कृच्छ्रोऽयं महासान्तपनः स्मृतः॥
एतत् सप्ताहसाध्यं जाबालः—
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
एकैकं क्रमशोऽश्नीयादहोरात्रमभोजनम्॥
कृच्छ्रः सान्तपनो नाम सर्वपापप्रणाशनः।
एकैकमेतदेवं हि त्रिरात्रमुपयोजयेत्॥
त्र्यहञ्चोपवसेदन्त्यं महासान्तपने विधिः॥
एष सप्ताहसाध्या सान्तपनमुक्ता एकविंशति दिनसाध्यं महा-सान्तपनमुक्तम्। महासान्तपनं धेनुषट्कदानसमम्। जाबालोक्त महासान्तपनं एकविंशतिदिनसाध्यत्वेन सप्ताहसाध्यसान्तपनात् महासान्तपनधेनुषट्कं ज्ञेयम्।" (प्रायश्चित्तविवेक)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महासार्थ (सं० पु०) दलबद्ध यात्री, दल बांध कर चलनेवाला मुसाफिर।

महासावेतस (सं० क्ली०) सामभेद।

महासाहस (सं० क्ली०) महच्च तत् साहसञ्चेति। १ अति बलात्कारकृत कार्य्य, वह काम जो जबरदस्ती किया गया हो। २ अतिशय दम्भ, बड़ा घमण्ड। ३ अति दुष्कृत कर्म, बहुत खराब काम। ४ अतिशय द्वेष, बड़ी ईर्ष्या। ५ महाबल, खूब ताकत।

महासाहसिक (सं० पु०) महानतिशयः साहसिकः। १ चौर, चोर। (त्रि०) २ अत्यन्त साहसयुक्त, बडा साहसी। ३ बलपूर्वकापहारक, जबरदस्ती धर पकड़ करनेवाला या छीननेवाला।

महासाहसिकता (सं० स्त्री०) महासाहसिकस्य भावः तल टाप्। महासाहसिकका भाव या धर्म। महासाहसिकका कार्य।

महासिंह (सं० पु०) महान् सिंह इव। १ शरभ, सिंह। महांश्चासौ सिंहश्चेति। २ बड़ा सिंह। ३ दुर्गा देवीका वाहन सिंह।

"उत्थाय च महासिंह देवी चण्डमधावत॥" (चण्डी)

महासिंहतेजस् (सं० पु०) बुद्धभेद।

महासिद्ध (सं० त्रि०) योगसिद्ध, जिन्होंने योग द्वारा सिद्धि लाभ की है।

महासिद्धि (सं० स्त्री०) महती सिद्धिः। आठ सिद्धियोंमेंसे एक। सिद्धि देखो।

महासीर (हिं० पु०) एक प्रकारकी मछली। यह पहाड़ी नदियोंमें पाई जाती है और इसका मांस बहुत अच्छा माना जाता है।

महासुख (सं० क्ली०) महत् सुखमस्मिन। १ शृंगार, सजावट। २ अतिशय आनन्द, बड़ी खुशी। (त्रि०) महत् सुखमस्य। ३ अतिशय सुखयुक्त। बड़ा सुखी। (पु०) महत् सुखं ईश्वरा नन्दोऽस्य अस्माद्वा। ४ बुद्धदेव।

महासुगन्ध (सं० त्रि०) महान् सुगन्धोऽस्य। १ अति सुगन्धयुक्त, जिसमें बड़ी अच्छी गंध हो।

महासुगन्धा (सं० स्त्री०) गन्धनाकुली, नाकुली कंद।

महासुगन्धषट्क (सं० क्ली०) महासुगन्धानां षटकं। छः प्रकारकी महासुगन्धि, यथा—चन्दन, कस्तूरी, कर्पूर, कृष्णागुरु, मूर्वा और कुंकुम।

महासुगन्धि (सं० स्त्री०) विषघ्न औषधभेद। (सुश्रुत)

महासुगन्धितैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर; चूर्णके लिये लाल चन्दन, केशर, खसखसकी जड़, प्रियंगु, छोटी इलायची, गोरोचन, शिलारस, अगुरु, मृगनाभि, कपूर, जयित्री, जातीफल, कंकोलीफल, सुपारी, लवङ्ग, लालुका, मांसी, कुट, रेणुका, तगरचण्डी, केवटीमोथा, नखी, व्याघ्रनखी, पृक्का, बोल, दमनक, चोरक, शिलाजतु, एलवालुक, वीरणमूल, पद्मकाष्ठ, धवका फूल, पुंडरिया और कचूर, प्रत्येक द्रव्य आध तोला, जल १६ सेर। पीछे तैलपाकके विधानानुसार इस तेलका पाक करे। यह तेल लगानेसे शरीरका घाम, मल और दुर्गन्ध, खुजली तथा कुष्ठरोग नष्ट होता है। सत्तर वर्षका बूढ़ा भी इस तेलके व्यवहारसे नौजवान-सा हो जाता है। इससे बांझ औरतकी बांझपन दूर होता है।

महासुगन्धितैल (सं० पु०) तैलौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर; मजीठ, देवदारु, सरलकाष्ठ, व्याघ्री (गन्धद्रव्य विशेष), वच, सुपारीके पेड़की छाल, दारचीनी, गंधतृण, कचर, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला और मोथा, प्रत्येक दो पल। इन्हें एक साथ मिला कर पहले पाक करे। पीछे जटामांसी, मूरामांसी, दौना, चम्पेका फूल, प्रियंगु, दारचीनी, गठिवन, सुगंधवाला, कुट, मरुवक पुष्प और पीडि शाक प्रत्येक २ पल। गंधविरोजा, कुन्दरखोटी, नखी, नालुका और सोया प्रत्येक १ पल। इसके द्वारा द्वितीय कल्कपाक करे। इलायची, लवङ्ग, शिलारस, श्वेतचन्दन, जातीपुष्प, खटाशी, कंकोल, अगुरु, लताकस्तरी और कुंकुम प्रत्येक ४ तोला, मृगनाभि २ तोला, कपूर १ तोला, वा ६ माशा ४ रत्ती, इन सब द्रव्यों द्वारा तृतीय कल्कपाक करना होगा। पाक हो जानेके बाद उसमेंसे खटाशीको निकाल कर शिला पर पीसे और फिर उसे तेलमें डाल दे। बिल्वादि पञ्चपल्लवके क्वाथसे प्रथम कल्कको, गन्धाम्बुसे द्वितीयको और अगुरुधूपित गंधजलसे तृतीय कल्कको पाक करे। महाराजगन्धप्रसारिणी तैलकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरह इसमें भी सभी गन्धद्रव्यको शोधन कर लेना होगा। इसके व्यवहारसे विविध वातव्याधि नष्ट होती है।

ऊपर कहे गये कल्कसे दूना कल्क ले कर तेलमें पाक करनेसे लक्ष्मीविलास तेल बनता है।

महासुदर्शन (सं० पु०) चक्रवर्त्तीराजभेद।

महासुपर्ण (सं० पु०) पक्षिभेद। (सतपथब्रा० १२।२।३।७)

महासुर (सं० पु०) दानवभेद, एक दानवका नाम।

महासुरी (सं० स्त्री०) महादेवी दुर्गा।

महासुहय (सं० पु०) श्रेष्ठ अश्व, बड़ा घोड़ा। २ एक ऋषि।

महासूक्त (सं० क्ली०) १ वैदिक महास्तोत्र। (पु०) २ ऋग्वेदके दशवें मण्डलके एक ऋषि और उनका १-१२८ सूक्त।

महासूक्ष्म (सं० त्रि०) महांश्चासौ सूक्ष्म। अतिशय सूक्ष्म, बहुत बारीक।

महासूक्ष्मा (सं० स्त्री०) महदतीव सूक्ष्म। वालुका, बालू।

महासूचिव्यूह (सं० पु०) व्यूहभेद, युद्धके समय सेना रखनेकी क्रियाविशेष।

महासूत (सं० पु०) रणवाद्यभेद, प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जो युद्ध-क्षेत्रमें बजाया जाता था।

महासेतु (सं० पु०) १ वृहत् सेतु, बड़ा समुद्र। २ एक प्रकारका मन्त्र।

महासेन (सं० पु०) महती सेना यस्य। १ कार्त्तिकेय। महती सेना अनुचरोऽस्य। २ शिव। ३ महासेनापति, बहुत बड़ा या सबसे प्रधान सेनापति। ४ वृत्तार्हत पितृविशेष। ५ एक राजाका नाम। (त्रि०) ६ विपुल सैन्यविशिष्ट, बड़ी सेनावाला।

महसेननरेश्वर (सं० पु०) अष्टम अर्हतके पिता।

महासेना (सं० स्त्री०) विपुल सैन्य।

महासेनाव्यूहपराक्रम (सं० पु०) यक्षराजभेद।

महासोम (सं० पु०) सामभेद।

महासौषिर (सं० पु०) दन्तोवेष्टगत रोगविशेष, दांतका एक प्रकारका रोग। इसमें दाँतोंके मसूड़े सड़ जाते हैं और मुंहमेंसे बहुत दुर्गन्ध आती है। कहते हैं, कि जब यह रोग होता है तब आदमी सात दिनोंके अन्दर मर जाता है। इसका दूसरा नाम महासुषिर भी है। मुखरोग देखो।

महास्कन्ध (सं० त्रि०) महान् स्कन्धोऽस्य। १ वृहत् स्कन्धयुक्त, बड़ी गरदनवाला। २ उष्ट्र, ऊंट।

महास्कन्धा (सं० स्त्री०) जम्बूवृक्ष, जामुनका पेड़।

महास्कन्धिन् (सं० पु०) अष्टपदविशिष्ट जन्तुभेद, टिड्डी।

महास्तूप (सं० पु०) बौद्ध स्मृति-रक्षित मंदिरके आकारका ऊंचा स्तूप।

महास्तोम (सं० त्रि०) स्तोमयुक्त।

महास्त्र (सं० क्ली०) अस्त्रविशेष, बड़ा अस्त्र।

महास्थली (सं० स्त्री०) स्थल (जानपदकुण्डगोलेत्यादि। पा ४।१।४२) इति ङीष् महती स्थली। १ पृथ्वी। २ श्रेष्ठ स्थान, बहुत सुन्दर स्थान।

महास्थविर (सं० पु०) बौद्धभिक्षु।

महास्थान (सं० क्ली०) ऊंचा और सुन्दर स्थान।

महास्थानप्राप्त (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

महास्थाल (सं० पु०) वृक्षभेद।

महास्नायु (सं० पु०) महती स्नायुः। वह प्रधान नाड़ी जिसमेंसे रक्त बहता है। इसे कंडरा या अस्थिबंधन नाड़ी भी कहते हैं।

महास्नेह (सं० पु०) छर्दिरोगकी एक दवा।

महास्पद (सं० त्रि०) महान् आस्पदो यस्य। महाप्रभावशाली, बड़ा बलवान्।

महास्मृति (सं० स्त्री०) १ चिरप्रचलित वाक्य, किंवदंती। २ दुर्गा।

महास्रग्विन् (सं० पु०) महती स्रक् अस्थिमाला-सा अस्त्यस्येति विनि। महादेव।

महास्वन (सं० पु०) महान् स्वनः शब्दो यस्य। १ मल्लतूर्य, लड़ाईका डंका। २ वृहच्छब्द, जोरका शब्द। (त्रि०) ३ वृहत्शब्दविशिष्ट, जिससे भारी शब्द होता हो। ४ असुरभेद।

महास्वर (सं० त्रि०) १ उच्च स्वरयुक्त, बड़ा शब्द करनेवाला। (पु०) २ उच्च स्वर, जोरकी आवाज।

महास्वाद (सं० पु०) स्वादु, सुमिष्ट।

महाहंस (सं० पु०) १ हंसभेद। २ विष्णु।

महाहनु (सं० पु०) महती हनुर्यस्य। १ शिव, महादेव।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२ तक्षककी जातिका एक प्रकारका सांप। ३ दानवभेद, एक दानवका नाम। (त्रि०) ४ वृहत् हनुयुक्त, बड़ी दाढ़ीवाला।

महाहय (सं० पु०) १ राजभेद, एक राजाका नाम। २ महान् अश्व, बड़ा घोड़ा।

महाहर्म्य (सं० क्ली०) राजप्रासाद।

महाहव (सं० पु०) महान् आहवः। घोरतरयुद्ध, घमासान लड़ाई।

महाहविस् (सं० क्ली०) महत् प्रशस्तं हविः। १ गव्यघृत, गायका घी। सब घीसे गायका घी प्रशस्त और श्रेष्ठ है।

"गयायामथवा पिण्डं खड्गमांसं महाहविः।
कालशाकं तिलाज्यं वा कृशरं मासतृप्तये॥"

(मार्क०पु० ३२।३३)

२ विष्णु। ३ महान्ति हवींषि अत्र। ३ वृहद् यागविशेष, शाकमेध यज्ञ।

"अथातो महाहविष एव तद्यथा महाविषस्तथो तस्य।"

(शत०ब्रा० २।५।३।२०)

महाहस्त (सं० पु०) १ शिव, महादेव। (त्रि०) २ वृहद् हस्तयुक्त, जिसके लम्बे लम्बे हाथ हों।

महाहस्तिन् (सं० त्रि०) वृहद् हस्तयुक्त, लम्बा हाथवाला।

महाहस्ती (सं० त्रि०) महाहस्तिन् देखो।

महाहास (सं० पु०) महान् उच्चहासः। अट्टहास, जोरसे ठठा कर हँसना।

महाहि (सं० पु०) महान् अहिः। वृहत् सर्प, वासुकि नाग।

महाहिक्का (सं० स्त्री०) महती हिक्का। एक प्रकारका हिचकी रोग। इसमें हिचकी आनेके समय सारा शरीर कांप उठता है और मर्म-स्थानमें वेदना होती है।

हिक्का शब्द देखो।

महाहिमवत् (सं० पु०) महाहिम अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। हिमालय पहाड़।

महाहिवलय (सं० त्रि०) महासर्प द्वारा वेष्टित, बड़े बड़े सांपोंसे घिरा हुआ।

महाहिशयन (सं० क्ली०) विष्णुकी अनन्तशय्या।

महाहेतु (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महाह्न (सं० पु०) मध्याह्न।

महाह्रद (सं० पु०) १ वृहद् पुष्करिणी, बड़ा तालाब। २ एक तीर्थका नाम। ३ शिव, महादेव।

महाह्रस्व (सं० पु०) मध्याह्न, दोपहर।

महाह्रस्वा (सं० त्रि०) अति खर्व, बहुत छोटा।

महाह्रस्वा (सं० स्त्री०) कपिकच्छु, केवांच।

महि (सं० पु०) मह्यते इति मह-पूजायां अदन्त चुरादि, (सर्वधातुभ्य इन्। उण् ४।११३) इति इन्। १ पृथ्वी। २ महत्, बड़ा। ३ महिमा। ४ महत्तत्त्व, विज्ञान-शक्ति।

महिका (सं० स्त्री०) मह (कृञ् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि। उण् २।३२) इति क्वुन् टाप्, अत इत्वं। हिम, बर्फ।

महिक्षित (सं० त्रि०) १ बड़ा पराक्रमशाली। (पु०) २ प्रभूत बल, खूब जोर।

महिख (सं० पु०) महिष देखो।

महिखरी (हिं० स्त्री०) अठाईस मात्राओंके एक छन्दका नाम। इसमें चौदह मात्राओं पर यति होती है।

महिङ्गक (सं० पु०) चूहा।

महित (सं० त्रि०) मह्यते स्मेति मह पूजायां (मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च। पा ३।२।१८८) इति क्त। १ पूजित। २ पितृगणविशेष।

महिता (सं० स्त्री०) १ नदीभेद, एक नदीका नाम। २ महत्व, महिमा।

"सख्युः सखेव पितृवत् तनयस्य सर्वं।
सेहे महान् महितया कुमतेरघं मे॥"

(भाग० १।१५।१९)

महित्री (सं० स्त्री०) ऋग्वेदका १०।१५९ सूक्तका मन्त्रभेद।

महित्व (सं० क्ली०) प्रभुत्व, प्रभुता।

महित्वन (सं० क्ली०) महत्व, महिमा।

महिदास (सं० पु०) इतराके एक पुत्रका नाम।

महीदास देखो।

महिदेव (सं० पु०) ब्राह्मण।

महिधर (सं० पु०) महीधर देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महिन् (सं० त्रि०) मह 'प्रेक्षादिभ्य इनिः' इति इनिः। महत् बड़ा।

महिन (सं० क्ली०) महति मह्यते वा मह पूजायां, (महेरिनण् च। उण् २।५६) इति चकारादित्युक्तेः इनन्। १ राज्य। (त्रि०) २ पूजनीय, पूजने योग्य।

महिनस (सं० पु०) शिवकी एक मूर्त्तिका नाम।

(भागवत ३।१२।१२)

महिन्धक (सं० पु०) १ इन्दूर, चूहा। २ नकुल, नेवला। ३ भारवहनार्थ दन्तसंलग्न रज्जु, भार उठानेका छींका, सिकहर। इसे वहंगीके दोनों छोरोंमें बांध कर कहार बोझा उठाते हैं।

महिपाल (सं० पु०) महीपाल देखो।

महिफर (हिं० पु०) मधु, शहद।

महिमख (सं० पु०) देवसङ्घ, देवालय।

महिमन् (सं० पु०) महतो भावः महत् (पृथ्वादिभ्य इमनिज वा उण् ५।१।१२२) इति इमनिच् ततः (टेः। पा ६।४।१५५) इति टिलोपः। महत्व, आठ प्रकारके ऐश्वर्य्योंमेंसे एक ऐश्वर्य्य।

"अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा।
ईशित्वञ्च वशित्वञ्च तथा काम वसायिता॥"

(अमरटीका भारत)

महिमा ऐश्वर्य प्राप्त होनेसे उनका प्रभाव इतना बढ़ जाता है, कि वेमनमाना कार्य करनेमें समर्थ होते हैं। योग द्वारा ही अणिमादि आठ प्रकारके ऐश्वर्य लाभ होते हैं। योग देखो।

२ माहात्म्य, गौरव। ३ उत्कर्ष, प्रशंसा। ४ राजतरंगिणीके अनुसार एक मन्त्री-पुत्र।

महिमत् (सं० त्रि०) प्रचुर, अधिक।

महिमभट्ट (सं० पु०) मन्मटभट्टका नामान्तर।

महिमसुन्दर (सं० पु०) जैन ग्रन्थकारभेद।

महिमा (सं० स्त्री०) महत्व, महिमा। महिमन् देखो।

महिमावत् (सं० क्ली०) मार्कण्डेयपुराणानुसार एक प्रकारके पितृगण।

महिम्न (सं० पु०) शिवका एक प्रधान स्तोत्र जिसे पुष्पदन्ताचार्यने रचा था।

महिम्नार (सं० पु०) हरिवंश वर्णित एक राजा।

महिया (हिं० पु०) ईखके रसका फेन जो उबाल खाने पर निकलता है।

महिर (सं० पु०) मह्यते पूज्यते इति मह पूजायां (सलिकल्यनि महीति। उण् १।५५) इति इलच् लस्य रत्वं। सूर्य्य।

महिरकुल (सं० पु०) एक राजा। मिहिरकुल देखो।

महिरावण (सं० पु०) एक राक्षसका नाम। कहते हैं, कि यह रावणका लड़का था और पातालमें रहता था। यह रामचन्द्र और लक्ष्मणको लंकाके शिविरसे उठा कर पाताल ले गया था। रामचन्द्र और लक्ष्मणको ढूंढ़ते हुए हनुमानजी पाताल गये थे और महिरावणको मार कर राम लक्ष्मणको ले आये थे।

महिला (सं० स्त्री०) मह्यत इति मह पूजायां (सलिकल्यनि महीति। उण् १।५५) इति इलच् टाप्। १ स्त्रीमात्र। २ प्रियंगुलता, फूलप्रियंगु। ३ रेणुका नामक गन्धद्रव्य। ४ मदमत्ता।

महिलाख्या (सं० स्त्री०) महिला इति आख्या यस्याः सा। महिला।

महिलारौप्य (सं० क्ली०) दक्षिणदेशका एक नगर।

महिलाह्वया (सं० स्त्री०) महिला इति आह्वयो यस्याः सा। महिला, प्रियंगुलता। पर्याय—

"प्रियंगु फलिनी कान्ता लता च महिलाह्वया।
गुन्द्रा गुन्द्रफला श्यामा विष्वक्सेनाङ्गनाप्रिया॥"

(भावप्र०)

महिलि—छोटा नागपुर और पश्चिम-बङ्गवासी पहाड़ी जातिविशेष। पालकी ढोना और खेत जोतना ही इनकी प्रधान उपजीविका है। कोई कोई बांसकी टोकरी भी बना कर अपना गुजारा चलाता है। ये साधारणतः बांसफोड़, पातर, सुलाङ्की, ताण्डो और मुण्डा नामक पांच श्रेणियोंमें विभक्त हैं। इन पांचोंमें भी फिर ३४ स्वतन्त्र थोक देखे जाते हैं। इन सब विभिन्न वंशके नामोंके साथ संथालोंकी श्रेणीविशेषके नाम मिलते जुलते हैं। महिलि-मुण्डाओंको कोई कोई मुण्डजातिकी एक शाखा मानते हैं।

मानभूमके पातर-महिलियोंमें बहुत कुछ हिन्दूका आचरण देखा जाता है। वे लोग गाय, सूअर आदिका मांस नहीं खाते और न एक थोकके मध्य अथवा मातृकुलमें आदान-प्रदान ही करते हैं। किन्तु सात पीढ़ीके बाद आदान-प्रदान चलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दूकी पूजापद्धति और क्रियाकलापका बहुत कुछ अनुकरण करने पर भी उनमें आज भी पहाड़ी और मनसादेवीकी पूजा बड़े समारोहसे होती देखी जाती है। ये लोग कुर्मी, भूमिज और देशवाली संथालोंके हाथका भोजन नहीं करते। मानभूमके उत्तर जो महिलि रहते हैं वे मुर्देको गाड़ते, परन्तु पातर-महिलि और संथाल परगनेवासी महिलि उसे जलाते हैं। ११वें दिनमें श्राद्ध और पिण्डदान होता हैं।

महिवृष् (सं वि०) धनवर्द्धन, धन बढ़ानेवाला।

महिव्रत (सं० पु०) महाव्रत।

महिष (सं० पु०) महति पूजयति देवाननेनेति, महि (अधिमह्योष्टिषच्। उण् १।४६) इति टिषच्। स्वनामख्यात पशुविशेष, भैंस। पर्याय—लुलाप, वाहद्विषन्, कासर, सैरिभ, यमवाहन, विषज्वरन्, वंशभीरु, रजस्वल, आनूप, रक्ताक्ष, अश्वारि, क्रोधी, कलूष, मत्त, विषाणी, गवली, वली। (जटाधर)

ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र और अन्त्यजके भेदसे महिष पांच प्रकारका है।

ब्राह्मणजातिका महिष बहुत काला, पवित्र, कदमें ऊंचा, बहुत खानेवाला और मारक; क्षत्रियजातिका महिष भेंगा, कामी, मोटा, क्रोधी, मारक, बहुत खानेवाला और ताकतवर; वैश्यजातिका महिष शान्त, छोटे सींगका, क्रोधी, बोझ ढोनेवाल और बलशाली; शूद्रजातिका महिष अंगभंग, कमजोर, छोटे सींगका, कम क्रोधी, कम खानेवाला और बोझ ढोनेमें बहुत मजबूत होता है।

जो महिष हमेशा जलकी तलाशमें रहता है, महातेजस्वी और भार ढोता है तथा जिसके सींग बेढंगे होते हैं उसे अन्त्यज जातिका महिष कहते हैं।

जंगली महिषके मांसका गुण—दोषकारक, लघु, दीपन, बलदायक। ग्राम्य महिषके मांसका गुण—स्निग्ध, मलिनकर पित्तहर। (राजनि०) राजवल्लभके मतसे—तर्पण, स्निग्ध, उष्ण, मधुर, गुरु, निद्रा, पुंस्त्व और स्तन्यवर्द्धक तथा मांसदार्ढ्यकर। भावप्रकाशके मतसे महिष पर्याय—घोटकारि, कासर, पीनस्कन्ध, कृष्णकाय। मांसगुण—उष्णवीर्य, वायुनाशक, निद्राजनक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शरीरको दृढ़ताजनक, गुरु, पुष्टिकारक, मलमूत्र-निःसारक तथा वायु, पित्त और रक्तदोषनाशक। (भा०प्र०)

देवी भगवतीके उद्देशसे महिषकी बलि देनेसे देवी बहुत तृप्त और प्रसन्न होती हैं। इसके फलसे साधक सौ वर्ष तक स्वर्गमें रहते हैं। (कालिकापु०)

महिष स्वभावतः बलवान्, स्थूल शरीरवाला और भार ढोनेमें मजबूत होता है। यह जल या कीचड़में रहना बहुत पसन्द करता है। शरीरके रोएं लम्बे, दोनों सींग बड़े और टेढ़े होते हैं। इसको कनपटी चौड़ी और चिपटी, दो पैर पतले, खुर दो भागोंमें, बंटे और शरीरके रोंगटे खड़े होते हैं। मुखभागमें छाती पर और पैरकी गांठों पर अन्यान्य अंगोंकी अपेक्षा अधिक रोएं होते हैं। खाल और पशुओंकी अपेक्षा मोटी होती है। परन्तु सबसे मोटी खाल इसके चूतड़ परकी होती है। खालसे जूते फीते आदि बनाये जाते हैं।

महिष क्रोधकी मानो प्रतिमूर्त्ति है। अन्यान्य पशुओंकी अपेक्षा इसके क्रोधके अनेक निदर्शन पाये जाते हैं। नदीमें तैरते समय यदि कुम्भीर उसके अथवा उसके दलमेंके गायके बच्चेको पकड़े, तो वह महिषके हाथसे त्राण नहीं पाता। इस समय क्रोधमें आ कर वह नदीको मथ डालता है। कुम्भीर जहां उसके बच्चेको ले गया है जलके भीतर उसी स्थान पर वह पहुंच जाता और अपने सींगोंसे उसे भिद डालता है। पीछे उस मृत कुम्भीरको ले कर जलसे बाहर निकाल लाता है।

इसे सम्बन्ध ज्ञान भी अन्य पशुओंकी अपेक्षा अधिक है। कहते हैं, किसी पुत्रस्थानीय महिष द्वारा मातृसम्पर्कीय महिषके सन्तानोत्पादन कराते समय, स्वभावज ज्ञानसे वह विरुद्ध सम्पर्क-सङ्गम नहीं करता। कभी कभी यह इस घृणित कामसे ऐसा उत्तेजित हो जाता है, कि अपने पालकका भी प्राण ले लेता है।

साधारणतः काला, सफेद और धूसर रंगका महिष देखनेमें आता है। पालत और जंगलीके भेदसे यह दो प्रकारका होता हैं। पालतू प्रधानतः महिष वा भैंस (Bos Buffalus) और जंगली अरना (Bos Arrana) कहलाता है। जंगली भैंसा ऐसा दुर्द्धर्ष होता है, कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसमें वश्यताका चिह्न बिलकुल दिखाई नहीं देता। गुस्साने पर यह कभी कभी आदमी पर टूट पड़ता है। उस समय यदि वह पासवाले पेड़ पर भी चढ़ जाय, तो भी उसके क्रोधसे बच नहीं सकता। लाल लाल आंखें किये वह जंगली भैंसा पेड़के समीप आता और अपने सींगोंसे उसे उखाड़नेकी कोशिश करता है।

इसके सींग साधारणतः लम्बे और किसी किसीके टेढ़े भी दिखाई देते हैं। अरना भैंसा जंगलमें दल बांध कर विचरण करता है। इसकी लम्बाई १०॥ फुट और ऊंचाई ६ फुट होती है। पालतू महिषकी अपेक्षा यह अधिक बलवान् होता है। यहां तक कि किसी किसी समय इसने क्रोधमें आ कर अधिक बलशाली हाथीको भी मार डाला है।

यह शरत्कालमें सङ्गम करता है। इस समय नर महिष कुछ महिषियोंको ले कर एक एक स्वतन्त्र दलमें हो जाता है। मैथुनकालमें यह बहुत डरावना दिखाई देता है। महिषी १० मास गर्भ धारण करके अन्तमें एक या दो बच्चे जनती है। पालत महिष जंगली महिषसे एक तिहाई छोटा होता है। दोनों जातिके महिष घास लता आदि खाना पसन्द करते हैं। कीचड़ ही इसके रहनेका प्रिय स्थान है। मलेरिया-प्रधान आदि स्थानोंमें रहनेसे इसके शरीरमें किसी प्रकारका वैलक्षण्य नहीं दिखाई देता। मेनिला (Manilla) देशीय महिषको एक स्वतन्त्र थोकमें शामिल किया गया है।

दक्षिण अफ्रिकाके Bubalus Caffer-की आकृति भारतीय महिषसे नहीं मिलती। इनके सींग बहुत छोटे होते हैं। ये दल बांध कर जंगलके समतल क्षेत्रमें घूमते हैं। एक एक दलमें पांच छः सौ महिषसे कम नहीं होते। शत्रुको नजदीक आते देख वे पहले उसे अच्छी तरह देख लेते, पीछे सत्त बांध कर उसके पीछे पड़ते हैं। शत्रुसे घायल हुआ महिष बहुत जोरसे चीत्कार करता हुआ उस पर टूट पड़ता है और जब तक उसकी जान नहीं ले लेता तब तक लौटता नहीं। शुनवर्गका भ्रमण-वृत्तान्त पढ़नेसे मालूम होता है, कि इस प्रकारका एक खौफनाक महिष एक बार अपने आक्रमणकारी पर, जो घोड़े पर सवार था, टूट पड़ा। समीप जा कर उसने घोड़ेको विदीर्ण कर उसकी हड्डीको चूर्ण चर्ण और मांसपिण्डको खण्ड खण्ड कर डाला।

महिषका मांस खानेमें उत्तम और सद्गन्धयुक्त होता है। बूढ़े महिषका मांस उतना उपादेय नहीं है जितना कि बच्चेका। इसके सींगसे तरह तरहके खिलौने और कंगही आदि काम आने लायक अनेक वस्तु बनाई जाती हैं।

२ श्मश्रुधारी म्लेच्छजातिविशेष। यह जाति पहले क्षत्रिय थी, पीछे जब सगरराजने इन्हें वेदादिमें अधिकार नहीं दिया, तब यह दूसरा वेश धारण कर म्लेच्छ हो गई है।

"सगरस्तां प्रतिज्ञाञ्च गुरोर्वाक्यं निशम्य च।
धर्मं जघान तेषां वै वेशान्य त्वं चकार ह॥
अर्द्धं शकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत्।
जवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानां तथैव च॥
पारदा मुक्तकेशश्च पह्लवाः श्मश्रुधारिणः।
निःस्वाध्यावषट्काराः कृतास्तेन महात्मना॥
कोलिसर्पाः समहिषा दार्वाश्चोलाः सकेरलाः।
वशिष्ठवचनाद्राजन् सगरेण महात्मना॥"

(प्रायश्चित्त तत्त्व)

३ महिषासुर। इसे दुर्गादेवीने मारा था। महिषासुर देखो। ४ अर्हतका ध्वजविशेष। ५ देवगणभेद, निरुक्तके मतसे माध्यमिक देवगण। ६ कुश द्वीपस्थित पर्वतविशेष, मार्कण्डेयपुराणानुसार कुश द्वीपके एक पर्वतनाम। ७ कुशद्वीपका वर्षविशेष, कुशद्वीपके एक वर्षका नाक। ८ अग्निविशेष, एक अग्निका नाम। ९ कृताभिषेक भूपाल, वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो। १० देशभेद, एक प्राचीन देशका नाम। ११ अनुह्लादका पुत्रभेद, अनुह्लादके एक पुत्रका नाम। १२ साध्याके पुत्रका नाम।

महिषक (सं० पु०) एक वर्णसंकर जातिका नाम।

महिषकन्द (सं० पु०) महिषाख्या प्रसिद्धः कन्दः। महाकन्दविशेष, भैसा कंद। पर्याय—शुभ्रालु, लुलापकन्द, शुक्लकन्द, महिषीकन्द। इसका गुण—कटु, उष्ण, कफ, वातनाशक, मुखजाड्यहर, रुचिकर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महिषघ्नी (सं० स्त्री०) महिषं महिषासुरं हन्तीति हन वाहुलकात् टक ङीष्। भगवती दुर्गा।

"महिषघ्नी महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
आयुरारोग्य विजयं देहि नमोऽस्तुते॥" (दुर्गोत्सवपद्धति)

महिषत्व (सं० क्ली०) महिषस्य भावः त्व। महिषका भाव वा धर्म।

महिषध्वज (सं० पु०) महिषो ध्वजश्चिह्नं वाहनत्वेन यस्य। १ यमराज। २ जैन शास्त्रानुसार एक अर्हंतका नाम।

महिषपाल (सं० पु०) महिषं पालयति पालि-अच्। महिष पालक, ग्वाला।

महिषमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली जो काले रंगकी होती है। इसके सेहरे बड़े बड़े होते हैं। यह बलवीर्यकारी और दीपनगुण-युक्त मानी जाती है।

महिषमर्द्दिनी (सं० स्त्री०) महिषं महिषाख्यमसुरं मृदनातीति मृद् णिनि-ङीप्। दुर्गा। इन महिषमर्द्दिनी देवीकी पूजा अष्टाक्षरी मन्त्र द्वारा करनी होती है।

"भाण्डं वियत् सनयनं श्वेतो मर्द्दिनि ठद्वयम्।
अष्टाक्षरी समाख्याता विद्या महिषमर्द्दिनी॥" (तन्त्रसार)

तन्त्रसारमें इनकी पूजादिका विस्तृत विवरण लिखा है। इनका ध्यान—

"गारुड़ोपलसन्निभां मणिमयकुण्डलमण्डितां
नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम्।
शङ्खचक्रकृपाणखेटकबाणकार्मुकशूलकान्
तर्ज्जनीमपि विभ्रतीं निजबाहुभिः शशिशेखराम्॥"

इसी ध्यानसे महिषमर्द्दिनीकी पूजा होती है।

महिषमस्तक (सं० पु०) शालिधान्यविशेष, एक प्रकार का जड़हन धान।

महिषवल्ली (सं० स्त्री०) महिषशब्द वाच्या वल्ली, शाकपार्थिवादिवत् समासः। लताविशेष, घिरेटा। संस्कृत पर्याय—सौम्या, प्रतिसोमा, अन्तवल्लिका, खण्डशाखा।

महिषवाहन (सं० पु०) महिषः वाहनं यस्य। यमराज।

महिषाक्ष (सं० पु०) १ भैंसा गुग्गुल। २ भगन्दर।

महिषाक्षक (सं० पु०) गुग्गुल।

महिषार्द्दन (सं० पु०) स्कन्दका एक नाम।

महिषासुर (सं० पु०) महिष एव महिषाख्योवा असुर। असुरभेद, रंभासुरका लड़का।

महिषासुरकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कालिकापुराणमें इस प्रकार लिखा है—रम्भ नामक किसी दैत्यने महादेवकी आराधना करके उन्हें प्रसन्न किया। महादेवने उसे वर मांगने कहा। इस पर अपुत्रक रम्भासुर बोला, 'देव! मैं आपसे और कोई भी वर नहीं चाहता, सिवा इसके कि आप मेरे घर पुत्ररूपमें उत्पन्न हों और त्रिलोकमें अजेय, चिरायु, यशस्वी, श्रीमान् और सत्यप्रतिज्ञ बनें। महादेवने 'तथास्तु' कह कर इसे स्वीकार किया।

रम्भासुर वर पा कर बहुत प्रसन्न हुआ और अपना घर लौटा। राहमें एक युवती ऋतुमती महिषी पर उसकी निगाह पड़ी। रम्भने कामसे पीड़ित हो उसके साथ सम्भोग किया। महिषीके गर्भ रह गया। यथासमय उसी गर्भसे महिषासुरकी उत्पत्ति हुई। महिषासुर सब प्रकारके गुणोंसे सम्पन्न हो सुरासुरका राज्यभोग करने लगा। महिषासुर घोर मायावी था। एक दिन वह मनमोहिनीरूप धारण कर कात्यायन मुनिके आश्रममें गया। वहां मुनिके शिष्योंको लुभा कर उसने उनके तपमें बाधा डालनेकी कोशिश की। इस पर हिमालय-शिखरवासी मुनिवर कात्यायन बड़े बिगड़े और उसे शाप दिया कि, 'तुम स्त्रीके हाथसे मारे जाओगे।' उसी अभिशापके फलसे वह भगवती दुर्गादेवीके हाथ मारा गया।

महिषासुरने तीन बार जन्म लिया और तीनों ही बार देवीने तीन रूप धारण कर उसको मारा। देवीका पहला रूप उग्रचण्डा, दूसरा भद्रकाली और तीसरा रूप दुर्गा था।

वर पा कर रम्भासुरके लड़के महिषासुरने जब देवासुरोंके ऊपर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापन किया, तब एक दिन उसने हिमालय पहाड़ पर सोतेमें एक भीषण स्वप्न इस प्रकार देखा था, 'भगवती भद्रकालीका रूप धारण कर उसका शिर काटती है और जो रक्त निकलता है उसे पी कर अपनी प्यास बुझाती है।' नींद टूटनेके बाद वह बहुत डर गया और तभीसे भगवतीकी उपासना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने लगा। भगवतीने प्रसन्न हो कर अपने दर्शन दिये। तब महिषासुरने प्रणाम कर उनसे कहा, 'देवि! मैंने स्वप्नमें जैसा देखा है, वह टलनेको नहीं, फिर उससे मैं क्षुब्ध भी नहीं हूं। मैं तीन मन्वन्तर काल तक निष्कण्टक सुरासुरका राज्यभोग कर चुका, भोग-सुखकी अब मुझे जरा भी लालसा नहीं है। आपसे मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है, कि जिससे सभी यज्ञोंमें मेरी पूजा हो और मैं सर्वदा आपके चरणोंकी सेवामें निरत रहूं, यही वर मुझे दीजिये।' देवीने उत्तर दिया, 'महिषासुर! यज्ञका भाग कुछ शेष न रह गया, कुल देवताओंमें बांट दिया गया। जो कुछ हो, मैं तुम्हें अपनी पद-सेवामें निरत रखूंगा और जहां जहां मेरी पूजा होगी, वहां वहां तुम भी पूजे जाओगे।' इतना कह कर भगवतीने उग्रचण्डा, भद्रकाली और दुर्गा इन तीन मूर्त्तियोंके साथ साथ महिषासुरकी पूजाकी व्यवस्था कर दी।

वामनपुराणमें लिखा है—रम्भ और करम्भ नामक दो प्रबल पराक्रम असुर पञ्चनदके जलमें पैठ कर पुत्र-लाभकी कामनासे कठोर तपस्या कर रहे थे। इन्द्रने तपस्यासे भय खा कर कुम्भीका रूप धारण कर करम्भका विनाश किया। भ्रातृवियोग पर रम्भ बहुत दुःखित हुआ और अपना शिर काट कर अग्निमें होम करनेको उद्यत हो गया। यह देख कर अग्निने उस दारुण अध्यवसायसे उसे रोका और अभिलषित वर मांगनेको कहा। रम्भने अग्निकी बात मान ली और एक त्रिलोक्य-विजयी पुत्रके लिये प्रार्थना की। अग्निदेव 'तथास्तु' कह कर अन्तर्हित हो गये। वर पा कर रम्भ गद्गद हो गया और अपने घर लौटा। राहमें एक युवती महिषिको देख कर वह कामपीड़ित हो गया। रम्भके संसर्गसे महिषीके गर्भ रहा। उसी गर्भसे यथासमय देवासुरविजयी मायावी महिषासुरने जन्मग्रहण किया।

(वामनपु० १७ अ०)

वराहपुराणमें लिखा है—स्वायम्भुव मन्वन्तरमें देवी वैष्णवीने मन्दर पर्वत पर दैत्य महिषासुरको मारा। पीछे वही महिषासुर पुनः चैत्रासुर नामसे उत्पन्न हुआ। देवी नन्दाने विन्ध्याचल पर उसे भी मारा, अर्थात् यों कहिये ज्ञानशक्तिके हाथसे अज्ञानमूर्त्ति महिषासुर मारा गया।

मार्कण्डेयपुराणके चण्डी-माहात्म्यमें लिखा है,—पूर्वकालमें देव और असुरोंमें सौ वर्ष तक युद्ध चलता रहा। उस दीर्घकालव्यापी युद्धमें देवताओंकी असुरोंके हाथसे अच्छी तरह हार हुई। पीछे असुराधिपति महिष स्वर्गसे देवताओंको भगा कर स्वयं इन्द्र बन गया और वहांका शासन करने लगा। अब देवगण मर्त्यलोकमें मर्त्यवासीकी तरह विचरण करने लगे। कुछ समय बाद वे ब्रह्माको आगे करके जहां हरि और हर विराज करते थे, वहीं पहुंचे। देवताओंने महिषासुरकी अत्याचार-कहानी उन्हें आद्योपान्त कह सुनाई। महिषासुरने अपने बाहुबलसे इन्द्र, यम, कुबेर, वरुण और अग्नि आदि देवताओंकी अधिकारभूमि छीन ली है, सुन कर तथा देवताओंको शरणापन्न देख कर हरि और हर दोनों ही आगबबूले हो गये। उन्होंने सभी देवताओंके शरीरसे सुमहत् तेज निकाल कर उसे एकत्र किया। अब उस तेजपुञ्जसे एक अद्भुत नारीमूर्त्तिका आविर्भाव हुआ। उस हजार भुजावाली भीषण, फिर भी प्रशान्ताकृति देवीमूर्त्तिको देख कर देवताओंने उन्हें अपने आयुधादि दे कर सम्मानित किया। इस समय देवी खिलखिला कर हंस उठीं। हंसीके शब्दसे जल, स्थल, शैल, कानन और वसुन्धरा कांप उठी। देवताओंके आशाका संचार हुआ। वे सबके सब भक्तिपूर्वक सिंहवाहिनीकी स्तुति करने लगे।

उधर महिषासुरने भी घोर गर्जन किया। वह दलबलके साथ विपुलविक्रमसे विविध आयुधोंके साथ युद्धार्थ देवीके सामने खड़ा हो गया। फिर क्या था, दोनोंमें घोर संग्राम चलने लगा। बहुत देर तक विविध युद्धके बाद संहारिणी देवीके हाथसे वास्कल, असिलोमा और विड़ालाक्ष आदि महिषासुरके सेनापतियों द्वारा परिचालित सैन्यदल मारा गया। देवगण बड़े प्रसन्न हुए। आकाशसे पुष्पवृष्टि होने लगी। अनन्तर सैन्यदल और सेनापतियोंमेंसे एक एकको देवीके हाथसे निहत और निगृहीत होते देख बिडाल और चामर आदि महिषासुरके प्रधान प्रधान सेनापति देवीके साथ लड़ने लगे। इस बार उनके घोड़े, हाथी, रथ, शकट और अन्यान्य युद्धोपकरण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विध्वस्त किये गये। अन्तमें महिषासुरने स्वयं विपुल-वीर्यको आश्रय कर नाना मायावी मूर्त्तिसे भीषण लोम-हर्षण युद्ध आरम्भ कर दिया। कोपारुणनयना देवी चण्डिकाने महिषासुरके दौरात्म्यसे तंग तंग आ कर खड्गसे उसका शिर काट लिया। दुर्वृत्त महिषासुरके मारे जाने पर असुरोंकी सेनामें कुहराम मच गया। देव-गण बड़े प्रसन्न हुए। सबोंने मिल कर चण्डिकाकी पूजा की।

महिषासुरसम्भव (सं० पु०) भूमिज गुग्गुलु, जमीनसे उत्पन्न गुग्गुल।

महिषासुरहन्त्री (सं० स्त्री०) दुर्गा।

महिषी (सं० स्त्री०) महिषस्य कृताभिषेकस्य नृपस्य पत्नी (पुंयोगाख्यायां। पा ४।१।४८) इति ङीष्। कृता-भिषेका राजपत्नी, पटरानी। जिस पत्नीके साथ राजा अभिशिक्त होते हैं उसीको महिषी कहते हैं। राजाकी पत्नीमात्र ही महिषी नहीं कहला सकती।

"इत्थं व्रतं धारयतः प्रजार्थं समं महिष्या महनीयकीर्त्तेः।
सप्त व्यतीयुस्त्रिगुणानि तस्य दीनानि दीनोद्धरणोचितस्य॥"
(रघु २।२५)

२ सैरिन्ध्री। ३ औषधिभेद। ४ महिषपत्नी, भैंस। पर्याय—मन्दगमना, महाक्षीरा, पयस्विनी, लुलापकान्ता, कलुषा, तुरङ्गद्विषणी। इसके दूधका गुण मधुर, पोनेमें ढंढ़ा, गुरु, बल और पुष्टिप्रद, गृष्य, पित्त, दाह और अम्लनाशक; दधिका गुण मधुर, स्निग्ध, श्लेष्म-कारक, रक्तपित्तनाशक, बल और अम्लवर्द्धक, बलकर, श्रमघ्न; मक्खनका गुण—कषाय, मधुररस, शीतल, बल-कर, पित्तघ्न, स्थौल्यकारक; घीका गुण धृतिकर, सुखद, कान्तिवर्द्धक, वातश्लेष्मनाशक, बलकर, वर्णवर्द्धक, ग्रहणीविकारनाशक, मन्दानलोद्दीपक, चक्षुका दीप्ति-वर्द्धक तथा मनोहारक। इसके मूत्रका गुण आनाह शोफ, गुल्मदोषनाशक, कटु, उष्ण, कुष्ठ, कण्डूति, शूल और उदररोगनाशक माना गया है। (राजनि०)

महिषीकन्द (सं० पु०) एक प्रकारका कन्द जिसे भैंसाकंद भी कहते हैं।

महिषीघृत (सं० क्ली०) महिषी दुग्धोत्थ घृत, भैंसका घी। गुण—वायु और पित्तनाशक, शीतल, मधुर, गुरु, विष्टम्भी, बलकर।

महिषीतक्र (सं० क्ली०) भैंसके दूधका मट्ठा। गुण—कफवर्द्धक, कुछ गाढ़ा तथा प्लीहा, अर्श, ग्रहणीदोष और अतीसारमें लाभदायक।

महिषीदधि (सं० क्ली०) भैंसका दही। गुण—मधुर, रक्तदोषकर, कफ तथा शोफहर, पित्त और वातवर्द्धक।

महिषीदान (सं० क्ली०) महिष-बलिदानरूप प्रक्रिया-भेद।

महिषीदुग्ध (सं० क्ली०) भैंसका दूध। गुण—स्निग्ध, वायु, शीतकर, तन्द्रा और निद्राकर, वृष्यतम, श्रमघ्न, बल-प्रद और पुष्टिकर।

महिषीपाल (सं० पु०) महिषीपालनकारी, भैंसको पोसने-वाला ग्वाला।

महिषीप्रिया (सं० स्त्री०) महिषीणां प्रिया। शूलीतृण, शूली नामक घास।

महिषीभाव (सं० पु०) महिष्याभावः। महिषीका भाव।

महिषिमूत्र (सं० क्ली०) भैंसका मूत। गुण—तिक्त, कटु, कषाय, भेदक, वातनाशक, पित्तवर्द्धक, कुष्ठ, अर्श, पाण्डु, उदररोग और शूलनाशक।

महिषेश (सं० पु०) १ महिषासुर। २ यमराज।

महिषोत्सर्ग (सं० पु०) एक प्रकारका यज्ञ।

महिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशय महान्, बहुत बड़ा।

महिष्मत (सं० त्रि०) १ महिषयुक्त, जिसे भैंस हों। (पु०) २ एक राजा।

महिष्मती (सं० स्त्री०) अंगिराकी लड़की।

महिष्वनि (सं० त्रि०) प्रभूत धनशाली, बड़ा धनवान्।

महिष्वत (सं० त्रि०) १ महनीय, पूजन करने योग्य। २ महोत्सव-युक्त।

महिसुर—दक्षिणभारतके अन्तर्गत एक प्राचीन हिन्दू-राज्य और जिला। विशेष विवरण मैसूर शब्दमें देखो।

मही (सं० स्त्री०) मह्यते इति-मह-अच् (गौरादिभ्यश्च। पा ४।१।४१) इति ङीष्, यद्वा महि-कृदिकारादिति ङीष्। १ पृथ्वी। २ नदीविशेष। यह नदी मालवामें बहती है। इसके जलका गुण सुस्वादु, बलकर, पित्तहर और गुरु माना जाता है। (राजनि०) २ गाभी, गाय। ३ हिलमोचिका, हुरहुर। ४ लोक। ५ मिट्टी ६ अव-काश, स्थान। ७ झुण्ड, समूह। ८ क्षेत्रका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधार। ९ एककी संख्या। १० सेना। ११ एक छन्दका नाम। इसमें एक लघु और एक गुरु मात्रा होती है। जैसे—मही, लगी, नदी इत्यादि।

मही (हिं० पु०) मट्ठा, छाछ।

मही—मान्द्राज प्रदेशके मलवार जिलान्तर्गत फरासियोंका एकमात्र उपनिवेश। माही देखो।

महीकदम्ब (सं० पु०) भूकदम्ब।

महीकम्प (सं० पु०) भूमिकम्प, भूडोल।

महीकान्त—बम्बई-गवर्मेण्टके पालिटिकल एजेन्सी द्वारा परिचालित कुछ देशीय सामन्त राज्य। यह अक्षा० २३° १४′ से १४° २८′ उ० तथा देशा० ७२° ४०′ से ७४° ५′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३१२५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें उदयपुर और डूंगरपुर नामक राजपूत-राज्य, दक्षिण-पूर्वमें रेवाकान्त, दक्षिणमें अंगरेजाधिकृत खैरा जिला और पश्चिममें बड़ोदाराज्य, अहमदाबाद जिला और पाहलनपुर एजेन्सी है।

इन सामन्तराज्योंके सरदार विभिन्न मर्यादापन्न हैं। १८७७ ई०में उन लोगोंका अधिकार निरूपण कर यह सात भागोंमें बांटा गया। उस विभागानुसार इदरके राजा ही प्रथम श्रेणीभुक्त हुए हैं। ये स्वराज्यके दशमुण्डके विधाता हैं। केवल अंगरेजी प्रजाके विचारके समय पालिटिकल एजेण्टकी अनुमति लेनी पड़ती है। द्वितीय श्रेणीके सरदार करीब २० हजार रुपये दीवानी और सभी प्रकारके फौजदारी मुकदमे फैसला करते हैं। प्राणदण्डका आदेश सिर्फ पालिटिकल एजेण्ट दे सकते हैं। ३य श्रेणीके सरदारको ५ हजार रुपये दीवानी, २ महीनेकी कैद और १००० रु० जुरमाना तथा फौजदारी मुकदमेका विचार करनेका अधिकार है। किन्तु अंगरेजी प्रजाके मुकदमे अथवा प्राणदण्डमें पालिटिकल एजेण्टकी सलाह लेनीपड़ती है। ४र्थ श्रेणीके सरदारोंको राज्यशासनका कम अधिकार दिया गया है। उक्त सात श्रेणियोंकी तालिका नीचे दी गई है।

१म श्रेणीमें—इदर।

२य—पोल और दण्डा।

३य—मालपुर, मनसा, मोहनपुर।

४र्थ—वजीरा, पिठापुर, रणासन, पुणाद्रा, खरसल, घोड़ासर, कतोसन, इलोल और अंमलैरा।

५म—वलासना, दामा, वांसना, सुदेष्णा, रूपाल, दधाल्य, मगोरी, वड़गांव और सतम्बा।

६ष्ठ—रमांस, देरोल, खेरावाड़ा, करोली, रक्तापुर, प्रेमपुर, देधोजा, ताजपुरी, हापा, सातलासना, भालुष्णा, लिखि और हरोल।

७म—मगुना, वोलेन्द्रा, तेजपुर, विश्रोरा, पालेज, देहलोली, कससलपुरा, मल्लदपुरा, इजपुरा, रामपुरा, रानीपुरा, गावट, निम्बा, उम्ब्रि, मोतकोटर्णा।

इन सामन्त राज्योंका प्राकृतिक सौन्दर्य विभिन्न स्थानमें विभिन्न प्रकारका है। उत्तर और पूर्वमें वन-परिवेष्टित पर्वतशृङ्ग है। इससे वहां अपूर्व शोभा दिखाई देती है। दक्षिण और पश्चिम-भूभाग समतल उर्वर क्षेत्रसे परिपूर्ण है, कहीं कहीं घना जंगल भी दिखाई देता है।

यहांकी मिट्टी बलुई है सही, पर उपजाऊ है। कहीं कहीं उर्वर कृष्णवर्णके खेत भी दिखाई देते हैं। यह प्रदेश उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर ढालू चला गया है। सरस्वती, शावरमती, हातमती, खारी, मेखवा, माजम, वायक आदि बहुत-सी छोटी छोटी नदियां इस भूभागमें बहती हैं। अलावा इसके रानी तालाब, कर्मावापी तालाब, वावसूर तालाब आदि पुष्करियां और कुएं अधिवासियोंके जलकष्ट दूर करते हैं। शेषोक्त तालाबका परिमाण ६०७ बीघा है।

इसमें १७२३ ग्राम और ६ शहर लगते हैं। जनसंख्या चार लाखके करीब है। भील और कोलि नामक जाति ही यहांके आदिम अधिवासी है। मुसलमानोंके आक्रमणसे उत्पीड़ित हो कर सिन्धुवासी राजपूत लोग अपनी वासभूमिको छोड़ इस प्रदेशमें आये और जंगली अधिवासियोंको परास्त कर वहीं बस गये।

१५वीं शताब्दीमें यह प्रदेश अहमदाबाद-राजवंशके अधिकारमें था। उक्त राजवंशके अधःपतनके बाद मुगल-बादशाहने अपना अधिकार फैलाया। किन्तु देशका शासनकार्य देशी राजों पर ही सौंपा था। वे लोग सेना भेज कर बीच बीचमें कर उगाह लाते थे। १८११ ई०में महाराष्ट्रशक्तिका अवसान देख कर अंगरेज-राज यहांसे राजकर वसूल करके गायकवाड़ राजाको देते थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१८२० ई०में अंगरेजोंने इस राज्यका शासनभार अपने हाथ लिया। इस समय बड़ोदाराजके साथ अंगरेजोंकी एक सन्धि हुई जिसमें शर्त्त यह थी, कि अंगरेजराज अपने खर्चासे यहांका कर वसूल करके बड़ोदाराजको देंगे, किन्तु बड़ोदराज इस प्रदेशमें सेना नहीं भेज सकते और न शासन-कार्यमें हस्तक्षेप हो कर सकते हैं। अंगरेजी अमलदारीके बाद भी यहां १८३३-३६ और १८५७-५८ ई०में दो बार विद्रोह खड़ा हुआ। शेषोक्त विप्लवमें वरिङ्गा शैल पर एक छोटी लड़ाई हुई। इस लड़ाईमें अङ्गरेजी सेनाने मोन्देही नगरको जीता। १८६७ ई०में पोसिनामें भी एक विद्रोह खड़ा हुआ। १८८१ ई०में पोलवासी भीलों-ने सरदारोंके विरुद्ध खड़े हो कर अपने अधिकारकी घोषणा कर दी।

उपरोक्त सीमान्तवर्त्ती भीलों और राजपूतोंकी वृथा खूनखराबी और वाद विवाद निवटानेके लिये सर जेम्स आटरामने १८३८ ई०में यहां एक पंचायत बैठाई। इस प्रकार सामान्तदेशकी विद्वेष-वह्नि सदाके लिये बुझ गई। जो सब दोषी ठहराये गये उन्हें क्षतिपूरणस्वरूप कुछ रकम देनी पड़ी। १८७३ ई०में इस नियमका अनेक बार संस्कार हुआ। इस समय एक अंगरेज-सेनापति पंचायतविचार-सभाके सभापति तथा दूसरे दो व्यक्ति सदस्य हो कर विचारकार्यमें सहायता करते थे। भील-को छोड़ कर और सभी दोषी व्यक्तियोंको दण्ड देनेकी व्यवस्था १८७८ ई०में सारे महीकान्त राज्यमें जारी हुई। तभीसे भील और कोलके सिवा और कोई भी व्यक्ति यहां अपने इच्छानुसार महुएसे शराब नहीं बना सकता।

यहां विभिन्न श्रेणीके अधिवासियोंमें भीलगण ही दुर्द्धर्ष हैं। इन लोगोंमें कन्या अपहरण कर विवाद करने-की रिवाज है। किन्तु कन्या-हरणकालमें यदि कोई उसे देख या पकड़ ले, तो कन्याका पिता उसे अच्छी तरह दण्ड देता है। ये लोग स्वजातिको विपद्में देख कर चुपचाप बैठ नहीं रहते, जीजानसे उसके उद्धारको कोशिश करते हैं।

इस भील सम्प्रदायमें अधिकांश भगत् वा भागवत कहलाता है। ये लोग भील सरदारके खेराड़ी मुरमलुके शिष्य और रामोपासक हैं। उच्चश्रेणीके हिन्दूकी तरह ये लोग सदाचारी हैं। मांस मछली नहीं खाते, कपाल पर सिन्दूरका तिलक लगाते और शिर पर पीतवर्णकी पगड़ी बांधते हैं। जंगली भीलोंने एक समय इस निरीह सम्प्रदायको समाजच्युत करके बहुत सताया था। आखिर अंगरेजोंने बीचमें पड़ कर मेल करा दिया।

राज्यकी आय कुल मिला कर ११॥ लाख रु० है। जिसमें १ लाख रुपया गायकवाड़को तथा आध लाख अन्यान्य राजोंको करमें देना पड़ता है। यहां स्काट कालेज नामक एक तालुकदारी स्कूल हैं। इस स्कूलमें सिर्फ राजे महराजेके लड़के पढ़ते हैं। अलावा इसके राजकुमार नामक एक और भी कालेज है, जिसमें सभी श्रेणीके लड़के पढ़ते हैं। कुल मिला कर स्कूलकी संख्या ११७ है।

महीक्षित् (सं० पु०) महां क्षयते इष्टे क्षि-क्विप्, तुक् च। राजा, पृथिवी-पति।

महीखड़ी (हिं० स्त्री०) सिकलीगरोंका एक औजार। इसकी धार कुन्द होती है और इसमें लकड़ीका दस्ता लगा रहता है। इससे बर्त्तन आदि खुरच कर साफ किये जाते हैं और उन पर ज़िला की जाती है।

महीगञ्ज—रङ्गपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५° ४३′ ३०″ उ० तथा देशा० ८९° २०′ पू० रङ्गपुर नगरके किनारे अवस्थित है। पहले यह स्थान पाट और नाना द्रव्योंका वाणिज्य-केन्द्र था; किन्तु नवाबगञ्ज बाजारमें नाना द्रव्योंकी आमदनी और रफ्तनी होनेके कारण यहांके वाणिज्यमें भारी धक्का पहुंचा है।

महोधंवल—सिंहपुराधिप राजा दिवाकरवर्मकी एक पदवी।

महीचन्द्र (सं० पु०) कन्नोजके एक राजा।

महीचर (सं० त्रि०) चरतीति चर-अच्, महां चरः। पृथिवीचारी, पृथ्वी पर विचरण करनेवाला।

महीचारी (सं० त्रि०) १ पृथ्वी पर चलनेवाला। (पु०) २ महादेव।

महीज (सं० पु०) महां जायते इति जन-ड। १ आर्द्रक, अदरक। २ मंगलग्रह।

"खौ रसाब्धी सितगौ हयाब्धी द्वयं महीजे विधुजे शराष्टौ।
गौ रामाष्टौ भृगुजे तृतीयं शनौ रसाद्यन्तमिति क्षपायाम्॥"
(समयप्रदीप)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(क्रि०) ३ भूमिजातमात्र।

महीतट (सं० क्ली०) जनपदभेद।

महीतपत्तन (सं० क्ली०) स्थानभेद, एक नगरका नाम।

महीतल (सं० क्ली०) मह्याः तलम्। भूतल, पृथ्वी।

महीदत्त—बालविवेक नामक ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता।

महीदास—१ भाष्यकार महीधरका एक नाम। २ चरण-व्यूहभाष्यके प्रणेता। ३ ताजकमणि, मणित्थ, वर्षफल-पद्धति और लीलावती टीकाके रचयिता। इन्होंने १५८७ ई०में लीलावती टीकाकी रचना की थी।

महीदासभट्ट (सं० पु०) भाष्यकार महीधरका नामान्तर।

महीदेव (सं० पु०) १ सूर्यवंशीय एक राजा। इनकी राज-धानी पुष्पपुरमें थी। २ ब्राह्मण।

महीधर (सं० पु०) १ विष्णु। २ पर्वत। ३ शेषनाग। ४ बौद्धोंके अनुसार एक देवपुत्रका नाम। ५ एक वर्णिक वृत्तका नाम जिसमें चौदह वार क्रमसे लघु और गुरु आते हैं।

महीधर—१ एक प्राचीन कवि। २ वृहज्जातक-विवरणके प्रणेता। ३ मगधवासी एक प्राचीन कवि। ये राजा वर्णमान और रुद्रमानके समय १०५६ शकमें मौजूद थे। ४ विख्यात दीपिकाकार। इन्होंने वाजसनेय-संहिताके 'वेददीप' नामक भाष्यकी रचना कर अच्छी प्रसिद्धि पाई। ये रत्नाकरके पौत्र तथा रामभक्तके पुत्र थे। वाराणसी-धाममें रह कर इन्होंने केशवमिश्रके पुत्र रत्नेश्वर मिश्रसे विद्याशिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अद्भुतविवेक, ईशावास्योप-निषद्भाष्य, एकाक्षरकोष, कात्यायनगृह्यसूत्रभाष्य, कात्यायन शुल्वसूत्रभाष्य, नृसिंहपटल, पुरुषसूक्तकी टीका, मातृका-क्षरनिघंटु या मातृकानिघंटु, योगवाशिष्टसारविवृति, राम-गीताकी टीका, रुद्रजपभाष्य, षड़ङ्गरुद्रभाष्य, सारस्यत-प्रक्रियाकी टीका और सौभाग्यमणिविनियोगसूत्रार्थ नामक बहुत-से ग्रन्थ बनाये। इसके अलावा इन्होंने १५६७ और १५८६ ई०में क्रमशः विष्णुभक्ति कल्पलता-प्रकाश तथा मन्त्रमहोदधि और नौका नामकी टीका लिखी। ५ सह्याद्रिखण्ड-वर्णित एक राजा।

महीध्र (सं० पु०) महीं धरतीति धृ-क। १ पर्वत। २ पृथ्वीके उद्धारकर्त्ता।

महीध्रक (सं० पु०) १ एक राजाका नाम। २ महीध्र, महीधर।

महीन (हिं० वि०) १ जिसकी मोटाई या घेरा बहुत ही कम हो। २ जिसके दोनों ओरके तलोंके बीच बहुत कम अन्तर हो, बारीक। ३ जो बहुत कम ऊंचा या तेज हो, धीमा।

महीन (सं० पु०) राजा, महीपति।

महीनगर—महीनदी-तीरस्थ एक प्राचीन नगर।

महीना (हिं० पु०) कालका एक परिमाण जो वर्षके बारहवें अंशके बराबर होता है। मास देखो।

महीनाथ (सं० पु०) मह्याः नाथः। पृथिवीपति, राजा।

महीप (सं० पु०) महीं पाति पा-क। १ पृथिवीपति, राजा। २ एक अभिधानिक।

महीप—१ सोमपके पुत्र, एक ग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने अने-कार्थ तिलक वा नानार्थरत्नतिलक और शब्दरत्नाकर नामक दो ग्रन्थ बनाये। वासवदत्तामें शिवरामने इनका नामोल्लेख किया है। २ बघेलवंशीय एक राजा।

महीपनारायण—१ वाराणसीके एक राजा। १७८१ ई०-की १४वीं सितम्बरको बृटिश सरकारने उन्हें एक सनद दी थी।

महीपतन (सं० क्ली०) मह्याः पतनं। साष्टाङ्ग-प्रणिपात, झुक कर प्रणाम करना।

महीपति (सं० पु०) मह्याः पतिः। पृथ्वीपति, राजा।

महीपति—१ पञ्चसायकके रचयिता। २ वनथलीके चूड़ासमावंशीय एक सामन्तराज।

महीपति उपाध्याय—एक प्राचीन कवि। कवीन्द्र-चन्द्रोदय-में इनका नामोल्लेख है।

महीपतिमण्डलिक—एक प्राचीन कवि।

महीपद (सं० पु०) किञ्चुलुक, केंचुआ।

महीपाल (सं० पु०) महीं पालयतीति पालि-अण्। १ राजा।

"नीरक्तश्च महीपाल! रक्तबीजो महासुरः॥"

(मार्क०पु० ८८।६१)

२ एक राजाका नाम।

महीपाल—१ पालवंशीय एक गौड़ाधिपति। पालराजवंश देखो। २ सह्याद्रिखण्ड-वर्णित दो राजे। ३ राजपूतानेका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक सामान्तराज। ४ चूड़ासमा वंशीय दो नरपति। ५ कच्छपघातवंशीय एक राजा। ६ एक कन्नोजाधिपति। ये १७७३ ई०में विद्यमान थे।

महीपालदेव—एक हिन्दू राजा। फतेपुर जिलेके अग्निनगरकी शिलालिपिसे जाना जाता है, कि ६७४ सम्वत्में ये राज्य करते थे।

महीपालपुर—प्राचीन दिल्लीके उत्तर पश्चिममें स्थित एक विख्यात बड़ा ग्राम। यह कुतुब-मसजिदसे दो कोस दूर पड़ता है। यहां सुलतान घाजी, सुलतान रुक्न-उद्दीन फिरोज और सुलतान मूयाज उद्दीन बहरामका समाधि-मन्दिर विद्यमान है। सम्राट् फिरोज शाह अपने फतूहत इ-फिरोजशाही नामक ग्रन्थमें इसके पासके मलिकपुर ग्रामका उल्लेख कर गये हैं। मलिकपुरके जनशून्य होनेसे ही इस गांवकी श्रीवृद्धि हुई।

महीपुत्र (सं० पु०) मह्याः पुत्रः। मंगलग्रह।

महीपुर—दिनाजपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह राजा महीपाल द्वारा बसाया गया है इसलिये इतना प्रसिद्ध है।

महीप्रकम्प (सं० पु०) मह्याः प्रकम्पः। भूमिकम्प, भू-डोल।

महीप्ररोह (सं० पु०) वृक्ष, पेड़।

महीप्राचीर (सं० क्ली०) मह्याः प्राचीरमिव, सर्वदिक्स्थितत्वात् तथात्वं। समुद्र।

महीप्रावर (सं० पु०) समुद्र।

महीभट्ट (सं० पु०) एक वैयाकरण।

महीभर्त्तृ (सं० पु०) मह्या भर्त्ता। १ राजा। २ विष्णु।

महीभार (सं० पु०) मह्या भारः। भू-भार, पृथ्वीका बोझ।

महीभुक् (सं० पु०) राजा।

महीभुज् (सं० पु०) महीं भुनक्ति भुज्-क्विप्। राजा।

महीभुजि कृतिन्—यजुमञ्जरी नामक तन्त्रग्रन्थके प्रणेता।

महीभृत् (सं० पु०) महीं बिभर्त्ति धरतीति भृ-क्विप्। (ह्रस्वस्य पितिकृति तुक्। पा ६।१।७१) इति तुगागमश्च। १ पर्वत, पहाड़। २ राजा।

महीमघवन् (सं० पु०) मह्या मघवा। पृथ्वीका इन्द्र, पृथ्वीका राजा।

महीमण्डल (सं० क्ली०) मह्या मण्डलं। पृथ्वी, भूमंडल।

महीमण्डल—मद्रास प्रदेशके उत्तर आरकट जिलेके चित्तुर तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यहां पहाड़की चोटी पर एक दुर्ग है। जनसाधारणका विश्वास है, कि मरहठोंने यह दुर्ग बनावाया था। मुसलमानोंने मराठोंके हाथसे यह दुर्ग ले लिया। पर्वतके ऊपर एक प्राचीन देव-मन्दिर भी देखा जाता है।

महीम (हिं० पु०) एक प्रकारका गन्ना। यह पीलापन लिए हरे रंगका होता है। इसे पूनेका पौंढ़ा भी कहते हैं।

महीमय (सं० त्रि०) मह्या विकारो हवयवो वेति महीमयट्। मृत्तिका निर्मित, मिट्टीका बना हुआ।

"तौ तस्मिन पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्त्तिं महीमयीम्।
अर्हनाञ्च ऋतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः॥"

(मार्क०पु० ६३।७)

महीमहेन्द्र (सं० पु०) मह्याः महेन्द्रः। पृथ्वीका राजा, महीपति।

महीमूढ़—गुर्जराधिपति महमूद बिकाड़ाका शिलाफलक पर लिखा हुआ नाम।

महीमृग (सं० पु०) मृगभेद।

महीयस् (सं० त्रि०) मह-ईयसुन्। अत्यन्त महत्, बहुत बड़ा।

महीयत्व (सं० क्ली०) महीय त्व। श्रेष्ठत्व, श्रेष्ठता।

महीया (सं० स्त्री०) सुख, आनन्द।

महीयाल—गाहड़वालवंशीय एक राजा।

महीयु (सं० त्रि०) सुखी।

महीर (हिं० स्त्री०) १ वह तलछट जो मक्खन तपानेसे नीचे बैठ जाती है। २ मट्ठेमें पकाया हुआ चावल, मट्ठेको खीर।

महीर—मिरजा महम्मद अलीका एक नाम। इनका वासस्थान आगरा था। इनके पिता हिन्दू थे और मीरजाफर सुबाइकी सभामें श्लेषवक्ताका काम करते थे। मीरजाफरके कोई सन्तान न थी इसलिये उन्होंने महीरको मुसलमान धर्ममें दीक्षित कर पोष्यपुत्र बनाया था।

महीरने मीरजाफर द्वारा सुशिक्षित हो अनेक प्रकारकी ग्रन्थ-रचनासे 'महीर'की खिताब पाई। सम्राट् औरङ्गजेबका गुणकीर्त्तन कर उनके राज्याभिषेकके समय इन्होंने "गुल-आइ-औरङ्ग" ग्रन्थकी रचना की।

महीरजस (सं० क्ली०) मह्याः रजः। पृथ्वीकी रेणु, धूल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महीरण (स० पु०) पुराणानुसार धर्मके एक पुत्रका नाम। यह विश्वदेवके अन्तर्भुक्त हैं।

महीरत (सं० पु०) एक राजा।

महीरन्ध्र (सं० क्ली०) मह्या रन्ध्रं। भूगर्त्त, गड्ढा।

महीरावण—अद्भुत रामायणके अनुसार रावणके एक पुत्रका नाम। महिरावण देखो।

महीरुह (सं० पु०) मह्यां रोहति जायते इति रुह-क। वृक्ष, पेड़।

महीलता (सं० स्त्री०) मह्या लतेव। किंचुलुक, केंचुआ।

महीला (सं० स्त्री०) महिला, स्त्री।

महीश—एक प्राचीन हिन्दू राजा।

महीशासक (सं० पु०) मह्या शासकः। पृथ्वी-पति, राजा।

महीशासक—हीनयान-मतावलम्बी बौद्धसम्प्रदायभेद। यह सर्वास्तिवाद या वैभाषिक मतकी पांच शाखाके अन्तर्भुक्त है।

महीश्वर (सं० पु०) मह्या ईश्वरः। पृथ्वीपति, राजा।

महीसन्तोष—एक प्राचीन गण्डग्राम।

महीसुत (सं० पु०) मह्याः सुतः। मंगलग्रह, पृथ्वीका पुत्र।

महीसुर (सं० पु०) मह्याः सुरो देवता इव। १ भूदेवता, ब्राह्मण। २ राज्यविशेष, महिसुरराज्य। महिसुर देखो।

महिसूनु (सं० पु०) मह्याः सूनुः पुत्रः। मङ्गलग्रह।

महुअर (हिं० स्त्री०) १ वह भेड़ जिसका ऊन कालापन लिए लाल रंगका होता है। २ महुआ मिला कर पकाई हुई रोटी।

(पु०) ३ एक प्रकारका बाजा। इसे तुमड़ी वा तूंबी भी कहते हैं। यह कड़वी पतली तूंबीका होता है जिसमें दोनों ओर दो नालियां लगी होती हैं। एक ओरकी नलीको मुंहमें लगा कर और दूसरी ओरकी नलीके छेद पर उंगलियां रख कर इसे बजाते हैं। प्रायः मदारी लोग सांपोंको मस्त करनेके लिये इसे बजाते हैं। २ एक प्रकारका इन्द्रजालका खेल जो महुअर बजा कर किया जाता है। इसमें दो प्रतिद्वन्द्वी खेलाड़ी होते हैं जिनमेंसे प्रत्येक महुअर बजा कर दूसरेको मूर्छित अथवा चलने फिरनेमें असमर्थ करनेका प्रयत्न करता है।

महुअरि (हिं० स्त्री) महुप देखो।

महुअरी (हिं० स्त्री०) वह रोटी जो आटेमें महुआ मिला कर बनाई जाती है।

महुआ (हिं० पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्षभेद, भारतवर्षके सभी भागोंमें होनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। संस्कृत पर्याय—मधूक, मधुष्ठील मधुस्रवा, मधुपुष्प, रोध्रपुष्प, माधव, वानप्रस्थ, मध्वग, तीक्ष्णसार, महाद्रुम।

यह पेड़ पहाड़ों पर तीन हजार फुटकी ऊँचाई तक पाया जाता है। हिमालयकी तराई तथा पंजाबके सिवा सारे उत्तरीय भारत तथा दक्षिणमें इसके जंगल पाये जाते हैं। उन जंगलोंमें यह स्वच्छंदरूपसे उगता है। पर पंजाबमें यह सिवाय बागोंके, जहां लोग इसे लगाते हैं और कहीं भी नहीं पाया जाता। यह पेड़ तीस चालीस हाथ ऊंचा और सब प्रकारकी भूमि पर होता है। इसकी पत्तियां पांच सात अंगुल चौड़ी, दश बारह अंगुल लम्बी और दोनों ओर नुकीली होती है। पत्तियोंका ऊपरी भाग हलके हरे रंगका और पीठ भूरे रंगकी होती है। इसका पेड़ ऊंचा और छतनार होता है और डालियां चारों ओर फैलती हैं। इसके फूल, फल, बीज और लकड़ी सभी चीजें काममें आती हैं। पेड़ बीस पचीस वर्षमें फूलने और फलने लगता है और सैकड़ों वर्ष तक फूलता-फलता है। इसकी पत्तियां फूलनेके पहले फाल्गुन चैतमें झड़ जाती हैं। पत्तियोंके झड़ने पर इसकी डालियोंके गुच्छे निकलने लगते हैं जो कूंचीके आकारके होते है। इसे महुएका कुचियाना कहते हैं। कलियां बढ़ती जाती हैं और उनके खिलने पर कोशके आकारका उजला फूल निकलता है। यह फूल गुदारा और दोनों ओर खुला हुआ होता है तथा इसके भीतर जीरे होते हैं। यही फूल खानेके काममें आता है और महुआ कहलाता है। महुएका फूल बीस बाईस दिन तक लगातार टपकता है। महुएके फूलमें चीनीका प्रायः आधा अंश होता है, इसीसे पशु-पक्षी और मनुष्य सभी प्राणी इसे बड़े चावसे खाते हैं। इसके रसमें विशेषता यह है कि उसमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोटियां पूरीकी तरह पकाई जा सकती हैं। यह हरे और सूखे दोनों हालतमें प्रयोग किया जाता है। हरे महुएके फूलको कुचल कर रस निकाल कर पूरियां पकाई जाती हैं और पीस कर उसे आटेमें मिला कर रोटियां बनाई जाती हैं जिन्हें 'महुअरी' कहते हैं। सूखे महुएको भून कर उसमें पियार, पोस्तके दाने आदि मिला कर कूटे जाते हैं। इस तरह जो तय्यार किया जाता है उसे लाटा कहते हैं। इसे भिगो कर और पीस कर आटेमें मिला कर 'महुअरी' बनाई जाती है। हरे और सूखे महुएको लोग भून कर भी खाते हैं, गरीबों-के लिये यह बड़े कामका होता है। गौओं, भैंसोंके मोटो होने और अधिक दूध देनेके लिये यह खिलाया जाता है। इससे शराब खींची जाती है। महुएकी शराबको संस्कृतमें 'माध्वी' और आज कलके गंवार 'ठर्रा' कहते हैं। महुएका फूल बहुत दिनों तक रहता है और बिगड़ता नहीं। इसका फल परवलके आकारका होता है जो कलेंदी कहलाता है। इसके बीचमें एक बीज होता है जिससे तेल निकलता है। वैद्यकके मतसे महुएके फूलको मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक तथा दाह, पित्त और वातनाशक, हृदयको हितकर तथा भारी लिखा है। इसके फलका गुण शीतल, शुक्रजनक, धातु, बलवर्द्धक, वात, पित्त, तृषा, दाह, श्वास, क्षयी, छालका गुण रक्त-पित्तनाशक, व्रणशोधक और इसके तेलका गुण कफ, पित्त और दाहनाशक माना गया है।

महुआ दही (हिं० पु०) वह दही जिसमेंसे मथ कर मक्खन निकाल लिया गया हो, मखनिया दही।

महुआरी (हिं० स्त्री०) महुएका जङ्गल।

महुदी—हजारीबाग जिलेके कर्णपुर परगनान्तर्गत एक एक शैल। यह हजारीबाग अधित्यकासे आठ मील दक्षिण समुद्रपीठसे १४३७ फीट ऊंचा है। यहां चायके बड़े बड़े बगीचे हैं।

महुध—बम्बईप्रदेशके खैरा जिलेके नरियाद उपविभागान्त-र्गत एक नगर। यह अक्षा० २२° ४८′ ३०″ उ० तथा देशा० ७३° १′ पू०के मध्य अवस्थित है। प्रवाद है कि प्रायः दो हजार वर्ष पहले मान्धाता नामक एक हिन्दू राजाने यह नगर बसाया था।

महुया (हिं० पु०) स्मनामख्यात वृक्षभेद। महुआ देखो।

महुयागढ़ी—सन्थाल परगनेके दुमका उपविभागके अन्त-र्गत एक गिरिश्रृङ्ग। यहांकी अधित्यका-भूमि स्वास्थ्यकर है। यहां जो जङ्गल है, वह वृटिश-सरकारके अधीन है।

महुर्छा (हिं० पु०) महोत्सव।

महुरिगांव—वैतरणी तीरवर्त्ती एक बन्दर। यह कटक जिलेके चांदवाली बन्दरसे दो मील उत्तर पड़ता है।

महुला (हिं० वि०) १ महुएके रंगका। (पु०) २ वह बैल जिसके शरीर पर लाल और काले रंगके बाल हों। ऐसा बैल निकम्मा समझा जाता है।

महुवरि (हिं० स्त्री०) महुअर नामका बाजा, तूंबड़ी।

महुवा (हिं० पु०) महुआ देखो।

महुवा—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ राज्यके हाला विभागान्तर्गत एक सामन्तराज्य। यहांके सरदार अंग-रेज राजको १२०) और जूनागढ़ नवाबको ३८ रुपये कर देते हैं।

महुवा (महोवा)—बम्बई-प्रदेशके काठियावाड़के भाव नगर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २१° ५′ १५″ उ० तथा देशा० ७१° ४८′ ४५″ पू० समुद्रतीरसे दो मील पर अवस्थित है। यहां असंख्य अट्टालिकाएं और देव-मन्दिर हैं।

समुद्रतीरके पूर्व जेग्री द्वीप अवस्थित है। इस द्वीपमें ९९ फुट उच्च एक आलोकस्तम्भ है जिसकी रोशनी प्रायः १३ मील दूरसे दिखाई पड़ती है। महुवा-का प्राचीन नाम मोहेरक था। मालन नदी इस स्थान हो कर दौड़ गई है।

महूख (हिं० पु०) १ महुआ। २ जेठ मधु, मुलेठी।

महेच्छ (सं० पु०) महती इच्छा यस्य, ह्रस्वश्च सामासिकः। महाशय।

महेत्थ—प्राचीन जनपदभेद। राजसूययज्ञके समय नकुल-ने इस स्थानमें परिभ्रमण किया था। (महाभारत)

महेन्द्र (सं० पु०) महांश्चासाविन्द्रश्च ऐश्वर्य्यवानित्यर्थः। १ विष्णु। २ शक्र, इन्द्र। ३ भारतवर्षके एक पर्वतका नाम। यह सात कुल पर्वतोंमें गिना जाता है।

"महेन्द्रो मलयः सह्यः सुक्तिमानृक्षपर्वतः।
विन्ध्यश्च पारिपात्रश्च सप्तैवात्र कुलाचलाः॥"
(मार्क० पु० ५७।१०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महेन्द्र—१ एक विख्यात पण्डित। ये न्यायसारदीपिका-के प्रणेता जयसिंहके गुरु थे। २ एक प्राचीन कवि।

महेन्द्र—१ चाहमानवंशीय नड्डूलाके एक राजा। ये विग्रहपालके पुत्र थे। २ हस्तिकुण्डीके एक राष्ट्रकूट-राज। ३ एक कोशलाधिपति। ४ पुष्टपुरके राजा। ये दोनों ही गुप्तवंशीय विख्यात नरपति समुद्रगुप्तसे परास्त हुए थे। ५ गुहादित्यवंशधर ग्वालियरके दो राजे।

महेन्द्र—बौद्ध सम्राट् अशोकके पुत्र। ये अशोकराज-प्रतिष्ठित महाबोधिसङ्घ द्वारा ईस्वीसन् २४१-के पूर्व बौद्ध-धर्मका प्रचार करनेके लिये सिंहलमें भेजे गये थे। वहां ही वे करालकालके मुखमें पतित हुए।

महेन्द्र आचार्य—कैलास सामुद्री नामक ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता।

महेन्द्रकदली (सं० स्त्री०) महेन्द्रसम्भवा तद्वर्णा वा कदली। कदलीभेद, एक प्रकारका केला। इसका गुण वात, असृग्दर और पित्तरोगनाशक माना गया है।

महेन्द्रगिरि—मद्रास प्रदेशके गञ्जाम जिलान्तर्गत पूर्वघाट पर्वतका एक शृङ्ग। यह अक्षा० १८° ५८' १०" उ० तथा देशा० ८४° २६' ४ पू० समुद्रपृष्ठसे ४९२३ फुट ऊंचे पर अवस्थित है। इस गिरिशृङ्ग पर चार प्राचीन और बड़े बड़े शिवमन्दिरोंके टूटे फूटे खंडहर नजर आते हैं। एक समय यह स्थान तीर्थक्षेत्र रूपमें गिना जाता था। यहांके गोकर्णस्वामीका माहात्म्य गाङ्गेय राजाओंकी शिलालिपिमें विशदरूपसे वर्णित है।

रामायणमें भी इस पर्वतका उल्लेख आया है। हनूमान इस पर्वतको लांघ कर लङ्का गये थे। तिन्नेवल्लीके सामने इस पर्वतप्रान्तमें त्रिचेनगुड्डी नगर गोपुरयुक्त सुन्दर मन्दिरसे परिशोभित है तथा पश्चिममें त्रिवांकुड़की ओर लण्डन-मिसनरी सोसाइटीका प्राचीन आवास नगर-कोयल नगर अवस्थित है। पर्वत पर कहवेकी खेती होनेसे जङ्गलका बहुत कुछ अंश काट दिया गया है। इससे वन्यविभाग क्रमशः शून्य हो गया है। २ सिंहलकी गिरि।

महेन्द्रगुप्त (सं० पु०) एक राजाका नाम।

महेन्द्रचन्द्र—ग्वालियरके एक हिन्दू-राजा, माधवराजके पुत्र। ये ९५८ ई०में राजगद्दी पर बैठे थे।

महेन्द्रचाप (सं० पु०) महेन्द्रस्य चापः। इन्द्रचाप, इन्द्रधनुष।

महेन्द्रतनया—मद्रास प्रदेशके महेन्द्र पर्वतसे निकली हुई दो छोटी छोटी धाराएं। इनमेंसे एक वुदरसिंगी, मद्रास और जलन्ता तालुक होती हुई वर्वा नगरके पास समुद्रमें जा गिरी है। दूसरी पर्ला-किमेदी भूमिभागके मध्य वहती हुई वंशधरा नदीमें मिली है। पर्ला-किमेदी नगर इस अन्तिम शाखाके किनारे अवस्थित है।

महेन्द्रत्व (सं० क्ली०) महेन्द्रस्य भावः त्व। इन्द्रके भाव या शक्ति।

महेन्द्रदेव—उत्कलराजवंशीय एक राजा, गौतमदेवके पुत्र। इन्होंने राजमहेन्द्री नगर वसाया।

महेन्द्रनगरी (सं० स्त्री०) महेन्द्रस्य नगरी। अमरावती।

महेन्द्रनाथ—हास्यार्णवव्याख्याके प्रणेता।

महेन्द्रनारायण—बंगालके राढ़देशके एक राजा। इन्होंने अपने राज्यको सुदृढ़ करनेके लिये दुर्ग बनाया था।

महेन्द्रपाल—पालवंशीय गौड़के एक अधिपति।

महेन्द्रपालदेव—कन्नोजके एक महाराज, भोजदेवके पुत्र। ये ९६० सम्वत्में मौजूद थे।

महेन्द्रपाल निर्भयराज—पण्डितप्रवर राजशेखरके शिष्य और प्रतिपालक एक राजा।

महेन्द्रपुर—प्राचीन नगरभेद।

महेन्द्रवर्मदेव—गंगवंशीय एक कलिंगके राजा।

महेन्द्रवाड़ी—मद्रास प्रदेशके उत्तर अरकाट जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह वालाजापेटसे ६ कोस पूर्व और उत्तरमें अवस्थित है। यहां एक दिग्गीके किनारे प्राचीन दुर्गका ध्वंसावशेष देखा जाता है। कुरुम्बराज यहां राज्य करते थे। दीवारसे घिरे हुए दुर्गमें एक छोटे मन्दिरका निदर्शन पाया गया है जो बौद्ध वा जैन कीर्त्ति जैसा प्रतीत होता है।

महेन्द्रमन्त्री (सं० पु०) महेन्द्रस्य मन्त्री। देवराजके मन्त्री, वृहस्पति।

महेन्द्रमल्ल—नेपालके एक राजा। ये नरेन्द्रमल्लके पुत्र थे। नेपाल देखो।

महेन्द्रमहोदेव (रघुदेव)—राजमहेन्द्रीके एक नरपति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महेन्द्रवर्म (१म)—पल्लववंशीय एक राजा, राजा सिंह-विष्णुके पुत्र। काञ्चीपुरमें इनकी राजधानी थी। चालुक्य राज २य पुलकेशीने इनको परास्त किया था।

महेन्द्रवर्मन् (२य)—उक्त पल्लवराजके पौत्र और राजा नरसिंह-विष्णुके पुत्र।

महेन्द्रवर्मन् (३य)—पल्लवराज २य नरसिंहवर्माके पुत्र।

महेन्द्रवारुणी (सं० स्त्री०) महेन्द्रवरुणयोरियं प्रियत्वात् अण् ङीष्। लता-विशेष, बड़ा इन्द्रायण। पर्याय—चित्रवल्ली, महाफला, महेन्द्री, चित्रफला, त्रपुसी, त्रपुसा, आत्मरक्षा, विशाला, दीर्घवल्ली, महत्फला, महद्वारुणी, वृहत्फला, वृहद्वारुणी, सौम्या, गजचिर्भिटा, चित्रदेवी, धनुःश्रेणी, स्थाणुकर्णी, मरुसम्भवा।

२ इन्द्रवारुणी, ग्वालककडी।

महेन्द्रसिंह—एक हिन्दू राजा। इन्होंने ११७० फसलीमें फरीदपुर नगर और दुर्ग स्थापन किया।

महेन्द्रसिंह—कुमायूंके चांदवंशीय एक राजा। (१४८८-९० ईस्वी सन्)

महेन्द्रासह—धर्मघोषकृत शतपदीके टीकाकार। इन्होंने १२९४ विक्रम सम्वत्में उक्त ग्रन्थ लिखा।

महेन्द्रसूरी—१ एक जैनसूरि। इन्होंने अनेकार्थ-कैरवाकर कौमुदी नामक हेमचन्द्रकृत अनेकार्थसंग्रहकी टीका, यन्त्रराज और उसकी टीका तथा शिवताण्डव नामक बहुत-से ग्रन्थ लिखे। २ अञ्चलिकमतावलम्बी एक जैनाचार्य। इन्होंने शतपदी नामक एक ग्रन्थकी रचना की।

महेन्द्राचार्य शिष्य—विजयभैरव नामक ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता।

महेन्द्राणी (सं० स्त्री०) महेन्द्रस्य भार्येति महेन्द्र (पुंयोगादाख्यायां। पा ४।१।४८) इति ङीष् (इन्द्रवरुणेति। पा ४।१।४९) इति आनुगागमः। १ इन्द्रभार्य्या, महेन्द्रकी स्त्री। २ इन्द्रचिर्भटी।

महेन्द्राधिराज—पल्लवराज नोड़म्बाधिराजके पुत्र। इनका दूसरा नाम वीरमहेन्द्र भी था। ९३०-४० ईस्वी-सन्के अन्दर इन्होंने पाश्चात्य गङ्ग एड़प्पोंको हराया।

महेन्द्राल (सं० स्त्री०) महेन्द्री नामक नदीका एक नाम।

महेन्द्री (सं० स्त्री०) १ एक नदीका नाम जो गुजरातमें बहती है। इसे महेन्द्रताल भी कहते हैं। २ महेन्द्रवारुणी लता।

महेन्द्रीय (सं० त्रि०) महेन्द्रसम्बन्धीय, इन्द्रसे सम्बन्ध रखनेवाला।

महेमति (सं० त्रि०) महामति, बड़ा बुद्धिमान्।

महेर—गुजरातके अन्तर्गत एक पर्वत।

महेर (हिं० पु०) झगड़ा, बखेडा। महेरा देखो।

महेरणा (सं० स्त्री०) महत् ईरणं प्रेरणमस्याः यद्वा महद् गजोत्सव-मीरयतीति ईर ल्यु-टाप्। शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।

महेरा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका व्यञ्जन जो दहीमें चावल पका कर बनाया जाता है। यह दो प्रकारका होता है—सलोना और मीठा। सलोनेमें हलदी, राई आदि मसाले डाले जाते हैं और मीठेमें गुड़ पड़ता है। इसे महेला भी कहते हैं। महेला देखो। २ एक भोज्य पदार्थ। यह खेसारीके आटेको दहीमें उबालनेसे बनता है।

महेरि (हिं० स्त्री०) महेरा नामक खाद्य पदार्थ

महेरी (हिं० स्त्री०) १ उबाली हुई ज्वार। इसे लोग नमक-मिर्चसे खाते हैं। (वि०) २ अड़चन डालनेवाला, बखेड़ा खड़ा करनेवाला।

महेला (सं० स्त्री०) महयते पूज्यते इति मह-(सलिकल्यनिमहीति। १।५५) इति इलच् पृषोदरादित्वादिकारस्यैकारः यद्वा महस्य उत्सवस्य इला भूमिः। १ नारी, औरत। (पु०) २ पशुओंके खिलानेका एक पदार्थ। यह चने, उर्द, मोठ आदिको उबाल कर और उसमें गुड़ घी आदि डाल कर बनाया जाता है। इसके खिलानेसे घोड़े, बैल आदि पुष्ट होते हैं।

महेलिका (सं० स्त्री०) महेला-स्वार्थे कन्-टाप्, अकारस्येत्वं। १ नारी, महिला। २ स्थूल ऐला, बड़ी इलायची।

महेश (सं० पु०) महान् ईशः। शिव, महादेव।

"ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।"

(शिवध्यान) शिवपूजा देखो।

२ ईश्वर।

महेश—हुगली जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २२° ४०' उ० तथा देशा० ८८° २३' ४५" पू० श्रीरामपुर नगरके उपकण्ठमें गङ्गाके किनारे अवस्थित है। यहांका जगन्नाथदेवका मन्दिर बड़ा ही मशहूर है। प्रति वर्ष ज्येष्ठ मासकी स्नानयात्रा और आषाढ़ मासकी रथयात्रा बड़े समारोहसे समाप्त होती तथा उन दिनों यहां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा मेला लगता है। रथयात्राके समय जगन्नाथदेव आठ दिन तक वल्लभपुरमें राधावल्लभपुरके मन्दिरमें आ कर रहते हैं। इस आठ दिनके मेलेमें लाखसे अधिक मनुष्य समागम होते हैं।

महेश—१ एक आभिधानिक। २ प्रयोगचिन्तामणि नामक व्याकरणके प्रणेता। ३ सुवर्णमुक्ताविवादके रचयिता। ४ स्मृतिसार और व्यवस्थासारसंग्रह नामक दो ग्रन्थके प्रणेता। अन्तका एक ग्रन्थ इन्होंने अपने पिताके स्मृतिसारसंग्रहसे संकलन किया। ५ एक प्राचीन कवि, अत्रिके पुत्र और जोटिङ्गकेशरके पौत्र। ये गुहिलवंशीय मेवाड़राज्य राजमल्लके सभासद थे।

महेशकवि—सदाचार चन्द्रोदयके प्रणेता। ये सारस्वत दुर्गशर्म्माके पुत्र और मिथिलावासी पुरुषोत्तमके शिष्य थे।

महेशखाल—बङ्गालके चट्टग्राम जिलेके दक्षिण पार्श्वस्थ एक द्वीप। यह अक्षा० २१° ३६′ उ० तथा देशा० ९१° ५७′ पू०के मध्य अवस्थित है। इस द्वीपके मध्य और पूर्वदिशामें कम ऊंचाईकी शैलश्रेणी है। उक्त शैलमालाकी ग्रामचोरी सबसे मशहूर है। इसकी ऊंचाई करीब ३ सौ फुट होगी।

महेशचन्द्र—वैद्यकसंग्रहके रचयिता।

महेशठक्कुर—१ तत्त्वचिन्तामण्यालोकदर्पणके प्रणेता। २ तिथितत्त्व चिन्तामणि, मलमाससारिणी और सर्वदेववृत्तान्तसंग्रहके रचयिता।

महादेशदत्त ब्राह्मण—एक भाषाकवि। आप धनौली जिला बाराबांकीके निवासी थे। संस्कृतमें भी आपकी अच्छी व्युत्पत्ति थी।

महेशनन्दी—षट्कारक नामक व्याकरणके प्रणेता।

महेशनारायण—सात्त्वताचरवादार्थ या भक्तिविलास तत्त्वदीपिका और हैमाद्रिकी गौराङ्गदेवस्तुतिके रचयिता। इन्होंने पण्डिश्रेष्ठ राधारमन दाससे शिक्षा पाई थी।

महेशपाल—ग्वालियरके एक प्राचीन राजा।

महेशपुर—यशोर जिलेके वनगांव उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २३° २१′ उ० तथा देशा० ८८° ५६′ पू०के मध्य कबदक नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या चार हजारसे ऊपर है। १८६९ ई०में म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है।

महेशपुर—तैरभुक्तके अन्तर्गत एक प्राचीन बड़ा ग्राम।

महेशपुर—यशोर जिलांतर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२° ५५′ ५५″ उ० तथा देशा० ८८° ५६′ ५०″ पू०के मध्य अवस्थित है।

महेशभट्ट—स्मार्त्तप्रयोगरत्नहिरण्यकके प्रणेता, महादेव भट्टके पुत्र।

महेशमिश्र—निर्दोषकुलपञ्जिका नामक राढ़ीय कुलग्रन्थके प्रणेता।

महेशवन्धु (सं० पु०) महेशो वध्यते वशीक्रियते येन लम्बोस्तनजन्यत्वात्। श्रीफलवृक्ष, बेलका पेड़।

महेशाख्य (सं० त्रि०) १ अति प्रसिद्ध, बड़ा नामी। (पु०) २ महेश, शिव।

महेशान (सं० पु०) शिव, महादेव।

महेशानी (सं० स्त्री०) दुर्गा।

महेशित् (सं० पु०) शिव, महादेव।

महेश्वर (सं० पु०) महांश्चासावीश्वरश्च कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथा कर्त्तुं वा समर्थः यद्वा महत्या महामायया ईश्वरः शिव, महादेव।

इसकी व्युत्पत्ति :—

"विश्वस्थानाञ्च सर्वेषां महतामीश्वरः स्वयम्।
महेश्वरञ्च तेनेमं प्रवदन्ति मनीषिणः॥"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्र० ख० ५३ अ०)

ये संसारके सभी प्राणियोंके प्रभु हैं इसलिये उनका महेश्वर नाम पड़ा है। २ परमेश्वर।

"वायोर्नवैकादश तेजसो गुणा जलक्षिति प्राणभृतां चतुर्दश।
दिक्कालयोः पञ्च षड़ेव चामरे महेश्वरोऽष्टौ मनसस्तथैव॥"

(न्यायशास्त्र)

महान् ईश्वरः प्राजानां प्रभु। ३ ऐश्वर्यशाली राजा, प्रतापवान् राजा। ४ श्वेत मन्दार, सफेद मदार। ५ स्वर्ण, सोना।

महेश्वर—मध्यभारत एजेन्सीके इन्दोरराज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२° ११′ उ० तथा देशा० ७५° ३६′ पू०के नर्मदाके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या सात हजारसे ऊपर है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह नगर महेश्वर जिलेका सदर है। होलकरके अधीनस्थ निमारके शासनकर्त्ता इसकी देखभाल करते हैं। महाराज मलहार रावकी पुत्रवधू खण्डे रावकी पत्नी अहल्याबाई यहां प्रासाद बना कर स्वयं रहती थीं।

इस नगरकी प्राचीनताके सम्बन्धमें भी बहुतसे प्रमाण मिलते हैं। बहुतेरे इसे चन्द्रवंशकी प्रथम राजधानी वा सहस्रार्जुन प्रतिष्ठित माहिष्मतिपुरी बतलाते हैं। भूमिकम्पसे अभी यह नगर श्रीभ्रष्ट हो गया है। नगरभागकी मट्टी खोदनेसे अभी भी भग्नगृह और गृहसज्जादि दिखाई देती है। यहां जो पत्थरका दुर्ग और राजप्रासाद हैं, वह संस्कारके अभावमें भग्नप्राय हो रहे हैं।

यहांका प्राचीन इतिहास हैहयराजवंशके साथ मिला हुआ है। ६वीं से १२वीं शताब्दी तक हैहय राजोंने मध्यभारतके पूर्वीय विभागका शासन किया। उनके प्रसिद्ध आदिपुरुष कार्त्तिवीर्यार्जुन इसी नगरमें रहते थे। ७वीं शताब्दीमें पूर्वीय चालुक्य राजा विनादित्यने हैहयराजको परास्त किया और माहिशमतीको अपने राज्यमें मिला लिया। पीछे उन्होंने हैहय राजाओंको वहांका शासन भार सौंपा और वे ही वंशपरम्परानुक्रमसे वहांका शासन करते रहे। ६वीं सदीमें मालवाके अधःपतन पर महेश्वर उन्नतिकी चरमसीमा पर पहुंच गया। आगे चल कर मालवाके मुसलमान राजाओंके समय इसकी प्रसिद्धि बहुत कुछ मिट गई। १४२२ ई०में मालवा के होशङ्ग शाहसे गुजरातके राजा १म अह्मदने इसे छीन लिया। अकबर बादशाहके समय यह मण्डू सरकारके चोली महेश्वर महालका सदर बनाया गया।

१७३० ई०में यह स्थान मलहारराव होलकरके हाथ लगा। उनके मरने पर पुत्रबधू अहल्याबाई यहांका शासन करने लगी। उनके समय महेश्वरकी अच्छी उन्नति हुई थी। अहल्याबाईके बाद तुकोजीराव राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने भी इसी स्थानको राजधानी बनाया। १७६७ ई०में तुकोजीके मरने पर महेश्वरके अधःपतनका सूत्रपात हुआ। राज्याधिकार ले कर विवाद खड़ा हुआ। १८६८ ई०में यशवन्तराव होलकरने खजानेको लूटा और नगरको तहस नहस कर डाला। १८११ ई०में उनकी मृत्युके सात वर्ष बाद अर्थात् १८१८ ई०में 'मन्दरशोर'में एक सन्धि हुई। इस सन्धिके अनुसार यहांसे राजधानी उठ कर इन्दौर चली गई। १८१६से १८३४ ई० तक हरिराव होल कर यहांके दुर्गमें कैद रहे।

यहां बहुतसे कारुकार्यविशिष्ट राजप्रसाद हैं, किन्तु सभी हालके बने हैं। यहांका दुर्ग मुसलमानी अमलदारीमें बनाया गया था। किन्तु कोई कोई कहते हैं, कि हिन्दूराजने ही इसकी नींव डाली थी। १५६६, १६८२ और १७१२ ई०की बनी हुई तीन मसजिदें हैं। यहांकी अट्टालिका और धर्मशालामें अहल्याबाईकी बनाई हुई छतरी ही मशहूर है।

यहां सूती और रेशमीके अच्छे अच्छे कपड़े तय्यार होते हैं। दाक्षिणात्यमें उन सब कपड़ों और पाड़दार धोती तथा साड़ियोंका बहुत आदर है। बनारसीकी जरी और छींटदार साड़ी तथा धोतीकी अपेक्षा यहांके वस्त्रादि उत्कृष्ट और बेशकीमती होते हैं।

महेश्वर—१ मयाभाष्य-टीकाकार कैयटके गुरु। २ सिद्धान्त शिरोमणिकार भास्कराचार्यके पिता। ३ भोजप्रबन्धधृत एक प्राचीन कवि। ४ एक वैद्यक ग्रन्थके सङ्कलयिता। हेरम्ब सेनने इनका वचन उद्धृत किया है। ५ अमरकोषविवेकके रचयिता। ६ कामशास्त्रके प्रणेता। ७ केशवोवासनाभाष्य, यन्त्रराज और उसकी टीका, लघुजातकटीका और सिद्धान्तशिरोमणिभाष्य आदि ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता। ८ चित्युपनिषद्भाष्य और सहवै उपनिषद्भाष्यके प्रणेता। ९ चौरपञ्चाशिका टीका और प्रबोधचन्द्रोदय-टीकाके रचयिता। १० जीवन्मुक्तिप्रकरणके प्रणेता। ११ तत्त्वचिन्तामणिटीका और तत्त्वचिन्तामणि दीधितिटीकाके रचयिता। १२ दायभागटीकाके प्रणेता। १३ धूर्त्त विड़म्बनप्रसेनके प्रणयकर्त्ता। १४ भर्त्तृहरिकृत नीतिशतकके टीकाकर्त्ता। १५ महाभारत-सङ्कलयिता। १६ मुद्राराक्षस-टीकाके प्रणेता। १७ रघुवंशटीकाके रचयिता। १८ रसार्णव नामक वैद्यकग्रन्थके प्रणेता। १९ एक विख्यात आभिधानिक, ब्रह्माके पुत्र तथा कृष्ण (केशव)-के पौत्र। ११११ ई०में इन्होंने विश्वप्रकाश नामक एक अभिधानकी रचना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की। उक्त ग्रंथके परिशिष्टरूपमें उन्होंने शब्दभेदप्रकाश या शब्दभेदनाममाला नामक एक दूसरा ग्रंथ लिखा था। अलावा इसके उनका रचा हुआ साहसाङ्क चरित नामक एक और ग्रन्थ मिलता है। २० पुरुषोत्तमकृत विष्णुभक्तिकल्पलता ग्रंथके टीकाकार। १५६० ई० इन्होंने उक्त ग्रन्थ समाप्त किया।

महेश्वर—नर्मदा नदीके उत्तरी किनारे अवस्थित एक नगर। इस नगरके नदीतीरवर्त्ती घाटकी शोभा बहुत कुछ वाराणसीधामसे मिलती जुलती है। मीरट इ-सिकन्दरी पढ़नेसे जाना जाता है, कि सुलतान अहमद-शाहने १४२२ ई०में यह नगर और दुर्ग कब्जा किया था।

महश्वर—एक हिन्दू राजा, श्रीपालके पुत्र। ये दधीचि-गौत्रीय थे।

महेश्वर करच्युता (सं० स्त्री०) महेश्वरस्य करात् च्युता। करतोया नदी। कहते हैं, कि पर्वतराजकी कन्या गौरीके विवाहके समय गिरिराज-प्रदत्त जल महादेवके हाथसे पृथ्वी पर गिर पड़ा था उसीसे इस नदीकी उत्पत्ति हुई है। करतोया देखो।

महेश्वरतीर्थ—रामायण तत्त्वदीपिकाके प्रणेता। इन्होंने नारायण तीर्थसे विद्या सीखी थी। इनका दूसरा नाम महेश भी है।

महेश्वरतीर्थ—एक विख्यात वैदान्तिक। इन्होंने वार्त्तिक-सार नामक एक वेदान्तग्रन्थ बनाया।

महेश्वरदेवराय—दाक्षिणात्यके कुलचुरी राजाओंके अधो-नस्थ एक सामन्तराज

महेश्वरनाग—एक हिन्दू महाराज। ये नागभट्टके पुत्र थे।

महेश्वर न्यायालङ्कार भट्टाचार्य—काव्यप्रकाशादर्श नामक अलङ्कार ग्रन्थके रचयिता।

महेश्वरभट्ट—अन्त्येष्टिपद्धति और प्रतिष्ठापद्धति नामक दो ग्रन्थोंके प्रणेता।

महेश्वर भट्टाचार्य—सिद्धान्तदीप नामक न्यायग्रन्थके रच-यिता।

महेश्वरमिश्र—१ श्राद्धादर्शके रचयिता। २ पर्य्यायरत्न-मालके प्रणेता।

महेश्वरमिश्र—वामनालङ्कारसूत्रवृत्तिकाके रचयिता।

महेश्वर शर्म्मन्—शुद्धिकौमुदीके प्रणेता।

महेश्वरसिंह—मिथिलाके एक राजा, रुद्रसिंहके पुत्र तथा छत्रसिंहके पौत्र। ये व्रताचारके प्रणेता रत्नपाणिके प्रतिपालक थे।

महेश्वरसिद्धान्त (सं० पु०) पाशुपत शास्त्र।

महेश्वराचार्य—वृत्तशतक नामक ज्योतिर्ग्रन्थके प्रणेता, मनोरथके पुत्र। ये ज्योतिर्विन्तिलक और कवीश्वरकी उपाधिसे भूषित थे। शाण्डिल्य इनका गोत्र था। विज्जल पुरमें इनका जन्मभूमि थी। इनके पुत्र लक्ष्मीधर राजा जैत-पाल द्वारा सभापण्डित पद पर नियुक्त हुए थे।

भास्कराचार्य देखो।

महेश्वरानन्द—महार्थमञ्जरी और उसकी टीकाके प्रणेता।

महेश्वरी (सं० स्त्री०) महेश्वरस्य स्त्री, महेश्वर ङीष्। महती चासौ ईश्वरी च महदादीनां नियन्त्रीति वा। महे-श्वरकी पत्नी, शिवानी।

"ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम्।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी॥" (तन्त्रसार)

२ अपराजिता। ३ कास्य, कांसा। ४ राजरीति, पीतल। ५ यवतिक्त लता, शंखिनी नामकी लता।

महेश्वरी (माहेश्वरी)—पश्चिम भारतके वणिक् जाति-की एक शाखा। जयपुर राज्यान्तर्गत डिउवाना नामक ग्राममें इनका आदिनिवास है। किन्तु इस समय युक्त-प्रदेशके प्रायः सभी हिस्सोंमें यह जाति फैल गई है।

इनकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें किम्वदन्ती है, कि एक बार खण्डेला (जयपुर राज्यान्तर्गत) राजा सुजातसिंह पण्डितोंके परामर्शानुसार पुत्रोत्पादनकी इच्छासे वाणप्रस्थका अवलम्बन लिया। अपुत्रक राजा-ने वनमें देवादिदेव महादेवको अपनी आराधनासे संतुष्ट कर पुत्रवरकी प्रार्थना की थी। इस पर राजाको महेश्वरके वरसे एक पुत्र हुआ। इसके बाद नवजात शिशुको कुछ दिनों तक लालन पालन कर नाबालिग अवस्थामें ही सुजातसिंहने अपनी इहलीला संवरण की। अनन्तर युवराज एक दिन सदल-बल शिकार खेलनेके लिये निकले और वनमें यज्ञकार्यमें रत ऋषियोंके सम्मुख उपस्थित हुए। ऋषि लोग इस वीर वेशधारी सशस्त्र वीरमण्डलीको देख भयसे विह्वल हो अपने तपः-बलसे लौहदुर्गका निर्माण कर उसीमें छिप गये। आज भी यह लोहगढ़ दुर्गके नामसे प्रसिद्ध है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजकुमारके सहचर वनमें इस तरहका लौहगढ़ देख कर चकित स्तम्भित हुए। जब वे इसका कारण ढूंढ़नेके लिये चले, तो ऋषियोंके अभिशापसे पत्थरकी मूर्त्ति बन गये। राज-रानियोंने तथा उनकी सहचरियोंने चाहा कि चिता सजा कर सतीधर्मका पालन करें—किन्तु स्वयं महेश्वर उन्हें इस कामसे रोका पीछे उन्हींकी कृपासे उन सब स्त्रियोंने अपने अपने पतिमुखका दर्शन किया। दूसरे मतसे सती रमणियोंकी प्रार्थनासे सती शिरोमणि पार्वती सन्तुष्ट हुई और उनके अनुरोधसे पूर्वोक्त शङ्कर-की कृपा द्वारा पत्थरकी मूर्त्ति मनुष्यरूपमें परिणत हुई थी। महेश्वरकी कृपासे पुनः जीवन पा कर इन लोगोंने महेश्वर नामको चिरस्थायी रखनेके लिये अपना नाम माहेश्वरी या महेश्वरी रखा। इसी समय इस जाति-ने शङ्करकी आज्ञासे अस्त्र त्याग वाणिज्यका कार्य ग्रहण किया। राजकुमारके साथ उनके ७२ सहचर पत्थर बन गये थे। इन्हीं ७२ आदमियोंके नामोंके अनुसार इनका गोत्र चालू हुआ। राजा महेश्वरी-सम्प्रदायके भाट या जागे हुए।

उक्त बहत्तरोंमें—इस समय अजमोढ़ी, औधड़, बहरी, बलदुआ, भांगड़, बरियाल, बेगी, भाण्डारी, भूतड़ा, बिहानी, बिन्नाणी, चण्डक, चेतलिंगिया, डागा, दंभारी, दुरानी, धूत, हेरिया, जगु, झरकत, कबर, कल्याणी, कड्डणी, कर्णाणी, कान्सात, खोखता, खालिया, कोठारी, लब्ध, लखौतिया, लोहिया, मल, मलपार्णे, मालू, मंत्री, मरद, मरुधवान, मन्धुर, नाथरोन, निष्कलङ्क, पर्ताणी, पुण्डपालिया, पर्वाल, राठी, सावू, सधर, सौधानी, सिकची, सोमाणी, सोनी, तोपारिया, तोषालिवाल और तोतल आदि नाम मिलते हैं। ये हिन्दू-बल्लभ संप्रदाय-में अपनेको गिनाते हैं। गौड़ ब्राह्मण इनके पौरोहित्य कार्य किया करते हैं। देवद्विजोंमें इनकी बड़ी भक्ति है। श्रीकृष्णको समर्पित बिना किये ये पान भी नहीं खाते।

राजपूतानेके महेश्वरियोंकी विवाह-प्रथा स्वतन्त्र प्रकारकी है। वरके कन्या-गृहमें प्रवेश करने पर कन्याके मामा कन्याको गोदमें ले कर वरकी सात बार प्रदक्षिणा करेगा।

बम्बई प्रदेशके महेश्वरी बनिया मोध (मोधेरावासी) दश और बीस गोघुआ, दश और बीस अदालिया तथा दश और बीस मण्डालिया आदि श्रेणियोंमें विभक्त हैं। दश और बीस गोघुआ तथा दश और बीस अदालिया कच्छ और काठियावाड़ महेश्वरियोंके साथ आदान प्रदान करते हैं। मोधेरा (परान्दिजके अन्तर्गत) नगरमें इनकी कुलदेवी भद्रारिका देवीका मन्दिर मौजूद है। सभी तरहके महेश्वरी इस तीर्थक्षेत्रमें बड़ी श्रद्धा-भक्तिसे देवीके दर्शनके लिये आते हैं। ये वैश्य हैं और जनेऊ पहरनेके अधिकारी होने पर भी किसी महेश्वरीको जनेऊ धारण करते नहीं देखा गया है।

मण्डालियाके सिवा मोध आदि महेश्वरी विवाहके समय तलवार बांधते हैं। इनमें विधवा विवाह सर्वथा निन्दनीय है। किन्तु बहुविवाहमें कोई बाधा नहीं है।

कलकत्तेके महेश्वरी नागर और थर नगरको ही अपना आदिस्थान मानते हैं। बल्लभसम्प्रदायवाले महेश्वरी वैष्णव मतावलम्बी होने पर भी अपनी कुलदेवियोंकी पूजा किया करते हैं। पालिवाल ब्राह्मण ही इनके कुलपुरोहित हैं। किन्तु इस समय कितने ही गोकर्ण ब्राह्मणोंने भी इनका पौरोहित्य स्वीकार कर लिया है। विवाहके समय कुल बधुएं कन्यावरण आदि स्त्री-आचार नहीं करतीं।

महेषु (सं० पु०) महान् इषुः। १ बड़ा तीर या बाण। (त्रि०) २ महदिषुयुक्त, बड़ा धनुर्धारी।

महेषुधि (सं० त्रि०) महान् इषुधिः यस्य। धानुष्क, धनुर्धारी।

महेष्वास् (सं० पु०) धानुष्क, बड़ा धनुर्धारी।

महेस (सं० पु०) महेश देखो।

महेसिया (हिं० पु०) एक प्रकारका उत्तम अगहनी धान।

महैकोद्दिष्ट (सं० पु०) आद्य श्राद्ध, आद्यैकोदिष्ट, वह श्राद्ध जो मरनेके बाद पहले पहल अशौचके अन्तमें मृत प्राणीके उद्देश्यसे किया जाता है।

महैतरेय (सं० क्ली०) वैदिक ग्रंथविशेष, ऐतरेयउपनिषद्।

महैरण्ड (सं० पु०) महांश्चासावेरण्डश्च, स्थूल एरण्ड, एक प्रकारका बड़ा रेंड। इसके बीज भी बड़े होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महैला (सं० स्त्री०) महती चासावेला च। स्थूल एला, बड़ी इलायची।

महैश्वर्य्य (सं० क्ली०) १ विपुल ऐश्वर्य्य, राजपद। २ महाशक्ति, बड़ा बल।

महोक (हिं० पु०) महोखा देखो।

महोक्ष (सं० पु०) महान् उक्षा (अचतुरविचतुरेति। पा ५।४।७७) इति समासान्तः अच् निपातितः। वृहद् वृष, बड़ा बैल। पर्याय—वृषभ, वृष, पुङ्गव, बला, गोनाथ, ऋषभ, गोप्रिय, उक्षा, गोपति।

"महोक्षः स त्वया दृष्टः संस्तवश्च कृतो यदि।
तदिहानय तं युक्त्या तावत् पश्यामि कीदृशः॥"

(कथासरित् ६०।६६)

महोख (हिं० पु०) महोखा देखो।

महोखा (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। यह कौएके बराबर होता है और भारतवर्षमें, विशेष कर उत्तरी भारतमें झाड़ियों और बंसवाड़ियोंमें मिलता है। इसकी चोंच, पैर और पूंछ काली, आखें लाल तथा शिर, गला और डैने खैर रंगके या लाल होते हैं। यह झाड़ियोंके पास कीड़े, मकोड़े खा कर रहता है। यह बहुत तेज दौड़ सकता है। पर बहुत दूर तक उड़ नहीं सकता। इसकी बोली बहुत तेज होती हैं और यह बहुत देर तक लगातार बोलता है।

महोगनी (अं० पु०) भारत, मध्य अमेरिका और मेक्सिको आदिमें होनेवाला एक प्रकारका बहुत बड़ा पेड़। यह सदा हरा रहता है। इसकी लकड़ी कुछ ललाई लिए भूरे रंगकी, बहुत ही दृढ़ और टिकाउ होती है और उस पर वार्निश बहुत खिलती है। यह लकड़ी बहुत महंगी बिकती है और प्रायः मेजें, कुर्सियां और सजावटके दूसरे सामान बनानेके काममें आती है।

महोच्छव (सं० पु०) महोत्सव देखो।

महोछा (हिं० पु०) महोच्छव देखो।

महोटिका (सं० स्त्री०) महान्तः फलेभ्यः स्थूला उटा पत्राण्यस्याः ततः स्वार्थे कन् टाप् अकारस्येत्व। वृहती, कटैया।

महोटी (सं० स्त्री०) वृहती, कटैया।

महोती (हिं० स्त्री०) महुएका फल, कुलदी।

महोत्का (सं० स्त्री० महती उत्का। महोल्का, बड़ी उल्का।

महोत्पल (सं० क्ली०) महच्च तत् उत्पलञ्च। १ पद्म। २ सारस पक्षी।

महोत्सङ्ग (सं० पु०) अत्यूर्द्ध संख्याभेद, एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

महोत्सव (सं० पु०) महांश्चासावुत्सवश्च। अतिशय सुखजनक कर्म, बड़ा उत्सव।

"सर्वैश्च जन्मदिवसे स्नातैर्मङ्गलपाणिभिः।
गुरुदेवाग्निविप्राश्च पूजनीयाः प्रयत्नतः॥
स्वनक्षत्रञ्च पितरो तथा देवप्रजापतिः।
प्रतिसंवत्सरञ्चैव कर्त्तव्यश्च महोत्सवः॥" (तिथितत्त्व)

महोत्साह (सं० त्रि०) महान् उत्साहो यस्य। १ अतिशय उत्साहयुक्त, बड़ा उत्साही। पर्याय—महोद्यम। (पु०) २ विष्णु। ३ राजपुरुष। ४ अतिशय उद्यम, कड़ी मेहनत।

महोदधि (सं० पु०) महाश्चासावुदधिश्चेति। १ समुद्र, सागर।

महोदधि—एक प्राचीन कवि।

महोदधि (सं० पु०) औषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—विष १ तोला, रससिंदूर १ तोला, जायफल २ तोला, सोहागेका लावा २ तोला; पीपल ३ तोला, सोंठ ६ तोला और लवङ्ग ५ तोला, इन्हें जलसे पीस कर एक रत्तीकी गोली बनावे। इसका सेवन करनेसे जठराग्निकी तेजी होती है। (भैषज्य० अग्निमान्द्याधिकार)

महोदय (सं० पु०) महान् उदयः उन्नतिर्यस्मिन्। १ पुरविशेष, कान्यकुब्ज, गाधिपुर, कौश, कुशस्थल।

कान्यकुब्ज देखो।

२ कान्यकुब्जदेश। ३ आधिपत्य। ४ अपवर्ग। ५ महाफल। ६ स्वामी। ७ बड़ोंके लिये एक आदरसूचक शब्द, महाशय।

महोदया (सं० स्त्री०) महानुदयो यस्याः टाप्। नागबला, गंगेरन।

महोदया (सं० स्त्री०) १ पुरानानुसार एक नदीका नाम। २ गङ्गाके दक्षिण अङ्गदेशमें प्रवाहित नदी।

महोदर (सं० त्रि०) महदुदरमस्य। १ वृहदुदरयुक्त, जिसका पेट बड़ा हो। (पु०) २ वृहदुदर, बड़ा पेट।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३ नागविशेष, एक नागका नाम। ४ दानवविशेष। ५ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ६ शिव।

महोदरमुख (सं० पु०) शिवानुचरभेद, शिवके एक अनुचारका नाम।

महोदरी (सं० स्त्री०) महाशतावरी।

महोदरेश्वर (सं० क्ली०) शिवलिङ्गभेद।

महोद्यम (सं० त्रि०) महान् उद्यमो यस्य। १ महोत्साह, बड़ा उत्साही।

"अथ निर्जित्य दायाददँल्लब्ध्वा लक्ष्मीं क्षितीश्वरः।
जिष्णुर्दिग्विजयं कर्त्तुं श्रीमानासीन्महोद्यमः॥"

(राजत० ५।१४१)

(पु०) अतिशय उद्योग, बड़ा यत्न।

महोद्योग (सं० त्रि०) महान् उद्योगो यस्य। १ उद्यमशील, बड़ा उद्योगी। (पु०) २ अतिशय उद्योग, बड़ा यत्न।

महोना (हिं० पु०) पशुओंके एक रोगका नाम। इसमें उनका मुंह और पैर पक जाते हैं।

महोना—१ लखनऊ जिलेके मलिहाबाद तहसीलका एक परगना। यह गोमती नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण १४७ वर्गमील है। यहांके इतौञ्जा और मण्डियावन नगरकी जनसंख्या सबसे अधिक है। यह स्थान पहले भर जातिके अधिकारमें था। पीछे कुर्मियोंने इस पर अधिकार जमाया। इसके बाद पोंवार और चौहान-राजपूतोंने यहांके कुर्मियोंको मार भगाया और महोना अपने दखलमें कर लिया। आज भी वे ही लोग यहांके प्रधान तालुकदार हैं।

२ उक्त तहसीलके अन्तर्गत एक नगर। यह लखनऊ-से सीतापुर जानेके रास्ते पर अवस्थित है। लखनऊ नगरसे इसकी दूरी ७॥ कोस है। पहले इस नगरमें विचारसदर और गवर्मेण्टके कर्मचारियोंका वास तथा एक दुर्ग था। पार्श्ववर्त्ती गोविन्दपुर-ग्रामवासी एक ब्राह्मण खजाना नहीं देनेके कारण उस दुर्गको बन्द किया गया था। इस पर ग्रामवासीमें बड़ी सनसनी फैली और उन्होंने उत्तेजित हो कर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद आमिस बहादुरगंजमें नया दुर्ग बनाया गया था। नगरकी पूर्वसमृद्धिका अभी बहुत कुछ ह्रास हो गया है।

महोन्नत (सं० पु०) महानतिशय उन्नतः। १ ताल-वृक्ष, ताड़का पेड़। २ नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड़। ३ धाराकदम्ब, एक प्रकारका कदमका पेड़। (त्रि०) ४ अत्युन्नतियुक्त, जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो।

महोन्नति (सं० स्त्री०) महती चासावुन्नतिश्च। अतिशय वृद्धि, बड़ी उन्नति।

"भूयात्ते महदैश्वर्य्यं पुत्रादीनां महोन्नतिः।
अव्याधिना शरीरेण चिरं जीव सुखी भव॥" (उद्भट)

महोन्मद (सं० पु०) १ मत्स्यविशेष, मोय मछली। (त्रि०) २ अत्युन्मत्त, घोर पागल।

महोन्मान (सं० त्रि०) १ विस्तृत, लंबा चौड़ा। २ भार-युक्त, जिसे बोझ हो।

महोपनिषद् (सं० स्त्री०) १ उपनिषद्विशेष। इस उपनिषदकी भास्कराचार्य, शङ्करानन्द और नारायण कृत टीका देखी जाती है। (क्ली०) २ गुप्तमन्त्रभेद।

महोपमा (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम। इसका दूसरा नाम महापगा भी है।

महोपाध्याय (सं० पु०) १ महान् उपाध्याय, प्रधान आचार्य। २ विद्वान् और भारवि कविकी उपाधि।

महोबा—१ युक्तप्रदेशके हमीरपुर जिलेका एक उपविभाग। इसमें महोबा और कुलपहाड़ नामक दो तहसील लगती है।

२ उक्त उपविभागकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ६' से २५° ३८' उ० तथा देशा० ७९° ४१' से ८०° ९' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३२९ वर्गमील और जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है। यहांका अधिकांश स्थान पहाड़ी अधित्यकाभूमिसे परिपूर्ण है। उस पर्वतवक्ष पर जो असंख्य ह्रदाकार पुष्करिणियां हैं वह चन्देलराजाओंकी प्राचीन कीर्त्तिका घोषणा करती हैं।

३ उक्त जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर और महोबा तहसीलका सदर। यह अक्षा० २५° १८' उ० तथा देशा० ७९° ५३' पू०के मध्य अवस्थित है। यह नगर मदनसागर नामक एक बड़े ह्रदके किनारे पर्वतके ऊपर बसा हुआ है। मदनसागर ह्रद प्राचीन चन्देल राजवंशकी अक्षयकीर्त्तिस्वरूप है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बालेश्वर ; पश्चिममें मयूरभञ्ज सामन्त राज्य और सिंहभूम तथा उत्तर-पश्चिममें मानभूम जिला है। मेदिनीपुर नगर इसका विचार सदर है।

जिला बहुत बड़ा और प्राकृतिक सौन्दर्यसे परिपूर्ण है। प्रधानतः इस स्थानको तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है, १ला समुद्र तटवर्त्ती स्थान, २रा डेल्टाभूमि और ३रा समतल और उच्चभूमि। पश्चिम-भूभागकी पहाड़ भूमिको छोड़ कर और सभी स्थानोंमें खेती बारी होती है। हिंस्र जन्तुओंसे भरा हुआ यह पहाड़ी भूभाग 'जङ्गल-महाल' कहलाता है। पूर्व और दक्षिण पूर्वके जलमय भूभागमें तथा रूपनारायण नदीके मुहानेसे ले कर बालेश्वरके उत्तर तक फैले हुए हिजली विभागमें भी धान आदि फसल उत्पन्न होती है। यहां जलका कभी अभाव नहीं होता। इस जिले हो कर हुगली तथा उसकी सहायक नदियां रूपनारायण, हल्दी और रसूलपुर बहती हैं। रूपनारायण नदी शिलाई नदीके जलसे परिवर्द्धित हो हुगली-पायेण्टके समीप भागीरथीमें मिलती है। हल्दी नदी तमसुक उपविभागके नन्दीग्रामके समीप गङ्गामें मिली है। कलियाघाई और कसाई नामक इसकी दो शाखा-नदियां वक्र गतिसे जिलेमें बहती है। मेदिनीपुर नगर कसाई नदीके किनारे बसा है। रसूलपुर नदी कौखालीके समीप भागीरथीमें गिरी है।

उपरोक्त नदी और शाखा नदियोंको छोड़ कर खेती-बारी तथा वाणिज्यकी सुविधाके लिये इस जिलेमें कुछ नहर काटी गई हैं। इनमें उलुबेड़ियासे पूर्व-पश्चिममें मेदिनीपुर तक विस्तृत 'हाईलेभल कनाल' तथा रूपनारायण मुहानेके गेयोखालीसे हिजली विभागके रसूलपुर नदी तक विस्तृत दो लंबी चौड़ी नहर ही उल्लेखनीय हैं। पश्चिमदिग्वर्त्ती जङ्गल विभागमें लाख, टसर, मोम, धूना, काष्ठ आदि वाणिज्यद्रव्य पाये जाते हैं। वन्य भूभागमें नाना प्रकारके जीवजन्तु रहते हैं। समुद्र और पहाड़ी भूमिके मध्यवर्त्ती होनेके कारण यहां बहुतसे सर्प देखे जाते हैं।

समूचे जिलेका पुराना इतिहास नहीं मिलता। प्राकृतिक दृश्य देखनेसे मालूम होता है, कि बहुत पहले पश्चिम देशभाग घने जंगलमें परिणत था। धीरे धीरे पहाड़ी अनार्य जाति आर्यसभ्यतामें आ कर जंगल काट कर वहां बस गई। पीछे दक्षिण बङ्गसे बहुतसे लोग वाणिज्यके उद्देशसे यहां आने लगे जिससे यह जिला सभ्यजातिका वासस्थान समझा जाने लगा।

समुद्रोपकूलवर्त्ती गाङ्गेय मुहाने पर अवस्थित तमलुक नगरी अपना प्राचीन कीर्त्ति-गौरव दिखा रही है। प्राचीन बौद्धोंने ५वीं सदीमें यहां आ कर उपनिवेश बसाया। समुद्रपथसे वैदेशिक वाणिज्यमें सुविधा देख कर यहां एक बन्दर भी खोला गया था। इसी स्थानसे, जहां तक सम्भव है, भारतीय बौद्धगण ब्रह्मराज्यमें तथा जावा आदि भारत-महासागरस्थ द्वीपोंमें वाणिज्यके उद्देशसे आते जाते होंगे। ७वीं सदीके आरम्भमें प्रसिद्ध चीन-परिव्राजक युएनचुवंग इस स्थानको देखने आये थे। वे ताम्रलिप्त नगरका एक महासमृद्धिशाली बन्दररूपमें वर्णन कर गये हैं। उन्होंने यहां १० बौद्ध-संघाराम, २०० फुट ऊँचा एक अशोकलाट (स्तम्भ) और हजारसे ऊपर श्रमणोंका वास देखा था।

ताम्रलिप्त और तमलुक देखो।

प्राचीन हिन्दू उपाख्यानमाला पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह नगर पहले समुद्रोपकूलसे ८ मीलकी दूरी पर अवस्थित था।

यहांके मयूरवंशीय राजे क्षत्रिय थे। उस वंशके अन्तिम राणा निःशङ्कनारायणके कोई सन्तान न थी, इस कारण उनके मरने पर कालू भूंइया नामक एक पहाड़ी सरदार राज्याधिकारी हुआ। कालू सरदारसे तमलुकमें कैवर्त्त राजवंशकी प्रतिष्ठा हुई। पहले वे लोग भूंइया नामक अनार्य-जाति समझे जाते थे, पीछे हिन्दूधर्मग्रहण कर हिन्दूसमाजमें मिल गये। इस वंशके वर्त्तमान राजा कालूसे २७ पीढ़ी नीचे हैं।

बङ्गालमें पठान आधिपत्य विस्तारके साथ साथ यह स्थान भी पठानराजके दखलमें आ गया। परन्तु जो सब राजा-उपाधिधारी हिन्दू जमींदार थे उनका अधिकार नहीं छीना गया। उदासी और विलासी मुसलमानोंको काबूमें करके देशी सामन्तगण एक समय मेदिनीपुरमें अपनी अपनी प्रधानताका परिचय दे गये हैं।

मेदिनीपुर जिलेका पश्चिम और दक्षिण हिजली भाग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसलमानी अमलमें जलेश्वर सरकारमें मिला लिया गया। मुगल बादशाह अकबर शाहके समय यहांसे १२॥ लाख रुपया कर वसूल होता था। जलेश्वर नगरमें ही इसका विचार-सदर प्रतिष्ठित था। अभी यह बालेश्वर के अन्तर्भुक्त है। जलेश्वर और बालेश्वर देखो।

१७६० ई०से अंगरेज कम्पनीके साथ मेदिनीपुरका संस्रव आरम्भ हुआ। उसी साल इष्ट इण्डिया कम्पनीने मीरजाफर खाँको राज्यच्युत कर मीरकासिम खाँको बङ्गालकी मसनद पर बिठाया। मीरकासिम अपनी पदोन्नतिके बदलेमें कम्पनीको मेदिनीपुर, चट्टग्राम और बर्द्धमान जिला देनेको बाध्य हुए।

पूर्व और दक्षिणमें समुद्र तथा पश्चिममें पर्वतमाला विस्तीर्ण रहनेके कारण यहां वैदेशिक शत्रु नहीं घुस सकता। दक्षिण उड़ीसासे मरहठे लोग दल बांध बांध कर यहां आते और मेदिनीपुरको लूट जाते थे। एक समय मरहठोंने सारे मेदिनीपुरमें अपना आधिपत्य फैल लिया था, किन्तु लूटमारकी ओर उनका विशेष झुकाव था इस कारण वे अपनी शक्तिको बहुत दिन तक अक्षुण्ण न रख सके। वर्गी देखो।

जिलेके पश्चिममें अवस्थित जङ्गल भूमिके जमींदार भी दल बांध कर यहां आते और समतलक्षेत्रमें शस्यादि को लूट ले जाते थे। जंगलमहालके दस्युपालक ये सरदार वा जमींदार अपनेको राजा बतलाते हैं। १७७८ ई०में वे ऐसे दुर्द्धर्ष हो उठे थे, कि अंगरेज कर्मचारियोंके प्रति भी अत्याचार करनेसे बाज नहीं आये। यहां तक कि वे आपसमें अकथनीय अत्याचार भी कर डालते थे, जिसके लिये उन्हें जरा भी घृणा नहीं होती थी। उन लोगोंके अत्याचारसे छुटकारा पानेके लिये स्थानीय जमींदारोंको सशस्त्र सिपाही रखने पड़े थे। शरत्काल-में कटनीके समय वे लोग शस्त्रधारी सेनादलसे अपनी प्रजाको मदद पहुंचाते थे।

वर्गियों तथा इन जंगलवासी लुटेरोंके आक्रमणसे देशकी रक्षाके लिये जलेश्वरमें बहुत पहलेसे ही एक सीमान्त दुर्ग प्रतिष्ठित था। अलावा इसके जिलेमें जहां कहीं सभ्य धनियोंका बास था उन लोगोंने भी अपनी रक्षाके लिये प्रासादके चारों ओर खाई खुदवा रखी थी और एक एक दुर्गप्रासाद भी बनवाया था। उन दुर्ग-प्रासादोंमें वे कभी कभी उन लुटेरोंसे बचनेके लिये छिप रहते थे।

जङ्गलमहालके इन सरदारोंमें मयूरभञ्जके राजाकी भी गिनती की जा सकती है; क्योंकि उनके अधिकृत परगनोंसे उनके अधीन सेनादल बाहर निकलता और लूट मार कर प्रजाको तंग तंग करता था। अंगरेज गवर्मेण्टकी पुरानी नत्थियोंसे इस बातका पताका लगता है। १७८३ ई०में गवर्नर जेनरलने जब मयूरभञ्जके राजाका अधिकार छीनना चाहा, तब वे एक दूसरे विरोधी सर-दारकी सहायतासे अंगरेजोंके विरुद्ध खड़े हुए और एक दल सेना ले कर अंगरेजोंके अधिकृत जिलेको जीतने चले। इस समय सुचतुर अंगरेज राजने उड़ीसाके महाराष्ट्रीय शासनकर्त्ताकी सहायतासे मयूरभञ्जराजको परास्त किया था। उसी समयसे मयूरभञ्जराज मेदिनी-पुरके अन्तर्गत अपनी सम्पत्तिके लिये बृटिश-सरकारको वार्षिक ३२००) रुपया कर दे रहे हैं।

अंगरेजोंके अधिकारमें आनेके बाद मेदिनीपुर-विभागके आकारमें बहुत कुछ परिवर्त्तन हुआ है। १८३६ ई० तक हिजली एक स्वतन्त्र कलेक्टरीके अन्दर रहा, पीछे वह मेदिनीपुरमें मिला लिया गया। तभीसे ले कर आज तक वह मेदिनीपुर जिलेके शासनाधीन है। १८७२ ई० में हुगली जिलेके अन्तर्गत चन्द्रकोण और बर्द्धा परगना इसके अन्तर्भुक्त हुआ। १८७६ ई०में विचार कार्यकी सुविधाके लिये सिंहभूमिसे ४५ ग्राम ले कर इसमें शामिल किये गये।

इस जिलेके राजाकी उपाधि धारण करनेवाले प्राचीन जमींदारवंशमें बागड़ीराजवंश, नयग्रामवंश, मैनाराजवंश, तमलुक राजवंश, नारायणगढ़वंश और बलरामपुर राज-वंश उल्लेखनीय हैं। मैना, तमलुक, बागड़ी आदि राज-वंशका विवरण यथास्थानमें दिया गया है। उड़ीसा और बङ्गालके मध्यवर्त्ती प्राचीन समृद्ध नगरोंमें जो बौद्ध, हिन्दू, महाराष्ट्रीय और मुसलमानोंकी स्थापित कीर्त्ति तथा देशीय जमीदारोंके प्रतिष्ठित देवमन्दिर, गढ़ और जलाशय हैं उनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जायगा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपरोक्त जमीन्दार-वंशमें वलरामपुर राजवंशकी अनेक कीर्त्ति-कहानियाँ सुनी जाती है। खड़गपुर, केदार-कुण्ड और वलरामपुर परगने ले कर इस वंशकी प्रतिपत्ति है। पहले जिन सव जमींदारोंने अपने पराक्रमसे जङ्गलमहालको कटवा कर उसका जो कुछ भाग दखल कर लिया था उनके वंशधर आज भी उन भागों पर दखल रखते हैं। अंगरेजोंके निकट वे लोग सामान्य जमींदार गिने जाने पर भी एक समय वे अपने अपने अधिकृत प्रदेशमें स्वाधीनभावसे राज्य कर गये हैं। वलरामपुर परगना इसी जङ्गलमहालके अन्तर्गत है।

१५८२ ई०में राजा टोडरमल वङ्गाल और उड़ीसाके राज्यसंक्रान्त वन्दोवस्तके लिये यहां आये और राजकीय कार्यकी सुविधाके लिये सदर-चौधरी-पदकी सृष्टि कर गये। वही चौधरीवंश यहांके सत्त्वाधिकारी है। १७९३ ई०में लार्ड कार्नवालिसके दशशाला वन्दोवस्तके समय राजा वीरप्रसाद चौधरी उक्त तीनों परगनोंके अधिकारी थे। १८३८ ई०में वाकी खजाना न दे सकनेके कारण उनकी राजसम्पत्तिको गवर्मेण्टने नीलाममें खरीद लिया। पीछे वह खासमहाल नामसे प्रसिद्ध हुआ।

इस राजवंशके आदि राजाका नाम भीम महापात्र है। वे इस प्रदेशके खैराराजके गढ़-सरदार वा सेनाध्यक्ष थे। सेनापति तथा राजदीवान लक्ष्मणसिंह (कर्णगढ़राजवंशके आदिपुरुष)-ने षड़यन्त्र करके राजाको मार डाला। खैराराजवंश निम्न श्रेणीके हिन्दू हैं और एक प्रकारकी जंगली जातिसे इनकी उत्पत्ति वतलाई जाती है।

राजा भीम महापात्र ६७५ वङ्गाब्दमें राजसिंहासन पर बैठे। 'भीमसागर' नामक दिग्गी आज भी उनकी कीर्त्ति-घोषणा करती है। उनके लड़के हरिचन्दनके शासनकाल-में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। हरिचन्दनके मरने पर उनके पुत्र राणा मुकुन्दराम महापात्र 'मुकुन्दसागर' रूप सत्कीर्त्ति स्थापन कर गये हैं। मुकुन्दरामके पुत्र ४र्थ राजा पीताम्बरके स्वर्गवासी होने पर ११६० वङ्गाब्दमें उनके पुत्र शत्रुघ्न महापात्र राजाकी उपाधि धारण कर राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। घड़ई डकैतोंका विद्रोह-दमन तथा पञ्चरत्न और जोड़वङ्गला मन्दिरमें श्यामसुन्दरजी और सिंहवाहिनीकी मूर्त्ति स्थापित कर वे अपने नामको उज्ज्वल कर गये हैं।

११७५-११९२ वङ्गाब्द राजा नरहरि चौधरीका राज्यकाल है। इस समय चुयाड़विद्रोह, वर्गीके हंगामा, घड़ई विद्रोह आदिसे मेदिनीपुर उत्पन्नप्राय हो गया था। वे नृशंस, क्रोधी और महाप्रतापी थे। १७६० ई०में मेदिनीपुरका शासन-भार अंगरेजोंके हाथ आने पर भी राजा नरहरिने अंगरेजोंका प्रतिनिधित्व स्वीकार नहीं किया। उनके समसामयिक नारायणगढ़के राजा परीक्षित् वहुत उदार थे।

११९२ से १२३५ वङ्गाब्द राजा वीरप्रसादका राज्यकाल है। उनकी मृत्युके वाद उनकी स्त्री मुञ्जराने इंद्रनारायण चौधरीको गोद लिया। राज्यभ्रष्ट और श्रीभ्रष्ट हो इनकी अवस्था वहुत शोचनीय हो गई।

वलरामपुर राजवंशके वासस्थानका नाम आड़ासिनिरगढ़ है। इनके और भी १२ महल थे। कालपरिपरिवर्त्तनसे राजवंशकी अवनतिके साथ वे सव भी विलुप्त हो गये। अयोध्यागढ़के समीप जोड़वंगला और पञ्चरत्न-मन्दिर विद्यमान है।

कंसावतीतीरवर्त्ती धरेन्दा परगनेमें धरेन्दार राजवंशकी प्रतिपत्ति है। हुगली जिलेके दशघरा नामक स्थानमें इन लोगोंका आदि वास था। इस वंशका कोई एक व्यक्ति नवावकी कोपदृष्टिमें पड़ कर सवंश यमपुर सिधारा। सिर्फ उसकी एक गर्भवती स्त्रीने देवरके साथ भाग कर जान वचाई थी। धारेन्दाके घने जंगलमें आने पर उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। चचा नारायणपालने उस लड़केका नाम महेश्वर 'पाल' रखा। वे पाल उपाधिधारी और कायस्थ कुलके थे।

नारायण पालने स्थानीय जमींदार मांझी राजाको परास्त कर धरेन्दा प्रदेशमें अपनी गोटी जमायी और जहां उनकी भौजाई और भतीजा आ कर वस गया था उस स्थानका नारायणपुर नाम रखा। उन्होंने वाघासिनी नामक सिंहवाहिनी मूर्त्ति और दामोदरचन्द्रजी नामक शालग्रामकी मूर्त्ति प्रतिष्ठा कर पूजाका वंदोवस्त कर दिया। मांझी राजाओंके तालपत्रके वने हुए छत्र वा राजचिह्न धारण करनेकी प्रथा इस वंशमें राजा नारा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यणपालने ही चलाई थी। इसके अतिरिक्त इन्द्रद्वादशी तिथिमें आज भी उन लोगों के ईद पर्वोत्सवका अनुष्ठान होता है।

इस वंशमें राजा नारायणपालके बाद शिवनारायण, खड़्गसिंह, बाबूराम, शिवराम, प्रतापनारायण, उदय नारायण, कार्त्तिकराम, रामनारायण, मथुरामोहन, कृष्णमोहन, अक्षय नारायण और श्रीनारायणने यथाक्रम राज्य किया। राजा खड़्गसिंहपालने कलाई कुण्डा नामक स्थानमें गढ़ बनवाया। राजा कार्त्तिक रायने अपनी वीरताके कारण 'हारावल' की उपाधि पाई थी।

गढ़वेताके चारों ओर आज भी बगड़ी राजवंशकी कीर्त्तिके निदर्शन देखनेमें आते हैं। समस्त बगड़ी परगना देवी सर्वमङ्गलाको देवोत्तर-सम्पत्ति कहलाती है। प्रवाद है, कि उज्जयिनीराज विक्रमादित्यने इस देवीप्रतिमाको प्रतिष्ठा की थी। स्थानीय कंसेश्वर शिव-मन्दिर और सर्वमङ्गला देवीमन्दिरकी बनावट देखनेसे मालूम होता है, कि वे दोनों मन्दिर एक ही समयके बने हैं।

गढ़वेताका प्राचीन भग्नावशेष दुर्ग देखनेसे इस राजवंशके प्रभाव और समृद्धिका विषय जाना जाता है। आज भी लाल दरवाजा, हनुमान दरवाजा, पेशा-दरवाजा और राउत दरवाजा नामक प्रवेश-द्वार इष्टक-स्तूपमें परिणत हो कर अतीत कीर्त्तिका परिचय देते हैं। रायकोट नामक स्थानमें जिन सब पत्थरों और ईंटोंका स्तूप पड़ा है, वह राजा तेजश्चन्द्रका प्रासाद कहलाता है। यहांके दुर्गमें जो सब कमान थो उन्हें वृटिश सरकार उठा ले गई है। झालदा ग्रामके समीप नयावसत् ग्राममें राजा गणपति औउचका बनाया हुआ एक छोटा किला है। राजा यादवचन्द्रसिंह द्वारा प्रतिष्ठित झालदा दुर्ग अभी खंडहरमें पड़ा है।

गढ़वेता दुर्गके उत्तरी द्वारके सामने जलटुङ्गी, इन्द्र-पुष्करिणी, पाथुरी-हादुआ, मङ्गला, कवेशदिग्गो, आम-पुष्करिणी और हदुआ नामक सात तालाव हैं। प्रत्येक तालावके ठीक बीचमें एक एक पत्थरका बना मन्दिर है। दुर्गके समीप रहनेके कारण बहुतेरे इस पुष्करिणी और मन्दिरको चौहानके समय (१५५५-१६१० ई०) का हुआ अनुमान करते हैं।

दांतनके निकटवर्त्ती सातदौला और मुगलमारी ग्राममें बहुत बड़े बड़े महलोंका खंडहर देखनेमें आता है। उन्हें देखनेसे मालूम होता है, कि एक समय वहां महासमृद्धिसम्पन्न राजा राज्य करते थे। कालक्रमसे वे सभी तहस नहस हो गये हैं। मुगल लोग जिस स्थान-में मराठी सेनासे परास्त हुए थे, वही स्थान मुगलमारी कहलाता है। इस युद्धमें दातनगढ़के राजाने वीरता दिखा कर 'वीरवर' की उपाधि पाई थी। वह ग्राम दांतनसे दो मील उत्तर पड़ता है।

दांतन नगरमें विद्याधर नामक तथा वहांसे २ मील पूरव शशांक नामक दो बड़ी दिग्गी हैं। उत्कलराज मुकुन्ददेवके प्रधान मन्त्री विद्याधरके आदेशसे विद्याधर पुष्करिणी खोदी गई थी। उसकी लम्बाई १६०० और चौड़ाई १२०० फुट है। पाण्डववंशीय राजा शशाङ्क देव जब जगन्नाथ देवके दर्शन करने आये थे उस समय उन्होंने यहां अपने नाम पर एक पुष्करिणी खुदवाई थी। उस पुष्करिणीकी लम्बाई ५ हजार और चौड़ाई २५०० फुट है। प्रवाद है, कि दोनों पुष्करणियोंमें सम्बन्ध रखनेके लिये जमीनके अन्दर ७॥ फुट ऊंचा और ४॥ फुट चौड़ा एक पत्थरका नाला चला गया है। दांतनका श्यामलेश्वर मन्दिर देखने लायक है। कहते हैं, कि विक्रमादित्यके श्वशुर भोजराजने यह मन्दिर बन-वाया था। कालापहाड़ने मन्दिरके सामने जो पत्थरकी वृषमूर्त्ति है उसके अगले दोनों पैरोंको तोड़ दिया है।

प्रायः आध सदी पहले राजा यदुचरण सिंहने ग्वाल तोरमें पञ्चरत्न मन्दिर बनवाया। इसका शिल्पनैपुण्य देखने योग्य है। राजाने इस मन्दिरमें बालचन्द्र नामक शालग्राममूर्त्तिको स्थापित करना चाहा था, किन्तु स्थापित करनेके पहले ही उसमें एक गायका बछड़ा मर गया था जिससे अपवित्र समझ कर उसे छोड़ दिया गया।

नयाग्राम राजवंशका कीर्त्तिकलाप उनकी राजधानी खेलरगढ़ नामक स्थानके आसपास प्रदेशोंमें दृष्टिगोचर होता है। उस वंशके द्वितीय राजा प्रतापचन्द्रसिंहने १४९० ई०में यहां जिस गढ़की नींव डाली थी उसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनके लड़के वलभद्रासहने पूरा किया। यहां जो दो अश्वारोही पारसिक वा शक-प्रतिमूर्त्ति पाई गई है वह वहुत कुछ अरवकी प्राचीन विध्वस्त निनिभ नगरीके स्तूपमें प्राप्त मूर्त्तिकी जैसी है।

वलभद्रकी मृत्युके वाद राजा चन्द्रशेखरसिंह राजपद पर अधिष्ठित हुए। उन्होंने १६वीं सदीमें चन्द्ररेखागढ़ और प्रासाद वनवाया। यह दक्षिणमें निविड़ जङ्गलसे परि पूर्ण है। चन्द्ररेखागढ़से १ मील पूरव देउल नामक शिव-मन्दिर है। नयग्राम राजवंशके खर्च वर्चसे मन्दिरकी देवसेवा निर्वाह होती है।

कयारचांद नामक विस्तीर्ण प्रस्तरोंकी स्तम्भावली भी उल्लेखनीय हैं। जहरसिंह नामक एक हिन्दू-सरदार ११७० वङ्गाब्दमें वे सव स्तम्भ स्थापन कर गये हैं। प्रवाद है, कि विपक्षसैन्यको डर दिखानेके लिये ही सेना-वलवृद्धिसूचक वे सव स्तम्भ खड़ा किये गये थे।

उड़िसा-साई नामक पत्थरका मन्दिर राजा चौहान-सिंहने ६६६ वङ्गाब्दमें वनावाया था। वगड़ी राजवंशका यह ऐतिहासिकतत्त्व शिलालिपिसे निकाला गया है।

मैनागढ़-राजवंशकी कीर्त्ति मैनागढ़ दुर्ग और राज-प्रासाद कसाई नदीके पश्चिमी किनारे वनाया गया था। पहले चारों ओर खाई खुदवा कर उस स्थानको द्वीपा-कारमें परिणत कर दिया था। मट्टीका धुस्स दीवारके तौर पर द्वीपसीमा पर खड़ा है। वह धुस्स अभी वांसके जंगल से ढक गया है जिससे लोग वहां नहीं जा सकते। द्वीपके मध्य भागमें चारों ओर खाई खुदवा कर वहां राजभवन और दुर्ग वनाया गया था।

मैनागढ़का राज-इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि राजा लाऊसेनने यह दुर्ग वनाया है। वे गौड़ेश्वर-के सामन्त थे। महाराष्ट्रपतिके अभ्युदय पर जव लाउ-सनके वंशधर 'चौथ' न दे सके, तव महाराष्ट्रोयदलने वाहु-वलेन्द्र नामक एक व्यक्तिको मैनागढ़ सिंहासन प्रदान किया। मैनागढ़ देखो।

मैनाके दक्षिणमें प्रायः नौ मीलका एक वड़ा गड्ढा है। पहले इस स्थानमें समुद्रकी खाड़ी थी। मैनाके राजाओं-ने वांध उठवा कर इस स्थानको कृषि और वास करने लायक वना दिया। इस खातके वगलमें तिलदा, जल-चक प्रभृति गांवों के भूमिगभ (१६।१७ फीट नीचे)-से जो सव वस्तुएं मिली हैं उनसे अनुमान होता है कि प्राचीन कालमें यह वन्दर वा समुद्रकूलस्थित नगर रहा होगा।

तमलुक जनपदका प्राचीनत्व और प्रत्नतत्त्व यथा-स्थान वर्णित हो चुका है। वर्गभीमाके मन्दिरका गठन वौद्ध शिल्पके जैसा है। इससे अनुमान किया जाता है कि इस स्थानमें वौद्ध-प्रधानताके समय यह मन्दिर उठाया गया था। द्वितीय तमलुक राजवंशके प्रतिष्ठाता राजा ताम्रध्वजने नरनारायणके महिमाकीर्तनके लिये कृष्णार्जुन मन्दिरकी स्थापना की थी। प्रवाद है, कि महाराज युधिष्ठिरका अश्वमेधीय घोड़ा कृष्ण और अर्जुन द्वारा रक्षित हो जव ताम्रलिप्त आया तव धार्मिक राजा ताम्रध्वजने उसे रोका था। युद्धमें जय न पा सकने पर अर्जुन और कृष्ण वैष्णव-श्रेष्ठ ताम्र-ध्वजके अतिथि हुए। भक्तप्रधान ताम्रध्वजने श्रीकृष्ण-के चरणोंकी नित्य पूजाके लिये कृष्णार्जुन-मूर्त्तिकी स्थापना की थी।

नारायणगढ़ राजवंशका राजप्रासाद ही उनकी उल्लेख नीय कीर्त्ति है। उसकी वनावटमें विशेष निपुणता न रहने पर भी उसके तोलाव देखनेयोग्य हैं।

इस जिलेमें मेदिनीपुर, घाटाल, चन्द्रकोणा, राम-जीवनपुर, क्षीरपाल और तमलुकनगर ही प्रधान हैं। परन्तु सम्प्रति कराटाइ सव-डीवीजनकी वड़ी उन्नति हुई है।

अत्यन्त प्राचीनकालसे यह व्यापारके लिये प्रसिद्ध है। जङ्गलमहालमें नीलका कारवार होता था। चावल, चीनी, रेशम एवं तांवे और पीतलके वरतनोंकी खूव रफतनी होती है। सुना जाता है, कि यहांके पुराने कारीगर तीन चार सौ रु०की एक एक चटाई तैयार करते थे। उसकी कारीगरी आश्चर्यजनक है। ढाकेके मसलिन्की जैसी यहांकी चटाईकी भी ख्याति थी।

पहले वृटिश सरकार यहां नमकका खास कारवार करती थी। उसके छोड़ देने पर जनसाधारणने नमक वनाना शुरू किया। सरकार तव केवल कर उगाहने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८७३ ई०से वह कर हरएक हंडरवेटमें ४।१० नियत हुआ था। नाव आदिको छोड़ व्यापार करनेका दूसरा उपाय न था। अब बी० एन डबल्यू रेलवेके यहां आने पर व्यापारमें विशेष सुविधा हुई है।

बाढ़ और अनावृष्टिके कारण यहां समय समय पर दुर्भिक्ष होता रहा है। १८२३,-३१,-३२,-३३,-३४, १८४८, १८५०, १८६४, १८६६, १८८१, १८९१ आदि वर्षोंमें यहां अकाल पड़ा था। साथ साथ लोगोंकी मृत्यु भी बेशुमार हुई थी। यहांका जलवायु २४ परगनेके जैसा है। हैजा, शीतला आदिका प्रकोप हमेशा रहता है। १८६९ ई०में 'बर्द्धमानका ज्वर' यहां संक्रामक रूपमें फैला था।

यहां स्कूलों, संस्कृत टोलों आदिकी खासी संख्या है। करीब १५-२० अस्पताल हैं।

२ उक्त जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २१° ४६′ और २२° ५७′ उ० और देशा० ८६° ३३′ और ८७° ४३′ पू०के बीच अवस्थित है। इसका रकबा ३२७१ वर्गमील है। इसके अन्दर मेदिनीपुर, नारायणगढ़, दांतन, गोपीवल्लभपुर, झाड़ग्राम, भीमपुर, शालवानि, केशपुर, देवरागढ़, बेता और सरंग थाना हैं।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर और विचारसदर। यह अक्षा० २२° २५′ उ० और देशा० ८७° १९′ पू०के मध्य बसा हुआ है। इसकी आबादी प्रायः ३४ हजार है। यहां एक आर्ट कालेज है। यहांसे मेदिनीपुर हाई लिभेल कैनेल (Midnapore High Level canal) दलबेड़िया तक चला गया है।

मेदुर (सं० त्रि०) चिकना, स्निग्ध।

मेदोज (सं० पु०) अस्थि, हड्डी।

मेदोधरा (सं० स्त्री०) शरीरकी तीसरी कला या झिल्ली जिसमें मेद या चरबी रहती है।

मेदोरोग (सं० पु०) मोटाई या चरबी बढ़नेका रोग। व्यायामरहित, दिवानिद्राशील, अधिक घृतादि और कफकारक पदार्थ खानेवालोंके भुक्त अन्नरससे मेदोधातुकी अत्यन्त वृद्धि होती है जिससे शरीरके सारे स्रोत आवृत हो जाते हैं। स्रोतके आवृत होनेसे अस्थि आदि अन्यान्य धातुकी सम्यक् पुष्टि नहीं होने पाती और उसी कारण नितम्ब, पार्श्व, उदर और स्तनादिमें उत्तरोत्तर केवल मेद ही सञ्चित होने लगता है। इससे रोगी अत्यन्त स्थूलकाय हो नितान्त अकर्मण्य, कास, क्षुद्रश्वास, तृष्णा और मोहयुक्त, स्निग्धांग, सोनेके समय खर्राटे मारनेवाले, अवसन्न, क्षुधा, स्वेद और दुर्गन्धयुक्त, क्षीणबल और अल्पमैथुन होते हैं। मेदके द्वारा स्रोतोंके बंद हो जाने पर वायु कोष्ठस्थ अग्निको प्रदीप्त कर आहारको अत्यन्त शीघ्र पचा कर उसे सोख लेती है इससे फिर भूख लग जाती है। ऐसी हालतमें यदि भोजनमें देर हो जाय, तो वायु और पित्त प्रकुपित हो दाहादि नाना प्रकार शारीरिक पीड़ा उत्पन्न करते हैं।

"मेदसावृतमार्गत्वात् वायुः कोष्ठे विशेषतः।
चरन् सन्धुक्षयत्यग्निमाहारं शोषयत्यपि॥
तस्मात् शीघ्रन्तु जरयत्याहारञ्चापि कांक्षति।
विकारान् सोऽश्नुते घोरान् कांश्चित् कालव्यतिक्रमात्॥"
"एतावुपद्रवकरौ विशेषात् पित्तमारुतौ।
एतौ हि दहतः स्थूलं वनं दावानलो यथा॥"

शरीरस्थ मेदकी अत्यन्त वृद्धि होने पर सहसा वातादि प्रकोपित हो वातव्याधि, प्रमेहपीड़का, ज्वर, भगन्दर, विद्रधि आदि घोर विकार-समूह उत्पन्न कर जीवनको नष्ट कर देते हैं।

"मेदस्यतीव संवृद्धे सहसैवानिलादयः।
विकारान् दारुणान् कृत्वा नाशयन्त्याशु जीवितं॥"

यह भी देखा जाता है, कि नपुंसक और कृत्रिम नपुंसक बकरे चर्बीके अत्यन्त बढ़ने पर उसकी यन्त्रणा न सह सकते और छटपटा कर प्राणत्याग करते हैं।

शास्त्रकार अत्यन्त स्थूल और कृश व्यक्तिको समी विषयमें अकर्मण्य समझ उनकी घृणा करते हैं। फिर भी इन दोनोंमें वे कृश व्यक्ति ही को अच्छा समझते हैं।

"स्थूलादपि कृशो वरं।

इसकी चिकित्सा—मेदोरोगाक्रान्त व्यक्ति नियमपूर्वक वमनविरेचन द्वारा शरीर-संशोधन कर शालि और काउनके पुराने चावलका भात तथा कुल्थी और मूंगका जूस सेवन करे। परिश्रमी, चिन्ताशील, स्त्रीसेवी, मद्य पीनेवाला, रातको जागनेवाला, जौ और श्यामक चावल खानेवाला इस रोगसे शीघ्र ही मुक्त हो जाता है। मेदोवृद्धिको रोकनेके लिये भातके मांड़के साथ हींग और अंडी पत्तेकी राख खानी चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुच और त्रिफलाका काढ़ा पीनेसे यह रोग जाता रहता है। उस काढ़के साथ लौहचूर्ण किम्वा त्रिफलाके काढ़के साथ मधु खानेसे मेदोरोगकी शान्ति होती है। प्रातःकाल मधुके साथ जल अथवा भातका गरम मांड़ पीनेसे शरीरकी स्थूलता दूर हो जाती है। त्रिकटु (सोंठ, पीपल और मिर्च), त्रिफला और त्रिमद (चिरायता, मोथा और विड़ंग) इन नौ द्रव्योंमें नौ भाग गुग्गुल मिला कर गरम जलके साथ प्रतिदिन खानेसे मेद, कफ और आमवातसे उत्पन्न रोग कुछ ही दिनोंमें शान्त हो जाते हैं। मधुके साथ पीपलका चूर्ण खानेसे मेद और कफ रोग दूर होते हैं। धतूरेके पत्तोंका गाढ़ा जलरहित रस स्थूलता दूर करनेके लिये उद्वर्त्तन अर्थात् पैरसे क्रमानुसार ऊपर मस्तक तक मर्दन करावे। अड़ूस पत्रका रस अथवा बिल्वपत्रका रस शंखचूर्णके साथ शरीरमें लगानेसे देहकी दुर्गन्ध जाती रहती है। वाला, तेजपात, रक्तचन्दन, शिरीष, खसकी जड़, नाग केशर और लोध इन सबोंका चूर्ण शरीरमें लगाने अथवा प्रलेप देनेसे चर्मदोष और पसीनेकी निवृति होती है। स्वेद-निवृत्तिके लिये वकुलपत्र और हर्रे जलमें पीस कर स्नानसे पहले यथाक्रम उद्वर्त्तन करे। केवल हर्रेका भी इस प्रकार उद्वर्त्तन करनेसे स्वेदकी निवृत्ति होती है।

उक्त रोगमें बराबर मेदःक्षयकी चेष्टा करनी चाहिये। फिर भी अत्यन्त मेदःक्षय न होने पावे इस पर ध्यान रखना आवश्यक है। मेदके क्षय होने पर प्लीहाकी वृद्धि, सन्धियोंकी शिथिलता, शरीरकी रुखाई तथा उसे मेदस्विजीवके मांस खानेकी इच्छा होती है।

चर्बीके विकार किम्वा ह्रास होनेसे प्राणियोंकी देहमें रोगोंकी उत्पत्ति होती है। इसके विकार या ह्राससे जितना अनिष्ट होता है वैद्यकशास्त्रके चार स्नेहोंमेंसे अन्यतम स्नेहके जैसा इसका व्यवहार होनेसे उतना ही उपकार भी होता है। शिशुमार, मेष, कूर्म्म, वराह आदिकी चर्बीका वातरोग आमवात, अपस्मार और उन्माद आदि रोगोंमें बाह्य प्रयोग करनेसे उपकार होता है।

मेदोरोहिणी (सं० स्त्री०) जलरोगविशेष।

मेदोऽर्बुद (सं० पु०) मेदयुक्त गांठ या गिल्टी जिसमें पीड़ा हो। २ ओठका एक रोग।

मेदोवती (सं० स्त्री०) मेदा, चरबी।

मेदोवृद्धि (सं० स्त्री०) मेदसः वृद्धिः। १ चरबीका बढ़ना, मोटाई। २ अण्डवृद्धि।

मेद्य (सं० त्रि०) मेदोभव, चरबीसे उत्पन्न।

मेध (सं० पु०) मेध्यते वध्यते पश्वादिरत्रेति मेध-घञ्। १ यज्ञ। २ हवि। ३ यज्ञमें बलि दिया जानेवाला पशु। ४ यज्ञमें दिये जानेवाले पशुका अवयव। ५ वाजसनेयसंहिताके ३३, ९२ सूक्तके रचयिता ऋषि। ६ प्रियव्रतके एक पुत्रका नाम।

मेधज (सं० पु०) विष्णु।

मेधपति (सं० पु०) मेधस्य यज्ञस्य पतिः। यज्ञपालक।

मेधयु (सं० त्रि०) १ मेदमय, जिसे चरबी हो। २ बलिष्ठ, बलवान्। ३ संग्रामेच्छु, लड़ाई करनेकी जिसकी इच्छा हो।

मेधस् (सं० पु०) मेधते इति मेध-असुन्। १ स्वायम्भुव मनुपुत्र।

मेधस (सं० पु०) मुनिविशेष।

मेधसाति (सं० स्त्री०) १ यज्ञका दान या लाभ मेध। प्रियव्रतके एक पुत्रका नाम।

मेधा (सं० स्त्री०) मेधते संगच्छते अस्यामिति मेध(- षिद्भिदादिभ्यो इङ्। पा० ३।३।१०४) इत्यङ् टाप्, धारणशक्तियुक्ता धीर्मेधा मेधते संगच्छतेऽस्यां सर्वं बहुश्रुतं विषयीकरोति इति वा। धारणावती बुद्धि। जिन्हें मेधा अधिक रहती है, वे प्रायः सभी स्मरण रख सकते हैं। इसको साधारण बोल चालमें मुखस्थ करने या याद करनेकी शक्ति कहते हैं। मेधा बढ़ानेवाले ये सब हैं—सतत अध्ययन, तत्त्वज्ञान कथा, श्रेष्ठ तन्त्रशास्त्रावलोकन, अच्छे ब्राह्मणों और आचार्य आदिकी सेवा।

किसीकी यदि मेधा नष्ट हो गई तो नियमपूर्वक ओषधादिका सेवन करनेसे उसकी मेधा शक्ति फिरसे उद्दीप्त हो सकती है। सुश्रुतमें इस सम्बन्धमें यों लिखा है। उजले सोमराजके फलको धूपमें सुखा कर चूर कर ले। उस चूर्णको गुड़में मथ कर तेलके बरतनमें डाल दे। पीछे उस बरतनको सात रात धानमें रक्खे। पश्चात् उसे निकाल कर प्रतिदिन सूर्योदयके समय उसको पिण्ड बना कर उपयुक्त परिमाणमें गरम जलके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ सेवन करे। औषध पच जाने पर भल्लातकके विधानानुसार दो पहरको शीतल जलसे स्नान कर शालि वा साठी धानका चावल, दूध और मधुके साथ भोजन करे। छः मास तक इस प्रकार नियम रखनेसे मेधाकी अतिशय वृद्धि होती तथा दीर्घायुःलाभ होता है। कुष्ठ, पाण्डु और उदररोगी प्रातःकाल सूर्यकी लालिमाके दूर होने पर इस औषधके अर्द्ध पलकी गोली बना कर काली गौके दूधके साथ खावे। जीर्ण होने पर अपराह्न कालमें बिना नमकके आंवलेके जूसके साथ घृतयुक्त अन्न भोजन करना चाहिये। एक महीने तक यह नियम पालन करनेसे मेधा खूब बढ़ जाती है और शरीर नीरोग हो जाता है। चित्रक मूलके सेवनका भी यही नियम है, तब विशेषता यही है, कि हल्दी और चित्रकमूलके दो पलकी गोलीका सेवन चाहिये और और नियम पहले जैसे हैं।

प्रथमतः—अन्नको छोड़ कर मण्डूकपर्णीका रस जहां तक पच सके उस परिमाणमें ले कर उसे दूधमें अच्छी तरह मिला कर या दूधके साथ पीवे। यह पुराना हो जाय, तो यवान्न दूध या तिलके साथ खावे और दूध पीवे। तीन महीने तक यह नियम पालन करनेसे ब्रह्मतेजविशिष्ट और अत्यन्त मेधावी होता है।

द्वितीयतः—भोजनके पहले ब्राह्मीरस यथाशक्ति पी कर औषध पुराना होने पर नमक रहित यवागू पीना चाहिये। यह नियम सात रात पालन करनेसे ब्रह्मतेजोविशिष्ट और मेधावी होता है। तृतीयतः, सात रात यह नियम रखनेसे इच्छित पुस्तकमें व्युत्पत्ति होती है और नष्टस्मृति फिर प्राप्त हो जाती है। यदि फिर सात रात तक यह नियम पालन किया जाय तो दो बार उच्चारण करनेसे एक सौ तक कही गई बातें याद रह जाती हैं। इस प्रकार २१ रात तक नियमपालन करनेसे दारिद्र्य दूर होता है, वाग्देवी मूर्त्तिमती हो कर उसके शरीरमें प्रवेश करती है, श्रुति आदि शास्त्र समूह उसके आयत्त हो जाते हैं और वह श्रुतिधर १०५ वर्ष तक जीवित रहता है। ब्राह्मीरस २ प्रस्थ, घी १ प्रस्थ, विड़ग, तण्डुल १ कुड़व, वच २ पल, त्रिवृत् २ पल, हर्रे, आंवला, बहेरे प्रत्येक १२ पल इन सबके चूर्ण और उपयुक्त रस तथा घीको एक साथ पाक कर कलसीमें डाल मुंह बंद कर दे। उसके बाद पूर्वोक्त विधानानुसार यथासाध्य परिमाणमें सेवन करे। इसके पुराना होने पर दूधके साथ अन्न खावे। ऐसा करनेसे दारिद्र्य दूर होता है और वह श्रुतिधर हो जाता है। हिमालयमें उत्पन्न वच और आंवला बराबर हिस्सेमें पिंड़ाकार बना कर दूधके साथ तथा पुराना होने पर दूधके साथ अन्न भोजन करना चाहिये। १२ रात तक इसका सेवन करनेसे स्मृतिशक्तिका विकाश होता है और दो बार अभ्यास करने पर कोई भी विषय याद हो जाता है। दूसरा विधान—वच दो पल ले कर क्वाथ तैयार करे और उसे दूधके साथ पी जावे। (सुश्रुत मेधा और आयुष्कामीय रसायन)

२ दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या।

"कीर्त्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रिया मतिः।"

(अग्निपु० गणभेदनामाध्याय)

३ सोलह मातृकाओंमें एक मातृका। नान्दीमुखश्राद्धमें इनकी पूजा की जाती है।

"गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।" (भवदेवभट्ट)

४ धन, सम्पत्ति।

मेधाकरी (सं० स्त्री०) १ शंखपुष्पी, सफेद अपराजिता। २ ब्राह्मीक्षप।

मेधाकवि—एक भाषा-कवि। इनका जन्म सं० १८६० में हुआ था। इन्होंने चित्रभूषण नामक ग्रन्थ चित्रकाव्यका बड़ा ही सुन्दर बनाया।

मेधाकार (सं० त्रि०) प्रज्ञाकर्त्ता, मेधाजनक।

मेधाकृत (सं० क्ली०) मेधं करोतीति-कृ-क्विप् तुक्च। १ सितावरशाक। २ (त्रि०) मेधाजनक।

मेधाचक्र (सं० पु०) राजपुत्रभेद। (राजत० ८।१४०५)

मेधाजनन (सं० त्रि०) १ ज्ञानवर्द्धक, जिसमें मेधाकी वृद्धि हो। (क्ली०) कृष्ण सर्षप, काली सरसों।

मेधाजित् (सं० पु०) मेधां जितवानिति-जि-क्विप्। कात्यायन मुनि।

मेधातिथि (सं० पु०) मेधयाः धारण-बहुव्रीहे रतिथिरिव। १ मनुसंहिताके प्रसिद्ध भाष्यकार। ये भट्ट वीरस्वामीके पुत्र थे। २ प्रियव्रतके पुत्र और शाकद्वीपके अधिपति। (भाग० ५।२०।२४) ३ सत्तरहवें द्वापर युगके व्यास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(देवीभा० १।३।२०) ४ प्रजापति कर्दमके पुत्र। (मार्कण्डेय पु० ५३।१५) ५ दक्षसावर्णि मन्वन्तरमें सप्तर्षिमेंसे एक (मार्क०पु० ९४।८)। ६ कण्व मुनिके पिता। (महाभारत०)। ७ कण्ववंशमें उत्पन्न एक ऋषि। ये ऋग्वेदके प्रथम मण्डलके १२-१३ सूक्तोंके द्रष्टा थे। ८ एक मुनि। (स्त्री०) ९ नदीविशेष।

"चर्म्मण्वती मही चैव मेध्या मेधातिथिस्तथा।
ताम्रावती वेत्रवती नद्यस्त्विक्षोऽथ कौशिकी॥"

(भा० ३।२१।२३)

मेधायुन् (सं० स्त्री०) ब्राह्मीक्षुप।

मेधारुद्र (सं० पु०) मेधया रुद्र इव। कालिदास।

मेधावत् (सं० त्रि०) मेधा अस्ति अस्य इति मेधा मतुप् मस्य व (पा ५।२।१२१) मेधाविशिष्ट, बुद्धिमान्।

मेधावती (सं० स्त्री०) १ महाज्योतिष्मती लता। (त्रि० २ मेधाविशिष्टा, वह स्त्री जिसकी धारणशक्ति तीव्र हो।

मेधावन् (सं० त्रि०) धारणाशक्तिवाला, जिसकी स्मरणशक्ति तीव्र हो।

मेधावर (सं० पु०) कथासरित्सागरवर्णित नायकभेद।

मेधाविक (सं० क्ली) मेधावी।

मेधाविता (सं० स्त्री०) मेधाविनः भावः तल्-टाप्। मेधावित्व, मेधावीका भाव या धर्म, चतुर्बुद्धिता।

मेधाविन् (सं० पु०) मेधास्त्यस्येति मेधा (अस्मायामेधास्रजो विनिः। पा ५।२।१२१) इति विनि। १ शुक पक्षी, तोता। २ मदिरा, शराब। ३ पण्डित, विद्वान्। ४ व्याड़ि। ५ किसी ब्राह्मणका पुत्र (भारत १२।१७५) ६ सुनयका पुत्र और नृपञ्जयका पिता। ७ भव्य और वर्षके एक पुत्रका नाम।

(त्रि०) ८ मेधायुक्त, जिसकी धारणा-शक्ति तीव्र हो। वैदिक पर्याय—विप्र, विप्र, गृत्स, धीर, वेन, कण्व, ऋभु, नवेदस, कवि, मनीषिन, मान्धातृ, विधातृ, मनश्चित्, विपन्यव, आकेनिप, उशिज, कीस्तास, अद्धातय, मतय, मतुथस् और वधित। (वेदनि० ३।१५)

मेधाविनी (सं० स्त्री०) मेधाविन्-ङीप्। १ ब्रह्माकी पत्नी। २ मेधाविशिष्टा।

मेधाविरुद्र—एक आलंकारिक।

मेधावा (सं० पु०) त्रि० मेधाविन् देखो।

मेधासूक्त (सं० क्ली०) वैदिक सूक्तभेद।

मेधि (सं० पु०) मेध्यते खले स्थाप्यते इति मेध (सर्वधातुभ्य इन। ऊण् ४।१११) इति इन्। १ उस स्थान पर गड़ा हुआ खंभा जहां खेतसे ला कर फसल फैलाई जाती है। दानेवाले बैल इसी खंभेमें बँधे हुए चारों ओर घूम कर पैरोंसे डंठलोंके दाने झाड़ते हैं। ज्योतिषमें लिखा है, शुक्र और बृहस्पतिवारमें, रेवती, स्वाती, हस्ता, मूला और मृगशिरा नक्षत्रमें तथा स्थिर लग्नमें इसे स्थापन करना होता है। (ज्योतिस्तत्त्व) २ स्तूप आदिका अंशविशेष।

मेधिर (सं० त्रि०) मेधा अस्यास्तीति मेधा (मेधारथाभ्यामिरच्निरचौ वक्तव्यौ। पा ५।२।१०९) इति काशिकोक्त्या इरन्। १ मेधावी, तत्पर बुद्धिवाला।

"त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च" (ऋक १।२५।२०)
'हे मेधिर मेधाविन् वरुण!' (सायण)

२ यज्ञवान्। ३ हविष्मान्।

मेधिष्ठ (सं० त्रि०) अयमेषामतिशयेन मेधावी मेधाविन् (अतिशायने तमबिष्ठनौ। पा ५।३।५५) इति इष्ठन् (विन्मतोर्लुक्। पा ५।३।६५) इति विनो लुक्। अतिशय मेधायुक्त, धारणाशक्तिवाला।

मेध्य (सं० त्रि०) मेध्यते इति मेध् (ऋहलोर्ण्यत्। पा ४।१।१२४) इति ण्यत् यद्वा—मेधामर्हतीति मेधा दण्डादित्वात् यत्। १ पवित्र, शुचि। नित्यमेध्य वस्तु यथा—

कारुहस्तगत और पण्यप्रसारित वस्तु तथा ब्रह्मचारीका भैक्ष्य, ये सब नित्यमेध्य हैं।

"नित्यं शुद्धं कारुहस्तः पण्ये यच्च प्रसारितम्।
ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यं नित्यमेध्यमिति स्थितः॥"

(मनु ५।१२९)

२ मेधाजनक, बुद्धि बढ़ानेवाला। (पु०) मेधायै हितः मेधा (उगवादिभ्यो यत्। पा ५।१।२) इति यत्। ३ खदिर, खैर। ४ यव, जौ। ५ छाग, बकरा।

मेध्या (सं० स्त्री०) मेध्य-टाप्। १ रक्त वचा। २ रोचन, रक्त कमल। ३ केतकी। ४ ज्योतिष्मती। ५ शंखपुष्पी। ६ ब्राह्मी। ७ श्वेत वचा। ८ शमी। ९ मण्डुकी। १० गोरोचना। ११ शर्करा। १२ इक्षु, ईख। १३ अपराजिता। (राजनि०) १४ महाभारतके अनुसार एक नदीका नाम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेनका (सं० स्त्री०) मन्यते इति मन् 'मनेराशिषि च' इति वुन् ततः। (नशिमन्योरलिट्येत्वं वक्तव्यं। पा ६।४।१२०) इत्यत्र काशिकोक्त्या अकारस्य एत्वं। १ अप्सरोभेद, स्वर्गकी वेश्या। इन्द्रकी आज्ञासे मेनकाने विश्वामित्र का तप भंग किया था। इसीके गर्भसे शकुन्तलाका जन्म हुआ। दुष्यन्त और शकुन्तला देखो।

मेनैव मेना स्वार्थे कन्। २ पार्वतीकी माता, हिमालय-की स्त्री। कालिकापुराणमें लिखा है—जिन दिनों दक्ष-कन्या सती महादेवके साथ क्रीड़ा करती थी उस समय मेनका सतीकी नितान्त हितैषिणी सखी थी। जब सतीने दक्षके घर प्राण त्याग किया तब मेनकाने उनके लिये तथा इस आशासे कि वे हमारी कन्या हो कर जन्म लें, कठिन तप किया। भगवती काली इस तपस्यासे सन्तुष्ट हो मेनकाके सामने उपस्थित हुई और वर मांगने कहा। मेनकाने उनसे एक सौ बलवान् और दीर्घायु पुत्र तथा एक कन्याकी योचना की। तब भगवतीने मेनका-से कहा, 'तुम्हारे एक सौ बलवान् पुत्र होंगे और जगत्के कल्याणके लिये मैं ही तुम्हारी कन्या होऊंगी।'

वर पानेके बाद मेनकासे मैनाक उत्पन्न हुआ। मैनाक ने इन्द्रसे शत्रुता ठानी और फलतः अपने दोनों पक्षोंके साथ आज तक समुद्रमें आश्रय लिये हुए हैं। पश्चात् मेनकाके निन्यानवे पुत्र हुए, और बादमें सतीका जन्म हुआ। (कालिकापु० ४२ अ०)

वामनपुराणमें इनका जन्मवृत्तान्त यों लिखा है। आषाढ़ और अगहनकी अमावस्यामें इन्द्रने भक्तिके साथ पितृगणके लिये पिण्डदान किया था। इससे पितृगण बड़े सन्तुष्ट हुए। इन पितृ लोगोंके मानसी कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम देवोंने मेनका रक्खा। पश्चात् देवोंने इस मानसी कन्याको पर्वतोंमें श्रेष्ठ हिमालयसे व्याह दिया।

अनन्तर हिमालय और मेनकाके तीन कन्यायें हुईं। रक्तवर्णा, रक्तनेत्रा तथा रक्ताम्बर-धारिणी ज्येष्ठा कन्या-का नाम रागिणी, मध्यमाका कुलिला तथा सबसे छोटी-का नाम काली था। इसी कालीने कठोर तप कर महादेवको पतिरूपसे प्राप्त किया था।

(वामनपु० ४८-५१ अ०)

मेनकाघट्ट—आसामप्रदेशके जटोदरके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। (ब्रह्म० ख० १६।२१)

मेनकात्मजा (सं० स्त्री०) मेनकाया आत्मजा। १ दुर्गा। २ शकुन्तला।

मेनकाप्राणेश (सं० पु०) मेनकायाः प्राणेशः पतिः। हिमालय।

मेनकाहित (सं० क्ली०) रासक नामक नाटकका एक भेद।

मेनगुन—ब्रह्मराज्यके अन्तर्गत प्राचीन अमरपुर और वर्त्त-मान मन्दाले राजधानीके मध्यवर्त्ती एक नगर। यहां ब्रह्मराज बोदो पिया वा मेन्तवगाई द्वारा १८१६ और १८१९ ई०में बनाये हुए दो सुन्दर मठ (पागोडा) हैं। उनका शिल्पनैपुण्य देखने योग्य है। उन दोनों पागोडों-मेंसे एक गोल और दूसरा चौकोन है। जिस आकृतिसे इसका आरम्भ हुआ था, कि यदि सम्पूर्ण हो जाता तो इसकी ऊंचाई ५०० फुट होती, परन्तु १६५ फुट ऊंचा ले जा कर ही इसका काम शेष हो गया है। १६३६ ई०के भूमिकम्पसे यह नष्ट हो गया है। प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सु महामति फार्गुसनने लिखा है, कि १९वीं सदीकी यह कीर्त्ति मिस्रके पिरामीड़की जैसी है।

मेनन्द्रस—यवनराज मिलिन्द (Menondros)

मिलिन्द देखो।

मेना (सं० स्त्री०) मान्यते पूज्यते इति मान पूजायां (बहुल-मन्यत्रापि। उणा २।४६) इति इनच् प्रत्ययेन निपातनात् साधुः। १ मेनका, पितरोंकी मानसी कन्या।

"अग्निष्वात्ता बर्हिषदो द्विधा तेषां व्यवस्थितिः।
तेभ्यः स्वाहा स्वधा जज्ञे मेना वैतरणी तथा॥"

(कूर्मपु० १२ अ०)

२ स्त्री। ३ वृषणश्वकी कन्या। ४ वाक्। (निघंटु ४।११) ५ हिमवान्की स्त्री, मेनका। ६ नदीविशेष।

मेनाङ्कबु—भारत महासागरस्थ सुमात्राद्वीपके अन्तर्गत एक प्राचीन जनपद। यह मलयजातिकी वासभूमि है। यह भारतीय द्वीपखण्ड बहुत पहलेसे ही सभ्यताके आलोकसे आलोकित हुआ था। यहां तक कि, अन्यान्य द्वीपवासी मलयवंशीय सरदारगण अपनेको मेनाङ्कबु-राजवंशसे उत्पन्न समझ कर गौरव करते थे। विषुव-रेखाके दक्षिणवर्त्ती इस जनपदका भूपरिमाण ३ हजार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्गमील है तथा यह ६० मील लम्बी और ५० मील चौड़ी एक विस्तीर्ण पहाड़ी उपत्यका भूमि पर अवस्थित है। इसके दक्षिणमें १०७५० फुट ऊंचा तलंग पर्वत तथा ६८०० फुट ऊंचा सिङ्गालङ् और मारपी पर्वत हैं। तलङ्ग और मारपीसे कभी कभी आग निकलती है। उत्तरमें ५००० फुट ऊंची सगो पर्वतमाला देखी जाती है।

यह उपत्यकाभूमि बहुत कुछ उर्वरा है। जलका अभाव न रहनेके कारण कभी भी फसल नहीं मरती। मध्यभागमें १५ मील लंबा और ५ मील चौड़ा एक मछलीसे भरा हुआ तालाव है। इसका तथा समग्र उपत्यकाभूमिका प्राकृतिक दृश्य देखते वनता है। भूतत्त्वकी आलोचना करनेसे मालूम हुआ है, कि यह स्थान भालकेनिक, प्लुटोनिक और सेडिमेण्टरी-स्तरसे भरा पड़ा है।

इस वहु जनपूर्ण प्राचीन देशका प्रकृत इतिहास आज तक भी मालूम नहीं। फिर यह भी न मालूम, कि किस समय यहांके अधिवासियोंने इस्लामधर्मको अपनाया था।

De Barros-का भ्रमण वृत्तान्त पढ़नेसे जाना जाता है, कि पुर्त्तगीज लोग सुमात्रा उपकूलमें आ कर इस देशके जिन सामन्तराज्योंका उल्लेख कर गये हैं उनमें इस प्राचीन समृद्धि राज्यका नाम नहीं मिलता। दूसरे दूसरे राज्य प्रायः मलयसरदारों द्वारा परिचालित होते थे। उस समय मेनाङ्कबु सोनेकी खान और अस्त्रव्यवसाय के लिये प्रसिद्ध था।

ऐतिहासिकोंका अनुमान है, कि यहांके मलय लोग जावा-वासियोंके साथ मिल कर हिन्दूकी धर्मनीति और सामाजिक सभ्यताको सीख कर बहुत कुछ उन्नत हो गये हैं। आज भी उस संस्रवका परिचय उनकी भाषामें जो संस्कृत शब्द मिला है, उसीसे साफ साफ मालूम होता है।

राजोपाख्यानमें लिखा है, कि पपति-सि वतङ्ग और कयितुमाङ्गङ्ग नामक दो भाइयोंने मेनाङ्कबु राज्यकी स्थापना की। प्रयाङ्कत नगरमें इनकी राजधानी थी। सन्ध सुपूर्व नामक मलयका इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि पालेमवङ्गसे जावा वासियोंने यहां आ कर उपनिवेश वसाया। पीछे उन्हींके द्वारा यहांकी समृद्धि और श्रीवृद्धि हुई।

सङ्गनील उतम, शूरवय, इन्द्रगिरि, इन्द्र, भूमि, आगुङ्ग और गुणराज आदि संस्कृत-मिश्रित तथा मारपी, रिन्धित्, जम्बि, पालिमवङ्गन, वणु-आसिन, रेजङ्ग, सारवी आदि देश वा स्थानवाचक यव (जावा) शब्द देख कर जावावासीका संस्रव अपरिहार्य प्रतीत होता है। फिर मेनाङ्कबु की स्तम्भगात्रखोदित शिलालिपिकी भाषामें भी यव-संस्रव देखा जाता है।

पुर्त्तगीजोंके अभ्युदयके पहले यहां जो यव-प्रभाव फैला था, वह डिवरोके ग्रन्थप्रमाणसे स्पष्ट मालूम होता है। उन्होंने लिखा है, यहांके अधिवासी बहुत बलिष्ठ हैं, उनके शरीरका वर्ण तपाये सोनेके जैसा है, शरीरकी आकृति देखनेसे ही ये लोग शान्त प्रकृतिके मालूम होते हैं। जावा-द्वीपके समीप रहते हुए भी दोनों देशवासियोंकी आकृतिमें जो अन्तर दिखाई देता है, उससे सचमुच आश्चर्य होता है। इस प्रकार जातिगत विकृति रहने पर भी यहां यावाधियत्यका प्रमाण सुमात्रावासीके जौजो (यवी) शब्दसे ही सूचित होता है। (Decade 3, *Bk* 5, *Chapt*. 1) मलय भाषामें इस यवी शब्दसे देशीय और वैदेशिकके संस्रवोत्पन्न अर्थ समझा जाता है।

१८०७ ई०में यहां एक अभिनव और संस्कृत इस्लाम धर्ममतकी प्रतिष्ठा हुई। मक्कासे लौटे हुए एक मलयवासी साधुने उस धर्ममतका पाद्रि वा रिञ्चि नाम रखा। वह पुर्त्तगीज धर्मयाजक 'पादरी' के अनुकरण पर अथवा कोरिञ्चि (Korinchi) जिलेमें पहले पहल प्रवर्त्तित होनेके कारण उस शब्दके अपभ्रंश पर कहा जाता है। जो इस नवीन मतमें दीक्षित हुए उनका मलयवासी द्वारा ओराङपूतिः (श्वेत मनुष्य) नाम रखा गया। सफेद कपड़ेको छोड़ कर और किसी प्रकारका रंगा हुआ कपड़ा पहनना इस धर्मके विरुद्ध है। रिञ्चि वा धर्माध्यक्षोंने १८२२ ई०के मध्य मेनाङ्कबु प्रदेशमें जो धर्मशक्ति और राजशक्ति फैलाई थी उसकी आलोचना करनेसे चमत्कृत होना पड़ता है। इसमें माद्र श्रेवस्तुका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेवन तथा तम्बाकू और पान खाना निषिद्ध बताया है। यदि कोई मादक वस्तु चुरा कर खाय और वह मालूम हो जाय, तो उसे प्राणदण्ड भी मिल सकता है। हर एक आदमीको सिर मुंड़वाना और टोपी पहना उचित है। कोई भी पराई स्त्रीके साथ बातचीत नहीं कर सकता। स्त्रियाँ पहनावेके ऊपर बिना बुरका डाले बाहर नहीं निकल सकतीं। ऐसी कठोर धर्मनीतिका शिथिल प्रकृतिवाले मलयवासी पालन न कर सके; इसी कारण यह इस्लाम-धर्म बहुत दूर तक फैलने न पाया। पादरियोंको जनता अश्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे जिससे धर्मप्राणताका ह्रास हो गया।

इन धर्मप्रवर्त्तकोंने आगे चल कर कई युद्धोंमें विजय-लाभ किया और सुमात्राके मध्यदेशमें एक विस्तीर्ण राज्य बसाया। ओलन्दाजोंके साथ विवाद हो जानेसे दोनों पक्षमें घमसान लड़ाई छिड़ी। १८४० ई०में तीन वर्ष तक लगातार लड़ाईके बाद मुसलमान मलय लोगों-ने ओलन्दाजोंके निकट अपनी हार स्वीकार की।

उपनिवेश शब्द देखो।

मेनाजा (सं० स्त्री०) मेनायाः जायते इति जन-ड स्त्रियां टाप्। पार्वती।

मेनाद (सं० पु०) मे इति नादोऽस्य। १ बिड़ाल, बिल्ली। २ छाग, बकरा। ३ मयूर, मोर।

मेनाधव (सं० पु०) मेनायाः धवः। हिमालय।

मेनि (सं० पु०) १ आयुध विशेष।

(शतपथब्रा० ११।२।७।२४)

२ वज्र। ३ वाग्वज्र। ४ शक्ति।

मेनिला (सं० स्त्री०) राजकन्याभेद।

मेनुल (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

मेन्धिका (सं० स्त्री०) मां शोभामिन्धयति प्रकाशयतीति इन्ध-णिच् ण्वुल् टापि अत इत्वं। क्षुपविशेष, मेंहदी।

मेन्धी (सं० स्त्री०) मां शोभामिन्धयतीति इन्ध-णिच्-अच् गौरादित्वात् ङीप्। क्षुपविशेष, मेंहदी।

मेम (सं० पु०) बौद्धके मतसे एक बड़ी संख्याका नाम।

मेम (अं० स्त्री०) १ यूरोप या अमेरिका आदिकी स्त्री। २ ताशका एक पत्ता। इसे बीबी या रानी भी कहते हैं। यह पत्ता बादशाहसे छोटा और गुलामसे बड़ा माना जाता है।

मेमदपुर—गुजरात प्रदेशके महीकान्थ विभागके अन्तर्गत एक देशी सामन्तराज्य। यहांके सरदार बड़ोदाके गायकवाड़को प्रतिवर्ष १८० रुपया कर देते हैं।

मेमना (हिं० पु०) १ भेड़का बच्चा। २ घोड़ेकी एक जाति।

मेमार (अ० पु०) भवन निर्माण करनेवाला शिल्पी, इमारत बनानेवाला।

मेमारी—बङ्गालके वर्द्धमान जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। रेशमी धोती और साड़ीके व्यवसायके लिये यह स्थान बहुत कुछ मशहूर है। यहां इष्ट इण्डियां रेल कम्पनीका एक ष्टेशन है।

मेमिष (सं० त्रि०) पलकशून्य दृष्टि, जिसकी आंखों पर पलक न हो।

मेमोरियल (अं० पु०) १ वह प्राचीन पत्र जो किसी बड़े अधिकारीके पास विचारार्थ भेजा जाय। २ स्मारक चिह्न, यादगार।

मेय (सं० त्रि०) १ परिमाणार्ह, जिसकी नाप जोख हो सके। २ जो नापा जोखा जानेवाला हो।

मेरक (सं० पु०) १ विष्णुशत्रुभेद, एक असुर जिसे विष्णु-ने मारा था।

मेरठी (हिं० पु०) गन्नेकी एक जाति जो मेरठकी ओर होती है।

मेरबना (हिं० क्रि०) १ दो या कई वस्तुओंको एकमें करना, मिलाना। २ संयोग कराना; मिलाप कराना।

मेरा (हिं० सर्व०) 'मैं' के संबंधकारकका रूप, मुझसे संबध रखनेवाला।

मेराउ (हिं० पु०) मेराव देखो।

मेराव (हिं० पु०) मिलाप, समागम।

मेरी (हिं० सर्व०) मेराका स्त्री-रूप, (स्त्री०) २ अहङ्कार।

मेरु (सं० पु०) मि-(मिपीभ्यां रुः। उण् ४।१०१) इति रु। १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोनेका कहा गया है। पर्याय—सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय।

"देवर्षिगन्धर्वयुतः प्रथमो मेरुरुच्यते।
प्रागायतः स सौवर्णो उदयो नाम पर्वतः।"

(मत्स्यपु० १२१।८)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह पर्वत देवताओंका आवासस्थल है। सुमेरु देखो।

२ जपमालाके बीचका बड़ा दाना जो सब दानोंके ऊपर होता है। इसीसे जपका आरम्भ और इसी पर उसकी समाप्ति होती है। तन्त्रमें लिखा है, कि जप-करनेके समय मेरुका उल्लङ्घन नहीं करना चाहिये, करनेसे वह जप निष्फल होता है।

जब करमालासे जप किया जाता है, तब मध्यमाके दोनों पर्व मेरु माने जाते हैं। इसी मेरुको शक्ति भिन्न और सभी विषयोंमें जानना होगा। शक्तिविषयमें स्वतन्त्र नियम है। साधारण शक्तिविषयमें तर्जनीके दोनों ही पर्व मेरु हैं; किन्तु श्रीविद्या विषयमें कुछ प्रभेद है, वह यह है, कि उसमें अनामिका और मध्यमाके दोनों ही पर्व मेरु माने जाते हैं। ३ एक विशेष ढांचेका देवमन्दिर। यह षट्कोण होता है और इसमें १२ भूमिकाएं या खण्ड होते हैं। भीतरमें अनेक प्रकारके मोखे और चारों दिशाओंमें द्वार देते हैं। इसका विस्तार ३२ हाथ और ऊंचाई ६४ हाथ होनी चाहिये। ४ वीणाका एक अंग ५ पिङ्गल या छन्दशास्त्रकी एक गणना जिससे यह पता लगता है, कि कितने कितने लघु गुरुके कितने छंद हो सकते हैं।

मेरुआ (हिं० पु०) खेत बराबर करनेके पाटेका छोर पर-का भाग जिसमें रस्सियाँ बँधी होती हैं।

मेरुक (सं० पु०) मिनोति क्षिपति गन्धानिति मि-रु, संज्ञायां कन्। १ यक्षधूप, धूना। २ ईशानकोणमें अवस्थित एक देश। (वृहत्स० १४।२९)

मेरुकल्प (सं० पु०) एक बुद्धका नाम।

मेरुकूट (सं० पु०) मेरुशृङ्ग।

मेरुग्रन्थि (सं० पु०) वृक्कक, गुरदा।

मेरुटू—बौद्धमतानुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

मेरुतुङ्ग (सं० पु०) १ जैनाचार्य। इन्होंने कङ्कालाध्याय-वार्त्तिक नामक वैद्यकग्रन्थ और १३९० ई०में प्रबन्ध-चिन्तामणिकी रचना की। २ मेघदूतकाव्य, महापुरुष-चरित और सूरिमन्त्रकल्पसारोद्धार नामक तीनों ग्रन्थके प्रणेता। जिनप्रभसूरिने शेषोक्त ग्रन्थकी टीका लिखी है। ३ लघुशतपदीके रचयिता।

मेरुदण्ड (सं० पु०) १ पीठके बीचकी हड्डी, रीढ़। २ पृथ्वीके दोनों ध्रुवोंके बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा (*Axis*)

मेरुदु—बौद्ध मतानुसार एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

मेरुदुहितृ (सं० स्त्री०) मेरुकन्या।

मेरुदृश्वन् (सं० त्रि०) मेरुदर्शनकारी।

मेरुदेवी (सं० स्त्री०) मेरुकी कन्या और नाभिकी पत्नी जो विष्णुके अवतार ऋषभदेवकी माता थी।

मेरुधामा (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ वह जो मेरु पवत पर रहता हो।

मेरुध्वज (सं० पु०) राजभेद।

मेरुनन्द (सं० पु०) स्वारोचिष मनुके एक पुत्रका नाम।

मेरुपीठ—प्राचीन तीर्थभेद।

मेरुपुत्री (सं० स्त्री०) मेरुकी कन्या।

मेरुपृष्ठ (सं० क्ली०) १ मेरुशिखर। २ आकाश। ३ स्वर्ग।

मेरुप्रभ (सं० त्रि०) मेरुवत्प्रभासम्पन्न, जिसकी छटा मेरु पर्वत-सी हो।

मेरुप्रभवन (सं० क्ली०) वनभेद। (हरिवंश)

मेरुप्रस्तार (सं० पु०) मेरुवत् कल्पित छन्दोयोजन।

मेरुबलप्रमर्दिन (सं० पु०) यक्षराजभेद।

मेरुभूत (सं० पु०) जाति विशेष।

मेरुभूतसिन्धु (सं० पु०) पह्लव देशका दूसरा नाम।

मेरुमन्दर (सं० पु०) पर्वतभेद। (भागवत ५।१६।१२)

मेरुमती—सह्याद्रिपाद-प्रवाहित एक नदी। इसके किनारे बहुतसे तीर्थ हैं। (देशावली)

मेरुमूल (सं० क्ली०) मेरुसानु, पहाड़का निचला भाग।

मेरुमिश्र—विवादचन्द्र नामक ग्रन्थके प्रणेता। किसी किसीने इनका नाम मिसरू मिश्र रखा है।

मेरुयन्त्र (सं० क्ली०) १ बीजगणितमें एक प्रकारका चक्र। २ चरखा।

मेरुवर्ष (सं० क्ली०) वर्षभेद। (मार्कपु० ६०।७)

मेरुवर्द्धनस्वामी (सं० पु०) राजतरङ्गिणी वर्णित एक व्यक्ति।

मेरुव्रज (सं० क्ली०) नगरभेद।

मेरुशास्त्री—अर्कसंग्रहोपन्यासके प्रणेता, ब्रह्मानन्दके गुरु। १८५६ ई०में ये विद्यमान थे।

मेरुशिखर (सं० पु०) १ मेरुकी चोटी। २ हठयोगमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माने हुए मस्तकके छः चक्रोंमेंसे सबसे ऊपरका चक्र। इसका स्थान ब्रह्मरन्ध्र, रंग अवर्णनीय और देवता चिन्मय शक्ति है। इसके दलोंकी संख्या १०० और दलोंका अक्षर ओंकार है।

मेरुशिखरकुमारभूत (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

मेरुश्रीगर्भ (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

मेरुसावर्ण (सं० पु०) ग्यारहवें मनुका नाम।

"ततस्तु मेरुसावर्णो ब्रह्मसूनुर्मनुः स्मृतः।
ऋतुश्च ऋतुधामा च विश्वक्सेनो मनुस्तथा॥"

(मनुपु० अ०)

मेरुसुन्दर—भक्तामरकालावरोध नामक जैन-ग्रन्थके रचयिता।

मेरुसुसम्भव (सं० पु०) कुम्भाण्डवंशीय राजभेद।

मेरे (हिं० सर्व०) १ 'मेरा' का बहुवचन। २ 'मेरा' का वह रूप जो उसे संबंधवान् शब्दके आगे विभक्ति लगानेके कारण प्राप्त होता है।

मेल (सं० पु०) मिल्-घञ्। १ मिलानेकी क्रिया या भाव, संयोग। २ पारस्परिक घनिष्ट व्यवहार, मित्रता, दोस्ती। ३ एक साथ प्रीतिपूर्वक रहनेका भाव, अनबनका न रहना। ४ अनुकूलता, अनुरूपता। ५ मिश्रण, मिलावट। ६ ढंग, प्रकार। ७ समता, जोड़।

मेलक (सं० पु०) मिल-भावे घञ् स्वार्थे कन्। १ सहवास, संग। २ मेला। ३ समूह, जमावड़ा। ४ समागम, मिलन। ५ वर और कन्याकी राशि, नक्षत्र आदिका विवाहके लिये किया जानेवाला मिलान।

विवाहके पहले वर और कन्याकी राशिका मिलान करना जरूरी है। यदि दोनोंकी राशिमें अच्छी तरह मेल खाय जाय, तो दम्पतिके सुख ऐश्वर्यादिकी वृद्धि और यदि मेल न खाय, तो कलह, दुःख आदि विविध प्रकारके अशुभ होते हैं।

ज्योतिषमें लिखा है, कि पहले आपसकी राशि स्थिर कर गणका निरूपण करे। क्योंकि, अपनी अपनी जातिमें अर्थात् अपने अपने गणमें जो विवाह होता है वही शुभदायक है। देवगण और नरगणमें विवाह मध्यम, देवगण और राक्षसगणमें अधम, नरगण और राक्षसगणमें विवाह होनेसे अशुभ होता है। ऐसे मेलकका नाम गणमेलक है। अलावा इसके मेलकमें राजयोटक, द्विद्वादश, नवपञ्चम, अरिद्विद्वादश, मित्रद्विद्वादश, मित्रषड़ष्टक, अरिषड़ष्टक आदि विचार कर मेलक स्थिर करना होता है।

द्विद्वादश और नवपञ्चम—वरकी राशिसे कन्याकी राशि, द्वितीय होनेसे कन्या दुःखभागिनी, द्वादश होनेसे धनविशिष्टा और पतिप्रिया, पञ्चम होनेसे पुत्रनाशिनी और नवम होनेसे पतिप्रिया और पुत्रवती होती है।

अरिद्विद्वादश—धनु और मकर, कुम्भ और मीन, मेष और वृष, मिथुन और कर्कट, सिंह और कन्या, तुला और वृश्चिक, वर और कन्याकी राशि होनेसे अरिद्विद्वादश होता है। इसमें विवाह होनेसे मृत्यु और धनकी हानि होती है।

मित्रद्विद्वादश—धनु और वृश्चिक, कुम्भ और मकर, मेष और मीन, सिंह और कर्कट, मिथुन और वृष, तुला और कन्या, वर और कन्याकी राशि होने पर भी मित्रद्विद्वादश होता है। इसमें विवाह होनेसे शुभ है।

मित्रषड़ष्टक—मकर और मिथुन, कन्या और कुम्भ, सिंह और मीन, वृष और तुला वृश्चिक और मेष, कर्कट और धनु, कन्या और वरकी राशि होनेसे मित्रषड़ष्टक होता है। इसमें विवाह मध्यम माना जाता है।

अरिषड़ष्टक—मकर और सिंह, कन्या और मेष, मीन और तुला, कर्कट और कुम्भ, वृष और धनु, वृश्चिक और मिथुन, कन्या और वरकी राशि होनेसे अरिषड़ष्टक होता है। यदि कन्याके आठवेंमें वर और वरके छठेमें कन्याकी राशि पड़े तो उसे अरिषड़ष्टक कहते हैं। यह अरिषड़ष्टक अत्यन्त निन्दित है। इसमें विवाह नहीं करना चाहिये।

राजयोटक—वर और कन्याकी एक राशि वा समसप्तम, चतुर्थदशम अथवा तृतीय एकादश होनेसे राजयोटक होता है। यह राजयोटक मेलक सबसे श्रेष्ठ है। (ज्योतिस्तत्त्व)

इस प्रकार मेलक देख कर हिन्दूमात्रको विवाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देना उचित है। इससे शुभ और अशुभ जाना जाता है, इसीसे इसका नाम मेलक हुआ है।

मेलकलवण (सं० क्ली०) मिलतीति मिल-ण्वुल्, मेलकं लवणम्। औषधलवण।

मेलगिरि—मान्द्राज प्रदेशके सालेम जिलान्तर्गत एक गिरिश्रेणी। यह अक्षा० १२° १०′ से १२° ३′ उ० तथा देशा० ७७° ३८′ से ७८° २′ पू०के मध्य विस्तृत है। यह अधित्यकाभूमि साधारणतः ३५०० फुट ऊंची है। इसका सबसे ऊंचा शिखर पोनासिहेटा ४६६६ फुट ऊंचा है। यहां मलयाली नामक दुर्द्धर्ष पहाड़ी जाति रहती है। पहाड़ी जंगल-भागमें वांस और चन्दनके पेड़ देखे जाते हैं। पीनेके जलका अभाव होनेके कारण यह स्थान बड़ा ही अस्वास्थ्यप्रद हो गया है।

मेलघाट—मध्यभारतके बरारराज्यके इलिचपुर जिलान्तर्गत एक पहाड़ी विभाग और तालुक। यह अक्षा० २१° १०′ से ले कर २१° ४७′ उ० तथा देशा० ७६° ३४′ से ले कर ७७° ४०′ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें मध्यप्रदेश और ताप्ती नदी, पूर्वमें ताप्ती और निमारी, दक्षिणमें इलिचपुर तालुक तथा पश्चिममें मध्यप्रदेश है। भूपरिमाण १६३१ वर्गमील है।

यह पर्वतश्रेणी सतपुराकी एक शाखा है और पूर्व-पश्चिममें विस्तृत है। बैराड़के पास यह समुद्रतलसे ३६८७ फीट ऊंची है और ताप्ती उपत्यकासे आ कर मिली है।

पहाड़के पूर्वमें मल्लाना, पश्चिममें दुलघाट और विन्धारा नामके बहुतसे गिरिपथ हैं। पार्वतीय वनभाग गवर्नमेण्टकी देखभालमें है। इन्हीं पथोंसे वनजात नाना प्रकारकी वस्तु विकनेके लिये समतल क्षेत्रमें भेजी जाती है।

इस पर्वतसे बहुत-सी छोटी छोटी नदियां निकली हैं जिनमेंसे ताप्ती नदीकी पूर्णा और झिपना शाखा ही उल्लेखनीय हैं। गर्मीमें अधिकांश नदियां सूख जाती हैं।

मेलघाट पर्वत पर एक भी नगर नहीं है। गाविलगढ़ और नर्णाला नामक दो प्राचीन दुर्ग महाराष्ट्र-केशरी शिवाजीके अभ्युदयकालसे ही प्रसिद्ध हैं। चिकालदा नामक एक बड़े ग्रामकी आवहवा अच्छी है। वह समुद्रपृष्ठसे ३७७७ फीट ऊंचा है। अलावा इसके दारणी, देवा और बैरागढ़ ग्राममें प्रति साल एक मेला लगता है।

यहांके अधिवासी असभ्य पहाड़ी हैं। उनमें कर्कु जातिकी ही संख्या अधिक है। वे लोग कोलारिया शाखासे निकले हैं और हिमालयके उत्तर पूर्व पथ हो कर भारतमें घुस गये हैं। ये महादेव और दूसरे दूसरे हिन्दू-देव-देवीकी पूजा करते हैं। अलावा इसके मृत पिता माता आदि पूर्वपुरुषकी भी पूजा करते हैं तथा उनके लिये फुलजागनी उत्सव मनाते हैं। ये कुसंस्कारावद्ध तथा भूतप्रेतादि देवताओं पर विश्वास करते हैं। किसीके मरने पर ये कब्रिस्तानमें एक सागोनका तख्ता गाड़ देते हैं।

कर्कु जब बरार आया तब यहां नेहाल जातिका आधिपत्य था। क्रमशः वह बलहीन हो कर स्वस्थान-भ्रष्ट हो गया है तथा कर्कुने उसके स्थान पर अधिकार कर लिया है। अभी नेहालगण अपनी भाषा तक छोड़ कर कर्कु जातिकी भाषा बोलने लगे हैं। यही दो जातियां परस्पर सद्भावसूत्रमें आवद्ध हैं। ये एक साथ बैठ कर धूमपान करते हैं। ये दोनों ही कृषिजीवी हैं; कोई कोई चोरी कर अपना गुजारा चलाते हैं।

मेलन (सं० क्ली०) १ मिलन, एक साथ होना, इकट्ठा होना। २ जमावड़ा। ३ मिलानेकी क्रिया या भाव। ४ वालागांवके पूर्वमें अवस्थित एक पुराना गांव।

मेलपचुर—मद्रास प्रदेशके तिन्नेवल्ली जिलान्तर्गत एक नगर।

मेलपलैयम्—मद्रासप्रदेशके तिन्नेवल्ली जिलान्तर्गत एक नगर। यह तिन्नेवल्ली नगरसे डेढ़ कोसकी दूरी पर अवस्थित है।

मेलमल्लार (सं० पु०) एक रागिनी जिसकी स्वरलिपि इस प्रकार है। स स स रे प ध स स ध प म ग रे स।

मेला (सं० स्त्री०) मिल-णिच्, अङ् टाप्। १ मेलक, मिलन। २ बहुतसे लोगोंका जमावड़ा। ३ मसि, रोशनाई। ४ अञ्जन। ५ महानीली (राजनि०)

मेला (हि० पु०) १ बहुत-से लोगोंका जमावड़ा, भीड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाड़। २ देवदर्शन, उत्सव, खेल, तमाशे आदिके लिये बहुत से लोगोंका जमावड़ा।

मेलाठेला (हिं० पु०) भीड़ भाड़ और धक्का, जमावड़ा।

मेलानन्दा (सं० स्त्री०) मस्याधार, दवात।

मेलानी (हिं० क्रि०) १ मेलनाका प्रेरणार्थक रूप। २ रेहन या गिरवी रखी हुई वस्तुको रुपया दे कर छुड़ाना।

मेलान्धु (सं० स्त्री०) मस्याधार, दवात।

मेलापक (सं० पु०) सम्मिलन, ग्रहादिका संयोग।

मेलामन्दा (सं० स्त्री०) मस्याधार, दवात।

मेलाम्बु (सं० पु०) मेलेव अम्बु अत्र। मस्याधार, दवात।

मेलायन (सं० क्ली०) सम्मिलन।

मेलाव—बम्बई प्रदेशके बड़ोदा राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २२° ३४´ उ० तथा देशा० ७२° ५२´ पू०के मध्य अवस्थित है।

मेली (हिं० पु०) १ मुलाकाती, वह जिससे मेल हो, संगी। (वि०) २ हेल मेल रखनेवाला, जल्दी हिल मिल जानेवाला।

मेलु—बौद्ध मतानुसार एक बहुत बड़ा संख्याका नाम।

मेलुकोट—मैसूरराज्यके हसन जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। म्युनिस्पलिटीका देखरेखमें रहनेके कारण यह साफ सुथरा है। यह अक्षा० १२° ४०´ उ० तथा देशा० ७६° ४३´ पू०के बीच पड़ता है। यहांके अधिवासियोंमेंसे श्रीवैष्णवकी ही संख्या अधिक है।

पहले यहां एक महासमृद्धिशाली नगर था। कालक्रमसे यद्यपि वह नष्टभ्रष्ट हो गया, तो भी आज उसका खंडहर वहांकी पूर्वस्मृतिका गौरव घोषणा करता है। ईसीसन् १२वीं सदीमें वैष्णवधर्मप्रवर्त्तक रामानुज चोलराजके अत्याचारसे बचनेके लिये यहां ११ वर्ष ठहरे थे। उसी समयसे यहां वैष्णव ब्राह्मणोंका अड्डा जम गया है। वल्लालवंशीय नरपतियोंको वैष्णवधर्ममें दीक्षित कर उन्होंने बहुत-से रुपये पाये थे और उसी रुपयेसे देवमन्दिरका खर्च चलाया था। १७७१ ई०में महाराष्ट्र-सेनाने जब नगरको नष्ट भ्रष्ट कर डाला तबसे यह नगर श्रीभ्रष्ट हो गया है।

यहांका बेलुवापुल्लेराय नामक सर्वप्रधान श्रीकृष्णका मन्दिर मैसूरराज्यकी देखभालमें है। पहाड़ परका नरसिंह मन्दिर भी उल्लेखयोग्य है। करीब चार सौ श्रीवैष्णव ब्राह्मण चेलुवापुल्ल मन्दिरमें रहते हैं। उक्त सम्प्रदायके गुरु भी यहीं रहते हैं।

सूती कपड़े और खसखसके पंखेके लिये यह स्थान बड़ा मशहूर है। यहां 'नाम मृत्तिका' नामकी एक प्रकार सफेद मिट्टी मिलती है जो वैष्णवोंकी आदरकी चीज है। तिलक लगानेके लिये वह काशी, वृन्दावन आदि स्थानोंमें भेजी जाती है।

मेलुद (सं० पु०) बौद्धमतानुसार एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

मेलूर—१ मद्रासप्रदेशके मदुरा जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ६२८ वर्गमील है। २ उक्त उपविभागके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम।

मेलूर—मैसूर राज्यके बङ्गलोर जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम। यहां प्रति वर्ष चैत्र शुक्ल पक्षमें गंगादेवीके उद्देश्यसे १४ दिन तक एक मेला लगता है इस मेलेमें सैकड़ों गाय आदि पशु बिकते हैं।

मेल्टिंग केट्ल (अं० पु०) सरेस गलानेकी देगचा। यह एक ढकनेदार दोहरा बरतन होता है। नीचेके बरतनमें पानी भर कर उसके अन्दर दूसरा बरतन रख कर उसमें सरेस भर देते हैं और ढक कर आंच पर चढ़ा देते हैं। पानीकी भापसे सरेस गल जाता है। गल जाने पर उसे रोलर मोल्डमें ढाल देते हैं जिससे वह जम जाता है और स्याही देनेका बेलन तैयार हो कर निकल आता है।

मेल्हना (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी नाव। इसका सिक्का खड़ा रहता है।

मेव—राजपूतानेकी ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति। मेव पहले हिन्दू थे और मेवातमें बसते थे, पर मुसलमानी बादशाहतके जमानेमें ये मुसलमान हो गये। अब ये लोग लूट पाट प्रायः छोड़ते जा रहे हैं।

मेवड़ी (हिं० स्त्री०) निगुडी, संभालू।

मेवा (फा० पु०) १ खानेका फल। २ किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल।

मेवा (हिं० पु०) सूरतके गन्नेकी एक जाति। इसे खजुरिया भी कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेवाटी (फा० स्त्री०) एक पकवान। इसके अन्दर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाड़—दक्षिण राजपूतानेके अन्तर्गत एक विस्तीर्ण भूभाग। यह अक्षा० २३° ३' से २५° २८' उ० तथा देशा० ७३° १' से ७५° ४६' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें वृटिश-सरकारका अजमेर-मेरवाड़ और शाहपुर; उत्तरपूर्वमें जयपुर और बूँदी, पूरवमें कोटा और टोंक, दक्षिणमें मध्यप्रदेश या वम्बई प्रदेशके वहुतसे राज्य और पश्चिममें अरावली पहाड़ है। जनसंख्या १५ लाखके करीव है। यहांके उदयपुर, चित्तोर और कमलमेरु आदि नगरोंमें वीरप्राण राजपूत हिन्दूवीर अप्रतिहत प्रभावसे जो राज्यशासन कर गये हैं, उसे भाटकवि राजपूताने भरमें अपने गीतके साथ गाया करते हैं। वे राजपूत राजगण इतिहासमें मेवाड़के राणा नामसे प्रसिद्ध हैं। वहुतेरे इस राजपूत वंशमें शकसंस्रवकी कल्पना करते हैं। जो कुछ हो, राजोपाख्यानमें अयोध्याधिपति सूर्यवंशावतंस रामचन्द्रसे ही इस राजवंशकी वंशलता ग्रथित हुई है।

भाटोंके गीतसे मालूम होता है, कि मेवाड़-राजवंशके प्रतिष्ठाता राजा कनकसेन लोहकोटका परित्याग कर द्वारका आये। सौराष्ट्रभूमिमें हूणोंसे खदेड़े जानेके वाद उनकी संज्ञा 'गुहिलोत' हुई। सूर्यवंशीय उपनिवेशिक राजा कनकसेन पीछे दलवलके साथ उदयपुर उपत्यकाके आहर नामक स्थानमें आये। इसीसे उक्त सम्प्रदायका 'अहेरिया' नाम हुआ। पीछे उनकी एक शाखा शिशोदा नामक स्थान जीतनेके वाद शिशोदीय कहलाई।

हूणोंने सौराष्ट्रके वाद वलभीपुरको लूटा। उस युद्धमें केवल चन्द्रावतीपुरीके परमारराजकन्या शिलादित्यकी स्त्री पुष्पवती ही की ज़ान वची थी। प्रवाद है, कि दैवसंयोगसे उस समय वे अपनी जन्मभूमिके अम्वा भवानी-तीर्थदर्शनको गई हुई थी। जव वहांसे लौटी तव उन्हें अपने स्वामीकी मृत्युका संवाद मिला। अव वे शोकसन्तप्त हृदयसे पहाड़की गुफामें छिप रही। वे गर्भवती थीं, वहीं पर उन्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस पुत्रको उन्होंने वीरनगरनिवासिनी कमलावती नाम्नी एक ब्राह्मणीके हाथ सौंप कर ब्राह्मणोचित शिक्षा देने और राजपूतकन्याके साथ विवाह करनेका हुकुम दिया और आप सती हो गईं। पुरोहितकन्या कमलावती माताकी तरह उस पुत्रका लालन पालन करने लगी। गुहामें जन्म होनेके कारण उसका नाम 'गुह' वा 'गुहिल' रखा गया। ब्राह्मणके घरमें प्रतिपालित वह राजकुमार धीरे धीरे क्षत्रोचित हिंसादिवृत्तिका पक्षपाती होने लगा। ग्यारहवें वर्षमें वह एक तरह स्वाधीन हो गया, कमलावतीके मातहतमें न रहा।

इस समय वन्यप्रदेशमें घूम घूम कर वह राजकुमार भीलजातिका प्रेमभाजन हो गया। इदर राज्यके दुर्द्धर्ष भीलसरदार माण्डलिकने वालकके वीरोचित व्यवहार पर संतुष्ट हो उसे अपना राज्य तथा अधीनस्थ वीरवन पुत्रोंको समर्पण किया। कहते हैं, कि इस समय एक भील ने अपनी अंगुली काट कर उसी रक्तसे गुहके कपालमें राजटीका दिया था। इस इदरराज्यमें गुहके वंशधरोंने ८ पीढ़ी तक राज्य किया। पीछे भीलोंने उद्धत हो कर राजा नागादित्यको गुप्तभावसे मार डाला। नागादित्यका तीन वर्षका छोटा लड़का वप्पा भण्डेरा दुर्गमें लाया गया और यदुवंशीय एक भील-सरदारके अधीन उसका लालन पालन हुआ। वालकके जीवनको विपदसंकुल देख भील-सरदारने उसे पराशर वनके मध्य नगेन्द्रनगरमें छिपा रखा। यहीं पर उसका वाल्यजीवन व्यतीत हुआ।

वप्पाका वीरजीवन धीरे धीरे विकशित होने लगा। उसने अपने प्रतिभावलसे चित्तोर नगरको जीत लिया। इस्पाहन, तुरान, इरान, कफ्रिस्तान, इराक, कन्धहार, काश्मीर आदि देशोंको जीत कर वहांकी राजकन्याओंसे विवाह किया। उन सव स्त्रियोंसे जो पुत्र उत्पन्न हुए उनका नाम नौशेरा अफगान रखा गया।

वप्पाराव देखो।

वप्पाके चित्तोर-अधिकार, मेवार-शासन और चित्तोर-त्यागके वाद उस वंशमें यथाक्रम अपराजित, कालभोज, खुमान, भर्त्तृभट्ट, सिंहजी, उलत्, नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार, अम्बाप्रसाद, नरवर्मा, यशोवर्मा आदि गुहि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोत राजवंशधरके बाद अपने समाजका नेतृत्व ग्रहण कर वीरताकी पराकाष्ठा दिखा गये हैं।

बोगदादके खलीफावंशीय वालीद, ओमार, हासम, अलमनसूर, हारुण-अलरसीद और अलमामुनके शासन-कालमें मुसलमान-सेनाने भारत जीतनेके लिये प्रस्थान किया। उन लोगोंकी भेजी हुई सेनाने समुद्रके किनारे पहुंचते ही चित्तोर-नगरी जीतनेके उद्देशसे मेवाड़राज्य पर आक्रमण कर दिया। गजनीके राजा आलप्तगीन, सबुक्तगीन और महमूदके शासनकालमें उनके भारत-आक्रमणके प्रतिद्वन्द्वि स्वरूप शक्तिकुमार, नरवर्मा, यशो वर्मा आदि वीरोंने जन्मग्रहण किया था।

इसके बाद समरसिंहके अभ्युदयकालमें राजपूतकुल-गौरव जग उठा। पीछे इस वंशके कर्ण, राहुप आदि वीरोंने चित्तोर पर दखल जमाया। राहुप मन्दोरके परिहार राजपुत्र राणा मोकलको परास्त कर शिशो दिया आये। उन्हें मुसलमान-आततायी शमसुद्दीनके साथ युद्ध करना पड़ा था। कर्ण और राहुपके नाम शिलालिपिमें नहीं है, इस कारण दोनोंके अधिकार-संबंध-में बहुतेरे विश्वास नहीं करते।

लक्ष्मणसिंहके राज्यकालमें पठान-राज अलाउद्दीनने चित्तोर पर आक्रमण किया। राजाके चचा राणा भीम-सिंह उनके विरुद्ध युद्ध करके मारे गये और उनकी स्त्री पद्मिनी सती हो गई। इस युद्धमें गोरा और बादल नाम दो राजपूतवीरोंने पठान-सम्राट्को नाकोदम कर दिया था। इसके बाद अजयसिंह और राणा हम्मीरने चित्तोरकी सम्मान रक्षा की थी। हम्मीरके अधोनस्थ नायक मालदेवके पुत्र बनवीरकी वीरता कहानी राजपूत-के इतिहासमें प्रसिद्ध है।

हम्मीरके मरने पर क्षेत्रसिंह मेवाड़के सिंहासन पर बैठे। उन्होंने अजमेर, जहाजपुर, मण्डलगढ़, छप्पल आदि स्थान फतह किये। उन्हें गुप्तभावसे मार कर लक्षराणा चित्तोरके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए।

लक्षराणाके बाद चण्डके स्वार्थ त्याग करने पर बालक मोकलजी सिंहासन पर बैठे। किन्तु इस समय राठोर-की प्रतिपत्ति बढ़ती देख चण्डने बड़ी वीरतासे चित्तोरके राठोरप्रभावका दमन किया। मोकलजीका काम तमाम कर राणा कुम्भ राजसिंहासन पर बैठे थे। इन्होंने मैरता की राठोर-राजकन्या मीराबाईसे विवाह किया था। मीराका रूप और कृष्णप्रेमकहानी राजपूत-इतिहासमें अतुलनीय है! कुम्भ और मीराबाई देखो।

कुम्भके बाद राणा राजमल्ल और पीछे उनके लड़के राणा सङ्ग (संग्रामसिंह) ने राजसिंहासन सुशोभित किया। आप मुगल-सम्राट् बाबरशाहके साथ युद्ध कर राजपूतगौरवको अक्षुण्ण रख गये हैं।

सङ्गके बाद यथाक्रम रत्न, विक्रमजित और राणा उदयसिंहने राज्य किया। उदयसिंह कापुरुष थे। वे मुगल-सम्राट्से अपनी हार कबूल कर चित्तोरको छोड़ उदयपुरमें अपना राजपाट उठा लाये। उदयसिंहकी मृत्यु होने पर राजपूत-कुलकेशरी राणा प्रतापसिंहका अभ्युदय हुआ। राणा प्रतापके असाधारण अध्यवसाय, कष्ट सहिष्णुता और राजपूतोचित वीरत्व प्रभाव तथा अक-बरशाहके पराभवकी ओर ध्यान देनेसे शरीर सिहर उठता है। प्रतापसिंह देखो।

प्रतापके बाद धीरे धीरे राजपूत प्रतिभाका अवसान होता चला। प्रतापके मरने पर उनके लड़के अमरसिंह और मेवाड़के अन्तिम स्वाधीन राजा राणा कर्ण उदयपुर-के सिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे। राणा कर्णके अन्तिम समयमें मेवाड़प्रदेशमें मुगलसम्राट् जहांगीरका प्रभाव फैला। कर्णके बाद जगत्सिंह और पीछे राज-सिंहने राजपूतजातिकी लुप्तकीर्त्तिका पुनरुद्धार किया। ये लोग मुगलको अधीनता स्वीकार करनेको बाध्य हुए थे। इसके बाद राणा जयसिंह और २य अमरसिंहके शासनकालमें औरङ्गजेबके प्रभावसे राजपूत शक्तिका ह्रास हो गया था।

मुगलशक्तिके अवसानके बाद राणा संग्रामसिंह मेवाड़के सिंहासन पर बैठे। इनके शासनकालमें मार-वाड़ और अम्बरके साथ संधि हुई। नादिरशाहका दिल्ली लूटना और महाराष्ट्र सेनाका मालव और गुर्जर-आक्रमण इन्हींके समय हुआ। मालवमें चौथा संग्रहके बाद बाजीराव मेवाड़ जीतनेको अग्रसर हुए। राणाने राजकर दे कर उनसे पिंड छुड़ाया।

इसके बाद वे अपने भांजे मधुसिंहके अम्बर सिंहा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनाधिकार ले कर ईश्वरसिंहके विरुद्ध खड़े हुए। राजमहलमें दोनों पक्षमें घमसान युद्ध छिड़ा। युद्धमें राणा परास्त हुए जिससे मेवाड़की राजशक्ति कमजोर हो गई।

जगत्सिंहकी मृत्युके बाद राजा २य प्रतापसिंहने मेवाड़ राजशक्तिका पुनरुद्धार करनेकी कोशिश की। उनके लड़के राणा राजसिंह २य और राणा अरिसिंहने यथाक्रम मेवाड़का शासन किया था। अरिसिंहके शासनकालमें होलकर और सिन्दे-राजने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। विद्रोही सामन्तोंने राणाको राज्यच्युत करनेका षड़यन्त्र रचा जिससे दोनोंमें युद्ध खड़ा हो गया। राणा हार खा कर भागे। पीछे वे किसी बूंदी राजपुत्रके हाथ यमपुर सिधारे। अनन्तर उनके लड़के हमीरसिंह राजपद पर बैठे। इस समय राजमाताके साथ राजमन्त्री अमरचांदका विवाद खड़ा हुआ। १७७८ ई०में बालकराज हम्मीरकी बचपनमें मृत्यु हुई। १७३६ ई०में महाराष्ट्रके आगमनसे ले कर १७७८ ई०में हमीरके मृत्युकाल तक मेवाड़ राजशक्ति कमजोर हो जानेसे राज्यकी धीरे धीरे अवनति हो गई थी।

हमीरकी मृत्युके बाद उनके भाई राणा भीमसिंह मेवाड़के सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। इनके शासन कालमें होलकर और सिन्देने मेवाड़ पर आक्रमण किया तथा मेवाड़-राजकन्या कृष्णकुमारीका विवाह ले कर सारे राजस्थानमें भयङ्कर युद्ध हो गया था।

भीमसिंह देखो।

अर्बुद (आबू) शैलशिखर पर राणा समरसिंहकी उत्कीर्ण शिलालिपिसे उनके पहलेके राजाओं और महात्मा टाड द्वारा सङ्कलित राजस्थानोंके इतिहाससे मेवाड़ राजवंशकी तालिका इस प्रकार उद्धृत हुई है—

१ बप्पक वा बप्पा (७३५ ई०)। २ गुहिल। ३ शील। ४ कालभोज। ५ भर्तृभट्ट। ६ अघसिंह वा सिंह। ७ महायिक। ८ खुमान वा खुम्मान। ९ अल्लट। १० नरवाहन। ११ शक्तिकुमार। १२ शुचिवर्मा। १३ नरवर्मा। १४ कीर्त्तिवर्मा। १५ वैरट वा हंसपाल। १६ वैरीसिंह। १७ विजयसिंह, (इन्होंने मालवराज उदयादित्यकी कन्यासे विवाह किया। इनकी कन्या अल्हण देवीके साथ चेदिराज गयकर्णका विवाह हुआ।) १८ अरिसिंह। १९ चोड़। २० विक्रमसिंह। २१ क्षेमसिंह। २२ सामन्तसिंह, (ये आबुपति प्रह्लादन द्वारा पराजय हुए।) २३ कुमारसिंह। २४ मथनसिंह। २५ पद्मसिंह। २६ जैत्रसिंह, (इन्होंने तुरुष्क और सन्धक सेनाको हराया था) २७ तेजसिंह (१२६७ ई०)। २८ समरसिंह (१२७८ ई०)। २९ रत्नसिंह। ३० श्रीजयसिंह। ३१ लक्ष्मणसिंह। ३२ अजयसिंह। ३३ अरिसिंह। ३४ हम्मीर। ३५ खेतसिंह या क्षेत्रसिंह। ३६ लक्षसिंह। ३७ मोकल, (१४२८ ई०), प्रवाद है, कि वे १३९८ ई०में अपने भाई चण्डका काम तमाम कर स्वयं राजा बन बैठे थे। ३८ कुम्भ (१४३८)। ३९ उदयसिंह, इन्होंने अपने पिता कुम्भको बिजलीके प्रयोगसे मारा था। ४० राजमल्ल (१४८९)। ४१ संग्रामसिंह (१५, १५०९) ४२ रत्नसिंह (१५२७)। ४३ विक्रमादित्य (१५३२)। ४४ (१५३५ ३७ ई० बनवीरका अराजक राज्यशासन)। ४५ उदयसिंह, २य (१५३७)। ४६ उदयसिंहके लड़के प्रतापसिंह (१५७२)। ४७ अमरसिंह (१५९७)। ४८ कर्णसिंह (१६२०)। ४९ जगतसिंह (१६२८)। ५० राजसिंह (१६५२)। ५१ जयसिंह (१६८०)। ५२ अमरसिंह २य (१६९९)। ५३ संग्रामसिंह २य (१७११)। ५४ जगतसिंह (१७३४)। ५५ प्रतापसिंह २य (१७५२)। ५६ राजसिंह २य (१७५४)। ५७ अरिसिंहराणा (१७६१)। ५८ हम्मीर (१७७३)। ५९ भीमसिंह (१७७८)। ६० जीवनसिंह (१८२८)। ६१ सरदारसिंह (१८३८)। ६२ स्वरूपसिंह (१८४२)। ६३ शम्भूसिंह (१८६१)। ६४ सज्जनसिंह (१८७४)। ६५ इनहरणसिंह। ६६ फतेहसिंह (१८८५)। ६७ राजा चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह (१९२८)। उदयपुर देखो

उपरोक्त राजगण प्रायः पुत्रादि क्रमसे मेवाड़के सिंहासन पर बैठ गये हैं। केवल ३७वें, ४४वें और ५९वें राजा अपने भाईके उत्तराधिकारी हुए थे।

मेवाड़राज्यका ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरण आबू, उदयपुर, कमलमेरु और चित्तोर आदि शब्दोंमें दिया गया है। इस वर्द्धनशील, वीरप्राण और वीर्य-

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शाली राजवंशका कीर्त्तिकलाप भी उन्हीं शब्दोंमें मिलेगा। अलावा इसके पार्श्ववर्त्ती मारवाड़ अम्बर आदि राज्य-प्रसङ्गमें भी मेवाड़का आनुषङ्गिक इतिवृत्त और भौगोलिक संस्थान दिया गया है।

मेवाड़के राणा और राजपूत क्षत्रिय कहलाये जाने पर भी वे लोग हिन्दूशक संस्रवसे उत्पन्न हुए हैं, ऐसी कर्नेल टाड आदि ऐतिहासिकोंकी धारणा है। बहुत पहले ही से उत्तरभारतमें शक आदि वैदेशिक जातियोंका समागम होनेके कारण इस प्रकार एक संस्रव होना असम्भव प्रतीत नहीं होता। राजपूत देखो।

जो कुछ हो, राजपूत लोग कट्टर हिन्दू हैं। हिन्दू पद्धतिके अनुसार ही वे क्रिया कलापका अनुष्ठान करते हैं। शक राजाओंने जब पंजाबप्रदेशमें अपना आधिपत्य फैलाया था उस समय पड़ोसी राजपूत जातिने भी भिन्न देशीय राजकुलकी कुछ पद्धियोंका अनुकरण किया होगा; ऐसी आशा नहीं की जाती।

मेवाड़ राजगण जिन सब उत्सवोंका अनुष्ठान करते हैं, वे शक जातिसे लिये गये हैं ऐसा बहुतोंका विश्वास है। माघकी श्रीपञ्चमी वा वासन्ती पञ्चमी उत्सवके दो दिन बाद भानुसप्तमी वा भास्करसप्तमी, किसी राजकुमारके राज्याभिषेकके बाद सूर्यमूर्त्तिको रथ पर रख कर यह रथयात्रा उत्सव मनाया जाता है। यह भी प्राचीन शकजातिके मध्य प्रचलित था। फागुनमें अहेरिया, शिवरात्र और होली पर्व। अहेरिया और होलीपर्वको भी कोई कोई आदि शक जातिका उत्सव बतलाते हैं।

चैत महीनेके आरम्भमें ही सम्वत्सरी अर्थात् राणाका वार्षिक पितृश्राद्ध होता है। राजप्रासादमें और महासती नामक समाधि-मन्दिरमें बड़ी धूमधामके साथ यह उत्पन्न होता है। चैत सप्तमीमें शीतलादेवीकी पूजा होती है। ये शीतला ग्रीक वा फ्रिजियन और रोमकोंकी साइबिल-देवीकी तरह सन्तान सन्ततिकी रक्षा करनेवाली मानी जाती हैं। चैतशुक्लपक्षमें वासन्ती पूजा वा नवरात्र और उसके बाद गौरी पूजाके उपलक्षमें पुष्पमेला लगता है। यह मेला बहुत कुछ रोमकी Cerealia के जैसा है। इसके बाद गङ्गोरे वा गङ्गा गौरी उत्सव, अशोकाष्टमीव्रत, रामजन्मोत्सव, दशहरा, मदन त्रयोदशी आदि उत्सव मनाये जाते हैं।

वैशाखमें नकाड़ा-का आशवरी, छोटी गङ्गागौरी, चान्द्र वैशाख चतुर्दशीमें सावित्रीव्रत, जेठमें आरण्यषष्ठी, आषाढ़में रथयात्रा; सावनमें तीज, नागपञ्चमी और राखी; भादोंमें जन्माष्टमी; आश्विनमें आयुधशालासे खड्ग निकाल कर उसकी पूजा, भिखारीनाथ और माताचलसन्दर्शन, दशहरा, रामलीला आदि उत्सव; कार्तिकमें अन्नकोट, झूलनयात्रा और मकरसंक्रान्तिका उत्सव होते देखा जाता है। अगहनमें भास्करसप्तमी और गङ्गाका जन्मोत्सव होता है। पूसके महीनेमें किसी प्रकारका पर्वोत्सव नहीं होता।

ऊपर कहे गये मासानुक्रमिक उत्सवोंमें स्वयं राणासे ले कर साधारण प्रजा सभी शामिल होते हैं। विस्तार हो जानेके भयसे उन सब उत्सवोंका आनुपूर्विक विवरण नहीं दिया गया। हिन्दूशास्त्रकी रीतिके अनुसार वे सब उत्सव किये जाने पर भी उनमें राजपूतजातिका कुछ लौकिक आचार भी घुस गया है।

मेवाड़में शैव, शाक्त और वैष्णव धर्मकी प्रधानता देखी जाती है। मेवार-राजमहिषी धर्म-परायणा मीराबाईका उन्मादकर कृष्णकीर्त्तन-प्रवाह एक समय सारे राजपूतानेमें बह गया था। व्रजके दुलाल श्रीकृष्णचन्द्र मेवाड़में सभी जगह पूजित होते हैं। देवपूजामें राजपूतोंकी अटल भक्ति है। पूजा वा उत्सवके समय ये लोग दत्तचित्तसे देवताकी पूजा करते और उन्हें बलि चढ़ाते हैं। राजपूत रमणियोंकी सतीत्व-कीर्त्ति इतिहासमें चिरस्मरणीय है। भीमसिंहकी स्त्री पद्मिनीकी सतीत्व-कहानी चाँद कविकी सुधामयी कवितासे आज भी सारे भारतवासीके कण्ठसे प्रतिध्वनित होती है। पठान या मुगल राजाओंके साथ युद्धमें पराजय होनेके बाद असंख्य हिन्दूवीर रमणियां आत्मरक्षाके लिये चितारोहण कर सतीत्वका उज्ज्वल दृष्टान्त दिखा गई है।

इस राज्यमें कुल मिला कर ८३५६ ग्राम और १७ शहर लगते हैं। जनसंख्या १५ लाखके करीब है। अधिवासियोंमें मैर, मीना, कोली वा भीलगण प्रधान हैं। ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोग पहले हीसे मेवाड़राजके सेनादलमें शामिल हो कर युद्ध विग्रहादिमें मदद देते आये हैं।

वर्त्तमान राणाका नाम है, राजा चन्द्रशेखर प्रसाद-सिंह देव बहादुर।

मेवाड़भील—राजपूतानेके मेवाड़ राज्यवासी भीलजाति-विशेष। राजपूत वीरोंके साथ युद्धमें वीरता दिखा कर ये लोग भी इतिहासमें प्रसिद्ध हो गये हैं। राणा प्रताप-सिंहकी भीलसेना ले कर मुगलबादशाहके साथ युद्ध एक इतिहासप्रसिद्ध घटना है। भील देखो।

मेवाड़ी (हिं० पु०) १ मेवाड़-प्रदेशका निवासी। (वि०) २ मेवाड़में रहनेवाला, मेवाड़से सम्बन्ध रखनेवाला।

मेवात—दिल्ली राजधानीका दक्षिण-विभाग। मुसल-मानी अमलदारीमें मथुरा गुरगांव, अलवर और भरतपुरका बहुत कुछ अंश ले कर यह प्रदेश गठित हुआ था। यहांके राजपूत सरदारगण दस्युवृत्तिके कारण इतिहासमें प्रसिद्ध हो गये हैं। यहां तक कि, ये दिल्लीवासी पठान और मुगलोंको भी उत्यक्त करनेमें जरा भी न डरते थे। आईन-इ-अकबरी पढ़नेसे मालूम होता है, कि यह प्रदेश सूबा आग्राके अन्तर्भुक्त था। नारनौल, अल-वर, तिजारा और रेवारी नगर अपने सरदारके आधिपत्य और वीरत्वके प्रभावसे प्रसिद्ध हो गया था।

मेवातके यादववंशीय राजपूत-सरदार राजा मंगल-सिंहका विवाह पृथ्वीराजकी सालीसे हुआ था। पठान-सम्राट् बलबनने यहांके दस्युदल नेताओंको सम्पूर्ण रूपसे परास्त कर मेवात राज्य अपना प्रभाव जमाया तथा इसी समय दस्युप्रभाव उच्छेद करनेके लिये उन्होंने स्थान स्थान पर थाना मुकर्रर किया।

तैमूर शाह जब भारतवर्ष आये थे उस समयके प्रसिद्ध मेवाती सरदार बहादुर अपने शौर्यवीर्यके लिये इस प्रदेशमें प्रसिद्ध हो गये थे। उन्हींसे दिल्लीराजदर-बारके विशेष विख्यात खानजादावंशका अभ्युदय हुआ। इसी वंशने विशेष दक्षता और विचक्षणताके साथ बहुत दिनों तक इस प्रदेशमें शासन किया था।

बाबर शाहके भारत विजय करनेके समय हसन खाँ खानजादा मेवातके प्रधान सामन्त थे। तिजारासे उन्होंने सपरिवार अलवर नगरमें आ कर राजपाट स्थापित किया। सम्राट् बाबर शाहके साथ फतहपुर-युद्धमें मेवातीसरदार हसन खाँ निहत तथा राजपूतगण परा भूत हुए। हसन खांके पुत्रने बाबरकी अधीनता स्वीकार की।

दाक्षिणात्यके आदिलशाह-वंशके राजा आदिलशाहके प्रधान वजीर हीमू (ये १५५६ ई०में पानीपतके मैदानमें पराजित हुए थे) माचारीके मेवाती थे। हीमूकी मृत्युके बाद यहांके अधिवासियोंने सम्राट् अकबर शाहकी विपुल वाहिनीके सामने बड़ी दृढ़ताके साथ आत्मरक्षा की थी। कुछ दिन बाद मेवात पुनः मुगलोंके हाथ पड़ा और यहीं खानजादे अपने अपने क्षमता बलसे मुगलराज्य-के सेनाविभागमें प्रवेश कर बड़े प्रसिद्ध हो गये थे।

महम्मद शाहके राजत्वकालमें १७२० ई०के करीब किसी समय जाट-दस्युदल मेवातमें दिखाई दिया तथा १७२४ ई०के बीच उन्होंने लूट पाट कर समूचे मेवात प्रदेशका नष्ट भ्रष्ट कर डाला। जो कुछ हो, १७५१ ई०में जाटोंको पराजित और राजच्युत कर राजा प्रतापसिंहने अलवर दुर्ग अधिकार कर लिया। उस समयसे वह उसी वंशके अधिकारमें आ रहा है। अलवरके वर्त्तमान महाराव राजा प्रतापसिंहके वंशधर थे। प्रतापके अभ्युदयके बाद मेवातकी कहानी अलवर और भरतपुर सामन्तराज्यकी कहानीके साथ मिली हुई है।

मेवातके सरदार-वंशधर मेवाती नामसे परिचित हैं। बहादुर नाहरके बादसे वे खानजादा नामसे प्रसिद्ध हुए हैं। देशके अधिकांश अधिवासी ही मेव जातिसे उत्पन्न हैं। मेव जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें मतभेद पाया जाता है। मेवगणका कहना है, कि वे यादव, कच्छ वाहा और तुयर राजपूतके वंशधर हैं किन्तु बहुतेरे उन्हें उस देशके आदिम अधिवासी मानते हैं। बहुतोंका अनु-मान है, कि ये लोग मीना जातिकी दूसरी शाखा है।

मेवोंमें ५२ थोक है। उनमेंसे बड़े १२ थोक पाल और छोटे गोत्र नामसे विख्यात हैं। मीना और मेव जाति-में विवाह चलता था, सम्राट् अकबर शाहके समय किसी विवाह-उपलक्षमें दोनों श्रेणीमें एक घोर गड़बड़ी मची जिससे सम्राट ने उनका वैवाहिक सम्बन्ध उठा दिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गजनोपति महमूदके राजपूताना आक्रमणके समय ११वीं सदीमें मेवोंने मुसलमान-धर्म अवलम्बन किया। उस समयसे उनमें हिन्दू और मुसलमानोंको अनेक मिश्रित आचार व्यवहार प्रचलित हैं। मेवगण वराइचके मुसलमान पीर सैयद सालर मशाउदकी बड़ी भक्ति करते हैं। भारतके अन्यान्य पीरोंको दरगाह देखनेके लिये वे प्रायः तीर्थयात्रा करते हैं किन्तु कभी भी हज नहीं करते। हिन्दूके त्योहारोंमें होली और दिवालीको वे बड़े धूमधामसे मनाते हैं। हिन्दूके जैसा उनकी भी कन्याएं पितृ सम्पत्तिकी अधिकारिणी नहीं हो सकतीं। उनमें सगोत्र-विवाह निषिद्ध माना जाता है, पुरुष और स्त्रीका वेषभूषा हिन्दूके समान है।

विद्याशिक्षामें इनका कोई विशेष अनुराग नहीं है। मूर्ख होनेके कारण वे प्रायः कठोर भाषाका प्रयोग करते हैं। सामाजिक सम्भ्रमकी रक्षा कर कथोपकथनमें वे बड़े अनभ्यस्त हैं। उनमें पुत्र वा कन्या-हत्या प्रचलित थी पर अब वह प्रथा सम्पूर्णरूपसे जाती रही। दुर्द्धर्ष दस्युवृत्ति छोड़ देने पर भी आजकल वे चोरी करनेके कारण आत्मसम्मानको रक्षा नहीं कर सकते। उनमें फकीर लालसिंहके वंशधर ही बड़े सम्माननीय हैं। ये किसीके हाथका भी अन्न या जल ग्रहण नहीं; करते किन्तु दूसरे सम्प्रदायकी कन्या लेनेमें बाध्य होते हैं। मीना देखो।

मेवात—राजपूतानेके उत्तर-पूर्व अधित्यका भूमिके अन्तर्गत मेवात प्रदेशकी एक शैलश्रेणी। यह दिल्ली और पंजाब प्रदेशके गुरगांव जिलेके सीमान्त देशमें अवस्थित है।

मेवाती—राजपूतानेकी प्राचीन मेवात प्रदेशमें रहवनेवाली एक जाति।

मेवाफरोश (फा० पु०) फल या मेवे बेचनेवाला।

मेवास— बम्बईप्रदेशके खान्देश पालिटीकल एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामान्तराज्य। यह सतपुरा पर्वतके पश्चिममें अवस्थित है। नर्मदा और ताप्तीके बहनेके कारण यह स्थान बहुत स्वास्थ्यप्रद है। यहांके अधिवासी भील जातिके हैं। ये लोग रणप्रिय और दुर्द्धर्ष हैं। चिखली, नालसिंहपुर, नवलपुरी, गमोलो और काठी नामक पांच सामन्तराज्य ले कर यह संगठित हुआ है। यहांकी शीशमका तख्ता बहुत प्रसिद्ध है।

मेवासा— बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ विभागके अन्तर्गत एक छोटा सामन्तराज्य। यहांके सामन्तराज बड़ोदाके गायकवाड़ तथा वृटिश-सरकारको वार्षिक कर देते हैं।

मेवासी (हिं० पु०) १ घरमें रहनेवाला, घरका मालिक। २ किलेमें रहनेवाला, संरक्षित और प्रबल।

मेशिका (सं० स्त्री०) मञ्जिष्ठा, मजीठ।

मेशी (सं० स्त्री०) जल।

मेष (सं० पु०) मिषति अन्योऽन्यं स्पर्द्धते इति मिष्-स्पर्द्धायाम् अच्। १ पशुविशेष, भेड़ा।

"मेषेण सूपकाराणां कलहो यत्र वर्द्धते।
स भविष्यत्यसन्दिग्धं वानराणां भयावहः॥"

(पञ्चतन्त्र ५।६२)

संस्कृत पर्याय—मेढ्र, उरभ्र, उरण, ऊणायुः, वृषित, एड़क, भेड़, हुड़, श्रृङ्गिण, अवि, लोमश, वली, रोमश, भेडु, भेड़क, लेण्ट, हुलु, मेण्टक, हुड़, संफल। (हेम) इसके मांसका गुण मधुर, शीतल, गुरु, विष्टम्भा और वृहण है। (राजनि०) राजवल्लभके मतसे पित्त और कफ बढ़ानेवाले पदार्थ तथा कुसुम्भ शाकके साथ इसका मांस खाना बड़ा अनिष्टकारक है। मेष देखो।

२ औषधविशेष। ३ (मेदिनी) ३ नैगमेष ग्रह। (भावप्रकाश) ४ परक। ५ जोवशाक सुसना। (राजनि०) ६ राशिविशेष। मेषराशि अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रोंके प्रथम पादमें यह राशि होती है। वैशाख महीनेमें इस राशिमें सूर्य उगते हैं। बारह राशियोंके चक्रमें इसका प्रथम स्थान है। इस राशिसे दूसरी दूसरी राशिकी गणना होती है।

ज्योतिषमें इस राशिके स्वरूप और संज्ञादि विषयका वर्णन इस प्रकार है। मेष—पुरुष, चर, अग्निराशि, दृढ़ाङ्ग, चतुष्पद रक्तवर्ण, उष्ण-स्वभाव, पित्तप्रकृति, अतिशय शब्दकारी, पर्व्वतचारी, उग्रप्रकृति, पीतवर्ण, दिनमें बलवान्, पूर्व दिशाका अधिपति, विषमलग्न, अल्पस्त्रीप्रिय, अल्पसन्तान रुक्षवपुः, क्षत्रियवर्ण, समान अंग।

(नीलकण्ठी ताजक)

यवनेश्वरके मतसे मेष आद्य राशि है। इससे समान शरीर, कालपुरुषका मस्तक, बकरे और भेड़की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सञ्चारभूमि, गुहा पर्वत और चोर लोगोंकी वासभूमि, अग्नि, धातु और रत्नकी खान समझी जाती है।

मेषकी जैसी आकृतिके कारण इस राशिका नाम मेष हुआ है। इसकी अधिष्ठात्री देवीका आकार मेषके जैसा है। राशिगणकी ओज, युग्म, विषम आदि संज्ञा है उनमें इस राशिकी संज्ञा ओजराशि है। इसका विशेष नाम क्रिय है। यह चरराशि है। मेष-राशिमें सूर्यका उच्चस्थान रहता है अर्थात् मेषमें सूर्य रहें तो अत्यन्त बलवान् होते हैं। वैशाखका महीना ही मेषराशिका भाग्यकाल है। मेष रविका उच्चस्थान है लेकिन उच्चांशका भोगकाल थोड़ा है। मेषके केवल १० दिन अर्थात् १ वैशाखसे १० वैशाख तक उच्चांश भोगनेका समय है, उसके बाद सूर्यके उच्चस्थानमें रहने पर भी वे उच्चांशच्युत हो जाती हैं। इस उच्चांशमें भी फिर सूच्चांश अर्थात् उत्तम उच्चांश भोगनेका समय है और वह एक दिन है। मेष जैसे सूर्यका उच्चस्थान है वैसे ही यह शनिका नीचस्थान है। शनि इस राशिमें रहे तो दुर्बल हो जाता है। मेषका शनि बड़ाअनिष्टकर होता है।

मेषराशि मंगलका मूल त्रिकोण तथा स्वगृह है। मंगल मेषराशिमें रहे तो मध्यबली होता है। यह राशि ६ भागोंमें विभक्त की जा सकती है उसे षड्वर्ग कहते हैं। क्षेत्र, होरा, द्रेक्काण, नवांश, द्वादशांश और त्रिंशांश ये ही षड्वर्ग हैं। प्रत्येक राशिको षड्वर्ग करके ग्रहगण किस वर्गमें किस प्रकार हैं यह स्थिर करना होता है।

मेषराशिमें जन्म होनेसे मनुष्य विमलकेशयुक्त, चञ्चल, त्यागशील, दीप्तिविशिष्ट, शुचि, विलासप्रिय, अतिशय वक्ता, दुर्द्दान्त, गृहवासहीन, क्रूर, अल्पलोचन, अल्पमेधा, धनपति और दाता होता है।

मेषराशिमें रवि आदि ग्रह रहें तो मनुष्य शास्त्रोक्त उचित कर्मोंका करनेवाला, दुष्टप्रिय, क्रोधी, उद्योगी, रमणेच्छु, कृपण और श्रेष्ठ क्रिया करनेवाला होता है। यह रवि यदि अपने तुंगांशमें रहे तो वह साहसकर्म्मरत, रक्तपित्त व्याधियुक्त, कान्ति और सत्त्व-सम्पन्न तथा मानवश्रेष्ठ होता है।

खनाका वचन है, कि मेषमें यदि सूर्य रहें तो घर सोने चांदीसे भर जाय।

मेषस्थ रवि चन्द्रमासे दृष्ट हों तो मनुष्य दानरत, बहुभृत्ययुक्त, युवतीप्रिय तथा कोमलशरीर होता है। मंगलसे दृष्ट हों तो, संग्राममें अत्यन्त वीर्यसम्पन्न, क्रूर, रक्तचक्षु और केशवाला, तेज और बलयुक्त होता है। बुधसे देखे जांय, तो भृत्यका काम करनेवाला, अल्पधन, सत्त्वहीन, बहुदुःखयुक्त और मलिनदेह; बृहस्पतिसे देखे जांय तो विपुलधनी, दाता, राजमन्त्री या दण्डनायक; शुक्रके देखने पर कुत्सित स्त्रीका पति, अनेक शत्रुवाला, बन्धुहीन, दीन और कुष्ठरोगी; शनिके देखनेसे दुःखभागी, कार्य्यमें उत्साही, जड़बुद्धि और मूर्ख होता है।

मेषराशिमें चन्द्र रहें, तो मनुष्य सेवाकर्म्मकारी स्थिरधनयुक्त, भ्रातृहीन, साहसी, कामुक, कुनखी, चंचल, सम्मानित, अनेक पुत्रोंसे युक्त, जलभीरु और स्त्रैण होता है। ये मेषस्थ चन्द्र सूर्यसे दृष्ट हों, तो अतिशय उग्रकर्मकर, धनी, आश्रितपालक, वीर और संग्रामरुचि होता है। मंगल देखे, तो नेत्र और दांतरोगयुक्त, अतिशय तापित, मंडलाध्यक्ष और बहुमूत्ररोगपीड़ित; बुध देखे तो नाना विद्यासम्पन्न आचार्य, सद्वक्ता, साधुओंसे सम्मानित, सत्कवि और विपुल कीर्त्तिमान्; बृहस्पति देखे तो बहुधन, भृत्य और समृद्धिसम्पन्न, राजमन्त्री या राजा; शुक्र देखे तो श्रेष्ठयुवतीयुक्त और विलासी तथा शनिके देखने पर विद्वेष्टा, बहुदुःखभोगी, दरिद्र, मलिन देहविशिष्ट और मिथ्यावादी होता है।

मेषमें मंगल रहे तो तेजस्वी, सत्ययुक्त, शूर, क्षितिपति या रणप्रिय, साहस कर्माभिरत, उग्रस्वभाव, तथा वीर अनेक पत्नी और पुत्रयुक्त होता है। इस मंगलको यदि सूर्य देखे, तो राजा और उदार, मातृरहित, क्षतांग, स्वजनद्वेषी और मित्रहीन; चन्द्रमा देखे तो ईर्षायुक्त, परधनापहारी और देवभक्त; बुध देखे तो द्वेष्टा और वेश्यापति; बृहस्पति देखे तो अतिशय गुणवान्, प्रभु और धनवान्; शुक्र देखे तो स्त्रीके लिये बन्धनभोगी, मित्रहीन तथा पांच बीघेमें स्त्रीके लिये धनक्षय और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शनि देखे तो चौरघातक, अतिशय शूर, निर्दय, नीच स्त्री पर आसक्त और स्वजनविहीन होता है।

मेषराशिमें बुध रहे, तो मनुष्य विग्रहप्रिय, अस्त्रवेत्ता, अतिशय चतुर, प्रतारक, सर्वदा चिन्तान्वित, अत्यन्त कृश, संगीत और नृत्यकर्ममें रत, असत्यवादी, रतिप्रिय, लिपिवेत्ता, मिथ्यासाक्ष्यदाता, बहुभोजनशील बहुश्रमोत्पन्न, धनधान्य-विनाशकर, अनेक बन्धनभोगी, रणमें अस्थिर और वञ्चक होता है। इस बुधको सूर्य देखे तो सत्यवादी, सुखी, राजसम्मानित और बन्धुप्रिय तथा इस बुधको चन्द्र देखे तो युवतियोंका चित्तहारी, सेवक, मलिनदेह और गतिशील; मंगल देखे तो मिथ्याप्रिय, सुन्दरवाक्य और कलहयुक्त, पंडित, प्रचुर धनवान्, भूमिप्रिय और शूर; बृहस्पति देखे तो सुखी, प्रभूत धनवान् तथा पापात्मा; शुक्र देखे तो नृपकार्यकारी, सुभग, विश्वासी, अति चतुर, दुःखभोगी और शनि देखे तो अतिशय दुःखी, उग्रप्रकृति-सम्पन्न, हिंसारत तथा स्वजनविहीन होता है।

मेषराशिमें बृहस्पति रहनेसे रागादिसम्पन्न, कर्मठ, वक्ता, सत्त्व अधर्मयुक्त, दाम्भिक, विख्यातकर्मा, तेजस्वी, बहुशत्रु और बहुव्ययार्थयुक्त, क्रोधी, क्रूर और दण्डनायक होता है।

यह गुरु यदि रविसे देखा जाय, तो धार्मिक, अनृतभीरु, प्रसिद्ध, भाग्यवान्, अशुचि और रोमश; चन्द्रमाके देखनेसे इतिहास और काव्यकुशल, बहुरत्न और अनेक स्त्रीयुक्त, नृपति और पण्डित; बुधके देखनेसे झूठा, पापी, विद्वान्, कपटी और नीतिवेत्ता; शुक्रके देखनेसे सर्वदा-गृह, शय्या, वस्त्र, गन्ध, माल्य, अलङ्कार और युवतीस्त्री-सम्पन्न, धनी, बुद्धिमान् तथा भीरु; शनिके देखनेसे मलिनदेह, लोभी, क्रोधी, साहसी, अस्थिरमित्र और माननीय होता है।

मेषराशिमें शुक्र रहनेसे रोगी, दोषी, विरोधी, डाही, वन और पर्वतमें विचरणकारी, नीच, कठोर, शूर, विश्वासी और दाम्भिक होता है।

यह शुक्र यदि रविसे देखा जाय, तो स्त्रीके कारण दुःखी और धनी; चन्द्रके देखनेसे उद्धत, अत्यन्त चपल, कामी और अधम स्त्रीका स्वामी; मङ्गलके देखनेसे धन, सुख और मानहीन, दीन, पराकांक्षी और मलिन वेशधारी; बुधके देखनेसे मूर्ख, प्रगल्भ, अनार्यभावसम्पन्न, अविनयी, चौर, नीच प्रकृतिका और क्रूर; बृहस्पतिके देखनेसे विनयी, सुदेह और बहुपुत्र; शनिके देखनेसे अतिशय मलिनदेह, लोकसेवक और चोर होता है। मेषराशिमें शनि रहनेसे व्यसनी, बन्धुद्वेषी, आलसी, निष्ठुर, निन्दित कर्मकारी और निर्धन हुआ करता है।

यह शनि रविसे देखे जाने पर कृषिकर्ममें निरत, धनवान्, गौ, मेष और महिषयुक्त तथा पुण्यात्मा; चन्द्रमाके देखनेसे चंचलस्वभाव, नीच प्रकृतिका, दुःखी, दीन; मङ्गलके देखनेसे प्राणिवधपरायण, क्षुद्र प्रकृतिका, चोरका सरदार, यशस्वी, मांस और मद्यप्रिय; बुधके देखनेसे मिथ्यावादी, अधर्मी, वाचाल, चोर यथेच्छाचारी, सुख और विभवहीन; बृहस्पतिके देखनेसे परदुःखमें कातर, परकार्यमें निरत, लोकप्रिय, दाता और उद्यमशील; शुक्रके देखनेसे मद्य और स्त्रीमें आसक्त, गुणवान्, बलवान् और राजप्रिय होता है। (बृहज्जातक)

७ लग्नविशेष, मेषलग्न। 'राशीनामुदयो लग्नं' राशियोंके उदयका नाम लग्न है। मेषराशिका जब उदय होता है, तब वही फिर लग्न कहलाता है। अर्थात् जब तक मेषराशिमें सूर्य रहते हैं, तब तक ही वह लग्न है। उस समय यदि किसीका जन्म हो, तो उसका मेषलग्न होगा।

प्राचीन लग्नमानके साथ वर्त्तमान लग्नमानका मेल नहीं खाता। प्राचीन मेष लग्नमान ३।४७ पल है।

यदि किसीका मेषलग्नमें जन्म हो, तो वह अत्यन्त क्रोधी, भेदकर्त्ता, पित्त और वायुप्रकृतिका, अत्यन्त क्लेशसहिष्णु, बचपनमें गुरुजनरहित, अधम पुत्रयुक्त, विदेशवासी, नीच स्वभावका और बहुमित्रयुक्त होता है। मेषलग्न जात व्यक्तिकी अस्त्र या विष, पित्तज व्याधि, दुर्ग वा उच्च स्थानसे पतन हो कर मृत्यु होती है।

(सत्याचार्य)

यह लग्नका साधारण फल है। विशेष फलका विचार करनेमें ग्रहसंस्थान तथा उसका सम्बन्ध स्थिर कर लेना होता है।

मेष (सं० पु०) सींगवाला एक चौपाया, मेढ़ा। यह लग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भग डेढ़ हाथ ऊँचा और घने रोयोंसे ढका रहता है। ये बहुत मजबूत, काले, सफेद और टेढ़े सींगवाले होते हैं। सफेद मेढ़ेके रोयें काले भेड़ से मुलायम आर सींग भी छोटे होते हैं। प्राणितत्त्वविदोंने दोनों ही श्रेणीके मेढ़ेको Caprinae में शामिल किया है। मेढ़ेकी-नाकोंकी हड्डी और सींग स्वभावतः ही मजबूत होते हैं। ये आपसमें बड़े वेगसे लड़ते हैं, इससे बहुतसे शौकीन इन्हें लड़ानेके लिये पालते हैं। मेढ़ेकी लड़ाई बड़ी ही आश्चर्यजनक होती है। इसका मांस कड़ा होता है और उसके शरीरमें अधिक चरबी रहनेके कारण एक प्रकारकी कीड़ा उत्पन्न होता है, इसीसे बहुतेरे इसका मांस खानेसे घृणा करते हैं। मेढ़ेका कोमल मांस सुखसेव्य है। यह Mutton नामसे जनसाधारणमें आदरणीय है।

नर और मादा दोनोंके ही सींग होते हैं। मादाके सींग बहुत बड़े नहीं होते। सींग चूड़ाकार होते तथा कपालके आगेसे निकल कर पीछेकी ओर कान तक चले गये हैं। नाककी हड्डी बकरेसे ऊँची और मजबूत होती है। दोनों आँख खोपड़ीकी बगलमें कानसे थोड़ी ही दूर पर है। दोनों कान बकरेके जैसे होते हैं। रोयाँ बहुत मुलायम होता और ऊन कहलाता है। शीतकालमें वे सब रोएं बड़े हो जाते हैं और ग्रीष्म-कालमें उन्हें काट लिया जाता है। सामय (Chamois) और मेरिनो (Merino) नामक पहाड़ी रोएंदार बकरेकी जातिको बहुतेरे इसी मेष श्रेणीमें शामिल करते हैं। इसके रोएं और चमड़े बहुतसे कामोंमें आते हैं।

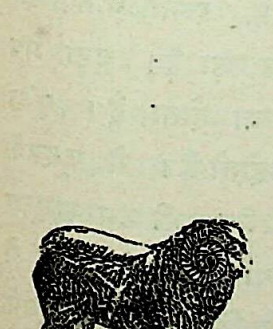

समतलक्षेत्रका मेढ़ा।

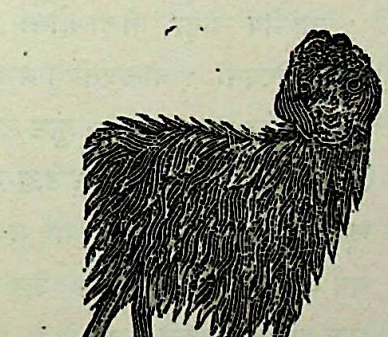

पहाड़ी भेड़ा।

काश्मीरका रामु, शतद्रुतीरवर्त्ती प्रदेशका ऐमु और नेपालका थर (Nemorhaedus proclivus) काश्मीर-से सिक्किम तकके हिमालय पर्वत पर ६ से १२ हजार फुटकी ऊंचाई पर वास करता है। आराकन, सुमात्रा, मलय प्रायद्वीप, तेनासरिम और चीन देशके पहाड़ी प्रदेश में इस श्रेणीके मेष देखे जाते हैं, किन्तु वे हिमालय प्रदेशमें मिलनेवाले मेषसे छोटे होते हैं। निविड़वनमाला-विभूषित हिमालयके पहाड़ी प्रदेशमें कठोरताको सहते हुए ये स्वभावतः ही मजबूत हो गये हैं। यहां तक कि जंगली कुत्तेसे आक्रान्त होने पर भी ये जरा भी नहीं डरते। कभी कभी ये सींगसे आततायी को मार कर यमपुर भेज देते हैं। पहाड़ी कन्दराओंमें ये स्वच्छन्द-पूर्वक वास करते हैं।

माघ फागुनमें ये जोड़ा खाते और आसिन कातिकमें सिर्फ एक बच्चा जनते हैं। प्राणितत्त्वविद् एडमका कहना है, कि हिमालयके उत्तर-पश्चिम-सीमान्तवासी मादा मेढ़े वैसाख और जेठके महीनेमें बच्चा देती है।

पहाड़ी मेढ़ेका मांस कड़ा तथा खाने लायक नहीं होता। हिमालय पर रहनेवाले सामय, मेषजातिके अन्तर्भुक्त माने जाने पर भी ये यथार्थमें बकरे और हरिण श्रेणीके अन्तर्गत हैं। मेषश्रेणीमें उसकी गिनती न होनेके कारण यहां उसका विषय छोड़ दिया गया।

१ हिमालय पर होनेवाला ताहेर नामक जङ्गली बकरा (Hemitragus Jemlaicus) मेषजातिके अन्तर्भुक्त है। यह सिमलामें जेहर, नेपालमें झारल, काश्मीरमें जगला, कुणवरमें झूला और खरणी आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। मुखसे गुह्यद्वार तक इसकी लम्बाई ४ फुट ८ इञ्च और ऊंचाई ३० से ४० इञ्च है। पूंछ ७ इञ्च और सींग १२ इञ्च लंबे होते हैं। ये पर्वतकी बहुत ऊंची चोटी पर भी चढ़ सकते हैं। माघसे कातिक तक ये कहां छिप रहते हैं, किसीको मालूम नहीं। छोटा छोटा मेमना बहुत ऊंचा चढ़ नहीं सकता। ये चैत वैशाखमें जंगलमें रहते हैं। सङ्गम ऋतुमें ये ऐसे कामातुर हो जाते हैं कि कितनी नर मेढेको जानसे मार भी डालते हैं। दूरसे वह जंगली वराहके जैसा पर नजदीक आनेसे सुन्दर दिखाई देता है। लण्डन नगरकी पशु-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शालोंमें इस जातिके मेषके रोंएं ऐसे छांट दिये गये हैं, कि उसे देखनेसे लकड़वग्घेका भ्रम होता है। मादाका मांस कोमल और खाद्योपयोगी, पर नर मेढेका मांस अखाद्य होता है।

२ नीलगिरिके जंगली मेष (H. hylocrius) को तामिल भाषामें बड़ आड़ू कहते हैं। यह आकृतिमें हिमालयजात मेषके सदृश है, केवल ऊंचाईमें ६ से ८ इञ्च तक कम होता है।

नीलगिरि, पश्चिमघाट-पर्वतमाला, महिसुर वैनाड़, मदुरा, पलनी, कोचिन, डिण्डिगल, त्रिवाङ्कोड़ और अनमलयके पहाड़ों पर इस जातिके मेष विचरण करते देखे जाते हैं। इस श्रेणीके मेमने धूम्रवत् पिङ्गलवर्णके होते हैं। बूढ़ा मेष बिलकुल काला होता है। मादा एक बारमें दो बच्चे जनती है।

३ मार्खोर (Copra megaceros) नामक अफगान और काश्मीरदेशके मेष ग्रीष्मकालमें धूसर और शीतकालमें मटमैलापन लिये सफेद होता है। बूढ़े मेषके बड़ी बड़ी दाढ़ी होती है तथा पीठ और छातीमें घनें रोयें होते हैं। वे रोएं घुटने तक लटके रहते हैं। नर मेढ़के एक भी रोआं नहीं होता। बड़े मेष वा बकरेकी लम्बाई ११॥ हाथ होती है। उसके सींग ४ फुटसे ४'-४" तक लम्बे होते हैं। दोनों सींगमें ३४ इञ्चका फासला रहता है।

पोरपञ्जाल नामक हिमगिरिश्रेणी, काश्मीर उपत्यका, हजारा-पर्वतश्रेणी, चनाव और झेलमके मध्यवर्त्ती वर्द्धमान-पर्वत पर, विपासा नदीके उत्पत्ति-स्थानमें, सुलेमान पहाड़ पर तथा अफगानिस्तानमें ये छोटा छोटा दल बांध कर घूमते हैं। इसके सींगको शिकारी लोग अधिक मोलमें बेचते हैं।

पश्चिम, मध्य और उत्तर एशिया तथा पारस्यराज्यमें (Capraegagrus) श्रेणीके मेष रहते हैं। उपरोक्त श्रेणीके अन्तर्भुक्त होने पर भी बहुत पृथक्ता देखी जाती है।

हिमालयका इस्किन उक्त श्रेणीके जैसा है। कदमें छोटा होने पर भी रंग छोड़ कर और सभी विषयमें समता देखी जाती है। इस श्रेणीका मेष (Capra sibirica) मध्य-एशियासे साइबिरिया तकके विस्तृत स्थानोंमें जा कर रहता है। दल बांध कर बाहर निकलता है। प्रत्येक दलमें सौसे अधिक मेष रहते हैं। कार्तिक-मासमें मेढ़ा पहाड़की चोटी परसे उतर कर मेढ़ीके साथ सहवासमें मत्त रहता है। भीरु होने पर भी अन्य विषयोंमें यह साहस और सद्बुद्धिका परिचय देता है। पहाड़की चोटी पर जहां एक भी मेष नहीं जा सकता वहां यह आइबेक (Ibex) स्वच्छन्दसे आ जा सकता है। उस समय उसका बुद्धिकौशल देखनेसे चमत्कृत होना पड़ता है। एक सरल पत्थरके टुकड़े पर केवल दो खुरके बल एक आइबेक सो जाता है तथा विपरीत ओर जानेवाला मेष उस तंग स्थानमें आसानीसे उसे लांघ कर अपने अभीष्ट स्थानको चला जाता है। ये केवल एक बच्चा जनता है।

४ पंजाबका जंगली मेष वा उड़ियाल (Ovis cycloceros) हिमालय समतट, पेशावर और पंजाबके हजारा आदि पहाड़ी भूभागमें पाया जाता है। वे कार्तिक मासमें कामोन्नत हो कर स्त्री सहवास करते हैं तथा एक समय सिर्फ दो बच्चे जनते हैं। दूरसे ये हरिणके जैसे दिखाई देते हैं। पर्वतकी अनुर्वर भूमि ही इनका विचरण स्थान है।

तिब्बतीय शा-पू (Ovis vignei वा O- montana) हिन्दूकूश, पामीर और कास्पियनसागर तक विस्तीर्ण भूभागमें हजार फुट ऊंचे पर्वत पर इनका बास है। गात्रवर्ण रक्ताभ धूसर है। तिब्बतीय ना-वा स्ना (Ovis Nahura) हिमालय प्रदेशमें भरूर या भरल कहलाता है।

यह मेष गाढ़ा नीला होता है, इसीलिये नेपालमें इसका नेरवती (नीलवती) नाम पड़ा है। बड़ा मेष मुंहसे पूंछ तक ४॥ या ५ फुट लम्बा होता है। पूंछ ७ इञ्च तथा ऊंचाई ३०-३६ इञ्च होती है। ये झुण्डके झुण्ड चलते हैं। मादा और नर मेष कभी कभी समूचा वर्ष एक साथ रहते हैं। जेठ या आषाढ़ महीनेमें ये एक बार दो बच्चे जनते हैं। आसिन कार्तिकमें इनके शरीरमें चर्बी होनेसे मेषमांस उत्तम समझा जाता है। हिमालयके बीच तिब्बतके तुषारधवल नयान या नियार (Ovis Ammonoides) नामकी और एक मेषकी जाति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखा जाती है। ये प्रायः १३ हाथ (४ फुट ४ इञ्च) ऊंचे और इनके सींग प्रायः ३ फुट ४ इञ्च लम्बे होते हैं। सींगकी परिधि १७ से २४ इञ्च मोटी होती है। इस प्रकार इनके दो बड़े बड़े सींग और खोपड़ी एक साथ तौलमें २० सेर तक देखी गई है। इनके बड़े बड़े सींग होनेके कारण ये स्वेच्छासे समतलभूमिमें शिर झुका कर चर नहीं सकते। मुंह मिट्टीमें लगनेसे सींगकी नोक मिट्टी तक छू जाती है। इस प्रकार सींगके खोलमें एक खरगोश अचानक लुका सकता है। मादा-मेषका सींग १८ इञ्च तक लम्बा होता है।

ये प्रायः १५ हजार फुट ऊंचे पर्वतवक्षमें घूमते फिरते हैं। शीतकालमें हिमालयके तुषारशिखर पर ये अनायास ही जाते आते हैं। इसी कारण ठंढ लगने पर ये झुण्डके झुण्ड मर जाते हैं। स्त्री-पुरुष परस्पर विभिन्न स्थानोंमें रहता है। ये हरिणके समान छलांग मार सकते हैं। इसलिये सहजमें इनका शिकार करना मुश्किल है। लादक आदि बौद्धोंके प्रधान देशोंमें देवताके उद्देश्यसे रखे गये पवित्र पत्थरके टुकड़े पर स्ना अथवा आइबेकका सींग सजा रहता है।

बोखाराके पूर्व अञ्चलमें पामीर आधित्यकासे १६ हजार फुट ऊंचे रुश या रस (Ovispolii) नामक और भी एक प्रकारके मेष देखे जाते हैं। अलावा इसके अर्मेणियामें O.Gmelini, कामस्कटकाक O,nivicola काकेशस पर्वतके Cylindricornis, कर्शिका और सार्डिनियाकी वनभूमिके O. musimon, अटलास पर्वतका O. tragelphus, अमेरिकाके रफी पर्वतके O. montana और O. Californiana आदिकी आकृतिमें विचित्रता रहने पर मुंह और देहको गठनप्रणालीको ले कर मेषश्रेणीके अन्तर्भुक्त किया जा सकता है। इनके शरीरमें काफी पशम होती है। चमरी-गो और दक्षिण अमेरिकाका पर्वतप्रिय लामा नामक पशु मेष जातिके अन्दर तो नहीं आता' पर पशमके कारण यहां उल्लेख किया गया।

प्राणितत्त्वविदोंने खोज कर निकाला है, कि आज तक समग्र भूमण्डलमें २१ प्रकारके विभिन्नजातीय मेष हैं। उनमेंसे एशियामें १५, यूरोपमें ४, अफ्रिकामें ३ और अमेरिकामें २ प्रकारके मेष हैं। अष्ट्रेलिया और पोलिनेसिया द्वीपपुञ्जमें पहले पहल मेष नहीं था। बादमें विभिन्न देशवासी वणिकोंसे उन देशोंमें लाया गया था। सभ्यजातिके समागममें प्रयोजनीय और व्यवहारोपयोगी घोड़े आदि सभी पशु वहां लाये गये थे।

फिलहाल संसारमें सब जगह मेषके ऊनका वाणिज्य प्रचलित है। स्पेन, जर्मन आदि यूरोपीय देश, अफ्रिका, मद्रास बम्बई आदि भारतीय नगर, अष्ट्रेलिया द्वीप, अमेरिका और अपरापर प्राच्य और प्रतीच्य देशोंसे इंगलैण्ड और भारतमें लोम आता है। देशी और कश्मीरी शाल, आलवान, आदि ऊनसे बनते है। मध्य-एशियो, हिमालयजात मेष और बकरेका ऊन सबसे अच्छा होता है।

बंगालमें ऊनी कपडे नहीं बनते इसलिये कोई भी मेष नहीं पालता है। बङ्गालमें चीनी और रेशमके व्यवसायसे जितना लाभ होता है, मद्रास और बम्बईवासी केवल ऊनके कारोबारमें उससे अधिक लाभ उठाते हैं। विशेष चेष्टा करने पर यहां भी प्रचुर ऊन उत्पन्न हो सकता है।

पचास वर्ष पहले अस्ट्रेलिया द्वीपमें लाख रुपयेका भी ऊन उत्पन्न नहीं होता था तथा सौसे अधिक वर्ष पहले वहां एक भी मेष नहीं था। अंगरेज-वणिकोंके उत्साहसे वहां आज कल इतने मेष रखे गये हैं जिससे प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयेसे अधिकका ऊन उत्पन्न होता है।

भारतमें तृण या शस्यादिकी कमती नहीं है। उत्साह रहनेसे बंगाल देशके प्रत्येक जिलेमें बिना खर्चके लाखों मेष पाले जा सकते हैं। वीरभूम, मानभूम, हजारीबाग, राजमहल, भागलपुर आदि प्रदेशोंमें बहुतसे पहाड़ी स्थान हैं। वहांकी घाससे बिना खर्चके करोड़ों मेष प्रतिपालित हो सकते हैं जिनको बेचनेसे करोड़ों रुपयेकी आमदनी हो सकती है। अलावा इसके विन्ध्य पर्वतकी ऊंची अधित्यकामें मेष पोसनेसे उनका ऊन शीतप्रधान हिमालयवक्ष काश्मीरसे उत्तर आसाम तक पहाड़ी मेषके ऊनके समान हो सकता है। विन्ध्य-पर्वतके एक मेषसे ५से ६ सेर ऊन होता है जो १०)-१५) रुपयेमें बिकता है। मेष जातिविशेष ही लोमकी उत्पत्तिका अवान्तर कारण है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिमालयके उच्चशिखर पर बङ्गदेशीय मेष ले जानेसे उसका ऊन शालके लायक नहीं रह जाता और शाललोमका बकरा अगर हुगली जिलेमें ला कर रखा जाय, तो वह अश्व-कम्बलोपयोगी लोम नहीं देगा। गर्म देशके अच्छे मेषोंमें भी अधिक कोमल लोम होता है। मेष जातिके मध्य मरिणो सबसे अच्छा है। उसके कोमल लोमसे मरिणो नामक प्रसिद्ध वस्त्र प्रस्तुत होता है।

मेषक (सं० पु०) मिषतीति मिष-अच्, संज्ञायां कन्। १ जीवशाक, सुसना। २ मेढ़ा। ३ नैगमेषग्रह।

मेषकम्बल (सं० पु०) मेषलोमनिर्मितः कम्बलः मध्यपदलोपि कर्मधा०। मेषलोमनिर्मित वस्त्र, भेड़के ऊनसे बनाया हुआ कपड़ा। पर्याय—ऊर्णायू।

मेषकुसुम (सं० पु०) चक्रमर्द चकवंड नामक पौधा।

(वैद्यनि०)

मेषपाल (सं० पु०) मेषपालक, गड़रिया।

मेषपुष्पा (सं० स्त्री०) मेषशृङ्गी, मेढ़ासिंगी।

मेषमांस (सं० क्ली०) मेषस्य मांसं। मेषका मांस, भेड़का मांस। इसका गुण—बृंहण, पित्त और श्लेष्मकर तथा गुरुपाक माना गया है।

मेषलोचन (सं० पु०) मेषस्य लोचनमिव पुष्पमस्य। १ चक्रमर्द, चकवंड। (त्रि०) २ वह जिसकी आंखें भेड़ेसी हों।

मेषवल्ली (सं० स्त्री०) मेषप्रिया वल्ली। अजशृङ्गी, मेढ़ासिंगी।

मेषवाहिन् (सं० त्रि०) १ मेषारोही, भेड़ पर चढ़नेवाला। स्त्रियां ङीष्। २ स्कन्दानुचर मातृभेद।

मेषविषाणिका (सं० स्त्री०) मेषस्य विषाणं शृङ्गमिव प्रतिकृतिरस्याः, विषाण-प्रतिकृतौ कन् टापि अत इत्वं। मेषशृङ्गी, मेढ़ासिंगी।

मेषशृङ्ग (सं० पु०) मेषस्य शृङ्गमिव तदाकृतित्वात्। १ स्थावर विषभेद, सिंगिया नामक स्थावर विष।

"मेषशृङ्गस्य पुष्पाणि शिरीषधवयोरपि।"

(सुश्रुत उ० १७ अ०)

(क्ली०) २ भेड़ का सींग।

मेषशृङ्गी (सं० स्त्री०) मेषशृङ्ग गौरादित्वात् ङीष्। अजशृङ्गी वृक्ष, मेढ़ासिंगी। पर्याय—नन्दीवृक्ष, मेषविषाणिका, चक्ष, चक्षुर्ग्राहन, मेढ्रशृङ्गी, गृहद्रुमा। इसका गुण—तिक्त, वातवर्द्धक, श्वास और कासवर्द्धक, पाकमें रुक्ष, कटु, तिक्त, व्रण, श्लेष्मा और अक्षिशूल-नाशक। इसके फलका गुण—तिक्त, कुष्ठ, मेह और कफनाशक, दीपन, कास, कृमि, व्रण और विषनाशक।

मेषसंक्रान्ति (सं० स्त्री०) मेष राशि पर सूर्यके आनेका योग वा फल। इस दिन हिन्दू लोग सूत दान करते हैं इससे इसे 'सतुआ संक्रान्ति' भी कहते हैं।

मेषहृत् (सं० पु०) गरुड़के एक पुत्रका नाम।

मेषा (सं० स्त्री०) मिष्यतेऽसौ मिष-कर्मणि घञ्-टाप्। १ त्रुटि, गुजराती इलायची। २ चमड़ेका एक भेद जो लाल भेड़की खालसे बनता है।

मेषाक्षिकुसुम (सं० पु०) मेषाणां अक्षिवत् कुसुमान्यस्य। चक्रमर्द, चकवंड।

मेषाख्य (सं० पु०) बालग्रहविशेष, नैगमेषग्रह।

मेषाण्ड (सं० पु०) मेषस्य अण्डमिव अण्डमस्य। इन्द्र।

मेषान्त्री (सं० स्त्री०) मेषस्य अन्त्रमिव अन्त्रं सूक्ष्मत्वमस्याः। १ वस्तान्त्री वृक्ष। २ अजान्त्री लता।

मेषालु (सं० पु०) मेषाप्रियं आलुः। वर्वराबृक्ष, वनतुलसी।

मेषाह्वय (सं० पु०) मेषस्य आह्वयः आह्वानस्य। चक्रमर्द, चकवंड।

मेषिका (सं० स्त्री०) मेषी-स्वार्थे कन् टाप् ह्रस्वः। मेषी, भेड़ी।

मेषी (सं० स्त्री०) मिष्यते गृह्यतेऽसौ इति विष-घञ् ङीप्। १ तिनिशवृक्ष, सीसमकी जातिका एक पेड़। २ जटामांसी। ३ मेष स्त्रीजाति, भेड़ी। पर्याय—जालकिनी, अवि, एड़का, मेषिका, क्रूररी, रुजा, अविला, वेणी। इसके दूधका गुण—मधुर, गाढ़ा, स्निग्ध, कफापह, वातवृद्धि तथा स्थौल्यकारक। (राजनि०) दधिका गुण—सुस्निग्ध, कफपित्त कर, गुरु, वात और वातरक्तमें पथ्य, शोफ और व्रणनाशक। मट्ठेका गुण—क्लिष्टगन्ध, शीतल, मेधाहर, पुष्टिज, स्थौल्यकर, मन्दाग्निदीपन, सारक पाकमें शीतल, लघु, योनिशूल, कफ और वातरोगमें बड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हितकर। घीका गुण—वृद्धिनाशक, बलावह, शरीरक, विस्रगन्धिकारक। यह घी अतिशय गुरु होता है इसलिये सुकुमार शरीरवालोंको इसका वर्जन करना चाहिये। (राजनि०) मांसका गुण—वातनाशक, दीपन, कफ-पित्तवर्द्धक, पाकमें मधुर, बृंहण और बलवर्द्धक। (भावप्र०)

मेसूरण (सं० क्ली०) फलितज्योतिषमें दशम लग्न जो कर्म-स्थान कहा जाता है।

मेहँदी (हिं० स्त्री०) पत्ती झाड़नेवाली एक झाड़ी। यह बलोचिस्तानके जंगलोंमें आपसे आप होती है और सारे हिन्दुस्तानमें लगाई जाती है। इसमें मंजरीके रूपमें सफेद फूल लगते हैं जिनमें भीनी भीनी सुगंध होती है। फल गोलमिर्चकी तरहके होते हैं और गुच्छोंमें लगते हैं। इसकी पत्तीको पीस कर चढ़ानेसे लाल रंग आता है। इसीसे स्त्रियां इसे हाथ पैरमें लगाती हैं। बगीचे आदिके किनारे भी लोग शोभाके लिये एक पंक्तिमें इसकी टट्टी लगाते हैं।

मेह (सं० पु०) मेहति क्षरति शुक्रादिरनेनेति, मिह-घञ्। १ प्रमेह रोग। विशेष विवरण प्रमेह शब्दमें देखो।

मेहतीति मिह-अच्। २ मेष, भेड़ा। ३ प्रस्राव, मूत। अग्नि, सूर्य, चन्द्र, जल, ब्राह्मण, गो और वायु इनके सामने पेशाव नहीं करना चाहिये, करनेसे प्रज्ञा नष्ट होती है।

"प्रत्यग्निं प्रति सूर्यञ्च प्रति सोमोदकद्विजान्।
प्रति गां प्रति वातञ्च प्रज्ञा नश्यति मेहतः॥" (मनु ४।५२)

मेह (हिं० पु०) १ मेघ, बादल। २ वर्षा, मेंह।

मेह्कर—१ बरारराज्यके बुलदाना जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १९° ५२' से २०° २५' उ० तथा देशा ७६° २' से ७६° ५२' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १००८ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें मेह्कुर नामक १ शहर और ३१३ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० २०° १०' उ० तथा देशा० ८६° ३७' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ५३३० है। प्रवाद है, कि यहां मेघकर नामक एक राक्षस रहता था। विष्णुने शार्ङ्गधर मूर्त्ति धारण कर उसका विनाश किया। उसी मेघकरके नामसे इस स्थानका मेहकर नाम हुआ है।

नगरके बाहर एक टूटा फूटा मकान देखा जाता है। लोगोंका कहना है, कि वह प्रायः २ हजार वर्ष पहले हेमाड़पन्थी द्वारा बनाया गया था। १७६० ई०में रघुरावके विद्रोहमें मदद पहुंचानेवाले नानपुरके भोंसले सरदारोंको दण्ड देनेके लिये पेशवा बाजीरावने सिन्धेराज और निजाम-मन्त्री रुकनउद्दौलाके साथ यहां छावनी डाली। १८७१ ई०में देवगाँवकी संधि तोड़ देनेके कारण नागपुरपति अप्पा साहब भोंसलेको दण्ड देनेके लिये अंगरेज सेनापति जेनरल डवटन यहां छावनी डालनेको बाध्य हुए।

यहांके हिन्दू और मुसलमान तांती अपने अपने व्यवसायसे बहुत उन्नत हो गये थे। मुसलमान तांतियोंने गत ४ सदीके भीतर ऐसा धन कमाया, कि पिंडारियोंके अत्याचारसे आत्मरक्षा करनेके लिये अपने अपने खर्चसे नगरके बाहरकी टूटी फूटी दीवारकी फिरसे मरम्मत कर नगरको सुदृढ़ कर लिया। मोमिनके प्रवेशद्वारमें जो शिलालिपि उत्कीर्ण है उसमें यह बात स्पष्ट लिखी है।

पिण्डारी डकैतोंके अत्याचार और उपद्रवसे नगर धीरे धीरे श्रीहीन हो गया। १८०३ ई०में दुर्भिक्ष और महामारीसे जनशून्य नगर दुर्दशाकी चरम सीमा पर पहुंच गया। अभी भी यहांके तांती अच्छी अच्छी धोती तैयार कर पैत्रिक वाणिज्य-गरिमाको अक्षुण्ण रखे हुए हैं। किन्तु मैन्चेष्टरके बने कपड़े कम मोलमें बिकनेके कारण देशी महँगे कपड़ेका आदर दिनों-दिन घटता जा रहा है।

मेहकुलान्तकरस (सं० पु०) प्रमेहरोगका एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—रांगा, अबरख, पारा, गंधक, चिरायता, पिपरामूल, त्रिकटु, त्रिफला, निसोथ, रसाञ्जन, विड्ङ्ग, मोथा, बेलसोंठ, गोखरूका बीज, अनारका बीजा, प्रत्येक एक तोला, शिलाजित १ पल, इन सब वस्तुओंको बनककड़ीके रसमें घोंट कर एक रत्तीकी गोली बनावे। अनुपान बकरीका दूध, जल, आंबलेका रस वा कुलथीका क्वाथ, है। इसका सेवन करनेसे २० प्रकारका प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग आरोग्य होता है।

(भैषज्यरत्ना०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेहघ्नी (सं० स्त्री०) मेहं हन्तीति इन टक् ङीष्। हरिद्रा, हल्दी।

मेहतर फा० पु०) १ बुजुर्ग, सबसे बड़ा। २ नीच मुसलमान जाति। यह झाड़ू देने, गंदगी उठाने आदिका काम करती है।

मेहदी—अफ्रिकावासी दुर्द्धर्ष मुसलमान जाति। फतीमावंशीय अफ्रिकाके प्रथम खलीफा मेहदीसे इस सम्प्रदायका 'मेहदी वा मेघी' नाम पड़ा। मिस्रमें अङ्गरेजी प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद यहांकी अङ्गरेज गवर्मेण्ट अफ्रीका राज्यकी सीमा बढ़ानेके उद्देश्यसे आस पासके राज्योंको हड़प करने लगी। इसी सूत्रसे सुदानके मेहदियोंके साथ वृटिश-सरकारका घोर संघर्ष उपस्थित हुआ। गत १८८४-८५ ई०के सूदनकी लड़ाईमें अङ्गरेजसेनापति लार्ड किचनर १८९७ ई०में सूदनके मकबरेको कलङ्कित कर मेहदीजातिकी शक्ति कमजोर कर दी थी। इसी वीरताके कारण वे सरदार किचनरकी उपाधिसे भूषित हुए। आज भी जब कभी अङ्गरेजोंके साथ किसीका युद्ध होता है, तब मेहदी-सम्प्रदाय उसके विरुद्ध हथियार उठाता है।

मेहन (सं० क्ली०) मिहति सिञ्चति मूत्ररेतसी इति मिह्-सेचने ल्युट्। १ शिश्न, लिंग। २ मूत्र, मूत।

मेहनत (अ० स्त्री०) मिहनत, श्रम।

मेहनताना (फा० पु०) किसी कामकी मजदूरी, परिश्रमका मूल्य।

मेहनती (अ० वि०) मेहनत करनेवाला, परिश्रमी।

मेहना (सं० स्त्री०) मेह्यते क्षार्यते शुक्रमस्यामिति, मिह-क्षरणे णिच् अधिकरणे युच् स्त्रियां टाप्। १ महिला, स्त्री। २ मंहनीय।

मेहनावत् (सं० त्रि०) वर्षणविशिष्ट, वृष्टिप्रद।

मेहमान (फा० पु०) अतिथि, पाहुना।

मेहमानदारी (फा० स्त्री०) आतिथ्य, अतिथि-सत्कार।

मेहमानी (फा० स्त्री०) १ आतिथ्य, अतिथि सत्कार।

मेहमिहिरतैल (सं० क्ली०) प्रमेह-रोगोक्त तैलौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—तिलतैल ४ सेर, काढ़ेके लिये बेलकी छाल, पढ़ारकी छाल, गनियारीकी छाल, गुलञ्च, आँवला, अनार कुल मिला कर १२॥० सेर, जल ६४ सेर, शेष १६ सेर, दूध ४ सेर, चूर्णके लिये नीमकी छाल, चिरायता, गोखरू, अनार, रेणुक, बेलसोंठ, देवदारु, दारुहरिद्रा, मोथा, त्रिफला, तगरपादुका, दारु, जामुनकी छाल, खसमूल कुल १ सेर। पीछे तैलपाकके विधानानुसार इसका पाक करना होगा। यह तेल लगानेसे प्रमेह, मूत्रदोष, हाथ पैर और मस्तककी ज्वाला बहुत जल्द दूर होती है। (भैषज्यरत्ना० प्रमेहरोगाधि०)

मेहमुद्गररस (सं० पु० मेहे मेहरोगे मुद्गर इव रसः। प्रमेहरोगका एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—

रसाञ्जन, साँचर नमक, देवदारु, बेलसोंठ, गोखरूका बीया, अनारका बीया प्रत्येक एक तोला, लौह ६ तोला, गुग्गुल १ पल। इन सब द्रव्योंको एक साथ घीमें मिला कर मले। बाद उसके एक रत्तीकी गोली बनावे। इसके सेवनसे बीस प्रकारका प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रादि अति शीघ्र जाता रहता है। (भैषज्यरत्ना० प्रमेहरोगाधि०)

मेहमुद्गरवटिका (सं० स्त्री०) प्रमेह रोगकी गोली। इसके बनानेका तरीका—रसाञ्जन, सांचर नमक, देवदारु, बेलसोंठ, गोखरूका बीया, अनार, चिरैता, पीपलकी जड़, प्रत्येक एक तोला, लौहचूर्ण, गुग्गुल १ पल इन सबोंको घीमें अच्छी तरह मिला कर १ माशाकी गोली बनावे। इसका अनुपान बकरीका दूध या जल है। इसका सेवन करनेसे सब प्रकारका प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डु, हलीमक आदि रोग प्रशमित होता है। (भैषज्यरत्ना० प्रमेहरोगाधि०)

मेहर (फा० स्त्री०) मेहरबानी, कृपा।

मेहर—आगरामें रहनेवाले एक मुसलमान कवि। ये चुनारके मुनसिफ थे। इनका यथार्थ नाम मीर्जा हातिम आलिवेग था। 'पाञ्जमेहर' नामक एक दीवान लिख कर इन्होंने मेहरकी उपाधि पाई थी। १८७३ ई०में ये आगरामें विद्यमान थे।

मेहर—लखनऊके राज्यच्युत नवाब अमीन उद्दौला सैयद आघाअली खांकी उपाधि। ये एक प्रसिद्ध कवि थे। इनका बनाया एक उर्दू दीवान पाया जाता है।

मेहर—१ बम्बई प्रदेशके सिन्धुप्रदेशके शिकारपुर जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण १५२५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें लरखाना, पूर्वमें सिन्धुनद, दक्षिणमें सेवान और पश्चिममें खिलात है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस विभागका पश्चिमांश पहाड़ी अधित्यकासे पूर्ण है। यह ६ हजार फीट ऊंचा है। सिर्फ पश्चिम नाराखालके दोनों किनारोंकी भूमि समतल है। इस छोटी नदी और सिन्धुनदके बीचका भूभाग उर्वरा है। फसल अच्छी लगनेके कारण यहां बहुवां, मारुई, कूदन आदि और भी बहुत-सी खाड़ियां खोदी गई हैं। पहाड़के पासकी भूमिमें रूई अच्छी लगती है। स्थान स्थान पर लवण प्रधान 'कालर' नामक उषर भूमि है। खीरथर पर्वत श्रेणीमें फिटकरी पाई जाती है।

मेहर और खैरपुर-नाथेशाह नामक दोनों नगर ही प्रधान हैं। खीरथर गिरिश्रृङ्गमें धर-यारो और दन्ना-टौअर नामक दो नगरोंकी आबहवा अच्छी है।

यहां एक तरहका मोटा सूती कपड़ा तैयार होता है जो नाव द्वारा हैदराबाद आदि नगरोंमें भेजा जाता है।

२ उक्त जिलान्तर्गत एक तालुक। भू-परिमाण २८२॥ वर्गमील है।

३ उक्त जिलान्तर्गत एक प्रधान नगर। यह म्युनिसिपलिटीकी देख-भालमें है। यह अक्षा० २७° २ से ले कर २७° २१´ उ० तथा देशा० ६७° ३०´ से ले कर ६८° ४०´ पू० ककोल खाड़ीके तीर पर अवस्थित है।

मेहरनासिर (मिर्जा)—फारसके राजा करीम खांके आश्रित एक राजवैद्य। हकीमी विद्यामें पारदर्शिताके साथ साथ इन्होंने कवितामें भी अच्छा नाम कमाया था। फारसके कवियोंकी बनाई जितनी 'वासन्तीवर्णना' मिली हैं उनमें इनकी लिखी मसनवी ही सबसे अच्छी है।

मेहरबान (फा० वि०) कृपालु, अनुग्रह करनेवाला। बड़ोंके सम्बोधनके लिये अथवा किसीके प्रति आदर दिखलानेके लिये भी इस शब्दका प्रयोग होता है।

मेहरबानगी (फा० स्त्री०) मेहरबानी देखो।

मेहरबानी (फा० स्त्री०) कृपा, अनुग्रह।

मेहरा (हिं० पु०) १ स्त्रियोंकी-सी चेष्टावाला, स्त्री-प्रकृतिवाला। २ स्त्रियोंमें बहुत रहनेवाला। ३ जुलाहोंकी चरखीका घेरा। ४ खत्रियोंकी एक जाति।

मेहराव (अ० स्त्री०) द्वारके ऊपरका अर्द्धमण्डलाकार बनाया हुआ भाग, दरवाजेके ऊपरका गोल किया हुआ हिस्सा। मेहराव बनानेकी रीति प्राचीन हिन्दू शिल्पमें प्रचलित न थी। विदेशियोंमें विशेषतः मुसलमानोंके द्वारा ही इस देशमें इसका प्रचार हुआ है।

मेहरावदार (फा० वि०) ऊपरकी ओर गोल कटा हुआ।

मेहरारू (हिं० स्त्री०) स्त्री औरत।

मेहरी (हिं० स्त्री०) १ स्त्री, औरत। २ पत्नी, जोरू।

मेहरुन्निसा—सम्राट् जहांगीरकी पत्नी नूरजहांकी कन्या। यह शेर अफगानकी लड़की थी। इसीके साथ जहांगीरका छोटा लड़का शाहरियारका विवाह हुआ था।

मेहरुन्निसाबेगम—सम्राट् आलमगीरकी ५वीं लड़की। यह १६६१ ई०में अरंग महल नामकी स्त्रीसे पैदा हुई थी। सुलतान मुराद बक्सका लड़का युवराज एजिद बक्सने इससे विवाह किया था। १७०४ ई०में राजकन्याका परलोक-वास हुआ।

मेहवज्र (सं० क्ली०) प्रमेहरोगका एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—रससिन्दूर, कान्तलौह, शिलाजीत, मैनसिल, गंधक, त्रिकटु, त्रिफला, बेल, जीरा, निर्मली, हल्दी। इन सबोंको भंगरैयेके रसमें तीस दफे भावना दे कर आध तोलेकी गोली बनावे। यह औषध मधुके साथ चाटना होता है। इसका अनुपान महानीमका बीया तीन तोला, चावलका पानी ८ तोला, घी १ तोला है। इससे कठिन प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र बहुत जल्द दूर होता है।

(रसेन्द्रसारस० सोमरोगाधि०)

मेहसी—चम्पारण जिलेके मधुबनी महकुमेके अन्तर्गत एक पुराना बड़ा गांव। यह मुजफ्फरपुरसे मोतिहारी जानेके रास्ते पर अवस्थित है। इष्ट इण्डिया कम्पनीने जब पहले पहल बंगालमें अधिकार पाया उस समय उन्होंने इसे उत्तर-विहारका सदर बनाया था। यहां बढ़िया तम्बाकू तैयार होता है। यहांकी कोठीके अङ्गरेज लोग तम्बाकूका बीया लाते थे।

मेहानल (सं० पु०) मेहे मेहरोगे अनल इव। प्रमेह रोगका एक औषध। इसके बनानेकी प्रणाली—रससिन्दुर और रांगेका बराबर बराबर भाग ले कर मधुमें मिलावे। बादमें दो रत्तीकी गोली बनावे। इसका अनुपान कुचकी जड़ और दूध है। इसके सेवनसे पुराना प्रमेह अति शीघ्र दूर हो जाता है।

(भैषज्यरत्ना० प्रमेहरोगाधि०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेहिन् (सं० पु०) मेहः मेहरोगः अस्यास्तीति इनि। मेहरोगी, मुजाकी।

मेहेदपुर—मध्यभारतके इन्दौर राज्यान्तर्गत एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २३° २६´ उ० तथा० देशा० ७५° ४०´ पू० सिप्रा नदीके दाहिने किनारे, उज्जयिनी रेलवे स्टेशन-से १२ कोस पर अवस्थित है। यहां बम्बई-गवर्मेण्टके अधीनस्थ एक सेनावास है। १८१७ ई०में अङ्गरेज-सेना-पति सर टामस हिसलपने नदीके दूसरे किनारे होलकर राजकी महाराष्ट्र सेनाको हराया और उनकी ६३ कमानें छीन ली थीं। सिप्राके किनारे तीन हजार मराठी मारे गये थे।

मेहेरपुर—१ नदिया जिलान्तगत एक उपविभाग। यह अक्षा० ३३° ३६´ से ले कर २४° ११´ उ० तथा देशा० ८८° १८´ से ले कर ८८° ५३´ पू०के बीच पड़ता है। भू-परिमाण ६३२ वर्गमील है। यहां तेहाट, मेहेरपुर, करोम-पुर और आंगनी नामके चार थाने लगते हैं।

२ नदिया जिलान्तर्गत एक नगर और विचार सदर। इसका प्राचीन नाम मिहिरपुर है। यह अक्षा० २३° ४७´ उ० तथा देशा० ८८° ३४´ पू० भैरव नदीके किनारे अवस्थित है। यहां पीतलके बरतनोंका बड़ा भारी कार-बार है। चर्च मिशनरी सोसाइटीका एक प्रचारकेन्द्र यहां अवस्थित है।

मेहोमदाबाद (महमूदाबाद)—१ बम्बई प्रेसिडेन्सीके खैरा जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भू-परिमाण १७४ वर्ग-मील है।

२ उक्त महकूमेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २२° ५०´ उ० तथा देशा० ७२° ४६´ पू०के बीच पड़ता है। यहां बम्बई-बड़ोदा मध्यभारत रेलवे लाइनका एक स्टेशन है, इस कारण यहांके वाणिज्यमें बड़ी उन्नति हुई है। १४७६ ई०में गुर्जरपति महमूद बैनाड़ाने इस नगरको बसाया था। राजा ३य महमूदने (१५३६-५४) नगरको बढ़ा कर यहां ६ मील तक एक मृगया-वन बन-वाया। इस उद्यानके चारों कोनोंमें चार सुन्दर प्रासाद और अट्टालिका-प्रवेशके दाहिने किनारे एक एक बाजार हैं। यहांके अन्यान्य प्रत्नतत्त्वोंमें महमूद बिगाड़ाके प्रधान मन्त्री मुबारक सैयद और उनके सालेका १४८४ ई०में बनाया जो समाधि-मन्दिर है वह उल्लेख-योग्य है।

मैं (हिं० सर्व०) स्वयं, सर्वमान उत्तम पुरुषमें कर्त्ताका रूप।

मैंगानिज (Manganese)—खनिज पदार्थविशेष। रसा-यनशास्त्रमें इसे अधातु (Manganese) कहा है। प्रायः सभी स्थानोंमें यह काले अक्सिद (Black oxide) के आकारमें पाया जाता है। यह साधारणतः सफेदी लिये भूरे रंगका तथा क्षणभङ्गुर और कठिन होता है। यहां तक कि इससे इस्पात भी कट जाता है। इसमें सामान्य चुम्बक-आकर्षणशक्ति है। बहुत देर तक खुले स्थानमें रख देनेसे वायु लगनेके कारण यह असि-डाइजड हो जाता है। उल्कापत्थर-संश्लिष्ट लोहेमें यह पदार्थ अधिक परिमाणमें रहता है। इसका आणविक गुरुत्व ५५ और आपेक्षिक गुरुत्व ८०७१ है। अधिक गरमी लगनेसे कार्बोनके द्वारा उक्त प्रस्तरज लोहेका आधा अक्सिद निकाल देनेसे यह पदार्थ पाया जाता है। दूसरे उपायसे असल मैंगानिज नहीं निकाली जा सकती। लोहेके साथ मिलानेसे यह उक्त धातुको अत्यन्त दृढ़ और टिकाऊ बना देती है। कांच और एनामेस रंग करनेके लिये इसका अधिक व्यवहार देखा जाता है।

कार्बोन मिलानेसे इसमेंसे Carbonate of magne-sia और हाइड्रोक्लोरिक एसिड तथा ब्लैक-अक्सिदके योगसे chlorides of Manganese उत्पन्न होता है। यह Proto-chloride, perchloride और sesquichloride के भेदसे तीन प्रकारका है। अलावा इसके Protoxide, sesquioxide, binoxide, peroxide, manganic, acid और permanganic acid तथा Sulphate of man-ganese और Sulphides of Manganese आदि विभिन्न मिश्र पदार्थ इसके योगसे प्रस्तुत होता है।

मैकल (मेकल)—मध्यप्रदेशके मण्डला जिलान्तर्गत बिलासपुरके समीप एक गिरिश्रेणी। यह अमरकंटकसे दक्षिण-पश्चिम ७० मील तक फैली हुई है। पीछे वह क्रमशः सालेतेकी नामसे दौड़ गई है। इसकी अधित्यका-भूमि २ हजार फीट ऊंची है जिनमें लाफा नामक शृङ्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३२०० फीट है। इसकी चोटी पर बड़े बड़े सीसमके पेड़ हैं। पर्वत परके रहनेवाले 'दहिया' प्रथासे खेती-बारी करते हैं।

मैका (हिं० पु०) मायका देखो।

मैगनेसियम—स्वनामप्रसिद्ध धातव पदार्थविशेष। इसीसे असल मैगलेसिया-क्षार उत्पन्न होता है। १८०८ ई०में सर हामफ्रे डेभिसको पटासियम और क्लोरइड विश्लेषण करनेके समय इस धातुका अस्तित्व मालूम हुआ। यह चांदीकी तरह सफेद होता और पीटनेसे बढ़ता है। सूखी हवामें रखनेसे किसी प्रकारका रूपान्तर नहीं होता, किन्तु जलीय वायुयुक्त स्थानमें रखनेसे उसके ऊपरी भाग पर थोड़े ही समयके अन्दर मैगनेसिया जम जाती है। उपयुक्त ताप (Boiling point) से इसमें-से *Hydrogen* वाष्प निकलती है। अधिक ताप लगनेसे जब यह जल कर लाल हो जाता है, तब उसमेंसे एक प्रकारकी सफेद रोशनी निकलती है। यह रोशनी बहुत सफेद होनेके कारण, अग्नि-क्रीड़ा-प्रदर्शनी तथा फोटोग्राफि-कार्यमें इससे तैयार किया हुआ फीता वा तार जलानेके काममें आता है। अधिकांश विषयमें यह दस्तेके जैसा है। जो सब धातु साधारण उत्तापसे (Ordinary temperature) जरा भी परिवर्त्तन नहीं होती, उस धातुमें इसका आणविक गुरुत्व बहुत थोड़ा है। अधिक उत्तापसे यह गल जाता है। इसका आक्सिड ही औषधके काममें आनेयोग्य मैगनेसिया है।

कार्बनेट आव मैगनेसिया और हाइड्रोक्लोरिक एसिड-से *Chloride of magnesium* तथा सलफेट आव मैग-नेसिया और सलफाइड आव बारियम (Sulphide of barium) से Sulphide of magnesium बनता है। मैगनेसिया (Magnesia)-क्षारमृत्तिकाभेद। इस खारी मिट्टीमें बाराइटी (Baryta), स्ट्रोन्सिया (Strontia) और चूने (*Lime*) आदिका अंश रासायनिक विश्लेषणसे पाया जाता है। लिडिया राज्यके मैगनेसिया नगरमें यह मिट्टी पहले पहल देखी गई थी, इसीसे इसका नाम मैगनेसिया हुआ है।

मैगनेसियम नामक धातु भस्म (Oxide) होनेसे वर्त्तमान आकारमें परिवर्त्तित होती है। साधारणतः प्रचण्ड उत्ताप द्वारा कार्बनेटको दग्ध करनेसे मैगनेसिया पायी जाती है। दग्ध करनेके समय कार्बनेट जल कर एक प्रकारकी रोशनी देता है। औषधालय आदिमें यह कैल-सिनड मैगनेसिया नामसे व्यवहृत होता है। लेवोरे-टरीसे विशुद्ध नाइट्रेटको दग्ध करके भी परिष्कृत मैग-नेसिया निकाली जा सकती है।

उपरोक्त विभिन्न प्रकारके द्रव्यसे जो मैगनेसिया पाई जाती है वह सफेद चूना होने पर भी उसका घनत्व एक दूसरेसे विभिन्न होता है। अग्नि उत्तापसे इस भस्मका और कोई रूपान्तर नहीं होता और न यह गलती ही है। वायुसे यह कार्बनेटाम्ल और जल खींचती है। जलमें डुबोये रहनेके बाद यह क्रमशः तापके साथ तथा *Hydrate of magnesia* आकारमें आ जाती है। स्वभा-वज *Crystallized hydrate of magnesia* में पार्थिव ब्रुसाइट (Brucite) मिली रहती है। यह सफेद चूर्णमें रूपान्तरित होने पर भी जल तथा अङ्गाराम्लशोषणमें समर्थ है। जलमें भिगो कर रखनेसे इसका बहुत थोड़ा अंश गलता है। इसमें अम्लनाशक और विरेचकगुण रहनेके कारण चिकित्सक लोग अन्यान्य औषधोंके साथ इसका प्रयोग करते हैं।

अन्यान्य पदार्थोंके साथ मिला कर इसे स्वतन्त्रगुण-विशिष्ट किया गया है। पलोपैथिकके मतसे कार्बन मिलानेसे इसमेंसे बाइकार्बनेट, मनोकार्बनेट आव मैग-नेसिया बनती है। यह भी अम्लनाशक और विरेचक है। अलावा इसके साइट्रिक एसिड मिलानेसे इससे जो citrate of magnesia बनती है उसका अम्लमधुर पानीय रूपमें व्यवहार किया जा सकता है। यह मृदु-विरेचक और हृद्य है। इस प्रकार नाइट्रिक एसिड मिलानेसे nitrate of magnesia, फोसफेट आव सोडा मिलानेसे Phosphate और hypo-phosphate of mag-nesia, सिलिकेट मिलानेसे Silicates और hydrated silicate of magnesia तथा गन्धक मिलानेसे sulphate of magnesia पार्थिव पदार्थमें एक साथ मिली हुई उत्पन्न देखी जाती है।

मैगल[1](सं० पु०) १ मत्त हाथी, मस्त हाथी। (त्रि०) २ मत्त, मस्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैच (अं० पु०) किसी प्रकारके गेंदके खेल अथवा इसी प्रकारके और किसी खेलकी बाजी।

मैत्र (सं० क्ली०) मित्रादागतमिति, यद्वा मित्रस्येदमिति (तस्येदञ् । पा ४।३।१२०) इति अण। १ अनुराधा नक्षत्र। मित्रः सूर्यो देवतास्येति। २ आदित्यलोक, सूर्य-लोक।

"पायुनोत्क्रममाणान्तु मैत्रं स्थानमवाप्नुयात्।
पृथिवीं जघनेयाय ऊरुभ्याञ्च प्रजापतिम्॥"

(भार० १२।३१७।३)

३ पुरीषोत्सर्ग, मलत्याग।

"ततः कल्यं समुत्थाय कुर्यान्मैत्रं नरेश्वरः।
नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकं भुवः॥"

(अहि्न० त०)

मित्रस्य भावः मित्र-अण्। ४ मित्रता, मित्रका भाव। (त्रि०) ५ मित्रसम्बन्धी, मित्रका। ६ मित्रताशाली, दोस्ती करनेवाला।

"अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥"

(गीता १२।१३)

७ हीनके प्रति कृपा करनेवाला, दयालु। (पु०) ८ ब्राह्मण।

"जप्येनैव तु संसिध्येत् ब्राह्मणो नात्र संशयः।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते॥"

(मनु० २।८७)

९ उदय मुहूर्त्तसे तृतीय मुहूर्त्त, सूर्य जिस मुहूर्त्तमें उदय होते हैं उससे तीसरे मुहूर्त्तका नाम मैत्र है।

"मैत्रे मुहूर्त्ते शशलाञ्छनेन योगं गतासुत्तरफल्गुनीषु।"

(कुमार १।६)

१० प्राचीनकालकी एक वर्णसंकर जाति। व्रात्य-वैश्यसे इस जातिकी उत्पत्ति हुई है।

वैश्यात्तु जायते व्रात्यात् सुधन्वाचार्य एव च।
कारुषश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वत एव च॥'

(मनु १०।२३)

११ वेदकी एक शाखा।

मैत्रक (सं० क्ली०) मित्रता, दोस्ती।

मैत्रकन्यक (सं० पु०) बौद्धभेद।

मैत्रता (सं० पु०) मैत्रस्य भावः तल् टाप्। मित्रता, बन्धुत्व।

मैत्रभ (सं० क्ली०) अनुराधा नक्षत्रका नामान्तर।

मैत्रवर्द्धक (सं० त्रि०) मित्रता वृद्धिकारी।

मैत्रशाखा (सं० स्त्री०) वैदिक शाखाभेद।

मैत्रसूत्र (सं० क्ली०) १ मैत्रतारूप रज्जु। २ बौद्धसूत्र-भेद।

मैत्राक्ष (सं० पु०) एक प्रकारका प्रेत।

मैत्राक्षज्योतिक (सं० पु०) पूयभक्ष प्रेतयोनिविशेष, मनुके अनुसार एक योनि जिसमें अपने कर्त्तव्यसे भ्रष्ट होनेवाला वैश्य जाता है। (मनु १२।१२ कुल्लुक)

मैत्रावार्हस्पत्य (सं० त्रि०) मित्र और बृहस्पति सम्बन्धीय।

मैत्रायण (सं० पु०) मित्रस्य अपत्यं पुमान्। (नड़ादिभ्यः फक्। पा ४।१।९९) इति मित्र-फक्। १ मित्रका गोत्रापत्य। (क्ली०) २ सूर्यकी तरह प्रतिदिन विचित्र गतिविशिष्ट।

"न हिंस्यात् सर्वभूतानि मैत्रायणगतश्चरेत्॥"

(भारत १२।७९६१ श्लो०)

३ गृह्यसूत्रके प्रणेता एक ऋषि। ४ मैत्र नामक वैदिक शाखा।

मैत्रायणक (सं० त्रि०) मैत्रायणसम्बन्धीय।

मैत्रायणि (सं० स्त्री०) एक उपनिषद्का नाम।

मैत्रायणी (सं० स्त्री०) एक बौद्ध स्त्री आचार्य्या, पूर्णकी माता।

मैत्रायणीय (सं० पु०) मैत्रायणसम्बन्धीय एक वैदिक शाखा।

मैत्रायण्य (सं० पु० मैत्रायणका गोत्रापत्य।

मैत्रावरुण (सं० पु०) मित्रश्च वरुणश्चेति (देवताद्वन्द्वे च। पा ७।३।२१) इति मित्रस्य वृद्धिः (दीर्घाच्च वरुणस्य। ७।३।२३) इति वरुणस्य न वृद्धिः, तयोरपत्यमिति, मित्रावरुण-अण्। अगस्त्य, मित्रावरुणका अपत्य। ऋग्वेदमें लिखा है—उर्व्वशीको देख कर मित्र और वरुण दोनों देवताओंका वीर्य्य एक जगह स्खलित हो गया था, उसी वीर्यसे अगस्त्य और वशिष्ठ ये दो ऋषि उत्पन्न हुए थे। * मित्र, वरुण, अगस्त्य और वशिष्ठ शब्द देखो।

* "उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन् मनसोऽधिजातः।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवा पुष्करे त्वाददन्त॥"

(ऋक् ७।३३।११)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैत्रावरुणि (सं० पु०) मैत्रावरुणयोरपत्यमिति मैत्रावरुण (अंत इञ् । पा ४।१।९५) इति इञ् । १ अगस्त्य ।

"तेऽभिगम्य महात्मानं मैत्रावरुणिमच्युतम् ।
आश्रमस्थं तपोराशिं कर्मभिः स्वैरभिष्टुवन् ॥"

(भारत ३।१०३।१४)

२ सोलह ऋत्विजोंमेंसे पाँचवां ऋत्विज ।

मैत्रावरुणीय (सं० त्रि०) मैत्रावरुण ऋत्विज् सम्बन्धीय ।

(सांख्यकौ० ३०।३)

मैत्रि (सं० पु०) एक वैदिक आचार्य । इनके नाम पर मैत्र्युपनिषद्की रचना हुई है ।

मैत्रिक (सं० पु०) मित्र सम्बन्धीय, मित्रका कार्य ।

मैत्रिन् (सं० त्रि०) मैत्रं मित्रता तदस्यास्तीति मित्र-इन् । मित्र, दोस्त ।

"स एव बन्धुः स पिता स मैत्री जननी च सा ।
स च भ्राता पतिः पुत्रो यः कृष्णवर्त्म दर्शयेत् ॥"

(पञ्चरात्र २८।२३)

मैत्री (सं० स्त्री०) मैत्र-ङीष्, यद्वा मित्र-भावे ष्यञ्, ङीष् ततः (इलस्तद्धितस्य । पा ६।४।१५०) इति यलोपः । मित्रका भाव, मित्रका कर्म, मित्रता, बन्धुत्व । विद्विष्ट, पतित, उन्मत्त, बहुवैर, अतिशय निन्दित, अतिकीटक, असती स्त्री तथा उसका स्वामी, क्षुद्र, मिथ्यावादी, अतिशय व्ययशील, परोवादरत तथा शठ, इन सब व्यक्तियोंसे मैत्री नहीं करनी चाहिये । उसके साथ मित्रता करनेसे पद पदमें विपद्की सम्भावना है ।

"विद्विष्ट पतितोन्मत्त बहुवैरातिकीटकैः ।
बन्धकीबन्धकीभर्तृक्षुद्रानृतकथैः सह ॥
तथातिव्ययशीलैश्च परीवादरतैः शठैः ।
बुधो मैत्री न कुर्वीत नैकः पन्थानमाश्रयेत् ॥"

(विष्णुपु० ३।११ अ०)

मैत्रीनाथ (सं० पु०) एक ग्रन्थकार ।

मैत्रीपूर्व (सं० त्रि०) मित्रता पूर्वक ।

मैत्रीबल (सं० पु०) मैत्री मित्रता बलमस्य । १ बुद्धका नाम । मैत्री, मुदिता आदि योगके चार साधन-कर्म है जो बुद्धको प्राप्त हो गये थे; इसीलिये उनका यह नाम पड़ा । २ शाक्यमुनिके अवतार एक राजाका नाम । (त्रि०) ३ मित्रताके बन्धनमें बंधा हुआ ।

मैत्रीभाव (सं० पु०) बन्धुता ।

मैत्रेय (सं० पु०) मैत्रे मित्रतायां साधुरिति मैत्र-ढञ् । १ बुद्धभेद, एक बुद्धका नाम जो अभी होनेवाले हैं । मित्रयोरपत्यमिति मित्रयु (गर्ष्टयादिभ्यश्च । पा ४।१।१३९) इति ढञ्, (ततः केकयमित्रयूपल्लयानां यादेरियः । पा ७।३।२) इति यु स्थाने इयादेशे प्राप्ते (दाण्डिनायन हास्तिनायन । पा ६।४।१७४) इति युलोपो निपातितः । २ मुनिविशेष, भागवतके अनुसार एक ऋषिका नाम जो पराशरके शिष्य थे और जिनसे विष्णु पुराण कहा गया था ।

"एवं ब्रुवाणं मैत्रेयं द्वैपायनसुतो बुधः ।
प्रीणयन्निव भारत्या विदुरः प्रत्यभाषत ॥"

(भागवत ३।७।१)

३ सूर्य्य । ४ वर्णसंकर जातिविशेष, प्राचीनकालकी एक वर्णसंकर जाति । इसकी उत्पत्ति वैदेह पिता और अयोगव मातासे कही गई है । इसका काम दिन रातको घड़ियोंको पुकार कर बताना था ।

"मैत्रेयकन्तु वैदेहो माधूकं सम्प्रसूयते ।
नृन् प्रशंसत्यजस्रं यो घण्टा ताड़ोऽरुणोदये ॥"

(मनु १०।३३)

(त्रि०) ५ मित्रसम्बन्धी । ६ मित्रयुवंशोद्भवादि

"देवोदासस्य दायादो ब्रह्मर्षिर्मित्रयुर्नृपः ।
मैत्रायणी ततः प्राप्ता मैत्रेयास्तु ततः स्मृताः ॥"

(हरिवंश ३२।७७)

उतापि च हे वशिष्ठ । मैत्रावरुण ! मित्रावरुणयोः पुत्रोऽसि ब्रह्मण वशिष्ठ ! उर्वश्या अप्सरसो मनसो समायं पुत्रः स्यादिति ईदृशात् संकल्पात् द्रप्सं रेतः मित्रावरुणयोरुर्व्वशीदर्शनात् स्कन्नमासीत्, तस्मादधिजातोऽसि ।

तयोरादित्ययोः सत्रे दृष्ट्वाप्सरसमुर्व्वशीम् ।
रेतश्चस्कन्द तत् कुम्भे न्यपतद्वासतीवरे ।
तेनैव च मुहुर्त्तेन वीर्यवन्तौ तपस्विनौ ।
अगस्त्यश्च वशिष्ठश्च तन्नर्षी सम्बभूवतुः ॥
बहुधा पतितं रेतः कलशे च जले स्थले ।
स्थले वशिष्ठस्तु मुनिः सम्भूतो ऋषिसत्तमः ॥
कुम्भे त्वगस्त्यः सम्भूतो जले मत्स्यो महाद्युतिः ।
उदियाय ततोऽगस्त्यः शम्यामात्रो महातपाः ॥"

(सायण)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

७ बोधिसत्त्वभेद । मृच्छ-कटिकके विदूषकका नाम । स्त्रियां ङीष् । ८ मैत्रेयी, मैत्रेय द्वारा उच्चारित उपनिषद् ।

मैत्रेयक (सं० पु०) एक वर्णसंकर जाति । (मनु० १०।३४)

मैत्रेयरक्षित (सं० पु०) एक वैयाकरण । इन्होंने तन्त्र-प्रदीप या अनुन्यास नामक जिनेन्द्रबुद्धिकृत काशिका-विवरण पञ्जिकाकी टीका लिखी । अलावा इसके इन्होंने अपने बनाये धातुप्रदीपमें न्यासकार धातुपाराय्रण और रूपावतार आदि ग्रन्थोंका उल्लेख किया है ।

मैत्रेयवन (सं० पु०) एक प्राचीन वन ।

मैत्रेयिकी (सं० स्त्री०) १ दोस्तोंमें परस्पर विवाद, मित्र-युद्ध । २ वह जो मित्रयुसे उत्पन्न हुई हो ।

मैत्रेयी (सं० स्त्री०) १ उपनिषद् भेद । २ अहल्याका एक नाम । ३ सुलभा । (आश्वलायन गृह्यसू० ४।४) ४ योगिराज याज्ञवल्क्यकी स्त्री । ज्ञान और विद्यामें मैत्रेयी याज्ञवल्क्यके समान ही थी । याज्ञवल्क्यने संन्यास ग्रहण करनेकी इच्छासे एक दिन मैत्रेयीसे कहा कि मैं अब संन्यास ग्रहण करने जाता हूं । अतः मैं चाहता हूं, कि जो कुछ धन है वह तुमको और कात्या-यनीको आधा आधा बांट दूं । नहीं तो हमारे न रहने पर सम्भव है तुम लोगोंमें झगडा हो । मैत्रेयीने कहा—इन नश्वर पदार्थोंको ले कर मै क्या करूंगी । मुझे इन पदार्थोंसे कुछ भी प्रयोजन नहीं, आप उस ब्रह्मज्ञानका उपदेश मुझे दें जिससे यथार्थ कल्याण हो । मैत्रेयीके कहने पर याज्ञवल्क्यने ब्रह्मज्ञानका उपदेश दिया । मैत्रेय पतिके संन्यास ग्रहण करने पर यह वहां हो रह कर अध्यात्मतत्त्वका अनुशीलन करने लगी ।

मैत्र्य (सं० क्ली०) मित्र-ष्यञ् । मित्रता, दोस्ती ।

"प्राहुः सप्तपदं मैत्र्यं जनाः शास्त्रविचक्षणाः ।
मित्रताञ्च पुरस्कृत्य किञ्चिद्वक्ष्यामि तच्छृणु ॥"

(पञ्चतन्त्र ३।५।३९)

मैथिल (सं० पु०) मिथिला निवासोऽस्येति मिथिला (सोऽस्यांनिवासः । पा ४।३।८९) इति अण् । १ मिथिला देशवासी । २ मिथिलाधिपति, मिथिलादेशका राजा । ३ राजर्षि जनक । (त्रि०) ४ मिथिलादेशका । ५ मिथिलासम्बन्धी ।

मैथिलकायस्थ—१ मिथिलावासी एक कायस्थ कवि । कवीन्द्र चन्द्रोदयमें इनका उल्लेख देखनेमें आता है । २ कायस्थकी एक श्रेणी । कायस्थ देखो ।

मैथिलवाचस्पति (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पण्डित ।

मैथिलब्राह्मण—मिथिलावासी-ब्राह्मण सम्प्रदाय । सीताके पिता जनक या मिथिलाकी राजधानी मिथिलासे इसका नाम-करण हुआ है । मिथिला देखो । ये लोग पञ्चगौड़के अन्तर्गत हैं ।* आजकल तिरहुत, सारण, मुजफ्फरपुर, दरभङ्गा, भागलपुर, मुङ्गेर, पूर्णिया और नेपालके किसी किसी अंशमें इस श्रेणीके ब्राह्मणोंका प्रधान वास देखा जाता है । अलावा इसके युक्त प्रदेश और बङ्गालमें भी कहीं कहीं ये लोग आ कर बस गये हैं । जिनका बङ्गालमें वास है वे वैदिकश्रेणीके साथ मिल गये हैं ।

मैथिल ब्राह्मणोंके मध्य वात्स्य, शाण्डिल्य, भरद्वाज, काश्यप, कात्यायन, गौतम, सावर्ण, पराशर, कौशिक, गर्ग और कृष्णात्रेय गोत्र हैं । फिर इन ग्यारह गोत्रोंमें १७७ 'डीह' वा 'मूल' हैं । इनमेंसे वात्स्यगोत्रमें ४६, शाण्डिल्यगोत्रमें ५८, भरद्वाजगोत्रमें १३, काश्यपगोत्रमें ७, पराशरगोत्रमें ४, कौशिकमें १, गर्गगोत्रमें १ और कृष्णा-त्रेय गोत्रमें १ मूल पाया जाता है ।

मैथिलश्रेणीके मध्य प्रधानतः पांच कुल देखे जाते हैं, १ श्रोत्रिय, २ योग, ३ पञ्जिबद्ध, ४ नागर और ५ जैवार । इन पांच कुलोंमें पूर्वोक्त कुल यथाक्रम परवर्त्ती कुलोंसे श्रेष्ठ समझे जाते हैं ।

श्रोत्रिय जब नीच घरमें विवाह करते हैं, तब उन्हें काफी रुपये मिलते हैं । किन्तु इसमें जो सन्तान उत्पन्न होती है वह मातृकुलसे श्रेष्ठ होने पर भी पितृ-कुलके दूसरे दूसरे व्यक्तियोंके निकट समान आदर नहीं पा सकती । जो श्रोत्रिय निम्न घरमें विवाह करता, उसका तो अपनी श्रेणीमें मान अवश्य घटता, पर कन्या-के पिताका यह कार्य सम्मानजनक और उत्तम समझा जाता है । ऐसा कुलनियम रहने पर भी बङ्गाल देशकी तरह छानबीन नहीं है । बिहार-वासियोंका कहना है, कि इस देशमें बल्लालसेनका आधिपत्य स्थायी न रहनेके कारण

* "सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़ोत्कल मैथिलाः ।
पञ्चगोड़ाः समाख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः ॥"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो बङ्गालके जैसा यहां कठोर नियमका प्रचार न हो सका। मैथिल कुलश्रेष्ठगण अकसर पण्डित, पञ्जिकार और घटकको साथ ले कर तिरहुत तथा जहां जहां मैथिल ब्राह्मणोंका वास है, वहां जाते और कुलका निर्णय करते हैं। इस प्रकार सामाजिक सम्मिलनसे कुलका दोष गुण मालूम हो जाता और वैवाहिक सम्बन्ध निरूपित होता है। ये लोग प्रधानतः वंशशुद्धिकी ओर लक्ष्य रख कर आदान प्रदान करते हैं।

इन लोगोंमें 'विकौआ' एक श्रेणी है जिसमें जो अधिक विवाह कर सके वही श्रेष्ठ गिने जाते हैं। पर आज कल यह प्रथा जाती रही। सौराट, रसाढ़, वरहरा आदि स्थानोंमें प्रति वर्ष शुद्धिके अन्तिम मासमें सभा लगती है जिसमें हजारों ब्राह्मण शास्त्रालोचनार्थ एकत्रित होते और विवाह-सम्बन्ध स्थिर करते हैं। ये लोग कट्टर सनातन धर्मावलम्बी, शिष्टाचारी तथा शास्त्र और वेदविद् हुआ करते हैं। अतएव सम्प्रति भी कितने मैथिल ब्राह्मण 'महामहोपाध्याय' आदि उपाधियोंसे भूषित देखे जाते हैं। अधिकांश लोग नित्य संध्योपासनादिके अतिरिक्त शालग्राम और पार्थिव-शिवलिङ्ग-पूजनके बिना भोजन नहीं करते। ये पञ्चदेवोपासक होते हुए भी साधारणतः शक्ति-उपासक हैं। विशेष विवरण मिथिला शब्दमें देखो।

मैथिलश्रोदत्त—मिथिलादेशवासी एक प्रसिद्ध पण्डित। इन्होंने आचारादर्श, आवसथ्याधनपद्धति, छन्दोगाह्निक, पितृभक्ति या श्राद्धकल्प, व्रतसार, समयप्रदीप आदि ग्रन्थ लिखे थे। कमलाकर, दिवाकर, रघुनन्दन आदिने इनका नाम उद्धृत किया है।

मैथिलिक (सं० पु०) मिथिलावासी।

मैथिली (सं० स्त्री०) मैथिलस्तन्नामा राजा तस्यापत्यं स्त्री। मिथिलादेशके राजाकी कन्या, सीता।

मैथिलीशरण—सीतारामतत्त्व प्रकाशके रचयिता।

मैथिलेय (सं० पु०) मिथिला-सम्बन्धीय, मिथिलाका।

मैथुन (सं० क्ली०) मिथुने सम्भवतीति मिथुन-(सम्भूते पा ४।३।४१) इति अण्, मिथुन-स्येदमित्यण वा। स्त्रीके साथ पुरुषका समागम, रति-क्रीड़ा।

"असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥"

संस्कृत पर्याय—सुरत, अभिमानित, धर्षित, सम्प्रयोग, अनारत, अब्रह्मचर्याक, उपसृष्ट, विभद्र, क्रीड़ारत्न, महासुख, व्यवाय, ग्राम्यधर्म, रत, निधुवन। इसका गुण और दोष—धातुक्षयकारक, रति और सन्तानदातृत्व। अधिक मैथुन करनेवालेको श्वास, खांसी और ज्वर तथा जो मैथुन बिलकुल नहीं करता उसे प्रमेह, मेद, ग्रन्थि-रोग और अग्निमान्द्य होता है। स्त्री-संसर्ग नहीं करनेवालेकी आयु बढती, वह कभी बूढ़ा नहीं होता तथा उसके शरीर, बल, वर्ण और मांसकी वृद्धि होती है। पूज्यस्थान, अशुचिस्थान, सेकस्थान, मनुष्यके निकट, सबेरे, शाम और पर्वके दिन मैथुन नहीं करना चाहिये। रजस्वला स्त्री, अकामी, मलिन, वन्ध्या, वर्णज्येष्ठा, वयोज्येष्ठा, व्याधियुक्ता, अङ्गहीना, योनिदोषदुष्टा, सगोत्रा, गुरुपत्नी, भिक्षुकी, कपट व्रतधारिणी और वृद्धा इन सब स्त्रियोंके साथ सम्भोग करना मना है। करनेसे अधर्म, आयुःक्षय और नाना प्रकारकी व्याधि होती है।

वयस और रूपगुणमें एकसो, कुल और शीलयुक्ता, वाजीकरणपीड़िता (जिसने वाजीकरणोक्त औषधका सेवन किया हो), अधिकामा, हृष्टा और अलंकृता स्त्रीके साथ रातके पहले पहरमें मैथुन करना चाहिये। मैथुनके बाद शक्करके साथ दूध पीना, निद्रा वा गौड़िक रस भोजन करना हितकर है। (राजवल्लभ)

भावप्रकाशमें मैथुनके विधिनिषेधके बारेमें इस प्रकार लिखा है,—मनुष्यके शरीरमें मैथुन करनेकी हमेशा इच्छा बनी रहती है। उस इच्छाको रोक कर यदि मैथुन बिलकुल न किया जाय, तो मेहरोग, मेहोवृद्धि और शरीरमें शिथिलता उत्पन्न होती है। ग्रीष्म और शरत्-कालमें बालास्त्री, शीतकालमें तरुणी, वर्षा और वसन्त कालमें प्रौढ़ा स्त्रीके साथ सम्भोग करना बहुत प्रशस्त और लाभदायक है। सोलह वर्ष तककी स्त्रीको बाला, १६ से ३२ को प्रौढ़ा और ३२से जिसकी उमर अधिक हो गई है उसे वृद्धा कहते हैं। वृद्धा स्त्रीके साथ मैथुन नहीं करना चाहिये। प्रतिदिन बाला स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि, तरुण स्त्रीसे ह्रास और प्रौढ़ा-स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे शरीर जराग्रस्त होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाला-स्त्री मैथुन सद्योबलकारक तथा वृद्धा मैथुन सद्यः प्राणनाशक है। तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करने से बूढ़ा आदमी भी जवान हो जाता है। जो अपनी उमरसे अधिक उमरवाली स्त्रीके साथ सम्भोग करता वह युवा होने पर भी जराग्रस्त होता है।

विधिपूर्वक मैथुन करनेसे परमायुकी वृद्धि, वार्द्धक्यकी अल्पता, शरीरकी पुष्टि, वर्णकी प्रसन्नता और बलकी वृद्धि होती है। हेमन्तकालमें वाजीकरण औषधका सेवन कर बल और कामवेगके अनुसार यथासम्भव मैथुन करना चाहिये। शिशिर कालमें इच्छाके अनुसार मैथुन करना उचित है। वसन्त और शरत्कालमें तीसरे दिनमें तथा वर्षा और ग्रीष्मकालमें १५वें दिनमें मैथुन करना चाहिये। इस विषयमें सुश्रुतने कहा है, कि पण्डितोंको चाहिये, कि वे सभी ऋतुमें तीन दिन और ग्रीष्मकालमें पन्द्रह दिनके अन्तर पर स्त्री-प्रसङ्ग करें।

शीतकालमें रातको, ग्रीष्मकालमें दिनको, वसन्तकालमें दोनों वक्त, और वर्षाकालमें बदलीके दिन तथा शरत्कालमें कामका उदय होनेसे ही मैथुन किया जा सकता है। शामको, पर्वके दिन, भोरको, दो पहर रातको, दो पहर दिनको कभी भी मैथुन नहीं करना चाहिये; करनेसे भारी अनिष्ट होता है। प्रकाश्य स्थान, अति लज्जाजनक स्थान, गुरुजन सन्निहित स्थान तथा जिस स्थानसे व्यथाजनक आर्त्तनादि सुना जाय, वैसा स्थान मैथुनकार्यमें निषिद्ध है।

जो स्थान अत्यन्त निभृत, सुवासित और मृदुमन्द सुखवायु हिल्लोलसे मनोरम है वही स्थान मैथुनके लायक है।

अतिरिक्त भोजनके बाद मैथुन नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति अधैर्य, क्षुधार्त्त, दुर्न्यस्ताङ्ग (जिसके हाथ पैर अनुपयुक्त भावमें हैं), पिपासित, जिसे मलमूत्रादिका वेग उपस्थित हुआ हो और जो रोगग्रस्त हो उनके लिये मैथुन विशेष हानिकारक है।

नियमपूर्वक वाजीकरण औषधका सेवन करनेसे घोड़ेके समान ताकत आ जाती है। उस समय प्रसन्न वदनसे समान कुलमें उत्पन्ना, रूपगुणसे सम्पन्ना अलंकारसे अलंकृता, सच्चरित्रा अथच अत्यन्त कामाभिकाङ्क्षिणी युवती स्त्रीके साथ मैथुन करना चाहिये। मनुष्यको चाहिये, कि वह मैथुनाभिलाषी हो स्नान करनेके बाद चन्दनादि सुगन्ध द्वारा शरीरको लेप कर, वीर्यवर्द्धक द्रव्य खा कर, उत्कृष्ट वस्त्र पहन कर और पान चबा कर पत्नीके प्रति अतिशय अनुरागी, कामभावापन्न और पुत्राभिलाषी हो कर सुखशय्या पर पत्नीके साथ मैथुन करे।

आत्मसंयममें असमर्थ हो रजस्वला स्त्रीके साथ संभोग करनेसे दर्शनशक्तिका ह्रास, परमायुकी हीनता, तेजकी हानि और धर्मका नाश होता है।

संन्यासिनी, गुरुपत्नी, सगोत्रा तथा वृद्धा स्त्रीके साथ जो मैथुन करता उसकी परमायु घटती है।

गर्भिणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे गर्भपीड़ा; व्याधिपीड़िताके साथ करनेसे बलहानि; हीनाङ्गी, मलिना, द्वेषभावापन्ना, अकामा और वन्ध्या स्त्री अथवा खुले स्थानमें मैथुन करनेसे शुक्रक्षीणता और मनको अप्रसन्नता होती है।

ऊपरमें गर्भिणी शब्दका जो उल्लेख किया गया उसका तात्पर्य यह कि गर्भसञ्चारके दिनसे ले कर दूसरे महीनेमें अर्थात् गर्भस्थिरताका निश्चय हो जानेसे अथवा गर्भसञ्चारके दिनसे ले कर तीसरे महीनेमें यथोक्त नक्षत्रादि प्राप्तिके बाद पुंसवन संस्कार समाप्त होने पर मैथुन नहीं करना चाहिये। क्योंकि व्यासने कहा है, कि पुंसवन समाप्त होने पर स्त्रियोंको नदी तट जाना, पतिके साथ एक शय्या पर सोना, मृतवत्सा स्त्रीको देखना तथा आमिष भोजन न करना चाहिये।

क्षुधातुर, संक्षोभितचित्त, तृष्णार्त्त और दुर्बल अवस्थामें अथवा मध्याह्न समयमें मैथुन करनेसे शुक्रकी हीनता होती और वायु बिगड़ जाती है।

व्याधिपीड़िता स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे प्लीहा और मूर्च्छादि विविध रोगोंकी उत्पत्ति होती है तथा अन्तमें मृत्यु तक भी हो सकती है। सबेरे या दो पहर रातको मैथुन करनेसे वायु और पित्तका प्रकोप बढ़ता है। तिर्यक्योनि, अयोनि, अर्थात् कच्ची उमरके कारण जो योनि मैथुनके लायक न हो अथवा दुष्ट योनिमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैथुन करनेसे उपदंश रोग होता है, वायु विगड़ जाती है तथा शुक्र और सुखका क्षय होता है।

मलमूत्र रोक कर अथवा शुक्रधारण कर या चित सो कर मैथुन करनेसे शुक्राश्मरीकी उत्पत्ति हो सकती है। अतएव इस लोक और परलोकमें सुखी रहनेके लिये हर एक मनुष्यको चाहिये, कि वह ऊपर कहे गये मैथुन-के नियमोंके अनुसार चले।

मैथुनके समय मोहप्रयुक्त गिरते हुए वीर्यको कभी भी न रोके। स्नान, चीनी मिश्रा हुआ दही, चीनी शक्कर आदिकी वनी हुई वस्तु खाना, वायुसेवन, मांसरस भोजन और निद्रा यह सव कार्य मैथुनके वाद हितजनक है। अत्यन्त मैथुन करनेसे शूल, खांसी, ज्वर, दमा, कृशता, पाण्डु तथा आक्षेप आदि विविध रोगोंकी उत्पत्ति होती है। (भावप्र० पूर्वख०)

आयुर्वेद और धर्मशास्त्रका अवलोकन करनेसे स्पष्ट मालूम होता है, कि एकमात्र सन्तानोत्पत्तिके लिये ही मैथुन करना चाहिये। अतएव इन्द्रिय-चरितार्थके लिये निषिद्ध दिनमें मैथुन करना विशेष दोषावह और अधर्म-जनक है। धर्मशास्त्रमें लिखा है, कि पर्वदिन (चतु-र्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति) तथा ज्येष्ठा, मूला, मघा, अश्लेषा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी और उत्तर-भाद्रपद, उत्तराषाढ़ा और उत्तरफल्गुनी नक्षत्र-में मैथुन निषिद्ध है;

"ज्येष्ठा मूला मघाश्लेषा रेवती कृत्तिकाश्विनी।
उत्तराश्रितयं त्यक्त्वा पर्ववर्जं व्रजेद्दतौ॥" (आह्निकतत्त्व)

इसके अतिरिक्त और सभी विषयोंमें आयुर्वेदके साथ एकमत है। सन्तानोत्पत्तिके लिये धर्मपत्नीके साथ किस प्रकार मैथुन करना चाहिये उसका विधान सुश्रुतमें इस प्रकार लिखा है—स्वामी एक मास ब्रह्मचर्य-का अवलम्बन कर स्त्रीके ऋतुकालके चौथे दिन अपराह्न कालमें दूध घीके साथ भात खावे। स्त्री भी एक मास ब्रह्मचर्यका अवलम्बन कर उस दिन तेल लगावे और उड़द मिली हुई वस्तु भोजन करे। पीछे स्वामी वेदादि पर विश्वासी और पुत्रकामी हो कर ऋतुके चौथे, छठे, आठवें, दशवें और बारहवें दिनमें स्त्रीके साथ मैथुन करे। कन्याकामी होनेसे अयुग्म दिनमें मैथुन करना उचित है। तेरहवें दिनसे मैथुन नहीं करना चाहिये।

ऋतुके प्रथम दिनमें मैथुन करनेसे पुरुषका आयु-क्षय होता है। उस समागमसे यदि गर्भ रह जाय तो प्रसवकालमें वह गर्भ नष्ट हो जाता है। दूसरे और तीसरे दिन भी मैथुन करनेसे उसी प्रकारका फल लाभ होता है। इसी कारण चौथे दिनसे अर्थात् रजके वन्द होने पर मैथुन करनेको कहा है।

(सुश्रुत शरीरस्था० २०अ०)

शास्त्रमें आठ प्रकारका मैथुन वतलाया है।

"स्मरणं कीर्त्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च।
मैथुनं विविधं त्यज्यं व्रते क्रीड़ाविवृद्धये॥"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० गणपतिख० ४० अ०)

स्मरण, कीर्त्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्यभाषण, संकल्प, अध्यवसाय और क्रियानिष्पत्ति यही अष्टाङ्ग मैथुन है। व्रत वा पूजादिके दिन यह अष्टाङ्ग मैथुन नहीं करना चाहिये। इस अष्टाङ्ग मैथुनकी निवृत्ति ही ब्रह्मचर्य है। योगशास्त्रमें लिखा है, कि ब्रह्मचर्यकी प्रतिष्ठा होनेसे प्रज्ञा प्राप्त होती है। जव इस अष्टाङ्ग मैथुनसे किसी प्रकार-का मानसविकार उपस्थित न हो तव ही ब्रह्मचर्यकी प्रतिष्ठा हुई, जानना चाहिये।

धर्मपत्नीको छोड़ कर अन्य स्त्रीके साथ मैथुन नहीं करना चाहिये, करनेसे प्रायश्चित्त करना पड़ता है।

मैथुनधर्मिन् (सं० पु०) मैथुनधर्मोऽस्यास्तीति इनि। मैथुनधर्मविशिष्ट।

"यमुनान्तर्जले भग्नस्तप्यमानं परं तपः।
निर्वृतिं मीनराजस्य दृष्ट्वा मैथुनधर्मिणः॥"

(भा० ६।६।३६)

मैथुनवास (सं० क्ली०) मैथुनके समय पहननेका कपड़ा।

मैथुनाभिघात (सं० पु०) एक प्रकारका रोग जो मैथुनके समय आघात वा चोट लगनेसे होता है।

मैथुनिक (सं० त्रि०) मैथुनकारी, संभोग करनेवाला।

मैथुनिन् (सं० त्रि०) मैथुन अस्त्यर्थे इनि। कृतमैथुन, स्त्रीके साथ संभोग करनेवाला। मैथुनके बाद स्नान कर लेनेसे शुद्ध होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"आचामादेव भुक्त्वान्नं स्नानं मैथुनिनः स्मृतम्।"
(मनु ५।१४४)

मैथुन्य (सं० त्रि०) मैथुनमें हितकर, गान्धव विवाह।
"गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः।"
(मनु ३।३२)

मैदा (फा० पु०) गेहूंका चूर्ण।

इस देशमें मैदाके नामसे प्रसिद्ध है। यह सारे संसारमें प्रधान खाद्यके रूपमें व्यवहृत होता है। आकार-भेदसे यह चार तरहका होता है। (१) बहुत बारीक मैदा, (२) अपेक्षाकृत मोटा आटा और (३) इससे मोटा रानजो तथा (४) एक तरहका भूसी मिला हुआ आटा। ये चार तरहके आटा हमारे नित्य व्यवहारकी सामग्री हैं। देशी आहारीय द्रव्योंमें जितने पक्वान्न या मिष्टान्न तय्यार होते हैं, वे प्रायः सभी मैदाके संयोगसे प्रस्तुत होते हैं। आटेसे केवल रोटियां तय्यार होती है। सूजीसे हलवा तैयार होता है। कभी कभी सूजीको रोटी भी बनती है।

गेहूं पीसनेके लिये चक्की या जांतका व्यवहार किया जाता है। इस जाँतका आकार गोल और थालीकी तरह चिपटा पत्थरसे तय्यार किया जाता है। इसके दो दल होते हैं। उनमेंसे एक दल नीचे जमीनमें गाड़ दिया जाता है। इन दलोंमें जो छेद रहता है, उनमें एक किल-के साथ निचला दल जमीनमें गड़ा रहता है। ऊपरके दलमें एक काठका टुकड़ा जिसको हत्था कहते हैं, ठोक दिया जाता है। इसी हत्थेको पकड़ कर इसे चलाया जात है। इन दोनों दलोंमें लोहेको छेनीसे दांव निकाल दिये जाते हैं, इसीसे इसमें डाला हुआ गेहूं चूर्ण विचूर्ण हो जाता है। इसके बाद इसको चालनसे छान लेते हैं। क्रमसे मोटे पतलेका विभाग किया जाता है। बहुत पतले भागको मैदा और उससे मोटेको आटा और उससे भी मोटेको सूजी कहते हैं। इसके छाननेसे चालनमें जो बच जाता है, वह चौकर या भूसी कहलाता है।

जाँतेका पीसा हुआ आटा सब तरहके आटोंसे उत्तम और पुष्टिकर है। किन्तु इस समय जाँतेसे पीसे आटेका प्रचार बहुत कम दिखाई देता है। यूरोपीय वणिक्-समितिने आटा पीसनेके लिये एक आटाकी कल तय्यार की है, जिसको अङ्गरेजीमें Flour-mill कहते हैं। इसके द्वारा आटा जाँतेकी अपेक्षा सरलतासे पीसा जाता है।

इस कलका पीसा आटा तीन तरहका होता है। यह १, २ और ३, नं०के नामसे विख्यात है। आटेके व्यवसायी पीसनेके पहले आटेके बीजोंके पुष्टापुष्टका विचार करते है। पुष्ट गेहूके दानेका आटा अच्छा होता है। पतले या अपुष्ट गेहूंका आटा उतना अच्छा नहीं होता।

गेहूं पीसनेके पहले उसको अच्छी तरह चुन लेते हैं। पहले इसके साथ मिले हुए अन्य दानोंको झरना-से अलग कर देते हैं। इसके बाद इसमें जो मट्टी लगी रहती है, उसको निकालनेके लिये इसे खूब अच्छी तरह धोत और फिर सुखाते हैं। कहीं कहीं सूर्य्यतापके अभावमें यन्त्रसे निकली हुई भापसे सुखाते हैं।

पहले यूरोप महादेशके विविध देशोंमें जाँतेका बहुत प्रचार था, जैसे हमारे यहां अब भी हैं। उन्नतिशील जातियां उन्नति पथका लक्ष्य रख उक्त यन्त्रके अविष्कार करनेमें लगी हुई थीं। वे लोग पहले मनुष्यके परिश्रम-को लाघव करनेके उद्देश्यसे (Wind-mill) वायुयन्त्रसे जाँता चलाने लगे। इस तरह एक मिनटमें १ सौ या १२० बार जाँत चलाने लगा। हाथसे जांता चलानेकी अपेक्षा इसमें बड़ी सुविधा हुई। किन्तु इसमें एक खराबी पैदा हो गई। वह यह कि अधिक तेजीसे चलनेसे तापकी वृद्धि हो कर आटा जांतेमें सट जाता था। इससे मैदेकी बड़ी हानि होनेकी सम्भावना हुई।

इस असुविधाको दूर करनेके लिये कलकी ओर लोगोंकी दृष्टि गई। जांतमें आटा सटने न पावे इसके लिये वहांके वैज्ञानिक धुरन्धर बद्धपरिकर हुए। काकेरिन्, गर्डन, टेलर, वभिल, पिसेल मालेलन, बैंक्स, गुडियर, वेष्ट्रेप, सगाइलर, वलक, सियली हारउड, ह्वाइट आदि विज्ञानविद् इसकी खोजमें लगे। वडिल साहबने उत्तप्त वायु द्वारा बीज गरम करनेका यन्त्र आविष्कार किया। महात्मा ह्वाइटने देशी चर्खा प्रथासे गोलाकार पत्थरके टुकड़ोंसे आटा पीसनेका उपाय निकाला। उन टुकड़ों-को रोलर कहते हैं। इन रोलरोंके संघर्षणसे जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्तापकी वृद्धि होती है, उसको दूर करनेके लिये पत्थरके सैकड़ोंमें छिद्र किये जा कर बाहरसे हवा पहुंचाई जाती है। यह रोलर भी ऐसे ढङ्गसे बनाये गये जिससे उत्तापके मारे आटा जमने नहीं पाता। सिवा इसके इससे गेहूं इस तरह पिस जाता है, कि उसकी भूसीमें जरा भी आटा नहीं रह जाता। और फिर मैदा चाल कर जो भूसी बचती है, उसको फिर एक बार कलमें देते हैं। इस बार भूसी रह ही नहीं जाती। यह बहुत बारीक हो कर मैदामें मिल जाती है। इस कलमें प्रति क्वार्टर गेहूं से अन्यान्य कलोंकी अपेक्षा प्रायः एक शिलिङ्ग मूल्यका अधिक आटा तय्यार होता है। साइलस् एण्टी फ्रिकसन् कोर्न मिल (Schicles Antifriction corn-mill) न्यूजपृष्ठ (convex) और दूसरा कुब्जपृष्ठ प्रस्तर खण्ड गठित है। सिवा इसके फ्रान्सदेशवासी Mr. Falguiere और M. D. Arblay ने भी स्वतन्त्र रूपसे मैदा पीसनेकी एक कल तैयार की है। इसके लिये साधारणके ये बड़े ही धन्यवादार्ह है।

सन् १८५५-५६ ई०में विख्यात क्रिमियाके युद्धके समय ब्लाक लावा समरमें अङ्गरेज सरकारने ब्रुइजर और एवान्तान्स नामक दो ष्टीमरोंमें आटा पीसनेकी कल भेजी थी। यह कल इञ्जीनियर मिष्टर फेअर वेअरनके यत्नसे ष्टीमरोंके पङ्खिनसे परिचालित हुई थी। इससे प्रति घण्टा बीस बुसल तथा दिन भरमें २४ हजार पाउण्ड आटा तैयार होता था।

सन् १८५६ ई०में पहले ब्लाकलावाके निकट ब्रुइजर मैदा पीसने लगी। इससे नित्य १८ हजार पाउण्ड मैदा अङ्गरेजीसेनाके भोजनके लिये तय्यार होने लगा। यह ष्टीमर वहां तीन महीना टिका रहा। कुल १८ लाख पाउण्ड गेहूं से १३३० हजार पाउण्ड मैदा तयार किया गया और बाकी गेहूं भूसी आदिके रूपमें चला गया। गेहूं का दाम तथा पिसाईकी मजदूरीका हिसाब लगा कर देखा गया तो आधे सेर आटेमें सरकारका एक पेनी खर्च पड़ा। ब्रुइजर ष्टीमरसे आटा पीसा गया और इधर एवाडंस ष्टीमरसे रोटियां तय्यार कर सेनाओंको दी जाने लगी।

वर्त्तमान् युगमें प्रायः सभी देशोंमें मैदा पीसनेकी कलें हो गई हैं। इस तरह तो आटा पीसनेकी कई तरहकी चक्कियां और कलें तय्यार हुई हैं, किन्तु दो तरहकी कलोंके पीसे हुए आटेका बड़ा आदर है। एक चक्की; (Grind stone) वा दूसरी रोलरमिल (Roller mill) का।

यह मैदा विविध देशोंमें विविध नामोंसे परिचित है। फ्रान्सीसी इसे Fleur de farine, जर्मन—Feines mehl Sammel mehl कहते हैं। हिन्दीमें—आटा, मैदा, पिसान; मलयमें—तपुङ्ग, पुलुर ; पुर्त्तगालीमें—Florde Farine; संस्कृतमें—गोधूमपिष्ट, समिता, समीद; सिंहली-भाषामें—तिगुपिट्टे; तामिल भाषामें—गोदम्ब मवु ; तेलगुमें—गोधूम पिण्डी; इटलीमें—सेमोलिना; बंगालमें—गोधूमपिष्ट, आटा, मैदा, सूजी नामसे यह प्रसिद्ध है। चालनीसे छाने हुए साफ बारीक अंशको मैदा कहते हैं। इसी तरह चावल पीस कर भी मैदा तय्यार करते हैं। बंगला में इसे सफेदा और हिन्दीमें चौरठ कहते हैं। कहीं कहीं मैदाके बदले यही चौरठ व्यवहार होता है। सिवा इसके रोगियोंके खानेके लिये जौ, साग्, आरारोट, शाठी, सिंघाड़े से भी आटा तय्यार होता है। केला, कन्द आदिका भी आटा बनता है, किन्तु बहुत कम।

भारतीय चावलकी तरह गेहूं (Whcat) या मैदा (Meal of wheat-flour) भी एक वाणिज्यकी सामग्री है। बहुत दिनोंसे गेहूं का व्यवसाय चला आता है। युरोप अमेरिका, भारत, चीन, ब्रह्म, जापान, आदि देशोंमें प्रायः सर्वत्र ही गेहूं की खेती और उसका व्यवसाय होता है। भारतीय आयुर्वेदमें भी इसका नाम आया है। भावप्रकाशमें गेहूं की उत्पत्ति आदिका पूर्ण विवरण लिखा हुआ है। गोधूम देखो।

प्राचीन हिन्दू भी गेहूं पीस कर आटा तय्यार करना जानते थे। भावप्रकाश, अभिधान चिन्तामणि, राजनिर्घण्ट, आदि वैद्यक ग्रन्थोंमें 'समिता' शब्दमें मैदेका उल्लेख है,—

"गोधूमा धवला धौताः कुट्टिताः शोषितास्ततः।
प्रोक्षिता यन्त्रनिष्पिष्टा श्चालिताः समिताः स्मृताः॥"

(राजनिर्घण्ट)

इससे स्पष्ट ही मालूम होता है, कि उस समयके मनुष्य गेहूं धो कर, कूट कर, सुखा कर यन्त्रसे पीस कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसे छान कर मैदा बनानेका उपाय जानते थे। किन्तु कहीं ऐसा कोई सुदृढ़ प्रमाण नहीं मिलता, कि यह लोग मैदा तयार कर किसी दूसरे देशोंमें भेज वाणिज्य करते थे। फिर भी इङ्गलैण्ड आदि युरोपके सुदूर देशोंमें गेहूं को रफ्तनी की जाती थी। इसके प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं। इस गेहूं की वाणिज्य-रक्षाके लिये इङ्गलैण्डमें सर्व प्रथम तृतीय एडवर्डने सन् १३६०-६१ई०में (34th Edw, III c, २०) कानून बनाया। इसके बाद भी इस कानूनका आदर होता आया है। यह यूरोपमें Corn-law and Corn Tade कहा जाता है।

मैदान (फा० पु०) १ धरतीका वह लंबा चौड़ा विभाग जो समतल हो और जिसमें पहाड़ी या घाटा आदि न हो, दूर तक फैली हुई सपाटभूमि। २ वह लंबा चौड़ा भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय अथवा इसी प्रकार का और कोई प्रतियोगिता या प्रतिद्वन्द्विताका काम हो। ३ वह स्थान जहां लड़ाई हो, युद्धक्षेत्र। ४ रत्न आदि का विस्तार, जवाहिरकी लम्बाई चौड़ाई। ५ किसी पदार्थका विस्तार।

मैदानी—पंजाबप्रदेशके बान्नु जिलान्तर्गत एक पर्वतश्रेणी इसका दूसरा नाम सिनगढ़ या चिचाली भी है। बान्नु उपत्यकासे पूरबमें अवस्थित रह कर कुरम और गंभीला को सिन्धुसे अलग करती है। इसका सबसे ऊंचा शिखर कालाबागसे १६ मील पश्चिम समुद्रपृष्ठसे ४७४५ फुट ऊंचा है। इस शैलमालासे आध कोस दक्षिण मैदान नामक एक गिरि है जो समुद्रकी तहसे ४२५६ फुट ऊंचा है। यहां मैदान नगर (लौहगढ़) है। यह अक्षा० ३२° ५१' उ० तथा देशा० ७१° ११' ४५" पू०के बीच पड़ता है। मियांवालीसे एक रास्ता निकला है जो तङ्गदेरा गिरिसङ्कट हो कर बान्न उपत्यका तथा वहांसे मैदानी शिखरके दक्षिण तक चला गया है।

मैदालकड़ी (हिं० स्त्री०) औषधके काममें आनेवाली एक प्रकारकी जड़ी। यह सफेद रंगकी और बहुत मुलायम होती है। वैद्यकमें इसे मधुर, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक और पित्त, दाह, ज्वर, तथा खांसी आदिको दूर करनेवाली माना है।

मैधातिथ (सं०पु०) १ मेधातिथि सम्बन्धीय। २ सामभेद।

मैधाव (सं० पु०) मेधावीका पुत्र।

मैधावक (सं० पु०) मेधा, धृतिशक्ति।

मेध्यातिथ (सं० क्ली०) सामभेद।

मैन (हिं० पु०) १ कामदेव। २ मोम। ३ रालमें मिलाया हुआ मोम। इससे पीतल वा तांबेकी मूर्त्ति बनानेवाले पहले उसका नमूना बनाते हैं और तब उस नमूने परसे उसका सांचा तैयार करते हैं।

मैनफल (हिं० पु०) १ मझोले आकारका एक प्रकारका झाड़दार और कंटीला वृक्ष। इसकी छाल खाकी रंगकी, लकड़ी सफेद अथवा हलके भूरे रंगकी, पत्ते एकसे दो इञ्च तक लम्बे और अण्डाकार तथा देखनेमें चिड़चिड़े के पत्तोंके समान, फूल पीलापन लिये सफेद रंगके, पांच पंखड़ियों वाले और दो या तीन एक साथ मिले होते हैं। इसमें अखरोटकी तरहके एक प्रकारके फल होते है जो पकने पर कुछ पीलापन लिये सफेद रंगके होते हैं। इसकी छाल और फलका व्यवहार ओषधिमें होता है। २ इस वृक्षका फल। इसमें दो दल होते हैं और इसके बीज बिहीदानेके समान चिपटे होते हैं। इसका गूदा पीलापन लिये लाल रंगका और स्वाद कड़ुआ होता है। इस फलको प्रायः मछुए लोग पीस कर पानीमें डाल देते हैं, जिससे सब मछलियां एकत्र हो कर एक ही जगह आ जाती है और तब वे उन्हें सहजमें पकड़ लेते हैं। यदि ये फल वर्षा ऋतुमें अन्नकी राशिमें रख दिये जांय तो उसमें कीड़े नहीं लगते। वमन करानेके लिये मैनफल बहुत अच्छा समझा जाता है। वैद्यकमें इसे मधुर, कड़ुआ, हलका, गरम, वमन कारक, रूखा, भेदक, चरपरा, तथा विद्रधि, जुकाम, घाव, कफ, आनाह, सूजन, त्वचा रोग, विषविकार, बवासीर और ज्वरका नाशक माना है।

मैनशिल (हिं०पु०) मैनसिल देखो।

मैनसिल (हिं०पु०)एक प्रकारकी धातु। यह मिट्टीकी तरह पीली होती है और यह नेपालके पहाड़ोंमें बहुतायतसे होती है। वैद्यकमें इसे शोध कर अनेक प्रकारके रोगों पर काममें लाते हैं और इसे गुरु, वर्णकर, सारक, उष्णवीर्य, कटु, तिक्त, स्निग्ध, और विष, श्वास, कुष्ठ ज्वर, पाण्डु, कफ तथा रक्त दोष-नाशक मानते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्याय—मनोज्ञा, नागजिह्वा, नैपाली, शिला, कल्याणिका, रोगशिला, गोला, दिव्यौषधि, कुनटी, मनोगुप्ता।

मैना (हिं० स्त्री०) काले रंगका एक प्रकारका प्रसिद्ध पक्षी। इसकी चोंच पीला वा नारंगी रंगकी होती है, समूचा शरीर चिकने काले परसे ढका होता है। यह पक्षी उतना सुन्दर नहीं होने पर भी सिखाने पर मनुष्यकी तरह मीठी बोली बोल सकता है। इसीलिये लोग इसे पोसते हैं। कोई कोई पक्षी अपने स्वाभाविक शक्तिसे इस प्रकार बोलता है मानो कोई आदमी बोल रहा हो। राधाकृष्ण आदि देव नाम, अपने पालनेवालेके घरके सभी लोगोंका नाम जिसके मुंहसे जिस तरह सुनती है, अपने अभ्यास-बलसे ठीक उसी तरह बोलती है। उसे सुननेसे अकसर गुरुजनकी बोलीका भ्रम हो जाता है।

इङ्गलैण्डमें इस जातिके पक्षीको Mino Bird, जावामें वित्त और मेञ्चो तथा सुमात्रामें टिओङ्ग कहते हैं। पक्षितत्त्वविदोंने इस जातिके पक्षियोंको शाखाचारी (inses Sorial पक्षिश्रेणीमें शामिल करके oracias दलमें निबद्ध किया है।

स्थानभेदसे मैनामें आकृतिगत बहुत विलक्षणता देखी जाती है। जावा, सुमात्रा और पूर्व समुद्रस्थ सभी द्वीपोंमें जो मैना पाई जाती है उसकी आकृति भारतीय पहाड़ी मैनासे स्वतन्त्र है।

पूर्वद्वीपमें मिलनेवाली मैनाकी चोंच स्वभावतः छोटी और मजबूत होती है। लम्बे मस्तकमें दो छोटी छोटी आंखें हैं। दोनों पैर छोटे होने पर भी भारतीय मैनाके जैसे हैं। पूंछ छोटी होती है, मस्तकके ऊपर कलंगी, कानके पास और पीठ पर पीले चमड़ेका दाग तथा दोनों पंखके अग्रवर्त्ती दो पर हलदी रंगके दिखाई देते हैं।

भारतीय मैनाके दोनों पैर और पूंछ अपेक्षाकृत लम्बी होती है। किसी किसी पक्षितत्त्वविद्ने इनमें बहुत थोड़ा फर्क देख कर Eulabes *Indicus*, Mino Dumonatii, Gracula, Calva, Sturnus *Indicus* आदि नामोंसे श्रेणीविभाग किया है।

मैना साधारणतः कीड़ा, सत्त और पक्का फल खाना पसन्द करती है। किसी किसी पहाड़ी मैनाको बकरेका मांस खाते देखा गया है। यह सहजमें पोस मानती है। हिमालयके पहाड़ी प्रदेश और आसामसे उनके बच्चेको पकड़ कर पक्षिव्यवसायी शहरमें बेचते हैं। इन सब बच्चोंका पालना बहुत कठिन है। क्योंकि, अपने घोंसलेमें पाले पोसे जाने पर वह जैसा सबल और फुरतीला होता है, वैसा गृहस्थके पींजरेमें रह कर नहीं होता।

पोस माननेके साथ साथ वह मनुष्यकी बोलीका अनुकरण करना सीखती है। मार्सडन साहबने लिखा है, कि ऐसा कोई भी पक्षी नहीं जो स्पष्टरूपसे मैनाकी तरह मनुष्यकी बोलीका अनुकरण कर सकता हो*। Bontius साहब जावामें एक मुसलमान-रमणी द्वारा पाली गई मैनाको देख कर चमत्कृत हो गये थे। *M.* Lesson-ने इस प्रकार और भी एक पक्षीको मलय-भाषा में बोलते सुना है।

२ एक जाति जो राजपूतानेमें पाई जाती है और मैना कहलाती है।

मैनाक (सं० पु०) मेनकाया अपत्यं पुमान् मेनकायां भव इति वा मेनकाअण, पृषोदरादित्वात् साधुः। १ पुराणानुसार पर्वतका नाम जो हिमालयका पुत्र माना जाता है। कहते हैं, कि इन्द्रसे डर कर यह पर्वत समुद्रमें जा छिपा था; इस कारण यह अब तक सपक्ष है। लंका जाते समय समुद्रकी आज्ञासे इसने हनुमानजीको आश्रय देना चाहा था। पर्याय—हिरण्यनाभ, सुनाभ, हिमवत् सुत। मेनका देखो।

२ हिमालयकी एक ऊंची चोटीका नाम। इस पर मेक्षिलवर्द्धिनी नामकी देवमूर्त्ति प्रतिष्ठित है।

(बृहत्नीलतन्त्र १३ अ०)

मैनाकस्वसृ (सं० स्त्री०) मैनाकस्य स्वसा। पार्वती।

(हेम)

---

* "It has the faculty of imitating human speech in greater perfection than any other of the feathered tribe." Eng. *Cy.* Nat. vol. 11 p 139.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैनागढ़—मेदिनीपुर जिलान्तर्गत एक प्राचीन बड़ा गांव। यह तमलुकके पश्चिम सुवर्णरेखा नदीके किनारे अवस्थित है। मैनराजवंशके अधिकार-कालमें इस स्थानने गढ़ और नाना देव-मन्दिरोंसे परिशोभित हो कर अपूर्व श्रीको धारण किया था। घनरामकृत धर्ममङ्गल पढ़नेसे इस राजवंशके प्रताप और प्रतिपत्तिका विषय मालूम हो जाता है।

राजा गोवर्द्धन वाहुवलीन्द्र इस प्राचीन राजवंशके प्रतिष्ठाता थे। पहले वे उक्त जिलेके सवङ्ग परगनेके जमींदार थे। युद्ध और सङ्गीत-विद्यामें विशेष पारदर्शिता देख कर उस समयके स्वाधीन महाराष्ट्र-सरदार महाराजदेव राजा वहादुरने इन्हें राजा और वाहुवलीन्द्रको उपाधि दी तथा मैना (मैना चौंगरा) परगना पारितोषिक दे कर सम्मानित किया।

गोवर्द्धनके मरने पर उनके पुत्र राजा परमानन्द वाहुवलीन्द्र सिंहासन पर बैठे। वे सवङ्गका परित्याग कर मैनामें आ कर वस गये। यहां उनका वनाया हुआ मैनागढ़ प्रासाद आज भी विद्यमान है। राजा परमानन्दके वाद यथाक्रम माधवानन्द, गोकुलानन्द, कृपानन्द, जगदानन्द, व्रजानन्द, आनन्दानन्द और राधा श्यामानन्द वाहुवलीन्द्र आदि मैनागढ़के राजपदको अलंकृत कर गये हैं।

राजा राधाश्यामानन्दके पितामह व्रजानन्द वाहुवलीन्द्रसे मैनाराजवंशकी समृद्धिका ह्रास हुआ। उनके शासनकालमें मेदिनीपुर जिलेमें भीषण वाढ़ और दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ था जिससे मैनागढ़में हाहाकार मच गया था। राजा दुर्भिक्षप्रपीड़ित प्रजाओंके प्राण वचानेमें ऋणजालमें फंस गये थे। इधर प्रजा भी जीविकार्जनमें अकृतकार्य हो राज्यसे भाग रही थी। इस दुर्भिक्षके समय अर्थाभावके कारण उन्होंने सवङ्ग और मैना सम्पत्तिका कुछ अंश वेच डाला। किन्तु उनके पूर्ववर्त्ती राजे देवमन्दिर-स्थापन, पुष्करिणी खनन और ब्रह्मोत्तर दान करके मैनागढ़ राजवंशकी ख्याति अर्जन कर गये हैं। इन पूर्वपुरुषोंमेंसे किसी एक व्यक्तिने ताम्रलिप्तराजको युद्धमें परास्त कर उनसे श्रीरामपुर आदि नौ ग्राम छीन लिये थे। पूर्वतन राजाओंमें लाडसेनका नाम विशेष प्रसिद्ध है। १८८१ ई०में राजा राधाश्याम वाहुवलीन्द्रके मैनागढ़ और तमलुक भूसम्पत्तिकी आय २० हजार रुपये थी। वृद्ध राजा बड़े दयालु थे, इस कारण सभी प्रजा उन्हें श्रद्धाकी दृष्टिसे देखती थी। उनके तीनों कुमार 'छत्रपतिराज' कहलाते थे।

मैनामती—त्रिपुरा राज्यके अन्तर्गत एक गिरिमाला। यह पहले त्रिपुराराज्यकी सम्पत्ति समझी जाती थी।

मैनामती—वङ्गराज माणिकचांदकी महिषी। इनकी धर्मचर्याकी विशेष ख्याति है।

मैनाल (सं० पु०) जालिक, धीवर।

मैनावली (सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त। इसका प्रत्येक चरण चार तगनका होता है।

मैनिक (सं० पु०) मीनं हन्तीति मीन (पत्तिमत्स्य मृगान् हन्ति पा ४।४।३५) इति ठक्। जालिक, जो मछली पकड़ कर अपनी जीविका चलाता हो।

मैनी—वम्बईप्रदेशके सतारा जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० १७° १६´ उ० तथा देशा० ७४° ३४´ पू०के मध्य एक छोटी नदीके किनारे अवस्थित है।

मैनेय (सं० पु०) जातिभेद।

मैन्द (सं० पु०) १ एक असुर, कंसका अनुचर। भगवान्ने कृष्णरूपमें इसका संहार किया था। (हरिवंश ४१ अ०)

२ एक प्रकारका वन्दर।

मैन्दहन् (सं० पु०) मैन्दं हन्तीति हन् क्विप्। विष्णु।

मैनपुरी—युक्तप्रदेशके छोटे लाटके शासनाधीन एक जिला। यह आगरा विभागके अन्तर्गत है। भूपरिमाण १६६७ वर्गमील है। इसके उत्तरमें एटा जिला, पूरवमें फर्रुखावाद, दक्षिणमें एटावा जिला और जमुना नदी तथा पश्चिममें आगरा और मथुरा जिला है। मैनपुरी नगर जिलेका विचार-सदर और वाणिज्यकेन्द्र है।

गङ्गा और जमुनाके दोआवमें रहनेके कारण समूचे जिलेकी भूमि ऊँची है। अङ्गरेजी-राज्यमें खेती वारीकी सुविधाके लिये जङ्गल काट कर समतलक्षेत्र वनाया गया है।

दोआवके अन्यान्य जिलोंकी तरह यहांकी मिट्टीको तह चार भागोंमें विभक्त है, जैसे—मटियार (कीचड़), भूर (वलुई), दुमट (दलदल) और पिलिया (थाड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दलदल)। जमुना तथा शर्शा, अनङ्गा, सेनगार, रिन्द, कालीनदी और ईशान नदके सिवा यहां और भी हदके आकारकी कितनी झीलें हैं। इन्हीं झोलोंसे दोनों किनारोंकी जमीन पटाई जाती है जिससे खेतमें पंक पड़ जाता है। स्थानीय ग्वाले कृषिजीवी होने पर भी गाय भेड़ आदि पालते और दस्युवृत्ति द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं।

गङ्गासे दो नहर काट कर इस जिलेमें लाई गई है। एटावा-ब्रांच नहर सेनगार और रिन्द नामक दो नदी तथा कानपुर-ब्रांच रिन्द और ईशान नदीके मध्य देश हो कर बह गई है। अलावा इसके निम्न गङ्गा-नहर (Lower Ganges Canal) जिलेके उत्तर-पूर्व कोन हो कर बहती है; इसलिये काली-नदीकी बहुतसी शाखाओंसे वहांका प्रदेश पटता है। इस प्रकार प्रचुर जलकी सुविधा होनेसे खरीफ और रब्बी बहुतायतसे उपजती है। एतद्भिन्न ईख और रुईकी खेती भी काफी होती है। कृषिजात सब प्रकारके शस्य, रुई, नील और घीकी यहांसे बहुत जगहोंमें रफ्तनी होती है। यहां यूरोपियोंकी देख-रेखमें नील और सोरा तैयार हो कर बिकता है। अलावा इसके रुईसे सूता, चूड़ी, हुक्का, गड़गड़ा और काठकी बनी बहुत-सी वस्तु विक्रीके लिये तैयार होती है। मैनपुरी, सरिसागञ्ज, सिकोहाबाद, कड़हाल और फरहा नामक नगर यहांका वाणिज्यभाण्डार है। सरिसागंजकी हाट गवादि पशु, स्फटिककी माला, चीनी, नमक, रुई और चमड़ेकी बिक्रीके लिये प्रसिद्ध है। यह सब पण्यद्रव्य नाव द्वारा नाना स्थानोंमें भेजा जाता हैं। इष्ट-इण्डियन रेलवे कम्पनीका सिकोहाबाद और भदान नगरमें दो स्टेशन है जिससे वाणिज्य द्रव्य भेजनेमें बड़ी सुविधा होती है।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। कहते हैं, कि पाण्डवोंका यहां आधिपत्य था। प्राचीन नगरके निदर्शन स्वरूप जो सब टूटे फूटे स्तूप दिखाई पड़ते हैं उनमेंसे किसी किसीमें उस भारतीय युद्धकी कीर्त्ति उल्लिखित है। इन सब खण्डहरोंसे बहुत स्मृति-निदर्शन आविष्कृत हुए हैं जिनसे अनुमान होता है, कि इन सब स्थानोंमें बौद्ध-प्राधान्य-युगके बहुत पहले भी आर्यसभ्यता थी। आर्य हिन्दूगण यहां जो नगरकी स्थापना कर राजत्व कर गये हैं, वर्त्तमान ध्वंसावशेष ही उनका अन्यतम निदर्शन है।

कन्नौज-राज्यकी महासमृद्धिके समय यह स्थान हिन्दू-राजाओंके अधीन था। इस कन्नौज-राजवंशके सौभाग्यसूर्य जब डूब गये तब कन्नौजराज्य राप्री और भोनगांवके दो सामन्तोंके शासनाधीन हुआ। उस प्राचीन-कालमें यहां मेव, भर और चिराड़ आदि आदिम जातियोंका वास और प्रभाव विस्तृत था। बादमें १५वीं सदीमें चौहान राजपूतोंने उन्हें परास्त कर अपना प्रभुत्व फैलाया। चौहान कुलके अभ्युदय होनेके पहले हीसे इस जिलेके पश्चिम प्रांतके वन-प्रदेशमें युद्धप्रिय अहीर जाति रहती थी। आज भी वहां इस जातिका वास देखा जाता है।

मुसलमान-प्रभाव विस्तृत होनेके बादसे ही इस जिलेका धारावाहिक प्रकृत ऐतिहासिक उपाख्यान संग्रह किया जाता है। ११६४ ई०में राप्रीमें मुसलमान शासनकर्त्ता नियुक्त हुए। उसके बाद दिल्लीके मुसलमान राजाओंके अधीनस्थ शासनकर्त्ताओंने इसका शासनकार्य परिचालित किया। सुलतान बहलोललोदीके राजत्वकालमें (१४५०-१४८८ ई०में) यह जिला दिल्ली और जौनपुर राजसरकारोंकी अधीनता स्वीकार कर दोनोंको ही सेनासे मदद पहुंचाता था। लोदी राजवंशका प्रभाव फैलनेके बाद मुगलोंके भारत-आक्रमण पर्यन्त राप्री नगर उक्त लोदीवंशके अधीन रहा। १५२६ ई०में मुगल सम्राट् बाबरशाहने इस स्थान पर अधिकार किया। तदनन्तर कुछ समयके लिये शेरशाहके पुत्र कुतब खाँ अफगानने इस जिलेको मुगलोंके हाथसे छीन लिया। कुतब खां द्वारा मैनपुरी नगरी नाना सौधमालासे विभूषित हुई थी। आज भी उसका टूटा फूटा खंड पड़ा है। शेरशाह द्वारा सताये जाने पर हुमायूं भारत लौटे और मैनपुरी पर अधिकार कर बैठे। सम्राट् अकबरशाहने इसे आगरा और कन्नोज सरकारमें मिला लिया। बाद उसके उन्होंने यहांके लुटेरोंका दमन करनेके लिये बहुत-सी सेना भेजी। बाबरवंशधरोंका शासन-प्रभाव औरङ्गजेबके समयसे अधिक बढ़ा चढ़ा तो था पर इस-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाम धर्मकी प्रतिष्ठा यहां न जमने पाई। यह कि कुछ मुसलमान जमींदारोंको छोड़ जो राज-सरकारसे पुरस्कारस्वरूप भूमि पाते थे, यहांके स्थानीय अधिवासियोंमें और कोई भी मुसलमान धर्म-में दीक्षित न हुए। अकबर शाहके वंशधरोंके शासन-कालमें राप्री नगर श्रीभ्रष्ट हो कर जनशून्य हो गया तथा एटावा नगर समृद्धिसम्पन्न हो कर राजधानीमें परिणत हुआ।

दोआबके अपरापर स्थानोंके साथ धीरे धीरे यह जिला भी १८वीं शताब्दीके अन्तमें महाराष्ट्रोंके कब्जेमें आ गया था। बाद उसके वह अयोध्या राज्य-के अधिकारमें आया। १८३१ ई०में जब अयोध्याके वजीरने अङ्गरेजराजको पार्श्ववर्त्ती प्रदेश छोड़ दिया तब मैनपुरी नगरी समग्र एटावा जिलेका विचार सदर हो गई। अङ्गरेजोंके अधिकारमें आनेके बाद १८०४ ई०में होल्करने इस पर चढ़ाई कर दी। इसके बाद सिपाही-विद्रोहको छोड़ यहां और कोई विशेष शासन विप्लव न घटा।

अङ्गरेजोंके दखलमें आनेके बाद शासन विभागकी सुशृङ्खलाके लिये इस जिलेके कुछ भाग निकाल कर एटा और एटावा जिला संघटित किया गया तथा मैन-पुरी नगरीके चारों ओरके ११ परगनोंको ले कर वर्त्तमान जिला गठित हुआ। मैनपुरीके चौहान राजा अङ्गरेज-गवर्मेण्ट द्वारा यहांके तालुकदार नियुक्त हुए। इस समय अङ्गरेजोंका राजस्व तथा दीवानी और फौजदारी विचार-विभागके नियमोंको कष्टकर जान स्थानीय राज-पूत जमींदार अङ्गरेजोंके विरुद्ध उठ खड़े हुए। अङ्गरेजों-ने उन्हें सजा दे कर अपने वशमें किया था। इसी जमीं-दार-दलनसे सिपाही-विद्रोहके समय गंगाकी नहर काटना यहांकी उल्लेखयोग्य घटना है।

१८५७ ई०की १२वीं मईको मेरटकी हत्याकाण्ड तथा २२ मईको अलीगढ़का विद्रोह-संवाद मिला। यह संवाद पाते ही ९ नम्बरकी देशी पलटन इस विद्रोह-में शामिल हो गई। बाद उसके जब झांसीसे विद्रोहदल यहां आ पहुंचा तब अङ्गरेज लोग मैनपुरी को छोड़ आगरा भाग गये। झांसीकी सेनाके नगर पर धावा बोलनेके समय वहांके अधिवासी बड़ी दक्षता-के साथ नगरकी रक्षामें तत्पर थे। विद्रोहियोंको भगा कर पुनः अङ्गरेज-शासन प्रतिष्ठित होने तक चौहानराज-ने स्वयं यहांका शासनकार्य चलाया था। १८५८ ई०में विद्रोह दमनके बाद जब अङ्गरेजराज राज्यरश्मि धारण कर धीर गतिसे राजविधि परिचालित करने लगे तब मैनपुरी राजने अङ्गरेजोंके हाथ आत्मसमर्पण किया। उसी समयसे यहां शान्ति है तथा दोनों दलोंमें मित्रता चली आती है।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह मैनपुरी, घिरोर और करौली परगनोंको ले कर गठित है। यहां रिन्द और ईशान नदी एवं कानपुर और गंगाकी नहर बहती है। भूपरिमाण ३४६ वर्गमील है।

३ उक्त जिलेका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० २७° १४ १५″ उ० तथा देशा० ७९° ३ ५″ पू० ग्रांडट्रङ्क रोडके आगराकी शाखा पर अवस्थित है। प्राचीन मैनपुरी नगरी और उसके पासके माखम-गञ्जको ले कर वर्त्तमान मैनपुरी नगरी बनी है। प्रवाद है, कि पाण्डवोंके समय मैनदेवन यह नगर बसाया। आज भी मैनदेवकी प्रतिमूर्त्ति स्थापित है।

१३६३ ई०में असौलीसे चौहान राजपूत लोग यहां आ कर रहते थे। उन्होंने जहां दुर्ग बनाया था उसके निकटका स्थान क्रमशः नगर बन गया। १८०२ ई०में यह नगर एटावा जिलेका सदर बनाया गया। १८०३ ई०में राजा यशवंत सिंहने माखमगञ्ज स्थापन किया। १८०४ ई०में होल्करने नगर लूट कर जला डाला। अंगरेजों-के दखलमें आनेके बाद बड़ी विपत्ति झेल कर यह नगर श्रीसम्पन्न हो गया है। नगरके उपकण्ठस्थ राइकेशगंज और लेनगंज Mr. Raikes और Mr. Lane-के नाम पर प्रतिष्ठित है।

यहांके राजपूत और अहीर अपनी कन्याकी हत्या कर विवाहके खर्चसे छुटकारा पाते थे। १८७५ ई०की प्रचारित राजदण्ड-विधिका उल्लङ्घन कर यहांके अधिवा-सियोंने यह वीभत्स कार्य किया था।

मैपाड़ा—रङ्गालके कटक जिलान्तर्गत एक नदी। ब्राह्मणीकी दक्षिण शाखा इसी नामसे वंगोपसागरमें गिरती है। इसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरी तरफ बंसगढ़ नामक खाड़ी अवस्थित है। मद्रास-से देशी नाव चावल बेचनेके लिये मैपाड़ा मुहानेमें आया करती है। इस नदीमुख पर मैपाड़ा नामक एक छोटा द्वीप भी है। यह अक्षा० २०° ४१′ ३०″ उ० तथा देशा० ८७° ६′ १५′ पू०के मध्य अवस्थित है।

मैमन (सं० पु०) सौवीर गोत्रे वर्त्तमानस्य मिमतस्य अपत्यं ण (फायटाह्वतिमिमताभ्यां ण फिञौ। पा ४।१।१५०) सौवीर गोत्रीय मिमतका अपत्य। इस अर्थमें फिञ् प्रत्यय भी होता है जिससे 'मैमतायनि' पद बनता है।

मैमनसिंह—बङ्गालप्रदेशके ढाका विभागान्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २३°५७′ से २५° २६′ उ० तथा देशा० ८९° ३६′ से ९१° १६′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६३३२ वर्गमील है। इसके उत्तर गोरा पर्वतमाला, पूर्वमें श्रीहट्ट और त्रिपुरा, दक्षिणमें ढाका और पश्चिममें यमुना नदी है। मैमनसिंह नगर वा नशीराबाद इस जिलेका सदर है।

इस जिलेका अधिकांश स्थान समतल है। प्रायः सभी जगह श्यामल शस्यक्षेत्र नजर आता है। बहुत-सी नदियों और नहरोंके जिलेके मध्य बहनेसे जमीन बहुत उर्वरा हो गई है। इस प्रदेशका एकमात्र मधुपुर जङ्गल वा गढ़गुजालिस खेती-बारी लायक नहीं है। यह जंगल ढाका जिलेके उत्तरसे ले कर मैमनसिंहके मध्य देशमें ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। इसका तलदेश साधारण क्षेत्रसे अपेक्षाकृत ऊंचा है। ऊंचाई सब जगह एक-सी नहीं है, पर इतना जरूर है, कि कोई भी स्थान १०० फुटसे अधिक ऊंचा नहीं। असंख्य शालवृक्ष इस जंगलमें देखे जाते हैं। इसकी लम्बाई प्रायः ४५ मील और चौड़ाई ६ से १६ मील है। रकबा ४०० वर्गमीलसे ऊपर होगा। ग्रीष्म और वर्षाकालमें यह जंगलमय स्थान बहुत अस्वास्थ्यकर रहता है, अन्यान्य ऋतुओंमें आवहवा अच्छी नहीं रहती।

यमुना नदी दावकोवा नामक स्थानसे इस जिलेमें घुसती है। पीछे वह उत्तर दक्षिणाभिमुखी हो प्रायः ९४ वर्गमील रास्ता तै कर सलीमाबाद तक आई है पण्यद्रव्यवाही नावें सभी समय यमुनामें आती जाती हैं। वर्षा ऋतुमें इसकी चौड़ाई इतनी बढ़ जाती है, कि कहीं कहीं छः मीलसे भी अधिक देखी जाती है। यमुना में प्रखर स्रोत बहनेके कारण प्रति वर्ष चर पड़ जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी इस जिलेके उत्तर-पश्चिम कराईबाड़ीके समीप हो कर दक्षिणकी ओर तोक तक बह गई है। मेघना नदीका विस्तार इस जिलेमें बहुत थोड़ी दूर तक है।

मैमनसिंहकी जमीन साधारणतः तीन श्रेणीमें विभक्त है, जैसे—१ बलुई, २ दोरस, ३ मतियार। इनमें-से प्रथम श्रेणीकी जमीन नदीके किनारे अवस्थित है। इसमें नील और पटसन उपजता है। २य श्रेणी जला-भूमि है। इस जमीनमें बोरो धान लगता है। ३य श्रेणी-की जमीन सबसे अच्छी है। वहां धान खूब उपजता है। मधुपुर जङ्गलके समीप किसी किसी स्थानमें लौह-मिश्रित लाल मिट्टी देखनेमें आती है।

इस जिलेके पूर्व भागमें जलमय स्थान तो बहुतसे हैं, पर उनमें हवड़ा-बिल ही उल्लेखनीय है। बहुत घना जंगल होनेके कारण इस जिलेमें तरह तरहके जंगली जन्तुओंका वास देखा जाता है। पहले नदीके किनारे चरके ऊपर बहुतसे बाघ भालू रहते थे। अभी बाघकी संख्या बहुत घट गई है। चीता, हरिण, जंगली भैंस, सूअर आदि अधिक संख्यामें देखे जाते हैं। गारो और सुसङ्ग पहाड़ पर हाथी रहता है। वहांसे प्रति वर्ष बृटिश सरकार हाथी पकड़ कर लाती है। पहले केवल वहांके राजाको ही हाथी पकड़नेका अधिकार था, पर अभी गवर्मेण्टने उसे उठा दिया है। अब जो चाहे वह हाथीका शिकार कर सकता है।

प्राचीन कालमें यह जिला प्राग्ज्योतिष या कामरूप राज्यके अन्तर्गत था। प्राग्ज्योतिषके एक प्रसिद्ध राजा भगदत्त कुरुक्षेत्रके महाभारत युद्धमें लड़े थे। वे किरातों-के राजा थे और उनका राज्य समुद्र तक फैला हुआ था। उनकी राजधानी गौहाटी (आसाम)-में थी, परन्तु उनके प्रासादका स्थान मधुपुरके जंगलमें बतलाया जाता है जहां प्रति वर्ष मेला लगता है।

पुराने ब्रह्मपुत्रका केवल पश्चिमी भाग बल्लाल सेनके दखलमें था, पूर्वी भाग नहीं। सम्भवतः इसी कारण पश्चिमी भागमें बल्लालसेनकी चलाई हुई कुलीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रथा पाई जाती है लेकिन पूर्वी भागमें यह प्रथा नहीं दीख पड़ती।

सन् ११९९ ई०में मुसलमानोंका बङ्गालमें प्रवेश हुआ सही, पर पूरव बंगाल उनके शासनमें न आया। १३५१ ई०में शमसुद्दीन इलियस शाहने समूचे सूबे पर अधिकार जमाया और ढाकाके पास सोनारगांव पूरव बंगालके सूबेदारोंका काम हुआ। पूरव बंगालमें बलवा होता रहा और महमूद शाहने १४४५ ई०में इसको फिरसे विजय किया। उसका वंश १४८७ तक राज्य करता रहा और उस समय यह प्रान्त मुज्जमाबाद सूबेके अन्तर्गत रहा। स्थानीय लोगोंका कहना है, कि सुलतान हुसैन शाह और उसके लड़के नशरत शाहने पूरव मैमनसिंह फतह किया था। हुसैन शाहने इस जिलेकी दक्षिणी सीमाके पास इकडालामें एक किला बनवाया और वहांसे अहमोंके विरुद्ध सेना भेजी। कहा जाता है, कि हुसैनके नाम पर हुसैनशाही परगना कायम हुआ और नशरतशाही आदि २२ परगनोंका नाम उसके लड़केके नाम पर रक्खा गया। जो हो, पूरव बंगाल पर पूर्ण विजय न हो पाई थी। १६वीं सदीके उत्तरार्द्धमें इसमें अनेक स्वाधीन राजे उठ खड़े हुए जिनके सरदार भुइंया कहलाते थे। इन भुइँयोंमें ईशा खां प्रसिद्ध था। इसीने मैमनसिंहके प्रसिद्ध वंशकी स्थापना की थी। वह वंश पीछे हैबत नगर और जंगलवारीका दीवान साहब कहलाया। इन लोगोंका राज्य दूर तक फैला हुआ था। राल्फफिच साहब १५८६ ई०में यहां आये थे उन्होंने ईशा खांको सभी राजोंमें श्रेष्ठ बतलाया है। उस समय दूसरा प्रसिद्ध भुइंया गाजी खानदानका एक सरदार था जो ढाकाके भावल और मैमनसिंहके राज भावल परगनेका शासन करता था। १५८२ ई०में पैमाइशके समय टोडरमलने मैमनसिंहको सरकार बजुहामें मिला दिया।

१७६५ ई०में बङ्गालकी दीवानी पाने पर मैमनसिंह इष्टइण्डिया कम्पनीके हाथ आया और निआवत नामक हल्केमें मिला लिया गया। १७६५ ई०के करीब मैमनसिंह जिला संगठित हुआ और यहां एक कलक्टर नियुक्त हुए। १७९१ ई०में ढाकासे कलक्टरकी अदालत मैमनसिंह लाई गई। इस जिलेमें तबसे शासन सम्बन्धी बहुत कुछ परिवर्त्तन हुए हैं। १८६६ ई०में सिराजगंज थाना इससे निकाल कर पबना जिलेमें तथा बोगरा और ढाका जिलेसे दीवानगंज और अटिया थाना निकाल कर इसमें मिलाये गये।

ऐतिहासिक चिह्न इस जिलेमें बहुत कम देखनेमें आता है। केवल मट्टोका एक पुराना किला है जिसका घेरा करीब २ वर्गमील होगा। यह सम्भवतः ५०० वर्ष पहले पहाड़ी जातियोंका हमला रोकनेके लिये बनवाया गया था।

इस जिलेमें ८ शहर और ९७७० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ४० लाखके करीब है। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछा पड़ा हुआ है। १८८१ ई०से लोगोंका इस ओर कुछ कुछ ध्यान आकृष्ट हुआ है। अभी कुल मिला कर ३ हजारसे ऊपर स्कूल हैं। इसमेंसे २ शिल्प कालेज, १५० सिकेण्ड्री और बाकीमें प्राइमरी स्कूल हैं। मैमनसिंह जिला स्कूल, नसिराबादका कालेज और टङ्गैलका प्रमथा मनमथ कालेज प्रधान हैं। इनके अतिरिक्त ४० अस्पताल भी हैं।

इस जिलेमें चावल और पटसन बहुतायतसे उत्पन्न होता है। यहांके कलक्टर साहबकी रिपोर्टसे मालूम होता है, कि पहले जो सब जमीन परती रहती थी अभी उसमें पटसन काफी उपजता है। फिर यहां तिल, सरसों, तम्बाकू, ईख आदिका भी अभाव नहीं है। रुई, सुपारी, नारियल, चीनी, गेहूं आदि अन्यान्य देशोंसे आमदनी तथा चावल, पटसन, नील चमड़े, पीतल और तांबेके बरतन, घी आदि चीजोंकी यहांसे रफ्तनी होती है।

पूर्व समयमें किसोरीगंज और बाजितपुरका मलमल कपड़ा बहुत मशहूर था। दोनों जगह इष्ट इण्डिया कम्पनीकी कोठी थी। आजकल भी कहीं कहीं मलमल तैयार होता है। यहां अच्छी अच्छी शीतलपाटी और चटाई बुनी जाती है।

२ उक्त जिलेका एक महकूमा। यह अक्षा० २४° ७ से २५°११ उ० तथा देशा० ८९°५९ से ९०° ४९ पू०के मध्य अवस्थित है। इसमें नसिराबाद और मुक्तागाछा नामक शहर और २३६७ ग्राम लगते हैं। इसका अधिकांश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपजाऊ है। मधुपुर जंगल इसके दक्षिण पड़ता है।

३ उक्त जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २४° २५' उ० तथा देशा० ६०° २६' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ६६० एकड़ है। यहां २ प्राचीन हिन्दूदेव मन्दिर देखनेमें आते हैं। स्कूलके अलावा शहरमें दातव्य चिकित्सालय और म्युनिसिपल सिपाही रहते हैं।

मैया (हिं० स्त्री०) माता, माँ।

मैर (हि० पु०) १ सोनारोंकी एक जाति। (स्त्री०) २ सांपके विषकी लहर।

मैरता—राजपूताना मारवाड़ प्रदेशके अन्तर्गत एक विभाग और नगर। मन्दोर सामन्तराव दूधने इस नगरकी स्थापना की। बादमें वे ३६० गांव और नगर समन्वित यह विभाग अपने पुत्र जयमल्लको दे गये। यहांके राठोरगण मैरता नामसे प्रसिद्ध हैं। मारवाड़ इतिहासमें इनकी वीरत्व-काहिनी दी गई है। यहां बहुतसे मन्दिर आदिके निदर्शन हैं। मारवाड़ देखो।

मैरव (सं० पु०) मेरुसम्बन्धीय।

मैरवाड़—मारवाड़ प्रदेशका नामान्तर। मारवाड़ देखो।

मैरा (हिं० पु०) खेतोंमें वह छाया हुआ मचान जिस पर बैठ कर किसान लोग अपने खेतोंकी रक्षा करते हैं।

मैरावण (सं० पु०) असुरभेद, महीरावण।

मैरेय (सं० क्ली०) मारं काम जनयतीति मार-ढक्। निपातनात् साधुः। १ मदिरा, शराब। २ गुड़ और धौके फूलकी बनी हुई एक प्रकारकी प्राचीन कालकी मदिरा। सुश्रुतके मतसे इसका गुण तीक्ष्ण, कषाय, मादक, अर्श, कफ, और गुल्मनाशक, कृमि, मेद और वायुका शान्तिकर तथा गुरुपाक माना गया है।

३ सुरा और आसव प्रस्तुत कर इन दोनों प्रकारकी मदिराको एक बरतनमें एकत्र कर उसमें थोड़ा मधु मिलानेसे जो तैयार होता है उसे मैरेय कहते हैं। मद्य शब्दका पर्याय मैरेय है। सुतरां मद्य मात्रको ही मैरेय कहा जाता है। मैरेय शब्द साधारणतः क्लीवलिंगमें व्यवहृत होता है। कहीं कहीं पुंलिङ्ग भी होता है।

"तीक्ष्णः कषायो मदकृत् दुर्नाम कफगुल्महृत्।
कृमिमेदोऽनिलहरो मैरेयो मधुरो गुरु॥"

(सुश्रुत सूत्रस्था० ४५ अ०)

मैरेयक (सं० पु० क्ली०) १ मद्यभेद। २ वर्णसंकर जातिभेद।

मैरेयाम्बु (सं० क्ली०) काञ्जिकभेद, मैरेय शराब।

मैल (हिं० वि०) १ मलिन, मैला। (स्त्री०) २ गर्द, धूल, किट्ट आदि जिसके पड़ने या जमनेसे किसी वस्तुकी शोभा या चमक दमक नष्ट हो जाती है, मलिन करनेवाली वस्तु। ३ दोष, विकार। ४ फीलवानोंका एक संकेत। इसका व्यवहार हाथीको चलानेमें होता है।

मैलरवोरा (हिं० वि०) १ मैलको छिपा लेनेवाला, जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे। (पु०) २ वह वस्त्र जो शरीरकी मैलसे शेष कपड़ोंकी रक्षा करनेके लिये अन्दर पहना जाय। ३ साबुन। ४ काठी या जीनके नीचे रखा जानेवाला नमदा।

मैलन्द (सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।

मैला (सं० स्त्री०) नीलीवृक्ष।

मैला (हिं० पु०) १ गलीज, विष्ठा। २ कूड़ा कर्कट। ३ मैल देखो। (वि०) ४ जिस पर मैल जमी हो, जिस पर गर्द, धूल या कीट आदि हो। ५ विकार-युक्त, दूषित। ६ गंदा, दुर्गन्धयुक्त।

मैलाकुचैला (हिं० वि०) १ जो बहुत मैले कपड़े आदि पहने हुए हो। २ बहुत मैला, गंदा।

मैलापन (हिं० पु०) मैला होनेका भाव, गंदापन।

मैलापुर—मद्रास नगरके उपकण्ठस्थ एक गण्डग्राम। खृष्टान साधु सेण्ट थोमी (St Thome) के नाम पर इसका नाम सेण्ट थोमी पड़ा। आज वह मद्रासके सीमाभुक्त है। किसी किसीके मतसे यही प्राचीन मणिपुर है।

मैलावरम—मद्रासप्रदेशके कृष्णा जिलेका वेजवाड़ा तालुकके अन्तर्गत एक भूसम्पत्ति और नगर।

मैवङ्ग—आसामप्रदेशके उत्तर कछाड़ विभागके अन्तर्गत एक नगर। बराहल शैलश्रेणीके दो शिखरोंके मध्य यह अवस्थित है। १७वीं सदीमें कछाड़ी राजोंने हिन्दूसंस्रवके प्रभावसे स्पर्द्धित हो यहां राजधानी बसाई थी। पीछे इस देशकी राजशक्तिके अवसान होने पर मैवङ्ग नगर अवनतिकी चरमसीमा तक पहुंच गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभी यह जंगलसे ढक गया है। टूटा फूटा मन्दिर अब भी उस अतीत कीर्त्तिकी घोषणा कर रहा है।

१८८८ ई०में कुछ धर्मोन्मत्त कछाड़ीने यहां राज-विद्रोह खड़ा कर दिया। शम्भुदान नामक एक व्यक्तिने विविध रोगोंको आरोग्य करके अपनेको ईश्वर-प्रेरित घोषित किया। मूर्ख लोग इस बात पर तथा अलौकिक शक्ति पर मुग्ध हो कर उसके शिष्य बन गये। मैवङ्गमें उन लोगोंका आस्ताना कायम हुआ। इस उद्धत धर्मसम्प्रदायने धीरे धीरे ऐसा भयङ्कर रूप धारण किया, कि उनके अत्याचार और उपद्रवसे आस-पासके लोग तंग तंग आ गये। उनकी दस्युवृत्ति दमन करनेके लिये स्वयं डिपटी कमिश्नर सशस्त्र पुलिसोंके साथ मैवङ्गमें उपस्थित हुए। इस संवाद पर विद्रोहीदलने मैवङ्गका परित्याग कर उत्तर कछाड़के विचारसदर गुनजोङ्ग पर आक्रमण कर दिया। यहां पुलिसके साथ शम्भुदानके अनुयायिओंका एक युद्ध हुआ। युद्धमें तीन पुलिस कर्मचारी मारे गये पीछे उन आततायिओंने नगरको लूटा और जला दिया। इसके बाद उनके मैवङ्ग लौटने पर मेजर बाइड (Major Boyd)ने दलबलके साथ यहां छावनी डाली। दूसरे दिन सवेरे अङ्गरेजी सेनाने उनके आस्ताने पर चढ़ाई कर दी। मूर्ख विद्रोहीदलका विश्वास था, कि शम्भुदान अपने योगबलसे अंगरेजोंकी गोलीको हवामें उड़ा देंगे; किन्तु थोड़े ही समयके अन्दर उनका यह भ्रान्तविश्वास जाता रहा। संग्रामके बाद कछाड़ियोंका बलक्षय होता देख विद्रोहीदल रणस्थलसे भाग चला। युद्धमें मेजर बाइड घायल हुए और कुछ दिन बाद धनुष्टङ्कार रोगसे परलोकको सिधारे। शम्भुदानने पहले छिप कर अपनी जान बचाई, पर पीछे पुलिसने उसे पकड़ा और यमपुरको भेज दिया। उसका प्रधान वा धर्मगुरु मानसिंह था। सरकारने उसे कालेपानीकी सजा दी।

मैश्रधान्य (सं० क्ली०) एक प्रकारका खाद्य पदार्थ जो चावलोंके मेलसे बनाया जाता है।

मैसरम—निजाम राज्यके हैदराबाद तालुकके अन्तर्गत एक बड़ा गाँव। यह हैदराबाद नगरसे ५ कोस दक्षिणमें अवस्थित है। यहां निजामके वैतनिक सेनादलकी एक छावनी है। पहले महासमृद्धशाली महिषागम नगरी विद्यमान थी। प्राचीन हिन्दूमन्दिरको ध्वंसावशेष आज भी उस अतीत स्मृतिकी घोषणा करता है। मुगल बादशाह औरङ्गजेबने गोलकुण्डाको जीत कर यहांकी हिन्दूकीर्त्तिको नष्ट कर डाला तथा सबसे बड़े मन्दिरके ध्वंसावशेषसे एक मसजिद बनवाई। हैदराबादकी मक्का मसजिदमें यहांकी हिन्दूकीर्त्तिका निदर्शन पाया जाता है।

मैसूर—दक्षिण भारतके अन्तर्गत एक प्राचीन हिन्दूराज्य। अभी यह बृटिश सरकारके अधीन एक मित्रराज्य समझा जाता है। इस सामन्त राज्यकी नामनिरुक्तिके सम्बन्धमें अनेक किंवदन्तियां सुनी जाती हैं। कोई 'महिष उरु' वा महिष नामसे और कोई महिष असुर नामके अपभ्रंशसे प्राचीन महिसुर देशको नामोत्पत्ति बतलाते हैं। यह अक्षा० ११° ३६' से १५° २' उ० तथा देशा० ७४° ३८' से ७८° ३६' पू०के मध्य विस्तृत है। महिसुर नगरमें इस सामन्त राज्यकी राजधानी है, किन्तु विचार-विभाग बङ्गलूरमें है। महिसुरराज्य अङ्गरेजोंके अधिकारमें आनेके बाद बङ्गलूरकी श्रीवृद्धि हुई। यहां बृटिश-सरकारका एक सेनावास स्थापित है। इसमें १२८ शहर और २० हजार ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ६० लाखके लगभग है।

सारा महिसुर राज्य पूर्व और पश्चिमघाट-पर्वतमाला तथा नीलगिरिका अधित्यकामय सानुदेशपूर्ण देशभाग, समुद्रपृष्ठसे २ हजार फुट ऊंचा है। केवल कृष्णा और काबेरी अववाहिकाका मध्यवर्त्ती अधित्यकादेश ३ हजार फुट तक ऊंचा देखा जाता है। अधित्यका भूमिमें जहां तहां धानकी फसल लगती है।

उपरोक्त अधित्यकाभूमिमें कुछ गिरिशृङ्ग मस्तक उठाये महिसुर राज्यके विशाल समतल क्षेत्रकी रक्षा कर रहे हैं। शृङ्गोंमें नन्दिदुर्ग (४८१० फुट) और सवन दुर्ग (४०२४ फुट), राज्य-रक्षाके लिये हिन्दू प्रधान्यकालमें कवल दुर्ग, शिवगन्धा, चित्तल दुर्ग आदि सुदृढ़ गिरिदुर्ग स्थापित हुए थे। शत्रुओंके साथ बार बार युद्धमें लिप्त रहनेके कारण सवन दुर्ग इतिहासमें प्रसिद्ध हो गया है। सिर्फ कवलदुर्ग दुर्द्धर्ष बन्दियोंके चरम-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थान रूपमें निरूपित हुआ है। अलावा इसके मुला-इनागिरि (६३१७ फुट), कुदुरीमुख (६२१५ फुट), बाबा बुदनगिरि (६२१४ फुट), कालहत्ती (६१५५ फुट), रुद्रगिरि (५६९२ फुट), पुरुषगिरि (५६२६ फुट), मेर्त्तिगुद्द (५४५१ फुट) और बोद्दिनगुद्द (५००६ फुट), नामक कुछ ऊंचे शृङ्ग महिसुरराज्यमें अवस्थित हैं। बाबाबुदन वा चन्द्रद्रोण गिरिमालाके मध्य जागर नामक बहुत उर्वरा अधित्यका है।

महिसुर राज्य प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है, पश्चिम भागका पर्वतमालाका सानुदेशांश मलनाड़ तथा पूर्व भागका धान्य जलादि परिपूर्ण समतल क्षेत्र मैदान कहलाता है। इन सब विस्तीर्ण शस्यक्षेत्रोंमें जल देनेके लिये जहां तहां नहर काट कर लाई गई है। नदियोंमें कृष्णा, कावेरी, उत्तर और दक्षिण पेन्नार, पालार, गर्जिता, नेत्रवती, तुङ्गभद्रा, वेदवती, यागची, लोकपावनी, शरावती, सिमला, अर्कवती, लक्ष्मणतीर्थ, गुन्दल, कव्वनी, होन्नुहोले, चित्रावती, पापहनी आदि नदियाँ और शाखा नदियां प्रधान हैं। अलावा इनके और भी कितने छोटे सोते पहाड़ी ढालू-प्रदेशसे बह कर पूर्वोक्त नदियोंमें गिरते हैं।

नदियोंको अववाहिका-भूमि पर्वत-गह्वरगत तथा तीरभूमि पार्श्ववर्त्ती समतलक्षेत्रकी अपेक्षा ऊँची होनेके कारण उनके जलसे खेतीबारीमें उतना लाभ नहीं पहुंचता। बाढ़के समयके अतिरिक्त नहरमें उतना जल नहीं रहता, इससे नावें माल ले कर नहीं आ जा सकतीं। केवल तुङ्गभद्रा और कण्वनी नदीमें लकड़ी बहने लायक जल रहता है। कावेरी आदि बड़ी बड़ी नदियोंमें नाव आदिकी विशेष सुविधा नहीं होने पर भी उसका जल खेतीबारीमें बहुत काम आता है। बाँध खड़ा कर इस नदीका स्रोतोवेग रोक दिया गया है और उसीसे कृषिकार्यका काम बड़ी आसानीसे चलता है।

कोर्त्तागिरिसे हिरियुट और मोक्कलमुस नामक स्थानमें कुछ प्रस्रवण देखे जाते हैं। इस स्थानके दक्षिण भागमें पहाड़ी मट्टी खोदने पर जमीनके अन्दरसे जल निकलता है।

पश्चिमघाट पर्वतके समीप तरह तरहके वृक्ष, लता और जन्तुपरिपूर्ण विस्तीर्ण वनराजि विराजित है। पर्वत पर भिन्न भिन्न प्रकारका पत्थर और अबरक पाये जाते हैं। समतलक्षेत्र पर कहीं तो कंकड़ और कहीं रुई उत्पन्न होने लायक काली मिट्टी नजर आती है। आलावा इसके खनिज लोहे और स्वर्णादि धातुका भी अभाव नहीं है।

इस राज्यका कोई धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता, किन्तु प्राचीन शिलालिपि और ताम्रशासनादि पढ़नेसे मालूम होता है, कि उनमें जो स्थान वर्णित हैं, वे रामायण और महाभारतके समयसे ही प्रसिद्ध हैं। पौराणिक वर्णनसे ज्ञात होता है, कि यहां श्रीरामचन्द्रके सहचर बालिके भाई सुग्रीवका राज्य था। ई० सन्‌के ३री सदीमें बौद्धधर्म प्रचारकोंने यहां अपनी गोटी जमाई। पीछे यहां जैनप्रभाव विस्तृत हुआ। आज भी तरह तरहकी शिल्पयुक्त जैन और बौद्धकीर्त्ति उन सब युगोंकी प्रधानता सूचित करती हैं।

शिलालिपि, ताम्रशासन, राजवंशचरित्राख्यान, पाश्चात्य भौगोलिक टलेमीका वृत्तान्त और मुसलमान इतिहास पढ़नेसे दाक्षिणात्यके राजवंशोंका जो इतिहास मालूम हुआ है उसकी आलोचना करनेसे जाना जाता है, कि अति प्राचीन कालमें कादम्बवंशीय राजाओंने १४वीं सदी तक उत्तर महिसुरका शासन किया था। वनवासीनगरमें उनकी राजधानी थी। इतने दिनोंके शासनमें उन्होंने किस प्रकार महिसुर राज्यको समृद्धशाली बना दिया था, उसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। आगे चल कर उन्होंने चालुक्य राजाओंकी अधीनता स्वीकार की थी। कादम्ब-राजवंश देखो।

जिस समय कादम्ब-राजगण महिसुरका शासन करते, ठीक उसी समय कोयम्बतोर और समूचे दक्षिण-महिसुरमें गङ्ग वा कोंगु (किसीके मतसे चेड़)-वंशीय राजाओंका राज्य था। पहले कड़ूरनगरमें और पीछे कावेरी तीरवर्त्ती तालकड़ नगरमें उनकी राजधानी स्थापित हुई थी। ९वीं सदीमें चोलराजाओंके अभ्युदयसे कोंगुवंशका अधःपतन हुआ। शिलालिपि पढ़नेसे मालूम होता है, कि गङ्गवंशीय पूर्व राजे जैनधर्मावलम्बी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। २री सदीमें जैनधर्मका परित्याग कर उन्होंने सनातन हिन्दूधर्मका आश्रय लिया था।

पूर्व-महिसुरमें सुप्राचीन पल्लववंशीय राजे राज्य करते थे। वे ७वीं सदीमें चालुक्य राजाओंसे परास्त होने पर भी १०वीं सदी तक शत्रुपुञ्जके विरुद्ध डटे रहनेसे बाज नहीं आये।

चालुक्योंने ४थी सदीमें यहां आ कर अपना प्रभाव फैलाया। १२वीं सदी तक वे पूर्ण प्रतापसे यहांका शासन करते रहे। अन्तिम सदीमें वल्लालवंशीय सरदारोंने चालुक्यराजको परास्त कर उनका राज्य हड़प कर लिया। चोल और कलचूरी राजाओंने भी यहां कुछ समय तक राज्य किया था।

ये हयसाल वल्लालवंशीय राजे जैनधर्मावलम्बी, वीर और उन्नतत्रेता थे। वे वर्त्तमान सीमान्तर्भुक्त समस्त महिसुरप्रदेश तथा कोयम्बतोर, सलेम, धारवाड़ आदि राज्योंके कुछ अंशको जीत कर शासनकार्य्य चलाते थे। १६१० ई० तक उन्होंने द्वारसमुद्र (द्वारकावती पत्तन वर्त्तमान हलेवीड़) में राजपताका फहराई थी। उसी साल दिल्लीश्वर अलाउद्दीनके विख्यात मुगल-सेनापति मालिक काफूर जब दाक्षिणात्य जीतनेको आया तब उसने वल्लालराजको हराया और कैद किया तथा उसके राज्यको अच्छी तरह लूटा। उसके १६ वर्ष बाद महम्मद तुगलकके भेजे हुए मुसलमान सेनादलने द्वारसमुद्रको तहस नहस कर डाला। आज भी हयसालेश्वरका शिल्पमण्डित देवमन्दिर प्राचीन समृद्धिका परिचय देता है। इसके सिवा कुछ जैन और हिन्दू-मन्दिर प्राचीन जैन और हिन्दूयुगकी प्रधानता घोषित करते हैं।

हयसाल-वल्लालवंशकी अवनतिके साथ साथ दाक्षिणात्यमें तुङ्गभद्रा-तीरवर्त्ती विजयनगरमें एक और हिन्दू राजवंशका अभ्युदय हुआ। १३३६ ई० में वरङ्गल-राजके हुक्क और बुक्क नामक दो प्रधान कर्मचारीने विजयनगर आ कर राजपाट बसाया। हुक्क हरिहर नाम धारण कर सिंहासन पर बैठे। उसका प्रतिष्ठित यह राजवंश 'नरसिंह' वंश नामसे प्रसिद्ध हुआ। मुसलमान ब्राह्मनी राजवंश इस हिन्दूराजवंशका चिरशत्रु था। १५६५ ई०में दाक्षिणात्यके प्रसिद्ध चार शाही वंशोंने मिल कर विजयनगराधिप रामराजको तालिकोटकी लड़ाईमें हराया और मार डाला। उनके वंशधरगण दक्षिण भाग गये और वहां कमजोर होने पर भी पहले पेनुगोण्डामें और पीछे चन्द्रगिरिमें राजपाट बसाया। यहां रह कर उन्होंने कुछ समय तक विजेता मुसलमान-राजाओंके विरुद्ध हथियार उठाया था।

पेनुकोण्डाके नरसिंहवंशके अन्तिम राजाके शासन-प्रभावमें जब शिथिलता आ गई तब स्थानीय पलिगार-सरदार स्वाधीन होनेकी कोशिश करने लगे। इस समय दक्षिण महिसुरके उदैयारों, उत्तरमें केलड़ीके नायकों पश्चिममें बलम (मञ्जराबाद) के नायकों तथा चित्तलदुर्ग और तारिकेरके बेदर-सरदारोंने जब देखा, कि नरसिंहके राजप्रतिनिधि तिरुमलकी शक्ति कमजोर हो गई है, तब उन्होंने मिल कर १६१० ई०में उदैयरकी अधिनायकतामें श्रीरङ्गपत्तन दुर्गको आक्रमण और फतह किया। तभीसे मैसूरमें उदैयारके राजवंशकी प्रतिष्ठा हुई।

उक्त उदैयारके राजा विजयराजसे नौ पीढ़ी नीचे थे। प्रवाद है, कि भाई कृष्णराजके साथ विजयराज अपनी जन्मभूमि सौराष्ट्रके अन्तर्गत द्वारकासे १३९९ ई० में दाक्षिणात्य आये। ये लोग यादववंशीय क्षत्रिय थे।

विजयनगरके राजवंशके गौरव-रविका दाक्षिणात्य-गगनमें पूर्ण रूपसे उदय होने पर इस यादववंशने वीरताकी पराकाष्ठा दिखलाई थी। तदनुसार राजाके अनुग्रहसे उन्होंने हदनीस नामक स्थानका सामन्तपद प्राप्त किया। राजा उदैयार द्वारा श्रीरङ्गपत्तन अवरुद्ध होनेके पहले यादव सरदारोंने पुरगढ़ नगरमें एक दुर्ग बना कर उसका महिषासुर वा महिसुर नाम रखा। महिषमर्दिनीको महिसुर-राजवंशकी कुलदेवी देख कर अनुमान होता है, कि यादवगण महिषासुर-निधनकारिणी चामुण्डादेवीके विशेष भक्त थे। देवीके प्रति भक्तिवशतः ही वे लोग देवी नामके पक्षपाती हुए थे।

श्रीरङ्गपत्तनमें उदैयारराजवंशकी राजधानी स्थापित होने पर भी इतिहासमें उन्हें प्रकृत महिसुरका राजा बतलाया है। राजा उदैयार द्वारा श्रीरंगपत्तन विजयके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाद उनके वंशधर यामराज और कंठीराजने महिसुर राज्य-सीमाको बहुत कुछ बढ़ा दिया था। १६३८-१६५८ ई० तक कण्ठीराजने दोर्दण्ड प्रतापके साथ महिसुर राज्यका शासन किया। इस समय वे रात-दिन लड़ाईमें उलझे रहनेपर भी उन्होंने राजधानीकी सुरक्षाके लिये दुर्ग और चहारदीवारी बनवाई, टकसाल-घर खोले तथा राजस्व उगाहनेके लिये अच्छे अच्छे कार्य किये। उनके नामकी हीणमुद्रा, १७३१ ई०में जब मुसलमानोंने महिसुरको जीता था, उस समय यहांकी प्रचलित जातीय मुद्रा समझी जाती थी।

कण्ठीराजके पौत्र चिक्कदेवरायने प्रबल प्रतापसे ३४ वर्ष दक्षिणभारतका शासन किया। उनके राज्यकालमें १६८७ ई० को समस्त महिसुरवासी शैवधर्मको छोड़ कर वैष्णव हो गये थे। १७०४ ई० में चिक्कदेवरायका परलोकवास हुआ। वर्षों राज्य करके वे जिस विस्तृत राज्यकी स्थापना कर गये हैं उसका राजस्व प्रायः एक करोड़ रुपया था।

चिक्कराजके बाद उनके वंशके दो राजपुत्रोंने १७३१ ई० तक राज्य किया। पीछे प्रकृत वंशमें उत्पन्न भिन्न शाखाभुक्त रामराज नामक एक राजवंशधरको सिंहासन पर बिठाया गया। राज्यशासनमें अक्षम देख दलवाई (सेनापति) और दीवानने उन्हें तख्तसे उतार दिया और कबल दुर्गमें घेरा डाला। इसी अस्वास्थ्यप्रद स्थानमें उनकी मृत्यु हुई। अनन्तर चिक्क कृष्णराज नामक एक राजकुटुम्बको १७३४ ई० में महिसुरके सिंहासन पर अभिषिक्त किया गया।

सामन्तप्रधान चिक्क कृष्णराजके जमानेमें दाक्षिणात्यके सुप्रसिद्ध मुसलमान-सेनापति हैदरअलीने अपनी वीरता और रणकौशलसे १७६३ ई०में बेदनूरकी लड़ाईमें महिसुर-राजको परास्त कर राजसिंहासनको अपनाया और राजकोषको लूटा। हैदरने असाधारण प्रतिभाबलसे दक्षिणभारतमें जिस मुसलमान-शक्तिका विस्तार किया था उस सुख-ऐश्वर्यका उसके वंशधर टीपू-सुलतानको अधिक दिन भोग न हुआ।

हैदर और टीपूसलतान देखो।

१७९९ ई०के श्रीरङ्गपत्तन अवरोधकालमें टीपू सुल-

तानकी मृत्यु हुई। इस समय अङ्गरेजराजने महिसुरको जीत कर अरुकदु-वासी प्रांचोन हिन्दूराजवंशधर रामराजके पुत्र कृष्णराजको सिंहासन पर बिठाया। उसी सालसे ले कर १८१० ई० तक नाबालिग राजाका राज्य शासन करनेके लिये पूर्णीहया नामक एक मराठा ब्राह्मण राजमन्त्रीके पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने अपने अमित तेज और अध्यवसायसे राज्यकार्य चला कर राजकोषको भर दिया था। बालिग होनेपर राजाने राज्यभार अपने हाथ लिया तथा शासनविशृङ्खलताके कारण जो कुछ धन जमा था, कुल खर्च कर दिया। आखिर १८ १ ई० में अंगरेजराज स्वतः प्रवृत्त हो कर उनकी ओरसे राज्यशासन करने लगे। १८६८ ई० में उनके मरने पर बेत्तड़कोट राजवंशीय चिक्ककृष्ण अरसूके लड़के चामराजेन्द्र उदैयारको उन्होंने गोद लिया। कृष्णराजके छलसे महिसुरका शासनभार ग्रहण कर अंगरेजराजने शासनकी सुव्यवस्थाके लिये दो कमिशनर नियुक्त किये। किन्तु इससे राजकार्यमें बड़ी गड़बड़ी मची। पीछे १८३४ ई० में कर्नल मोरिसन एक मात्र कमिशनर नियुक्त हुए। उनके बाद सर मार्क कुबोन राजकार्यमें विशेष दक्षता दिखा कर अच्छा नाम कमा गये हैं। १८६१ ई० तक उनके शासनकालमें महिसुरराज्यमें कोई उच्छृङ्खलता दिखाई नहीं देती।

उसी साल बृटिशशासन प्रणालीसे राज्यशासन करनेके लिये बृटिश-सरकारने अच्छा प्रबंध कर दिया। कोर्ट आव डिरेक्टरकी अनुमतिसे देशी राजाके हाथ शासनविधि सौंपी गई। राजकार्य सुचारुरूपसे चलता है वा नहीं, इसको देखभाल करनेके लिये तीन विभागीय अंगरेज परिदर्शक नियुक्त हुए। इस समय गोद लेनेका अधिकार जिससे कायम रहे तथा बालक राजा सयाने होने पर स्वयं शासनभार ग्रहण कर सके, इसके लिये शासन-विधिमें बहुत हेर फेर हुआ। १८८१ ई०में महाराज चामराजेन्द्र उदैयारका अभिषेक कार्य यथारीति सम्पन्न हुआ। भारत राजप्रतिनिधिरूपमें मान्द्राजके शासनकर्त्ता उस समय उपस्थित थे। महिसुरके चीफ कमिश्नरने दीवानके हाथ कुल भार सौंप दिया। इस समय चीफ कमिश्नर और साधारण सचिवका पद जाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा। अलावा इसके शासनविषयमें और भी कितने परिवर्त्तन हुए थे।

उसी वर्ष महाराजके ऊपर राज्यशासनभार अर्पित होने पर भी राजकार्य विधिमें कोई हेर फेर नहीं हुआ। महाराज व्यवस्थापक सभाकी सलाहसे सभी काम काज करते थे। कोई नया कानून निकालनेमें उन्हें भारत सरकारकी सलाह लेनी पड़ती थी। वे राजस्वका अपव्यय नहीं कर सकते थे। महाराजकी निजस्व सम्पत्ति राजस्वसे अलग रहती थी। आज भी यहां शासनविभाग और विचारविभाग स्वतन्त्र है। एक यूरोपीय और देशीय विचारक हाईकोर्टकी प्रणालीके अनुसार विचार-कार्य करते हैं। महिसुर और सिमोगा नगरमें एक सिविल और सेसन जज अधिष्ठित हैं। बङ्गलूरका विचार कार्य चीफकोर्टके प्रधान विचारपतिको ही करना पड़ता है। प्रत्येक जिलेका शासनकार्य कुछ डिपटी-कमिश्नरके हाथ है। इसके अतिरिक्त एक जुडिसियल असिस्टेण्ट, मुनसिफ और आमिलदार स्थानीय दीवानी और फौजदारी का विचार करते हैं। प्रत्येक जिलेके मजिष्ट्रेटके अधीन पुलिस नियुक्त है। प्रत्येक थानेका कार्य एक एक सहकारी पुलिस कर्मचारी द्वारा चलता है। वर्त्तमान सामन्तका नाम है सर श्री कृष्णराज उडैयार बहादुर जी, सी, एस आई, जी, बी, ई।

राज्यके दूसरे दूसरे संस्कारोंमें जेलखाने, पूर्त्तविभाग, शिक्षाविभाग, पैमासीविभाग, आदिमें अच्छा प्रबन्ध है।

प्रतिवर्ष 'दशहरा' उत्सवके बाद प्रत्येक तालुकसे दो वा तीन प्रतिनिधि निर्वाचन करके एक सभा की जाती है। विचारविभागके अध्यक्ष 'दीवान' महाशय सबके सामने राज्यकी विचारविवरणी पढ़ते हैं तथा परवर्त्ती वर्षके राजकार्यमें कौन कौन अच्छे अच्छे काम करनेके लिये शासन-समिति बाध्य हुई है उसे भी वे उपस्थित लोगोंको सुनाते हैं। अन्तमें स्थानीय प्रतिनिधि अपने अपने देशका अभाव तथा अभियोग सभामें पेश करते हैं सभा जैसा उचित समझती है वैसा ही फैसला सुनाती है। वे सब कागज नत्थी करके रख दिये जाते हैं। इस प्रतिनिधि-सभामें जो कुछ पास होता है पहले उसका अंगरेजीमें अनुवाद कर पीछे जनताके समझनेके लिये देशी भाषामें रूपान्तरित किया जाता है।

यहांके आदिम अधिवासियोंमें पहाड़ी कुरुवोंकी संख्या ही अधिक है। ये लोग जंगलमें हासी नामक छोटी झोपड़ी बना कर रहते हैं। ये काले और ढेंगने होते हैं, सिर पर बाल रखते और जूड़ा बांधते हैं। स्त्रियां प्रायः जंगलसे बाहर नहीं निकलतीं। जेनु-कुस वगण उनकी एक शाखा है। फिर इरसिगर, सोसिगर आदि कुछ असभ्य जातियां हैं जो निर्जन प्रदेशमें रहती और जंगली जंतु पकड़ कर उसीसे गुजारा चलाती हैं।

मलनाद-प्रदेशमें होलियास मन्नालु और होन्नालु नामक कुछ आदिम जातियोंका वास है। ये लोग खेती बारी करके जीविका निर्वाह करते हैं। वोकलिग जाति ५० शाखाओंमें विभक्त है। ये लोग भी कृषिजीवी हैं। इस जातिकी संख्या महिसुर भरमें अधिक है। यहांके ब्राह्मण पञ्चद्राविड़ ब्राह्मणके अन्तर्भुक्त हैं।

यहांका हिन्दू सम्प्रदाय प्रधानतः तीन धर्मावलम्बी है, १ स्मार्त्त, २ माध्व और ३ श्रीवैष्णव। स्मार्त्तगण अद्वैत, माध्वगण द्वैत और श्रीवैष्णवगण विशिष्टाद्वैतमतपोषक हैं। वणिक् सम्प्रदायमें अधिकांश लिङ्गायत् हैं। ये लोग ब्राह्मणोंका सम्मान नहीं करते। इसके अतिरिक्त श्रावण गोलमें कुछ पुरोहित हैं। यहां गोमतेश्वर नामक एक बड़ी देवमूर्त्ति आज भी देखी जाती है। वस्ति वा जैनमन्दिरोंमें भी तीर्थङ्करादिकी प्रतिमूर्त्ति नजर आती है।

पहले लिखा जा चुका है, कि ई०सनसे पहले इस राज्यमें बौद्ध और जैन प्रभावका प्रचार था। ध्वंसावशिष्ट निदर्शन आज भी उस स्मृतिकी रक्षा किये हुए है। चालुक्यवंशके जमानेमें स्थापत्य-शिल्पविद्या उन्नतिकी चरमसीमा तक पहुंच गई थी। हयसाल बल्लालवंशीय राजाओंके शासनकालमें (१०००—१२०० ई०के मध्य) कुछ चारुशिल्पमय मन्दिर बनाये गये। उनमेंसे सोमनाथपुरका विख्यात मन्दिर राजा विक्रमादित्य बल्लाल द्वारा बेल्लूरका विष्णुमन्दिर १११४ ई०में राजा विष्णुवर्द्धन द्वारा, और द्वारसमुद्रका काइतेश्वर शिवमन्दिर राजा विजयनरसिंह द्वारा स्थापित हुआ था। अन्तिम शिवमन्दिरका निर्माणकार्य शेष होते न होते १३१०-११ ई०में मुसलमान सेनापति मालिक काफूरने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आ कर महिसुर पर आक्रमण कर दिया। यही कारण है, कि वह बड़ा मन्दिर समाप्त होने न पाया, अधूरा ही रह गया।

यहांके अधिवासी प्रधानतः कनाड़ी भाषामें बोल-चाल करते हैं। कहीं कहीं उस भाषामें भी तारतम्य देखा जाता है। कहीं पूर्वाड़ा-हालमें कनाड़ी अर्थात् ७वीं सदीकी शिलालिपि लिखित कनाड़ी भाषा है। कहीं हालेकनाड़ी या १४वीं सदीके शेष भागमें प्रवर्त्तित प्राचीन भाषा है। इस भाषामें सभी प्राचीन शास्त्र और महिसुरका अधिकांश शिलाफलक लिखे गये हैं और ३रा होसकण्णड़ अर्थात् वर्त्तमान प्रचलित कणाड़ी भाषा प्रचलित है।

पहले कहा जा चुका है, कि यहांके अधिवासी साधारण कृषिकार्य्य द्वारा जीविका निर्वाह करते हैं। सभी खाने लायक वस्तु यहांकी प्रजाओंसे उत्पन्न होती है। रागी अनाज ही अधिवासियोंका प्रधान भोजन है। अलावा इसके यूरोपीय वणिक्सम्प्रदायके यत्नसे ईख, नारियल, सिनकोना, रुई, तम्बाकू, दारचीनी, कहवे, ककोए आदिकी खेती होती है।

१८७५-७८ ई०में यहां काफी वर्षा न होनेसे दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। प्रजाका क्लेश दूर करनेके लिये खजानेसे ७ लाख रुपया खर्च किया गया। राजाने दया परवश हो दुर्भिक्ष पीड़ित प्रजाओंको ८० लाख रुपयेकी सम्पत्ति छोड़ दी तथा मैनसन हाउस रिलीफ फण्डसे १५ लाख ५० हजार रुपया ले कर खर्च किया गया।

अनाज आदिका वाणिज्य छोड़ कर यहां कागज, कांचकी चूड़ी, लाल मरक्को चमड़ा, कम्बल और पशमीनेका विस्तृत कारबार है। यहां अच्छे अच्छे सूतीके कपड़े भी तय्यार होते हैं। नावके अलावा रेल द्वारा वाणिज्य चलाया जाता है। मान्द्राज और मराठा-रेलवे-लाईन इस राज्य हो कर दौड़ गई है।

सैनिकशक्ति—१ली जून १९०३ को मैसूरकी सेनासंख्या ५०८९ थी जिनमें २०९३ गोरे और २९९६ देशी सैनिक थे। युद्धके ख्यालसे मैसूर नवां डिविजन (सिकन्दराबाद)-के अन्तर्गत है और वर्त्तमान समयमें भारतके प्रधान सेनापतिके अधीन है। इसे घुड़सवार और पैदल सेना तथा तोपखाना है। सैनिक-केन्द्र केवल बंगलोर है और वहां भोलन्टीयर राइफलकोर अर्थात् राइफलवाले स्वयं सेवकोंका सैन्यदल है। १९०३में स्वयं सेवक सैनिकोंकी संख्या प्रायः १५२५ थी। चिकमलगढ़ और सकलेशपुरमें भी राइफलवाले सैनिक हैं।

१९०४ ई०को सरकारी मंजूरीके अनुसार मैसूर २७२२ सैनिक रखता था जिनमें प्रायः आधे मुसलमान थे। सिलदार घुड़सवारोंको दो रेजिमेण्ट और बाढ़ पैदल सैनिकोंकी चार बटालियन है। स्थानीय घुड़सवार सैनिक मैसूरमें रहते हैं और बाढ़ बटालियन मैसूर, शिमोगा और बंगलोरमें रहती हैं।

युद्धविभागमें इष्टेका करीब १० लाख रुपया खर्च होता है।

शिक्षा—पहले तो यह राज्य शिक्षामें बड़ा पिछड़ा हुआ था परन्तु सम्प्रति मैसूर सरकारके प्रबन्ध और प्रयत्नसे शिक्षाका यहां अच्छा प्रचार हो गया है और हो रहा है। बंगलोरके सेंट्रल कालेज और मैसूरके महाराजा कालेज जो फष्ट ग्रेटके है और मद्रास विश्वविद्यालयसे सम्बन्ध रखते हैं विशेष उल्लेखनीय है। इनके अलावे और भी इस राज्यमें कई अच्छे अच्छे कालेज हैं और मैसूरमें ताताके फंडसे रिसर्च अर्थात् अनुसन्धान विभाग भी चलता है। प्राथमिक शिक्षा पर पूर्ण ध्यान दिया गया है और शिक्षामें इसे अब उन्नत कह सकते हैं।

२ उक्त राज्यके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० ११° ३६' से १३° ३' उ० तथा देशा० ७५° ५५' से ७७° २०' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५४९६ वर्गमील है। इसके उत्तरमें हसन और तुमकुर जिला, पूरबमें बङ्गलोर और मान्द्राजका कोयम्बतोर जिला, दक्षिणमें नीलगिरि और मलबार जिला तथा पश्चिममें कूर्ग है।

यहांका स्वाभाविक सौन्दर्य्य बड़ा ही मनोरम है। पहाड़ो अधित्यका और उपत्यकाभूमि घने जंगलोंसे, फलो फुली लताओंसे तथा हरे भरे अनाजोंसे शोभा दे रही है। पश्चिमघाट पर्वतके मलनादप्रदेशसे यह जिला पूरबकी ओर नीचा होता गया है। यहां कावेरी नदी घाट-पर्वतको लांघ कर नीचे गिरी है, वह स्थान शिवसमुद्र कहलाता है। यहां कावेरी शिवसमुद्र नामक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटे द्वीपको घेर कर समुद्रके किनारे नदीमुखमें श्रीरङ्ग तीर्थ नामक पवित्र डेल्टेको लांघती हुई बङ्गोपसागरमें गिरती है। इस नदीके वाम भागमें हेमवती, लोकपावती और सिमसा तथा दक्षिणमें लक्ष्मणतीर्थ, कव्वानी और होन्नूहोले नामक शाखा नदी बहती है।

पहले कहा जा चुका है, कि यह स्थान पर्वत-संकुल है। यहां श्लेट, दानेदार तथा तरह तरहके पत्थर देखनेमें आते है। पर्वतकी गुफामें लोहेका अभाव नहीं है। पर्वतसे जो नदियां निकली हैं उनमें कुछ कुछ सोना भी पाया जाता है। जंगलमें चन्दन, शाल आदिके वृक्ष ही अधिक देखे जाते हैं। बाघ आदि खूंखार जानवरोंको छोड़ कर यहांके जंगलमें बहुतसे जंगली हाथी पाये जाते हैं। लोग हाथीका शिकार करते और उन्हें बाजारमें ला कर बेचते हैं।

महाभारतके समय यह कावेरी नदी तथा उस पर अवस्थित तीर्थ बहुत प्रसिद्ध थे। किन्तु प्रकृत इतिहास सम्राट् अशोकके परवर्त्ती समयसे ही आरम्भ हुआ है। गाङ्गवंशके अवसानके बाद यथाक्रम चोल, चालुक्य, हयसालवल्लाल, विजयनगर-राजवंश और उदैयारोंने यहांका शासन किया।

इन उदैयार राजोंने विजयनगरके राजप्रतिनिधि श्रीरङ्गपत्तन पर अपना आधिपत्य जमाया। ये लोग पूर्वापर मुसलमानोंके साथ मित्रता करके राजकार्य चलाते थे। १६८७ ई०में इन्होंने औरङ्गजेबके सेनापति कासिम खाँसे ३ लाख रुपयेमें बङ्गलूर दुर्ग खरीद लिया। १६९९ ई०में दिल्लीके बादशाहने उदैयारराजको हाथी-दांतके बने सिंहासन पर बिठाया और राजसनद दी। १७०४ ई०में चिकदेवराजके मरने पर उदैयारराज दलवाईके हाथके खिलौने बन गये। १७९१ ई०में लार्ड कार्नवालिसने अङ्गरेजका सेनापति बन कर बङ्गलूरको अधिकार किया। दूसरे वर्ष उन्होंने और भी कितने दुर्ग टीपू सुलतानसे छीन लिये। १७९९ ई०में टीपूकी मृत्यु होने पर मार्किस आव वेलेस्लीने एक चार वर्षके नाबालिग राजकुमारको सिंहासन पर बिठा कर हिन्दूराज्यका प्रवर्त्तन किया।

इस जिलेमें २७ शहर और ३२११ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या १२ लाखसे ऊपर है। शहरोंमें महिसुर, श्रीरङ्गपत्तन, मलवल्ली और हुनसुरनगर प्रधान है। जिले भरमें ७ सौके करीब स्कूल और ३० अस्पताल है।

३ उक्त जिलेका एक तालुक, यह अक्षा० १२°७′ से १२°२७′ उ० तथा देशा० ७६°२८′ से ७६°२०′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३०६ वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। इसमें महिसुर नामक एक शहर और १७० ग्राम लगते हैं। यहां नारियल, सुपारी, केला तथा तरह तरहकी शाकसब्जी उत्पन्न होती है।

४ मैसूर राज्यकी राजधानी। अक्षा० १२°१८′ उ० तथा देशा० ७६°४०′ पू० श्रीरङ्गपत्तनसे ५ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है।

चामुण्डा पहाड़के नीचे विस्तीर्ण उपत्यका पर यह नगर बसा हुआ है। पर्वतके ऊपर चामुण्डा देवीका मन्दिर शोभती है। चामुण्डा देवीने महिषासुरको मार कर इसी पर्वत पर विश्राम किया था। इस पर्वतके समीप पुरोहितोंका वास और महाराजका विश्रामभवन दिखाई देता है।

यह देवमूर्त्ति महिसुर राज्यकी अधिष्ठात्री और राजाओंकी कुलदेवी है। मन्दिर चारों ओर पत्थरकी ऊंची दीवारसे घिरा है। गोपुर नामक सिंहद्वारके चारो बगल नाना देव-देवियोंकी मूर्त्ति अङ्कित है।

राजवंशके नियमानुसार इस मन्दिरमें राजकुमार और राजकुमारियोंका नामकरण होता है। देवी प्रस्तरमयी अष्टभुजा और सिंहवाहिनी है। असुरकी महिषाकृति देह मनुष्य-सी है। उसका पीठ सिंहकी ओर है और वह अपने मस्तककी घुमाकर देवीकी ओर देख रहा है। देवीने दाहिने हाथसे त्रिशूल पकड़ कर असुरकी छातीमें घुसेड़ दिया है और बांए हाथमें नागपाश ले कर उसे मजबूतीसे बांध रखा है। उनके अन्यान्य हाथोंमें नाना प्रकारके हथियार हैं। देवीके दोनों पैर सिंहके ऊपर हैं और सिंहकी पीठ असुरकी ओर होनेपर भी वह मस्तक घुमा कर असुरको पकड़े हुए है।

प्रतिवर्ष शारदीय दुर्गापूजाके समय यहां सैकड़ों वेदपारग ब्राह्मण इकट्ठे होते और नौ दिन याग, होम, श्रीसूक्त, भूसूक्त, मृत्युंजयसूक्त, पुरुषसूक्त और पञ्चाक्षरमंत्र जपते हैं। प्रति दिन चण्डीपाठ भी होता है। देवीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सामने वलि देनेका नियम नहीं है। निम्नश्रणीके मनुष्य पवतके नीचे पशुवलि देते हैं।

उक्त शारदीय पूजाको हम लोग नवरात्रव्रत कहते हैं। महाराजके प्रासादमें भी जो नवरात्रव्रत होता है वह भी सम्पूर्णरूपसे सात्त्विक पूजा है। देवीके मन्दिरके समीप नरसिंहदेवका मन्दिर है। चिक्कदेवराजने विष्णुमन्त्रमें दीक्षित होनेके वाद इस मन्दिरका निर्माण किया हांगा। मन्दिरकी वनावट वहुत अच्छी है।

राजाका विश्रमागार पवतके वहुत ऊंचे शिखर पर वना हुआ है। राजपरिवारवग जव देवीकी पूजा करने आते हैं तव इसी स्थानमें ठहरते हैं। पहाड़के समीप देवराज नामक ह्रद और उसके सामने स्वर्गीय राजाओं-के समाधिस्थान हैं। भूतपूर्व महाराज कृष्णरायकी समाधिके ऊपर जो अट्टालिका वनी है वह वहुत उत्कृष्ट है। महाराज जिस वड़े कूर्मासन पर वैठ कर जप किया करते थे वह उनकी समाधिके ऊपर रख दिया गया है और उस पर महाराजकी प्रस्तरप्रतिमूर्त्ति विराजमान है। दूसरे दूसरे राजाओंके भी यहाँ पर समाधि-मन्दिर देखे जाते हैं। वे लोग जिस जिस पत्थरके आसन पर वैठ कर जप करते थे, प्रत्येककी समाधिके ऊपर वह पत्थर रखा हुआ है।

यहांका 'दशहरा' उत्सव जनसाधारणके देखने लायक है। इस समय देश देशान्तरसे वहुत लोग जमा होते हैं। उस समय राजभवनके सामने लंबे चौड़े मैदानमें घुड़-सवार सेना कतारमें खड़ी होती है। उसके पीछे नंगी तलवार हाथमें लिये पाइक और पाइकके पीछे पैदल सेना और सबसे पीछे नकीव और ध्वजावाहक खड़े रहते हैं। इसके वाद महाराज वहुमूल्य मणिमुक्तादि खचित वस्त्रोंसे भूषित हो कृष्णराय उदैयारके हाथी-दांतके वने हुए सुन्दर कारुकार्ययुक्त सिंहासन पर वैठते हैं। उस समय तोप दागी जाती है। अनन्तर वैदिक ब्राह्मण राजाके चारों ओर खड़े हो कर वेदगानसे राजाको आशीर्वाद देते हैं। वारमें भांति भांति वाजे वजाये जाते हैं। सेना एक स्वरसे जयोच्चारण करती है। इस समय अङ्गरेज राजप्रतिनिधिके उपस्थित होने पर उन्हें सलामी तोपें दी जाती हैं। सम्भ्रान्त व्यक्तियोंका सम्मान करने-के लिये प्रधान सेनापति दरवाजेके सामने खड़े रहते हैं तथा वे दो अभ्यागत व्यक्तियोंको आदरपूर्वक दरवारमें लाते हैं।

अङ्गरेज-प्रतिनिधिसे नीचे सभी राजकर्मचारियोंको राजसम्मान दिखानेके लिये राजसिंहासनके सामने आ कर शिर झुकाना पड़ता है। राजा भी दाहिने हाथकी अंगलीसे अपना चिवुक स्पर्श कर सम्मान ग्रहण करते हैं। इसके वाद हाथी आदिकी तरह तरहका खेल शुरू होता है। यह सव हो जाने पर महाराज स्वयं समरवेश-में सेनासे परिवेष्टित हो एक निर्दिष्ट स्थानमें जाते और शमीवृक्षमें तीरका निशाना करते हैं। इस समय भी तोपध्वनि होती है। अनन्तर सभी विजयोल्लाससे मत्त हो राजभवन लौटते हैं। प्रथानुसार पान और सुपारी वांटनेके वाद सभा भङ्ग होती और महाराज उक्त सिंहा-सनका प्रदक्षिण, पूजा और प्रणाम कर अन्तःपुर जाते हैं। यही महाराजका नवरात्रव्रत है।

नगरके दक्षिण भागमें यहांका दुर्ग पड़ता है। १५२४ ई०में उदैयार राजाओंके यत्नसे वह दुर्ग वनाया गया है। दुर्गके समीप दलवाईकी खोदी हुई वड़ी दिग्गी है। १८०० ई०में महाराजके यत्नसे तथा यूरोपीय कारीगरोंके शिल्प-से दुर्ग और उसके भीतरके राजप्रासादका अङ्गसौष्ठव वढ़ाया गया। प्रासादके सामने 'सेज्ज' वा दशहरा उत्सवका वैठक-घर है। वह शिल्पनैपुण्ययुक्त काठके खंभोंसे सुसज्जित है। यहांका हाथी-दांतका वना हुआ सिंहासन देखने लायक है। कहते हैं, कि सम्राट् औरङ्ग-जेवने राजा चिक्कदेवराजके शौर्यपर प्रसन्न हो १६६६ ई०-में उन्हें यह यह सिंहासन दिया था। अभी वह सिंहा-सन सोने और चांदीके पत्तरोंसे विभूषित है। राज-प्रासादके मध्य 'अम्वाविलास' नामक दरवार घर तथा चित्रशाला विशेष उल्लेखनीय है। यह चित्रशाला प्राचीन राजप्रासाद समझी जाती थी। इसके चारों ओर जो मिट्टीकी दीवार थी उसे टीपू सुलतानने तोड़ दिया था। अभी उसका पुनः संस्कार किया गया है।

दुर्गके पश्चिम द्वारके सामने जगन्मोहन-महल नामक एक वड़ा महल है। यूरोपीय कर्मचारियोंके स्वागतके लिये भूतपूर्व महाराजने इस महलको वनवाया था, वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विश्रामभवन भी कहलाता था। महलके अन्दर जितने कमरे हैं सभी ऐतिहासिक घटनाके अच्छे अच्छे चित्रों-सजे हुए हैं। फिर राज-उपभोगके लायक उनमें अनेक से असबाब भी देखे जाते हैं। इसकी बगलवाला उद्यान और कुञ्जवन बड़ा ही चित्ताकर्षक है। नगरके पूर्वभाग-में पुराना रेसिडेन्सी महल है। उसमें अभी सेसनकोर्ट लगती है। उसके दक्षिण-पूर्वमें सर जेम्स गार्डनका नाया हुआ वर्त्तमान रेसीडेन्सी प्रासाद है। ऊंची भूमि पर होनेके कारण इस प्रासाद परसे समूचा नगर दिखाई देता है। कर्नलवेलेस्ली (ड्यूक आव वेलिङ्गटन)-ने अपने रहनेके लिये जो मकान बनवाया था उसमें अभी दीवानी अदालत बैठती है।

मैस्मेरतत्त्व—भौतिक क्रियाके जैसी एक प्रकारकी क्रिया। जिस शास्त्र द्वारा कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्तिका शरीर स्पर्श कर अथवा उसके शरीर पर हाथ फेर कर या अंगुलिसंचालन द्वारा उसके चित्तको अपने एकाग्र-चित्तके जैसा या अपने अभिमतके अनुवर्त्ती करनेमें समर्थ होता है उसे मैस्मेरतत्त्व (*Meesmerism*) कहते हैं। यह कार्य्य शरीरस्थ चौम्बिक-प्रवाहका (animal magnetism) केवल संकर्षणविकर्षण है। प्रसिद्ध फ्रेंच वैज्ञानिक और चिकित्सक फ्रेडरिक एन्टन मेस्मेर साहबने इस विज्ञानका आविष्कार किया था। इसीलिये उनके नाम पर यह नया विज्ञान मैस्मेरतत्त्व हुआ है।

किस वैद्युतिक शक्तिसे आत्मविभ्रमरूप यह चित्त-विकृति और बाह्यसंज्ञालोप होता है तथा शारीरतत्त्व (*Physiological*), निदानशास्त्र (*Pathological*) और आत्मविज्ञान (Psychological) तत्त्वका निदान-भूत जो मैस्मेरिक व्यापार देखनेमें आता है, उसके वास्त-विक कारणका आज तक निरूपण न हो सका है। जो हो, इसके द्वारा मनुष्य-शरीरसे एक ऐसे तत्त्वका प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है जिससे आश्चर्यजनक काय्य हो सकते हैं।

यह बात नहीं है, कि मैस्मेर साहबके आविष्कारके पहले इस शास्त्रका लोगोंको कुछ ज्ञान ही न था, परन्तु यह कहा जा सकता है, कि उक्त चिकित्सक महोदयने इस शास्त्रको शृङ्खलाबद्ध विज्ञानके रूपमें लोगोंको दिया और दृढ़तापूर्वक इसे एक वैज्ञानिकतत्त्व प्रमाणित कर दिया।

उन्होंने अपने उद्भावित इस भौतिक व्यापारका निदान स्वरूप एक काल्पनिक प्रतिनिधि (agent) या जन्य-पदार्थ स्वीकार कर लिया है। पश्चात् उस सर्वव्यापी प्रतिनिधि शक्तिको मूल उपादान कर उन्होंने अपने वैज्ञा-निक तत्त्वका इस प्रकार तर्क किया है; वे कहते हैं,—'जीव देहगत चुम्बकाकर्षणी शक्ति सम्पूर्ण जगत्में रसा-कारमें व्याप्त है। आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रादि, पृथिवी तथा जीवजगत्में परस्पर एक आन्तर्जातिक प्रभाव विद्यमान रखनेके लिये यह शक्तितरंग सहयोगिता (*Medium*) करती है। यह प्रवाह अविरामगतिसे चलता रहता है, किसी क्षण उसका रोध नहीं होता; अतएव उस शक्ति-प्रवाहके ह्रासके बाद पुनरुत्पत्तिकी सम्भा-वना नहीं रहती। यह ऐसा सूक्ष्मतम है, कि जगत्के सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म किसी वस्तुके साथ इसकी तुलना नहीं हो सकती। किन्तु यह शक्तिप्रवाह प्रकृतिमात्रका आकार धारण, विवर्द्धन और संवहन (receiving, propagating, commnicating all the impress-ions of motion) करनेमें समर्थ है और इसका भी ज्वार भाटा अर्थात् ह्रासवृद्धि (Susceptible of flux and reflux) होती है।

जीवदेह मात्र इस प्रतिनिधिकशक्तिस्रोतके कार्य्य-कारणके सम्बन्धाधीन अर्थात् इसका कार्य्यफल उपलब्ध करनेमें समर्थ है। जीवदेहके स्नायुमूलमें (into the substance of the nerves) स्वतः उद्रिक्त हो कर यह स्रोत शीघ्र ही स्नायुमण्डल पर आक्रमण करता है अर्थात् समग्र स्नायुमण्डलमें फैल जाता है।

विशेष परीक्षासे जाना गया है, कि मनुष्य शरीरका यह शक्तिप्रवाह चुम्बकके अनुरूप गुणविशिष्ट होता है। एवं इसके मध्यगत परस्पर विभिन्न और सम्पूर्ण पृथक् प्रकृतिकी शक्तिपरम्पराका अनुधावन करनेसे स्पष्ट मालूम होता है कि जैसे दो विशिष्ट केन्द्रोंसे ऐसे विभिन्न भावापन्न स्रोत नियमितरूपसे परिचालित होते हैं। इस जैविक चुम्बकशक्तिके कार्य्य और गुण, सजीव और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निर्जीव पदार्थमात्र एक शरीरसे दूसरे शरीरमें सञ्चालित किये जाते हैं। यह आकर्षण दूरवर्त्ती होने पर भी समप्रवाह है अर्थात् दो वस्तुओंके एक दूसरेसे बहुत दूर होने पर भी उन दोनोंके बीच एक आन्तरिक आकर्षणशक्ति विद्यमान रहती है इसलिये उन दोनोंमें कार्य्यकारण सम्बन्धकी रक्षाके लिये किसी माध्यमिक सूत्रकी आवश्यकता नहीं रहती। इच्छा करने पर यह दर्पणमें प्रतिफलित और परिवर्द्धित किया जा सकता है। सञ्चयन, केन्द्राभिकुञ्चन, विस्फारण, प्रसारण, सञ्चालन और शब्दाभिवर्द्धन आदि गुण इसमें आरोपित किये जाने पर भी कुछ दोष नहीं होता यद्यपि यह रसतरंग समग्र जगत्में व्याप्त ही है तौ भी यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है, कि सभी जीवोंमें इसका समान प्रभाव नहीं है अर्थात् इस जैविक चुम्बकशक्तिकी ह्रास और वृद्धि होती है। ऐसे कितने ही स्वल्पसंख्यक पदार्थ या जीव हैं जो ऐसे विपरीत गुणवाले हैं, कि उनकी उपस्थिति मात्रसे दूसरे व्यक्ति पर विन्यस्त चैतन्याप हारिका मैस्मेरिक शक्तिका अपनोदन होता है। यह जैविक चुम्बकशक्ति स्नायविक दुर्बलता तथा दूसरे दूसरे रोगोंको बहुत जल्द आरोग्य कर सकती है। इससे आषधोंकी क्रियाशक्ति पूर्णताको प्राप्त होती है। स्वास्थ्यवृद्धिके विषयमें यह ऐसी कार्यकारी है, कि चिकित्सक बड़ी आसानीसे रोगको दूर कर सकते हैं। यहां तक, कि वे इसके द्वारा जनसाधारणके स्वास्थ्य, अत्यन्त जटिल रोगीकी भी उत्पत्ति और परिवृद्धिके कारण तथा रोगोंका प्रकृतिका पता लगा सकते हैं। इस रोगोंके लक्षणादिकी परीक्षा कर वे सहजमें रोगोंको दूर कर सकते हैं। रोगीके प्राणनाशका डर नहीं रहता और न उसे किसी प्रकारकी विपत्ति ही घेर सकती है। रोगीकी अवस्था, शारीरिक ताप तथा स्त्री वा पुरुषत्वके सम्बन्धमें किसी प्रकारका विचार करना निष्प्रयोजन है। कहनेका तात्पर्य यह कि यह जैविक चुम्बकशक्ति जागतिक मङ्गलस्वरूपमें मनुष्यजातिके रोगारोग्य और रक्षाविषयके निदानभूत एक सार्वजननी जीवशक्तिका संचार कर देती है।

डा० मैस्मेर चुम्बकशक्तिके सञ्चालनप्रभाव द्वारा लोगोंको जिस उपायसे उस शक्तिके वशीभूत (magnetised) करते थे, वह बड़ा ही आश्चर्यजनक है। उसके बाहरवाले जिन सब घरोंमें लोग चिकित्साके लिये आते थे उन घरोंके बीचमें १ वा १॥ फुट ऊंचा ओक लकड़ीका बना हुआ एक गोल बरतन गड़ा रहता था। उस बरतनमें कांचका चूर्ण, लोहेका चूर्ण और चुम्बक घटित जल (Magnetised Water)-पूर्ण बोतलको कई तहोंमें बैठा कर एक ढकनीसे उसका मुंह बंद कर देते हैं। ढंकनमें बहुतसे छेद रहते हैं और उन छेद हो कर भिन्न भिन्न ऊंचाईकी चिकनी छड़ पिरोई रहती है। उन छड़ोंका ऊपरी भाग टेढ़ा रहता है तथा इच्छानुसार उसे उठाया जा सकता है। इस काठके बरतनको बाकेट (baquet) वा मैगनेटिक टब कहते हैं।

इस बरतनके चारों ओर रोगियोंको पानीमें एक एक बाद खड़ा कर प्रत्येकके हाथमें एक एक लोहेके छड़ दे। उसके अगले भागको रोगस्थानमें लगाना पड़ता है। इस समय एक रस्सीसे रोगियोंको घेरना अथवा दूसरेकी वृद्धागुंलिको पकड़वा कर कतारमें खड़ा रखना उचित है। इस समय घरके भीतर पियनोपार्टके साथ गीत आदि शुरू होता है। शक्तिसञ्चालक (Magnetiser) १०।१२ इञ्च लम्बा बहुत बारीक और चिकनी लोहेकी शलाका ले कर वहां खड़ा रहता है।

उस बैकेटका गह्वर आकर्षणी शक्ति (magnetic virtues)से भरा रहता है। इसका भीतरी भाग इस प्रका सजा रहता है, कि इस शक्तितरङ्ग (magnetic fluid)-को आसानीसे उसमें सञ्चित कर सकते हैं। वे सब शलाका विभिन्न शरीरमें बरतनके शक्तिपुञ्जके प्रवाह-प्रदानकी परिचालक (Conductors) है। वह रस्सी जिससे रोगी घिरा रहता है उसका अथवा वृद्धांगुली-शृङ्खलसञ्चालित शक्तितरङ्गका कार्यफल वृद्धिका उपाय मात्र है। शक्ति-सञ्चालकको पहले हीसे अपने वाद्य यन्त्रको आकर्षणी-शक्तितरङ्ग द्वारा सञ्चारित (charged) कर रखना चाहिये। बाद कसङ्गीतमें जितनी ही निपुणता दिखायेगा, सुर निकलनेके साथ साथ शक्तिको उतनी ही अधिकता और वृद्धि होगी। बाजा बजानेका उद्देश्य है रोगियोंका चित्त एकाग्र करना अथवा उन्हें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निश्चल शान्तमूर्त्ति धारण करना। वे सङ्गीतकी सुमधुर तानसे विमोहित हो कर धीरे धीरे आकर्षणी शक्तिके क्रियाफलभागी लायक हो जाते हैं। शक्ति-सञ्चालकके हाथमें जो शलाका रहती है उससे अपने शरीरमेंसे निकली हुई शक्तितरङ्ग एककेन्द्रीभूत की जाती तथा उसीसे उस चौम्बिक शक्तिका प्रभाव बढ़ता है।

इस प्रकार बैंकेटके चारों ओर विभिन्न श्रेणीमें खड़े मनुष्य एक समयमें आकर्षणी शक्तिका प्रभाव लाभ करते हैं। उन वक्र लौहदण्डोंमें प्रवाहित टबकी चुम्बकशक्ति; देहवेष्टनी रज्जुका सञ्चारणप्रभाव; अगुंष्ठ-शृङ्खल; वाद्योद्यमके मनोहारी शब्दोत्थान प्रसङ्गमें वायुके साथ चुम्बकीय शक्तिका संमिश्रण; रोगीका मुखमण्डल, मस्तकके ऊपर, मस्तकका पिछला भाग, रोगस्थान और सभी अवयवोंमें शक्तिसञ्चालकका दण्ड वा अंगुलि सन्ताड़न और केन्द्राभिमुख-दृष्टि (always observing at the direction of the poles); शक्तिसञ्चालकका तीव्र कटाक्ष आदि मनुष्यके शरीरमें चुम्बकीय शक्ति प्रवहनका अच्छा उपाय है। फिर कमर और पेट पर अंगुलि वा हाथका दबाव देनेसे मेस्मेरिक-शक्तिका सञ्चार होता है। कभी देरसे और कभी ५।७ घण्टेके बाद भी उस शक्तिका आवेश दिखाई देता है।

रोगी वा पात्रविशेष (Patients)-को मैस्मेरिक प्रक्रियाधीन करनेके बाद उसकी देहमें भिन्न भिन्न अवस्थामें भिन्न भिन्न भाव उत्पन्न हुआ करता है। कुछ तो धीर और शान्त भावसे मेस्मेरिक-प्रभाव सहा करता है और कुछ खांसी, थोड़ी वेदना तथा स्थानिक वा सारे शरीरमें उत्ताप अनुभव करता है तथा कभी कभी पसीना भी निकलते देखा गया है। कोई विचलित, कोई आक्षेप द्वारा प्रतिहत हो जाता है। शक्ति-सञ्चालनकालमें अधिकांश व्यक्तिके जो आक्षेप उपस्थित होता है वह दीर्घकालस्थायी और अधिक प्रबल हो जाता है। कभी कभी हाथ पैर वा सारे शरीरमें अनियमित ऊर्द्ध्वाधःक्षेप होता है। इस समय शोक दुःख, उल्लास, आमोद, चित्तवृत्तिकी अवनति तथा कभी कभी मोह, आलस्य और निद्राभाव (Drowsiness) आ कर उपस्थित होता है।

पात्र (Patients)-की आक्षेपावस्थाकी पर्य्यालोचना करनेसे चमत्कृत होना पड़ता है। जिन्होंने नहीं देखा है, वे कभी भी उसकी प्रकृतिका अनुभव नहीं कर सकते। एक ओर रोगी वा पात्र जिस प्रकार आक्षेप द्वारा विचलित होता है, दूसरी ओर उसी प्रकार वे शान्ति-सुखसे निद्राकी कोमल गोदमें सोये हुए मालूम होते हैं। इन दोनों भावोंकी तुलना करनेसे विस्मित होना पड़ता है। इधर आक्षेपके कारण अस्थिरता जैसी वेदनादायक है उधर गाढ़ी नींदका हीला उसी प्रकार सुख-ऐश्वर्यका भावद्योतक है। दुर्घटना विशेषका पुनः पुनः आवर्त्तन तथा समवेदना विशेष आश्चर्य-जनक है। कभी कभी रोगी एक दूसरे पर झपड़ता, आपसमें हंसता और अनाप शनाप बकता है। ये सब कार्य्य शक्तिसञ्चालकके प्रभावसे ही हुआ करते हैं। पात्रकी अघोरावस्था वा मस्तिष्ककी जड़ता कैसी भी क्यों न हो, शक्तिसञ्चालकने आदेश, मुखभङ्गी वा हाथ पैरका हाव भाव देख कर उसीके अनुसार वह शक्तिमान् पात्र अपने चित्तकी विभिन्न अवस्थाका विकाश करता है।

मेस्मेर उद्भावित इस तत्त्वकी यथार्थताकी मीमांसा करनेके लिये फरासीसी गवर्मेण्टने M. Baiby, Lavoisier, Franklin आदि कई मनीषियोंको नियुक्त किया था। उनकी रिपोर्टमें लिखा है, "तथा कथित मिथ्या प्रतिनिधिक शक्ति प्रकृत और प्रचलित चुम्बक-शक्ति नहीं है। उनके अत्यन्त अद्भुत शक्तिकुण्डकी बलाबल सूचिका (Needle) और इलेक्ट्रोमिटर (Electrometer)-के द्वारा परीक्षा कर देखा गया है, कि उसमें चौम्बिक-शक्ति वा ताड़ित-शक्तिका बिलकुल ही अस्तित्व नहीं। यह मानवेन्द्रिय वा रासायनिक अथवा तान्त्रिक प्रक्रियाका अतीत है। परन्तु उन्होंने जो शक्ति-सञ्चालनरूप व्यापक-व्यापारका अनुष्ठान किया है, वह सम्भवतः उनके अन्धविश्वासका ही फल है। वे लोग प्रकृत तत्त्वानुसन्धानसे पराङ्मुख हैं। यद्यपि इस विश्वासके फलसे कोई कोई रोगी आरोग्य होते देखा गया है तथापि यह विपद-रहित नहीं है, क्योंकि आक्षेपकी अधिकताके कारण कमजोर स्त्री और पुरुषमात्र ही मानसिक दुर्बलताके सबबसे अकसर बुरा फल पाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डा० फ्राङ्कलिन आदि द्वारा उक्त रिपोर्टमें ऐसी निन्दा की जाने पर भी उस नूतन प्रथाका विलोप नहीं हुआ। उसके बाद जो विवरण प्रकाशित हुआ उसमें लिखा है, कि डा० मेस्मेरके निकाले हुए रोगारोग्यपन्था पर सबोंने विश्वास कर लिया है। देशवासीके विश्वास पर उक्त सम्प्रदाय दिनों दिन पुष्ट होता जा रहा है। मि० मेस्मेरने इससे काफी रुपया भी कमाया था।

इस मैस्मेरतत्त्वका पहले इङ्गलैण्डमें प्रभाव जमने न पाया। वहांके चिकित्सक-समाजमें यह पहले भयावह समझा गया। आखिर डा० पार्किन्सने एक 'मेटालिक ट्राक्टर' प्रस्तुत कर स्वतन्त्र उपायसे जैविक आकर्षणी-शक्ति सञ्चयका उपाय निकाला। उस यन्त्रकी सहायतासे वे प्रायः ढाई सौ मनुष्य और जीवदेहकी परीक्षा कर सफल काम हुए थे। इसके बाद उन्होंने रोगारोग्य-विषयमें उस यन्त्रकी उपकारिता लिपिबद्ध कर एक लम्बा चौड़ा प्रबंध किया था। पीछे बाथ-निवासी डा० विलियम फलकनर और डा० हेगार्थने उनका पक्ष समर्थन कर उक्त तत्त्वके विस्तारमें बड़ी सहायता पहुंचाई थी।

डा० मैस्मेरकी मृत्युके बाद बहुतसे वैज्ञानिक और चिकित्सक-प्रवर जैविकोंने चुम्बकाकर्षणी शक्तिकी परिवृद्धि और विस्तारके विषयमें ध्यान दिया तथा वे प्रसिद्ध रोगोपशमकारि-शक्ति (Curative agent) का परिचय दे गये हैं।

जैविक चुम्बकशक्तिके प्रभावसे मनुष्यके शरीरमें जो विभिन्न प्रकारकी क्रिया देखी जाती है तथा उस क्रियाके संघटनके लिये जो विभिन्न उपाय अवलम्बित और आविष्कृत हुआ है, एकमात्र मेस्मर और उनके यूरोप महादेशस्थ शिष्यसम्प्रदाय उसकी बहुत कुछ उन्नति करके कार्यक्षेत्रमें उतरे थे। जिस व्यक्तिको मेस्मेरिक क्रियाके अधीन लाया जायगा उसे सामने खड़ा कर ये लोग गृहस्थित उस चुम्बकशक्तिपूर्ण पात्रको छुलाते तथा उसके शिरसे ले कर पैर तक हाथ फेरते थे। इस प्रकार बार बार हाथ फेरनेसे वह आदमी आध घंटेके भीतर स्पन्दहीन हो मैस्मेरिक शक्तिके अधीन हो जाता है। प्रक्रियाकारक (mesmeriser) को सभी समय उस पात्र (Patient)-के चक्षके ऊपर अपनी दोनों आंखोंको स्थिर रखना चाहिये। सभी इस प्रक्रिया द्वारा अभिभूत होगा ऐसी आशा नहीं की जाती। आध घंटेके भीतर जिसमें प्रक्रियाका असर हुआ न देखे उसे परित्याग करना ही उचित है। मैस्मेरके मतानुसार एक व्यक्तिको शक्तितत्त्वके अधीन लानेमें दो व्यक्तियोंका प्रयोजन होता है, किन्तु डा० ब्रेड इसे स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं, कि चित्तको एकाग्र करनेके लिये वस्तुविशेषके ऊपर स्थिर दृष्टि रखनेसे ही वह व्यक्ति वशीभूत हो जायगा, दो व्यक्तिकी बिलकुल जरूरत नहीं।

स्नायविक दौर्बल्यविशिष्ट व्यक्तिको स्थिर दृष्टि वा शक्तिसञ्चालन (Passes or fixed attention)-क्रियाके अधीन करनेसे विभिन्न फल देखनेमें आता है। इस विभिन्न अवस्थाके सम्बन्धमें प्रसिद्ध जर्मन लेखक Kluge ने निम्नलिखित कुछ क्रम निर्देश किये हैं।

१ जाग्रतावस्था (waking)—ज्ञान और पञ्चेन्द्रियकी कर्मशक्ति पूर्णरूपसे वर्त्तमान रहती है। पात्र सभी विषयोंमें धारणक्षम रहता है।

२ अर्द्धजाग्रतावस्था (*Half*-sleep वा imperfect crisis)—इन्द्रियां कार्यकारी अवस्थामें समभावसे रहती है। केवल दृष्टिविभ्रम होता है। दोनों चक्षु एकाग्र चित्तके अनुबलसे जिस द्रव्यविशेषमें विन्यस्त रहता है उससे लक्ष्य भ्रष्ट हो जाता है।

३ शाक्तिक-निद्रा (*Magnetic* mesmric sleep) इन्द्रियां अपने अपने कार्यमें अक्षम रहती हैं। पात्रकी अवस्था स्पन्दहीन, संज्ञाशून्य और जड़ है।

४ स्वप्न-सञ्चरावस्था (*Perfect* crisis or simple somnambulism)—इस अवस्थामें रोगी भीतरसे जाग्रत (Wake within himself) रहता है तथा धीरे धीरे वह देहमें आ जाता है। उसकी यह अवस्था निद्रित भी नहीं है और न जागरित ही है वरं इसे दोनोंकी मध्यवर्त्ती कोई अवस्था कहा जा सकता है।

५ तीक्ष्ण वा निर्मल दृष्टि (Lucid visions)—इस अवस्थामें रोगी अपने शरीरगत आन्तरिक और मानसिक सभी विषयोंका सम्यक् ज्ञान लाभ तथा रोग-प्रकृतिका अवश्यम्भावी स्वाभाविक परिणतिका ठीक ठीक लक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निर्णय करने तथा रोगनिर्णयके साथ साथ उन उपयुक्त रोगनाशक औषधोंका निर्देश कर देनेमें समर्थ होता है। इस समय उसकी अवस्था बहुत कुछ योगसमाधिकी तरह हो जाती है। पात्रकी इस अतीन्द्रिय पदार्थ दर्शन पर अवस्थाको फरासी भाषामें Clairvoyance और जर्मन भाषामें Hallsehen कहते हैं।

६ युक्तयोगदृष्टि (Universal lucidity)—इसमें पात्रकी दूरदर्शिता बहुत कुछ बढ़ जाती है। इसके द्वारा वह निकट वा दूरमें अवस्थित वस्तुमात्रका ही आनुपूर्विक विवरण कह देनेमें समर्थ होता है। जर्मन भाषामें इस अवस्थाको Allgemeine Klarheit कहते हैं।

मैस्मेरविद्याविदों (Mesmersts) द्वारा उपरोक्त छः क्रम बतलाये जाने पर भी शक्तिसञ्चालक वा मेस्मेराइजके श्रेणीभुक्त बहुतेरे शेषोक्त दो योगभावकी कार्यकारिता स्वीकार करनेको तय्यार नहीं। किन्तु जैविक शक्तितत्त्वविद् प्रसिद्ध पण्डितमण्डली इस विषयको समर्थन कर बहुतेरे उदाहरण लिपिबद्ध कर गये हैं। Dr. Elliotson, Mr, Braid, Mr, James Simpson आदि मनीषियोंने इस मेस्मेरिक तत्त्वके साथ शिरोमिति विद्या (Phrenology) एक अत्यन्त आश्चर्य सामञ्जस्य निर्णय किया है, उनके मतानुसार पात्रकी ऐसी जाग्रत निद्रावस्थामें मस्तिष्कका जो जो अंश (Phrenological organs) मेस्मेराइजर स्पर्श करते हैं, उस उस अंशका कार्यविकाश उसी समय पात्रके मुखसे होता है। जैसे भाषाके स्थानमें हाथ रखनेसे वाक्यस्फूर्त्ति, दाक्षिण्य (benevolence) स्थान छूनेसे दयाभावकी समुपस्थिति इत्यादि।

५वें और ६ठे व्यापारके सम्बन्धमें वर्त्तमान मेस्मेराइजरोंका विश्वास नहीं होने पर भी उन्होंने उसकी कार्यकारिताको मालूम कर लिया तथा परीक्षा द्वारा उसकी नींव मजबूत कर ली। पीछे १८३८ ई०की १ली सितम्बरको Lancet नामक पत्रिकाके Mr. Wakley-ने तथा १८४४ ई०की ४थी अगस्तको Sir John Forbesने अनेक दर्शकोंके सामने एलेजिस नामक एक फरासी बालकके ऊपर अतीन्द्रिय पदार्थदर्शन (Clairvoyance) शक्तिकी परीक्षा की। शक्त्याधीन अवस्थामें बालकके जो अद्भुत मानसिक प्रभाव उपस्थित हुआ था। स्वाभाविक होशमें आने पर वह उस स्मृतिशक्तिका असाधारण प्रभाव लोगोंके सामने न बतला सका।

जर्मनोके विख्यात रासायनिक M, Richenbach-ने जैविक चुम्बकशक्ति घटित व्यापारोंका एक नया वैज्ञानिक तत्त्व दिखलाया। उनका विश्वास है, कि इस साधन व्यापारमें उन्होंने मेस्मेर प्रवर्त्तित पन्थके अतिरिक्त एक स्वाभाविक शक्तिका आश्रय लिया था। उस शक्तिका नाम है Odyle या odfore। उनके इस नये तत्त्वको मूल प्रकृतिकी मीमांसा न होने तथा शक्तिसञ्चालनके कारणरूपमें अन्यान्य वस्तुकी सहायता लेनेसे जनसाधारण उसके मौलिकत्त्वको स्वीकार नहीं करते।

मैहर (हिं० पु०) १ वह तलछट जो घी वा मक्खनको गरम करने पर नीचे बैठ जाती है, घी वा मक्खन तपानेसे निकला हुआ मट्ठा। २ नैहर देखो।

मैहर—१ मध्यभारतके बाघेलखण्ड पोलिटिकल एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २३° ५६' से ले कर २४° २४' उ० तथा देशा० ८०° २३' से ले कर ८१° ०' पू०के मध्य विस्तृत है। इसके उत्तर नागोद राज्य, पूर्वमें रेवा राज्य, दक्षिणमें अंगरेजाधिकृत जब्बलपुर जिला तथा पश्चिममें अजयगढ राज्य है। भूपरिमाण ४०७ वर्गमील और जनसंख्या ७० हजारके करीब है। इलाहाबादसे जब्बलपुर तक विस्तृत इष्ट इण्डिया रेलपथ इसी राज्यके बीचोबीच हो कर दौड़ गया है। पहले यह सामंतराज्य रेवाराज्यके अधीन था। बुन्देलखण्डमें अंगरेजीराज्य स्थापित होनेसे बहुत पहले पन्नाके बुन्देलराजने इस पर दखल जमाया। मरते समय वे उक्त सम्पत्ति ठाकुर दुर्जनसिंहके पिताके हवाले कर गये। अंगरेजोंका आधिपत्य फैलने पर ठाकुरराजने अंगरेजोंका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया जिससे अंगरेजोंने उनके दखलमें कोई छेड़ छाड़ न की। १८२६ ई०में दुर्ज्जनसिंहकी मृत्यु होने पर उनके दो पुत्रोंमें राज्याधिकारको ले कर विवाद खड़ा हुआ। दोनों पक्षोंमें लड़ाई शुरू हो गई। अंगरेज-राजने इस विवादसे राज्यविशृंखलता देख दोनों पुत्रोंके बीच राज्य बांट दिया। विष्णुसिंहको मैहर तथा प्रयागदासको विजय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राघवगढ़ मिला। १८५८ ई०के गदरमें विजयराघवगढ़के सामन्त शामिल थे। इसलिये उनकी सारी जायदाद अंगरेजोंने जब्त कर ली। विष्णुसिंहके पौत्र राजा रघुवीर सिंह योगी-सम्प्रदाययुक्त हिन्दू थे। पीछे राजा रघुवीरने रेलपथ खोलनेके लिये वृटिश-सरकारको मुफ्तमें जमीन दे दी तथा पण्यद्रव्य पर जो महसूल लगता था, उसे उठा दिया। इस प्रत्युपकारमें अंगरेजोंने १८७७ ई०के दिल्ली दरवारमें राजाको वंशानुक्रमिक राजाकी उपाधि और सम्मान-सूचक ९ सलामी तोपें दीं।

यह राजवंश स्वराज्यके मध्य अंगरेज-शासनविधि-से कोई सम्बन्ध न रखते हुए राजकार्यकी परिचालना कर सकते हैं, केवलमात्र गुरुतर अपराध और यूरोपियों-के विवाद संक्रान्त विचारमें उन्हें गवर्नमेण्टकी सलाह लेनी पड़ती है। वर्त्तमान सामन्तका नाम है श्रीमन् राजा व्रजनाथसिंह जू देव वहादुर। उन्हें वृटिश सर-कारकी ओरसे ९ तोपोंकी सलामी मिलती है। राज्यकी आय करीव चार लाख रुपयेकी है।

२ उस सामंतराज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° १६' उ० तथा देशा० ८०° ४६' पू० दक्षिण प्रदेश जानेके विस्तृत रास्ते के किनारे अवस्थित है। १६वीं सदीमें यहां एक दुर्ग वनाया गया है, जिसमें आजकलके राजे रहते हैं। यहां स्थानीय शस्यादि और जंगली वस्तुओंका वाणिज्य होता है। वाणिज्यको सुविधाके लिये यहां इष्ट इण्डिया रेलवे-लाइनका एक स्टेशन है। उत्तर-पश्चिम और दक्षिणपूर्वमें दो बड़ी बड़ी झीलें हैं जिनसे शहरकी शोभा वढ़ गई है, साथ साथ वह स्थान स्वास्थ्यप्रद भी हो गया है। जनसंख्या ६८०२ है। यहां एक सरकारी डाकघर, एक स्कूल और एक अस्पताल है

मैहिक (सं० त्रि०) मेह रोग सम्बन्धीय, जिसे प्रमेह हुआ हो।

मागरा (हिं० पु०) १ काठका वना हुआ एक प्रकारका हथौड़ा जिससे मेख इत्यादि ठोंकी जाती है। २ मोगरा देखो। ३ मुँगरा देखो।

मांगला (हिं० पु०) मध्यम श्रेणीका और साधारणतः बाजार में मिलनेवाला केसर। विशेष विवरण केसर शब्दमें देखो।

मोंछ (हिं० स्त्री०) मूँछ देखो।

मोंढ़ा (हिं० पु०) १ वाँस, सरकंडे या बेंतका वना हुआ एक प्रकारका ऊँचा गोलाकार आसन। यह प्रायः तिरपाईसे मिलता जुलता होता है। २ वाहुके जोड़के पास कंधेका घेरा, कंधा।

मोआ (मोवा)—राजपूतानेके जयपुर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २७° ३' उ० तथा देशा० ७६° ५९' पू० आगरासे अजमेढ़ जानेकी पक्की सड़कके किनारे अवस्थित है।

मोआ (मोवा)—वम्बई प्रदेशके काठियावाड़ विभागान्त-र्गत एक वन्दर और नगर। इसका वर्तमान नाम मुहुरा है। यहांसे स्थानीय सामुद्रिक वाणिज्य परिचालित होता है।

मोआमारिया—आसामके लखिमपुर जिलेमें रहनेवाली एक असभ्य जाति। ब्रह्मपुत्रके दक्षिण और वुड़ी-डिहिङ्ग-के उत्तर तथा शिंफाशैलके पश्चिम जो मटक नामक स्थान है, वहां इस जातिका वास अधिक देखा जाता है। इसी कारण इनका दूसरा नाम मटक या मरान पड़ा है। यह आहम जातिकी एक शाखा है। आहम-राजवंशका प्रभुत्व और शासनशक्ति ह्रास होनेके कुछ ही समय पहले यह जाति यहां आ कर वस गई है। ये सभी वैष्णवधर्मावलम्वी हैं। आहम-राजाओंने इनमें दुर्गो-त्सव पूजाविधि प्रचार करनेकी चेष्टा की थी इसीसे सभी लोग इस तान्त्रिक शक्तिकी उपासनाका घोर विरोधी हो कर राजद्रोही हो गए। राजा गौरीनाथके समय इन्होंने निम्न आसाम पर चढ़ाई कर दी। इस समय अंगरेज सेनाने विद्रोहियोंको गौहाटीसे मार भगाया; किन्तु ये स्वाधीनताकी रक्षा कर कुछ समयके लिये स्वतन्त्र सरदारके अधीन राज्यशासन करते रहे। वैष्णव वीर इस सरदारके वंशधर 'वड़ा सेनापति' उपाधिसे भूषित हुए थे।

१८२५ ई० में ब्रह्मके रहनेवाले आसामसे वितारित होने पर अंगरेजराज द्वारा मटकके सरदारवंश स्थानीय राजा बन गये। १८३९ ई०में जब उनकी मृत्यु हो गई तब अंगरेजराजने सरदार पुत्रके साथ किसी तरह-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निर्णय करने तथा रोगनिर्णयके साथ साथ उन उपयुक्त रोगनाशक औषधोंका निर्देश कर देनेमें समर्थ होता है। इस समय उसकी अवस्था बहुत कुछ योगसमाधिकी तरह हो जाती है। पात्रकी इस अतीन्द्रिय पदार्थ दर्शन पर अवस्थाको फरासी भाषामें Clairvoyance और जर्मन भाषामें Hallsehen कहते हैं।

६ युक्तयोगदृष्टि (Universal lucidity)—इसमें पात्रकी दूरदर्शिता बहुत कुछ बढ़ जाती है। इसके द्वारा वह निकट वा दूरमें अवस्थित वस्तुमात्रका ही आनुपूर्विक विवरण कह देनेमें समर्थ होता है। जर्मन भाषामें इस अवस्थाको Allgemeine Klarheit कहते हैं।

मैस्मेरविद्याविदों (Mesmersts) द्वारा उपरोक्त छः क्रम बतलाये जाने पर भी शक्तिसञ्चालक वा मेस्मेराइजके श्रेणीभुक्त बहुतेरे शेषोक्त दो योगभावकी कार्यकारिता स्वीकार करनेको तय्यार नहीं। किन्तु जैविक शक्तितत्त्वविद् प्रसिद्ध पण्डितमण्डली इस विषयको समर्थन कर बहुतेरे उदाहरण लिपिबद्ध कर गये हैं। Dr. Elliotson, Mr, Braid, Mr, James Simpson आदि मनीषियोंने इस मेस्मेरिक तत्त्वके साथ शिरोमिति विद्या (Phrenology) एक अत्यन्त आश्चर्य सामञ्जस्य निर्णय किया है, उनके मतानुसार पात्रकी ऐसी जाग्रत निद्रावस्थामें मस्तिष्कका जो जो अंश (Phrenological organs) मेस्मेराइजर स्पर्श करते हैं, उस उस अंशका कार्यविकाश उसी समय पात्रके मुखसे होता है। जैसे भाषाके स्थानमें हाथ रखनेसे वाक्यस्फूर्त्ति, दाक्षिण्य (benevolence) स्थान छूनेसे दयाभावकी समुपस्थिति इत्यादि।

५वें और ६ठे व्यापारके सम्बन्धमें वर्त्तमान मेस्मेराइजरोंका विश्वास नहीं होने पर भी उन्होंने उसकी कार्य्यकारिताको मालूम कर लिया तथा परीक्षा द्वारा उसकी नींव मजबूत कर ली। पीछे १८३८ ई०की १ली सितम्बरको Lancet नामक पत्रिकाके Mr. Wakley-ने तथा १८४४ ई०की ४थी अगस्तको Sir John Forbesने अनेक दर्शकोंके सामने एलेजिस नामक एक फरासी बालकके ऊपर अतीन्द्रिय पदार्थदर्शन (Clairvoyance) शक्तिकी परीक्षा की। शक्त्याधीन अवस्थामें बालकके जो अद्भुत मानसिक प्रभाव उपस्थित हुआ था। स्वाभाविक होशमें आने पर वह उस स्मृतिशक्तिका असाधारण प्रभाव लोगोंके सामने न बतला सका।

जर्मनोके विख्यात रासायनिक M, Richenbach-ने जैविक चुम्बकशक्ति घटित व्यापारोंका एक नया वैज्ञानिक तत्त्व दिखलाया। उनका विश्वास है, कि इस साधन व्यापारमें उन्होंने मेस्मेर प्रवर्त्तित पन्थके अतिरिक्त एक स्वाभाविक शक्तिका आश्रय लिया था। उस शक्तिका नाम है Odyle या odfore। उनके इस नये तत्त्वको मूल प्रकृतिकी मीमांसा न होने तथा शक्तिसञ्चालनके कारणरूपमें अन्यान्य वस्तुकी सहायता लेनेसे जनसाधारण उसके मौलिकत्त्वको स्वीकार नहीं करते।

मैहर (हिं० पु०) १ वह तलछट जो घी या मक्खनको गरम करने पर नीचे बैठ जाती है, घी वा मक्खन तपानेसे निकला हुआ मट्ठा। २ नैहर देखो।

मैहर—१ मध्यभारतके बाघेलखण्ड पोलिटिकल एजेन्सीके अन्तर्गत एक सामन्तराज्य। यह अक्षा० २३° ५६' से ले कर २४° २४' उ० तथा देशा० ८०° २३' से ले कर ८१° ०' पू०के मध्य विस्तृत है। इसके उत्तर नागोद राज्य, पूर्वमें रेवा राज्य, दक्षिणमें अंगरेजाधिकृत जब्बलपुर जिला तथा पश्चिममें अजयगढ राज्य है। भूपरिमाण ४०७ वर्गमील और जनसंख्या ७० हजारके करीब है। इलाहाबादसे जब्बलपुर तक विस्तृत इष्ट इण्डिया रेलपथ इसी राज्यके बीचोबीच हो कर दौड़ गया है। पहले यह सामंतराज्य रेवाराज्यके अधीन था। बुन्देलखण्डमें अंगरेजीराज्य स्थापित होनेसे बहुत पहले पन्नाके बुन्देलराजने इस पर दखल जमाया। मरते समय वे उक्त सम्पत्ति ठाकुर दुर्जनसिंहके पिताके हवाले कर गये। अंगरेजोंका आधिपत्य फैलने पर ठाकुरराजने अंगरेजोंका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया जिससे अंगरेजोंने उनके दखलमें कोई छेड़ छाड़ न की। १८२६ ई०में दुर्ज्जनसिंहकी मृत्यु होने पर उनके दो पुत्रोंमें राज्याधिकारको ले कर विवाद खड़ा हुआ। दोनों पक्षोंमें लड़ाई शुरू हो गई। अंगरेज-राजने इस विवादसे राज्यविशृंखलता देख दोनों पुत्रोंके बीच राज्य बांट दिया। विष्णुसिंहको मैहर तथा प्रयागदासको विजय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राघवगढ़ मिला। १८५८ ई०के गदरमें विजयराघवगढ़के सामन्त शामिल थे। इसलिये उनकी सारी जायदाद अंगरेजोंने जब्त कर ली। विष्णुसिंहके पौत्र राजा रघुवीर सिंह योगी-सम्प्रदायभुक्त हिन्दू थे। पीछे राजा रघुवीरने रेलपथ खोलनेके लिये बृटिश-सरकारको मुफ्तमें जमीन दे दी तथा पण्यद्रव्य पर जो महसूल लगता था, उसे उठा दिया। इस प्रत्युपकारमें अंगरेजोंने १८७७ ई०के दिल्ली दरबारमें राजाको वंशानुक्रमिक राजाकी उपाधि और सम्मान-सूचक ९ सलामी तोपें दीं।

यह राजवंश स्वराज्यके मध्य अंगरेज-शासनविधिसे कोई सम्बन्ध न रखते हुए राजकार्यकी परिचालना कर सकते हैं, केवलमात्र गुरुतर अपराध और यूरोपियोंके विवाद संक्रान्त विचारमें उन्हें गवर्नमेण्टकी सलाह लेनी पड़ती है। वर्त्तमान सामन्तका नाम है श्रीमन् राजा ब्रजनाथसिंह जू देव बहादुर। उन्हें बृटिश सरकारकी ओरसे ९ तोपोंकी सलामी मिलती है। राज्यकी आय करीब चार लाख रुपयेकी है।

२ उस सामंतराज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° १६' उ० तथा देशा० ८०° ४६' पू० दक्षिण प्रदेश जानेके विस्तृत रास्तेके किनारे अवस्थित है। १६वीं सदीमें यहां एक दुर्ग बनाया गया है, जिसमें आजकलके राजे रहते हैं। यहां स्थानीय शस्यादि और जंगली वस्तुओंका वाणिज्य होता है। वाणिज्यको सुविधाके लिये यहां इष्ट इण्डिया रेलवे-लाइनका एक स्टेशन है। उत्तर-पश्चिम और दक्षिणपूर्वमें दो बड़ी बड़ी झीलें हैं जिनसे शहरकी शोभा बढ़ गई है, साथ साथ वह स्थान स्वास्थ्यप्रद भी हो गया है। जनसंख्या ६८०२ है। यहां एक सरकारी डाकघर, एक स्कूल और एक अस्पताल है

मैहिक (सं० त्रि०) मेह रोग सम्बन्धीय, जिसे प्रमेह हुआ हो।

मोगरा (हिं० पु०) १ काठका बना हुआ एक प्रकारका हथौड़ा जिससे मेख इत्यादि ठोंकी जाती है। २ मोगरा देखो। ३ मुँगरा देखो।

मोंगला (हिं० पु०) मध्यम श्रेणीका और साधारणतः बाजारमें मिलनेवाला केसर। विशेष विवरण केसर शब्दमें देखो।

मोंछ (हिं० स्त्री०) मूँछ देखो।

मोंढ़ा (हिं० पु०) १ बाँस, सरकंडे या बेंतका बना हुआ एक प्रकारका ऊँचा गोलाकार आसन। यह प्रायः तिरपाईसे मिलता जुलता होता है। २ बाहुके जोड़के पास कंधेका घेरा, कंधा।

मोआ (मोवा)—राजपूतानेके जयपुर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २७° ३' उ० तथा देशा० ७६° ५९' पू० आगरासे अजमेढ़ जानेकी पक्की सड़कके किनारे अवस्थित है।

मोआ (मोवा)—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ विभागान्तर्गत एक बन्दर और नगर। इसका वर्तमान नाम मुहुरा है। यहांसे स्थानीय सामुद्रिक वाणिज्य परिचालित होता है।

मोआमारिया—आसामके लखिमपुर जिलेमें रहनेवाली एक असभ्य जाति। ब्रह्मपुत्रके दक्षिण और बुड़ी-डिहिङ्गके उत्तर तथा शिंफाशैलके पश्चिम जो मटक नामक स्थान है, वहां इस जातिका वास अधिक देखा जाता है। इसी कारण इनका दूसरा नाम मटक या मरान पड़ा है। यह आहम जातिकी एक शाखा है। आहम-राजवंशका प्रभुत्व और शासनशक्ति ह्रास होनेके कुछ ही समय पहले यह जाति यहां आ कर बस गई है। ये सभी वैष्णवधर्मावलम्बी हैं। आहम-राजाओंने इनमें दुर्गोत्सव पूजाविधि प्रचार करनेकी चेष्टा की थी इसीसे सभी लोग इस तान्त्रिक शक्तिकी उपासनाका घोर विरोधी हो कर राजद्रोही हो गए। राजा गौरीनाथके समय इन्होंने निम्न आसाम पर चढ़ाई कर दी। इस समय अंगरेज सेनाने विद्रोहियोंको गौहाटीसे मार भगाया; किन्तु ये स्वाधीनताकी रक्षा कर कुछ समयके लिये स्वतन्त्र सरदारके अधीन राज्यशासन करते रहे। वैष्णव वीर इस सरदारके वंशधर 'बड़ा सेनापति' उपाधिसे भूषित हुए थे।

१८२५ ई० में ब्रह्मके रहनेवाले आसामसे विताड़ित होने पर अंगरेजराज द्वारा मटकके सरदारवंश स्थानीय राजा बन गये। १८३९ ई०में जब उनकी मृत्यु हो गई तब अंगरेजराजने सरदार पुत्रके साथ किसी तरह-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का वन्दोवस्त न कर मटक सहित समूचा लखिमपुर जिला अंगरेज-शासनभुक्त कर लिया।

यह मटक जाति अभी आसामकी दूसरी दूसरी जातिके साथ मिल गई है। आजकल उनमें और किसी प्रकारकी जातीय प्रधानता देखी नहीं जाती। वह पूर्वतन मटक-सामन्तराज्य फिलहाल भिन्न भिन्न मौजोंमें बंट गया है। समतलभूमिके रहनेवाले मटक, जंगली मराण तथा वैष्णवप्रधान मोआमारिया नामसे परिचित हैं। तिफुक-गोंसाई इनके धर्मगुरु हैं।

मोई (हिं० स्त्री०) १ घीमें साना हुआ आटा। यह छींटकी छपाईके लिये काला रंग बनानेमें कसीस और धौके फूलोंके काढ़ेमें डाला जाता है। २ मारवाड़ देशमें होनेवाली एक प्रकारकी जड़ी। कहीं कहीं इसे ग्वालिया भी कहते हैं।

मोक (सं० क्ली०) पशुचर्म, जानवरका चमड़ा।

मोका (हिं० पु०) १ मद्रास, मध्यभारत और कुमायूं के जंगलमें होनेवाला एक प्रकारका वृक्ष। इसके पत्ते प्रति वर्ष झड़ जाते हैं। इसकी लकड़ी कड़ी और सफेदी लिये भूरे रंगकी होती है और आरायशी सामान बनानेके काममें आती है। खरादने पर इसकी लकड़ी बहुत चिकनी निकलती है और इसके ऊपर रंग और रोगन खूब खिलता है। इसकी लकड़ी न तो फटती है और न टेढ़ी होती है। यह वृक्ष वर्षा ऋतुमें बीजोंसे उगता है। इसे गेठा भी कहते हैं। २ मोखा देखो। ३ मौका देखो।

मोकि (सं० स्त्री०) रात्रि, रात।

मोक्तृ (सं० त्रि०) मुच-तृच्। मोचनकर्त्ता, मुक्त करनेवाला।

मोक्ष (सं० पु०) मोक्ष्यते दुःखमनेन, मोक्ष-करणे-घञ्। मुक्ति।

"न मोक्षो नभसः पृष्ठे न पाताले न भूतले।
सर्वाशासंक्षये चेतः क्षयो मोक्ष इति श्रुतिः॥"

(सांख्यसा० २।३।२५)

आकाश पाताल या भूतल आदि किसी भी स्थानमें मोक्ष नहीं है, केवल आशाके नाश होनेसे ही मोक्ष होता है।

जीव केवल कर्मके बंधनसे बंधा हुआ है। उस कर्म को छेद कर सकनेसे ही मोक्ष प्राप्त होता है।

मोक्षका विषय दर्शनशास्त्रमें विशदरूपसे लिखा है, लेकिन यहां पर संक्षिप्त रूपसे समझा दिया जाता है।

परम पुरुषार्थका नाम मोक्ष है। पुरुषार्थ शब्दसे पुरुषका प्रयोजन समझा जाता है। पुरुषका जो अभिलषणीय है वही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ चार भागोंमें बांटा गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष वा अपवर्ग इनमें मोक्ष परम पुरुषार्थ है। बाकी तीनों पदार्थ ही विनाशी है। मोक्ष विनाशी है, इसीसे वह परमपुरुषार्थ है। मोक्ष शब्दके व्युत्पत्तिगत अर्थके प्रति लक्ष्य करनेसे बन्धनमोचन ही मोक्ष समझा जायगा। बन्धन शब्दसे जीवात्माका ही बंधन समझना चाहिये। इस बन्धनका अर्थ है सुखदुःख-भोग वा संसार।

जीवात्माका संसार वा बन्धन अज्ञानमूलक है। अर्थात् मिथ्याज्ञान संसारका हेतु है, जब तक कारण विद्यमान रहता है, तब तक कार्यकी निवृत्ति बिलकुल नहीं होती। अतएव जब तक मिथ्याज्ञान समूल दूर न हो जायगा, तब तक संसार-निवृत्ति वा मुक्ति हो ही नहीं सकती। मुक्ति परमपुरुषार्थ है, मुक्तिके लिये सबोंको समुत्सुक होना उचित है। बद्ध रहना कोई भी पसन्द नहीं करता, सभी बन्धन मुक्ति हो चाहता है। मिथ्याज्ञान बन्धन हेतुका कारण है। तत्त्वज्ञान मिथ्याज्ञानका समुच्छेदक वा विनाशक है। बिना तत्त्वज्ञानके और किसी भी उपायसे मिथ्याज्ञान दूर नहीं होता। मिथ्याज्ञानके दूर नहीं होनेसे मुक्ति नहीं होती। अतएव तत्त्वज्ञान मुक्तिका कारण है। तत्त्वज्ञान दो प्रकारका है, परोक्ष और प्रत्यक्ष। जो मिथ्याज्ञान प्रत्यक्ष नहीं है वही परोक्ष है। परोक्ष तत्त्वज्ञान द्वारा ही उसका उच्छेद होता है; किन्तु जो मिथ्या ज्ञान प्रत्यक्ष है परोक्ष तत्त्वज्ञान द्वारा उसका विच्छेद नहीं होता। उसके उच्छेदके लिये प्रत्यक्ष तत्त्वज्ञान आवश्यक है। रज्जुमें सर्पका भ्रम होनेसे वह सर्प नहीं, रज्जु है। इस प्रकार यदि दूसरा आदमी बार बार कहे तो भी भ्रान्त व्यक्तिका सर्पभ्रम दूर नहीं होगा; क्योंकि भ्रान्त व्यक्तिका सर्पभ्रम प्रत्यक्षात्मक है। दूसरेके उक्तिमूलक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो तत्त्वज्ञान होता है, वह परोक्ष तत्त्वज्ञान है। परोक्ष तत्त्वज्ञान अपरोक्ष भ्रमका निवर्त्तक नहीं होता। यह रज्जु है, इस प्रकार जब तक प्रत्यक्षात्मक तत्त्वज्ञान नहीं होगा, तब तक उसका सर्पभ्रम दूर नहीं होगा, उसे उस रज्जुके पास जानेका साहस नहीं होगा। दिक् मोह आदि स्थानोंमें भी इसी प्रकार देखनेमें आता है। अतएव यह सिद्ध हुआ, कि प्रत्यक्ष मिथ्याज्ञान परोक्षतत्त्वज्ञानके द्वारा दूर नहीं होगा। प्रत्यक्ष मिथ्याज्ञानकी निवृत्तिके लिये प्रत्यक्ष तत्त्वज्ञानकी आवश्यकता है।

देहादिमें आत्मबुद्धि आदि संसारका हेतु है। वह प्रत्यक्षात्मक मिथ्याज्ञान है। उसकी निवृत्तिके लिये प्रत्यक्षात्मक आत्मतत्त्वज्ञान सम्पादन करना होगा। शास्त्र और आचार्यके उपदेशानुसार जो आत्मतत्त्वज्ञान होता है, वह परोक्ष है, प्रत्यक्षात्मक नहीं। इस कारण शास्त्र अध्ययन करने वा गुरुके उपदेशसे आत्मतत्त्व मालूम हो जाने पर भी उससे देहादिमें आत्मबुद्धिकी निवृत्ति नहीं होती, आत्मतत्त्व-साक्षात्कारकी अपेक्षा रहती है।

आत्मतत्त्व-साक्षात्कारके अनेक उपाय शास्त्रोंमें कहे गये हैं। श्रवण, मनन और निदिध्यासन ही आत्मसाक्षात्कारका प्रधान उपाय है। श्रवण शब्दका अर्थ है अद्वितीयब्रह्ममें वेदान्तवाक्यके तात्पर्यका अवधारण। मनन शब्दसे युक्ति द्वारा श्रुत्युक्त अर्थके सम्भावितत्वका अनुसन्धान समझा जाता है। अर्थात् श्रुतिने जो कहा है वह सम्भवपर है, युक्तिद्वारा इस प्रकार अवधारण करनेका नाम मनन है। निदिध्यासनका अर्थ है शास्त्रमें श्रुत तथा युक्ति द्वारा सम्भावित विषयकी लगातार चिन्ता।

"आत्मा वा अरे! द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः।" (श्रुति)

"श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यः मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।
मत्वा च सततं ध्येयः एते दर्शनहेतवः॥" (विज्ञानभिक्षु)

ये सब विषय आदर-पूर्वक अविच्छेदसे बहुत दिनों तक अनुष्ठित होनेसे आत्मतत्त्व-साक्षात्कार होता है। दीर्घकाल श्रवणादिका अनुशीलन तीव्र विषय वैराग्य भिन्न नहीं हो सकता। नित्यानित्यवस्तुविवेक अर्थात् यह नित्य वस्तु है, यह अनित्य है, इसका सम्यक् ज्ञान, मूलभोगविराग अर्थात् वैराग्य, शमदमादि सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व ऐसे चार साधनसम्पन्न पुरुष ब्रह्मजिज्ञासाके अधिकारी कहे गये है। किन्तु इनमेंसे नित्यानित्य वस्तुविवेक वैराग्यका हेतु है तथा शमदमादि वैराग्यका कार्य है। अतएव वैराग्यकी गणना मुख्य साधन रूपमें होना उचित है। एकमात्र वैराग्य ही ब्रह्मविद्याके अधिकारका मुख्य साधन है। इसी अभिप्राय पर मण्डूकोपनिषदमें कहा है—

"परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन। तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।"

सभी कर्मफल अनित्य है, कर्म द्वारा नित्य पदार्थ प्राप्त नहीं हो सकता। अतः ब्राह्मणको वैराग्यका अवलम्बन करना चाहिये। विरक्त ब्राह्मणको नित्यवस्तु जाननेके लिये ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय गुरुके पास जाना उचित है।

विवेक चूड़ामणिमें भगवान् शङ्कराचार्यने कहा है,—

"वैराग्यञ्च मुमुक्षुत्वं तीव्रं यस्योपजायते।
तस्मिन्नेवार्थवन्तः स्युः फलवन्तः शमादयः॥"

जिसके तीव्र वैराग्य और तीव्र मुमुक्षुत्व प्राप्त हुआ है, शमादि साधन उसीसे सफलता लाभ करता है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि वैराग्य ही ब्रह्मविद्याका अभ्यर्हित साधन है। सृष्टि, स्थिति और प्रलयकी चिन्ता, संसारगतिकी पर्यालोचना तथा विषयदोष दर्शनादि भी वैराग्यका उपाय है।

सांख्यकारिकामें भी भगवान् कृष्णने कहा है,—

"पुरुषार्थज्ञानमिदं गुह्यं परमर्षिणा समाख्यातम्।
स्थित्युत्पत्तिप्रलयाश्चिन्त्यन्ते यत्र भूतानाम्॥"

जिस मोक्षजनक ज्ञानके लिये प्राणियोंकी स्थिति, उत्पत्ति और प्रलयकी चिन्ता की जाती है उसीको परमर्षिने गोपनीय पुरुषार्थज्ञान कहा है।

यहां पर स्थिति, उत्पत्ति और प्रलयकी चिन्ताको तत्त्वज्ञानका हेतु बतलाया गया है। छान्दोग्य उपनिषद्में पञ्चाग्नि विद्या द्वारा संसारगतिको ले कर उपसंहारमें कहा है, कि "तस्माज्जुगुप्सेत" अर्थात् संसारगति बहुत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विचित्र है, इसलिये वैराग्यका अवश्य अवलम्बन करना चाहिये।

सृष्टि, स्थिति और प्रलयविषयक चिन्ताको वैराग्यका उपाय कहा है। अतएव यहां इन विषयों पर कोई विचार करना आवश्यक है। सृष्टिविषयमें तीन मत बहुत कुछ प्रसिद्ध हैं—आरम्भवाद, परिणामवाद और विवर्त्तवाद। आरम्भवाद नैयायिक और वैशेषिकका, परिणामवाद सांख्य और पातञ्जलका तथा विवर्त्तवाद वेदान्तीका अनुमत है।

आरम्भवादमें कारण सत् और कार्य असत् है। इस मतमें सत्-कारणसे असत् कार्यकी उत्पत्ति होती है। कारण कार्योत्पत्तिके पहले विद्यमान रहता है, किन्तु उत्पत्तिके पहले कार्यका अस्तित्व नहीं है। परमाणु आदिकारण है, वह नित्य है। अतएव वह द्व्यणुकादि कार्यकी उत्पत्तिके पहले विद्यमान था। किन्तु द्व्यणुकादि कार्य-उत्पत्तिके पहले विद्यमान न थे। इसी कारण आरम्भवादका दूसरा नाम असत्कार्यवाद है।

परिणामवादमें असत्की उत्पत्ति स्वीकार नहीं की जाती। इस मतमें उत्पत्तिके पहले भी कार्य सूक्ष्मरूपमें कारणमें विद्यमान था। कारणके व्यापार द्वारा केवल कार्यकी अभिव्यक्ति होती है। तिलमें तेल है, जो पीसनेसे बाहर निकलता है, दूध दहीके रूपमें और मिट्टी घड़ेके रूपमें परिणत होती है। इस प्रकार सत्त्वादि तीनों गुण महत्तत्त्वरूपमें और महत्तत्त्व अहङ्काररूपमें परिणत होता है। इस परिणामवादका दूसरा नाम सत्कार्यवाद है। परिणामवाद और विवर्त्तवाद बहुत कुछ मिलता जुलता है। विवर्त्तवादमें कारणमात्र सत् और कार्य असत् है। कार्य स्वरूपमें असत् होने पर भी कारणरूपमें वह सत् है, ऐसा कहा जा सकता है। कारणका संस्थान मात्र ही कार्य है, कारणसे भिन्न कार्य नहीं है। कारणका जैसा निर्वाचन किया जाता है, कार्यका वैसा निर्वाचन नहीं किया जाता। इसी कारण विवर्त्तवादका दूसरा नाम अनन्यवाद वा अनिर्वचनीयवाद है। रज्जुमें सर्पभ्रम, शुक्तिकातमें रजतभ्रम आदि विवर्त्तवादका दृष्टान्त है। रज्जुमें परिकल्पित सर्प तथा शुक्तिकातमें परिकल्पित रजत जिस प्रकार रज्जु और शुक्तिकासे भिन्न नहीं है तथा अनिर्वचनीय है, उसी प्रकार ब्रह्ममें परिकल्पित विषयादि प्रपञ्च ब्रह्मसे भिन्न नहीं है तथा अनिर्वचनीय है। जो निर्वाच्य है वह सत्य, जो अनिर्वाच्य है वह मिथ्या, सत्यवस्तुका निर्वचन अवश्यम्भावी और मिथ्यावस्तुका निर्वचन असम्भव है। ब्रह्म निर्वाच्य है, इस कारण ब्रह्म सत्य है। जगत् वा विषयादिप्रपञ्च अनिर्वाच्य है। इस कारण जगत् मिथ्या है। लेकिन जगत्के पारमार्थिक सत्यत्व नहीं रहने पर भी व्यवहारिक सत्यत्व अवश्य है। जब तक शुक्तितत्त्व साक्षात्कृत नहीं होता, तब तक शुक्तिपरिकल्पित रजत सत्य समझा जाता तथा जब तक रज्जुतत्त्व साक्षात्कृत नहीं होता, तब तक रज्जुमें परिकल्पित सर्प सत्य ही समझा जाता है। रज्जुतत्त्व तथा शुक्तितत्त्वके साक्षात्कृत होनेसे परिकल्पित सर्पका तथा रजतका मिथ्यात्वबोध होता है। उसी प्रकार जब तक ब्रह्मतत्त्वका साक्षात्कार नहीं होता, तब तक जगत् सच्चा ही समझा जाता है। ब्रह्मतत्त्वके साक्षात्कार होनेसे जगत् मिथ्या प्रतीत होगा। जब जगत् यथार्थमें सत्य नहीं, तब जगत्की मायामें मुग्ध हो परमार्थ सत्यवस्तु अर्थात् ब्रह्मसे दूर रहना कहां तक युक्तिसंगत है, स्वयं विचार लें।

वेदान्तके मतसे माया सहित परमेश्वर जगत्सृष्टिका कारण है। मायाकी शक्ति अपरिमित और अनिरूपणीय है। प्रपञ्च विचित्र है। कारणगत वैचित्र्य नहीं रहनेसे कार्यकी विचित्रता नहीं हो सकती। अतएव कार्यवैचित्र्यका हेतुभूत प्राणिकर्म सृष्टिका सहकारि-कारण है। सृज्यमान पदार्थ नामरूपात्मक है, सृष्टिके प्राक्क्षणमें सृज्यमान समस्त नाम और रूप परमेश्वरकी बुद्धिसे प्रतिभात होता है। प्रतिभात होनेसे ही 'यह करेंगे' इस प्रकार संकल्प करके उन्होंने जगत्की सृष्टि की। परमेश्वरने पहले आकाशकी सृष्टि की। पीछे आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल और जलसे पृथ्वीकी सृष्टि हुई। यह आकाशादि विशुद्ध भूत है अर्थात् अपञ्चीकृत वा अविमिश्र भूत है। इनमें एकके साथ दूसरेका मेल नहीं है। इन विशुद्ध आकाशादि पञ्चभूतका दूसरा नाम पञ्चतन्मात्र है। क्योंकि, पाचभस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक तन्मात्र है। अर्थात् आकाश आकाशमात्र, वायु वायुमात्र इत्यादि। आकाशादिमेंसे कोई भी भूतान्तर-मिश्रित नहीं है।

परमेश्वरने मायासहित जगत्की सृष्टि की है। माया त्रिगुणात्मिका है, तत्सृष्ट आकाशादि भी त्रिगुणात्मक है लेकिन आकाशादि त्रिगुणात्मक होने पर भी तमोगुण ही उसमें अधिक है। इस कारण सत्त्वादि गुणका कार्य आकाशादिमें दिखाई नहीं देता।

आकाशादि पञ्च तन्मात्रमेंसे एक एक ज्ञानेन्द्रियकी सृष्टि हुई है। आकाशके सात्त्विकांशसे श्रोत्र, वायुके सात्त्विकांशसे त्वक्, तेजके सात्त्विकांशसे चक्षु, जलके सात्त्विकांशसे रसन तथा पृथ्वीके सात्त्विकांशसे प्राण-की उत्पत्ति हुई है। श्रोत्रका अधिष्ठात्री देवता सूर्य, रसनका अधिष्ठात्री देवता वरुण और प्राणका अधिष्ठात्री देवता अश्विनीकुमार है।

श्रोत्रादि पांच ज्ञानेन्द्रिय यथाक्रम दिक् आदि पांच देवतासे अधिष्ठित हो शब्दादि विषयको ग्रहण करती अथवा उसमें ज्ञान सम्पादन करती हैं। आकाशादि पञ्चतन्मात्रका सात्त्विकांश एक साथ मिल कर मन और बुद्धिकी सृष्टि करता है। अहङ्कार और चित्त मन तथा बुद्धिके अन्तर्गत है। मन, बुद्धि, अहङ्कार और चित्त इनका नाम अन्तःकरण है। मनका अधिष्ठात्री देवता चन्द्र, बुद्धिका चतुर्मुख, अहङ्कारका शंकर तथा चित्तका अधिष्ठात्री देवता अच्युत है। मन प्रभृति अन्तःकरण उक्त देवताओंसे अधिष्ठित हो उस विषयका भोग करता है।

आकाशादि पृथक् पृथक् रजके अंशसे पांच कर्मेन्द्रियकी उत्पत्ति हुई है। आकाशके रजोंशसे वाक्, वायुके रजोंशसे हाथ, तेजके रजोंशसे पैर, जलके रजोंश-से पायु और पृथिवीके रजोंशसे उपस्थ उत्पन्न हुआ है। इनके अधिष्ठात्री देवता यथाक्रम अग्नि, इन्द्र, उपेन्द्र, यम और प्रजापति है।

आकाशादिगत रजके अंशोंके मिलनेसे प्राणादि वायु-पञ्चककी सृष्टि हुई है। कर्मेन्द्रिय क्रियात्मक होनेके कारण पूर्वाचार्योंने उन्हें रजोंश स्थिर किया है। आका-शादिसे पञ्चीकृत पञ्च महाभूतोंकी उत्पत्ति हुई है।

पञ्चीकरणका विषय पञ्चीकरण शब्दमें देखो।

इस पञ्चीकृत पञ्च महाभूतसे यथाक्रम भूर्लोक वा भूमि-लोक, भुवर्लोक वा अन्तरीक्ष लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक जो एक दूसरेके ऊपर अवस्थित है उनकी तथा नीचेके अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल नामक चार प्रकारके स्थूल शरीरकी एवं तद्भोग्य अन्नपानादिकी उत्पत्ति होती है।

स्थूल शरीरका दूसरा नाम अन्नमयकोष है। कर्मे-न्द्रियके साथ प्राणादि वायुपञ्चकका नाम प्राणमयकोष और कर्मेन्द्रियके साथ मनका नाम मनोमयकोष और ज्ञानेन्द्रियके साथ बुद्धिका नाम विज्ञानमयकोष है। संसारका मूलीभूत अज्ञान आनन्दमयकोष है। यह पञ्च-कोष आत्मा नहीं है, आत्मा कुछ और है। सदानन्द योगीन्द्रका कहना है,—विज्ञानमयकोष ज्ञानशक्तिमान् है, वह कर्त्तृरूप है। इच्छाशक्तिवान् मनोमयकोष करणरूप है। क्रियाशक्तिमान् प्राणमय कोष कार्यरूप है। एक साथ मिले हुए प्राणमय, मनोमय, और विज्ञान-मयकोषको लिङ्गशरीर वा सूक्ष्मशरीर कहते हैं। पूर्वा-चार्यगण कहते हैं,—

'पञ्चप्राणमनोबुद्धिदशेन्द्रियसमन्वितम्।
अपञ्चीकृतभूतोत्थं सूक्ष्माङ्गं भोगसाधनम्॥"

पञ्चप्राण, मन, बुद्धि और दशेन्द्रिय यह भोगसाधन सूक्ष्म शरीर है। अपञ्चीकृत भूतसे यह उत्पन्न हुआ है। यह सूक्ष्म शरीर मोक्षपर्यन्त स्थायी है।

पूर्वाचार्योंने संसारके मूलीभूत अज्ञानको कारण-शरीर बतलाया है। यह प्रत्येक शरीर व्यष्टि और समष्टि-रूपमें दो श्रेणियोंमें विभक्त है। जीव व्यष्टिकारण-शरी-राभिमानी है और ईश्वर समष्टिकारण शरीराभिमानी है। समष्टिकारण शरीर वा समष्टि अज्ञान विशुद्ध सत्त्वप्रधान है, तदुपहित चैतन्य सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्व-नियन्ता, जगत्कारण और ईश्वर नामसे प्रसिद्ध है। समष्टि सूक्ष्म शरीराभिमानी वा समष्टि सूक्ष्म शरीर उपहित चैतन्य सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ और प्राण कहे गये हैं। हिरण्यगर्भ आदि जीव है। व्यष्टि सूक्ष्म शरीरोपहित चैतन्य तैजस नामसे, समष्टि स्थूल-शरीरोपहित चैतन्य वैश्वानर वा विराट् नामसे तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यष्टि स्थूलशरीरोपहित चैतन्य विश्व नामसे प्रसिद्ध है। इससे मालूम होता है, कि एकमात्र चैतन्य विभिन्न उपाधि योगसे विभिन्न शब्दमें कहा गया है, वस्तुगत इनमें कोई भेद नहीं है।

सृष्टिका विषय एक तरह संक्षेपमें कहा गया। अब प्रलयका विषय कहता हूं। प्रलय शब्दका अर्थ है त्रैलोक्यविनाश वा सृष्ट पदार्थका नाश। प्रलय चार प्रकारका है, नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत और आत्यन्तिक। सुषुप्तिका नाम नित्यप्रलय है। सुषुप्तिकालमें सुषुप्त पुरुषके पक्षमें सभी कार्य प्रलीन हो जाते हैं। श्रुतिने कहा है,—सुषुप्ति अवस्थामें द्रष्टासे विभक्त वा पृथग्भूत दूसरा कोई द्रष्टव्य पदार्थ नहीं रहता। इस कारण द्रष्टा नित्य चैतन्यस्वरूप होने पर भी वाह्यविषयका अभाव होता है, इस कारण सुषुप्तिकालमें वाह्यवस्तुका ज्ञान नहीं रहता। धर्माधर्म आदि उस समय कारणरूपमें अवस्थित रहता है। अन्तःकरणकी दो शक्ति है, ज्ञान-शक्ति और क्रियाशक्ति। सुषुप्तिकालमें ज्ञानशक्ति-विशिष्ट अन्तःकरणका विलय होता है, इस कारण सुषुप्त-पुरुषके गंधादिका ज्ञान नहीं रहता। क्रियाशक्ति-विशिष्ट अन्तःकरण विलीन नहीं होता, इस कारण सुषुप्तपुरुषको प्राणनादि क्रिया वा श्वास प्रश्वासविशिष्ट नहीं होता है।

कार्यब्रह्म वा हिरण्यगर्भके दिवसका शेष होने पर त्रैलोक्यमें जो प्रलय होता है उसका नाम नैमित्तिक प्रलय है। ब्रह्माका दिन और रात चार हजार युगके समान है।

कार्यब्रह्मका विनाश होनेसे सभी कार्योंका जो विनाश होता है उसका नाम प्राकृत प्रलय है। ब्रह्माका आयु-ष्काल द्विपरार्द्ध-परिमित है। इस आयुष्कालके अव-सान होनेसे कार्यब्रह्मका विनाश होता है। कार्यब्रह्मके विनाश होनेसे उसमें अधिष्ठित ब्रह्माण्ड, तदन्तर्वर्त्ती चतु-र्दश लोक, तदन्तर्वर्त्ती स्थावर जङ्गमादि प्राणिदेह, भौतिक घटपटादि तथा पृथिव्यादि सभी भूतवर्ग प्रलीन हो जाते हैं। मूल कारणभूत प्रकृति वा मायामें सभी प्रलीन होते हैं, इसीसे इसका नाम प्राकृत प्रलय है। यह प्रलय मायासे हुआ करता है, परब्रह्मसे नहीं। क्योंकि प्रध्वंसरूप प्रलय ब्रह्मनिष्ठ नहीं है—मायानिष्ठ है। ब्रह्ममें परिकल्पित जगत् तत्त्वज्ञान द्वारा ब्रह्ममें वाधित होता है।

यह वाधरूप प्रलय ब्रह्मनिष्ठ है। द्विपरार्द्धकाल शेष होनेके पहले कार्यब्रह्मका ब्रह्मसाक्षात्कार होने पर भी ब्रह्माण्डाधिकाररूप प्रारब्ध कर्मकी परिसमाप्ति नहीं होती, इस कारण अधिकार काल तक (द्विपरार्द्धकाल) कार्यब्रह्मके विदेहकैवल्य वा परम-शक्ति नहीं होगी। ब्रह्मलोकवादियोंके ब्रह्मसाक्षात्कार होनेसे उन्हें भी विदेहकैवल्य होगा।

ब्रह्मसाक्षात्कारनिमित्तक सर्वजीवको मुक्तिका नाम आत्यन्तिक प्रलय है। एक जीववादमें वह एक ही समय सम्पन्न होगा और नाना जीववादमें क्रमसे होगा। एक दो करके जीव मुक्त हुआ है, होता है और होगा। इस प्रकार धीरे धीरे ऐसा समय आ पहुंचेगा, कि सभी जीव मुक्त हो जायँगे। एक भी जीवबद्ध नहीं रहेगा। यही आत्यन्तिक प्रलय है। नित्य, नैमित्तिक और प्राकृत प्रलयका हेतु कर्मोपरम है। इन सब प्रलय में भोग हेतु कर्मका उपरम होनेके कारण भोगमात्रका उपरम होता है। संसारका मूल कारण अज्ञान है वह इन सब प्रलयमें विनष्ट नहीं होता। किन्तु आत्यन्तिक प्रलय होनेसे ब्रह्मसाक्षात्कार वा तत्त्वज्ञानका उदय होता है। तत्त्वज्ञान होनेसे मिथ्याज्ञान वा अज्ञान रहने नहीं पाता। अतएव आत्यन्तिक प्रलयसे संसारका मूल कारण अज्ञान विनष्ट हो जाता है। अतएव आत्यंतिक प्रलयके वाद फिर सृष्टि नहीं होती। इस प्रलयको महाप्रलय कहते हैं।

नित्य, नैमित्तिक और प्राकृत प्रलयका क्रम सृष्टि-क्रमके विपरीत क्रमसे जानना होगा। सृष्टिक्रमसे यदि प्रलय हो, तो पहले उपादान कारणका विनाश और पीछे तदुपादेय कार्यका विनाश होगा, किन्तु यह बिल-कुल असम्भव है। क्योंकि उपादान कारणके विनष्ट होनेसे कार्य किसका आश्रय किये हुए रहेगा। यह देखा जाता है, कि मट्टीके बने हुए घड़े आदि जब टूट फूट जाते तब फिर वे मिट्टीमें ही मिलते हैं। पहले मट्टीका विनाश और पीछे उससे प्रस्तुत घड़े आदिका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनाश अदृष्टचर है। जिस क्रमसे सीढ़ीसे ऊपर चढ़ते हैं, उसी क्रमसे उतरना भी पड़ता है। अतएव यह कहना अनुचित नहीं होगा, कि प्रलयकालमें पृथिवी जलमें, जल तेजमें, तेज वायुमें, वायु आकाशमें, आकाश अहङ्कारमें और अहङ्कार अज्ञान वा अविद्यामें लीन होता है। प्रलयके विषयमें दार्शनिकोंके मध्य मतभेद देखा जाता है। प्रलय देखो।

मीमांसक आचार्य लोग प्रलयको स्वीकार नहीं करते नैयायिक प्रवर उदयनाचार्यने नाना प्रकारके अनुमानोंकी सहायतासे प्रलयका अस्तित्व स्वीकार किया है। पुराणशास्त्रमें प्रलयको मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया है। फिर भी महाप्रलय वा आत्यन्तिक प्रलयके विषयमें आचार्योंका एक मत नहीं है। कोई कोई नैयायिक आचार्य महाप्रलयको स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है, कि महाप्रलयका कोई प्रमाण नहीं मिलता। पातञ्जल-भाष्यकारने आत्यन्तिक प्रलयको स्वीकार नहीं किया है, ऐसा मालूम होता है। वाचस्पतिमिश्रने तत्त्ववैशारदी ग्रन्थमें कहा है, कि श्रुति, स्मृति इतिहास और पुराणमें सर्ग प्रतिसर्गपरम्परासे अनादित्व और अनन्तत्व श्रुत हुआ है। प्रकृतिके विकारोंकी नित्यता भी शास्त्रसिद्ध है। अतएव आत्यन्तिक प्रलयको शास्त्रानुकूल नहीं कह सकते। क्रमिक विवेकख्याति द्वारा धीरे धीरे सभी जीव मुक्त होंगे, अतः एक ही समयमें संसारका उच्छेद हो जायगा, यह कल्पना भी प्राचीन प्रतीत नहीं होती। क्योंकि सभी जीव अनन्त और असंख्य हैं। इसी प्रकार वे आत्यन्तिक प्रलयको स्वीकार नहीं करते। किन्तु वैदान्तिक आचार्य लोग आत्यन्तिक प्रलयको निर्विवाद स्वीकार कर गये हैं।

सृष्टि और प्रलयका विषय कहा गया, अब स्थितिकालीन संसारगतिका विषय संक्षेपमें कहता हूं। जो धर्मात्मा हैं वे उत्तरमार्ग (देवयान) अथवा दक्षिणमार्ग (पितृयान) इन दो मार्गोंमेंसे किसी एक मार्गका अवलम्बन कर परलोक जाते और पुण्यानुरूप फलभोग करते हैं। फलभोगके बाद वे पुनः मर्त्यलोकमें आते हैं तथा सञ्चित शुभकर्मके तारतम्यानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य हो कर अथवा सञ्चित पापकर्मके अनुसार कुत्ते, सूअर और चण्डाल आदि योनिमें जन्म लेते हैं।

पञ्चाग्निविद्योपासक, सगुण ब्रह्मोपासक वा प्रतीकोपासनानिरत धर्मात्मा गृहस्थ दक्षिण मार्गमें वा पितृयानमें जाते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रमी इनके लिये उत्तममार्ग ही कहा गया है। उत्तरमार्गगामी पहले अर्चिदेवतासे अहर्देवता, अहर्देवतासे शुक्लपक्षदेवता, शुक्लपक्षदेवतासे उत्तरायण देवता, उत्तरायण देवतासे संवत्सर देवता, संवत्सर देवतासे आदित्य देवता, आदित्यसे चन्द्र और चन्द्रसे विद्युत्देवताको प्राप्त होते हैं। देवयानगामी जीव जब विद्युद्देवताको प्राप्त होते हैं, तब ब्रह्मलोकसे कोई अमानव पुरुष उपस्थित हो कर उत्तरभागगामी जीवको सत्यलोकमें ले जाते हैं तथा कार्यब्रह्मको प्राप्त करा देते हैं। यह उत्तरमार्ग देवपथ वा ब्रह्मपथ नामसे प्रसिद्ध है। इससे मालूम होता है, कि जो कार्यब्रह्मप्राप्तिके लायक है उनकी उत्तर-मार्गमें गति होती है। छान्दोग्य उपनिषद्में भी ऐसा ही कहा है। किसी किसी उपनिषद्में कुछ कुछ वैलक्षण्य भी देखा जाता है।

उत्तरमार्गका विषय कहा गया। अब दक्षिणमार्गका विषय कहा जाता है। जो ग्राममें इष्ट, पूर्त्त और दान करते हैं अर्थात् जो केवल कर्मानुष्ठानतत्पर हैं, वे मरने पर पहले धूमाभिमानी देवताको, पीछे धूमदेवतासे रात्रिदेवता, रात्रिसे कृष्णपक्षदेवता, कृष्णपक्षसे दक्षिणायनदेवता, दक्षिणायनसे पितृलोक, पितृलोकसे आकाश और आकाशसे चन्द्रको प्राप्त होते है। यहां पर भी पहलेकी तरह यह समझना होगा, कि मृतजीवको धूमदेवताके समीप ले जाते हैं। इसी प्रकार एक दूसरेके पास पहुंचाया जाता है। चन्द्रमण्डलमें उसको योगोपयोगी जलमय देह बनती है।

आरोह कहा गया, अब अवरोहका विषय कहता हूं। आरोहका अर्थ है इस लोकसे परलोक जाना और अवरोहका अर्थ है परलोकसे इस लोकमें आना।

जिस पुण्यकर्मके फलभोगके लिये जीव चन्द्रलोकमें जाता है, फलके उपभोग द्वारा वह कर्म जब क्षयको प्राप्त होता है, तब जीव क्षणकालमें चन्द्रलोकमें नहीं रह सकता। उस समय जीव पुनः इस लोकमें आ कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जन्म लेता है। इस लोकमें आने वा अवरोहकी प्रणाली इस प्रकार है; चन्द्रमण्डलमें उपभोगके लिये कर्मका क्षय होनेसे, घृतकाठिन्यके विलयकी तरह उसका चन्द्रलोकीय शरीरारम्भक जल विलीन हो कर आकाशमें चला जाता है। उस जलके साथ जीव भी आकाशमें पहुंचता है। आकाशकी तरह सूक्ष्मावस्था प्राप्त वा आकाशभूत जीव उस जलके साथ वायुको प्राप्त होता है। वायु द्वारा इधर उधर सञ्चालित हो कर शरीरारम्भक जलके साथ जीव वायुभावमें आनेके बाद धीरे धीरे धूमभाव वा वाष्प भावापन्न होता है। धूम हो कर वह अभ्रभावापन्न, अभ्रभावापन्न हो कर मेघभावापन्न वा वर्षणयोग्यतापन्न मेघ भावापन्न होता है। उन्नत प्रदेशमें मेघसे वृष्टि होती है। वृष्टिके साथ पृथ्वी समागत जीवऔषधि, वनस्पति, धान, जौ, तिल आदि नाना रूपापन्न तथा पर्वततट, दुर्गमस्थान, नदी, समुद्र, अरण्य और महादेशादिमें सन्निविष्ट होता हैं।

अनुशमी वा कर्मशेषवान् जीव बड़े कष्टसे वहांसे निकलता है। वर्षादि भावसे जीवका निकलना बड़ा कष्टसाध्य है। क्योंकि, वर्षाधाराके साथ जीव पर्वततट पर गिर कर नदीमें मिलता है। नदी द्वारा वह समुद्रमें मिल कर पीतजलके साथ मकरादिकी कुक्षिमें घुस जाता है। वह मकरादि अन्य जलजन्तु द्वारा खाये जाने पर उसके साथ वह उसीकी कुक्षिमें चला जाता है। कालक्रमसे मकरादि जन्तुके साथ समुद्रमें विलीन हो कर जलभावापन्न होता है। इस अवस्थामें समुद्र-जलके साथ मेघ द्वारा आकृष्ट हो कर फिरसे वृष्टिके समय मरुदेशमें, शिलातट पर वा अगम्यप्रदेशमें पतित हो कर रहता है। फिर वहां भी पहलेकी तरह भिन्न भिन्न जन्तुके पेटमें चला जाता हैं। कभी कभी तो अभक्ष्य स्थावररूपमें उत्पन्न हो कर वहीं पर सूख जाता है।

भक्ष्य स्थावररूपमें वा शस्यादि रूपमें उत्पन्न होनेसे भी दूसरा शरीर सहजमें प्राप्त नहीं होता। क्योंकि उर्द्ध्वरेता, बालक, वृद्ध वा क्लीवादि द्वारा भक्षित शस्यादिके साथ अनुशमी, उनके कुक्षिगत होने पर भी मलादिके साथ निकल कर वह मिट्टीके रूपमें परिणत होनेके समय पुनः शस्यादि भावापन्न होता है। काकतालीय न्यायमें रेतःसे ककारिकर्त्तृक भक्षित हो कर रेतके साथ स्त्रीके गर्भाशयमें प्रविष्ट हो कर रेत गिरानेवालेका आकार धारण करता है। अनुशयी जीव उक्त प्रकारसे माताके गर्भाशयमें प्रविष्ट हो मूत्रपुरीषादि द्वारा उपहित माताके उदरमें एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, दश मास रह कर बड़े कष्टसे माताके उदरसे बाहर निकलता है। जहां पर मुहूर्त्त भर भी ठहरना कष्टकर है, वहां दश दश मास ठहरना कैसा कष्टकर होगा पाठक स्वयं समझ सकते हैं।

पेड़ पर चढ़ा हुआ आदमी यदि हठात् गिर जाय, तो गिरनेके समय उसे जिस प्रकार ज्ञान नहीं रहता चन्द्रमण्डलसे उतरते समय अनुशयियोंका भी उसी प्रकार ज्ञान जाता रहता है। क्योंकि, उस समय उनके भोगहेतुभूत कर्म उत्पन्न नहीं होता।

जो स्वर्गभोगार्थ चन्द्रमण्डलमें आरोहण नहीं करते जो एक देहसे दूसरी देहमें जाते हैं उनके मृत्युकालमें देहान्तरतापक कर्मका वृत्तिलाभ होता है इसीसे उनके ज्ञान रहता है। प्रतिपत्तव्य देह विषयमें दीर्घतर भावना उत्पन्न होती है।

जो इष्टादिकारी नहीं हैं, प्रत्युत अनिष्टकारी वा पापकर्मानुष्ठायी हैं, वे चन्द्रमण्डलमें जाने नहीं पाते। वे यमालयमें जा कर अपने कर्मके अनुरूप यमनिर्दिष्ट यातनाका अनुभव कर जन्मग्रहणके लिये इस लोकमें आते हैं। जो विद्याकर्मशून्य हैं उनकी लोकान्तरमें गति वा लोकान्तरसे आगति नहीं होती। छोटे छोटे कीट पतङ्गोंका इस लोकमें ही बार बार जन्ममरण होता है। यह विचित्र संसारगति कितनी बार हुआ करती है, उसकी शुमार नहीं। इस संसारगतिका निर्देश करके श्रुतिने कहा है,—'तस्माज्जुगुप्सेत' जब संसारगति ऐसी कष्टकर है, कि छोटे छोटे जन्तु लगातार जन्ममरणजनित दुःख भोग करनेके लिये ही सर्वदा प्रस्तुत रहते हैं, तब वैराग्यका अवलम्बन करना ही उचित है। जिससे इस प्रकार भयङ्कर संसारसागरमें पुनः पुनः उतरना न पड़े वैसा ही करना सर्वथा श्रेयष्कर है। जिस शरीरके लिये लोग अनेक प्रकारके दुष्कर्म कर बैठते हैं उस शरीरकी अवस्थाकी यदि अच्छी तरह पर्यालोचनाकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाय, तो निश्चय है, कि सुधीगण वैराग्यके पक्षपाती हुए बिना नहीं रह सकते। यह शरीर मलमूत्रका भाण्डार है, अपवित्रताका आधार है। आश्चर्यका विषय है, कि जिस शरीर ले कर हम लोग ऐसा अहङ्कार करते हैं उस शरीरकी अपेक्षा दूसरी कोई बीभत्स वस्तु है वा नहीं, कह नहीं सकते।

सुधियोंका कहना है, कि शरीरमें कभी भी पवित्रताका लेशमात्र नहीं देखा जाता। उसका आदि, मध्य और अन्त सभी अपवित्र है। संसारकी ऐसी भयावह गति है, कि यह अपवित्र शरीर भी बिना उद्वेगके नहीं रह सकता। जरा, मरण, शोक, रोग यह जीवके हमेशा साथ रहनेवाला है। शरीरका मरण अवश्यम्भावी है, इस कारण संसार-गतिको पर्यालोचना कर वैराग्य तथा आत्मसाक्षात्कारके लिये श्रवण, मननादि उपायका अवलम्बन करना बिलकुल ठीक है।

वैराग्य आत्मतत्त्वज्ञानका एक उत्कृष्ट उपाय है। संसारगतिकी पर्यालोचना द्वारा वैराग्यका आविर्भाव होता है। इस संसार-गतिका विषय संक्षेपमें कहा गया। सृष्टि, स्थिति, प्रलय, इस विषयको बार बार आलोचना करते करते तीव्र वैराग्यका उदय होता है, तब फिर जीव स्थिर नहीं रह सकता। मोक्षलाभके लिये व्याकुल हो कर मनन और निदिध्यासन किया जाता है। धीरे धीरे आत्मतत्त्वज्ञानलाभ होनेसे फिर मायिक बन्धन नहीं रहता, अज्ञान दूर हो जाता है। जीव उस समय 'तत्त्वमसि' वाक्यका पायार्थ्य समझ सकता है। उसी समय उसे मोक्ष होता है। तत्त्वज्ञान जब तक नहीं होता, तब तक उसका भ्रम दूर हो ही नहीं सकता। अतएव तत्त्वज्ञान ही एकमात्र मोक्षका कारण है।

जो मोक्षाभिलाषी हैं उन्हें उचित हैं, कि वे पहले तत्त्वज्ञानलाभकी चेष्टा करें।

नित्यानित्य वस्तुविवेक, इहामूत्रफलभोगविराग, शम, दम, उपरति और तितिक्षा आदि साधनसम्पत्ति प्राप्त कर सकनेसे मोक्षलाभ होता है। सृष्टि, स्थिति और प्रलयके विषयकी आलोचना करनेसे कौन वस्तु नित्य और कौन वस्तु अनित्य है। यह आसानीसे जाना जा सकता है। "ब्रह्मैव नित्यं वस्तु ततोऽन्यदखिलमनित्यमिति विवेचनम्।"

ब्रह्म ही एकमात्र नित्य वस्तु है, इसके सिवा और सभी अनित्य हैं। अतएव नित्यवस्तुका त्याग कर अनित्यके प्रति आकृष्ट होना विद्वानोंका कर्त्तव्य नहीं। अतः विद्वानोंको चाहिये, कि वे अनन्यकर्मा हो तत्त्वज्ञानलाभके प्रति विशेष लक्ष्य रखें। तत्त्वज्ञानलाभ करनेसे वे बन्धनसे मुक्त हो मोक्षलाभ करते हैं।

पहले कहा जा चुका है, कि बन्धनमोचन ही मोक्ष है तथा यही परम पुरुषार्थ वा अपवर्ग है। मोक्ष ब्रह्मज्ञान-समधिगम्य है। ब्रह्म-ज्ञानलाभका प्रथम उपाय वैराग्य है। यह वैराग्य किस उपायसे लाभ किया जाता है, ऊपर कहा जा चुका है। विनश्वर क्षणिक सुखकी लालसामें विमुग्ध हो अविनश्वर मोक्षके लिये समुत्सुक न होना सोनेके लिये यत्न न कर आपातरमणीय चमकीली मुट्ठी भर धूलीके लिये कोशिश करनेके समान है।

वेदान्त देखो।

न्यायदर्शनमें मोक्षका विषय जैसा लिखा है बहुत संक्षेपमें उसका विषय यहां पर लिखा जाता है।

न्यायके मतसे आत्यन्तिक दुःखका ध्वंस ही मुक्ति है। शरीर-इन्द्रियादिका सम्बन्ध रहनेसे दुःखका अत्यन्त विनाश असम्भव है। क्योंकि, अनिष्ट वा अनभिमत विषयके साथ इन्द्रियका सम्बन्ध होनेसे दुःखकी उत्पत्ति और अनुभव अनिवार्य है। अतएव मुक्तिकालमें शरीर और इन्द्रियके साथ आत्माका कोई भी सम्बन्ध नहीं रहेगा। आत्मा शरीर और इन्द्रियसे विच्छिन्न हो जायगी। शरीरको इन्द्रियोंके साथ आत्माका विच्छेद होनेसे आत्माको जिस प्रकार दुःख नहीं हो सकता, उसी प्रकार सुख भी नहीं हो सकता। यहां तक, कि शरीरादि सम्बन्धके सिवा आत्मामें किसी प्रकारका ज्ञान चेतना तक भी होने नहीं पाती। क्योंकि, आत्मा मनके साथ, मन इन्द्रियके साथ, इन्द्रिय विषयके साथ संयुक्त होनेसे आत्मामें ज्ञान वा चेतनाका सञ्चार वा उत्पत्ति होती है। मुक्तिकालमें चक्षुरादि इन्द्रियके साथ सम्बन्ध अलग होनेसे जिस प्रकार आत्माके चाक्षुषादि ज्ञान नहीं हो सकता, मनके साथ भी सम्बंध अलग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होनेसे कारण उसी प्रकार मानसिक ज्ञान भी नहीं आ सकता। मनके साथ आत्माका सम्बन्ध मानसिक ज्ञानका कारण है। भिन्न भिन्न मनके साथ भिन्न भिन्न आत्माका सम्बन्ध है, इस कारण भिन्न भिन्न व्यक्तिका मानसिक ज्ञान भी विभिन्न समयमें विभिन्न हुआ करता है।

मानसिक ज्ञान सर्वदा समान भावमें नहीं होता। अतएव वह कादाचित्क है। यह कार्य अवश्य उसका कारण रहेगा। आत्माके साथ मनका संयोग मानस ज्ञानका मुख्य कारण है। यह अन्वय व्यतिरेकसिद्ध वा प्रत्यक्षगम्य है। फिर त्वगिन्द्रियके साथ मनका संयोग ज्ञानसामान्यका कारण है। अलावा इसके और कोई भी ज्ञान नहीं होता। चक्षुरादि विशेष विशेष इन्द्रिय-के साथ मनःसंयोग चाक्षुषादि विशेष विशेष ज्ञानका कारण है।

त्वगिन्द्रिय सवदेहव्यापी है, अतएव जिस किसी इंद्रियके साथ मनका संयोग क्यों न हो, त्वगिन्द्रियके साथ मनःसंयोग अपरिहाय है। क्योंकि, त्वगिन्द्रिय देहव्यापी होनेके कारण सभी इंद्रिय प्रदेश त्वगिन्द्रियकी विद्यमानता है। अभी यह सावित हुआ, कि मुक्ति अवस्थामें इंद्रियादिके साथ सम्बन्ध अलग होनेसे आत्मामें किसी प्रकारका सुख दुःख वा ज्ञान नही रहता, रह भी नहीं सकता। मिट्टी पत्थर जड़ पदार्थकी तरह मुक्तिकालमें आत्माभी सुख दुःख तथा ज्ञानादिसे रहित हो जाती है।

न्यायदर्शनके अनुसार मुक्तिको इस अवस्थाके प्रति लक्ष्य करके चार्वाकने आस्तिकोंको सम्बोधन करते हुए उपहासमें कहा है, कि महामुनिके मतसे मुक्तिकालमें सुख दुःखकी तरह ज्ञान वा चेतना तक भी नहीं रहेगी, अतएव मुक्तिकी अवस्था तथा प्रस्तरादिकी अवस्थामें कुछ भी वैलक्षण्य नहीं। ऐसी मुक्तिका विषय जिन्होंने उपदेश दिया है उसका नाम गोतम है। गोतम शब्द-का अर्थ उन्होंने इस प्रकार लगाया है, गोका अर्थ गोपशु और तम प्रत्ययका अथ श्रेष्ठ अर्थात् वे गोपशुश्रेष्ठ है।

जो कुछ हो, गोतमके मतमें सोलह पदार्थका तत्त्व-ज्ञान होनेसे ही मुक्ति होती है।

"प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयववतर्कनिर्णय-वादजल्पवितण्डाहेत्वाभासछलजातिनिग्रहस्थानां तत्त्वज्ञानान्निः श्रेयसाधिगमः॥" (गौतमसू० १।१)

इस मतमें प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तक, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान यही सोलह पदार्थ हैं। इनका तत्त्वज्ञान होनेसे निःश्रेयस वा मुक्ति-लाभ होता हैं।

इनमेंसे प्रमेय पदार्थका तत्त्वज्ञान अन्य निरपेक्षरूपमें निःश्रेयस हेतु—प्रमाणादि पदार्थका तत्त्वज्ञान परम्परा-सम्बन्धमें आत्मनिश्चय सभी अनर्थका मूल है। देहादि-में आत्मनिश्चय होनेके कारण ही स्वाभवतः देहादिके अनुकूल विषयमें राग वा उत्कट अभिलाष तथा देहादि-प्रतिकूल विषयमें द्वेष हुआ करता है। राग और द्वेषकी दोष कहा है। राग और द्वेष रहनेसे उस विषय-में प्रवृत्ति अनिवार्य है। जिस विषयमें राग होता है उसका संग्रह तथा जिस विषयमें द्वेष होता है उसका परिहार करनेके लिये प्रवृत्ति लोगोंकी स्वाभाविक है। प्रवृत्ति होनेसे ही धर्माधर्मका सञ्चय होगा। किसी प्रवृत्ति द्वारा अर्थात् शास्त्रविहित विषयमें प्रवृत्ति द्वारा धर्मका तथा किसी प्रवृत्ति द्वारा अर्थात् प्रतिषिद्ध विषय-में प्रवृत्तिके द्वारा अधर्मका सञ्चय होता है। धर्माधर्म सुख दुःखका हेतु है, जन्म वा शरीर-परिग्रहके विना सुख दुःख नहीं हो सकता। अतएव प्रवृत्तिका कारण प्रवृत्तिसञ्चित धर्माधर्मके लिये जन्म हुआ करता है। जन्म लेनेसे सुख दुःखका भोग करना ही पड़ेगा। देखा जाता है, कि मिथ्याज्ञान वा देहादिमें आत्मबुद्धि ही अनर्थका मूल है।

आत्मा वास्तविक देहादि नहीं है, देहादिसे भिन्न है; इस प्रकार तत्त्वज्ञानका यथाथ आत्मज्ञान होनेसे देह ही आत्मा है, यह मिथ्याज्ञान जाता रहता है। आत्मा अविनाशी है। देहादिकी तरह आत्माका विनाश नहीं हो सकता। आत्मा देहादि नहीं है, देहादिसे सम्पूर्ण पृथक् है, ऐसा तत्त्वज्ञान हो जानेसे फिर देहके प्रतिकूलाचरणमें समुद्यत व्यक्तिके प्रति उतना द्वेष नहीं हो सकता। अतएव तत्प्रयुक्त अधर्म भी होने नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाता। जो देहको आत्मा बतलाते हैं, वे देहके अनिष्टकारीसे जिस प्रकार द्वेष करते हैं, देहके अनुकूल स्रक्-चन्दन सेवनादिके अनिष्टकारीसे द्वेष करने पर भी उस प्रकार द्वेष नहीं करते।

अतएव तत्त्वज्ञान द्वारा मिथ्याज्ञान दूर होनेसे राग-द्वेष दूर होता है। रागद्वेष दूर होनेसे तत्मूलक प्रवृत्ति तथा तज्जन्य धर्माधर्म सञ्चय अवगत होता है। पूर्वसञ्चित धर्माधर्म तत्त्वज्ञान द्वारा विनष्ट वा दग्ध हो जाता है। इसलिये वह फिर रहने नहीं पाता या रहनेसे भी फल अर्थात् सुख-दुःख उत्पादनमें समर्थ नहीं होता। धर्माधर्मके दूर होनेसे उस फलभोगके लिये जन्म नहीं लेना पड़ता। जन्म नहीं होनेसे ही दुःखका नाश होता है। इस दुःखका नाश निःश्रेयस वा मुक्ति है।

सांख्यके मतसे अत्यन्त निवृत्ति ही मुक्ति है। "अथ-त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।" (सांख्यसू० १।१) त्रिविध दुःखकी आत्यन्तिक निवृत्तिका नाम परमपुरुषार्थ वा मोक्ष है।

सांख्याचार्योंका कहना है, कि जगत्में यदि दुःख न रहता तथा लोग उसे परित्याग करनेके अभिलाषी न होते, तो कोई भी शास्त्रप्रतिपाद्य विषय जाननेकी इच्छा नहीं करता। प्राणिमात्र ही दुःखका अनुभव करता है तथा स्वभावतः ही प्रतिकूल रूपसे सोचता रहता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो दुःखको अपने अनुकुल-रूपसे विवेचना नहीं कर सकता हो। प्रतिकूल विषय परित्याग करनेकी इच्छा भी लोगोंका स्वाभाविक है।

जिस दुःखके अप्रतिहत प्रभावमें सभी मनुष्य एकान्त जर्जरित तथा अपने उच्छेदसाधनमें नितान्त आग्रहान्वित हैं, शास्त्र उसी दुःख समुच्छेदका उपाय निर्द्धारण करता है। सुतरां शास्त्रप्रतिपाद्य विषय लोगोंके ज्ञातव्य और अपेक्षित है। अतएव शास्त्रप्रतिपाद्य विषयमें लोगोंका मनोयोग नितान्त जरूरी है।

सत्य है सही, पर शास्त्रोपदिष्ट उपायसे दुःखका उच्छेद साधन करना बड़ा कठिन है। क्योंकि विवेक-ज्ञान दुःखसमुच्छेदका शास्त्रोपदिष्ट उपाय है। विवेक-ज्ञान अनायाससाध्य नहीं है, अनेक जन्म परम्परासे मेहनत करने पर विवेकज्ञान लाभ किया जाता है,—

"बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।" (गीता०)

लौकिक उपायसे किन्तु अल्पायाससे दुःखका उच्छेद-साधन किया जा सकता है। सद्वैद्यके उपदेशानु-सारसे उत्तम औषधके व्यवहार करनेसे शरीर दुःखका, मनोज्ञ स्त्रीपानभोजनादिके परिसेवनसे मानस दुःखका, नीतिशास्त्रकुशलता और निरापद समीचीन स्थानमें अव-स्थिति द्वारा आधिभौतिक दुःखका तथा मणिमन्त्रादि-की सहायतासे आधिदैविक दुःखका प्रतिकार सहसा सम्पन्न हो सकता है। ऐसे सहज उपायसे जब दुःख-का प्रतिकार हो सकता है तब कष्टकर शास्त्रोपदिष्ट उपायसे लोगोंकी प्रवृत्ति एकान्त असम्भव है। एक कहावत ऐसा है,—

"अक्वे चेन्मधुविन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत्।
इष्टस्यार्थस्य संसिद्धौ को विद्वान् यत्नमाचरेत्॥"

घरके कोनेमें अगर मधु मिले तो, पहाड़ पर जाने-का क्या प्रयोजन? अभिलषित विषयकी सिद्धि होने पर कौन विद्वान् यत्न करता है। इसका तात्पर्य यह है, कि थोड़े परिश्रमसे यदि कार्य सिद्धि हो, तो कोई भी दुष्कर उपाय न करें।

यह युक्ति अपाततः रमणीय होने पर भी थोड़ा मनोनि वेशकी सहायतासे चिन्ता कर देखनेसे खुद ही इसकी असारता जानी जाती है। देखा गया है, कि यथाविधि औषध सेवन, मनोज्ञ स्त्रीपानभोजनादिका उपयोग निरा-पद स्थानमें अवस्थिति और नीतिशास्त्रका अभ्यास तथा मणिमन्त्रादिका संग्रह करने पर भी आध्यात्मिकादि दुःखका प्रतिकार नहीं किया जा सकता। अतएव उस दुःखनिवृत्तिका उपाय होने पर भी ऐकान्तिक वा अव्य-भिचारी उपाय नहीं है और भी जाना जा सकता है, कि इन सब उपायोंसे तत्काल दुःखकी निवृत्ति होनेसे कालान्तरमें उस तरहके दुःखका पुनराविर्भाव होता है, यह प्रत्यक्षसिद्ध है।

विवेकज्ञान ही केवल दुःखनिवृत्तिका एकमात्र उपाय है। अथच विवेकज्ञान द्वारा दुःखका उच्छेदसाधन होनेसे पुनः दुःखका आविर्भाव एकान्त असम्भव है। कारण, मिथ्याज्ञान दुःखका निदान वा आदि कारण है, विवेकज्ञान द्वारा मिथ्याज्ञान समूल नष्ट होनेसे अकारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पत्तिकी आशंका नहीं हो सकती। वेदोक्त यज्ञादि द्वारा स्वर्ग लाभ किया जा सकता है तथा उससे दुःख-की निवृत्ति भी हो सकती है तथा अनेक जन्मपरम्पराके आयाससाध्य विवेकज्ञानकी अपेक्षा यज्ञादिका अनुष्ठान थोड़े दिनोंमें हो भी सकता है तथापि इसके अनुष्ठानसे भी दुःखका समुच्छेद होने पर भी अत्यन्त समुच्छेद नहीं होता।

उसका एकमात्र कारण यही है, कि वेदोक्त अनुष्ठान-में पशु और बीजादिकी हिंसा करनी होती है। यह हिंसा पापजनक है। यज्ञानुष्ठानसे जिस प्रकार प्रभूत पुण्य संचय होता है, उसी प्रकार उसे हिंसासाध्य बतला कर प्रभूत पुण्यके साथ साथ यत्किंचित् पापका भी संचय होता है। अतएव यज्ञकर्त्ता जब स्वोपार्जित पुण्यराशिके फलस्वरूप स्वर्गसुखका उपभोग करेंगे तब हिंसाके लिये पापांशके फलस्वरूप यत्किञ्चित दुःख भी उन्हें भोग करना होगा। किन्तु स्वर्गीय पुरुष सुखकी मोहनी शक्तिके प्रभावसे ऐसा मुग्ध हो जाते हैं, कि दुःख-कणिकाको वे दुःख समझते ही नहीं।

"मृष्यन्ते हि पुण्यसम्भरोपनीता स्वर्गसुधामहाह्रदावगाहिनः कुशलाः पापमात्रोपपादितां दुःखवह्निनकणिकां" (तत्त्वकौ०)

वेदोक्त स्वर्गफलजनक कर्म इस प्रकार नहीं है। कर्मके तारतम्यानुसार स्वर्गका तारतम्य होता है तथा स्वर्ग भी चिरस्थायी नहीं है, फल उसका भी नाश होगा। भगवान्ने स्वयं कहा है—

"ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति" (गीता०)

पुण्यात्मा लोगोंके स्वर्गभोग करनेके बाद पुण्यक्षय होनेसे मर्त्यलोकमें प्रवेश करती हैं। अतः इससे साबित हुआ, कि दृष्ट वा लौकिक उपाय औषधादि तथा अदृष्ट वा वैदिक उपाय यज्ञानुष्ठानादि इसके किसी उपायसे भी दुःखकी एकदम निवृत्ति नहीं हो सकती। सुतरां वेदोक्त एकमात्र विवेकज्ञानरूप उपाय अवलम्बन करनेसे ही दुःखकी बिलकुल निवृत्ति हो सकती है।

अतएव यह सिद्ध हुआ, कि यह दुःखनिवृत्ति दृष्ट उपायसे या शास्त्रीय यागयज्ञादिके अनुष्ठानसे भी नहीं होती है। प्रात्यहिक क्षुन्निवृत्तिकी तरह दुःखनिवृत्ति होती है सही पर आत्यन्तिक निवृत्ति नहीं होता, पुनराय उसकी उत्पत्तिकी सम्भावना रहती हैं।

वेदोक्त यज्ञादि अनुष्ठान द्वारा स्वर्गप्राप्त होता है, स्वर्ग अर्थमें दुःखविरोध सुख है। इसलिये उससे दुःखनिवृत्ति हो सकती है तथा अनेक जन्मपरम्परासे आयाससाध्य विवेकज्ञानकी अपेक्षा वेदोक्त यज्ञादिका अनुष्ठान थोड़े समयमें हो सकता है तथापि वेदोक्त यज्ञादि अनुष्ठान द्वारा दुःखका समुच्छेद होने पर भी अत्यन्त समुच्छेद नहीं होता। यज्ञादि हिंसादि दोष-युक्त उससे पाप और पुण्य दोनों होता है। इसीसे हिंसाजनित पापहेतु दुःख तथा पुण्यके लिये स्वर्ग होता है।

अतएव इससे दुःखका ऐकान्त उच्छेद नहीं होता। लौकिक धनादि और वैदिक कर्मका एड दोनों ही समान है आत्यन्तिक दुःखनिवृत्ति धनादि द्वारा नहीं होती, वैदिक यागयज्ञादि द्वारा भी नहीं होती। इस विषयका सिद्धान्त यही है, कि वेदविचारजनित विवेकज्ञानके सिवा अन्य किसी हालतसे भी मोक्षरूप परमपुरुषार्थ लाभ नहीं हो सकता।

सम्प्रति बन्धन क्या है, कहता हूं। मुक्ति बन्धन-सापेक्ष है। सुतरां मुक्ति शब्दसे ही बन्धन कहा गया है। दुःखनिवृत्ति ही मुक्ति है। यह बातमें कहा गया है, कि दुःखसंयोग ही बन्धन है। जीवका बन्धन क्या स्वाभाविक है? इस प्रश्नके उत्तरमें शास्त्रने कहा है,—बन्धन स्वाभाविक नहीं। स्वाभाविक होनेसे शास्त्रमें जो मुक्तिका उपाय निर्देश है तथा जो विधान या अनु-ष्ठानप्रणाली कथित है वह वृथा हो जाती है। बन्धन स्वाभाविक होनेसे शास्त्रमें मोक्षका उपाय अभिहित नहीं होता है यह निश्चय है। अग्निकी उष्णता स्वाभा-विक है वह किसी हालतसे निवारित नहीं होती। होनेसे उसके साथ अग्नि भी कम हो जाती है। स्वभाव अपवाहित नहीं होता, जब तक द्रव्य है तभी तक रहता है। दुःखसंयोगरूप बन्धन स्वाभाविक होनेसे वह जब तक पुरुष है तभी तक रहेगा, किसी तरह नहीं हटेगा। अतएव दुःखसंयोगरूप बंधन पुरुषका स्वाभाविक नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नित्य शुद्धादि स्वभाव पुरुषका बन्धन है, प्रकृति योग व्यतीत संभव नहीं होता। अतएव इसी प्रकृतिके बन्धनसे मुक्त होनेके लिये जीवमात्रको ही चेष्टा करना विधेय है।

मुक्ति सम्बन्धमें यह मत है, कि आत्मामें जो सुख दुःख मोहादि प्राकृतिक धर्म प्रतिविम्बित हुआ है उसके तिरोहित होनेसे ही आत्माको मुक्ति होती है। जिस प्रकारसे हो प्राकृतिक सम्बन्धका उच्छेद होना ही परम-पुरुषार्थ है।

मुक्ति होनेसे आत्मा किस अवस्थामें रहती है वह वचनातीत, वद्ध अवस्थामें जाना नहीं जाता। सुषुप्ति इसका कई एक दृष्टान्त हो सकता है। इस मतसे पञ्च विंशतितत्त्वमें ज्ञान या तत्त्वके स्वरूप साक्षात्कार होनेसे दुःखकी आत्यन्तिक निवृत्ति होती है—दूसरे उपायसे नहीं। वानप्रस्थ हो, संन्यासी हो अथवा गृही हो पञ्चविंशतितत्त्वमें पूर्ण ज्ञान लाभ कर सकने पर भी आत्यन्तिक दुःख मोचन हो जाता है तथा किसी समय-में भी उसे और दुःखमें अभिभूत होना नहीं पड़ता।

"पञ्चविंशतितत्त्वज्ञो यत्र कुत्राश्रमे वसेत्।
जटी मुण्डी शिखी वापि मुच्यते नात्र संशयः॥"

पञ्चविंशतितत्त्वज्ञ पुरुष जटी, मुण्डी, शिखी अथवा जो कोई आश्रमवासी क्यों न हो मुक्ति लाभ करना ही होगा।

तत्त्वज्ञान होने पर भी देहसत्त्वमें परममुक्ति या कैवल्य नहीं होता। तब भी पूर्वानुभूत संस्कारका शेष रहता है। तत्त्वज्ञान अज्ञानसंस्कारको दग्ध करने पर भी वह दग्धवीजकी तरह आभासभावमें अवस्थित रहता है। शरीरपातके बाद वह निरवशेष हो जाता है। सुतरां तब प्रकृत विदेह-कैवल्य वा आत्यन्तिक दुःख-निवृत्तिरूप मोक्ष सुसम्पन्न होता है। (सांख्यद०)

मुक्ति शब्द देखो।

२ पाटलिवृक्ष, पाँडरका पेड़। ३ मोचन, किसी प्रकारके बंधनसे छूट जाना। ४ मृत्यु, मौत। ५ पतन, गिरना। विश्लेष, शास्त्रों और पुराणोंके अनुसार जीवका जन्म और मरणके बंधनसे छूट जाना।

"जरामरणमोक्षाय मामाश्रिता यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्॥"
(गीता० ७।१९)

मोक्षक (सं० पु०) मोक्षतीति मोक्ष ण्वुल्। १ मुष्ककवृक्ष, मोखा नामक पेड़। २ मोक्ष शब्दार्थ। (त्रि०) ३ मोचन-कर्त्ता, मोक्ष करने या देनेवाला।

'असन्धितानां सन्धाता सन्धितानाञ्च मोक्षकः।'
(मनु ४।३४२)

मोक्षण (सं० पु०) मुक्तिदान, मोक्ष देनेकी क्रिया।

मोक्षणीय (स० त्रि०) मोक्ष-अनीयर्। क्षेपणीय।

"पापा बुद्धिरियं राजन् दैवेनापि कृता यदि।
तथापि मोक्षणीयोऽर्थो नैव बुद्धिमतां भवेत्॥"
(गौ० रामा० २।२०।१९)

मोक्षतीर्थ (सं० क्ली०) मोक्षप्रदं तीर्थं। तीर्थभेद, मोक्ष-प्रदायक तीर्थ।

मोक्षद (सं० त्रि०) मोक्षं ददाति दा-क। मोक्षदाता, मोक्ष देनेवाला।

मोक्षदा (सं० त्रि०) १ मुक्तिदायिनी, मुक्ति देनेवाली। (स्त्री०) २ अगहन सुदी एकादशी।

मोक्षदेव (सं० पु०) चीनपरिव्राजक युएनचुवंगकी उपाधि।

मोक्षद्वार (सं० पु०) १ मुक्तिका उपाय। २ सूर्य। ३ काशी।

मोक्षधर्म (सं० पु०) १ मुक्तिविषयक धर्म। २ महाभारत-के अन्तर्गत पर्वाध्याय।

मोक्षपति (सं० पु०) तालके मुख्य साठ भेदोंमेंसे एक। इसमें १६ गुरु ३२ लघु और द्रुत मात्राएं होती हैं।

मोक्षपुरी (सं० स्त्री०) काशीक्षेत्र आदि सात पुरी। अयो-ध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका और द्वारा-वती ये सब पुरी मोक्षदायिका हैं इसीसे मोक्षपुरी कही गई हैं।

"अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिका॥" (स्कन्दपु०)

मोक्षमहापरिषद् (सं० स्त्री०) बौद्धोंकी प्रधान धर्म-समिति।

मोक्षमूलर (Max Muller)-शर्मण्यदेश (जर्मनी)-वासी एक विख्यात संस्कृतशास्त्रवित् पण्डित। शब्दशास्त्र (Philology)-में उनकी विलक्षण बुद्धि थी। १८२३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ई०में देसौ (Dessau) नगरमें उनका जन्म हुआ। इनके पिता एनहाल्टदेशाऊके ड्युकालपुस्तकागारमें लाइब्रेरियन थे।

अध्यापक मूलर सम्भ्रान्तवंशमें उत्पन्न हुए। यह किसीसे भी छिपा नहीं है। उनका पितृ और मातृवंश जर्मनदेशमें विशेष सम्भ्रांत था। दोनों ही सारदाके अनुगृहीत थे। पितामह महाकवि गेटे शिक्षाविभागके प्रधान संस्कारक थे, इस कारण उनका तमाम आदर था। पिता विलहेल्म मूलर एक सुप्रसिद्ध जर्मन कवि थे। पिताके दारिद्र्यदोषके कारण कविपुत्र मोक्षमूलरको बचपनसे ही बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी थीं। उन्हें शैशवकालसे ही जीविकाऽर्जनके साथ साथ अपनी चेष्टासे शिक्षासोपान पर चढ़ना पड़ा था।

दारिद्र्यप्रपीड़ित बालक मोक्षमूलर बड़े अध्यवसायसे लिखना पढ़ना शुरू कर दिया। विद्यालाभके बाद किसी बन्धु द्वारा अवरुद्ध हो कर इन्होंने स्वयं उत्तरमें कहा था, "दरिद्रता और कठोर परिश्रमने मुझे अपनी उन्नति करनेमें सहायता पहुंचाई है।"

बालक मोक्षमूलर १२ वर्षकी उमर तक हेसेऊ विद्यालयमें पढ़ते रहे। यहां सङ्गीतविद्यामें इन्होंने अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। यहां तक कि, इनके सङ्गीतसे तात्कालिक जर्मनवासी अनेक महात्मा मुग्ध हो कर इनके प्रति आकृष्ट हो गये थे। पिताकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय होनेके कारण इस समय भी ये हाथकी लिखी पुस्तकोंकी नकल करने और उसीसे जीविका चलाने लगे।

१८४१ ई०में लिपजिक कालेजमें प्रविष्ट हो कर इन्होंने १८४३ ई०में Ph.D. की उपाधि प्राप्त की। विश्वविद्यालयमें उस समय हर्मण और हाप्ते नामक दो पंडित संस्कृत पढ़ाते थे। उन्हींसे मोक्षमूलरकी संस्कृतविद्यामें अच्छी व्युत्पत्ति हो गई। संस्कृतकी ओर उनका अनुराग दिनोंदिन बढ़ने लगा।

उपाधि पानेके बाद इन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालयमें प्रवेश किया। पूर्वजन्मार्जित सुकृतिसे इनके सुकोमल हृदयमें संस्कृत अनुरागका सञ्चार होने लगा। भारत और पशियाटिकसे संगृहीत हाथके लिखे प्राचीन संस्कृत और अन्यान्य प्राच्यभाषाकी ग्रन्थोंकी तालिका देख कर ये मुग्ध और आकृष्ट हो गये और बर्लिनके विश्वविद्यालयमें आ कर उनका अध्ययन करने लगे। यहां हिब्रू और संस्कृतकी चर्चामें अविश्रान्त परिश्रम और आयास स्वीकार कर प्रसिद्ध भाषातत्त्ववित् अध्यापक बप और सोलिङ्गके यत्नसे इनका उन सब भाषाओंमें पूरा दखल हो गया था।

अठारह वर्षकी उमरमें मोक्षमूलर विद्यालयका परित्याग कर जीविकार्जनमें अग्रसर हुए। पेटकी चिन्तामें रात दिन लगे रहने पर भी इन्होंने लिखना पढ़ना नहीं छोड़ा। इस समय इन्होंने संस्कृत साहित्य-समुद्रको मथ कर रत्न निकाल लिये और अपनी मातृभाषाकी उन्नतिमें बद्धपरिकर हुए। २० वर्षकी उमरमें कदम बढ़ाते ही इन्होंने विष्णुशर्माकृत हितोपदेशका जर्मनभाषामें अनुवाद कर एक नया रास्ता निकाला।

संस्कृत-साहित्यके अध्ययनके साथ साथ इनकी ज्ञानपिपासा भी धीरे धीरे बढ़ने लगी। इसके बाद ये फ्रांसकी राजधानी पेरिस शहरमें आ कर प्राच्य भाषावित् पण्डितप्रवर युजिन् बुर्नाफके यत्न और उपदेशसे ज्ञानोन्नति करनेमें अग्रसर हुए।

पेरिस नगरमें पण्डित बुर्नाफकी संस्कृत-साहित्य-विषयक वक्तृता सुन कर प्राचीन आर्यहिन्दुओंके परम पूजनीय ग्रन्थ तथा सारी प्राचीन आर्यजातिके आदिग्रन्थ वेदके ऊपर उनका विशेष अनुराग हो गया। उस ज्ञानमय वेदके अध्ययन तथा उसके यथेष्ट प्रचारका इन्होंने बीड़ा उठाया तथा सभाष्य ऋग्वेद प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की। इसी समय बुर्नाफके साथ इनका परिचय हुआ। उक्त अध्यापकसे शिक्षाके प्रारम्भकालमें विशेष कष्ट पा कर ये अपनी सङ्कल्पसिद्धिके विषयमें निरुत्साह हो गये। अभी वे बुर्नाफके आदेशानुसार मूल और भाष्यके साथ ऋग्वेदग्रन्थ सङ्कलन करनेमें लग गये। बुर्नाफने इनसे कहा था, "इस बड़े कार्यमें जब हाथ डाला है, तब यूरोपकी संगृहीत सभी पुस्तकोंको पढ़ो और उनका पाठ मिला कर देखो। वेद प्रकाश करनेमें सभाष्य प्रकाशित करना ही उचित है, केवल कुछ श्लोकोंके ऊपर निर्भर नहीं किया जा सकता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसमें दुरूह और दुर्बोध अंश जोड़ देना अच्छा होगा।"

इस बाईस वर्षके युवकको यह कठिन कार्य कर डालनेकी धुन लग गई। इसके पहले मुद्रित पण्डित वर डा० रोसनके बनाये हुए वेदभागके कुछ अंशों पर इनकी दृष्टि पड़ी। लाख चेष्टा करने पर भी ये सारे यूरोप महादेशमें एक जगह एक सम्पूर्ण वेदग्रन्थका संग्रह न कर सके। जर्मनी और फ्रान्सके पुस्तकालयोंमें संगृहीत ग्रंथोंसे भिन्न भिन्न अंशोंका उद्धार कर ये १८४६ ई०में इङ्गलैण्ड गये और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयकी विख्यात बडलियन लाइब्रेरीमें संगृहीत हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थोंसे पूर्वसंगृहीतांशोंका पाठोद्धार करने लगे।

इस समय प्रगाढ़ पण्डित राजनीतिकुशल जर्मन राजदूत वैरन बुनसेनके साथ मोक्षमूलरका परिचय हुआ। वे इन ज्ञानसन्धित्सु दरिद्र जर्मन युवकके अध्यवसाय पर बड़े मुग्ध और सन्तुष्ट हुए। पीछे उन्होंने भारतवाणिज्यमें प्रसिद्ध इष्टइण्डिया कम्पनीको वेद छपवानेका कुल खर्च देनेके लिये राजी किया। अङ्गरेज-वणिक्-समितिकी सहानुभूतिसे उल्लासित हो युवक मोक्षमूलरने वेदके भाष्य और मूल संग्रहरूप महाकार्यमें हाथ लगाया।

१८४९से १८७३ ई० तक असाधारण अध्यवसाय और अटूट परिश्रम कर मोक्षमूलरने अपना बहुत समय वेदसङ्कलनमें ही बिताया। १८४९, १८५३, १८५६ और १८६३ ई०में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके छापेखानेमें उनके सम्पादित ऋग्वेदका एकसे छः भाग तक मुद्रित हुआ। १८७४ ई०की १४वीं सितम्बरको आक्सफोर्डमें रह कर इन्होंने अपने ऋग्वेदग्रन्थके छठे भागकी उपक्रमणिका शेष की। इसी दिन लण्डन शहरमें प्राच्यभाषाविदोंकी महाजातीय समितिकी पहली बैठक हुई। (The first day of the International Congress of Orientalists in London)। वेद-सङ्कलनमें इन्होंने प्रसिद्ध फरासी पण्डित अलेकसन्दर भान हम्बोल्ट और अध्यापक इ बुर्नोफ, सिमेलियर बुनसेन, मिल, ड्रिथेन्, रोअर, वार्डेली, गोल्डस्टुकर, वैलण्टाइन, भावदाजी, थियोडर औफ्रेक्ट, डा० फिट्ज एडवर्ड हाल, प्रो० हौग, कावेल, एगलिं, थिबो और इङ्गलैण्डके प्रसिद्ध ह० ह० विलसन आदि संस्कृताध्यापकोंसे आन्तरिक श्रद्धाके साथ अकुण्ठित भावमें सहायता पाई थी।

वेद-सङ्कलन कालमें १८५०को ये आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके Deputy Taylorian Professor of Modern languages पद पर नियुक्त हुए। इस समय भारत-तत्वसम्बन्धीय उपदेश देनेके लिये इन्होंने वक्तृता दी। चार वर्ष तक इसी पद पर रह कर १८५४ ई०में सहकारीसे प्रकृत अध्यापक (Professorship)-पद पर इनकी तरक्की हुई। १८५६ ई०में इन्होंने बडलियन लाइब्रेरीके क्युरेटर पदको सुशोभित किया था। इसके बादसे ही ये यश सौरभ और उपाधि रत्नसे अच्छी तरह सम्वर्द्धित हुए। इस समय केम्ब्रिज और एडिनबरा विश्वविद्यालयसे इन्हें L. L. D-की उपाधि मिली। पीछे ये फ्रेञ्च इन्सटिट्यूटके वैदेशिक सभ्यपद पर नियुक्त हुए।

इस समय इन्होंने प्राच्य धर्मशास्त्रसम्बन्धमें प्रायः ५० ग्रन्थोंका अनुवाद किया तथा बहुतसे विभिन्न संस्कृत साहित्य और उनमें भी किसी किसीका अनुवाद करा कर छपवाया और प्रचार किया। विभिन्न प्राच्यदेशके धर्मशास्त्रोंको मथ कर यह अङ्गरेजी भाषामें जो सब ग्रन्थ सङ्कलन कर गये हैं, वह विद्यार्थीमात्रके पढनेकी वस्तु है। इन्होंने वैदेशिक पुराणशास्त्र-सागरमें डूब कर 'पुरातत्त्वका समन्वय' नामक ग्रंथ रचा है। इन्होने आक्सफोर्ड, केम्ब्रिज, ग्लासगो, एडिनबरा आदि विश्वविद्यालय के छात्रोंको अपनी गभीर गवेषणा और असामान्य प्रतिभाके परिचय स्वरूप जो सरल वक्तृता और उपदेश दिया था वही पुस्तकके आकारमें मुद्रित हुआ। इनमें Science of language, India what can it teach us ? Chips from a German workshop, History o Sanskrit literature, Six system of Hindu Philosophy आदि उल्लेखनीय हैं। इनके लिखे अङ्गरेजी ग्रंथोंकी भाषा इतनी उज्ज्वल तथा भाव ऐसा गम्भीर है, उसे पढ़नेसे स्वभावतः ही मनमें भक्ति और श्रद्धाका उदय होता है। माधुर्यमयी संस्कृत भाषाके गौरवव्यञ्जक भावोच्छ्वास आपे आप पाठके मनमें आग्रह उत्पन्न कर देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१८७८ ई०में रावर्ट हार्वटने 'धर्मकी उत्पत्ति और विकाश'के सम्बन्धमें वक्तृता देनेके लिये एक वृत्ति दी। अध्यापक मोक्षमूलर उस व्यवस्थापित वृत्तिके दान-पत्रानुसार वक्ताके पद पर नियुक्त हुए। उनकी धर्मोपदेशपूर्ण वक्तृता दिनमें दो बार सुन कर श्रोता तृप्त न होते थे। १८८८ ई०में स्काटलैण्डके प्रसिद्ध बैरिष्टर बडम गियोगर्डने धर्मविज्ञान 'Science of Religion' संक्रान्त वक्तृताके लिये एक दूसरी वृत्ति प्रदान की। अध्यापक मोक्षमूलर उसके भी वक्ता नियुक्त हुए थे। पीछे वे सब वक्तृताएँ छप गई और विद्वत्समाजमें उनका प्रचार तथा यथेष्ट आदर हुआ।

ऋग्वेदका प्रचार कर मोक्षमूलर विश्वविख्यात हो गये हैं। ऋग्वेदका प्रथम संस्करण छपवानेमें जितना खर्च हुआ था उससे दूना लाभ हुआ। इष्ट-इण्डिया कम्पनीके डिरेक्टरोंने ५०० ग्रन्थ बेच कर ७५००० रुपये संग्रह किये। इसके बाद इन्होंने उक्त सभाष्य ऋग्वेद-साहित्य-संहिताका एक संस्कृत-संस्करण प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की। तदनुसार इन्होंने भारतके स्टेट सेक्रेट्रीसे सहायता मांगी। विलायतके भारत-सचिवने जब उनकी मांग पूरी न की, तब इन्होंने फिरसे इष्ट-इण्डिया कम्पनीकी भारतीय कौंसिलमें अपना अभिप्राय पेश किया। कम्पनीके भारतीय पुस्तकालयके लाइब्रेरियन् विख्यात संस्कृतज्ञ पण्डित महामति ह, ह, विलसनने इस महत् उद्देश्यकी सिद्धिके लिये इण्डिया कौंसिलकी साहित्यसमितिको (Literary Committee of the India Council) विशेषरूपसे अनुरोध किया, पर कोई फल न निकला।

इस समय भारतीय बहुतसे सम्भ्रान्त व्यक्तियोंने उनके प्रकाशित ऋग्वेदके प्रथम संस्करणको पुनः निकालनेकी उनसे अनुमति मांगी थी। उदारमति मोक्षमूलरने कहा था, उपयुक्त पण्डितों द्वारा यदि इसका पुनः संस्करण हो जाय, तो हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं; किन्तु दुःख है, कि इसका पुनः मुद्रण करके ही क्या फल होगा। मैंने इस सम्बन्धमें फिरसे तीन वर्ष आलोचना करके जो भ्रमसंशोधन कर ग्रन्थका कलेवर बढ़ानेकी इच्छा की है उसका इससे कोई फल नहीं होगा। फिर प्रथम संस्करणके मुद्रणकालमें हम जिन आदर्श ग्रन्थोंके आधार पर मुद्रणकार्यमें अग्रसर हुए थे अभी उसकी अपेक्षा और भी हमें एक आध ग्रन्थ मिला है। उससे इस संस्कृत संस्करणका जहां तक हम समझते हैं, बहुत उपकार हो सकता है।'

इस प्रकार कुछ समय बीत जाने पर विद्योत्साही स्वधर्मनिरत विजयनगरके उदार राजाने मोक्षमूलरको इस आशय पर एक पत्र लिखा, कि ऋग्वेदके संस्कृत-संस्करण छपवानेमें जो कुछ खर्च होगा उसे वे सहर्ष देंगे। उस पत्रमें उन्होंने भारतवासीकी कृतज्ञता जताते हुए लिखा था,—"Your study of the literature of India and its people, has decidedly established a great claim on all Hindus to help you to the best of their abilities in any undertaking, much more in one of such literary and religious importance to ourselves." उक्त महाराज बड़े लाटकी व्यवस्थापक सभाके सभ्य थे। मान्द्राजके शासनकर्त्ता सर मनण्टुवार्ट इ, ग्राण्टडफके साथ उसकी गाढ़ी मित्रता थी।

राजासे इस प्रकार वचन पा कर मोक्षमूलरने फिरसे वह वृहत् कार्य ठान दिया। इस समय इनकी अवस्था ढल गई थी, इसलिये अपने कार्यके सहायकरूपमें इन्होंने संस्कृताभिज्ञ Dr. Winternitz को ग्रहण किया। दोनों महान् व्यक्ति वर्णाशुद्धि और भ्रमसंस्कारादि कार्य शेष कर १८८८ ई०के वसन्तकालमें ग्रन्थ छपवानेमें लग गये। १८९२ ई०की २०वीं अप्रिलको राजाके अनुग्रहसे इस द्वितीय संस्करणका कार्य समाप्त हुआ। इसके कुछ समय पहले बम्बईवासी बोड़श राजारामशास्त्री और गोरे शिवराम शास्त्री नामक दो पण्डितोंने सायणका भाषाटीका समेत एक ऋग्वेद प्रकाशित किया। वह ग्रंथ यद्यपि विशुद्ध नहीं था, तो भी उसे मोक्षमूलरने कई जगह सहायता ली थी।

उन्होंने विजयनगराधिप महाराजधिराज सर पशुपति आनन्द गजपतिराज K. C. I. E. को तथा अपने मित्र और सहायकोंको धन्यवाद देते हुए ग्रन्थका उपसंहार किया। जिस राजवंशमें बुकराय सायणके प्रतिपालक थे,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उस वंशके आनन्दगजपति महाराज उस वेद-मुद्रण कार्यके उत्साहदाता हो कर सर्वजनपूज्य होवें, इसमें आश्चय ही क्या ? ऋग्वेदकी प्राचीनता स्वीकार कर अध्यापक मोक्ष-मूलरने लिखा है,—"After the latest researches into the history and chronology of the books of the Old Testament we may now safely call the Rig-veda the oldest book, not only of the Aryan humanity, but of the whole world, and may hope that

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद्ऋग्वेदमहिमा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥"

वैदिकयुगके प्रतिपाद्य चारों वेद, ब्राह्मण और उप-निषदादि; वेदान्त, दर्शन और विभिन्न पुराण, धर्मशास्त्र और संस्कृत नाटकादिकी आलोचना कर अध्यापक मोक्षमूलर इङ्गलैण्ड और अमेरिकामें प्राचीन भारतका एक साधन-प्रभाव फैला गये हैं। उनके लिखे हुए ग्रन्थ ही इस उद्दीपनाका प्रधान कारण है। उन्होंने केवल दूसरेके आविष्कृत तत्त्वका जनसाधारणके निकट भिन्न देशीय भाषामें प्रकाशित ही नहीं किया, वरन् प्राचीन संस्कृत साहित्यको मथ कर उसमेंसे एक ऐतिहासिक तत्त्वका भी उद्धार किया था। उन्होंने ही सबसे पहले संस्कृत साहित्यको श्रुति और स्मृति पुराणादि नामसे दो भागोंमें बांटा है। भारतवर्षमें हस्तलिखित लिपिका प्रचार होनेके पहले वेदादिका श्रुति पुरुषपरम्पराकी रक्षा करनेके लिये गान होता था, इस कारण ब्राह्मण समाजमें शाखा, चरण, प्रवरादि विभाग संघटित हुए। क्योंकि एक ब्राह्मण समाज वा श्रेणीके लिये समस्त वैदिक साहित्यका स्मरण रखना बहुत कठिन है। इस श्रुति-युगमें श्रौत और गृह्यसूत्रसाहित्यकी सृष्टि हुई। श्रौत और गृह्यसूत्रके साथ साथ प्राचीन ब्राह्मणसमाजी शाखा, चरण और प्रवरादि विभागका आचार-व्यवहार निर्देश कर धर्मसूत्र रचा गया था। धर्मसूत्रके बाद धर्मस्मृति-का अभ्युदय हुआ। मनुसंहिता (स्मृति) इसी प्रकार एक धर्मसूत्रके ऊपर प्रतिष्ठित थी। वर्त्तमान आविष्कृत मानवसूत्र उसका प्रमाण है।

उनके मतसे अति प्राचीन कालसे ले कर बौद्धराज अशोकके शासनकाल तक श्रुतियुग विद्यमान था, इसके बाद लिपियुगका आरम्भ हुआ। भारतवर्षमें लिपि-प्रणाली विस्तृत होनेके बाद विभिन्न बौद्ध और हिन्दू धर्मग्रन्थ और उपाख्यानादि रचे गये थे।

मोक्षमूलरने वैदिक साहित्यको तीन भागोंमें विभक्त किया,—१ संहिता, २ ब्राह्मण, ३ उपनिषद्। उनकी कल्पनाके अनुसार ईसाजन्मके पहले १००० से ६००के मध्य ब्राह्मणकाल, उसके बाद ४०० ई० तक उपनिषद्-काल है; अतएव वेदसंहिता ईसाजन्मके १००० वर्ष पहले की है। यह मत कहां तक सत्य है, उस पर पीछे विचार किया जायगा। वैदिक साहित्यका कालनिर्णय करनेमें अध्यापक प्रवर जैसी भूल कर गये हैं, पौराणिक साहित्य और प्राचीन काव्यादिका कालनिर्णय करनेमें वैसे ही वे प्रत्नतत्त्वविदोंके निकट हास्यास्पद हुए हैं।

वेद और पुराण देखो।

१८२३ ई०में जन्म ले कर प्राच्य और प्रतीच्य जगत् तथा आर्य संस्कृत भाषाके साथ प्रतीच्य भाषाओंका शब्दसामञ्जस्य दिखलाते हुए महामति मोक्षमूलर २०वी सदीके आरम्भमें ही इस लोकसे चल बसे।

मोक्षलक्ष्मीविलास (सं० पु०) काशी विश्वेश्वरके पास-का एक मंडप।

मोक्षवत् (सं० त्रि०) मोक्षः विद्यतेऽस्य मोक्ष-मतुप् मस्य व। मोक्षयुक्त, जिसकी मुक्ति हो गई हो।

मोक्षविद्या (सं० स्त्री०) वेदान्तशास्त्र।

मोक्षशास्त्र (सं० क्ली०) मोक्षप्रदं शास्त्रं। जिस शास्त्रमें मोक्षविषयक उपदेश है।

मोक्षशिला (सं० स्त्री०) जैन मतानुसार वह लोक जहां जैन धर्मावलम्बी साधु पुरुष मोक्षका सुख भोगते हैं, स्वर्ग।

मोक्षसाधन (सं० क्ली०) साध्यतेऽनेनेति साधनं, मोक्षस्य साधनं। मोक्षका उपाय, योगादि जिसे अवलम्बन कर जीव मुक्तिपथका पथिक होता है, तपस्या।

मोक्षा (सं० स्त्री०) मोक्षदा देखो।

मोक्षिण (सं० त्रि०) मोक्षः अस्यास्तीति मोक्ष-इनि। मोक्षयुक्त, वह पुरुष जिसकी मुक्ति हो गई हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१८७८ ई०में रावर्ट हार्वटने 'धर्मकी उत्पत्ति और विकाश'के सम्बन्धमें वक्तृता देनेके लिये एक वृत्ति दी। अध्यापक मोक्षमूलर उस व्यवस्थापित वृत्तिके दान-पत्रानुसार वक्ताके पद पर नियुक्त हुए। उनकी धर्मोपदेशपूर्ण वक्तृता दिनमें दो वार सुन कर श्रोता तृप्त न होते थे। १८८८ ई०में स्काटलैण्डके प्रसिद्ध बैरिष्टर हडम गिफोर्डने धर्मविज्ञान 'Science of Religion' संक्रान्त वक्तृताके लिये एक दूसरी वृत्ति प्रदान की। अध्यापक मोक्षमूलर उसके भी वक्ता नियुक्त हुए थे। पीछे वे सब वक्तृताएँ छप गई और विद्वत्समाजमें उनका प्रचार तथा यथेष्ट आदर हुआ।

ऋग्वेदका प्रचार कर मोक्षमूलर विश्वविख्यात हो गये हैं। ऋग्वेदका प्रथम संस्करण छपवानेमें जितना खर्च हुआ था उससे दूना लाभ हुआ। इष्ट-इण्डिया कम्पनीके डिरेक्टरोंने ५०० ग्रन्थ बेच कर ७५००० रुपये संग्रह किये। इसके बाद इन्होंने उक्त सभाष्य ऋग्वेद-साहित्य-संहिताका एक संस्कृत-संस्करण प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की। तदनुसार इन्होंने भारतके स्टेट सेक्रेट्रीसे सहायता मांगी। विलायतके भारत-सचिवने जब उनकी मांग पूरी न की, तब इन्होंने फिरसे इष्ट-इण्डिया कम्पनीकी भारतीय कौंसिलमें अपना अभिप्राय पेश किया। कम्पनीके भारतीय पुस्तकालयके लाइब्रेरियन् विख्यात संस्कृतज्ञ पण्डित महामति ह, ह, विलसनने इस महत् उद्देश्यकी सिद्धिके लिये इण्डिया कौंसिलकी साहित्यसमितिको (Literary Committee of the India Council) विशेषरूपसे अनुरोध किया, पर कोई फल न निकला।

इस समय भारतीय बहुतसे सम्भ्रान्त व्यक्तियोंने उनके प्रकाशित ऋग्वेदके प्रथम संस्करणको पुनः निकालनेकी उनसे अनुमति मांगी थी। उदारमति मोक्षमूलरने कहा था, उपयुक्त पण्डितों द्वारा यदि इसका पुनः संस्करण हो जाय, तो हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं; किन्तु दुःख है, कि इसका पुनः मुद्रण करके ही क्या फल होगा। मैंने इस सम्बन्धमें फिरसे तीन वर्ष आलोचना करके जो भ्रमसंशोधन कर ग्रन्थका कलेवर बढ़ानेकी इच्छा की है उसका इससे कोई फल नहीं होगा। फिर प्रथम संस्करणके मुद्रणकालमें हम जिन आदर्श ग्रन्थोंके आधार पर मुद्रणकार्यमें अग्रसर हुए थे अभी उसकी अपेक्षा और भी हमें एक आध ग्रन्थ मिला है। उससे इस संस्कृत संस्करणका जहां तक हम समझते हैं, बहुत उपकार हो सकता है।'

इस प्रकार कुछ समय बीत जाने पर विद्योत्साही स्वधर्मनिरत विजयनगरके उदार राजाने मोक्षमूलरको इस आशय पर एक पत्र लिखा, कि ऋग्वेदके संस्कृत-संस्करण छपवानेमें जो कुछ खर्च होगा उसे वे सहर्ष देंगे। उस पत्रमें उन्होंने भारतवासीकी कृतज्ञता जताते हुए लिखा था,—"Your study of the literature of India and its people, has decidedly established a great claim on all Hindus to help you to the best of their abilities in any undertaking, much more in one of such literary and religious importance to ourselves." उक्त महाराज बड़े लाटकी व्यवस्थापक सभाके सभ्य थे। मान्द्राजके शासनकर्त्ता सर मनण्टुवार्ट इ, ग्राण्टडफके साथ उसकी गाढ़ी मित्रता थी।

राजासे इस प्रकार वचन पा कर मोक्षमूलरने फिरसे वह वृहत् कार्य ठान दिया। इस समय इनकी अवस्था ढल गई थी, इसलिये अपने कार्यके सहायकरूपमें इन्होंने संस्कृताभिज्ञ Dr. Winternitz को ग्रहण किया। दोनों महान् व्यक्ति वर्णाशुद्धि और भ्रमसंस्कारादि कार्य शेष कर १८८८ ई०के वसन्तकालमें ग्रन्थ छपवानेमें लग गये। १८९२ ई०की २०वीं अप्रिलको राजाके अनुग्रहसे इस द्वितीय संस्करणका कार्य समाप्त हुआ। इसके कुछ समय पहले बम्बईवासी बोड़श राजारामशास्त्री और गोरे शिवराम शास्त्री नामक दो पण्डितोंने सायणका भाषाटीका समेत एक ऋग्वेद प्रकाशित किया। वह ग्रंथ यद्यपि विशुद्ध नहीं था, तो भी उसे मोक्षमूलरने कई जगह सहायता ली थी।

उन्होंने विजयनगराधिप महाराजाधिराज सर पशुपति आनन्द गजपतिराज K. C. I. E. को तथा अपने मित्र और सहायकोंको धन्यवाद देते हुए ग्रन्थका उपसंहार किया। जिस राजवंशमें बुक्कराय सायणके प्रतिपालक थे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस वंशके आनन्दगजपति महाराज उस वेद-मुद्रण कार्यके उत्साहदाता हो कर सर्वजनपूज्य होवें, इसमें आश्चय ही क्या ? ऋग्वेदकी प्राचीनता स्वीकार कर अध्यापक मोक्ष-मूलरने लिखा है,—"After the latest researches into the history and chronology of the books of the Old Testament we may now safely call the Rig-veda the oldest book, not only of the Aryan humanity, but of the whole world, and may hope that

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावदृग्वेदमहिमा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥"

वैदिकयुगके प्रतिपाद्य चारों वेद, ब्राह्मण और उप-निषदादि; वेदान्त, दर्शन और विभिन्न पुराण, धर्मशास्त्र और संस्कृत नाटकादिकी आलोचना कर अध्यापक मोक्षमूलर इङ्गलैण्ड और अमेरिकामें प्राचीन भारतका एक साधन-प्रभाव फैला गये हैं। उनके लिखे हुए ग्रन्थ ही इस उद्दीपनाका प्रधान कारण है। उन्होंने केवल दूसरेके आविष्कृत तत्त्वका जनसाधारणके निकट भिन्न देशीय भाषामें प्रकाशित ही नहीं किया, वरन् प्राचीन संस्कृत साहित्यको मथ कर उसमेंसे एक ऐतिहासिक तत्त्वका भी उद्धार किया था। उन्होंने ही सबसे पहले संस्कृत साहित्यको श्रुति और स्मृति पुराणादि नामसे दो भागोंमें बांटा है। भारतवर्षमें हस्तलिखित लिपिका प्रचार होनेके पहले वेदादिका श्रुति पुरुषपरम्पराकी रक्षा करनेके लिये गान होता था, इस कारण ब्राह्मण समाजमें शाखा, चरण, प्रवरादि विभाग संघटित हुए। क्योंकि एक ब्राह्मण समाज वा श्रेणीके लिये समस्त वैदिक साहित्यका स्मरण रखना बहुत कठिन है। इस श्रुति-युगमें श्रौत और गृह्यसूत्रसाहित्यकी सृष्टि हुई। श्रौत और गृह्यसूत्रके साथ साथ प्राचीन ब्राह्मणसमाजी शाखा, चरण और प्रवरादि विभागका आचार-व्यवहार निर्देश कर धर्मसूत्र रचा गया था। धर्मसूत्रके बाद धर्मस्मृति-का अभ्युदय हुआ। मनुसंहिता (स्मृति) इसी प्रकार एक धर्मसूत्रके ऊपर प्रतिष्ठित थी। वर्त्तमान आविष्कृत मानवसूत्र उसका प्रमाण है।

उनके मतसे अति प्राचीन कालसे ले कर बौद्धराज अशोकके शासनकाल तक श्रुतियुग विद्यमान था, इसके बाद लिपियुगका आरम्भ हुआ। भारतवर्षमें लिपि-प्रणाली विस्तृत होनेके बाद विभिन्न बौद्ध और हिन्दू धर्मग्रन्थ और उपाख्यानादि रचे गये थे।

मोक्षमूलरने वैदिक साहित्यको तीन भागोंमें विभक्त किया,—१ संहिता, २ ब्राह्मण, ३ उपनिषद्। उनकी कल्पनाके अनुसार ईसाजन्मके पहले १००० से ६००के मध्य ब्राह्मणकाल, उसके बाद ४०० ई० तक उपनिषद्-काल है; अतएव वेदसंहिता ईसाजन्मके १००० वर्ष पहले की है। यह मत कहां तक सत्य है, उस पर पीछे विचार किया जायगा। वैदिक साहित्यका कालनिर्णय करनेमें अध्यापक प्रवर जैसी भूल कर गये हैं, पौराणिक साहित्य और प्राचीन काव्यादिका कालनिर्णय करनेमें वैसे ही वे प्रत्नतत्त्वविदोंके निकट हास्यास्पद हुए हैं।

वेद और पुराण देखो।

१८२३ ई०में जन्म ले कर प्राच्य और प्रतीच्य जगत् तथा आर्य संस्कृत भाषाके साथ प्रतीच्य भाषाओंका शब्दसामञ्जस्य दिखलाते हुए महामति मोक्षमूलर २०वी सदीके आरम्भमें ही इस लोकसे चल बसे।

मोक्षलक्ष्मीविलास (सं० पु०) काशी विश्वेश्वरके पास-का एक मंडप।

मोक्षवत् (सं० त्रि०) मोक्षः विद्यतेऽस्य मोक्ष-मतुप् मस्य व। मोक्षयुक्त, जिसकी मुक्ति हो गई हो।

मोक्षविद्या (सं० स्त्री०) वेदान्तशास्त्र।

मोक्षशास्त्र (सं० क्ली०) मोक्षप्रदं शास्त्रं। जिस शास्त्रमें मोक्षविषयक उपदेश है।

मोक्षशिला (सं० स्त्री०) जैन मतानुसार वह लोक जहां जैन धर्मावलम्बी साधु पुरुष मोक्षका सुख भोगते हैं, स्वर्ग।

मोक्षसाधन (सं० क्ली०) साध्यतेऽनेनेति साधनं, मोक्षस्य साधनं। मोक्षका उपाय, योगादि जिसे अवलम्बन कर जीव मुक्तिपथका पथिक होता है, तपस्या।

मोक्षा (सं० स्त्री०) मोक्षदा देखो।

मोक्षिण (सं० त्रि०) मोक्षः अस्यास्तीति मोक्ष-इनि। मोक्षयुक्त, वह पुरुष जिसकी मुक्ति हो गई हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोक्षोपाय (सं० पु०) मोक्षस्य मुक्तेरुपायः। मुक्ति-साधन, जिसे अवलम्बन करनेसे मुक्ति मिलती है, तपस्या, समाधि, योग, ज्ञान।

"स तं कृच्छ्रगतं दृष्ट्वा कृपयाभिपरिप्लुतः।
उवाच दानवश्रेष्ठं मोक्षोपायं ददामि ते॥"

(हरिवंश २५५।६३)

मोक्ष्य (सं० त्रि०) जो मोक्षके योग्य हो, मोक्षका अधिकारी।

मोख (मुझद्द)—पंजाब प्रदेशके रावलपिण्डी जिलान्तर्गत एक नगर। यह सिन्धु नदके बायें किनारे पर अवस्थित है। पहले इंडस्ष्टिम फ्लोटिला कम्पनीका वाष्पीय जहाज इस वाणिज्य केन्द्रसे कोटरी तक जाता आता था। रेलवे लाइनके हो जानेसे जहाज द्वारा वाणिज्यका ह्रास हो गया है। अभी बड़ी बड़ी देशी नाव द्वारा देशीय पण्य द्रव्यका वाणिज्य होता है। स्थानीय पराछा नामक वणिकजाति द्वारा अफगानिस्तानके साथ यहांका वाणिज्य सम्बन्ध हो गया है।

मोखा (हिं० पु०) दीवार आदिमें बना हुआ छेद जिससे धूआं निकलता है और प्रकाश तथा वायु आती है।

मोखेर—मध्यभारतके छिन्दवाड़ा जिलान्तर्गत एक नगर।

मोग (सं० पु०) वसन्तरोगभेद, चेचक।

मोगरा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका बहुत बढ़िया और बड़ा बेला। २ मोंगरा देखो।

मोगल—मुगल देखो।

मोगलपुर—युक्तप्रदेशके मुरादाबाद जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° ५५′ ४३″ उ० तथा देशा० ७८° ४५′ ५५″ पू० रामगंगा नदीसे एक मील पश्चिममें अवस्थित है। यहां एक प्राचीन दुर्गचिह्न पड़ा हुआ है।

मोगलभिन—कराची जिलेके शाहबन्दर उपविभागके अन्तर्गत एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° २३′ उ० तथा देशा० ६८° १८′ ३०″ पू० सिन्धुनदकी पिन्यारी शाखाके गांगरो नामक अंशमें अवस्थित हैं। नगरसे एक कोस दक्षिण २०० गज ×१३॥ गज चौड़ा एक बांध है। उसके ऊपर बावला गाछ हो कर एक सुन्दर पथ दिखाई पड़ता है। गांगरो नदीका जल मीठा और पिन्यारीका जल खारा होता है। यहां प्रति वर्ष माघ महीनेमें एक मुसलमान फकीरके उद्देश्यसे एक मेला लगता है। इस समय पीरके समाधि-मन्दिरमें पूजा देनेके लिये दूर दूर देशोंसे लोग आकर रहते हैं।

मोगलमारो—मेदिनीपुर जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम। यहां मुगलके साथ यहांके हिन्दू जमींदारोंका एक युद्ध हुआ था। मेदिनीपुर देखो।

मोगलसराय—युक्तप्रदेशके बारांणसी जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५° १६′ ३०″ उ० तथा देशा० ८३° १०′ ४५″ पू०के मध्य अवस्थित है। काशी जानेके लिये यहांसे इष्टइण्डियन रेलवेकी एक लाइन दौड़ गई है।

मोगली (हिं० स्त्री०) एक जंगली वृक्ष। यह गुजरातमें अधिकतासे पाया जाता है। इससे एक प्रकारका कत्था बनाया जाता है और इसकी छाल चमड़ा सिझानेके काममें आती है।

मोगा—१ पञ्जाब प्रदेशके फिरोजपुर जिलेकी एक तहसील। भू-परिमाण ८११ वर्गमील है जिनमेंसे ७३३ वर्गमील भूमिमें खेतीबारी होती है।

२ उक्त जिलेका एक नगर और उपविभागका विचार सदर। यह ग्रांडट्रंकरोडके किनारे अवस्थित है। यह लुधियाना और फिरोजपुरका शस्यभण्डार है। लुधियाना-फिरोजपुर-रेलपथ विस्तृत हो जानेसे यह स्थान वाणिज्यका केन्द्र हो गया है।

मोगिनन्द (मोगनन्द)—पंजाबके सिरमूर जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह अक्षा० २०° ३२′ उ० तथा देशा० ७७° १६′ पू० शिवालिक पर्वतमालाके मोगिनन्द संकटके किनारे अवस्थित है। १८१५ ई०के गोरखा-युद्धके समय नाहनकी चढ़ाईके समय अंगरेजी सेनाने यहां छावनी ढाली थी।

मोग्यो—अंगरेजाधिकृत ब्रह्मके थरावती जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० १७° ५८′ २०″ उ० तथा देशा० ९०° ३३′ २०″ पू०के बीच पड़ता है।

मोघ (सं० त्रि०) मुह्यतेऽस्मिन्निति मुह घञ्, न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वं। १ निरर्थक, निष्फल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यदन्यगोषु वृषभो वत्सानां जनये च्छतम्।
गोमिनामेव ते वत्सा मोघं स्कन्दितमार्षभम् ॥"
(भनु ९।५०)

२ हीन। (पु०) ३ प्राचीर।

मोघता (सं० स्त्री०) मोघस्य भावः तल-टाप्। मोघत्व, निष्फलत्व।

मोघपुष्पा (सं० स्त्री०) मोघं पुष्पं रजो यस्याः। वन्ध्या। (राजनि०)

मोघा (सं० स्त्री०) मोघ-स्त्रियां टाप्। १ पाटला, पाडर का वृक्ष। २ विड़ङ्ग। वायविडंग। ३ वदरी, बेर। ४ निष्फला।

मोघिया (हिं० स्त्री०) मोटी मजबुत और अधिक चौड़ी नरिया। यह खपरैली छाजनमें बँड़ेरे पर मँगरा बांधनेमें काम आती है।

मोघिया—राजपूताना और मध्य भारतमें रहनेवाली एक असभ्य जाति। यह पहले दस्युवृत्ति द्वारा अपनी जीविका चलाती थी। अभी अंगरेजोंके कठोर शासनसे डर कर बहुत कुछ शान्त हो गई है।

मोघिया—पूर्व बंगाल और आसामवासी एक जाति। सम्भवतः इसकी उत्पत्ति मगजातिसे हुई है।

मोघोलि (सं० पु०) प्राचीर।

मोघ्य (सं० पु०) विफलता, नाकामयाबी।

मोङ्गराज—बंगालका एक राजा।

मोच (सं० क्ली०) मुञ्चति त्वगादिकमिति मुच्-अच्। १ कदलीफल, केला। (पु०) २ शोभाञ्जन वृक्ष, सहिजनका पेड़। ३ सेमलका पेड़। ४ पांडरका पेड़। (स्त्री०) ५ शरीरके किसी अंगके जोड़की नसका अपने स्थानसे इधर उधर खिसक जाना, चोट या आघात आदिके कारण जोड़ परकी नसका अपने स्थानसे हट जाना। इसमें वह स्थान सूज आता है और उसमें बहुत पीड़ा होती है।

मोचक (सं० पु०) मोचयति संसारादिति मुच-णिच् ण्वुल्। १ मोक्ष, मुक्ति। २ कदली, केला। ३ शिग्रु, सहिजनका वृक्ष। ४ विरागी, विषय वासनासे मुक्त। ५ मुष्कक वृक्ष, मोरवा नामक पेड़। (त्रि०) ६ मुक्तिकारक, छुड़ानेवाला।

'अमुक्तो मोचकश्चायमकालः कालचोदकः।'
(शिवपु० वायुस० २।५१)

मोचन (सं० क्ली०) मुच-ल्युट्। १ मोक्ष। मुक्ति करना।

"अवतीर्य रथात्तूर्णं कृत्वा शौचं यथा विधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्या मुपविवेशह ॥" (भारत)

२ कम्पन, कांपना। ३ शाठ्य, शठता। ४ बंधन आदि खोलना, छुड़ान। ५ दूर करना, हटाना। ६ रहित करना, ले लेना। मोचनकर्त्ता, छुड़ानेवाला।

"धन्यं यशस्यं निखिलाघमोचनं रिपुञ्जयं स्वस्त्ययनं तथायुषम्।"
(भाग० ६।१३।२३)

मोचनपट्टक (सं० क्ली०) १ वह वस्तु जिससे जल छांका जाय। २ जलपरिष्कारक, पानी साफ करनेवाला।

मोचना (हिं० क्रि०) १ छोड़ना। २ गिराना, बहाना। ३ छुड़ाना, मुक्त करना। (पु०) ४ लोहारोंका एक औजार जिससे वे लोहेके छोटे छोटे टुकड़े उठाते हैं। ५ हजामोंका वह औजार जिससे वे बाल उखाड़ते हैं।

मोचनिका (सं० स्त्री०) मोचनी, भटकटैया।

मोचनिर्यास (सं० पु०) मोचस्य निर्यासः। मोचरस, सेमरका गोंद। मोचरस देखो।

मोचनी (सं० स्त्री०) मोचयति रोगात् संसारादिति वा मुच् णिच्-ल्यु, स्त्रियां ङीष्। १ कण्टकारी, भटकटैया। २ मोक्षकर्त्री।

मोचनीय (सं० त्रि०) मुच-अनीयर्। मोचनयोग्य, मुक्ति करने लायक।

मोचपुष्पा (सं० स्त्री०) १ वन्ध्या स्त्री, बांझ स्त्री। २ कदलीवृक्ष, केलेका पेड़।

मोचयितृ (सं० त्रि०) मुच्-णिच्-तृच्। मोचनकर्त्ता, मुक्ति देनेवाला।

मोचरस (सं० पु०) मोचस्य रसः। शाल्मलिनिर्यास, सेमरका गोंद। पर्याय मोचरसक, मोचस्राव, मोचनिर्यास, पिच्छिलसार, सुरस, शाल्मलीवेष्ट, मोचसार। इसका गुण—कषाय, कफ-वातनाशक, रसायन, बल, पुष्टि, वर्ण, वीर्य, प्रज्ञा और आयुर्वर्द्धक माना गया है।
(राजनि०)

मोचसार (सं० पु०) मोचरस, सेमरका गोंद।

मोचस्राव (सं० पु०) मोचरस देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोचा (सं० स्त्री०) मुञ्चति त्वचमिति मुच्-अच्-टाप्। १ शाल्मलीवृक्ष, सेमरका पेड़। २ कदलीवृक्ष, केलेका पेड़। ३ नीलीवृक्ष, नीलका पौधा। ५ शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।

केलेको मोचा कहते हैं। केलेके गाछमें पहले मोचा पड़ता है तब उससे धीरे धीरे केला निकलता है जो थोड़े ही दिनोंमें मोटा होता और पकता है। मोचेकी तरकारी बड़ी अच्छी होती है सिर्फ कच्चे केलेका मोचा तीता होता है।

मोचाट (सं० पु०) १ कृष्णजीरक, काला जीरा। २ रम्भास्थि, केलेका गाभ। ३ कदलीवृक्ष, केलेका पेड़। ४ चन्दनवृक्ष। (वैद्यकनि०)

मोचाफल (सं० क्ली०) कदली, केला।

मोचारस (सं० पु०) केलेके थम्भोंका पानी।

मोचिक (सं० पु०) १ केला। २ मोचनकारिणी, मुक्ति देनेवाली।

मोचिका (सं० स्त्री०) १ मत्स्यभेद, एक प्रकारकी मछली। २ केला।

मोचिन् (सं० त्रि०) मोचनशील, छुड़ानेवाला।

मोचिनी (सं० स्त्री०) कण्टकारी, पोईका पौधा।

मोचिलिन्दा (सं० स्त्री०) राजादनवृक्ष, खिरनीका पेड़।

मोची (सं० स्त्री०) मुच्यते रोगो ययेति मुच्-घञ्, ङीष्। १ हिलमोचिका। (त्रि०) २ मोचिन् देखो।

मोची—बंगाल-विहारमें रहनेवाली एक जाति। यह चर्मकार-श्रेणीका एक विभाग है। इस जातिके लोग चमड़ा साफ करते तथा चमड़ेका व्यवसाय कर अपनी जीविका चलाते हैं। बहुतोंका कहना है, कि चमार मोचीसे हीन है। मोची साधारणतः अस्पृश्य जाति कह कर परिगणित है। स्थानविशेषसे मोची लोग मृत गोमांस भक्षण नहीं करते, किन्तु चमार लोग गोमांस भक्षण करते हैं। मोची जूता और अनेक तरहकी चमड़ेकी वस्तु बनाते हैं। उत्तर-पश्चिम प्रदेशमें मोची लोग मृत गौका चमड़ा नहीं उतारते किन्तु बंगालके मोची ऐसा करते हैं और चमड़ेका व्यवसाय भी करते हैं।

मोचियोंकी उत्पत्ति ले कर अनेक प्रवाद है। एक प्रजापतिके एक पुत्र देवताओंके यज्ञार्थ गो-मांस और घी संग्रह कर देते थे। उस समय यज्ञमें निहत गौ फिर जिलाई जाती थी। इसीसे यज्ञीय गो-मांसका कुछ भाग उक्त प्रजापतिके पुत्रको खाना पड़ता था। एक दिन दैव संयोगसे प्रजापतिके पुत्र मरी गायको नहीं जिला सके। कारण उनकी गर्भवती स्त्रीने यज्ञीय कुछ मांस छिपा रखा था। मृत गौको पुनः नहीं जिला सकनेके कारण प्रजापतिके पुत्र अत्यन्त डर गये तथा अन्यान्य प्रजापतियोंको इसका कारण अनुसंधान करनेको कहा। उसकी गणना कर सबोंने बता दिया कि स्त्रीने मांस चुराया है। तब सबोंने उस मांसापहारिका स्त्रीको समाजच्युत कर दिया। उसी स्त्रीके गर्भसे प्रथम पुत्र मोची हुआ। उस समयसे मनुष्यने यज्ञार्थमें निहत पशुको पुनर्जीवित करनेमें अक्षम हो, गो-हत्या परित्याग किया।

दूसरा प्रवाद यह है, कि किसी समय ब्रह्मा नाच करते थे। उस समय उनके शरीरके पसीनेसे मोची वंशका आदिपुरुष मोचीरामका जन्म हुआ। मोचीराम घटनाक्रमसे दुर्वासा मुनिकी क्रोधाग्निमें जल गये। दुर्वासाने मोचीरामका अधःपतन करनेके लिये एक रूपवती विधवा ब्राह्मण-कन्याको मोचीरामके पास भेजा। वह कन्या मोचीरामके सामने जा खड़ी हुई, मोचीरामने उसे 'जननी' कह कर सम्बोधन किया। किन्तु दुर्वासाने ऐन्द्रजालिक शक्तिसे उस विधवाको गर्भवती कर दिया। तब जनसाधारण भी मोचीरामको गर्भकर्त्ता समझने लगे। सुतरां मोचीराम उस विधवाके साथ जातिच्युत हुए। बादमें यथासमय विधवाके गर्भसे बड़ा राम और छोटा राम दो यमज पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्हीं दो पुत्रोंसे मोची जाति दो प्रधान विभागोंमें विभक्त है। यथा—बड़ा भागिया और छोटा भागिया। छोटा भागियालोग चमड़ेका व्यवसाय तथा वाद्यक्रिया कर और बड़ा भागिया खेती बारी कर अपनी जीविका चलाते हैं। इनमें फिर उत्तर राढ़ी और दक्षिणराढ़ी दो विभाग है। दोनों विभागके लोग एक साथ बैठ नहीं खाते और न परस्पर विवाह ही करते हैं।

वैताल, कोरुड़, मालभूमिया, सरकारी तथा शंखी मोची जूता बनाते और मरम्मत करते हैं।

मोचियोंमें काश्यप और शाण्डिल्य गोत्र हैं, किन्तु गोत्रको ले कर विवाह विषयमें कोई गोलमाल नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनकी विवाह-प्रथा बहुत कुछ निम्नश्रेणीके हिन्दुओं-सी है। एक आदमीके साथ दो बहिनका विवाह हो सकता है। इनमें बाल्य और यौवन दोनों विवाह प्रचलित है जिनमें अकसर बाल्यविवाह ही होता है।

डा० ओयाइजने लिखा है, कि पहले मोचियोंकी विवाह-प्रथा बड़ी जघन्य थी। विवाह-उपलक्षमें व्यभिचार और शराब खूब चलती थी। किन्तु अभी उन लोगोंमें कुछ उन्नतिसी जान पड़ती है। उनमें बहु विवाह प्रचलित हैं। स्त्रीके व्यभिचारिणी होने पर स्वामी उसे छोड़ सकता है। इसमें गांवके मध्यस्थ या पंचायतकी अनुमति लेनी पड़ती है। आजकल मोचियोंको विधवा-विवाहमें उतना अनुराग नहीं है। विधवाविवाह दिन पर दिन घटती ही जाती है। सम्भवतः कुछ दिनोंमें यह प्रथा विलुप्त हो जायगी। उनका कहना है, कि विधवाविवाह और वेश्यावृत्तिमें कुछ भी पार्थक्य नहीं है।

मोचियोंमें अधिकांश ही शैव हैं। बहुतेरे बेतुया मोची वैष्णवधर्म मानते हैं। चेचक होने पर ये शीतला देवीको सूअरकी बलि देते हैं। मोची इनके आदि-पुरुष मोचीराम दास और रुईदासकी पूजा करते हैं।

मोचियोंकी पूजा ब्राह्मण पुरोहित कराते हैं। कहते हैं, कि बल्लालसेनने बड़ा भागिया मोचियोंकी पूजाके लिये एक ब्राह्मण दिया था। ये ब्राह्मण अन्य ब्राह्मणोंसे हीन समझे जाते हैं। इनके हाथका जल कोई भी ग्रहण नहीं करता। मोची लोग मृतदेहको जलाते तथा एक महाने श्राद्ध करते हैं। छोटा भागिया मोची डोम हाड़ीकी तरह ग्यारह दिनमें ही श्राद्ध करता है। मोचीका नापित भी उसकी स्वजाति है। छोटा भागिया मोची और चमार गोमांस, सूअरका मांस तथा मुर्गा आदि खाता है। बड़ा भागिया, बेतुया और चाषा कोलाई मोची गो और सूअरका मांस तो नहीं खाता पर मुर्गी खाता है। ये लोग गांजा और मदिरा आदि खूब पीते हैं। डोमके सिवा और कोई भी इसके हाथका जल ग्रहण नहीं करता।

मोची लोग चमड़ा साफ करते और जूता आदि बनाते हैं। अलावा इसके ये लोग बांसकी चङ्गरी, टोकरी, मेज आदि भी बुनते हैं। ये मृत गवादिका चमड़ा उतार कर बिक्री करते हैं। इस लोभमें पड़ कर वे अकसर पशु को विष खिला देते और उसके मर जाने पर उसका चमड़ा उतार बाजारमें बेच डालते हैं।

मोची मनुष्यका शव स्पर्श नहीं करता। दुर्गापूजामें महिष-बलि होने पर ये बड़े आदरके साथ उसे ग्रहण करते हैं।

बहुत मोची ढाक, ढोल, तबला आदि बनाता है और वही बजा कर अपना पेट पालता है। वर्द्धमान जिलेमें मोचीयोंकी संख्या सर्वापेक्षा अधिक है। आज कल मोची लोग नाना प्रकारका व्यवसाय और खेतीबारी कर काफी लाभ उठा रहे हैं।

मोच्य (सं० त्रि०) मुच-यत्। मोचनार्ह, छोड़ देनेयोग्य।

मोछ (हि० स्त्री०) मूँछ देखो।

मोछिका-यन्त्र (सं० क्ली०) सुराश्च्योतन यन्त्र, वह बरतन जिसमें शराब चुआई जाती है।

मोजपुर—राजगढ़से दो योजन पश्चिममें अवस्थित एक नगर।

मोजरा (अ० पु०) मुजरा देखो।

मोज़ा (फा० पु०) १ पैरोंमें पहननेका एक प्रकारका बुना हुआ कपड़ा। इससे पैरके तलवेसे ले कर पिंडली या घुटने तक ढक जाते हैं। इससे पायताबा (Stocking) भी कहते हैं। २ पैरमें पिंडलीके नीचेका वह भाग जो गिट्टेके आसपास और उससे कुछ ऊपर होता है। ३ कुश्तीका एक पेंच। इसमें जब खिलाड़ी अपने विपक्षीकी पीठ पर होता है, तब एक हाथ उसके पैरके नीचेसे ले जा कर उसकी बगलमें जमाता है और दूसरे हाथसे उसका मोजा या पिंडलीके नीचेका भाग पकड़ कर उसे उलट देता है।

मोट (हिं० स्त्री०) १ गठरी, मोटरी। (पु०) २ चमड़ेका बड़ा थैला। इसके द्वारा खेत सींचनेके लिये कुएं-से पानी निकाला जाता है। इसका दूसरा नाम चरसा भी है। (वि०) ३ जो बारीक न हो, मोटा। ४ कम मोलका, साधारण।

मोटक (सं० क्ली०) मुच्यते भुग्नीक्रियते इति मुट्-घञ्, ततः कन् द्विगुण भुग्न कुशपत्रत्रय। श्राद्धादि पितृकार्य-में मोटकका प्रयोजन होता है। तीन कुश ले कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसके बीच जो पेंच दिया जाता है उसीको मोटक कहते हैं।

२ पद्यावलीधृत एक कवि।

मोटकी (सं० स्त्री०) मोटक-ङीष्। एक रागिणीका नाम।

मोटन (सं० क्ली०) मुट-ल्युट्। १ चूर्णीकरण, पीसना। २ आक्षेप। ३ वायु, हवा।

मोटनक (सं० क्ली०) एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें एक नगण, दो जगण, और अन्तमें एक एक लघु गुरु कुल मिला कर ११ अक्षर होते हैं।

मोटर (अ० पु०) १ एक विशेष प्रकारकी कल या यन्त्र जिससे किसी दूसरे यन्त्र आदिका संचालन किया जाता है, चलनेवाला यन्त्र। २ एक प्रकारकी प्रसिद्ध छोटी गाड़ी। यह इस प्रकारके यन्त्रकी सहायतासे चलती है। इस गाड़ीमें तेल आदिकी सहायतासे चलनेवाला एक इंजिन लगा रहता है जिसका सम्बन्ध उसके पहियोंसे होता है। जब इंजिन चलाया जाता है तब उसकी सहायतासे गाड़ी चलने लगती है। यह गाड़ी प्रायः सवारी और बोझ ढोने अथवा खींचनेके काममें आती है।

मोटरी (हिं० स्त्री०) गठरी।

मोटा (सं० स्त्री०) १ छोटी बलाका पेड़। २ जयन्ती। २ चुक्र, चूकाका साग।

मोटा (हिं० वि०) १ जिसके शरीरमें आवश्यकतासे अधिक मांस हो, जिसका शरीर चरबी आदिके कारण बहुत फूल गया हो। २ जिसका घेरा या मान आदि साधरणसे अधिक हो। ३ जिसकी एक ओरकी सतह दूसरी ओर की सतहसे अधिक दूरी पर हो, दलदारा। ४ जो खूब चूर्ण न हुआ हो, दरदरा। ५ बढ़िया या सूक्ष्मका उलटा, घटिया। ६ साधारणसे अधिक, भारी या कठिन। ७ जो देखनेमें भला न जान पड़े, बेडौल। ८ घमंडी, अहंकारी। (पु०) ९ मर्दा जमीन, मार। १० बोझ, गट्ठर।

मोटाई (हिं० स्त्री०) १ मोटे होनेका भाव, स्थूलता। २ शरारत, बदमाशी।

मोटाकोटनी—बम्बईप्रदेश महीकांटा एजेन्सीके अन्तर्गत एक देशीय सामन्तराज्य। यहांके सरदारोंको राजकर नहीं देना होता है।

मोटाता (हिं० क्रि०) १ मोटा होना, स्थूल काय हो जाना। २ धनवान हो जाना। ३ अहंकारी हो जाना, अभिमानी होना।

मोटापन (हिं० पु०) मोटाई, स्थूलता। मोटापन।

मोटाया (हिं० पु०) मोटे होनेका भाव,

मोटिया (हिं० पु०) १ मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा, खद्दड़। २ बोझ ढोनेवाला, कुली; मजदूर।

मोट्टायित (सं० क्ली०) मुट-भावे घञ् वाहुलकात् घञस्तुट्; ततो भृशादित्वात् क्यङ्, ततो भावे क्त। स्त्रियोंके स्वाभाविक दश प्रकारके अलंकारोंमेंसे एक अलंकार। इसका लक्षण—

"कान्तस्मरणवार्तादौ हृदितद्भावभावतः।
प्राकट्यमभिलाषस्य मोट्टायितमुदीर्यते॥"

(उज्ज्वल-नीलमणि)

सखी आदिके निकट नायककी कथा आदि उपस्थित होने पर उससे अवहित चित्तमें दत्तकर्ण नायिकाके चित्ताभिलाषकी जो अभिव्यक्ति होती है उसीको मोट्टायित कहते हैं। इन नायिकाओंका एक स्वाभाविक अलंकार है।

मोठ (हिं० स्त्री०) मूगकी तरहका एक प्रकारका मोटा अन्न। इसे बनमूंग भी कहते हैं। यह प्रायः सारे भारतमें होता है। इसकी बोआई ग्रीष्म ऋतुके अन्त या वर्षाके आरंभमें और कटाई खरीफकी फसलके साथ जाड़ेके आरम्भमें होती हैं। यह बहुतही साधारण कोटिकी भूमिमें भी बहुत अच्छी तरह होता है और प्रायः बाजरेके साथ बोया जाता है। अधिक वर्षासे यह खराब हो जाता है। इसकी फलियोंमें जो दाने निकलते हैं, उनकी दाल बनती है। यह दाल साधारण दालोंकी भांति खाई जाती है और मन्दाग्नि अथवा ज्वरमें पथ्यकी भांति भी दी जाती है। वैद्यकमें इसे गरम, कैसैली, मधुर, सीतल, मलरोधक, पथ्य, रुचिकारक, हलकी बादी, कृमिजनक तथा रक्त पित्त, कफ, बाव, गुदकील, वायुगोले; ज्वर, दाह और क्षयरोगकी नाशक माना है। इसकी जड़ मादक और विषैली होती है।

मोनस (हिं० वि०) मौन, चुप।

मोड़ (हिं० स्त्री०) १ रास्ते आदिमें घूम जानेका स्थान,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह स्थान जहांसे किसी ओरको मुड़ा जाय। २ घुमाव या मुड़नेका भाव। ३ घुमाव या मुड़नेकी क्रिया। ४ कुछ दूर तक गई हुई वस्तुमें वह स्थान जहांसे वह कोना या घुमाव डालती हुई दूसरी ओर फिरी हो।

मोड़ना (हिं० क्रि०) १ फेरना, लौटाना। २ किसी कामके करनेमें आनाकानी करना, आगा पीछा करना। ३ विमुख होना, पराङ्मुख होना। ४ किसी फैली हुई सतहका कुछ अंश समेट कर एक तहके ऊपर दूसरी तह करना। ५ धार भुथरी करना, कुंठित करना। ६ किसी छड़की-सी सीधी वस्तुका कुछ अंश दूसरी ओर फेरना।

मोड़ा (हिं० पु०) लड़का, बालक।

मोड़ी (हिं० स्त्री०) १घसीट वा शीघ्र लिखनेकी लिपि। २ दक्षिण भारतकी एक लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।

मोढ़ (सं० पु०) राजवंशभेद।

मोण (सं० पु०) मुण-अच्। १ शुष्क फल, सूखा फल। २ नक्र, मगर। ३ मक्षिका, मक्खी। ४ सर्पकरण्ड, बाँस या सींकका बना ढक्कनदार टोकरा।

मोतदिल (अ० वि०) जो न बहुत गरम और न सर्द हो, शीत और उष्णता आदिके विचारसे मध्यम अवस्थाका।

मोतबर (अ० वि०) १ विश्वास करने योग्य, जिस पर विश्वास किया जा सके। २ जिस पर विश्वास किया जाता हो, विश्वासपात्र।

मोतियदाम (हिं० पु०) एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें चार यगण होते हैं।

मोतिया (हिं० पु०) १ एक प्रकारका बेला। इसकी कली मोतीके समान गोल होती है। २ रूसा नामकी घास, जब तक वह थोड़ी अवस्थाकी और नीलापन लिये रहती है। ३ एक प्रकारका सलमा। इसके दाने गोल होते हैं और यह जरदोजीके काममें किनारे किनारे टांका जाता है। ४ एक चिड़िया जिसका रंग मोतीका-सा होता है। (वि०) ५ हलका गुलाबी वा पीले और गुलाबी रंगके मेलका। ६ मोती सम्बन्धी, मोतीका। ७ छोटे गोल दानोंका वा छोटी गोल कड़ियोंका।

मोतियाबिन्द (हिं० पु०) आंखका एक रोग विशेष। इसमें उसके एक परदेमें गोल झिल्ली-सी पड़ जाती है जिसके कारण आँखसे दिखाई नहीं पड़ता।

मोतिहारी—१ बिहार और उड़ीसाके चम्पारण जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २६° १६' से २७° १' उ० तथा देशा० ८४° ३०' से ८५° १८' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १५१८ वर्गमील और जनसंख्या १० लाखसे ऊपर है। मोतिहारी, आदापुर, ढाका, रामचन्द्र, केशरिया, मधुबन और गोविन्दगञ्ज थानाके अन्तर्भुक्त ग्रामादि ले कर यह महकूमा बना है।

२ उक्त उपविभागका प्रधान नगर और जिलेका विचारसदर। यह अक्षा० २६° ४०' उ० तथा देशा० ८४° ५५' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या १५ हजारके लगभग है। बेतिया, ढाका, सेराहा, मोतीपुर, सत्तरघाट और गोविन्दगञ्ज आदि नगरोंमें जाने आनेकी सुविधाके लिये पक्की सड़क दौड़ गई है। इस कारण यहांकी वाणिज्यमें दिनों-दिन उन्नति देखी जाती है। झरनेके पूर्वी किनारे बसे होनेके कारण नगरका दृश्य बड़ा ही मनोरम है। यहां सरकारी कार्यालय, कारागार और एक स्कूल हैं। कारागारमें ३५६ कैदी रखे जाते हैं। यहां तेल पेरने, दरी बुनने और जाल बनानेका जोरोंसे कारबार होता है।

मोती (हिं० पु०) एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रोंमें अथवा रेतीले तटोंके पास सीपीमेंसे निकलता है। (विशेष विवरण मुक्ता शब्दमें देखो)।

२ कसेरोंका एक औजार। इससे वे नक्काशी करते समय मोतीकी-सी आकृति बनाते हैं। ३ बाली जिसमें बड़े बड़े मोती पड़े रहते हैं।

मोतीचूर (हिं० पु०) १ छोटी बुंदियोंका लड्डू। २ कुश्तीका एक पेंच जिसमें प्रतिद्वन्द्वीके बाएं पैरको अपने दाहिने पैरसे फँसा कर और हाथसे उसका गला लपेट कर उसे चित्त कर देते हैं। ३ एक प्रकारका धान। इसकी फसल अगहनमें तैयार होती है।

मोताज्वर (सं० पु०) चेचक निकलनेके पहले आनेवाला ज्वर।

मोतीझरना—सन्थाल परगनेके राजमहल उपविभागान्तर्गत दमान-इ-कोह नामक पहाड़ी विभागका एक जल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रवाह। इष्ट-इण्डिया (E. I. R) रेलवे-लाइनके महाराजपुर स्टेशनके समीप यह बहता है। यहां हर साल माघ महीनेमें एक मेला लगता है।

मोतीझिरा (हिं० पु०) छोटी शीतलाका रोग, मोतिया माता निकलनेका रोग।

मोती तालाब—मैसूर जिलेके अष्टग्राम तालुकके अन्तर्गत एक छोटा ह्रद। अनेक झरनोंके आपसमें मिल जानेसे यह बना है। यह अक्षा० १३° १०′ उ० तथा देशा० ७८° २५′ पू०के मध्य अवस्थित है। विख्यात वैष्णवधर्म-प्रवर्त्तक रामानुज जब पासके मेलुकोट गांवमें रहते थे उसी समय वे इसके चारों ओर बांध बंधवा गये है।

मोतीपल्ली—मद्रासप्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक प्राचीन बन्दर। यह अक्षा० १५° ४३′ ४०″ उ० तथा देशा० ८०° २०′ पू०के बीच पड़ता है। यहांके निदर्शनोंसे अनुमान होता है, कि एक समय समुद्रके किनारे यह नगर बड़ा समृद्धिशाली था। कोई कोई प्रत्नतत्त्वविद् इसे पर्यटक मार्कोपोलोवर्णित मुत्फिली (Mutfili) नगरी कहते हैं। १२९० ई०में मार्कोपोलोके परिदर्शनकालमें इस नगरमें रानी रुद्राम्मा राजत्व करती थीं। उनके सुनीतिपूर्ण राजकार्यसे वैदेशिक पर्यटक बड़े प्रसन्न हुए थे। उस समय यहां वाणिज्य खूब होता था।

मोतीबेल (हिं० स्त्री०) बेलेका वह भेद जिसे मोतिया कहते हैं, मोतिया बेला।

मोतीभात (हिं० पु०) एक विशेष प्रकारका भात।

मोतीराम—१ एक कवि। इन्होंने कृष्णविनोदकाव्य लिखा। २ कणादके एक पुत्रका नाम।

मोतीलाल—एक भाषा-कवि। ये बाँसी राज्यके रहनेवाले थे। इनका जन्म १५९७ ई०में हुआ था। इन्होंने गणेशपुराणका भाषान्तर किया है।

मोतीसिरी (हिं० स्त्री०) मोतियोंकी कंठी, मोतियोंकी माला।

मोतूर—मध्यप्रदेशके छिन्दवाड़ा जिलान्तर्गत एक पहाड़ी अधित्यका। यह अक्षा० २२° १७′ उ० तथा देशा० ७८° ३७′ पू०के मध्य समुद्रपीठसे ३५०० फुट ऊंची है। यहांकी आवहवा बड़ी ही अच्छी है। एक समय यहां कामत तीर सेनानिवासका एक स्वास्थ्यावास स्थापनाके लिये बड़ी चेष्टा की गई थी परन्तु पर्वत पर चढ़ना कठिन समझ कर सेनाओंने यह स्थान छोड़ दिया।

मोथ (सं० पु०) मुस्तक, मोथा।

मोथा (सं० पु०) १ मुस्तक, नागरमोथा नामक घास। २ उपर्युक्त घासकी जड़ जो ओषधिकी भांति प्रयुक्त होती। यह तृण जलाशयोंमें होता है। इसकी पत्तियां कुशकी पत्तियोंकी तरह लम्बी लम्बी और गहरे हरे रंगकी होती हैं। इसकी जड़ें बहुत मोटी होती है जिन्हें सूअर खोद कर खाते हैं।

मोद (सं० पु०) मुद-भावे घञ्। १ हर्ष, आनन्द। २ पांच भगण, एक मगण, एक सगण और एक गुरु वर्णका एक वर्णवृत्त। ३ सुगन्ध, खुशबू।

मोदक (सं० पु०) मोदयति वाला दीनिति मुद्-णिच्-ण्वुल्। १ खाद्य द्रव्यविशेष, लड्डू।

यह गुड़से बनाया जाता है। भगवती दुर्गा देवीको मोदक देनेके समय निम्नोक्त मन्त्र पढ़ना होता है।

'मोदकं स्वादुसंयुक्तं शर्करादिविनिर्म्मितम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥"

(दुर्गोत्सवपद्धति)

भावप्रकाशमें और भैषज्यरत्नावलीमें मथिकामोदक, मुस्तामोदक, कामेश्वरमोदक, वेसनमोदक आदिकी प्रस्तुत प्रणाली देखी जाती है।

इनका वर्णन उन उन शब्दोंमें देखो।

२ औषध आदिका बना हुआ लड्डू। ३ गुड़। ४ यवासशर्करा। ४ शर्करादि द्वारा पक्वौषधविशेष। सुश्रुतबोधमें लिखा है, कि मोदक औषधका पूर्णवीर्य ६ महीने तक रहता है अर्थात् मोदक औषध तैयार कर ६ महीने तक व्यवहार किया जा सकता है, अन्तमें इसका तेज नष्ट हो जाता है। ६ एक वर्णशंकर जाति। इसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्र मातासे मानी जाती है। इस जातिके लोग मिठाई आदि बना कर अपनी जीविका चलाते हैं। ७ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें चार भगण होते हैं।

(त्रि०) ८ हर्षक, मोद या आनन्द देनेवाला।

मोदकर (सं० पु०) १ एक प्राचीन मुनिका नाम। (त्रि०) २ हर्षजनक, आनन्द देनेवाला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोदककार (सं० पु०) मिठाई बनानेवाला, हलवाई।
मोदकमय (सं० त्रि०) मिठाईसे भरा हुआ।
मोदकिका (सं० स्त्री०) मिष्टद्रव्य, मीठी वस्तु।
मोदकी (सं० स्त्री०) १ जातीपुष्प वृक्ष, चमेली फूलका पेड़। (त्रि०) आनन्ददायिनी, आनन्द देनेवाली।
मोदन (सं० क्ली०) मोदयति मुद्-णिच्-ल्युट्। १ शिक्थक, मोम। २ मदनवृक्ष, मैनाफल। मुद् भावे ल्युट्। ३ हर्ष, आनन्द। ४ सुगंधि फैलना, महकना। (त्रि०) ५ हर्षजनक, आनन्द देनेवाला।

"वृकगृध्रशृगालानां तुमुले मोदनेऽहनि।
आसीद्व्यक्षयो घोरस्तव पुत्रस्य पश्यतः॥"

(भारत० ६।२३।७६)

मोदनाथ—ताजिक चिन्तामणिके रचयिता।
मोदनी (सं० स्त्री०) १ यूथिका, सफेद जूही। २ उपोदिका, पोय।
मोदनीय (सं० त्रि०) आह्लादयोग्य, आनन्द करनेके लायक।
मोदपुर—एक प्राचीन नगरका नाम।
मोदमोदिनी (सं० स्त्री०) मोदात् मोदो महान् हर्षः सोऽस्या अस्तीति मोदमोद-इनि ङीष्। जम्बू, जामुन।
मोदयन्ती (सं० स्त्री०) मोदयतीति मुद्-णिच्-शतृ ङीप्। वनमल्लिका, जंगली चमेली।
मोदा (सं० स्त्री०) मोदयति गन्धेनतोषयतीति मुद्-णिच् अच् टाप्। १ अजमोदा, बन-अजवाइन। २ शाल्मलिवृक्ष, सेमलका पेड़।
मोदाक (सं० पु०) पुराणानुसार एक वृक्षका नाम।
मोदाकिन् (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक पर्वतका नाम।
मोदाख्य (सं० पु०) मोदमाख्याति रसपल्लवादिना विस्तारयतीति आ ख्या-क। आम्रवृक्ष, आमका पेड़।
मोदागिरि (सं० पु०) एक देशका नाम।
मोदाढ्या (सं० स्त्री०) मोदेन आमोद-गन्धेन आढ्या बहुला। १ अजमोदा, बन-अजवाइन। २ हर्षयुक्ता, प्रसन्न रहनेवाली स्त्री।
मोदाद्रि—मुंगेरके पासके एक पर्वतका एक पौराणिक नाम।
मोदापुर (सं० क्ली०) नगरभेद।
मोदायनि (सं० पु०) मोदका गोत्रापत्य।
मोदित (सं० त्रि०) मोदो हर्षोऽस्य जातः तारकादित्वादितच्। हर्षयुक्त, आनन्दित।
मोदिन् (सं० त्रि०) मोदयति मुद्-णिच्-णिनि। हर्षदायक, आनन्द देनेवाला।
मोदिनी (सं० स्त्री०) १ अजमोदा। २ मल्लिका, चमेली। ३ यूथिका, जूही। ४ कस्तूरी। ५ मदिरा, शराब। ६ मल्लिकापुष्पविशेष। पर्याय—वरपत्री, कुमारिका, वृत्त मल्लिका। इसका गुण—कटु, उष्ण, व्रणघ्न, गन्धबहुल और मुखरोगनाशक। (राजनि०)
मोदी (हिं० पु०) १ आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया, भोजन सामग्री देनेवाला बनिया। २ वह जिसका काम नौकरोंको भरती करना हो।
मोदीखाना (फा० पु०) अन्नादि रखनेका घर, गोदाम।
मोधुक (हिं० पु०) मछली पकड़नेवाला, धीवर।
मोन (हिं० पु०) मोना देखो।
मोनस (सं० पु०) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।
मोना (हिं० क्रि०) १ भिगोना, तर करना। (पु०) २ बाँस, मूंज आदिका ढक्कनदार डला, पिटारा।
मोनाल (हिं० पु०) एक प्रकारका महोरव पक्षी। यह शिमलेके आस पास बहुत पाया जाता है। इसे नीलमोर भी कहते हैं।
मोनिया (हिं० स्त्री०) बांस या मूँजकी बनी हुई पिटारी, छोटा मोना।
मोपला (हिं० पु०) मुसलमानोंकी एक जाति जो मद्रासमें पाई जाती है।
मोम (फा० पु०) १ वह चिकना और नरम पदार्थ जिससे शहदकी मक्खियां अपना छत्ता बनाती हैं। मधुमक्खीके छत्तेको निचोड़ कर जो रस निकाला जाता है उसे मधु और जो सीठी रह जाती है उसे मोम कहते हैं। यह भिन्न भिन्न स्थानमें भिन्न भिन्न नामसे प्रसिद्ध है, हिन्दी—मोम; बङ्गाल—मोम; दाक्षिणात्य—मोम; मराठा—मेना; गुजराती—मीन; तामिल—मेशुक्कु; तेलगु—मैनाम; कनाड़ी—मीना; मलय—मेशुका; ब्रह्म—फयोनिई; सिङ्गापुरी—इहि; संस्कृत—मधुजम; अरबी—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शाम; फारसी—मोम; चीन—पेह्-ला (सफेद), हवङ्ग-ला (पीला); फरासी—Cire; जमनी —Wachs ; इटली और स्पेन—Cere ; रुसिया—Wosk, Wosh और मलय—लेलिन्।

मधुमक्खियां तरह तरहके फुलोंसे मधु चुसती हैं। उस फुलोंके सारसे उनके शरीरमें रसके आकारमें मीठा मधु और मलरूपमें मोम जमा होता है। उनके पेटके नीचे अंगूठीकी समान जो गड्ढ़ा रहता है उससे शारीरिक क्लेदस्वरूप भिन्न भिन्न पदार्थ मिश्रित मोमका टुकड़ा निकालता है। उस टुकड़ेसे वे एक एक मधु-मक्खीका अंडा रहने लायक घर बनाती हैं। वही सब घर छत्ता कहलाता है। जब तक अंडे फोड़ कर बच्चे बाहर नहीं निकलते तब तक मक्खियां उस छत्तोंको नहीं छोड़ती हैं। बच्चे के निकलने पर वे अन्यत्र उड़ जाती हैं।

पर्वत, वनप्रदेश, पद्मसर, कमलावन, साधारण उद्यान और उपवनादिमें भिन्न भिन्न प्रकारकी मक्खियोंसे भिन्न भिन्न प्रकारके छत्ते बनाये जाते हैं। उन सब छत्तों तथा मोमका उपादान एक-सा नहीं है जुदा जुदा है। सभी प्रकारका मधु, विशेषतः कमला मधु उपकारी और सुगंधित होता है।

मधुका संग्रह करनेके लिये पृथिवीके प्रायः सभी सभ्य देशोंमें इसका खासा प्रबंध है। किस उपायसे छत्तेकी रक्षा और वृद्धि करनी होगी तथा मधु संग्रहके बाद छत्तोंको तोड़ फोड़ कर किस प्रकार मोम संचय किया जाता है, उसका विवरण यथास्थानमें दिया गया है।

एक एक छत्तेमें आध सेरसे पांच सेर तक मोम पाया जाता है। कभी कभी छत्तेके साथ और कभी छत्तेसे मधु निचोड़ कर बाजारमें बेचा जाता है। जो सिट्ठी बच जाती है उसे थोड़ी गरमीसे साफ करने पर मोम पाया जाता है। यही मोम बाजारमें बिकने आता है।

बाजारमें साधारणतः सफेद और पीले रंगका मोम देखनेमें आता है। मधु निकालनेके बाद सूखे छत्तेको गरम जलसे परिपूर्ण कड़ाहके ऊपर रख देनेसे मोम गल या पिघल जाता है। अब इस पिघले हुए मोममें जरा भी मैल रहने नहीं पाता। पहले छत्तेके मोममें कोयला (भिन्न जातिका पदार्थ) मिला रहता है। गरमी लगनेसे वह कड़ाहमें पिघल जाता है, केवल तरल मोम तेलके समान ऊपरमें बहने लगता है। पीछे उस तरल मोमको उठा कर दूसरे बरतनमें रखते अथवा उसी कड़ाहमें ठंढ लगनेके लिये छोड़ देते हैं। ठंढ लगने पर मोम पुनः कड़ा हो कर जम जाता है। तब उसे टुकड़े टुकड़े कर कड़ाहसे निकाला जाता है। जब तक मोमका मैल दूर न हो जाय तब तक इसी प्रकार उसे साफ करते रहना उचित है। गरम जलमें छत्ते डुबानेके पहले उसमें दो चार बुंद नाहद्रिक एसिड डाल देनेसे जलकी परिष्कारक शक्ति बढ़ती है।

कड़ाहके नीचे जो मैल जम जाता है, उसमें भी मोम रहता है। उस मैल समेत मोमको फिरसे दूसरे छत्तेके साथ गलाया जाता है। पुराने छत्तेसे भी मोम पाया जाता है। उस सूखे और धूल मिले हुए छत्तेसे जब मोम निकालना होता है, तब पहले उसे एक जलपूर्ण बरतनमें पांच सप्ताह तक रख छोड़ते हैं। उसमेंसे निकली दुर्गधसे बचनेके लिये मोमके कारखाने-में ढंकनोदार बरतन रहता है। पुराने मोममें गरमी देनेसे वह स्वभावतः ही पीले रंगका हो जाता है। वह पीला मोम सफेद मोमसे किसी अंगमें घटिया नहीं है। बढ़िया सफेद मोम तैयार करनेमें ताजे छत्ते-को थोड़े जलके साथ कड़ाहमें पाक करना होता है। गरमी देनेके समय सर्वदा सावधान रहना उचित है। मोम तथा कड़ाह जिससे जलने न पावे इसके लिये बीच बीचमें जल देते रहना चाहिये। पीछे उस गरम कड़ाहसे जब गन्धविशिष्ट हल्दी रंगका फेन निकलने लगे, तब उसे उठा कर दूसरे बरतनमें रखना होगा। जब फेन फेन निकलना बंद हो जाय, तब उस रसको किसी दूसरे ठंढे बरतनमें रखे पीछे उसमें फिरसे छत्ते डाल कर ऊपर कहे गये तरीकेसे आँच दे। इससे बढ़िया मोम तो निकलेगा, पर वह मोम बिलकुल सफेद नहीं होता। उसमें एक स्वाभाविक हल्दी रंगकी आभा रहती है। सफेद मोम सभी कार्योंमें व्यवहृत होता है, इस कारण मोमको सफेद बनाना परमावश्यक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कार्योपलक्षमें प्रस्तुत पिष्टकादिका श्राद्धादिमें तथा श्राद्ध कार्यमें प्रस्तुत पिष्टकादिका विवाहादिमें व्यवहार बिलकुल निषिद्ध है। भोजके समय पहले कुल सामग्री विष्णु, लक्ष्मी और हनुमानको उत्सर्ग करते और तब लोगोंके बीच परोसते हैं। शुभकार्यादि उपलक्षमें भोजनके समय केलेके पत्तेका जो अंश वाम भागमें रहता है, श्राद्धादि उपलक्षमें भोजनके समय वह अंश दक्षिण भागमें रखना होता है।

छोटे छोटे बच्चोंको छोड़ कर सूर्योदय और सूर्यास्तके मध्य कोई भी दो बार नहीं खाता। विधवा दिनमें एक बार खाती और रातको सिर्फ जल पी कर रहती है। पर्वाह, पक्षान्त, मकरसंक्रान्ति, विषवसंक्रान्ति आदि दिनोंमें ब्राह्मणमात्रको ही एकाहारी रहना होता है।

माध्वब्राह्मणोंकी धारणा है, कि रातमें ब्राह्मण-भोजन करानेसे अत्यन्त पुण्य होता है। भोजन करनेके बाद कोई पान खाता, कोई तमाकू पीता और कोई नस लेता है।

इनकी स्त्रियां कुरता पहनती हैं। विधवा सफेद साड़ी पहनती और उत्तरीयसे अपने शरीरको ढके रहती हैं। ब्राह्मण शिखामात्र रख कर शिर मुड़वाते हैं। उपनयनसे पहले बालकोंका मस्तकमुण्डन नहीं होता। पुरुषमात्र ही मूंछ रखते हैं। बालिका और विवाहिता स्त्रियां जूड़ा बांधती हैं और उसे तरह तरहकी पुष्पमालासे सजाती भी हैं।

पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यताके प्रादुर्भावसे अङ्गरेजी शिक्षित युवकोंमेंसे कितने बिलायती पोशाकके शौकीन हो गये हैं। माध्व-संन्यासीकी वेशभूषा स्वतन्त्र है। वे सिर्फ गेरु कौपीन पहनते हैं। वे लोग यज्ञोपवीत अथवा अलङ्कारादिका व्यवहार नहीं करते। किन्तु सभी ललाटमें जातीय तिलक धारण करते हैं। उनके हाथमें डंडा और पैरमें खड़ाऊं रहता है। माधवब्राह्मणोंमें बालविधवायें भी किसी प्रकारका अलङ्कारादि नहीं पहनतीं।

पुरुष और स्त्री दोनों ही शरीरकी शोभा बढ़ानेके लिये अलङ्कार पहनते हैं। जो धनी हैं उनके पैरके भूषणको छोड़ कर और सभी भूषण सोने, मणिमुक्ताके होते हैं। केवल राजा और रानी अपने पैरोंमें सोनेके अलङ्कारादि पहन सकती हैं। क्योंकि जनता उन्हें देवता समझ कर पूजती है।

माध्वब्राह्मण साधारणतः कार्यदक्ष, विनीत, परिष्कार परिच्छन्न और अतिथिवत्सल होते हैं। शास्त्रानुमोदित क्रियाकलाप तथा नानाविध व्रतनियमादिके अनुष्ठानमें सभी तत्पर रहते हैं। शिवरात्र तथा होलीमें सभी उत्सव मनाते और एकादशी तथा जन्माष्टमीमें उपवास करते हैं। विष्णुपञ्चरात्र तथा चान्द्रायणका अनुष्ठान भी सर्वत्र दिखाई देता है। समय समय पर वे काशी, बदरिकाश्रम आदि प्रधान प्रधान तीर्थोंके भी दर्शन करने जाते हैं। हरएकको दीक्षागुरुसे मन्त्र लेना पड़ता है। विवाहित व्यक्ति भी दीक्षा-गुरु हो सकते हैं। किन्तु दीक्षागुरु होनेके बाद वह स्त्रीका मुखदर्शन अथवा किसी कन्याका पाणिग्रहण नहीं कर सकता। गर्भाधानसे ले कर अन्त्येष्टि तक सोलह प्रकारके संस्कार प्रचलित हैं। प्रथम प्रसवके समय कन्याको अपने मैके जाना होता है। प्रसवके समय जब अधिक वेदना मालूम होती है, तब पुरानी मुहरको जलमें धो कर वही जल उसे पिलाया जाता है। इससे प्रसूति सुखपूर्वक प्रसव कर सकती है। शिशुके भूमिष्ठ होते ही एक बहुत पुरानी सोनेकी अंगूठीको मधुमें डाल कर दो एक बूंद वही मधु उसको मुखमें दिया जाता है। जातकर्मसे निष्क्रमण और अन्नप्रशनसे विवाह पर्यन्त सभी संस्कार नियमपूर्वक होते हैं। लड़केकी मासी ही उसका नाम रखती है। इस समय उसे नया कपड़ा मिलता है।

बालकका उपनयन-संस्कार बड़ी धूमधामसे होता है। जिस बालकके यज्ञोपवीत हो गया है, वह तीन बार सन्ध्योपासन करता है।

इन लोगोंमें बाल्यविवाह प्रचलित है। बालकोंका ८से २० वर्षके भीतर और बालिकाओंका ४से ११ वर्षके भीतर विवाह होता है। अर्थके लोभसे माता-पिता ६०।७० वर्षके बूढ़े साथ कन्याका विवाह देनेसे भी बाज़ नहीं आते।

कन्याका पिता ही पहले वरकी तलाश करता है। वर मिल जाने पर कन्याका पिता वरके पिताके पास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी कन्याकी कोष्ठी भेज देता है । दोनोंकी कोष्ठीमें जब विवाहयोग्य मेल दिखाई देता है, तब ज्योतिषी विवाहकी सलाह देते हैं। वर-दक्षिणा ठीक हो जाने पर विवाह-लग्न स्थिर किया जाता है।

विवाहमें आनन्दोत्सवकी सीमा नहीं रहती। विवाहसे ले कर सप्तपदीगमन तक सभी कार्य वेदानुमोदित शास्त्रानुशासनसे ही होते हैं।

किसी व्यक्तिकी मृत्यु आसन्न दिखाई देने पर उसका शिर मुड़वा दिया जाता है। पीछे उसे गोपीचन्दन द्वारा श्रीमुद्राकी तरह तिलककी छाप चक्र और शङ्खचिह्न दे कर सफेद वस्त्र पहना देते हैं। अनन्तर उसके मुखमें पञ्चगव्य दिया जाता है। समय रहने पर अवस्थानुसार वैतरनी-दान भी होता है।

उस मुमूर्षुके कानमें जोरसे विष्णुनाम सुनाया जाता और धर्मग्रन्थ पढ़ा जाता है। प्राण निकल जाने पर उसे पुनः स्नान कराया जाता और ललाट, वक्षःस्थल तथा बाहु पर श्रीमुद्राका चिह्न दिया जाता है। पीछे श्मशानमें ला कर यथाविधि अग्निक्रियादि होती है। तीन वर्षसे कम उमरवाले बालक और संन्यासीकी लाश गाड़ी जाती है। शवदाहके बाद कुछ हड्डीको किसी पूतसलिला नदीके जलमें फेंक देना होता है । दशवें दिन वृषोत्सर्गादि-द्वारा श्राद्धक्रिया सम्पन्न होती है।

जाताशौच और मृताशौच दोनों ही दश दिन तक रहता है। अशौचके समय कोई भी किसी प्रकारका मिष्टान्न नहीं खा सकता। शास्त्रानुशासनकी कठोरता सभी विषयोंमें दिखाई देती है।

इन लोगोंमें स्त्रीकी अवरोध-प्रथा बहुत प्रबल है। नवोढ़ा स्त्री किसी स्त्रीके साथ बातचीत तक भी नहीं कर सकती।

प्रति श्रावण मासमें ही सभी माध्वब्राह्मण अपनी अपनी कन्याको ससुरालसे अपने घर लाते हैं । माध्व-समाजमें बाल्यविवाह और बहुविवाह प्रचलित रहने पर भी विधवाविवाह प्रचलित नहीं है।

माध्वाम्र (सं० क्ली०) आम्रवृक्ष, आमका पेड़।

माध्विक (सं० पु०) मधुसंग्रहकारी, वह जो मधु इकट्ठा करता हो।

माध्वी (सं० स्त्री०) मधुनो विकारः, मधु-अण्-ङीप् (ऋत्यवास्त्यवास्त्वमाध्वीति। पा ६।४।१७५) इति निपात्यते। १ मद्य, शराब। २ मध्वादिकृत सुरा, वह शराब जो महुएसे बनाई जाती है । ३ मधुर-कण्टक नामकी मछली। ४ पुराणानुसार एक नदीका नाम।

"तेभ्यः शान्ता च माध्वी च द्वे नद्यौ सम्प्रसूयाताम्।
(मत्स्यपु० १२०।७१)

(त्रि०) ५ मधुमत्, मधुयुक्त।

माध्वीक (सं० क्ली०) माध्वी स्वार्थे कन्। १ मधूक-पुष्पकृत मद्य, महुएकी शराब। पर्याय—मध्वासव, माधवक, मधु। मद्य देखो। २ मधु, मकरंद। ३ द्राक्षाकृत मद्य, दाखकी शराब। ४ निष्पाव, सेम।

माध्वीकफल (सं० पु०) माध्वीकं मधुमत् फलमस्य। मधुनारिकेल वृक्ष, मीठे नारियलका पेड़।

माध्वीका (सं० स्त्री०) श्वेत निष्पाव, सफेद सेम।

माध्वीमधुरा (सं० स्त्री०) माध्वीमद तएव मधुरा। मधुरखर्जूर, मीठी खजूर।

माध्वीशर्करा (सं० स्त्री०) मधुशर्करा, चीनी। मधु आठ तरहका होता है इसीसे यह शर्करा भी आठ प्रकारकी है। इसके सभी गुण मधुके समान हैं।

माध्वीसिता (सं० स्त्री०) मधुशर्करा।

मान (सं० क्ली०) मीयतेऽनेनेति मा-करणे ल्युट्। परिमाण, तौल। पर्याय—यौतव, द्रवय, पाष्य, पौतव।

तुला, अंगुलि और प्रस्थके भेदसे मान तीन प्रकारका है। तुलासे उन्मानादि, अंगुलिसे हस्तादि और प्रस्थसे द्रव्यादिका मान समझा जाता है।

"न मानेन बिना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित्।
अतः प्रयोगकार्य्यार्थं मानमन्त्रोच्यते मया॥" (शार्ङ्गधर)

भावप्रकाशमें मानका विषय इस प्रकार लिखा है,—बिना परिमाणके किसी भी द्रव्यका प्रयोग नहीं हो सकता। इसलिये सबसे पहले मानकी परिभाषा जान लेना आवश्यक है। आयुर्वेदके मतसे मान दो प्रकारका है, मागध और कालिङ्ग। सभी मानोंसे मागध-मानकी ही श्रेष्ठता बतलाई गई है।

मान।—तीस परमाणुका एक त्रसरेणु होता है। त्रसरेणुको ध्वंसी भी कहते हैं। झरोखेसे घरमें जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यकी किरण आती है, उसमें बहुतसे छोटे छोटे अणु दिखाई देते हैं, उसी एक अणुको ध्वंसी कहते हैं। छः ध्वंसीकी एक मरीचि, छः मरीचिकी एक राजिका, तीन राजिकाको एक सरसों, आठ सरसोंका एक जौ, चार जौका एक गुञ्जा (रत्ती), छः रत्तीका एक माण, (पर्याय—हेम और धामक) चार माशेका एक शान (दूसरा नाम धरण और टङ्क), दो शानका एक कोल (पर्याय—क्षुद्र, वटक और द्रंक्षण), दो कोलका एक कर्ष (पाणिमानिक, षोड़शिका, करमध्य, हंसपद, अक्ष, पिचु, पाणितल, किञ्चितपाणि, तिन्दुक, विड़ालपदक, हंसपद, सुवर्ण, कवड़ग्रह और उड़ुम्बर, ये सब कर्षके पर्याय हैं), दो कर्षका एक अर्द्ध पल (पर्याय—शुक्ति और अष्टमिका), दो अर्द्ध पलका एक पल (पर्याय—मुष्टिमात्र, चतुर्थिका, प्रकुञ्च, षोड़शी और विल्व), दो पलकी एक प्रसृति, दो प्रसृतिकी एक अंगुलि (पर्याय—कुड़व, अर्द्ध शराव और अष्टमान), दो कुड़व या अंगुलिकी एक माणिका (पर्याय—शराव और अष्टपल), दो शरावका एक प्रस्थ, चार प्रस्थ या ६४ पलका एक आढ़क (पर्याय—भाजन, कंस और पात्र), चार आढ़कका एक द्रोण (पर्याय—कलश, लम्बण, अर्म्मण, उन्मान, घट और राशि), दो द्रोण या ६४ शरावका एक सूर्प (कुम्भ), दो सूर्पकी एक द्रोणी, चार द्रोणी या ४०९६ पल (५१२ सेर)-की एक खारी, दो हजार पलका एक भार और एक सौ पलकी एक तुला होती है।

माशा, टङ्क, अक्ष, बिल्व, कुड़व, प्रस्थ, आढ़क, राशि, द्रोणी और खारी यह एक दूसरेसे यथाक्रम चार गुना भारी है अर्थात् माशासे टङ्क, टङ्कसे अक्ष आदि।

मागधपरिभाषा—चरकके मतसे ६ रत्तीका एक माशा, २४ रत्तीका एक टङ्क, ९६ रत्तीका एक कर्ष और सुश्रुतके मतसे ५ रत्तीका एक माशा, २० रत्तीका एक टङ्क और ८० रत्तीका एक कर्ष होता है।

कालिङ्गपरिभाषा—८ रत्तीका १ माशा, ३२ रत्तीका १ टङ्क, ढाई टङ्क अर्थात् ८० रत्तीका एक कर्ष होता है।

कालिङ्गमान।—कलिकालमें मनुष्य मन्दाग्नियुक्त, खर्वकाय और सत्त्वगुणविहीन होते हैं। अतएव उसीके अनुसार मानका प्रयोग करना उचित है। १२ सफेद सरसोंका एक जौ, २ जौका एक गुंजा, ३ गुंजेका एक वल्ल, ८ रत्तीका एक माशा (कहीं कहीं ७ रत्तीका) ४ माशेका एक शान, ६ माशेका एक गद्यान, १० माशेका एक कर्ष, ४ कर्षका एक पल, १० शानका एक पल और ४ पलका एक कुड़व होता है। प्रस्थादि करके अन्यान्य सभी मान पूर्ववत् है। मान शब्दसे मात्राका भी बोध होता है। मात्राका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है। काल, अग्नि, बल, वयःक्रम, प्रकृति, दोष और देश आदि विषयोंका विचार कर मात्राका प्रयोग करना होता है। उपयुक्त मात्रासे कम या बेशी औषधका प्रयोग करनेसे कोई फल नहीं। जिस प्रकार धधकती हुई आगमें थोड़ा जल डालनेसे वह नहीं बुझती उसी प्रकार कठिन रोगमें कम औषध देनेसे रोगको शान्ति नहीं होती। फिर जिस प्रकार खेतमें अपरिमित जल होनेसे फसलकी नुकसानी होती है उसी प्रकार सामान्य रोगमें अधिक औषधका प्रयोग करनेसे रोग घटता नहीं, बढ़ता ही जाता है। (भावप्रकाश मानपरिभाषा) परिमाण देखो।

२ सङ्गीत-शास्त्रानुसार जहां तालका विराम होता है, उसे मान कहते हैं। यह मान चार प्रकारका है, सम, विषम, अतीत और अनागत। (सङ्गीतशास्त्र)

(पु०) मन्यते बुध्यतेऽनेन इति मन घञ्। ३ चित्तकी समुन्नति, अभिमान, शेखी, धनादिके कारण किसी विषयमें यह समझना, कि हमारे समान कोई भी नहीं है।

"द्वेषं दम्भञ्च मानञ्च क्रोधं तैक्ष्ण्यञ्च वर्जयेत्।
(मनु ४।१६३)

द्वेष, दम्भ, मान तथा क्रोधादिका परित्याग करना ही उचित है। 'आत्मनि पूज्यता बुद्धिर्मानः" (नीलकण्ठ) अपनेको श्रेष्ठ समझनेका नाम मान है।

"अतिदर्पे हता लङ्का अतिमाने च कौरवाः।"
(चाणक्य)

अत्यन्त मानसे कौरव भी विनष्ट हुए थे।

न्यायदर्शनके अनुसार जो गुण अपनेमें न हो, उसे भ्रमसे अपनेमें समझ कर उसके कारण दूसरोंसे अपने आपको श्रेष्ठ समझना मान कहलाता है।

४ पुराणानुसार पुष्कर द्वीपके एक पर्वतका नाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

५ सामर्थ्य, शक्ति। ६ उत्तर दिशाके एक देशका नाम। ७ प्रतिष्ठा, इज्जत।

"अधमाः कलिमिच्छन्ति सन्धिमिच्छन्ति मध्यमाः।
उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्॥
मानो हि मूलमर्थस्य माने म्लाने धनेन किम्।
प्रभ्रष्टमानदर्पस्य किं धनेन किमायुषा॥"

(गरुड़पु० ११५ अ०)

उत्तम व्यक्ति सम्मानकी इच्छा करते हैं। क्योंकि, बड़ोंके लिये मान ही एकमात्र धन है। मानका अर्थ है मूल। जिनकी मानहानि होती है उनका धन और आयु निष्प्रयोजन है अर्थात् मानहीन हो कर जीवित रहना अत्यन्त क्लेशकर है।

८ अनुरक्त दम्पतीके भावविशेषका नाम मान है।

"दम्पत्योर्भाव एकत्र सतोरप्यनुरक्तयोः।
स्वाभीष्टाश्लेषवीक्षादि निरोधी मान उच्यते॥"

(उज्ज्वल नीलमणि)

प्रिय व्यक्तिकी अपराधसूचक चेष्टाका नाम मान है। प्रिय व्यक्ति जो अपराध करता है और उस अपराधके लिये उसे जो मानसिक विकारकी उत्पत्ति होती है उसीको मान कहते हैं। रसगङ्गरीमें लिखा है, कि यह लघु, मध्यम और गुरुभेदसे तीन प्रकारका है। अल्प चेष्टा द्वारा अपनीत होनेको लघु, कष्ट करके अपनय करनेको मध्यम और अत्यन्त कष्टसे जो अपनय किया जाता है उसे गुरु कहते हैं। जहां असाध्य है वहां रसाभास होता है।

नायिका नायकको यदि दूसरी स्त्रीके साथ बातचीत करते देखे, तो उसे जो मान होता है उसका नाम लघु, नायक नायिकाके साथ बातचीत करते समय यदि किसी दूसरी नायिकाका नाम ले, तो नायिकाको जो मान उत्पन्न होता है उसका नाम मध्यम और नायकके अन्य नायिकाके साथ सम्भोगादि चिह्न देख कर जो मान होता है, उसका नाम गुरु है।

नाना प्रकारके कौतूकादि द्वारा लघुमान अपनीत होता है। शपथादि द्वारा मध्यम मान, चरणधारण और भूषणादि दान द्वारा गुरुमान अपनीत हुआ करता है।

(रसमञ्जरी)

९ ग्रह। १० परिच्छेदक। ११ मन्त्र।

मान—बम्बईप्रदेशके सतारा जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भू-परिमाण ६४९ वर्गमील है। माननदीके दाहिने किनारे दहियाड़ी गाँवमें इसका विचारसदर प्रतिष्ठित है।

मानक (सं० पु०) मानं वृहत्परिमाणस्य (शेषाद् विभाषा। पा ५।४।१५४) इति कप्। १ माणक, मानकच्चू। २ शराव, ऽ१ सेर। ३ मालाकन्द।

मानकक्षार (सं० पु०) मानकस्य क्षारः। मानकदण्ड-पत्रक्षार, मानकच्चूके डंठल और पत्तेको भस्म कर जो राख बनती है उसीको मानक्षार कहते हैं।

मानकच्चू (हिं० पु०) १ एक प्रकारका मीठा कंद जो बङ्गालमें बहुत अधिकतासे होता है। यह प्रायः तरकारीके रूपमें या दूसरे अनाजोंके साथ खाया जाता है। यह बहुत जल्दी पचता है, इसलिये दुर्बल रोगियों आदिके लिये बहुत लाभदायक है। कहीं कहीं अरारोट या साबूदानेकी जगह भी इसका व्यवहार होता है। आधुनिक चिकित्सकोंने इसे मृदु, विरेचक, मूत्रकारक और बवासीर तथा कब्जियतके लिये बहुत उपयोगी माना है।

२ एक प्रकारकी मिस्री जो सालिब मिस्रीके नामसे बाजारोंमें मिलती है।

मानकन्द (सं० पु०) मानकच्चू देखो।

मानकर—वर्द्धमान जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २३° २५′ ४०″ उ० तथा देशा० ८७° ३७′ ३०″ पू० कलकत्तेसे ६० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। यह वाणिज्यका प्रधान केन्द्र है और यहां इष्ट-इंडियन रेलवे-कम्पनीका एक स्टेशन भी है।

मानकलह (सं० पु०) १ ईर्षा, डाह। २ प्रतिद्वन्द्विता, चढ़ा-ऊपरी।

मानकलि (सं० पु०) अभिमानज कलह, वह विवाद जो घमंडसे खड़ा होता है।

मानकवि—राजपूतानेके रहनेवाले एक कवि। इनका जन्म संवत् १७५६में हुआ था। ये व्रजभाषाके बड़े निपुण कवि थे। राणा राजसिंह मेवाड़वालेकी आज्ञासे इन्होंने उदयपुरका इतिहास राजदेव विलास नामक ग्रन्थ बनाया था। इस ग्रन्थमें महाराणा राजसिंह और औरङ्गजेबकी अनेक लड़ाइयोंका वर्णन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानकवि—चरखारीके रहनेवाले एक वन्दीजन। ये विक्रमशाह बुन्देला राजा चरखारीके दरबारमें थे।

मानकवि—एक कवि। ये वैसवारेके रहनेवाले ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १८१८में हुआ था। इन्होंने कृष्णकल्लोल नामक एक ग्रन्थ बन था और कृष्णखण्डका अनेक छन्दोंमें भाषा किया। इस ग्रन्थमें इन्होंने कई राजाओंकी वंशावली भी दी है।

मानकृत (सं० त्रि०) सम्मानजनक।

मानकोट—शिवालिक पर्वतके अन्तर्गत एक छोटा सामंत-राज्य। सम्राट् अकबर शाहने ९६४ हिजरीमें इस नगर पर चढ़ाई कर राजा भक्तमल्लको परास्त किया था।

मानक्रीड़ा (सं० स्त्री०) सूदनके अनुसार एक प्रकारका छन्द।

मानक्षति (सं० स्त्री०) मान हानि।

मानगांव—१ बम्बई प्रदेशके कोलाबा जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भू-परिमाण ३५३ वर्गमील है।

२ उक्त उपविभागके अन्तर्गत एक बड़ा गांव। यह प्रसिद्ध राजगढ़दुर्गसे १५ मील दूर पड़ता है। यहां डाक-घर, महकूमेकी कचहरी आदि हैं।

मानगृह (सं० पु०) रूठ कर बैठनेका स्थान, कोपभवन।

मानग्रन्थि (सं० पु०) मानस्य ग्रन्थिरिव बाधकत्वात्। १ अपराध, जुर्म। २ अभिमानवर्द्धन।

मानचित्र (सं० पु०) किसी स्थानका बना हुआ नकशा, जैसे ऐशियाका मानचित्र।

मानज (सं० पु०) १ क्रोध, गुस्सा। (पु०) २ मानसे उत्पन्न।

मानतरु (सं० पु०) पर्पटक, खेतपापड़ा।

मानतस् (सं० अव्य०) मान पञ्चम्याः सप्तम्या वा तसिल। मानसे या मान विषयमें।

मानता (हिं० स्त्री०) मनौती, मन्नत।

मानतुङ्ग (सं० पु०) इस नामके एकसे अधिक जैनाचार्य और जैनग्रन्थोंके नाम मिलते हैं, यथा—१ शातवाहन-राजके समसामयिक एक आचार्य। २ मालवके चौलुक्य-राज वयरसिंहका एक मन्त्री, जैन-श्वेताम्बरोंका तपा-गच्छ कुलोद्भव। तपागच्छ-पट्टावलीसे जाना है, कि उसने वाराणसी धाममें बाण और मयूरके कूहकसे मुग्ध मालवराजको 'भक्तामर-स्तवन' सुना कर प्रसन्न किया था। 'भक्तिभर' प्रारम्भसूचक स्तोत्र भी उसीकी रचना है। प्रभावक चरितमें मानतुङ्गका चरित्र सविस्तार लिखा है, किन्तु उनमेंसे कितने किंवदन्ती और अनैति-हासिक बातोंसे पूर्ण है। वाराणसीमें हर्षराजकी सभामें बाण और मयूरके साथ मानतुङ्गका तर्कयुद्ध चला था। यही विवरण बहुत बढ़ा चढ़ा कर प्रभावचरितमें लिखा गया है। भाषाकल्पसूत्रके मतसे मानतुङ्गका भक्तामर-स्तवन ८०० विक्रम सम्वत्में रचा गया। किन्तु उज्ज-यिनीसे १०३६ सम्वत्में उत्कीर्ण मालवराज वाक्पतिकी जो शिलालिपि पाई गई है उसमें मालवराजाओंकी तालिका इस प्रकार है,—१म कृष्णराज, २य वैरसिंह, ३य सियक, ४र्थ अमोघवर्ष वा वाक्पति। (१०३६ स०)

मानतुङ्गरचित परिग्रहप्रमाण-प्रकरण और द्वादशव्रत-निरूपण नामक दो मागधी ग्रन्थ पाये जाते हैं। जो कुछ हो, उनके भक्तामरस्तोत्र और भयहरस्तोत्रका जैन-पण्डित समाजमें बहुत आदर है। १३६५ सम्वत्मे जिन-प्रभसूरिने भयहरस्तोत्रकी तथा शान्तिसूरिने भक्तामर-स्तोत्रकी एक एक टीका लिखी थी।

३ सिद्धजयन्तीचरित्रके रचयिता। उनके शिष्य मलय-प्रभने १२६० सम्वत्में सिद्धजयन्तीचरित्रकी टीका रची है। मलयप्रभने अपने गुरुके सम्बन्धमें लिखा है, कि प्राग्वाट (पोवार)-वंशसे वट वा बृहद्गच्छ उत्पन्न हुआ। इस गच्छमें सर्वदेवने आचार्य-पद लाभ किया। सर्वदेव-के शिष्य जयसिंह, जयसिंहके शिष्य चन्द्रप्रभ, धर्मघोष और शीलगण थे। इन्हीं तीनोंसे पूर्णिमागच्छ उत्पन्न हुआ। मानतुङ्गने शीलगणसे दीक्षा ली। उनके एक और शिष्यका नाम प्रद्युम्नसूरि था। इन्हीं प्रद्युम्नने १२९२ सम्वत्में हेमचन्द्रके योगशास्त्रविवरण नामक ग्रन्थके शेषमें लिखा है, कि मानदेव, मानतुङ्ग और बुद्धि-सागर ये तीनों ही चन्द्रकुलमें प्रधान आचार्य थे। उक्त ग्रन्थके शेषमें २य मानतुङ्गकी गुरुपरम्परा इस प्रकार लिखी है,—

बुद्धिसागर, पीछे प्रद्युम्नसूरि, प्रद्युम्नके बाद देव चन्द्र, देवचन्द्रके बाद मानदेव और पूर्णचन्द्र और सबसे अन्तमें मानदेवके शिष्य मानतुङ्ग हुए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानद (सं० त्रि०) मानः ददातीति दा-क । १ मान-दायी, बड़ाई करनेवाला । (पु०) २ विष्णु ।

मानदण्ड (सं० पु०) मानार्थं दण्डः । परिमाणार्थ दण्ड, वह डंडा या लकड़ी जिससे कोई चीज नापी जाय ।

मानदास—एक व्रजवासी कवि । संवत् १६८० में ये उत्पन्न हुये थे । इनके पद रागसागरोद्भव नामक ग्रन्थमें पाये जाते हैं । वाल्मीकि रामायण और हनुमान नाटक आदि ग्रन्थोंसे सार ले कर इन्होंने भाषामें रामचरित बनाया है । इनका बनाया रामचरित बड़ा ही ललित है । इनकी रचना शैली विलक्षण है । ये एक महान् कवि माने जाते हैं । इनकी कविता बड़ी रोचक होती थी । उदाहरणार्थ एक नीचे देते हैं—

जागिये गोपाललाल जननी बलि जाई ।
उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो
प्रकटे सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई
उठो मेरे आनन्दकंद नगनचन्द मन्द मन्द
प्रकट्यो द्युतिवान् भानु कमलनि सुखदाई ।
सिङ्गो सब पुरत वेनु तुम बिना न छुटे धेनु
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वर राई ॥
मुखतें पट दूर कियो यशोदाको दर्श दियो
और दधि सब मांगि लियो विविध रस मिठाई ।
जेंवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुणनिधान
थारमें कुछ जूठ रही सो मानदास पाई ॥

मानदेव—इस नामके भी अनेक जैनाचार्योंके नाम मिलते हैं । उनमेंसे एकने लघुशान्तिस्तोत्रकी रचना की ।

मानदेव (सं० पु०) लिच्छविवंशीय एक राजा ।

लिच्छविवंश देखो ।

मानद्रुम (सं० पु०) शाल्मली वृक्ष, सेमलका पेड़ ।

मानधन (सं० त्रि०) मानमेव धनं यस्य । मान ही जिसका एकमात्र धन हो, बड़ा इज्जतदार ।

मानधाता (सं० पु०) मान्धाता देखो ।

मानधानिका (सं० स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी ।

मानन (सं० क्ली०) सम्मान-प्रदर्शन ।

मानना (हिं० क्रि०) १ अंगीकार करना, मंजूर करना । २ कल्पना करना, समझना, फर्ज करना । ३ ध्यानमें लाना, समझना । ४ ठीक मार्ग पर आना, अनुकूल होना । ५ कोई बात स्वीकार करना, कुछ मंजूर करना । ६ आदर करना, किसीको पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना । ७ देवता आदिकी भेंट करनेका प्रण करना, मन्नत करना । ८ दक्ष समझना, उस्ताद समझना । ९ धार्मिक दृष्टिसे श्रद्धा या विश्वास करना । १० किसी पर बहुत अनुरक्त होना, किसीके साथ बहुत प्रेम करना । ११ स्वीकृत करके अनुकूल कार्य्य करना । १२ ध्यानमें लाना, समझना ।

माननीय (सं० त्रि०) मान्यते पूज्यते इति मान-अनीयर् । जो मान करनेयोग्य हो, पूजनीय ।

"मानो मन्योऽसि वृद्धेषु माननीयः सुरासुरः ।
स्नापयामि महादेवीं मानं देहि गृहे मम ॥"

(दुर्गोत्सव पूजापद्धति)

मानन्तवाड़ी (मानन्तोड्डी)—मद्रास प्रदेशके मालवा जिलान्तर्गत एक नगर । यह अक्षा० ११° ४८′ उ० तथा देशा० ७६° २′ ५५″ पू०के मध्य अवस्थित है । १८२८ ई०में यहां कहवेकी खेती शुरू हुई । क्रमशः यह स्थान वैनाड़ जिलेके कहवा-वाणिज्यका प्रधान केन्द्र हो गया । यहां वृटिश-सरकारका विचारसदर और कहवेके व्यवसायके लिये अन्यान्य कार्यालय प्रतिष्ठित हैं । १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें अंगरेज-राजने यहां छावनी डाली । १८०२ ई०के कोटिवट-विद्रोहमें उस सेनादलका ध्वंस हुआ ।

मानपर (सं० त्रि०) मान एव परं प्रधानं यस्य । अतिशयमानी, बहुत पूजनीय ।

मानपरिखण्डन (सं० क्ली०) मानहानि, अवमानना ।

मानपात (सं० पु०) मानकच्चू देखो ।

मानपाल—एक राजा । ये देवपालके पुत्र थे ।

मानपुर—१ मध्यभारतके भुपावर एजेन्सीके अन्तर्गत एक परगना । यह विन्ध्यपर्वतश्रेणीके शिखर पर अवस्थित है । यहांका प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा ही मनोरम है । भूपरिमाण ६० वर्गमील और जनसंख्या पांच हजारके करीब है । इसके उत्तर, दक्षिण और पूर्वमें इन्दोर-राज्य तथा पश्चिममें जामनिया नामक छोटा राज्य है । १८६० ई०में ग्वालियर-राजके साथ संधि हो जाने पर यह स्थान अङ्गरेजोंके हाथ आया ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२ उक्त परगनेका एक शहर। यह अक्षा० २२° २६' उ० तथा देशा० ७५° ४०' पू० इन्दोरसे २४ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या १७४८ है। जयपुरके राजा मानसिंहने इस नगरको बसाया, इसीसे यह नाम पड़ा है। भील लोग यहांके प्रधान अधिवासी हैं। शहरमें एक डाकघर, एक स्कूल, अस्पताल और डाकबंगला है।

मानप्राण (सं० त्रि०) मानजीवन, जिसका मान ही प्राण हो।

मानभङ्ग (सं० पु०) मानस्य भङ्गः। मानहानि, मानमर्दन।

मानभाण्ड (सं० क्ली०) परिमाणभाण्ड।

मानभाव (सं० पु०) चोचला, नखरा।

मानभाव (महानुभाव शब्दका अपभ्रंश)—बम्बई प्रदेशवासी वैष्णव-सम्प्रदायविशेष। इस सम्प्रदायकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें दो मत प्रचलित हैं। सतारांके मानभावोंका कहना है, कि पांच सौ वर्ष पहले एक धर्मपरायणके मुनीन्द्र और दिवाकर नामक दो शिष्य थे। मुनीन्द्र मांस खाता था, इस कारण भट्टाचार्य नामक दिवाकरके एक शिष्यके साथ उसका झगड़ा हो गया। भट्टाचार्यने मुनीन्द्रका साथ छोड़ दिया, यह सुन कर उस सम्प्रदायके बहुतसे लोग भट्टाचार्यके दलमें मिल गये। भट्टाचार्यने अपने पार्षदोंको गेरु वस्त्र छोड़ कर कृष्ण-वस्त्र पहननेका आदेश किया और उन्हें 'महानुभाव' नामसे पुकारने लगे। तभीसे यह सम्प्रदाय 'मानभाव' नामसे प्रसिद्ध हुआ।

बेरारमें एक दूसरा प्रवाद प्रचलित है,—कृष्णभट्ट जोषी नामक एक व्यक्ति इस सम्प्रदायके प्रवर्त्तक थे। वेतालमें उनकी अच्छी सिद्धि थी। वेतालने उन्हें एक मुकुट दे कर कहा था, 'यह मुकुट सिर पर रखनेसे कृष्ण हो सकते हो, किन्तु उस समय यदि मनकी वृत्तिको न रोकोगे अर्थात् असत् आचरणका पक्ष लोगे, तो निश्चय ही विनाशको प्राप्त होगे।' जो कुछ हो कृष्णभट्ट वह मुकुट पा कर कृष्ण बन गये और बहुत-सी युवतियोंका सतित्व नाश करने लगे। उनके इस असत् आचरण का व्यवहार देवगिरिके राजमन्त्रीको मालूम हो गया। उन्होंने कौशलसे कृष्णको पकड़ा और मुकुट छीन लिया। मुकुटके शिर परसे अलग होते ही कृष्णभट्टकी कृष्णमूर्त्ति भी बदल गई। राजा रामचन्द्रदेवके आदेशसे कृष्ण निर्वासित हुए। किन्तु मानभाव लोग इस बातको अस्वीकार करते हैं। वे कहते हैं, कि बलराम कृष्णवस्त्र पहना करते थे, इसलिये वे लोग भी कृष्णवस्त्र पहनते हैं।

उक्त प्रवादके अनुसार राजा रामचन्द्रके समयमें अर्थात् प्रायः ७०० वर्ष पहले मानभावकी उत्पत्ति स्वीकार करनी होगी।

मानभाव दो प्रकारका है—घरबासी और वैरागी। फिर घरबासीके भी दो भेद हैं—गृहस्थ और भोले। गृहस्थ वा संसारी मानभाव जातपांतका विचार नहीं करते, किन्तु भोले मानभाव नामसे परिचित होने पर भी अपने अपने जातिधर्मका पालन कर चलते हैं। अन्त्यजको छोड़ कर सभी हिन्दू मानभाव हो सकते हैं। वैरागी मानभावमें स्त्री और पुरुष दोनों हो हैं। दोनों ही मस्तक मुंड़ाते हैं। वे विवाह नहीं कर सकते, मन्दिरमें अथवा नाना स्थानोंमें घूम कर अपना समय बिताते हैं। वैरागियोंमें पुरुष गुरु वा महन्तसे और स्त्री स्त्री-गुरुसे दीक्षित होती हैं। वैरागी अथवा वैरागिनीमें कोई संस्रव नहीं रहता। यहां तक, कि वे एक दूसरेका मुख भी नहीं देख सकते। वैरागिनीके मरने पर उसे समाधिस्थ करनेका अधिकार भी वैरागीको नहीं है। सिर्फ वे उसकी शवदेह ले कर समाधिस्थानमें पहुंचा आते हैं। पीछे वैरागिनी उसके कपड़े उतार उत्तर मुख करके एक बड़े गड्ढेमें गाढ़ देती हैं।

वैरागीके मरने पर भी उसे निज श्रेणीके लोग दफनाते हैं। दफनानेके समय शवके ऊपर नमक छिड़क दिया जाता है। गृहस्थ लोग शवदाह करते हैं। दत्तात्रेय और कृष्ण इनके उपास्य देवता हैं। निजाम राज्यभुक्त माहुर ग्राममें जो दत्तात्रेय और कृष्णका मन्दिर है वही मानभावोंका सर्वप्रधान तीर्थस्थान है। भगवद्गीता उनका प्रधान धर्मग्रन्थ है। जिस जिस धर्मग्रन्थमें दत्तात्रेय और कृष्णका माहात्म्य-वर्णित है उसी उसी ग्रन्थका मानभाव-समाजमें विशेष आदर है। वे लोग दत्तात्रेय और कृष्णको छोड़ कर और किसी भी देवदेवीकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूजा नहीं करते। बेरारमें जो मानभाव हैं उनके पांच प्रधान मठ हैं, नरमठ, नारायणमठ, ऋषिमठ, प्रवरमठ और प्रकाशमठ अलावा इसके और भी बहुतसे छोटे छोटे मठ हैं पर वे उन्हीं पांचोंके अन्तर्गत माने गये हैं। उनके सर्वप्रधान एक गुरु रहते हैं जो महन्त कहलाते हैं। बेरारके अन्तर्गत ऋध्पुरग्राममें महन्तकी गद्दी है। मानभावोंमें महन्तदर्शन और उनका पादपूजन बहुत पुण्यजनक समझा जाता है।

क्या गृहस्थ, क्या वैरागी सभी अहिंसापरायण हैं। चलते समय या खानेके समय कहीं जीवहिंसा न हो जाय, इस भयसे वे हमेशा सतर्क रहते हैं। कोई भी प्राणि-हिंसा नहीं करता। यदि इन्हें मालूम हो जाय, कि अमुक स्थानमें बलिदान होगा तो वे उसके तीन दिन पहले उस स्थानको छोड़ देते हैं। यहां तक, कि कभी कभी वे जंगलमें जा कर आश्रय लेते हैं।

मानभाव १० दिन तक अशौच मानते हैं। ग्यारहवें दिन वैरागीभोज देना होता है। किसी मठाध्यक्षके मरने पर उनका जो प्रधान चेला रहता है उसे अह्मदनगर जिलेके अन्तर्गत पैठन मठमें आ कर पण्डितोंके निकट परीक्षा देनी होती है। परीक्षामें उत्तीर्ण होने पर वे मठाध्यक्षके उच्चासन पर बैठता और पूजित होता है। कार्य-भार ग्रहण करनेसे पहले उसे निजामराज्यके अन्तर्गत पाञ्चालेश्वरके मन्दिरमें जा कर दत्तात्रेयकी पूजा करनी होती है। इसके बाद वह मानभावोंको भोज और भिखारियोंको भीख देता है। किसी वैरागिनीके अपराधी होने पर स्त्री-गुरु उसका विचार करती है। योग्य होने पर कोई शूद्रकन्या भी स्त्री-गुरु हो सकती है। वैरागिणी होनेके समय जो ब्राह्मण-कन्या है वह भी उससे मन्त्र लेनेको बाध्य है। चाहे वैरागी हो या वैरागिणी, जो ब्रह्मचर्यका पालन नहीं करता, उसे समाजच्युत किया जाता है। जो इस कठिन नियमका पालन करनेमें असमर्थ है वह विवाह करके घरबासी मानभाव हो सकता है।

मानभूम—विहार और उड़ीसाके पश्चिमी प्रान्त पर अवस्थित एक जिला। इसका भूपरिमाण ४१४७ वर्ग मील है। पुरुलियामें इसका चीफ कोर्ट या सदर अदालत है। यह अक्षा० २२° ४३' से ले कर २४° ४' उ० तथा देशा० २५° ४६' से ले कर ८६° ५४' पू०के मध्य अवस्थित है।

इसके उत्तरमें हजारीबाग और बीरभूम जिला है। पूर्वमें वर्धमान और बांकुड़ा जिला तथा दक्षिणमें सिंहभूम और मेदिनीपुर तथा पश्चिममें हजारीबाग तथा लोहरडांगा नामक स्थान है। इसके सिवा इसके उत्तर और उत्तर-पूर्वमें बराकर और दामोदर नदी तथा इसके दक्षिण और पश्चिममें सुवर्णरेखा बहती है।

इस जिलेमें बाघमुण्डी, दालमा, पांचेट, बिहारनाथ और पार्श्वनाथ आदि कई पहाड़ हैं। इस पर्वतश्रेणीसे वहांके वनभूमिकी शोभा और भी बढ़ गई है। अधित्यका और उपत्यकाएं वनराजिसे विभूषित होने पर भी कई छोटी छोटी पहाड़ी नदियोंके खरस्रोतसे निनादित होती रहती हैं। पर्वत श्रेणियोंमें बारोधा, बन्दी, बांसा, बन्दीपाल, भाण्डारी, चरगोनाल, दावो, कारंटी, कल्यानपुर, लकाईसिनी, सवाई, कोलाबणी नामके कई शृङ्ग प्राकृतिक सौन्दर्यकी अपूर्व छटा दिखा रहे हैं। इनमें किसी किसी शिखर पर मन्दिर भी बने हुए हैं।

बराकर, खुदिया, दामोदर, इजरी, गुथाई, धलकिशोर या द्वारकेश्वर, शिलाई, कांसाई, कुमारी, टटका और सुवर्णरेखा आदि नदियों तथा गिरिपार्श्वमें बहनेवाली स्रोतस्विनियोंका जल ही यहांके अधिवासी पीते हैं। सिवा इनके पुरुलिया-साहबबांध, जयपुर-रानीबांध और पाण्ड्राकी पोद्दार-डिहीबांध नामकी झील तथा उपत्यकावक्षमें विराजित कई छोटे छोटे जलाशय वहांके लोगोंके लिये जल प्रदान करते हैं। पीनेका तो काम चलता ही है, वरं इससे सिंचाईका भी लोग काम लेते हैं।

पहाड़ी वनोंमें बाघ भालू आदि हिंस्रजन्तु भी देखे जाते हैं। शाल, अशन और महुएके पेड़ यहां बहुतायतसे मिलते हैं। अङ्गरेज-सरकार शालके पेड़ोंको बेचनेके लिये इस वनभागकी रक्षा करती है। महुएका फूल इस देशके दरिद्र अनार्यजातिका प्रधान आहार है। इससे देशी मद्य तय्यार होता है।

सुवर्णरेखा नदीके खरस्रोतमें कभी कभी सोना भी बह कर चला आता है। यहांके लोग नदीके किनारे बहुत परिश्रम करके सोना संग्रह करते हैं। इसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिवा कई जगह लोहे, तांबे तथा क्रोथलेकी खानें पाई गई हैं। यहांसे यह सब चीजें निकाली जाती हैं।

पर्वतोंसे पत्थर काटे जाते हैं और उनसे देवमन्दिर, देवमूर्त्ति, पत्थरके बरतन आदि तैयार किये जाते हैं। पातकुमके अन्तर्गत चैतन्यपुरमें एक उष्ण प्रस्रवण है। यहांका जल स्वास्थ्यके लिये विशेष उपयोगी है।

शाल आदि लकड़ियोंके सिवा यहांके वनविभागसे लाह, टसर, मोम और धूना आदि संग्रह किये जाते और बाहर भेजे जाते हैं।

अंगरेजोंके अनुग्रह तथा रेल हो जानेकी सुविधासे विविध प्रदेशोंसे आ कर यहां लोग बस गये हैं। वाणिज्यके कारण कितने ही व्यवसायी महाजन यहां आ कर बस गये हैं। इस जिलेका प्रधान नगर पुरुलिया है। इस समय इसकी शोभा देखते ही बनती है। असंख्य सौधमालाओंसे विभूषित यह नगर धनजनसे पूर्ण हो जाता है। यथार्थमें अनार्य्य ही यहांके आदिम अधिवासी हैं। असुर, शवर, भर, भूमिज, धाँगड़, खड़िया, मुण्डा, नायक, नाइया, नाट, पहाड़िया, पुराण, सरदार और सन्थाल अनार्योंमें उल्लेखनीय हैं। कुर्मी, बागदी, बाउरी आदि जाति अनार्य भावापन्न होने पर भी इनमें बहुत कुछ हिन्दूभाव दिखाई देता है। दलमागिरि-वासी पहाड़ी सिनानघाटी गुहामें देवीके सामने नरबलि चढ़ाते थे। अन्य अनार्य जातियोंमें भी यह कुप्रथा दिखाई देती है। भूमिज पञ्चकोटकी रङ्गिणी देवीके सामने नरबलि देते थे। सन् १८३२ ई०में गङ्गानारायणके नेतृत्वमें यहां एक बलवा भी हुआ था जो "चूयाड़का बलवा" कहलाता है। यहांके अनेक राजे भी अनार्य जातिके हैं।

वराहभम देखो।

पुरुलिया, झलिदा, रघुनाथपुर, काशीपुर और मानबाजार यहांका प्रधान व्यवसायिक स्थान हैं। यथार्थमें नगरकी अपेक्षा इन्हें ग्रामसङ्घ ही कहते हैं। ये सब नगर वहांकी म्युनिस्पलिटीके अधीन हैं। इससे ये दिनों दिन उन्नति कर रहे है। पुरुलिया नगरमें ही जिलेकी सदर अदालत है।

पुरुलियाके दक्षिण चाकुलता ग्राममें प्रत्येक वर्ष मेला होता है। यह मेला आश्विन महीनेके छातापर्व के उपलक्षमें लगता है। पुरुलियासे बढ़ाकर जानेमें अनाड़ा एक ग्राम आता है। चैत्र संक्रान्तिके अवसर पर चड़कपूजाके उपलक्ष्यमें अनाड़ामें भी एक मेला लगता है। यह मेला कोई बीस दिन तक रहता है। निकटके जिलोंके व्यवसायी दुकाने ले कर यहां आते और व्यवसायसे लाभ उठाते हैं।

यहां कांसाई, दामोदर, सुवर्णरेखा आदि नदियोंके किनारे किनारे हिन्दू तथा जैनमन्दिर दिखाई देते हैं। इन मन्दिरों तथा इनके सामनेकी पड़े खण्डहरोंको देख कर अनुमान होता है, कि एक समय हिन्दू और जैन-बणिक् नदी द्वारा यहां आ कर बस गये थे। समय पा कर जब पुरुलियाने प्राधान्य लाभ किया, तो यह नगर श्रीहीन और खण्डहरके रूपमें परिणत हुआ था।

पुरुलियाके स्टेशनके निकट कांसाई तीर पर पलमा बस्तीमें ध्वंसप्राय एक जैन-मन्दिरका नमूना दिखाई देता है। इस मन्दिरमें कई जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्त्तियां पाई गई हैं।

सिवा इसके पुरुलियाके निकट चाड़ाग्राममें श्रावकोंका एक देवालय है। दामोदर नदीके तट पर अवस्थित तेलकुपीमें विरूपदेवका मन्दिर और कांसाई नदीके तीरके बोरमग्राममें एक हिन्दू-मन्दिरका ध्वंसावशेष दिखाई देता है। कांसाई और पारश शैलके बीच बुद्धपुरग्राममें चार देवमन्दिर और कई प्राचीन कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष इधर उधर पड़े दिखाई देते हैं। यहांके चैत्र संक्रान्ति पर लगनेवाले 'चड़क' मेलेमें दूर दूरकी दुकानें आती हैं।

जहां ग्राण्डट्रङ्करोडने बढ़ाकर नदीको पार किया है वहांसे थोड़ी ही दूर एक खण्डशैल पर चार चारुशिल्पमय मन्दिरका ध्वंसावशेष पड़ा हुआ है। इनमें एक शिलालेख भी पाया गया है। यह शिला-लेख रानी हरिप्रिया देवीके समयका है। यह बङ्गाक्षरमें सन् १३८३ शकका लिखा हुआ है। बुधपुरके कांसाई तीर पर एक कोसमें और उसके दो कोस उत्तर वाकपीड़ा ग्राममें नौ फीट ऊंची एक बौद्ध मूर्त्तिके साथ साथ और भी कितने ही मन्दिर दिखाई देते हैं।

सुवर्णरेखा और करकरी नदीके सङ्गमस्थित दालमी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राममें कितने ही हिन्दू-मन्दिरोंका ध्वंसावशेष है। इन सब ध्वंसावशेषोंमें एक प्राचीन दुर्ग (किला) और शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी, गणेश, काली आदि देव-देवियों की मूर्त्तियां पाई गई हैं।

इसके बाद पञ्चकोट या पञ्चेटराजवंशकी कीर्त्ति ही उल्लेखयोग्य हैं। इनका राजप्रासाद और देवमन्दिरादिके ध्वंशावशेष आज भी उस प्राचीन कीर्त्तियोंके गौरवकी घोषणा कर रहे हैं। राजा रघुनाथ नारायणसिंह देव पञ्चकोटसे केशवगढ़ राजधानी उठा लाये। इससे वहां के राज-प्रासाद तथा उसके निकटवर्त्ती अट्टालिकायें खण्डहर रूपमें दिखाई देती हैं। इसके बाद राजा नीलमणिसिंहदेवके पिता फिर काशीपुर गये और वहां राज प्रासाद बनवा कर रहने लगे। पांचेट देखो।

पहले सारा मानभूम प्रदेश देशीय सामन्त राजाओं के द्वारा शासित होता था। यह घटवाल कहलाते थे। पड़ोकेस राजाओंके आक्रमणसे ये अपनी अपनी रक्षाके लिये घाट और गिरिपथोंमें छिपे रहते थे। विदेशियों से देशकी रक्षा तथा डाकुओंका दमन ही उनका प्रधान काम था। इसी कामके लिये उन्हें जागीर मिली थी। भूमिज-सरदार तथा मुण्डे और मानकी आदि अनार्य सरदार भी राजाकी ओरसे युद्ध करते थे। इसीसे उनको भूमि भी मिली थी।

सन् १७६५ ई०में बङ्गाल बिहार और उड़ीसेकी दीवानीका अधिकार मिलनेके बाद मानभूम जिला अङ्गरेजोंके हाथ आया। तबसे सन् १८०५ ई० तक उस के कुछ सामन्तराजोंको वीरभूम तथा कुछको मेदिनीपुरके अन्तर्गत रख कर शासनकार्य्य निर्वाह होता था। इसके बाद आनेवाले वर्षमें अङ्गरेजी इष्ट इण्डिया कंपनीने इन राज्योंको एकत्र कर एक स्वतन्त्र जिला बना दिया। इसका नाम हुआ जङ्गल-महल। सन् १८३२ ई०के बुयड़के बलवेके बाद इस स्थानको शासनशृङ्खलाको दृढ़ करनेके लिये कम्पनीने सेनपहाड़ी, शेरगढ़ और विष्णुपुरको छोड़ अन्यान्य राज्योंको और मेदिनीपुरके धलभूमको काट कर एक मानभूम नामक जिलेकी सृष्टि की। गवर्नर जेनरल या बड़े लाट साहबने यहांके शासनका भार दक्षिण-पश्चिम सीमान्तकी रक्षाके लिये मुकर्रर किये गये एजेण्ट पर सौंप दिया। सन् १८४६ ई०में यहां एक फौजदारी दंगा हो गया जिससे मानभूम फिर सिंहभूममें मिला दिया गया था। सन् १८५४ ई०में यहांके कार्य्य-निरीक्षक एक कमिश्नर नियुक्त हुए। सन् १८७१ ई०में इस जिलेकी सीमा कायम कर दीवानी फौजदारी अदालतोंकी व्यवस्था की गई।

मानमण्ड (सं० क्ली०) मानकच्चूसे बनी हुई एक प्रकारकी औषध।

मानमनौती (हिं० स्त्री०) १ मानता, मन्नत। २ रूठने और मनानेकी क्रिया। ३ पारस्परिक प्रेम।

मानमन्दिर (सं० पु०) ज्योतिष्कमण्डलोके गतिविधिनिरूपणके लिये वैज्ञानिक यन्त्रसमन्वित अट्टालिका, वह स्थान जिसमें ग्रहों आदिका वेध करनेके यन्त्र तथा सामग्री हो। वेध और वेधशाला देखो। २ स्त्रियोंके रूठ कर बैठनेका एकान्त स्थान।

मानमय (सं० त्रि०) गर्वयुक्त, घमंडी।

"तदागताभिर्नृवराहृतास्तु कृष्णोप्सया मानमयास्तथैव।"

(हरिवंश ८४।५५)

मानमरोर (हिं० स्त्री०) मन-मुटाव।

मानमहत् (सं० त्रि०) अत्यन्त मानोन्नत।

मानमान्यता (सं० स्त्री०) इज्जत, प्रतिष्ठा।

मानमोचन (सं० पु०) साहित्यके अनुसार रूठे हुए प्रियको मनाना। यह साम, दाम, भेद, प्रणति, उपेक्षा और प्रसंग विध्वंस इन छः उपायों द्वारा बतलाया गया है।

मानमोड़ा—बम्बई प्रदेशके पूना जिलान्तर्गत जुन्नरके समीप एक गिरिमाला। यहांकी अम्बिका श्रेणीकी गुहासे जो शिलालिपि आविष्कृत हुई है उसमें 'मानमुकुड़' (मानमुकुट) नामक पुरका उल्लेख देखनेमें आता है। अधिक सम्भव है, कि उसी मानमुकुट शब्दके अपभ्रंशसे मानमोड़ा हुआ हो। इस गिरिमालाके पाददेशमें बौद्ध और हिन्दूराजाओंके समयमें खोदी हुई बहुत-सी गुहा नजर आती हैं। उन गुहाओंके लिये यह गिरिमाला प्रत्नतत्त्वानुसन्धित्सुके निकट विशेष द्रष्टव्य है।

भीमशङ्कर।

मानमोड़ाके दक्षिण-पूर्व समतलक्षेत्रसे प्रायः दो सौ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फुटकी ऊँचाई पर 'चैत्य' नामसे प्रसिद्ध बहुत-सी बौद्ध गुहाएँ हैं। उन सब गुहाओंको लोग भीमशङ्करका अंश समझते हैं। भीमशङ्कर गुहाएँ जुन्नरसे आध कोस दक्षिण-पूर्वसे ले कर पूना जानेके रास्तेसे आध कोस पश्चिम प्रायः आध कोस तक फैली हुई हैं। उक्त गुहाओंका परिचय बहुत संक्षेपमें नीचे दिया गया है :—

१ली गुहा लयना (लेना) वा वानरवास कहलाती है। इसके एक अंशमें बरामदा और दूसरे अंशमें कोठा है। इसके बीचमें जो खंभे लगे हैं, वे प्राचीन आन्ध्र ढंग पर बने हैं। २री गुहाका नाम चैत्य है। इसके द्वारदेशमें "सिद्धं उपासकस नगमस, सतमलपुतस, पुत वोरभुतिन्" यह लिपि खुदी हुई है। ३री गुहा एक सत्र है। उसके दक्षिण जलका एक चहवच्चा मौजूद है। ४थी और ५वां गुहामें भी चार बड़े बड़े जलाधार दिखाई देते हैं। ५वीं गुहाकी दीवार पर "सिव-समपुतस सिवभुतिनो देयधम्म पोढ़ि' यह लिपि उत्कीर्ण है। ६ठी गुहा 'मण्डप' वा विश्राममण्डप कहलाती है। इसकी छतकी दीवारमें जो "राणो महाखतपस सामि नहपानस अमात्यास वचस गोतस अयमस देयधम्म पढि मतपोच पुनथयवस ४६ कतो" शिलालिपि उत्कीर्ण है। उससे मालूम होता है, कि महाक्षत्रप स्वामी नहपानके प्रधान मन्त्री वत्सगोत्रीय अयमने इस मण्डप और जलाधारको उत्सर्ग किया था। ७वीं और ८वीं गुहाके द्वारमें बहुत छोटी छोटी अटारी हैं। ८वीं गुहासे प्रायः ३ फुट नीचे ९वीं गुहामें एक बड़ा सत्र वा भोजमण्डप है। इसकी छत अभी टूट फूट गई है। ८वीं और ९वीं गुहाके बीचमें बहुतसे जलाधार हैं। पहाड़के ऊपरका जल इन जलधारामें गिरता है। उक्त जलाधारोंसे दक्षिण ८० गजकी दूरी पर १०वीं वा भीमशङ्करकी अन्तिम गुहा अवस्थित है।

अम्बिका।

भीमशङ्करसे ३०० गज दूर अम्बिका नामक गुहा-श्रेणी आरम्भ हुई है। पूर्व-दक्षिणसे पश्चिमोत्तरकी ओर विस्तृत उत्तर पूर्वमुखी १६ गुहाओंको ले कर यहां अम्बिका श्रेणी बनी है। अम्बिकाकी अधिकांश गुहाएँ अभी टूट फूट गई हैं। इसकी चौथी गुहाकी छतके नीचे और दरवाजेके ऊपर "गहपतिपुतानां दोनङ्क स चौगभं देयधम्म" ऐसा लिखा है। इसकी छठी गुहामें 'अम्बिका' नाम्नी जैनदेवमूर्त्ति प्रतिष्ठित है। इसीसे इस गुहाका नाम 'अम्बिकालेने' पड़ा है। नाना स्थानोंसे जैन और जुन्नर-वासी हिन्दू उस देवीकी पूजा करने आते हैं। उस गुहाके दरवाजेके बाएं भागमें जैन क्षेत्रपालमूर्त्ति और दाहिने भागमें एक ताख पर 'चक्रेश्वरी'-की मूर्त्ति रखी हुई है। इस गुहाकी २री अटारी पर नेमिनाथ, आदिनाथ, अम्बिका तथा अम्बिका पुत्र सिद्ध और बुद्धकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। मुसलमानोंके हाथसे अधिकांश मूर्त्ति भग्न वा अङ्गहीन हो गई हैं।

यहांकी ११वीं गुहा एक असम्पूर्ण चैत्य है। पहले यही जैनोंका प्रधान पूजाका स्थान समझा जाता था। १ली सदीके अक्षरोंमें जो शिलालिपि उत्कीर्ण है, उसे पढ़नेसे मालूम होता है, कि वानद ग्रामवासी पलपने इस चैत्यको दान किया और इसकी देखरेख अपराजितोंके पयोगक (प्रयोगक) नामक एक व्यक्ति करते थे। इसकी दूसरी शिलालिपिसे मालूम होता है, कि यह गुहा उस समय 'गिधविहार' नामसे प्रसिद्ध थी। कोणाचिक श्रेणीमुक्त 'आदुथुम' नामक एक शक उपासकने इसे विहारके उद्देशसे दान किया था। इस विहारकी १०वीं शिलालिपिसे ही मानमुकुद (मानमुकुट) नामक पुरका पता लगता है। यहांकी १८वीं शिलालिपिमें मन्दन्त स्थविर-सुदर्शनके शिष्य वैविध्य चैत्यक स्थविरका प्रसङ्ग है।

भूतलिङ्ग।

अम्बिकासे २०० गज दूर पूर्वोक्त दोनों श्रेणीकी गुहामालासे ऊपर और भी १६ गुहाएं देखी जाती हैं। लोग उन्हीं गुहाओंको 'भूतलिङ्ग' कहते हैं। यह सब गुहाएं बहुत पुरानी होने पर भी भास्करकार्य और शिल्पनैपुण्य उतना अच्छा नहीं है। इन गुहाओंके निकट और आस पासमें बहुतसे सोते देखे जाते हैं। उक्त गुहाको लोग बौद्धगुहा मानते हैं। इसकी ७वीं और ९वीं गुहा एक बौद्ध 'दाघोव' समझी जाती है। ९वीं गुहाकी 'यवनस चन्दानं देयधम गभदार' इस लिपिसे जाना जाता है, कि इसका गर्भगृह 'चन्द्र'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नामक एक मुसलमानने बनवाया था। यहां गरुड़ और नागराजमूर्त्ति तथा छत्र-संलग्न छोटे छोटे चैत्य हैं। वे सब चैत्य लिङ्गरूप हैं और यहांकी मूर्त्तियां भूतमें कल्पित हुई हैं। इसीसे सम्पूर्ण गुहाका नाम 'भूत-लिङ्ग पड़ा है।

मानमृताफल (सं० पु०) पटोलवृक्ष, परवलकी लता।

मानयितव्य (सं० त्रि०) सम्मानार्ह, सम्मान करनेके योग्य।

मानयितृ (सं० त्रि०) सम्मानकारी, आदर करनेवाला।

मानरन्ध्रा (सं० स्त्री०) मानार्थं समयपरिमाणज्ञापकं रंध्र मस्यां। ताम्री, जलघड़ी। इसका व्यवहार प्राचीन-कालमें जब घड़ी नहीं थी, समय जाननेके लिये होता था। इसमें एक कटोरा होता था। उस कटोरेके पेंदेमें एक छोटा-सा छेद रहता था। यह कटोरा किसी बड़े जल-पात्रमें छोड़ दिया जाता था। उस छेदसे धीरे धीरे कटोरेमें पानी भरने लगता था। वह कटोरा ठीक एक दंड या घड़ीमें भर जाता और पानीमें डूब जाता था। फिर उसे निकाल कर खाली करके उसी प्रकार पानीमें छोड़ देते और इस प्रकार समयका निरूपण करते थे।

मानराज—मेवाड़के मोरी-कुलोद्भूत एक राजा। इनकी राजधानी चित्तौर नगरमें थी। ईस्वीसन् ८वीं शताब्दी-को इन्होंने मुसलमानोंसे युद्ध किया था।

मानराय—असनीके रहनेवाले वन्दीजन। इनका जन्म संवत् १५८० ई०में हुआ था। ये अकबरके दरबारी थे।

मानव (सं० पु०) मनोरपत्यं मनोर्गोत्रापत्यं पुमान् मनु-अण्। १ मनुका अपत्य, मनुष्य, आदमी। मनुसे उत्पत्ति हुई है इसीसे मनुष्यको मानव कहते हैं।

"मनोर्वंशो मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽभवत्।
ब्रह्मक्षत्रादयस्तस्मान्मनोर्जातास्तु मानवाः॥"

(भारत १।७५।१२)

मनुना प्रोक्तं मनु-अण्। २ उपपुराणविशेष।

"सनत्कुमारं प्रथमं नारसिंहं ततः परम्।
नारदीयं शिवञ्चैव दौर्वाससमनुत्तमम्।
कापिलं मानवञ्चैव तथा चौशनसं स्मृतम्॥"

(देवीभा० १।३।१३)

३ चौदह मात्राओंके छन्दोंकी संज्ञा। इसके ६१० भेद है।

मानवक (सं० पु० १ छोटे कदका आदमी, बौना, वामन। २ तुच्छ आदमी।

मानवकोत्तम (सं० पु०) शिशु, बालक।

मानवत् (सं० त्रि०) मान अस्त्यर्थे मतुप मस्य व। मान करनेवाला, रूठा हुआ।

मानवतत्त्व—(Anthropology) मानव-जातिका प्राकृतिक इतिहास। मानव-प्रकृतिके परिचायक लक्षणोंको जाननेके लिये मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, उद्भिद् और जड़ आदि सभी तत्त्वान्वेषण करना होता है। अतएव मानवतत्त्वका यथार्थ रहस्य जाननेके लिये पदार्थ विद्या (Physics), रसायन (Chemistry), जीवविज्ञान (Biology) और उद्भिदविद्या (Botany), शारीरविज्ञान (Anatomy and Physiology), मनोविज्ञान (Psychology), भूविद्या (Geology), वाग्विज्ञान या शब्दविज्ञान (Science of language), नीतिविज्ञान (Ethics), समाजविज्ञान (Sociology), धर्मविज्ञान (Religion or Theology) इन सब विज्ञानोंका साहाय्य लेना पड़ता है। मानवतत्त्व (Anthropology) इन सब विज्ञानोंके साथ मालाकी तरह गुथा हुआ है। अतएव ये सभी तत्त्व मानवतत्त्व-निर्णयके लिये पथप्रदर्शकका काम करते हैं। विविध विज्ञानका अभिज्ञान न रहने पर मानवतत्त्व स्वतन्त्र रूप से हृदयङ्गम नहीं किया जा सकता।

पहले तो पदार्थविद्या और रसायनशास्त्रका चूड़ांत-ज्ञान न रहने पर भूत और भौतिक पदार्थका स्वरूप निर्णय नहीं हो सकता। सृष्टिवाद या क्रमाभिव्यक्ति वाद—दोनोंका मत है, कि मानवका शरीर भूतविकार—भौतिक पदार्थका परिणाम है। अतएव भूतपदार्थ (Matter) स्वरूपनिर्णयविषयक शास्त्र मानवतत्त्वा-वबोधका प्रथम आवलम्बन है। भौतिकशक्ति और जीवनी शक्ति अभिन्न हो या भिन्न, यह स्पष्ट ही दिखाई देता है, कि भौतिक देहमें जीवनी शक्तिका स्फुरन होने पर साधारण जीवकी अभिव्यक्ति होती है। देहमें चैतन्य-का किस तरह समावेश होता है, इस विषयमें तरह तरह-के मत होने पर भी इसमें सन्देह नहीं, कि इन दोनोंमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक दुर्ज्ञेय या अज्ञेय सम्बन्ध है। भूतत्त्व-विद्या या पदार्थ-विद्या जीवविज्ञानका सोपानवत् मार्ग है।

प्राच्य मतसे—प्रकृति और तद्विकार बुद्धि, मन, इन्द्रिय और भूत—ये दृश्य और भोग्य हैं। प्रकृतिके साहाय्य विना पुरुषको जानना असम्भव है। प्रकृतिकी उपासना द्वारा ही पुरुषका अनुसन्धान करना होगा, जड़-विज्ञानसे ही जीव-विज्ञानका परिचय मिलता है। इसीलिये भगवान् कपिलने मुक्तकण्ठसे प्रकृतिदेवीकी स्तुति की है। क्योंकि प्रकृति विना पुरुषके नहीं रहती। विश्वजगत् केवल जड़प्रकृतिका कार्य नहीं—जगत्के प्रत्येक अणुमें पुरुष और प्रकृतिका युगलरूप विद्यमान है। पुरुष और प्रकृति एक ब्रह्मकी ही दो मूर्त्तियां हैं। यही वेदमें भी कहा गया है। वैज्ञानिकोंने जड़देहमें चैतन्यका अस्फुट स्फुरन माना है। इसलिये जड़विज्ञानका साहाय्य लिये विना जीवविज्ञानको उच्चतम श्रेणीमें समारूढ़ मानवतत्त्वका रूप किस तरह निर्णय होगा।

प्राच्यमतका विवरण सृष्टितत्त्वमें देखो।

पाश्चात्य-मतमें क्रमाभिव्यक्तिवादकी भित्ति नैसर्गिक नियमों पर ही स्थित है। पहले—शरीर विज्ञानसे मनुष्य-शरीरका गठन और क्रियाकी बात जानी जा सकती है। मनोविज्ञानसे मानवको मानसिक क्रिया और शारीरिक क्रियाके साथ मानसिक क्रियाका सम्बन्ध मालूम किया जाता है। वाग्विज्ञान या शब्दविज्ञानसे भिन्न भिन्न भाषातत्त्वके गूढ़ रहस्योंका पता चलता है। नीतिविज्ञानसे मनुष्यकी स्वेच्छाप्रणोदित कार्यावलीकी समालोचना द्वारा मनुष्यके प्रति मनुष्यका कर्त्तव्य स्थिर किया जाता है। समाजविज्ञान द्वारा भिन्न भिन्न समाजकी मानवजातिकी सामाजिक प्रतिष्ठा, शिल्प और विज्ञानकी उत्पत्ति, परिपुष्टि, उस विषयमें विद्वद् पुरुषोंका विश्वास और मन्तव्य तथा विभिन्न समाजकी रीतिनीतिकी आलोचना की जा सकती है। भूविद्या और प्रत्नतत्त्व भूस्तरस्थित प्रस्तरीभूत जीवकी ठठरियों और अन्यान्य छिद्रोंको देख कर अनुमानमें न आनेवाले दश हजार वर्ष पूर्वके पृथ्वीके विवरणको बताता है। पृथ्वीके प्राचीनतम अधिवासियोंके विवरणको संग्रह करनेमें अतीतसाक्षी इतिहास जहां निर्वाक् है, वहां भूततत्त्वविद्या उंगलीके सङ्केत (इशारे)से दिखा रही है, कि विशालकाय सर्प (शेषनाग), कच्छप आदि लीलाक्षेत्रमें वसुन्धराके विशालवक्ष पर मानव शिशुका पदचिह्न नहीं है। भिन्न भिन्न युगमें जिन्होंने जीव धरित्रीकी लीलाभूमिसे अवसर ग्रहण कर इह जीवलीलाकी समाप्ति की है, भूतधात्री धरित्रीने मातृस्नेहकी प्रेरणासे उनको यत्नपूर्वक अपने हृदयमें रखा है। उन समग्र तत्त्वोंकी पर्यालोचना कर और भूगर्भस्थित मनुष्योंकी आदि अवस्थाकी व्यवहृत वस्तुओंके नमूनोंको देख पाश्चात्य प्रत्यक्षवादी वैज्ञानिक उच्चस्वरसे चिल्ला रहे हैं, कि बहुत क्षुद्रतम प्राणी, विवर्त्तके अनन्त आवर्त्तमें परिवर्त्तित हो कर और क्रमाभिव्यक्तिकी शक्तिसे मार्जित हो कर क्रमशः उन्नत प्रकृतिके जीव और अन्तमें मनुष्यरूपमें परिणत हुआ है। इस असंख्य ग्रंथिमय जीवशृङ्खलाका मनुष्य ही उच्चतम ग्रंथि (गांठ) है। इन सब विषयोंकी पर्यालोचना कर मानवके यथार्थ तत्त्वको जानना ही मानवतत्त्वका उद्देश्य है।

शारीर-विज्ञानके साथ सम्बन्ध।

विभिन्न जीवोंके शरीरोंके अवयवोंके जानकार पण्डितोंने मनुष्यके साथ अन्य जीवोंके सादृश्य-निरूपणके लिये अग्रसर हो कर सम्पूर्ण रूपसे अस्थिसमूहकी परीक्षा कर उल्लासके साथ यह स्वीकार किया है, ठठरियों (कङ्काल)के सादृश्यमें मनुष्य अनन्त शृङ्खलाबद्ध जीवजगत्का ऊर्द्धतन शृङ्खलग्रंथि है। इस नियममें मनुष्यसे तिर्यग् जातिका सम्बन्ध अविच्छिन्न है। केवल अस्थिसंस्थानके सादृश्यसे सन्तुष्ट न हो कर उन्होंने शरीरयन्त्रके क्रियाकलापकी भी पर्यालोचना की है। उसमें देखा गया है, कि मनुष्यके साथ इतर जीवकी विशेष भिन्नता नहीं। अध्यापक ओयन (Owen) कहते हैं,—बन्दरके सामनेके दोनों पैरोंसे मनुष्यके दोनों हाथोंका विकाश दिखाई देता है। बन्दरोंके हाथकी अपेक्षा गरिला (Gorilla)-के हाथ बहुत कुछ कौशल सम्पन्न है। बन्दरोंके शरीर पर अधिक रोमावली रहनेके कारण ही मनुष्यकी तुलनामें इतना अधिक बाह्यवैषम्य हुआ है। फिर भी मनुष्यके साथ बन्दरके बाह्यवैषम्य कुछ होने पर दोनोंके अन्तर्जगत्में, दोनोंके मानसक्षेत्रमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिंह या शार्दूलका पदचिह्न तक दिखाई नहीं देता। फिर उसके बादके भूस्तरमें विशालकाय सांपका विशाल शरीर सुरक्षित है; किन्तु दश हजार वर्षके बाद भूपृष्ठ पर मनुष्यशिशु भूमिष्ठ नहीं हुआ; भूतत्त्व इसका प्रमाण दिखा रहा है। जीवसृष्टिके क्रमविकाशकी पर्यालोचना करनेसे स्पष्ट मालूम होता है,—इसमें एक शृङ्खलाबद्ध पद्धति है।

एगासिज् (Agassiz)-ने प्राणीतत्त्वकी पर्यालोचनाके सम्बन्धमें कहा है,—विभिन्न जातिकी जीवसृष्टिके विषयमें विधाताका विचित्र विधान विज्ञानवादियोंकी बाह्य परीक्षासे बहुत दूर है। सारी जातियोंके इतिहासका अनुशीलन न करनेसे मनुष्यसृष्टिका क्रम हृदयङ्गम करना बहुत कठिन है। सृष्टितत्त्व देखो।

इस विषयमें दार्शनिकतत्त्व परस्पर विरोधी हैं। पाश्चात्य मानवतत्त्व शास्त्र गभीर गवेषणा द्वारा मनुष्यके निकटतम पूर्वपुरुषके अनुसन्धानमें अभी तक कृतकार्य हो नहीं सका है। इसलिये इन दोनों पक्षोंकी युक्तियोंकी आलोचना धीरतासे करना ही श्रेयस्कर है।

पण्डित टेलर (E. B. Tylor)ने अपने मनुष्य-इतिहास-वाले लेखमें प्रारम्भिक उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुत कुछ कहा है। इस पर मनन करनेकी आवश्यकता है। उनका कहना है, कि क्रमविकाशवादमें अन्धपरमाणुओंका आकर्षण और विप्रकर्षणके सिवाय सृष्टिका अन्य कोई प्रवर्त्तक कारण निर्दिष्ट नहीं हुआ है। इससे मालूम होता है, कि सृष्टिप्रवाहके अनादित्व स्वीकार न करनेसे पाश्चात्य क्रमविकाशवादको आकस्मिक सृष्टिवाद अथवा अन्धकारणवाद कहना होगा। मनीषी-सम्पन्न पाश्चात्य बुधगण अभिव्यक्त यानी स्थूलरूपसे प्रकटित जीवजगत्के साम्य और वैषम्यको ले कर जैसे व्यग्र हैं, वैसे मूलकारणके खोजनेमें तत्पर नहीं।

सृष्टिवादी और क्रमाभिव्यक्तिवादी—दोनों दल अवमुक्त कण्ठसे स्वीकार करते हैं, कि पृथ्वीके सर्व जातीय जीवोंका एक साथ आविर्भाव नहीं हुआ है। क्योंकि भूतत्त्वविद् पण्डितोंके अव्यर्थ प्रमाणोंसे इस विषयका निपटारा हो चुका है। इस समय दोनों पक्ष जीवजगत्की क्रमोन्नति और क्रमविकाशकी पर्यालोचना कर न्यूनाधिक रूपमें कहते हैं—एक जातीय जीवके साथ दूसरे जातीय जीवोंके बहुत करके सौसादृश्य होने पर भी वह जातीय जीव साक्षात् सम्पर्कमें अन्य वंशोद्भव नहीं। बन्दरसे मनुष्यका या मत्स्यसे सांपका साक्षात् जन्म नहीं हुआ है। इसलिये स्तन्यपायी जीववर्ग मनुष्य जातिका पूर्व वंश हो सकता है पर पूर्व पुरुष नहीं।

डारविन और हेलमहोलज (Helmholtz) आदि क्रमविकाश-वादियोंका कहना है, कि सृष्टिप्रक्रिया ईश्वरके संकल्प और चैतन्यकी परवाह नहीं करती। अचेतन प्रकृतिके अन्धनियमोंमें अकस्मात् हुआ करता है। सृष्टिवादियोंका कहना है, कि जब प्रत्येक पत्तेके वृक्षसे गिरनेमें भी जब विधाताके नियमोंका व्यभिचार दिखाई नहीं देता, तब चेतनके अनधिष्ठित अचेतन द्वारा स्वतन्त्ररूपसे सृष्टि नहीं हो सकती। प्रकृतिकी कोई एक अनिर्वचनीय शक्तिमत्ता स्वीकार न करनेसे प्रकृतित्व सिद्ध नहीं होता। चैतन्यनिरपेक्ष नैसर्गिक नियमोंकी अन्धचेष्टा या क्रिया द्वारा जीवके शरीर-यन्त्र-समूहका यथायोग्य संविधान नहीं हो सकता। पण्डित वील (Beal)-ने यथार्थ ही कहा है, कि डारविन या हेमहोलके सहस्रों यत्न करने पर भी मनुष्यकी आदि उत्पत्तिके स्थिर सिद्धान्तका पता नहीं लगा सकते।

जीवजातिः निर्दिष्ट पैतृकता। (hereditary varieties)

पिता माताका स्वभाव तथा गुण सन्तानमें कितना मौजूद रहता है, इसीका निर्णय करना मानवतत्त्वका उद्देश्य है। पूर्वपुरुषकी गुणावली—सन्तानमें संक्रामित होती यानी आता है, इसका दृष्टान्त तिर्य्यग् जातिमें कम नहीं। कितने ही मनुष्योंके शारीरिक तथा कितनेके मानसिकधर्म पितृधर्ममें विद्यमान रहते हैं। इनमें जाति विभागका पहला धर्म त्वचका रूप है।

जाति-चिह्नोंमें वर्णका विशेषत्व पहले दिखाई देता है। प्राचीन मिस्रकी विविध जातियोंके जो चित्र मौजूद हैं हजारों वर्षके बाद भी उनकी अपेक्षा किसी भी जातिके वर्णकी विभिन्नता अधिक नहीं हुई है। सबकी अपेक्षा सुन्दर स्वीडेन वासियोंसे हटेन्टट तक या पाटल वर्ण मेस्किकों वासियोंसे पश्चिम अफ्रिकाके काले काफ्रि (हब्शी) तक सारे वर्णकी जातियोंका वर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैचित्र ब्रोका (Broca) के जातिचित्रमें दिखाई देता है। यह देख विभिन्न जातियोंके वर्णचित्रकी अच्छी तरह परीक्षा की जा सकती है।

२ केशका गठन—केशके वर्णकी अपेक्षा गठन-प्रणाली और साज बहुत अंशमें जातिकी विभिन्नता प्रदर्शित करती है। अनुवीक्षण यन्त्र द्वारा केशके कटे हुए भागकी परीक्षा करने पर इस विषयका सुस्पष्ट प्रमाण मिलता है।

३ अवयव और अङ्गसौष्ठव—गठनप्रणाली और अङ्ग-सौष्ठव जातिचिह्नका एक प्रधान अङ्ग है। किन्तु अवयव-संस्थानका कोई सार्वभौमिक नियम नहीं।

४ कपालकी आकृति या मस्तकका गठन जाति-विभागका चतुर्थाङ्ग है। वर्ण वैचित्रके नीचे ही कपालके गठनको स्थान देना उचित है। कपालके सूक्ष्मतत्त्वके निर्द्धारणमें बहुतेरे शारीरतत्त्वज्ञ पाश्चात्य पण्डितोंने पूरी चेष्टा की थी। उनमें ब्लूमेनबाक (Blumenbach), रेजियस् (Regius), भन्‌ब्यार (Von Bear), वेलकर (Welker) डेविस् (Davis), ब्रोका (Broka), वास्क (Busk), लुके (Lucae) आदि मनुष्योंका नाम उल्लेखयोग्य है। इसी तरह अष्ट्रेलिया-वासियों तथा हब्‌शियोंकी सुच्यग्र-चिबुकास्थि, यूरोपियोंके चिबुककी अपेक्षा विशेषरूपसे विभक्त है। कपालविद् पण्डितोंने कपाल तन्त्रके विषयमें बहुतेरे अविष्कार किया है। प्राच्य हिन्दू-शास्त्रोंमें भी कपाल-गठनके तारतम्यके निर्द्धारणमें ५२ प्रकारके उपाय निर्दिष्ट हैं।

५ मुखाकृति—मनुष्योंके समस्त शरीर विच्छिन्न करने पर भी एकमात्र मुखावयव देख कर जाति विचार किया जा सकता है। मुखाकृतिके साधर्म्य और वैधर्म्य-को देख कर मनुष्यकी जातिका निर्णय सहज ही हो सकता है। उनमें नासिकाका गठन और गालका स्थान-ओष्ठाधरकी आकृति और नेत्र गठन पर ही विशेष ध्यान देना चाहिये। मुखका पार्थक्य ही जातीय चिह्नका प्रधान उपादान है।

६ धातुवैचित्र्य या प्रकृति —(Constitution) और चरित्र—मनुष्यजीवनका जीवन-वृत्त जलवायुके प्रभावसे और देशके प्रभावसे बहुत अंशोंमें परिवर्त्तित हुआ करता है। देशभेदसे शरीर-सामर्थ्य का भी न्यूनाधिक होता रहता है। किसी जातिका नाश हो रहा है, तो कोई जाति अपना विस्तार कर रही है। देशकी प्राकृतिक या नैसर्गिक नियमोंके साथ उस देशकी जातिका सामञ्जस्य या सङ्गति न रहनेसे वे जातियां शीघ्र ही विलुप्त हो जाती हैं। इसी तरह पृथ्वीकी अतीत जातियां विलुप्तप्राय हो गई हैं। कोई जाति उद्यमशील है, कोई क्रोधशील, फिर कोई लज्जाशील, कोई समाजप्रिय, कोई जाति-निर्जनताप्रिय हैं—इत्यादि जातीयवैचित्र्य जातिविशेषके तारतम्य निर्द्धारणके लिये उपाय बतानेवाले हैं। सिवा इसके जातीय चरित्रके चिह्नका अवलम्बन ले कर जाति-का निरूपण होता है। विविध जातियोंका संघर्ष कभी कभी विजित जातियोंके अनिष्टका कारण बन जाता है।

जातिविभागका साधारण नियम।

सभी जातियोंमें ही कुछ न कुछ विशेषत्व रहता है। वही देख कर उनके अवान्तरके भेदका निर्णय किया जा सकता है। आकृति या प्रकृतिगत वैषम्य ही जाति-निर्णयका मूलसूत्र है।

क्वेटिलेट (Quetelete) साहबने जातिके संज्ञानिर्देश करनेमें विज्ञानसे काम लिया है। उन्होंने प्रत्येक जाति-में उच्चताका निरूपण कर उसीको उस जातिकी उच्चताका आदर्श बताया है। उन्होंने सिवा इसके अन्य किसी विशेष गुणका अवलम्बन अर्थात् आकृति, वर्ण, भार आदिको भी आदर्श बतलाया है।

जातिकी सङ्करता।

विविध जातियोंको मिलावटसे बे-हिसाब सङ्कर जातिकी उत्पत्ति हो रही है। दो भिन्न भिन्न जातियों-की मिलावटसे कितनी तरहकी सङ्करता होती है, उसके निर्णय करनेमें हाक्‌सिली साहबने बहुत प्रयत्न किया है। केवल प्रयत्न ही नहीं, वरं उन्होंने सफलता भी पाई है। उनका कहना है, कि हटेण्टेट जाति मूलजाति नहीं है। बुशमेन और निग्रो जाति (हबशी)-की मिलावटसे यह सङ्कर जाति और दक्षिण यूरोपवासी मिश्रवर्णके (गोरे और कालेकी मिलावटसे उत्पन्न वर्ण) लोग सभी गोरे, उत्तर यूरोपवासी और दक्षिण-एशियाखण्डवासी जातियों-के सम्मेलनसे उत्पन्न हैं।

इस मानवतत्त्वशास्त्रका मूल उद्देश्य है, कि वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस बातका निर्द्धारण करे, कि किस तरह मूल जातिसे विविध जातियोंकी उत्पत्ति हुई। गत कई वर्षोंसे इस विषय पर बड़े बड़े मानवतत्त्वज्ञ पण्डितोंमें वादविवाद चल रहा है। इन पण्डितोंमें दो सम्प्रदाय हैं, एक संप्रदाय स्वजातिका पक्षपाती और दूसरा बहुजातिका पक्षपाती है। प्रथम पक्षका कहना है, केवल एक मानवदम्पत्तिसे ही इस मानववंशकी उत्पत्ति है। दूसरा पक्ष कहता है, विविध मानवदम्पत्तिसे ही इस विशाल मानववंशकी सृष्टि हुई है। खष्टानधर्मावलम्बियोंमें कुछ लोगोंने बाइबिलका आश्रय लिया है। किन्तु प्रत्यक्षवादी वैज्ञानिकोंने बाइबिलको ताक पर रख वैज्ञानिकतत्त्वोंकी अवतारणा की है।

पहले अरिष्टटल आदि यूरोपीय पण्डितोंकी जाति-वैचित्र्यके सम्बन्धमें ऐसी धारणा थी, "एकमात्र मानव-दम्पतीसे ही इस सभी जातियोंकी सृष्टि हुई है। एकके साथ दूसरेकी विषमता होनेका कारण प्रकृतिका परिवर्त्तन है। देशभेदसे और जलवायुके प्रभावसे या वैचित्र्यसे ही जातिवैचित्र्य हुआ करता है। इथियोपिय-वासी सममण्डलकी प्रखर-सूर्य्य किरणोंके कारण काले हो जाते हैं और मेरुदेशके अधिवासी शीताधिक्य तथा सूर्यकी धीमी किरणोंके कारण श्वेत या सादे हो जाते हैं। कहीं भी इसका व्यतिक्रम नहीं दिखाई देता। वर्त्तमान समयके प्रसिद्ध जोतिर्विद् पण्डितको कोयटर फेजेस (M. de. Quatrefages)ने एक जातिवादके पक्षमें बहुतेरी अनुकूल युक्तियोंका दिग्दर्शन किया है। वास-स्थान तथा जलवायुके प्रभावसे ही जातीय भावका परिवर्त्तन होता है। यह बात सभी स्वीकार करते हैं। पहाड़ी जातियों और समतलक्षेत्रकी रहनेवाली जातियों-की प्रकृतिकी पर्य्यालोचना करने पर इस विषयकी सत्यता निर्द्धारित होती है।

किन्तु आधुनिक वैज्ञानिकोंमें बहुजातिवादके पक्षमें ही वादानुवाद चला आ रहा है। कुछ लोग अभिव्यक्ति-वादके साहाय्यसे जातिवैचित्र्यका कारण दिखाते हैं। डारविनने कहा है,—एक जातीय मनुष्योंके साथ अन्य जाति-मनुष्योंका बहुत बाह्यवैषम्य और परस्पर शारीर-यन्त्रका घनिष्ठ सादृश्य है। वालेस (A. R. Wallace) साहब अभिव्यक्तिकी दृढ़ भीत पर एक जातिवादकी युक्ति दिखा कर कहते हैं—अत्यन्त प्राचीनकालमें एक जाति हीसे विविध जातियोंकी उत्पत्ति हुई। जिस युगमें निग्रो (हब्शियों)-के पिता तथा श्वेताङ्गोंके पिता—दोनों सहोदर थे उस युगमें वे लोग प्राकृतिक विप्लवके साथ संग्राम करनेमें समर्थ नहीं थे। प्राकृतिक अत्याचारसे आत्मरक्षा करनेकी शक्ति उनमें परिस्फुट नहीं हुई थी। इसीलिये जलवायु और वायुशक्तिका उन पर इतना अधिक प्रभाव था। वर्त्तमान समयमें मानवने शिक्षा और सभ्यताका उत्कर्ष संस्थापन की प्रकृतिके साथ प्रतिद्वन्द्वितासे जयलाभ करना आरम्भ किया है। अत-एव प्रकृतिकी शक्ति मनुष्योंका परिवर्त्तन करनेमें उतनी कार्य्यकारिणी नहीं। इसीलिये गोरे वर्षों तक निग्रो या हबशियोंके देशमें रहने पर भी उनके साजात्यको प्राप्त नहीं कर सके। जिस युगमें नंगे मनुष्य ग्रीष्मकालके प्रखर उत्तापमें इधरसे उधर जङ्गलमें घूमा करते थे, वर्षाके मुसलधाराको पार करते थे, उस समय 'शीतपथ' मनुष्यजाति पर प्रकृतिने अपना प्रभुत्व विस्तार किया था। किन्तु जिन मनुष्योंने सभ्यताके प्रारम्भमें अपनी रक्षा करना सीख लिया, पशु चर्म और वल्कलसे अपने शरीरको ढांक लेना सीखा, पर्णकुटि बना कर समाज शृङ्खलाका सूत्रपात किया उस समय-से प्रकृतिका आधिपत्य कम होने लगा।

आजकलके समयके शिक्षाप्रभावसे जो सभ्यता-गर्वित मानवजातिने चंचला चपलाका चाञ्चल्य दूर कर अञ्चलबद्धा नम्र-सहचरियोंकी तरह पंखा चलानेमें नियुक्त किया है एवं उसीकी रूपप्रभासे राजपथ और बड़ी बड़ी अट्टालिकायें प्रकाशित कर रही है, इन्द्रके अव्यर्थ वज्रदातको जिन मनुष्योंके सामने लक्ष्य-भ्रष्ट होना पड़ता है, उस सुसभ्य मानव पर क्या प्रकृति अब अस्त्र चलायेंगी? इस विषयोंमें जरा सन्देह नहीं, कि शीघ्र ही उसको रहस्यमय दुर्ग पर मनुष्यका अधिकार होगा। इसलिये वालेस साहबने कहा है, कि प्रकृतिको जो करना था, उसने वही किया। अब उसका प्रभुत्व नहीं चलेगा। इस समय मनुष्य प्रकृति-के साथ युद्ध करनेमें समर्थ है। वालेसकी युक्तिने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परम्परासे ही एक जातिवादको दृढ़ भीति पर स्थापित किया है।

मनुष्यका प्रत्नतत्त्व।

कुछ समय पहले शिक्षित समाजका विश्वास था, कि मनुष्यजातिका धारावाहिक रूप इतिहास मिल सक्ता है। क्योंकि, इङ्गलेण्डके प्रधान बिशप आसार (Usher) ने गिन कर देखा था, कि ४००४ ईसाके पहले पृथ्वी और मनुष्यकी एक साथ सृष्टि हुई है। सब साधारणका यही विश्वास था। जो हो, वे सब विश्वास इस समय कल्पनाके ताक पर आराम कर रहे हैं। भूतत्त्वके प्रामाणिक सिद्धान्तसे वैज्ञानिक कह रहे हैं—इसकी गणना नहीं की जा सकती, कि मनुष्य और पृथ्वीकी सृष्टि कब हुई है। पृथ्वीके सबसे छोटे मानव शिशुकी उम्रको गिन कर भी वे उम्रकी हालतको कुछ नहीं जान सके हैं। डरते हुए अनुमानका आश्रय ले कर वे कहते हैं, कि मनुष्यजातिकी उम्र लाख हजारसे भी अधिक है।

प्रत्नतत्त्वविद् पण्डितोंने प्रागैतिहासिक युगके प्रत्नतत्त्वकी खोज कर इस विषयके मौलिकत्वका निर्देश किया है।

गत आधी शताब्दीसे भूतत्त्वविद्याकी उन्नतिसे मनुष्यका इतिहास बहुत कुछ परिस्फुट हुआ है। भूतलके जिस भागमें प्रस्तरवत् हाथी, गैंड़े, भालू आदि जीवोंकी हड्डियां या ठठरियां मिली हैं, उसी भागमें मनुष्योंकी अस्थि, मनुष्योंकी ठठरियां, मनुष्योंके बनाये प्रस्तरके हथियार आदि अन्य चीजें भी दिखाई देती हैं। इससे स्पष्ट ही अनुमान किया जाता है, कि जो स्तन्यपायी जीव धरणीकी पीठसे अदृश्य हुए हैं मनुष्य उस समय भी मौजूद था। डाक्टर स्मैर्लिङ्ग (Dr. Schmerling)-का कहना है, कि अति प्राचीनकालमें पृथ्वी पर जहां गुहाभालू (Cave-bear) विचरण करते थे, वहां मनुष्य भी थे। क्योंकि उनकी ठठरियोंके पास ही मनुष्यकी ठठरियां भी पाई जाती हैं। सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी प्रत्नतत्त्वविद् बूचर (Boucher de Perthes), रिगालों (Rigollot), फकनार (Falconer), प्रेष्टविच एवं इमनस आदि भूतत्त्वज्ञ पण्डितोंने सन् १८५० ई०से १८६० ई०के बीच बहुत गवेषणा तथा परीक्षा द्वारा स्थिर किया है, कि डाक्टर स्मारलिङ्गकी बात ठीक है। उन लोगोंने भी दिखलाया था, कि मनुष्य Quaternary या Drift युगमें पत्थरके बने कुठारका व्यवहार होता था। विशालकाय हाथीके शरीरकी ठठरियोंकी बगलमें मनुष्यका प्रस्तरास्त्र मौजूद है। मिष्टर गोडविन् अष्टेन (Mr. Godwin Austin)ने बहुत परीक्षाके बाद यह प्रमाणित करते हुए कहा है—जब प्रस्तरीभूत भिन्न भिन्न प्राथमिक जीवोंकी ठठरियां अधिकतासे भूतलमें विद्यमान हैं, तब यह निश्चय है, कि मनुष्यकी ठठरियां भी वहां ही मिलेंगी। इसके बाद इङ्गलैण्डके केण्ट प्रदेशकी गुहा और मध्य-फ्रान्सके किसी किसी स्थानको खोद कर भूतत्त्वविद् पण्डितोंने देखा, कि बारहसिंघेकी ठठरियोंके बाद मामथ जातीय हाथीकी ठठरी मौजूद है। उस समय मनुष्य एस्कुइमो जातिके अनुरूप आचार व्यवहार करते थे। हाथी दांतकी नक्काशीके बहुतेरे नमूने मिले हैं। इससे मालूम होता है, कि उस समयके मनुष्य भास्करविद्याके रसास्वादन करनेमें समर्थ थे।

मनुष्यके सम्बन्धमें इससे पहले और कोई तत्त्व नहीं पाया गया है। फिर यह निःसन्देह स्थिर है, कि जिस युगमें विशालकाय हाथी भूपृष्ठ पर विचरण करता, बारहसिंघे तुषारक्षेत्रमें दौड़ा सा फिरता था, उस अन्यतम शैलयुगमें मनुष्य प्रस्तरास्त्र द्वारा शिकार करते थे। चित्तविनोदके लिये हाथी दांत पर नाना प्रकारके चित्र खोदे जाते थे। इस विषयमें सर सी० लायल (Sir C, Lyell's Antiqui y of man) प्रणीत मनुष्यके प्रत्नतत्त्व और सर जान लावक (Sir John Lubbock's Prehistoric Times) प्रणीत प्रागैतिहासिक कालनामकी दोनों पुस्तकोंमें विस्तार रूप वर्णित है।

Quaternary युगके मनुष्यजातिका प्रत्नतत्त्व।

इस समयके भूतत्त्वविद् पण्डितोंने Quaternary युग तक मनुष्यका स्थितिकाल निर्णय किया है। जिस युगमें गण्डशैलसंकुला सब तुषारमयी प्रवाहिणी प्रकाण्ड प्रकाण्ड प्रस्तरखण्डको बहाती हुई दिग्दिगन्तमें प्रवाहित होती थी उसके और पहलेकी अस्तरमें मानव पदका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिह्न दिखाई नहीं देता। सामान्यतः यह निर्द्धारित हुआ, कि अबसे दश हजार वर्ष पहलेका वह युग है। उस युग पर इतिहास अपना प्रकाश नहीं डाल सकता। अनुमानिक क्षीण प्रकाशसे उस अप्रत्यक्ष विवरणका निरूपण हुआ। इसके बाद मनुष्योंके व्यवहृत भूगर्भ-निहित वस्तुओंका अस्तित्व सूक्ष्मरूपसे निर्णय किया जा सकता है। इसके बाद प्राचीन शैलयुगमें (Paloc-olithic) चिक्कन पत्थरका अस्त्र अब दिखाई नहीं देता। इसके बाद नये शैलयुगमें (Neolithic) चिक्कन और विविध कारुकार्यसम्पन्न प्रस्तरास्त्र (पत्थरका अस्त्र) दिखाई दिया है।

उसके बादका समय अर्थात् प्राथमिक लौहयुग (Bronze Iron Age) से यूरोप ऐतिहासिककाल आरंभ होता है। मनुष्यके पत्थरका अस्त्र जो भूतलमें विद्यमान है उस Quaternary युगके जीवोंमें अनेक स्तन्यपायी जीवकी ही प्रस्तरवत् ठठरी दिखाई देती है। उनमें अनेक जाति ही पृथ्वीमें अन्तर्हित हो गई है। मामथ या विशाल-काय हाथी, घनीभूत केशविशिष्ट गैंड़ा एवं आयरलैण्ड देशीय एल्क (Irish elk) और दिखाई नहीं देता। कस्तूरी देनेवाला हिरन और बारहसिंघे किसी किसी दूरवर्त्ती स्थानोंमें पाये जाते हैं। इससे अनुमान होता है, कि उस समय फ्रान्सदेशमें बहुत कठोर जलवायु था। पत्थरका अस्त्र धारण करनेवाले मनुष्योंसे ऐतिहासिक युगके प्रारम्भ तक जो समय बीत गया है, फ्रान्स-इति-हासका दो हजार वर्ष उसकी तुलनामें अत्यन्त सामान्य भग्नांश प्रतीत होता है।

इसके सिवाय नदियां पूर्व खात और उपत्यका समूहके भौगोलिक संस्थान द्वारा निर्णीत हुआ है, कि वर्त्तमान नदीवक्षसे उस समयका नदीवक्ष दो सौ फीट ऊंचा था।

मनुष्योंकी बनाई ईंटोंके चिह्न।

मिष्टर हरनर (Mr. Horner) ने नोलनदके तीर-वर्त्ती भूभागोंको खोद कर ६० फीट गहरे भूस्तरमें ईंटों और अन्यान्य जली हुई ठठरियोंको पाया है। उससे अनु-मान होता है, कि नोलनदका पूर्व खाद ६० फीट मट्टीके नीचे प्रोथित है अति प्राचीन कालमें भी उस देशके अधिवासी मनुष्य ईंटका व्यवहार करते थे। भू-तत्त्वविद् पंडितोंका कहना है, कि बहु शताब्दीमें भूभाग पर केवल कई इञ्च मिट्टी जमती जाती है। अतएव इससे मालूम होता है, कि नोलनदके तटीय भूमि पर ६० फीट मट्टी जमनेमें बहु शताब्दी बीत गई है। अध्यापक मर्लो (Mr. Morlot)ने जनेवा झीलके निकटकी भूमिको खोद कर परीक्षा द्वारा स्पष्ट प्रमाणित किया है, कि १,५०० वर्षमें भूमि पर ४ फीटसे ज्यादा मिट्टी नहीं जमती। गणना करनेसे मालूम होता है, कि बहुत प्राचीनकालसे नोलनदके किनारे मनुष्यकी प्राथमिक सभ्यताका विकाश हुआ था।

प्रत्येक देशमें भूभागोंको खोद कर परीक्षा करनेसे उस देशके प्राचीन विवरणको जान सकते हैं। कलकत्तेके किलामैदानमें एक कुंआ खोदते समय ३०० फीट गहरी मिट्टीसे मनुष्य द्वारा व्यवहृत वस्तुसमूह और बड़े बड़े सुन्दरी वृक्ष मूलके साथ मिले थे। इससे स्पष्ट मालूम होता है, कि आज जहां सहस्र सहस्र विचित्र शोभ-मालिनी चित्त चमत्कारिणी वस्तुओंसे परिपूर्ण यह कलकत्ता महानगरी विद्यमान है उसी स्थानके ३०० फीट नीचे पहले कलकत्तेकी स्तरावली भूगर्भमें विद्यमान हैं। बंगालके गांगेय डेल्टा-भूतत्त्वविद् पंडितोंके लिये हालका होने पर भी यह निश्चय है, कि बहुत सहस्र वर्ष पहले उसकी उत्पत्ति हुई है।

ऐतिहासिक प्रत्नतत्त्व।

पहले जिन विषयोंका वर्णन हुआ है वह भूतत्त्व विद्या अध्ययन करनेसे समझमें आ सकता है। किन्तु मनुष्यके लिखे इतिहासमें भी ईसाके ३००० वर्ष पूर्वसे शृङ्खलाबद्ध विवरण प्रकाशित हुआ है। मिस्रका पिरा-मिड वा प्रस्तरस्तूप-संबंधी विवरणसे वहांके प्राचीन तत्त्वोंको जान सकते हैं।

प्राचीन काल्दीय राज्यके इतिहास और रलिन्सन (Rawlinson) साहबके लिखे "प्राच्य जगत्का प्राचीन पंच साम्राज्य" नामक ग्रन्थके पढ़नेसे मालूम होता है, कि ईसाके ३००० वर्ष पहले काल्दीय और मिस्र राज्यकी जातीय सभ्यताका विकाश हुआ था। सर जान डेविस् (Sir John Davis)के रचे चीनदेशका विवरण पढ़नेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालूम होता है, कि वहाँ खृष्टके जन्मसे २००० वर्ष पहले वहांके राजवंश सिंहासन पर बैठ कर राज्य करते थे। भारतवर्षके विज्ञानका अनंत भाण्डार और पृथ्वीका प्राचीनतम साहित्य वेदकी पर्यालोचना करने पर प्रत्नोत्य बुद्धमण्डलीने भयभीत हो कर आशंकित कंठसे कहा है, कि ईसाके ४,५ हजार वर्ष पहले इस वेदकी रचना हुई थी। भारतवर्षकी भूस्तरावली अच्छी तरहसे जांचो नहीं गई है। केवल प्रत्नतत्त्वका साहाय्य ले कर प्रत्नतत्त्व विद् पंडित कुछ अनुमान करते हैं। फिर भी भारतीय भूतत्त्व नामक पुस्तक पढ़नेसे मालूम होता है, कि बहुत प्राचीन समयमें भारतवर्षकी उत्पत्ति हुई होगी। उन्होंने कहा है, कि विन्ध्य पर्वत या विंध्याचल पर्वत एक प्राचीनतम ज्वालामुखी पर्वत है। जिस दिन सजीव ज्वालामुखी विंध्याचल अग्निहीन हुआ, जिस दिन यौवनके उद्दाम उच्छृङ्खलता दंडस्वरूप इन्द्र द्वारा उसका पक्ष लूट लिया गया, जिस दिन निस्तेज दुबला पतला विन्ध्यागिरि अगस्तके पद पर झुका उस दिनका इतिहास २० हजार वर्ष पहलेका है। इधर उधर फैले दाक्षिणात्यके शैलखण्डोंकी परीक्षा करनेसे देखा जाता है, कि वे विन्ध्याचलके ही फैले हुए हैं। इसलिए कितने वर्ष पूर्व भारतके पूर्वाकाशमें सभ्यताका प्रथम विकाश हुआ था यह कौन कह सकता है?

भाषा और शिक्षाका प्रथम विकाश।

प्रतीच्य बुद्धमण्डलीका कहना है—"प्राचीन शैलयुगसे ही मानवसमाजमें सभ्यताका सूत्रपात हुआ। प्राचीन मिस्र, बाबिलन और चीनका इतिहास पढ़ कर उन्होंने उक्त सिद्धान्तके परीक्षित और सत्य होनेकी घोषणा की है। भाषाविज्ञानविद् पण्डित पृथ्वीकी प्राचीनतम भाषाओंकी परीक्षा कर कह रहे हैं, कि हिब्रूके साथ अरबी भाषाका बहुत ही सादृश्य और सामीप्य है। इससे अनुमान किया जाता है, कि ये दोनों भाषायें एक पिताकी दो सहोदरा हैं। कालके वशीभूत हो कर पितृ भाषा अन्तर्हित हुई है। वही लुप्त भाषा उस समयके लोगोंकी मातृभाषा थी। उन्होंने उस प्राचीन भाषाके अधिकांश सादृश्य और उच्चारणकी समताको देख निरूपण किया है, कि सारी भाषायें ही एक विलुप्त साधारण पितृभाषाकी पुत्रियां हैं। उपरोक्त सिद्धान्तों पर मानवतत्त्वविद् पण्डित कहते हैं, कि इतिहासका सीमाबद्ध विवरण भाषासृष्टिके प्रथम समयमें संघटित हुआ है। उससे पहलेके इतिहासमें जिसका जानना कठिन है, जो घटनायें हुई थीं, भूतसाक्षी इतिहास उस विषयमें निरुत्तर हो जाता है। किस तरह पशुपक्षीके आकारसे सांकेतिक चिह्न अवलम्बन कर भाषाकी सृष्टि हुई, उसका विवरण वाग्विज्ञान और वर्णमाला शब्दमें लिखा है।

भाषाविज्ञान।

भाषाविज्ञानके जाननेवाले पण्डितोंका कहना है, कि बहुत प्राचीनकालमें सब जातिकी ही वाक्यकथनप्रणाली एक तरहकी थी। पीछे देशभेदसे जब जातिवैचित्र्यकी सृष्टि हुई, तबसे ही उच्चारणका वैषम्य उपस्थित हो जातीय चरित्रके अनुरूप भावसे भाषाकी विभिन्नता होती रही। व्याकरण और अभिधान (डिक्सनरी) की रचनाप्रणाली अवलम्बन कर भाषा विज्ञानविद् पंडितोंने मानवतत्त्वके विषयमें बहुतेरे अभिनव विवरण लिखा है। भाषाविज्ञानके सूत्रपातसे ही सभ्यताका इतिहास आरम्भ हुआ है।

मूक व्यक्ति जैसे सङ्केत द्वारा मनका भाव प्रकाश करते, वैसे ही मानव जातिकी पहली अवस्थामें सङ्केत और विभिन्न चिह्नों द्वारा अभिप्राय जनाते थे। पीछे भाषाकी सृष्टि हुई। प्रत्येक जातिके इतिहासकी आलोचना करने पर यह मालूम होता है, कि सङ्केत ही भाषाकी पहली सोढ़ी है। मनका आवेग, दुःख, विस्मय और क्रोध प्रकाश करनेवाली भाषा प्रायः सभी जातियोंकी एक ही तरह है।

केवल गत अर्द्ध शताब्दीसे ही भाषाविज्ञान या वाग्विज्ञान (Philology)की सृष्टि हुई है। इस अल्प समयमें उक्त शास्त्र पृथ्वीकी विभिन्न भाषाओंकी वंशपरम्परा और उत्पत्ति तथा परिपुष्टि आदिके निर्णय करनेमें समर्थ हुआ है।

किसी किसी सम्प्रदायके भाषा-विज्ञानविदोंका कहना है, कि संस्कृत या अरबी, चीन या पेरुभियान किसी समयमें भी एक भाषासे उत्पन्न नहीं हुई है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भिन्न भिन्न निरपेक्ष-भाषासे उत्पन्न हुई है। दोनों मतोंमें वादानुवाद चल रहा है। अभी तक कुछ भी निवटेरा नहीं हुआ।

भाषा और सभ्यता।

भाषाका प्राधान्य जातीय चरित्र किस तरह परिवर्त्तित हुआ, वह चिन्ताशील मानवतत्वविद् पण्डित स्थिर कर गये हैं। जिन सब राजनैतिक कारणोंसे जातीय चरित्र परिवर्त्तन होता है उसका भाषा ही प्रधान अस्त्र है। क्योंकि भाषामें ही चिन्ताराशि विद्यमान है। भाषाके अध्ययनके समय वह सब भावराशि जातीय चरित्रमें प्रवेश कर विशेष परिवर्त्तन उपस्थित करती है। इसके भूरि-भूरि दृष्टान्त मौजद हैं। जब लेटिन भाषाने यूरोपमें अपना प्रभाव विस्तर किया था, तब सारा यूरोप इटालीके भावसे भर गया था। जब एक जाति दूसरी जातिका भाव ग्रहण करने लगती है, तब उसके साथ साथ अपने भाव प्रकाश करनेवाले वाक्योंको अपनी अपनी भाषामें समेट लेती है। जब फारसी जातिका सौभाग्यसूर्य मध्य गगनमें विद्यमान था, तब उनकी विजयपताका हिन्दुस्थानसे एटलाण्टिकके किनारे तक फहरा रही थी। तब सभी भाषा आदरके साथ फारसी भाषासे शब्द संग्रह करनेमें बकी हुई थी। वङ्ग भाषाके शैशव शरीरमें फारसी भाषाकी लिखावट आज भी मौजद है और जातीय चरित्र पर यावनिक भावका आक्रमण नहीं हुआ है, यह कौन कह सकता है?

दाक्षिणात्यकी द्राविड़ी भाषा संस्कृत भाषाकी शब्द-सम्पत्तिसे समलंकृत हुई। इसीलिये तामील भाषामें इस समय संस्कृतका बहुत भाव घुस गया है। इस समय अङ्गरेजी भाषाके अनुशीलन प्रादुर्भावसे भाषामें, साहित्यमें, समाजमें, जाति और चरित्रमें जो सब पाश्चात्य भाव घुस गये हैं, मानवतत्त्वज्ञ चिन्ताशील व्यक्तियोंका वह चिन्ता करनेका विषय है। केवल भारतीय ही क्यों, सारे अङ्गरेजी साम्राज्यमें इस तरहके विजातीय भाव और भाषाके संघर्षसे बङ्गाली आदि जातियां जातीय चरित्रमें जो भाव विस्तार कर रही हैं, भाषा शिक्षा ही उसका मूल कारण है। फिर जर्मन आदि सुशिक्षित पाश्चात्य जाति संस्कृतालोचनमें बद्धपरिकर हो कर जातीय अभिधानमें बहुतेरे संस्कृत शब्द ले रहे हैं। कुछ प्राचीन ऋषियोंके द्वारा उद्भावित चिन्तापद्धतिका अनुसरण कर वे दार्शनिक तत्वोंमें बहुत अंशोंमें हिन्दूभावापन्न हो रहे हैं। उनका भविष्य चरित्र किस प्रकार गठित होगा, कौन कह सकता है? ज्ञानके उज्ज्वलालोकसे आर्यऋषि द्वारा प्रवर्त्तित चिन्तामार्ग तथा हिन्दू दर्शनके अवलम्बित पथको ही यदि सभ्यतागर्वित पाश्चात्य जातिके निकट यथार्थ समझा जाय, तो प्रतीच्य विद्वत्समाज प्राच्य भावके प्रभावको अतिक्रम नहीं कर सकते। भाषाशिक्षासे जातीय चरित्रमें कितना परिवर्त्तन होता है वह पाठकोंसे छिपा नहीं है।

सभ्यताका विकाश और परिपुष्टि।

असभ्यावस्थामें मनुष्य जिस दिन प्रकृतिके अत्याचारसे आत्मरक्षा करनेके लिये गिरिगह्वर और वृक्षकोटरमें छिप रहते थे उस दिनसे सभ्यतालोकित २०वीं शताब्दीके मनुष्योंके अतुल ऐश्वर्यकी पर्यालोचना करनेसे विस्मित होना पड़ता है। अंगरेज जातिका इतिहास अक्षर अक्षरमें इस वाक्यकी पोषकता भी प्रमाणित करता है। जो दो हजार वर्ष पहले रोमके शृङ्खलाबद्ध दास थे आज वे अधिकांश स्थानोंके राजराजेश्वर हैं। उन लोगोंकी विजयवैजन्ती समान भावमें फहरा रही है। जिनके देशमें सूर्य छः महीनेमें भी अपना दर्शन देते आज वे उनके अधिकृत राज्यमें अस्त तक भी नहीं होते। उन लोगोंका इतिहास पढ़ना और सभ्यताका इतिहास पढ़ना दोनों समान है। जो एक समय असभ्य नामसे कलंकित थे, आज उनके वंशधरगण विधाताको भी सृष्टिकार्यमें अक्षम बतलानेकी कोशिश करते हैं। वे मानो तपस्यालब्ध आर्षबलसे बलिष्ठ हो कर अभिमान-दग्ध विश्वामित्रकी तरह जगतमें नूतन सृष्टिका सूत्रपात करने अग्रसर हुए हैं। इन सब विषयोंकी पर्यालोचना करनेसे साफ साफ मालूम होता है, कि मनुष्यकी सभ्यताका धारावाहिक इतिहास है तथा उस सभ्यताकी सोपानपरम्पराविवर्त्त और विकाशके उन्नतिशील सनातन-नियमसे परिवर्त्तित हो रही है। जो मनुष्य एक दिन फलमूल भी रींधना नहीं जानता था, मृगयालब्ध पशुमांस कच्चा ही खा लेता था आज यन्त्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मध्यस्थ तीव्र हुताशनके तीक्ष्ण उत्तापसे भस्म न होता हो ऐसा कोई पदार्थ ही नहीं है।

मानवतत्त्व सभ्यताकी विभिन्न स्तरपरीक्षा करके विकाशपद्धतिकी कारणावली प्रदर्शन करता है। इतिहास अतीतकी दृष्टान्तावलीकी मुक्तकण्ठसे घोषणा कर कहता है, कि ज्ञानके विस्तार द्वारा ही सभ्यताका विकाश, अभिनव उपायका उद्भावन, अज्ञाततत्त्वका आविष्कार, शिल्पवाणिज्यकी उन्नति और मानव जातिका सुख ऐश्वर्य बढ़ता है। आर्यविशप ह्वेटली (Whately)-ने 'सभ्यताकी उत्पत्ति' (Origin of civilisation) नामक ग्रन्थमें तथा टाइलर (Tylor)-ने 'मनुष्य-इतिहास' ग्रंथमें दिखलाया है, कि जिस प्रकार एक जातिका मनुष्य विवर्त्तके उच्च आवर्त्तसे उन्नतिके सोपान पर चढ़ता है, दूसरी जातिका मनुष्य उसी प्रकार अधःपतनके पिच्छिल पथसे फिसल जाता है। जातिकी उन्नति और अवनति विभिन्न जातिके साथ संघर्षका फल है।

प्रायः सभी देशोंके पौराणिक ग्रन्थ और धर्मशास्त्र कहते हैं, कि यह जो विराट् मनुष्यसमाज दिखाई देता है उसकी उत्पत्ति एकमात्र मानवदम्पतीसे हुई है। वह आदिम मनुष्यदम्पती वन वनमें शिकार करते थे, अपने हाथसे हल चलाते थे। इससे मालूम होता है, कि मनुष्य अभिव्यक्तिवादके द्रुतपदक्रमसे उन्नतिके शीर्षस्थान पर पहुंचे हैं। केवल हेसियड (Hesiad) ग्रन्थमें लिखा है, कि सबसे पहले उत्पन्न मनुष्यदम्पती सभ्यताके सभी गुणोंसे विभूषित थे। उनके समयमें सत्य अथवा सुवर्ण युग विद्यमान था। हिन्दूशास्त्रका मानवतत्त्व ऐसे ही सिद्धान्तसे संस्थापित है।

वैज्ञानिकोंमें कोई कोई कहते हैं, कि पशुप्राय एस्कुइमो जाति अभिव्यक्तिके अनन्त आवर्त्तसे भी सुसभ्य जाति नहीं हो सकती। किन्तु मिश्र, ग्रीस आसिरिया, बाबिलन, चीन आदि देशोंकी भूस्तरावलोकी आलोचना करके प्रत्नतत्त्वविद् तथा मानवतत्त्वविद् पण्डितोंने दिखलाया है, कि सभी देशोंमें एक समय शैलयुग विराजमान था। उस समयके मनुष्य पत्थरके बने हथियारसे शिकार करते थे। इन सब युक्तियोंसे मानवतत्त्व अभिव्यक्तिवादकी दृढ़ भित्ति पर संस्थापित हुआ है।

जो कुछ हो, वैज्ञानिक बुधमण्डली अभी एक वाक्यसे स्वीकार करती है, कि प्राथमिक सभ्यताके छोटे अंकुरसे आज विज्ञानके विचित्र वैभवसम्पन्न बहुत विस्तृत सभ्यतापादपकी उत्पत्ति हुई है। पृथ्वी पर जातिविशेषकी अवनतिसे ही समग्र मानवजातिकी उन्नति होती है, इसमें संदेह नहीं।

सभ्यसमाजमें आदिम रीतिनीतिका अनुजीवित्व।

टाइलर साहबने 'प्राथमिकशिक्षा' नामक पुस्तकमें दिखलाया है, कि मनुष्य अभी शिक्षा और सभ्यताके उच्च सोपान पर अधिरूढ़ होने पर भी वे प्राथमिक बर्बर समाजके आचार व्यवहारके कुछ संस्कारोंको छोड़ नहीं सके हैं। अंगरेज पादरीका सामरिक चिह्नयुक्त वेश (Coat of Arm) का धारण प्राथमिक युद्धप्रधानयुगका परिचय देता है। वर्त्तमान हिन्दूजाति अंगरेजी सभ्यतासे सुसभ्य होने पर भी यज्ञीय पवित्र अग्नि उत्पादन करनेके लिये दियासलाईका व्यवहार न कर अरणि संयोगसे पवित्राग्नि उत्पादन करते हैं। अंगरेज लोग अति सभ्य और विज्ञान-आलोकसे उद्भासित होने पर भी बाइबिलमें जो कुसंस्कार है उसे सुधार नहीं सके हैं। इसीसे आज भी उन लोगोंके मध्य परलोकगत आत्मीयवर्गकी प्रेतात्माके परितर्पणके लिये असभ्य जातियोंके जैसा पिण्डतर्पणादि (All Soul's Supper) की व्यवस्था है। जादूविद्या आदिमें भी असभ्य समाजका संस्कार विद्यमान है। जो किसी किसी पशुपक्षीकी बोलीसे भावी अमङ्गलकी पूर्व सूचना समझते हैं, उनके भीतर भी आदिम अवस्थाका चिह्न विद्यमान देखा जाता है।

टाइलर साहबका सिद्धान्त सर्ववादिसम्मत है ऐसा नहीं कह सकते। विज्ञान मृत्युके दूसरे किनारे तक पहुँच नहीं सकता। रसायन विश्लेषणकी अनन्त परीक्षासे चेतनाशक्तिके उपादान संग्रहमें अक्षम है। अतएव अज्ञेयतत्त्वके स्वपक्ष वा विपक्षमें टाइलरका वाक्य ग्रहणीय नहीं है। हिन्दू जातिने योगबलसे सर्वज्ञता लाभ की थी, आज भी योगबलसे प्रभूत अनुशीलन होता है—यह केवल विज्ञानकी गंडी रेखामें सीमाबद्ध है, ऐसा किसने कहा?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभिव्यक्ति और साधारण विभाग।

सभ्यताके इतिहासकी स्तरावलीकी परीक्षा करनेसे देखा जाता है, कि सबसे पहले शैलयुग (Ston-age) सभी देशोंमें विद्यमान था। उस समय मनुष्य-समाजमें धातुके व्यवहारका नाम भी न था। पीछे पीतल-युग (Bronze Age)-का प्रादुर्भाव हुआ, उसके बाद लौहयुग। किन्तु किसी किसी देशमें शैलयुगके बाद ही लौहयुगका आविर्भाव हुआ है। वे लोग लोहेका व्यवहार सीख कर जमीन जोतने लगे, जङ्गल काटने लगे, गिरिगह्वरका त्याग कर पर्णशालामें रहने लगे। धीरे धीरे उन्होंने अपने समाजकी परिपुष्टि कर ली। शिल्प और वाणिज्यका अंकुर निकला। क्रमशः शिक्षाके उत्कर्षसे वे लिख कर मनका भाव प्रकट करने लगे। इसी समयसे मनुष्य-समाजमें परिवर्त्तन स्रोत प्रबल वेगसे बहना आरम्भ हुआ है।

पूर्वोक्त परिवर्त्तन-शृङ्खलकी सूक्ष्मभावसे पर्यालोचना करना ही मानवतत्त्वका उद्देश्य है। २०वीं शताब्दीकी सभ्यताका विशाल इतिहास भी मानवकी भावी उन्नतिका सोपानमात्र है। अभिव्यक्तिकी स्तरावलीको अच्छी तरह परीक्षा करनेसे मालूम होगा, कि उन्नतिको विराम नहीं है। जो मनुष्य एक दिन घंटेमें दो कोस चल कर थक जाता था, आज वही मनुष्य घंटेमें खुशीसे ५० कोस चल सकता है। जिसको दृष्टि एक दिन सूक्ष्म आवरणका पर्दा हटा नहीं सकती थी, आज वही दृष्टि आलोकविज्ञानकी धूमल रश्मि (X, Rays,को सहायतासे दुर्भेद्य काठकी दीवारके भीतरसे देखती है, सैकड़ों योजन ऊपरमें अवस्थित ग्रहनक्षत्रोंको आसानीसे देख पाती है,—चर्मचक्षु मांस तथा उसके भीतर अस्थि तकको भी अवलोकन करता है। जिन्हें एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें संवाद भेजनेमें बड़ी दिक्कत होती थी आज वे पृथ्वीके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तक क्षण भरमें संवाद भेजते हैं तथा अनन्त अन्तरीक्षमें घूमनेवाले मङ्गलवासी जीवोंके साथ सम्बन्ध स्थापन करनेमें अग्रसर हुए हैं। मनुष्यने यन्त्रशक्तिका उत्कर्ष-संस्थापन करके चंचला सौदामिनीको किङ्करी बना कर अभूतपूर्व परिवर्त्तनका सूत्रपात किया है।

इस अनन्त उन्नतिका लक्ष्यस्थल कहां है, मानवतत्त्व उसे बतल सकता है। मानवतत्त्व केवल मनुष्यका भूत ले कर ही व्यस्त है सो नहीं, भविष्य विषयमें भी वह पीछा पड़ा हुआ नहीं है। पर हां, इतना जरूर है, कि कितनी उन्नत तथा सुसभ्य प्राचीन जाति धरापृष्ठसे अन्तर्हित हुई है—कितनी जातियोंका भाग्याकाश सूचिभेद्य अन्धकारमें आच्छन्न हुआ है, कितनी जातियां श्मशानमें लाई गई हैं, किन्तु मानव जातिरूप विराट् विग्रहकी अवनति नहीं है। उन्नति ही उनकी नियमबद्ध पद्धति है, अभिव्यक्ति ही उनकी सुप्रतिष्ठित भित्तिभूमि है। कहां तथा कितनी दूर जा कर इस उन्नतिकी गति रुकेगी यह कौन कह सकता है? मनुष्यका अतीत जिस प्रकार प्रहेलिकाप्रच्छन्न है, भविष्य भी उसी प्रकार अनुमानका अनधिगम्य है। सृष्टिप्रवाह सादि है वा अनादि है, सान्त है वा अनन्त, इस विषयकी मीमांसाके सम्बन्धमें सीमाबद्धज्ञानविशिष्ट मनुष्य कभी भी समर्थ नहीं होगा।

मानवपति सं० पु०) राजा।

मानवर्जक (सं० पु०) जातिविशेष, एक प्रकारकी जाति।

मानवर्जित (सं० त्रि०) मानेनवर्जितः। १ मानरहित, मानहीन। २ नीच, अप्रतिष्ठित।

मानवर्त्तिक (सं० पु०) १ पुराणानुसार एक प्राचीन देशका नाम जो पूर्व दिशामें था। जैनोंके हरिवंशके अनुसार यह देश वर्त्तमान मानभूमि है। २ उस देशका रहनेवाला।

मानवलक (सं० पु०) जातिभेद, एक प्रकारकी जाति। इसका दूसरा नाम मानवर्जक भी है।

मानवशास्त्र (सं० पु०) वह शास्त्र जिसमें मानवजातिकी उत्पत्ति और विकास आदिका विवेचन होता है। इस शास्त्रसे यह भी जाना जाता है, कि संसारके भिन्न भिन्न भागोंमें मनुष्यकी कितनी जातियां हैं, सृष्टिके अन्यान्य जीवोंमें मनुष्यका क्या स्थान हैं, मनुष्योंकी सृष्टि कब और कैसे हुई, उसको सभ्यताका कैसे विकास हुआ इत्यादि। मानवतत्त्व देखो।

मानवाचल (सं० पु०) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब घोड़ाघाटका शासनकर्त्ता ईशा इस लोकसे चल बसा है, तब फिर अफगान अपना सिर उठा नहीं सकता। किन्तु कुछ समय बाद ही उनके पुत्र जगत्-सिंहकी मृत्यु हो गई जिससे ओसमानके अधीनस्थ पठानोंने फिरसे विद्रोहवह्नि प्रज्वलित कर दी। इस समय मोहनसिंह और प्रतापसिंह (आईन-इ-अकबरीमें महासिंह नामसे प्रसिद्ध) बिहार और बङ्गालका शासन करते थे। यह संवाद पा कर वह दंग रह गये और अपना सेनादल ले कर उड़िसाकी ओर चल दिये। भद्रकके समीप मुगल और पठानकी सेनामें मुठभेड़ हुई। इस युद्धमें मुगल लोग परास्त हुए और पाठानोंको बङ्गालका अधिकांश स्थान हाथ लगा।

सम्राट्ने इस अभावनीय दुर्घटनासे मर्माहत हो शीघ्र ही मानसिंहको बङ्गाल जानेका हुकुम दिया। इस समय राजा मानसिंह अजमीरमें रहते थे। बादशाहका आदेश पाते ही वे रोहतस दुर्गको लौटे। सरकार सरीफाबादके अन्तर्गत सेरपुर-आटाई नगरके समीप मानसिंहके साथ अफगानोंका युद्ध हुआ। इस युद्धमें अफगानोंकी हार हुई। पठान-सरदार ओसमान पराभूत सेनादल ले कर उड़ीसाको भाग चले। मुगलोंने शत्रुओंका पीछा किया। राहमें उन्होंने मीरवक्सी अबदुल रेजाकको हाथीकी पीठ पर देख पाया। अबदुल रेजाक मुगलकर्मचारी था। पूर्वयुद्धमें पठानोंने उसे बंदी किया था। इस बार मान-सिंहकी कृपासे उसने छुटकारा पाया। मानसिंह उसे बहुत चाहते थे।

मानसिंहके इस प्रकार हठात् पहुंच जाने पर पठान लोग पहले ही हताश हो गये। पीछे परास्त होनेसे स्वाधीनता लाभकी जो आशा थी, वह बिलकुल जाती रही। फिर भी उन्होंने बङ्गालसे मुगलोंको मार भगाने-का उद्योग छोड़ा नहीं।

पठानोंको समूल निर्मूल कर मानसिंह सम्राट्का अभिनन्दन करनेके लिये दिल्लीको चल दिये। इस बार सम्राट्ने ७ हजारी सेनानायकका पद दे कर इनका बड़ा सम्मान किया था। उनके पहले मुगलसरकारमें ऐसा मानसूचक पद और किसीके भी भाग्यमें नहीं बदा था। हिन्दू होते हुए भी वे मुसलमान सेनापतियोंमें प्रधान थे। उनके बाद शाहरुख और आजिजकोका-ने उक्त पद प्राप्त किया था।

कुछ समय दरबारमें रह कर मानसिंहने फिरसे बङ्गालकी यात्रा कर दी। १६०४ ई० तक उन्होंने राज-नीति-कुशलता और न्यायपरताके साथ बङ्गराज्यका शासन किया था। इस समय सम्राट् अकबर बीमार पड़े। मानसिंह राजकार्यसे फुरसत ले कर उनसे मिलने आगरा गये। सम्राट्को ९ सौ हाथी और बहुमूल्य अलङ्कारादि उपढौकन दे कर वे उनके विशेष सम्मान-भाजन हुए थे।

राजा मानसिंह इतने बड़े बङ्गराज्यका स्वेच्छासे परित्याग कर सम्राट्के मृत्युकालमें आगरा क्यों आये? इस बातको हल कर किसी किसी ऐसिहासिकने लिखा है, कि सम्राट् बीमारीकी हालतमें राजकार्य नहीं देख सकते थे इस कारण उन्होंने वजीर खाँ आज़िमके हाथ कुल राज्यभार सौंपा था। जहांगीरको अकबर पहले हीसे नहीं चाहते थे। जहांगीरके खुशरू नामका एक लड़का था जो मानसिंहका भांजा होता था। उनका विवाह प्रधान वजीर खाँ आजिमकी कन्यासे हुआ था। अब मानसिंह और आजिम अपने भांजे और जमाईके लिये षड़यन्त्र रचने लगे जिससे उसे दिल्लीका सिंहासन लाभ हो। राज्यके इन दो प्रधान व्यक्तियोंको षड़यन्त्रमें लिप्त देख शाहजादा जहांगीर पिताके पास गया और कुल हाल उन्हें कह सुनाया। मृत्युशय्याशायी वृद्ध सम्राट्ने उन दोनोंको बुलाया और इस अत्याचारके लिये उनकी बड़ी निन्दा की। बादशाहने उन दोनोंसे कहा, कि 'मेरे मरने पर जहांगीर ही एकमात्र दिल्लीसिंहासनका अधिकारी होगा। आप लोगोंसे अनुरोध है, जिससे जहांगीरको गद्दी मिले उसके लिये कोशिश करेंगे।' इतिहासमें लिखा है, कि राजा मानसिंहने स्वार्थसिद्धिके लोभसे वृद्ध सम्राट्के शेष दिनमें जो षड़यन्त्र जाल फैलाया था उसीसे उनका प्राणवियोग हुआ। अकबर देखो।

अकबरशाहकी मृत्युके बाद १६०५ ई०में राजा मानसिंह और आज़िम बादशाहकी बातको बिलकुल भूल गये और खुशरूको सिंहासन पर बैठानेकी कोशिश करने लगे। लाख कोशिश करने पर भी उनका मनोरथ सिद्ध न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ। ऐतिहासिकगण जहांगीरके सिंहासन लाभकी कथा कुछ और तरहसे लिख गये हैं। कोई कोई कहते हैं, कि राजा मानसिंह बीस हजार राजपूतसेनाके अधिनायक और प्रबल क्षमताशाली होते हुए भी प्रकाश्यरूपसे सम्राट्का दमन न कर सके। उन्होंने गुप्तभावसे षड़यन्त्र रचा था। पीछे जहांगीरको यह बात मालूम हो जाने पर वे चुपकेसे नाव द्वारा भांजेके साथ भागे। फिर कोई कोई कहते हैं, कि मानसिंहने जहांगीरसे १० करोड़ मुद्रा रिशवत ले कर उन्हें चैन दिया था।

जो कुछ हो, जहांगीर अपने पथको साफ कर दिल्लीके सिंहासन पर बैठे। उन्होंने मानसिंह और अपने पुत्र खुशरू के कुल अपराध माफ कर दिये और मानसिंहको फिरसे बङ्गालके अफगानोंका दमन करनेके लिये वहां भेजा। यहां आठ मास रहनेके बाद १०१५ हिजरीमें उन्हें फिरसे रोहतसका दमन करनेके लिये जाना पड़ा। अनन्तर वे जहांगीरके पास पहुंचे। जहांगीरके आदेशानुसार उन्होंने कुछ समय पितृराज्यमें रह कर शान्तिसुखका भोग किया। इसके बाद वे स्वराज्यसे सेना और अर्थ संग्रह कर अबदुर रहीमके साथ दक्षिणप्रदेश जीतनेको गये। जहांगीरके शासनकालके ९वें वर्षमें मानसिंह दाक्षिणात्यमें रहते समय इहलोकका परित्याग कर परलोकको सिधारे।

किसी किसी मुसलमान इतिहासकारने लिखा है, कि जहांगीरके शासनकालमें १०२४ हिजरीको राजा मानसिंहका बङ्गालमें देहान्त हुआ था। किन्तु अन्यान्य इतिहासकारोंका कहना है, कि उत्तरांचलमें खिलजी जातिके विरुद्ध जो लड़ाई हुई थी उसके दो वर्ष पहले ये मारे गये थे। जयपुरमें मानसिंहकी जीवनीके संबंधमें जो सब ग्रन्थ और प्रवादवाक्य प्रचलित हैं, उनका सङ्कलन करनेसे एक बड़ा पोथा बन सकता है।

उनकी १५ सौ स्त्रियोंमें ६० सती हुई थीं। कुल स्त्रियोंके गर्भजात पुत्रोंमें एकमात्र भावसिंह (भवसिंह) पितृराज्यके अधिकारी हुए थे। बाकी सभी पुत्र पिताकी मृत्युके पहले इस लोकसे चल बसे थे।

आगरेमें जहां ताजबीबीका मशहूर रोजा 'ताजमहल' विद्यमान है वह स्थान राजा मानसिंहके ही दखलमें था।

मानसिंह—मारवाड़का एक दूसरा राजा। ये राजा विजयसिंहके पौत्र और गुमानसिंहके पुत्र थे। राजा विजयसिंहने अपनी अश्ववालजातिकी एक वारविलासिनीके अनुरोधसे मानसिंहको उस युवतीका दत्तक पुत्र और अपने सिंहासनका प्रकृत उत्तराधिकारी बतला कर घोषणा कर दी थी। इस पर सामन्तमण्डली बहुत बिगड़ी और भूमसिंहके पुत्र भीमसिंहको गद्दी पर बैठानेकी कोशिश करने लगी। राजा विजयसिंहको जब यह मालूम हुआ, तब उन्होंने चिढ़ कर मानसिंहको अपना दत्तक पुत्र बना लिया। किन्तु सामन्तोंने मालकाशौनी नामक स्थानमें एकत्रित हो कर एक षड़यन्त्र रचा और वारविलासिनी-का काम तमाम कर भीमसिंहको ही मारवाड़के सिंहासन पर बिठाया। किन्तु विजयसिंहने उन्हें कौशलसे सिवान दुर्गमें भेज दिया।

विजयसिंहके मरने पर प्रवासित भीमसिंह जोधपुर आये और सिंहासन पर अधिकार कर बैठे। उन्होंने अपने राजपदको निष्कण्टक करनेके लिये चचा और चचेरे भाइयोंको यमपुर भेज दिया। एकमात्र मानसिंहने ही उनके कलुषित हाथसे रक्षा पाई थी। भीमसिंह देखो।

भीमसिंहके भाग्यमें राज्यसुख बहुत दिन तक बदा न था। थोड़े ही दिनोंके अन्दर वे कराल कालके गाल में फंस गये। अब मानसिंह फूले न समाये और झालोर दुर्गसे बाहर निकले। राठोर सेनाने उनका अच्छा सम्मान किया। १८६० सम्वत्में माघमासकी पञ्चमी-को उन्हें बड़ी धूमधामसे राजटीका दी गई। उनके शासनकालसे मारवाड़ इतिहासका शोचनीय अध्याय आरम्भ हुआ।

राजा मानसिंहके सिंहासन पर बैठानेके कुछ दिन बाद ही पोकर्णके महातेजस्वी सामन्त सवाईसिंहने पूर्व प्रतिहिंसाको चरितार्थ करनेके लिये उनके साथ शत्रुता ठान दी। वे मृत राजा भीमसिंहके एकमात्र पुत्र धनकुलसिंहको मारवाड़-सिंहासनका उत्तराधिकारी बनाने-के लिये सामन्तोंको उभाड़ने लगे। सबने मिल कर मानसिंहको राज्यच्युत करने और धनकुलको सिंहासन पर बिठानेका षड़यन्त्र रचा।

राजा मानसिंहके कठोर शासन और विद्वेषभावसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृत राजा भीमसिंहके अनुगृहीत सामन्तगण उनके विरुद्ध खड़े हो गये। अपने सामन्तोंके प्रति अनुग्रह दिखलानेके कारण भट्टजातीय राजपूत सेनादल और महन्त कायम दासके अधीनस्थ विष्णुस्वामी नामक सेनादल मानसिंहके पक्षमें थे।

इस पक्षपातिपत्य पर क्रुद्ध हो कर सवाई सिंह भीमसिंहके पुत्र धनकुलका पक्ष ले कर अन्यान्य सामन्तोंके साथ राजा मानसिंहके समीप गये। उन्होंने जातबालकके भरणपोषणके लिये नागर और सिवोना प्रदेश मानसिंहसे मांगा। इधर राजकोपसे पुत्रके अमङ्गलकी आशङ्का कर भीमसिंहकी रानीने सबके सामने कहा, कि धनकुल मेरा गर्भजात पुत्र नहीं है। इससे व्यर्थमनोरथ हो सवाईसिंह फिरसे षड़यन्त्र रचने लगे। इस बार भी उनकी चेष्टा सफल न हुई। वे राजा मानसिंहका आनुगत्य स्वीकार करनेको बाध्य हुए। उन्होंने चुपकेसे भीमसिंहकी लड़की कृष्णकुमारीका विवाह संबंध ले कर जयपुरराजके साथ झगड़ा खड़ा कर दिया। पहले मेवारराजाके साथ कृष्णकुमारीके विवाह होनेकी बात थी। मानसिंहने जयपुरराजके इस अपमानजनक प्रस्ताव पर उत्तेजित हो जयपुरराजके दिये हुए उपहारोंको लूटा और सेनादलको परास्त किया।

इस सूत्रसे दोनों पक्षमें घमसान लड़ाई छिड़ी। सवाईसिंह इस प्रकार शठता द्वारा जयपुर और मेवारके राजोंके साथ मानसिंहका विवादनल प्रज्वलित कर अपना मतलब निकालनेका उपाय ढूंढने लगे। इस समय वे धनकुलको ले कर जयपुरके शिविरमें गये। जयपुरराज जगत्सिंहकी जो बहिन भीमसिंहको व्याही गई थी उसीके गर्भसे धनकुलका जन्म हुआ था।

राजा जगत्सिंहने भांजेका पक्ष ले कर राजा मानसिंहके विरुद्ध हथियार उठाया। उनके अधीन जितने सामन्त थे, सबोंने उनका साथ छोड़ दिया। उन्होंने लार्ड लेकके युद्धमें जिस होलकरपतिको आश्रय दिया था, अभी वे उन्हींकी शरणमें गये। किन्तु सवाईसिंहने लाख रुपये दे कर होलकरको काबूमें कर लिया और इस प्रकार मानसिंहकी ताकत घटा दी। इसके बाद जयपुरकी सेनाने पिड्गोली नामक स्थानमें इन पर आक्रमण कर दिया। युद्धके प्रारम्भमें इनके अधीन जो सब राठोर सामन्त थे वे सबके सब इन्हें छोड़ चले गये। दोनों पक्षमें घमसान युद्ध होनेके बाद राजा मानसिंहने मैरतासे योधपुरदुर्गमें जा कर आश्रय लिया। जगत्की सेनाने वहां तक इनका पीछा किया था।

मानसिंह जोधपुर दुर्गको दृढ़बद्ध तथा झालोर और अमरकोटमें सेना भेज कर शत्रुकी बाट जोहने लगे। जयपुरपति जगत्सिंह पांच महीने अवरोध करके भी कुछ न कर सके। मानसिंह असीम वीरताके साथ आत्मरक्षा करने लगे। इस समय जयपुरकी सेनामें वेतनभोगी अमीर खाँका सेनादल बागी हो गया। उन्होंने जगत्सिंहके विरुद्ध अस्त्र उठाया। प्राणके भयसे जगत्सिंहने रणक्षेत्रका परित्याग किया, साथ साथ सवाई सिंह भी अपने नगरको भागे।

युद्धके शेषमें अमीर खाँ और हिन्दूराजने राजा मानसिंहको खासी मदद पहुंचाई थी। पीछे राजा मानसिंहने उन दोनोंको उच्चपद और काफी धनरत्न दिया था। इसके बाद मारवाड़ राज्यमें अमीर खाँका प्रभुत्व विस्तार, नागरदुर्ग और नोवा दुर्गमें सैन्यस्थापन तथा मैरात और शाम्भरप्रदेशमें अधिकार फैलाते देख राजा मानसिंह बहुत चञ्चल हो गये। इस समय हिन्दू और राजगुरु देवनाथको गुप्तभावसे निहत कर मानसिंहका दिमाग खराब हो गया। अनन्तर उनके पुत्र छत्रसिंहने राज्यभार ग्रहण किया। छत्रसिंहकी दुश्चरित्रतासे सभी सामन्त विद्रोही हो गये। राजा मानसिंहका दिमाग जब ठिकानेमें आया तब उन्होंने फिरसे राज्यभार ग्रहण कर अंगरेजोंकी सहायतासे सामन्तोंकी भूसम्पत्ति छीन ली।

१८०३ ई०में इष्ट-इण्डिया-कम्पनीके साथ मानसिंहकी सन्धि हुई। अंगरेजी सेनाने मारवाड़के राजाका पक्ष ले कर सामन्तोंको उचित दण्ड दिया। १८१८ ई०की सन्धिके अनुसार मि० वार्डर वृटिश गवर्मेण्टके प्रतिनिधिस्वरूप अजमीर प्रदेशके सुपरिण्टेण्डेण्ट बन कर योधपुर राज्यमें आये। उन्होंने मारवाड़की राजनैतिक अवस्थाका संस्कार करनेके लिये चुपकेसे राजा मानसिंहके साथ मिलना चाहा। किन्तु मिल न सके और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सीधे लौट गये। पीछे ले० कर्णल टाड साहब कम्पनीकी ओरसे मारवाड़ राज्यके एजेण्ट बन कर आये। राजा मानसिंहके साथ कर्णलको गाढ़ी मित्रता थी। इस समय मारवाड़ प्रान्तमें मन्त्री अक्षयचांदने नादिरशाही आरम्भ कर दी थी। युद्धमें अक्षयचांद, किलादार, नागोजी, मूलजी, दन्धल, जोवराज, विहारी, खीची, व्यास शिवदास और श्रीकृष्ण ज्योतिषी आदि अत्याचारी सरदार पकड़े और बन्दी किये गये। राजा मानसिंह उनमेंसे प्रत्येकका प्राण ले कर निष्कण्टक हो गये थे। पीछे इन्होंने पोकर्णके सलीमसिंहके वंशको ध्वंस करनेकी चेष्टा की। मानसिंहके इस व्यवहार पर सामन्तगण बड़े अप्रसन्न हुए। किन्तु मानसिंहने प्रतिहिंसावृत्तिको सफल करनेके लिये मानो संहार-मूर्त्ति धारण कर ली थी। उनके आदेशसे ८ हजार वेतनभोगी कमानवाही सेनाओंने रातको निजामके सामन्त सुरतान सिंह पर आक्रमण कर दिया। युद्धमें सुरतान मारा गया, सलीमसिंहने भाग कर अपनी जान बचाई। इतने दिनोंके बाद राजपूत वीर मानसिंह प्रकृत वीरतेजसे मारवाड़राज्य ध्वंस करनेको उद्यत हुए।

१८५० सम्वत्में अङ्गरेज कम्पनीके साथ महाराजाधिराज मानसिंहकी संधि हुई। जयपुराधिपने अपने भांजे धनकुल सिंहको राजतख्त पर बैठानेकी कामनासे पुनः मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी। पहले मानसिंहको अङ्गरेजोंसे कोई साहाय्य नहीं मिला। पीछे अङ्गरेजी सेनाके रणक्षेत्रमें उतरते ही धनकुल दलबलके साथ भागा। इस समय जयपुरराज अङ्गरेज गवर्मेण्ट द्वारा विशेषरूपसे लाञ्छित हुए थे।

१८६२ सम्वत्की सन्धिके अनुसार योधपुरराज सैन्यसाहाय्यके बदलेमें एक लाख पन्द्रह हजार रुपये देनेको राजी हुए थे। वृटिश गवर्मेण्टने १८३५ ई०में राजा मानसिंहके अधिकारभुक्त महीरवाड़ा प्रदेशके अन्तर्गत २८ ग्राम नौ वर्षोंके लिये इजारा ले लिया। उसके उपसत्त्वसे वे वार्षिक १५ हजार रुपये लेते थे। १८४३ ई०में इजारेका समय पूरा हो गया। उसी साल राजा मानसिंहकी मृत्यु हुई। वे अङ्गरेजोंकी सहायतासे मारवाड़ राज्यका बहुत कुछ संस्कार कर गये थे।

मानसिक (सं० त्रि०) मानस-ठञ्। १ मनोभाव, मनकी कल्पनासे उत्पन्न। किसी कष्टसे छुटकारा पानेके लिये देवताकी पूजा आदि मानसिक करनी होती है। २ मन सम्बन्धी, मनका। (पु०) ३ विष्णु।

मानसी (सं० स्त्री०) मानस-स्त्रीत्वात् ङीप्। १ विद्यादेवीविशेष, पुराणानुसार एक विद्यादेवीका नाम। २ मानसपूजा, वह पूजा जो मन ही मन की जाय। (त्रि०) ३ मनोभवा, मनसे उत्पन्न।

"ततोऽभिध्यायतस्तस्य जज्ञिरे मानसीः प्रजाः।"

(विष्णुपु० १।७।१)

मानसीगंगा (सं० स्त्री०) गोवर्धन पर्वतके पासके एक सरोवरका नाम।

मानसीव्यथा (सं० स्त्री०) हृदयजात शोकदुःखादि, मानसिक कष्ट।

मानसूत्र (सं० क्ली०) मानस्य गात्रप्रमाणस्य तन्मानार्थं वा सूत्रं। स्वर्णादिनिर्मित कटिसूत्र, सोनेकी करधनी।

मानसून (अं० पु०) १ एक प्रकारकी वायु। यह भारतीय महासागरमें अप्रैलसे अक्तूबर मास तक बराबर दक्षिण-पश्चिमके कोणसे और अक्तूबरसे अप्रैल तक उत्तर-पूर्वके कोणसे चलती है। अप्रैलसे अक्तूबर तक जो हवा चलती है, प्रायः उसीके द्वारा भारतमें वर्षा भी हुआ करती है। २ महादेशों और महाद्वीपों तथा उनके आस पासके समुद्रोंमें पड़नेवाले वातावरण सम्बन्धी पारस्परिक अन्तरके कारण उत्पन्न होनेवाली वायु। यह प्रायः छः मास तक एक निश्चित दिशामें और छः मास तक उसकी विपरीत दिशामें बहती है।

मानसोत्तर (सं० पु०) पर्वतश्रेणीभेद।

मानसौकस् (सं० पु०) मानसं सरः ओको वासस्थानं यस्य। हंस।

मानस्कृत (सं० पु०) पूजा या अभिमानके कर्त्ता।

मानस्य (सं० पु०) मनसका गोत्रापत्य।

मानहंस (सं० पु०) एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें 'स ज ज भ र' होते हैं। इसके अन्य नाम मनहंस, रणहंस और मानसहंस भी हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानहन् (सं० त्रि०) मानं हन्ति हन-क्विप्। मानहन्ता, अप्रतिष्ठा करनेवाला।

मानहानि (सं० स्त्री०) मानस्य हानिः। अवमानना, बेइज्जती।

मानहीन (सं० त्रि०) मानेन हीनः। मानरहित, मानभ्रष्ट, जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो।

मानहुं (हिं० अव्य०) मानों देखो।

माना (हिं० पु०) १ एक प्रकारका मीठा निर्यास। यह इटली और एशिया माइनर आदि देशोंके कुछ विशिष्ट वृक्षोंमें छेद लगा कर निकाला जाता है। अथवा कभी कभी कुछ कीड़े आदिकी कई क्रियाओंसे उत्पन्न होता है। यह पीछेसे कई रासायनिक क्रियाओंसे शुद्ध करके ओषधिके काममें लाया जाता है। भारतके कई प्रकारके बाँसों तथा अनेक वृक्षों पर भी यह कभी कभी पाया जाता है। यह रेचक होता है और इसका व्यवहार करनेसे मनुष्य बहुत निर्बल नहीं होता। देखनेमें यह पोले रंगका, पारदर्शी और हलका होता है और प्रायः बहुत महँगा मिलता है। २ अन्नादि नापनेका एक पात्र जिसमें पाव भर अन्न आता है। यह लकड़ी, मिट्टी या धातुका बना होता है। इससे तरल पदार्थ भी नापे जाते हैं। (क्रि०) ३ नापना, तौलना। ४ जांचना, परीक्षा करना।

माना—युक्तप्रदेशके गढ़वाल जिलान्तर्गत एक गिरि-सङ्कट। यह अक्षा० ३०° ५७' उ० तथा देशा० ७८° ३५' पू० हिमालय शिखरमें चीन और भारत-साम्राज्यके बीचमें अवस्थित है। विष्णुगंगा नदीके किनारेसे माना उपत्यकास्थ मानागांवमें जाया जाता है। समुद्रपृष्ठसे यह रास्ता १८ हजार फीट ऊंचा होने पर भी पहले भारतवासी इस सङ्कट हो कर चीनतातारमें जाते आते थे। हिन्दू तीर्थयात्री इसी हो कर मानसरोवर तीर्थ जाते हैं।

मानाङ्क (सं० पु०) एक पुस्तक प्रणेता। इन्होंने गीतगोविन्दकी टीका, दुर्गामाशुबोधिनी नामक मालती माधवकी टीका मेघाभ्युदय-काव्य, वृन्दावनयमक और वृन्दावन-काव्य रचे। ये मालाङ्क नामसे भी परिचित थे।

मानाङ्क—राष्ट्रकूटवंशीय एक राजा।

मानाङ्कुलमहातन्त्र (सं० क्ली०) प्राचीन तन्त्रभेद।

मानानन्द (सं० पु०) एक योगाचार्य। शक्तिरत्नाकरमें इनका नामोल्लेख है।

मानानयन (सं० क्ली०) मानस्य परिमाणस्य आनयनम्। परिमाण आनयन, गणना कर परिमाण स्थिर करना। ज्योतिषमें रवि आदि ग्रहोंका मानानयन स्थिर कर गणना करनी होती है। विशेषतः ग्रहणगणना करनेके समय रवि और चन्द्रमाका मानानयन विशेष आवश्यक है।

मानायन (सं० पु०) मनायनका गोत्रापत्य।

मानाय्य (सं० पु०) मनाय्यका गोत्रापत्य।

मानाय्यानी (सं० स्त्री०) मनाय्यकी स्त्री अपत्य।

मानार उपसागर—भारतवर्षके दक्षिणमें अवस्थित भारत-महासागरका अंशविशेष। इसके पश्चिम तिन्नेवल्ली और मदुरा जिला, उत्तरमें आदामस ब्रिज (सेतुबन्ध द्वीप) और कुमारिका आदि पर्वतमाला तथा पूर्वमें सिंहलद्वीप है। कुमारिकासे दि-गल अन्तरीप तक इसका फासला २ मील है। दक्षिण-पश्चिम मानसुन वायु बहनेसे इसका स्रोत बहुत प्रखर हो जाता है। उनके परिवर्त्तन समयमें भी अर्थात् उत्तर-पूर्व मानसुन वायुके बहते समय यहां पश्चिमी वायु बहती है तथा स्रोतमें भी बहुत अन्तर दिखाई देता है। इस समय जलस्रोतसे मलबार उपकूलका बालू कुमारिका अन्तरीपके दक्षिण जा कर जमा होता है। यहां मुक्ता पाई जाती है। मुसलमान और तामिल गोताखोर समुद्रमें डुबकी मार कर शंख, सीप, मोती आदि निकालते हैं। वृटिश सरकारने इसकी हिफाजतके लिये अच्छा प्रबन्ध कर रखा है।

मानाराव—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़के सौराष्ट्र-विभागान्तर्गत एक छोटा सामन्तराज्य। यहांके राजा बड़ौदाराज और जूनागढ़ नवाबको कर देते हैं।

मानासक्त (सं० त्रि०) १ अभिमानी। २ मानरक्षा ही जिसका मूलमन्त्र हो।

मानिंद (फा० वि०) समान, तुल्य।

मानिक (स० क्ली०) आठ पलका एक मान।

मानिक (हिं० पु०) एक मणिका नाम। यह लाल रंगका होता है और हीरेको छोड़ कर सबसे कड़ा पत्थर है। इसमें विशेषता यह है, कि बहुत अधिक तापसे सुहागेके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योगसे यह काँचकी भाँति गल जाता है और गलने पर इसमें कोई रंग नहीं रह जाता। मानिक पत्थर गहरे लाल रंगसे ले कर गुलाबी और नारंगीसे ले कर बैंगनी रंग तकके मिलते हैं। जिस मानिकमें चिह्न नहीं होते और चमक अधिक होती है, वह उत्तम माना जाता और अधिक मूल्यवान् होता है।

विशेष विवरण मणि शब्दमें देखो।

मानिकखम्भ (सं० पु०) १ वह खूंटा जो कातरके किनारे गड़ा रहता है और जिसमें धुसेको रस्सीसे बांध कर जाटके सिरे पर अटकाते हैं, मरखम। २ विवाहमें मंडपके बीच गाड़ा जानेवाला एक खंभा। ३ मालखंभ, मलखम।

मानिकचंदी (हिं० स्त्री०) साधारण छोटी सुपारी।

मानिकजोड़ (हिं० पु०) एक प्रकारका बड़ा बगुला जिसकी चोंच और टांगें लंबी होती हैं।

मानिकजोर (हिं० पु०) मानिकजोड़ देखो।

मानिकरेत (हिं० स्त्री०) मानिकका चूरा। इससे गहने साफ किये जाते हैं और उन पर चमक लाई जाती है।

मानिका (सं० स्त्री०) मानयति गर्वी करोतीति मन-णिच्-ण्वुल, टाप् अकारस्येत्वं। १ मद्य, शराब। २ आठ पल या साठ तोलेका एक मान। वैद्यक-मतसे साठ तोलेका एक सेर होता है।

मानिटर (अं० पु०) पाठशालाकी श्रेणियोंमें एक प्रधान छात्र। यह अन्य छात्रों पर कुछ विशिष्ट अधिकार रखता है।

मानित (सं० त्रि०) मानोऽस्त्यर्थे तारकादित्वादितच्। सम्मानित, पूजित।

मानितसेन (सं० पु०) राजपुत्रभेद।

मानिता (सं० स्त्री०) मानिनो भावः तल-टाप्। १ मानीका भाव या धर्म, मानित्व, सम्मान, आदर। २ गौरव। ३ अहंकार, गर्व।

मानिन् (सं० त्रि०) १ मानोऽस्यास्तीति मान-इनि। १ मानविशिष्ट, सम्भ्रान्त। २ सिंह।

मानिनी (सं० स्त्री०) १ फलिवृक्ष, लक्षणाकन्द। मानिन् + स्त्रियां ङीप्। २ मानवती, अभिमानयुक्ता स्त्री, गर्ववती औरत।

"हरिरभिसरति वहति मृदु पवने।
किमपरमधिकसुखं सखि! भवने
माधवे मा कुरु मानिनि! मानमये॥"

(गीतगोविन्द ९।२)

३ साहित्यमें वह नायिका जो नायकके दोष को देख कर उससे रुठ गई हो। ४ मान करनेवाली, रुष्टा। ५ राजा राज्यवर्द्धनकी पत्नी। ६ शराव परिमाण, एक सेर।

मानिन्ध (सं० पु०) एक प्राचीन ज्योतिर्विद्।

मनित्थ देखो।

मानिमन्मथ (सं० क्ली०) सैन्धव लवण, सेंधा नमक।

मानी (सं० त्रि०) १ अभिमानी, घमंडी। २ मनोयोगी। ३ सम्मानित, गौरवान्वित। (पु०) ४ सिंह। ५ साहित्यमें वह नायक जो नायिकासे अपमानित हो कर रूठ गया हो। (स्त्री०) ६ कुंभ, घड़ा। ७ प्राचीन कालका एक प्रकारका मानपात्र। इसमें दो अंजुली वा आठ पल आता था। ८ साधारण छेद। ९ कुदाल, वसूले आदिका वह छेद जिसमें बेंट लगाई जाती है। १० अन्नका एक मान जो सोलह सेरका होता है। ११ किसी चीजमें बनाया हुआ छेद जिसमें कुछ जड़ा जाय। १२ चक्कीके ऊपरके पाटमें लगी हुई एक लकड़ी। इसके बीचके छेदमें कीली रहती है। जूआ न होने पर यह लकड़ी ऊपरके पाटके छेदमें जड़ी रहती है।

मानी (अ० स्त्री०) १ अर्थ, मतलब, तात्पर्य। २ तत्त्व, रहस्य। ३ प्रयोजन। ४ हेतु, कारण।

मानुतन्तव्य (सं० पु०) १ मनुतन्तुका गोत्रापत्य। २ ऐकादशाक्षरका अपत्य।

मानुष (सं० पु०) मनोर्जातः मनु (मनोर्जातावञ् यतौ युक् च। पा ४।१।१६१) इत्यत्र युगागमश्च। १ मनुष्य, मानव। २ याज्ञवल्क्य स्मृतिके अनुसार प्रमाणके दो भेदोंमेंसे एक। इसके तीन उपभेद हैं—लिखित, भुक्ति और साक्षी। (त्रि०) मनुष्यसम्बन्धी, मनुष्यका।

"अकृत्वा मानुषं कर्म यो दैवमनुवर्त्तते।
वृथा श्राम्यति संप्राप्य पतिं क्लीबमिवाङ्गना॥"

(महाभारत १३।६।२०)

मानुषक (सं० त्रि०) मनुष्यसम्बन्धीय, मनुष्यका।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानुषता (सं० स्त्री०) मानुषस्य भावः तल-टाप्। मनुष्यत्व, मनुष्यका भाव या धर्म, आदमीयत।

मानुषप्रधन (सं० क्ली०) मनुष्यको भलाईके लिये संग्राम।

मानुषसंवाद (सं० त्रि०) १ नरमांसासी, मनुष्यका मांस खानेवाला। (पु०) २ राक्षस।

मानुषराक्षस (सं० पु०) १ राक्षसकी प्रकृति जैसा मनुष्य-शरीर, वह मनुष्य जिसका स्वभाव राक्षसके समान हो। २ मनुष्यका शत्रु, निष्ठुर प्रकृतिवाला दस्यु आदि।

मानुषलौकिक (सं० त्रि०) १ नरलोक-सम्बन्धीय, नरलोकका। २ मनुष्योंके उपयोगी।

मानुषिक (सं० त्रि०) मनुष्यस्य भावः कर्म वा मनुष्य-ठञ्। १ मनुष्यके कर्म आदि। २ मनुष्यसम्बन्धीय, मनुष्यका।

मानुषिबुद्ध (सं० पु०) नरशरीरधारी बुद्ध। जैसे गौतमबुद्ध आदि। ये ध्यानीबुद्धसे पृथक् देव हैं।

मानुषी (सं० स्त्री०) मानुषस्य स्त्री, मानुष जातित्वात् ङीष्। १ मनुष्य स्त्रीजाति, औरत।

"मनुष्यी मानुषी नारी मानवी मानुषस्त्रियाम्।"

(शब्दरत्ना)

२ तीन प्रकारकी चिकित्साओंमेंसे एक, मनुष्योंको उपयुक्त चिकित्सा। ३ औषध-निर्माणकार्य, दवाई बनानेका काम।

मानुषीक्षीर (सं० क्ली०) मानुषीस्तनदुग्ध, मनुष्यका दूध।

मानुषीदधि (सं० क्ली०) मानुषीदुग्ध-जातदधि, वह दही जो मनुष्यके दूधसे बनाया गया हो।

मानुषीय (सं० त्रि०) मनुष्य सम्बन्धीय, मनुष्यका।

मानुष्य (सं० क्ली०) मनुषस्य भावः मनुष्यस्येदमिति वा मनुष्य-अण्। १ मनुष्यत्व, आदमीयत। २ मनुष्य-शरीर, नरदेह।

"मानुष्ये कदलीस्तम्भे निःसारे सारमार्गणम्।
यः करोति स संमूढो जलबुद्बुदसन्निभे॥" (शुद्धितत्व)

(त्रि०) मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्यका।

मानुष्यक (सं० क्ली०) मनुष्याणां समूहः मनुष्य (गोत्रा-क्षोष्टोरञ्ञिति। पा ४।२।३९) इति वुञ्। १ मनुष्यसमूह, मनुष्यकी भीड़। मानुष-यत्। स्वार्थे कन् (त्रि०) २ मनुष्यसम्बन्धी, मनुष्यका।

"सुमन्त्रितं सुनीतञ्च न्यायतश्चोपपादितम्।
कृतं मानुष्यकं कर्म दैवेनापि विरुध्यते॥"

(भारत ५।७७।८)

मानुस (हिं० पु०) मनुष्य, आदमी।

माने (अ० पु०) अर्थ, मतलब, आशय।

माने माने (सं० अव्य०) सम्मानके साथ।

मानों (हिं० अव्य०) जैसे, गोया।

मानोखो (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया।

मानोज्ञक (सं० क्ली०) मनोज्ञस्य भावः कर्म वेति (द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च। पा ५।१।१३३) इति वुञ्। मनोज्ञता, मनोज्ञका भाव।

मानौं (हिं० अव्य०) मानों देखो।

मान्तव्य (सं० पु०) मन्तु यञ् (पा ४।१।१०५) मन्तुका गोत्रापत्य।

मान्त्र (सं० त्रि०) वैदिक मन्त्रसम्बन्धीय।

मान्त्रवर्णिक (सं० त्रि०) वैदिकस्तोत्र आदि लिखित मन्त्रवर्णको एक संज्ञाका नाम।

मान्त्रिक (सं० पु०) १ मन्त्रवेत्ता, जो वेदमन्त्रपाठमें विशेष पारदर्शी हो। २ रोझा, भोजवाजीकर आदि।

मान्वित (सं० पु०) मन्वित्यका वंशधर।

मान्वित्य (सं० पु०) मंवित्यका गोत्रापत्य।

मान्थरेषणि (सं० पु०) मन्थरेषणका गोत्रापत्य।

मान्थर्य (सं० क्ली०) दुर्बलता, कमजोरी।

मान्थाल (सं० पु०) मूषिकजातीय जीवभेद, मूसेकी जातिका एक प्रकारका जीव।

मान्थ्य (सं० त्रि०) मन्थन या मर्दनयोग्य।

मान्द (सं० पु०) १ तड़ागभव जल, पोखरेका पानी। २ भौम्यादिग्रहके रवि या चन्द्रसम्बधीय नीचोच्च वा मन्दोच्च गति। मान्दफल Equation of the apsis, मान्दकर्म Proccss of correction for the apsis।

मान्दगांव—मध्यभारतके वरधा जिलान्तर्गत एक नगर। यह वना नदीके पास ही अवस्थित है।

मान्दार (सं० पु०) मन्दारसम्बन्धी।

मान्दारव (सं० पु०) मन्दारवसम्बन्धीय।

मान्दार्य (सं० त्रि०) वीतराग, जिसे अपना कह कर अभिमान न हो, विषयानुरागरहित।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मान्दालय—उत्तर ब्रह्मकी राजधानी। यह अक्षा० २१° ५९' उ० तथा देशा० ९६° ८' पू०के मध्य ६०० सौ फुट उच्च एक पहाड़के पाददेशमें इरावती नदीसे १ कोस दूर समतल भूमि पर अवस्थित है। सिंहासनच्युत राजा थिबोके पिताने १८६० ई०में राजधानी अमरपुरका त्याग कर मान्दालयमें एक नई राजधानी बसाई। उस समयसे ले कर १८८६ ई०की १लो जनवरी तक यहां स्वाधीन ब्रह्मदेशकी राजधानी रही। पीछे अंगरेजोंने इसे कब्जा कर लिया।

राजधानीका आयतन समचतुर्भुज सरीखा है। राजधानीके चारों ओर २६ फुट ऊंची और ३ फुट चौड़ी दीवार दौड़ गई है।

नगरमें प्रवेश करनेके बारह द्वार हैं। प्रत्येक पार्श्वमें तीन तीन कर दरवाजे हैं। तोरणद्वारका ऊपरी भाग गुम्बजाकार लकड़ीके टुकड़ोंसे बना है। दो और तीन तल्लेमें दुर्गरक्षाका अच्छा प्रबंध है। १०० फुट लंबी और ६६ फुट चौड़ी एक खाई राजधानीको चारों ओरसे घेरे हुई है। वह खाई हमेशा गहरे जलसे भरी रहती है। उसको पार करनेके लिये पांच पुल बने हैं। वे सब पुल लकड़ीके इस प्रकार बने हैं, कि शत्रुके हठात् आगमन पर वे सहजमें उठा लिये जा सकते हैं।

राजप्रासाद नगरके ठीक बीचमें अवस्थित है। राजप्रासादकी बाहरी दीवार दुर्गकी दीवारके साथ एक सीधमें चली गई है।

अट्टालिकाका बाहरी भाग २० फुट ऊंची महोगनि लकड़ीकी दीवारसे घिरा है। इस प्रकार काठकी दीवारके परे और भी कई एक ईटोंकी दीवारके बाद राजभवन बना हुआ है।

थिबो १८७८ ई०के अक्तूबर महीनेमें पितृसिंहासन पर बैठे। वे उक्त राजवंशके प्रतिष्ठाता आलम्प्रासे ग्यारहवें राजा थे। ब्रह्मवासियोंका कहना है, कि जिस वंशमें बुद्धदेवने जन्मग्रहण किया था, वे लोग उसी शाक्यवंशके हैं। ६६१ ई० सनके पहले जब राजा अर्जुन कपिलवस्तुमें राज्य करते थे उसी समयसे ब्रह्मदेशका इतिहास आरम्भ हुआ है। अलम्प्राने पूर्व राजाओंको भगा कर एक शताब्दी पहले सिंहासन अधिकार किया था। उनकी शासनप्रणाली यथेच्छाचार-भावापन्न थी। राजगण बुद्धके सिवा और किसीकी भी उपासना नहीं करते थे। थिबोने राज्यशासन सुशृङ्खलभावसे नहीं किया। अंगरेजी प्रजाके साथ असद्व्यवहार करनेसे वे राज्यच्युत हो बन्दिभावमें भारतवर्ष लाये गये। तभीसे ब्रह्मदेश अंगरेजोंके अधिकारमें चला आ रहा है।

ब्रह्म जबसे अंगरेजोंके अधिकारमें आया, तबसे यहां बहुत परिवर्त्तन हुआ है। नगरके भीतर और बाहर बहुतसे बाजार हैं। जनसंख्या दो लाखके करीब है। यहां सभी जातियोंका बास है। नगरके बाहर और भीतर बहुतसे मठ और मन्दिरादि इधर उधर पड़े हैं। इरावती नदीके जलपथसे यहांका वाणिज्यकार्य चलता है। रफ्तनीमें रुई, महोगनि लकड़ी, मिट्टीका तेल, चमड़ा, गुड़, हाथीके दांत, लाख, सींग, गेहूं, तमाकू, पीला चन्दन और चाय प्रधान है। प्रधानतः चीनदेशके साथ स्थलपथसे वाणिज्य चलता है। ब्रह्मदेशके साथ चीनका वाणिज्य ही उल्लेखनीय है।

शहरमें ८ सिकेण्ड्री और ३ प्राइमरी स्कूल हैं। इनमें सेण्ट पेटरका हाईस्कूल और सेण्ट जोसेफ, अमेरिकन बैपटिष्ट मिशन स्कूल, यूरोपियन स्कूल और यूरोपियन वेसलिन मिशनका हाईस्कूल प्रधान है। स्कूलके अलावा एक अस्पताल और जेगयो बाजारके समीप एक चिकित्सालय है।

मान्द्राज—दक्षिण भारतवर्षकी एक प्रेसिडेन्सी। फोर्ट सेण्ट जार्ज नामक दुर्गके शासनभुक्त समस्त दक्षिण भारतको मान्द्राज प्रेसिडेन्सी कहते हैं। भूपरिमाण १४१७०५ वर्गमील है। मान्द्राज नगरमें अंगरेज सौदागरोंने पहले पहल उक्त दुर्ग बना कर कोठी खोली थी। वाणिज्यकार्यकी रक्षाके लिये यहां एक गवर्नर रहते थे। तभीसे दक्षिणभारतके अंगरेजी इतिहासमें मान्द्राज नगरकी ख्यातिका प्रथम सूत्रपात हुआ। जब सारा भारत वर्ष अंगरेजोंके हाथ आया, तब दाक्षिणात्यके अधिकारको अक्षुण्ण रखने तथा विचार कार्यकी परिचालना करने के लिये उन्होंने यहां दाक्षिणात्यका राजपाट बसाया। हैदराबाद आदि कुछ सामान्तराज्य, जिला और वन्य विभाग ले कर यह प्रेसिडेन्सी संगठित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पश्चिममें इसकी लंबाई ६५० मील और चौड़ाई ४५० मील है। इस प्रेसिडेन्सीमें वृटिश-सरकारके खास शासनमें २२ जिला हैं तथा स्वतन्त्र वन्दोवस्तसे गंजाम, विशाखपत्तन और गोदावरीका एजेन्सी विभाग एवं त्रिवांकुड़, कोचिन, पुदुकोटा, वङ्गनपल्ली और सन्दूर नामक पांच सामन्तराज्य मान्द्राज गवर्मेण्टके कर्त्तृत्वाधीनमें परिचलित होते हैं।

उत्तरको छोड़ कर बाकी तीन दिशामें समुद्र है। उत्तर-पूवमें चिल्कासे ले कर समस्त पूर्व उपकूल तक वङ्गोपसागर विस्तृत है। दक्षिण-पूर्वमें अङ्गरेजोंका सिंहल उपनिवेश, सेतुवन्ध और पाक्प्रणालो, दक्षिण और पश्चिममें यथाक्रम भारतमहासागर और अरवसागर है। उत्तरी सीमा उत्तर-पूर्वसे क्रमशः दक्षिण-पश्चिममें नीची होती गई है। इसके पूर्वोत्तरसे उड़ीसा, मध्यभारतका पहाड़ी-प्रदेश, निजामराज्य तथा धारवाड़ और उत्तरकनाड़ा जिला इसको घेरे हुए है। महिसुरका मित्रराज्य मान्द्राज गवर्मेण्टके वहिर्भूत होने पर भी भौगोलिक अवस्थानुसार वह एक प्रेसिडेन्सीके अन्तर्भुक्त हो गया है। अलावा इसके लाक्षाद्वीपपुञ्ज भी मलवार और दक्षिण कनाड़ा जिलेके शासनभुक्त हो जानेसे मान्द्राज प्रेसिडेन्सीका अंशविशेष समझा जाने लगा है।

दक्षिण भारतका मानचित्र देखनेसे मालूम होता है, कि पर्वत, नद, नदी और वनमालासमाकुल इस विस्तीर्ण भूभागका प्राकृतिक सौन्दर्य-स्थान विभिन्न भाव धारण किये हुए है। पूव और पश्चिमघाट पर्वतमालाकी वनमय दृश्यावलि स्वभाव सौन्दर्यकी रङ्गभूमि है। नीलगिरिको अधित्यका और उपत्यका भूमि निर्झरप्रवाहिणी स्रोतस्विनीसे परिव्याप्त हो कर मानवजीवनके लिये विशेष स्वास्थ्यप्रद हो गई है। महिसुर, त्रिवांकुड़ त्रिचिनपल्ली आदि शब्दोंमें यहांके स्थानविशेषका प्राकृतिक इतिहास दिया गया है। अतएव अनावश्यक समझ कर उनका विवरण यहां पर नहीं किया गया।

नदियोंमें गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पिनाकिनी, पलार, कैग, वेल्लूर और ताम्रपर्णी प्रधान हैं। अलावा इनके घाटगिरिमाला और अन्यान्य पर्वतोंसे बहुतसी छोटी छोटी स्रोतस्विनी निकल कर इधर उधर वह गई हैं। पर्वतोंमें पूर्व और पश्चिमघाटश्रेणी, नीलगिरि, आनमलय, पलनी, पालघाट और सेरवार गिरिमाला उल्लेखनीय हैं। आनमलय शैलश्रेणीका आनमुड़ी शृङ्ग (८८५० फुट) तथा नीलगिरिका दोदावेत्ता शिखर (८७६० फुट) दक्षिण भारतकी पर्वतमालाका सबसे ऊँचा शिखर है।

पलिकाट ह्रद ही सबसे बड़ा ह्रद है। वह उत्तर-दक्षिणमें ३७ मील विस्तृत है। मध्यदेश भागका सभी वाणिज्यद्रव्य इसी ह्रद हो कर मान्द्राज नगर और उत्तर-दिग्वर्त्ती प्रदेशोंमें जाता है। कनाड़ा, मलवार और त्रिवांकुड़-समुद्रके किनारे परके पहाड़ोंसे निकली हुई प्रखर स्रोतवाली नदियोंके साथ समुद्रस्रोतके घात-प्रतिघातसे बहुतसे छोटे छोटे ह्रद वन गये हैं। इनमें कोचीनका ह्रद सबसे बड़ा है। इस ह्रदके दक्षिणसे एक नहर निकल कर कुमारिका अन्तरीप तक चली गई है।

खनिज पदार्थोंमें विभिन्न जातिके पत्थर, कोयले, लोहे, सोने आदिकी खान यहांके विभिन्न जिलोंमें पाई जाती हैं। सालेम जिलेमें वढ़िया लोहे, वैनाड़ और कोलारमें सोने, मद्राचल और दमगुड़ेम नामक स्थानमें कोयलेकी खान है। अलावा इसके नीलगिरि और बेल्लरीमें माङ्गनिज, पूर्वघाट पर्वत पर ताँवा, मदुरामें चांदी और रसाञ्जन, कावेरी नदीकी उपत्यकामें पन्ना और उत्तर सरकारके स्थानविशेषमें हीरा और अकीक मानिक पाया जाता है। वन्यविभागमें शाल और महोगनी वृक्ष ही अधिक है। वनविभागसे गवर्मेण्टको काफी आमदनी है।

मान्द्राजविभागका इतिहास समग्र दाक्षिणात्यके इतिहासके साथ जड़ा हुआ है। यथार्थमें द्राविड़जातिका प्रकृत इतिहास ले कर ही इस प्रदेशका इतिहास वना है। किन्तु उपयुक्त इतिहासकारके अभावमें वे सव घटनाएँ धारावाहिकरूपमें लिपिवद्ध नहीं हुई। यह जाति किस प्राचीन समयमें यहां आई थी उसका कोई प्रमाण नहीं मिलता तथा किस जातिके साथ इनका निकट सम्वन्ध था, वह भी आज तक मालूम नहीं हुआ है।

प्रत्नतत्त्वविद्गण अनुमान करते हैं, कि रामायणोक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राक्षसराज रावणका नाश करनेके लिये रामचन्द्रने जिस बानरकुलकी सहायता ली थी सम्भवतः द्राविड़ लोग ही उस बानर जातिके रूपमें कल्पित हुए हैं। इस अनार्य जातिकी—उनकी आकृति प्रकृति देख कर—बानरवंशसम्भूत कह कर श्लेषोक्ति करना असङ्गत प्रतीत होने पर भी सभ्यतम रामचन्द्रके अनुचरोंके निकट निकृष्टता-सम्पादन करना ही उनका उद्देश्य था। जो कुछ हो, रामचन्द्रके शुभागमनसे इस देशकी अनार्य द्राविड़ जाति हिन्दूधर्ममें दीक्षित हुई थी, ऐसा अनुमान किया जाता है। इसके सिवा द्राविड़ जातिकी प्राचीनताका प्रमाण और कुछ भी संग्रह नहीं किया जा सकता।

इसके बाद यहां बौद्धधर्मस्रोत बहने लगा। बौद्धपरिव्राजकोंने दाक्षिणात्यमें जो प्रभाव फैलाया था उसका विवरण दूसरी जगह दिया गया है।

बौद्धधर्म देखो।

वर्त्तमान ऐतिहासिकयुगमें मुसलमानी अमलदारोंके बाद यहां महाराष्ट्र जातिका अभ्युदय हुआ था। विभिन्न समयमें विभिन्न राजाओंके शासनकालमें यहां धर्म और शासनकार्यका परिवर्त्तन होने पर भी यहांकी प्रचलित तामिल और तेलगूभाषामें कोई हेरफेर नहीं हुआ। इससे साफ साफ मालूम होता है, कि द्राविड़ जाति यहां बहुत पहलेसे रहती आई थी।

यद्यपि यहांकी राजकीय घटनावलीका कोई धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता, तो भी इतना जरूर कहा जा सकता है, कि प्राचीन भारतीय इतिहासकी घटना दक्षिण भारतमें ही घटी थी वे सब घटनायें सचमुच ही बहुत विस्मयकर थीं। दाक्षिणात्य देखो।

विभिन्न देशीय राज-इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि मलवार उपकूल दाक्षिणात्यके बाणिज्यभाण्डाररूपमें गिना जाता था। राजा सलोमनके शासनकालमें तथा उनके बाद तामिल नामक भारतीय पण्यद्रव्योंकी यूरोपमें बहुत प्रसिद्धि थी। सिरियावासी ईसाई और अरब देशके मुसलमान वाणिज्य करनेकी इच्छासे बहुत पहलेसे ही दाक्षिणात्यके पश्चिम उपकूलमें आ कर बस गये थे। उनके वंशधर आज भी मिश्रधर्मी हो कर मलवार और लिवांकुड़ प्रदेशमें वास करते हैं। कोचीनमें यहूदियोंका उपनिवेश-स्थान भी कई सदी पहले हुआ था।

भारतीय वाणिज्य-लोलुप पुर्त्तगीज सौदागरोंने इस मलवार उपकूलमें आते ही आशानुरूप पण्यद्रव्य संग्रह कर लिया था। पुर्त्तगीज देखो।

इसके बाद बहुत विघ्न बाधाओंको झेलते हुए अङ्गरेजोंने करमण्डल उपकूलमें अपनी गोटी जमाई। यहां क्लाइवके बुद्धिकौशलसे फरासी प्रतिनिधि डुप्लेकी राज्यलाभकी आशा पूरी न होने पाई। फिर सर आयरकूटकी अध्यर्थ कूटनीति, हैदरकी अदम्य वीरता, टीपू सुलतानकी जिघांसा और वीरवर वेलिङ्गटनके जयप्रवण-जीवनकी कार्यपरम्परा दिखाई देती है। सच पूछिये तो उन्हीं सब घटनाओंके बल अङ्गरेजोंने दाक्षिणात्यमें आधिपत्य फैलाया था। १८०६ ई०के वल्लूरविद्रोहके बाद मान्द्राजमें और कोई घटना न घटी।

इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है, कि इङ्गलैण्डकी सर्वदमन राजशक्ति द्वारा मान्द्राजमें शान्ति स्थापित होनेसे पहले दक्षिण भारतमें और कभी भी एकच्छत्राधिपतिका शासन नहीं था। कुछ समयके लिये एकमात्र विजय नगरके हिन्दूराजाओंने यहां सर्वजनीन राजशक्ति फैलाई थी। किन्तु दुरारोह गिरिसङ्कट तथा उस पर्वतवासी दुर्द्धर्ष जातिके आक्रमणसे उनका साम्राज्य नष्टप्राय हो गया था।

दक्षिण भारतके प्राचीनतम इतिहासका पर्दा उठानेसे हम लोग देखते हैं, कि यह प्रेसिडेन्सी बहुतसे छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त थी। उनमें एकके अभ्युत्थानसे दूसरेका अधःपतन हुआ था। पाश्चात्य ऐतिहासिकोंने जिस तामिलप्रदेशको द्राविड़ बतलाया है, वह भी एक समय पाण्ड्य, चेर और चोलराज्यमें विभक्त था।

मेगेस्थेनिस आदि भारत भ्रमणकारी ग्रीकवासियोंके भ्रमणवृत्तान्तसे मालूम होता है, कि कलिङ्ग, अन्ध्र और पाण्ड्य-राज्य उस समय दक्षिण भारतमें बहुत बढ़ा बढ़ा था। वह अन्ध्रराज्य वर्त्तमान मान्द्राज-प्रेसिडेन्सीके उत्तर तथा कलिङ्गराज्य समुद्रके किनारे बसा हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

था। किंतु उन प्रभावशाली तीनों राज्योंकी विस्तृति कहां तक थी, ठीक ठीक मालूम नहीं।

अन्ध्र, कलिङ्ग और पाण्ड्य देखो।

बौद्ध-सम्राट अशोकके शासनकालमें हम लोग चोल और चेर (केरल) राज्यका प्रभाव देखते हैं। सम्भवतः उन दोनों सामन्त राज्योंने पाण्ड्यराज्यकी अधीनता तोड़ कर स्वाधीनता ध्वजा फहराई थी।

चोल और केरल देखो।

उसके बाद पल्लवराजवंशका अभ्युदय हुआ। उन्होंने मान्द्राजके समीप एक राजधानी बसा कर महाप्रभावशाली एक विस्तीर्ण साम्राज्यकी स्थापना की थी। प्रबल प्रतापी पल्लवोंके हाथसे कलिङ्ग और अन्ध्रराजवंशका अधःपतन हुआ। पल्लववंशके बाद भारतका पूर्वी उपकूल छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त हो गया था।

पल्लव देखो।

पल्लवराजवंशका सौभाग्यसूर्य जब मध्यगगनमें उगा हुआ था, तब पश्चिम चालुक्यराजने चोल और पल्लवराज्य पर धावा बोल दिया। किन्तु चालुक्य-सेनामें प्रबल पराक्रम रहते हुए भी उक्त दोनों राज्योंका कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। ७वीं शताब्दीमें पल्लवराजवंशके भाग्यने पलटा खाया। चालुक्य राजवंशसे वे परास्त हुए। तभीसे ले कर ११वीं सदी तक यहां पूर्व चालुक्यराजवंशका आधिपत्य रहा। इस समय काञ्चीपुरके पल्लवगण चालुक्योंके हाथसे परास्त हुए। शेषोक्त चालुक्य राज दाक्षिणात्यमें सात पागोडा बना कर अपनी वंशकीर्त्तिको अचल कर गये हैं। पीछे इन दाक्षिणात्यवासी पल्लवोंने फिरसे चालुक्योंको भगा कर अपनी राजशक्तिको अक्षुण्ण रखा।

११वीं शताब्दीमें चोलराज्य विशेष समृद्धिशाली हो गया। चोलराजने अपने बाहुबलसे दक्षिणस्थ पाण्ड्य राजवंश, केरलके गङ्गवंश तथा सिंहलराजको अपने अधीन कर लिया था। धीरे धीरे उन्होंने पूर्व चालुक्य वंशके अधिकृत उड़ीसा तक तथा पल्लवराज्यके कुछ अंशोंको अपने राज्यमें मिला लिया।

इस प्रकार चालुक्यवंशका अधिकृत विस्तृत राज्य धीरे धीरे हाथसे जाता रहा। फिर १३वीं सदीमें मान्द्राजके उत्तरका समूचा चोलराज्य छोटे छोटे सामन्तराज्योंमें विभक्त हो गया। वे सब सामन्तराजगण एक तरह स्वाधीन भावसे ही राज्यशासन करते थे। वे लोग आपसमें रात दिन युद्धमें उलझे रहते थे। मुसलमान राजाओंने अच्छा मौका देख कर दाक्षिणात्य पर चढ़ाई कर दी। इधर जिस प्रकार मुसलमान लोग दक्षिण-भारतमें अपनी प्रतिष्ठा जमानेके लिये बद्धपरिकर हुए थे, उधर उसी प्रकार होयसाल बल्लालवंशीय राजगण चोल और केरल राजाओंको राज्यभ्रष्ट करके पाण्ड्य और गङ्गराज्यमें अपना प्रभाव फैला रहे थे। १४वीं शताब्दीके आरम्भमें हम दाक्षिणात्यके विभिन्न राजवंशका इस प्रकार परिचय पाते हैं:—भारतके सबसे दक्षिणमें एकमात्र पाण्ड्य राजवंशका प्रभाव फैला हुआ था। तञ्जोर और मान्द्राज-प्रदेशमें डूबता हुआ गौरव रवि क्षीण ज्योति दे रहा था। प्रायोद्वीपके मध्यांशमें प्रतापान्वित होयसाल बल्लालोंने राजशक्तिको दृढ़ कर रखा था; किन्तु उनके राज्यके उत्तर अराजकता सम्पूर्णरूपसे फैली हुई थी। बल्लाल देखो।

इन सब प्राचीन राजवंशको उत्पत्तिके सम्बन्धमें वहांके राजोपाख्यानमें अलौकिक प्रवाद आरोपित हुए हैं। वे सब आख्यान विश्वासयोग्य नहीं होने पर भी उन सब राजाओंके उत्कीर्ण शिलाफलक, ताम्रशासन और देवमन्दिरादिमें भास्करकीर्त्तिके जो अपूर्व निदर्शन हैं वे उन अतीत राजवंशधरोंके कार्यकलापका प्रकृत परिचय देते हैं।

मुसलमानोंके अभ्युदयसे ही यहांका धारावाहिक इतिहास मिलता है। दिल्लीके खिलजीवंशीय २य सम्राट् अलाउद्दीनके विख्यात सेनापति मालिक काफुरने होयसाल बल्लालवंशीय राजाको परास्त कर दाक्षिणात्य फतह किया। उन्होंने अपने बाहुबलसे कुमारिका अन्तरीप तकके समस्त भूभागोंको लूटा और पूर्व उपकूलस्थ जितने सामान्तराज थे उन्हें परास्त कर मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार कराई थी। मालिक काफुर देखो।

मुसलमानी सेनाके दाक्षिणात्यसे चले जाने पर विजयनगरके हिन्दूराजवंशने मस्तक उठाया। उन्होंने दाक्षिणात्यके दूसरे दूसरे हिन्दूराजाओंको परास्त कर तुङ्ग-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भद्रके किनारे राजधानी बसाई थी। जब उनका सौभाग्य-सूर्य मध्य गगनमें उगा हुआ था, उस समय वे प्रायः समस्त मान्द्राजप्रेसिडेन्सीका शासन करते थे।

विजयनगर देखो।

विजयनगरराजवंश दो सदी तक प्रबल प्रतापसे राज्यशासन करके १५६५ ई०में दाक्षिणात्यके चार मुसलमानराजवंशकी मिलित शक्तिसे अधःपतनको प्राप्त हुआ।

अफगान मुसलमानोंके बाद मुगल और महाराष्ट्र-शक्तिकी दाक्षिणात्यमें तूती बोलने लगी। इस समयसे दाक्षिणात्यके द्राविड़ीय राजवंशोंके जातीय जीवनका अवसान हुआ।

मुगल बादशाह औरङ्गजेबने कुमारिका तक अपना अधिकार फैला तो लिया था, पर वे यथार्थमें उन जीते हुए प्रदेशोंको अपने साम्राज्यमें न मिला सके थे। दाक्षिणात्यसे औरङ्गजेबके लौटने पर वहांके सभी राजे एक एक कर स्वाधीन हो गये। सम्राट्के दोर्दण्ड प्रतापसे भय खा कर भी उन्होंने अपने अधिकृत प्रदेशोंका स्वाधीनभावसे शासन करना छोड़ा नहीं। यहां तक, कि बादशाहके प्रतिनिधि निजाम भी अपनेको स्वाधीन बतलानेसे बाज नहीं आये। सामन्तप्रधान कर्णाटकके नवाब आर्काट राजधानीमें रह कर स्वाधीनभावसे राज्यशासन करते थे। तञ्जोरमें शिवाजीके एक वंशधरने राजपाट बसाया था। पाण्ड्यराज्यमें मदुराके नायकवंशका प्रभुत्व था। मध्य-अधित्यकाभूमिमें एक हिन्दू-सरकार अपनी धाक जमानेकी कोशिश कर रहे थे। आगे चल कर यही स्थान महिसुरराज्य नामसे बजने लगा। राजनीतिकुशल डुप्लेने जब देखा, कि दाक्षिणात्यके राजे मुगलशक्तिकी अधीनता स्वीकार करनेको राजी हैं, तब उन्होंने दाक्षिणात्यमें यूरोपीय प्रभाव फैलाना चाहा था।

पुर्त्तगीज नाविकप्रधान भास्को-डि-गामा १४९५ ई०-की २०वीं मईको कालिकट पहुंचे। प्रायः एक सदी तक पुर्त्तगीजोंने मलबार-उपकूलका वाणिज्य-प्रवाह अपने हाथसे परिचालित किया था। पुर्त्तगीज प्रभावके विलुप्त होनेसे १७वीं सदीके प्रारम्भमें ओलन्दाजोंने पुर्त्तगीजोंकी टूटी फूटी कोठी आदिको ले कर वाणिज्य चलानेकी चेष्टा की। उनके बाद १६१६ ई०में अंगरेज सौदागरोंने कालोकट और काङ्गनूर आ कर वाणिज्य व्यवसाय चलानेके लिये कोठी खोली। १६८३ ई०में तेल्लीचेरीमें अंगरेजोंका पश्चिम उपकूलका वाणिज्य भाण्डार स्थापित हुआ। १७०८ ई०में कोठीकी रक्षाके लिये उन्हें कुछ जमीन मिली थी। अंगरेजोंकी उन्नतिके साथ साथ पुर्त्तगीजोंने गोआ प्रदेशमें और ओलन्दाजोंने स्पाइस द्वीपमें जा कर सांसारिक विप्लवसे हाथ खींच लिया।

१६११ ई०में अंगरेजोंने मछलीपत्तन बन्दरमें तथा कृष्णा जिलेके पेट्टपोली (निजामपत्तन) नगरमें आ कर करमण्डल उपकूलका वाणिज्यांश ग्रहण किया। पीछे उन्होंने नेल्लूर जिलेके अरमागाँव बन्दरमें कोठी खोली। १६३९ ई०में चन्द्रगिरिके हिन्दूराजासे अनुमति ले कर अंगरेजोंने मान्द्राजमें एक और कोठी खोली थी।

१६७२ ई०में फरासियोंने पुंदीचेरीको खरीदा। उसके दो वर्ष बाद उन्होंने यहां एक उपनिवेश बसाया था। करमण्डल उपकूलमें दोनों विभिन्न वणिक्सम्प्रदाय शान्त भावसे वाणिज्य व्यवसाय चलाते थे, उनमेंसे किसीकी भी राज्य पानेकी इच्छा न थी।

१७४१ ई०में यूरोपमें अष्ट्रियाका सिंहासन ले कर अंगरेज और फरासीसीमें झगड़ा खड़ा हुआ। उस सूत्रसे भारतमें भी अंगरेज और फरासिसी आपसमें लड़ने लगे। १७४६ ई०में ला बोर्दोनेने मान्द्राजके सेनावास पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया। सेण्ट डेविड दुर्गको छोड़ कर और सभी स्थान अंगरेजोंके हाथसे जाते रहे। कर्णाटकके नवाब अङ्गरेजोंकी ओरसे फरासियोंके साथ लड़ने लगे। किन्तु सेण्ट थोमीके युद्धमें हार खा कर वे भाग गये।

१७४८ ई०में आयलाशापले (Aix-la chapelle)की सन्धिके अनुसार भारतमें फरासी और अंगरेजोंके बीच मेल हो गया। मान्द्राज अंगरेजोंको लौटा दिया गया। किन्तु इसी समयसे दोनों जातिके मध्य जातीय विद्वेषका सूत्रपात हुआ। एक दूसरेका दोष ढूढने लग गया। खण्डराज्योंका सिंहासनाधिकार ले कर दोनोंमें फिरसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लड़ाई छिड़ गई। अंगरेजोंको कर्णाटक और तञ्जोरके राजासे सहायता मिली थी। उधर फरासियोंने भी अपने निर्वासित एक राजपुरुषको हैदराबाद सिंहासन पर बिठा कर अपने पक्षको मजबूत कर लिया था।

इस प्रकार असंख्य विप्लव और षड़यन्त्रसे दाक्षिणात्यका इतिहास विशेष रूपसे परिवर्त्तित हुआ था। अन्तमें फरासी-राजनैतिक डुप्लेका अभ्युदय हुआ। वे कुछ समयके लिये दाक्षिणात्यके विभिन्न देशीय राज्योंके राजकीय मध्यस्थ हुए थे। विना उनकी सलाहके कोई भी देशी राजा स्वेच्छासे किसी कार्यमें हाथ नहीं डाल सकते थे। जब उनका सामर्थ्य और सौभाग्य शीर्ष-स्थान पर पहुंचा, उस समय इङ्गलैण्डके वीरपुत्र क्लाइव इष्ट-इण्डिया-कम्पनीके कर्मचारिरूपमें मान्द्राजमें रहते थे। आर्कटके भीषण युद्धमें सेनापतित्व ग्रहण कर उन्होंने जैसी वीरतासे अङ्गरेजोंकी रक्षा की थी कि उसी से उनका नाम इतिहासमें मशहूर हो गया है।

क्लाइवकी इसी विजयसे भारतीय इतिहासका परिवर्त्तन हुआ था। डुप्लेके कूटनीति कौशलसे ही इतने दिनों तक फरासीका अधिकार दाक्षिणात्यमें निष्कण्टक रहा। युद्धके बादसे ही अंगरेजी कौशलसे उनके छक्के छूट गये। डुप्लेके बुद्धिविपर्ययको ही इस अनिष्टका मूल जान कर फरासी-सभाने उन्हें स्वदेशमें बुला लिया। लाली और बूसी नामक सेनापति उन के पद पर भारतवर्ष आये। युद्धविद्यामें विशेष पारदर्शी होने पर भी वे डुप्लेकी तरह नीतिज्ञ नहीं थे। इसलिये वे विशेष दक्षतासे राजकार्य नहीं चला सके।

१७६० ई०में कर्नल कूटने वन्दिवासके युद्धमें लालीको हराया। अब दाक्षिणात्यमें अंगरेजोंका मुकाबला करनेवाला कोई भी न रह गया। इस युद्धके बादसे ही फरासी-शक्तिका ह्रास होने लगा। दूसरे वर्ष महिसुरराजसे सहायता न ले कर ही पुंदिचेरी पर अधिकार कर लिया। तभीसे देशीय राजाओंके हृदयसे फरासीकी अनधिकार चर्चाका भय जाता रहा।

इसके बाद यद्यपि अंगरेजोंको यूरोपीय शक्तिके साथ युद्ध नहीं करना पड़ा, तथापि महिसुरके उन्मत्त मुसलमानोंके संघर्षसे उन्हें विशेष कष्ट भुगतना पड़ा था। महिसुरराज हैदर और उनके लड़के टीपू सुलतानके साथ अंगरेजोंका जो युद्ध हुआ उसमें अंगरेजोंको नाकोदम आ गया था। उस समय उन्होंने महिसुरसे ले कर कर्णाटक तकके सभी प्रदेशों और अंगरेजी दुर्गके सम्मुख प्रदेशोंको लूटा। १७६९ ई०में हैदरके साथ अङ्गरेजोंका प्रथम युद्ध आरम्भ हुआ। २य युद्धमें अंगरेज-सेनापति बेली हैदरके हाथ काञ्चीपुरके निकट मारा गया। इस समय टीपूने मलवार प्रदेशसे अंगरेजोंको कुछ दिनके लिये मार भगाया।

काञ्चीपुरकी वह विपद्वार्त्ता सुन कर बङ्गालके शासनकर्त्ता वारेन हेष्टिंगस्ने सेनापति कूटको मान्द्राज दलबलके साथ भेजा। पोर्टोनभोके युद्धमें दोनों पक्षने वीरताकी पराकाष्ठा दिखलाई थी। आखिर हैदर पराजित हो कर रणक्षेत्रसे भागा। तभीसे हैदरने फिर कभी भी अंगरेजोंके विरुद्ध अस्त्र नहीं उठाया। १७८२ ई०में हैदरके मरने पर उसका लड़का टीपू सुलतान राजतख्त पर बैठा। इसके दो वर्ष बाद मङ्गलूरकी सन्धिके अनुसार जिसने जो देश लिया था, वापिस कर दिया। १७९०ई० तक किसी भी पक्षने सन्धि नहीं तोड़ी। इसके बाद टीपू सुलतानने जब त्रिवांकुड़को लूटा, तब लार्ड कार्नवालिसने दलबलके साथ उनके विरुद्ध यात्रा कर १७९१ ई०में बङ्गलूर दुर्ग अधिकार कर लिया। दूसरे वर्ष टीपू सुलतान फिर भी पराजित हो कर अपना आधा राज्य खो बैठा। १७९९ ई०में वह फरासियोंके साथ षड़यन्त्र करके अंगरेजोंके विरुद्ध खड़ा हो गया। श्रीरङ्गपत्तन अवरोधके समय सुलतानकी मृत्यु हुई। यही इतिहासमें ४र्थ महिसुरयुद्ध कहलाता है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि १९वीं शताब्दीके आरम्भसे यहां और किसी प्रकारका युद्ध नहीं हुआ। ये सब प्रदेश अंगरेजोंके अधिकारमें रहने पर भी पलिगार-सरदार स्वाधीन होनेकी कोशिश कर रहे थे। पश्चिम उपकूलमें दुर्द्धर्ष नायर और माप्पिला जातिके विद्रोहसे दोनों पक्षमें बेहद खूनखराबी हुई थी। उत्तरसीमान्तवर्त्ती गञ्जाम और विशाखपत्तनके पहाड़ी प्रदेशवासी भी बागी हो गये। १८३६ ई०में गुमसुरके सरदारके बागी होने पर उसका राज्य छीन लिया गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस समय खन्दजातिमें नरवलिकी प्रथा प्रचलित थी। अंगरेजोंने उसे बंद कर दिया। १८७६ ई०में उत्तर-सीमान्तवर्त्ती रामपा प्रदेशके अधिवासी अंगरेजोंके विरुद्ध खड़े हुए। अंगरेजोंकी गोलीसे उनमेंसे कितने यमपुरको सिधारे।

अंगरेज सौदागरोंने किस प्रकार धीरे धीरे मान्द्राज प्रेसिडेन्सीके बहुतसे स्थानों पर अधिकार किया था नीचे उसका संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।—१७६३ ई०में इष्ट इण्डिया कम्पनीने अर्काटके नवाबसे मान्द्राज नगरके चारों ओरका भूभाग प्राप्त किया। वह भूभाग अभी चेङ्गलपत् जिला वा कम्पनीकी जागीर नामसे मशहूर है। १७६५ ई०में मुगल-बादशाहने कम्पनीको गञ्जाम, विशाखपत्तन, गोदावरी और कृष्णा ज़िला (उस समय उत्तर-सरकार नामसे प्रसिद्ध था) दे दिया। किन्तु अंगरेजराजने अपनी राजशक्तिको अविचलित रखनेके लिये निजामको ७ लाख रुपये दे कर उनसे उक्त संपत्तिकी सनद लिखवा ली। अंगरेजोंने यद्यपि यहांसे फरासियोंको मार भगाया था, फिर भी १८२३ ई०के पहले वे यहांका पूर्ण आधिपत्य लाभ न कर सके थे। १७६२ ई०में टीपू सुलतान बड़ामहल, मलवार, डिण्डिगल, पलनी और कंगुण्डी तालुक अंगरेजोंको समर्पण करनेके लिये बाध्य हुए। १७६६ ई०में टीपूके मरने पर महिसुर राज्यके पुनर्गठनके समय कोयम्बतोर, नीलगिरि, सलेम और दक्षिण कनाड़ा जिलेका कुछ अंश अंगरेजोंके हाथ लगा। उसी साल तञ्जोरराजने राज्यशासन करना छोड़ दिया था, उनके वंशधर १८५५ ई० तक नाम मात्रको राजा रहे। १८०० ई०में साहाय्यकारी सेनादलकी रक्षाके लिये हैदराबादके निजामने अनन्तपुर, कर्नल, वेल्लरी और कड़ापा जिला अंगरेजोंको दिये। दूसरे वर्ष उन्होंने नेल्लूरसे तिन्नेवली तक करमण्डल उपकूलस्थ कर्णाटक-नवाबके अधिकृत राज्यको अंगरेजोंके हाथ समर्पण किया। उस वंशके अन्तिम नवाब १८५५ ई०में परलोकवासी हुए। राज्यशासनमें उन्हें किसी प्रकारकी क्षमता न थी, नाममात्रको वे नवाब थे। उस वंशके प्रधान व्यक्ति 'नवाब आव-अर्काट' उपाधिसे भूषित तथा मान्द्राज गवर्मेण्ट द्वारा विशेषरूपसे सम्मानित हुए। १८३६ ई०में कर्नूलके नवाब अपने उच्छृङ्खल-शासनके दोषसे राज्यच्युत हुए। उनका राज्य अंगरेजीराज्यमें मिला लिया गया।

देशीय सामन्तराजाओंमें महिसुरराज सबसे बढ़े चढ़े हैं। १८३१ ई०में अंगरेजराजने महिसुरके शासनकी बागडोर अपने हाथ ली थी। किन्तु १८८१ ई०में वह जनपद पुनः देशीय हिन्दू राजाको लौटा दिया गया। बिना अंगरेज कर्मचारीकी सलाहके राजा शासनसम्पर्कीय कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं। त्रिवाङ्कोड़ और कोचिनका हिन्दूराज्य अंगरेजोंकी देखरेखमें परिचालित होता है। १८०८ ई०में उक्त राज्यके दोनों सामन्त विद्रोही हुए थे। विद्रोहदमनके बाद यहां और किसी प्रकारका उपद्रव नहीं हुआ। पदुकोटाके तोण्डिमान सरदारने दाक्षिणात्यके युद्धमें अङ्गरेजोंकी बड़ी सहायता की थी। तभीसे यह राज्य अंगरेजोंके साथ मित्रतासूत्रमें आबद्ध है। वङ्गनपल्ली और सन्दूर राज्य भी अंगरेजोंकी देखरेखमें परिचालित होता है। जयपुर, विजयनगरम्, पारला, किमेदी, पिट्टपुर, वेङ्कटगिरि, रामनाथ और शिवगङ्गा आदि स्वाधीन सामन्तराज्य तो नहीं हैं, पर प्रत्येकको एक विस्तृत जमींदारी कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं।

इस प्रेसिडेन्सीमें गञ्जाम, विशाखपत्तन, गोदावरी, कृष्णा, नेल्लूर, कड़ापा, कर्नूल, बेल्लरी, अनन्तपुर, चेङ्गलपत, उत्तर और दक्षिण अर्काट, तञ्जोर, त्रिचिनपल्ली, मदुरा, तिन्नेवल्ली, सालेम, कोयम्बतोर, नीलगिरी, मलवार, दक्षिणकनाड़ा और मान्द्राज शहर नामक २२ जिला; त्रिवांकुड़, कोचिन, वङ्गनपल्ली, पदुकोटा और सन्दूर नामक पांच सामन्त राज्य तथा गञ्जाम, विशाखपत्तन और गोदावरीका एजेन्सी विभाग है।

प्रसिडेन्सीकी जनसंख्या ४१४००००० है। इनमें निम्बुरी ब्राह्मण और क्षत्रियगण उच्च श्रेणीके हैं। अलावा इसके शेठी, मारवाड़ी, आदि वैश्यगण मध्य श्रेणी तथा बेलमा, बेल्लालर, नायर, नड़वर, इदैयर, गुल्ला, नायक, कोनकन, कुशावन, माला, होलिया, पलियार, माप्पिला, शवर, तोड़ा, करुचर, वृज्जार, लंबड़ि आदि नाना शूद्र और अनार्य जातिका वास है। वे लोग साधारणतः तामिल, तेलगू, मलयालम, कनाड़ी,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुलु और मराठी भाषामें बोलचाल करते हैं। द्राविड़ीय अनार्य जातिमें बहुतेरे हिन्दू वा बौद्धधर्मको ग्रहण कर बहुत कुछ हिन्दू जैसे आचारसम्पन्न हो गये हैं। हिन्दू-मात्र ही शैव वा वैष्णव हैं। पहाड़ी जातिमेंसे अधिकांश लिङ्गायत हैं। यहां बहुत पहलेसे ही ईसाधर्मका प्रचार चला आ रहा है। यहांके सिरीय मिसनरियोंका कहना है, कि एपसल सेण्ट टामससे यहां ईसाधर्मका प्रचार हुआ। कोचीनमें प्राप्त एक आसिरीय भाषामें लिखित ८वीं शताब्दीका बाइबिल-ग्रन्थ केम्ब्रिजके फिटज विलियम लाइब्रेरीमें रखा हुआ है। लिटल माउण्ट नामक पहाड़ परके प्राचीन गिरजेमें जो पह्लवी भाषामें उत्कीर्ण एक शिलालिपि पाई गई है उससे मालूम होता है, कि मनिकोय वा नेष्टोरिय ईसाइयोंने कई शताब्दी पहलेसे यहां उपनिवेश बसा रखा था।

महात्मा फ्रान्सिस जेभियर, नाविलियस, वेसकी, स्कार्टिज, जिनिकी, स्कूलटज, सर्टोनियस, ओफाविक्रम आदि प्रसिद्ध धर्मप्रचारकोंके यत्नसे यहां ईसाधर्मका विशेष प्रचार हुआ था। लूथर मतानुयायी दिनेमारगण १७२८ ई०में तथा अंगरेज १८१४ ई०में यहां पहले पहल धर्मप्रचारार्थ पहुंचे थे। पीछे विभिन्न साम्प्रदायिक स्काच, अमेरिकन और अंगरेजमिसनरी आये।

धान सरसों आदि अनाजोंके सिवा यहां अंगरेज कर्मचारियोंके यत्नसे काफी, चाय, तमाकू, सिनकोने आदिकी खेती होती है। १८६५ ई०में सैदापेट नगरमें गवर्मेण्टकी आढ़त खोली गई। यहां कृषिकार्यकी उन्नतिके लिये कृषिविद्याकी शिक्षा दी जाती है।

१८७५-७६ ई०में अनावृष्टिके कारण प्रेसिडेन्सी भरमें दुर्भिक्ष पड़ा था। १८७७ ई०में कृष्णानदीके किनारेसे कुमारिका अन्तरीप तकके सभी जिलोंमें दुर्भिक्षका प्रबल प्रकोप दिखाई दिया था। तुङ्गभद्राके दक्षिण बेल्लरी, अनन्तपुर, कर्नूल, कड़ापा, नेल्लूर, उत्तर अर्काट और सलेम जिलेमें दुर्भिक्ष राक्षसने पैशाचिक प्रतिमूर्त्ति धारण कर वीभत्स नृत्य किया था। इस दुर्भिक्षसे सैकड़ों मनुष्य अनाहार यमलोकको सिधारे थे।

जलाभाव दूर करनेके लिये अंगरेजोंने नदी आदिसे नहर काट निकाली। पीछे १८९३ ई०में पेल्लूर श्री-वैकुण्ठ, सङ्गम, पलार और पेलन्तोरई नामक बांध तथा कृष्णा, कावेरी और कर्नूलकी विस्तृत नहर काटी गई। अलावा इसके डेम्ब्रम्बक्कम और वरुड़की दिग्गी भी स्थानीय लोगोंके उपकारार्थ बनाई गई थी।

अनाजको छोड़ कर यहां नील, कइवा, सिनकोना और लवण तय्यार किया जाता है। मछलीपत्तन, मान्द्राज और मङ्गलूरमें सूतोके अच्छे अच्छे कपड़े बनते हैं। वाणिज्यकी सुविधाके लिये यहां रेलवे लाइन तमाम दौड़ गई है। पहले जहाज द्वारा मान्द्राजका वाणिज्य-व्यवसाय बङ्गालके साथ चलता था। अभी इष्टकोष्ट, साउथ इण्डियन, महिसुरस्टेट, नीलगिरि रोधी, मराठा-सिसटम, मङ्गलूर-गुत्ती आदि रेलवे लाइनके खुल जानेसे यहांका पण्यद्रव्य कलकत्ता, बम्बई आदि भारतकी विभिन्न राजधानीमें भेजा जाता है।

१६३९ ई०में अंगरेज सौदागरोंकी कोठी जब तक नहीं खोली गई थी, तब तक मान्द्राज यवद्वीपके बण्टम-के कार्याध्यक्षोंके अधीन था। १६५३ ई०में मिः आरन बेकर यहांकी कोठीके अध्यक्ष थे। उसी साल जब मान्द्राज प्रेसिडेन्सी रूपमें गिना जाने लगा, तब बेकर साहब यहांके प्रथम गवर्नर नियुक्त हुए। १६५८ से १६८१ ई० तक बङ्गालकी कोठी मान्द्राजके अधीन थी। नवाब सिराजुद्दौलाकी अन्धकूपहत्याके समय क्लाइव और वाटसन मान्द्राजसे कलकत्ते आये थे।

मान्द्राज जबसे अंगरेजोंके अधिकारमें आया, तबसे जिन सब अंगरेज लाटोंने यहांका शासन किया था उनके नाम नीचे दिये गये हैं।

१	आरन बेकर	१६५३ ई० सन्
२	टामस् चेम्बर	१६५६ ,,
३	एडवर्ड विण्टर	१६६१ ,,
४	जार्ज फक्सक्रफट्	१६६८ ,,
५	विलियम लैंहरन	१६७० ,,
६	ग्रीन्साम माष्टर	१६७८ ,,
७	विलियम गिफोर्ड	१६८१ ,,
८	एलिहु एल	१६८७ ,,
९	नाथानिएल हिगिन्सन्	१६९२ ,,
१०	टामस् पिट्	१६९८ ,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

११	गाल्ष्टन् एडिसन	१७०६ ई० सन्
१२	एडमण्ड मण्टेग	१७०६ ,,
१३	विलियम फ्रेजर	१७०६ ,,
१४	एडवड हारिसन	१७११ ,,
१५	योसेफ कोलेट	१७१७ ,,
१६	फ्रान्सिस् हेष्टिस	१७२० ,,
१७	नाथानिएल ऐलविच	१७२१ ,,
१८	जेमस् मैक्रे	१७२५ ,,
१९	जार्ज मर्टन पिट्	१७३० ,,
२०	रिचार्ड वेन्योन्	१७३५ ,,
२१	निकोलस मर्स	१७४३ ,,

१७४६ ई०की १०वीं सितम्बरको मान्द्राज फरासियों-के अधिकारमें आया और फोर्ट सेण्ट डेभिडके सहकारी शासनकर्त्ता मिः जान हिण्डे कुछ समयके लिये यहांके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए।

२२	चार्ल्स फ्लोयर	१७४७ ई० सन्
२३	टामस सण्डार्स	१७५० ,,

आइला-सापलेकी सन्धिके बाद मान्द्राज अंगरेजों-को लौटा देने पर भी उसके चार वर्ष बाद अर्थात् १७५२ ई०की ५वीं अप्रैलको मान्द्राज नगरमें अंगरेज गवर्मेण्ट-का राजपाट प्रतिष्ठित हुआ था।

२४	लार्ड पिगट	१७५५ ई० सन्
२५	राबर्ट पल्क	१७६३ ,,
२६	चार्ल्स बुर्कियर	१७६७ ,,
२७	जोसिया डुप्रे	१७७० ,,
२८	अलेकसन्दर विञ्च	१७९३ ,,
२९	लार्ड पिगट (२य बार)	१७७५ ,,
३०	जार्ज ष्ट्राटन	१७७६ ,,
३१	जनहोयाइहिल	१७७७ ,,
३२	टामस् राम्बोल्ट	१७७८ ,,
३३	जान होयाइहिल (२य बार)	१७८० ,,
३४	चार्ल्स स्मिथ	१७८० ,,
३५	लार्ड माकार्टन	१७८१ ,,
३६	अलेकसन्दर डेभिड्सन	१७८५ ,,
३७	आर्किवल्ड काम्बेल K, B,	१७८६ ,,
३८	जान हालण्ड	१७८९ ,,
३९	एडवर्ड हालण्ड	१७९० ई० सन्
४०	मेजर जेनरल विलियम मिडोज्	१७९० ,,
४१	चार्ल्स और केलि	१७९२ ,,
४२	लार्ड होबर्ट	१७९४ ,,
४३	सेनाध्यक्ष जार्ज हारिस्	१७९८ ,,
४४	लार्ड क्लाइव	१७९८ ,,
४५	लार्ड विलियम बेण्टिङ्क	१८०३ ,,
४६	विलियम पेट्रि	१८०७ ,,
४७	जार्ज हिलारो वार्लो K, B.	१८०७ ,,
४८	सेनाध्यक्ष जान एवारक्रम्बि	१८१३ ,,
४९	राइट आनरेवल होग एलियट	१८१४ ,,
५०	टामस मन्रो *K, C, B,*	१८२० ,,
५१	हेन्रि सुलतान ग्रीमि	१८२७ ,,
५२	ष्टिफेन राम्बोल्ट लुसिंटन	१८२७ ,,
५३	फ्रेड्रिक् एडम *K. C, B.*	१८३२ ,,
५४	जार्ज एडवार्ड रसेल	१८३७ ,,
५५	लार्ड एलफिष्टन	१८३७ ,,
५६	मार्किस् आव् टुइडडेल *C, B,*	१८४२ ,,
५७	हेनरी डिकिन्सन	१८४८ ,,
५८	हेनरी पटिञ्जर G. C, B.	१८४८ ,,
५९	दानिएल एलियट	१८५४ ,,
६०	लार्ड हेरिस	१८५४ ,,
६१	चार्ल्स एडवर्ड ट्रिभेलियन *K, C, B,*	१८५९ ,,
६२	विलियम आम्ब्रोज मोरहेड	१८६० ,,
६३	हेनरी जार्ज वार्ड G,C,M.G.	१८६० ,,
६४	विलियम आम्ब्रोज मोरहेड (२य बार)	१८६० ,,
६५	विलियम टामस् डेनिसन *K, C, B.*	१८६१ ,,
६६	एडवर्ड मल्टबि	१८६३ ,,
६७	लार्ड नेपियर आव मार्चिष्टोन	१८६६ ,,
६८	अलेकसन्दर जान आर्बुथनाट *C, S, I.*	१८७२ ,,
६९	लार्ड होबर्ट	१८७२ ,,
७०	विलियम रोज राविन्सन	१८७५ ,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

७१	ड्यूक आव वाकिंहम और चान्दोस्	१८७५	ई० सन्
७२	राइट् आनरेवल विलियम पाद्रिक आदम	१८८०	„
७३	विलियम हाड्लष्टन *C.S.I.*	१८८१	„
७४	मनष्टुयार्ट एलफिंष्टन ग्राण्टडाफ् *C. I. E.*	१८८१	„
७५	आर बुर्क	१८८६	„
७६	गार्डिन् *C. S. I.*	१८९०	„
७७	लार्ड वियेनलक	१८९१	„
७८	सर ए, इ, हाव्लक्	१८९९	„
७९	लार्ड एमथिल	१९००	„
८०	जेम्स टामसन	१९०४	„
८१	गावरिल ष्ट्रोक्स	१९०६	„
८२	सर आरथर लावली	१९०६	„
		(अस्थायी)	
८३	सर टामस डेविड-गिवसोन कारमाइकेल	१९११	„
८४	सर मुरे हैमिक	१९१२	„
		(अस्थायी)	
८५	राइट आनरेब्ल वेरन पेण्टलैण्ड	१९१९	„
८६	सर ए. जी. कारडू	१९१९	„
		(अस्थायी)	
८७	राइट आनरेब्ल वैरन विलिङ्डन	१९१९	„
८८	सर सी. टोड हण्टर	१९२४	„
		(अस्थायी)	
८९	भाय-काउण्ट गोसेन	१९२४	„

१८२२ ई०में सबसे पहले सर टामस मनरोने विद्याशिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दिया। १८२६ ई०में १४ कलक्टरेट और ८१ तालुक स्कूल खोले गये। १७४० ई०में लार्ड एलेनवराने एक युनिवर्सीटी बोर्ड स्थापित किया और तदनुसार हाई स्कूल तथा कालेज खोले गये। बादमें राजमहेन्द्रीके सब-कलक्टर मि. जी. एन टायलरने वर्णाक्युलरकी उन्नतिके लिये नरसापुर तथा आस पासके तीन शहरोंमें एलिमेण्ट्री स्कूल खोले। १८५५ ई०में लोकल बोर्डकी देखरेखमें दो चार गाँवके बीचमें छोटे छोटे बच्चोंके लिये पाठशाला खोली गई। इस प्रकार दिनों दिन विद्याशिक्षाकी उन्नति होती गई। अभी सैकड़ों प्राइमरी, मिडिल और सेकेण्ड्री स्कूल, ६०० बालिका स्कूल तथा कितने ही हाई स्कूल, ५० कालेज, नीति, चिकित्सा, खनिजतत्त्वपूतविद्या (*Engineering*) कालेज, सैदापेट और राजमन्द्रीमें २ सरकारी ट्रेनिंग कालेज और ५५ शिल्पकालेज है। १८५७ ई०में मांद्राज-विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। मुसलमान लड़कोंके पढ़नेके भी स्वतन्त्र स्कल और कालेज हैं। इनमें आरकटके नवाब द्वारा १८५१ ई०में स्थापित मदरसा-इ-आजम; मैलापुर मिडिल और हारिस स्कूल, १८७२ ई०में स्थापित एलिमेण्ड्री स्कूल प्रधान है। स्कूलके अलावा कितने अस्पताल और चिकित्सालय हैं। प्रेसिडेन्सी भरमें ८६०१ सेना हैं जिनमें २७३१ गोरे और ५८७० देशी हैं। आवहवा कुल मिला कर अच्छी है। यहां गरम बहुत और जाड़ा कम पड़ता है।

२ उक्त प्रेसिडेन्सीका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० १३° ४′ उ० तथा देशा० ८०° १५′ पू० बङ्गालकी खाड़ीके किनारे अवस्थित है। इस नगरकी नामनिरुक्तिके सम्बन्धमें विभिन्न मत देखा जाता है। कोई कोई मण्डराज वा मण्डलराज शब्दसे, कोई माद्रासा शब्दसे मान्द्राज नामोत्पत्तिकी कल्पना करते हैं। फिर कोई कोई महाभारतोक्त मद्र वा माद्रदेशसे इस नामकी उत्पत्ति बतलाते हैं। नायक-सरदार चेन्नप्पोके नामसे इसका चेन्नपत्तन नाम हुआ है। उस समय लोग इसे मान्द्राजपत्तन भी कहते थे।

१६३९ ई०में अरमागाँव कोठीके अध्यक्ष मि० फ्रांसिस डेको विजयनगरराजवंशावतंस चन्द्रगिरिके अधिपति श्रीरङ्गराय लूसे वाणिज्य करनेके लिये जो भूमि मिली थी उसीके ऊपर वर्त्तमान मान्द्राज शहर बसा हुआ है। भूमि पा कर अंगरेज सौदागरोंने एक कोठी खोली और उसे सुरक्षित करनेके लिये चारों ओर दीवार खड़ी कर दी। तभीसे उस दीवारके बहिर्भागमें देशीय लोग बस गये।

१६५२ ई० तक यह वाण्टामके अध्यक्षके अधीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहा। १७०२ ई०में सम्राट् औरङ्गजेबके सेनापति दाऊद खाँने वर्षों इस नगरको घेरे रखा। १७४१ ई०में मरहठोंने मान्द्राज पर आक्रमण किया सही, पर कृतकार्य न हुए। १७४३ ई०में मान्द्राज दुर्गका संस्कार और आयतन परिवर्द्धित किया गया।

दाऊद खाँके आक्रमणसे पहले ही अंगरेज सौदागरोंने १६८४ ई०में नगरको दीवारसे घेरनेके लिये प्रजासे कर उगाहना शुरू कर दिया था। इस अयथा करसे वहांके सभी लोग विरक्त हो कर बागी हो गये। १६९० ई०में प्रजाको मुगलसेनापतिके आगमनकी आशङ्का सूचित कर राजी कर लिया और कर उगाहने लगे। उस करसे ब्लाक टाउन नगरका वहिर्भाग मिट्टीकी दीवारसे घेर दिया गया। १७०२ ई०में मुगलसेनाके हाथसे आत्मरक्षार्थ उस प्राचीरको दृढ़ करनेके लिये फिरसे कर उगाहा गया। उसके फलसे नगरके उत्तरी और पश्चिमी भागमें पक्केकी दीवार खड़ी की गई और उसमें ११ बुर्ज दिये गये। आज भी वह ध्वंसावशिष्ट प्राचीर दिखाई देता है।

१७४६ ई०में फरासी सेनापति ला-बोर्डोने गोला बरसा कर दुर्गको दखल किया। उसके दो वर्ष बाद आइलासापलेकी सन्धिके अनुसार मान्द्राज दुर्ग अंगरेजोंके हाथ आने पर भी १७५२ ई० तक उन्हें यहांका शासन-भार नहीं मिला। १७५८ ई०में फरासी-सेनापति लालीने फिरसे ब्लाक टाउन और दुर्गमें घेरा डाला। ऐतिहासिक ओर्मेने इस अवरोधका प्रकृत विवरण अपने ग्रन्थमें नहीं लिखा है। १७६९ और १७८० ई०में हैदर-सेनाके मान्द्राज-आक्रमणके सिवा फरासी-अवरोधके बाद इस नगरमें और कोई भी बाहरी शत्रु घुसने नहीं पाया।

सेण्टथोमी नगर अभी मान्द्राज नगरके अन्तर्भुक्त है। उस नगरको १५०४ ई०में पुर्त्तगीज सौदागरोंने बसाया और दुर्गसे सुरक्षित किया था। १६७२-७४ ई० तक वह फरासियोंके दखलमें रहा। १६९८ ई०में जुल्फकर खाँने इस स्थानको लूटा। १७४९ ई०में अङ्गरेज वणिकोंने उसे अधिकार कर फरासी-धर्मयाजकोंको यहांसे मार भगाया।

मान्द्राज नगर साधारणतः दो भागोंमें विभक्त है। १ला ब्लाक टाउन वा देशीय लोगोंकी वासभूमि। यह कूम नदीके उत्तरी किनारे अवस्थित है। इसके समुद्र तट पर वाणिज्यपोतरक्षाके लिये एक बन्दर खोला गया है। यहां बैंक, कष्टम हाउस, हाई-कोर्ट और सौदागरी आफिस विद्यमान है। २रा ह्वाइट टाउन—१६३९ ई०में मि० डे द्वारा फोर्ट सेण्ट जार्ज, अंगरेज सौदागरोंकी कोठी तथा वासभवन जहां प्रतिष्ठित हुए थे वही स्थान ह्वाइट टाउन कहलाता है। इस भागमें विशेषतः अंगरेजोंका वास है।

यहांकी अट्टालिकाओं. कैथिड्राल, स्काच कार्फ, गवर्मेण्ट-प्रासाद, पाटचिपा हाल, मेमोरियल हाल, सीनेट हाउस, कर्णाटक नवाबके चेपाक प्रासाद आदि देखने लायक है। मान्द्राजका सेण्ट मेरी गिर्जा भारतमें ईसा धर्म मन्दिरकी प्रथम प्रतिष्ठा है। १६७८ ई०से ले कर १७८० ई०में उसका निर्माणकार्य शेष हुआ। इस सर्वप्रधान ईसाधर्म मन्दिरमें धर्मयाचक स्क्वाटंज तथा सर टामस मनरो, सर हेनरी वोर्ड, लार्ड होबार्ट आदि शासनकर्त्ताओंके मकबरे हैं।

यहां १७४६, १७८२, १८०७, १८११, १८७२, १८७४, १८७७ और १८८१, १९००, १९११, १९१८, १९२४, ई०में भयानक तूफान आया था। उस तूफानसे सैकड़ों जहाज और नावें डूब गई थी, बहुतसे घर उड़ गये थे तथा कितने मनुष्य यमपुर सिधारे थे।

शहरकी जनसंख्या पांच लाखसे ऊपर है। अधिकांश लोगोंकी भाषा तामिल हैं। विद्या शिक्षामें यह प्रान्त बहुत बढ़ा चढ़ा है। अभी कुल मिला कर १० शिल्प कालेज, ३ व्यवसाय कालेज, ९७ सेकण्ड्री और ४२१ प्राइमरी स्कूल तथा २२ टेकनीकल और ट्रेनिंग स्कूल है। १८५१ ई०में जादूघर स्थापित हुआ है। १८५५ ई०में चिड़ियाखाना (Zoological garden) खोल कर उसके साथ संलग्न कर दिया गया है। किलपौक नामक स्थानमें पागल खाना (Lunatic Asylum) है। अलावा इसके शहरमें ९ अस्पताल और ५ चिकित्सालय हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मान्द्य (सं० क्ली०) मन्दस्य भावः कर्म वा मन्द (पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् । पा ४।१।१२८) इति यक्। १ रोग, बीमारी। २ मन्दता; आलस्य।

"विश्वस्ते च ततस्तस्मिन् पुरोधसि चकार सः।
मान्द्यमल्पतराहारकृशीकृत तनुर्मृषा ॥"
(कथासरित् २४।१३५)

मान्धातापुर (सं० क्ली०) एक प्राचीन नगरका नाम।

मान्धातृ (सं० पु०) मां धास्यतीति धेट-तृच्। राजा युवनाश्वके एक पुत्रका नाम।

इनकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें विष्णुपुराणमें लिखा है:—पुत्र न होनेके कारण सूर्यवंशीय राजा युवनाश्व संसार छोड़ मुनि लोगोंके आश्रममें वास करने लगे। कालक्रमसे मुनियोंने दयापरायण हो उनके पुत्रोत्पादनके लिये यज्ञ आरम्भ किया। आधी रातमें यज्ञ समाप्त होने पर मुनि लोग मंत्रपूत जलकलसको वेदीके बीच रख कर सो गये। ऋषियोंके सो जाने पर प्याससे अत्यन्त पीड़ित राजा युवनाश्वने मुनियोंको बिना जगाये उस जलको पी लिया। पश्चात् नींद टूटने पर ऋषि लोगोंने पूछा, "किसने इस मन्त्रपूत जलको पीया है? इस जलको पी कर युवनाश्वकी पत्नी पुत्र प्रसव करेगी, यह जल उन्हींके लिये था।" ऋषियोंकी इस बातको सुन राजा युवनाश्वने कहा, 'मैंने बिना जाने प्याससे पीड़ित हो इस जलको पीया है।'

इस मंत्रपूत जलके प्रभावसे राजा युवनाश्वके गर्भ रहा। समयके प्रभावसे वह गर्भ प्रतिदिन बढ़ने लगा। अनन्तर समय पा कर राजाके पेटके दाहिने भागको फाड़ कर एक लड़का निकला। लेकिन इससे राजाका कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। पेट फाड़ कर लड़केके बाहर निकलने पर ऋषि लोग बोले, कि किसका स्तन पान कर यह लड़का जीवित रहेगा? अनन्तर देवराज इन्द्रने वहां आ कर कहा, 'यह लड़का मुझे धारण करेगा, अर्थात् मेरी सहायतासे जीवित रहेगा, इसी कारण इसका नाम 'मान्धाता' होगा।'

तब देवराज इन्द्रने लड़केके मुखमें अपनी तर्जनी अंगुली डाल दी। लड़का अंगुलीको चूसने लगा। इस अमृतस्रावि‌णी अंगुलीको पा कर वह एक ही दिनमें बढ़ गया। इसी बालक मान्धाताने चक्रवर्त्ती राजा हो सप्तद्वीपा पृथ्वीका भोग किया था। इनके सम्बन्धमें एक श्लोक यों है—

"यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति।
सर्वं तत् यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते ॥"
(विष्णुपु० ४।२ अ०)

सूर्यदेव जहांसे उदय होते और जहां अस्त होते हैं उसके बीचका समस्त स्थल ही युवनाश्ववंशीय राजा मान्धाताका क्षेत्र था।

मान्धाताने शशविन्दुकी कन्या विन्दुमतीसे विवाह किया और उसके गर्भसे पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द नामके तीन लड़के और पचास कन्याएं उत्पन्न हुईं। (विष्णुपु० ४।२ अ०)

मान्धात्र (सं० त्रि०) १ मान्धातृ-सम्बन्धीय। (पु०) २ मान्धाताका वंशधर।

मान्धोद (सं० पु०) मन्धोदका गोत्रापत्य।

मान्मथ (सं० त्रि०) मन्मथ-सम्बन्धीय, मन्मथका।

मान्य (सं० त्रि०) मान्यत इति मान-कर्मणि ण्यत्। १ अर्च्य, पूजनीय, सम्मानके योग्य। पर्याय—पूज्य, प्रतीक्ष्य, भगवान्, भट्टारक। २ प्रार्थनीय।

'यथा वै भरतो मान्यस्तथा भूयोऽपि राघवः।
कौशल्यातोऽतिरिक्तञ्च मम सुश्रूषते बहु ॥" (रामायण)

३ विष्णु। ४ शिव, महादेव। ५ मैत्रावरुण।

मान्यत्व (सं० क्ली०) मानस्य भावः त्व। पूज्यत्व, मान्यका भाव या धर्म, सम्मान वा पूजा।

मान्यमान (सं० पु०) मन्यमानका गोत्रापत्य।

मान्यमान (हिं० पु०) अतिशय सम्मानयोग्य।

मान्यव (सं० त्रि०) मन्युसम्बन्धीय।

मान्यवती (सं० स्त्री०) १ माननीया, वह स्त्री जो समझानेके योग्य हो। २ राजकन्याभेद।

मान्यस्थान (सं० क्ली०) मानस्य स्थानं। पूज्यत्वकारण, आदर या मानका कारण।

"वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम् ॥"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहा। १७०२ ई०में सम्राट् औरङ्गजेबके सेनापति दाऊद खाँने वर्षों इस नगरको घेरे रखा। १७४१ ई०में मरहठोंने मान्द्राज पर आक्रमण किया सही, पर कृतकार्य न हुए। १७४३ ई०में मान्द्राज दुर्गका संस्कार और आयतन परिवर्द्धित किया गया।

दाऊद खाँके आक्रमणसे पहले ही अंगरेज सौदागरोंने १६८४ ई०में नगरको दीवारसे घेरनेके लिये प्रजासे कर उगाहना शुरू कर दिया था। इस अयथा करसे वहांके सभी लोग विरक्त हो कर बागी हो गये। १६९० ई०में प्रजाको मुगलसेनापतिके आगमनकी आशङ्का सूचित कर राजी कर लिया और कर उगाहने लगे। उस करसे ब्लाक ठाउन नगरका वहिर्भाग मिट्टीकी दीवारसे घेर दिया गया। १७०२ ई०में मुगलसेनाके हाथसे आत्मरक्षार्थ उस प्राचीरको दृढ़ करनेके लिये फिरसे कर उगाहा गया। उसके फलसे नगरके उत्तरी और पश्चिमी भागमें पक्केकी दीवार खड़ी की गई और उसमें ११ बुर्ज दिये गये। आज भी वह ध्वंसावशिष्ट प्राचीर दिखाई देता है।

१७४६ ई०में फरासी सेनापति ला-बोर्डोने गोला बरसा कर दुर्गको दखल किया। उसके दो वर्ष बाद आइलासापलेकी सन्धिके अनुसार मान्द्राज दुर्ग अंगरेजोंके हाथ आने पर भी १७५२ ई० तक उन्हें यहांका शासन-भार नहीं मिला। १७५८ ई०में फरासी-सेनापति लालीने फिरसे ब्लाक टाउन और दुर्गमें घेरा डाला। ऐतिहासिक अर्मिने इस अवरोधका प्रकृत विवरण अपने ग्रन्थमें नहीं लिखा है। १७६९ और १७८० ई०में हैदर-सेनाके मान्द्राज-आक्रमणके सिवा फरासी-अवरोधके बाद इस नगरमें और कोई भी बाहरी शत्रु घुसने नहीं पाया।

सेण्टथोमी नगर अभी मान्द्राज नगरके अन्तर्भुक्त है। उस नगरको १५०४ ई०में पुर्त्तगीज सौदागरोंने बसाया और दुर्गसे सुरक्षित किया था। १६७२-७४ ई० तक वह फरासियोंके दखलमें रहा। १६९८ ई०में जुल्फकर खाँने इस स्थानको लूटा। १७४९ ई०में अङ्गरेज वणिकोंने उसे अधिकार कर फरासी-धर्मयाजकोंको यहांसे मार भगाया।

मान्द्राज नगर साधारणतः दो भागोंमें विभक्त है। १ला ब्लाक टाउन वा देशीय लोगोंकी वासभूमि। यह कूम नदीके उत्तरी किनारे अवस्थित है। इसके समुद्र तट पर वाणिज्यपोतरक्षाके लिये एक बन्दर खोला गया है। यहां बैंक, कष्टम हाउस, हाई-कोर्ट और सौदागरी आफिस विद्यमान है। २रा ह्वाइट टाउन—१६३९ ई०में मि० डे द्वारा फोर्ट सेण्ट जार्ज, अंगरेज सौदागरोंकी कोठी तथा वासभवन जहां प्रतिष्ठित हुए थे वही स्थान ह्वाइट टाउन कहलाता है। इस भागमें विशेषतः अंगरेजोंका वास है।

यहांकी अट्टालिकाओं. कैथिड्राल, स्काच कार्फ, गवर्मेण्ट-प्रासाद, पाटचिपा हाल, मेमोरियल हाल, सीनेट हाउस, कर्णाटक नवाबके चेपाक प्रासाद आदि देखने लायक है। मान्द्राजका सेण्ट मेरी गिर्जा भारतमें ईसा धर्म मन्दिरकी प्रथम प्रतिष्ठा है। १६७८ ई०से ले कर १७८० ई०में उसका निर्माणकार्य शेष हुआ। इस सर्वप्रधान ईसाधर्म मन्दिरमें धर्मयाचक स्क्वार्टज तथा सर टामस मनरो, सर हेनरी वोर्ड, लार्ड होवार्ट आदि शासनकर्त्ताओंके मकबरे हैं।

यहां १७४६, १७८२, १८०७, १८११, १८७२, १८७५, १८७७ और १८८१, १९००, १९११, १९१८, १९२४, ई०में भयानक तूफान आया था। उस तूफानसे सैकड़ों जहाज और नावें डूब गई थी, बहुतसे घर उड़ गये थे तथा कितने मनुष्य यमपुर सिधारे थे।

शहरकी जनसंख्या पांच लाखसे ऊपर है। अधिकांश लोगोंकी भाषा तामिल हैं। विद्या शिक्षामें यह प्रान्त बहुत बढ़ा चढ़ा है। अभी कुल मिला कर १० शिल्प कालेज, ३ व्यवसाय कालेज, ९७ सेकण्ड्री और ४२१ प्राइमरी स्कूल तथा २२ टेकनीकल और ट्रेनिंग स्कूल है। १८५१ ई०में जादूघर स्थापित हुआ है। १८५५ ई०में चिड़ियाखाना (Zoological garden) खोल कर उसके साथ संलग्न कर दिया गया है। किलपौक नामक स्थानमें पागल खाना (Lunatic Asylum) है। अलावा इसके शहरमें ९ अस्पताल और ५ चिकित्सालय हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मान्य (सं० क्ली०) मन्दस्य भावः कर्म वा मन्द (पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् । पा ४।१।१२८) इति यक्। १ रोग, बीमारी। २ मन्दता; आलस्य।

"विश्वस्ते च ततस्तस्मिन् पुरोधसि चकार सः।
मान्द्यमल्पतराहारकृशीकृत तनुर्मृषा ॥"
(कथासरित् २४।१३५)

मान्धातापुर (सं० क्ली०) एक प्राचीन नगरका नाम।

मान्धातृ (सं० पु०) मां धास्यतीति धेट-तृच्। राजा युवनाश्वके एक पुत्रका नाम।

इनकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें विष्णुपुराणमें लिखा है:—पुत्र न होनेके कारण सूर्यवंशीय राजा युवनाश्व संसार छोड़ मुनि लोगोंके आश्रममें वास करने लगे। कालक्रमसे मुनियोंने दयापरायण हो उनके पुत्रोत्पादनके लिये यज्ञ आरम्भ किया। आधी रातमें यज्ञ समाप्त होने पर मुनि लोग मंत्रपूत जलकलसको वेदीके बीच रख कर सो गये। ऋषियोंके सो जाने पर प्याससे अत्यन्त पीड़ित राजा युवनाश्वने मुनियोंको बिना जगाये उस जलको पी लिया। पश्चात् नींद टूटने पर ऋषि लोगोंने पूछा, "किसने इस मन्त्रपूत जलको पीया है? इस जलको पी कर युवनाश्वकी पत्नी पुत्र प्रसव करेगी, यह जल उन्हींके लिये था।" ऋषियोंकी इस बातको सुन राजा युवनाश्वने कहा, 'मैंने बिना जाने प्याससे पीड़ित हो इस जलको पीया है।'

इस मंत्रपूत जलके प्रभावसे राजा युवनाश्वके गर्भ रहा। समयके प्रभावसे वह गर्भ प्रतिदिन बढ़ने लगा। अनन्तर समय पा कर राजाके पेटके दाहिने भागको फाड़ कर एक लड़का निकला। लेकिन इससे राजाका कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। पेट फाड़ कर लड़केके बाहर निकलने पर ऋषि लोग बोले, कि किसका स्तन पान कर यह लड़का जीवित रहेगा? अनन्तर देवराज इन्द्रने वहां आ कर कहा, 'यह लड़का मुझे धारण करेगा, अर्थात् मेरी सहायतासे जीवित रहेगा, इसी कारण इसका नाम 'मान्धाता' होगा।'

तब देवराज इन्द्रने लड़केके मुखमें अपनी तर्जनी अँगुली डाल दी। लड़का अंगुलीको चूसने लगा। इस अमृतस्रावि‌णी अंगुलीको पा कर वह एक ही दिनमें बढ़ गया। इसी बालक मान्धाताने चक्रवर्त्ती राजा हो सप्तद्वीपा पृथ्वीका भोग किया था। इनके सम्बन्धमें एक श्लोक यों है—

"यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति।
सर्वं तत् यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते ॥"
(विष्णुपु० ४।२ अ०)

सूर्यदेव जहांसे उदय होते और जहां अस्त होते हैं उसके बीचका समस्त स्थल ही युवनाश्ववंशीय राजा मान्धाताका क्षेत्र था।

मान्धाताने शशविन्दुकी कन्या विन्दुमतीसे विवाह किया और उसके गर्भसे पुरुकुत्स, अम्बरीष और मुचुकुन्द नामके तीन लड़के और पचास कन्याएं उत्पन्न हुईं। (विष्णुपु० ४।२ अ०)

मान्धात्र (सं० त्रि०) १ मान्धातृ-सम्बन्धीय। (पु०) २ मान्धाताका वंशधर।

मान्धोद (सं० पु०) मन्धोदका गोत्रापत्य।

मान्मथ (सं० त्रि०) मन्मथ-सम्बन्धीय, मन्मथका।

मान्य (सं० त्रि०) मान्यत इति मान-कर्मणि ण्यत्। १ अर्च्य, पूजनीय, सम्मानके योग्य। पर्याय—पूज्य, प्रतीक्ष्य, भगवान्, भट्टारक। २ प्रार्थनीय।

'यथा वै भरतो मान्यस्तथा भूयोऽपि राघवः।
कौशल्यातोऽतिरिक्तञ्च मम सुश्रूषते बहु ॥" (रामायण)

३ विष्णु। ४ शिव, महादेव। ५ मैत्रावरुण।

मान्यत्व (सं० क्ली०) मानस्य भावः त्व। पूज्यत्व, मान्यका भाव या धर्म, सम्मान वा पूजा।

मान्यमान (सं० पु०) मन्यमानका गोत्रापत्य।

मान्यमान (हिं० पु०) अतिशय सम्मानयोग्य।

मान्यव (सं० त्रि०) मन्युसम्बन्धीय।

मान्यवती (सं० स्त्री०) १ माननीया, वह स्त्री जो समझानेके योग्य हो। २ राजकन्याभेद।

मान्यस्थान (सं० क्ली०) मानस्य स्थानं। पूज्यत्वकारण, आदर या मानका कारण।

"वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम् ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चानां त्रिषु वर्णेषु भूयांसि गुणवन्ति च।
यत्र स्युः सोऽत्र मानार्हः शूद्रोऽपि दशमीं गतः॥"
(मनु २ अ०)

धन, सुहृद्, वयस, कर्म और विद्या ये पांच पूज्यस्थान अर्थात् पूजाके प्रति कारण हैं। जो उक्त गुणसे सम्पन्न हैं वही पूजनीय हैं। इन पांचोंमें विद्या ही सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है।

मान्या (सं० स्त्री०) मान्य स्त्रियां टाप्। १ पूजनीया। २ मरुन्माला, असवर्ग।

माप (हिं० स्त्री०) १ मापनेकी क्रिया या भाव, नाप। २ परिमाण। ३ वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय, अहँड़ा, मान।

मापक (सं० पु०) १ मान, माप। २ वह जो मापता हो। ३ वह जिससे कुछ मापा जाय, मापनेकी चीज।

मापत्य (सं० पु०) मा विद्यते अपत्यमस्य। कामदेव।

मापन (सं० पु०) मापयति स्वर्णादिकमनेनेति मा-णिच्-करणे ल्युट्। १ तुल, नाप। २ परिमाण, तौलना। मापना देखो।

मापना (हिं० क्रि०) १ किसी पदार्थके विस्तार, आयत वा वर्गत्व और घनत्वका किसी नियत मानसे परिमाण करना, नापना। २ पदार्थके परिमाणको जाननेके लिये कोई क्रिया करना, नापना। ३ किसी मान वा पैमानेमें भर कर द्रव वा चूर्ण वा अन्नादि पदार्थोंका नापना। ४ मतवाला होना।

मापिल्ला—मलवार उपकूलवासी मुसलमान धर्मावलम्बी जातिविशेष। मलयालम् प्रदेशके अधिवासियोंने मुसलमान संस्रवमें आ कर इस्लामधर्म ग्रहण किया। धीरे धीरे उन्हीं सब लोगोंसे हिन्दूभावापन्न मुसलमान-समाज संगठित हुआ। कोन्ननूरके राजा इसी सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त हैं तथा मापिल्लासमाजके प्रधान व्यक्ति समझे जाते हैं।

मलवार, तिवांकुड़ और कनाड़ा प्रदेशमें ही इनकी संख्या अधिक है। ये लोग अध्यवसायशील, कर्मक्षम और वर्द्धिष्णु, बलिष्ठ और सुडौल होते हैं। अभी इनमेंसे बहुतेरे शिक्षित हो गये हैं। इन लोगोंके जैसे परिश्रमी और किसी भी जातिके लोग भारतवर्षमें दिखाई नहीं देते।

मापिल्ला शब्दका अर्थ है मा-का पिल्ला वा माताका पुत्र। ६१६ ई०में आबुजेदने लिखा है, कि मलवार उपकूलवासिनी स्वेच्छाविहारिणी उच्छृङ्खलप्रकृतिकी रमणियों और अरबी नाविकोंके संयोगसे इस जातिकी उत्पत्ति हुई है। फिर कोई कोई अरबी रमणी और समुद्रगामी मुसलमान वणिकोंके संयोगसे इस जातिकी उत्पत्ति बतलाते हैं।

इनमें अधिकांश ही धीवर जातिके हैं। स्वयं कोन्ननूरके राजा इसी धीवरवंशसे उत्पन्न हुए हैं। समुद्रपथमें लूटना, अरबके साथ वाणिज्य तथा देशीय धीवरोंको अरबी धर्ममतमें दीक्षा देना ही इनका प्रधान कर्म है। यूरोपीय वणिक् सम्प्रदाय जब करमण्डल उपकूलमें पहुंचा तब कालिकटके सामरिराजने विदेशीसे उपकूलभागकी रक्षा करनेके लिये हजारों मनुष्योंको इस धर्ममें दीक्षित किया। अनिच्छा रहते हुए भी उन्हें बलपूर्वक गोमांस खिलाया गया था। पीछे वे लोग हिन्दूसमाजमें नहीं लिये गये। अभी वे लोग सम्पूर्णरूपसे मुसलमान न हो कर हिन्दू जातिके ही एक परित्यक्त थोकरूपमें गिने जाते है।

ये लोग स्वभावतः मूर्ख, बलिष्ठ और कर्मठ होते हैं। साहसिकतामें इनकी अच्छी प्रसिद्धि है।

उत्तर मलवारके मापिल्लोंने हिन्दू अभ्युदयके समयसे किसी किसी अंशमें हिन्दूभावको अवलम्बन किया है। ये लोग विधवा भौजाईसे सगाई करते है। इनमें योनाकेन वा यवन-मापिल्ला तथा नम्बुरिन वा नायरिन् मापिल्ला नामक दो विभाग देखे जाते हैं। पहला विभाग ग्रीक आदि जातिके संस्रवसे और दूसरा देशीय ईसाई आदिसे उत्पन्न हुआ है। दक्षिण पूर्वाञ्चलमें ये अरबी भाषामें बोलचाल करते हैं।

ये लोग मूंछ दाढ़ी रखते और सिरके बाल छंटवाते हैं। सभी मस्तक पर टोपी पहनते हैं। जो धनी हैं वे पगड़ी धारण करते हैं। पगड़ीमें सोने चांदीका काम किया हुआ रहता है। ये लोग स्वभावतः परिष्कार परिच्छन्न हैं। स्त्रियां सफेद और नीले रंगकी साड़ी पहनती हैं। उत्सवादिमें वे अपनेको अच्छी तरह सजती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इनमें पीतल, तांबे और चांदीके गहनोंका ही अधिकतर व्यवहार देखा जाता है।

उत्तर-मलवारमें इन लोगोंके मध्य अरबी भाषा तथा मलवारमें प्राचीन तामिल-भाषा प्रचलित है। मंविषयमें इनका उत्साह बहुत प्रबल देखा जाता है। भूमिसंक्रान्त विवाद ले कर जब कभी ये हिन्दुओंके साथ दंगा करते हैं, तब विशेषतः छुरीको ही काममें लाते हैं।

तहफत् मुजाहिदीन नामक १६वीं सदीमें प्रकाशित ग्रन्थमें लिखा है, 'राजा चेरमान पेरुमलने इस्लामधर्म ग्रहण कर मक्काकी यात्रा की। अरबके सफहाई नगरमें उनकी मृत्यु हुई। मरनेसे पहले वे देशी सरदारोंको इस्लामधर्मकी प्रकृष्टताका उल्लेख करते हुए कई एक पत्र लिख गये। उस पत्रको ले कर मालिक इबन् दिनाई मलवार-उपकूलमें पहुंचे। देशीय सरदारोंने उनका अच्छा सम्मान किया। सरदारोंकी सहायतासे उत्साहित मुसलमानोंने पहले पेरुमलकी राजधानी कोड्डनूरमें मसजिद बनवाई। इस प्रकार धीरे धीरे त्रिवाङ्कुड़के अन्तर्गत कोलन नगरमें, डिल्लीपर्वतमें, दक्षिण कनाड़ाके अन्तर्गत बरकुर और मङ्गलूर नगरमें, जैफत्तन (वर्त्तमान-नाम सुरुकुण्डपुरम्, इबन बतुताने १३ सदीमें इस मसजिदका उल्लेख किया है) नगरमें, तेल्लीचेरीके अन्तर्गत धर्मपत्तन नगरमें तथा पन्थारिणी और वेपुर रेल-टार्मिनसके समीप चालियम नगरमें बहुतसी मसजिद बनवाई गईं। मसजिद बनवानेके साथ ही साथ इस देशमें मुसलमानी प्रभाव फैला था, इसमें सन्देह नहीं। उन सब मसजिदोंके खर्च वर्चके लिये सम्पत्ति भी दी गई थी।'

विदेशीय वाणिज्यकी उन्नतिके लिये सामरिराजने मुसलमानोंके प्रति विशेष सौजन्यता दिखलाई थी। इस समय उपकूलवासी मुसलमानों और इस्लामधर्ममें दिक्षीत देशी अधिवासियोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। धीरे धीरे राज्य भरमें उनकी तूती बोलने लगी। इस समय वाणिज्य-प्रयासी बहुतसे हिन्दुओंने समुद्रपथसे वाणिज्य व्यवसायमें लाभ उठानेकी आशासे हिन्दूशास्त्रके कठोर नियमोंको परित्याग कर इस्लामधर्मका आश्रय लिया था।

ओलन्दाज वणिकोंके १६वीं और १७वीं शताब्दीके विवरणमें लिखा है, कि पुर्त्तगीज नाविकोंके साथ वाणिज्य व्यापारमें बराबरी करनेके लिये सामरिराजने देशी लोगोंको इस्लामधर्ममें दीक्षित किया था। इस प्रकार मापिल्ला जाति धीरे धीरे मलवार उपकूलमें फैल गई। इन्होंने कायिक परिश्रमसे देशका बहुत उपकार किया था।

धर्मान्धतासे उन्मत हो इन्होंने १८४६ ई०में माञ्जरीके मन्दिरमें घेरा डाल कर ब्राह्मण पुरोहितको मार डाला। इनका दमन करनेके लिये मान्द्राजसे पदातिक सेना भेजी गई थी। पीछे कनानूरसे ६४ नम्बर पल्टनने जा कर इन्हें परास्त किया था। ६४ मापिल्ले अदम्य उत्साहसे युद्ध करके अतुल विक्रम तथा रण नैपुण्य दिखलाते हुए रणक्षेत्रमें खेत रहे। १८५१ ई०में धर्मान्धतासे उन्मत्त हो उन्होंने फिरसे हिन्दुओंकी हत्या की। पीछे मान्द्राजसे सेनाने आ कर उनका अच्छी तरह दमन किया। अनन्तर बीच बीचमें हिन्दुओंके साथ इनका बहुत बार विप्लव खड़ा हुआ है।

माफ (अ० वि०) जो क्षमा कर दिया गया हो, क्षमित।

माफकत (अ० स्त्री०) १ मुआफिक होनेका भाव, अनुकूलता। २ मेल, मैत्री।

माफजल खाँ (सैयद)—एक मुसलमान ऐतिहासिक। ये १७वीं शताब्दीमें विद्यमान थे। इनके बनाये "तारीख-इ माफजली" नामक इतिहासमें सृष्टिके प्रारम्भसे ईस्वी-सन् १६६६ तककी घटनावलि वर्णित है। किसी हस्तलिखित पुस्तकमें फर्रूखसियरके राजत्वकाल तक लिपिबद्ध है। समूची पुस्तक सात भागोंमें विभक्त है। ६ठे और ७वें भागमें भारतवर्षके बहुत-से विवरण हैं।

माफल (हिं० पु०) एक प्रकारका खट्टा नीबू।

माफिक (अ० वि०) १ अनुकूल, अनुसार। २ योग्य, लायक।

माफिकत (अं० स्त्री०) माफकत देखो।

माफी (अ० स्त्री०) १ क्षमा। २ वह भूमि जिसका कर सरकारसे माफ हो, बाध। ३ वह भूमि जो किसीको बिना कर लिये दी गई हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माफुज खां—कर्णाटकके नवाबका एक पुत्र। सन् १७४६ ई०में व्यापारकी प्रतिद्वन्द्विता ले कर अङ्गरेजों और फ्रासीसियोंमें परस्पर विवाद चल रहा था। उस समय फ्रान्सवालोंकी शक्ति अंगरेजोंकी अपेक्षा बढ़ी चढ़ी थी।

सन् १७४६ ई०में फरासीसियोंने मद्रास दखल कर लिया। यह सुनते ही, नवाबने अपने लड़के माफुज खाँको १०००० सेनाके साथ मद्रास उद्धार करनेके लिये भेजा। फरासीसियोंने झूठ मूठका बहाना कर चार सप्ताहका समय लिया। अन्तमें फरासीसियोंके अध्यक्ष डुप्लेने जिस किसी उपायसे मद्रासकी रक्षा करनेका संकल्प किया। तब नवाबकी आज्ञा पा माफुज मद्रास पर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा।

माफुजने नगरके सम्मुख भागमें आ कर पहले पीनेके जलस्रोतको बंद कर दिया। फरासीसी लोग गुप्त रीतिसे आत्मरक्षा करने लगे। अन्तमें माफुज फरासीसी सेनाके चारों ओर मिट्टीकी दीवार द्वारा व्यूह बनवाने लगा। जलके सभी मार्गोंके बंद होनेसे भारी विपत्ति झेलनी पड़ेगी यह सोच फरासीसी सेनापतिने एक रात चुपकेसे माफुजकी सेना पर प्रबल वेगसे गोला बरसना शुरू कर दिया। नवाबके सैनिक तोप चलानेमें उतने अभ्यस्त नहीं थे, इसीलिये वे पीछे हट गये।

माफुज वहांसे दो कोस पश्चिम पांडीचेरी और मद्रासके बीचमें छावनी डाल युद्धकी प्रतीक्षा करने लगा। मद्रासके फरासीसियोंकी सहायताके लिये पाण्डीचेरीसे ७०० सिपाही पाराडिस् नामक सेनापतिके अधीन भेजे गये थे। बीच हीमें माफुजने उन लोगोंका रास्ता रोक रखा।

मद्रासके प्रसिद्ध सेनापति डि-इस्प्रिमेनिल पाराडिस्के आनेकी खबर पा दूसरी ओरसे माफुज पर चढ़ाई करनेकी चेष्टा करने लगा। आदिया नदीके किनारे सेण्ट थोमिके पास माफुज और पाराडिस्की पहली भेंट हुई। माफुजने तोप, घुड़सवार पैदल सैनिक आदि १०००० दश हजार सेना ले पाराडिस्के मद्रास आनेका रास्ता रोक दिया। सेण्ट थोमिके पास घमसान युद्ध हुआ। माफुजकी सेना योग्य संचालकके बिना शत्रुके गोला बरसानेसे छिन्न भिन्न हो पड़ी। उन लोगोंने हट कर पिया नगरमें आश्रय लिया और फरासीसियोंकी दूसरी चढ़ाई होने पर उनके पैर उखड़ गये। माफुज हाथी पर चढ़ भागा। इस प्रकार मुट्ठी भर फरासीसी सेनाने सुशिक्षा और साहसके प्रभावसे बहुसंख्यक नवाबकी सेनाको परास्त किया। इस युद्धसे लोगोंके मनमें भयका विशेष संचार हुआ। इसके पहले कोई यूरोपीय जाति भारतीय सेनाके साथ युद्धमें जय नहीं प्राप्त कर सकी थी। फरासीसी लोग युद्धमें जयी हो कर भविष्यत् भारतसाम्राज्यका स्वप्न देखने लगे।

माम (सं० पु०) १ मातुल, मामा। २ कृपण, कंजूस। (त्रि०) ३ मत्सम्बन्धी, मेरा।

माम (हिं० पु०) १ ममता, अहंकार। २ शक्ति, अधिकार।

मामक (सं० त्रि०) ममेदं अस्मद् (तवकममकावेकवचने। पा ४।३।३) इति अण्, ममकादेशश्च। १ मदीय, मत्सम्बन्धीय, मेरा। २ ममतायुक्त।

(पु०) मातुल, मामा। ४ कृपण, कंजूस।

मामकीन (सं० त्रि०) ममेदं अस्मद् (तवकममकावेकवचने। पा ४।३३) इति खञ्, ममकादेशश्च। मदीय, मत्सम्बन्धीय, मेरा।

"एतच्च मे कियत् किं हि न बुध्या साधयाम्यहम्।
प्रज्ञानं मामकीनञ्च श्रूयतां वर्णयामि ते॥"

(कथासरित्सागर ३२।१४५)

मामता (हिं० स्त्री०) १ अपनापन, आत्मीयता। २ प्रेम, मुहब्बत।

मामतेय (सं० पु०) १ ममता-पुत्र। "थे पायरोमामतेयं ते अग्ने" (ऋक् १।१४७।३) 'मामतेयं ममतापुत्रं दीर्घतमसं' (सायण) २ ममतासम्बन्धीय।

मामन्द—अफगान जातिकी एक शाखा।

मामरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पेड़। यह हिमालयको तराईमें रावी नदीसे पूर्वकी ओर तथा मद्रास और मध्यभारतमें होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत और चिकनी होती है जिस पर रोगन करनेसे बहुत अच्छी चमक आती है। इसकी लकड़ीसे मेज, कुर्सी, आलमारी आदि आरायशी चीजें बनाई जाती हैं। इसकी छाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

औषधिके काममें आती है और जड़ सांपके काटनेकी ओषधि है। यह बीजोंसे उगता है। इसे चौरी और रूही भी कहते हैं।

मामलत (अ० स्त्री) १ मामला, व्यवहारकी बात। २ विवादास्पद विषय।

मामलति (अ० स्त्री०) मामलत देखो।

मामला (हिं० पु०) १ व्यापार, काम, धंधा। २ पारस्परिक व्यवहार। जैसे लेन, देन, क्रय विक्रय इत्यादि। ३ व्यावहारिक, व्यापारिक वा विवादास्पद विषय। ४ झगड़ा, विवाद। ५ मुकदमा। ६ पक्की या तै की हुई बात, कौल करार। ७ सुन्दर स्त्री, युवती। ८ प्रधान विषय, मुख्य बात। ९ संभोग, स्त्री-प्रसङ्ग।

मामल्लदेवी (सं० स्त्री०) नैषधके रचयिता श्रीहर्षकी माता।

मामल्लपुर—प्राचीन नगरभेद। महाबलिपुर देखो।

मामा (हिं० पु०) माताका भाई, बापका साला।

मामा (फा० स्त्री०) १ माता, मां। २ रोटी पकानेवाली स्त्री। ३ बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया। ४ नौकरानी, लौंड़ी।

मामिड़ी (सं० पु०) एक प्राचीन ग्रन्थकार।

मामिला (अ० पु०) मामला देखो।

मामी (हिं० स्त्री०) मामाकी स्त्री, मांकी भौजाई।

मामी (सं० स्त्री०) आरोपको ध्यानमें न लाना, अपने दोष पर ध्यान न देना।

मामुखी (सं० स्त्री०) बौद्धोंके एक देवताका नाम।

मामूँ (हिं० पु०) माताका भाई, मामा।

मामूल (अ० पु०) १ टेव, लत। २ रीति, रवाज, परिपाटी। ३ वह धन जो किसीको रवाज आदिके कारण मिलता हो।

मामूली (अ० वि०) १ नियमित, नियत। २ सामान्य, साधारण।

माम्बिका (सं० स्त्री०) अम्बष्ठा, पाढ़ा।

माय (हिं० स्त्री०) १ माता, माँ। २ किसी बड़ी वा आदरणीय स्त्रीके लिये सम्बोधनका शब्द। ३ माया देखो। (अव्य०) ४ मांहि देखो।

माय (सं० पु०) मायाऽस्यास्तीति माया-अर्शआदित्वादच्। १ पीताम्बर।

"नमो विश्वाय मायाय चिन्त्याचिन्त्याय वै नमः॥"
(भारत १३।२४।३११)

मयस्यापत्यं पुमान् मत्व-अण्। २ असुर।

मायक (सं० पु०) माया करनेवाला, मायावी।

मायक (हिं० पु०) मायका देखो।

मायका (हिं० पु०) नैहर, पीहर।

मायण (सं० पु०) वेदभाष्यकार सायणाचार्यके पिताका नाम।

मायदास—ग्रहकौस्तुभके प्रणेता।

मायन (हिं० पु०) १ वह दिन वा तिथि जिसमें मातृका-पूजन और पितृ-निमन्त्रण होता है। २ उपयुक्त दिनका कृत्य, मातृका-पूजन या पितृनिमंत्रण आदि कार्य।

मायनी (अ० स्त्री०) अर्थ, मतलब।

मायनी (मैनी)—बम्बईप्रदेशके सतारा जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० १७° २९' उ० तथा देशा० ७४° ३४' पू०के मध्य अवस्थित है। म्युनिसिपलिटीके अधीन रह कर इस नगरकी दिनों दिन उन्नति होती जा रही है।

मायरा—बङ्गालकी हलवाईकी एक जाति। इस जातिके मिठाई बना कर बेचना ही इनका जातीय व्यवसाय है। ये लोग कहीं कहीं मोदक वा कुड़ी भी कहलाते हैं। ढाकाके मायरामें पाटिया और दोपारिया नामक दो थोक तथा मध्य बङ्गालके मायरामें राढ़ाश्रम, मयुराश्रम, अजाश्रम और धर्माश्रम वा धर्मसुत नामक चार थोक देखे जाते हैं।

विवाहमें भी दोनों श्रेणीमें पृथकता देखी जाती है। सगोत्र विवाह निषिद्ध है। विवाहमें विशेषतः ये लोग अपने आचरणादिका ही अनुसरण करते हैं, शास्त्रविहित नियमोंका कम पालन करते हैं।

इन लोगोंके अकसर बालिका-विवाह ही होता है। कहीं कहीं सयानी लड़की ब्याही जाती है। समाजमें इसका कोई दोष नहीं समझा जाता है। उच्चश्रेणीके हिन्दू जैसा सम्प्रदान और सिन्दूरदान ही विवाहका प्रधान अङ्ग है।

ये लोग कट्टर हिन्दू हैं। अधिकांश वैष्णव धर्मावलम्बी हैं। हिन्दूके सभी देवताओंके प्रति इनकी विशेष भक्ति है। ये लोग काली, दुर्गा आदि शक्तिपूजा भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं। जाड़ा ऋतुके बाद बिना गणेशकी पूजा किये ये कभी भी गुड़की मिठाई नहीं बनाते हैं।

मृतदेहको अन्त्येष्टि क्रिया होनेके बाद कोई कोई भस्म वा नाभि ले कर गङ्गामें फेंकता है। ३० दिन तक अशौच रहता है। ३१वें दिन श्राद्ध तथा ब्राह्मणादि भोजन करा कर शुद्ध होते हैं।

मायल (फा० वि०) १ प्रवृत्त, झुका हुआ। २ मिश्रित, मिला हुआ।

मायव (सं० पु०) मायुका गोत्रापत्य।

मायवत् (सं० त्रि०) मायायुक्त।

माया (सं० स्त्री०) मीयते अपरोक्षवत् प्रदर्श्यतेऽनया इति मा (माच्छासिसिभ्यो यः। उण् ३।१ ९) इति य, टाप्। १ इन्द्रजालादि, छलमय रचना, जादू। पर्याय—शाम्बरी, साम्बरी। २ बुद्धि, अक्ल। मीमीते जानाति संख्यात्यनयेति मा-य-टाप्। ३ कृपा, दया। ४ दम्भ, चालबाजी। ५ शठता, बदमाशी। ६ प्रज्ञा, ज्ञान। ७ राजाओंका क्षुद्र उपायविशेष।

"मायोपेक्षेन्द्रजालानि क्षुद्रोपाया इमे त्रयः।" (हेम)

माया, उपेक्षा और इन्द्रजाल यही तीन राजाओंके सामान्य उपाय हैं।

८ दुर्गादेवी। इस नामकी निरुक्तिमें इस प्रकार लिखा है, मा शब्दका अर्थ श्री और या-का अर्थ प्रापण है। जो श्रीको दिलाती हैं उन्हींका नाम माया है। अथवा मा शब्दका अर्थ मोह और या शब्दका अर्थ प्रापण है, जो मोहित करती हैं, उन्हींको माया कहते हैं।*

जिनका कार्य और कारण विचित्र अर्थात् भिन्नरूप है, साधारण स्थलमें जैसा कारण है वैसा ही कार्य हुआ करता है, किन्तु माया विषयमें सो नहीं है। एक तरहके कारणसे दश प्रकारके कार्य हो सकते हैं तथा स्वप्न और इन्द्रजालकी तरह जिसका फल अचिन्तनीय है उसीको माया कहते हैं।

"विचित्रकार्यकारणा अचिन्तितफलप्रदा।
स्वप्नेन्द्रजालवल्लोके माया तेन प्रकीर्त्तिता॥"

(देवीपु० ४५ अ०)

विसदृश प्रतीति-साधनका नाम माया है। अघटनके घटनाविषयमें जो अत्यन्त पटुतमा हैं उन्हें माया कहते हैं। कोई कोई ईश्वरकी शक्तिको माया बतलाते हैं। इनका नामान्तर—प्रकृति, अविद्या, अज्ञान, प्रधान, शक्ति और अजा। मायावाद देखो।

९ लक्ष्मी। १० धन, सम्पत्ति। ११ अज्ञानता, भ्रम। १२ ईश्वरकी वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञासे सब काम करती हुई मानी गई है। १३ इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्तका एक उपभेद। यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेलसे बनता है। इसके दूसरे तथा तीसरे चरणका प्रथम वर्ण लघु होता है। १४ मगण, तगण, यगण, सगण और एक गुरुका एक वर्णवृत्त। १५ मयदानवकी कन्या। इसका विवाह विश्रवासे हुआ था। त्रिशिरा, सूर्पनखा, खर और दूषण इसीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। १६ देवताओंमेंसे किसीकी कोई लीला, शक्ति, इच्छा वा प्रेरणा। १७ कोई आदरणीय स्त्री। १८ बुद्धदेव (गौतम)-की मातका नाम।

माया (हिं० स्त्री०) १ किसीको अपना समझनेका भाव, ममत्वक। २ कृपा, दया।

मायाकार (सं० पु०) मायां इन्द्रजाल-व्यापारं करोतीति कृ अण्। ऐन्द्रजालिक, जादूगर, वह जो मायाके जैसा विसदृश कार्य दिखानेमें पारग हो। पर्याय—प्रातिहारिक।

मायाकृत (सं० पु०) मायां स्थलजलादौ जलस्थलादिज्ञानं करोति कारयतीति कृ-क्विप् तुगागमश्च। मायाकार, वह जो माया करता हो।

मायाकोण्डा—महिसुर राज्यके चित्तलदुर्ग जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह अक्षा० १४° १७′ १५″ उ० तथा देशा० ७६° ७′ २५″ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां १७४८ ई०में चित्तलदुर्गके पालेगार मदकेरी नायकके सथ

* "दुर्गे शिवेऽभये माये नारायणि सनातनि।
जये मे मङ्गलं देहि नमस्ते सर्वमङ्गले॥
राजन् श्रीवचनो माश्च याश्च प्रापणवाचकः।
तां प्रापयति या सद्यः सा माया परिकीर्त्तिता॥
माश्च मोहार्थवचनो याश्च प्रापणवाचनः।
तं प्रापयति य नित्यं सा माया परिकीर्त्तिता॥"

(ब्रह्मवै० पु० श्रीकृष्णजन्मखं० २७ अ०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेदनूर, रायदुर्ग, हर्पनहल्ली और सावनूर सामन्त-राजाओं-की मिलित सेनाका एक भीषण युद्ध हुआ था। युद्धमें पराजित हो पालेगार-सरदारने आत्महत्या की तथा उनके सहयोगी चन्दासाहव (जो अरकाटका नवाब-पद पानेके लिये डुप्लेके शरणागत हुए वे भी) वन्दी हुए।

मायाक्षेत्र (सं० पु०) दक्षिणके एक तीर्थका नाम।

मायाचण (सं० त्रि०) मायया वित्तः 'वित्ते चुञ्चुचणपौ इति चणप्। माया द्वारा विख्यात, अतिशय मायावी।

"गाधेयदिष्टं विरसं रसन्तं रामोऽपि मायाचणमस्त्र चुंचुः।"

(भट्टि २।३२)

मायाचार (सं० पु०) मायावी।

मायाजीविन् (सं० पु०) मायया इन्द्रजालविद्यया जीवति जीवनयात्रां सम्पादयति इति जीव-णिनि। प्रातिहारिक, ऐन्द्रजालिक, जादूगरीसे जीविका निर्वाह करनेवाला।

मायाजीवी (सं० पु०) मायाजीविन् देखो।

मायातन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रभेद, एक प्रकारका तन्त्र।

मायाति (सं० पु०) मायया सह अतति यद्वा मा अततीति (अतअज्यतिभ्यां च। उण् ४।१३०) इति इण्। नरवलि। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है,—भगवती दुर्गादेवीके उद्देश्यसे अष्टमी और नवमी-संधिमें नरवलि देनी होती है। इस नरवलिका नाम मायाति है। पितृमातृ-विहीन युवक, रोगरहित, विवाहित, दीक्षित, परदार-विहीन, अजारज और विशुद्ध इन सब गुणोंसे युक्त एक शूद्रको उसके मा वापको अधिक मूल्य दे कर खरीदना होगा। बादमें उसे एक वर्ष तक भ्रमण करा कर गंधमाल्यादि द्वारा यथाविधि अर्चना कर देवीके उद्देश्यसे वलि देनी होगी।* आज कल यह प्रथा प्रचलित नहीं है।

मायात्मक (सं० त्रि०) मायायुक्त।

मायाद (सं० पु०) मायया छलेन धृत्वेत्यर्थः अत्ति भक्षयतीति अद-अच्। १ कुम्भीर, मगर। मायां ददातीति दा-क। (त्रि०) २ जो माया दान करे।

मायादेवी (सं० स्त्री०) बुद्धदेवकी माताका नाम।

मायादेवीसुत (सं० पु०) मायादेव्याः सुतः। बुद्ध।

मायाधर (सं० त्रि०) धरतीति धृ-अच्, मायायाः धरः। १ मायावी, मायापटु। २ असुर। ये बड़े मायावी हैं इसलिये इन्हें मायाधर कहा जाता है। ३ ऐन्द्रजालिक, जादूगर। ४ भ्रान्तिकर, भ्रान्तिजनक।

मायापटु (सं० पु०) मायया पटुः कुशलः। मायाकुशल, मायावी।

मायापति (सं० पु०) १ मायावी। २ मायाके स्वामी।

मायापुर—१ वंगालके २४ परगना जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह अक्षा० २३° २६′ १५″ उ० तथा देशा० ८८° १०′ ५०″ पू० हुगली नदीके किनारे इछापुरके दक्षिणमें अवस्थित है। यहां वृटिश-सरकारको वारूदका कारखाना है।

२ हरिद्वारके निकटवर्त्ती एक पुण्यस्थान। हरिद्वार देखो।

३ नवद्वीपके अन्तर्गत एक स्थान। यह जलंगी और भागीरथीके संगमके निकट अवस्थित है।

मायापुरी (सं० स्त्री०) नगरभेद, एक प्राचीन नगरीका नाम।

मायाफल (सं० क्ली०) फलविशेष, माजूफल। पर्याय—मायिफल, मायिक, छिद्राफल, मायि। इसका गुण—वातहर, कटु, उष्ण, शैथिल्य, सङ्कोचक और केशको काला करनेवाला माना गया है।

मायामय (सं० त्रि०) माया-स्वरूपार्थे मयट्। माया-स्वरूप, माया।

मायामोह (सं० पु०) मायया मोहयति असुरानि मुह-णिच्, अच् माया च मोहश्च तौ यस्येति वा। विष्णु-देहनिर्गत असुरमोहक पुरुष विशेष, विष्णुके शरीरसे निकला हुआ एक कल्पित पुरुष जिसकी सृष्टि असुरोंका दमन करनेके लिये हुई थी।

"इत्युक्तो भगवांस्तेभ्यो मायामोहं शरीरतः।
तमुत्साद्य ददौ विष्णुः प्राह चेंद सुरोत्तमान्॥"

(विष्णुपु० ३।१७ अ०)

विष्णुपुराणमें लिखा है,—असुरोंसे सताये जाने पर देवताओंने विष्णुकी शरण ली। भगवान् विष्णुने मायामोहको अपने शरीरसे उत्पन्न कर देवताओंको दिया और कहा, तुम लोग अव किसी वातकी चिन्ता मत करो। मायामोह जव दैत्योंको मोहित करेगा, तव वे सब वेदमार्गविहीन हो जायेंगे। वैसी हालतमें तुम

* ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—प्रकृतिखण्ड १५ अ०।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोग उन्हें सहजमें मार सकोगे। इतना कह कर विष्णु अन्तर्धान हो गये।

अनन्तर मायामोह दैत्योंके निकट जा कर उन्हें नाना प्रकार तर्क और युक्ति द्वारा मोहित करने लगा। अतएव वे शीघ्र ही बलहीन हो गये। तब देवताओंने उन्हें आसानीसे परास्त किया।

(विष्णु पु० ३।१७-१८ अ०)

मायायन्त्र (सं० क्ली०) सम्मोहन, किसीको मोहनेकी विद्या।

मायारवि (सं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक राग। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

मायारसिक (सं० पु०) परप्रतारक, मायापटु।

मायावचन (सं० क्ली०) छलवाक्य, फरेबकी बात।

मायावटु (सं० पु०) शबरराजभेद।

मायावत् (सं० त्रि०) माया विद्यतेऽस्य मतुप् मस्य व। १ मायाविशिष्ट, मायावी, कपटी। (पु०) २ राक्षस, असुर। ३ कंसराज, कंसका एक नाम।

मायावती (सं० स्त्री०) मायावत् स्त्रियां ङीष्। १ कामपत्नी, रति। इसका मायावती नाम होनेका कारण विष्णुपुराणमें इस प्रकार लिखा है,—पहलेमें जब कामदेव महादेवके कोपानलसे दग्ध हुआ तब रतिने अपने स्वामीको फिरसे पानेके लिये मायारूपसे शम्बरासुरको मोहित कर रखा और उसे मायारूप दिखाया। इसीसे उसका नाम मायावती हुआ*।

२ विद्याधरीविशेष। ३ राजकन्याविशेष। इनके पिता राजगृहाधिपति मलयसिंह थे।

(कथासरित्सा० ११२।१।२)

---

* "इयं मायावती भार्य्या तनयस्यास्य ते सती।
शम्बरस्य न भार्येयं श्रूयतामत्र कारणम्॥
मन्मथे तु गते न शं तदुद्भवपरायणा।
शम्बरं मोहयामास मायारूपेण रूपिणी॥
व्यवायाद्युपभोगेषु रूपं मायामयं शुभम्।
दर्शयामास दैत्यस्य तस्येयं मदिरेक्षणा॥"

(विष्णु पु० ५।२७ अ०)

मायावरम्—१ मान्द्राजप्रदेशके तञ्जोर जिलान्तर्गत एक तालुक। भू-परिमाण ३३२ वर्गमील है।

२ उक्त जिलेका एक नगर। यह अक्षां ११° ६′ २०″ उ० तथा देशा० ७९° ४१′ ५०″ पू० कावेरी नदीके किनारे अवस्थित है। दाक्षिणात्यवासी इसको तीर्थस्थान समझते हैं। यहां साउथ इंडियन रेलवेका स्टेशन होनेके कारण वाणिज्यमें विशेष सुविधा हुई है।

मायावसिक (सं० त्रि०) मायया वसं आच्छादनं करोतीति ठन्। परप्रतारक, वञ्चक, छलिया।

मायावाद (सं० पु०) मायायाः वादः। मायाविषयक कथन। यह परिदृश्यमान जगत् भ्रान्तिमय है। यथार्थमें इसकी स्वाभाविक सत्ता नहीं। माया द्वारा ही इसका अस्तित्व उपलब्ध होता है। वेदान्तके शारीरिक भाष्यमें इत्याकार मायाविषयक जितनी युक्तियोंकी आलोचना हुई है, उसको ही मायावाद कहते हैं।

यह दृश्य-जगत् इन्द्रजालके सदृश है, तात्त्विक-सत्ताशून्य अर्थात् मिथ्या या झूठा है। जैसे कोई नट इन्द्रजालिक कौशलादि माया द्वारा इन्द्रजालकी सृष्टि करता है वैसे ही महामायावी ईश्वर भी स्वेच्छापूर्वक इस नश्यमान जगत्की सृष्टि करते हैं। उनकी इच्छा ही माया नामसे पुकारी जाती है। गुणवती माया एक होने पर गुणके प्रभेदसे अनेक रूप धारण करती है। उत्कृष्ट सत्त्वगुण द्वारा माया और मलिन सत्वके गुणसे अविद्या बन जाती हैं। मायाका उपहित ईश्वर और अविद्याका उपहित जीव हैं। जीव केवल उपहित ही नहीं वरं मायाके वशीभूत भी है। माया एक है—इसीलिये ईश्वर भी एक हैं। मालिन्यके न्यूनाधिक्यके अनुसार अविद्या अनेक है। इसीलिये जीव भी अनेक हैं मायाकी ज्ञानशक्तिका चरमोत्कर्ष है। इसीलिये उसके उपहित ईश्वर भी सर्वेश्वर हैं, सर्वज्ञ हैं, स्वतन्त्र हैं और सर्वनियन्ता हैं। जीव ज्ञानशक्तिके अल्पभाव वशतः वैसा नहीं है। जैसे एक ही आकाश घटरूप उपाधिसे घटाकाश, उसको छोड़ कर महाकाश है वैसे ही ब्रह्म मनुज आदि उपाधिसे (आधेयमें) जीव और तदुपगतमें ब्रह्म हैं।

अज्ञान ही संसार है। संसार और कुछ भी नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अखण्ड चेतन अद्वयब्रह्मकी पार्श्वचर-शक्ति अज्ञान है। इसके प्रादुर्भावसे अन्तःकरण आदिकी उत्पत्ति होती है। इसके उपरान्त वे अन्तःकरणादि परिच्छिन्न जीव हैं फिर इसके हट जानेसे वे अपरिच्छिन्न और निरञ्जन हैं। ब्रह्मकी यह शक्तिविशेष ही शास्त्रमें ऐशी शक्ति, जगत्योनि, अज्ञानशक्ति, मायासृष्टिशक्ति और मूल प्रकृति इत्यादि नामोंसे परिभाषित होती है। अन्तः-प्रपञ्च या बाह्यप्रपञ्च सभी अज्ञान या मायाका विलास है। इसीलिये यह भ्रान्तिका विजृम्भन कहा गया है।

शक्तिरूपी ब्रह्माश्रित अज्ञान ब्रह्ममें या ब्रह्मको जगत् रूपसे दिखा रहा है। इसलिये जगत् और ब्रह्म इस समय विमिश्रित या एक तरहके दिखाई देते हैं। अज्ञान, विकार या जगत् परमार्थ दृष्टिसे सत्य नहीं है, इसीलिये शास्त्रमें कहा है कि जगत् मिथ्या और ब्रह्म सत्य है।

ब्रह्म स्वयं अपनी माया द्वारा आकाशादिरूपमें विवर्त्तित हुए हैं। अतएव अभिन्न निमित्तोपादान वे ही इस प्रसारके कारण हैं। अभिन्न-निमित्तोपादानका दृष्टान्त मकड़ा है। मकड़ा सृज्यमान सूतेके प्रति स्वचैतन्य-प्रकाशका निमित्त-कारण है। मकड़ा जिस सूतेकी सृष्टि करता है उसका उपादान वह किसी दूसरी जगहसे नहीं लाता, उसके शरीर ही में है। ब्रह्म अपनी इच्छा होसे विवर्त्तित होते हैं। विवर्त्त शब्दका अर्थ इस प्रकार है, एक प्रकारकी वस्तु जब दूसरे प्रकारकी हो जाती है तो उसे विकार और मिथ्या प्रतीत होने पर उसे विवर्त्त कहते हैं। जगत् ब्रह्मका विकार नहीं, वरन् विवर्त्त है। अतएव एहले ही कहा जा चुका है कि यह जगत् तात्त्विक-सत्ता शून्य अर्थात् मिथ्या है।

मायाको सरल भाषामें अज्ञान कह सकते हैं। इस अज्ञान कालक्षण 'अज्ञानन्तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधिभावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्ति।'

(वेदान्तसार)

अज्ञान क्या है? अज्ञान एक तरहका ज्ञान-नाशक-अनिर्वाच्य-रहस्य है। उसका भाव और अभाव—वस्तु और अवस्तु—इन दोनोंसे बहिर्भूत है। तीसरी प्रकृति अर्थात् क्लीवक जैसे स्त्री-पुरुष—दोनोंसे बहिर्भूत है, वैसे ही अज्ञान भी भाव अभाव-व्यतिरिक्त है। अज्ञान शश-शृङ्ग (खरहेके सींग)-की तरह—वन्ध्या-पुत्रके समान आत्यन्तिक अवस्तु नहीं। क्योंकि वह जीवमात्रमें ही है, ऐसा अनुभव होता है। अज्ञान ब्रह्म पदार्थकी तरहकी वस्तु भी नहीं है क्योंकि ज्ञान होने पर भी यह स्थायी नहीं रहता, ज्ञानोत्तरकालमें वह मिथ्या ही प्रतीत होता है। जो नहीं रहता, वह त्रैकालिक अस्तित्व नहीं, जो मिथ्या या भ्रम प्रत्यक्ष है, उसे किस तरह वस्तु कहा जाय? अतएव वह वस्तु या अवस्तु, सत्य या मिथ्या सानयव या निरवयव—कुछ भी नहीं रह जा सकता। जिसको यह अमुक या अमुक तरहका कह कर ग्रहण किया नहीं जा सकता वह अनिर्वाच्य है।

यह भी नहीं कहा जा सकता, कि ज्ञानका अभाव ही अज्ञान है। क्योंकि ज्ञानका अभाव "अज्ञान" है इस वाक्यमें ज्ञान शब्दके अर्थकी पर्य्यालोचना करनेसे देखा जाता है, कि अभाव पदार्थ नहीं है। शास्त्रमें चैतन्यको ज्ञान कहा गया है। फिर बुद्धिको भी ज्ञान कहते हैं। कुछ लोग ज्ञानको आत्माका गुण बतलाते हैं।

अज्ञान इन तीन तरहके ज्ञानोंमें किस ज्ञानका अभाव है? इसके उत्तरमें कहा गया है, कि प्रथमोक्त ज्ञान नित्य निरवयव है; अतएव उसका अभाव अस्वीकार्य्य है। द्वितीय वास्तविक ज्ञान नहीं, क्योंकि वह जड़ है। बुद्धि-वृत्ति स्वयं वस्तु प्रकाश नहीं करती, चैतन्य व्याप्त हो कर वस्तुको प्रकाश करती है। बुद्धिवृत्ति जब चैतन्यको छोड़ कर वस्तुके प्रकाश करनेमें समर्थ नहीं, तब वह अवश्य ही जड़ है। ज्ञानका अर्थात् चैतन्यका संश्लिष्ट रहनेके कारण लोग उसे उपचारक्रमसे ज्ञान कहते हैं। अतएव अज्ञान उसका भी अभाव नहीं—तृतीय पक्ष भी नहीं। क्योंकि ज्ञान नामक आत्मगुणका बिल्कुल अभाव होना असम्भव है। कारण जभी—"मैं अज्ञानी था, कुछ भी नहीं जानता था" कहोगे तभी तुम्हारे ज्ञानका अस्तित्व प्रमाणित होगा। उस समय तुम्हारा दूसरा कोई ज्ञान न हो सही; किन्तु अज्ञान विषयक ज्ञान था। तुम जो अज्ञानी थे इसका अनुभव भी एक तरहका ज्ञान ही है। "अज्ञान" था इसका अर्थ क्या है?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं तुम्हारा ज्ञान (चैतन्य) उस समय अज्ञानके सिवा अन्य विषयका अवगाहन नहीं करता था । यही उसका अर्थ है । अतएव अज्ञान अभाव या शून्य रूपो नहीं है । वह भाव पदार्थ और अभाव पदार्थसे पृथक् है । वह यत्किंचित् अर्थात् एक प्रकार तुच्छ अस्थिका पदार्थ है ।

अज्ञान कहनेसे लोग अभाव पदार्थ समझ लेते हैं । इस भयसे "भावरूप" विशेषण दिया गया है । निर्द्धारित रूपसे उसका स्वरूप निर्णय किया जा नहीं सकता, इससे "सदसद्भ्याम निर्वचनीय" कहा गया है । मिथ्याज्ञान नामक आत्मगुण नहीं है इससे "त्रिगुणात्मक" कहा गया है । ज्ञानके साथ विरोध रहनेसे अर्थात् ज्ञान रहनेसे अज्ञान भाग जाता है । इससे उसको "ज्ञानविरोधी" कहा गया है । अज्ञान पदार्थको भाव कह कर व्याख्या करनेसे भी ब्रह्म पदार्थकी तरह पारमार्थिक भाव नहीं है । यह समझानेके लिये "यद्किञ्चित्" यह विशेषण दिया गया है । यत्किञ्चत् अर्थात् एक तरहका अस्थिर या अनिर्वाच्य तुच्छ पदार्थ हैं । इस तरहका जो अज्ञान है, वह अनुभवसिद्ध है । सभी लोग "अहं अज्ञः" मैं अज्ञ अर्थात् मैं नहीं जानता, मैं कौन हूं, यह मैं नहीं जानता यह क्या है ? वह क्या है ? यह मैं नहीं जानता इत्यादि वाक्य कहते हैं । प्रत्येक मनुष्यका ऐसा हो अनुभव प्रत्येक मनुष्यमें अज्ञान सद्भावका प्रमाण है । अज्ञान जो अनिर्वचनीय पदार्थ है, यह भी उत्तम रूपसे अनुभव द्वारा प्रमाणित हो सकता है । अज्ञान क्या है ? यह निद्धारित रूपसे मालूम न रहनेके कारण हम मोहमें अभिभूत रहते हैं । अतएव अज्ञान एक प्रकारका अनिर्वचनीय यत्किञ्चत् पदार्थ है,—यह अनुभव और शास्त्र दोनों प्रमाणसिद्ध है । इस विषयमें शास्त्रका मत है, कि स्वयं प्रकाश आत्माका शक्तिरूप अज्ञान अपने गुणोंसे गुप्त है ।

वह लक्षणाक्रान्त अज्ञान अन्ततः नाना रूपसे प्रकाशित होने पर भी वास्तवमें एक है । इसलिये शास्त्रमें उसको समष्टि (समुदाय वा अपृथक् भाव) लक्ष्य कर एक और व्यष्टि (विभिन्न भिन्न भाव या विशेष विशेष अवस्था) लक्ष्य कर बहुत कह कर उल्लिखित है । जैसे विशेष वृक्षके समष्टिभावमें एक वन और जलके समष्टिभावमें सागर होता है, वैसे ही जीवगत नाना प्रकारके अज्ञानके समष्टिभावमें वह एक है । किसीका भी वह सृष्ट नहीं, इस तरहका सत्व, रज और तमोगुणात्मक अज्ञान है* ।

यह समष्टि अज्ञान उत्कृष्टका अर्थात् अप्रतिहत स्वभाव-परिपूर्ण चैतन्य या ईश्वरकी उपाधि होनेसे विशुद्ध सत्व-प्रधान है । जो निकट रह कर अपना गुण समीपकी वस्तुमें आरोपित करता है, वह उपाधि है । जूहीका पुष्प स्फटिकके निकट रह कर अपना लौहित्य स्फटिकको प्रदान करता है । इससे जूहीका पुष्प स्फटिककी उपाधि है । अज्ञान भी चैतन्यके निकट रह कर अपना दोष-गुण चैतन्यमें आरोपित करता है । इससे वह चैतन्यकी उपाधि है । जो जिसकी उपाधि है, वह उसका उपहित है । चैतन्यकी उपाधि अज्ञान है, इसीलिये चैतन्य अज्ञान का उपहित है ।

उत्कृष्ट और विशुद्ध प्रधान इन दो शब्दों द्वारा इसी तरहका भावार्थ मिलता है, कि सृष्टिके समय मूलप्रकृतिके सिवा मन, बुद्धि आदि अन्य कोई उपाधि नहीं थी । इसलिये यह उत्कृष्ट है । सत्व, रजः और तमः ये तीन गुण जब समान रहते हैं, तब सृष्टि नहीं होती । जब किसी एक की वृद्धि हो जाती है, तब सृष्टि होती है । सृष्टिके पहले ही प्रकृतिकी या अज्ञानका सर्व प्रकाशक सर्वमर्यादाकारक, सर्वबीजस्वरूप सुखमय और प्रकाशक सत्व प्रवृद्ध हो कर महतत्त्वको प्रसव करता है । क्रमशः उससे अहंकार आदिकी सृष्टि होती है । अतएव समष्टि अज्ञानमें और महतत्वमें सत्वगुण प्रबल रहता है, रजः और तमोगुण विलुप्तप्राय या अभिभूतप्राय रहता है । इसीसे उसको विशुद्ध सत्व कहा जाता है ।

समष्टि अज्ञानमें उपहित चैतन्य सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्व नियन्ता, अव्यक्त, अन्तर्यामी, जगत्कारण आदि नाम द्वारा अभिहित होते हैं । ऐसी समष्टि अज्ञानकी

---

* "इदमज्ञानं समष्टिव्यष्ट्यभिप्रायेणैकमनेकमिति च व्यवहियते, तथा हि, यथा वृक्षाणां समष्ट्यभिप्रायेण वनमित्येकत्वव्यपदेशः यथा वा जलानां समष्ट्यभिप्रायेण जलाशय इति तथा नानात्वेन प्रतिभासमान जीवगताज्ञानानां समष्ट्यभिप्रायेण तदेकत्वव्यपदेशः । अजामेकामित्यादिश्रुते" (वेदान्तसार)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवभासक होनेकी वजह वह सर्वज्ञ हैं। इस विषयमें श्रुति इस तरह कहती है, जो समष्टि और तदन्तःपाती सभी व्यक्तियोंको जानते हैं, वे सर्वज्ञ और परमेश्वर हैं।

ईश्वरकी उपाधि स्वरूप समष्टि अज्ञान सबके लिये वस्तुका कारण है। इसीलिये वह ईश्वरके कारण-शरीर है।

जिस तरह वनकी व्यष्टि वृक्ष है, जो अनेक हैं और जलाशयकी व्यष्टि जल है, वह भी अनेक है, उसी तरह समष्टि अज्ञानकी व्यष्टि अज्ञान भी अनेक है। श्रुतिमें लिखा है, कि परमेश्वर बहुमाया द्वारा अनेक रूपोंमें प्रकाशित होते हैं।

यहां देह, इन्द्रिय और अन्तःकरण आदि नाना प्रभेद-युक्त जीवव्यापी अज्ञानको व्यष्टि अज्ञान और महतत्त्व नामक अविभक्त ईश्वरानुगत मूल-अज्ञानको समष्टि अज्ञान निर्देश किया गया है।

व्यष्टि अज्ञान निकृष्टको (अर्थात् असर्वज्ञ और अल्प-शक्तिमान जीवकी) उपाधि और मलिनसत्त्व प्रधान है। इसमें जो चैतन्य प्रतिविम्बित हो रहा है, उसको जीव कहते हैं, वह अल्पज्ञ है। अल्पज्ञता हेतु उसको अनीश्वरत्वादि गुणविशिष्ट प्राज्ञ कहते हैं (प्र अज्ञ)। मलिन-सत्त्वप्रधान इसका भावार्थ यह है, कि महतत्त्व नामक मूल ज्ञानके बाद उसके रजः और तमो-अंश वृद्धि पा कर अहंकार और अन्तःकरणकी सृष्टि करता है। रजः और तमोमिश्रित होनेके कारण अन्तःकरणादिकी प्रकाश-शक्ति अल्प है इससे उसका उपहित चैतन्य भी अल्पप्रकाशक है। इसीलिये जीव अल्पज्ञ है।

जीवको प्राज्ञ नामसे पुकारनेका कारण यह है, कि जीव सब अज्ञानोंका अवभासक है। जीवकी उपाधि भी अस्पष्ट है अर्थात् रजस्तमोमिश्रित होनेसे मलिन है। इसीसे अल्प प्रकाशक या प्राज्ञ है। "प्रायेण अज्ञः' अर्थात् प्रायः ही नहीं जानता।

पहले जो व्यष्टि और समष्टिकी बात कही गई है वह केवल कल्पनामात्र है। वन और वृक्ष वास्तवमें जैसे अभिन्न है, वैसे ही व्यष्टि और समष्टि—दोनों अज्ञान ही अभिन्न है, अर्थात् एक है। भिन्नता कल्पना व्यवहारिक है।

इस अज्ञानमें दो शक्तियां हैं:—एकका नाम आवरण-शक्ति, दूसरीका विक्षेप-शक्ति है। आवरण शक्ति समझनेके लिये यह दृष्टान्त दिया जा सकता है, कि एक छोटा-सा मेघखण्ड दर्शकके केवल नेत्रोंको आच्छन्न कर लेता है, किन्तु दर्शक जानता है कि इस मेघ खण्डने समूचे सूर्य्यको ढंक लिया है। उसी तरह अज्ञान भी अपने बुद्ध्यादिरूपसे परिच्छिन्न होने पर भी बुद्धिप्रतिविम्बित चैतन्यको आवृत करनेसे समझनेवालेको अपनेमें सर्वव्यापक आदि अनुभव नहीं होता। सर्वव्यापक चैतन्यके जिस अंशमें बुद्धि है उसी अंशमें जीव है। जीवांश अज्ञानसे आवृत होनेसे अपनेको बंधा हुआ और संसारी अनुभव करता है। अज्ञान जिस शक्ति द्वारा आत्माके स्वरूपको आवृत करता है, उसी शक्तिका नाम आवरण-शक्ति है। श्रुतिमें लिखा है, कि अज्ञ मनुष्य जिस तरह मेघाच्छन्न नेत्रसे सूर्य्यको मेघाच्छन्न और प्रभारहित देखता है वैसे ही अविवेकी पुरुष अपने अज्ञानसे समाच्छन्न हो कर अपनेको बंधा हुआ देखता है। जो मूढ़ बुद्धिकी दृष्टिसे बंधु हुएकी तरह दिखाई देता है, वही सर्वव्यापी परमात्मा मैं हूं।

ज्ञातव्य वस्तु यदि अज्ञान द्वारा आवृत हो अर्थात् यदि सब अंशोंमें स्फुर्त्ति नहीं होता, तो उसमें कोई एक विपरीत प्रत्यय उत्पन्न होती। जैसे रस्सी या जलधारा अज्ञानावृत होनेसे सर्पका बोध होता है या वैसे ही एक कल्पित दृश्य दिखाई देता है। अतएव परमात्माका स्वरूप अज्ञान द्वारा ढके रहनेसे कर्त्तृत्व, भोक्तृत्व, सुखित्व, दुःखित्व आदि सांसारिक धर्म कल्पित होते रहते हैं। उक्त अज्ञान जिस शक्ति द्वारा कल्पना करता उस शक्तिका नाम विक्षेप है।

विक्षेपशक्ति और सृष्टि करनेकी सामर्थ्य एक ही बात है। आवृत होने पर ही विक्षेप अर्थात् कल्पना उपस्थित होती है यह अनुभवसिद्ध है। जिस तरह रस्सीको अच्छी तरह न जान सकनेके कारण सर्प आदिकी कल्पना होती है, उसी तरह आत्मविषयक अज्ञानने स्वावृत आत्मामें तुच्छ अवस्तु आकाशादिकी सृष्टि की है। अज्ञानकी जिस शक्ति द्वारा ऐसी सृष्टि होती है, उस शक्तिका नाम विक्षेप है। इस पर श्रुतिका कहना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, "अज्ञानकी विक्षेपशक्ति नश्वर ब्रह्माण्डकी सृष्टि करती है।" मकड़ी जैसे अपने चैतन्यके फलसे अपने उत्पादन तन्तुओंका निमित्तकारण और शरीर द्वारा उपादानकारण है वैसे ही परब्रह्म भी अपने अज्ञान (माया) द्वारा सृष्टिके उपादानकारण और चैतन्यके सान्निध्यमें निमित्तकारण होते हैं। मकड़ी अपने लस्सादार पदार्थोंके बलसे तन्तुओंकी सृष्टि करती है वैसे ही आत्मा भी चैतन्यके सन्निधानके प्रभावसे मायिक-विकार द्वारा विचित्र जगतकी सृष्टि करती है।

उत्पत्तिकी प्रणाली इस तरह है,—तमोगुण बाहुल्यसे विक्षेपशक्तियुक्त अज्ञानोपहित चैतन्यसे पहले आकाश, फिर आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि, फिर उससे जल और इसके बाद इन चारोंसे पृथ्वीकी उत्पत्ति होती है। क्रमशः इसी तरह सृष्टि होती है। प्रथम उत्पन्न पांचो पदार्थको पण्डित लोग सूक्ष्मभूत, तन्मात्रा और अपञ्चीकृत महाभूत कहते हैं। इन सब सूक्ष्म भूतोंसे जीवका सत्रह अवयवविशिष्ट सूक्ष्म (पतला) और स्थूलभूत (मोटा) शरीर उत्पन्न होता है। जब तक प्रलय नहीं होता, तब तक तक सूक्ष्म और स्थूल शरीर विद्यमान रहता है।

सत्रह अवयव, जैसे पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, पांच प्राण, मन और बुद्धि। बुद्धि और पांच ज्ञानेन्द्रिय इन सबकी समष्टिको विज्ञानमय कोष कहते हैं। विज्ञानमय कोषको ही इहलोक या परलोक सञ्चारी जीव कहता है। इस विज्ञानमय कोषमें ही 'अहं कर्त्ता' 'अहं भोक्ता' 'अहं सुखी' इसी तरहका अभिमान उत्पन्न होता है। मन और पञ्चकर्मेन्द्रियके मिल जानेसे मनोमय कोष तथा पञ्च प्राण और पञ्चकर्मेन्द्रियके मिल जानेसे प्राणमय कोषकी सृष्टि हो जाती है।

इन सब कोषोंमें विज्ञानमय कोष ज्ञानशक्तिसम्पन्न और कर्त्तृस्वरूप, मनोमय कोष इच्छा शक्तिविशिष्ट और कारणरूप, प्राणमय कोष क्रियाशक्तियुक्त कार्यरूप है। योग्यताके अनुसार इस तरहकी विभागकल्पना हुई। यह सम्मिलित तीनों कोष ही सूक्ष्म शरीर है।

इस सूक्ष्म शरीरमें भी वन-वृक्षकी तरह या जलाशय जलकी तरह समष्टि और व्यष्टि है। एकत्व-बुद्धिका विषय होनेसे समष्टि और पृथक् बुद्धिका विषय होनेसे व्यष्टि, स्थावरजङ्गम समूचे प्राणियोंके सूक्ष्म शरीर सूत्रात्मा नामक हिरण्यगर्भकी बुद्धिके विषय होनेसे समष्टि और प्रत्येक जीवके अपनी अपनी बुद्धिका विषय होनेसे व्यष्टि होती है।

समष्टि सूक्ष्मशरीरोपहित चैतन्य सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ और प्राण नामसे व्यवहृत होता है। सूतेकी तरह प्रत्येकके अनुमस्यूत होनेसे सूत्रात्मा तथा ज्ञान, इच्छा, क्रियाशक्तियुक्त सूक्ष्म भूताभिमानी होनेसे हिरण्यगर्भ और प्राण है।

हिरण्यगर्भकी उपाधिस्वरूप यह समष्टि कोषत्रय (सूक्ष्म शरीरकी समष्टि) स्थूल जगत्की अपेक्षा सूक्ष्म होनेसे सूक्ष्म, विशीर्ण होनेसे शरीर और जाग्रत्-संस्काररूपी हेतु स्वप्न और स्थूल प्रपञ्चके प्रलय-स्थान नामसे पुकारा जाता है। व्यष्टि सूक्ष्म शरीरमें उपहित चैतन्यका नाम तेजस् है। तेजोमय अन्तःकरणमात्र ही उसकी उपाधि है। अर्थात् यह स्वप्नकालमें केवल अन्तःकरण-कल्पित विषयका अनुभव करता है।

इस स्थलमें भी पहलेकी तरह समष्टि व्यष्टि शरीरके वस्तुगत अभेद और तदुपहित चैतन्यका भी अभेद देखना चाहिये। पूर्वोक्त वन, वृक्ष और उससे अवच्छिन्न आकाश और जलाशय, जल और उससे प्रतिबिम्बित आकाशके दृष्टान्तमें लेना चाहिये।

यही सब मायिक है अर्थात् माया द्वारा ही इस तरहका ज्ञान होता है। ज्ञान होनेसे मायाकी कोई जरूरत नहीं होती।

आत्मासे एकत्व ब्रह्मचैतन्य-मायाका सम्पर्क हुआ है। जिस मायाके कारण जीव अपना सुख नहीं जानता, ब्रह्मभाव नहीं जानता और अपनेको सुखदुःख भोक्ता जन्म-मरणशील जीव समझता है इस मायाकी फाँससे छुटने पर अपनेको आनन्दस्वरूप समझने लगता है।

इसी मायासे इन्द्रजाल सदृश जन्ममृत्यु आदि कई बातें अघटनसे सघटनकी तरह दिखाई देती हैं, उसका कौन सीमा-निर्द्धारित कर सकता है? इसीको मायावाद कहते हैं।

जब जीव जन्ममरणादिकी यातनासे संसारके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनलमें परितप्त हो कर वेदवेदान्तपारग गुरुके सामने उपस्थित होता है तब गुरु कृपा कर उसको ब्रह्मोपदेश प्रदान करते हैं। शिष्य क्रमसे श्रवण, मनन और निदिध्यासनादि द्वारा मायाके इन सब कार्योंको समझ सकता है। अज्ञानवशतः रस्सीसे सांपका भ्रम होता है उसी तरह मायावेशमें एक, अद्वितीय, सच्चिदानन्द, ब्रह्ममें जो जगत्की भ्रान्ति होती थी, उसकी निवृत्ति होती है।

वेदान्तसार और वेदान्तदर्शन देखो।

सांख्य-प्रवचनभाष्यमें विज्ञान-भिक्षु इस मायावादको प्रच्छन्न बौद्धमत कहा गया है। उसके मतसे यह बौद्धोंका एक प्रकारका मत है। अतएव यह मिथ्या है।

"मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमेव च।
मयैव कथितं देवि! कलौ ब्राह्मणरूपिणा॥" (विज्ञानभिक्षु)

पुराण शब्दमें पद्मपुराणका विवरण देखो।

कलिकालमें ब्राह्मणरूपी शङ्कराचार्यने इस असत् मायाको प्रकाशित किया है, इससे जीवका निश्रेयस लाभ दूर भागता है। सांख्यके मतसे यह जगत् सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका प्रकृतिसे उत्पन्न है। प्रकृति और पुरुषका पूर्णज्ञान होनेसे मुक्ति हो जायगी।

वेदान्तके मतसे भी सत्त्व, रज और तमोगुणमयी माया है। जीव जब यह समझ जाता है, कि यह माया या अज्ञानका कार्य है तब उसका मोक्ष होता है।

शङ्कराचार्य और वेदान्त शब्दमें विशेष विवरण देखो।

भगवद्गीतामें लिखा है—

"त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः॥"

(गीता ७।१३-१५)

विविध गुणमय भावने ही जगत्को मोहित कर रखा है। मुझको (ब्रह्म) इसको अतीत और अव्यय समझना। मेरी सत्त्वादि त्रिगुणमयी माया नितान्त दुरतिक्रम्य है। जो मनुष्य केवल मेरी शरणमें रह कर मेरा भजन करते हैं, वे ही इस सुदुस्तर मायाको फाँससे छुट सकते हैं। जो पापकर्मा, मूढ़ और नराधम हैं, जिसका ज्ञान माया द्वारा अपहृत हुआ है, वह मेरा भजन नहीं करता है। इसका तात्पर्य यह है, कि भगवान् नित्य शुद्ध मुक्तस्वभावके हैं। फिर भी यह मिथ्या ज्ञानमय जगत् किस तरह उनका विजृम्भण हुआ? अर्जुनका यह सन्देह दूर करनेके लिये भगवान्ने अर्जुनसे कहा था, कि जीव त्रिगुणमयी मायासे मोहित आत्मानात्मविवेकविहीन हो मुझको पहचान नहीं सकता। जैसे ग्रीष्मके प्रचण्ड मार्त्तण्डके तीव्र तेजकी ओर देखनेसे उसीमें मुग्ध हो जाता है, यथार्थ सूर्यको देख नहीं सकता, वैसे ही त्रिगुण व्यापारसे विमोहित हो कर जीव जिसका आश्रय ले कर यह गुण प्रकाशित किया हुआ है, उन्हीं भगवान्को लक्ष्य नहीं कर सकता।

वे त्रिगुणके अतीत और त्रिगुणके अधिष्ठानभूत भी हैं। किन्तु मायासे विमोहित जीव उनको देख नहीं सकता। जैसे स्वर्ण-कुण्डलमें 'कुण्डल' दिखाई देनेसे स्वर्णका ज्ञान नहीं रहता, वैसे ही त्रिगुणमयी दृष्टिके आगे ब्रह्म नहीं दिखाई देता।

सनातनी माया जैसी दुरतिक्रम्य है, इससे वह किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता। अर्जुनके इस सन्देहको दूर करनेके लिये भगवान्ने और कहा है, कि मायाको विशुद्ध चैतन्याश्रिता विषयकी मूल प्रसूतिकी कल्पना की जा सकती है। उसका नाम देवीमाया है। जैसे अन्धकार जिस घरमें रहता है, उसी घरको आच्छन्न करता है। जैसे रस्सीको तिगुना ऐंठ कर मजबूत बना कर उससे मनुष्यको बांध सकते हैं वैसे भगवान्की त्रिगुणमयी माया द्वारा जीव भी मजबूतीसे बंधा हुआ है। सर्वावरण छेद कर आत्मा और परमात्माका साक्षात् न होनेसे मायाका बन्धन मुक्त नहीं होता। जो जीव अनन्यकर्मा हो कर भगवान्के शरणापन्न होता है जिस जीवको भगवान्की भक्तिके बिना किसी तरफ ध्यान नहीं रहता, पुण्य कर्ममें सदा अनुरक्त रहता वही जीव मायाबन्धनसे मुक्त हो सकता है।

जो पापासक्त है और जिसका पापकर्ममें ध्यान रहता है, वह नराधम है। वह अपना इष्टानिष्ट समझनेमें असमर्थ है। उसका विवेक माया द्वारा दूषित होनेके कारण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह मेरे स्वरूपको देख नहीं सकता, इसलिये उसका मायाबन्धन मुक्त नहीं होता।

मायिकबन्धन बहुत कठिन बन्धन है, सब तरहका दुःख ही इसका मूल है, जिसको साधारण लोग सुख कहते हैं यथार्थमें वह सुख नहीं, वह सुख नामक दुःख है। जब तक मायाका बन्धन नहीं छुटता, तब तक सभी दुःख केवल मायाका विलास है और नटका खेल है। लोग जैसे स्वप्नमें सुखदुःखका अनुभव करता है; राजा वजीर होता या वजीर राजा होता है, उसी तरह यह भी झूठा मालूम होता है, मायाका बन्धन छुट जानेसे संसारकी भी उसी तरह निवृत्ति होती है।

योगवाशिष्ठके उपशम-प्रकरणमें लिखा है, कि इस संसार नाम्नी मायाका दूसरी किसी वस्तुसे पर्य्यावसान नहीं होता। केवल मनको जीतनेसे ही इसकी विवृत्ति होती है। इसके सम्बन्धमें एक उपाख्यान इस तरह है,—

कोशल जनपदमें गाधि नामके एक महामुनि थे। गाधिने भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिये घोर तपस्या ठान दी। भगवान्‌ने इनको तपस्यासे सन्तुष्ट हो कर उनसे वर मांगनेको कहा। इस पर मुनि महाराजने यह वर मांगा, "भगवन्! आपने परमात्मामें जो एक मायाकी रचना की है, मैं मोहकारिणी संसार नाम्नी उसी मायाको देखना चाहता हूं।" भगवान्‌ने कहा,—"तुम उस मायाको देख सकोगे, और पीछे इससे मुक्त भी हो जाओगे।' अनन्तर गाधि मायादर्शन करने जा कर कठोर संसारके आवर्त्त यानी चक्करमें फँस गये। इस मायामें पड़ कर उन्हें बहुत दिनों तक दुःख भोगना पड़ा। कभी राजा, कभी दरिद्र इस प्रकार मायाके खेलका जब उन्होंने खूब अनुभव किया, तो भगवान्‌ने उनको मायासे मुक्त कर दिया। योगवाशिष्ठके उपशम प्रकरणके ४५ सर्गसे ५५ सर्ग तक विशेष विवरण देखो।

मायावादिन् (सं० पु०) मायावादी देखो।

मायावादी (सं० पु०) ईश्वरके सिवा प्रत्येक वस्तुको अनित्य माननेवाला, वह जो मायावादके अनुसार सारी सृष्टिको माया या भ्रम समझता हो।

मायाविद् (स० त्रि०) मायां वेत्ति विद् क्विप्। मायाज्ञ, जो मायाके स्वरूपसे जानकार हो।

मायाविन् (सं० त्रि०) प्रशस्ता माया कापट्यं अस्त्यस्येति माया-अस्मायामेधास्रजो विनि। पा ५।२।१२१) इति विनि। १ मायाकार, बहुत बड़ा चालाक, धोखेबाज़। पर्याय—व्यंसक, मायी, मायिक, ऐन्द्रजालिक। (पु०) २ विड़ाल, बिल्ली। ३ एक दानवका नाम। यह मयका पुत्र था और बालिसे लड़नेके लिये किष्किंधामें आया था। वाल्मीकिके अनुसार यह दुन्दुभी नामक दैत्यका पुत्र था। ४ मोहन शक्तियुक्त परमात्मा।

"स्वतश्चिदन्तर्यामी तु मायावी सूक्ष्मसृष्टितः।
सूत्रात्मा स्थूलसृष्ट्य व विराड़ित्युच्यते परः॥"

(पञ्चदशी ६।४)

मायाविनी (सं० स्त्री०) छल वा कपट करनेवाली स्त्री, ठगिनी।

मायावी (सं० त्रि०) मायाविन् देखो।

मायावीज (सं० पु०) ह्रीं नामक तान्त्रिक मन्त्र।

मायासीता (सं० स्त्री०) मायाकल्पिता सीता। योग द्वारा अग्निकृत सीता, वह कल्पित सीता जिसकी सृष्टि सीताहरणके समय अग्निके योगसे हुई थी। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है—सीताहरणके समय अग्निने वास्तविक सीताको हटा कर उनके स्थान पर मायासे एक दूसरी सीता खड़ी कर दी थी। पीछे सीताकी अग्नि परीक्षाके समय फिरसे लौटा दी।

अग्निपरीक्षाके समय मायासीताने राम और अग्निसे पूछा था, 'मैं अभी क्या करूं, कोई रास्ता बतला दीजिये' इस पर अग्निने कहा 'तुम पुष्करमें जा कर तपस्या करो।' अग्निके वाक्यानुसार मायासीताने तीन लाख वर्ष तक कठोर तपस्या की थी। इस तपोबलसे मायासीता स्वर्गलक्ष्मी हो गई थीं।

(ब्रह्मवैवर्त्तपुराण प्रकृतिखण्ड १४ अध्याय)

अध्यात्मरामायणमें लिखा है—मारीच मायामृगका रूप धारण कर जब राम और सीताके समीप आया तब स्वयं भगवान् रामचन्द्रने सीताको एकान्तमें बुला कर कहा था, 'जानकि! भिक्षु रूप रावण तुम्हारे पास आयेगा अभी तुम अपनी सदृशाकृतिको छाया-कुटीरमें रख कर अग्निमें प्रवेश करो और वहां एक वर्ष तक ठहरो। रावण वधके बाद मैं तुम्हें फिर बुला लूंगा। जानकीने जैसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामचन्द्रने कहा था, वैसा ही किया। इसी माया सीताको रावण हर ले गया था। लक्ष्मण मायासीता-के विषयमें कुछ भी नहीं जानते थे।

(अध्यात्मरामायण अरण्य ७ ८ अ०) सीता देखो।

मायासुत (सं० पु०) मायायाः मायादेव्याः सुतः। माया-देवीके पुत्र, बुद्ध।

मायास्त्र (सं० पु०) एक प्रकारका कल्पित अस्त्र। इसके विषयमें यह प्रसिद्ध है,कि इसका प्रयोग विश्वामित्रने श्रीरामचन्द्रजीको सिखाया था।

मायिक (सं० क्ली०) माया मोहन-गुणः विद्यतेऽस्मिन् माया (व्रीह्यादिभ्यश्च। पा ५।२।११६) इति ठन्। माया-फल, माजूफल। (पु०) २ मायाकार, ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

"यन्मायां मोहितश्चाहं सदा सर्वे परात्मनः।
परवान् दारुपाञ्चाली मायिकस्य यथा वशे॥"

(देवीभागवत ४।१६।४)

(त्रि०) मायाविशिष्ट, मायासे बना हुआ, जाली।

मायी (सं० पु० १ मायाका अधिष्ठाता, ईश्वर। २ माया करनेवाला व्यक्ति। ३ जादूगर। (स्त्री०) ४ हिलमोचिका।

मायी (हिं० स्त्री०) माई देखो।

मायु (सं० पु०) मिनोति प्रक्षिपति देहे उष्माणमिति मिञ् प्रक्षेपणे (कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्। १।१) इति उण्(मीनातिं दीङा जपि च। पा ६।१।५०) इति आत्वं ततो युक्। पित्त। २ शब्द। ३ वाक्य, वचन।

मायुक (सं० त्रि०) शब्दकारी, शब्द करनेवाला।

मायुराज (सं० पु०) १ कुबेरके एक पुत्रका नाम। २ एक कवि।

मायूक (सं० त्रि०) शब्दकारी, शब्द करनेवाला।

मायूर (सं० क्ली०) मयूराणां समूहः, मयूर (प्राणिरजता-दिभ्योऽञ्। पा ४।३।१५४) इत्यञ्। १ मयूर, मोर। २ मयूर-नीयमान रथ, वह रथ जो मयूरोंसे चलता हो। मयूराणामिद इति-अण्। (त्रि०) २ मयूरसम्बन्धी, मोरका।

"आज्यं गव्यं तथा मांसं मायूरञ्चैव वर्जयेत्।"

(भारत १३।१०४।९०)

मायूरक (सं० पु०) वह जो जंगली मोरोंको पकड़ता हो।

मायूरकर्ण (सं० पु०) मयूरकर्णका गोत्रापत्य।

मायूरकल्प (सं० पु०) कल्पभेद।

मायूरा (सं० स्त्री०) काकोदुम्बरिका, कठूमर।

मायूरादिपक्षव्यजन (सं० क्ली०) मायूरादिपक्षस्य व्यजनं। मयूरके पंख, वस्त्र और बेंत आदिका बना पंखा। यह पंखा त्रिदोषजनक माना गया है।

मायूराज (सं० पु०) मायुराज, कुबेरके एक पुत्रका नाम।

मायूरिक (सं० पु०) मयूर पकड़ कर बेंचनेवाला।

मायूरी (सं० स्त्री०) अजमोदा।

मायूस (फा० वि०) निराश, ना-उम्मेद।

मायूसी (फा० स्त्री०) निराशा, ना-उम्मेदी।

मायेय (सं० त्रि०) माया-जात, मायासे उत्पन्न।

मायोभव (सं० क्ली०) १ शुभ, अच्छा। २ सौभाग्य।

मार (सं० पु०) मृ-भावे घञ्। १ मृति, मरण। म्रियन्ते प्राणिनोऽनेन मृ-घञ्। २ कामदेव।

"अनुममार न मार कथं नु सा इति रतिरतिप्रथितापि पतिव्रता।
विरहिणीशतघातनपातकी दयितयापि तयासि किमुज्झितः॥"

(नैषध० ४।७९)

३ विघ्न। ४ मारण, मारनेकी क्रिया या भाव। ५ धुस्तूर, धतूरा। ६ विष, जहर। ७ बौद्धशास्त्रोक्त उप-देवताभेद। बुद्धदेव जब बोधिवृक्षके नीचे योगमग्न थे, उस समय मार अनुचरोंके साथ उन्हें छलने आया था। किन्तु बुद्धके प्रभावसे उसकी एक भी चाल न चली। बुद्ध देखो। ८ गणभेद। कालिकापुराणमें लिखा है,—

ब्रह्माने महादेवको मोहित करनेके लिये कामदेवसे कहा। काम भारी ऊहापोहमें पड़ गये कि वे महादेवको भुला सकेंगे वा नहीं। इस प्रकार चिन्ता करते करते उन्हे निःश्वास वायु चलने लगी। पीछे नानारूपधारी महापरा-क्रमी भीषणाकृति चञ्चल स्वभावके गण उनकी निःश्वास वायुसे उत्पन्न हुए। इन गणोंमें कोई तुरङ्गानन, कोई गजानन, सिंहानन, कोई वराह, गर्दभ, भल्लूक, बिड़ाल आदि जन्तुके जैसा था। अतिदीर्घाकृति, अतिखर्वाकृति, अतिस्थूल, अतिकृश, पिङ्गललोचन, त्रिनयन, एकनयन, त्रिकर्ण, चतुष्कर्ण, स्थूलकर्ण, महाकर्ण, विस्तृतकर्ण,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्णहीन, चतुष्पद, पञ्चपद, त्रिपद, एकपद, एकहस्त, द्विहस्त, त्रिहस्त, चतुर्हस्त, हस्तहीन, गोधाकार, मनुष्याकार, वकाकार, हंसाकार आदि; अर्द्धकृष्ण, अर्द्धरक्त, कपिलवर्ण, पिङ्गलवर्ण, नीलवर्ण, शुक्लवर्ण, पीतवर्ण, हरितवर्ण आदि भीषणाकृति और नाना दलोंमें विभक्त हो सभी गण उत्पन्न हुए। उत्पन्न होते ही वे शङ्ख पट्ट मृदङ्गादि बजाने लगे। ये सभी गण जटाजूटधारी और रथारोही थे। नाना प्रकारके अस्त्र धारण कर वे 'मार काट' इत्यादि रूपसे भयानक शब्द करने लगे। कामदेवने इन सब गुणोंको देख कर ब्रह्मासे कहा, 'ब्रह्मन्! ये सब कौन काम करेंगे? कहां रहेंगे, इनका क्या नाम रहेगा? कृपया बतला दीजिये।' उत्तरमें लोकपितामह ब्रह्माने कहा, "इन्होंने जन्म लेते ही 'मार मार' ऐसा शब्द किया था और ये मारात्मक हैं, इस कारण इनका नाम मार होगा। ये सभी प्राणियोंका नाश कर सकेंगे। हे मनोभव! तुम्हारा अनुगमन करना ही इनका प्रधान कार्य होगा। जब कभी तुम अपने काममें कहीं जाओगे तब ये लोग भी साथ जा कर तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम जिस पर अस्त्र छोड़ोगे, उसका मन इन सब गणों द्वारा उच्चाटन होगा तथा ये ज्ञानियोंके ज्ञान पथमें हमेशा बाधा डालेंगे। सभी प्राणी जिससे संसार बंधनके अनुकूल कार्य करे, विघ्न बाधा रहते हुए भी ये उन्हें काम करनेमें मदद देंगे। ये सब गण महावेगशाली और काम रूपी हैं। तुम इनका अधिनायक बनोगे। ये गण तपोनिष्ठ, संन्यासी और ऊर्द्ध्वरेता हैं।" (कालिकापु० ६ अ०)

मारक (सं० पु०) म्रियते प्राणिनः यस्मिन् येनेति वा, मृ-घञ्, ततः संज्ञायां कन्। १ मरक, मरण। २ पक्षिविशेष, बाज नामक पक्षी। ३ जन्मस्थानसे आठवें स्थानके अधिपति एक ग्रहका नाम। ज्योतिषके अनुसार मारकग्रह स्थिर करनेमें पहले मारकका स्थान स्थिर करना होगा। इस मारक स्थानका अधिपति जो ग्रह है, उसका दूसरा, सातवां और आठवां अधिपति साधारणतः मारकग्रह है। कारण, दूसरा, सातवां और आठवां स्थान मारकस्थान बतलाया गया है। अतएव उन सब स्थानोंके अधिपति ग्रह ही मारकग्रह हैं।

"भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो मारकः स्मृतः।" (पराशर)

भाग्यपति, व्ययपति और रन्ध्रपति भी मारक हैं। मारकग्रह द्वारा व्याधि, मृत्यु आदिका विचार करना होता है। मारकग्रहके विशेष योग वा दृष्टिसे मृत्यु और सामान्य योग वा सामान्य दृष्टिसे व्याधि होती है। मारक ग्रहकी दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशामें उक्त फल हुआ करता है। अथवा उन मारकग्रहोंके साथ यदि किसी दूसरेका सम्बन्ध हो, तो उस ग्रहकी दशा वा अन्तर्दशामें वैसा ही फल होता है। मारकग्रहके साथ सम्बन्ध नहीं होनेसे पीड़ादि नहीं होती।

"अष्टमं ह्यायुषस्थानं अष्टमादष्टमञ्च यत्।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते॥" (लघुपराशर)

जन्मलग्नसे आठवां, सातवां और दूसरा स्थान मारकस्थान है। अतएव इन तीनों स्थानको ले कर मृत्यु और पीड़ादिका विचार करना उचित है।

पराशर-संहितामें इसका विषय इस प्रकार लिखा है—जायापति और धनपति दोनों ही मारक हैं। रवि और चन्द्रको छोड़ कर मारक स्थानके सभी अधिपति ग्रह मारकदोषयुक्त होते हैं। रवि और चन्द्र ग्रहराज होनेके कारण उनमें मारकदोष नहीं है।

विंशोत्तरी मतसे मारकग्रहका निम्नोक्त प्रकारसे निरूपण करना होता है। मारक-विचारके पहले योग जायुः या स्फुटायुःकी गणना द्वारा परमायु स्थिर करके मारकका निरूपण करे। यदि शनि तीसरे, छठे वा ग्यारहवें स्थानका अधिपति हो कर अथवा उनके अन्यतम स्थानके अधिपतिके साथ युक्त हो कर किसी मारकग्रहका सम्बन्धी हो, तो वह शनि दूसरे सभी मारक ग्रहोंको अतिक्रम कर प्रबल मारक हो जाता है।

जायापति, धनपति, षष्ठपति और अष्टमपति ये सभी मुख्य मारक हैं, किन्तु जायापतिकी अपेक्षा धनपति और षष्ठपतिकी अपेक्षा अष्टमपति प्रबल है। अतएव इससे स्पष्ट मालूम होता है, कि धनपति प्रथम, जायापति द्वितीय, अष्टमपति तृतीय और षष्ठपति चतुर्थ श्रेणीका मारक है। पाप सम्बन्धसे बलवान् हो कर कहीं पर या व्यक्तिविशेषमें तृतीय वा चतुर्थ श्रेणीका मारक भी प्रथम श्रेणीके जैसा काम करता है। बृहस्पति और शुक्र केन्द्रपति हो द्वितीय वा सप्तमस्थ होनेसे दोनों ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रबल मारक होता है। इन सब मारक ग्रहोंकी दशाके अप्राप्तिस्थलमें व्यक्तिविशेषमें पापग्रहके सम्बन्धी व्ययपति और तृतीयपति दोनों ही मारक हुआ करते हैं। आत्मक मारकग्रह और लग्नसे दूसरे, तीसरे, छठे, सातवे इन सब स्थानोंके ग्रहोंमें यदि कोई भी ग्रह अधिक बलवान् हो, तो वहां वही ग्रह मारक है। यदि ये सब समान बलके हों, तो उसका मारक नामका ग्रह ही मारक है।

यदि मध्यायुःयोगमें जन्म हो तथा छठे स्थानमें बहुतसे पापग्रहोंके योगादिका सम्बन्ध रहे, तो छठा पति ही मुख्य मारक है। फिर दीर्घायु-योगमें जन्म होनेसे छठा पति जिस राशिमें रहेगा उस राशिके अधिपतिकी दशामें अथवा छठे स्थानसे नवें वा पांचवे अधिपतिकी दशामें मृत्यु होगी, ऐसा जानना चाहिये। वृश्चिक वा मकरलग्नमें जिसका जन्म हुआ हो, उसका प्रबल मारक राहुग्रह है। बलवान् अनेक ग्रहोंके मारक होनेसे उन सब ग्रहोंकी दशा तथा अन्तर्दशामें रोग और क्लेशभोग होता है। उनमें जो ग्रह प्रबल मारक हैं, उनकी दशादिमें साङ्घातिक पीड़ा, भय, शोक, मृत्युभय, चोर और अग्निभय, अपमान, निन्दा, धनहानि और बन्धन, यह आठ प्रकारके मृत्युफल हुआ करते हैं। (पराशरसंहिता)

मारकगण (सं० क्ली०) मारकाणां गणः। रसेन्द्रसारसंग्रहोक्त द्रव्यगण। वृहतो, पान, पिण्डतगर, पुनर्णवा, मण्डूकपर्णी, कटुकी, मूसाकानी, मैनफल, अकवन और शतमूली ये सब द्रव्य मारकगण हैं।

(रसेन्द्रसारस०)

मारकत (सं० त्रि०) मरकत-अण्। मरकतसम्बन्धीय।

मारकती (सं० स्त्री०) मरकतमणिसम्बन्धी।

मारकवर्ग (सं० पु०) रसेन्द्रसारसंग्रहोक्त द्रव्यगण। गणके नाम—मोथा, वच, चिता, गोखरू, तितलौकी, दन्ती, जातिपुष्प, रास्ना, शरपुङ्खा, घृतकुमारी, चण्डालिनी, ओल, कुचिला, हारसुच, लज्जालु, घोषा, लाक्षा, दन्तोत्पल, वाला, पोपल, निसिन्दा, वन इलायची, विषलाङ्गलिया, शाल, अकवन, सोमराज, रविभक्ता, काकमाची, श्वेत आकन्द, अपराजिता, वायसतुण्डी, सीज, विजबंद, सोंठ, वराहक्रान्ता, हाथीसूँड़, कदली, रास्ना, कच्ची इमली, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, पुनर्णवा, श्वेतपुनर्णवा, धतूरा, काकजङ्घा, शतमूली, क्षीरीष, परगाछा, तिल, भेकपर्णी, दूर्वा, मूर्वा, हरीतकी, तुलसी, गोक्षुर, मूसाकानी, वनवर्गलता, तालमूली, हींग, दारचीनी, सहिंजन, अपराजिता, जलपीपल, भृङ्गराज, सैन्धवलवण, प्रसारिणी, सोमलता, श्वेतसर्षप, असन, हंसपदी, व्याघ्रपदी, पलाश, भिलावाँ और इन्द्रवारुणी। (रसेन्द्रसारस०)

मारका (अ० पु०) १ चिह्न, निशान। २ किसी प्रकारका चिह्न जिससे कोई विशेषता सूचित होती है। ३ युद्ध, लड़ाई। ४ बहुत बड़ी या महत्त्वपूर्ण घटना।

मारकाट (हिं० स्त्री०) १ युद्ध, लड़ाई। २ मारने काटनेका भाव। ३ मारने काटनेका काम।

मारकायिक सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार मारके अनुचर।

मारकीन (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका मोटा कोरा कपड़ा जो प्रायः गरीबोंके पहननेके काममें आता है।

मारखोर (फा० पु०) काश्मीर और अफगानिस्तानमें होनेवाली एक प्रकारकी बकरी या भेड़। यह प्रायः दो तीन हाथ ऊंची होती है और ऋतुके अनुसार रंग बदलती है। इसके सींग जड़में प्रायः सटे रहते हैं। इसकी दाढ़ी लम्बी और घनी होती है।

मारग (सं० पु०) मार्ग देखो।

मारङ्गा (सं० स्त्री०) मेदा।

मारजन (सं० पु०) मार्जन देखो।

मारजनी (सं० स्त्री०) मार्जनी देखो।

मारजातक (सं० पु०) मार्जार, बिल्ली।

मारजार (सं० पु०) मार्जार देखो।

मारजित् (सं० पु०) मारं कामं जितवान्, जि-क्विप् तुगागमः। १ बुद्धदेव। २ कन्दर्पविजेता, वह जिसने कामदेवको जीत लिया हो।

मारट (सं० क्ली०) इक्षुमूल, ऊखकी जड़।

मारण (सं० क्ली०) मार्यते इति मृ णिच् भावे ल्युट्। १ बध, हत्या करना।

"यावन्ति पशुरोमाणि तावत् कृत्वेह मारणम्।
वृथा पशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि॥"

(मनु ५।३८)

२ अभिचार विशेष, जिस क्रिया द्वारा मृत्युव्याधि आदि अनिष्ट होता है उसे मारण कहते हैं। अथर्ववेद और तन्त्रशास्त्रमें इस मारण क्रियाका विधान है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलवान् और चन्द्रके क्रूरग्रहके साथ क्रूरग्रहके क्षेत्रमें रहते समय यदि वृष्टियोग हो, तो उस समय मारण क्रियाका अनुष्ठान करना चाहिये।

"अभिचारस्य विषयानाकर्ण्य वदामि ते।
सक्रूरे क्रूर वर्गस्थे चन्द्रे बलिनि शोधने।
विष्टियोगे च कर्त्तव्योऽभिचारोऽप्यरिनिधने॥"

(षट्कर्मदीपिका)

पापिष्ठ, नास्तिक, देवब्राह्मणादि निन्दक, अज्ञ, घातक, कुत्सितकर्मरत, क्षेत्र, वृत्ति, स्त्री और धनापहारी, कुलान्तकारी, समयनिन्दक, खल, राजद्रोही, विषाग्नि शस्त्रादि द्वारा प्राणियोंके प्राणनाशक, ऐसे दोषयुक्त व्यक्तियोंको यदि हत्या की जाय, तो हत्या करनेवालेको कोई दोष नहीं लगता। दशास्थितिकी विवचना कर मारणकार्य करना होता है। जो व्यक्ति पूर्व लिखित योगादिका विचार किये विना किसीको मारनेमें प्रवृत्त होता है, उसको मृत्यु शीघ्र ही होती है। ब्राह्मण, धार्मिक, राजा, स्त्री, यज्ञशील, दाता और दयावान् इन सब व्यक्तियोंके प्रति मारणादि किसी प्रकारका अभिचार कर्म नहीं करना चाहिये*। यदि कोई शत्रुतावशतः ऐसा करे, तो विपरीत फल होता है अर्थात् जो व्यक्ति अभिचार करेगा उसीकी मृत्यु होगी। जिसकी हत्या करनी होगी, पहले उसकी आयुका परिमाण जान लेना आवश्यक है। उसका जन्मलग्न, जन्म, नक्षत्र और जन्मलग्नाधिपति ग्रह इन तीनोंके अनुकूल मारणकर्म करना होगा। इन सब ग्रहोंके बलाबलका अच्छी तरह विचार किये बिना यदि कार्य किया जाय, तो मारनेवालेकी मृत्यु होती है।

देवताके प्रति भक्ति दिखला कर गुरुके आज्ञानुसार गुरुदेवके पार्श्ववर्त्ती हो कार्य करे। अभिचारकार्यमें शत्रुके लिये शोक नहीं करना चाहिये। करनेसे फल नहीं होता, वरन् अनिष्ट ही होता है। जिसका मारण करना होगा, उसके जन्मलग्नसे अष्टम लग्नमें तथा अष्टम राशिमें क्रूरग्रहके रहते समय मारणकार्य करे। मारण कार्यमें राशिके अनुसर दिनका निर्णय करके पीछे काम शुरू कर दे। मेष और वृषको पूर्व दिशा, मिथुनको अग्निकोण, कर्कट और सिंहको दक्षिण दिशा, कन्याको नैर्ऋतकोण, तुला और वृश्चिकको पश्चिम दिशा, धनुःको वायुकोण, मकर और कुम्भको उत्तर दिशा तथा मीनको ईशानकोण, इस प्रकार राशिक्रम जान कर कार्य करे। दिनमें पांच पांच दण्ड करके एक एक राशि होती है। जब जिस ओर कार्य करना होगा, तब उसी ओरकी राशिको जान कर मारणकार्य करना श्रेय है।

लग्नसे गोचरमें, तृतीय और पञ्चम स्थानमें यदि अशुभ ग्रह रहे, तो मारणकार्य करना चाहिये।

मारणादि अभिचारकर्ममें कुण्ड बना कर होम करना आवश्यक है। यदि कुण्ड न बना सके, तो स्थण्डिल करके होम करे। स्थण्डिलका नियम इस प्रकार है—समतल भूमिको अच्छी तरह गोबरसे लीप कर एक हाथ चौकोन स्थान चिह्नित करे। पीछे उस पर चार अंगुल बालू खड़ा कर दे। इसीका नाम स्थण्डिल है। इसी स्थण्डिल पर होम करना होगा।

व्याघातयोग, हर्षणयोग, विषयोग, मृत्युयोग और क्रूरयोग, इन सब योगोंमें मारणादि अभिचारकार्य उत्तम है।

वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण और मारण आदि अभिचार कर्मोंमें चार पुत्तलिका (पुतली) बनावे। पुत्तलिका मोम या मैदेकी होनी चाहिये। उस पुत्तलिकाको कुण्डमें रख कर पूजा और होम करना होता है। सर्पमस्तकके

---

* "पापिष्ठान् नास्तिकांश्चैव देवब्राह्मणनिन्दकान्।
अज्ञांश्च घातकान् सर्वान् क्लेशकर्मसु संस्थितान्॥
क्षेत्रवृत्तिधनस्त्रीणां आहर्त्तारं कुलान्तकम्।
निन्दकं समयानाञ्च पिशुनं राजघातकम्॥
विषाग्निक्रूरशस्त्राद्यैर्हिंसकं प्राणिनां मुदा।
योजयेन्मारणे कर्मण्येतान् पातकी भवेत्॥
दशास्थितिञ्च संवीक्ष्य सूर्यान्मारणमात्मवान्।
अनवेक्ष्य कृतं कर्म आत्मानं हन्ति तत्क्षणात्॥
ब्राह्मणं धार्मिकं भूपं वनितामैष्टिकं नरम्।
वदान्यं सदयं नित्यमभिचारे न योजयेत्॥
रिपोरष्टमलग्ने च क्रूरे त्वष्टमराशिगे।
स्थाने कुर्यादनिष्टानि तद्विनाशाय साधनम्॥" इत्यादि।
(षट्कर्मदीपिका)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लुबसे होम करना उचित है। साधक दक्षिण मुंह बैठ कर शत्रुका नामोच्चारण करते हुए त्रिकोणकुण्डमें दो पहर रातको होम करे।

किसी निर्जन प्रदेशमें वा श्मशानमें मारणादि अभिचारकार्य उत्तम है। जिस स्थान पर बैठ कर मारण-कार्य करना होगा उसके चारों ओरको रक्षा राजाको करनी चाहिये। साधक स्वदेशमें वा स्वमण्डलमें अभिचारादि कार्य न करे। यदि कोई प्रमादवशतः ऐसा करे, तो अनेक विघ्न होता है।

बहेड़े वृक्षकी लकड़ीसे आग बाल कर बहेड़े और करञ्जफलको नागकेशरके रसमें अभिषिक्त करके होम करे। इससे अतिशीघ्र शत्रुका नाश होता है। करञ्ज-वृक्षकी लकड़ीसे आग बाल कर उस वृक्षके समिधको कटुतैल-मिश्रित करके यदि होम किया जाय, तो शत्रुका मारण होता है। बहेड़े वृक्षकी लकड़ीकी आगमें उस वृक्षके फलको घृतयुक्त कर होम करनेसे शत्रु ज्वराभिभूत हो मृत्युमुखमें पतित होता है। कपासके बीजको कांजीमें मिला कर उससे होम करनेसे शत्रुगण आपसमें कलह करके मर मिटते हैं। सरसों, सोंठ, पीपल और मिर्च इन सब द्रव्योंको एकत्र घीमें मिला कर यदि होम किया जाय, तो शत्रुकी ज्वररोगसे मृत्यु होती है। ऋग्वेदोक्त लवण मन्त्रसे अभिचारकर्म भी किया जा सकता है।

मारणादि अभिचारकर्म विशेष कष्टसाध्य है। इस लिये इसमें विशेष सावधान रहना उचित है। इसमें किसी प्रकारकी अङ्गहानि होनेसे विपरीत फल होता है। अतएव सुशिक्षित क्रियावान् तन्त्रशास्त्रमें सुपण्डित व्यक्ति द्वारा यह कार्य कराना चाहिये।

(षट्कर्मदीपिका)

योगिनीतन्त्रमें मारणका विषय इस प्रकार लिखा है—

मङ्गलवारमें अष्टमी तिथि पड़नेसे उस दिन रातको खैरकी लकड़ीका अंगार ले कर लौहफलकमें शत्रुकी प्रतिकृति अङ्कित करनी होगी। पीछे उस अङ्कित शत्रुके मस्तक, नेत्र, ललाट, हृदय, कर, नाभि, गुह्य, कटि, पृष्ठ और दोनों पैर आदिमें स्वाहान्त चतुर्दशाक्षर मन्त्र लिखने होंगे। यथाक्रम मन्त्रवर्णोंको लिख कर उसकी प्रतिष्ठा करनी होगी। पीछे संहारमुद्रा करके जयप्रदादेवीका ध्यान करना होगा। ध्यान इस प्रकार है—

"दीर्घाकारां कृष्णवर्णां सदार्द्रस्तनमस्तकाम्।
मुण्डयुगलं हस्तं चर्वयन्तीं दिगम्बरीम्॥
शत्रुनाशकरीं देवीं ध्यायेत्तशत्रुक्षयाय च॥"

इस मन्त्रसे ध्यान करके हलदी और ईंटके चूरको वाम हाथमें ले और 'ओं शत्रुनाशकर्यै नमः' इस मन्त्रसे धारा दे। जिसका मारण करना होगा, उसका नाम ले कर 'अमुकस्य शोणितं पिब पिब, मांसं खादय खादय हीं नमः' इस मन्त्रसे दो पहर रातको पूजा करके १०८ बार जप करना होगा। ऐसा करनेसे ग्यारह दिनमें उसे ज्वर आता और बीसवें दिनमें मृत्यु होती है। (योगिनीतन्त्र पूर्वखं० ४ पटल) दूसरा तरीका—सांढ़का गोबर ले कर शिव बनावे। पीछे उस शिवका यथाविधान पूजन करनेसे मारण होता है।

मारणके बहुतसे उपाय तंत्रादिमें बतलाये गये है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां कुल नहीं लिखा गया। गुरुके निकट अभ्यास नहीं करनेसे इन सब कामोंमें हाथ नहीं डालना चाहिये। क्योंकि इसमें पद पदमें विघ्नका सम्भावना है। अतएव मारणकारी व्यक्तिको इसमें बहुत सावधान रहना चाहिये।

'गृध्रास्थिञ्च गवास्थिञ्च मूत्रनिर्माल्यमेव च।
अरेर्यो निखनेत् द्वारे पञ्चत्व मुपयाति सः॥"

(गरुड़पुराण १८६ अ०)

गीधकी हड्डी, गायकी हड्डी और मूत तथा निर्माल्यको शत्रुके दरवाजे पर गाड़ देनेसे उसको मृत्यु होती है।

४ भस्मकरण। आयुर्वेदमें लिखा है, कि रत्नादिका मारण करके उसका व्यवहार करना चाहिये। जिस उपायसे रत्नादिका दोष विनष्ट होता है उसे मारण कहते हैं। मारणको वैद्यकमें भस्म भी कहा गया है। धातु और रत्नादिका मारण विषय उन्हीं सब शब्दोंमें देखो।

मारतंड (सं० पु०) मार्त्तण्ड देखो।

मारतंडमंडल (सं० पु०) मार्त्तण्ड मण्डल देखो।

मारतंडसुत (सं० पु०) मार्त्तण्डसुत देखो।

मारतौल (हिं० पु०) एक प्रकारका बड़ा हथौड़ा।

मारना (हिं० क्रि०) १ बध करना, घात करना, प्राण लेना। २ दुःख देना, सताना। ३ शस्त्र आदि चलाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या फेंकना। ४ बंद कर देना। ५ कुस्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षीको पछाड़ देना। ६ जरब लगाना, ठोंकना। दण्ड देनेके लिये किसीको किसी वस्तुसे पीटना वा आघात पहुंचाना। ८ किसी वस्तुको इस प्रकार फेंकना कि वह किसी दूसरी वस्तुसे जोरसे टकरा जाय। ९ शिकार करना, आखेट करना। १० नष्ट कर देना, अन्त कर देना। ११ किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदिको रोकना। १२ चलाना, संचालित करना। १३ गुप्त रखना, छिपाना, दबाना। १४ करना, लगाना। १५ अनुचित रूपसे, विना परिश्रमके अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना। १६ धातु आदिको जला कर उसकी भस्म तैय्यार करना। १७ अनुचित रूपसे रख लेना, जो कुछ देना वाजिब हो वह न देना। १८ बल या प्रभाव कम करना, मारक होना। १९ विजय प्राप्त करना, जीतना। २० ताश या शतरंज आदि खेलोंमें विपक्षीके पत्ते या गोट आदिको जीतना। २१ निर्जीव सा कर देना, किसी योग्य न रहने देना। २२ लगाना, देना। २३ गुदा भंजन करना, पुरुषका पुरुषके साथ संभोग करना। २४ संभोग करना, स्त्री-प्रसङ्ग करना। २५ डसना, काटना।

मारप (सं० पु०) एक प्राचीन पण्डित।

मारपेच (हिं० पु०) चालबाजी, वह युक्ति जो किसीको धोखेमें रख कर उसकी हानि करने या उसे नीचा दिखानेके लिये की जाय।

मारफत (अं० व्य०) द्वारा, जरियेसे।

मारव (सं० पु०) मरुदेवता।

मारवराज्य (सं० क्ली०) राजतरंगिणीके अनुसार एक प्राचीन देश।

मारवा (हिं० पु०) १ एक सङ्कर राग। यह परज, विभास और गौरीको मिला कर बनाया जाता है। कुछ लोग इसे भ्रमसे श्रीरागका पुत्र मानते हैं। २ एक प्रकारका खयाल जो तिलवाड़ा ताल पर बजाया जाता है।

मारवाड़—राजपूतानेका सबसे बड़ा सामन्तराज्य। क्षेत्रफल ३५०१६ वर्गमील अर्थात् एजेन्सीके सम्पूर्ण क्षेत्रफलके चतुर्थांशसे भी अधिक है। जनसंख्या बीस लाख के करीब है। यह अक्षा० २४° ४२' उ० तथा देशा० ७०° ५१' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें बीकानेर, उत्तर-पश्चिममें जसलमीर, पश्चिममें सिन्ध, दक्षिण-पश्चिममें कच्छका रणप्रदेश, दक्षिण-पूर्वमें उदयपुर, पूरबमें अजमेर-मेरवाड़ा राज्य और किसनगढ़ तथा पूरबमें जयपुर कृष्णगढ़ है। इस राज्यमें २७ शहर और ४०३० ग्राम लगते हैं।

इस राज्यमें राजपूतानेकी प्रसिद्ध मरुभूमि अवस्थित है। प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थमें "दाशेरक", "मरुस्थली" या मरुस्थानके नामसे इस देशका उल्लेख पाया जाता है। मुसलमान ऐतिहासिकोंने मरुदेशके अपभ्रंश मर्-देश शब्दका व्यवहार किया है। यह मरुभूमि मृत्युस्थल है इसलिये यहांके लोग इसे 'मारवाड़' कहते हैं। योधपुर इस राज्यकी राजधानी है। इसलिये आज कल सभी लोग इसे जोधपुर-राज्य कहा करते हैं।

मरुभूमि होने पर भी जोधपुरराज्य प्राकृतिक सौन्दर्यमें विशेष हीन नहीं है। लूनी नदी के किनारेकी समतल भूमिका दृश्य अत्यन्त सुन्दर है। अजमेरको एक झीलसे सागरमती नदी निकल कर गोविन्दगढ़के पास सरस्वतीसे मिलती है। यह सरस्वती नदी पुष्कर झीलसे निकली है। इस विशाल भूभागमें सागरमती और सरस्वतीका संगम अत्यन्त सुन्दर है। गोविन्दगढ़से यह सम्मिलित नदी लुनी नदीके नामसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर बहती हुई कच्छके रणप्रदेशकी दलदल भूमिमें जा गिरी है। अरबली पहाड़से निकल कर जोजरी, शुकरी, गुयराला, पालो, वान्दी आदि कई छोटी छोटी नदियां सहायक रूपसे इसके कलेवरको बढ़ाती है। वर्षाकालमें जो सब स्थान जलमें डूब जाते हैं उन सब स्थानोंमें जौ और गेहूंकी अच्छी फसल लगती है। नदीके किनारे रहनेवाले लोग पीने तथा खेतीका जल कुओंसे निकालते हैं।

जोधपुर और जयपुरके बीच कम्बर (कुमार) नामकी एक बड़ी झील है। इसका तथा इससे छोटी, दीदवाना और पाचपादरा नामकी दो झीलोंका जल खारा है। इन तीन झीलोंके जलसे ही यहां नमक निकाला जाता है। साचोर जिलेमें एक बड़ा जलमग्न भूभाग है। वर्षाके जलसे करीब ५० मील जमीन डूब जाती है, लेकिन ग्रीष्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋतुमें जल सूख जाता है और तब जौ, चने आदिकी फसल लगाई जाती है।

यहांके पर्वतों पर तरह तरहके पत्थर हैं। अरवली पार कर पश्चिम ओर जानेसे, वालुकामय भूभाग पर बालूके पहाड़ नजर आते हैं। फलतः अरवली पहाड़से लूनी नदी तक जोधपुर राज्य वालुकामय होने पर भी बीच बीचमें सुन्दर पर्वतश्रेणी शोभा देती है। इन पर्वतमालाओंमें नान्दोलाइ, पुण्यगिरि सुजातशैल, पालि-शैल, गुन्दोजशैल, संदराशैल, आलेरशैल आदि उल्लेख-नीय हैं। इन सब पर्वतोंमें अभी तक प्राचीन राजों और सामन्तोंकी कीर्त्ति वर्त्तमान है। लूनी पार करनेके बाद बालूके पहाड़ोंकी संख्या क्रमशः कम होती गई है। जोधपुर नगरके बाद ये पहाड़ और भी भिन्न रूपके हो गये हैं।

जोधपुर नगरके उत्तर बालू भरी जमीन 'थल' और बालूके छोटे छोटे पहाड़ 'टिब्बा' कहलाते हैं। इन बालू-मय भूखण्डोंमें जहां तहां फसल लगी जमीन दिखाई देती है। लेकिन इन स्थानोंमें जलका बड़ा अभाव है। ऊपरमें बालू और नीचे उसी जातिके पत्थर पाये जाते हैं। कुआं खोदनेके समय इस प्रकार कठिन पत्थरकी तहें मिलती हैं। सुजातके पास रांगा पाया जाता है। सांभर, पादपाचर, दीदवाना, फलेड़ी, पोकर्ण, सर्गोत और कछवान नामक स्थानोंमें थोड़ा बहुत नमक उत्पन्न होता है। मक्रणा और घानेरा नामक स्थानमें भी संगमरमर पाया जाता है। कापूरीमें सिमेंट मिट्टी बहुत मिलती है।

इतिहास।

मारवाड़का पुराना इतिहास नहीं मिलता। प्राचीन समयमें जिन राजाओंने मारवाड़के राजसिंहासनको सुशोभित किया था उनका वर्णन भाट लोगोंकी वंशा-वलियोंमे पाया जाता है। लेकिन लोग उन्हें बहुत अंशोंमें कपोल-कल्पित और असम्बद्ध समझते हैं। इस-लिये प्राचीन कालको छोड़ ऐतिहासिक समयसे मार-वाड़का एक संक्षिप्त इतिहास लिखा जाता है।

मेवाड़में जिस समय चौहान राजे राज्य करते थे उसी समय राठोर राजे मारवाड़के राजसिंहासन पर सुशोभित थे। किस समय इन राठोरोंने मारवाड़में अपना सिक्का जमाया सो मालूम नहीं। क्योंकि सप्रमाण इसका कोई विवरण नहीं मिलता। राठोर राजवंशकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुत-सी किंवदन्तियां हैं। ये लोग मेवाड़के राणा वंशधरोंकी तरह अपनेको सूर्यवंशी कहते हैं। राठोर देखो।

जो हो, इस देशके इतिहाससे मालूम होता है, कि राठोरराज घरानोंने कान्यकुब्ज नगरमें अपना शासन जमाया था। वीरता और राज्य-जयकी आशाने राठोर जातिको राजपूत जातिओंका अग्रगण्य बना दिया। क्रमशः इसी वीर जातिकी एक एक शाखा बीकानेर, कृष्णागढ़, इदर और अहमदनगरमें राज्य स्थापनमें समर्थ हुई। मारवाड़में राठोरोंके बसनेके पहिले अनुमान किया जाता है, कि इस देशमें जाट, मीना और भील-सरदार रहते थे। राठोरोंने इन सब सामन्तोंको हरा कर मार-वाड़राज्यकी सीमा बढ़ाई।

एक प्राचीन राजकीय इतिहासमें सत्ययुगसे राठोर राजाओंका राज्यकाल कल्पित हुआ है। इस ग्रन्थको राज-वंशावलीमें शासनकालकी घटनाओंका उल्लेख नहीं है, अतएव ऐतिहासिक दृष्टिसे इन्हें छोड़, राजा नयनपालकी राज्य प्राप्तिसे ऐतिहासिक विवरण दिया जाता है। राजा नयनपालने कन्नौजके राजा अजयपाल-को जीत और युद्ध हीमें उसे मार कर कन्नौज राज्यको अपना लिया। उस समय तक राठोर लोग कनोजिया राठोर कहलाते रहे और अपनी वीरताके पुरस्कारमें वंश-मर्यादा-सूचक "कामध्वज"की उपाधि इन्होंने ग्रहण की। राजा नयनपालके लड़के पदरत (भरत) और पदरतके लड़कोंसे तेरह 'कामध्वज' उपाधिधारी राठोर राजवंशोंको प्रतिष्ठा हुई। उनका विवरण यों है:—

१ धर्मबिम्बसे दानेश्वर, २ भानुदसे अभयपुर, ३ वीरचन्द्रसे कुपोलिया, ४ अमरविजयसे कोड़ा, ५ सुजनविनोदसे जोरघैरा या ज्वरखरा, ६ पद्म, इन्हों-ने उड़िसा विजय किया था। ७ अहिहरसे अहिहरवंश, ८ वरदेवसे पारक कामध्वज, ९ उग्रप्रभुसे चन्देला, १० मुक्तमानसे वीर कामध्वज, ११ भारतसे भारतीय, १२ अलकूलसे ओरोदीय, १३ चांद काशीवासी हुए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या फेंकना। ४ बंद कर देना। ५ कुस्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षीको पछाड़ देना। ६ जरब लगाना, ठोंकना। दण्ड देनेके लिये किसीको किसी वस्तुसे पीटना वा आघात पहुंचाना। ८ किसी वस्तुको इस प्रकार फेंकना कि वह किसी दूसरी वस्तुसे जोरसे टकरा जाय। ९ शिकार करना, आखेट करना। १० नष्ट कर देना, अन्त कर देना। ११ किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदिको रोकना। १२ चलाना, संचालित करना। १३ गुप्त रखना, छिपाना, दबाना। १४ करना, लगाना। १५ अनुचित रूपसे, बिना परिश्रमके अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना। १६ धातु आदिको जला कर उसकी भस्म तैय्यार करना। १७ अनुचित रूपसे रख लेना, जो कुछ देना वाजिब हो वह न देना। १८ बल या प्रभाव कम करना, मारक होना। १९ विजय प्राप्त करना, जीतना। २० ताश या शतरंज आदि खेलोंमें विपक्षीके पत्ते या गोट आदिको जीतना। २१ निर्जीव सा कर देना, किसी योग्य न रहने देना। २२ लगाना, देना। २३ गुदा भंजन करना, पुरुषका पुरुषके साथ संभोग करना। २४ संभोग करना, स्त्री-प्रसङ्ग करना। २५ डसना, काटना।

मारप (सं० पु०) एक प्राचीन पण्डित।

मारपेच (हिं० पु०) चालबाजी, वह युक्ति जो किसीको धोखेमें रख कर उसकी हानि करने या उसे नीचा दिखानेके लिये की जाय।

मारफत (अ० व्य०) द्वारा, जरियेसे।

मारव (सं० पु०) मरुदेवता।

मारवराज्य (सं० क्ली०) राजतरंगिणीके अनुसार एक प्राचीन देश।

मारवा (हिं० पु०) १ एक सङ्कर राग। यह परज, विभास और गौरीको मिला कर बनाया जाता है। कुछ लोग इसे भ्रमसे श्रीरागका पुत्र मानते हैं। २ एक प्रकारका खयाल जो तिलवाड़ा ताल पर बजाया जाता है।

मारवाड़—राजपूतानेका सबसे बड़ा सामन्तराज्य। क्षेत्रफल ३५०१६ वर्गमील अर्थात् एजेन्सीके सम्पूर्ण क्षेत्रफलके चतुर्थांशसे भी अधिक है। जनसंख्या बीस लाखके करीब है। यह अक्षा० २४° ४२' उ० तथा देशा० ७०° ५१' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें बीकानेर, उत्तर-पश्चिममें जसलमीर, पश्चिममें सिन्ध, दक्षिण-पश्चिममें कच्छका रणप्रदेश, दक्षिण-पूर्वमें उदयपुर, पूर्वमें अजमेर-मेरवाड़ा राज्य और किसनगढ़ तथा पूरबमें जयपुर कृष्णगढ़ है। इस राज्यमें २७ शहर और ४०३० ग्राम लगते हैं।

इस राज्यमें राजपूतानेकी प्रसिद्ध मरुभूमि अवस्थित है। प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थमें "दाशेरक", "मरुस्थली" या मरुस्थानके नामसे इस देशका उल्लेख पाया जाता है। मुसलमान ऐतिहासिकोंने मरुदेशके अपभ्रंश मरुदेश शब्दका व्यवहार किया है। यह मरुभूमि मृत्युस्थल है इसलिये यहांके लोग इसे 'मारवाड़' कहते हैं। योधपुर इस राज्यकी राजधानी है। इसलिये आज कल सभी लोग इसे जोधपुर-राज्य कहा करते हैं।

मरुभूमि होने पर भी जोधपुरराज्य प्राकृतिक सौंदर्यमें विशेष हीन नहीं है। लूनी नदी के किनारेकी समतल भूमिका दृश्य अत्यन्त सुन्दर है। अजमेरकी एक झीलसे सागरमती नदी निकल कर गोविन्दगढ़के पास सरस्वतीसे मिलती है। यह सरस्वती नदी पुष्कर झीलसे निकली है। इस विशाल भूभागमें सागरमती और सरस्वतीका संगम अत्यन्त सुन्दर है। गोविन्दगढ़से यह सम्मिलित नदी लुनी नदीके नामसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर बहती हुई कच्छके रणप्रदेशकी दलदल भूमिमें जा गिरी है। अरबली पहाड़से निकल कर जोजरी, शुकरी, गुयराला, पालो, वान्दी आदि कई छोटी छोटी नदियां सहायक रूपसे इसके कलेवरको बढ़ाती है। वर्षाकालमें जो सब स्थान जलमें डूब जाते हैं उन सब स्थानोंमें जौ और गेहूंकी अच्छी फसल लगती है। नदीके किनारे रहनेवाले लोग पीने तथा खेतीका जल कुओंसे निकालते हैं।

जोधपुर और जयपुरके बीच कम्बर (कुमार) नामकी एक बड़ी झील है। इसका तथा इससे छोटी, दीदवाना और पाचपादरा नामकी दो झीलोंका जल खारा है। इन तीन झीलोंके जलसे ही यहां नमक निकाला जाता है। साचोर जिलेमें एक बड़ा जलमग्न भूभाग है। वर्षाके जलसे करीब ५० मील जमीन डूब जाती है, लेकिन ग्रीष्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋतुमें जल सूख जाता है और तब जौ, चने आदिकी फसल लगाई जाती है।

यहांके पर्वतों पर तरह तरहके पत्थर हैं। अरवली पार कर पश्चिम ओर जानेसे, वालुकामय भूभाग पर बालूके पहाड़ नजर आते हैं। फलतः अरवली पहाड़से लूनी नदी तक जोधपुर राज्य वालुकामय होने पर भी बीच बीचमें सुन्दर पर्वतश्रेणी शोभा देती है। इन पर्वतमालाओंमें नान्दोलाइ, पुण्यगिरि सुजातशैल, पालि-शैल, गुन्दोजशैल, संदराशैल, आलेरशैल आदि उल्लेख-नीय हैं। इन सब पर्वतोंमें अभी तक प्राचीन राजों और सामन्तोंकी कीर्त्ति वर्त्तमान है। लूनी पार करनेके बाद बालूके पहाड़ोंकी संख्या क्रमशः कम होती गई है। जोधपुर नगरके बाद ये पहाड़ और भी भिन्न रूपके हो गये हैं।

जोधपुर नगरके उत्तर बालू भरी जमीन 'थल' और बालूके छोटे छोटे पहाड़ 'टिब्बा' कहलाते हैं। इन बालू-मय भूखण्डोंमें जहां तहां फसल लगी जमीन दिखाई देती है। लेकिन इन स्थानोंमें जलका बड़ा अभाव है। ऊपरमें बालू और नीचे उसी जातिके पत्थर पाये जाते हैं। कुआं खोदनेके समय इस प्रकार कठिन पत्थरकी तहें मिलती हैं। सुजातके पास रांगा पाया जाता है। सांभर, पादपाचर, दीदवाना, फलेड़ी, पोकर्ण, सर्गोत और कछवान नामक स्थानोंमें थोड़ा बहुत नमक उत्पन्न होता है। मक्रणा और घानेरा नामक स्थानमें भी संगमरमर पाया जाता है। कापूरीमें सिमेंट मिट्टी बहुत मिलती है।

इतिहास।

मारवाड़का पुराना इतिहास नहीं मिलता। प्राचीन समयमें जिन राजाओंने मारवाड़के राजसिंहासनको सुशोभित किया था उनका वर्णन भाट लोगोंकी वंशा-वलियोंमे पाया जाता है। लेकिन लोग उन्हें बहुत अंशोंमें कपोल-कल्पित और असम्बद्ध समझते हैं। इस-लिये प्राचीन कालको छोड़ ऐतिहासिक समयसे मार-वाड़का एक संक्षिप्त इतिहास लिखा जाता है।

मेवाड़में जिस समय चौहान राजे राज्य करते थे उसी समय राठोर राजे मारवाड़के राजसिंहासन पर सुशोभित थे। किस समय इन राठोरोंने मारवाड़में अपना सिक्का जमाया सो मालूम नहीं। क्योंकि सप्रमाण इसका कोई विवरण नहीं मिलता। राठोर राजवंशकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुत-सी किंवदन्तियां हैं। ये लोग मेवाड़के राणा वंशधरोंकी तरह अपनेको सूर्यवंशी कहते हैं। राठोर देखो।

जो हो, इस देशके इतिहाससे मालूम होता है, कि राठोरराज घरानोंने कान्यकुब्ज नगरमें अपना शासन जमाया था। वीरता और राज्य-जयकी आशाने राठोर जातिको राजपूत जातिओंका अग्रगण्य बना दिया। क्रमशः इसी वीर जातिकी एक एक शाखा बीकानेर, कृष्णागढ़, इदर और अहमदनगरमें राज्य स्थापनमें समर्थ हुई। मारवाड़में राठोरोंके बसनेके पहिले अनुमान किया जाता है, कि इस देशमें जाट, मीना और भील-सरदार रहते थे। राठोरोंने इन सब सामन्तोंको हरा कर मार-वाड़राज्यकी सीमा बढ़ाई।

एक प्राचीन राजकीय इतिहासमें सत्ययुगसे राठोर राजाओंका राज्यकाल कल्पित हुआ है। इस ग्रन्थको राज-वंशावलीमें शासनकालकी घटनाओंका उल्लेख नहीं है, अतएव ऐतिहासिक दृष्टिसे इन्हें छोड़, राजा नयनपालकी राज्य प्राप्तिसे ऐतिहासिक विवरण दिया जाता है। राजा नयनपालने कन्नौजके राजा अजयपाल-को जीत और युद्ध हीमें उसे मार कर कन्नौज राज्यको अपना लिया। उस समय तक राठोर लोग कनोजिया राठोर कहलाते रहे और अपनी वीरताके पुरस्कारमें वंश-मर्यादा-सूचक "कामध्वज"की उपाधि इन्होंने ग्रहण की। राजा नयनपालके लड़के पदरत (भरत) और पदरतके लड़कोंसे तेरह 'कामध्वज' उपाधिधारी राठोर राजवंशोंको प्रतिष्ठा हुई। उनका विवरण यों है:—

१ धर्मविम्बसे दानेश्वर, २ भानुदसे अभयपुर, ३ वीरचन्द्रसे कुपोलिया, ४ अमरविजयसे कोड़ा, ५ सुजनविनोदसे जोरधैरा या ज्वरखरा, ६ पद्म, इन्हों-ने उड़िसा विजय किया था। ७ अहिहरसे अहिहरवंश, ८ वरदेवसे पारक कामध्वज, ९ उग्रप्रभुसे चन्देला, १० मुक्तमानसे वीर कामध्वज, ११ भारतसे भारतीय, १२ अलकूलसे क्षीरोदीय, १३ चांद काशीवासी हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन तेरह वंशोंसे राठोरवंश क्रमशः शाखा-प्रशाखाओंमें विभक्त हो गया।

कन्नौज-राज धर्मविम्बके अजयचांद नामक एक लड़का था। इनसे २१ पीढ़ी नीचे तक 'राव'-की उपाधि थी। पश्चात् उदयचांद नरपति, कनकसन, साहसपाल, मेघसेन, वीरभद्र, देवसेन, विमलसेन, धनसेन, मुकुन्द, भदु, राजसेन, त्रिपाल, श्रीपुञ्ज आदि 'राजा' कहलाये। विजय-चंदके पुत्र जयचंद दाल-थामूला उपाधिके साथ कन्नौजके प्रथम नायक हुए। किन्तु कन्नौज-पति जय-चंद और उनके पूर्वपुरुषोंका जो ताम्र-शासन मिला है, उसके साथ ऊपरके वर्णनका कुछ भी मेल नहीं खाता। कन्नौज देखो।

इस प्रकार राठोर प्रतिष्ठाका संक्षिप्त वर्णन दे कर इतिहासकारने, एकदम जयचंदके राज्यकालसे ही वास्तविक इतिहासका अनुसरण किया है। सन् ११९४ ई०में महम्मदगोरीने राजा जयचंदको हराया, राठोरोंका राज्य कन्नौजसे उखाड़ दिया। तब उनके पोते शिवजी और शेठराम १२१२ ई०में जन्मभूमिको छोड़ द्वारिकातीर्थ जानेकी इच्छासे पश्चिमकी मरुस्थलीमें आये। यहां आ कर वे कलुमदके सर्दारके अधीन काम करने लग गये। बाद उन्होंने फुलवारके नामी डकैतोंके सरदार लाखा फुलनाको हराया और सर्वसाधारणसे प्रशंसा लूटी। इस युद्धमें शेठ राम खेत रहे।

उनकी इस वीरतासे प्रसन्न हो कलुमदके सुलंकी सरदारने उन्हें कन्यादान दिया। इसके बाद वे द्वारिका गये। वहांसे लौटते समय उन्होंने लाखा फुंलनाको अपने हाथसे मार डाला और रास्तेमें खरधारके गोहिल सरदार और महेशदासको मार कर उसके खरप्रदेशको अपना लिया। कर्नल टाडने लिखा है, कि खरप्रदेश जीतनेके बाद वे पालीप्रदेशके ब्राह्मणोंके बुलाने पर पहाड़ी डकैतोंको दबानेके लिये आगे बढ़े। डकैतोंके दमनके बाद ब्राह्मणोंके अनुरोधसे उन्होंने वहीं जमीन ले कर रहना शुरू किया। इस तरह पालीप्रदेशमें अपना राज्य बढ़ा राठोर-सरदार शिवजी भविष्य राज्य विस्तार-की नीवं डाल गये। उनका राज्य उनके जेठे लड़के अश्वत्थामाके हाथ रहा। सुनिंगने इदरमें राज्य स्थापित किया और उनके सबसे छोटे लड़के अजयमलने भी कमण्डलराज्य विजय कर वहीं अपना राज्य बसाया। भाट लोगोंकी वंशावलिओंके अनुसार शिवजीके जेठे लड़के अश्वत्थामाने गुहाजातिको हराया और खरराज्य तक अपनी सीमा बढ़ाई और उनके भाई सुनिङ्ग गुजरातके इदरराज्यमें अभिषिक्त हुए।

मरनेके समय राजा अश्वत्थामाके दुहर, जपसिंह, खम्पश ह, भूपसिंह, दण्डल, जैतमल, बन्दर और उहर नामके आठ लड़के थे। जेठे लड़के दुहर पिताके सिंहा-सन पर बैठ कन्नौज विजयकी चेष्टा करने लगे। लेकिन इसमें इन्हें सफलता न मिली। तब इन्होंने राजा परिहारके मन्दौर प्रदेश पर आक्रमण किया। इस युद्धमें राठोरके रक्तसे मन्दौर रञ्जित हो गया। मन्दौरके युद्धक्षेत्रमें राजा दुहर खेत रहे। उस समय इनके रायपाल, कीर्त्तिपाल, बिहार, पित्तल, योगाइल दलु और वेगर नामके सात लड़के थे। इनके ज्येष्ठ पुत्र रायपालने पिताके सिंहासन पर बैठ अपने पिताको मारनेवाले मन्दौर सरदार परि-हारको यमपुर भेज दिया। इनके तेरह लड़के मरुदेशके भिन्न भिन्न भागमें सामन्तोंको हैसियतसे जम गये। इनका जेठा लड़का कणहाल इनके सिंहासन पर बैठा और राज्य किया। कणहालके लड़के जाहन, जाहनके लड़के चादु और चादुके लड़के थिदु क्रमशः राजा हुए। राव थिदु शनिगड़ाको युद्धमें हराया और उनके भिलमाल प्रदेशको अपने अधिकारमें लाया। देत्तरा और वेलेचा जातियोंके अनेक स्थानोंको ले इन्होंने अपनी राज्यसीमा बढ़ाई।

वीर थिदुके मरनेके बाद उनके लड़के सिलूक राजा हुए। सिलूकके बाद उनके लड़के विरामदेवके मरने पर उनके बलशाली पुत्र राव चण्ड गद्दी पर बैठे।

मारवाड़-राजवंशके स्थापक शिवजीसे नीचे राव-चण्ड ११वें राजा हुए। इनके वीर्य्यबलसे राठोर-राज-लक्ष्मी जगमगा उठी। चण्डके शासनकालके १३८२ ई०से ही राठोरजातिकी वास्तविक मारवार-विजय मानी जाती है। इस समय युद्धके मदसे मतवाले राठोर लोगोंने मन्दौर नगरमें अपना अधिकार जमा वहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजधानी स्थापित की। चण्डने नान्दोल और नागोर-गढ़को दखल कर लिया था। इन्होंने परिहारकी राजपुत्री इन्दुमतीसे विवाह किया।

चण्डके चौदह लड़के थे। इनमें रणमल, सत्य, अरण्यकमल और काणके वंश अभी भी मारवाड़में वर्त्तमान हैं। चण्डकी हंसा नामक एक लड़कीका विवाह मेवाड़-पति राणा लक्षके साथ हुआ था। इस कन्याके गर्भसे राणा कुम्भ उत्पन्न हुए। इस विवाहको ले कर मेवाड़ और मारवाड़के बीच घोर शत्रुता चली थी।

सन् १४०८ ई०में राव चण्ड स्वर्गवासी हुए। पीछे उनके बड़े लड़के रणमल सिंहासन पर बैठे। ये भी पिताके जैसे शक्तिशाली थे। इनका चलाया हुआ तौल परिमाण अभी तक मारवाड़में प्रचलित है। इनके २४ लड़के थे। बड़े लड़के योध राव पिताके मरने पर गद्दी पर बैठे और कन्दल, चम्पा, अखिराज, मण्डल, पट्ट, लाखा, वाला, जैतमल, कर्ण, रूप, नाथू, डुंगर, सन्द, मन्द, वीरु, जगमल, हेम्पू, शक्त, करमचंद, अरिवल, केतुसिंह, शत्रुशाल और तेजमल नामके शेष २३ लड़के भिन्न भिन्न प्रदेशके सामन्त हुए थे। इन २४ लड़कोंसे २४ शाखायें निकलीं।

योधरावने राजा होने पर अपने भुजबलसे सुजात आदि देश जय किये। इन्होंने सन् १४५९ ई०में मन्दोर राजधानी छोड़ वर्त्तमान जोधपुर बसाया और यहीं अपना राजपाट उठा लाये। बादमें इनके लड़के सूर्यमल सिंहासन पर बैठे। राजा योधरावके शान्तल, सूर्य, गुम, दुदो, विको, भोलमल, शिवराज, कर्म्मसिंह, रायमल, सामन्तसिंह, विदा, वनहर और निम नामक १४ लड़कोंसे १४ शाखाओं और सामन्त राज्योंकी उत्पत्ति हुई।

राजा सूर्यमलके भाग्य, उदय, स्वर्ग, प्रयाग और विरामदेव नामके पाँच लड़के हुए। इन पाँचोंसे पाँच शाखाएं निकलीं। सूर्यमल रावकी मृत्युके बाद भाव्यके लड़के गंगा राव सन् १५१६ ई०में राजगद्दी पर बैठे। उस वर्ष इन्होंने दौलत खाँ लोदीको हरा कर अपना राज्य सुदृढ़ कर लिया। सन् १५२८ ई०में इनकी राठोर सेनाने बड़े विक्रमके साथ उदयपुरके राणा संग्रामसिंहका पक्ष ले कर मुगल बादशाहके विरुद्ध वियाना (मतान्तरसे खानुया) रणक्षेत्रमें घोर युद्ध किया। इस युद्धमें गंगारावके पोते रायमल मारे गये। इस दुर्घटनाके बाद गंगाराव चार वर्ष जीते रहे।

गंगारावकी मृत्युके पश्चात् मारवाड़के कुलरवि मालदेव राठोर सिंहासन पर सन् १५३२ ई०में आरूढ़ हुए। इन्होंने नागोर, अजमेर, झालरापाटन, शिवनी, भद्राजुन, बीकानेर, विक्रमपुर आदि स्थानोंको अपने शासनमें कर लिया। इन्होंने सांभर झीलके नमककी आयसे राज्यरक्षाके लिये मालकोट और भद्राजुन दुर्ग बनवाये। इन्हींके बाहुबलसे सुजात, सांभर, मेरतिया, खाता, वेदनूर, लादनु, रायपुर, भद्राजुन, नागोर, शिवानी, लौहगढ़, जयकलगढ़, बीकानेर, भिल्लमाल, पोकर्ण, वार, कुशली, रेवास, जाजावर, झालोर, बावली, मूलार, नादोल, फिलोड़ी, सांचोर, दीदवाना, चात्सु लोवाइन, मुलरना, देवरा, फतेहपुर, अमरसर, खवर, वनियापुर, टोंक, थोड़ा, अजमेर, जहाजपुर और शेखावटीप्रदेश मारवाड़-शासनाभुक्त हुए थे।

इसके दश वर्ष बाद इनकी भाग्यलक्ष्मीने मुंह फेरना आरम्भ किया। सन् १५४४ ई०में दिल्लीके अफगान राजा शेरशाह ८० हजार सेना ले कर मारवाड़ पर चढ़ आया। शेरशाहकी जय हुई, लेकिन उसकी सेनाको राठोरोंके हाथ बड़ी क्षति उठानी पड़ी।

सन् १५६७ ई०में मुगल-बादशाह अकबरने मारवाड़ पर चढ़ाई की। मुगल सेनाने मालकोट या मैरतागढ़को घेर लिया। इसके बाद विजयके आवेशमें मुसलमान सेनाने भीमवेगसे दुर्भेद्य नागोरगढ़को भी जीत लिया। बादशाहने अपने अनुगृहीत शिवजीकी दूसरी शाखाके वंशधर बिकानेरपति रायमलको इस प्रदेशका शासक बनाया।

मालदेवका भाग्य क्रमशः बढ़ने लगा। इस समय बादशाह अकबर भारतवर्षमें मुगल-साम्राज्यको बढ़ा रहे थे। मुगल सेनासे बार बार पराजित हो उन्हें सन् १५६९ ई०में बादशाहकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अधीनता दिखलानेके लिये उन्होंने अपने पुत्र चन्द्रसेनको नजरानेके साथ मुगलबादशाहके पास अजमेर भेजा। बादशाहने उनके इस व्यवहारसे क्रोधित हो रायसिंहको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केवल बीकानेरका शासन ही नहीं बरन् समूचे जोधपुर-की राज्य-सनद दी।

इसके बाद शत्रु-सेनाने जोधपुर पर चढ़ाई की। बूढ़े वीर राजा मालदेवको युद्धमें पराजित हो फिर अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। इस बार इन्होंने अपने दूसरे लड़के उदयसिंहको बादशाहके पास भेजा। इस राज-कुमारके व्यवहारसे सन्तुष्ट हो बादशाहने उन्हें मारवाड़-का भावी राजा कह कर स्वीकार किया। इस समय राजा मालदेवने बुढ़ापेमें स्वाधीनता खो अपनी जीवन-लीला समाप्त की।

राजा मालदेवके बारह पुत्रोंमें केवल उदयसिंह बाद-शाहकी कृपासे अपने पिताके सिंहासन पर बैठे। इन्होंने अपनी बहिन योधबाईको बादशाहके हाथ समर्पण किया। सम्राट्की कृपासे ये मुगलसेना-नायकके पद पर नियुक्त हुए। पीछे अपने पुरुषाओं द्वारा शासित समूचा मारवाड़-राज्य इन्हें हाथ लगा। अजमेर प्रदेशके बदले इन्हें मालवाके कई हिस्से मिले थे।

इनके मरनेके बाद राजकुमार सुरसिंह सन् १५९५ ई०में राजगद्दी पर बैठे। इन्होंने भी बादशाहका साथ दे दाक्षिणात्य और गुजरात जय करनेमें राठोरोंकी वीरता-की रक्षा की थी। बादशाहने इनकी वीरतासे सन्तुष्ट हो इन्हें 'सवाई राजा' की उपाधि दी।

गुजरातको जीत कर और वहांके पठान-राजवंशको नष्ट कर राव सुरसिंह विश्राम लेने जोधपुर राज्य आये। इस समय इनके लड़के गजसिंह राठोर-सेना ले बादशाहके पास रहते थे। गजसिंहने झालोर विजय किया, पाश्चात् बादशाहने इन्हें मेवाड़पति राणा अमरसिंहके विरुद्ध भेजा।

फिर सन् १६२० ई०में बादशाहके आज्ञानुसार सुर-सिंह दाक्षिणात्य गये। उसी वर्ष वहां उनकी मृत्यु हुई। पिताके मरनेके बाद गजसिंह मारवाड़के सिंहासन पर बैठे। ये अपने बाहुबलसे खिकीगढ़, गोलकुंडा, किलेना, पनाला, गाजनगढ़, आशीरगढ़ और सतारा आदि युद्ध-में जयलाभ कर बादशाहके विशेष सम्मानपात्र हुए। इस अपूर्व शक्ति और वीरताके लिये इन्हें 'दाल थामना'-की उपाधि मिली।

बादशाह जहांगीरके बड़े लड़के और उत्तराधिकारी राजकुमार परवेज मारवाड़-राजकुमारीके और द्वितीय राजकुमार खुर्रम जयपुर राजकुमारीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। ये दोनों ही राज्य-लोभसे चालबाजी करने लगे। खुर्रम जब गजसिंहको अपनी ओर लानेमें सफल न हो सके तब उन्होंने गजसिंहको दाक्षिणात्यसे निकालनेकी इच्छासे उनके चचा कृष्णसिंह द्वारा उनके विश्वासी सेवक और सामन्त गोविन्द दासको मरवा डाला। इस समाचारसे क्रोधित हो गजसिंह अपने राज्यको लौट आये।

इस समय खुर्रमने अपने भाई परवेजको मार डालने तथा अपने पिता जहांगीरको राजगद्दीसे उतारनेकी आशा-से राज्यमें बलवा खड़ा कर दिया। बादशाह जहांगीर-की बिनती पर गजसिंह अपनी राठोर सेना ले कर बना-रसके पास विद्रोहियोंके सामने हुए। इस युद्धमें खुर्रम-की ओरसे लड़ कर मेवाड़के राणा भीमसिंह मारे गये। खुर्रम हार कर जान ले भागा।

सन् १६३८ ई०में गजसिंह गुजरातकी लड़ाईमें मारे गये। बादमें उनका दूसरा लड़का यशवन्तसिंह सिंहासन पर बैठा। ये बादशाह शाहजहाँके चारों लड़कोंके अन्त-र्विप्लवमें औरङ्गजेबके विरुद्ध लड़े। फतहबादकी लड़ाई-में इन्होंने हार कर औरङ्गजेबसे सन्धि तो की, लेकिन शाहजादा इनके अपराधको न भूला। दिल्लीकी राजगद्दी पर बैठनेके बाद औरङ्गजेबने बदला लेनेकी गरजसे राजा-को अपनी सेनाके साथ काबुल जानेकी आज्ञा दी। इस समय पहाड़ी अफगान लोग बादशाहके विरुद्ध बलवा कर रहे थे। विजय-गौरवको पानेकी इच्छासे राजा यश-वन्त सिंह मारवाड़में अपने बड़े लड़के पथ्वीराजको रख काबुल चल पड़े। काबुलमें शासन करनेके समय औरङ्गजेबके षड़यन्तमें पड़ इन्होंने प्राण त्याग किया। सुना जाता है, कि औरङ्गजेबने उनके वंशज पृथ्वी-सिंह, जगतसिंह और दलथामनाको मरवा कर अपना बदला सधाया। सन् १६७९ ई०में राठोरोंके प्रभाव-को देख स्वयं औरङ्गजेब डर गये थे। इसीलिये उन्होंने पृथ्वीराजको बुला कर छलसेमरवा डाला था। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय राठोरों और मुसलमानोंके रक्तकी नदी वह गई थी।

सन १६८० ई०में अत्याचारी वादशाह औरङ्गजेवके उत्पीड़नसे यशवन्तसिंह और उनके पुत्र मार डाले गये। बादमें गर्भस्थ वालक अजितसिंह जातकर्म्मके वाद राज्याधिकारको प्राप्त हुए।

वालक अजितसिंहके शासन समयमें राज्य भरमें गड़-बड़ी मची। बादशाह औरङ्गजेवने सेनाके साथ मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी। मुगलसेनाने जोधपुर आदि नगरों-को लूट लिया। वादशाहने राठोरोंको हरा कर उन्हें मुसलमान बनानेकी आज्ञा घोषित की। इस संवाद पर मरवाड़के सामन्त लोग और राजपूतानेके सभी राजपूत सर्दार मिल कर मुगलशक्तिके विरुद्ध खड़े हुए। जय-पुर, जोधपुर और उदयपुरके राजोंने एक सन्धि की और मुगल वादशाहसे स्वाधीन होनेकी चेष्टा करने लगे। इस सन्धिकी शर्तोंके अनुसार उदयपुरके राणावंशके साथ मुगल सम्बन्धसे कलुषित जयपुर और जोधपुरके राजाओं-की सन्तानोंका विवाह होना निश्चित हुआ। इस सन्धि-के वल पटरानीके पुत्र अभयसिंह ही मारवाड़की राजगद्दी पर वैठे।

इस समयसे अजितसिंहकी भाग्यलक्ष्मी प्रसन्न हुई। वादशाह औरङ्गजेवको अपनी जवान पोती (अक-वरकी लड़की)के सतीत्व भ्रष्ट होनेके डरसे अजितके साथ सन्धि करनी पड़ी। वादशाहने अपनी पोतीको वापस पा अजितसिंहको उनकी पहले ली गई वहुत-सी सम्पत्ति लौटा दी। शाहजादा स्वयं अजितसिंहको जोधपुर ले गये थे।

औरंगजेवके बाद शाह आलम गद्दी पर वैठा। इस नये वादशाहसे अजितसिंहका कोई विशेष वादविवाद नहीं हुआ। शाह आलमके बाद अजीम उस्सान वाद-शाह हुआ। अजीमने इनसे सन्तुष्ट हो इन्हें गुजरातका प्रतिनिधि बनाया। अजितसिंहने वादशाह फर्रुखसियर-को धनरत्न उपहारसे सन्तुष्ट कर अपने हाथ कर लिया। पीछे इन्होंने षड़यन्त्र कर सैयद अली खां और हुसेन अली खाँकी सहायतासे दिल्ली पर चढ़ाई की। दिल्लीमें खूनकी नदी वह चली और सरकारी खजाना लूटा गया। वादशाहकी रक्षाके लिये कोई मुगल अमीर उमराव प्रत्यक्ष रूपसे आगे न वढ़ सके। फर्रुखसियर-की हत्याके वाद मुगल अमीर लोगोंने मिल कर निको-शाहको आगरेमें वादशाह वनाया। लेकिन दोनों सैयदोंने रफिउद्दौलाको वादशाह वना आगरेको ओर दलवलके साथ यात्रा की। मुगल लोग डर कर निको शाहको अजितसिंहके हाथ सौंपनेसे वाध्य हुए। इस समय वादशाह रफि उद्दौलाने प्राणत्याग किया। तव अजित-सिंहने दोनों सैयद भाइयोंकी सहायतासे महम्मदशाहको हिन्दुस्तानका वादशाह वनाया।

सम्वत् १७८०के आषाढ़ महीनेमें अभयसिंहको उत्ते-जना और राज्यलाभकी लालसासे उसके भाई भक्तसिंह-ने वीरकेशरी वृद्ध पिताको विष खिला कर इस लोकसे विदा किया।

अजितसिंहको इस तरह निष्ठुरतासे मरवा कर अभय-सिंह सन् १७२५ ई०में गद्दी पर वैठा, लेकिन वह सुख-से राज्यभोग न कर सका। १७२८ ई०में अपनी वीरता के पुरस्कारमें इन्हें 'महाराजराजेश्वर'की उपाधि मिली। बादमें अपने भाई भक्तसिंहके विरोधसे इन्हें वहुत कष्ट सहने पड़े। मेवार, अम्बर और मारवाड़में मेल हो जाने पर इन्हें फिर रणक्षेत्रमें उतरना नहीं पड़ा। सन् १७५० ई०में योधपुर नगरमें इनकी मृत्यु हुई। मालूम होता है, कि उक्त राजाओंमें आपसमें विवाद था, तभी तो उन्होंने दिल्लीके वादशाहकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। यह विद्वेष-ज्वाला वंशपरम्परासे चली आ रही थी।

अभयसिंहके मरनेके वाद उनके लड़के रामसिंहने मारवाड़-राज्यसे युद्ध किया। युद्धमें हार खा कर वे प्राण ले भागे। तव भक्तसिंह मारवाड़की राजगद्दी पर वैठे। ये भी पिताको हत्याके प्रायश्चित्तमें १७५२ ई०को विष खिला कर मार डाले गये। बादमें इनके लड़के विजयसिंह सिंहा-सन पर वैठे। रामसिंह राज्य-लोभसे आगे बढ़े और दोनों भाइयोंके विरोधसे युद्धाग्नि भभक उठी। राव विजय सिंहके राज्यकालमें मारवाड़ आपसकी लड़ाईके कारण भस्मीभूत हो गया। सन् १७६२ ई०में विजयसिंहकी मृत्यु होने पर भीमसिंह अपने बड़े भाईको युद्धमें हरा कर गद्दी पर वैठे। भीमसिंहके मरनेके बाद सन् १८०३ ई०में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा मानसिंह मारवाड़के सिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। भीमसिंहके अत्याचार और राजा मानसिंहके शासनका वर्णन यथास्थानमें दिया गया है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि अभयसिंहने जब उदयपुर, जोधपुर और जयपुर इन तीन शक्तियोंकी सन्धि तोड़ दी तब वे एक दूसरेके दुश्मन बन गये। अतएव भिन्न भिन्न सरदार भिन्न भिन्न राजवंशोंके राज्याधिकारके प्रश्नको ले युद्ध विग्रहादिमें लिप्त रह कर अपनी अपनी शक्तिका ह्रास करने लगे। राज्यमें प्रतिष्ठा पानेके लिये उन्हे पद पद पर उस समयके उन्नतिशाली महाराष्ट्रकी सहायता मांगनी पड़ी थी। क्रमशः सम्पूर्ण राजपूताना महाराष्ट्रको राजधानी पूनाके अधिकारमें आ गया।

इस मौकेमें सिन्देराजने जोधपुर जीत कर ६ लाख रु० जमा किया तथा अजमेरगढ़ और नागर ले लिया। १८०३ ई०में महाराष्ट्र-युद्धके समय राज्यमें अराजकताकी सूचना पा सामन्तोंने भीमसिंहको गद्दीसे उतार दिया और मानसिंहको राजा बनाया। तब मानसिंहके साथ अंगरेजी-राज्यकी सन्धि हुई, लेकिन १८०४ ई०में होलकर-राज्यको आश्रय दे कर अंगरेजो सरकारने सन्धि तोड़ दी।

अङ्गरेजोंसे जब जोधपुर-राजको सहायता न मिली तब वे निरुपाय हो भारी विपद्में पड़ गये। इसी समय भीमसिंहका लड़का धोकलासिंह या धनकुलसिंह राज्यको अपने अधिकारमें लानेकी इच्छासे जोधपुरकी ओर दल-बलके साथ आगे बढ़ा। इस युद्धमें तथा उदयपुरकी राज-कन्याके विवाह-सम्बन्धमें जयपुरके साथ जो युद्ध हुआ था उसमें राजा मानसिंहको विशेष क्षति उठानी पड़ी। पीछे दोनोंने ही पिंडारीके डकैत-सरदार अमीर खांको अपने अपने दलमें लानेकी चेष्टा की। अमीर खाँने पहले जयपुरका और पीछे जोधपुर राज्यका पक्ष लिया। वह राजाको डर दिखा तथा लोगोंमें राजाको पगला बता सरकारी-खजाना लूटने लगा।

सन् १८१७ ई०में अमीर खाँके मारवाड़से चले आने पर छलसिंहने अपने पिताका राज्यभार लिया। १८१८ ई०में पिंडारी-युद्धके आरम्भमें अंगरेजोंने उनके साथ सन्धिका प्रस्ताव किया। अंगरेज सरकारने जोधपुर-राज्यका रक्षाभार अपने हाथ लिया और सिन्धराजको जो कर दिया जाता था उसका भार भी अपने पर लिया। राजा १५ सौ घुड़सवार जरूरत पड़ने पर अंगरेजोंकी सहायताके लिये भेजनेको राजी हुए। सन्धि पूरी तय भी न हो पायी थी, कि राजा छत्रसिंहका स्वर्गवास हुआ। इस सुयोगमें राजा मानसिंह अपने पागलपनके बहाने राजसिंहासन पर जा विराजे। १८२४ ई०में मीना और मेर जातियोंको अधीनतामें लानेके लिये इन्होंने मारवाड़के अन्दर २१ गांव अंगरेज सरकारको दिये। १८४३ ई०में इन गांवोंके अधिकारका समय पूरा हो गया। किन्तु उसी साल राजाकी मृत्यु होने पर और कोई नया बंदोबस्त नहीं हुआ। १८३६ ई०में मल्लानी प्रदेश पोलीटिकल एजेन्टकी देखभालमें रखा गया। लेकिन उसी समयसे अंगरेज लोग उस प्रदेशका कर उगाह रहे हैं।

राजा मानसिंहकी स्वेच्छाचारिताके कारण मारवाड़में गड़बड़ी हद दर्जे तक पहुंच गई। राज्यमें भयानक विद्रोहकी आग लगती देख १८३६ ई०में अंगरेज-सरकारको लाचारी मारवाड़के शासनमें हस्तक्षेप करना पड़ा। इसलिये अंगरेजोंकी एक सेना जोधपुरमें रखी गई। राजा मानसिंहने जोधपुर राज्यमें सुशासन रखनेकी इच्छासे अंगरेजोंके साथ एक बन्दोबस्त किया। इस बंदोबस्तके बाद चार वर्ष तक राजा मानसिंह जीवित रहे।

इन्हें कोई सन्तान न थी और न इन्होंने कोई पोष्य पुत्र ही लिया था। अतएव इनके मरने पर इदर और अहमदनगरका सरदारवंश मारवाड़ राज्यका उत्तराधिकारी हुआ। विधवा-रानियोंने सामन्तों तथा राज-कर्मचारियोंकी सलाहसे अहमदनगरके राजा भक्तसिंहके ऊपर मारवाड़-शासनका भार अर्पण किया। महाराज भक्तसिंहने मारवाड़की राजगद्दी पर बैठ अपने लड़के यशवन्तसिंहको अहमदनगर राज्यका शासन करने भेज दिया। इस समय इदर-राजने अहमदके सिंहासनको ले कर गोलमाल खड़ा किया। अङ्गरेज-सरकारने इस आन्दोलनके बाद न्याय और प्राचीन रीतिके अनुसार अहमदनगर इदरराजको दे दिया। १८४८ ई०में ६ वर्ष अहमदनगरका शासन कर जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजकुमार यशवंत मारवाड़ लौटे तब अहमदनगर इदर-राज्यमें मिला लिया गया।

महाराज मानसिंहके लम्बे शासनकालमें मारवाड़ तहस नहस हो गया था। १८१३ ई०में सिन्धुप्रदेशके ताल-पुरके मीरोंने उक्त गढ़ और उसके अधीन राज्यको जीता। अङ्गरेजोंने सिन्धु-विजयके समय उस गढ़को अपना लिया। उस समयसे आज तक अङ्गरेज सरकारने उस गढ़को नहीं छोड़ा है। भक्तसिंहने जब गढ़ लौटा देनेकी प्रार्थना की, तब अङ्गरेज कर्मचारी मि० ग्रेटहेडने कहला भेजा कि उनको सेनाके वेतनके लिये एक लाख सत्तरह हजार देने पड़ते हैं। उसमें दश हजार माफ दिये जायेंगे और अङ्गरेज लोग बराबर अमरकोटको अपने अधिकारमें रखेंगे। राजाको इस प्रस्ताव पर अपनी सम्मति देनी पड़ी। उनके शासनकालमें सामन्तोंका बलवा शान्त हुआ। वे अङ्गरेजोंकी सहायतासे मारवाड़में सुशासन स्थापित करनेमें समर्थ हुए थे। १८५७ ई०में सिपाहियोंका भयानक बलवा समूचे भारतमें फैल गया था। राजा भक्तसिंहने अपनी सेनाकी सहायतासे विद्रोहियोंको दबाया और अङ्गरेज लोगोंको अपनी राजधानीमें आश्रय दे सरकारके प्रति अपनी राजभक्ति दिखलाई।

१८६७ ई०में गनोराके सामन्त-पदको ले कर सामन्तों-से उनका विवाद हुआ। अङ्गरेज-सरकारके अनुरोधसे उन्होंने राज्यसे अशान्ति दूर करनेके लिये सामन्त लोगों के सम्पूर्ण गोलमालको मिटा दिया।

१८७० ई०में भारतके वाइसराय लार्ड मेयोने अजमेरमें दरबार किया। इस दरबारमें प्राचीन नियमके अनुसार उदयपुरके महाराणाको पहला स्थान दिया गया। इस पर भक्तसिंह दरबारमें नहीं आये। उनके इस अशिष्टा-चरण और अपमानसे क्रुद्ध हो लार्ड मेयोने उन्हें बहुत कोसा था।

१८७३ ई०में महाराज भक्तसिंहके मरने पर इनके जेठे लड़के कुमार यशवन्तने सिंहासन ग्रहण किया। सन् १८७५ ई०में प्रिन्स आव वेल्स (भूतपूर्व भारत सम्राट् सप्तमएडवर्ड) भारतवर्ष पधारे। इस समय कलकत्तेके किला मैदानमें एक दरबार बैठा। इस दरबारमें महाराज यशवन्तसिंह युवराजसे विशेष सम्मा-नित हुए और G. C. S. I. की उपाधि प्राप्त की। युव-राजने स्वयं उनके डेरे पर पदार्पण किया था।

१८९५ ई०में महाराज यशवन्तसिंहकी मृत्यु हुई। पीछे उनके एकमात्र पुत्र सरदारसिंह राजसिंहासन पर अधि-रूढ़ हुए। १८८० ई०में इनका जन्म हुआ था। १८९८ ई०. इन्होंने राजकार्यका कुल भार अपने हाथ लिया। इनकी नाबालिगी तक इनके चचा महाराज प्रतापसिंह (पीछे इदरके महाराज) शासनकार्य चलाते रहे। इनके समयमें जो मुख्य घटनाएँ हुई वह इस प्रकार हैं,—१८९७-८ ई०में युक्तप्रदेशमें और १९००-१ ई०में चीनमें Imperial Ser-vice Lancers दलोंमें एक दलकी नियुक्ति; पहले सिंध तक और पीछे सिन्धसे हैदराबाद तक रेलवे लाइनका खोलना; १८९९-१९०० ई०में भीषण दुर्भिक्ष, १९०१ ई० में यूरोप-यात्रा। आप १९०३ ई०के जनवरी मासमे १९०३ ई०के अगस्त मास तक Imperial Cadet corp के सदश्य रहे। आपके परलोकवासी होने पर आपके सुपुत्र उमेदसिंहने राजसिंहासन सुशोभित किया। आप ही वर्त्तमान महाराज हैं। आपको वृटिश सरकारकी ओरसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है। आपका पूरा नाम है,—"महाराजा पच, एच, राजराजेश्वर महाराजा-धिराज सरमद-इ-हिन्द महाराजा श्री सर उमेदसिंहजी साहब बहादुर के, सी, भी, ओ।

मारवाड़का राजवंश।

नाम	राज्यारोहणकाल।
राव शिवजी	१२१२ ई० सन्
,, अश्वत्थामा	
,, दुहर वा धौलराय	
,, रायपाल	
,, कनहल	
,, जहनसिंह	
,, छद	
,, थोद	
,, सल्ख	
,, विरामदेव	
,, चण्ड	१३८१ ई०
,, रणमल्ल	१४०८ ,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम	राज्यारोहणकाल
राव योध	१४२७ ई० सन्
„ सूर्यमल	१४८६ „
„ गंग	१५१६ „
„ मल्लदेव (मालदेव)	१५३२ „
„ उदयसिंह	१५८४ „
„ सूरसिंह	१५६५ „
राजा गजसिंह	१६२० „
„ यशोवन्तसिंह	१६३८ „
„ अजितसिंह	१६८० „
महाराज अभयसिंह	१७२५ „
„ रामसिंह	१७५० „
„ भक्तसिंह	१७५१ „
„ विजयसिंह	१७५२ „
„ भीमसिंह	१७६२ „
„ मानसिंह	१८०३ „
„ भक्तसिंह	१८४३ „
„ यशोवन्तसिंह	१८७३ „
„ सरदारसिंह	१६१० (?)
„ उमेदसिंह (वर्त्तमान महाराज)	

मारवाड़ी—मारवाड़वासी वणिक-सम्प्रदाय। मारवाड़ी कहनेसे अभी दो श्रेणीके लोग समझे जाते हैं, एक प्रकृत मारवाड़वासी स्वनाम-प्रसिद्ध जाति और दूसरी राजपूताना और उसके आसपास रहनेवाला वणिक-सम्प्रदाय। दूसरी श्रेणीमें अग्रवाल, ओसवाल और माहेश्वरी शाखाभुक्त अधिकांश जैन हैं। जो असल मारवाड़ी हैं वे दाक्षिणात्यके नाना स्थानोंमें मारवाड़ी श्रावक कहलाते हैं। व्यवसाय, वाणिज्य और महाजनी इनकी प्रधान उपजीविका है। ये भारतवर्षके नाना स्थानोंमें व्यवसायके उद्देशसे बस गये हैं। ऐसी सञ्चयी और मितव्ययी जाति मालूम होती है, संसार भरमें नहीं है। कर्ज लगाने और व्यवसाय वाणिज्यमें इनकी यथेष्ट चतुरता, धूर्तता और निष्ठुरता नाना कारणोंसे दिखाई देने पर भी ये अपरिचित स्वजातिके प्रति जो सहानुभूति और दयादाक्षिण्य दिखलाते हैं वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। जब कोई निर्धन निराश्रय मारवाड़ी श्रावक किसी एक धनी अथवा व्यवसायी मारवाड़ीके घर आता है, तब वे उसे अपने घरमें रख कर उसके गुजरका पूरा इन्तजाम कर देते हैं। केवल यही नहीं, लिखना पढ़ना और महाजनी आदिका हिसाब रखना भी उसे सिखाया जाता है। जब उक्त विषयोंका कुछ ज्ञान हो जाता है तब उसे थोड़ी पूंजी दी जाती है। इस प्रकार उसी पांच रुपयेकी पूंजीसे वह वाणिज्य-व्यवसाय करता और थोड़े ही समयमें दो चार हजार रुपया जमा कर लेता है। बादमें वह मारवाड़ लौटता और विवाह करके संसारी हो जाता है। जिस ग्राममें वह पहले व्यवसाय करता था, मितव्यताके गुणसे थोड़े ही दिनोंके मध्य उस ग्राममें आ कर महाजन कहलाने लगता है। वह बड़ी बड़ी दूकान खोलता और इस प्रकार चंद रोजमें मालेमाल हो जाता है। तब स्वजातीय महाजन भी उसे अपने जोड़का समझने लगते हैं।

विभिन्न श्रेणीके मारवाड़ीमें परस्पर विवाह सम्बन्ध न होने पर भी वे सभी नाना विषय और एकतासूत्रमें आबद्ध रहते हैं। किसीकी मृत्यु हो जाने पर आस पासके सभी मारवाड़ी आते और अन्त्येष्टिक्रियाके समय सहायता करते हैं। वार्षिक श्राद्धकालमें मृत व्यक्तिके निकट संबंधी बहुत दूर देशसे आते और मारवाड़ीसमाजको बुला कर भोज देते हैं।

उत्तर-पश्चिम प्रदेशमें मारवाड़ियोंके मध्य सिंहानिया, गुन्दका, सराप, सरावगी, झुनझुनवाला, बजोरिया, क्षेमका, बजाज और वर्त्या ये नौ श्रेणियां हैं। प्रत्येक श्रेणी १७२ थोकोंमें विभक्त है। स्वश्रेणीमें विवाह करनेका नियम नहीं है। अलावा इसके मामा, माताका माता, पितामहका मामा, पितामहीका मामा, माताके पितामहका और माताकी पितामहीका मामा जिस जिस दलके हैं, उस उस दलमें भी विवाह नहीं होता किन्तु मारवाड़ी समाजमें विशेष कलकत्ते और झरिया आदिके मारवाड़ी समाजमें दो दल हो गया है। एक दल सुधारक-समाज कहलाता है। इसने बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह जैसे महा अनिष्टकर कार्योंको रोक कर मारवाड़ी-समाजमें एक नया आदर्श जगत्के सामने रखनेका यत्न किया है। इसने अब तक मारवाड़ी-समाजमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

८०से अधिक विधवा-विवाह कराये हैं। जगह जगह सभायें कर यह सुधारक-समाज इस कार्यका विस्तृत रूप कर देनेके लिये यत्न कर रहा है। सच पूछिये, तो विधवा-विवाह इन लोगोंमें प्रचलित नहीं है। कन्या और वरकी कुण्डली मिला कर विवाह किया जाता है। विवाहके दश दिन पहले होसे स्त्रियां जलसेवन किया करती हैं। उसी जलपात्रके निकट गणेशकी मूर्त्ति स्थापित की जाती है। इस तरहका उत्सव कन्याके घर होता है। विवाहके तीन दिन पहले गात्र-हरिद्रा या शरीरमें हल्दी लगाई जाती है। माता पिताके सिवा सात स्त्रियां और भी होतीं हैं। इसी दिनसे विवाहके दिन तक नित्य गणेश-पूजा तथा हल्दी लगाई जाती है।

सन्तान उत्पन्न होनेके बाद दाई या चमारी आ कर नाल काटती हैं और प्रसूतिका घरके सामने उसे गाड़ देती हैं। इसके बाद बालकके मामा या फूफा आ कर जहां नाल गड़ा रहता है, वहां स्पर्श करते हैं। इसके लिये वे एक एक नया वस्त्र या धोती पाते हैं। इसके बाद ज्योतिषी आ कर कुण्डली बनाते हैं। पांचवें दिन प्रसूति स्नान कर नया वस्त्र पहनती है। पांच दिनों तक प्रसूतिके पास केवल चमारी रहती है। पांच दिनोंके बाद गृहकार्य करनेवाली दाइयां भी प्रसूति-गृहमें आया जाया करती हैं। एक महीनेके बाद प्रसूति स्नान कर शुद्ध होती हैं और सूर्यका तर्पण देती है। यदि समीपमें गङ्गा हों, तो प्रसूति नवकुमारको गोदमें ले कर गङ्गा पूजने जाती है। जब बालक छः मासका हो जाता है, तब उसका अन्नप्राशन कराया जाता है। इसके बाद चूड़ाकरण संस्कार होता है।

विवाहके दो दिन पहले भाइयोंकी जिम्मनवार होती है। इस दिन पुरानी प्रथाके अनुसार पञ्चायत होती है। इस पञ्चायतमें किसी बातका निबटारा हो या न हो (सम्भव है, कि कोई कठिन समस्या आ उपस्थित हो तो उसका उस पञ्चायतसे निबटारा कर दिया जाता है) किन्तु जिम्मनवारके दिन पञ्चायत होगी अवश्य। लोग पञ्चायतमें पधारते और मिल मिला कर भोजनादि कर घर लौट जाते हैं। विवाहके एक दिन पहले ब्राह्मण-भोजन होता है। जिनकी जैसी हैसियत है वे उतना ही अधिक ब्राह्मण-भोजन कराते हैं। प्रत्येक ब्राह्मणको एक रुपया कहीं कहीं इससे भी अधिक भोजन-दक्षिणा दी जाती है। विवाहके बाद "सज्जनगोठ" नामक भोज कन्या पक्ष वर-पक्षको देता है। वर-पक्षके लोग कन्याके घर जा कर भोजन करते हैं। मारवाड़ियोंमें कन्या-पक्ष विवाहके दिन वर-पक्षी बरातको नहीं जिमाता, पर विवाहके बाद 'सज्जनगोठ' देता है।

शीतलादेवीके सम्मानार्थ पहले वरको गदहे पर चढ़ना होता है। इसी अवस्थामें वरको माताकी गोदमें शिर झुकाना पड़ता है। गधेके कपालमें सिन्दूर और हल्दीका टीका देना पड़ता है। गधेसे उतर कर वर घोड़े पर चढ़ता है। इस बार भी माताकी गोदमें शिर झुकाना पड़ता है। इसके बाद वर विवाहके लिये आगे बढ़ता है। उस समय एक आदमी छत्र धारण कर खड़ा रहता है और एक चवर झुलाता रहता है। उस समय वरकी बहन आ कर वरका पथ रोकती है। किन्तु कुछ उपहार पा कर वह वहांसे हट जाती है। इसके बाद वर कन्या-गृहकी ओर समारोहके साथ आगे बढ़ता है। कन्याके घरके सामने आ कर दरवाजे पर लगा तोरण-को नीमकी टहनीसे तोड़ देना पड़ता है। इसके बाद कन्याकी माता आ कर वरण कर जाती है। इसके बाद बरात लौट जाती है। मारवाड़ियोंमें विवाहके लिये एक स्वतन्त्र विवाह-मण्डप तैयार होता है। कन्या उपस्थित ब्राह्मण-मण्डलीको मिष्टान्न देती है। अनन्तर कन्या गौरी-गणेशकी पूजा कर कुम्हारके घर जा कर उसके चाक (चक्र)-की पूजा करती है। वरके विवाह-मण्डपमें उपस्थित होने पर वर-कन्याका गेंठ-जुड़ाव कर दिया जाता है। इसके बाद गौरी और गणेशकी पूजा कर पुरोहित द्वारा विवाहका मन्त्र कार्य सम्पन्न होता है। पुरोहितको सुमंगली दे कर वर-कन्या अन्तःपुरमें प्रवेश करती हैं। यहां स्त्रियोंके रीति-रश्मोंके हो जानेके बाद वर आत्मीय स्वजनके समीप आता है।

दूसरे दिन कन्याके आत्मीय आ कर क्षमताके अनुसार वरको कुछ दे कर आशीर्वाद दे जाते हैं। इसके बाद कन्या-पक्ष वर-पक्षको 'सज्जनगोठ' (जिसका ऊपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विवरण दिया गया है) देता है। दूसरे दिन वर कन्या और ससुरालमें पाये हुए उपढ़ौकनको ले कर उसी समारोहसे घर लौट आता है। मकानके चौकमें या आंगनमें सात पात्र क्रमसे वर-कन्याके सामने रखे जाते हैं। वर अपनी तलवारसे एक एक पात्रको हटा देता है। इसके बाद गङ्गा और शीतलादेवीकी पूजा की जाती और वर-कन्याका कंकण छुड़ाया जाता है।

मृतप्राय व्यक्तिको घरके बाहर ला कर सुलाते हैं। जहां सुलाते हैं, वहां पहले गोबरसे लीप लेते हैं। मृत्युके बाद मृतकके लिये पिण्डदान और शवदाह करते हैं। अन्त्येष्टिक्रियाकी पद्धति उच्चवंशीय हिन्दुओंकी तरह है।

मारवाड़ी (हिं० पु०) १ मारवाड़ देशका निवासी। २ मारवाड़ देशकी भाषा। (वि०) ३ मारवाड़ देशका, मारवाड़देश-सम्बन्धी।

मारवाड़ी-ब्राह्मण—महाराष्ट्रवासी एक श्रेणीके ब्राह्मण। ये पञ्चगौड़के अन्तर्भुक्त हैं। मारवाड़ देशमें इनके पूर्वपुरुषोंका वास था। इसलिये अपनेको ये मारवाड़ी-ब्राह्मण कहा करते हैं। ये अपनेको षड़्जातीय कह कर भी अपना परिचय देते हैं। दावन, गुजर, गौड़, सारस्वत, रण्डेलवाल, गौड़, पारिक और शिखावाल—यही षड़्जाति हैं। इनमें परस्पर खान-पान रहने पर भी परस्पर विवाह प्रचलित नहीं है। इनके नाम मारवाड़ियोंकी तरह ही होते हैं। मारवाड़ियोंके पौरोहित्य करते करते इनकी चाल-ढाल वेषभूषा मारवाड़ी-सी हो गई है। ये प्रायः तीन सौ वर्षोंसे मारवाड़ देशमें रहते आये हैं। इनमें भरद्वाज, काश्यप, वशिष्ठ और वत्स—ये चार गोत्र देखे जाते हैं। सगोत्र-विवाह प्रचलित नहीं है।

तिरुपतिके बावाजी, सूर्यनारायण और देवी इनके प्रधान उपास्य-देवता हैं। यह एकाहारी, सभी निरामिषभोजी या जातिच्युतिके भयसे कोई भी मदिरा मांसका सेवन नहीं कर सकते। गेहूं और वाजड़ेकी रोटी और दाल घीके साथ रोज भोजन करते हैं। भात भी कभी कभी खाते हैं सही, किन्तु उसमें विना चीनी और घी दिये नहीं खाते। ये नित्य सबेरे उठ कर गङ्गास्नान कर अपने इष्ट देवताकी पूजा कर यजमानोंके यहां पञ्चाङ्ग सुनाने जाया करते हैं। कोई अपने यजमानके यहां किसी देवताका पाठ बाचने जाया करता है। मध्याह्नमें अपने अपने घर आ कर फिर स्नान कर वैश्वदेव आदि नित्यनैमित्तिक क्रिया करते हैं। भोजनके बाद कोई कोई एक आध घण्टा विश्राम करते हैं। कोई कोई देवस्तोत्र पढ़ा करते हैं। इसके बाद फिर यह यजमानोंके यहां जाते हैं। सन्ध्या समय घर लौट कर ये सन्ध्या आदि क्रिया करते हैं।

इनमें स्मार्त्त और भागवत दोनों मतके लोग देखे जाते हैं। शिलासप्तमी, अक्षय तृतीया, दशहरा, पौष-संक्रान्ति, वसन्तपञ्चमी—ये ही कई इनके प्रधान पर्व हैं। ये शुक्लपक्षीय एकादशी, चतुर्दशी, रामनवमी, गोकुलाष्टमी, गणेश-चतुर्थी और शिवरात्रिके उपलक्षमें उपवास करते हैं। कोई तो पाक्षिक चान्द्रायणव्रत करते हैं और स्वश्रेणीसे ही अपना पुरोहित नियुक्त कर लेते हैं।

स्मार्त्त-सम्प्रदायके एक द्राविड़ ब्राह्मण इनके प्रधान आचार्य हैं। शृङ्गेरी-मठके शङ्कराचार्य इनके धर्मगुरु हैं। ये सोलह संस्कारोंमें गर्भाधानको छोड़ सभीका पालन करते हैं। बालकको ८ वर्षकी उम्रमें यज्ञोपवीत संस्कार और २१ वर्षकी उम्रमें विवाह संस्कार हो जाता है। सदासे कन्याओंका आठसे १५ वर्षके भीतर विवाह होता है। अशौचकाल केवल दश दिन रहता है। समाज विधिके विरुद्धाचरण करनेवाला पञ्चायतसे दण्ड पाता है। बालक सोलह वर्ष तक विद्यालयमें शिक्षा पाते हैं। इसके बाद पैतृक यजनादि किया करते हैं। इनकी यजमानी-वृत्ति ही प्रधान जीविका है।

मारवी (सं० स्त्री०) संगीतकी एक मात्रा।

मारवीज (सं० क्ली०) मन्त्रविशेष, एक प्रकारका मन्त्र।

मारात्मक (सं० त्रि०) मारः आत्मा यस्य, कप्। १ हिंस्र। २ खलस्वभाव, दुष्ट। ३ सांघातिक, प्राणनाशक।

माराभिभु (सं० पु०) मारं अभि-भवति मार अभि-भू-डु बुद्धदेव, मारजित्।

मारामार (हिं० वि० क्रि०) १ अत्यन्त शीघ्रतासे, बहुत जल्दी। २ मारपीट देखो।

मारारिनारीरज (सं० क्ली०) गन्धक।

मारि (सं० स्त्री०) मार्यते इति मृ-णिच-इन्। १ मारण, मार डालना, वध करना। २ जनक्षय, मरी रोग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्याय—मारक, उत्पात्। जब हैजेका बेशी प्रकोप होता है, तब उसे मारी कहते हैं। मारीभय उपस्थित होनेसे नामकीर्त्तन और शान्ति-स्वस्त्ययन करना आवश्यक है। जहां मरी रोग फैला हो उस स्थान को छोड़ देना चाहिये।

मारिचिक (सं० त्रि०) मरिच-(पा ४।४।३) इति ढक्। मरिच द्वारा संस्कृत।

मारित (सं० पु०) मार्यते नाश्यते भस्मीक्रियते इति मृ णिच् कर्मणि क्त। १ हत, जो मार डाला गया हो। नष्टीकृत, जो नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया हो।

"असम्यङ् मारितं स्वर्णं वलं वीर्यञ्च नाशयेत्।
करोति रोगान् मृत्युञ्च तद्धन्यात् यत्नतस्ततः॥"

(भावप्रकाश)

मारिन् (सं० त्रि०) १ घातक, हत्या करनेवाला। २ मृत्युमुख-प्रवेशकारी, मृत्युके कराल गालमें पड़नेवाला।

मारिया—एक जाति। यह जाति अधिकतर मध्यप्रदेशके अन्तर्गत वस्तार नामक करदराज्यमें देखी जाती है। मारिया लोग कमरमें छुरी, कंधे पर कुठार तथा हाथमें तीर-धनुष रखते हैं। धनुष ही उनका प्रधान हथियार है। वे तीर चलानेमें बड़े सुदक्ष हैं। दोनों पैरसे धनुष-को फैला दोनों हाथसे गुण खींच कर ऐसे वेगसे तीर फेंकते हैं, कि तीर मृगेकी शरीरको छेद कर बाहर निकल जाता है।

मारिव्यसनवारक सं० पु०) मारिजन्यं व्यसनं तद्वारयतीति वृ-णिच्-अण्। राजर्षिविशेष, एक राजर्षिका नाम।

"कुमारपालश्चौलुक्यो राजर्षिः परमार्हतः।
मृतस्वमोक्ता धर्मात्मा मारिव्यसन वारकः॥" (हेम)

मारिष (सं० पु०) मर्षति दोषानिति मृष्-अच्, निपातनात् सिद्धं यद्वा मा रिष्यन्तिहिनस्ति कश्चिदपीति रिष-क। १ नाट्योक्तिमें मान्य व्यक्ति, मार्ष। २ नाटकका सूत्रधार।

"सूत्रधारं भवेद्भाव इति वै पारिपार्श्विकः।
सत्रधारो मारिषेति हन्ते इत्यधमैः समाः॥"

(साहित्यद० ६ परि०)

पुराणादिमें भी मारिष शब्दसे श्रेष्ठ व्यक्ति समझा जाता है।

"साहाय्यं ते करिष्यामि मन्त्रशक्त्या महामते।
भविता यदि संग्रामस्तव चेन्द्रेण मारिष॥"

(देवीभाग० ७।२६।१२)

३ पत्रशाकविशेष, सरसा नामक साग। यह सफेद और लालके भेदसे दो प्रकारका होता है। संस्कृत-पर्याय—कन्धर, मार्षिक। गुण—मधुर, शीतल, विष्टम्भी, पित्तनाशक, गुरु, वातश्लेष्मकर, रक्तपित्त और विष-नाशक, अग्निवर्द्धक, रक्तवर्ण, गुरु, मधुर, श्लेष्मकर।

(भावप्र०)

मारिषा (सं० स्त्री०) मारिष टाप्। दक्षकी माता। विष्णुपुराणमें इनकी उत्पत्तिका विषय इस प्रकार लिखा है,—पुराकालमें वेदविदाम्बर कण्डु नामक एक मुनि गोमती नदीके किनारे तपस्या करते थे। इन्द्र तपस्यासे डर गये और तपस्या भंग करनेके लिये उन्होंने प्रम्लोचा नामक अप्सराको भेजा। प्रम्लोचाने अनेक प्रकारके हावभाव द्वारा तपस्या भंग कर दी। बादमें कण्डु कई सदी तक प्रम्लोचाके साथ रहे। एक दिन उनका मोह जाता रहा। वे प्रम्लोचा पर बहुत बिगड़े और बोले, 'रे पापिनि! तुम अभी मेरे सामनेसे दूर हो जा। तुमने हावभाव दिखा कर मेरी तपस्या भंग की और देवराजका कार्य सिद्ध किया। इसलिये सामनेसे हट जा, नहीं तो भस्म कर दूंगा। मैं बहुत दिन तक तुम्हारे साथ रहा, इसलिये तुम्हारा दोष भी नहीं दे सकता, मैं स्वयं दोषी हूं। क्योंकि मैं अजितेन्द्रिय हूं।'

इस प्रकार मुनिसे तिरस्कृता प्रम्लोचा उनके आश्रमसे निकल आकाश मार्गसे उड़ गई। उनके शरीरसे जो पसीना छूटा, वह एक वृक्षसे दूसरे वृक्ष पर, इस प्रकार कई वृक्षों पर गिरा। ऋषिसे अप्सराके गर्भ रहा था और वही गर्भ रोमकूपसे स्वेदरूपमें निकला। जिस जिस वृक्ष पर वह पसीना गिरा था, वह गर्भवती हो गया। पीछे वायुने उन सबोंको एक साथ मिला दिया। आगे चल कर उस गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई। वही कन्या मारिषा कहलाई। मारिषाके गर्भसे दक्षप्रजापतिने जन्म ग्रहण किया। (विष्णुपु० १।१५ अ०)

२ देवमीढ़की स्त्रीका नाम। (भागवत् १।१५ अ०)

मारी (सं० स्त्री०) मारि-(कृदिकारादिति) पक्षे ङीष्। १ चण्डी। २ जनक्षय, कोई ऐसा संक्रामक रोग जिसके कारण बहुत-से लोग एक साथ मरें, मरी रोग। ३ माहेश्वरी शक्ति।

मारीच (सं० पु०) रामायणके अनुसार एक राक्षस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दम्भपुत्र सुन्देके औरस ताड़का राक्षसीके गर्भसे इसका जन्म हुआ। मारीचने सीताहरणके समय मायारूप धारण कर रामचन्द्रको मोहित किया था। पीछे रामचन्द्र द्वारा मारा गया। (रामायण) राम देखो। २ कश्यप। ३ कक्कोलक, कंकोल। ४ याजक ब्राह्मण, पुरोहित। ५ राजहस्ती, राजहाथी। ६ मरीचवन, गोलमिर्चका पेड़। (त्रि०) ७ मरीचसम्बन्धीय, मरीचका।

मारीचपत्रक (सं० पु०) सरलवृक्ष, चीड़का पेड़।

मारीचपत्रिका (सं० स्त्री०) सरल देवदारु, सर्ज्जतरु।

मारीचवल्ली (सं० स्त्री०) मरिच वृक्ष, मिर्चका पेड़।

मारीची (सं० स्त्री०) मरीचेरियं इत्यण् ङीप्। एक प्रकारके देवता। ये मायादेवी हैं। पर्याय—त्रिमुखा, वज्र कालिका, विकटा, वज्रवाराही, गौरी, प्रोत्तिरथा।

साधनमालातन्त्रमें मारीचीका जो विवरण लिखा है, वह इस तरह है—

"सूर्य्ये पीतनांकार ध्यात्वा तद्विनिर्गतरश्मिनिवहैराकाशे समाकृत्य भगवतीमग्रतः स्थापयेत्। —गौरीं त्रिमुखीं त्रिनेत्रामष्टभुजां, रक्तदक्षिणमुखीं नीलविकृतवामवराहमुखीं, वज्राङ्कुशशरसूचीधारिदक्षिणकरामशोकपल्लवचापसूत्रतर्ज्जनीधरवामचतुःकरां वैरोचन मुकुटिनीं नानाभरणवतीं चैत्यगर्भस्थितां रक्ताम्बरकञ्चुकोत्तरीयां सप्तशुकररथारुढ़ां प्रत्यालीढपदां पंकारंजवायुमण्डले हंकारजचन्द्रसूर्य्यग्राहिमहोग्रराहुसमधिष्ठितरथमध्यां देवीचतुष्टयपरिवृतां तत्र पूर्व्वादिशि वत्तालीं रक्तां वराहमुखीं चतुर्भुजां सव्यकुशधारिदक्षिणहस्तां पाशाशोकधारिवामहस्तां रक्तकञ्चुकिञ्चेति। तथा दक्षिणे वदालीं पीतसशाकसूचीवामदक्षिणभुजां वज्रपाशदक्षिणवामकरां कुमारीरूपिणी नवयौवनालङ्कावतीं। तथा पश्चिमे वराली शुक्लां वज्रसूचीवद्दक्षिणभुजां पाशाशोकधरवामकरां प्रत्यालीढ़पदां सूरूपिणींचेति। तथोत्तरदिग्भागे वराहमुखीं रक्तांत्रिनयनां चतुर्भुज वज्रशरवद्दक्षिणकरां चापाशोकधरवामकरां दिव्यरूपिणीं ध्यात्वा॥"

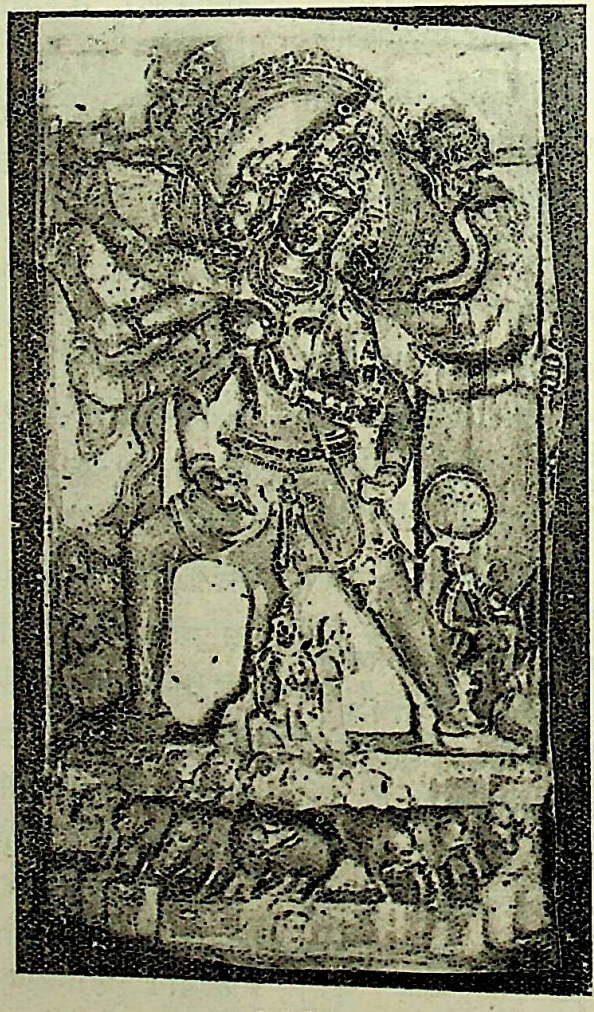

मारीची देवी।

"यह गौर वर्णकी है। इनके तीन मुख, तीन आंखें और आठ भुजाएँ हैं। इनके मुंहका दाहिना भाग लाल वर्णका है और बायां नीला है। वन्य-शूकरीकी तरह तिरछी खड़ी है। इनके दाहिने हाथोंमें वज्र,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंकुश, तीर और सूची तथा बायें हाथों अशोकपत्र, धनुष और तर्जनीमें लपेटा हुआ सूता है। शिर पर वैरोचन मुकुट है। सभी भुजायें विविध आभूषणोंसे सुशोभित हैं। वे रथ पर बैठी हुई हैं। सात शूकर उनके वाहन हैं। रथ पर राहु भी है जो चन्द्र और सूर्यको निगलना चाहता है। उनके चारों पार्श्वमें वैताली, वराली, वदाली और वराहमुखी नामकी देवी खड़ी हैं।

मारीच्य (सं० पु०) १ मरीचिका गोत्रापत्य। २ अग्निपुत्र।

मारीभय (सं० पु०) मारीके लिये भय। मरी अर्थात् हैजा होनेसे जो भय होता है उसीको मारीभय कहते हैं।

मारीमृत (सं० त्रि०) मारीमें मृत, जिसकी महामारीमें मृत्यु हुई हो। साधारणतः संक्रामक रोगको ही महामारी कहते हैं।

"अथ पञ्चमे नृपभयं मारीमृतदर्शनञ्च वक्तव्यम्।
षष्ठे तु भयं ज्ञेयं गन्धर्वाणां सडोम्बानाम्॥"

(वृहत्सं० ८७।३३)

मारीय (सं० त्रि०) कामदेव-सम्बन्धीय।

मारीष (सं० पु०) मारिष शाक, मरसा साग। पर्याय—मारुष।

मारु—हिन्दीके एक कवि। ये बहुत-सी कविता बना गये हैं, उदाहरणार्थ एक नीचे देते हैं।

मारू म्हारे बालो है राज।
बागों बागों केवड़ाजी काई सायबां ऊपर फूल गुलाबी
नाजक पोंचा पकर लियोजी काई अजर करे पिया
प्यारी घूंघटडो जोर करे थे म्हारा सिरताज॥

मारुक (सं० त्रि०) मृत्युमुखी, मुमूर्षु।

मारुजी—एक हिन्दी-कवि। इनकी कविता बड़ी मधुर होती थी। उदाहरणार्थ एक नीचे देते हैं।

मारूजीने कहजो हां जी म्हारा राज मारूजीने
कहजो समझाय आसमानी डोरी
रङ्ग चुबे जी लाल डेरांकी।
ऊँचा थारा तो तम्बू जरद बनात
हो हो आसमानी डोरी रङ्ग॥

मारुण्ड (सं० पु०) १ सर्पाण्ड, सांपका अंडा। २ पन्था, रास्ता। ३ गोमयमण्डल, गोबरका घेरा।

मारुत (सं० पु०) मरुद्देव मरुत् (प्रज्ञादिभ्यश्च। पा ५ ४।३८) इति स्वार्थे अण्। वायु। इसकी संख्या उनचास है। इनके जन्मविवरण भागवतमें इस प्रकार लिखा है,—कश्यपकी स्त्री दितिने सेवा-टहल द्वारा अपने स्वामी कश्यपको प्रसन्न किया और इन्द्रहन्ता एक पुत्रके लिये उनसे प्रार्थना की। कश्यपने कहा, 'यदि तुम सौ वर्ष तक नियमपूर्वक व्रतका पालन कर सको, तो तुम्हारे गर्भसे इन्द्रहत्याकारी और अति पराक्रमी एक पुत्र उत्पन्न हो सकता है। किंतु याद रहे यदि बीचमें तप भंग हो जाय, तो फल उलटा होगा।' कश्यपके कथनानुसार दितिने 'वैसा ही करूंगी' कह कर व्रत आरम्भ कर दिया।

इन्द्रको यह बात मालूम होने पर वे कपट साधुके वेशमें दितिके आश्रममें आये और उनकी परिचर्या करने लगे। इस प्रकार कुछ दिन बीत गया। इंद्रने दितिके उदरमें घुसनेका किसी प्रकारका छिद्र नहीं पाया। एक दिन दैवात् दितिके मोह उपस्थित हुआ। इन्द्रको अच्छा मौका हाथ लगा। उसी छिद्रसे वे योगमाया द्वारा दितिके उदरमें घुस गये। दिति बेहोश पड़ी थी, कुछ भी न जान सकी। उदरमें प्रविष्ट होते ही इन्द्रने गर्भको सात खण्डोंमें काट डाला। कटा हुआ गर्भ-खण्ड रोने लगा। इस पर इन्द्रने 'मत रोवो' इस प्रकार अश्वासन दे कर प्रत्येकको फिर सात खण्ड किया।

इन्द्र जब उन्हें फिर काटनेको तैयार हुए, तब खण्ड-गर्भ कृताञ्जलि हो कहने लगा, 'हे इन्द्र! तुम हम लोगोंका क्यों विनाश करते हो? हम मरुद्गण हैं, आपके भाई हैं।' इन्द्रने उत्तर दिया, 'मत डरो, तुम लोग मेरे पार्षद होगे।' भगवान्‌की कृपासे ये मरुद्गण इनके साथ मिल कर उनचास देवता हुए। पीछे वे सबके सब दितिके गर्भसे बाहर निकले।

दिति अभी सो रही थी। हठात् उनकी नींद टूटी और अपने कुमारोंके साथ इन्द्रको देखा। कुछ समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाद दितिने इन्द्रसे कहा, 'मैं ऐसे पुत्रके लिये तपस्या कर रही थी जो अदितिके पुत्रोंका संहार करता। किन्तु ये उनचास पुत्र किस प्रकार उत्पन्न हुए? हे पुत्र! यदि तुम यह विषय जानते हो, तो सच सच कहो, झूठ मत कहो।'

इन्द्रने उत्तरमें कहा, 'माता! आपको तपस्याका हाल जब मुझे मालूम हुआ, तब मैं आपके निकट आया और उदरमें प्रवेश करनेका अवसर ढूढने लगा। अवसर पा कर मैंने आपके उदरमें प्रवेश किया और गर्भको काट डाला। पहले आपके गर्भको सात खण्ड किया जिससे सात कुमार उत्पन्न हुए। पीछे उन सातोंको भी फिर सात सात खण्ड किये। इस पर भी ये सब कुमार नहीं मरे। इस प्रकार आपके कुल मिला कर ४९ पुत्र हुए।' इन्द्रके मुखसे सारी घटना सुन कर दितिने अपने सभी कुमारोंको इन्द्रके साथ जानेकी अनुमति दी। इन्द्र इन मरुद्गणोंके साथ स्वर्गको चले गये। (भागवत ६।८ अ०)

२ दक्षिणदेशमें अवस्थित एक देशका नाम। ३ अग्निभेद। गर्भाधानके संस्कारमें जो अग्नि स्थापित की जाती है उसीका नाम मारुत है। ४ वायुका अधिपति देवता। (त्रि०) मरुतसम्बन्धी।

मारुतमय (सं० त्रि०) वायुमय।

मारुतव्रत (सं० क्ली०) मारुतस्य व्रत मिव व्रतं नियमोऽस्य। राजधर्मविशेष राजाका एक धर्म।

"प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चरति मारुतः।
तथा चरैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्धि मारुतम्॥"

(मत्स्यपु० २०० अ०)

मारुतसुत (सं० पु०) १ हनुमान्। २ भीम।

मारुतसूनु (सं० पु०) मारुतस्य सूनुः। १ वायुपुत्र, हनुमान। २ भीम।

मारुता (सं० स्त्री०) स्पृक्का, असबरग।

मारुतात्मज (सं० पु०) मारुतस्य आत्मजः। १ हनुमान। २ भीम।

मारुतापह (सं० पु०) मारुतं अपहन्ति हन ड। १ वरुण वृक्ष। (त्रि०) वायुनाशक।

मरुताशन (सं० पु०) मरुताऽशन-मस्य वा अश्नातीति अश-ल्यु, मारुतानां अशनः भक्षकः। १ वह जो वायु पी कर रहता हो, सर्प।

"भक्तः प्रगृह्य मूर्ध्वां वै बाहुभ्यां संशितव्रतः।
स्थितः स्थाणुरिवाभ्यासे निश्चेष्टो मारुताशनः॥"

(भारत ५।१०६।१३)

२ कार्त्तिकेय। ३ सैनिकविशेष। (त्रि०) ४ वायुमात्र भक्षक, सिर्फ हवा पी कर रहनेवाला।

मारुताश्व (सं० पु०) मारुत इव वायुरिव वेगवान् अश्वो यस्य। वायुसदृश वेग गामि अश्वयुक्त, वह घोड़ा जो वायुके जैसा बड़े वेगसे चलता हो।

मारुति (सं० पु०) मरुतस्यापत्यं पुमान् मरुत (अत इञ्। पा४।१।९५) इति इञ्। १ हनुमान्। २ भीम।

मारुतेश्वरतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थभेद, एक तीर्थका नाम।

मारुदेव (सं० पु०) पर्वतभेद, एक प्राचीन पर्वतका नाम।

मारुध (सं० क्ली०) जनपदभेद।

मारुवार (सं० क्ली०) मारवाड़ देखो।

मारू (सं० पु०) मरुदेश निवासी, मारवाड़ी।

मारू (हि० पु०) १ एक राग। यह युद्धके समय बजाया और गाया जाता है। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह श्रीरागका पुत्र माना जाता है। २ बहुत बड़ा डंका या नगाड़ा, जंगी धौंसा। (वि०) ३ एक प्रकारका शाहबलूत। यह शिमले और नैनीतालमें अधिकतासे पाया जाता है। इसकी लकड़ी केवल जलाने और कोयला बनानेके काममें आती है। इसके पत्ते और गोंद चमड़ा रंगनेमें काम आते हैं। ४ काकरेजी रंग।

मारूत (सं० पु०) हनुमान।

मारूंत (हिं० स्त्री०) घोड़ोंके पिछले पैरोंकी एक भौंरी जो मनहूस समझी जाती है।

मारे (हिं० अव्य०) वजहसे, कारणसे।

मार्क (सं० पु०) भृङ्गराज, भँगरैया।

मार्क (अं० पु०) मार्का देखो।

मार्कट (सं० त्रि०) १ मर्कट सम्बन्धीय, मर्कटका। २ मर्कटवत्, मर्कट-सा।

मार्कटपिपीलिका (सं० स्त्री० क्षुद्रकाय कृष्णापपीलिका, छोटी काली चिउँटी।

मार्कटपिप्पली (सं० स्त्री०) कपि-पिप्पली, पीपल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्कटि (सं० पु०) मर्कटका गोत्रापत्य।

मार्कण्ड (सं० पु०) मृकण्डोरपत्यं मृकण्डु-अण्। मार्कण्डेय मुनि।

मार्कण्ड (मार्कण्डेयार्क)—१ आरा जिलेका सौरतीर्थ-भेद। यह आरासे ३७ मील दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। २ उक्त स्थानके नामानुसार प्रसिद्ध विहारके शाकद्वीपी ब्राह्मणोंका एक विभाग।

मार्कण्ड—दरभंगा, पूर्णिया, सन्थाल परगना तथा भागलपुर आदि स्थानोंमें रहनेवाली कृषिजीवी एक जाति। इस जातिके लोग खेती करके अपनी जीविका चलाते हैं। कहते हैं, कि मार्कण्डेय मुनिसे इनकी उत्पत्ति हुई है। किसी ब्राह्मणका जूठा खानेसे मार्कण्डेय जातिच्युत हुए थे। उसी समयसे उनके वंशधर मार्कण्ड कहलाने लगे हैं।

इनमें बाल्यविवाह तथा बहुविवाहका प्रचलन है। विधवा दूसरी बार मनमाने पतिसे व्याह कर सकती है। यदि कोई स्त्री व्यभिचारिणी हो जाय तो वह जातिसे निकाल दी जाती है।

मार्कण्डोंका आचार व्यवहार कट्टर हिन्दू-सा नहीं है। बड़े बड़े देवपूजनमें वे ब्राह्मणको पुरोहित नियुक्त करते हैं। ब्राह्मण उनकी पुरोहिताई करनेसे निन्दाभाजन नहीं होते।

सामाजिक मर्यादासे वे ग्वाले और कुर्मियोंके समकक्ष हैं। ब्राह्मण उनके हाथका जल तथा मिठाई आदि ग्रहण करते हैं।

मार्कण्ड—नागपुरसे ६० मील दक्षिण-पूर्व कोण पर वेणावती नदीके किनारे पर बसा एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। यहां बहुसंख्यक मन्दिर शैलभूमि पर श्रेणीवद्ध भावसे खड़े हैं। यहांके सबसे बड़े मन्दिरका नाम मार्कण्ड है। मन्दिरके नीचे नदीका जल केवल दो फीट गहरा है। नाव आदिके बिना नदीको पार कर सकते हैं। निकटके गाँवका नाम मार्कण्डी है। बहुत पहले यहां जनाकीर्ण नगर था। बारंबार बाढ़ आनेके कारण यहांके लोग बाहर चले गये हैं।

मार्कण्डेय मुनिके नाम पर ही इस मन्दिरका नाम करण हुआ है। किन्तु मन्दिर शिवके नाम पर उत्सर्ग किया गया है। इसमें शिवलिङ्ग स्थापित हैं। यह मन्दिर कब बनाया गया था, इसका कोई लिपिबद्ध प्रमाण नहीं मिलता। नागपुर और बेरार-प्रान्तके मन्दिरोंके सम्बन्धमें जैसी कहावत प्रचलित है, यहांके मन्दिरोंकी सम्बन्धमें भी ठीक वैसी ही है। कहते हैं, ये सभी मन्दिर एक रातमें ही हेमाड़पन्थ द्वारा बनाये गये थे। भाण्डकसे काशी तक सभी मन्दिर हेमाड़पन्थके ही बनाये हुए हैं। हेमाड़पन्थ एक ब्राह्मणके पुत्र थे। गौड़राज लक्ष्मणसेन और इनका जन्मवृत्तान्त भी प्रायः एक ही तरह है। प्रसववेदना होने पर हेमाड़पन्थकी माताने देखा, कि इस समय यदि लड़का भूमिष्ठ होगा, तो अशुभ योगमें पड़ेगा। यह देख दासियोंको उन्होंने हुक्म दिया, कि प्रसवको रोकनेके लिये तुम लोग यत्न करो। उनके हुक्मके मुताबिक उनके दोनों पैरमें रस्सी बांध कर सर नीचे और पैर ऊपर करके टांग दिया। शुभ लग्न आने पर दाइयोंने उनको बन्धनमुक्त कर पूर्ववत् सुला दिया।

लेटते ही हेमाड़पन्थका जन्म हुआ। किन्तु माता बच न सकीं। शुभलग्नजात हेमाड़ (हेमाद्रि) शुक्लपक्षीय शशिधरकी तरह बढ़ने लगे और थोड़े ही समयमें सब शास्त्रोंमें सुपण्डित हो उठे। विशेषतः चिकित्साशास्त्रमें उनकी प्रगाढ़ व्युत्पत्ति हुई। विभीषण जब बीमार हुए थे, तब हेमाड़ने ही उनको अच्छा किया था। उस समय पुरस्कारस्वरूप उनको एक वर मिला था। उसी वरसे उन्होंने राक्षसोंकी सहायतासे गोदावरीके बीचमें इन मन्दिरोंका निर्माण किया था। ये मन्दिर १७६ फीट लम्बे और ११८ फीट चौड़े हैं। चारों ओरसे चहारदीवारी दी हुई है। मंदिर देखनेमें बहुत सुन्दर हैं। बीचमें मार्कण्डेयका मन्दिर है। इस मन्दिरके चारों ओर श्रेणीवद्धभावमें अन्यान्य मंदिर खड़े हैं। मन्दिरोंका निर्माण-परिपाटी देखनेसे मालूम होता है, कि वे १०वीं या ११वीं शताब्दीके बने हुए हैं। दक्षिण ओर प्रधान प्रवेशद्वार तथा अगल बगल एक एक और दरवाजा है। मन्दिरके भीतर १२ तरहके शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित हैं। सिवा इनके दशावतार आदि देवमूर्त्तियां भी हैं।

मार्कण्डेय ऋषिका मन्दिर ही सबसे बड़ा है और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारुकार्य सम्पन्न है। दो सौ वर्ष पहले एक वज्राघातसे मन्दिरका शिखर टूट गया है।

शिवलिङ्गका ऊपरी भाग पीतलसे मढ़ा हुआ है। या यों कहिये, कि शिवलिङ्गको मुकुट पहनाया गया है। मुकुटके चारों ओर पांच नरमुण्ड और ऊपरमें फण उठाये नागका चन्द्रातप है।

बाकी मन्दिरकी निर्माण-प्रणाली खजूराहुके मन्दिर आदिकी तरह है। दो फीट तीन इञ्च लम्बी खोदित मनुष्य मूर्त्ति चारों ओर श्रेणीवद्ध खड़ी है। प्रत्येक श्रेणीमें ४५ मूर्त्तियोंके हिसाबसे तीन श्रेणियोंमें १३५ मनुष्यमूर्त्ति है। मनुष्य श्रेणीके बाद हंस श्रेणी, फिर वन्दर श्रेणी, इसके बाद चार श्रेणीमें मनुष्य-मूर्त्ति खड़ी है। वास्तवमें मन्दिरका सम्मुख भाग नाना प्रकारके भास्करशिल्पसे सजा हुआ है। किसी किसी स्थानमें नर्त्तकियोंकी मूर्त्तियां खोदी गई हैं। फिर कहीं वीणावादन परायण अलङ्कार भूषिता सीमन्तनियोंकी मूर्त्तियां शिल्पियोंके निर्माणनैपुण्यका साक्ष्य प्रदान कर रही है।

शिवमूर्त्तिका प्रशान्त भाव सर्वत्र ही परिस्फुट है। समरांगणमें रौद्ररसकी अभिव्यक्तिमें वसन्त पुष्पाभरण विलोलनयना गौरीके साथ प्रेमालापके कमनीय भावमें सर्वत्र ही शिवका प्रशान्त गाम्भीर्य रक्षित हुआ है। सिवा इसके नन्दिकेश्वर, मृत्युञ्जय, यम, उमा महेश्वर, राजराजेश्वर आदि मन्दिर भी विशेषरूपसे उल्लेखनीय है।

मार्कण्डिका (सं० स्त्री०) भूम्याहुल्य, भूंईखसावली।

मार्कण्डीय (सं० क्ली०) भूम्याहुल्य, भूंईखसावली।

मार्कण्डेय (सं० पु०) मृकण्डोरपत्यं, मृकण्डु (शुभ्रादिभ्यश्च। पा ४।१।१२३) इति ढक्। मृकण्डु मुनिके पुत्र। जन्मतिथि और संस्कारादि कार्यमें इनकी पूजा करनी होती है। गर्भाधानादि संस्कारकार्यमें षष्ठीपूजाके बाद मार्कण्डेय पूजा की जाती है। इनका ध्यान इस प्रकार है—

"द्विभुजं जटिलं सौम्यं सुवृद्धं चिरजीविनम्।
मार्कण्डेयं नरो भक्त्या पूजयेच्चिरायुषम्॥"

(तिथितत्त्व)

इस ध्यानसे विधिपूर्वक पूजा करके निम्नोक्त मन्त्र द्वारा प्रार्थना करनी होती है। प्रार्थनामन्त्र इस प्रकार है—

"चिरजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।
रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रिया युक्तश्च सर्वदा॥
मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरिष्टार्थसिध्यर्थमस्माकं वरदो भव॥" (तिथितत्त्व)

मार्कण्डेयपुराणमें मार्कण्डेयका उत्पत्ति-विवरण इस प्रकार लिखा है,—महात्मा भृगुके ख्यातिके गर्भसे धाता और विधाता नामक दो पुत्र हुए। ये दोनों ही देवता थे। नारायणकी पत्नी श्री भी इसी ख्यातिके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं। मेरुके दो कन्या थीं, आयति और नियति। धाता और विधाताने दोनोंका पाणिग्रहण किया था। यथासमय आयतिके प्राण और नियतिके मृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। मृकण्डुकी स्त्रीका नाम मनस्विनी था। इन्हीं मनस्विनके गर्भसे मार्कण्डेयने जन्म लिया। इनकी स्त्रीका नाम धूमावती और पुत्रका वेदशिरा था। (मार्कण्डेयपु ५२ अ०)

नरसिंहपुराणमें लिखा है, कि भृगुके एक पुत्र थे। मृकण्डु उनका नाम था। मृकण्डुके मार्कण्डेय नामक एक पुत्र हुआ। पुत्रके उत्पन्न होते ही मृकण्डुको मालूम हो गया, कि इस पुत्रकी बारहवें वर्षमें मृत्यु होगी। इस पर वे बड़े दुःखित हुए। एक दिन मार्कण्डेयने अपने पितासे उनके दुःखका कारण पूछा। पिताने उनकी मृत्युका हाल जैसा सुना था, कह सुनाया। मार्कण्डेयने पितासे कहा, 'आप इसके लिये जरा भी चिन्ता न करें, मैं अपने बाहुबलसे मृत्युको परास्त कर चिरजीवी हो सकता हूं।' पीछे मार्कण्डेय पिता और माताको आश्वासन दे कर तपस्याके लिये जंगल चले गये। वहां विष्णुमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करके कठोर तपस्या करने लगे। इस तपोबलसे वे मृत्युको परास्त कर चिरजीवी हो गये।

(नरसिंहपु०)

पद्मपुराणमें लिखा है—महामुनि मृकण्डु सस्त्रीक तपस्या कर रहे थे। इसी समय उनके मार्कण्डेय नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रकी आठवें वर्ष मृत्यु होगी, यह उन्हें अच्छी तरह मालूम था। इसलिये पुत्रको यज्ञोपवीत दे कर मृकण्डुने कहा, 'तुम ऋषियोंका अभिवादन करो।' मार्कण्डेय वैसा ही करने लग गये। इसी समय सप्तर्षि वहां पहुंचे। मार्कण्डेयने उनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अच्छी संवाटहल की। जाते समय 'तुम चिरायु हो' कह कर ऋषियोंने इन्हें आशीर्वाद दिया। किन्तु जब उन्हें मालूम हुआ, कि बालककी आयु थोड़ी है, तब वे उसे ले कर ब्रह्माके पास गये। ब्रह्माके वरसे ब्रह्माकी परमायुके समान इनकी आयु हुई। मार्कण्डेय इस प्रकार दीर्घायुः लाभ कर अपने घरको लौटे। इनके विषयमें ऐसा प्रसिद्ध है कि ये अब तक जीवित हैं और रहेंगे।

मार्कण्डेयेन प्रोक्तं अण्। २ पुराणविशेष, मार्कण्डेय पुराण। यह अठारह महापुराणोंमें सातवाँ महापुराण है। पहले स्वयम्भुने मार्कण्डेयको जो उपदेश दिया था उसीको ले कर यह पुराण आरम्भ किया गया है। यह पुराण पढ़ने वा सुननेसे आयुर्वृद्धि और सभी कामनायें सिद्ध होतीं तथा समस्त पाप जाते रहते हैं। विपद्से बचनेके लिये घर घर जो चण्डी-पाठ होता है वह इसी पुराणके अन्तर्गत है। पुराण देखो।

३ नाड़ीपरीक्षाके प्रणेता।

मार्कण्डेय कवीन्द्र—प्राकृतसर्वस्वके रचयिता।

मार्कण्डेयचूर्ण (सं० पु०) औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गंधक, हिंगुल, सुहागेका लावा, त्रिकटु, जायफल, लवङ्ग, तेजपत्र, इलायची, चितामूल, मोथा, गजपीपल, सोंठ, अतिबला, अबरक, धत्रका फूल, अतीस, सहिंजनका बीया, मोचरस और अफीम प्रत्येक एक पल ले कर अच्छी तरह चूर्ण करे। इसीका नाम मार्कण्डेय-चूर्ण है। चीनीके साथ प्रतिदिन १ माशा सेवन करनेसे संग्रहणी-रोग आरोग्य होता है।

(भैषज्यरत्नावली ग्रहणयधिकार)

मार्कपलो—एक प्रसिद्ध पर्यटक। भिनिस नगरके किसी संभ्रान्त वंशमें इनका जन्म हुआ था। निकलो और माथु नामक दो भाई थे। कुस्तुनतुनिया और क्रिमियामें उनका वाणिज्यकेन्द्र था। उन्होंने १२५४ ई०में भिनिसका परित्याग कर पूर्वकी यात्रा की। १२६० ई०में वे कुस्तुनतुनियाको छोड़ कर बोखारा होते हुए कुबल खाँके राज्यमें गये। कुबल खाँने उन दोनोंको पोपके निकट दूत बना कर भेजा। तदनुसार वे १२५९ ई०में एकर-नगरमें पहुंचे। निकलोने वहां जा कर देखा, कि उनकी स्त्री-पुत्र मार्कपलोको छोड़ परलोक सिधार गई है। उस समय मार्कपलोकी उमर १५ वर्षकी थी। दो वर्ष बाद मार्कपलो और एक पुरोहितको साथ ले वे भ्रमणमें निकले। पुरोहितने पोपको पत्रादि दे कर उन सबोंका साथ छोड़ दिया। एकरसे ले कर सिरिया उपकूल भागमें उन्होंने तीन वर्ष तक भ्रमण किया। पीछे बागदाद और हर्मुज होते हुए वे फर्मान, खोरासन, बालख और बदक्सान तक गये। बदक्सानमें मार्कपलो बीमार पड़ा जिससे उन्हें वहां बहुत दिन तक ठहरना पड़ा था। बदाक्सानसे वे कच और श्रीकोल ह्रदको पार कर पमीर उपत्यकामें पहुंचे। वहांसे काशगर, यारकन्द और खोटान होते हुए एशियाको गोबी मरुभूमि पार कर चीनदेशके उत्तर-पश्चिममें आये।

चीनदेशकी चहारदीवारी घुसने पर कुबला खाँका कर्मचारी उनके समीप आया। उस समय कुबला खाँ चहारदीवारीसे ५० मील उत्तर सांट नगरमें राज्य करते थे। पीछे पिता-पुत्र पिकिन नगरमें आये। मार्कपलोकी उमर उस समय २१ वर्ष थी। वे थोड़े ही समयमें चीन-भाषा सीख कर चीन-सम्राट्के प्रियपात्र हो गये। पीछे २६ वर्ष तक वहां रह कर मार्कपलोने बहुतसे राजकीय तथा उच्च कर्मचारीके कार्य भी किये थे। राजकन्याके साथ तातारवंशीय पारस्य-राजकुमारका विवाह स्थिर हुआ था—मार्कपलो राजकन्याके रक्षकरूपमें पारस्यदेश गये थे। उन्होंने एक बार और यूनानप्रदेश होते हुए सीमान्त-प्रदेशकी यात्रा की। पीछे वे कोटिलान्तर्गत काराकोरम नगरमें पहुंचे। वहांसे भारत-महासागरके सुमात्रा द्वीपमें जलपथसे रवाना हुए। कुबला खाँके भतीजे अर्गान खाँके विवाहके लिये एक सर्वाङ्गसुन्दरी कन्याकी तलाशमें मार्कपलोको मुगल-देश भी जाना पड़ा था। इनके पहले सुमात्रा द्वीपका हाल किसीको भी मालूम नहीं था। मार्कपलो १२९५ ई०में भिनिस लौटे। अनन्तर १२९८ ई०में कुर्जलाकी लड़ाईमें ये कैद किये गये। स्वदेश लौट कर इन्होंने अपना भ्रमणवृत्तान्त हाथसे लिख कर जनसाधारणमें प्रकाशित किया। जेनोआवासी राष्टिजिया नामक एक व्यक्तिने सबसे पहले इनके अपूर्व भ्रमणवृत्तान्तको लिपिबद्ध कर जनसमाजमें प्रचार किया। यह वृत्तान्त १३२० ई०को लाटिन-भाषामें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिखा गया। पीछे १४०२ ई०में लिसवनमें इसका प्रचार हुआ। फरासी देशमें १५५६ ई०को इसका प्रथम संस्करण निकाला गया।

मार्कर (सं० पु०) भृङ्गराज, भंगरैया।

मार्कव (सं० पु०) मर्कांति केशरञ्जनार्थं गच्छतीति मकवः, मर्के सर्पे नाभ्नीति अवः निपातनाद् वृद्धिः। भृङ्गराज, भंगरैया। (भावप्रकाश)

मार्का (अ० पु०) संकेत, कोई अंक वा चिह्न जो किसी विशेष बातका सूचक हो।

मार्केट (अं० पु०) बाजार, हाट।

मार्ग (सं० पु०) मार्ग्यते संस्क्रियते पादेन मृग्यते गमनाय अन्विष्यते इति वा मार्ग वा मृग घञ्। पन्था, रास्ता।

"त्रिंशद्धनूंषि विस्तीर्णो देशमार्गस्तु तैः कृतः।
विंशद्धनुर्ग्रामपथः सीमामार्गो दशैव तु॥
धनूंषि दश विस्तीर्णः श्रीमान् राजपथः स्मृतः॥"
(देवीपुराण)

तीस धनुका देशमार्ग, बीस धनुका ग्रामपथ, दश धनुका सीमामार्ग और दश धनुका राजमार्ग बनाना चाहिये। चार हाथका एक धनु होता है। २ गुदा, पायु। ३ मृगभेद कस्तूरी। ४ मार्गशीर्ष-मास, अगहनका महीना। ५ अन्वेषण, खोज। ६ मृगशिरा नक्षत्र। ७ विष्णु। ८ रक्तापामार्ग, लाल चिचड़ा। मृगस्येदं मृग-अण्। (त्रि०) ९ मृगसम्बन्धी।

"तद्वर्ज्यं सलिलं तात! सदैव पितृ-कर्मणि।
मार्गमाविकमौष्ट्रञ्च सर्वमेकशफञ्च तत्॥"
(मार्कण्डेयपु० ३२।१७)

मार्गक (सं० पु०) मार्ग स्वार्थे कन। १ अग्रहायण मास, अगहनका महीना। २ मार्ग देखो।

मार्गण (सं० क्ली०) मार्ग्यते अन्विष्यत इति मार्ग भावे ल्युट्। १ अन्वेषण, ढूंढ़ना। पर्याय—सम्वीक्षण, विचयन, मृगणा, मृग। २ याच्ञा, परीक्षा करना। ३ प्रणय, प्रार्थना। (पु०) ४ याचक, भिखमंगा। ५ शर, बाण।

"ते सर्वे दृढ़धन्वानः संयुगेष्वपलायिनः।
बहुधा भीष्ममानर्च्छुर्मार्गणैः कृतमार्गणैः॥"
(भारत ५।११५।४४)

मार्गणक (सं० पु०) मार्गण स्वार्थे कन्। याचक, भिखमंगा।

मार्गणता (सं० स्त्री०) १ मार्गण वा याचनका भाव। २ याचकता।

मार्गतोरण (सं० क्ली०) पथपार्श्वमें स्थापित तोरण, बाहरी फाटक।

मार्गद (सं० पु०) केवट।

मार्गदायिनी (सं० स्त्री०) १ केदारस्थ दाक्षायिणी। २ पथ दिखानेवाली।

मार्गद्रुम (सं० पु०) पथपार्श्वस्थ वृक्ष, रास्ताकी बगलका पेड़।

मार्गधेनु (सं० पु०) मार्गस्य धेनुः परिमाणं। एक योजनका परिमाण।

मार्गधेनुक (सं० क्ली०) मार्गधेनु स्वार्थे कन्। योजन।

मार्गप (सं० पु०) राजकर्मचारिभेद, राज्यका वह कर्मचारी जो मार्गोंका निरीक्षण करता हो। इसे अंगरेजीमें Road-inspector कहते हैं।

मार्गपति (सं० पु०) मार्गप देखो।

मार्गपाली (सं० स्त्री०) मार्गं पालयति हिंस्रेभ्यः रक्षतीति पाल-अच्, गौरादित्वात् ङीष्। स्तम्भ, खंभा।

"ततोऽपराह्णसमये पूर्वस्यां दिशि नारद।
मार्गपालीं प्रवध्नीयाद् दुर्गस्तम्भे च पादपे॥"
(पद्मपु० उत्त० १२४ अ०)

मार्गबन्धन (सं० क्ली०) पथरोध, रास्ता रोकना।

मार्गमाण (सं० पु०) खोजा, नपुंसक व्यक्ति।

मार्गमित्र (सं० पु०) सहपान्थ, साथ जानेवाला।

मार्गरक्षक (सं० पु०) पथरक्षक, पहरावाला।

मार्गरोधिन् (सं० त्रि०) पथरोधक, रास्ता रोकनेवाला।

मार्गव (सं० पु०) वर्णसङ्कर जातिविशेष। इसकी उत्पत्ति निषाद पिता और आयोगवी मातासे मानी जाती है।

"निषादो मार्गवं सूते दाशं नौकर्मजीविनम्।
कैवर्त्तमिति यं प्राहुरार्यावर्त्तनिवासिनः॥"
(मनु १०।३४)

"ब्राह्मणेन शूद्रायां जातो निषादः प्रागुक्तः, प्रकृतायामायोगव्यां मार्गवं दाशापरमानां नौव्यवहारजीविनं जनयति।"
(कल्लूक)

इस जातिका दूसरा नाम दाश भी है। ये लोग नाव खे कर अपनी जीविका चलाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्गवती (सं० स्त्री०) पथिकोंकी रक्षा करनेवाली एक देवीका नाम।

मार्गवशानुग (सं० त्रि०) पथानुवर्त्ती, पथस्थित।

मार्गवशायात (सं० त्रि०) मार्गवशानुग देखो।

मार्गवाहिनी (सं० स्त्री०) छोटी नाड़ी।

मार्गविद्या (सं० स्त्री०) १ संगीतके देवता और प्राचीन ऋषियोंके बनाये हुए गाने बाजे और नृत्यकी प्रकरणविद्या। २ पथनिर्माणादि विद्या, रास्ता आदि बनानेकी विद्या।

मार्गवेय (सं० पु०) ऐतरेय ब्राह्मणोक्त एक ऋषिकुमारका नाम। राममार्गवेय देखो।

मार्गशाखिन् (सं० पु०) मार्गे यः शाखी। मार्गस्थित वृक्ष, रास्ते पर जो पेड़ रहता है उसीको मार्गशाखी कहते हैं। (रघु १।४५)

मार्गशाखी (सं० पु०) मार्गशाखिन् देखो।

मार्गशिर (सं० पु०) मृगशिरानक्षत्रयुक्ता पौर्णमास्यत्र मृगशिरा-अण्। मार्गशीर्ष मास, अगहनका महीना।

"शुक्ले मार्गशिरे पक्षे योषिद्भर्त्तुरनुज्ञया।
आरभेत व्रतमिदं सर्वकामिकमादितः॥"

(भाग० ६।१९।२)

मार्गशिरस् (सं० पु०) मार्गशीर्ष, अगहनका महीना।

मार्गशीर्ष (सं० पु०) मार्गशीर्षी अण्, मृगशीर्षेण युक्ता पौर्णमासी मार्गशीर्षी सास्मिन् मासे भवति मार्गशीर्ष। अग्रहायण मास, अगहनका महीना। इस मासकी पूर्णिमातिथिमें मृगशिरा नक्षत्रका योग होता है, इसीसे इसका 'मार्गशीर्ष' नाम हुआ है। पर्याय—सहा, मार्ग, आग्रहायणिक, मार्गशिर, सह। (शब्दरत्ना०)

यह मास सौर, मुख्यचान्द्र और गौणचान्द्रके भेदसे तीन प्रकारका होता है। जब तक रवि वृश्चिक राशिमें रहते हैं, उतने समयको सौर मार्गशीर्ष, रविके वृश्चिक राशिमें रहते समय शुक्ल प्रतिपद्से अमावस्या पर्यन्तको मुख्यचान्द्र मार्गशीर्ष और रविके वृश्चिक राशिमें रहते समय कृष्ण प्रतिपद्से मुख्य चान्द्र मार्गशीर्षकी पौर्णमासी तकको गौणचान्द्र मार्गशीर्ष कहते हैं। कृत्यतत्त्वमें मासकृत्यस्थलमें (अर्थात् किस मासमें क्या करना आवश्यक है) कहा है, कि इस मासमें नवान्न श्राद्ध करना उचित है। हैमन्तिक धान इसी समय पकता है। यह नया धान पहले देवता और पितरोंको उत्सर्ग कर ब्राह्मण, आत्मीय और कुटुम्बोंको खिलानेके बाद पीछे आपको खाना चाहिये। नये अन्नसे पितरोंका श्राद्ध होता है, इसीसे इसको नवान्नश्राद्ध कहते हैं। यह श्राद्ध पार्वणके विधानानुसार करना होता है। नवान्न देखो।

मार्गशीर्षमास ही नवान्नका मुख्य समय है। यदि कोई दैवविड़म्बनाके कारण इस मासमें नवान्न न कर सके, तो माघ मासमें कर सकता है। इस मासकी शुक्ला चतुर्दशी तिथिको सौभाग्यकी कामना कर पाषाणाकार पिष्टक द्वारा देवताकी पूजा करे और पीछे उस पिष्टकको आप खावे। पूर्णिमा तिथिमें पार्वण श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। (कृत्यतत्त्व) मार्गशीर्षमासमें यदि किसीका जन्म हो तो वह बालक धार्मिक, परोपकारी, तीर्थ वा प्रवासरत, सद्वृत्तियुक्त तथा कामुक होता है।

"यस्य प्रसूतिः खलुः मार्गमासे तीर्थे प्रवासे सततं मतिः स्यात्।
परोपकारी धृतसाधुवृत्तिः सद्वृत्तियुक्तो ललनाभिलाषी॥"

(कोष्ठीप्रदीप)

यह मास सभी मासोंमें श्रेष्ठ है। स्वयं भगवान्ने कहा, कि मैं मासोंमें मार्गशीर्ष हूं।

"मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।"

(गीता १० अ०)

ज्योतिषमें लिखा है—उस मासमें ज्येष्ठ पुत्र और कन्याका विवाह वा चूड़ाकरण नहीं करना चाहिये।

"मार्गशीर्षे तथा ज्यैष्ठे चौरं परिणयं व्रतम्।
ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोश्च यत्नतः परिवर्जयेत्॥" (दीपिका)

किसी किसीका मत है, कि ज्यैष्ठमासमें प्रथम दश दिन वा १८ दिन बाद दे कर विवाहादि किया जा सकता है, लेकिन अग्रहायण मासके सम्बन्धमें ऐसा कोई नियम नहीं है। यह समूचा मास वर्जनीय है। कोई कोई कहते हैं, कि मार्गशीर्ष मासमें भी ऊपर कहे गये दिनोंको बाद दे कर विवाहादि किया जा सकता है। किन्तु जो ऐसा कहते हैं उनका मत नितान्त अश्रद्धेय और अशास्त्रीय है।

मार्गशीर्षी (सं० स्त्री०) अगहनकी पूर्णिमा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्गशीषक (सं० पु०) मार्गशीर्ष-स्वार्थे कन् । मार्गशीर्ष मास, अगहनका महीना ।

मार्गशोधक (सं० पु०) पथ-परिष्कारक, झाड़ूदार ।

मार्गशोभा (सं० स्त्री०) सम्मान-प्रदर्शनार्थ पथसज्जा, सम्मान दिखानेके लिये रास्तेको सजाना ।

मार्गहर्म्य (सं० क्ली०) पथस्थित गृह, रास्ते परका घर ।

मार्गागत (सं० त्रि०) पथसे उपस्थित ।

मार्गायात (सं० त्रि०) पथ विस्तृत, चौड़ा रास्ता ।

मार्गार (सं० पु०) मृगादिका अपत्य ।

मार्गिक (सं० त्रि०) मृगान् हन्तीति मृग (पक्षिमत्स्य-मृगान् हन्ति । पा ४।४।३५) इति ठक् । १ मृगहन्ता, मृगों को मारनेवाला । २ पथिक, यात्री ।

मार्गित (सं० त्रि०) मार्ग अन्वेषणे क्त । अन्वेषित, खोजा हुआ ।

मार्गितव्य (सं० त्रि०) मार्गतव्य । अन्वेषणीय, अन्वेषणके योग्य ।

मार्गिन् (सं० पु०) मार्गगामी, मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति, बटोही ।

मार्गी (सं० पु०) १ मार्गिन् देखो । (स्त्री०) २ संगीतमें एक मूर्च्छना । इसका स्वर ग्राम इस प्रकार है—नि स रे ग म प ध । म प ध नि स रे ग म प ध नि स ।

मार्गीयव (सं० क्ली०) सामभेद, एक प्रकारका साम गान ।

मार्गेश (सं० पु०) मार्गस्य ईशः । मार्गप, मार्गपति ।

मार्गोपदिश (सं० पु०) उपायोपदेष्टा, उपाय बतलानेवाला ।

मार्ग्य (सं० त्रि०) मृज्यते इति मृज् (मृजेर्विभाषा) इति पक्षे ण्यत् वृद्धिश्च (चजोः कुघिण्यतोः । पा ७।३।५२) इति कुत्वं । १ मार्जनीय, मार्जन करने योग्य । २ अन्वेषणीय, ढूढने लायक ।

मार्च (अं० पु०) १ अंगरेजीका तीसरा मास, फरवरीके बाद और अप्रैलके पहले पड़नेवाला अंगरेजी महीना । यह प्रायः फागुनमें पड़ता है । २ गमन, गति । ३ सेनाका प्रस्थान, सेनाका कूच ।

मार्जा (सं० पु०) मार्जयति पापमलं प्रक्षाल्य उद्धरति जनानिति मार्ज-णिच्-अच् । १ विष्णु । मार्जयति वसनमलमिति मार्ज अच् । २ रजक, धोबी । ३ मार्जन ।

मार्जक (सं० त्रि०) १ मार्जनकारी, साफ करनेवाला । (पु०) २ रजक, धोबी । ३ सम्मार्जक, झाड़ू देनेवाला ।

मार्जन (सं० क्ली०) मार्ज्यते इति मार्ज भावे ल्युट् । परिष्करण, साफ करनेका भाव । पर्याय—मार्ष्टि, मार्ष्टी, मार्जना, मृजा, मार्ज, मार्जा (अमर)

स्नानकालमें शरीरको अच्छी तरह मलना चाहिये । इससे शरीरकी दुर्गन्ध, गुरुता, खुजली, दाद आदि चमड़ेका रोग तथा अरुचि और स्वेद विनष्ट होता है ।

"दौर्गन्ध्यं गौरवं कण्डूं कच्छूं मलमरोचकम् ।
स्वेदं बीभत्सता हन्ति शरीरपरिमार्जनम् ॥"

(राजवल्लभ)

भावप्रकाशमें लिखा है—स्नान करनेके बाद अंगोछेसे शरीरको अच्छी तरह पोंछ डालना चाहिये । इससे शरीरकी कान्ति बढ़ती है और खुजली दाद आदि चर्म-रोग जाते रहते हैं । शरीर पोंछ डालनेके बाद वस्त्र पहनना उचित है ।

"स्नानस्यानन्तरं सम्यग् वस्त्रे नाङ्गस्य मार्जनम् ।
कान्तिप्रदं शरीरस्य कण्डूत्वग् दोषनाशनम् ॥"

(भावप्र०)

देवगृहमार्जन अतिशय पुण्यजनक है । स्त्री वा पुरुष जो कोई व्यक्ति प्रतिदिन देवगृहमार्जन करता है उसके सभी पाप जाते रहते हैं । अन्तमें उसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है । अतएव सभीको चाहिये, कि वे प्रतिदिन देव गृहको परिष्कार करें ।

"संमार्जनन्तु यः कुर्यात् पुरुषः केशवालये ।
रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तः स भवेन्नात्र संशयः ॥
पांशूनां यावतां राजन् कुर्यात् संमार्जनं नरः ।
तावन्त्यब्दानि स सुखी नाकमासाद्य मोदते ॥"

(विष्णुधर्मोत्तर)

सभी शास्त्रोंमें एक स्वरसे कहा है, कि देवगृहमार्जन करनेसे अशेष पुण्य होता है । विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर कुल वचन उद्धृत नहीं किये गये । हरिभक्ति-विलासमें विस्तृत विवरण दिया गया है ।

२ स्नानविशेष । शारीरिक असुस्थताके कारण जिस दिन स्नान न कर सके उस दिन शरीरको धो लेना चाहिये । यदि यह भी न कर सके तो गीले अङ्गोछेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समूचा शरीर पोंछ डाले। इसको गौण स्नान कहते हैं।

"अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्।
आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैदिकं विदुः॥

इति जावालवचनात् शिरो विहाय गात्रप्रक्षालनं तदशक्तौ सर्वगात्रमार्जनं आर्द्रेण वाससा कुर्यात्॥"

(आह्निकतत्त्व) स्नान देखो।

वैदिकसंध्या करनेके समय मन्त्र पढ़ कर मस्तक और गात्रादि पर कुशपत्र द्वारा जल सिञ्चन करे। इसको भी मार्जन कहते हैं। मार्जन द्वारा विशुद्धिता लाभ होती है, किन्तु इस वैदिक संध्यावासनान्तर्गत मार्जन द्वारा पापमल दूर और शरीर पवित्र होता है। इसीसे प्रति दिन सन्ध्योपासनाके समय पहले ही मार्जन करनेको कहा गया है * (पु०) मार्ज्यतेऽनेनेति मार्ज-ल्युट्। ३ लोध्रवृक्ष, लोध। ४ श्वेत लोध्र, सफेद लोध। ५ रक्त लोध्र, लाल लोध।

मार्जना (सं० स्त्री०) मार्ज्यते इति मार्ज भावे युच्-टाप्। १ मार्जन, सफाई। २ मुरजध्वनि, मृदंगकी बोल। ३ क्षमा, माफी।

मार्जनी (सं० स्त्री०) मार्ज्यतेऽनयेति मार्ज करणे ल्युट् स्त्रिया-ङीप्। सम्मार्जनी, झाड़।

"नमामि शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बरीम्।
मार्जनी कलसोपेतां शूर्पालङ्कृत मस्तकाम्॥"

(शीतलास्तव)

हिन्दू शास्त्रज्ञोंका कहना है, कि मार्जनीरजः यानी झाड़की धूल शरीरमें नहीं लगानी चाहिये। इससे इन्द्रतुल्य व्यक्ति भी शीघ्र ही श्रीभ्रष्ट हो जाते हैं।

२ मध्यम स्वरकी चार श्रुतियोंमेंसे अन्तिम श्रुति।

मार्जनीय (सं० त्रि०) मार्जते इति मृज्-अनीयर्। १ मार्जनयोग्य, परिष्कार करने योग्य। २ अग्नि। ३ शोधन।

मार्जार (सं० पु०) मृज (कञ्जिमृजिभ्यां चित्। उण् ३।१३७) इति आरन्चित् 'मृजेर्वृद्धिः' इत्युर्जलदत्तोक्तेर्वृद्धिश्च। १ रक्तचित्रक वृक्ष, लाल चीता पेड़। २ पूतिसारिवा, वनविलाव। ३ खट्टास, खटास। ४ विड़ाल, बिल्ली। मार्जारको स्पर्श नहीं करना चाहिये, संयोगवश यदि स्पर्श हो जाय, तो स्नान कर लेना उचित है।

"अभोज्यसूतिकाषण्डमार्जाराख्वश्वकुक्कुरान्।
पतितापविद्धचण्डाल मृतहारांश्च धर्मवित्।
संस्पृश्य शुध्यते स्नानादुदक्याग्रामशूकरौ॥"

(मार्कण्डेयपुराण)

पारिभाषिक मार्जार—जो केवल अहङ्कारके लिए जप तप करता है तथा जिसका कार्य पारमार्थिक नहीं है उसको मार्जार कहते हैं। ऐसे व्यक्तिको विड़ाल तपस्वी कहते हैं। इसका अन्न अभोज्य है। अर्थात् विड़ाल-तपस्वीका अन्न खानेसे पाप होता है।

"दम्भर्थं जपते यश्च तप्यते यजते तथा।
न परत्रार्थमुद्युक्तो मार्जारः परिकीर्त्तितः॥
अभोज्याः सूतिकाषण्डमार्जाराख्वश्च कुक्कुटाः॥"

(वामनपु० १५ अ०)

मार्जारक (सं० पु०) मार्जार (संज्ञायां कन्। पा ४।३।१४७०) इति कन्। २ मयूर, मोर। २ विड़ाल, बिल्ली।

मार्जारकण्ठ (सं० पु०) मार्जारस्येव कण्ठः कण्ठस्वरो यस्य यद्वा मार्जारो मसृणः कण्ठो यस्य। मयूर, मोर।

मार्जारकर्णिका (सं० स्त्री०) मार्जारस्य कर्णो इव कर्णौ यस्याः, स्त्रियां-ङीप् स्वार्थे कन्। चामुण्डाका एक नाम।

मार्जारकर्णी (सं० स्त्री०) मार्जारस्येव कर्णावस्याः ङीप्। चामुण्डाका एक नाम।

मार्जारगन्धा (सं० स्त्री०) मार्जारस्येव गन्धोऽस्याः। मुद्गपर्णी, वनमूंग।

---

* "शिरसो मार्ज्जनं कुर्य्यात् कुशैः सोदकविन्दुभिः।
प्रणवो भर्भुवः स्वश्च गायत्री च तृतीयिका॥
अव्दैवत्यं त्र्यचञ्चैव चतुर्थमिति मार्ज्जनम्॥

उँकारो भुरादिव्याहृतित्रयं तृतीया च गायत्री चतुर्थं आपो हि ष्ठेति ऋक्त्रयं इतीदं मार्ज्जनं मार्ज्जनक्रियाकरणमित्यर्थः।

ऋगन्ते मार्ज्जनं कुर्य्यात् पादान्ते वा समाहितः।
आपो हि ष्ठेत्र्यचा कार्यं मार्जनन्तु कुशोदकैः॥
प्रतिप्रणवसंयुक्तं क्षिपेन्मुर्द्धिन् पदे पदे।
त्र्यचस्यान्तेऽथवा कुर्य्यादृषीणां मतमीदृशम्॥
आपो हि ष्ठेति सुक्तस्य सिन्धुद्वीपऋषिः स्मृतः।
आपो वै देवता छन्दो गायत्री मार्जनं स्मृतम्॥"

(आह्निकतत्त्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्जारगन्धिका (सं० क्ली०) मार्जार-गन्ध कन् टाप् अत इत्वञ्च। मुद्गपर्णी वनमूंग।

मार्जारपाद (सं० पु०) अश्वभेद, एक प्रकारका बुरे लक्षणवाला घोड़ा। जिस घोड़ेके खुर उसके शरीरके रंग जैसा न हो कर दूसरे रंगका हो उसीका नाम मार्जार पाद है। ऐसे घोड़ेका व्यवहार नहीं करना चाहिये, करनेसे अमङ्गल होता है।

मार्जारि (सं० पु०) पुराणानुसार मगधराज सहदेवके पुत्र।

मार्जारी (सं० स्त्री०) मार्ष्टि शोधयति केशादिकमनया मृज आरन् स्त्रियां ङीप्। १ कस्तूरी। २ जन्तुविशेष, खटासी। पर्याय—पूतिका, पूतिकज, गन्धचेलिका।

(राजनि०)

मार्जारीटोड़ी (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी। इसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

मार्जारीय (सं० पु०) मार्जारस्यायं मार्जार (गहादिभ्यश्च। पा ४।२।१३८) इति छ। १ विड़ाल, बिल्ली। २ शूद्र। ३ कायशोधन, शरीरका परिष्कार करना।

मार्जाल (सं० पु०) मार्जाररलयोरेकत्वात् रस्य ल। मार्जार, विड़ाल।

मार्जालीय (सं० पु०) मृज् (स्थाचतिमृजेरालच वालञ्चालीयचः। उण् १।११५) इति आलीयच्। १ विड़ाल, बिल्ली। २ शूद्र। ३ कायशोधन, शरीरका परिष्कार करना। ४ महादेव।

"ललाटाक्षाय सर्वाय मीढुषे शूलपाणये।
पिनाकगोप्त्रे सूर्य्याय मार्जालीयाय वेधसे॥"

(भारत ३।३९।७७)

५ पुराणानुसार एक ऋषिका नाम। इसका दूसरा नाम मर्जालीय भी है।

मार्जित (सं० त्रि०) मार्जते मृज-णिच् कर्मणि क्त। १ शोधित, स्वच्छ किया हुआ। स्त्रियां टाप्। २ रसाल, एक प्रकारका खाद्य पदार्थ। दही, चीनी, शहद और मिर्च आदिको मिला कर और उसमें कपूर डाल कर यह बनाया जाता है। रसाल देखो।

मार्ड्राकव (सं० पु०) मृड्राकोगोत्रापत्यः (अनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ्। पा ४।१।१०४) इति मृड्राक अञ्। मृड्राक ऋषिका गोत्रापत्य।

मार्ड्राकवायन (सं० पु०) मार्ड्राकव (हरितादिभ्योऽञः। पा ४।१।१९०) इति अञन्तात् फक्। मार्ड्राकवका गोत्रापत्य।

मार्ड्रीक (सं० क्ली०) सुखसाधन।

मार्त्तण्ड (सं० पु०) मृतश्चासौ अण्डश्चेति, मृताण्डे भव तीति मृताण्ड (तत्र भवः। पा ४।३।५३ इति अण्। १ अर्कवृक्ष, अकवनका पेड़। २ शूकर, सूअर। ३ स्वर्णमाक्षिक, सोना मक्खी। ४ सूर्य। इनका उत्पत्ति विवरण-मार्कण्डेयपुराणमें इस तरह लिखा है,—प्राचीनकालमें दानवोंने देवताओंको परास्त कर स्वर्गराज्य पर अधिकार जमाया। देवमाता अदिति पुत्रोंकी भलाईके लिये भगवान् भास्करके उद्देशसे कठोर तपस्या करने लगी। भास्करदेव तपस्यासे संतुष्ट हो अदितिके समीप उपस्थित हुए और उन्हें वर मांगने कहा। अदिति बोली, 'दैत्य और दानवोंने मेरे पुत्र देवताओंका त्रिभुवन और यज्ञभाग ले लिया है अतः प्रार्थना करती हूं, कि जिससे देवगण फिरसे यज्ञभागभुक् और स्वर्गाधिपति हों वह उपाय बतला दीजिये।' भगवान् भास्करने अदितिके प्रति प्रसन्न हो कहा, 'तुम्हारे गर्भसे मैं सहस्रांशमें उत्पन्न हो कर तुम्हारे पुत्रके शत्रुओंका विनाश करूंगा।' इतना कह कर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

इस प्रकार अदितिका अभिलाष पूरा होने पर उन्होंने तपस्या करना छोड़ दिया। कुछ दिन बाद रविका सौषुम्न नामक कर अदितिके गर्भमें घुसा। देवजननी अदिति समाहित चित्तसे शौच और कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रत करके उस दिव्य गर्भको वहन करने लगीं। कश्यप अदितिके प्रतिक्रुद्ध हो बोले, 'तुम प्रतिदिन उपवास करके क्या इस गर्भाण्डको नष्ट कर दोगी?' अदितिने जवाब दिया, 'तुम यह जो गर्भाण्ड देखते हो इसे मैं नष्ट नहीं करती हूं, यह विपक्षियोंको मृत्युका कारण स्वरूप है।' फिर दोनोंमें बातचीत करते करते विवाद हो गया। इस पर अदितिने उसी समय गर्भको गिरा दिया। कश्यप उस गर्भको उदीयमान् भास्करको तरह प्रभाविशिष्ट देख उसका स्तव करने लगे। इसी समय उन्हें अन्तरीक्षसे सम्भाषण करते हुए देववाणी हुई, 'तुमने इस गर्भाण्डको 'मारित' अर्थात् मार डालोगी, ऐसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा था। इसलिये तुम्हारे इस पुत्रका नाम मार्त्तण्ड होगा। यह पुत्र संसारमें सूर्यका कार्य और यज्ञभागहारी असुरोंका संहार करेगा।'

देवताओंको जब यह संवाद मालूम हुआ तब वे प्रसन्न हुए और मार्त्तण्डको अगुआ बना कर असुरोंके साथ युद्ध करने लगे। इस युद्धमें सभी असुर भगवान् मार्त्तण्ड द्वारा देखे जाते ही उनके तेजसे भस्म हो गये।

इस प्रकार असुरोंके मारे जाने पर देवताओंने फिर अपना नष्ट अधिकार प्राप्त किया। मार्त्तण्डदेव कदम्बपुष्पकी तरह ऊपर और नीचे अपनी प्रखर किरण फैलाने लगे। उन्होंने देखते देखते प्रज्वलित अग्निपिण्डकी तरह अति प्रदीप्त कलेवरको धारण किया।

प्रजापति विश्वकर्माकी कन्या संज्ञाके साथ इनका विवाह हुआ। संज्ञाके गर्भसे दो पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई। ज्येष्ठ पुत्रका नाम वैवस्वत मनु, दूसरेका यम और कन्याका नाम यमी वा यमुना था।

संज्ञा मार्त्तण्डदेवके उस गोलाकार रूपसे उत्पन्न प्रखर तेजको किसी तरह सह न सकी और अपनी छायाको देख कर कहने लगी, 'छाया! तुम्हारा कल्याण हो। मैं अपने पिताके घर जाती हूं, तुम मेरे कथनानुसार सूर्यके साथ रहना। मेरे दो पुत्र और एक कन्या हैं उनका भी भलीभांति लालन पालन करना। किन्तु यह बात सूर्यके समीप कभी भी न खोलना।'

छायाने कहा, 'मार्त्तण्डदेव जब तक मेरे केश न पकड़ेंगे और मुझे शाप न देंगे, तब तक मैं तुम्हारे कथनानुसार ही चलूंगी। तुम्हारी जहां इच्छा हो, जा सकती हो।'

छायाके इस प्रकार कहने पर संज्ञा पितृभवनको चली गई और कुछ दिन वहीं ठहरीं। अनन्तर पितासे स्वामीके पास जानेके लिये बार बार अनुरोध की जाने पर वह बड़वारूप धारण कर उत्तर-कुरुको चल दीं और वहीं तपस्या करने लगीं।

इधर संज्ञाके पितृगृह जाने पर छाया उनका रूप धारण करके सूर्यदेवकी परिचर्या करने लगी। मार्त्तण्डने उसे संज्ञा जान कर उसके गर्भसे दो पुत्र और एक कन्याको उत्पन्न किया। इनमेंसे बड़के नाम सावर्णि मनु था। ये भी वैवस्वत मनुकी तरह प्रभावशाली थे। दूसरे पुत्रका नाम शनैश्चर और कन्याका नाम तपती था। राजा सम्वरणके साथ तापती ब्याही गई थीं।

इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। पीछे जब मार्त्तण्डको यह रहस्य मालूम हो गया तब वे संज्ञा पर बड़े बिगड़े और उसी समय विश्वकर्माके समीप चले गये। विश्वकर्माने यथाविधि सत्कार कर कहा, 'संज्ञा तुम्हारे प्रखर तेजको सह न सकनेके कारण कठोर तपस्या कर रही है। संज्ञा तुम्हारी कमनीय रूपाभिलाषी है। यदि तुम्हें उसे पानेकी इच्छा हो, तो अपने इस प्रखर तेजको घटा दो।'

सूर्यदेवके स्वीकार करने पर विश्वकर्मा शाकद्वीपमें मार्त्तण्डको भूमियन्त्रमें आरोपित कर उनके तेजको घटाने लगे। इस प्रकार उनका तेज बिलकुल शान्त हो गया और शरीर बड़ा कमनीय दिखाई देने लगा। उनका तेज १५ भागोंमें विभक्त किया गया था। प्रत्येक भागसे विश्वकर्माने विष्णुका चक्र, महादेवका शूल, कुबेरकी शिविका (पालकी), यमका दण्ड और कार्त्तिकेयकी शक्ति बनाई। (मार्कण्डेयपु० १०५-१०६ अ०)

संज्ञा और सूर्य देखो।

मार्त्तण्ड—काश्मीरके अन्तर्गत काश्मीरकी प्राचीन राजधानी इस्लामाबादसे ५ मील पूर्वमें अवस्थित एक प्राचीन पुण्यस्थान। यहांका मन्दिर जगद्विख्यात है। ऐसा सुन्दर मन्दिर भारतवर्षमें और कहीं भी नहीं है। इसका शिल्पनैपुण्य देख कर यहां जितने शिल्पशास्त्रवित् आये, सभी मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा तथा प्राच्य-जगत्की अपूर्व अतीत कीर्त्तियोंमें इसे श्रेष्ठ स्थान दे गये हैं। मूलमन्दिर किस समय बनाया गया वह भी किसीको मालूम नहीं है। राजतरङ्गिणीके प्रमाणानुसार बहुतेरे इसे काश्मीर-पति रणदित्यकी कीर्त्ति कहते हैं। फिर कोई कोई भारतविजयी ललितादित्यको इस मन्दिरका निर्माता बतलाते हैं।

मातान शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

मार्त्तण्डतिलकस्वामी (सं० पु०) प्रसिद्ध दार्शनिक वाचस्पति मिश्रके गुरु। इन्होंने ब्रह्मसूत्रभाष्य प्रणयन किये।

मार्त्तण्ड मिश्र—प्रायश्चित्तमार्त्तण्ड और संस्कार मार्त्तण्डके रचयिता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्त्तण्डमूल (सं० क्ली०) अर्कमूल, अकवनकी जड़ ।

मार्त्तण्ड वर्मन्—केरलके एक राजा। ये १३१२ ई०में मौजूद थे।

मार्त्तण्डवल्लभा (सं० स्त्री०) मार्त्तण्डस्य वल्लभा, प्रिया। १ सूर्यकी पत्नी, छाया, संज्ञा। २ आदित्य-भक्ता, हुरहुर।

मार्त्तवत्स (सं० क्ली०) मृतवत्साका अपत्य।

मार्त्ताण्ड (सं० पु०) मृतको छोड़ कर अण्डसे उत्पद्यमान, वह जिसकी उत्पत्ति अण्डेसे हुई हो।

"विश्वे मार्त्ताण्डो व्रजसा पशुः।" (ऋक २।३८।८)

मार्त्ताण्डः 'मृताद्भिन्ना दण्डादुत्पद्यमानः' (सायण)

मार्त्तिक (सं० पु०) मृत्तिकाया विकार इति मृत्तिका (तस्य विकारः। पा ४।६।१३४) इति ठक्। १ शराव, पुरवा। (त्रि०) २ मृत्तिका निर्मित, मिट्टीका बना हुआ।

मार्त्तिकावत (सं० क्ली०) १ एक नगरका नाम। यह चेदि-राज्यके अन्तर्गत और ऋक्षवान्-पर्वतके समीप नर्मदा-नदीके किनारे अवस्थित है। हरिवंशमें यह मृत्तिकावती नामसे उल्लेख हुआ है। २ जनपदभेद। ३ उस देशके राजा। ४ उस देशके निवासी।

मार्त्तिकावतक (सं० त्रि०) मार्त्तिकावत-सम्बन्धीय या उस देशका निवासी।

मार्त्य (सं० त्रि०) दैहिक धातुमल, शरीरकी मैल।

"तस्यास्तद्योगविधूतमार्त्यं मार्त्यमभूत सरित्।
श्रोतसां प्रवरासौम्यसिद्धिदा सिद्धसेविता॥"

(भागवत ३।३३।३२)

मार्त्यव (सं० पु०) १ मृत्यु सम्बन्धीय। २ अन्तकका गोत्रापत्य

मार्त्युञ्जय (सं० त्रि०) मृत्युञ्जय-सम्बन्धीय।

मार्त्स्न (सं० क्ली०) क्षुद्र चूर्ण।

मार्दङ्ग (सं० क्ली०) मृत् अङ्गमस्य, ततः स्वार्थे अण्। १ पत्तन, मृदङ्ग। (त्रि०) २ मृदङ्गवादक, मृदंग बजानेवाला।

मार्दङ्गिक (सं० त्रि०) मृदङ्गवादनं शिल्पमस्य, मृदङ्ग (शिल्पं। पा ४।४।५५) इति ठक्। १ मृदङ्ग-वादक, मृदङ्ग बजानेवाला। पर्याय—मौरजिक, साङ्गिक, औद्धिविक।

मार्दव (सं० क्ली०) मृदोर्भाव इति मृदु (पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा। पा ५।१।१२२) इत्यत्र वावचनमणादेः समावेशार्थं इति काशिकोक्तेरण। १ दूसरेको दुःखी देख कर दुःखी होना। यह उत्तम, मध्यम और अधमके भेदसे तीन प्रकारका है।

"मार्दवं कोमलस्यापि संस्पर्शासहतोच्यते।
उत्तमं मध्यमं प्रोक्तं कनिष्ठञ्चेति तत्त्रिधा॥"

(उज्वलनीलमणि)

२ अकाठिन्य, सरलता।

"विललाप सवाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
अभितप्रमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु॥"

(रघु ८।४३)

(पु०) मार्दवं मृदुत्वं अस्यास्तीति अर्श-आद्यच्। ३ एक प्राचीन संकर जाति। इस जातिके लोग बहुत मृदु स्वभावके होते थे। ४ अभिमान रहित होना, अहंकारका त्याग।

मार्दवायन (सं० पु०) मार्दवका गोत्रापत्य।

मार्दवीकृत (सं० त्रि०) मृदुकृत, मुलायम किया हुआ।

मार्देय (सं० पु०) मृदका अपत्य।

मार्देयपुर (सं० क्ली०) एक प्राचीन नगरका नाम।

माद्वीक (सं० क्ली०) मद्यविशेष, दाखकी बनी मदिरा, अंगूरकी शराब।

मार्फत (अ० अव्य०) द्वारा, जरिये।

मार्मिक (सं० त्रि०) विशेष प्रभावशाली, मर्म स्थान पर प्रभाव डालनेवाला।

मार्मिकता (सं० स्त्री०) १ मार्मिक होनेका भाव। २ पूर्ण अभिज्ञता, किसी वस्तुके मर्म तक पहुंचनेका भाव।

मार्ष (सं० पु०) मृष्यति क्षमते जनातीति, मृष् (इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः। पा ३।१।१३५) इति क, मृषं स्वार्थे अण्। १ नाटकका सूत्रधार। २ नाटकमें किसी मान्य या प्रतिष्ठित व्यक्तिके लिये सम्बोधन। ३ मारिषशाक, मरसा नामक साग।

मार्षिक (सं० पु०) मार्ष-ठक्। मरिष शाक, मरसा नामक साग।

मार्ष्टव्य (सं० त्रि०) परिस्कर्त्तव्य, परिस्कार करने योग्य।

मार्ष्टि (सं० स्त्री०) मृज्-क्तिन् (मृजे वृद्धिः। पा ७।२।११४) इति वृद्धिश्च। १ मार्जन। २ तैलाभ्यक्षण, तेल लगाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"तैलमल्पं यदङ्गेषु न भवेत् साहुसङ्गतम्।
सा मार्ष्टिः पृथगभ्यङ्गो मस्तकादौ प्रकीर्त्तितः॥"
(आह्निकतत्त्व)

मार्ष्टिमत् (सं० त्रि०) १ मार्जन विशिष्ट। (पु०) २ सारणके एक पुत्रका नाम।

माल (सं० क्ली०) माति मानहेतुर्भवतीति मा (ऋजेन्द्राग्र-व्रजेत्यादि। उण् २।२८) इति रन्, पृषोदरादित्वात् रस्य लत्वं। १ क्षेत्र। २ कपट। ३ वन, जंगल। ४ हर-ताल। ५ एक प्राचीन अनार्य जाति। भागवतमें इसे म्लेच्छ लिखा है।

"माला मिल्लाः किरातांश्च सर्वेऽपि म्लेच्छजातयः।"
(भागवत ६।९।३९)

६ मेदिनीपुरके अन्तर्गत एक देशका नाम। यह मालभूमि नामसे प्रसिद्ध है। ७ जनलोक। मां लक्ष्मी लातीति ला-क। ८ विष्णु।

माल (हिं० स्त्री०) १ माला, हार। २ पंक्ति, पाँती। ३ वह रस्सी वा सूतकी डोरी जो चरखेमें मूड़ी वा बेलन परसे हो कर जाती है और टेकुएको घुमाती है। (फा० पु०) ४ संपत्ति, धन। ५ सामग्री, सामान। ६ क्रय-विक्रयका पदार्थ। ७ वह धन जो करमें मिलता है। ८ फसलकी उपज। ९ उत्तम और सुस्वादु भोजन। १० गणितमें वर्गका घात, वर्ग अंक। ११ सुन्दर स्त्री, युवती। २ वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो।

माल—पश्चिम और मध्यवङ्गकी कृषिजीवी जातिविशेष। बहुतोंका कहना है, कि ये द्राविड़ीय कृषकवंशसे उत्पन्न हुए हैं। ये लोग ग्राम्य चौकीदारका काम करते हैं और चोरी करनेमें बड़े निपुण हैं।

पूर्ववङ्गके मालोंमें ऐसा प्रवाद है, कि पहले ये लोग ढाकाके नवाबकी सभामें मल्लक्रीड़ा किया करते थे। तभीसे इनका मल्ल वा माल नाम पड़ा है। किन्तु इस विषयका कोई प्रमाण नहीं मिलता। बेभरली (Beverly) साहबने १८७२ ई०में मर्दुमशुमारीके विवरणमें कनिंहम साहबका मत उल्लेख करते हुए कहा है, कि भागलपुरके दक्षिण जो मन्दार पर्वत है वहांके Mandei नामक अधिवासियों के साथ महानदीतीरवासी Manada और टलेमी कथित Mandalae जातिका बहुत कुछ सदृशता देखी जाती है। ये सभी एक शाखाभुक्त हैं।

पटनाके दक्षिण-गङ्गातट पर जो सब मल्ली वा मलै जाति रहती है, मालूम होता है वही टलेमी-वर्णित मंडली जाति है। वर्त्तमान मुण्डाकोलोंके साथ इनका बहुत कम प्रभेद देखा जाता है। तामिल भाषामें मलय शब्द-का अर्थ पहाड़ है। अतएव माल शब्दसे पहाड़िया वा पार्वत्य जाति समझी जाती है। दो हजार वर्ष पहले यह द्राविड़ीय जाति समस्त पश्चिमवङ्गमें फैली हुई थी। पीछे अन्यान्य जातिकी प्रतियोगितासे वे लोग जहां तहां जा कर बस गये।

हण्टर साहबने मालभूमि (मानभूम) वा मल्लभूमि-को जो मल्ल वा चोरोंका वासस्थान बतलाया है वह ठीक नहीं जंचता। मालभूमि शब्दसे माल वा पहाड़िया जातिका निवासस्थान समझा जाता है। शायद मालदह सबसे पहले माल जाति द्वारा उपनिविष्ट हुआ होगा। ये सब माल पूर्व प्रान्तमें फैल कर निम्नश्रेणीके हिन्दुओंमें परिणत हो गये हैं। अन्यान्य आदिम हिन्दुओंकी तरह मालगण ४५ प्रकारकी चण्डाल जातिमें अन्तर्निविष्ट हुए हैं। वङ्गदेशके प्रत्येक जिलेमें थोड़ा बहुत चण्डाल दिखाई देता है। कोई कोई कहते हैं, कि माल और चण्डाल भिन्न जाति नहीं है। फिर कोई इन्हें मल्लक्रीड़ानिपुण जाति विशेष, कोई सापुड़िया वा माल वैद्य, कोई मुसल-मान और कोई बेदिया और बाधाजिया बतलाते हैं। इन मालोंमें बहुतसे मुसलमान हैं उसका यथेष्ट प्रमाण मिलता है।

बांकुड़ा जिलेमें इन लोगोंके मध्य निम्न लिखित श्रेणी विभाग देखे जाते हैं, यथा—धाइया, गोवरा वा गुरा, खेरा राजवंशी और सानागं था। मेदिनीपुर और मानभूममें—धूनकाटा, राजवंशी, सापुड़िया, बेदिया माल औ तङ्गा। वीरभूममें—खाटुरिया, मल्लिक और राजवंशी। सन्थाल परगनेमें—देशवार, मगहिया, राज-वंशी वा राजमाल, राढ़ीमाल, और सिन्दूरा।

बाँकुड़ाकी तरह मुर्शिदाबादमें भी विभिन्न श्रेणीके मालोंका वास है। इन सब विभागोंकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता। कच्छ जातिमें राजवंशी उपाधि देखी जाती है, फिर भी वे माल नहीं हैं। मालूम होता है, किसी स्थानीय राजवंश से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही राजवंशी विभागकी उत्पत्ति हुई होगी। कोवरा माल वानर पकड़ता है। मालूम होता है, कि खैरासे खोटा डोम जातिकी शाखाविशेषकी उत्पत्ति हुई है। सानागान्था—तांतियोंके कपड़ा बुननेके सानेसे उत्पन्न हुआ है।

ये लोग सगोत्रमें विवाह नहीं करते। पितृपक्षमें पांच पीढ़ी और मातृपक्षमें तीन पीढ़ी छोड़ कर विवाह करते हैं। जब कोई इस जातिमें मिलना चाहता है, तब वह माल सरदारका पादोदक लेता और समाजको एक बड़ा भोजन देता है।

बाल्य और यौवन दोनों प्रकारका विवाह इनमें प्रचलित है। बहुविवाह प्रचलित रहने पर भी ये दीनता के कारण एकसे अधिक स्त्री नहीं करते। विधवा-विवाह प्रचलित है। इसके लिये कोई विशेष अनुष्ठान नहीं करना होता। केवल तुलसीकी माला बदल देनेसे ही विधवा-विवाह सम्पन्न होता है। स्त्री यदि व्यभिचारिणी निकले तो स्वामी ग्राम्य पंचायतकी अनुमति ले कर उसे छोड़ सकता है। व्यभिचारिणी भी विधवाकी तरह फिर-से विवाह कर सकती है।

इस जातिके लोगोंने अभी सम्पूर्ण रूपसे हिन्दूधर्मको अवलम्बन कर लिया है। उनमें आदिम-धर्मका अभी कोई भी चिह्न दिखाई नहीं देता। ये लोग जनसाधारणमें प्रचलित स्थानीय धर्मको ग्रहण करते हैं। फिर कहीं कहीं ये लोग अपनेको वैष्णव शैव और शाक्त बतलाते हैं। जननी मनसा इनकी कुलदेवी हैं और बड़ी धूमधाम-से उसकी पूजा करते हैं। किसी किसी जगह ये ब्राह्मण पुरोहितको नियुक्त करते हैं और कहीं नहीं भी करते। किन्तु अकसर बूढ़े ही पूजा करते हैं। सन्थाल परगने में राजमालाओंके पुरोहित ब्राह्मण हैं।

साधारणतः ये मृतदेहको नदीके किनारे जलाते हैं और चिता-भस्म ले कर जलमें फेक देते हैं। ग्यारवें दिन श्राद्धक्रिया हिन्दुओंकी तरह होती है। जिसकी अप-घातसे मृत्यु होती है उसका चौथे दिनमें श्राद्ध होता है। कालीपूजाकी रातको ये मृत पूर्वपुरुषोंके सम्मानार्थ महासमारोहसे मशाल आदि जलाते हैं। चैत्र मासके अन्तिम दिनमें सभी पितृतर्पण करते हैं।

बालिकाओंकी लाश पट कर जमीनमें गाड़ी जाती है। जो गरीब है उसकी लाशको उत्तर शिर करके नदीके किनारे गाड़ देते हैं।

कृषिकार्य्य ही इनकी प्रधान उपजीविका है। बहुतेरे मजदूरी करके भी अपना गुजारा चलाते हैं। ये लोग सूअर और गो-मांस आदि नहीं खाते, इस बातका इन्हें बड़ा गौरव है।

माल—सिंहभूम जिलेकी एक प्रकारकी भुइयां जाति। किसी किसी कैवर्त्त की भी माल उपाधि है।

माल (संस्कृत मल्ल) कुर्मी जातिकी एक शाखा। आजम-गढ़ जिलेमें ये अधिक संख्यामें रहते हैं। प्रवाद है, कि मयूरभट्ट मुनिके औरस और किसी कुर्मी रमणीके गर्भसे इनकी उत्पत्ति है। मयूरभट्ट गोरखपुरका परित्याग कर सरयूनदीके किनारे कड्करादि नामक स्थानमें रहते थे। वह स्थान आजमगढ़ जिलेके नथुपुर परगनेके अन्तर्गत है। वर्त्तमान मालोंका कहना है, कि उन्होंने कन्नोज-राज हर्षयद्धनसे निष्कर भूमि पाई है। ये लोग गोरख-पुरके नागवंश कुर्मियोंके साथ आदान-प्रदान करते है। कोई भी एकसे ज्यादा विवाह नहीं करता। इनमें बाल-विवाह प्रचलित नहीं है, विधवाविवाह निषिद्ध है।

इन लोगोंके मध्य वैष्णवोंकी संख्या बहुत थोड़ी है, प्रायः सभी वैष्णव हैं। ये लोग कालीपूजा तथा विविध ग्राम्यदेवताकी पूजा करते हैं। इनका आचार व्यवहार बहुत कुछ कुर्मियोंसे मिलता जुलता है।

माल—नेपालके अन्तर्गत एक पर्वतका नाम।

मालकंगनी (हिं० स्त्री०) एक लताका नाम। यह हिमा-लय-पर्वत पर झेलम नदीसे आसाम तक ४००० फुटकी ऊचाई तक तथा उत्तरीय भारत, बरमा और लङ्कामें पाई जाती है।

इसकी पत्तियां गोल और कुछ कुछ नुकीली होती है। यह लता पेड़ों पर फैलती है और उन्हें आच्छादित कर लेती है। चैतके महीनेमें इसमें घौदके घौद फूल लगते हैं। सारी लता फूलोंसे लदी हुई दिखाई पड़ती है। जब फूल झड़ जाते हैं, तब इसमें नीले नीले फल लगते हैं। ये फल पकने पर पीले रंगके और मटरके बराबर होते हैं। फलोंके भीतरसे लाल दाने निकलते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इन दानोंमें तेलका अंश अधिक होता है जिससे इन्हें पेर कर तेल निकाला जाता है। मान्द्राजमें उत्तरीय सरकार तथा विजिगापट्टम, दलौरा आदि स्थानोंमें इसका तेल बहुत अधिक तैयार होता है। यह तेल नारंगी रंगका होता है और औषधके काममें आता है।

विशेष विवरण ज्योतिष्मती शब्दमें देखो।

मालकँगुनी (हिं० स्त्री०) माजकँगनी देखो।

मालक (सं० क्ली०) मलते धार्य्यति शोभामिति, मल धारणे ण्वुल्। १ स्थलपद्म। २ निम्ब वृक्ष, नीमका पेड़।

मालकगुनी (हिं० स्त्री०) मालकँगनी देखो।

मालकन्द (सं० पु०) स्वनामख्यात महाकन्द शाक।

मालका (सं० स्त्री०) मल-ण्वुल स्त्रियां टाप्। माला।

मालकुंडा (हिं० पु०) एक प्रकारका कुंडा। इसमें नील कड़ाहेमें डाले जानेके पहले रखा जाता है।

मालकोश (सं० पु०) मालस्य हरेः कोशात् कण्ठान्निर्गतः इ. अण्। रागविशेष। इसे कौशिकराग भी कहते हैं। हनुमतके मतानुसार यह छः रोगोंके अन्तर्गत माना गया है। यह संपूर्ण जातिका राग है। इसका स्वरूप वीर रसयुक्त, रक्त वर्ण, वीर पुरुषोंसे आवेष्टित, हाथमें रक्त वर्णका दण्ड लिये और गलेमें मुण्डमाला धारण किये लिखा गया है। कोई कोई इसे नील वस्त्रधारी, श्वेत दण्ड लिये और गलेमें मोतियोंकी माला धारण किये हुए मानते हैं। इसकी ऋतु शरद और काल रातका पिछला पहर है। कोई कोई शिशिर और वसन्त ऋतुको भी इसकी ऋतु बतलाते हैं। हनुमत्के मतानुसार कौशिकी, देवगिरि, वरवारी, सोहनी और नीलाम्बरी ये पांच इसकी प्रियाएं और वागेश्वरी, ककुमा, पर्य्याका, शोभनी और खंभाती ये पांच भार्याएं तथा माधव, शोभन, सिंधु, मारू, मेवाड़, कुन्तल, कलिङ्ग, सोम, विहार और नीलरंग ये दश पुत्र हैं।

मतान्तरसे केदारा, हम्मीर, कामोद, खम्भाती और बहार नामक पुत्र; भूपालि, कामिनी, झिंझोटी, कामोदी और विजया नामकी पुत्रबधू; बागेश्वरी, बहार, शहाना, अताना, छाया और कुमारी नामकी रागिनियां तथा शङ्करी और जयजयवंती सहचरियां हैं। किसीके मतसे यह सङ्करराग है। इसकी उत्पत्ति षट् रागिनी, हिंडोल, वसन्त, जयजयवंती और पञ्चमके योगसे बतलाई जाती है।

रागमालाके मतसे यह पाटलवर्ण, नीलपरिच्छद, यौवनमदमत्त, यष्टिधारी और स्त्रीगणसे परिवेष्टित, गलेमें शत्रुओंके मुण्डकी माला पहने और हास्यमें निरत है। इस मतमें टोड़ी, गौरी, गुणकरी, खंभात और ककुमा नामक पांच स्त्रियाँ; मारु, मेवाड़, वड़हंस, प्रवल, चंद्रक, नन्द, भ्रमर और खुखर नामक आठ पुत्र बतलाये गये हैं। भरतके मतानुसार गौरी, दयावती, देवदाली, खंभावती और कोकभा नामक पांच भार्यायें; गांधार, शुद्ध, मकर, लिञ्जन, सहान, भक्तवल्लभ, मालीगौर और कामोद नामक आठ पुत्र हैं।

मालकोस (हिं० पु०) मालकोश देखो।

मालखाना (फा० पु०) वह स्थान जहां पर माल असबाब जमा होता हो वा रखा जाता हो।

मालखेड़—राष्ट्रकूट राजाओंकी राजधानी। इसका प्राचीन नाम मान्यखेट है।

मालगाड़ी (हिं० पु०) रेलमें वह गाड़ी जिसमें केवल माल असबाब भर कर एक एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुंचाया जाता है। ऐसी गाड़ीमें यात्री नहीं जाने पाते।

मालगुजार (फा० पु०) १ मालगुजारी देनेवाला पुरुष। २ मध्यप्रदेशमें एक प्रकारके जमींदार। ये किसानोंसे वसूल करके सरकारको मालगुजारी देते हैं।

मालगुजारी (फा० स्त्री०) १ वह भूमिकर जो जमींदारसे सरकार लेती है। २ लगान।

मालगुर्जरी (सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। कुछ लोग इसे गौरी और सोरठसे बनी हुई संकर रागिनी मानते हैं।

मालगोदाम (हिं० पु०) १ वह स्थान जहां पर व्यापारका माल जमा रहता है। २ रेलके स्टेशनों पर वह स्थान जहां मालगाड़ीसे भेजा जानेवाला अथवा आया हुआ माल रहता है।

मालचक्रक (सं० क्ली०) पुट्ठे परका वह जोड़ जो कमरके नीचे जाँघकी हड्डी और कूल्हेमें होता है।

मालजातक (सं० पु०) गन्धमार्जार, गंधविड़ाल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालञ्चा—नदीविशेष। कपोताक्ष नदी जहां समुद्रमें गिरती है उस मुहानेके निकटवर्त्ती प्रवाहको मालञ्चा कहते हैं। विद्याधरीनदीके साथ मालञ्चाका संयोग है। मालञ्चा रायमङ्गल मुहानेसे दो कोस पूर्वमें अवस्थित है। पङ्गस तथा माञ्चाके मध्यवर्त्ती पाटनीद्वीपके समीप १७६६ ई०में फालमाउथ (Fal mouth) जहाज डूब गया था।

मालटा (अं० स्त्री०) एक प्रकारकी लाल रंगकी नारंगी। यह देखनेमें सुन्दर और खानेमें बहुत स्वादिष्ट होती है। गुजराँवाला और लखनऊमें यह बहुतायतसे होती है।

मालतिका (सं० स्त्री०) स्कन्दानुचर मातृभेद, कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

मालती (सं० स्त्री०) मलते शोभां धारयतीति मल (भृदृशियजीत्यादि। उण् ३।११०) इत्यत्र बाहुलकात् मलतेरलच् गौरादिनिपातनादुपधाया दीर्घत्वं, इति उज्ज्वलदत्तोक्तेः अतच्, उपधाया दीर्घत्वं ङीष् च वा मां लक्ष्मीं लातीति मालो विष्णुः तं अततीति अच्। अधिकतासे होती है। वर्षाऋतुके प्रारम्भमें इसमें फूलोंके घौद लगते हैं। फूल सफेद होता है जिसमें पंखड़ियाँ होती है। पंखड़ियोंके नीचे दो अंगुलका लम्बा डंठल होता है। जब फूल झड़ जाते हैं, तब वृक्षके नीचे फूलोंका बिछौना-सा बिछ जाता है। इस लताके फूलने पर भौंरे और मधुमक्खियाँ प्रातःकाल उस पर चारों ओर गुंजारती फिरती हैं।

अति प्राचीनकालमें भी जाति पुष्पसे गन्धतैल और पुष्पसारादि तैयार होता था। जातिकुसुम-मिश्रित तेल मस्तिष्कको ठंढा रखता है, इसीसे विलासी भारतवासी आदरपूर्वक इसका व्यवहार करते हैं। यूरोपमें भी जातिपुष्पका बहुत आदर है। स्पेनदेशमें इसकी बहुतायतसे खेती होती है। एक बीघा जमीनमें ८०से १०० मन फूल लगता है और १५० रु० तक लाभ हो सकता है।

पुष्पसारको ग्रहण करनेमें आधी खिली हुई कलियोंको चर्बीके ऊपर रख कर दो तीन दिनके अन्तर पर फूल झाड़ना होता है। इस प्रकार वह चर्बी पुष्पकी सुगंधको चूस लेती है। पीछे उसे धीमी आंचमें गलाते हैं। तेल निकालनेमें एक सूती कपड़े को जैतूनके तेलसे भिगो कर जमीन पर फैला देना होता है। एक सेर जैतुनके तेलमें पाव भर सुरासार मिला देना चाहिये। उसके ऊपर ताजे फूल बिछा देते हैं। अनन्तर ग्रीष्मकालकी कड़ी धूपमें १५ दिन तक सुखानेसे ही तेल तैयार होता है। ऊपरका अंश तेल रूपमें और पात्रके नीचे जो घनी तह जम जाती है वह 'पमेटम' वा केशतैलरूपमें व्यवहृत होता है। सुसभ्य यूरोपवासियोंके पक्षमें जातिकुसुमवासित रुमाल सभ्यताका चूड़ान्त निदर्शन है।

मालतीपुष्प अनेक ओषधोंमें व्यवहृत होता है। हिन्दू और मुसलमान लेखकगण भैषज्यतत्त्वमें मुक्त कण्ठसे इसका उल्लेख कर गये हैं। शरीरके किसी स्थानमें इस तेलका प्रलेप देनेसे वह स्थान बहुत ठंढा हो जाता है। मुखमें यदि किसी प्रकारका फोड़ा हो गया हो, तो इसके पत्तेको घीमें भून कर चबानेसे वह अच्छा हो जाता है। जाड़ेके समय इस तेलको मुखमें लगानेसे मुख कभी भी नहीं फटता। वैद्यकमें इसे कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, क्रिमि और कुष्ठनाशक माना है।

पद्मपुराणके उत्तरखण्डमें लिखा है,—गौरी, लक्ष्मी और स्वधा ये तीन देवी धात्री, मालती और तुलसीवृक्षरूपमें उत्पन्न हुई हैं। मा अर्थात् लक्ष्मीसे उत्पन्न होनेके कारण इसका नाम मालती हुआ है।

"क्षिप्रेभ्यस्तत्र बीजभ्यो वनस्पत्यस्त्रयोऽभवन्।
धात्री च मालती चैव तुलसी च नृपोत्तम्॥
धात्र्युद्भवा स्मृता धात्री मा-भवा मालती स्मृता।
गौरीभवा तु तुलसीरजःसत्त्वतमोगुणाः॥"

(पद्मपुराण उत्तरख० १४९ अ०)

यह लता उद्यानोंमें लगाई जाती है; पर इसके फैलनेके लिये बड़े वृक्ष वा मण्डप आदिकी आवश्यकता होती है। यह कवियोंकी बड़ी पुरानी परिचित पुष्पलता है। कालिदाससे ले कर आज तकके प्रायः सभी कवियोंने अपनी कवितामें इसका वर्णन किया है।

एक और प्रकारकी मालती है जिसे पीतमालती (Jasminum humile) कहते हैं। संस्कृत पर्याय—स्वर्णयूथिका, हेमपुष्पिका। इसकी लता हिमालयप्रदेशमें २००० से ५००० फुटकी ऊंचाई पर काश्मीरसे नेपाल तक दिखाई देती है। भारतवर्षके प्रायः सभी स्थानोंमें तथा सिंहल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुष्पोद्यानमें यह फूल उत्पन्न होता है। हिमालय-सन्निहित कुमायूं प्रदेशमें इसके मूलसे पीला रंग तैयार किया जाता है।

अन्यान्य सुगन्धित फूलोंकी तरह इसका पुष्प तेलमें व्यवहार होता है। इसकी जड़के रससे दद्रु आदि चर्म-रोग सहजमें दूर होते हैं। भगन्दर आदि क्षतरोगोंमें इसके छिलकेका रस बहुत फायदेमंद हैं।

२ युवती। ३ बारह अक्षरोंकी एक वर्णिक वृत्तिका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें दो नगण, दो जगण और अन्तमें रगण होता है। ४ छः अक्षरोंकी एक वर्णवृत्तिका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें दो जगण होता है। ५ सवैयाके मत्तगायद नामक भेदका दूसरा नाम। ६ रात्रि, रात। ७ ज्योत्स्ना, चांदनी। ८ पाठा, पाढ़ा। ९ जायफलका पेड़, जाती।

मालतीक्षारक (सं० पु०) टङ्कण, सोहागा।

मालतीजात (सं० पु०) मालत्यां मालतीनदीतीरे जातः। टङ्कणक्षार, सोहागा।

मालतीटोडी (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

मालतीतीरज (सं० पु०) मालती तदाख्या नदी, तस्यास्तीरे जायते इति जन-ड। टङ्कण, सोहागा।

मालतीतीरसम्भव (सं० क्ली०) मालत्यास्तीरे सम्भवोऽस्य। श्वेत टङ्कण, सफेद सोहागा।

मालतीपत्रिका (सं० क्ली०) मालत्याः पत्रीव, मालतीपत्र-प्रतिकृतौ कन्, टाप् अत इत्वं। जातीपत्री, जावित्री।

मालतीपुष्प (सं० क्ली०) मालत्याः पुष्पं। मालतीपुष्प।

मालतीफल (सं० क्ली०) मालत्याः फलं। जातीफल, जायफल।

मालतीमाला (सं० स्त्री०) मालतीनां मालती-पुष्पानां माला ६-तत्। मालतीपुष्पकी माला।

मालद (सं० पु०) वाल्मीकीय रामायणके अनुसार एक प्रदेशका नाम। इसे ताड़काने उजाड़ दिया था। २ मार्कण्डेयपुराणके अन्तर्गत एक अनार्य जातिका नाम।

मालदह—बंगाल गवर्नरके शासनाधीन एक जिला। राजसाही और भागलपुरके कुछ अंशोंको ले कर सन् १८७६ ई०में यह जिला संगठित हुआ है। यह अक्षा० २४° २६′ ५०″ से २५° ३२′ ३०″ उ० तथा देशा० ८७° ४८′ से ८८° ३३′ ३०″ पूरबके मध्य अवस्थित है। इसके दक्षिण पश्चिमकी ओर गंगा नदी बहती हैं। भूपरिमाण प्रायः १८६१ वर्गमील है। इसका प्रधान शहर अंगरेज-बाजार महानन्दा नदीके दक्षिण तीर पर बसा हुआ है।

महानन्दा नदी इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिणकी ओर बहती हुई समूचे प्रदेशको दो भागोंमें विभक्त करती है। इसका पश्चिम भाग पंक और मिट्टीसे भरी हुई नीची जमीन है और अत्यन्त उपजाऊ है। इसका पूर्व भाग प्राचीन गौड़ नगरके खंडहरोंको चारों ओरसे घेरे हुए हैं। जहां पर यह नगर था वहां अब घने जंगल भरे पड़े हैं। पूर्वी हिस्सा कुछ ऊँचा है और बरेन्द्र कहलाता है। यह भाग महानन्दाके पूरबी किनारे है। इसके बीच टाङ्गन और पुनर्भवा नदी अनेक शाखा प्रशाखाओंमें विभक्त हो बहती हैं। यहांकी जमीन कड़ी तथा लाल रंगकी है। यह स्थान कटहल नामक स्थानीय कटीले वृक्षोंसे भरा है। यहां आमन धान खूब होता है। जाड़ेके दिनोंमें भिन्न भिन्न स्थानसे मजदूर लोग यहां धान काटने आते हैं।

महानन्दाके किनारेका भूभाग अनेक प्रकारके शस्योंसे सुशोभित है। दोनों किनारों पर बड़े बड़े आमके बगीचे तथा इमली वृक्षोंके कतार दीख पड़ते हैं। उत्तर-पश्चिमसे दक्षिण तक गंगा सीमाबंदी करती है।

गंगाकी धारा राजमहल पहाड़की मिट्टीको मालदह बहा ले आती है और इसकी जमीन पर पंक जमा देती है। गंगाकी पुरानी धारा प्राचीन गौड़के पास बहती थी। नदीके पुराने गर्भको देखनेसे साफ मालूम होता है, कि गौड़ अत्यन्त सुरक्षित शहर था। महानन्दाकी प्रधान शाखा कालिन्दी वाणिज्य-प्रधान हियातपुर नामक स्थानके पास गंगासे मिली है। वर्षाकालमें टांगना और पुनर्भवानदी हो कर दिनाजपुर आदि स्थानोंसे नाना प्रकारके वाणिज्य द्रव्योंसे लदी हुई नावें मालदह में आ ठहरती हैं।

गौड़ तथा पौण्ड्रवर्द्धन इन दो प्राचीन राजधानीके खंडहरों पर ही मालदह बसा हुआ है। गंगाके किनारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उक्त राजधानीके खंडहर स्पष्टरूपसे देखनेमें आते हैं। सैकड़ों वर्ष तक गौड़ और पौण्ड्रवर्द्धनमें हिन्दू तथा मुसलमानोंकी राजधानी थी। महानन्दा और गंगाका मध्यवर्त्ती भूभाग प्रायः २० वर्गमील है।

गौड़ और पौण्ड्र देखो।

मुसलमान शासनके बहुत पहलेसे गौड़ बङ्गालकी राजधानी था। जिस वर्ष (अर्थात् १७७५ ईस्वीसनमें) अकबरने पठानोंको हराया था उसी वर्ष महामारीके प्रकोपसे गौड़ नगर जनशून्य हो गया। उस समयसे बंगालके मुसलमान शासनकर्त्ता राजमहलमें राजधानी उठा ले गये। पण्डुआ वा पेंड़ा गौड़से २० मील उत्तरपूर्व अवस्थित है। अफगान राजाओंने वहां १४वीं शताब्दीमें राजधानी बसाई। इसका भग्नावशेष घने जङ्गलसे घिरा होनेके कारण अब तक भी वह ज्योंका त्यों मौजूद है। पण्डुआकी अदीना मसजिद भारतमें पठान-स्थापत्य-शिल्पका चरमोत्कर्ष है। पठानोंकी बनाई इमारतोंमें जो मरमर पत्थर हैं वे हिन्दुओंके भग्न मन्दिरसे लिये गये हैं। किन्तु गौड़के भग्नावशेषमें बेशी ईंट ही दिखाई पड़ती है। मालदह जिलेके पश्चिम तांड़ा नगरीका खण्डहर है इसकी पूर्व अवस्थिति गङ्गाके गतिपरिवर्त्तनसे नष्ट हो गई है। गौड़ नगर शून्य होनेसे सौ वर्ष तक बङ्गालकी राजधानी तांड़ा हीमें थी।

१६८६ ईस्वीसनसे मालदहके साथ इष्ट इंडिया कम्पनी (प्राच्य वणिकसमिति) का संस्रव हुआ है। इस समय अङ्गरेजोंने वहां रेशमकी कोठी खोली। १७७० ई०सनमें मालदहका अङ्गरेज-बाजार प्रधान वाणिज्यका केन्द्र समझा गया। उसके बादकी प्रणालीसे बनी हुई अङ्गरेजोंकी कोठी आज भी मौजूद है। १८१३ ई०सनसे वर्त्तमान मालदह जिलेकी सृष्टि हुई है। १८३२ ई०सनमें यहां राजकोष स्थापित हुआ। ईस्वीसन १८५९से यहां मजिष्ट्रेट कलक्टर नियुक्त हुए।

इस जिलेकी जनसंख्या ९ लाखके करीब है। यहां बङ्गाल और बिहारके असभ्य आदिम अधिवासी तथा हिमालय और छोटानागपुरके पहाड़ी लोग भी अधिक संख्यामें देखे जाते हैं। मुसलमानोंकी संख्या बहुत थोड़ी है। यहांकी प्रधान उपज धान है। गेहूं, चने और जुन्हरीकी भी फसल लगती है। यहां पहले नील बहुत उपजाई जाती थी, अभी भी गङ्गाके किनारे पर उपजाई जाती है। यहांसे रेशमी सूते, धान, चावल, चने जई, आम और पटसनकी रफ्तनी तथा नारियल, सुपारी, घी, गुड़, ताँबे, पीतल आदिकी आमदनी होती है।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछा पड़ा हुआ है। सैकड़े पीछे चार मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर ५०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा अस्पताल भी हैं।

२ उक्त जिलेका एक पुराना विध्वस्त नगर। यह अक्षा० २५´ २´´ उ० तथा देशा० ८८´ ८´´ पू०के मध्य कालिन्द्री और महानन्दा नदीके सङ्गमस्थल पर अवस्थित है। भूपरिमाण हजारके करीब है।

मालदह नगरके नामानुसार मालदह जिलेका नामकरण हुआ है। अभी सदर स्टेशन अंगरेज-बाजार नगरको मालदह कहते हैं। किन्तु असल मालदहनगर यहांसे तीन कोस उत्तर महानन्दाके पूर्वी किनारे अवस्थित है। अभी असल मालदहको पुराना मालदह कहते हैं। पुराने मालदहके अन्तर्गत एक स्थानका नाम मालदह है। वहां बहुत-सी कब्र देखी जाती हैं। उस छोटे स्थानका नाम मालदह क्यों पड़ा, उसका संतोषजनक कारण आज तक कोई नहीं बतला सका है। बहुतोंका कहना है, कि यहां मालदपीरकी कब्र है। उसी पीरके नामानुसार मालदह नाम हुआ है सो भी नहीं कह सकते। मालजातिसे मालदहका नाम हुआ है ऐसा भी बहुतोंका अनुमान है। वाणिज्यके लिये इस नगरकी बहुत उन्नति हुई थी। किस समय मालदह नगर बसाया गया उसका कोई प्रमाण आज तक नहीं मिला है। सम्राट् फिरोज तुगलक इस नगरके जिस अंशमें छावनी डाल कर पाण्डुआ पर चढ़ाई करनेका उद्योग कर रहा था, उसका नाम पिरोजपुर है। कोई कोई कहते हैं, कि पाण्डुआका खाद्य द्रव्य संग्रह करनेके लिये जो बन्दर खोला गया था वही मालदह है। किन्तु यह कहां तक सत्य है, कह नहीं सकते। पीरगञ्ज पांडुआके समीप है और महानन्दाके किनारे बसा हुआ है। पीरगञ्जके समीप गङ्गाकी एक शाखा महानन्दामें आ कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गिरती थी। गौड़के उजड़ जाने पर वहांके बहुतसे लोग मालदहमें आ कर बस गये। इस नगरमें पहले मुसलमानोंकी ही प्रधानता थी। पीछे मुसलमानोंकी संख्या क्यों घट गई और हिन्दुओंकी बढ़ गई, वह ठीक ठीक मालूम नहीं। आज भी घर बनाते समय कब्र दिखाई देती है। पुराने मालदहकी क्रमशः अवनति होती जा रही है, जनसंख्या घट गई है, वाणिज्यकी श्री वृद्धि नहीं है।

नदीके उत्तरी किनारेसे पाण्डुआका उपनगर आरंभ हुआ है। अभी मूल पाण्डुआ नगर ही जंगलोंसे ढका हुआ है। उपनगरोंमें अभी एक भी दिखाई नहीं देता। किन्तु यहां पहले बहुतसे लोगोंका वास था, इसका अनुमान यहांकी बहुसंख्यक पुष्करिणी और इधर उधर पड़ी ईंटोंकी ढेरसे किया जाता है। यहां मुसलमानोंके आगमनके पहले बहुतसे हिन्दू राजा राज्य कर गये हैं। बीच बीचमें यहां देवनागर अक्षरमें चिह्नित मुद्रामें पाई जाती है। संथाललोग जब पहले पहल यहांके जंगलको परिष्कार करते थे, तब इस तरहकी बहुत सी मुद्राएं पाई जाती थीं। पाण्डुआके निकट राइहोराणी नामक एक देवीका स्थान है जो अभी हिन्दूदेवी मानी जाती हैं।

पहले यह नगर नाना शौधमालासे विभूषित था। अभी वह भग्नस्तूपमें परिणत हो कर अतीत गौरवका परिचय दे रहा है। पुरानी मस्जिदमें जुम्माकी मसजिद आज भी विद्यमान है। १००४ हिजरीमें अकबर शाहके समय उक्त मसजिद बनाई गई थी। जुम्मा मसजिद बहुत प्राचीन नहीं होने पर भी प्राचीन उपकरणोंसे बनी हुई है। हिन्दूराजोंके बने मन्दिरका खोदित प्रस्तर इसमें दिये गये हैं।

मालदही (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी नाव। इसमें माझी छप्परके नीचे बैठ कर खेते हैं। २ एक प्रकारका रेशमी डोरिया कपड़ा। यह कपड़ा पहले मालदहमें बनता था और इसके लहंगे बनाये जाते थे।

मालदार (फा० पु०) धनवान्, धनी।

मालदेव—जोधपुरके एक प्रसिद्ध राजा। मारवाड़ देखो। ये राठोर-वंशके उज्ज्वल सूर्य स्वरूप थे। १५३२ ई०में इन्होंने राठोर सिंहासनको सुशोभित किया। इनके जैसे पराक्रान्त राजा मारवाड़में और कोई भी नहीं हुए थे। संग्राम सिंहके मरने पर मारवाड़में जो शोक-रजनीका आविर्भाव हुआ था, मालदेवके अप्रतिहत प्रभावसे राजस्थानका सौभाग्याकाश पुनः प्रभात-सूर्यकी रुण किरणसे रञ्जित हो उठा। मुसलमान ऐतिहासिक फेरिस्ताने इन्हें राजपूतानेमें सबसे बढ़ कर पराक्रमी राजा बतलाया है।

सिंहासन पर बैठते ही मालदेवने लोदियोंके अधिकृत नगर और अजमीढ़का पुनरुद्धार किया। १५४३ ई०में ये सिन्धियोंसे झालोर, शिवोना तथा भद्राजुनको अपने अधिकारमें लाये। इस प्रकार धीरे धीरे ४० प्रदेशोंको अपने बाहुबलसे जीत कर इन्होंने मारवाड़राज्यकी सीमाको बहुत कुछ बढ़ा दिया। इन्होंने नाना प्रकारके दुर्ग और अट्टालिका बना कर राजधानीको अलंकृत किया था। इन्होंने जोधपुरके चारों ओर दुर्भेद्य उच्च प्राचीर, प्रायः तीन लाख रुपया खर्च करके मैरताका मालकोट दुर्ग, भट्टिजातिको परास्त कर पोकर्णमें सुदृढ़ दुर्ग तथा भीम लोह पर्वत पर दुर्ग बनवाया। फलतः इनके शासनकालमें जोधपुर उन्नतिकी चरमसीमा पर पहुंच गया था। शम्बर झीलके लवणकी आयसे इनका खजाना हमेशा भरा रहता था।

१५४२ ई० तक राज्यसीमाको बढ़ा कर मालदेव राज्यकी रक्षामें लग गये। इस समय चारों ओर छोटे छोटे राजपूत-दलपति स्वाधीन होनेकी चेष्टा कर रहे थे। मालदेवने बड़े कौशलसे उन्हें प्राप्य अधिकार दे कर शान्त किया था।

उस समय हुमायूं दिल्लीके बादशाह थे। किन्तु थोड़े ही दिनोंके अन्दर प्रादेशिक शासनकर्त्ता सेरशाहने हुमायूंको भगा कर दिल्लीका सिंहासन अपनाया। तब राज्यच्युत-हुमायूँने मालदेवसे सहायता मांगी। किन्तु मालदेवने विश्वासघातकता द्वारा अपने नामको कलङ्ककालिमासे कलुषित कर दिया। वियानाके प्रसिद्ध युद्धमें इनके बड़े लड़के रायमल मारे गये। किन्तु उस समय मालदेवने ऐसा स्वप्नमें भी नहीं सोचा था, कि हुमायूंके भावी वंशधर अकबर भारतके राजराज्येश्वर होंगे। हुमायूँके भागते समय मरुभूमि-मध्यस्थ अमरकोटनगरमें अकबरका जन्म हुआ। मालदेवने शरणागत अतिथिके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रति जो सद्व्यहार नहीं किया था, इसके लिये उन्हें भविष्यमें बहुत अनुताप करना पड़ा था। अकबर देखो। मालदेव शरणागत हुमायूँको सहायता नहीं करने पर भी सेरशाहकी दृष्टि पर चढ़ गये।

१५४४ ई०में सेरशाहने ८० हजार सेना ले कर मालदेवके विरुद्ध युद्धयात्रा कर दी। मालदेवने ५० हजार सेना ले कर उसका सामना किया। राजपूत सेनाओंकी सुशिक्षा और व्यूह निर्माणको देख कर युद्धविशारद सेरशाह दंग रह गया और मन ही मन पश्चात्ताप करने लगा। आखिर भागनेका भी कोई उपाय न देख छावनी डाल कर वहीं पर रहने लगा। इस प्रकार एक मास बीत गया, पर सेरशाहको राजपूत-सेना पर चढ़ाई करनेका साहस न हुआ। रणमें पीठ दिखाना अत्यन्त अपमानजनक समझ कर कूटबुद्धि सेरशाहने विश्वासघातकताका अवलम्बन किया। वह राजपूत सेनापतियोंमें अविश्वास पैदा करनेकी कोशिश करने लगा। किसी सेनापतिके साथ संधिका प्रस्ताव चल रहा है, इस आशय पर एक पत्र लिख कर उसने मालदेवके पास एक दूत भेजा। दूतके हाथ पत्र पा कर मालदेवको अपने सेनापतियों पर संदेह हो गया। इस संदेह पर उन्होंने उन लोगोंके प्रति बुरा व्यवहार आरम्भ कर दिया। इस पर प्रभुभक्त राजपूतसेनापतिगण बड़े मर्माहत हुए। एक सेनापति इस अमूलक संदेहको सह्य न कर १२ हजार सेनाके साथ प्रबल वेगसे सेरशाहकी सेनाके मध्य घुस गया। हजारों पठानसेनाको यमपुर भेज कर पीछे आप रणक्षेत्रमें खेत रहा। उसके विक्रमसे सेरशाहका व्यूह बिलकुल छिन्न भिन्न हो गया। मालदेवको बहुत देरीसे सेरशाहकी चातुरी समझमें आई। सेरशाहने बड़े कष्टसे उस विपद्से बच कर कहा था, 'मैं मरुभूमिमें उत्पन्न मुट्ठी भर भुट्टेके लिये भारत-साम्राज्यको चौपट करने उद्यत हुआ था।'

कुछ दिन बाद हुमायूंकी अदृष्ट लक्ष्मी प्रसन्न हुई। दिल्लीके राजप्रासाद पर मुगल-पताका उड़ने लगी। कुछ दिन बाद ही हुमायूंकी मृत्यु हुई। होनहार बालक अकबर चौदह वर्षकी उमरमें दिल्लीके राजसिंहासनपर बैठा।

मालूम होता है, कि अकबरशाहने मालदेवके दुर्व्यवहारसे अमरकोटमें आसन्नप्रसवा जननीका दुःख स्मरण कर ही सिंहासन पर बैठते ही १६६१ ई०में मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी थी। मालदेवका प्रियदुर्ग मैरता या मालकोट अकबरके हाथ लगा। नवबलदृप्त अकबरने मालदेवके सुरक्षित शैलदुर्ग जीत कर बीकानेरके राजा रायसिंहको दे दिये।

दूरदर्शी मालदेवने सौभाग्यलक्ष्मीको अकबरकी अनुरागिणी देख सम्राट्की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने चौथे लड़के चन्द्रसेनको कुछ भेंटके साथ अजमेर भेजा। उस समय अकबर अजमेरको जीत कर वहीं रहते थे। उन्होंने चन्द्रसेनके उद्धत व्यवहार पर असंतुष्ट हो बीकानेरके राजा रायसिंहको सनद दे कर फिरसे समस्त जोधपुरराज्य प्रदान किया।

कुछ दिन बाद ही शत्रुकी सेनाने जोधपुर पर धावा बोल दिया। मालदेवकी राजधानीमें घेरा डाला गया। वृद्ध वीर बड़े साहससे युद्ध करके भी परास्त हुए। पीछे उन्होंने वश्यता स्वीकार कर तीसरे लड़के उदयसिंहको उपढौकनके साथ सम्राट्के पास भेजा। अकबर उदयसिंहके नम्र व्यवहार पर बड़े सन्तुष्ट हुए और उन्हें जोधपुरका भावी राजा बनाया। इसके कुछ दिन बाद मालदेव १५८४ ई०में इस लोकसे चल बसे। मरते समय उन्हें बहुत पश्चात्ताप करना पड़ा था। विपुल पराक्रमसे उन्होंने जो विशाल राज्य संगठन किया था उसका अधिकांश अभी मुगलसाम्राज्यमें मिला लिया गया। किन्तु उनके जीते-जी किसी भी मुसलमानको ऐसा साहस न हुआ, कि वह राजपूत कुललनाका पाणिग्रहण कर सके। अगर वे कुछ दिन और जीवित रहते, तो उदीयमान चित्तोरराज प्रतापसिंहके साथ मिल कर राजपूत स्वाधीनताको स्थापन करनेमें समर्थ होते।

मालदेवके बारह पुत्रोंमेंसे उदयसिंह ही १५८४ ई०में पितृसिंहासन पर बैठे। उदयसिंहने अकबरके हाथ अपनी बहिन जोधबाईको समर्पण किया।

मालद्वीप (मलयद्वीप)—भारत-महासागरके अन्तर्गत सिंहलके समीप एक द्वीपपुञ्ज। यह अक्षा० ४२' से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

७° ६´ उ० तथा देशा० ७२° ३३´ से ले कर ७३° ४४´ पू० तक विस्तृत है। इसमें कुल मिला कर १९ द्वीप हैं। यह द्वीप-समूह ४६६ मील लम्बा और ६० मील चौड़ा है। द्वीपके बीचकी प्रणालीका जल बड़ा गहरा है, किन्तु समुद्रांशमें उतनी गहराई नहीं है। इसीसे पहाड़ी उपकूल भागमें समुद्रकी तरंगे बड़े जोरसे टक्कर लगाती हैं। प्रणाली हो कर अर्णवपोत आसानीसे द्वीप श्रेणीमें जा सकता है।

'मालद्वीप' नामकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें यूरोपीय पण्डित अनेक प्रकारके सिद्धान्त पर पहुंचे हैं। चार प्रधान द्वीपोंको ले कर मालद्वीप गठित हुआ है देख कर उन्होंने इसका नेलेद्वीप नाम रखा। मालबाकी भाषामें नेले शब्दका अर्थ चार है। मतान्तरसे दिवमहलसे मालद्वीप शब्द निकला है। महलका अर्थ राजप्रासाद है। किसी एक द्वीपमें सुलतानका महल था उसीसे द्वीपपुञ्जका नाम महलद्वीप पड़ा है। फिर किसीका यह भी कहना है, कि द्वीपश्रेणी मालाकी तरह अवस्थित है, इसीसे मालाद्वीप या मालद्वीप नाम हुआ है; किन्तु मलबार, मलय, मालद्वीप आदि शब्द मलय शब्दसे ही निकले हैं। ब्रह्माण्डपुराणमें मलयद्वीपका नाम मिलता है। उसमें इस द्वीपको अति विस्तृत बतलाया गया है।

भूतत्त्वविद् पण्डितोंमेंसे किसी किसीका कहना है, कि यह द्वीप प्रवालकीट-निर्मित है। फिर कोई कहते हैं, कि द्वीपपुञ्जके आस पासके स्थानोंमें अभी उतने प्रवालकीट नहीं देखे जाते। द्वीपकी ओर नजर दौड़ानेसे मालूम होता है, कि भारतके दक्षिण मलयसे ले कर लंका पर्यन्त एक प्रकाण्ड भूखण्ड था। बादमें भूपञ्जरकी चालना या पृथ्वीकी अभ्यन्तरस्थ अग्निकी शक्तिके उक्त भूखण्ड समुद्रगर्भमें धँस गया है। सिर्फ ऊँचा पर्वत इधर उधर द्वीपरूपमें विद्यमान है। वास्तवमें लंकासे ले कर मलय प्रायद्वीप तकके अधिवासी तथा उत्पन्न द्रव्यादिका जैसा सादृश्य देखा जाता है उससे उक्त सिद्धान्त असमीचीन-सा प्रतीत नहीं होता।

मालद्वीपकी भाषामें द्वीपका स्थानीय नाम आटोल है द्वीपपुञ्जोंमेंसे सिर्फ १६ प्रधान हैं तथा हरएकमें मनुष्य वास करते हैं।

१। हिवान्दु फोलो आटोल—यह १२ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा है। २४ द्वीपपुञ्जोंसे यह गठित है जिनमेंसे केवल सातमें मनुष्योंका वास है।

२। टिल्लाडु माटि आटोल—इसका परिमाण ३५ वर्ग-मील है। यह ३८ द्वीपपुञ्जोंसे गठित है। सभी आबादी है।

मलकम—यहां बहुतसे अर्णवपोत नष्ट भ्रष्ट हो गये हैं।

४ मिल्लाडुमडु—यह १०१ द्वीपपुञ्जोंसे बना हुआ है। उनमेंसे केवल २३में मनुष्य वास करते हैं।

५। फैड़िफोलो—१० द्वीपसे गठित है।

६। माह्पमाड़ो—यह अक्षा० ५°से ले कर ६०´ तक विस्तृत तथा ४ द्वीपपुञ्जोंसे संगठित है।

७। अरि आटोल—पूर्वकी ओर है और बहु संख्यक द्वीपोंसे गठित है।

८। माले आटोल—इसके निकट माले द्वीप या राज-द्वीप अवस्थित हैं। यहांकी जनसंख्या २००० है। अङ्गरेजोंके लिये यहांका जलवायु अस्वास्थ्यकर है।

९। खड़द्वीप या गार्ड।

१०। दक्षिण मालेद्वीप—यह २२ द्वीपोंसे गठित है। इनमें केवल ३ द्वीपोंमें लोगोंका वास है।

११। फाले डो आटोल—यह अक्षा० ३° १९´से ले कर ३° ४१´ तक विस्तृत है।

१२। मोलोक आटोल—यह पूर्व पश्चिममें १५ मील विस्तृत है।

१३। नीलाण्डु आटोल—यह अक्षा० २° ४०´से ले कर ३° २०´ तक विस्तृत तथा २० द्वीपोंसे बना हुआ है।

१४। कुम्लो मण्डु—तमाम मिट्टी पड़ी है, इसका दूसरा नाम सूयाद्वीप है।

१५। फुआ मोलकु—यह दक्षिण-पूर्वकी सीमा पर अवस्थित है। इसकी लम्बाई एक कोस है। यहांके अधिकांश अधिवासी तांती और मल्लाह हैं।

१६। आद्दु आटोल—मालद्वीपके दक्षिणमें अवस्थित है। यह विषुव रेखाके बहुत करीबमें है। प्रायः १७५ द्वीपोंमें मनुष्योंका वास है। कुल मिला कर अधिवासियोंकी संख्या प्रायः दो लाख है। स्थानीय लोगोंका विश्वास है, कि मालद्वीपमें दश हजार छोटे छोटे द्वीप हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इब्न बतुता नामक एक अरब देशीय यात्री १३४० ई०सन्में सबसे पहले मालद्वीपमें आया और वहांके वजीरकी कन्यासे विवाह कर लिया। बाद उसके १६०२ ई०में पिराड (Pyrard) नामक एक फरासी नाविक जहाज डूब जानेके कारण मलद्वीप पहुंचा। द्वीपवासियोंने उसे पांच वर्ष तक बन्दी कर रखा था।

उसके पहले १५वीं शताब्दीमें पुर्त्तगोज वणिकोंने मालद्वीपका आविष्कार किया। कुछ दिन हुए लेफ्टिनेण्ट क्रिष्टोफर (Lieutenant Christopher R. N.) जमीन नापनेके लिये मालद्वीप आये थे। उन्होंने एक वर्ष तक रह कर यहांका विवरण लिखा। उन्हींके विवरणसे यहांके सभी तत्वोंका पता लगा है।

बहुत प्राचीनकालसे मालद्वीप सिंहलराज्यके शासनाधीन था। ग्रीक, अरबीय और चीनदेशीय पर्यटकगण सभी मालद्वीपको सिंहलके शासनाधीन बतला गये हैं। १७वीं शताब्दीके प्रारम्भमें पिराडके समय यहां जो भाषा प्रचलित थी वही आज भी है। सिंहली भाषा ही यहांकी प्रचलित भाषा है। बौद्धधर्मके निदर्शन सर्वत्र देखे जाते हैं। इब्न-बतुताके वर्णनसे मालूम होता है, कि १३वीं सदीके शुरूमें द्वीपवासिगण मुसलमान-धर्ममें दीक्षित हुए थे।

१६वीं शताब्दीके आरम्भमें पुर्त्तगीजोंने सामान्यभावसे इस द्वीप पर आधिपत्य किया था।

अलेकजन्ड्रियावासी पापुस (Papp s) नामक प्रसिद्ध पर्यटकने ४थी शताब्दीमें सिंहलभ्रमणके समय लिखा है, कि १३७० द्वीप सिंहलराज्यके अन्तर्गत थे। ५वीं शताब्दीमें चीना यात्री फा-हियान भी सिंहलके चारों ओरके बहुतों द्वीपोंका उल्लेख कर गये हैं। उन्होंने कहा है, कि इन सभी द्वीपोंमें मुक्ता और हीरा बहुतायतसे पाया जाता है। टलेमी तथा कोसमस (Cosmos ने भी ६ठी शताब्दीमें इन सब द्वीपोंका उल्लेख किया है। सलिमन (Sulliman) ९वीं शताब्दीमें लिख गये हैं; कि यह सब द्वीप वहांकी एक सम्राज्ञीके शासनाधीन था। ११वीं शताब्दीमें आल वरुणी इन सब द्वीपोंका उल्लेख करते समय कौड़ीके व्यवसायके सम्बन्धमें बहुत-सी बातें लिख गये हैं।

मि० ग्रे-ने मालद्वीपवासियोंके आचार-व्यवहारकी पर्यालोचना कर लिखा है,—प्राचीन समयमें मालद्वीपवासी जो दानव-पूजक था उसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है। कई जगह बौद्धधर्मके भी निदर्शन देखे गये हैं। उन्होंने केवल चार सौ वर्ष तक मुसलमान-धर्म ग्रहण किया है। जिस मुसलमान प्रचारकने सबसे पहले यहां धर्म-प्रचार किया उसकी कब्र मालिद्वीपमें आज भी विद्यमान है। यहांके अधिवासी भक्तिके साथ इस स्थानको देखते हैं। मालद्वीपमें 'बुदु' शब्दको प्रतिमा और मन्दिरको 'बौदखाना' कहते हैं। शायद वह बौद्ध शब्दका अपभ्रंश होगा। इस विषयमें एक ऐसा प्रवाद है, कि एक समुद्रवासी दैत्य मालद्वीपवासिनी कुमारियोंके ऊपर घोर अत्याचार करता और उन्हें हर कर ले जाया करता था। माघ्रेविन अबुल बेराकात नामक एक मुसलमान-प्रचारकने कुरानकी जादूगरी-शक्तिसे उस दैत्यको मन्त्रमुग्ध कर मार भगाया।

मालद्वीपके रहनेवाले बहुत कुछ सत्यवादी हैं। वे भारतवर्षके बंगाल, चटगांव, मालवाके उपकूल तथा सिंहलके साथ वाणिज्य करते हैं। वे नावें चलानेमें बड़े निपुण होते हैं। मालद्वीपमें उक्त विद्या सीखनेके बहुतसे विद्यालय हैं। यहांके लोग अति निरीह तथा शान्तस्वभावके हैं। सभ्यजगत्में जो दोष देखा जाता है वह यहां कुछ भी नहीं है। वे शराब नहीं पीते। उनका तामड़ावर्ण तथा कद छोटा होता हैं। कहीं कहीं हब्शी जातिका संस्रवदोष दिखाई देता है। स्त्रियां सुश्री नहीं, पर बड़ी डरपोक होती हैं।

बहुतसे अर्णवपोत यहां डूब गये हैं जिनमेंसे कुछका नाम तथा डूबनेका समय नीचे दिया जाता है। १८७७ ई०में लिफे (Leffy), १८७९ ई० सन्में सिगल (Seagall) और १८८० ई०सन्में कनसेट (Consett) इत्यादि। अभी अनेक कारणोंसे वर्त्तमान सुलतानकी ऐसी धारणा हो गई है, कि डूबे हुए जहाजों पर जीवित नाविकोंका स्वत्व नहीं था। इसीसे सुलतानकी अनुमतिके बिना किसीने जहाज निकालनेमें सहायता नहीं की थी।

यहांके उत्पन्न द्रव्योंमें नारियल प्रधान है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अलावा इसके ६०।७० हाथ लम्बे ताड़के पेड़ भी बहुतायतसे होते हैं। यहां थोड़ा बहुत फल भी मिलता है। मकई और रुई कहीं कहीं उत्पन्न होती है। यहां बहुतसे कौड़ीके स्तूप भी नजर आते हैं। कौड़ी ही द्वीपवासियोंकी प्रचलित मुद्रा है। यहांका प्रधान खाद्य और वाणिज्य-द्रव्य मछली ही है। सभी द्वीपोंका उत्पन्न द्रव्य मालिद्वीपमें और मालिद्वीपसे भारतवर्षके नाना स्थानोंमें भेजा जाता है। लोना और सूखी मछली, नारियल, नारियलका तेल, विचित्र कारुकार्ययुक्त चटाई, प्रवाल, कछुएकी हड्डी और कौड़ी यहांका प्रधान वाणिज्य है। वैदेशिक वणिक् प्रतिवर्ष यहांसे धान, रेशम तम्बाकू, नमक, चावल, कपड़ा, घी, चीनके बरतन, लोहे और पीतलके बरतन ले जाते हैं।

द्वीपपुञ्ज एक सुलतान द्वारा शासित होता है। उनके मरने पर उनके पुत्रपौत्रादि उत्तराधिकारी होते हैं। सुलतानके अधीन छः मन्त्री रहते हैं। प्रधान मन्त्रीको दुरिमिन्द कहते हैं। वह मन्त्री और सेनापति दोनों ही होता है। वैदेशिक वणिक् राजधानीको छोड़ अन्यत्र द्रव्यादि खरीद नहीं सकते। भारतवर्षकी प्रचलित मुद्रा यहां व्यवहृत होती है। यहां तक, कि एक रुपये में बारह हजार कौड़ी मिलती है।

ईस्वीसन् १७६६से अंगरेजोंने सिंहलको अपने कब्जेमें कर लिया है। उस समयसे मालद्वीपके सुलतान इच्छापूर्वक प्रति वर्ष अङ्गरेजोंको कर दिया करते हैं। मालद्वीपकी प्रचलित पद्धतिके अनुसार राजदूतको सुलतानके दिये पत्रको रौप्यनिर्मित पत्रमें रख कर शिर पर ढोना होता है। पत्रका आवरण मखमल और सुरञ्जित रेशमका होता है।

मालद्वीपमें तीन प्रकारकी वर्णमाला देखनेमें आती है। यथा—ड्यहीं हाफुरा, अरबी और गाविलि-टाना। शेषोक्त यानी गाविलि-टाना ही मालद्वीपवासियोंकी मातृभाषा है। प्राचीन समाधिक्षेत्रमें ड्यहीं हाफुरा भाषा देखी जाती है। शायद आदिम अधिवासी इसी भाषाका व्यवहार करते होंगे। कहीं कहीं दक्षिण-सीमांत द्वीपमें उक्त अक्षरमें लिखी पुस्तक मिलती है। विद्यालयमें कुरान पढ़ाया जाता है।

यहांकी आवहवा उतनी अच्छी नहीं है। बुरिवेरी नामक पेटकी बीमारी यहांके अधिकांश लोगोंको सताती है। ज्वर होनेसे अकसर नहीं बचता है। ताप परिमाण ७५° से ७५° डिगरी तक चढ़ता है।

मालन (हिं० स्त्री०) माली देखो।

मालपहाड़िया—सन्थाल-परगनेके रामगढ़ पर्वतवासी एक जातिविशेष। जातितत्त्ववेत्ता इन लोगोंको द्राविड़ जातिका समझते हैं। यह जाति आज तक शिकारसे ही जीवन-निर्वाह करती है। अत्यन्त प्राचीनकालसे ही इस जातिके लोग 'झुम' प्रथाके अनुसार खेती करते है। उत्तरके मालपहाड़िया लोग दक्षिणवालोंको 'मालेर' कहते और उन्हें सजाति समझते हैं। लेकिन दक्षिणके मालपहाड़ी इस बातको स्वीकार नहीं करते। ये लोग उत्तरवालोंको 'चेट' तथा अपनेको 'माल' या 'माड़' कहते हैं। माल लोगोंके तीन विभाग हैं—कुमारपलि, दांगरपलि और मारपलि। ये लोग उत्तरवासी लोगोंको 'सुमरपलि' कहते हैं।

यह सब देख कर अनुमान किया जाता है, कि ये सब एक ही जातिसे उत्पन्न हुए हैं। पहले सम्प्रदायके लोगोंकी चाल-ढाल प्रायः एक-सी है। ये लोग टूटी फूटी बंगला बोलते हैं। इन लोगोंमें जो राजा होता है, उसकी उपाधि "सिंह" होती है। मध्यम श्रेणीके धनी लोग गृही कहलाते हैं। ये लोग अपनी जातिके गरीब लोगोंको रु० पैसे कर्ज दे कर सहायता करते हैं। कोई भी किसी प्रकारकी सरकारी नौकरी नहीं करता। तीसरे सम्प्रदायके लोगोंको गांवके मांझी या मोड़ल कहते हैं। चौथे सम्प्रदायके लोग अर्थात् आहृति लोग केवल शिकार कर अपना पेट भरते हैं।

कोई कोई कहते हैं, कि मालपहाड़ी लोग आदिम पहाड़ी जातिसे बिलकुल पृथक् हैं। क्योंकि, ये लोग हिन्दू जातिके संसर्गमें आ बहुत कुछ हिन्दूभावोंको अपना चुके हैं। बीचा बीचमें पहाड़ी जातिके साथ इन लोगोंका विवाद चला करता है।

मालपहाड़िया फिर दो शाखाओंमें विभक्त है, मालपहाड़िया और कुमार या कुमरभागिया। पूर्वकथित कुमरपलि जाति इस कुमरभागिया जातिसे भिन्न नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इन लोगोंकी एक किंवदन्ती है, कि किसी गायसे इन लोगोंकी उत्पत्ति हुई थी। मानभूमके पंचकोटमें भी इस तरहका प्रवाद प्रचलित है। बुकानन साहबने अनुमान किया है, कि पहले समयमें किसी राजाने शायद एक मालपड़िहाको दीवान या फौजदार बनाया होगा और उसीसे पञ्चकोटवंशकी सृष्टि हुई होगी। किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

इन लोगोंमें बाल और यौवन दोनों ही तरहके विवाह प्रचलित हैं। प्रायः १० या ११ वर्षके पहले लड़कीका विवाह नहीं होता। कई जगह लड़की सयानी होनेके बाद भी ब्याही जाती है। ऐसी हालतमें यदि वे पुरुषके प्रेममें फंस जांय तो उतना दोष नहीं समझा जाता। इसका कारण यह है कि अगर किसी लड़कीके विवाहके पहले गर्भ रह जाय, तो जिसके द्वारा गर्भ हो गया है उसीको उस लड़कीके साथ विवाह करना पड़ता है। लड़कीका बाप अपनी लड़कीका दहेज लेता है। घटक लोग सम्बन्ध ठीक कर देते हैं। ५) से २५) रू० तकका दहेज होता है। लड़कीके बापको जिस दिन सब रु० चुका देना होता है उस दिन लड़कीके लिये कुछ मदिरा और एक खंड साड़ी देनी पड़ती है। लेकिन जब तक विवाह नहीं होता तब तक रुपये लड़कीके मामाके पास अमामत रहते हैं। विवाहमें मामाकी प्रधानता देख कर बहुतेरे अनुमान करते हैं, कि पहले माताके ही सम्बन्धसे सभी परिचित होता था। लड़कीके दहेज देनेके बाद घटक फिरसे लड़कीके घर भेजा जाता है। उस समय घटकके हाथ पर तीरके आघातका चिह्न रहता है और उसके चारों ओर पीला सूता लपेट दिया जाता है। विवाहके जितने दिन शेष रहते हैं उतनी ही गांठ उसमें दी जाती है। लड़की-पक्षके लोग प्रतिदिन एक गांठ खोलते हैं। विवाहके एक दिन पहले वर लड़कीके घरके पास आ ठहरता है। लड़कीके बापको विवाहके दिन सबेरे एक बड़ा भोज देना पड़ता है। शेमलकी डालसे घेर कर वरका आसन ठीक किया जाता है। उस स्थानमें वर पूरब मुंह बैठता है और लड़कीके साथ गांठ-जुड़ाव दिया जाता है। लड़की भी पीले रंगकी साड़ी पहने रहती है। लड़कीकी सखियां वरको सजती हैं और उसके हाथमें सिन्दूर देती हैं वर लड़कीके मांगमें सिन्दूर लेप देता है। लड़कीको अंगुलीसे वरके कपाल पर सिन्दूरके सात टीके लगा दिये जाते हैं। उस समय बड़े आनन्दके साथ बाजे बजते हैं और तरह तरहके उत्सव होते हैं। नर्त्तकियां नाचती हैं और गायिका उच्च स्वरसे गाती हैं। सन्ध्या समय सभी वरके घर जाती हैं और समूची रात नाच गानमें बिताती हैं। इन लोगोंमें बहु-विवाहकी प्रथा है। स्त्रियां साधारणतः बांझ होने पर ही दूसरा विवाह कर सकती हैं। स्त्रीकी यदि अनेक बहनें हों तो उससे बड़ी बहनोंको छोड़ सभीसे उसका स्वामी विवाह कर सकता है। विधवा-विवाहकी प्रथा इन लोगोंमें जारी है। लेकिन देवर रहने पर और किसी से विवाह नहीं हो सकता, विधवाको उसीसे विवाह करना पड़ता है। अगर देवर अपनी भौजाईसे विवाह करना न चाहे, तो विधवा अपने इच्छानुसार विवाह कर सकती है। केवल नये स्वामीको २) रु० देने पड़ते हैं। विधवा-विवाहमें सिन्दूर आदिसे काम नहीं लिया जाता, केवल वर नया कपड़ा पहना कर विधवाको अपने घर ले जाता है। स्त्री अगर बदचलन निकले तो गांवकी पञ्चायतसे राय ले कर स्वामी उसे त्याग सकता है। अथवा स्त्री-पुरुष दोनोंकी इच्छा हो तो वे पंचोंके सामने सखुएके पत्तेको फाड़ कर विवाह सम्बन्ध तोड़ सकते हैं। अपने स्वामीके रहते स्त्री अगर दूसरेसे फंस जाय, तो उपपतिको उसके स्वामीका दिया दहेज देना पड़ता है।

इन लोगोंके देवताओंमें सूर्य ही प्रधान हैं। प्रातः और संध्याकाल ये सब सूर्यकी उपासना करते हैं। किसी एक रविवारको घरका मालिक विशेषरूपसे सूर्यकी पूजा करता है। इसके लिये उसे शुक्रवारको संयम करना पड़ता है और शनिश्चरको उपास रह कर केवल दूध और गुड़ खाना होता है। सूर्योदयसे पहले ही चावल सुपारी आदि पूजाकी सामग्री ले घरके सामने आंगनमें घरका मालिक खड़ा होता है और सूर्योदय होते ही उच्च स्वरसे मंत्र पढ़ने लगता है। ये लोग सूर्यको गोसांई कहते हैं। प्रार्थनाका तात्पर्य यह है कि सूर्य भावी विपदसे उन लोगोंकी रक्षा करें। ये लोग बकरे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की बलि देते हैं। वह मांसका प्रसाद घरवालोंको छोड़ दूसरे नहीं खा सकते।

सूर्यके बाद हो ये लोग धरती माईकी पूजा करते है। धरतीकी दासी 'गरोमा' देवीकी भी पूजा होती है। उसके बाद सिंहवाहिनीकी पूजा होती है। सिंहवाहिनी बाघ, साँप, बिच्छू आदि पर शासन करती हैं। पृथिवी माताकी पूजामें आषाढ़ और माघके महीनेमें बकरे, सूअर और पक्षीकी बलि दी जाती है।

हिन्दुओंकी दूर्गा-पूजाके समय ये लोग बकरे, भैंसे बलिदान दे कर सिंहवाहिनीकी पूजा करते हैं।

ये लोग नाचके बड़े प्रेमी होते हैं। एक अनोखी प्रथा इन लोगोंमें देखी जाती है। जिसके कल्याणके लिये नाच गान होता है उसे उत्सवकी पहली रातको पुआल पर सोना पड़ता है। पीछे नशेकी हालतमें नर्त्तक और नर्त्तकियां उच्च स्वरसे शब्द करती हुई उस सोते व्यक्तिके चारों ओर नाच गान करती हैं।

ऊपर कह गये देवताओंके अलावा ये अनेक दानवोंको भी पूजा करते हैं। उनमेंसे चोर-दानव और महादानव ही प्रधान हैं। अंडे चढ़ा कर महादानवकी पूजा होती है। हिन्दू देव-देवीके मध्य ये लोग काली और लक्ष्मीको पूजा देते हैं।

माली जातिकी तरह मृत पूर्व-पुरुषाओंकी पूजा भी इन लोगोंमें चलती है। ये लोग सखुएके पेड़में सिन्दूर लेप उसकी पूजा करते हैं। यही कारण है, कि ये सखुएके पेड़को नहीं काटते। मांझी या घरका मालिक ही पुरोहितका काम करता है। सभी ब्राह्मणके बड़े भक्त होते हैं।

ये लोग मुर्दे जलाते हैं। जलानेके बाद अस्थियोंको नदीके गहरे जलमें फेंक देते हैं।

अशौच पांच दिन रहता है। इस समय कोई नमक नहीं खा सकता। ६ठें दिन हजामत आदिके बाद जेठा लड़का अपने समाजको भोज देता है। अन्त्येष्टि-क्रियाके लिये राजाको यथोचित कर देना होता है। यह सब खर्च देनेके बाद भी अगर मृतकका धन कुछ बच रहे तो वह उसके लड़कोंमें बट जाता है। लड़कियोंको कुछ नहीं मिलता। गरीब लोग धनाभावके कारण मुर्दे गाड़ देते हैं और श्राद्धादि-क्रिया कुछ भी नहीं करते। लेकिन कुमारभाग प्रान्तके मालपहाड़ियोंने अपने हिन्दू पड़ोसीकी देखादेखी श्राद्धादि करना शुरू कर दिया है।

ये लोग 'झुम'-को खेती और शिकारको अपना पैतृक व्यवसाय समझते हैं। फसल जब अच्छी तरह नहीं लगती, तब ये नाना प्रकारके जंगली फल-मूलको खा कर जान बचाते हैं। आज कल ये लोग फल-मूलकी खेती करने भी लग गये हैं। ये लोग सूअर और मुर्गीका मांस खाते हैं, किन्तु गो-मांस, साँप और छछूंदरका मांस छूते तक भी नहीं।

मालपुआ (हिं० स्त्री०) मालपूआ देखो।

मालपुर—बम्बईप्रदेशके मध्य एक करद राज्य। राजधानीका नाम मालपुर है। यह अक्षा० २३° २१´ २०´´ उ० तथा देशा० ७३° २४´ ३०´´ पू० महीकांथा राज्यके दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। यह प्रदेश पर्वत और जंगलोंसे घिरा है। बाजड़ा और गेहूं यहांकी प्रधान उपज है। इसके सिवा यहां और भी कई तरहके अन्न उपजते हैं। वर्त्तमान राजाओंकी उत्पत्ति इदर-राजवंशसे है। किरातसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र विराजमल इदररावसे ७वीं पीढ़ीमें हैं। उन्होंने राज्यको खूब बढ़ाया था। उनके लड़के खानजिमाल नामक स्थानमें प्रतिष्ठित हुए। उनके पौत्र रणधीरसिंहजी मानसे मराना नामक स्थानमें जा कर बस गये। उसके बाद उनके प्रपौत्र रावल वागसिंहजी मालपुरमें अधिष्ठित हुए। उस समय मालपुर मालोकान्त नामक एक भील सरदारके अधीन था। मालपुरवासी एक ब्राह्मणके परमासुन्दरी कन्या थी। मालोकान्तके साथ उसका खूब प्रेम था। यह देख ब्राह्मणने गुस्सा कर रावलसिंहकी शरण ली। रावलने युद्धमें मालोकान्तको पराजित किया और मार भगाया। उसी समयसे रावलके वंशधर यहां राजत्व करते हैं। रावल दीपसिंहजी १८८१ ई०में विद्यमान थे। ये राठोरवंशीय राजपूत तथा किरातसिंहसे ३३ पीढ़ी नीचे थे। ये बृटिश सरकार, इदरके राव और बरधाके गायकवाड़को कर देते हैं।

मालपूआ (हिं० पु०) एक पकवानका नाम। इसका बनानेका तरीका इस तरह है। गेहूंके आटे वा सूजीको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शक्करके रसमें गीला घोलते हैं। फिर उसमें चिरौंजी पिस्ता आदि मिला कर घीमें आंच पर घीमें थोड़ा थोड़ा डाल कर सिझा कर छान लेते हैं। कभी कभी पानीकी जगह घोलते समय इस दूध वा दही भी मिलाते हैं।

मालपूवा (हिं० पु०) मालपूआ देखो।

मालवरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी ईख जो सूरतमें होती है।

मालभंडारी (हिं० पु०) जहाज परका वह कर्मचारी जिस के अधिकारमें लदे हुए माल रहते हैं।

मालभञ्जिका (सं० स्त्री०) मालं भञ्जते (संज्ञायां। पा ३।३।१०६) इति ण्वुल्। क्रीड़ाभेद, प्राचीनकालके एक प्रकारके खेलका नाम।

माल भारिन् (सं० त्रि०) मालां बिभर्त्ति-भृ-णिनि (इष्टकेषीका मालानां चिततूलभारिषु। पा ६।३।६५) इति पूर्व पदस्य ह्रस्वः। मालाधारी, माला पहरनेवाला।

मालभारी (सं० त्रि०) मालभारिन् देखो।

मालय (सं० पु०) मा शोभा तस्याः लयः आस्पदं। १ चन्दनवृक्ष। २ गरुड़के एक पुत्रका नाम। ३ व्यापारियोंका झुंड। ४ अभिसार-स्थानभेद, वह स्थान जहां प्रियासे नायक मिलता है।

"क्षेत्रं वाटी भग्नदेवालयो दूतीगृहं वनम्।
मालयञ्च श्मशानञ्च नद्यादीनां तटी तथा॥"

(साहित्यद० ३ परि०)

५ पद्मकाष्ठ। ६ श्रीखंडचन्दन। (त्रि०) ७ मलयसम्बन्धी, मलयका।

"तनुच्छटोत्तमालया तया भुवोत्तमालया।
अहारि शीतमालयानिलावधूतमालया॥" (नलोदय २।३७)

मालव (सं० पु०) मालः उन्नतक्षेत्र-मत्स्यत्र माल (केशादवोऽन्यतरस्यां। पा ५।२।१०६) इत्यत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते काशिकोक्तेः व प्रत्ययः। १ अवन्तिदेश।

"अङ्गा वङ्गा मद्गुरका अन्तर्गिरिबहिर्गिरी।
सुह्मोत्तराः प्रविजया मार्गवाङ्गेय मालवाः॥"

(मत्स्यपु० ११३।४४ अ०)

२ रागविशेष, छः प्रकारके रागोंमेंसे प्रथम राग। कोई कोई इसे भैरव राग भी कहते हैं।

"आदौ मालवरागेन्द्रस्ततो मल्लारसंज्ञितः।
श्रीरागस्तस्य पश्चाद्वै वसन्तस्तदनन्तरम्।
हिल्लोटश्चाथ कर्णाट एते रागाः प्रकीर्त्तिताः॥"

(सङ्गीतद०)

इस रागका स्वरग्राम—

सा ऋ ग म ० ध नि सा : :

मतान्तरसे—नि सा ऋ ग म प ध नि : :

मतान्तरसे—सा ऋ ग म प ध नि सा : :

(संगीतरत्नाकर)

संगीत दामोदरमें इसका रूप माला पहने, हरित वस्त्र धारी, कानोंमें कुंडल धारण किये, संगीतशालामें स्त्रियोंके साथ बैठा हुआ लिखा है। इसकी धनश्री, मालश्री, रामकीरी, सिंधुड़ा, आसावरी और भैरवी नामकी छः रागिनियां हैं। कोई कोई इसे षाड़व जातिका और कोई सम्पूर्ण जातिका राग मानते हैं। षाड़व माननेवाले इसमें मध्यम स्वर वर्जित मानते हैं। यह रातको गाया जाता है। ३ अश्वपति राजाके मालती गर्भजात पुत्रगण।

४ उपोदकी, एक प्रकारका साग। ५ मालवदेशवासी वा मालव देशमें उत्पन्न पुरुष। ६ सफेद लोध।

(त्रि०) मालवदेशसम्बन्धी, मालवेका।

मालव—भारतवर्षकी एक प्राचीन हिन्दू जाति। इसका अधिकार अवन्ती (पश्चिम मालवा) और आकर (पूर्वी मालवा) पर रहनेसे उन देशोंका नाम मालव (मालवा) हुआ। ऐसा अनुमान किया जाता है, कि मालवोंका अधिकार राजपूतानेमें जयपुर राज्यके दक्षिणी अंश, कोटा तथा झालावाड़ राज्यों पर रहा हो। वि० स० पूर्वकी ३री सदीके आस पासकी लिपिके कितने तांबेके सिक्के जयपुर राज्यके उणियाराके निकट प्राचीन नगर (कर्कोटक नगर)-के खंडहरसे मिले हैं जिन पर 'मालवानां जय' लिखा है। इस प्रकारके और भी कितने सिक्के पाये गये हैं। ये सब सिक्के मालवगण या मालव जातिकी विजयके स्मारक हैं। परन्तु ऐसे छोटे सिक्कों पर उनके नाम और विवादका अंशमात्र ही आनेसे उन नामोंका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। कुछ लोगोंने उनके नाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पढ़नेका यत्न किया है और २० नाम प्रकट भी किये हैं। ये सब नाम विलक्षण एवं अस्पष्ट हैं, यथा—भपंचन, यम, मजुप, मपोज, मपय, मगजश, मगोजय, मगच्छ, पयमरज इत्यादि। इन्हीं अस्पष्ट पढ़े हुए नामों परसे कुछ विद्वानोंने यह भी कल्पना कर डाली है, कि मालव एक विदेशी जाति थी। किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसलिये हम उसे स्वीकार करनेको तैयार नहीं है। अब तो मालव जातिका नाम निशान भी नहीं रहा है।

मालव—मालवा देखो।

मालवक (सं० त्रि०) १ मालवदेशसम्बन्धी, मालवेका। (पु०) २ मालवदेशवासी, मालवाका रहनेवाला।

मालवगुप्त (सं० पु०) आचार्यभेद। रङ्गनाथने इनका उल्लेख किया है।

मालवगौड़ (सं० पु०) षाड़व जातिका एक संकरराग। इसमें पञ्चम स्वर नहीं लगता। इसका स्वरग्राम म ध नि स रि ग म है। इसका उपयोग वीर रसमें किया जाता है। कुछ लोग इसे सम्पूर्ण जातिका मानते हैं और इसके गानेका समय सायंकाल बतलाते हैं।

मालवरुद्र (सं० पु०) एक कवि। क्षेमेन्द्रकृत कविकण्ठाभरणमें इनका उल्लेख है।

मालवर्त्ति (सं० पु०) एक प्राचीन जातिका नाम।

मालवश्री (सं० स्त्री०) श्रीरागकी एक रागिनीका नाम। यह सम्पूर्ण जातिकी रागिनी है और इसके गानेका समय सायंकाल है। नारद इसे मालवकी रागिनी मानते हैं और हनुमत इसे हिंडोल रागकी रागिनी लिखते हैं। हनुमत इसे ओड़व जातिकी मानते हैं और इसके गानेमें धैवत तथा गांधारको वर्जित लिखते हैं। इसे मालश्री और मालसी भी कहते हैं।

मालवा (हिं० स्त्री०) एक प्राचीन नदीका नाम।

"हिरण्वती वितस्ता च तथा फल्गुवती नदी।
वेदस्मृतिर्वेदवती मालवाथाश्ववत्यपि॥"
(भारत १३।१६५।२५)

मालवा—मध्यभारतका एक प्रदेश। यह मध्य भारत एजेन्सीके पश्चिमांशमें सबसे बड़ा भाग है। इसमें कई देशी राज्य हैं। यह पोलिटिकल एजेण्टके अधीन और वह पोलटिकल एजेण्ट मध्यभारतके एजेण्टके अधीन है।

यह अक्षा० २२° २०' से २५° ६' उ० तथा देशा० ७४° ३२' से ७६° २८' पू०के मध्य विस्तृत है। इसका रकबा ८६१६ वर्गमील है। इसमें १५ शहर तथा ३४८४७ गांव लगते हैं। इसकी आबादी करीब १०॥ लाख है।

मालवाके जैसा उपजाऊ प्रदेश मध्यभारतमें दूसरा कोई नहीं है। वर्षाके अभावसे यहां कभी भी अकाल नहीं पड़ता। इन्दौर, भूपाल, धार, रतलाम, जावरा, राजगढ़, नरसिंह गढ़ और ग्वालियरके नीमच आदि राज्य इसके अन्तर्गत हैं। अत्यन्त पुराना और प्रसिद्ध उज्जैन नगर मालवाकी राजधानी था। विक्रमादित्यका नाम उज्जैनके साथ इतिहासमें अमर हो गया है।

प्राकृतिक दृश्य।

इस प्रदेशकी भूमि ऊंची नीची है। छोटी छोटी शैलश्रेणी और पहाड़ी नदियां तमाम फैली हुई हैं। बांस, कांटोंके झाड़ तथा तरह तरहकी छोटी छोटी लताओंसे जमीन एकदम ढकी हुई हैं। जंगलोंमें बाघ, चाते, भालू, सूअर, हरिन आदि पशु रहते हैं। लेकिन अब खेतोंके विस्तारके कारण जंगलोंका रकबा कम हो रहा है। सभी नदियां दक्षिणकी ओर समुद्रमें मिली है। केवल एक नदी उत्तरकी ओर बहती हुई चम्बल महानदीमें गिरी है। लोहा तथा पत्थरको छोड़ और कोई खनिज द्रव्य निकाला नहीं जाता। यहां वर्षमें ३८ इंच वर्षा होती है।

भूतत्त्व।

मालवाका पश्चिम भाग दाक्षिणात्यके विस्तृत पहाड़ोंसे भरा हुआ है। ज्वालामुखी पहाड़से निकले हुए द्रव पदार्थोंसे इस भागकी रचना हुई है। समूचे प्रदेशमें बड़ी बड़ी शिलायें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। यह सब देख भूतत्त्ववेत्ताओंने निश्चय किया है, कि पर्वत-युगमें दाक्षिणात्यका ज्वालामुखी पर्वत क्रीड़ास्थान था। मालवाके पत्थर जलवायुके कारण रूप नहीं बदलते। मालभूमि प्रदेशमें इस तरहके पत्थर बहुत मिलते हैं। मांडू नगरीके भवन बनानेके लिये जो सब खनिज पत्थर निकाले गये थे वे अभी तक वर्त्तमान हैं।

मण्डलेश्वर तथा महेश्वर नामक दो स्थानमें नर्मदा-नदीके पंकोंकी तहसे बना हुआ एक बड़ा भूमिखंड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकला है। सरकारने इस स्थानमें लोहा गलानेका कारखाना खोला था, दुर्भाग्यवश वह कारखाना अभी उठा दिया गया।

अधिवासी।

सिन्दे, राजपूत, भील, कुतुरी, अंजना और अहीर नामके बहुतसे खेतीहर यहां रहते हैं। मगिया जातिके लोग मेवाड़से आ कर यहां बस गये हैं। ये लोग चोरी करनेमें बड़े कुशल होते हैं। अहीर और अंजना जातिके लोग धनवान् हैं। साधारणतः जुआरका मैदा यहांके कृषकोंका प्रधान खाद्य है। ये लोग अफीमके भुने हुए पत्तोंके साथ रोटी खाते हैं। अन्न नहीं मिलने पर ये लोग फरिन्दा नामक जामुन खा कर प्राण-रक्षा करते हैं। इनकी साधारण पोशाक धोती, कमरबंद, कुरता और चादर है। धनी लोग आस्तीनवाले कपड़े तथा धनी स्त्रियां कानमें सोनेकी बाली पहनती हैं। मकान अक्सर मिट्टीके तैयार होते हैं। कहीं कहीं ताड़के पेड़के खंभों पर ताड़के पत्तोंकी छौनी देखी जाती है। घरमें एकसे अधिक दरवाजे या झरोखे नहीं होते। मध्यम श्रेणीके गृहस्थोंका गुजारा १० या १२ रु०में चल जाता है। धनी कृषकोंका ५, ६ रु०में परिवार-खर्च चलता है।

जुआर ही यहांकी मुख्य फसल है। इसके अलावा गेहूं, जौ, चना, बाजरा, पटसन, ईख और अफीम भी यहां उपजती हैं। कार्त्तिक और अगहनमें खेत जोत अफीमका बीज बोआ जाता है।

चावल रु०में १२ सेर, जुआर १ मन, गेहूं २२ सेर, नमक ८ सेर और मकई १ मन ५ सेर मिलती है। एक एक ईख दो पैसेसे कममें नहीं मिलती। महुएकी शराब—चौथाई बोतलका चार आनेसे छः आने तक। पक्की तौल कहीं भी काममें नहीं लाई जाती। भिन्न भिन्न स्थानमें भिन्न भिन्न तौल है। ब्राह्मण और बनियेको छोड़ दूसरी दूसरी जातिकी स्त्रियां खेत पर काम करने जाती हैं। ये एक या दो सेर अन्न प्रतिदिन पाती हैं।

वर्त्तमान समयमें मालवामें रेल लाइनके खुल जानेसे जाने आनेमें बड़ी सुविधा हो गई है। साथ साथ सभ्यता भी फैल रही है। अफीम और रुई ही मालवाकी प्रधान रफ्तनी है। गुजरातके साथ गौ आदि पशुओंका व्यापार उल्लेखनीय है।

यहांके वासिन्दे अपने जीवनमें कमसे कम एक बार नर्मदाके किनारे ओङ्कारविग्रह और गङ्गाके किनारे शरणघाटका दर्शन करते हैं तथा पवित्र नदीके जलमें मरे हुए की अस्थि फेंक देते हैं। तीर्थदर्शनके बाद लौटने पर प्रत्येक मनुष्यको बड़े समारोहके साथ अपने स्वजनोंको एक बड़ा भोज देना पड़ता है। भोजनकी दक्षिणामें हर एक निमन्त्रित व्यक्तिको पीतलकी एक एक थाली दी जाती है जिनमें देनेवालेका नाम खुदा रहता है। यहांके कृषक बड़े गरीब हैं। ये लोग बनिया लोगोंसे २५ रु० सैकड़े सूद पर रु० कर्ज लेते हैं। जेवर बन्धक रखनेसे १२, १४ रु० सैकड़ा, शरीर बन्धक रखने या नौकर हो कर रहनेसे ६ रु० सैकड़ा सूद देना पड़ता है।

इतिहास।

अति प्राचीन कालसे ही मालवाकी प्रसिद्धि सभी स्थानोंमें फैली हुई है। इसी मालवामें [illegible] रन्तिदेव राज्य करते थे और दशपुरमें (जिसका वर्त्तमान नाम दशोर या मन्दशोर है) इनकी राजधानी थी। [illegible] इनकी दूसरी राजधानी उज्जैनमें भी थी यह केवल समृद्धिशाली नगर होनेके कारण ही प्रसिद्ध नहीं, वरन् यहां महाकाल और ओंकार पौराणिक देवता हैं। इसलिये उज्जैन [illegible] सात मोक्ष स्थानोंमें एक है तथा एक प्रधान तीर्थ गिना जाता है।

अवन्ती और उज्जैन देखो।

बहुत पुराने समयमें मालवा या अवन्ती राज्य भारतका एक प्रधान नगर समझा जाता था। अति प्राचीन कालमें इसका आकार कितना बड़ा था, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता, तो भी इतना निश्चय है, कि माकिदन-वीर सिकन्दरके समयमें यह राज्य बहुत बड़ा था। यहां तक कि पञ्जाबका दक्षिण भाग भी मालव जातिके अधिकारमें आ गया था। मालूम होता है, कि बौद्धकालमें जो भारतके राजचक्रवर्त्ती हुए चाहे उन्होंने या उनके पुत्रने किसी समय मालवाका शासन किया था। जैन-इतिहाससे मालूम होता है, कि चन्द्रगुप्तने मालवाको अपने साम्राज्यमें मिला लिया था। पीछे उनके लड़के विन्दुसार और विन्दुसारके लड़के अशोक दोनोंने ही कुछ समय तक यहांका शासन किया। राजा प्रियदर्शीके अनुशासन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालूम होता है, कि ये जिस समय मगधके राज-सिंहासन पर सम्राट्के रूपमें विराजमान थे, उस समय भी इनके एक लड़के इनके अधीन मालवाका शासन करते थे। शिलालेखसे जाना जाता है, कि सम्राट् अशोक-ने अपने साले यवन तुषाष्पको सुराष्ट्र-प्रदेशका शासन भार दिया था। मौर्यवंशकी शक्ति क्षीण होने पर मुसलमानोंने सुराष्ट्रसे मालवामें अधिकार बढ़ाया था। पश्चात् मालवा पर शक लोगोंका आधिपत्य हुआ। ये लोग ब्राह्मणभक्त तथा क्षत्रिय थे। जैन लोगोंकी कालका-चार्यकथासे ज्ञात होता है, कि मालवाकी राजधानी उज्जैन पर ७४ वर्ष ईस्वीसन्के पूर्वसे ५७ वर्ष तक शक लोगोंका अधिकार रहा। उस समय सातवाहनवंश भी दाक्षिणात्यमें बढ़ा चढ़ा था। सम्भवतः सातवाहन-वंशके विक्रमादित्य नामक राजाने शक लोगोंको हरा कर मालवामें सम्वत्का प्रचार किया जो मालवीय या विक्रम-सम्वत् नामसे प्रचलित हुआ। इसी विक्रमादित्यने शक लोगोंको परास्त कर "शकारी" उपाधि प्राप्त की। विक्रमादित्य देखो। इनका या इनके वंशके राजाओंका मालवा पर अधिकार स्थायी नहीं रहा। ईस्वीसन्-की १ली शताब्दीमें शक लोगोंका अधिकार फिर फैला था। पहले चष्टनके पिता यहां एक साधारण राजा थे। लेकिन शकोंके राजा महावीर चष्टन आन्ध्र-वंशको हरा कर सम्पूर्ण मालवाके राजा हुए। इन्होंने विक्रम-सम्वत्के स्थानमें अपनी जातिका गौरव बढ़ाने-के लिये शकाब्द चलाया। शकाब्द और सम्वत् देखो। इनके प्रभावसे सातवाहनवंश शक्तिहीन हो गया। लेकिन इनके स्वर्गवासी होने पर इनके अधीन राजा नहपान और इनके जामाता उषवदातने महाक्षत्रपकी उपाधि धारण की और राज्यका विस्तार किया। इन लोगोंके प्रभावसे उज्जैनके राजा चष्टनके पुत्र जयदाम और उनके कुटुम्ब सातवाहन लोग श्रीहीन हो गये। सन् १३३ ई०में सातवाहनोंके कुलभूषण गौतमीके पुत्र राजा शातकर्णिने शक लोगोंके घमण्डको चूर कर दक्षिण पथ से राजपूताना तक अपना अधिकार फैला लिया। लेकिन उनका भी शासन स्थायी नहीं हो सका। परा-जित शक-वीरोंने उज्जैन आ कर जयदामके पुत्र रुद्रदाम का आश्रय लिया। इन सब वीरोंकी सहायतासे शकोंके राजा रुद्रदाम शकजातिकी खोई हुई प्रतिष्ठाको लौटानेमें समर्थ हुए थे। दाक्षिणात्यके स्वामी शातकर्णि इनके सम्बन्धी थे, इसीसे इन्होंने उनके पैतृक राज्र-में हाथ नहीं बढ़ाया। राजा रुद्रदामके समय मालवा-में शकोंकी उन्नति चरमसीमा तक पहुंच गई थी। रुद्र दामवंशके राजोंने ई०स०की चौथी शताब्दी तक राज्य किया था। ये लोग 'क्षत्रप महाराज' कहलाते थे। इस शकवंशके २८ राजाओंके नाम तथा राज्यकाल मिलते हैं। भारतवर्ष देखो।

आर्यावर्त्तमें गुप्त, दाक्षिणात्यमें चेदि और चालुक्य राजवंशके अभ्युदय होने पर मालवाके क्षत्रपवंशका लोप हो गया। मालवामें देशी शासनकी स्थापनाके साथ फिरसे मालव या विक्रमीसम्वत् प्रचलित हुआ। इतिहासवेत्ता फर्गुसन साहबने गहरी आलोचना कर दिखाया है, कि सन् ५४४ ई०में विक्रमी सम्वत् चलाया गया था। लेकिन मालवाके मन्दशौरसे प्राप्त कुमार-गुप्तके शिलालेखमें ४९३ मालव संवत् अर्थात् सन् ४३६ ई०सन पाया जाता है। पहले ही कहा जा चुका है, कि चौथी शताब्दीमें शकोंके राज्यका अन्त हो गया। जब तक मालवामें शकोंका शासन रहा तब तक शक सम्वत् चलता रहा। ५वीं शताब्दीमें मालवजातिके भाग्योदयके साथ ५वीं शताब्दीसे फिर मालव अर्थात् विक्रमी सम्वत् चलने लगा। गुप्तसम्राटोंके शासन कालमें यहां गुप्त और मालव दोनों ही सम्वत् चलते थे। इसका स्पष्ट प्रमाण कुमारगुप्तके शिला-लेखसे मिलता है। ई०सनकी ५वीं शताब्दीसे गुप्त-सम्राटोंके अधीन वर्म्मन राजाओंका यहां अभ्युदय हुआ। शिलालेखमें नरवर्म्मा, उनके पुत्र विश्ववर्म्मा (सन् ४२३ ई०) और उनके पुत्र बन्धुवर्म्मा (सन् ४३६ ई०) इन तीन वर्म्मन राजाओंके नाम मिलते हैं। दशपुर (वर्त्त-मान मन्दशोर)-में इनकी राजधानी थी। इन तीन राजाओंके बाद जिन्होंने मालवाका शासन किया उनके नाम नहीं मिलते। सन् ४८४ ई०में सुरश्मिचन्द्र राजाका नाम शिलालेखमें पाया जाता है। ये सम्राट् कुमारगुप्तके अधीन यमुनासे नर्म्मदा तकके सम्पूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूभागका शासन करते थे। फिर इन लोगोंके अधीन मातृविष्णु और उनके छोटे भाई धन्यविष्णु दो ब्राह्मणराजाओंके नाम पाये जाते हैं। इस समय हून राजा तोरमानने पंजाबसे आ कर मालवा पर अधिकार जमाया। इनके प्रभावसे गुप्त साम्राज्य कांप उठा। बाद इनके पुत्र मिहिरकुलने भी हूनशासनका विस्तार किया। इसी मिहिरकुलके समयमें मालवामें यशोधर्माका अभ्युदय हुआ था। इन्होंने लालसागरसे पश्चिम सागर और हिमालयसे महेन्द्राचल तकके विशाल भूभागको अपने बाहुबलसे अपने शासनमें मिला लिया। गुप्त और हून राजा लोग जिन सब स्थानों पर अधिकार न पा सके थे उन्होंने उन सब स्थानोंको विजय कर लिया। हून राजा मिहिरकुलको इनकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी। सम्भवतः इसी यशोधर्म्माने 'विक्रमादित्य' की उपाधि प्राप्त की थी। प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर और वासवदत्ताके लेखक सुबन्धु इनकी सभाके रत्न थे। चीनयात्री यूएनचुवङ्ग आदि बहुतेरे इन मालवपतिके शौर्य्य वीर्य्यकी प्रशंसा कर गये हैं। इन यशोधर्माके बाद फिर मालवा पर गुप्त लोगोंका अधिकार हुआ था। लेकिन उन लोगोंका राज्य स्थायी नहीं रहने पाया। स्थाण्वीश्वरमें वर्द्धनवंशके अभ्युदय होने पर गुप्त प्रभावका ह्रास हो गया। इस समय सम्भवतः राज्य खो कर माधव गुप्त और कुमारगुप्त इन दो राजकुमारोंने वर्द्धन राजसभामें आश्रय लिया। माधवगुप्त सम्राट् हर्षवर्द्धनके मित्र हो गये थे।

चीनयात्री यूएनचुवंग सन् ६४० ई०में मालवा आये। उन्होंने लिखा है, कि मालवराज्यका क्षेत्रफल प्रायः ६००० लीग अर्थात् १००० मील है। इसकी राजधानी प्रायः ३० लीग या ५ मील है। राजधानीके दक्षिण और पूर्वमें माही-नदी बहती है। इस समय उज्जैन और माहिष्मती अर्थात् महेश्वरपुर स्वतन्त्रराज्य कहलाने पर भी मालवपतिके अधीन भिन्न भिन्न ब्राह्मण-राजाओंके शासनमें थे। कनिंगहम साहबके मतसे उस समय मालवाराज्य पश्चिममें कच्छसे ले कर पूर्वमें उज्जयिनी तक और उत्तरमें गुजरात और विराटसे ले कर दक्षिणमें वलभी और महाराष्ट्र तक फैला हुआ था। उस समय धारानगरमें राजधानी थी।

चीनयात्रीके मालवामें आनेके ६० वर्ष पहले शिलादित्य (यशोधर्म) वर्त्तमान थे। यूएनचुवंगने लिखा है, कि राजा शिलादित्यने ५० वर्ष बड़े प्रतापके साथ राज्य किया था। ये अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता तथा असाधारण विद्वान् थे। जन्मसे जीवहिंसा कर इन्होंने कभी अपने हाथको कलुषित नहीं किया। इन्होंने अपने राजभवनकी बगल होमें विहार स्थापित किया था। प्रत्येक वर्ष ये सभी स्थानोंसे आचार्योंको निमन्त्रित कर 'मोक्ष महापरिषद्'-की बैठक करते थे। चीनयात्रीके वर्णनके अनुसार मालवराज शिलादित्य सन् ५८० ई० तक राज्य करते रहे। इस समयके शिलालेखके अनुसार यशोवर्म्मा नामक एक बड़े प्रतापी राजाका नाम पाते हैं। पहले ही लिखा जा चुका है, कि मातृविष्णु और धन्यविष्णु नामके दो ब्राह्मण सामन्त राज्य करते थे। सम्भवतः चीन यात्रीने उज्जैन और महेश्वरपुरमें इस तरहके ब्राह्मणराजाओंको ही देखा होगा।

चीनयात्री मालवामें रहते समय यहांके लोगोंकी विद्वत्ता देख कर विस्मित हो गये थे। उन्होंने लिखा है, कि भारतके दो ओर दो राज्य विद्याके लिये प्रसिद्ध हैं, एक दक्षिण पश्चिममें मालवा राज्य और दूसरा उत्तर पूरबमें मगध राज्य।

वास्तविक शिलादित्य या यशोधर्म्माके बाद मालवा का किसने शासन किया, यह जाना नहीं जाता। सम्राट् हर्षवर्द्धनके पिता प्रभाकर वर्द्धनने ५८५ ई०में मालवा विजय किया। सम्भवतः इस समय उनके जामाता मौखरि ग्रह वर्म्माको कुछ दिनोंके लिये मालवाका शासन-भार मिला था। प्रभाकर वर्द्धनकी मृत्युके बाद शायद मालवाके राजाने गृहवर्म्माको मार अपना राज्य लौटा लिया था। ६०५ ई०में अपने बहनोईकी हत्याका बदला लेनेके लिये राजा राज्यवर्द्धनने मालवा पर चढ़ाई की थी। ६०९ ई०में चालुक्य-राज सत्याश्रय पुलिकेशीने मालवा विजय किया। ६४० ई०में जब चीन यात्री यहां आये उस समय भी यहां एक क्षत्रिय राजा राज्य करते थे। चीनयात्रीने उनका नाम नहीं दिया है। उस समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालवाके राजा शिलादित्यके भतीजे ध्रुवभट वल्लभीका शासन करते थे। इसके बाद किस वंसने मालवा पर राज्य किया, इसका कोई ठीक प्रमाण नहीं मिलता। ७४८ ई०में राष्ट्रकूटपति तृतीय गोविन्दने मालवा जय कर मारसर्व नामक राजाकी पूजा प्राप्त की। इसके कुछ दिन बाद मालवामें परमार (पारेमाल) वंशका अभ्युदय हुआ। परमार देखो। इस वंशने प्रायः ८२५ ई०से १२११ ई० तक बड़े प्रतापके साथ मालवाका शासन किया था। इस वंशके राजा भोज और वाक्पतिका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध है। भोज और वाक्पति देखो।

परमारवंशके शासन-कालमें १००६ ई०में चौलुक्य वल्लभ राज, ११०० ई०में चन्देल-राजा सल्लक्षण वर्म्मा, ११३५ ई०में चन्देल मदनवर्म्मा, ११४३ ई०में चौलुक्य कुमारपाल और १२२६ ई० यादव सिंहके सेनापति ब्राह्मण वीर खोलेश्वरने मालवा पर चढ़ाई की थी।

भट्ट-ग्रन्थके अनुसार राजा भोजके बाद जय चन्द मालवाके सिंहासन पर बैठे। उनके बाद जित्पाल नामके एक राजपूत शासक मलवाके राजा हुए और उन्होंने यहां तोमरवंशकी जड़ जमाई। इस तोमर वंशने १४२ वर्ष मालवामें राज्य किया। पश्चात् जगद्देव नामके एक चौहान सर्दारने मालवाके सिंहासनको अपनाया। इस वंशके चौथे राजा वामदेवने सम्राट्की उपाधि धारण की। इनके समयमें राज्य सभी विषयोंमें उन्नत हो गया और शिल्प तथा वाणिज्यकी यथेष्ट उन्नति हुई। इस वंशके अन्तिम राजा मालदेवके समयमें वैश्यजातिके आनन्ददेवने मालवा पर अधिकार कर लिया। इन्हींके समयमें मालवा मुसलमानोंके हाथ आया।

जिस समय तैमूरलंगकी चढ़ाईसे दिल्लीके बादशाह महम्मद तुगलक घबड़ा गये थे उसी समय दिलेर खांने मालवामें स्वाधीनताकी ध्वजा फहराई और धारानगरमें राजधानी बसाई। इसके लड़के अलिफ खां हुसंग शाहके नामसे गद्दी पर बैठा और मांडु नगरमें राजधानी उठा लाया। इस नगरका घेरा ३७ मील था और यह विन्ध्याचलके नीचे ८ मील तक फैला हुआ था। शाह हुसंगने हुसंगाबादकी स्थापना की थी। इसने गोंडवनके राजा नरसिंहको हराया और मार डाला तथा उसकी राजधानीको अपने राज्यमें मिला लिया। हुसंगने ३० वर्ष राज्य किया था। इसके बाद इसका लड़का गजनी या हुसेन शाह गद्दी पर बैठा। यह एकदम कमजोर दिलका और लम्पट था। इसको गद्दीसे उतार इसका मन्त्री महम्मद खिलजी राजा बन बैठा। राजगद्दी पर बैठनेके बाद इसने उदारता और शासनमें निपुणताका पूर्ण परिचय दिया था। इसने भूतपूर्व सम्राट्के नाम पर विद्यालय स्थापित किये और सुन्दर सुन्दर महल बनवाये। मुसलमान इतिहासकार फ़िरिस्ताने लिखा है, कि इसके जैसा सब गुणोंसे युक्त मुसलमान राजा भारतमें बहुत थोड़े हुए हैं। इसके शासन-कालमें गुजरातके राजा अहमद शाहने मालवा पर चढ़ाई की। महम्मदके शासनकालमें प्रजा अत्यन्त सुखी थी। इसने मांडुनगरसे ३ कोस उत्तर नलचा नामक स्थानमें बहुतसे प्रासाद बनवाये। फिरिस्ता लिखता है, कि महम्मद सुशिक्षित, साहसी और न्यायी था। इसके राज्यमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही सुखी थे। मन्त्रियोंके षड़यन्त्रसे एक बार अपने राज्यको खो बैठा था। पश्चात् गुजरातके राजा सुलतान मुजफ्फरकी सहायतसे फिर अपना राज्य लौटा लिया।

महम्मदके बाद उसका लड़का गयासुद्दीन सन् १४६८ ई०में पिताकी राजगद्दी पर बैठा। लेकिन यह वजीरों पर राज्य भार सौंप आप भोग-विलासमें लग गया। मांडु नगरमें सके प्रमोदगृहमें भिन्न भिन्न जातियों तथा भिन्न भिन्न देशोंकी ५ हजार स्त्रियां रहती थीं। गयासुद्दीन इन स्त्रियोंके साथ रात दिन नये नये भोग-विलास कर समय काटता था। इसके पिता महम्मदने राज्यकी ऐसी सुव्यवस्था कर दी थी कि गयासके ३३ वर्षोंकी असवधानीमें राज्यको कोई क्षति नहीं हुई। गयासके बाद उसका लड़का नूर उद्दीन १५०१ ई०में मालवाका राजा हुआ। यह बड़ा विषयी था। इसके ११ वर्षके शासनमें भी मालवा राज्यका प्रभाव ज्योंका त्यों बना रहा। अति मदिरापान इसकी मृत्युका कारण हुआ। महम्मद खिलजीने अपने असाधारण बाहुबलसे तथा बुद्धि कौशलसे मालवा राज्यको ऐसा सुदृढ़ कर दिया था, कि उसके पुत्र और पौत्रके आधी शताब्दी विषय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वासनाकी सेवा करने पर भी मालवाकी समृद्धि जरा भी न घटी। नूर उद्दीनका लड़का महमूद १५१२ ई०में राजगद्दी पर बैठा। इसके राज्याभिषेकके जुलूससे मालवाकी सम्पत्तिका पता चलता है।

महमूदके भाइयोंके षड़यन्त्रसे राज्यमें शीघ्र ही अशान्ति फैली। जब इसके एक भाईने चन्देरी पर चढ़ाई की तब इसने राजपूत राजाओंसे सहायता मांगी और मदारीराय राजपूतको प्रधान मन्त्री बनाया। कुछ ही दिनोंमें महमूद मदारीराय पर सन्देह करने लगा और छलप्रपंचसे उसे हटानेकी चेष्टा करने लगा। इससे राजपूत लोग बिगड़ उठे। महमूद गुजरात भाग गया। गुजरातके राजा मुजफ्फर शाहने इसका पक्ष लिया। राजपूत लोग महमूदको पकड़नेके लिये गुजरातकी ओर बढ़े। हिन्दू मुसलमानोंमें घमसान लड़ाई हुई। इस लड़ाईमें प्रायः १६००० राजपूत सैनिक जूझ मरे। प्रायः एक लाख मुसलमान सैनिकोंके मरने पर मुसलमान लोग विजयी हुए।

इस समय मेवाड़के राणा सङ्ग अर्थात् संग्रामसह चारों ओर अपनी प्रधानता फैला रहे थे और, तैमूरलङ्गका वंशज मुगल सेनापति बाबर शाह भी दिल्लीके राजसिंहासन पर दांत गड़ाये हुए था। ऐतिहासिक लोग कहते हैं, कि बाबरका अभ्युदय न होता तो खिलजीवंशके अन्त होने पर भारतसाम्राज्य राजपूतोंके हाथ आ जाता।

१५२६ ई०में महमूदको मार कर गुजरातका राजा बहादुरशाह कुछ दिनों तक मालवाकी गद्दी पर बैठा। इस समयसे ले कर अकबरके शासन समय तक ३७ वर्ष मालवामें अराजकता फैली रही और राष्ट्रविप्लव होता रहा।

हुमायूं बहादुर शाहको भगा मालवाका राजा बन बैठा। पश्चात् मल्लू खाँ 'कादर मालवी'की उपाधि ले मांडू नगरमें १५३० ई०को मालवाके सिंहासन बैठा। पीछे वह शेरशाहसे १५४२ ई०में हार कर गुजरात भाग गया। इस समय सुजल खाँ शेरशाहके अधीन सामन्तके रूपमें मालवाके सिंहासन पर बैठा। यह भी अत्यन्त इन्द्रियलोलुप था। सहरानपुरको रूपमती नामक एक अत्यन्त सुन्दरी हिन्दू नर्त्तकीने इसको एकदम अपने काबूमें कर लिया था। राजा बहादुरने रूपमतीके प्रणयके बदलेमें मांडू नगरमें एक सुन्दर भवन बनवा दिया। अभी तक भी उसके खंडहर पाये जाते हैं और अपने देशकी भाषामें रूपमतीके प्रणयपूर्ण गीतोंकी अनेक किताबें मिलती हैं।

इधर राजा बहादुर रूपमतीके साथ भोगविलासमें लीन था उधर १५६१ ई०में अकबर बादशाहकी विजयकीर्त्ति मांडू नगर तक आ पहुंची। १५७० ई०में मालवा अपनी स्वाधीनता खो दिल्लीके बादशाह अकबरके अधीन हो गया। मांडू नगरके खंडहरोंकी जांच करनेसे मालूम होता है, कि मालवाके राजा अपने राज्यकालमें सौभाग्य सम्पत्तिकी उच्च सीमा तक पहुंच गये थे। इस स्थानके स्थापत्य-शिल्पको देख शिल्पशास्त्र जाननेवाले इस नगरकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर गये हैं।

बीच बीचमें जोधपुरके राजपूत राजाओंने मालवाके कुछ अंशों पर अधिकार कर लिया था। मुसलमानोंकी शक्ति क्षीण होने पर लालाजीने मालवामें रायगढ़ नामक राजधानी कायम की थी। पीछे उनके पोते बलभद्रसिंह मालवाके राजा हुए। इस समय मालवा अजमेर आदि अनेक स्वाधीन राज्योंमें बंट गया।

इनके शासनकालमें मराठोंने शक्तिशाली हो मालवा पर चढ़ाई की। जयपुरके प्रतिष्ठाता प्रसिद्ध जयसिंहने बाजी रावको मालवा जय करनेमें बड़ी सहायता पहुंचाई थी। कहा जाता है, कि जयसिंह और बाजीरावके बीच बहुत लिखा पढ़ी हुई थी। जयसिंहने ब्राह्मणप्रमुख मराठाराज्यको पुष्ट करनेकी इच्छासे सहायता की। जयसिंहकी सहायताके बिना बाजीराव मालवामें हिन्दूराज्यकी स्थापना नहीं कर सकते। भट्ट लोगोंके ग्रन्थोंमें इस विषयका विस्तारके साथ वर्णन है।

मुसलमान इतिहासकार फिरिस्ताने लिखा है, कि मुगलसाम्राज्यके अधःपतनके बाद गुजरात मराठा लोगोंके अधिकारमें आया। १७३४ ई०में पेशवाने मालवासे चौथ लिया। उसके बाद सिन्दे और होलकरने मालवामें अपना राज्य बढ़ाया। उनके उत्तराधिकारी लोग अभी तक उस राज्यका भोग करते आ रहे हैं। मराठा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोग अच्छी तरह शासन नहीं चला सकते थे, इसलिये मालवा उस समय पिण्डारी आदि दाक्षिणात्यके दुष्ट डकैतोंका अड्डा हो रहा था। इन लोगों हीके अत्याचारसे बाध्य हो उस समयके गवर्नर जेनरल लार्ड हेष्टिंग्सने चौथा मराठा युद्ध ठान दिया था। युद्धमें पिंडारी लोग हारे और भाग गये। पीछे भील लोगोंने लार्ड मालकमके समयमें शान्तभाव धारण किया। तभीसे इस स्थानके जंगल साफ हैं। अनेक भीलोंने अंगरेजी सेनामें प्रवेश किया। सरदारपुरमें चार सौ मालवाके भीलोंकी एक सेना है। १८वीं शताब्दीके मध्यमें उतरे। मालवा १७८० ई०के पहले २५ वर्ष तक, एक वृहत् समरक्षेत्र बना रहा वहां मराठे, मुसलमान और यूरोपवाले बराबर लड़ते भिड़ते रहे। अन्तमें १८१८ ई०में ब्रिटिश-प्रधानता यहां स्थापित हो गई। बाद ४० वर्ष तक मालवामें कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। लेकिन १८५७ ई०के गदरमें इन्दौर, मौ, नीमच, अजर, मेहिदपुर और सेहोरमें विद्रोहीदल उठ खड़े हुए थे। १८९९-१९०० ई०में मालवा घोर दुर्भिक्षसे पीड़ित रहा। १९०३ ई०में एक और मुसीबत आई, मालवामें प्लेग हुआ जिससे अनेक जिलोंके बहुसंख्यक कृषक यमपुरको सिधारे।

आज कल मालवा अफीमके लिये प्रसिद्ध है। हर साल प्रायः ८००० बक्से अफीम विदेश भेजी जाती है। अनेक करद राज्यको ले कर पश्चिम मालवा एजेन्सी बनी है। एक अंगरेज एजेण्ट इन सबोंकी देख-रेख करते हैं। जावरा, रत्लाम, सिलूना, सीतामौ आदि राज्य और उज्जैन, शाहजहानपुर, आगरा, मन्दशोर, नीमच, रामपुर, मेहिदपुर, कैथा, तराना, आलौत, पिरावा, आवर, पांचपहाड़, दग और गंगरार जिले उक्त एजेन्सीके अधीन हैं।

नीचे लिखे स्थानोंके ठाकुरोंका अधिकार गवर्मेण्टसे मंजूर किया गया है। अजरन्दा, वर्रा, विच्छौद, विलन्दा दात्रि, दताना, धुलतिया, जवालिया, सालुखेरा, सालगढ़ नरवार, ननगांव, नौलना, पन्तापिप्लोदा पिप्लिया, पिप्लोदा एवं शिवगढ़। इन स्थानोंका क्षेत्रफल १२००० वर्गमील है। जनसंख्या प्रायः १६ लाख। आगरेमें इन सब स्थानोंकी सदर अदालत है। यहांके पोलिटिकल एजेण्ट नीमचके दौरा जजका काम करते हैं।

मालवा—पंजाबका एक भूभाग। यह अक्षा० २९° ३१ उत्तर तथा देशा० ७४° ३०′ ७७″ पूरबके मध्य अवस्थित है। यह सतलजके दक्षिण है और यहां सिक्ख रहते हैं। इसमें फिरोजपुर तथा लुधियानाके जिले और पटियाला, झिंद, नाभा और मालर कौटलाके देशी राज्य अवस्थित हैं। यह प्रदेश सिक्ख रंगरूटोंकी भर्तीके लिये प्रसिद्ध है और इस सम्बन्धमें यह केवल मांझासे नीचे है। कहते हैं, कि इस प्रदेशका यह नाम हालका है। मालवासिंहकी उपाधि यहांके सिक्खोंको उनकी बहादुरीके लिये बन्दा वैरागीने दी थी। बन्दा वैरागीने कहा था कि यह प्रदेश मालवाके जैसा ही समृद्धिशाली होगा।

मालवानक (सं० पु०) जातिभेद।

मालविका (सं० स्त्री०) मालवेषु ज्ञाता मालव-ढक्-टाप्। लिवत्, निसोथ।

मालविटपिन् (सं० पु०) कुम्भी वृक्ष।

मालवी (सं० स्त्री०) १ श्रीरागकी एक रागिणीका नाम। यह ओड़व जातिकी है और हनुमत्के मतसे इसका स्वरग्राम नि सा ग म ध नि है। इसमें ऋषभ और पञ्चम स्वर वर्जित है। कोई कोई इसे हिंडोल रागकी रागिणी मानते हैं। २ पाठा, पाढ़ा। (त्रि०) ३ मालवीय देखो।

मालवीब्राह्मण—उत्तर-पश्चिम भारतवासी ब्राह्मणश्रेणीकी एक शाखा। वाराणसी आदि प्रान्तोंमें इस श्रेणीके बहुतसे लोग रहते दिखाई देते हैं। ये लोग लेखकका काम करके अपना गुजारा चलाते हैं। कोई कोई वाणिज्य व्यवसाय भी करते हैं। परन्तु याजनादि कोई भी नहीं करते।

मध्यभारतमें षड़ज्ञाति (छज्ञाति) ब्राह्मण नामक जो छः स्वतन्त्र दल हैं, वे भी अपनेको मालव-ब्राह्मण कहते हैं। उनका कहना है, कि प्रायः ३० पीढ़ीसे वे लोग जन्मभूमि मालवका परित्याग कर भारतके नाना स्थानोंमें बस गये हैं। जातितत्त्ववित् मि० सेरिने उन्हें गुजराती ब्राह्मणकी एक शाखा बतलाया है।

उन लोगोंके मध्य किंवदन्ती है, कि किसी मालव-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजने अपने यहां मालववासी ब्राह्मणोंको कच्ची और पक्की रसोई खानेको कहा, लेकिन वे लोग राजी नहीं हुए। इस पर राजाने उन्हें दो खनवाले मकानमें बंद रखा। रातको उन लोगोंने देखा, कि स्थानीय अधिवासी बड़े उत्साहके साथ उस कारावासके समीप ही पांड़े-बाबाकी पूजा कर रहे हैं। यह देख कर वे लोग भी भक्तिपूर्वक उस देवताकी उपासना करने लगे तथा उन्हें इस विपद्से बचानेके लिये बार बार प्रार्थना करने लगे। पांड़े-बाबाने उनकी स्तुति पर प्रसन्न हो घरका दरवाजा खोल दिया। रातको ही ऐसा सुयोग पा कर वे सबके सब वाराणसीको भाग आये। जो नहीं भागे तथा जिन्होंने राजाके हाथकी कच्ची पक्की रसोई खा ली उन लोगोंसे इस श्रेणीके लोग पृथक् हो गये और तभीसे पृथक् हैं।

मालवी ब्राह्मणोंमें साढ़े तेरह गोत्र प्रचलित हैं। भरद्वाज, चौबे, पराशर दूबे, आङ्गिरस चौबे, भार्गव चौबे आदि गोत्र और उपाधारी ब्राह्मण ऋग्वेदी हैं। शाण्डिल्य दूबे, काश्यप चौबे, कौत्स दूबे आदि यजुर्वेदी; वत्स, व्यास और गौतम तिवारी, लोहित तिवारी और कौण्डिल्य-गोत्रधारी ब्राह्मण सामवेदी हैं। पीछे इन लोगोंके मध्य कात्यायन पाठकण्ड और मैत्रेय अर्द्धगोत्ररूपमें प्रविष्ट हुए। विवाहादि क्रियामें ये लोग अन्यान्य ब्राह्मणोंकी तरह कार्यकलापका अनुष्ठान करते हैं। मथुराके चौबे ब्राह्मण इनके पुरोहित हैं।

मालवीय (सं० त्रि०) १ मालवदेशसम्बन्धी, मालवेका। २ मालवदेशवासी, मालवेका रहनेवाला।

मालव्य (सं० पु०) १ मालवराज-पुत्र। २ महापुरुषभेद।

"मद्रबुधेन बलिना मालव्यो दैत्यपूज्येन॥"

(बृहत्सं० ६९।२)

मालश्री (सं० स्त्री०) मालवश्री देखो।

मालसियान—पञ्जाबके अन्तर्गत जालन्धर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० ३१° ४′ उ० तथा देशा० ७५° २३′ १५″ पू०के बीच पड़ता है।

मालसिरा—बम्बईप्रदेशके अन्तर्गत सोलापुर जिलेका एक महकूमा। भूपरिमाण ५७४ वर्गमील है। इस जिलेमें ६६ ग्राम लगते हैं। यहां जंगल बहुत कम है। नदियोंमें नीरा और भीमा प्रधान है। यहांका जलवायु उतना खराब नहीं है। यहांकी अधिकांश भूमि काली है। यहां विविध प्रकारका अन्न उपजता है।

मालसी (सं० स्त्री०) मल-स्वार्थे अण्, मलं स्यति नाशयति सो-ड-ङीप्। १ केशपुष्प वृक्ष। २ रागिणी-विशेष। यह रागिणी मालवरागकी पत्नी है।

"धानुषी मालसी रामकिरी च सिन्धुड़ा तथा।
अश्ववारी भैरवी च मालवस्य प्रिया इमाः॥" (हारीत)

फिर किसीने इस रागिणीको मेघरागकी पत्नी बतलाया है।

"ललिता मालसी गौड़ी नाटी देवकिरी तथा।
मेघरागस्य रागिण्यो भवन्तीमाः सुमध्यमाः॥"

(सङ्गीतदा०)

इस रागिणीके गानेका समय शरत् है अर्थात् शक्रोत्थानसे ले कर दुर्गापूजा तक। वृष्टिके लिये इन्द्रके उद्देशसे जो महोत्सव होता है उसे शक्रोत्थान कहते हैं। इस उत्सवके उपलक्षमें भाद्र मासके शुक्लपक्षकी द्वादशीसे आश्विनकी शुक्लानवमी तक इस रागिणी-गानका अच्छा समय है।

"इन्द्रोत्थानात् समारभ्य यावद् दुर्गामहोत्सवम्।
गेया भवेद्बुधैर्नित्यं मालसी सा मनोहरा॥"

(सङ्गीतदा०)

फिर भी लिखा है, कि सायंकालमें यह रागिणी-गान किया जा सकता है।

"गान्धारी दीपिका चैव कल्याणी पुरवी तथा।
अश्ववारी कानड़ा च गौरी केदारपाहिड़ा॥
माधवी मालती नाटी भूपाली सिन्धुड़ा तथा।
सायाह्ने रागिणीरेता प्रगायति चतुर्दश॥" (सङ्गीतदा०)

गान्धारी, दीपिका, कल्याणी, पुरवी, अश्ववारी, कानड़ा, गौरी, केदार, पाहिड़ा, माधवी, मालती, नाटी, भूपाली और सिन्धुड़ा इन चौदह रागणियोंके गानेका समय संध्याकाल है।

इस रागिणीका स्वरूप—

"नीलारविन्दस्य दलानि बाला विधारयन्ती तनुदेहयष्टिः।
मालूरवृक्षस्य तले निषण्णा शोणा मृदुर्मालसिका प्रदिष्टा॥"

(सङ्गीत दामोदर)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालहायन संं० पु०) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

माला (संं० स्त्री०) माति मानहेतुर्भवतीति मा (ऋजेन्द्राग्रवज्रे। उण् २।२८) इति रन्, रस्य लत्वं टाप् च अथवा मां शोभां लातीति ला-क-टाप्। १ श्रेणी, पंक्ति। पर्याय—राजि, लेखा, तती, चीची, आली, आवलि, पंक्ति धारणी।

"द्विरेफमाला सविशेषसङ्गा।" (कुमार १ स०)

२ मस्तकन्यस्त पुष्पदाम, गलेमें पहननेका फूलोंका हार, गजरा। पर्याय—मान्य, स्रक्, मालिका, मालाका, मालका, गुणनिका, गुणन्तिका।

"अनधिगतपरिमालापि हि हरति दृशं मालतीमाला।"

(साहित्यद० १० अ०)

३ जपमाला। मन्त्रजप करनेके लिये मालाका व्यवहार किया जाता है। इस जपकी माला साधारणतः जप माला कहलाती है। कामनाभेदसे जपमाला अनेक प्रकारकी हो सकती है। इनमेंसे प्रधानतः तीन प्रकारकी जपमालाका ही व्यवहार देखनेमें आता है। यथा—करमाला, वर्णमाला और अक्षमाला। इन तीनों प्रकारकी जपमाला के भेद और जप क्रमादिका विवरण पहले ही लिखा जा चुका है। जपमाला देखो।

पुराणादि धर्मशास्त्रोंमें तुलसी, रुद्राक्ष आदिकी माला पहननेकी व्यवस्था है। बिना माला पहने जप करनेसे महापातक होता है। यहां तक कि उसे अभीष्ट-देवकी अप्रसन्नतासे नरक भी जाना पड़ता है।

"धारयन्ति न ये मालां हैतुकाः पापबुद्धयः।
नरकान्न निवर्त्तन्ते दग्धाः कोपाग्निना हरेः॥" (गरुड़पु०)

धात्रीफल, पद्माक्ष, तुलसीकाष्ठ वा तुलसीदल द्वारा माला बना कर सबसे पहले श्रीकृष्णको चढ़ानी चाहिये। वैष्णव व्यक्ति अपने इच्छानुसार मस्तक, कान, दोनों बाहु तथा दोनों हाथमें तुलसी-काष्ठ-भूषण धारण करें।

"ततः कृष्णार्पिता माला धारयेत्तुलसीदलैः।
पद्माक्षैस्तुलसीकाष्ठैः फलैर्धात्र्याश्च निर्मिता।
धारयेत्तुलसीकाष्ठ-भूषणानि च वैष्णवः।
मस्तके कर्णयोर्बाह्वोः करयोश्च यथारुचि॥" (स्कन्द पु०)

हरिको बिना निवेदन किये माला धारण करनेसे कोई फल नहीं होता, वरन् उसे नरककी गति होती है। अतएव वैष्णव व्यक्तिको चाहिये कि वे पहले तुलसी माला हरिको निवेदन कर पीछे आप धारण करे। माला धारण करनेके पहले पञ्चगव्य द्वारा उसे धो डाले। पीछे उसके ऊपर इष्ट मन्त्र और आठ बार गायत्री जप करे। जप करनेके बाद मालाको धूपित करके भक्ति-पूर्वक उस की पूजा करे। पूजाके बाद निम्नलिखित मन्त्रसे प्रार्थना करनी होती है। प्रार्थनाका मन्त्र इस प्रकार है,—

"तुलसीकाष्ठसम्भूते माले कृष्णजनप्रिये।
बिभर्मि त्वामहं कण्ठे कुरु मां कृष्णवल्लभम्।
यथात्वं वल्लभा विष्णोर्नित्यं विष्णुजनप्रिया।
तथा मां कुरु देवेशि नित्यं विष्णुजनप्रियम्॥
दाने माधातुरुद्दिष्टा लासि मां हरिवल्लभे।
भक्तेभ्यश्च समस्तेभ्यस्तेन माला निगद्यसे॥"

इस प्रकार प्रार्थना करनेके बाद विधिपूर्वक कृष्णके गलेमें माला समर्पण करे पीछे आप पहने। जो वैष्णव इस नियमसे माला धारण करते हैं उन्हें अन्तमें विष्णुलोककी प्राप्ति होती है। वैष्णवोंको धात्रीफलकी माला अवश्य पहनी चाहिये। जो माला धारण नहीं करते, पर विष्णु पूजामें हमेशा रत रहते हैं उन्हें वैष्णव नहीं कहा जा सकता।

"धात्रीफलकृतां मालां कण्ठस्थां यो वहेन्न हि।
वैष्णवो न स विज्ञेयो विष्णु पूजारतो यदि॥"

स्कन्दपुराण, गौतमीय पुरश्चरणप्रसङ्ग तथा हरिभक्तिविलास आदि ग्रन्थोंमें लिखा है, कि जो तुलसी और धात्रीफलकी माला पहनते हैं उन्हें असेष पुण्य होता है। अन्तमें उन्हें मोक्षकी प्राप्ति होती है।

तुलसी और धात्रीकी तरह सम्प्रदायभेदसे रुद्राक्षमाला पहननेकी भी विधि है। लिङ्गपुराणमें कहा है,—भस्म, त्रिपुण्ड और रुद्राक्षमाला, ये सब बिना पहने शिवपूजा नहीं करनी चाहिये।

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण बिना रुद्राक्ष मालया।
पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्यफलप्रदः॥" (लिङ्गपु०)

रुद्राक्षका उत्पत्ति विषय संवत्सर-प्रदीपमें इस प्रकार लिखा है—त्रिपुरवधके समय रुद्रकी आंखोंसे आंसूकी बुंदें जमीन पर गिरी थीं, उन्हीं सब बुंदोंने पीछे रुद्राक्षरूप धारण किया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"त्रिपुरस्य बधे काले रुद्रास्याद्नोऽपतंस्तु ये।
अश्रुणो विन्दवस्ते तु रुद्राक्षा अभवन् भुवि॥"
(संवत्सरपु०)

रुद्राक्ष अनेक प्रकारका है। एक मुख, दो मुख, तीन मुखसे ले कर चौदह मुख तकके रुद्राक्षका उल्लेख देखनेमें आता है। एकमुख दो मुखवाला रुद्राक्ष अकसर देखनेमें नहीं आता। यही कारण है, कि रघुनन्दनने तिथितत्त्वमें सिर्फ पञ्चमुख रुद्राक्षके ही माहात्म्यका विषय लिखा है। चाहे किसी भी प्रकारका रुद्राक्ष क्यों न हो, पहननेसे मानवका मङ्गल होता है, सभी पाप जाते रहते हैं और सभी कामनाएं सिद्ध होती हैं। पांच मुंहवाला रुद्राक्ष मूर्त्तिमान् कालाग्निरुद्र है। इसके पहननेसे अगम्या गमन, अभक्ष्य भक्षण आदि सभी पाप नष्ट होते हैं।

"पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्नि र्नाम नामतः।
अगम्यागमनाच्चैव अभक्षस्य च भक्षणात्॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यः पञ्चवक्त्रस्य धारणात्॥"
(तिथ्यादितत्त्वधृत स्कन्दपु०)

३ नदीविशेष। ४ बल्ली दूर्वा, एक प्रकारकी दूब। ५ भूम्यामलकी, भुंइ आंवला। ६ उपजाति छन्दके एक भेदका नाम। इसके प्रथम और द्वितीय चरणमें जगण, तगण, जगण और अन्तमें दो गुरु तथा तीसरे और चौथे चरणमें दो तगण, फिर जगण और अन्तमें दो गुरु होते है।

मालाकण्ट (सं० पु०) मालाकाराः कण्टाः कण्टकाः अस्य। अपामार्ग, चिचड़ा।

मालाकण्ठ (सं० पु०) गुल्मभेद, एक गुल्मका नाम।

मालाकन्द (सं० पु०) माला गण्डमाला-नाशकः कन्दः। १ मूलविशेष, एक प्रकारका कन्द। पर्याय—आविलकन्द, त्रिशिखादला, ग्रन्थिदल, पादिकन्द, कन्दलता। वैद्यकमें इसे तीक्ष्ण, दीपन, गुल्म और गण्डमाला रोगको हरनेवाला तथा वात और कफका नाशक लिखा है।

मालाकार (सं० स्त्री०) माला एव माला स्वार्थे कन् ततष्टाप्। माला।

मालाकार (सं० पु०) मालां करोतीति कृ-अण्। १ एक वर्णसंकर जातिका नाम। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके अनुसार यह जाति विश्वकर्मा और शूद्रासे उत्पन्न हुई है; पर पराशरने इसे तेलिन और कर्मकारसे उत्पन्न बतलाया है।

"तैलिक्यां कर्मकाराच्च मालाकारस्य सम्भवः॥"
(पराशरपु०)

२ मालाकारक, माली। पर्याय—मालिक, मालाकार, पुष्पाजीवी, वनाच्चंक, पुष्पलाव, पुष्पलावक।

मालीके घरमें कौन कौन फूल रहनेसे बासी नहीं होता इस सम्बन्धमें मेरुतन्त्रका वचन इस प्रकार है—

"न पर्युषितदोषोऽस्ति तुलसीविल्व चम्पके।
जलजे वकुलेऽगस्त्ये मालाकारगृहेषु च॥" (मेरुतन्त्र)

तुलसी, बिल्वदल, चम्पक, वकुल, अगस्त्य तथा जलजात पुष्प ये सब मालीके घरमें रहनेसे पर्युषित दोषसे अपवित्र नहीं होते।

यदि हस्ता नक्षत्रमें शनि रहे, तो मालाकार आदिको पीड़ा होती है।

"हस्ते नापितचाक्रिकचौरभिषक्सचिकपट्टीपग्राहाः।
बन्धक्यः कौशलका मालाकारश्च पीड्यन्ते॥" (बृहत्सं० १०।६)

विशेष विवरण माली शब्दमे देखो।

मालाकारी (सं० स्त्री०) मालकारकी पत्नी। प्रेमिका कामिनियां प्रेमिकको अपना अभिप्राय जतानेके उद्देश्यसे भिक्षुकी, दासी, धात्री, मालाकारी आदिको दूतीरूपमें भेजती हैं।

"भिक्षुणिका प्रव्रजिता दासी धात्री कुमारिका रजिका।
मालाकारी दुष्टाङ्गना सखी नापिती दूत्यः॥"
(बृहत्सं० ७८।६)

मालकूटदन्ती (सं० स्त्री०) राक्षसीविशेष।

मालाक्का—भारत-महासागरस्थ द्वीपपुञ्जविशेष।

विस्तृत विवरण मलाक्का शब्दमें देखो।

मालागिरि (हिं० पु०) एक रंगका नाम। यह रंग टेसू और नासफलसे बनाया जाता है। सेर भर टेसूका फूल पानीमें आठ दिन तक भिगोया जाता है जिसे दिनमें दो बार चलाया जाता है। इसी प्रकार आध सेर नासफलकी बुकनी पानीमें भिगोई जाती है और प्रतिदिन दो बार चलाई जाती है। फिर आठ दिन बाद दोनोंके रंग पृथक् पृथक छान लिये जाते और फिर मिला दिये जाते हैं। फिर इसमें डेढ़ माशे रंग डाल कर दो बार कपड़ा रंगाते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। सुगंधके लिये इसमें कपूर कचरीकी जड़ भी पीस कर मिलाई जाती है। (वि०) २ मालागिरि रंगमें रँगा हुआ।

मालागुण (सं० पु०) १ मालाग्रन्थनसूत्र, माला गूथनेका सूता। २ कण्ठहार, गलेमें पहननेका गहना।

मालागुणा (सं० स्त्री०) एक प्रकारका असाध्य रोग जिसे लूता भी कहते हैं।

मालाग्रन्थि (सं० पु०) मालेव ग्रन्थिरस्य। मालादूर्वा, वल्ली नामक दूब।

मालाङ्क (सं० पु०) एक राजकवि। इन्होंने मालतीमाधव और वृन्दावन नामक ग्रन्थकी टीका लिखी।

मालातृण (सं० क्ली०) मालाकारं तृणम्। १ भूस्तृण, खवी। २ आन्ध्रदेशमें प्रसिद्ध रोहिल नामकी घास।

मालातृणक (सं० क्ली०) मालातृण स्वार्थे कन्। भूस्तृण, घटियारी नामकी घास। पर्याय—रौहिष, भूति, भूमिक कुटुम्बक, भूस्तृण, पालघ्न, छलातिच्छल। भावप्रकाशके मतसे पर्याय—गुह्यबीज, भूतोक, सुगंध। गुण—जामुनके जैसा उत्कटगंधयुक्त और भूमिलग्न। (भरत) २ आन्ध्रदेशमें प्रसिद्ध रोहिष तृण।

मालादीपक (सं० क्ली०) अर्थालङ्कारभेद। इसमें एक धर्मके साथ उत्तरोत्तर धर्मियोंका संबंध वर्णित होता है या पूर्व-कथित वस्तुको उत्तरोत्तर वस्तुके उत्कर्षका हेतु बताया जाता है। इस अलङ्कारको कविराज मुरारिदानने संकर अलङ्कार माना है और इसे दीपक तथा शृङ्खलालंकारका समुच्चय कहा है।

मालादूर्वा (सं० स्त्री०) माला इव ग्रन्थियुक्ता दूर्वा। दूर्वाविशेष, एक प्रकारकी दूब। इसमें बहुत-सी गाठें होती हैं। पर्याय—वल्लीदूर्वा, अलिदूर्वा, मालाग्रन्थि, ग्रन्थिला, ग्रन्थिदूर्वा, शूलग्रन्थि, वेल्लनी, ग्रन्थिमूला, रोहत्पर्वा, पर्ववल्ली, शिवाख्या। गुण—सुमधुर, तिक्त, शिशिर, पित्तदोषनाशक और कफ, वमि और तृष्णापह।

मालाधर (सं० त्रि०) १ मालाधारक, मालाधारी। २ सत्रह अक्षरोंके एक वर्णिक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें नगण, सगण, जगण फिर सगण और यगण तथा अन्तमें एक लघु और फिर गुरु होता है।

मालाधरवसु—श्रीकृष्णविजयके प्रणेता प्रसिद्ध वङ्गकवि। इनकी उपाधि गुणराज खाँ थी।

गुणराज खाँ देखो।

मालाघाट (सं० पु०) दिव्यावदानके अनुसार बौद्धोंके एक देवताका नाम।

मालाप्रस्थ (सं० पु०) एक प्राचीन नगरका नाम।

मालाफल (सं० क्ली०) रुद्राक्ष।

मालामणि (सं० पु०) रुद्राक्ष।

मालामनु (सं० पु०) मालामन्त्र।

मालामन्त्र (सं० पु०) मन्त्रविशेष।

मालामय (सं० त्रि०) बहु मालायुक्त।

मालामाल (फा० वि०) धनधान्यसे पूर्ण, संपन्न।

मालारिष्टा (सं० स्त्री०) पाटी लता। इसके पत्तोंकी गणना सुगंधि द्रव्यमें होती है।

मालालिका (सं० स्त्री०) मालां अलतीति अल्-ण्वुल्, टाप्, इत्वञ्च। पृक्का, असवरग।

मालाली (सं० स्त्री०) मालामलतीति अल्-अच्, ततो ङीष्। पृक्का, असवरग।

मालावती (सं० स्त्री०) एक संकर रागिनीका नाम। यह पंचम, हम्मीर, नट और कामोदके संयोगसे बनती है। कुछ लोग इसे मेघरागकी पुत्रवधू भी मानते हैं।

मालावत् (सं० त्रि०) माला विद्यतेऽस्य माला-मतुप। मालाविशिष्ट, मालाधारी।

मालाश्रेष्ठतमा (सं० स्त्री०) तुलसीवृक्ष।

मालि (सं० पु०) एक राक्षस। ग्रामणी गन्धर्वकी कन्या देववतीके गर्भसे राक्षस सुकेशके औरससे यह उत्पन्न हुआ था। (रामा० उत्त० ५ सर्ग)

मालिक (सं० पु०) मालास्य पण्यां (तदस्य पण्यम्। पा ४।४।५१) माला ठक, यद्वा मालाग्रन्थनं शिल्पमस्येति माला (शिल्पम्। पा ४।४।५५) इति ठक्। १ मालाकार, मालो। २ पक्षिविशेष, एक प्रकारकी चिड़िया। ३ रजक, धोबी। ४ द्राक्षामद्य, दाखकी शराब। ५ मल्लिकाविशेष, एक प्रकारकी चमेली। ६ मद्य, शराब। ७ सप्तला, सातला। ८ अतसी, अलसी।

मालिक (अ० पु०) १ ईश्वर, अधिपति। २ स्वामी। ३ पति, शौहर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालिक अम्बर—आबिसिनिया (हबसी) देशवासी एक मुसलमान। यह भारतमें आ कर दाक्षिणात्यके अहमद-नगर राजवंशके यहां नौकरी करने लगा। अपने असाधारण प्रतिभा बलसे यह थोड़े ही समयके अन्दर राज्यका एक प्रधान कर्मचारी हो गया। इसके कूट मन्त्रणाबलसे तथा युद्धकौशलसे बादशाह जहांगीरकी मुगल-सेनाको भी पीछे हटना पड़ा था।

अहमदनगरकी वीर रानी चांद बीबीके मरने पर १६०३ ई०में मुगल-सेनापतिने अहमदनगर पर चढ़ाई कर दी। इस समय निजामशाही राजगण हीनबल हो रहे थे। मालिक अम्बर कोई उपाय न देख राजधानीको लौटा और थिर्की (औरङ्गाबाद)-में राजधानी उठा ले गया। वहां रह कर वह अपने भुजबलसे निजामशाहीवंशकी गौरवरक्षा कर रहा था। इसके सुशासनसे दाक्षिणात्य वासी मुसलमान बड़े संतुष्ट हुए थे।

सम्राट् जहांगीरने निजामशाही वंशका उच्छेद करनेके लिये तथा मालिक अम्बरके शौर्यवीर्य पर ईर्षान्वित हो गुजरात, मालव और दाक्षिणात्यसे तीन सेनादल उसके विरुद्ध भेजा। दोनों पक्षमें घमसान लड़ाई छिड़ी। युद्धमें मुसलमानोंकी हार हुई। १६१० ई०में वह फिरसे अहमदनगर-सिंहासन पर अधिकार कर बैठा।

धीरे धीरे राज्य भरमें उसकी धाक जम गई। यही राज्यका सर्वेसर्वा हो गया। विदेशीको राजशक्ति परिचालनमें वद्धपरिकर देख दाक्षिणात्यवासी भारतीय मुसलमान विद्वेषवशतः इसे छोड़ कर चले गये।

इस प्रकार स्वजातीय शक्तिसे विच्युत हो मालिक अम्बर हीनबल हो गया। बचावका कोई उपाय न देख इसने मुगल-बादशाहकी अधीनता स्वीकार कर ली और अहमदनगर बादशाहको लौटा दिया। इसके बाद इसने पुनः अहमदनगरको कब्जा किया तथा मालवराज्य पर चढ़ाई कर दी। जहांगीरके प्रिय पुत्र खुर्रमसे हार खा कर यह राजसंसारसे अलग हो जानेको बाध्य हुआ। महाराष्ट्रकेशरी शिवाजीके पिता विख्यात शाहजी भोंसले इसके दाहिने हाथ थे।

मालिक अहमद—अहमदनगर राजवंशके प्रतिष्ठाता निजामउल मुल्कका लड़का। इसने १४९० ई०में जुन्नर जा कर स्वाधीनता अवलम्बन की थी। निजामशाही देखो।

मालिक-उत्-तुज्जार (मालिक हसन)—बसोराका रहनेवाला एक प्रसिद्ध वणिक् सम्राट्। यह अहमदशाह बाहमनीका एक आत्मीय और मित्र था। दाक्षिणात्यसे आ कर इसने माहिमद्वीपके शासनकर्त्ता कुतबको हराया और बलपूर्वक उक्त स्थान अधिकार कर लिया। गुजरातके सुलतान अहमदने इसका दमन करनेके लिये अपने लड़के जाफर खाँको भेजा तथा दीउ, गोआ आदिके नवाबोंके पास सहायतार्थ पत्र लिखा। सभी मिल कर ७०० जंगी जहाज ले जल और स्थलपथसे युद्धके लिये अग्रसर हुए। मालिक-उत्-तुज्जारने बहुतसे वृक्षोंको काट कर उपकूल भागमें ढेर लगा दिया और आप माहिमद्वीपके मध्यभागमें रहने लगा। जाफर खाँ और उसके सहयोगियोंने जलपथ और स्थलपथसे मालिक अम्बर पर आक्रमण कर दिया। अहमदशाह बाहमनीने मालिककी सहायतामें १०००० हजार सेना और कुछ घोड़े हाथी भेजे और आप जलपथसे भाग गये। जाफर खाँने गुजरात पर अधिकार किया।

मालिक-उस-शर्क—जौनपुर शर्की राजवंशका प्रतिष्ठाता। यह दिल्लीपति महमूद तुगलकका प्रधान मन्त्री था। लोग इन्हें ख्वाजा जहान कहा करते थे।

महमूदकी शासन-विशृङ्खलासे दिल्लीके अधीनस्थ शासनकर्त्ताओंने बागी हो स्वाधीनता अवलम्बन की। १३९४ ई०में ख्वाजा जहान मालिक उस शर्कीकी उपाधि ले कर पूर्वाञ्चलका शासन करने आया।

जौनपुर आ कर इसने अपनी राजधानी बसाई। थोड़े ही दिनोंके अन्दर इसने अपनेको स्वाधीन राजा बतला कर दिल्लीके अधीनता-पाशको तोड़ दिया। इसके दत्तकपुत्र मुबारक शाहसे ही शर्की वंशका सौभाग्यसूर्य उदय हुआ था।

मालिक काफुर—खिलजीवंशीय दिल्ली-सम्राट् अलाउद्दीनका एक प्रिय और विख्यात सेनापति। अलाउद्दीनके सेनापति आलुफ खाँने १२९७ ई०में गुजरातके अन्तर्गत अनहलवाड़ाके राजा कर्णरायको परास्त किया और युद्धके क्षतिपूरणस्वरूप उनसे समृद्धिशाली खम्भात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(काम्बे) नगर ले लिया। आलुफ खांने वहां पर हवसी वणिकोंसे काफुर नामक एक खोजा दास खरीदा। यही खोजा दास आगे चल कर अलाउद्दीनका प्रिय सेनापति मालिक काफुर नामसे प्रसिद्ध हुआ। आलुफखाँने जिसे धन दे कर खरीदा था, आज वही क्रीतदास आलुफके विरुद्ध खड़ा हो गया। काफूरने दिल्ली जा कर अलाउद्दीनको प्रसन्न किया और उसका प्रियपात्र बन गया।

इस समय दाक्षिणात्यके देवगिरिके राजाने तीन वर्ष तक दिल्ली-दरबारको कर नहीं दिया था। अलाउद्दीनने मालिक काफुरको एक लाख घुड़सवारके साथ उनके विरुद्ध भेजा। देवगिरि-राजने जब देखा कि वे काफुरके साथ युद्धमें ठहर नहीं सकते तब निर्दिष्ट राजकर और धनरत्न उपहार दे कर काफुरके साथ दिल्ली आये।

१३०६ ई०में इसने ओरङ्गलके हिन्दूराजाके विरुद्ध युद्ध यात्रा कर दी। किन्तु पहली बार काफुरकी सेना हार खा कर भाग गई। काफुर विशेष क्षतिग्रस्त हो दिल्ली लौट आया। उसी साल उसने सैन्य संग्रह करके दूने उत्साहसे पुनः ओरङ्गल पर चढ़ाई कर दी। इस बार ओरङ्गलराज-लङ्गर प्रबल प्रतापसे युद्ध करके भी परास्त हुए। युद्धके व्ययस्वरूप उन्हें प्रचुर अर्थ और निर्दिष्ट कर देना पड़ा। इस कामके लिये अलाउद्दीनने काफुरकी बड़ी तारीफ की थी। दूसरे वर्ष १३१० ई०में काफुरने कर्णाटके द्वारसमुद्रके राजाके विरुद्ध कूच किया। वह स्थान उस समय हयशाल बल्लालोंके अधीन था। दाक्षिणात्यमें इसके जैसा समृद्ध राज्य दूसरा कोई भी नहीं था। मालिक काफुरने मलबार उपकूलमें पहुंच कर उस घटनाको स्मरणीय रखनेके लिये वहां एक मसजिद बनवाई। काफुरने बड़ी आसानीसे द्वारसमुद्र पर अधिकार कर राजधानीको लूटा। पीछे सुप्रसिद्ध और अतुल ऐश्वर्यपूर्ण शिवमन्दिरको ढाह कर वहांका प्रकाण्ड धनभाण्डार लूट ले गया। आज भी उस भग्नमन्दिरमें उस समयके हिन्दूस्थापत्यका उज्ज्वल दृष्टान्त देखनेमें आता है। काफुर अपरिमित धनरत्न ले कर दिल्लीको लौटा। फेरिस्ताने लिखा है, कि काफुरको ९६००० मन सोना, ३१२ हाथी और २०००० घोड़े हाथ लगे थे। काफुरने दाक्षिणात्यका चिरसञ्चित अतुल धन भण्डार लूट कर दिल्लीके राजकोषको भर दिया था। दिल्ली इस समय सौभाग्यकी चरम सीमा पर पहुंच गई। बहुत-सी इमारतें और राजप्रासाद बनवाये गये। बुढ़ापा आ जानेके कारण अलाउद्दीनने प्रियतम काफुरको राज्यका कुल भार सौंप दिया।

काफुरने १३१२ ई०में दाक्षिणात्य पर आक्रमण किया और ओरङ्गलसे बहुत धन रत्न ले कर दिल्ली लौटा। अलाउद्दीनका अंतिम समय देख कर काफुरने उसके बड़े लड़के खिजिर खाँ तथा सादी खाँकी आंखें निकलवा कर उन्हें कैदमें डाल दिया। पीछे उसने अलाउद्दीनका एक जाली बिल दिखा कर सम्राट्के सात वर्षके चौथे लड़के उमुर खाँको सिंहासन पर बिठाया और आप सर्वसर्वा हो कर राजकार्य चलाने लगा। वह सम्राट्के तीसरे लड़के मुबारकका काम तमाम करनेका षड़यन्त्र कर रहा था। मुबारकके रक्षकोंको इस बातका पता लग गया और उन्होंने १३१७ ई०के जनवरी मासमें उसे मार डाला। काफुरने सिर्फ ३५ दिन राजप्रतिनिधिका काम किया था।

मालिक राजा फरुखी—खान्देशके फरुखीराजवंशका प्रतिष्ठाता। यह अपनेको खलीफा ओमारका वंशधर बतलाता था। प्रायः ३० वर्ष तक दिल्लीश्वरके अधीन खान्देशका शासक रह कर १३९९ ई०में इसने अपनेको स्वाधीन राजा घोषित किया। फरुखीराजवंश देखो।

मालिका (सं० स्त्री०) मालैव माला-कन्-टाप् अत इत्वञ्च। १ सप्तला, सातला। २ पुत्री। ३ ग्रीवालङ्कार, कण्ठहार। ४ पुष्पमाला। ५ नदीविशेष। ६ मुरा। द्राक्षा मद्य, अंगूरकी शराब। ७ चन्द्रमल्लिका, चमेली। ८ अतसी, अलसी। ९ पंक्ति। १० पक्के मकानके ऊपरका खण्ड, रावटी। ११ मालिन।

मालिकाना (फा० पु०) १ वह कर, दस्तूरी वा हक जो मालिक-अदना वा कब्जेदार मालिक ताल्लुकेदारको देते हैं। २ स्वामीका अधिकार या स्वत्व, मिलकियत। (क्रि० वि०) ३ मालिककी भांति, मालिककी तरह।

मालिकी (फा० स्त्री०) १ मालिक होनेका भाव। २ मालिकका स्वत्व।

मालित (सं० त्रि०) मालाकारमें परिवेष्टित।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालिन् (सं० पु०) माला पण्यत्वेनास्त्यस्य माला (व्रीह्यादिभ्यश्च। पा ५।२।११६) इति इनि। १ मालाकार, माली। २ राक्षस सुकेशके एक पुत्रका नाम (रामा-उ० ६ अ०) माला अस्थिमाला अस्त्यस्येति इनि। २ महादेव।

"व्यालरूपो गुहावासी गुहोमाली तरङ्गवित्।"

(महाभा० १३।१७।६)

अस्ति मालास्येति इनि। (त्रि०) ४ मालायुक्त, मालाधारी।

मालिनी (सं० स्त्री०) माला मुण्डमाला अस्त्यस्या अस्यां वा माला (व्रीह्यादिभ्यश्च। पा ५।२।११६) इति इनि ततो ङीप्। १ मातृकाभेद। मालिन् ङीष्। २ मालिक पत्नी, मालिन। ३ चम्पानगरीका एक नाम। ४ गौरी। ५ मन्दाकिनी, गंगा। ६ नदीविशेष, एक प्राचीन नदीका नाम। इसीके किनारे महर्षि कण्वका आश्रम था और यहीं पर मेनकाके गर्भसे शकुन्तला उत्पन्न हुई थी।

"जनयामास स मुनिर्मेनकायां शकुन्तलाम्।
प्रस्थे हिमवतो रम्ये मालिनीमभितो नदीम्॥"

(महाभा० १।७६।८)

७ अग्निशिखावृक्ष, कलियारी। ८ दुरालभा, जवासा। ९ वृत्तभेद। इसके प्रत्येक पादमें १५ अक्षर होते हैं जिन में पहले छः वर्ण, दशवां और तेरहवां अक्षर लघु और शेष गुरु होते हैं। १० अप्सराविशेष। ११ स्कन्दकी सात माताओंमेंसे एक माताका नाम।

"काकी च हलिमा चैव मालिनी वृंहिला तथा।
आर्या पलाला वैमित्रा सप्तैताः शिशुमातरः॥"

(महा० ३।२२३।१०)

१२ द्रौपदीका एक नाम।

"मालिनीत्येव मे नाम स्वयं देवि चकार सा।"

(महा० ४।८।२१)

१३ रौच्य मनुकी माताका नाम। (मार्कण्डेयपु० ९८।५-७) १४ श्वेतकर्णकी पत्नीका नाम। १५ मदिरा नामकी एक वृत्तिका नाम।

मालिनीतन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रभेद।

मालिन्द्य (सं० पु०) पर्वतभेद।

मालिन्य (सं० क्ली०) मलिन (बुञ्छ्रण् कठजिल्लसेनिरढञ्-ण्येति। पा ४।२।८०) इति सङ्काशादित्वात् ण्यप्रत्ययः; अथवा मलिनस्य भाव इत्यर्थे मलिन ष्यञ्। १ मलिनता, मैलापन।

"भोगयागेन मालिन्यं नेतुं मध्यगतेऽपि सः।
न शक्यते स्म पङ्केन प्रतिमेन्दुरिवामलः॥"

आकाश और पापके वर्णनमें कवि लोग मालिन्यका वर्णन करते हैं। अलङ्कार-शास्त्रमें इसे 'कविसमयख्याति' बतलाया गया है।

"मालिन्यं व्योम्नि पापे यशसि धवलता वर्ण्यते ह्रासकीर्त्योः।"

(साहित्यदर्पण)

२ अंधकार, अंधेरा। ३ कलुष। ४ कुप्रवृत्ति।

मालिमण्डन—सह्याद्रिवर्णित एक राजाका नाम।

मालियत (अ० स्त्री०) १ मूल्य, कीमत। २ संपत्ति, धन। ३ मूल्यवान् पदार्थ, कीमती चीज।

मालिया (हिं० पु०) मोटे रस्सोंमें दी जानेवाली एक प्रकारकी गांठ। इसका व्यवहार जहाजके पाल बांधनेमें होता है।

मालिया—बम्बईके काठियावाड़ विभागकी एक जमींदारी। यह अक्षा० २३° १′ से २३° १०′ उ० तथा देशा० ७° ४६′ से ७१° २′ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १०३ वर्गमील और जनसंख्या ९ हजारसे ऊपर है। इसमें १७ ग्राम लगते हैं। राजस्व डेढ़ लाख रुपयेके लगभग है। यहांके शासनकर्त्ताकी उपाधि ठाकुर है। वे राजपूत जातिके हैं। यहां ईख और रुई बहुतायतसे होती है।

मालिवन्त—एक ऋषि।

मालिवन्तक—सह्याद्रि-वर्णित एक राजा।

(सह्या० ३१।४९)

मालिवान—सह्याद्रिवर्णित तीन राजोंका नाम।

माली—पुष्प बेचनेवाली जातिविशेष। ये लोग प्रधानतः पुष्पमालाओंको गूथते और देवपूजा तथा विवाहादि शुभकर्मोंमें व्यवहार करनेके लिये मौर आदि पुष्पाभरण तय्यार कर बेचा करते हैं। पुष्पसम्भार संग्रहके लिये बङ्गालके माली अपने घरके निकट वाटिका तैय्यार कर पुष्प उत्पादन करते हैं।

यह जाति किसी किसी ग्रन्थमें अन्त्यज कही गई है, किन्तु यथार्थमें ऐसी नहीं है। बङ्गालके माली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवशाखके मध्य गिने गये हैं। इनका छुआ जल श्रेष्ठ ब्राह्मण भी पी लेनेमें आनाकानी नहीं करते। बङ्गालके माली अपनी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कहा करते हैं—उनका पूर्वपुरुष मथुराराजवंशके दरबारमें फूल दिया करता था। भगवान् कृष्ण कंसासुरको मारनेके लिये मथुरामें उपस्थित हो कर अपनी वेशभूषाका परिवर्त्तन करना चाहते थे ऐसे समय इन मालियोंका पूर्वपुरुष कंसका माली फूल ले कर कंसके घर जा रहा था; भगवान् श्रीकृष्णने इस मालीको बुला कर अपनी चूड़ामें फूल लगा देनेके लिये कहा। उन वाञ्छाकल्पतरु विष्णुके अवतार श्रीकृष्णकी अभिलाषा पूर्ण करनेके लिये उनकी चूड़ामें मालीने फूल लगा दिये। किन्तु फूलोंका बन्धन ढीला देख भगवान्ने सूतेसे बांध देनेका हुक्म दिया। मालीको उस समय कहीं सूता दिखाई नहीं दिया। चट उसने अपने यज्ञोपवीतसे सूता तोड़ कर कृष्णका आदेश पालन किया। यह देख कृष्णने तिरस्कार कर कहा—"हाय! तूने यज्ञोपवीतके विषयसे अनभिज्ञ होनेके कारण ऐसा अनर्थ किया है, इससे अब तुमको यज्ञोपवीत ग्रहण नहीं करना होगा। इस पापके प्रायश्चित्तस्वरूप तुम्हें शूद्रत्व भोग करना होगा।" उसी समयसे माली जाति यज्ञोपवीत-संस्कारशून्य हो शूद्रत्वको प्राप्त हुई है।

बङ्गाली मालियोंका विश्वास है, कि अन्यान्य उच्च श्रेणीके लोगोंकी तरह ये भी बादशाह जहांगीरके जमानेमें युक्तप्रदेशसे ही आ कर बस गये हैं। बङ्गालमें इनकी बहुत अधिक बस्ती देखी जाती है। इसका कारण यह भी हो सकता है, कि बङ्गाली भारतीय विलासप्रिय जातियोंमें एक है। इनके यहां फूलोंका व्यवहार अधिक देखा जाता है। इससे इनकी संख्या और प्रान्तोंसे समधिक दिखाई देती है। बङ्गालके मालियोंमें दो दल हैं। १ला फूलकटा माली—ये कई तरहके फूलोंके गहने बना कर बेचते हैं। दूसरा दुकानदार माली—यह दुकान पर माला, हार या फूलोंके गहने बना बना कर बेचा करते हैं। फूलकटा मालियोंमें तीन श्रेणियां हैं—राढ़ी, वारेन्द्र और अटघरिया। इनमें आलम्बायन, काश्यप, मौद्गल और शाण्डिल्य गोत्र देखा जाता है। अन्यान्य उच्च जातियोंकी तरह इनमें सगोत्र-विवाह नहीं होता।

डाक्टर वाथेजने लिखा है, कि ढाके आदिके मालियोंमें दो दल हैं। किन्तु इनमें विशेष पार्थक्य दिखाई नहीं देता। केवल विवाह आदिके रिवाजोंमें कुछ अलगाव दिखाई देता है। एक दल दूसरे दलमें यदि विवाह करता है, तब उसको दोनों दलके लोगोंको भोज देना पड़ता है। कन्यापक्षको अधिक दान दहेज नहीं देना पड़ता। बाल्यविवाह प्रचलित है, विधवाविवाह नहीं। पत्नीके चरित्रमें दोष दिखाई देने पर उसको जातिच्युत होना होता है और उसके स्वामीको भी प्रायश्चित्त करना पड़ता है।

बङ्गालके माली सभी वैष्णव हैं। गोसांइयोंसे मंत्रदीक्षा लेते हैं। चेचककी (वसन्तरोग) बीमारीको आराम करनेमें ये बड़े निपुण होते हैं। चैत्र महीनेके १ले दिनको महाधूमधामसे शीतला देवीकी पूजा करते हैं। इस समय सभी शीतला देवीकी पूजा अपने अपने घरोंमें किया करते हैं।

बिहारके माली बङ्गालके मालियोंसे विशेष उन्नत है। वहां ये कुम्हार, कोइरी और कहार आदिके बराबरीके हैं। इनके हाथका जल ब्राह्मण पीते हैं। पार्थक्य इतना ही है, कि इनमें विधवाविवाह प्रचलित है।

फिर युक्तप्रदेशके मालियोंकी उत्पत्ति बङ्गालकी तरह नहीं। इनका कहना है, कि एकबार पुष्प तोड़ते समय पार्वतीकी उंगलीमें कांटा चुभ गया। इस कांटेको शङ्करने निकाल कर रक्तस्रावको बन्द किया था। पार्वतीकी उंगलीसे जो रक्तपात हुआ था, उसी रक्तसे माली जातिकी उत्पत्ति हुई।

यह जाति युक्तप्रदेशमें इस समय सामाजिक उन्नतिमें अग्रसर है। वैदिक युगमें पुष्पोंका उतना आदर देखा नहीं जाता है। हां, जबसे पुष्पोंके सुखमा-सौन्दर्य्यको देख लोग विमोहित होने लगे है, तब (पुष्प-व्यवसायी जाति) माली जातिकी आवश्यकता हुई। पाश्चात्य कवि होमरके समकालमें यूनानमें पुष्पका आदर होने पर भी इसकी उपजका कुछ विशेष उल्लेख दिखाई नहीं देता।

यहां बहौलिया, भागीरथी, दिल्लीवाल, गोले, कर्पूरी, कनौजिया, और फूलमाली नामसे आठ प्रधान श्रेणी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। सिवा इसके स्थानविशेषमें देशवाली, पनवार, समरी, वहलियान मनोली, भवानी, क्षलि, मोहर, मेधियान, मूलान, पेमनियान, राजपूरिया, खोलिया, कोटा, कच्छ-माली, खटिया, हरदिया, माथुर, मेवाती, दिलवारी, फूल माली, सुराव, सैनी, कच्छी आदि कई दल हैं। इनमें भी सगोत्र-विवाह निषेध है। और तो क्या, कन्या यदि मातामही पितामहीकी गोत्रीय हो, तो उससे विवाह नहीं हो सकता, क्योंकि यह समाज विरुद्ध है।

बाल्यविवाह खूब होता है, किन्तु असमर्थके लिये कन्याओंका अधिक उम्रमें भी विवाह होता है। स्त्री जीवित रहने पर सालीसे विवाह भी कर सकता है। विधवा और छोड़ी हुई पत्नीके 'सगाई धरीचा' प्रथाके अनुसार पुनर्विवाह करनेमें कोई रुकावट नहीं। कहीं कहीं देवरसे भी विवाह होता है।

युक्तप्रदेशके माली शाक्त हैं। देवी, काली, महाकाली आदि शक्तिकी पूजा ये बड़ी धूमधामसे करते हैं। सिवा इनके पांचपीर, नरसिंहदेव और अघोरनाथकी भी पूजा होती है। फर्रुखाबादके माली कुरैना नामक ग्राम्यदेवताकी पूजाके समय बकरेकी बलि चढ़ाया करते हैं। विवाह और जातकर्ममें अधिक इन ग्राम्यदेवताकी पूजा होती है।

यहां भी बङ्गालकी तरह शीतलादेवीकी पूजाके पूजारी यही हैं। पहले यही बालक-बालिकाओंको टीका देते थे। चेचककी बीमारीको दूर करनेके लिये यह बड़े सिद्ध-हस्त हैं। अब भी ये जहां बीमारी कुछ गड़बड़ी दिखाई देती है, वहां ये बुलाये जाते हैं। यह आ कर एक घरमें रोगीके चारपाईके निकट आसन जमा कर बैठ जाते और विधिविधानसे शीतला माताकी पूजा करते हैं। सैकड़े ८५ ऐसे रोगी इनके द्वारा आराम होते देखे जाते हैं। जिन रोगियोंकी आशा बिलकुल नहीं रह गई है, वैसे वैसे रोगियोंको चङ्गा कर देना इन्हीं लोगोंका काम है। हिन्दू समाजमें इस जातिका स्थान उतना हेय नहीं। बारातमें यह कहीं कहीं मशालची यानी मशाल दिखानेका काम करते हैं। और भी ये हो बनाया करते हैं। ये पत्तल भी बनाते हैं। ब्राह्मण और कायस्थोंके यहांका पका भोजन (घृतपाकी भोजन या हा पका भोजन कहा जाता है) करते हैं।

प्राचीन कहानियोंमें माली-पुत्र ही अनेक समय नायकरूपसे वर्णित दिखाई देता है। युक्तप्रदेशमें यह कहावत प्रचलित है,—

"माली चाहे बरसना धोबी चाहे धूप।
साहू चाहे बोलना चोर चाहे चूप॥"

किस्से कहानियोंमें मालीकी अपेक्षा मालिनकी ख्याति अधिक है। ये मालिनें खूबसूरतीमें मशहूर हैं। धूर्त्त भी ये गज़ब की होती है। चाणक्यने भी कहा है,—स्त्री धूर्त्ताश्च मालिनी। ये बड़े बड़े घरोंमें बेरोक टोक फूल देनेके लिये आया जाया करती हैं। इनका कार्य भी चातुर्यपूर्ण होता है।

बम्बईप्रदेशमें विभिन्न श्रेणीके मालियोंका वास है। ये साधारणतः हल्दीमाली, जीरामाली, लिङ्गायत-माली और फूलमाली नामसे परिचित हैं। फूलमाली और कदूमाली दोनों एक स्थानमें बैठ कर खा सकते हैं किंतु परस्पर पुत्रकन्याका विवाह नहीं हो सकता।

माली (हिं० पु०) १ वाल्मीकीय रामायणके अनुसार सुकेश राक्षसका पुत्र। यह माल्यवान् और सुमालीका भाई था। २ राजीवगण नामक छन्दका दूसरा नाम। (फा० वि०) २ आर्थिक, धनसंबंधी।

मालीगौड़ (हिं० पु०) मालवगौड़ देखो।

मालीद (अं० पु०) एक धातुका नाम। यह चाँदकी तरह सफेद और चमकदार होती है। इसमें विशेषता यह है, कि यह धातु चाँदीसे अधिक कड़ी होती और बहुत तेज आँचमें गलती है। इसका अटवी भार ९६ होता है। इसका क्रोमियम, टंगस्टेन और यूरेनियमसे रासायनिक संबंध है और उन्हींकी तरह इससे लाम्ल-जित् बनता और क्षारके गुणोंको धारण करता है। यह सलफेटके रूपमें मिलता है।

मालीदा (फा० पु०) १ मलीदा, चूरमा। २ एक प्रकार-का ऊनी कपड़ा। यह बहुत कोमल और गरम होता है। यह विशेषतः काश्मीर और अमृतसरमें बनता है। मालीदेकी गिनती उत्कृष्ट ऊनी वस्त्रोंमें की जाती है।

मालीनगर—दरभङ्गा जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २५° ५६′ ३०″ उ० तथा देशा० ८५° ४२′ ३०″ पू० गण्डकी नदीके उत्तर किनारे अवस्थित है। यहां १८४४ ई०का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनाया हुआ एक बड़ा शिव-मन्दिर है। यहां रामनवमीमें एक बड़ा मेला लगता है जिसमें बहुतसे यात्री समागम होते और तरह तरहके वाणिज्य द्रव्यकी आमदनी होती है।

मालीय (सं० त्रि०) १ मालासम्बन्धीय। २ मालाकार सम्बन्धीय, मालीका।

मालु (सं० पु०) मल् (त्रो रश्च लः। उण् १।५) इति बाहुलकात् ञुण्। १ पलता, एक लताका नाम जो पेड़ोंमें लिपटती है। २ नारी, स्त्री।

मालुक (सं० पु०) १ कृष्णार्जक, काली तुलसी। २ एक प्रकारका मटमैले रंगका राजहंस।

मालुकाच्छद (सं० पु०) अश्मातक वृक्ष, बहेड़ा।

मालुद (सं० पु०) बौद्ध मतानुसार एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

मालुधान (सं० पु०) मालु मरणं विदधातीति धा-ल्युः। मातुलाहि, एक प्रकारका सांप। २ आठ नागोंमेंसे एक नागका नाम। २ महापथ।

मालुधानी (सं० स्त्री०) एक लताका नाम।

मालूक (सं० पु०) कृष्णार्जक, काली तुलसी।

मालूधानी (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी लता।

मालूम (अ० वि०) ज्ञात, जाना हुआ।

मालूर (सं० पु०) मां परेषां वृक्षान्तराणां श्रियं प्रभावं लुनातीति लुञ् बाहुलकात् रः। १ विल्व वृक्ष, बेलका पेड़।

"स वारनारी-कुचसञ्चितोपमं।
ददर्श मालूरफलं पचेलिमम्॥" (नैषध १।९४)

इसका संस्कृत पर्याय—बिल्व, महाकपित्थ, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, माङ्गल्य, महाफल। भावप्रकाशके मतसे विल्व, शाण्डिल्य, शैलूष और श्रीफल। २ कपित्थ वृक्ष, कैथका पेड़।

मालूर—१ महिसुर-राज्यमें कोलर जिलेका एक तालुक। भू परिमाण १५४ वर्गमील है।

२ कोलर जिलान्तर्गत एक गांव। पहले इसका नाम मल्लिकपुर था। १६वीं सदीमें यह स्थान हरकोटके गौड़ सरदारके अधिकारमें रहा। अनन्तर बीजापुरके मुसलमानोंके अधीन रह कर मराठोंके कब्जेमें आया। पीछे हैदर अलीके समयमें महिसुरके अन्तर्भुक्त हुआ।

मालूरमूल (सं० क्ली०) विल्वमूल, बेलकी जड़।

माले (माली)—राजमहल शैलमालावासी एक पहाड़ी जाति। जातितत्त्वविदोंने ओरावन जातिके साथ इनका सादृश्य और सामंजस्य निरीक्षण कर इन्हें द्राविड़ीय शाखाभुक्त बतलाया है। कहीं कहीं ये माल, समरिया माले, शवर पहाड़िया और सन्धि नामसे परिचित हैं। इनकी आकृति और प्रकृतिगत सामञ्जस्यकी ओर नजर दौड़ानेसे ये स्पष्टतया वलकलधारी वनवासी शवर जातिसे मिलते जुलते हैं।

ये छोटे कदके, घोर काले तथा हट्टे कट्टे होते हैं। इनकी नाक हब्शी जाति-सी चिपटी होती है। इनकी कथित भाषामें भी आनुनासिक स्वरकी अधिकता देखी जाती है।

वनमण्डित पर्वत-वृक्ष पर वास करनेके कारण अन्यान्य पर्वतवासी जातिकी तरह ये दुर्द्धर्ष थे। जिस समय पठान और मुगल-राजाओंने बंगालमें मुसलमानी विजय-पताका उड़ाई थी,—जब राजमहलमें मुसलमान नवाबोंका राजपाट कायम हुआ था, उस समय यही माले जाति अपनी वन्य स्वाधीनताकी रक्षा करनेमें समर्थ हुई थी। किन्तु ये आपसमें झगड़ा लड़ाई कर बलहीन हो रहे थे।

प्रभूत प्रतिप्रत्तिशाली मुगल शक्तिकी शासनशृङ्खलाके अधीन न होते हुये भी इन्होंने उस वन्य वर्व्वरतामें भी शासनकार्यकी आवश्यकता देखी। पहाड़के नीचे समतलक्षेत्रमें जो सब जमींदार रहते थे उन्हींके शासनकार्यको प्रणाली लक्ष्य कर अपनी शासन-प्रणाली ठीक कर ली थी। प्रत्येक पर्वतके एक एक तप्पे यानी परगनेमें एक या दो सरदार नियुक्त रहते थे। इन सरदारोंके अधीन प्रत्येक गांवमें एक एक मांझी गाँवका सामाजिक और राजनैतिक कार्य चलाता था।

सरदारगण साधारण मालेकी अपेक्षा बहुत कुछ सुसभ्य थे। पहाड़ी लोग समतलक्षेत्रमें उतर कर लूट-पाट न करे इसके लिये उन्हें पार्श्ववर्त्ती जमीदारोंसे जागीर मिलती थी। इस जागीरमें रह कर वे जो अर्थ उपार्जन करते उससे उन्होंने पहाड़ी रास्तोंमें एक एक थाना बनाया था। उधर जमींदार या सामन्तराज भी पहाड़ी लोगोंके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आक्रमणसे बचनेके लिये आस पासमें चौंकीदार रखते थे।

हर साल दशहरा उत्सवके दिन माले-सरदारगण अपने अपने अधीनस्थ मांझियोंको साथ ले समतल-क्षेत्रमें उतरते थे। उस समय जमींदार पुनः शान्तिरक्षा-का बन्दोबस्त कर उन्हें भरपूर भोजन कराते और बादमें एक एक नयी पगड़ी दे कर उन्हें विदा करते थे।

बहुत दिनोंसे इस प्रकार शासनकार्य निर्वाहित होनेके कारण पार्वत्य माले तथा समतलदेशवासी जनसाधारण-के बीच शान्ति और सौहार्द स्थापित हो गया था। किन्तु १८वीं सदीके मध्य भागमें जमींदारोंने विश्वास-घातकता कर इनकी स्वाधीन छीननेकी चेष्टा की। उन्होंने वार्षिक भोजके दिन आये हुए बहुतसे सरदारों और मांझियोंको अचानक मार डाला। तभीसे इन्होंने जमीं-दारों पर विरक्त हो कर गिरिसंकटोंकी रक्षा-करना छोड़ दिया। इस समयसे माले जातिने उपद्रव मचाना शुरू कर दिया। वे दलके दल समतल-क्षेत्रमें उतर वहांकी प्रजाओंका सर्वस्व लूट ले जाते थे। १७७० ई० तक जमींदारगण अपनी अपनी प्रजाओंको इनके उपद्रवसे किसी तरह बचा सके थे। किन्तु उसी साल दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ जिससे चौंकीदार अपना अपना काम छोड़ कर वहांसे भागे। साथ साथ माले जातिका भी अत्याचार दूना बढ़ गया। इन्होंने क्रमशः राजमहलके पार्वत्यप्रान्तसे गंगाके किनारे तकके सभी गांवों और नगरोंमें आग लगा कर लूटा। इनके पड़ोसी लूटके माल पानेकी आशासे इन्हें समय समय पर सहा-यता पहुंचाया करते थे। इनका औद्धत्य देख कर जमीं-दार भी डर गये थे। वणिकोंको रातमें गंगासे जहाज पर पण्यद्रव्य ले जानेका साहस नहीं होता था। ऐसी अवस्थामें उस प्रदेशमें एक प्रकार अराजकता फैल गई थी।

मुसलमान नवाबोंकी तरह अङ्गरेज-सरकार भी इनका दमन करनेके लिये तैयार हो गई। १७७२ ई०में कप्तान ब्रकके अधीन वनयुद्धकुशली एक पदातिक सेना-दल माले-डकैतोंके विरुद्ध भेजा गया। अङ्गरेज-सेना-दल उस दुरारोह पर्वत पर चढ़ा, पर उन छिपे हुए माले लोगोंका कुछ भी न कर सका। उल्टे उनके विषाक्त बाणोंसे कितने अङ्गरेज-योद्धा प्राण खो बैठे। इस प्रकार वृथा सेनाक्षय होते देख अङ्गरेज सेनापति मालेजातिको बिना वशीभूत किये ही लौट आये।

इस दारुण अराजकताके समय अङ्गरेज-पत्रवाहक-गण (Mail runners) राजमहल शैलमालाके नीचे हो कर तेलियागड़ी सकंटमें जाया करते थे। विद्रोही माले लोगोंने हिताहित ज्ञानशून्य हो कुछ पत्रवाहकोंको मार डाला। इस पर अङ्गरेज-सरकार उन्हें समूल नष्ट करनेके लिये पहलेसे दूनी तैयारी करने लगी। इस समय राजमहलके सेनाध्यक्ष कप्तान ब्राउनकी सलाहसे सरदार और मांझियोंको पूर्ववत् अपना अपना पद और अधिकार दिया गया। अङ्गरेज-सरकार डफैतोंका दमन करनेके लिये सीमान्तवासी सरदारोंकी धनसे सहायता करनेको राजी हो गई। उसी साल ब्राउन साहबकी प्रार्थना गवर्मेण्ट द्वारा अनुमोदित होने पर यथारीति कार्य आरम्भ हुआ। १७७९ ई०में माले लोगोंका अधि-कृत पार्वत्यप्रदेश भागलपुरके तात्कालिक कलक्टर मि० अगष्टस क्लिभलाण्डके शासनाधीनमें रखा गया था। क्लिभलाण्डके सदय व्यवहारसे अधिकांश सरदार और मांझी थोड़े ही समयके अन्दर उनके वशीभूत हो गये। उन्होंने वारेन हेष्टिंगसको एक पत्र लिखा, कि वे माले-जातिसे एक सेनादल संगठन करें। तदनुसार १७८० ई०में तीरधारी माले-सेनादल गवर्मेण्टके खर्चसे खड़ा किया गया। उस सेनादलका नाम पड़ा 'दि भागलपुर हिल रेञ्जर्स'। लेफ्टेनाण्ट शाव (Lieut shaw)ने उन लोगोंके नायक हो कर उन्हें कूच कवायद सिखलाई। उसी साल इस सेनादलने एक पहाड़ी विद्रोहका दमन कर अच्छी ख्याति पाई थी। १८५७ ई०के गदरके बाद इस दलको पुरस्कार मिला था।

इस सेनादलके मध्य जो अपराध करता था उसका विचार करनेके लिये मि० क्लिभलाण्डने एक शासन-समिति संगठन की। वह समिति पहले सामरिक विचार-सभा और पीछे पार्वत्यसमिति कहलाने लगी। क्लिभ-लाण्डके परामर्शानुसार वह समिति वर्षमें दो बार बैठती थी। उसकी नियमावली १७९६ ई०को १ली धाराकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गठित हुई। पीछे यथाक्रम १८२७ ई०की १ली और १८७१ ई०के २७वीं धारासे उसका संस्कार और परिवर्त्तन हुआ। स्थानीय मजिस्ट्रेट सामान्य दोषके लिये माले पर अभियोग नहीं ला सकते।

१७८३ ई०में क्लिमलाण्डने माले लोगोंको काबूमें रखनेके लिये उन्हें कुछ जागीर दी। उन्होंने यह भी कहा था, कि सरदार लोग दो दो महीनेके बाद यदि अपने पहाड़ी-गुहावासको छोड़ कर समतलक्षेत्र पर न आयेंगे, तो उनकी वृत्ति बंद कर दी जायगी। किन्तु मालेने इसकी जरा भी परवाह न की और वे कभी भी विना कामके समतलक्षेत्र पर न उतरे। इस समय पश्चिमसे संथाल लोग यहां आ गये। अब तो इन्हें और भी अपना गुहावास छोड़नेका साहस नहीं हुआ।

माले जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें एक किम्वदन्ती इस प्रकार प्रचलित है,—भगवान्ने सात भाइयोंको पृथ्वी पर वास करनेके लिये भेजा। यहां आ कर उन्होंने एक बड़े भोजकी तैयारी की। एक एकने एक एक खाद्य द्रव्य ले लिया। उसी भक्ष्य वस्तुसे उनके वंशधरोंकी जाति निर्दिष्ट हुई। इनमें बकरेके मांस खानेवालेसे हिन्दू, सूअरको छोड़ और सभी पशुओंके मांस-भक्षकसे मुसलमान, सूअरके मांस-भक्षकसे किरात तथा कदर आदि निकृष्ट जातिकी उत्पत्ति हुई। सातोंमें जो बड़ा था वह बीमार होनेके कारण कुछ भी खा न सका। उसके लिये एक दूसरे बरतनमें सभी प्रकारका मांस और खाद्य द्रव्य रखा गया था। शेष छः भाइयोंने उसे सर्वभक्षक जान कर पर्वत पर छोड़ दिया और आप अपने अपने स्थानको रवाना हुए। इस प्रकार जातिच्युत हो बड़ा भाई पर्वत पर रहने लगा। उसीके वंशधर 'माले' कहलाये। हो और मुण्डा जातिमें भी इसी प्रकारका एक प्रवाद है। इससे साबित होता है, कि मालेगण हिन्दूजातिके संस्पर्शमें आ कर सभ्यता सीखनेके बाद अपनेको हिन्दू, मुसलमान, अंगरेज आदि सुसभ्य जातिके मुकाबलेके तथा एक पिताके सन्तान बतलाते हैं।

ये लोग ओरावन जातिकी तरह आदान प्रदान करते हैं। विवाहमें गोत्र वा दल पर विचार नहीं किया जाता। कन्या जब सयानी होती तभी वह अपनी इच्छासे पतिको चुनती है। विवाहसे पहले यदि कन्याके गर्भ रह जाय, तो इस दुष्कर्मके प्रायश्चित्तस्वरूप उसे एक जीवकी बलि देनी होती है, पीछे उसका विवाह दिया जाता है।

विवाह-सम्बन्ध स्थिर करनेके लिये एक घटक रहता है। जब कन्याका पण ठीक हो जाता है, तब विवाहका एक शुभ दिन स्थिर होता है। बारात अवस्थानुसार सजाई जाती है। वरपक्षको अपने साथ कन्या पण और विवाहभोजके लिये बकरा ले जाना होता है। जरूरत पड़ने पर घटकके हाथ पहले ही कन्यापण मंगा लिया जाता है।

विवाह-स्थलमें वर पूर्वमुख और कन्या पश्चिममुख बैठाई जाती है। इसके बाद कन्याकर्त्ता आ कर अपनी कन्याका हाथ वरके हाथ पकड़वा देता है। पीछे कन्याको स्वामीके प्रति सदय और सरल व्यवहार करनेका उपदेश दिया जाता। अनन्तर घटक आता और वरके दाहिने हाथको कनिष्ठांगुलिसे सिन्दूर ले कर कन्याकी माँग पर दिलाता है। कन्या भी अपनी अंगुलिसे वरके कपाल पर सिन्दूरका टीका लगाती है। आखिर तोपध्वनि करके विवाहकार्य शेष किया जाता है। विवाह हो जाने पर कन्याकर्त्ता बारात तथा अपने ज्ञाति-वर्गको खिलाता है।

इन लोगोंमें विवाह-बंधन तोड़नेका नियम है। स्त्रीके बांझ, कुलटा आदि होने पर अथवा चाहे जिस कारणसे हो, विवाह-सम्बन्ध तोड़ा जा सकता है। पञ्चायत यदि स्त्रीमें कोई दोष देखे, तो स्वामीको पूर्व प्रदत्त कन्यापण वापिस मिलता है। किन्तु स्वामी यदि अपनी स्त्रीका दोष प्रमाणित न कर सके तो पणका रुपया जब्त हो जाता है। स्त्री यदि अपनी इच्छासे स्वामीको छोड़ दे, तो उसका पिता रुपया लौटा देनेको बाध्य है। विवाह-बंधन तोड़नेके समय स्त्री एक सखुपके पत्ते अथवा एक सूतेको दो टुकड़े कर देती है। बादमें वह अपने सिर पर एक घड़ा जल डाल कर चली जाती है। इस प्रकार विवाह-बंधन टूट जाने पर वह फिरसे विवाह कर सकती है।

ये लोग मूर्त्तिपूजक हैं। असभ्य जातिके प्रसिद्ध पशुचार व्रतका अवलम्बन कर नाना देवयोनिकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपासना करते हैं। प्रत्येक गृहस्थके घरके सामने एक काठका टुकड़ा गाड़ा रहता है। कृषिकार्यके समय तथा कोई मुशीबत आने पर उस काठके टुकड़ेमें सिन्दूर, तेल आदि लगाया जाता और बकरे, मुर्गे आदिको बलि दे कर उसकी पूजा की जाती है। पूजाके समय गांवके लोग वहां अधिक संख्यामें जमा होते हैं। इनका पुरोहित सरदार ही होता है। वह काठकी पुतली धर्मके गोसांई (सूर्यदेव)-रूपमें पूजी जाती है। शराब चुआनेके समय अथवा गांवमें बाघ, संक्रामक रोग आदि उपद्रव उपस्थित होने पर एक खण्ड काले पत्थरको वृक्षके नीचे रख कर ये लोग रक्षीदेवताकी पूजा करते हैं। अलावा इसके १० ग्रामके अधिष्ठात्रीरूपमें चालनाद-देवताकी पूजा होती है। उक्त प्रतिमूर्त्ति भी काले पत्थरकी बनी होती है। चालनादिकी पूजाके समय बकरे, सूअर और गायकी बलि दी जाती है। इस प्रकार बाँस, पत्थर और काठके टुकड़ेको ले कर ये पौ गोसाँई, द्वार गोसांई, कुलगोसाँई, गुमो गोसाँई, चामदा गोसाँई आदिकी पूजा करते हैं। सभी पूजाओं चामदा गोसाँईकी पूजा बड़ी धूमधामसे होती है।

गांवके मोड़ल (सरदार)-को छोड़ कर नाइया, देमानो और चेरिन भी किसी किसी काममें इनके पुरोहित होते हैं। इन सबोंमें देमानो ही अधिकतर शक्ति-सम्पन्न और जनसाधारणके पूजनीय हैं। उनका विश्वास है, कि ये ऐश्वरिक शक्तिसे शक्तिमान् हैं। भूत भगाने और रोग झाड़नेमें ये लोग बड़े निपुण हैं। ये गलेमें कौड़ीकी माला पहनते और हल्दी नहीं खाते हैं।

ये लोग मृतदेहको गाड़ते हैं। सांप काटने अथवा किसी वीभत्स व्यापारसे मृत्यु होने पर लाश जंगलमें फेंक दी जाती है। उनका विश्वास है, कि मुर्देको जमीनमें गाड़नेसे वह प्रेत बन कर गाँवमें ऊधम मचा सकता है। मृताशौचके पाँचवें दिन ये आत्मीयवर्गको भोज देते हैं। इन लोगोंमें भी षाण्मासिक और वात्सरिक श्राद्धकी विधि है। किन्तु वह हिन्दूशास्त्रानुमोदित नहीं है। इस षाण्मासिक वा वार्षिक पिण्ड दानके समय देमानो मृतव्यक्तिकी तरह अपनेको सजा कर मृतव्यक्तिके आत्मीयसे अभिलषित वस्तु मांगता है। इनका विश्वास है, कि देमानो प्रसन्न हो कर जो वस्तु मांगेगा उसीसे उस मृत व्यक्तिकी प्रेतात्मा तृप्त होगी। इसके बाद जनसाधारणके साथ देमानोको भी खिलाया जाता है।

पर्वतके शिखर पर प्रायः समतल स्थान देख ये लोग बांसके टुकड़ोंसे घर बनाते हैं। गाय, सूअर आदि पशुओंका निन्दित मांस तथा दूसरेका जूठा खानेमें ये लोग जरा भी घृणा मालूम नहीं करते।

मालेगाँव—१ बम्बईके नासिक जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० २०° २०´ से २०° ५३´ उ० तथा देशा० ७४° १८´ से ७४° ४६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ७७७ वर्गमील है। इसमें १ शहर और १४६ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या लाखके करीब है। इसका उत्तर-प्रदेश पर्वतमय और दक्षिण प्रदेश समतल है। यह स्थान बहुत स्वास्थ्यकर है। बीचमें गिरना नदी कई शाखा प्रशाखामें विभक्त हो गई है। वर्ष भरमें यहां औसतसे २० इञ्च वृष्टिपात होता है। पिण्डारी-युद्धके समय मालेगाँव अरबसेना द्वारा अधिकृत हुआ था। अंगरेज-सेनापति कर्नल डावेलने १८१८ ई०में नगर और दुर्ग पर कब्जा किया। किन्तु युद्धमें २०० अंगरेजी सेना मारी गई थी। अरब लोग युद्धमें हार खा कर जलपथसे भागे। नरुशङ्कर नामक एक अरब-सरदारने १७४० ई०में यहांका दुर्ग बनवाया था। कोई कोई कहते हैं, कि दिल्लीश्वरके भेजे हुए एक स्थपतिसे उक्त दुर्ग बनाया गया था।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २०° ३३ उ० तथा देशा० ७४° ३२´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २० हजारके करीब है। १८६३ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें दो सूत कातनेके कारखाने हैं। अलावा इसके एक सब-जजकी अदालत, दो अंगरेजी स्कूल और एक अस्पताल भी है।

मालेया (सं० स्त्री०) मल ढक् ततष्टाप्। स्थूलैला, बड़ी इलायची।

मालेरकोटला—पञ्जाब गवर्मेण्टके अधीन एक करद राज्य। यह अक्षा० ३०° २४´ से ३०° ४१´ उ० तथा देशा० ७५° ५२´ से ७६° १६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६७ वर्गमील और जनसंख्या ८० हजारके लगभग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इसके उत्तरमें लुधियाना जिला तथा बाकी तीन दिशाओंमें पतियाला राज्य विस्तृत है।

इस स्थानके नवाब अफगान-वंशके हैं। इनके पूर्व पुरुष मुगलबादशाहके अधीन सरहिन्दके शासनकर्त्ता थे। पीछे १८वीं शताब्दीमें मुगल-साम्राज्यके अवसानके समय वे लोग धीरे धीरे स्वाधीन हो गये। १७३२ ई०में मालेरकोटलाके नवाब जमाल खाँ जालन्धर दुआबमें अवस्थित बादशाही सेनाके साथ मिल कर पतियालाके सिखराज आलासिंहके विरुद्ध खड़े हो गये। पीछे १७६१ ई०में जमाल खाँने अहमदशाह दुर्रानीकी ओरसे सिखोंके साथ युद्ध किया। इस पर अहमदशाहने संतुष्ट हो कर जमाल खाँको सरहिन्दका शासनकर्त्ता बनाया। इसके लिये जमाल खाँके वंशधरोंको निकटवर्त्ती सिखोंका बहुत अत्याचार सहना पड़ा था। आखिर जमाल खाँ भी सिखोंके साथ युद्धमें मारे गये। अनन्तर उनके लड़कों-में सिंहासन ले कर झगड़ा खड़ा हुआ। अन्तमें भीखन खाँ सिंहासन पर बैठे।

अहमदशाहके भारतवर्षसे चले जाने पर पतियालाके राजा अमरसिंहने भीखन खांके राज्य पर आक्रमण कर दिया। भीखनने अपनेको अमरसिंहके साथ युद्ध करने-में असमर्थ देख सन्धि कर ली। संधिके बादसे भीखन खाँने कई बार सिखोंको मदद पहुंचाई थी। इस प्रत्युप-कारमें पतियालाके राजा साहेबसिंहने मालरेकोटलाके नवाबका पक्ष ले बहादुर शाहके विरुद्ध युद्ध किया था। पीछे १७९४ ई०में नानकके वंशधर बेदि साहबसिंहने मालेरकोटलाके नवाबोंके साथ युद्ध ठान दिया। आखिर दोनोंमें मेल हो गया। १७८८ ई०से मराठोंको इस प्रदेश-में तूती बोलने लगी। जब अंगरेज सेनापति लार्ड लेकने १८०५ ई०में होलकरके विरुद्ध युद्धयात्रा की, तब मालेर कोटलाके नवाब अंगरेजोंकी ओरसे लड़े थे। १८०६ ई०में रणजित्सिंहके मालेरकोटला जीतनेका उद्योग करने पर अंगरेजी-सेनाने नवाबकी सहायता की थी। किन्तु अंगरेज दूत मेटकाफके अनुरोध करने पर भी रणजित् सिंहने १८०८ ई०में मालेर-कोटलाके नवाबसे १ लाख रुपया बलपूर्वक वसूल किया। पीछे कर्नल अक्टरलोनीने १८०९ ई०में रणजितके साथ संधि करके मालेर-कोटला के नवाबकी सहायता की।

अनन्तर महम्मद इब्राहिम खाँ १८७७ ई०में राज-तख्त पर बैठे। इनका जन्म १८५७ ई०में हुआ था। दुर्भाग्यवशतः उनका दिमाग खराब हो गया, इस कारण राजकार्य अधिक दिन चला न सके। पीछे उनके लड़के महम्मद अहमद अली खां राजसिंहासन पर अधिरूढ़ हुए। ये ही वर्त्तमान नवाब हैं। इन्हें ११ सलामी तोपें मिलती हैं। इस राज्यमें मालेर-कोटला नामक १ शहर और ११५ ग्राम लगते हैं। नवाबकी सेनामें ५० घुड़-सवार और ४४० पैदल सिपाही, ८ कमान और १६ गोलन्दाज हैं। यहां एक ऐङ्गलो-वर्ना-क्युलर हाई स्कूल और तीन प्राईमरी स्कूल हैं।

२ उक्त राज्यका एक शहर। यह अक्षा० ३०° ३२ उ० तथा देशा० ७५° ५९' पू०के मध्य विस्तृत है तथा लुधियाना शहरसे ३० मील दक्षिण पड़ता हैं। जनसंख्या २० हजारसे ऊपर है। शहर दो भागोंमें विभक्त है। मालेर और कोटला; लेकिन हालमें ही उसके बीचमें मोतीबाजार स्थापित हो जानेसे दोनों एकमें मिला दिये गये। पहला भाग मालेर-कोटलावंशके प्रति-ष्ठाता सदरुद्दीन द्वारा १४६६ ई०में और दूसरा १६५६ ई०-में वयाजिद खाँ द्वारा बसाया गया था। बारक शहरके बाहरमें अवस्थित है। शहरमें एक हाई-स्कूल, एक अस्पताल और एक मिलिटरी डिसपेन्सरी है।

मालो—बंगालकी नौकावाही और मत्स्यजीवि जाति-विशेष। ये कैवर्त्त या तीयर (तीवर) जातिसे स्वतन्त्र हैं। सम्भवतः मार्गव (नौकावाही मांझी) शब्दसे इस मालो जातिका नामकरण हुआ है। ये घोर काले, छोटे कदके तथा मजबूत होते हैं। इसलिये जातितत्त्वविद् इन्हें द्राविड़ीय जातिके वंशधर तथा गांगेय डेल्टाके आदिम अधिवासी अनुमान करते हैं। इनके घुंघरूले बाल, छोटी छोटी मूंछ और दाढी तथा होंठ मोटे होते हैं छोटी छोटी नाक और बड़े बड़े नाकके छेद उक्त अनु-मानके उपयुक्त प्रमाण हैं। अलावा इसके इनमें विभिन्न श्रेणी-विभाग न रहनेके कारण ये बंगालके आदिम अधि-वासी जान पड़ते हैं।

हिन्दूके आचार व्यवहार और धर्मकर्मादिके प्रति लक्ष्य रख कर इन्होंने बहुत कुछ उस जातिके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुष्ठेय क्रियाकलापका अनुकरण किया है। यहां तक कि इनमें आलिमान (आलम्बायन), वाणऋषि, वङ्गश-ऋषि, भरणऋषि, खोंड़ाऋषि, कार्त्तिकऋषि, कुलीनराशि, मेषराशि, पद्मराशि, पुरिराशि, सिंहराशि, शिवराशि और उदधि आदि जो सब गोत्र प्रचलित हैं वे भी उसी अनुकरणके फल हैं।

बहुतेरे मत्स्यजीवी राजवंशधरोंको भी इनकी शाखा बतलाते हैं किन्तु यथार्थमें वे कोचजातीय हैं, मालोंके साथ उनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। काटार या व्यापारी मालो नामकी एक और श्रेणी है जो मछली नहीं पकड़ती, पर मछली काट कर बेचती है। वह मालो जातिसे पृथक् तथा मुसलमान धर्म्मावलम्बी है।

इनमें सगोत्र या मातृगोत्रमें विवाह निषिद्ध है। अलावा इसके सात पीढ़ी तक पिण्डप्रतिवन्धकताको छोड़ विवाह देनेका नियम प्रचलित है। उच्च-श्रेणीके हिन्दू जैसा इनमें भी विवाह कार्य सम्पन्न होता है। इनमें बहुविवाह प्रचलित है किन्तु छोटी सालीको छोड़ दूसरी किसी भी स्त्रीसे विवाह करनेकी प्रथा नहीं देखी जाती। स्त्रीके बदचलन होने पर उसे स्वामी छोड़ देता तथा वह जातिसे निकाल दी जाती है।

ये प्रधानतः वैष्णवधर्म्मावलम्बी हैं। गोसाई इनके दीक्षागुरु होते हैं। पतित ब्राह्मण साधारणतः इनका पौरोहित्य करते हैं। जिस नदीमें ये नाव खेते या मछली पकड़ कर जीविका निर्वाह करते हैं उस नदीको ये बड़ी भक्तिके साथ समय समय पर पूजा देते हैं। श्रावण मासके महोत्सवमें मालाकुमारीकी पूजा करनी होती है। नदीके किनारे ही ये प्रधानतः शवदाह करते हैं। तीस दिनमें श्राद्ध होता है। उसके बाद जातिका भोज होता है। अनन्तर एक वर्ष तक प्रति मास एक एक मासिक तथा वर्ष वर्षमें वार्षिक श्राद्ध होता है। किसी व्यक्तिकी यदि अपघात मृत्यु हो जाय, तो चौथे दिनमें तथा इकतीसवें दिनमें शेष श्राद्ध होता है।

हिन्दू-समाजमें ये विशेष हेय समझे जाते हैं। ब्राह्मण इसके हाथका जल ग्रहण नहीं करते। ये कैवर्त्त और तीवर जातिसे नीच हैं।

मालोक—एक प्राचीन कवि।

मालोजी—रेणुकास्तोत्रके प्रणेता।

मालोपमा (सं० स्त्री०) अलङ्कारभेद, एक प्रकारका उपमालंकार जिसमें एक उपमेयके अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमानके भिन्न भिन्न धर्म होते हैं। इसका लक्षण—

"मालोपमा यदेकस्योपमानं बहु दृश्यते।" (साहित्यद० १०)

उदाहरण,—

"वारिजेनेव सरसी शशिनेव निशीथिनी।
यौवनेनेव वनिता नयेन श्रीर्मनोहरा॥" (साहित्य द० १०)

माल्य (सं० क्ली०) मालेवेति मालाचतुर्वर्णादित्वात् ष्यञ्। १ पुष्प, फूल। २ पुष्पस्रक्। इसका गुण—

"वृष्यं सौगन्धमायुष्यं काम्यं पुष्टिबलप्रदम्।
सौमनस्यमलक्ष्मीघ्नं गंधमाल्यनिषेवणम्॥"

(चरक सू० ५ अ०)

३ मस्तकन्यस्त पुष्पदाम, वह माला जो सिर पर धारण की जाय।

देवताओंको माल्य गंधादि दान करनेसे अशेष फललाभ होता है और अन्तमें उसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। पुराणादिमें माल्य दानादिके फलका विस्तृत विवरण लिखा है। नरसिंहपुराणमें कहा है,—वैष्णवगण यदि सहस्र जातिपुष्प द्वारा सुन्दर मालाकी रचना कर भक्तिपूर्वक विष्णुको चढ़ावे, तो कोटिकल्प तक वे सूर्यलोकमें वास कर सकते हैं। जातीपुष्पके साथ कपूर दान करनेसे और भी अधिक पुण्य होता है। स्कन्दपुराणमें लिखा है, कि थोड़े खिले हुए मालती पुष्पकी माला बना कर हरिके मस्तक पर चढ़ानेसे अश्वमेधका फल लाभ होता है। कार्त्तिक मासमें मालतीकी मालासे यदि हरिकी अर्चना की जाय, तो वैष्णवको मृत्युभय नहीं रहता।

"मालती कलिकामालामीषद्विकसितां हरेः।
स्वर्णलक्षाधिकं पुष्पं माला कोटिगुणाधिका॥"

(हरिभक्तिवि०)

"दत्त्वा शिरसि विप्रेन्द्र! वाजिमेधफलं लभेत्॥"

(स्कन्दपु०)

सुन्दर सुगन्धित पुष्पोंकी माला बना कर देवताको समर्पण तथा स्वयं धारण करनेसे धर्म तथा स्वास्थ्य दोनोंकी उन्नति होती है। उत्तम माला धारण करनेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानसिक और शारीरिक शक्ति बढ़ती है, ऐसा शास्त्रोंमें कहा है। माला पहन कर स्वयं उसे गलेसे उतार न फेंकना चाहिये तथा केशोंके बाहर भी माला धारण निषिद्ध है।

"नाश्नीयात् संधिवेलायां नगच्छेन्नापि संविशेत्।
न चैव प्रलिखेद्भूमिं नात्मनोपाहरेत् स्रजम्॥"
"न हि गर्ह्यकथां कुर्यादेवहिर्माल्यं न धारयेत्।
गवाञ्च यानं पृष्ठेन सर्वथैव विगर्हितम्॥" (मनु ४ अ०)

'न च मालां धृतां स्वयमेवापनयेदर्थादन्येनापानयेदित्युक्तमिति, केशकलापाद्बहिर्माल्यं न धारयेदिति च।' (कुल्लुक)

अपने हाथसे उठा कर माला नहीं पहननी चाहिये, इससे कोई फल नहीं होता, बल्कि अति शीघ्र श्रीभ्रष्ट होना पड़ता है।

"स्वयं माल्यं स्वयं पुष्पं स्वयं घृष्टञ्च चन्दनम्।
नापितस्य गृहे क्षौरं शक्रादपि हरेत् श्रियम॥"
(कर्मलोचन)

अग्निपुराणमें लिखा है—श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणोंको निमन्त्रण कर यदि गन्धमाल्यादि द्वारा उन्हें प्रसन्न किया जाय, तो भगवान् उस पर बहुत सन्तुष्ट होते हैं।

आमन्त्रयित्वा यो विप्रान् गन्धमाल्यैश्च मानवः।
तर्पयेच्छ्रद्धया युक्तः स मामर्चयते सदा॥" (अग्निपु०)

माला पहन कर बाहर नहीं जाना चाहिये।

"बहिर्माल्यं बहिर्गन्धं भार्यया सह भोजनम्।
विमृष्यवादं कृत्वा वा प्रवेशञ्च विवर्जयेत्॥" (कुर्मपु०)

माल्यक (सं० पु०) १ मदनवृक्ष, दौनेका पेड़। २ माला।

माल्यचन्दन (सं० क्ली०) सम्मानार्ह व्यक्तिकी सम्मान-रक्षाके लिये प्रदत्त मालाचन्दनादि वस्तु।

माल्यगुण (सं० पु०) मालाका गुण।

माल्यजीवक (सं० पु०) मालाकार, माली।

माल्यपिण्डक (सं० पु०) माल्यगुच्छ।

माल्यपुष्प (सं० पु०) मालाकाराणि पुष्पाण्यस्य। शण-वृक्ष, सनका पेड़।

माल्यपुष्पिका (सं० स्त्री०) माल्यपुष्प-कन्-टाप्, अत इत्वञ्च। शणपुष्पी। शणपुष्पी देखो।

माल्यवत् (सं० पु०) माला-मतुप् मस्य वः। १ पर्वत-विशेष।

"सोऽयं शैलः कुङ्कुमसुरभिर्माल्यवान्नाम यस्मिन्।
नीलस्निग्धः श्रयति शिखरं नूतनस्तोयवाहः॥"
(उत्तर रामचरित)

सिद्धान्तशिरोमणिके मतसे यह पर्वत केतुमाल और इलावृत वर्षके सीमापर्वतरूपसे निर्दिष्ट है। नील और निषध पर्वत तक इसका विस्तार है।

२ राक्षसविशेष। यह राक्षस गन्धर्वकन्या देववतीके गर्भसे राक्षस सुकेशके औरससे उत्पन्न हुआ है। इसके भाईका नाम सुमाली था। इसी सुमालीकी कन्या निकषाके गर्भसे विश्वविख्यात रावणका जन्म हुआ था। (रामायण उ० ६ स०) (त्रि०) ३ मालाविशिष्ट, जो माला पहने हो।

माल्यवती (सं० स्त्री०) पुराणानुसार एक प्राचीन नदीका नाम। (त्रि०) २ जो माला पहने हो।

माल्यवन्त (सं० पु०) माल्यवान् देखो।

माल्यवान् (मालवान्)—बम्बई प्रदेशके रत्नगिरि जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० १६° १′ से १६° १९′ उ० तथा देशा० ७३° २७′ से ७३° ४१′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण २४० वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें मालवान नामक एक शहर और ५८ ग्राम लगते हैं। इसके उत्तरमें देवगढ़ उपविभाग पूर्वमें सामन्तवाड़ी-सामन्तराज्य, दक्षिणमें कालीखाड़ी और पश्चिममेंअरब-सागर हैं।

रत्नगिरिका अधित्यकामय उपकूलभाग ले कर यह उपविभाग संगठित है। इसके मध्य हो कर कोलम्ब और कालावली खाड़ी चली गई है। इस उपविभागके मध्यदेशमें जंगलोंसे आच्छादित गिरिमाला शोभा देती है। पथरीली जमीन होने पर भी फसल अच्छी लगती है। काली और कालावली खाड़ीके निकट धान और ईख बहुतायतसे उपजती है। मालवान उपसागरके राजकोट अन्तरीपमें स्टीमरोंके रहनेके लिये एक सुन्दर बन्दर है। उक्त दोनों खाड़ीमें छोटी छोटी नावें २० मील तक माल ले कर आती जाती हैं। मालवान् उपकूलस्थ देमजढ़, आचड़ा और माल्पवान् बन्दरमें वाणिज्य जोरों चलता है।

२ उक्त उपविभागका एक नगर। यह अक्षा०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by

६१° ३' उ० तथा देशा० ७३° २८' पू० रत्नगिरि शहरसे ७० मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या २० हजार है। माल्यवान् उपसागरके सम्मुख भागमें पर्वतसंकुल छोटे छोटे द्वीप रहनेके कारण नावें बड़ी सावधानीसे ले जानी होती हैं। इन पर्वतज द्वीपोंमें जो बड़ा द्वीप है उसमें महाराष्ट्रकेशरी शिवाजी द्वारा प्रतिष्ठित इतिहास-प्रसिद्ध सिन्धुगढ़ तथा पद्मगढ़ नामक दो दुर्ग मौजूद हैं। पद्मगढ़ अभी भग्नावस्थामें पड़ा है। इसके पीछे और भी एक छोटे द्वीपमें प्राचीन मालवान् नगर प्रतिष्ठित था। अभी चर पड़ जानेसे वह द्वीप भारतवर्षमें मिल गया है। वर्त्तमान माल्यवान् नगर भी अभी पहलेके जैसा समृद्धिशाली नहीं रहा। उसका बहुत कुछ अंश टूट फूट गया है और वहां ताड़के बहुतसे पेड़ दिखाई देते हैं। नये नगरके मध्यस्थलमें एक ऊंची भूमिके ऊपर राजकोट दुर्ग अवस्थित है। उसके तीनों ओर समुद्र-उपकूल है। मराठा-डकैत इस दुर्भेद्य दुर्गमें रह कर अपनी दस्यु वृत्तिको चरितार्थ करता था। १८१२ ई०में करवीरको सन्धिके बाद कोल्हापुरके राजाने यह दुर्ग अंगरेजोंको समर्पण किया। उसी साल अंगरेज-सेनापति ल्युनल स्मिथने यहांके डकैतोंको समूल निर्मूल किया था।

इस नगरके पास ही लोहेकी एक खान पाई गई है। यहां नमक तैयार होता है। शहरमें एक सब-जजकी अदालत और ११ स्कूल हैं जिनमें २ बालिका-स्कूल हैं।

माल्यवान्—राक्षसविशेष। यह माली और सुमालीका भाई था। इसके पिताका नाम सुकेश और माता गन्धर्व कन्या वेदवती थी।

माल्यवृत्ति (सं० पु०) वह जो फूल और माला बेच कर अपनी जीविका चलाता हो।

माल्या (सं० स्त्री०) तृणभेद, एक प्रकारकी घास,

माल्यापण (सं० पु०) माल्य-विक्रयस्थान, फूलकी दूकान।

माल्ल (सं० पु०) मल्ल-चातुरर्थकत्वात् अञ्। वर्णसंकर जातिविशेष। यह जाति ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लेट-पिता और धोबरी मातासे उत्पन्न कही गई है।

माल्लवास्तव (सं० त्रि०) मल्लवास्तु सम्बन्धीय।

माल्लवी (सं० स्त्री०) मल्ल स्वार्थे अण्। मल्ल राजा, मल्लोंकी विद्या वा कला।

माल्ला (मल्लाह)—धीवर और नाव चलानेवाली जातियोंकी एक जाति। बङ्गाल और बिहार प्रदेशकी नाव चलानेवाली जाति माल्ला या मल्लाह नामसे परिचित है। इस समय उत्तर-भारतमें कई निकृष्ट जातियां भी मल्लाह नामकी एक स्वतन्त्र जाति हो गई हैं। इन्होंने अपना अपना एक एक दल कायम कर लिया है। जातीयतत्त्वका अनुसन्धान करनेवाले सेविङ्ग साहबने बङ्गालके मल्लाहोंमें मल्लाह, भूरिया या भुरियारी, पाण्डवी, या वधरिया, चैन या चै, सूयारा, गुरिया, तोयर, कुलवत्, केवट (खेवट) आदि दल निर्देश किये हैं। उत्तर-पश्चिम-भारतमें मल्लाह, केवट, टिमर, कर्वाक, निषाद, मछुवाहा, मांझी आदि जातिके लोग नावें चलाते और धीवरका व्यवसाय कर मल्लाह नामसे पुकारे जाते है। ये द्राविड़ीय जातिसे सम्पूर्णतः अलग हैं।

मल्लाह अपनेको विन्ध्यवासी निषादोंके वंशधर बतलाते हैं। ऋक्संहिता, रामायण और महाभारतके नलोपाख्यानमें इस निषाद जातिका नाम दिखाई देता है। यह जाति नलके राजत्वके समय विन्ध्य और ऋक्ष-पर्वतके कटिदेशसे विदर्भ और कोशल-राज्य तक फैल गई थी। गङ्गातीरवर्त्ती शृङ्गवेरपुर नगरमें इस जातिका वास था, जिसका रामायणसे ही पता चलता है। श्रीरामचन्द्र जब शृङ्गवेरपुरमें पहुंचे तब निषाद-राजने उनका आदर-सत्कार किया था। मनु महाराजने निषादोंको मार्गव नामसे उल्लेख किया है।

बाथमा या श्रीवास्तव मल्लाह कहते हैं, कि वे श्रीवास्तव कायस्थ थे और श्रीनगरमें वास करते थे। वहांके राजाने इस जातिकी एक सुन्दरी कन्याका पाणि-ग्रहण करनेकी इच्छा प्रकट की, किन्तु इस जातिने अस्वीकार कर दिया। इस पर राजाने इस जातिको अपने राज्यसे निकाल दिया। इसी समयसे किसी निविड़ वनके पार्वत्य-प्रदेशमें यह जाति आ कर रहने लगी। यहां इस निकृष्ट वृत्ति अवलम्बनसे ही अपनी जीविका-निर्वाह किया करती है।

गाङ्गेय-उपत्यकाकी पूर्व ओरके अधिवासी मल्लाहोंका कहना है, कि चित्रकूट-पर्वत पर आनेके समय उनके पूर्वपुरुष दशरथ-तनय रामचन्द्रको नदी पार कराया था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामचन्द्रने नदी पार कर जिस पथका अनुसरण किया था, वह इस समय 'रामचौरा'के नामसे विख्यात है। इस समय भी वहां मल्लाहगण पूर्ववत् नदी पार कराया करते हैं। मिर्जापुरके रहनेवाले मल्लाह टोंस (तमसा) नदी तीरवर्त्ती शीर्षा ग्राममें रहते और नावोंके चलानेका काम करते हैं। बनारसके मल्लाहोंका कहना, कि रामचन्द्रने प्रसन्न हो कर उनके दलपतिको एक घोड़ा दिया। निषाद दलपतिने मूर्खताके कारण घोड़ेकी लगामको मुंहकी ओर न लगा पूंछकी ओरसे लगाया था। उसी समय से उनमें नौकाके पीछे पाल लगानेकी प्रथा हो गई।

इन किम्वदन्तियोंमें कुछ तथ्य हो या न हो किन्तु इतना जरूर कह सकते हैं, कि प्राचीन कालमें जो अनार्य निषाद-सुत मार्गव जाति नाव चलाया करती थी, वही मुसलमानी युगसे अरबी मल्लाह नामसे पुकारी जाने लगी। इनमें जो स्वतन्त्र एक श्रेणी विभाग था, वह भी एक उत्तम दलमें परिणत हुआ है। जाति-तत्त्वविद् पण्डितोंका भी यह अनुमान है। यह अनुमान कहां तक युक्तिसंगत है, वह विवेचनीय है। निषाद आदि छोटी जातियोंके सिवा मुसलमान आदि अन्यान्य जातियोंमें भी मल्लाह जातिका अस्तित्व देखा जाता है। इस समय निम्न शूद्रश्रेणीकी छोटी छोटी अनार्य जातियां भी इसी वृत्तिके अवलम्बन पर बाध्य हुई हैं। बङ्गालमें इस समय गौरी, चाइनविन्द, केवट, तोयर, मुरियारो, सुरइया, मालो और केवर्त्त भी माल्ला नामसे पुकारे जाते और मल्लाहका काम करते हैं।

गत मनुष्यगणनासे मालूम हुआ है, कि हिन्दू मल्लाहोंमें ६२५ शाखायें तथा मुसलमान मल्लाहोंमें २२ शाखायें हैं। इनमें अलीगढ़का चौधरिया, मथुराका बालिया, आगरे और मैनपुरी जिलेका जरिया, कानपुरका भोक, इलाहाबादका नाथू, बनारसका भारमार, गाजीपुरका तीवर, बलियाका कुलवन्त, गोरखपुरका गोंड़िया, बस्तीका धेलफोंड़ा, महोदर, सोनहार और तुरहा, गढ़वालका भोंटिया और मछहा, लखनऊ और बाराबंकी जिलेका राजघटिया, उन्नाव जिलेका धार, फैजाबादका खरौतिया और सुलतानपुरका खास तथा जलछत्रो शाखा ही प्रधान हैं। उपर्युक्त दल और शाखाके सिवा इलाहाबादके घोष, खड़विन्द, वाथमी आदि और भी कई शाखा जातियोंके नाम दिखाई देते हैं।

उपर्युक्त श्रेणीकी सभी जातियां निषादवंश-सम्भूत नहीं हैं। श्रावस्ती देशमें रहनेके कारण वाथवा, श्रीवाथव या श्रीवास्तव नामसे परिचित हैं। चाइन चर्व नामक जातिच्युत वैश्य जातिका एक शाखासे उत्पन्न है। धुविया, केवट, खड़विन्द, निषाद आदि जातियां निषाद की शाखायें हैं।

इन जातियोंमें परस्पर खानपान नहीं है और तो क्या हुक्का पानीको भी एकता नहीं है। इनमें बुड्ढोंकी एक पञ्चायत बनाई जाती है। यह पञ्चायत स्वजाति लोगोंके गुण और दोषों पर विचार करते हैं। यदि किसीको पञ्चायत जातिच्युत करती है, तो वह भोज दे कर जातिमें मिल जाता है। जो सामाजिक अवस्थामें अपेक्षाकृत उन्नत है वे ही बाल्यविवाहके पक्षपाती हैं। विवाहके पहले यदि कन्या पर-पुरुष पर आसक्त हो, तो उसको समाजमें बड़ी लांछना भोग करनी पड़ती है। स्वजातिके पुरुषसे आसक्त होने पर उतना दोषावह नहीं होता, यदि अन्य किसी जातिके पुरुषसे प्रणयासक्त हो, तो वह कन्या और उसका पिता जातिच्युत कर दिया जाता है। किन्तु जातिके लोगोंको केवल एक भोज देनेसे ही सब झगड़ा तय हो जाता है। वह कन्या फिर समाजमें विवाह कर सकती है।

इनमें विवाहका कोई नियत निर्दिष्ट समय नहीं और एक वंशमें विवाह करनेमें कोई अड़चन दिखाई नहीं देती। जो अपने वंशको जानते हैं, वे अपने वंशमें कभी विवाह-सम्बन्ध नहीं करते। हां, जो चार पांच पीढ़ीके ऊपर अपने वंशको भूल गये हैं। वे ही भूलसे अपने वंशमें विवाह कर सकते हैं।

इनकी विवाह-पद्धति चहौंवा नामसे विख्यात है। पहले वर और कन्याका देखा देखी, उसके बाद कुण्डलीका मिलान, इसके बाद वर-कन्याको वस्त्र उपहार दे विवाह-सम्बन्ध दृढ़ किया जाता है। इसके बाद पण्डितोंको बुला कर शुभ दिन नियत कर वर-कन्याको तेल ऊबटन लगाया जाता है। इसके बाद लग्न ठीक कर दोनों पक्ष अपने अपने हितनात इष्ट-मित्रको निमन्त्रण दे कर बुलाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब कन्याके घर बारात जाती है, तब गणेशजीकी पूजा की जाती है। यहां गृहदेवता और पितृपुरुषगणके लिये अन्नदान (देवता और पितरका नेवतना) आदि शुभ कर्मोंका अनुष्ठान होता है। वर आ कर कन्याके ग्राममें उसके लिये नियत स्थानमें ठहरेगा। यहां नाइन वर-कन्याका 'गेंठ बन्धन' करती हैं। पांच बार प्रदक्षिणा करनेके बाद यानी पांच बार भावरि फेरनेके बाद वर मांगमें सिन्दुर प्रदान करता है, बस विवाहकी विधि हो गई। इसके बाद यहां स्त्रियोचित रश्म-रिवाज शुरु होता है। विवाह हो जानेके बाद वर कन्याको घरमें लाये जाते हैं। यहां वर शिरसे मौर (मयूर) उतार कर दही और मिष्टान्न खाता है। इस समय वरसे बोली-ठठोली करनेवाली स्त्रियां हंसती, बोलती और तरह तरहका मनविनोद कर वरका मन रञ्जन करती हैं। जब वर लौट कर घर आता है, तब विवाहकी खुशीमें गंगाजीकी पूजा करता है। उसी दिन कंकण आदि खुलता है।

इनमें विधवा विवाह प्रचलित है। यह सगाई, धरौना और बैठकोके भेदसे तीन प्रकारका है। स्वामीके कनिष्ठ भ्राताको पुनः पति बना लेना इनका कर्त्तव्य है। किन्तु इसका देवर बहुत छोटो उम्रका हो, तो वह वाध्य हो कर दूसरा पति कर लेती है।

यदि कोई रमणी वन्ध्या या गृहकर्म करनेमें असमर्थ हो, तो उस स्त्रीको सहायतार्थ सगाई करके पुरुष दूसरी विधवाका पाणि-ग्रहण कर सकता है। किन्तु साधारणतः जिनकी पत्नियां मर चुकी हैं, वे ही विधवा विवाह करते हैं। पुरुषोंके नावोंको ले कर देश विदेश चले जाने पर इनकी स्त्रियोंका आचरण ठीक नहीं रहता है। इसी कारणसे स्त्री-त्याग, भोजकी अधिकता तथा सगाई की प्रथा कायम है।

स्त्रीके गर्भ धारण करने पर किसी संस्कारकी आवश्यकता नहीं होती। पुत्र होने पर छः दिनमें और कन्या उत्पन्न होने पर आठ दिनमें षष्ठी पूजा होती है। आठवें दिन अशौचान्त होने पर पण्डित आ कर लड़केका राशि नाम कह देते हैं। आठ वर्षकी कम उम्रके बालकके मरने पर उसे जमीनमें गाड़ देते हैं। जमीनमें वहीं गाड़ते हैं, जहां गङ्गा नहीं है, जहां गङ्गा है वहां गङ्गाजीमें फेंक देते है और उसका श्राद्ध नहीं करते। पुरुषके लिये दश दिनमें दश पिण्ड और स्त्रियोंके लिये नौ दिनमें नौ पिण्ड देने पड़ते हैं। यहां ब्राह्मण या महापात्र आ कर यजमानी वृत्ति करते हैं। वर्षमें जो श्राद्ध करते वह 'वरषी' नामसे विख्यात है। वरखी या वरषीमें ये केवल दो पिण्ड देते है। पुत्रहीन व्यक्तियोंके लिये एक ही पिण्ड देनेकी व्यवस्था है। कोई कोई गयाधाममें जा कर पिण्ड-दान करते हैं। किसी दूर देशमें मरने पर "नारायण बलिरूप"-श्राद्ध किया जाता है।

ये महादेव, काली, भगवती, महावीर, गङ्गा, महालक्ष्मी, महासरस्वती जटाईबाबा, मशानदेवी, पांचोपीर, परिहार, गांजीमियां आदिकी पूजा करते हैं। दशहराके दिन ये गङ्गाजीकी पूजा करते हैं। सिवा इसके बीमारी होने पर ये वीरतियां वीरकी पूजा किया करते हैं। माता शीतलाकी पूजा मिष्टान्नसे की जाती है। दूर देशकी यात्रा करने पर नावको माला पहना कर उसकी पूजा और होम भी करते हैं।

माल्य (सं० क्लो०) मूर्खता, विवेकहीनता।

माल्ह (सं० पु०) १ मल्ल देखो। (स्त्री०) २ माल देखो।

मावत् (सं० त्रि०) मत्सदृश, मेरे जैसा।

मावल —बम्बई प्रदेशान्तर्गत सह्याद्रिके समीप पूना जिलेका एक महकूमा। यह अक्षा १८° ३६´ से ले कर १९° उ० तथा देशा० ७२° ३६´ से ले कर ७३° ५१´ पू०के बीच पड़त है। क्षेत्रफल ३८५ वर्गमील है। इस स्थानका अधिकांश जंगलाकीर्ण है यहांकी मिट्टी मटमैली और लाल है। इन्द्रायणी और अन्ध्रा नामकी दो प्रधान नदी महकूमे हो कर बह गई है। धांगड़, कुली, माली, माङ्ग, माड़, कुणवी आदि जातियां इस प्रदेशमें कृषि कार्य करती हैं। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे-लाइन इसी हो कर गई है। यहांके पहाड़ी प्रदेशमें विशापुर और लोहगढ़ दुर्गका भग्नावशेष देखा जाता है।

मावली—दक्षिण भारतकी एक पहाड़ी वीर जातीका नाम। इस जातिके लोग शिवाजीकी सेनामें अधिकतासे थे।

मालवीसैन्य देखो।

मावलोकर—मान्द्राज प्रदेशके त्रिवाङ्कोड़ जिलेका एक तालुक और उसका प्रधान नगर। इसमें १४५ ग्राम लगते हैं। नगरमें एक प्राचीन दुर्गका खंडहर देखा जाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इससे मालूम होता है, कि एक समय यह एक प्रसिद्ध स्थान था। उस दुर्गका घेरा २ मील है और उसमें २४ बुर्ज तथा २४ प्रवेशद्वार हैं।

दुर्गके मध्यस्थमें एक प्राचीन पागोडा मौजद है। उसके चारों ओर जो मकान है उनमें अभी राजाके दफ्तर लगते हैं। दक्षिण भागके एक 'कोटारम'में राजवंशधर रहते हैं। दुर्गके उत्तर-पूर्व कोणमें सिरोय-ईसाइयोंकी वासभूमि देखी जाती है।

मावलीसैन्य—शिवाजीकी सेनाओंमें एक पराक्रान्त युद्ध विशारद सेनादल। इनके अदम्य प्रतापसे औरङ्गजेबके सुशिक्षित मुसलमान सैनिकोंने कई बार रणक्षेत्रमें पीठ दिखाई थी। ये शब्दभेदी बाण चलाते थे। तलवारके युद्धमें भी ये बड़े दक्ष थे। सन् १६७० ई०के फरवरी महीनेमें शिवाजीकी आज्ञासे तानोजी मालश्रोने अपने कनिष्ठ भाई सूर्याजीकी सहयोगितासे १००० सुशिक्षित मावली-सैन्य ले सिंहगढ़के दुर्भेद्य दुर्ग पर चढ़ाई की थी। सूर्याजीके अधीन कुछ सैनिकोंको रख उन्होंने बाकी सैनिकोंको ले कर संध्याके अन्धकारमें दुर्गकी ओर यात्रा की। वह किला पहाड़ पर अवस्थित था। तानोजीकी सेना रस्सीकी बनी सीढ़ियोंसे उस अज्ञात और अन्धकारपूर्ण पहाड़ी पर चढ़ने लगी। केवल ३०० सैनिक ही ऊपर चढ़ चुके थे। ऐसे समय सिंहगढ़के पहरेदारोंने इन्हें देख लिया और वे मशाल जला कर युद्धके लिये आगे बढ़े। तानोजी अन्य उपाय न देख उन्हीं ३०० सैनिकोंको ले कर ही भीमवेगसे किले पर टूट पड़े। किन्तु तानोजीके युद्धमें काम आनेके बाद उनकी मावलीसैन्य भाग खड़ी हुई और रस्सीकी सीढ़ीसे नीचे उतरने लगी। ऐसे समय सूर्याजी अपने सैनिकोंको ले कर वहां पहुंच गये और अपनी भागती हुई सैन्यको उत्साहित करने लगे। सैनिकोंने दूसरे सेनापतिको देख अपूर्व उत्साहसे 'हर हर बम बम' शब्दोंसे निस्तब्ध गगनको गूंज कर दिया और अदम्य उत्साहसे किले पर आक्रमण किया। यह देख राजपूत-सैनिक तितर-बितर हो गये। किले पर सूर्याजीका अधिकार हो गया। इस युद्धमें ३०० मावली और ४०० राजपूत मारे गये। सूर्याजीने शिवाजीके पास इस आनन्दका समाचार भेजा। इसी युद्धसे इनका नाम हुआ।

मावा (हिं० पु०) १ पोच, मांड़। २ निष्कष, सत्त। ३ प्रकृति। ४ खोया। ५ वह दूध जो गेहूं आदिको भिगो कर वा कच्चा मल कर निचोड़नेसे निकलता है। ६ अंडेके भीतरका पीला रस, जरदी। ७ चन्दनका इत्र जिसे आधार बना कर फूलों और गंध द्रव्योंका इत्र उतारा जाता है। ८ मसाला, सामान। ९ हीरेकी बुकनी जिससे मल कर सोना चांदीको चमकाते हैं वा उन पर कुंदन या जिला करते हैं। १० वह गाढ़ा लसदार सुगंधित द्रव्य जिसे तमाकूमें डाल कर उसे सुगंधित करते हैं खमीर।

मावासो (हिं० स्त्री०) मवासी देखो।

मावैल्यक (सं० पु०) जातिविशेष।

माश (हिं० पु०) माष देखो।

माशब्दिक (सं० त्रि०) माशब्दे इत्याहेति (प्राग्वहतेष्ठक्। पा ४।४।१) इत्यत्र तदाहेति मा-शब्दादिभ्य उपसंख्यानमिति वार्त्तिकोक्तत्वात् माशब्द+ठक। निषेधकर्त्ता, मना करनेवाला।

माशा (हिं० पु०) एक प्रकारका बाट या मान। इसका व्यवहार सोने, चांदी, रत्नों और ओषधियोंके तौलनेमें होता है। यह आठ रत्तीके बराबर और एक तोलेका बारहवां भाग होता है।

माशी (हिं० पु०) १ एक प्रकारका रंग। यह कालापन लिये हरा होता है। कपड़े पर यह रंग कई पदार्थोंमें रंगनेसे आता है। इनमें हड़का पानी, कसीस, हलदी और अनारकी छाल प्रधान हैं। इनमें रंगे जानेके बाद कपड़ेको फिटकरीके पानीमें डुबाना पड़ता है। २ जमीनकी एक नाप जो २४० वर्गगजकी होती है। (त्रि०) ३ उड़दके रंगका, कालापन लिये हरे रंगका।

माशूक (अ० पु०) वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रेमपात्र।

माशूकी (फा० स्त्री०) माशूक होनेका भाव, प्रेमपात्रता।

माष (सं० पु०) माषस्य फलम्। माष अण् (लुपच पा ४।३।१६६) इत्यस्य फलपाक शुषामुपसंख्यानमिति काशिकोक्तेरणोलुप्; अथवा मस-घञ् पृषोदरादित्वात् साधुः। १ व्रीहिभेद, उड़द। संस्कृत पर्याय—कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाकर, मांसल, बलाढ्य, पितृ, पितृभोजन। इसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुण—स्निग्ध, बहुमलकर, शोषण, श्लेष्मकर, अनुष्णवीर्य, सहसा रक्त और पित्तप्रकोपकर, वातहर गुरु, बलकर, रोचक, स्वादु तथा श्रमसुखयुक्त व्यक्तियोंके लिये नित्यसेवनीय है। (राजनि०) भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—गुरु, मधुर विपाक, स्निग्ध, रुचिकर, वायुनाशक, स्रंसनगुणयुक्त, तृप्तिकर, बलकर, शुक्रवर्द्धक, शरीरका उपचयकारक, मलमूत्रनिःसारक, स्तन्यवर्द्धक, मेहोजनक, पित्तवर्द्धक, कफकर तथा गुदकील, अर्दित, श्वास और परिणाम शूलनाशक। उड़दके दालके साथ मूली नहीं खानी चाहिये।

"मूलकं माषसूपेन मधुना च न भक्षयेत्।" (राजव०)

चतुर्दशी और रविवारको उड़दकी दाल नहीं खानी चाहिये। खानेसे चिररोगी और सातजन्म तक अपुत्रक होना पड़ता है।

"चिररोगी च माषके" इति "माषमामिषमांसञ्च मसूरं निम्बपत्रकं। भक्षयेद्दधयो रवेर्वारे सप्त जन्मन्यपुत्रक इति च।"

(तिथ्यादितत्त्व)

प्रतिदिन उड़दकी दाल खाना मना है। इससे कफकी वृद्धि होती है। कफकी वृद्धि होनेसे ही बुद्धि मोटी हो जाती है। इस सम्बन्धमें प्रवाद है,—

"अशेषशेमुषीनाशमाषमश्नामि केवलम्॥" (उद्भट)

२ परिमाण विशेष, माशा। पर्याय—माषक, मास (अमर और भरत) हेम, धानक। चरक, सुश्रुत आदि वैद्यक-ग्रन्थोंमें देशभेदसे मापका परिणाम पृथक् पृथक् बतलाया है। सुश्रुतके मतसे पांच गुंजे (घुंघची)-का और चरकके मतसे ६ ८ गुंजेका माष होता है। सुश्रुतके मतसे इसका कालिङ्गमान ५, ७, ८ गुंजा है। चरक और वैद्यकमें दूसरी जगह इसका मान १० और १२ गुंजा बतलाया है। चरकने जो १० रत्तीका इसका मान बतलाया है उसे गौड़माषल कहते हैं और यही माष सर्वत्र व्यवहृत होता है।

३ शरीरके ऊपर काले रंगका उभरा हुआ दाग या दाना, मसा। (त्रि०) ४ मूर्ख।

माषक (सं० पु०) माषप्रकारः माष-कन् (स्थलादिभ्यः प्रकार वचने कन्। (पा ५।४।३) माशा, पांच रत्तीका परिमाण। लीलावती ग्रन्थमें भी पांच रत्तीका माशा बतलाया है—

"दशार्द्धगुञ्जं प्रवदंति माषं, माषाह्वयैः षोड़शभिश्च कर्षम्।"

भावप्रकाशमें छः रत्तीका एक माष कहा है।

"षड़भिस्तु रक्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधानकौ।
माषो गुञ्जाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत् क्वचित॥"

२ ब्रीहिभेद, उड़द। (भावप्रकाश०)

माषकलाय (सं० पु०) माषसंज्ञः कलायः शाकपार्थिव वत् समासः। स्वनामख्यात शस्य, उड़द।

माषतैल (सं० क्ली०) वैद्यकके अनुसार एक प्रकारका तेल जो अर्द्धाङ्ग, कम्प आदि रोगोंमें उपयोगी माना जाता है। बनानेका तरीका—तिलका तेल ४ सेर, काढ़ेके लिये उड़द, विजबंद, रास्ना दशमूल, जौ, कुलथी, बेर, बकरेका मांस प्रत्येक १६ पल, जल १६ सेर, शेष ४ सेर, चूर्णके लिये रास्ना, अलकुशीका मूल, सैन्धव, सोया, रेंडीका मूल, मोथा, जीवक, ऋषभक, मेद, महामेद, ऋद्धि, वृद्धि कंकोली, क्षीरकंकोली, विजबंद, त्रिकटु, प्रत्येक २ तोला। इस तेलकी मालिश करनेसे अर्द्धाङ्ग, आक्षेपक, अपतानक, ऊरुस्तम्भ, भुजकम्प तथा अन्यान्य वायुरोग प्रशमित होते हैं।

(भैषज्य रत्ना०)

माषपत्रिका (सं० स्त्री०) माषपर्णी।

माषपर्णी (सं० स्त्री०) माषस्य पर्णमिव पर्णं यस्याः बहुव्री, ततो ङीष्। वनमाष, जंगली उड़द। वैद्यकमें इसे वृष्य, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक माना है। पर्याय—हयपुच्छी, काम्बोजी, महासहा, सिंहपुच्छी, ऋषिप्रोक्ता, कृष्णवृन्ता, पाण्डु, लोमशपर्णिनी, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा अश्वपुच्छा, पाण्डुरा, मापपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालपर्णी, विसारिणी, आत्मोद्भवा, बहुफला, स्वयम्भु, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशाचिका।

माषभक्तबलि (सं० पु०) माषश्च भक्तश्च तद्युक्तो बलिः। माष, तण्डुल और दधि मिश्रित पूजोपहारविशेष। कोई कोई उक्त द्रव्योंमें हलदी, घी और मधु भी मिलाते हैं। पूजापद्धतिमें दुर्गा, काली आदि देवताओंकी पूजामें माषभक्तबलि चढ़ानेकी व्यवस्था है। कालीको माषभक्तबलिदान करनेका मन्त्र इस प्रकार है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"ओं जयत्वं कालि सर्वेशे सर्वभूतसमावृते।
रक्ष मां निज भूतेभ्यो वलिं गृह्ण शिवप्रिये॥
एष माषसक्तवलिः ओं काल्यै नमः॥"

प्रार्थना-मन्त्र यथा—

ओं मातर्मातर्वरे दुर्गे सर्वकामार्थ साधिनि।
अनेन वलिदानेन सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे॥" (कृत्यतत्त्व

माषयोनि (सं० पु०) खाद्यद्रव्यभेद, पापड़।

माषरा (सं० स्त्री०) मांड़, पोंच।

माषराचि (सं० पु०) लाट्यायन सूत्रानुसार एक ऋषिका नाम। ये माषराचिन् ऋषिके गोत्रमें थे।

माषवटी (सं० स्त्री०) वाटिकौषधभेद, उड़दकी बनी हुई बड़ी। बड़ी देखो।

माषवर्द्धक (सं० पु०) माषं वर्द्धयतीति वृद्ध-णिच ण्वुल्। स्वर्णकार, सुनार।

माषशस् (सं० अव्य०) माषं माषं ददातीत्यर्थे मास शस्। प्रतिमाष, एक एक उड़द करके।

माषसूप (सं० पु०) भृष्टमाष प्रस्तुत युष, भूने हुए उड़दका जूस। इसका गुण—स्निग्ध, वृष्य, वायुनाशक, उष्ण, सन्तर्पण बलकर, सुस्वादु, रुचिकारक।

माषाद (सं० पु०) माषमत्तीति अद् अण्। १ कच्छप, कछुआ। (त्रि०) २ माषभक्षक, उड़द खानेवाला।

माषादिक्वाथ (सं० पु०) वैद्यकके अनुसार एक प्रकारका काढ़ा जो पक्षाघातरोगमें उपयोगी माना जाता है। प्रस्तुत प्रणाली—माषकलाय, अलकुशी, भरेण्डका मूल, विजवंद और जटामासी, कुल मिला कर २ तोला ले कर आध सेर जलमें पाक करे। जब आध पाव जल बच रहे, तब नीचे उतार ले। पीछे ऊपरसे १ माशा हींग और १ माशा सैंधव डाल दे। प्रति दिन यह काढ़ा पीनेसे पक्षाघात रोग जाता रहता है।

मासादितैल (सं० क्ली०) तैलौषधभेद। प्रस्तुत प्रणाली—तिल तैल ४ सेर, चूर्णके लिये माषकलाय, अलकुशीका बीज, अतीस, भरेण्डका मूल, रास्ना, शतमूली और सैंधव कुल मिला कर १ सेर; काढ़ेके लिये माषकलाय १६ सेर, जल १ मन २४ सेर, शेष १६ सेर, विजवंद १६ सेर, जल १ मन २४ सेर शेष १६ सेर। इस तेलका यथाविधान पाक कर सेवन करनेसे पक्षाघात दूर होता है।

माषान्न (सं० क्ली०) माषकृत अन्न। इसका गुण—दुर्जर, मांसवृद्धिकर, गुरु, वातनाशक और वृष्य। (वैद्यक)

माषाश (सं० पु०) अश्व, घोड़ा।

माषिक (सं० पु०) १ जोवशाक। (त्रि०) २ माष परिमित

माषिण (सं० क्ली०) माषाणां भवनं क्षेत्रम्। माषका खेत।

माषेण्डरि (सं० स्त्री०) माषपिष्टविकृति।

माषोण (सं० त्रि०) माषेन ऊनः। एक माशेसे कम।

माष्य (सं० पु०) माष बोने योग्य खेत, मशार।

मास् (सं० पु०) मास् गाने (सर्वधातुभ्योऽसुन्। उण् ४।१८८) इत्य-सुन्। १ चन्द्रमा। २ मास, महीना।

"चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्।
षष्ठेऽन्नप्राशनं मासि यद्वेष्टं मङ्गलं कुले॥" (मनु २।३८)

(क्ली०) ३ मांस, गोश्त।

मास (सं० पु०) मस् परिमाणे भावे घञ्। १ मास परिमाण, माशा। मस्यते परिमीयते असौ-अनेन वेति मस् घञ्। १ शुक्ल कृष्ण पक्षद्वयात्मक काल, महीना। मास १२ होता है। मास समयका अंशविशेष है। युग, वर्ष, ऋतु, मास, दिन, दण्ड आदि सभी अखण्ड दण्डायमान काल या समयके अंश हैं।

मलमासतत्त्वमें मासका विशेष विवरण लिखा गया है। इसीसे यहां संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। मास या महीनेको चार भागोंमें विभक्त किया जाता है। जैसे :—१ सौरमास, २ चान्द्रमास, ३ नाक्षत्रमास और ४ सावनमास।

१ सौरमास—सूर्य जितने दिनों तक एक राशिमें रहते है, उतने दिनोंका एक सौरमास होता है। सूर्यकी गति इसी मासकी नियामक है, इसीसे इसका नाम सौरमास है। सौरमास २९, ३० ३१ और ३२ दिनोंका भी होता है। इससे कम और अधिक नहीं होता। वङ्गदेशमें इसी महीनेका व्यवहार होता है। साल और शकाब्द इसी सौरमाससे हुआ करता है।

२ चान्द्रमास—तिथिघटित मासको ही चान्द्रमास कहते हैं। यह चन्द्रमास फिर दो तरहका है, १ मुख्यचान्द्र और २ गौणचान्द्र। शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे अमावस्या तक इस ३० तिथियोंसे जो चान्द्रमास होता है, वह मुख्य चान्द्रमास और कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

पूर्णिमा तक इन ३० तिथियोंसे जो मास होता है, वह गौण चान्द्रमास कहलाता है। इसी चान्द्रमासके अनुसार वर्ष हुआ करता है।

३ नाक्षत्रमास—२७ नक्षत्रोंसे एक नाक्षत्रमास होता है। अश्विनीनक्षत्रका परिमाण ६० और भरणीनक्षत्रका परिमाण ६३ दण्ड इत्यादि क्रमसे २७ नक्षत्रोंके परिमाणोंको मिला कर जो समय बनता है, उसीको नाक्षत्रमास कहते हैं। अश्विनी-नक्षत्रसे आरम्भ कर रेवतीनक्षत्र तक जो समय होता है, वही एक नाक्षत्र मास है।

४ सावनमास—सावनमास भी दो है, सौर-सावन और चान्द्रसावन। किसी भी तारीखसे आरम्भ कर ३० अहोरात्र (दिन-रात)-से जो मास होता है, वही सौरसावन है। जैसे १५वीं वैशाखसे १४वीं जेठ तक ३० दिनका एक सौरसावन हुआ। किसी भी तिथिसे आरम्भ कर ३० तिथियोंसे जो मास बनता है, वही चान्द्रसावन कहा जाता है। जैसे शुक्लपक्षकी द्वितीयासे परवर्त्ती शुक्ल पक्षीय द्वितीया तक जो समय होगा, उससे जो मास बनेगा वह चान्द्रसावन कहा जायगा। इनके अतिरिक्त नाक्षत्रसावनमास भी होता है।*

शास्त्रमें जिन सब धर्म-कर्मोंके करनेकी व्यवस्था है, उनमें मास, तिथि आदिका उल्लेख करना पड़ता है। मासोल्लेखकी जगह सौर और चान्द्रमासका उल्लेख करना आवश्यक है। इसीलिये इसके विशेष विशेष विधान अभिहित हुए हैं। स्नान, दान, श्राद्ध, विवाह आदि कर्मोंमें स्वेच्छापूर्वक मासोल्लेख करनेसे नहीं चल सकता। शास्त्रके नियमानुसार इन सब कामोंमें मास-का उल्लेख करना होता है। किस कामम किस मास-का उल्लेख किया जाना चाहिये उसका विवरण शास्त्रमें इस तरह लिखा है,—

पहले ही कह आये हैं, कि चान्द्रमास दो तरहका है, कर्मविशेषमें कहीं कहीं चान्द्रमासका और कहीं कहीं गौणचान्द्रमासका उल्लेख करना होता है। चूड़ा, उपनयन, विवाह, सभी तान्त्रिक कर्म, अगस्त्य-के लिये अर्घ्यदान, वैशाखमासका स्नान, दान हवि-ष्यादि और उत्तरायणविहित पशुयागादि और सूर्य्यके अमुक राशिमें जाने पर यह कर्म करना होगा, अमुक ऋतुमें या अमुक अयनमें यह कर्म कर्त्तव्य है इसी तरह-के विधिबोधित कर्ममें सौरमासका उल्लेख करना होगा। सौरमासका उल्लेख करते समय उस मासका नाम और अमुक राशिमें सूर्य वर्त्तमान हैं, यह भावबोधक उच्चारण करना होगा। जैसे,—"वैशाखे मासि मेषराशिस्थे भास्करे" इत्यादि। प्रत्येक सौरमासोल्लेखकी जगह राशि उल्लेख करनी होगी।

सूर्यका मेषराशि भोग करनेका काल वैशाखमास है। वृशराशिका भोगकाल ज्येष्ठमास है। इनके सिवा मिथुनमें सूर्य रहने पर आषाढ़, कर्कटमें श्रावण, सिंहमें भाद्र, कन्यामें आश्विन, तुलामें कार्त्तिक, वृश्चिकमें मार्गशीर्ष, धनुमें पौष, मकरमें माघ, कुम्भमें फाल्गुन और मीनमें चैत्रमास होता है। इन १२ मासोंमें पूर्वोक्त कर्मोंमें १२ राशियोंका उल्लेख करना होगा।

इनके सिवा अन्यान्य सभी कर्मोंमें चान्द्रमासका उल्लेख करना कर्त्तव्य है। चान्द्रमासोल्लेखकी जगह भी कभी तो मुख्यचान्द्र और कभी गौणचान्द्रका उल्लेख करना होगा। इसका नियम यह है,—तिथि-विशेषविहित कर्ममें अर्थात् पञ्चमीमें सरस्वती-पूजा करनी चाहिये। अष्टमीमें उपवास करना चाहिये। इस तरह विशेष

---

* "चन्द्रमाः कृष्णपक्षान्ते सूर्येण सह युज्यते।
सन्निकर्षादथारभ्य सन्निकर्षमथापरम् ॥
चन्द्रार्कयोर्युं धैर्मासश्चान्द्र इत्यभिधीयते।
सावने च तथा मासि त्रिंशतसूर्योदयाः स्मृताः ॥
आदित्यराशिभोगेन सौरमासः प्रकीर्त्तितः।
सर्वर्क्षपरिवर्त्तेस्तु नाक्षत्र इति चोच्यते ॥"

चन्द्रार्कयोः सन्निकर्षात् दर्शात्। अथानन्तरं प्रतिपद-मारभ्य अन्यथा सन्निकर्षमारभ्येति ब्रूयात् अपरं सन्निकर्षं यावत् तावत् कालश्चान्द्रः, एतेन सन्निकर्षादि सन्निकर्षान्तो मास इति नारायणोपाध्यायमतं निरस्तं त्रिंशदहोरात्माकः सावनः आदित्येक राशि भोगावच्छिन्नः सौरः, सप्तविंशति नक्षत्रभोगावच्छिन्नो नाक्षत्रः इति चतुर्विधा मासाः। तथा च ब्रह्मसिद्धान्ते—

"चान्द्रः शुक्लादिदर्शान्तः सावनस्त्रिंशतां दिनैः।
एक राशौ रवियावत् कालं मासः सभास्करः।
सर्वर्क्षपरिवर्त्तैस्तु नाक्षत्रः इति स्मृतः ॥" (मलमासतत्त्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विशेष तिथिके नामसे जो सब काम विहित है उसमें एवं ब्रह्मपुराणोक्त कर्ममात्रमें ही गौणचान्द्रमासका उल्लेख होगा। जन्मतिथि-पूजा, कृष्ण-जन्माष्टमी, शिवरात्रि, वारुणी, अपर पक्षीय श्राद्ध (आश्विनमासके कृष्ण पक्षका नाम अपर पक्ष है) आदि कर्मोंमें भी चान्द्रमासका उल्लेख होगा। पिता-माता आदिकी मृत तिथिमें श्राद्ध, स्नान, दान, गर्भाधान, नामकरण पुंसवन, सीमन्तोन्नयन इत्यादि कर्मोंमें ही मुख्यचान्द्र मासका उल्लेख करना आवश्यक है।

कार्त्तिक मासमें, माघमासमें और सौर मासमें, गौणचान्द्रमासमें या मुख्यचान्द्रमासमें भी प्रातःस्नान हविष्य और ब्रह्मचर्य्यादिका पालन करना चाहिये। मासोल्लेख भी तदनुसार ही होगा। कुछ लोगोंका कहना है, कि नवान्न श्राद्धमें मुख्यचान्द्रमासका ही उल्लेख करना होता है।

सौरमासके वैशाख आदि १२ नाम हैं ये सब मास निम्नोक्त प्रणालीसे मालूम होते हैं। जिस मासकी पूर्णिमामें विशाखा या अनुराधाका योग होता है, उस मासका नाम वैशाख है। विशाखा नक्षत्रमें होनेसे ही इस मासका नाम वैशाख हुआ। मुख्यचान्द्र वैशाखको उक्त पूर्णिमामें प्रथम पक्ष अन्त है और उक्त पूर्णिमामें गौणचान्द्र वैशाखकी परिसमाप्ति है। सब मासोंके सम्बन्धमें ऐसा ही नियम है। जिस पूर्णिमामें ज्येष्ठा या मूल नक्षत्रका योग होता है, वही ज्येष्ठ मास कहलाता है। ज्येष्ठा नक्षत्रका विशेष सम्बन्ध रहनेके कारण उक्त मासका नाम ज्येष्ठ हुआ। पूर्वाषाढ़ा या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिस पूर्णिमामें आता है, वही आषाढ़ है। श्रवणा वा धनिष्ठानक्षत्रके योगसे श्रावण; शतभिषा, पूर्व भाद्रपद अथवा उत्तर-भाद्रपदके योगसे भाद्रमास; रेवती, अश्विनी अथवा भरणीनक्षत्रके योगसे आश्विन; कृत्तिका या रोहिणीके योगसे कार्त्तिक; मृगशिरा या आर्द्रा नक्षत्रके योगसे मार्गशीर्ष या अग्रहायण; पुनर्वसु या पुष्यासे पौष; अश्लेषा या मघासे माघ; पूर्वफाल्गुण या उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रके योगसे फाल्गुन और चित्रा या स्वाती नक्षत्रके योगसे चैत्र मास होता है। इस तरह जिस जिस नक्षत्रका योग जिस जिस पूर्णिमामें होता है, उसीके नामानुरूप नाम होता है।

स्मार्त्त रघुनन्दन भट्टाचार्यने चान्द्रमासके ये जो नियम बनाये हैं कभी कभी इनमें व्यभिचार भी दिखाई देता है। फिर साधारणतः ये ही नियम दिखाई देते हैं।

मुख्यचान्द्रमासका और एक साधारण लक्षण इस तरह माना जा सकता है। शुक्लपक्षीय प्रतिपदाके अव्यवहित पूर्वक्षण अर्थात् पूर्व अमावस्याका चरम क्षण जिस सौरमासमें पड़ेगा, उसी शुक्लपक्षीय प्रतिपदसे अमावस्या तक ३० तिथियोंके नामके अनुसार सौरमासका नामकरण होगा। जैसे वैशाख मासकी एक अमावस्याका अन्त होनेसे परवर्त्ती शुक्लपक्षीय प्रतिपद्से अमावस्या तक जो मास होगा, वह मुख्यचान्द्र वैशाख है और उक्त शुक्लपक्षीय प्रतिपद्के पूर्ववर्त्ती कृष्णपक्षीय प्रतिपदसे गौणचान्द्र वैशाख आरम्भ होता है।

पञ्चाङ्गके साथ इन नियमोंको मिला कर देखनेसे सहज ही यह समझमें आ जाता है। नारायणोपाध्यायके मतसे अमावस्या तक मुख्यचान्द्रमास है। स्मार्त्त रघुनन्दनने इस मतका खण्डन किया है। उनका कहना है, कि ऐसा नियम बनानेसे वर्षमें छःसे अधिक चान्द्रमास नहीं हो सकते।

सौर और चान्द्र—इन दो तरहके महीनोंकी प्रयोजनीयता प्रदर्शित हुई। अभी नाक्षत्रमास और सावन मासकी प्रयोजनीयता दिखाई जायेगी। जन्मनक्षत्र यदि शनि मङ्गलवारको पड़े, तो उस महीनेका कल्मष नाम होता है और इस मासमें मनुष्योंको दुःख भोग करना पड़ता है।

"जन्मन्यृक्षे यदि स्यातां वारौ भौमशनैश्चरौ।
स मासः कल्मषो नाम मनोदुःखप्रदायकः॥"
(मलमासतत्त्व)

इस वचनके मास शब्दसे नाक्षत्र मास समझना होगा।

"नक्षत्रसत्रायणानि चेन्द्रोर्मानेन कुर्याद्गणात्मकेन।"
(मलमासतत्त्व)

नक्षत्रक्षेत्रमें याज्ञिकोंके लिये प्रसिद्ध मास संवत्सर साध्य यागविशेषमें मासगणना नाक्षत्रमासके हिसाबसे होगा। सोमायनयागमें भी ऐसा ही नियम है। नाक्षत्र मासके नाम भेद नहीं, अर्थात् बैशाख, ज्येष्ठ आदि इस तरहके नाम नहीं हैं। संकल्प वाक्यमें मासका उल्लेख नहीं होगा। सौरमास अथवा गौणचान्द्रमासका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उल्लेख करनेकी विधि होनेसे वही करना चाहिये, नहीं तो मुख्यचान्द्र मासका उल्लेख करना उचित है। निम्नलिखित सावन मासके लिये भी यही नियम है। गणना होगी सावन मासके अनुसार और कर्मविशेषमें किसी जगह सौर और किसी जगह चान्द्रमासोल्लेख होगा।

गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोन्नयन, नामकरण, चूड़ाकरण और उपनयन आदि तथा अशौचादिमें दिन मास और वर्ष-गणनाके लिये ही सावन मासकी प्रयोजनीयता रहती है।

इसमें विशेषता यही है, कि जिस कर्ममें किसी नामके उल्लेख करनेका कोई विशेष नियम नहीं है वहां मुख्यचान्द्रमासका उल्लेख होगा। क्योंकि, मास कहनेसे मुख्यचान्द्रमासका ही बोध होता है। "मास् चन्द्रः तस्यायं मासः" चन्द्र सम्बन्धी यही है, यही अर्थबोधक मास शब्द है। चन्द्र शुक्ल और कृष्णपक्ष द्वारा (मस) परिमाण करते है, इसीलिये इसका नाम मास है। अतएव मास शब्द चान्द्रमासका ही बोधक है।*

---

* अथ कर्म्मविशेषे मासविशेषादिः—तत्र पितामह :—

"आब्दिके पितृकृत्ये च मासश्चान्द्रमसः स्मृतः।
विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनो मतः॥

प्रथमादिपदं यात्राग्रहचारपरं, यत्कर्म्म सूर्य्यभोग्यराशुल्लेखेन च विशिष्योदगयनादिविहितं तत्परञ्च, अयनस्य सौरमासघटितत्वात्। तच्च चूड़ोपनयनादि, द्वितीयादिपदं सत्रप्रभृतिवृद्धिप्रायश्चित्तार्युदायाशौचगर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयननामकरणान्नप्राशननिष्क्रमणचूड़ादिपरं। तथाच विष्णुधर्मोत्तरे—

अध्वायनञ्च ग्रहचारकर्म्म सौरेन मासेन सदाध्यवस्येत्।
सत्राणुपास्यान्यथ सावनेन लौक्यञ्च यत्स्याद्व्यवहारकर्म्म॥

अध्वायनं अध्वगमनं यात्रेति यावत्। अथ सौरादिमासविहितकर्म्मणि—

विवाहोत्सवयज्ञेषु सौरं मासं प्रशस्यते।
पार्वणे त्वष्टकाशूद्धे चान्द्रमिष्टं तथाब्दिके॥

अत्र यज्ञपदमुदगयनादिविहितपशुयागाभिप्रायं पितामहोक्तस्तु विष्णुधर्म्मोत्तरोक्तसत्रपरं। गर्गः—आयुर्दायविभागश्च प्रायश्चित्तक्रिया तथा।

बैशाखादि विशेष विशेष नाम लेनेसे ही मुख्य चान्द्र बैशाखादि समझना होगा। साधारणतः वैशाखमास कहनेसे लोग सौरवैशाख मास ही समझते हैं। किन्तु वह शास्त्रानुमोदित नहीं है। बैशाख कहनेसे चान्द्रवैशाख ही समझना चाहिये। जीमूतवाहन आदिने मास कहनेसे साधारणतः सौरमास निर्देश किया है। किन्तु रघुनन्दनने इसका खण्डन कर यह स्थिर किया है, कि मास शब्द चन्द्रमासका ही बोधक है।

सौर, चान्द्र, नाक्षत्र और सावन ये चार तरहके मास होते हैं। इन चार प्रकारके मासों द्वारा चार तरहके वर्ष होते हैं। जैसे,—१२ सौरमासोंमें एक सौर वत्सर, बारह चान्द्रमासमें एक चान्द्र वर्ष, १२ नक्षत्रमासोंमें एक नाक्षत्र वर्ष, और १२ सावन मासोंमें एक सावन वर्ष होता है। बैशाख मास प्रथम सौरमास है। मेषराशि ही सर्व प्रथम राशि है। मेषमें सूर्य रहनेसे बैशाखमास होता है। इसीसे वैशाख प्रथम सौरमास है। साल और शकाब्द सौरवर्ष संघटित है। इसीलिये इसका आरम्भ सौरबैशाख मासमें ही होता है।

संवत् चान्द्रमाससम्बन्धी है। इसका प्रारम्भ प्रथम चान्द्र मासमें होता है। चैत्र मुख्यचान्द्र ही प्रथम चान्द्रमास है।

"चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्य्योदये सति।
प्रवर्त्तया मास तदा कालस्य गणनामपि।" (ब्रह्मपुराण)
'चैत्रसितादेरुदयाद्भानोर्वर्षन्तु मासयुगकल्पाः।
सृष्टपादौ लङ्कायामिह प्रवृत्ता दिनैर्वत्स॥"
(मलमासतत्त्वधृत ब्रह्मसिद्धान्त)

ब्रह्माने चैत्रमासके शुक्लपक्षके प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपत् तिथिको जगत्की सृष्टि की थी और मास, ऋतु, वत्सर युगादिकी गणना भी इसी समयसे प्रवर्त्तित की। इसीलिये वर्षका आरम्भ भी इसी दिन होता है।

(मलमासतत्त्व) वत्सर शब्द देखो।

सावनेन तु कर्त्तव्या मन्त्राणामप्युपासना।
सूर्य्यसिद्धान्ते—सतकादिपरिच्छेदो दिनमासाब्दपास्तथा॥
मध्यमग्रहभुक्तिश्च सावनेन प्रकीर्त्तिता।
मध्यमग्रहभुक्तिर्ज्योतिर्गणना प्रसिद्धा॥" (मलमासतत्त्व)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१२ महीनेका वर्ष होता है। किसी किसी समय १३ महीनेका भी वर्ष हो जाता है। जिस वार १३ महीनेका वर्ष होता है, उस वर्ष इन तेरह महीनोंमें एक मास मलमास होता है। यह मास निकृष्ट है; इसीसे 'मलमास' नाम हुआ है। विशेष विवरण मलमास शब्दमें देखो।

दो दो मासकी एक एक ऋतु होती है। इनमें माघ फाल्गुन शिशिर, चैत्र वैशाख वसन्त, ज्येष्ठ आषाढ़ ग्रीष्म है। ये तीन ऋतुएं उत्तरायण हैं, ये देवताओंके दिन है। श्रावण भाद्र वर्षा, आश्विन कार्त्तिक शरत्, अग्रहण और पौष हेमन्त है, ये तीन ऋतुएं दक्षिणायण हैं। ये देवताओंकी रात्रि हैं।

"तथा च श्रुतिः—तपस्तपस्यौ शैशिरावृतुः, मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतुः शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतुः, अथैतदुदगयनं देवानां दिनम्। नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतुः इषश्च ऊर्जश्च शारदावृतुः सहाश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतुः, अथैतद्दक्षिणायनं देवानां रात्रिरिति।"

(मलमासतत्त्व) ऋतु शब्द देखो

किस किस मासमें कौन कौन धर्म कर्म करना चाहिये, इसका विशेष विशेष विधान शास्त्रमें लिखा है। पद्मपुराणमें मासकृत विधान इस तरह लिखा है,—आषाढ़ मासकी शुक्ला द्वितीयामें वृषोत्सव, एकदशीके दिन स्वापोत्सव (शयनैकादशी), श्रावणमें श्रवणाविधि, भाद्रमें जन्माष्टमी, आश्विनमासमें पार्श्वपरिवर्त्तन-एकादशी और कार्त्तिकमें उत्थान एकादशी करनी चाहिये। जो यह नहीं करते वह विष्णुद्रोही होते हैं। कार्त्तिक मासमें दीपदान, अग्रहायणकी शुक्लषष्ठीमें शुभ्र वस्त्र द्वारा षष्ठीपूजा और सूती वस्त्र द्वारा विष्णुपूजा, पौष मासमें पुष्याभिषेक और माघमासकी संक्रान्ति तिथिमें सुगन्धित तण्डुल विष्णुको निवेदन कर निम्नोक्त मन्त्र पाठ करना होता है,—

"जीवनं सर्वभूतानां जनकस्त्वं जगद्गुरो।
तन्मायालीनता प्राप्ता त्वयैवजनिता प्रभो॥"

(पद्मपु० पाता:० ख० १२ अ०)

पीछे नाना प्रकारकी स्वादिष्ट वस्तुओं द्वारा ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिये। इस दिन एक ब्राह्मण-भोजन करोड़ ब्राह्मण-भोजन करानेका फल होता है। माघमासकी शुक्ला पञ्चमीको और फाल्गुन मासकी पूर्णिमाको होली मनानी चाहिये। (पद्मपुराण पातालख० १२ अ०)

हरिभक्तिविलासमें भी मासकृत्यका विशेष विवरण लिखा है।

स्मार्त्त रघुनन्दन कृत्यतत्त्वमें मासकृत्यके विषयमें कहते हैं,—

वैशाखकृत्य—वैशाखमासमें प्रातःस्नान, संक्रान्तिके दिन भोज्य पदार्थके साथ जलपूर्ण घटदान और अक्षय-तृतीयाके दिन स्नान, दान और व्रतादिका अनुष्ठान करना चाहिये। इस मासमें मसूर और नीमकी पत्ती जरूर खानी चाहिये। नीमके भोजनसे सर्पका भय नहीं रहता। मासके किसी दिनको नीमकी पत्ती खा लेनी चाहिये।

"मसूरनिम्बपत्राभ्यां योऽत्ति मेषगते रवौ।
अपि रोषान्वितस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति॥"

(कृत्यतत्त्व)

इस मासके शुक्ला द्वादशीको पिपीतक द्वादशीव्रत और यवश्राद्ध करना होता है।

ज्येष्ठकृत्य—कृष्णा चतुर्दशीमें सावित्रीव्रत, शुक्ला षष्ठीको आरण्यषष्ठी और महाज्येष्ठीमें जगन्नाथ-दर्शन या गङ्गा-स्नान करना चाहिये।

आषाढ़कृत्य—अम्बुवाची समयमें सर्पभय-निवारणके लिये दुग्धपान, नवोदकश्राद्ध और चातुर्मास्य-व्रतारम्भ और विष्णुशयन एकादशीव्रत करना चाहिये।

श्रावणकृत्य—श्रावणमासकी शुक्ल पंचमीको आंगनमें स्नूहीवृक्ष (थूहर)-की स्थापना कर मनसादेवी और अष्टनागकी पूजा करनी चाहिये। इससे सर्पभय निवारित होता है।

भाद्रकृत्य—जन्माष्टमीव्रत, शुक्ला पञ्चमीमें सर्पका चित्र बना कर पूजा करनी चाहिये। इसीसे इसको नागपञ्चमी कहते हैं। पार्श्वपरिवर्त्तन एकादशीव्रत भी अवश्य कर्त्तव्य है। इस मासकी शुक्ला और कृष्ण चौथके दिन चन्द्र नहीं देखना चाहिये। भाद्र शुक्ल १४ चतुर्दशीका नाम अघोरा-चतुर्दशी है। इस दिन शिवके लिये उपवास और अनन्तव्रत करना चाहिये। इस मासकी शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी तिथिमें कुक्कुटीव्रत,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गाष्टमीव्रत और तालनवमीव्रतका विधान भी है। अगस्त्य-पूजा कर उनके उद्देश्यसे अर्घदान भी करना चाहिये।

आश्विनकृत्य—अपर पक्षमें तर्पण, महालया श्राद्ध, दुर्गोत्सव और लक्ष्मीपूजा करनी होती है। कार्त्तिक कृत्य—इस मासमें प्रातःस्नान करना चाहिये। मत्स्य और मांस-भोजन बिलकुल नहीं करना चाहिये। शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णमा तक मांस-भक्षण विशेषरूपसे मना है। भूत, चतुर्दशी, दीपान्विता अमावस्या द्युतपात पटु सुबुद्धि तृतीया और विष्णु उत्थान एकादशी ये सब भी अवश्य कर्त्तव्य है।

अग्रहायणकृत्य—इसमें नवान्न श्राद्ध, शुक्ला चतुर्दशीके दिन सौभाग्य कामनासे पिष्टक द्वारा देवीकी पूजा और पूर्णिमाके दिन पार्वणश्राद्ध अवश्य कर्त्तव्य है।

पौषकृत्य—इस मासकी कृष्णाष्टमीमें पूजोपकरण द्वारा पार्वणविधानसे श्राद्ध करना चाहिये। इस श्राद्धको पूपाष्टका श्राद्ध कहते हैं।

माघकृत्य—इस मासमें अरुणोदय समयमें स्नान करना आवश्यक है। माघ महीनेमें मूली नहीं खानी चाहिये। कृष्णाष्टमीमें बकरेका मांस, मांसके अभावमें पायस और पायसाभावमें केवल अन्न द्वारा श्राद्ध करना विधेय है। इसके सिवा रटन्ती चतुर्दशी, श्रीपञ्चमी, माघ सप्तमी, विधान सप्तमी, आरोग्य सप्तमी और भीष्माष्टमी विहितकार्य भी करना चाहिये।

फाल्गुणकृत्य—इस मासकी कृष्णाष्टमीको केवल अन्न द्वारा पार्वण श्राद्ध और शिवरात्रिव्रत करनेकी विधि है। इस मासकी शुक्ल-द्वादशी और गोविन्द द्वादशीके दिन गङ्गास्नान करनेसे महापातक नष्ट होते हैं।

चैत्रकृत्य—इस मासकी संक्रान्तिके दिन ये चक्र आदि विस्फोटकके भयको दूर करनेके लिये स्नुहीवृक्षमें घण्टाकर्णकी पूजा करनी चाहिये। इसके बाद वारुणी, अशोकाष्टमी, श्रीरामनवमी व्रत, मदन त्रयोदशी और मदन चतुर्दशी व्रत भी करना चाहिये। जिन सब बातोंका नामोल्लेख किया गया उनका विशेष विवरण उन्हीं सब शब्दोंमें देखना चाहिये। (कृत्यतत्त्व)

मासक (सं० पु०) १ माषक परिमाण, माशा। २ मुख्य मास। ३ क्षुद्ररोगविशेष।

मासकालिक (सं० त्रि०) १ महीनेका समय। २ मासिक।

मासचारिक (सं० त्रि०) मासानुष्ठेय, जो एक मास तक कर्त्तव्य हो।

मासजात (सं० त्रि०) १ एक मासके जैसा। २ जिसको जन्म होनेसे केवल एक महीना हुआ हो।

मासज्ञ (सं० पु०) १ दात्यूह पक्षी, वनमुर्गी। २ हरिणविशेष, एक प्रकारका हिरन। (त्रि०) ३ मासज्ञाता, महीना जाननेवाला।

मासतम (सं० त्रि०) १ मासिक। २ पूरा एक महीना।

मासताला (सं० स्त्री०) मासेन तालो ध्वनिः परिच्छेदो यस्याः। वाद्ययन्त्रभेद, करताल।

मासतुल्य (सं० त्रि०) एक मास तक।

मासत्रय (सं० क्ली०) तीन महीने।

मासत्रयावधि (सं० अव्य०) तीन महीने तक।

मासदेय (सं० त्रि०) प्रति मासमें परिशोधनीय।

मासद्वयोद्भव (सं० पु०) १ षष्टिक शालिधान्य, साठी धान। २ गौरषष्टिक एक प्रकारका धान।

मासद्वयोद्भवा (सं० स्त्री०) मासद्वयोद्भव देखो।

मासधा (सं० अव्य०) प्रति महीनेमें।

मासन (सं० क्ली०) सोमराज।

मासपर्णी (सं० स्त्री०) माषपर्णी देखो।

मासपाक (सं० त्रि०) एक मासमें परिपक्व।

मासपूर्व (सं० त्रि०) पहले महीनेमें संघटित, एक महीना पहिले।

मासप्रमित (सं० त्रि०) मास घटित, जो एक महीनेमें हो।

मासप्रवेश (सं० पु०) मासागम, महीनेका प्रारम्भ होना।

मासफल (सं० पु०) वह पत्र जिसमें फलित ज्योतिषके अनुसार महीने भरका शुभाशुभ फल लिखा हो। इसे मासपत्र भी कहते हैं।

मासभुक्ति (सं० स्त्री०) मासिकगति।

मासमान (सं० पु०) मासैर्द्वादशभिर्मानमस्य। १ वत्सर, वर्ष। २ मासपरिमाण, एक महीने तक। ३ माषमान, एक माशा।

मासर (सं० पु०) मस-णिच् बाहुलकात् अरन्। अन्न-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समुद्भव मण्ड, एक प्रकारका पेय पदार्थ जो चावलके मांड और अंगूरके उठे हुए रससे बनाया जाता था। इसका प्रयोग यज्ञोंमें तथा यह मादक होता था। पर्याय—आचाम, निस्राव। २ काञ्जिक, कांजी।

मासवर्त्तिका (सं० स्त्री०) सर्षपी नामक पक्षिविशेष, श्यामा वा पवईकी जातिका एक पक्षी।

मासवृद्धि (सं० स्त्री०) १ कोरण्ड अंड वृद्धिका रोग। २ गलगण्डादि, घेघा।

मासल (सं० त्रि०) मास सिध्मादित्वात् लच्। मांसल, मांसयुक्त, हट्टा कट्टा।

मासशम् (सं० अव्य०) प्रति मास, हर एक महीना।

मासस्राथिक (सं० त्रि०) एक महीने तकके लिये संचय किया हुआ।

मासस्तोम (सं० पु०) एकाहभेद, एक प्रकारका एकाह यज्ञ।

मासा (सं० पु०) माशा देखो।

मासाधिप (सं० पु०) मासानामधिपः। मासाधिपति, वह ग्रह जो मासका स्वामी हो। चन्द्रसे उर्द्ध्व कक्षाक्रमसे जो सब ग्रह अवस्थित हैं, वे ही त्रिंशदिनात्मक मासके अधिप या स्वामी कहे गये हैं। उक्त क्रम यथा—चन्द्र, बुध, शुक्र, रवि, मंगल, बृहस्पति और शनि।

"ऊर्द्ध्वक्रमेण शशिनो मासानामधिपाः स्मृताः।"

(सूर्यसिद्धान्त १२।७९)

मासाधिपति (सं० पु०) मासस्वामी, ग्रह।

मासानुमासिक (सं० त्रि०) प्रति मास सम्बन्धी, प्रति मासका।

मासान्त (सं० पु०) मासस्य अन्तः। एक महीनेका अन्त। २ अमावस्या, मासके अन्तमें यात्रा बना कर कहीं नहीं जाना चाहिये। जो इसमें यात्रा करते हैं उनकी मृत्यु होती है।

"पक्षान्ते निष्फला यात्रा मासान्ते मरणं ध्रुवम्॥"

(समयप्र०)

३ संक्रान्ति-दिन। इस दिन विवाह होनेसे कन्याकी मृत्यु होती है। सुतरां विवाहमें यह दिन प्रशस्त नहीं माना गया है। मासके अन्तमें एक दिन छोड़ कर विवाहका दिन स्थिर करना होता है।

"मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं रिष्ट्यां मृत्युर्द्वयोर्भवेत्॥
मासान्ते दिनमेकन्तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम्।
घटिका त्रितयं भान्ते विवाहे परिवर्ज्जयेत्॥"

(रत्नमाला)

मासापवर्ग (सं० त्रि०) एक महीने तक।

मासालर—भिक्षाजीवी जातिविशेष। कर्णाटप्रदेशमें इनका अधिक वास देखा जाता है। मान्द्राजके नाना स्थानोंमें ये लोग भीख मांगने जाते हैं। पहले पेनागुण्डी और हिन्दूपुरमें इनका वास था। १८७६ ई०के घोर दुर्भिक्षके समय ये लोग धारवार जिलेमें आ कर बस गये। तेलगू और मिश्र कनाड़ी भाषामें ये बोलचाल करते हैं। जब किसी गांवमें ये जाते, तब लादोगर वा माङ्गजातिके घर आश्रय लेते हैं। इनका विश्वास है, कि ये लोग भी इसी माङ्गवंशसे उत्पन्न हुए हैं। ये लोग गदहेको पालते हैं। जब कभी बाहर निकलते, तब उसी गदहे पर अपना कपड़ा लत्ता लादते हैं। ये लोग भेंड़े, मुर्गी, मरे बैल, गाय, भैंस सूअर आदिके मांस खाते हैं। शराब इन लोगोंको बहुत प्रिय है। ये रस्सेके ऊपर नाच दिखा कर पैसे कमाते हैं। विवाहमें ३०) से अधिक रुपया खर्च नहीं होता जिसमें १५) रु० लड़कीके बापको देना होता है। तिरुपतिके वेङ्कटरमण इनके उपास्य देवता हैं जो चतुर्भुज तथा शङ्ख, चक्र, गदा और पद्मधारी हैं। प्लेगकी अधिष्ठात्री दुर्गाम्मा देवीकी भी ये लोग पूजा करते हैं। पूजाके समय ब्राह्मणको जरूरत नहीं पड़ती। इनके कोई दीक्षागुरु भी नहीं हैं।

ये लोग जातबालकके पार्श्वदेशमें तप्तलौह शलाकासे × ऐसा चिह्न लगाते हैं। पीछे प्रसूति और बालकको स्नान कराया जाता है। इनका विश्वास है, कि इससे भविष्यमें बालक पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती। विवाहके समय दुर्गादेवी और वेङ्कटरमणकी पूजा होती है। इनमें बाल्य-विवाह और विधवा-विवाह प्रचलित है जनन वा मरणमें कोई भी अशौच नहीं मानता। इनकी मृतदेह गाड़ी जाती है।

मासावधिक (सं० त्रि०) मास पर्यन्त, एक महीने तक।

मासाहार (सं० त्रि०) एक मास अन्तर भोजनकारी, एक महीनेके बाद भोजन करनेवाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मासिक (सं० त्रि०) मासि भव इति मास ष्ठिक्। मास-सम्बन्धीय, महीनेका।

"पणो देयोऽवकृष्टस्य षड्भुत्कृष्टस्य वेतनम्।
षाण्मासिकस्तथाच्छादो धान्यद्रोणस्तु मासिकः॥"
(मनु० ७।१२६)

मासे भवमिति मास (कालाट्ठञ्च। पा ४।३।११) इति ठञ्। मृतके सजातीय द्वारा संवत्सर या वर्षके भीतर प्रति मासकी कृष्णा तिथिमें जो श्राद्ध किया जाता है उसे भी मासिक कहते हैं। यह नैमित्तिक श्राद्ध है।

पर्याय—अन्वाहार्य।

"पितृणां मासिकं श्राद्धमन्वाहार्य्यं विदुर्बुधाः॥"
(मनु ३।१२३)

प्रेतकी प्रेतत्वविमुक्तिके लिये आद्य एकोद्दिष्ट, द्वादश-मासिक, प्रथम और द्वितीय षाण्मासिक तथा सपिण्डी-करण—ये षोड़स श्राद्ध करने होते हैं। प्रति महीनेकी निर्दिष्ट तिथिमें शास्त्रानुसार मासिक तथा प्रथम और द्वितीय षाण्मासिक (छः माही) श्राद्ध करना चाहिये। यदि किसी कारणवश मासिक-श्राद्ध महीने महीने न हो सके, तो यथार्थ तिथिके पूर्वाह्नमें प्रथम और द्वितीय षाण्-मासिक कर दूसरे दिन बारहों मासिक किया जा सकता है।

"षाण्मासिकाब्दिके श्राद्धे स्यातां पूर्वद्युरेव ते।
मासिकानि स्वकीये तु दिवसे द्वादशापि च॥" (पैठीनसि)

सपिण्डीकरण करनेके पहले मलमास उपस्थित होने पर मासिकके सम्बन्धमें अलग व्यवस्था है। मृताह-से ग्यारह महीनेके बीचमें कहीं मलमास पड़ गया, तो एक मासिक अधिक करना होगा। अर्थात् १२-की जगह १३ मासिक-श्राद्ध करना होगा। छः महीनेमें मलमास पड़नेसे छःमासिककी पूर्व तिथिमें प्रथम षाण्-मासिक और १३ मासिककी पूर्व तिथिमें द्वितीय षाण्-मासिक करना होगा। इन मासिक श्राद्धोंमें यदि कोई मासिक पतित हो, या छूट जाय, तो कृष्ण एकादशी, अमावस्या अथवा मासिकान्तर तिथिमें मासिक-श्राद्ध कर पीछे यथार्थ कार्य सम्पादन करना चाहिये। अशौच होने पर जब अशौच शेष हो जाय, तब मासिक-श्राद्ध करनेकी विधि है। एकादशाहादि कई श्राद्ध कर यदि श्राद्ध करने-वाला मर जाय, तो बाकी श्राद्ध दूसरे आदमीको पूरा कर देना उचित है। मासिक व्यवस्थाके सम्बन्धमें अन्यान्य विषय श्राद्ध शब्दमें देखो।

मासिक एकोदिष्ट श्राद्धका प्रयोग यों है,—श्राद्धके पहले दिन निरामिष एकाहार करके दूसरे दिन स्नानादि करनेके बाद यथासमय भोज्योत्सर्ग कर कुशमय ब्राह्मण-स्नान, वास्तु-पुरुषादिकी पूजा और भूस्वामी पितृगणको श्राद्धाग्र भाग दान करना चाहिये। इसके बाद दक्षिण मुंह हो कर इस तरह अनुज्ञा-वाक्य पढ़ना चाहिये। जैसे,—अद्यामुके मासि अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य प्रेतस्य अमुक देवशर्मणः प्रथममासिकैकोदिष्ट श्राद्धं दर्भमय ब्राह्मणोऽहं करिष्ये।" पीछे पुरोहितको 'कुरुष्व' ऐसा उत्तर देना चाहिये। इसके बाद गायत्री, "देवताभ्य" इत्यादि मन्त्रोंका तीन बार पाठ, पुण्डरीकाक्ष स्मरण कर भूजल द्वारा श्राद्धीय द्रव्य प्रोक्षण और रक्षार्थ उदकपूर्ण पात्रको एक जगह स्थापन, दर्भासन दान, अर्घ्यादि दान, अन्न दान, गायत्री 'मधुवाता' और 'यज्ञेश्वरो हव्यः समस्त' इत्यादि मन्त्र पाठ, पिण्डदान, पिण्ड-पूजा, पिण्डोपरि-वारिधारा, दक्षिणा, ब्राह्मण विसर्जन, अच्छिद्रावधारण, दीपाच्छादन और विष्णु स्मरण आदि करना कर्त्तव्य है। श्राद्धके बाद श्राद्धीय पिण्ड गो या बकरीको खिला दे या ब्राह्मणको दे दे या अग्निमें जला दे अथवा जलमें फेंक दे। मासिक श्राद्धप्रयोगके सम्बन्धमें मोटा-मोटी ये कई बातें कहीं गईं। इसमें जिन सब वाक्यों, मन्त्रों तथा अन्यान्य प्रक्रियाओंका उल्लेख है, विस्तार हो जानेके भयसे वे यहां पर नहीं लिखे गये। मासिक-श्राद्धका प्रयोग बाहुल्यश्राद्धप्रयोग तत्त्वमें देखो।

इसी तरह २रा ३रा मासिक भी करना कर्त्तव्य है। श्राद्ध देखो।

मासी (हिं० स्त्री०) माँकी बहिन, मौसी।

मासीन (सं० त्रि०) मासं भूतं मास-(मासाद्वयसि यत् खञ्। पा ५।१।८१) इति खञ्। जिसकी अवस्था एक महीने-की हो, महीने भरका, जैसे—द्विमासीन, पञ्चमासीन, षण्मासीन इत्यादि।

मासुरकर्ण (सं० पु०) मसुर कर्ण-अपत्यार्थे अण्। (शिवा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा देशा० ७४° ६' पू०के मध्य विस्तृत है। यह नगर प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है। जो भाग कृष्णानदीके पूर्वी किनारे अवस्थित है उसे क्षेत्रमाहुली और जो पश्चिमी किनारे है उसे वस्तिमाहुली कहते हैं।

महाराष्ट्रीय सुविख्यात पन्तप्रतिनिधिवंशके अधिकारमें रह कर यह नगर उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंच गया था। धर्मप्राण सचिववंशकी देवकीर्त्तियां आज भी माहुली नगरीकी गौरव-रक्षा करती हैं। कृष्णा-तीरवर्त्ती १० देवमन्दिर ही प्रधानतः उल्लेखनीय हैं। क्षेत्रमाहुलीके गिरिघाट पर अवस्थित राधाशङ्कर-मन्दिरका चबूतरा वापुभट्ट गोविन्दभट्ट द्वारा १७८० ई०में बनाया गया। १७४२ ई०में श्रीपतराव पन्तप्रतिनिधि-प्रतिष्ठित विश्वेश्वर-मन्दिर, १७०० ई०में परशुरामनारायण अङ्गल द्वारा निर्मित रामेश्वर-मन्दिर, १७४० ई०में श्रीपतराव पन्त-प्रतिनिधि द्वारा स्थापित सङ्गमस्थलका सङ्गमेश्वर महादेव-मन्दिर और १७३५ ई०में श्रीपत्राव द्वारा स्थापित विश्वेश्वर महादेवका मन्दिर विशेष उल्लेखयोग्य हैं। विश्वेश्वर-मन्दिरमें जो बड़ा घण्टा लटक रहा है, उसे १७३९ ई०में बसई जीतने पर महाराष्ट्रगण किसी पुर्त्तगीज गिर्जासे उठा लाये थे। मन्दिरके पश्चाद् भागमें रामचन्द्रका मन्दिर विद्यमान है। उसका निर्माण १७७२ ई०में सेनापति त्रिम्बक विश्वनाथ पेटे द्वारा हुआ था। उक्त पांच मन्दिरोंके अलावा और भी पांच छोटे छोटे मन्दिर हैं। इन सब मन्दिरोंका भी कारुकार्य किसी अंशमें कम नहीं है। इन पांच छोटे मन्दिरोंमेंसे विठोवाका मन्दिर १७३० ई०में चिचँनेरवासी ज्योतिपन्त भागवत द्वारा, १७७० ई०में भैरवदेवका मन्दिर कृष्णभट्ट तालका द्वारा, १९५४ ई०में कृष्णावाईका मन्दिर और १७९० ई०में महादेवका मन्दिर कृष्णदीक्षित चिपलुनकर द्वारा स्थापित हुआ। अलावा इसके सतारा रानीका बनाया हुआ एक और भी शिल्पकार्य-युक्त मन्दिर है।

उक्त मन्दिरोंको छोड़ कर रास्तेके दोनों बगल समाधिस्तम्भ दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें सतारा-राजपरिवारका स्मृतिचिह्न ही अधिक है। राजा शाहु (१७०८-१७४९ ई०)-ने अपने प्यारे कुत्तेकी स्मृतिरक्षाके लिये यहां एक स्तम्भ खड़ा किया। उस कुत्तेने उन्हें बाघके आक्रमणसे बचाया था। इस कृतज्ञता-स्वरूप शाहु उसे बहुमूल्य वस्त्रसे ढके रहते थे तथा जहां वे जाते, वहां कुत्तेको पालकी पर चढ़ा ले जाते थे।

केवल देवकीर्त्तिके लिये ही इस नगरकी प्रसिद्धि थी सो नहीं। चतुर्थ पेशवा माधवरावके गुरु और राजकार्यमें सलाह देनेवाले देवप्रतिम रामशास्त्री परभोनेका यहां जन्म हुआ था। १८१७-१८ ई०में अन्तिम पेशवा बाजीरावके साथ अंगरेजोंके युद्ध-घोषणा करनेसे कुछ पहले सर जान मालकम यहां आ कर पेशवासे मिले थे। युद्धके समय नाना स्थानोंमें पर्यटन कर स्वयं पेशवाने ही यहां कई बार आश्रय लिया था।

माहूं (हिं० स्त्री०) एक छोटा कीड़ा जो राई, सरसों, मूकी आदिकी फसलमें उनके डंठलों पर फुलनेके समय या उसके पहले अण्डे दे देता है जिससे फसल नितान्त हीन हो कर नष्ट हो जाती है। यह काले रंगका परदार भुनगेके आकारका कीड़ा होता है और जाड़ेके दिनोंमें फसल पर लगता है। यदि पानी बरष जाय तो कीड़े नष्ट हो जाते हैं। प्रायः अधिक बदलीके दिनोंमें, जब पानी नहीं बरसता, ये कीड़े अण्डे देते हैं और फसलके डंठलों पर फूलोंके आस पास उत्पन्न हो जाते हैं।

माहेजी—बम्बई-प्रदेशके खान्देश जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २०° ४८' उ० तथा देशा० ७५° २४' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या डेढ़ हजारसे ऊपर है। यहां १८७१ ई०में म्युनिसपलिटी स्थापित हुई थी, पर १९०३ ई०में उठा दी गई। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेका एक स्टेशन होनेके कारण नगर दिनों दिन उन्नति कर रहा है।

शहरमें प्रति वर्ष माघसे ले कर चैतमास तक माहेजी नामक एक कृषक-रमणीके उद्देशसे मेला लगता है। खान्देशमें ऐसा बड़ा मेला और कहीं भी देखनेमें नहीं आता। मेलेके समय गाय, घोड़े आदि बिकनेको आते हैं तथा कृषिप्रदर्शनी होती है।

स्थानीय प्रवाद है, कि उक्त रमणी ब्रह्मचर्यका अवलम्बन कर योगासिद्ध हुई थीं। आजसे प्रायः २७५ वर्ष पहले वे जनतामें अपना अलौकिक प्रभाव दिखा गई हैं। जहां मेला लगता है उसके पासही माहेजीको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवन्त समाधिका स्थान आज भी देखनेमें आता है।

माहेतावा (फा० पु०) चिलमची।

माहेन्द्र (सं० त्रि०) महेन्द्रो देवता अस्य महेन्द्र (महेन्द्राद धाणौ च। पा ४।८।२९) इति अण्। १ महेन्द्रदैवत्य, जिसका देवता इन्द्र हो।

"अविघ्नजन्तुतः शस्त्रमैषीकं राक्षसो रणे।
तदप्यध्वसदासाद्य माहेन्द्रलक्षणोरितम्॥"

(भट्टि १५।९३)

२ महेन्द्रसम्बन्धी, इन्द्रसम्बन्धी। (पु०) महेन्द्रस्यायं अण्। ३ शुभदण्डविशेष, वारके अनुसार भिन्न भिन्न दंडोंमें पड़नेवाला एक योग जिसमें यात्रा करनेका विधान है। रवि आदि सभी वारोंमें माहेन्द्र, वारुण आदि दण्ड हैं, उस दण्डको साधारणतः माहेन्द्र, योग वा माहेन्द्रक्षण कहते हैं। यह योग प्रतिवारको क्रमानुसार पंद्रह बार आता है। प्रतिदिनके दण्डोंमें ये चार चार योग भिन्न भिन्न क्रमसे आते रहते हैं; माहेन्द्र, वरुण, वायु और यम। इनमें वरुण और माहेन्द्रका दण्ड शुभ तथा वायु और यमका दण्ड अशुभ है। * चारों योग सप्ताहके प्रति दिन इस प्रकार आया करते हैं:—

दिन	प्रथमदण्ड	द्वितीयदण्ड	तृतीयदण्ड	चतुर्थदण्ड
रवि	वायु	वरुण	यम	माहेन्द्र
चन्द्र	माहेन्द्र	वायु	वरुण	यम
भौम	वरुण	यम	माहेन्द्र	वायु
बुध	माहेन्द्र	वायु	वरुण	यम
गुरु	वायु	वरुण	यम	माहेन्द्र
शुक्र	माहेन्द्र	वायु	यम	वरुण
शनि	यम	माहेन्द्र	वायु	वरुण

* "ख्यातं वा व य मा सूर्ये मा वा व य कलानिधौ।
व य मा वा कुजे शेया मा वा व ज सुधांशुजे॥
गुरौ वा व य मा चैव मा वा थ व तथा-भृगौ।
सूर्यपुत्रे च य मा वा घटीयुग्मं शुभाशुभम्॥
माहेन्द्रे विजयो नित्यं वारुणो च धनागमः।
वायौ च भ्रमते नित्यं यमेऽपि मरणं ध्रुवम्॥"

(सारसंग्रह)

इन चारों योगोंमें माहेन्द्र योग विजयाकारक, वरुण धनप्रद, वायु नित्यभ्रमण करानेवाला और यम मृत्यु देनेवाला है।

४ जैनियोंके एक देवता जो कल्पभव नामक वैमानिक देवगणमें हैं। ५ एक अस्त्रका नाम।

६ सुश्रुतके अनुसार एक देवग्रह। इसके आक्रमण करनेसे ग्रहग्रस्त पुरुषमें माहात्म्य, शौर्य, शास्त्र-वृद्धिता, भृत्यभरण आदि गुण एकाएक आ जाते हैं।

"माहात्म्यं शौर्यमाज्ञा च सततं शास्त्रबुद्धिता।
भृत्यानां भरणञ्चापि माहेन्द्रं लक्षणोरितम्॥"

(सुश्रुत सूत्र ४ अ०)

माहेन्द्रज (सं० पु०) जैनियोंके एक देवताका नाम।

माहेन्द्रवाणी (सं० स्त्री०) महाभारतके अनुसार एक नदीका नाम।

माहेन्द्री (सं० स्त्री०) महेन्द्रस्येयं महेन्द्र अण्, स्त्रियां ङीष्। १ इन्द्राणी। २ गाभी, गाय। ३ इन्द्रवारुणीलता, इन्द्रायण। ४ सप्त मातृकाभेद, सात मातृकाओंमेंसे एक। ५ स्कन्दानुचर मातृभेद। ६ ऐन्द्रशक्ति, इन्द्रकी शक्ति।

माहेय (सं० त्रि०) माही ढक्। १ महीका अपत्य, मिट्टीका बना हुआ। (पु०) २ महाभारतके अनुसार एक जनपदका नाम। ३ मंगलग्रह। ४ जातिविशेष। ५ विदुम, मूंगा।

माहेयी (सं० स्त्री०) मह्याः सुरभ्याः अपत्यमिति मही- (नद्यादिभ्यो ढक। पा ४।२।९७) इति ढक् स्त्रियां ङीष्। १ गाभी, गाय। २ माही नदी।

माहेल (सं० पु०) एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

माहेश (सं० पु०) महेश अण्। १ महेशसम्बन्धीय, महेशका। (क्ली०) महेशेन कृतमित्यण्। २ व्याकरण-विशेष, माहेशव्याकरण।

माहेश—हुगली जिलेके गंगातीरवर्त्ती एक प्रसिद्ध गांव। यहां जगन्नाथदेवके स्नान और रथयात्रा उपलक्षमें एकत्र मेला लगता है। महेश देखो।

माहेशी (सं० स्त्री०) महेशस्येयं महेश-अण्, ङीष्। दुर्गा।

"महादेवात् समुत्पन्ना महान्तैरीक्ष्यते यतः।
माहेश्वर्या तनुर्यस्या माहेशी तेन सा स्मृता॥"

(देवीपु० ३५ अ०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माहेश्वर (सं० त्रि०) महेश्वर अण्। १ महेश्वरसम्बन्धीय, महेश्वरका। (क्ली०) २ एक उपपुराणका नाम। ३ यज्ञभेद।

"माहेश्वरं भागवतं वासिष्ठञ्च सविस्तरम्।
एत्यान्युपपुराणानि कथितानि महात्मभिः॥"
(देवीभाग० १।३।१६)

४ शैवसम्प्रदायका एक भेद। ५ सभानाटकके प्रणेता। ६ माहेश्वरास्त्र, एक अस्त्रका नाम। ७ पाणिनिके वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यञ्जन वर्णोंका संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। इसके विषयमें लोगोंका विश्वास है, कि ये सूत्र शिवजीके तांडव नृत्यके समय उनके डमरूसे निकले थे। सूत्र ये हैं—अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्।

माहेश्वरकवच—माहेशाक्षर संयुक्त कवचभेद। ज्वरातिसार रोगमें यह कवच बड़ा उपकारी है। इसके पहननेसे शरीरमें शिवके समान बल होता तथा भूत, पिशाच, विनायक आदि शरीरमें प्रवेश नहीं कर सकता। कवचकी प्रस्तुत प्रणाली और मन्त्र नीचे लिखे हैं—

"ओं नमः पञ्चवक्त्राय शशिसोमार्कनेत्राय भयार्त्तानाम भयाय मम सर्वगात्ररक्षार्थे विनियोगः।

ओं हौं हाँ हाँ मन्त्रेणानेन वृषगोमयभस्मानामामन्त्र्य ललाटे तिलक मादाय पठेत्॥

"त्राहि मां देवदुष्प्रेक्ष्य शत्रूणां भयवर्द्धन।
ओं स्वच्छन्दोभैरव प्राच्यामाग्नेयां शिखिलोचनः॥
भूतेशो दक्षिणे भागे नैऋत्यां भीमदर्शनः।
वरुणे वृषकेतुश्च वायौ रक्षतु शङ्करः॥
दिग्वासाः सौम्यतो नित्यमैशान्यां मदनान्तकः।
वामदेव ऊर्द्ध्वतो रक्षेदधो रक्षेत् त्रिलोचनः॥
पुरारिः पुरतः पातु कपर्द्दी पातु पृष्ठतः।
विश्वेशो दक्षिणे भागे वामे कालीपतिः सदा॥
महेश्वरः शिरोभागे भवो भाले सदैव तु।
भ्रुवोर्मध्ये महातेजास्त्रिनेत्रो नेत्रयोर्द्वयोः॥
पिनाकी नासिकादेशे कर्णयोर्गिरिजापतिः।
उग्रः कपालतो रक्षेन्मुखदेशे महाभुजः॥
जिह्वायामङ्गकध्वंसी दन्तान् रक्षतु मृत्युजित्।
नीलकण्ठः सदा कण्ठे पृष्ठे कामाङ्गनाशनः॥
त्रिपुरारिः स्कन्धदेशे बाह्वोश्च चन्द्रशेखरः।
हस्तिचर्मधरो हस्ते नखांगुलिषु शूलभृत्॥
भवानीशः पातु हृदयं पातूदरकटीमृडः।
गुदे लिङ्गे च मेढ्रे च नामौ च प्रथमाधिपः॥
जङ्घोरुचरणे भीम सर्वाङ्गे केशवप्रियः।
रोमकूपे विरूपाक्षः शब्दस्पर्शे च योगवित्॥
रक्तमज्जवसामांसशुक्रे वसुगणार्चितः।
प्राणापानसमानेषूदानव्यानेषु धूर्ज्जटिः॥
रक्षाहीनन्तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन यत्॥
तत् सर्वं रक्ष मे देव व्याधिदुर्गज्वरादितः।
कार्यं कर्म त्विदं प्राज्ञैदीपं प्रज्वल्य सर्पिषा।
नैवेद्यं शिखिनेत्राय वारयेच्चोत्तरं मुखम्॥
ज्वरदाहपरिक्रान्तं तथान्यव्याधिसंयुतम्।
कुशैः संमार्ज्य संमार्ज्य क्षिपेत् दापशिखे ज्वरम्॥
ऐकाहिकं द्व्याहिकं वा तृतीयक चतुर्थकम्।
वातपित्त फफोद्भूतं सान्निपातोग्रतेजसम्॥
अन्यं दुख दुराधर्षं कर्मजञ्चाभिचारिकम्।
धातुस्थं कफसंमिश्रं विषमं कामसम्भवम्।
भूताभिषङ्गसंसर्गं भूतचेष्टादिसंस्थितम्॥
शिवाज्ञां घोरमन्त्रेण पूर्ववृत्तं स्वयं स्मर॥
जहि देहं मनुष्यस्य दीपं गच्छ महाज्वर।
कृत्वा तु कवचं दिव्यं सर्वव्याधि भयार्द्दनम्॥
न बाधन्ते बाधयन्तं बालग्रहभयाश्च ये।
लूताविस्फोकं घोरं शिरोर्त्तिच्छर्दिविग्रहम्॥
कामलां क्षयकासञ्च गुल्माश्मरी भगन्दरान्।
शूलोन्मादञ्च हृद्रोगं यकृतं पाण्डुविद्रधिम्॥
अतीसारादयो रोगा डाकिनी ग्रहपीड़िताः।
पामाविचर्चिकादद्रुकुष्ठव्याधिविषार्द्दनम्॥
स्मरणान्नाशयत्याशु कवचं शूलपाणिनः।
यस्तु स्मरति नित्यं वै यस्तु धारयते नरः॥
स मुक्तः सर्वपापेभ्यो वसेत् शिवपुरे चिरम्।
संख्या व्रतस्य दानस्य यज्ञास्यास्तीह शास्त्रतः॥
न संख्या विद्यते शम्भोः कवचस्यास्माद् यतः।
तस्मात् सम्यगिदं सर्वैः सर्वकाम फलप्रदम्।
श्रोतव्यं सततं भक्त्या कवचं सर्वकामिकम्॥
लिखितं तिष्ठते यस्य गृहे सम्यगनुत्तमम्।
न तत्र कलहद्यूतं नाकालमरणं भवेत्॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाल्यप्रजाः स्त्रियस्तत्र नादौर्भाग्यसमाश्रिताः।
तस्मान्माहेश्वरं नाम कवचं सुरगणार्चितम्॥"

माहेश्वरधूप (सं० पु०) ज्वराधिकारोक्त धूपौषधभेद। बनानेका तरीका—हिंगुल, देवदारु, सरलकाष्ठ, गव्यघृत, गोकी हड्डी, गन्धतृण, शिवनिर्माल्य, कटुकी, सफेद सरसों, निम्बपत्र, मयूरपुच्छ, सांपका केंचुल, बिड़ालकी विष्ठा, गोशृङ्ग, मदनफल, वृहती, कण्टकारी, धानकी भूसी, बकरेकी विष्ठा, शृगालकी विष्ठा और हस्तिदन्त,—इन सब द्रव्योंको संग्रह कर बकरेके मूतमें भावना दे। पीछे उखलीमें कूट कर मिट्टीके बरतनमें रख धूपित करे। यह धूप एक दिन, दो दिन, तीन दिन, और चार दिनमें आने-वाले सभी प्रकारके विषम ज्वरको नाश करता है। जिस घरमें यह धूप दिया जाता है, वहां उसकी गंधसे सांप पिशाच आदि घुसने नहीं पाता। 'ओं नमो भगवते उमापतये सम्पन्नाय नन्दिकेश्वराय।' इस मन्त्रसे धूपको अभिमन्त्रण करे।

माहेश्वरी (सं० स्त्री०) महेश्वरस्येयं अण् ङीप्। १ यव-तिक्ता, शंखिनी नामकी लता। २ दुर्गा।

"भगवदेवानुजातायां सर्वासां वामलोचना।
माहेश्वरी महादेवी प्रोच्यते पार्वती हि सा॥"

(भाग० १४।४३।१५)

३ एक मातृकाका नाम। ४ पीठस्थानभेद एक पीठ-का नाम। (देवीभा० ७।२०।७२) ५ नदीविशेष। ६ वैश्यों-की एक जाति।

मिं—चीनदेशकी एक जाति। इस जातिने १३७० ई०से १६५० तक चीनमें राज्य किया था। इस वंशका प्रति-ष्ठाता यु-येन-यां एक श्रमजीवीका लड़का था। युवा-वस्थामें वह किसी बौद्धमठमें एक नौकर था। पीछे मोङ्ग-लोयोंने जब चीन पर आक्रमण किया, तब यह दलपति हो कर उनके साथ लड़ा था। थोड़े ही दिनोंके अन्दर वह एक बड़े सेनादलका अधिनायक हो गया। पीछे उन्हीं सेनाओंकी सहायतासे इसने चीन-साम्राज्यके १३ प्रदेशोंको ले कर नया राज्य संगठन किया। उस समय इसके जैसा राजनीतिज्ञ और युद्धविशारद राजा कोई भी न था।

सिंहासन पर बैठते ही इसने प्राचीन कालके तां-की तरह एक अनुशासनपत्र इस आशय पर निकाला, कि वह चीनमें राज्यशासन करनेके लिये स्वर्गसे भेजा गया है। (तां १७६६ ई०में इस प्रकार अनुशासन-पत्र निकाल कर हियावंशके राजाको भगा सिंहासन पर बैठा था।)

प्रजावर्गकी सहानुभूति पानेके लिये इसने जो व्यक्ति जिस लायक था उसे उसी काम पर भर्त्ती किया था। जातीयभाषाकी उन्नतिके लिये इसने जनसाधारणको बहुत उत्साह दिया था। इसके शासनकालमें शिक्षा, सभ्यता, शिल्प और वाणिज्यकी बहुत उन्नति हुई थी। चीनकी ऐसी शिक्षा-सभ्यतासे मुग्ध हो देश-देशान्तरसे विद्यो-त्साही व्यक्तिगण वहां आये थे। ईसाधर्म, बौद्धधर्म और कनफूचीके मत आदिके आन्दोलनसे चीनमें उच्च दार्शनिक भावकी उत्पत्ति हुई थी।

जेसुट-धर्मयाजक माटियो रिसिने चीनभाषाके दर्शन, विज्ञान और धर्मग्रन्थोंका पाठ कर उनमें असाधारण व्युत्पत्ति प्राप्त कर ली थी। उसके शिक्षा नैपुण्य पर चीनवासी ऐसे लट्टू हो गये थे कि सि कुयं-टि नामक एक चीनदेशीय विख्यात पण्डितने जेसुटधर्मका समर्थन कर पुस्तक प्रकाशित की थी। इस समय चीन भाषामें एक बड़ा अभिधान-ग्रन्थ सङ्कलित हुआ। वह ग्रन्थ २२००० भागोंमें विभक्त है और उसमें ११ लाख पृष्ठ हैं। चीनके सुप्रसिद्ध राजकीय ग्रन्थालय और हावीलमें इस समय १० लाख पुस्तक थो। १०वीं सदीमें प्रजाविद्रोहसे मिं-वंश सिंहासन-च्युत हुआ और एक माञ्च सरदार सिंहान पर बैठा।

मिंगनी (हिं० स्त्री०) मेंगनी देखो।

मिंगो (हिं० स्त्री०) मींगी देखो।

मिंट (अं० पु०) १ टकसाल, वह स्थान जहां सिक्के ढलते हों। २ एक प्रकारका बढ़िया सोना, टकसाली सोना।

मिंड़ाई (हिं० स्त्री०) १ मींड़ने या मींजनेकी क्रिया या भाव। २ मींड़नेकी मजदूरी। ३ देशी छींटकी छपाईमें एक क्रिया जो कपड़े को छापनेके बाद और धोनेसे पहले होती है। इसके लिये पानीसे भरी एक नांदमें कुछ रेंडी-का तेल और बकरीकी मेंगनी तथा दो एक और मसाले डाले जाते हैं, और उसमें छापा हुआ कपड़ा तीन चार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिन तक भिगोया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर यह क्रिया दो तीन बार भी की जाती है। नाँदमेंसे निकाल कर कपड़ा धोबीके यहां भेजा जाता है। इससे छींटका रंग पक्का और चमकदार हो जाता है। इसे तेलचलाई भी कहते हैं।

मिहदी (हिं० स्त्री०) मेंहदी देखो।

मिआद (अ० स्त्री०) मीआद देखो।

मिआदी (अ० वि०) मीआदी देखो।

मिआन (फा० वि० पु०) मियाना देखो।

मिकद (फा० स्त्री०) मलद्वार, गुदा।

मिकदार (अ० स्त्री०) परिमाण, मात्रा।

मिकनातीस (फा० पु०) चुम्बक पत्थर।

मिकाडो—जापानके सम्राट्‌की उपाधि।

मिकिर—आसामके अन्तर्गत नौगांव जिलेका पहाड़ी प्रदेश। यह स्थान नागा पहाड़के उत्तर अवस्थित है तथा गारो पहाड़से ले कर पाटकाई पहाड़ तक फैला हुआ है। पूर्वकी ओर इस पहाड़की उपत्यका हो कर धान्येश्वरी नदी तथा दक्षिण-पश्चिम हो कर दिवं, यमुना और कपिला बह गई है।

२ पहाड़ी-जातिविशेष। ये लोग पहले जयन्ती पहाड़ पर रहते थे, पीछे वहांसे उतर कर आसाममें जा कर बस गये हैं। नौगांवसे कछाड़ तकके स्थानोंमें इनका वास देखा जाता है। किन्तु नौगाँवमें इनका प्रधान अड्डा है। इनकी संख्या प्रायः एक लाख होगी। आसामकी पहाड़ी जातियोंके मध्य ये लोग सबसे शान्तप्रकृतिके और परिश्रमी हैं। दूसरी किसी जातिके साथ इनका संस्रव नहीं है। ये लोग ४ सम्प्रदायमें विभक्त हैं,—दुमराली, चिन्तं, रक्षं और अमरी। ये लोग सगोत्रमें विवाह नहीं करते। पहाड़ी खेतोंमें रुई और धानकी खेती कर अपना गुजारा चलाते हैं।

ये लोग गौ आदिको नहीं पालते और तो क्या, अपवित्र जान कर उनका दूध तक भी स्पर्श नहीं करते। सभ्यताके क्षीणालोकसे इनके कुसंस्कारका अन्धकार कुछ कुछ दूर होता जा रहा है। अभी ये हल चलाने लगे हैं।

अरणेमकोठे इनका सर्वप्रधान देवता है। ये लोग देवताके उद्देशसे सूअर और मुर्गोंकी बलि चढ़ाते हैं। गांव गांवमें पूजाका निर्दिष्ट स्थान है। वैशाख, कार्त्तिक और माघ मासके प्रथम दिन बड़ी धूमधामसे पूजा होती है।

यह जाति भूत और पिशाच आदिकी पूजा करती है। भूतोंके नाना विभाग हैं, जैसे पहाड़ी, जंगली और जलाधिष्ठाता इत्यादि। प्रत्येक गृहस्थको महीनेमें दो बार करके गृह भूतकी पूजा करनी होती है। इनका विश्वास है, कि सभी प्रकारकी पीड़ा भूतों द्वारा ही हुआ करती है।

ये लोग मृत देहको जलाते हैं। प्रेतात्माके उद्देशसे बलि दी जाती है और कुछ दिन तक बड़े समारोहसे पान, भोजन, नाच गान होता है। इस प्रकार ये लोग बड़े आनन्दके साथ शोक प्रकट करते हैं। किसी मृत व्यक्तिके स्मरणार्थ पत्थर स्तम्भ गाड़ कर उस पर बीच बीचमें अन्न जल दिया करते हैं।

इन लोगोंमें यौवन विवाह प्रचलित है। जिसकी अवस्था अच्छी है, वह बहुविवाह कर सकता है। दरिद्र लोग विवाह नहीं करते। माता पिता पुत्रकन्याका विवाह नहीं देते। वर और कन्याके आपसमें प्रणय होनेसे ही विवाह होता है। विवाहके बाद वरको दो वर्ष कन्याके घर रहना पड़ता है। स्त्रियोंको पुरुषके समान स्वाधीनता दी गई है। लुसाई-युद्धके समय १८७२ ई०में इन्होंने कुलीका काम करके गवर्मेण्टका भारी उपकार किया था।

मिङ्गल—पहाड़ी असभ्य जातिविशेष। चोरी डकैती करके ही ये अपना जीवन निर्वाह करते हैं। भालवानके दक्षिण खोजदारसे ले कर बेला तक इनका वास देखा जाता है। इनमें दो विभाग हैं, माहिजाई और फैलवान जाई। अलावा इसके इनमें विजंजु नामक एक और श्रेणी है। फिर उसमें भी आमालारी और ताम्बावारी नामके दो थोक हैं। ये अत्यन्त दुर्द्धर्ष और लुण्ठन प्रिय होते हैं। जिगार-मिङ्गल और रक्षणी लुसकीमें इनका वास है। खास कर इनके कोई घर नहीं, तम्बूमें ही रह कर कालातिपात करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिचकना (हिं० क्रि०) १ आंखोंका बार बार खुलना और बंद होना। २ पलकोंका झपकना या बंद होना।

मिचकाना (हिं० क्रि०) १ बार बार आंखें खोलना और बंद करना। २ पलक झपकाना या बंद करके दबाना। जैसे, आंखें मिचकाना।

मिचना (हिं० क्रि०) आखोंका बंद होना।

मिचराना (हिं० क्रि०) बिना भूखके खाना, इच्छा न होने पर भी भोजन करना।

मिचलाना (हिं० क्रि०) कै आनेको होना, उबकाई आना,

मिचवाना (हिं० क्रि०) मीचनेका काम दूसरेसे कराना, दूसरेसे आखें बंद कराना।

मिचिता (सं० स्त्री०) १ एक प्राचीन नदीका नाम।

मिचौलना (हिं० क्रि०) मीचना देखो।

मिच्छक (सं० पु०) एक बौद्ध स्थविरका नाम।

मिचनी—पञ्जाब प्रदेशके पेशावर तहसील और जिलेका एक गिरिदुर्ग। यह अक्षा० ३४° १७' उ० तथा देशा० ७१° २७' पू०के मध्य काबुल नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। काबुल नदीको पार कर दुर्द्धर्ष मामन्द नामक पहाड़ी अफगान अङ्गरेजी-सीमा पर उपद्रव मचाया करता था। उनका दमन करनेके लिये वृटिश-सरकारने १८५१-५२ ई०में यह गिरिदुर्ग बनवाया। दुर्ग बनाते समय अङ्गरेज सेनापति लेफ्टनाण्ट वोलनोइ उनके हाथ मारा गया। १८५३ ई०में यहांके दुर्गाध्यक्ष निकटके पर्वत पर टहलते समय गुप्त-शत्रुके शिकार बने।

दुर्गके निकट कोई ग्राम वा नगर नहीं है। तरकजै-मामन्दगण इसके चारों ओर बस गये हैं। इसीसे इस स्थानका सम्मान बढ गया है। नदीके दक्षिण जो मामन्द लोग रहते हैं, वे अङ्गरेजोंके शासनाधीन हैं और दूसरे पूर्ण स्वाधीन हैं। अङ्गरेजोंसे शासित स्थानके रहनेवाले अनेक दोषी लोग दण्ड पानेके भयसे इस स्थानमें आश्रय लेते हैं। पेशावरके दुर्गाधिप ब्रिगेडियाके जेनरलके अधीन रह कर इस दुर्गके आवश्यक कार्य्योंका सम्पादन करते हैं। यहां बेङ्गल पदातिक और अश्वारोही सेनादल रहते हैं।

मिजराब (अ० स्त्री०) तारका बना हुआ एक प्रकारका छल्ला जिसमें मुड़े तारकी एक नोक आगे निकली रहती है और जिससे सितार आदिके तार पर आघात करके बजाते हैं, डङ्का।

मिज़ाज (अ० पु०) १ किसी पदार्थका वह मूल गुण जो सदा बने रहे, तासीर। २ शरीर या मनकी दशा, तबीयत। ३ प्राणीकी प्रधान प्रवृत्ति, स्वभाव। ४ अभिमान, शेखी।

मिज़ाज आली (अ० स्त्री०) एक वाक्यांश जिसका व्यवहार किसीका शारीरिक कुशल मंगल पूछनेके समय होता है।

मिजाजदार (अ० वि०) घमंडी, जिसे खूब अभिमान हो।

मिजाजपीटा (हिं० स्त्री०) जिसे बहुत घमंड हो, अभिमानी।

मिजाजपुरसी (फा० स्त्री०) किसीसे यह पूछना कि आपका मिजाज तो अच्छा है, तबीयतका हाल पूछना।

मिज़ाज शरीफ़ (अ० पु०) एक वाक्यांश जिसका व्यवहार किसीका शारीरिक कुशल मंगल पूछनेके लिये होता है।

मिझौना (हिं० पु०) वह खूंटी जो हलमें खड़े बलमें लगी हुई लकड़ीके बीचमें रहती है।

मिटका (हि० पु०) मटका देखो।

मिटना (हि० क्रि०) १ किसी अंकित चिह्न आदिका न रह जाना। २ खराब होना, बरबाद होना। ३ रद्द होना। ४ नष्ट हो जाना, न रह जाना।

मिटाना (हिं० क्रि०) १ रेखा, दाग चिह्न आदि दूर करना। २ नष्ट करना, न रहने देना। ३ रद्द करना। ४ खराब करना, बरबाद करना।

मिटिया (हिं० स्त्री०) १ मिट्टीका छोटा बरतन जिसमें प्रायः दूध आदि रखा जाता है, मटकी। (वि०) २ मिट्टीका।

मिटियाना (हिं० क्रि०) मिट्टी लगा कर साफ करना, रगड़ना या चिकना करना।

मिटिया फूस (हिं० वि०) जो कुछ भी दृढ़ न हो, बहुत ही कमजोर।

मिटिया महल (हिं० पु०) मिट्टीका मकान, झोंपड़ी।

मिटियासांप (हिं० पु०) मटमैले रंगका एक प्रकारका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साँप जिसके ऊपर काले रंगकी चित्तियां होती हैं।

मिट्टी (हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

विशेष विवरण मृत्तिका शब्दमें देखो।

मिट्टीका तेल (हिं० पु०) एक प्रसिद्ध ज्वलन-शील, खनिज पदार्थ। इसका व्यवहार प्रायः सारे संसारमें दीपक आदि ज लाने और प्रकाश करनेके लिये होता है।

विशेष विवरण मृत्तिज तैलमें देखो।

मिट्टीका फूल (हिं० पु०) मिट्टी या जमीनके ऊपर जम जानेवाला एक प्रकारका क्षार। इसका व्यवहार कपड़ा धोने और शीशा बनानेमें होता है। इसे रेह भी कहते हैं।

मिट्टी खरिया (हिं० स्त्री०) खड़िया देखो।

मिट्ठा (हिं० पु० वि०) मीठा देखो।

मिट्ठी (हिं० स्त्री०) चुंबन, चूमा।

मिट्ठू (हिं० पु०) १ मीठा बोलनेवाला। २ तोता (वि०) ३ चुप रहनेवाला, न बोलनेवाला। ४ प्रिय बोलनेवाला, मधुर-भाषी। (स्त्री०) ५ मिट्ठी देखो।

मिट्ठो (हिं० स्त्री०) मिट्ठी देखो।

मिठ (हिं० वि०) मीठा का संक्षिप्त रूप। इसका व्यवहार प्रायः यौगिक बनानेके लिये होता है और यह किसी शब्दके पहले जोड़ा जाता है।

मिठ बोलना (हिं० पु०) मिठबोला देखो।

मिठलोना (हिं० पु०) वह जिसमें नमक बहुत ही कम हो, थोड़े नमकवाला।

मिठाई (हिं० स्त्री०) १ मीठे होनेका भाव, मिठास। २ कोई अच्छा पदार्थ या बात। ३ कोई मीठी खानेकी चीज।

मिठा तिवाना—पञ्जाब-प्रदेशके शाहपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० ३२° १४′ ४०″ उ० तथा देशा० ७२° ८′ ५०′ पू०के मध्य अवस्थित है। यहांका मालिक-वंश बहुत कुछ प्रसिद्ध है। इन लोगोंने सिख-शक्तिके विरुद्ध युद्धयात्रा करके अपने अधिकारकी रक्षा की थी मूलतानका विद्रोह दमन करते समय ये लोग अङ्गरेजों की ओरसे लड़े थे। १८५७ ई०के सिपाहीविद्रोहके समय भी इन्होंने वृटिश-सरकारका पक्ष लिया था। इस उपकारके लिये अङ्गरेजराजने मालिकवंशके लिये कुछ मासिक रुपये निर्दिष्ट कर दिये और पारितोषिक-स्वरूप मान्यसूचक खाँ बहादुरकी उपाधि दी। अश्व-सज्जा और वाणिज्यके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है।

मिठानकोट—पञ्जाबप्रदेशके देरा गाजी खाँ जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २८° ५७′ उ० तथा देशा० ७०° २२′ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या साढ़े तीन हजार-के लगभग है। पहले इस नगरमें असिष्टाण्ट कमिश्नर रहते थे। १८६२ ई०को सिन्धु नदीमें जब भयानक बाढ़ आई, उस समय यह नगर गर्भशायी हो गया था। पीछे नदी-तटसे ५ मीलकी दूरी पर नया नगर बसाया गया। किन्तु इससे वाणिज्यवृद्धिका बिलकुल ह्रास हो गया। १८८४ ई०में फिर एक बार बाढ़ उमड़ी थी, किन्तु इस बार नगरका उतना नुकसान नहीं हुआ। शहरमें १८७३ ई०को म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है।

मिठास (हिं० स्त्री०) मीठे होनेका भाव, मीठापन, माधुर्य।

मिठौरी (हिं० स्त्री०) पीसे हुए उड़द या चनेकी बनी हुई बरी।

मिड़ाई (हिं० स्त्री०) मिंड़ाई देखो।

मिडिया—मिदिया देखो।

मिडिल (अ० वि०) १ किसी पदार्थका मध्य, बीच। (पु०) २ शिक्षाक्रममें एक छोटी कक्षा या दरजा जो स्कूलके अन्तिम दर्जे इन्ट्रेंससे छोटा होता था। अब यह नाम प्रचलित नहीं है।

मिडिलची (हिं० पु०) वह जो मिडिलकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुआ है, मिडिल पास।

मिडिलस्कूल (अ० पु०) यह स्कूल या विद्यालय जिसमें केवल मिडिल तककी पढ़ाई होती हो।

मिड्लटन (सर हेनरी)—इष्ट इंडिया कम्पनीके एक कर्मचारी। इन्होंने १६१० ई०की छठी यात्राका अध्यक्ष हो कर पदार्पण आगमन किया। जब ये लालसागर हो कर आ रहे थे तब इन्होंने वणिकोंकी वाणिज्यतरी पर चढ़ाई कर दी और बहुतसे द्रव्यादि लूट लिये। मलाक्काद्वीपमें इनकी मृत्यु हुई।

मिण्टो (लार्ड)—भारतवर्षका गवरनर-जनरल (१८०७से १८१४ ई०) सर जार्ज बार्लोके बाद ये भारतवर्षके शासक हो कर आये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्काटलेण्ड इनकी जन्मभूमि है। पिताका नाम गिलबर्ट इलियट था। ये एक सुशिक्षित राजनीतिज्ञ थे। मिण्टो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयकी शिक्षाका अन्त कर सन् १७७४ ई०में पार्लियामेण्टके सभासद हुए। फ्रान्सीसी राष्ट्रविप्लवके समय उन्होंने फ्रान्सीसी सरकार-का विशेष साहाय्य किया था। सन् १७९७ ई०में इन्होंने आक्सफोर्डसे (D.C.L) डी० सी० एलकी उपाधि प्राप्त की। इसके बाद राजकोय पक्ष समर्थन करनेके लिये कमिश्नर हो कर इनको तूला नगरमें जाना पड़ा था। इसके बाद इन्होंने कर्सिकाद्वीपका शासनकर्त्ता बन वहांके कानूनका सुधार किया। इसके बाद वहां फ्रान्सीसियोंकी मज-बूती हो जानेके कारण मिण्टोको उस द्वीपको छोड़ कर स्वदेश लौट आना पड़ा था। यह सन् १७९७ ई०-की घटना है। इसके बाद उनको वारेनकी उपाधि मिली। यह सन् १७९९ ई०में वियनाका राजदूत हुए और सन् १८०६ ई०में बोर्ड आफण्ट्रोलके सभापति हुए थे।

इन्होंने वारेन हेष्टिङ्गसके विरुद्ध अभियोग चलाया था और उनके भारतीय शासनमें किये गये अत्याचारों-को जोरसे प्रतिवाद किया था। भारत आनेसे पहले इनका हृदय उदारमूर्त्ति बार्कको तरह उदारतासे पूर्ण था। उन्होंने समझ लिया था, कि मैं भारतमें जा कर भारतीयोंका उपकार करूंगा और प्रीतिपूर्वक वहांका शासन करूंगा। किन्तु भारतमें आने पर भारतीय जलवायुके ऐन्द्रजालिक प्रभावके कारण उनको अपना मत-परिवर्त्तन करना पड़ा था।

सन् १८०७ ई०की ३री जुलाईको इन्होंने कलकत्तेमें पदार्पण किया। (उस समय कलकत्ता नगरी ही भारतकी राजधानी थी।) इनके शासनकालमें निम्न लिखित घटनायें हुई थीं—

१ बुन्देलखण्डकी दुर्घटना, निजामके साथ बन्दोबस्त, ३ सिन्धु, काबुल और फारसमें दूत भेजना, ४ मन्द्रास-विद्रोह, ५ तिवांकुरका झगड़ा, फ्रान्सीसियों और हालेण्ड-वासियोंके जीते हुए भारतसागरके द्वीपपुञ्जका आक्रमण, ६ अयोध्याकी शासन-विशृङ्खला, ७ राजस्व और विचार-प्रबन्धका संस्कार, ८ बनारसका काण्ड और ९ इष्ट इण्डिया कम्पनीकी सनदकी आलोचना।

लार्ड मिण्टोने इस देशमें आ कर ही अविरोध मत-की पोषकता की प्रेरणासे बुन्देलखण्डके झगड़ेमें हस्त-क्षेप नहीं किया, किन्तु बहुत दिनोंको अराजकतासे बुन्देलखण्डकी अवस्था अति शोचनीय हो गई थी और डाकुओंके उपद्रवसे वहांके अधिवासियोंके जान-मालकी संरक्षा करना उनके लिये बहुत कठिन हो गया था। अजयगढ़के राजा लक्ष्मणदेव डाकुओंमें बड़े चढ़े थे। अजयगढ़के सुदृढ़ पहाड़ी किले पर आक्रमण करने की किसीको हिम्मत नहीं होती थी। लक्ष्मणदेवका पहले इस स्थानमें एकाधिपत्य था। कई वर्ष पहले निदृष्ट कर देना स्वीकार कर वे अजयगढ़का शासन करने लगे। किन्तु स्वीकृत कर ठीक समय पर चुकाते न थे। इस पर करनल मार्टिण्डलके अधीन एक फौज उनके विरुद्ध भेजी गई।

अङ्गरेज सेनापतिने बड़े परिश्रमसे अजयगढ़के किले की चहार-दीवारीके कुछ अंशोंको अपने जोरदार गोलों-से तोड़ डाला। इस पर महाराज सन्धि कर लेने पर बाध्य हुए। इन्होंने अङ्गरेज सेनापतिकी आज्ञा मान कर स्वपरिवारके साथ किलेको छोड़ कर नौशहर नगरमें चले गये। किंतु उस किलेको पुनः पानेकी आशासे अङ्गरेजोंके यहां दरखास्त दी, किन्तु रिचार्ड सनने उनकी प्रार्थना नामंजूर कर दी। इससे व्यथित हो लक्ष्मण-देव अकस्मात् कहीं अदृश्य हो गये। किन्तु रिचार्ड सनने भविष्यमें कोई काण्ड उठ खड़ा होनेकी आशङ्कासे लक्ष्मणदेवके कुटुम्बके लोगोंको बाजीरावके तत्त्वावधान में अजयगढ़के किलेमें जा कर रखनेका हुकुम दिया। किन्तु इस प्रस्ताव पर बाजीराव सहमत न हुए और वह लक्ष्मणदेवके कुटुम्बके साथ नौशहरमें रहने लगे। अङ्गरेज सेनापतिको बाजीरावके आज्ञा-पालन करनेमें देर होते देख संन्देह हो गया। इस पर उनके कार्य्यों-की देखभाल करनेके लिये सेनापतिने एक पहरेदार नियत कर नौशहर भेजा। पहरेदारने पहुंच कर देखा, कि जिस घरमें लक्ष्मणदेवकी माता, शिशुपुत्र, कन्या स्त्री हैं, उसी घरमें बाजीराव खुली जङ्गी तलवारको हाथ ले कर पहरा दे रहे हैं। बाजीरावको देख कर अङ्गरेज पहरादार उनकी ओर अग्रसर हुआ। इसको अपने घरमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आते देख बाजीरावको शक हो गया, क्योंकि अपने दामादकी इज्जतकी उन्हें बड़ी ही चिन्ता थी। शायद उन्होंने यह समझ लिया होगा, कि इसके साथ पल्टन आई होगी, हमको और हमारे दामादके परिवारकी स्त्रियां और बच्चोंको पकड़ ले जायगी। इसी इज्जतको बचानेके लिये उन्होंने उस अंगरेज पहरुएको आते देख घरका किवाड़ बन्द कर दिया और उन्होंने जो उचित समझा, अपना कर्त्तव्यका पालन किया। पहरेदारने पहले तो किवाड़ी खुलवानेका यत्न किया। पीछे न खुलनेकी निराशासे वह किवाड़ तोड़ भीतर जा कर दाखिल हुआ; भीतर जा कर उसने जो दृश्य देखा उसका वर्णन करने में अङ्ग सिहर उठता है। उसने देखा कि घरमें रक्तकी धारा चल रही है। बाजीरावने अपनी पुत्री तथा दामादके प्रत्येक व्यक्तिको मार कर स्वयं भी आत्महत्या कर ली है। इस तरह लक्ष्मणदेवके परिवारका समूल नाश हुआ। बुन्देलखण्डवालोंने बाजीरावके इस काम-की बड़ी प्रशंसा की थी। इस तरह वहां अंगरेजोंने शान्ति स्थापितके बदले अशान्तिकी सृष्टि कर दी।

कितने ही दिनों तक लक्ष्मणदेवकी खोज खबर न मिली। अन्तमें एकाएक वे कलकत्तेमें दिखाई दिये। कलकत्तेमें आ कर उन्होंने गवर्नर-जेनरलकी सेवामें फिर प्रार्थना की, कि या तो मुझे मेरा किला लौटा दिया जाये या तोपके मुख रख मुझे उड़ा दिया जाये। किन्तु इस प्रार्थनाका कुछ भी फल न हुआ। घर लौट जानेके उद्देश्यसे लक्ष्मणदेव चले, किन्तु गवर्नर जेनरल मिण्टोने लक्ष्मणदेवको रास्तेमें ही गिरफ्तार करवा लिया। लक्ष्मणदेव कलकत्ते बुला लिये गये और उन्होंने जीवन पर्यन्त जेलमें सड़नेके बाद अन्त-में जीवन विसर्जन किया। मिण्टोने यह सोचा था, कि शायद लक्ष्मणदेव घर जा कर अशान्तिकी सृष्टि करे, इससे उन्होंने चिर शान्तिका उपाय कर दिया।

अंगरेजोंकी सैन्य बुन्देलगढ़से लौटी आ रही थी। राहमें पराक्रान्त दुन्दिया खाँके अधिकृत कमोनरके किले-को दखल कर लिया। इसके बाद निजामके राज्यमें विशृङ्खलता उत्पन्न हुई।

लार्ड वेलेसलीके समयमें ही निजाम अंगरेजोंके सन्धिसूत्रमें बँध गये थे। किन्तु उस समयके निजाम सिकन्दर शाह इस सन्धिसूत्रको तोड़ देनेका सुअवसर खोज रहे थे। लार्ड मिण्टोने यह समाचार पा कर निजाम-राज्यमें अपने अंगरेज प्रतिनिधिके पास सैन्य भेज दी। मीर आलम नामक एक मन्त्रीने निजामको परामर्श दिया, कि वे अंगरेजोंकी आज्ञाका पालन करें। किन्तु अन्य मन्त्रियोंने शाहको अंगरेजोंके विरुद्ध भड़काया और मीर आलमको गुप्त हत्यारेसे मरवा डालनेकी धमकी दी। मीर आलम वहांसे भाग अङ्गरेजोंको शरणमें चला गया। इधर सिकन्दर शाहने अंगरेजोंसे सन्धि कर ली। इस बार मीर आलम ही शाहके दीवान बने। इनकी मृत्युके बाद अङ्गरेजोंके प्रियपात्र या कृपापात्र चान्दलाल निजामके दीवान हुए।

अंगरेजोंके साथ बाजीरावकी बसाईमें जो सन्धि हुई थी उसके नियमोंको तोड़ कर पेशवाकी पदप्राप्तिके लिये विशेष यत्न कर रहे थे। इसीलिये छोटे छोटे मराठे अपनी उन्नति कर रहे थे। लार्ड मिण्टोने बाजीरावको एक फटकार सुनाई। इस पर बाजीरावने इच्छा न रहते हुए भी अंगरेजोंकी वश्यता स्वीकार कर ली।

इन्दोरके यशवन्त रावने प्राधान्य लाभ करनेके लिये बड़ी चेष्टा की थी। अधिक मादक वस्तुओंके सेवनसे उनका मस्तिष्क विकृत हो गया था। इससे उन्होंने अपने एक सहोदर भाई और भतीजेको मार डाला। इस घटनाके बाद उनको उन्माद हो गया। इसी उन्मादकी अवस्थामें सन् १८११ ई०को उनकी मृत्यु हो गई। मृत्युके बाद उनकी प्रियतमा पत्नी तुलसी बाईने अपने सचिव बलराम सेठेकी सहायतासे कुछ दिन तक राज्य किया। किन्तु सेठेकी उच्छृङ्खलताके कारण राज्यमें कई उपद्रवकी सृष्टि हो गई। यशवन्त रावके भतीजे महीपत राव प्रबल हो कर होल्कर राज्य पर अधिकार कर लेनेकी चेष्टा करने लगे। किन्तु पूनेसे वेल्स और कर्नल डाभटन तुलसीबाईकी ओरसे सहायतार्थ आ गये। इससे महीपत राव भाग चले।

इसी समय अमीर खाँका उपद्रव आरम्भ हुआ। यह पहले यशवन्त रावके सामान्य सेनापति थे। पीछे अपने बाहुबल और बुद्धिकौशलसे बुन्देलखण्डके अनेकांशो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीछे सन् १८१० ई०के जून मासमें मालकम फिर दूत बन कर फारसको गये और इङ्गलैण्डराज तृतीय जार्जने इसी समय नाना प्रकारके उपढौकन फारसको भेजे। इस बार फारसराजने सन्तुष्ट हो कर अंग्रेजोंका स्वागत किया। उन्होंने मालकमको बहुमूल्य तलवार और 'खाँ' की उपाधि दी। मालकमने फारसराजको आलू उपहारमें दिया। आज भी फारसमें इसे 'मालकमका ग्लाम' कहते हैं।

इसी समय सौभाग्य लक्ष्मीने वीर नेपोलियनको त्याग दिया। उस समय निश्चिन्त हो मालकम दौत्य कार्यसे निवृत हुए।

इसी समय त्रिवांकुरका युद्ध छिड़ा। सुलतानके पराजयके बाद मैसूर-राजके साथ अंगरेजोंकी दो संधियां हुईं। किन्तु त्रिवांकुरराजने सन्धिके अनुसार बहुत दिनों तक कुछ भी नहीं दिया। जब अंगरेजोंने अपने निर्दिष्ट अर्थकी मांग पेश की, तब उन्होंने कई तरहकी बातें बना कर उज्र किया। यह सुन कर अंगरेज रेसिडेण्टने वेलू ताम्बी नामक राजाके दीवानको पदच्युत कर दिया। दीवान नायकोंको उत्तेजित कर और फ्रान्सीसियोंसे सहायताकी प्रार्थना कर अंगरेजोंके विरुद्ध साजिश करने लगे। कुछ ही दिनोंमें ४०००० सैन्य और १६ तोपें एकत्र की गईं। कुइलन नामक स्थानमें वेलने अंगरेजों पर प्रबल वेगसे आक्रमण किया। किन्तु पांच घण्टेकी प्रचण्ड लड़ाई होनेके बाद वे भाग गये। थोड़े ही दिनोंमें अंगरेजोंकी सैन्यसंख्या बढ़ जानेके कारण वेलने त्रिवाङ्कुर-राज्यमें जा कर शरण ली। वेल दो वर्ष तक युद्ध कर अन्तमें पराजित हुए। वेलने कैद होनेसे पहले ही आत्महत्या कर ली। उसका भाई फांसी पर लटका दिया गया। युद्धका बिलकुल खर्च त्रिवांकुर और कोचीनको देना पड़ा। अंगरेजों द्वारा उनके राज्य परिचालित होने लगे।

इस घटनाके बाद मान्द्राजकी फौजोंमें बलवा हो गया। लार्ड मिण्टोने इसका बड़े कष्टसे दमन किया था।

इस समय यूरोपमें अंगरेज-फ्रान्सीसियोंमें विरोध उपस्थित होनेसे फ्रान्सीसियोंने पुर्त्तगाल पर अधिकार कर लिया। इसके अनुसार लार्ड मिण्टोने जलपथसे सैन्य भेज कर गोया, मकाव, मौरिशस और मलक्का आदि भारतमहासागरके द्वीपों पर अधिकार किया। इसके बाद यव और उसके निकटके द्वीपों पर कबजा कर लिया।

इस समय कम्पनीकी फिर सनद पानेके विषयमें इङ्गलैण्डमें घोर आन्दोलन हुआ।

लार्ड मिण्टो सन् १८१३ ई०के अन्तिम भागमें कार्य छोड़ कर बिलायत चल गये। उन्होंने बड़ी चालाकीसे शृङ्खलबद्ध भारतका शासन किया था। उन्होंने जैसी शासन-बुद्धि दिखाई थी, वैसी पहले किसीने दिखाई नहीं थी। इसके पहले सरकारने जो ऋण लिया था, उसके लिये सरकारको १२) सैकड़े सूद देना पड़ता था। किन्तु मिण्टोके समयमें १५०००००० सालाना राजस्वकी वृद्धि करनेके कारण कम्पनी कागजके सूदकी दर ६) रु० सैकड़ा हो गई। मिण्टोने अत्यन्त विज्ञताके साथ भारतका शासन किया था। बंगालियोंको श्रीवृद्धिके लिये उन्होंने पूरी चेष्टा की थी। वेलेस्लीके समयमें फोर्टविलियम कालेजकी स्थापना हुई थी। उन्होंने वेलेसलीका अनुकरण कर हिन्दूदर्शनशास्त्र आदि पढ़ानेके लिये 'नवद्वीप' (नदिया) और मिथिलामें पाठशालायें स्थापित की थीं। सिवा इसके अन्यान्य जगहोंमें मुसलमानोंके लिये मदरसे भी खोले गये। वारेनहेष्टिङ्गसके प्रति उन्होंने अभियोग उपस्थित कर हिन्दुओंके प्रति जो उदारभाव दिखलाया था, वह हिन्दुओंके हृदयसे कभी भूल नहीं सकता।

उन्होंने सरकारी खर्चसे बङ्गभाषामें एक अभिधान और एक व्याकरण बनानेकी विशेष चेष्टा की थी और श्रीरामपुरसे बङ्गभाषामें बाइबिलका अनुवाद प्रकाशित करानेमें विशेष सहायता पहुंचाई थी।

अंगरेज ऐतिहासिकोंने मिण्टोके प्रति कलङ्क कालिमाके छींटे फेंके हैं; किन्तु मिण्टो इसके योग्य नहीं। उन पर ऐतिहासिकोंने जो दोषारोपण किया है, उससे वह बिलकुल वञ्चित हैं, वे बिलकुल निर्दोष हैं। उस समय श्रीरामपुरमें ईसाइयोंने बङ्गभाषामें ईसाकी गुण-गरिमाका वर्णन कर और हिन्दू देव देवियोंका तिर-

CC0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्कार कर ईसाईधर्मका प्रचार करना आरम्भ किया था हिन्दू धर्म और सम्मानकी रक्षाको राजधर्म समझ कर मिण्टोने पादरियोंको उनके धर्मप्रचारमें हिन्दुओंके प्रति निन्दासूचक प्रस्ताव प्रकाशित करानेका निषेध किया था इससे पादरी कलकत्ते आने पर बाध्य हुए। इससे स्वार्थी अंगरेज ऐतिहासिकोंको बड़ी मर्मव्यथा हुई थी। इसीसे उन सबोंने कहा, कि ईसाई-धर्मका प्रचार बन्द कर मिण्टोने महापातक सञ्चय किया है। किन्तु उन्होंने राजधर्मकी जरा भी परवाह नहीं की। राजधर्मकी प्रेरणासे नीतिज्ञ और धार्मिक मिण्टोने समदर्शिताका परिचय दिया था। समदर्शिता स्वार्थियोंकी बाधक हो सकती है। इसीसे कुछ अंगरेज ऐतिहासिकोंने मिण्टोका यह कार्य अनुचित और पापमूलक बताया है। जो हो, लार्ड मिण्टोने अपने शासनकार्यमें जिस निर्भीकता और न्यायकी प्रेरणासे समदर्शिताका परिदिया था, वह इस देशके अंगरेज या अन्य किसी भी शासकको अनुकरणीय है। बृटिश पार्लियामेण्टसे उन्होंने अपनी शासनदक्षताके गुण पर धन्यवाद और अर्लकी उपाधि प्राप्त की थी। किन्तु यह सम्मान अधिक दिन तक वे भोग न सके।

वे सन् १८१४ ई०के मई महीनेमें लण्डन पहुंचे, यहां आने पर ही स्वास्थ्य भङ्ग हुआ, तब अपनी प्रिय जन्मभूमिकी दर्शनाभिलाषा बलवती हुई, किन्तु उनके भाग्यमें ऐसा न हो सका। इसी सनकी २१वीं जूनको पथमें ही हाईकोर्ट-शायरमें उनकी मृत्यु हो गई। इस समय उनकी ६३ वर्षकी अवस्था थी। वे अत्यन्त शान्त प्रकृतिके और रहस्यप्रिय थे। उनकी मधुरपूर्ण बातोंसे बात करनेवाले प्रसन्न हो जाते थे। परिमार्जित और ओजस्विनी भाषामें वे अपना मनोभाव प्रकट किया करते थे।

मिण्मिण (सं० क्ली०) नाकसे अस्पष्ट बात करना।

मित (सं० त्रि०) मि वा मा मा-क्त। १ परिमित, जो सीमाके अंदर हो। २ कम, थोड़ा। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ।

मितङ्गम (सं० पु० स्त्री०) मितं परिमितं गच्छतीति गम खच् मुम् च। १ गज, हाथी, स्त्रियां ङीष्। (त्रि०) २ परिमित गामी, सीमाके अन्दर चलनेवाला।

मितज्ञु (सं० त्रि०) सङ्कुचित जानु, जंघेको सिकुड़ाने वाला।

मितद्रु (सं० पु०) मितं द्रवतीति द्रु कु (हरिमितयोर्द्रुवः। उण् १।३५) १ समुद्र, सागर। ३ मितमार्ग। ४ परिमितगामी, सीमाके अन्दर चलनेवाला।

मितध्वज (सं० पु०) राजभेद।

मितभाषितृ (सं० त्रि०) मितभाषण, विचार कर बोलने वाला।

मितभाषिन् (सं० त्रि०) स्वल्पभाषी, थोड़ा बोलनेवाला, समझ बूझ कर बात कहनेवाला।

मितभाषा (सं० त्रि०) मितभाषिन् देखो।

मितभुक्त (सं० त्रि०) परिमितभावमें कृताहार, थोड़ा खानेवाला।

मितभुज् (सं० त्रि०) मिताहारी, थोड़ा खानेवाला।

मितमति (सं० त्रि०) अल्पमति, थोड़ी बुद्धिवाला।

मितमेध (सं० त्रि०) अल्प यागयुक्त।

मितराविन् (सं० त्रि०) अल्पशब्दकारी, थोड़ा शब्द करनेवाला।

मितरोचिस् (सं० त्रि०) परिमित दीप्तिशाली, थोड़ी कान्तिवाला।

मितवाच् (सं० त्रि०) स्वल्पवाक्य-प्रयोगकारी, थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय (सं० पु०) कम खर्च करना, किफायत।

मितव्ययता (सं० स्त्री०) कम खर्च करनेका भाव।

मितव्ययी (सं० त्रि०) परिमित व्ययकारी, किफायत करनेवाला।

मितशायी (सं० त्रि०) अल्प निद्राशील, बहुत कम सोनेवाला।

मितस्पच (सं० त्रि०) १ कृपण, कंजूस। २ परिमित पाककारी, थोड़ा पकानेवाला।

मिताई (हिं० स्त्री०) मित्रता, दोस्ती।

मिताक्षर (सं० त्रि०) परिमिताक्षर-विशिष्ट।

मिताक्षरा (सं० स्त्री०) याज्ञवल्क्य स्मृतिकी विज्ञानेश्वर-कृत टीका।

मिताचार (सं० पु०) परिमित आचार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिताचारिन् (सं० त्रि०) परिमिताचार-विशिष्ट, कम आचारवाला।

मितार्थ (सं० पु०) १ परिमितार्थ, प्रकृत अर्थ। (त्रि०) २ परिमितार्थयुक्त।

मितार्थ (सं० पु०) तीन प्रकारके दूतोंमेंसे एक प्रकारका दूत। अलंकारशास्त्रमें तीन प्रकारके दूतोंका उल्लेख देखा जाता है। यथा—

"निसृष्टार्थो मितार्थश्च तथा सन्देशहारकः।
कार्यप्रेष्यस्त्रिधा दूतोदूत्यश्चापि तथाविधाः॥"

(साहित्यद० ३)

निसृष्टार्थ, मितार्थ और सन्देशहारक ये तीन प्रकारके दूत हैं। इनमेंसे जो दूत दोनों पक्षके मनोगत अभिप्रायको समझ स्वयं उत्तर देता तथा सुश्रृंखलताके साथ कार्य चलाता है, उसका नाम निसृष्टार्थ, जो बुद्धिमत्तापूर्वक थोड़ी बातें कह कर कार्य सम्पन्न करता है उसे मितार्थक और जो प्रभुके कहे संवादोंको ले जाता है उसे सन्देशहारक दूत कहते हैं।

(साहित्यद० ३८६-८८)

मितार्थक (सं० पु०) १ मितार्थयुक्त, कम अर्थका। २ सतर्कके साथ बोलनेवाला। ३ सतर्क दूत।

मिताशन (सं० क्ली०) १ परिमित आहार, थोड़ा भोजन। (त्रि०) २ परिमित-भोजी, कम भोजन करनेवाला।

मिताशिन् (सं० त्रि०) परिमित भोजनशील, कम भोजन करनेवाला।

मिताहार (सं० पु०) १ परिमित भोजन, थोड़ा भोजन। (त्रि०) २ मितभोजी, कम खानेवाला।

मिति (सं० स्त्री०) मयते इति मा-भावे क्तिन्। १ मान, परिमाण। २ विज्ञान। ३ अवच्छेद, सीमा। ४ परिच्छेद, विभाग।

मिती (हिं० स्त्री०) १ देशी महीनेकी तिथि या तारीख। २ दिन, दिवस। ३ वह तिथि जब तकका ब्याज देना हो।

मितोक्ति (सं० स्त्री०) १ अल्पवाक्यका प्रयोग। (त्रि०) २ अल्प वाक्य-वक्ता, कम बोलनेवाला।

मितौली—अयोध्या प्रदेशके खेरी जिलान्तर्गत एक नगर। यह कठना नदीके किनारेसे एक कोस पूर्वमें अवस्थित है। नगरके चारों ओर बड़े बड़े आमके बगीचे और हरे भरे खेत देखनेमें आते हैं। यहां राजा लौनसिंहका प्रासाद था। विख्यात सिपाही-विद्रोहमें सहायता देनेके कारण वृटिश-सरकारने उनकी सम्पत्ति छीन ली और महमूदराजके तालुकदार राजा अमीर हुसेन खांके हवाले की।

मित्ति—१ बम्बईप्रदेशके थर और पार्कर जिलेका एक तालुक।

२ उक्त तालुकके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २४° ४४' उ० तथा देशा० ६६° ५१' पू०के बीच पड़ता है। इस नगरमें स्थानीय विचारसदर प्रतिष्ठित है। स्थानीय पण्यद्रव्योंकी आमदनी और रफ्तनी होती है। इस कारण यह स्थान वहांका वाणिज्यकेन्द्र हो गया है।

मित्र (सं० क्ली०) मिनोति स्नानं करोतीति मि-क्त्र (अमिचिमि दिशसिभ्यः क्त्रः। उण् ४।२६२) अथवा मेद्यति स्निह्यतीति मित्रासुस निपातनात् गुणाभावः, द्वितकारं एकतकारञ्चेत्येके (अमरटीकामें भरत) १ शत्रुको छोड़ राजाओंके राज्यके परवर्त्ती राजाके सिवा दूसरा राजा। मध्यस्थित नरपतिके राज्यहरणरूप कार्यमें साथ देनेसे यह दोनों परस्पर मित्र हैं।

"राजा शत्रुरिति ख्यात एकार्थाभिनिवेशतः।
भूम्यैकान्तरितो राजा स मित्रं मित्रकार्य्यतः॥"

(शब्दरत्नाकर)

महाभारतमें राजधर्म जहां वर्णित है, वहां चार तरहके मित्रोंका उल्लेख है। जैसे—सहार्थ, भजमान, सहज और बनावटी। २ अतिविषलता, अतीस। (वैद्यकनि०) ३ बन्धु, दोस्त। पर्य्याय—सखा, सुहृत्। विश्वासी साधुचरित्र लोगोंके साथ ही मित्रता स्थापन करना कर्त्तव्य है। नहीं तो जो पीछेमें सर्वनाश करनेके लिये सचेष्ट रहते हैं और मुख पर दो एक मधुरवाक्यसे सन्तुष्ट करना चाहते हैं, ऐसे मित्रोंसे सदा अलग रहना चाहिये। क्योंकि ऐसे मित्र "पयोमुख विषकुम्भवत्" कहे गये हैं। तुलसीदासने भी अपने रामचरितमानसमें लिखा है—

"जे न मित्र दुःख होहि दुःखारी,
तिनहिं विलोकत पातक भारी।
निज दुःख गिरि सम रज करि जाना,
मित्रके दुःख रज मेरु समाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हके असि मति सहज न आई,
ते शठ हठि वस करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा,
गुण प्रकटै अवगुणहिं दुरावा।
देत लेत मन संक न धरहीं,
बल अनुमान सदा हित करहीं।
विपतिकाल कर सत गुण नेहा,
स्रुति कह संत मित्र गुण येहा।
आगे कह मृदु वचन बनाई,
पाछे अनहित मन कुटिलाई।
जा कर चित्त अहि गति सम भाई,
अस कुमित्र परिहरे भलाई।"

प्रकृत विश्वासी व्यक्ति ही मित्र होने योग्य है। चाणक्य-नीतिमें कहा गया है,—

"कुलीनैः सह सम्पर्कं पण्डितैः सह मित्रताम्।
ज्ञातिभिश्च समंमेलं कुर्वाणो न विनश्यति॥"

किन्तु कुमित्र, कुभार्या, कुराजा, कुप्रेम, कुबन्धु और कुदेश आदि यह सब त्याज्य है। क्योंकि नीति कहती है—

"दुष्टा भार्य्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहेवासो मृत्युरेव न संशयः॥"

दुष्टोंकी मित्रता सिवा नुकसानके तिलमात्र नफा होनेकी सम्भावना नहीं। अतएव खूब सोच समझ कर जान बूझ कर मित्रता स्थापित करनी चाहिये। संसारमें कोई किसीका न मित्र है और न कोई किसीका शत्रु। मनुष्य अपने कामोंसे दूसरेको शत्रु-मित्र बनाया करते हैं। (पु०) ४ सूर्य।

"स्वस्ति मित्रः सहादित्यैः स्वस्ति रुद्रा दिशन्तु ते।"
(गौड़ीय रामा० २।२२)

५ द्वादश आदित्योंमेंसे एक।

"धाता मित्रोऽर्यमा शक्रो वरुणस्त्वंश एव च।"
(महाभारत १।६५।१०)

६ मरुतोंमेंसे एक। (हरिव० १९६।५२) ७ वशिष्ठके एक पुत्रका नाम जो ऊर्ज्जाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था।

"चित्रकेतुः सुरोचिश्च विरजा मित्र एव च।
उल्बणो वसुभृद्यानो द्युमान् शक्त्यादयोऽपरे॥"
(भागवत ४।१।२७)

मित्र—आर्य जातिके एक प्राचीन देवता। ऋक्संहितामें (१०।७२।८-९) लिखा है।

"अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वस्परि।
देवा उप प्रैत्सप्तभिः परा मार्त्ताण्डमास्यत्॥८
सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगं।
प्रजायै मृत्यवे त्वत्पुनर्मार्त्ताण्डमाभरत्॥"९

अदितिके तनुसे जो आठ पुत्र उत्पन्न हुए थे, उनमें सात पुत्र ले कर वे देवलोकमें गईं; किन्तु मार्त्तण्ड नामक पुत्रको उन्होंने दूर फेंक दिया। इस तरह प्राचीन कालमें अदिति सात पुत्र ले कर गईं, केवल जन्म और मृत्युके लिये ही मार्त्तण्डका पालनपोषण किया गया था।

सायणने उक्त ऋक्के भाष्यमें लिखा है,—"अष्टौ पुत्रासः पुत्रा मित्रादयोऽदितेर्भवन्ति। तान् अनुक्रमिष्यामो मित्रश्च वरुणश्च धाता च अर्यमा च अंशश्च भगश्च विवस्वानादित्येश्चेति।" अर्थात् अदितिसे जो आठ पुत्र हुए थे वे मित्रादि हैं। उनके क्रमसे नाम इस तरह है—मित्र, वरुण, धाता, अर्यमा, अंश, भग, विवस्वान और आदित्य आदि। शतपथ-ब्राह्मण (३।१।३।३)-में लिखा है—

"अष्टौ ह वै पुत्रा अदितेः। यां स्त्वेवेवां आदित्या इत्याचक्षते सप्त ह वै ते" अर्थात् अदितिके आठ पुत्र हुए थे, किन्तु उनमें सप्तदेव ही आदित्य कहे जाते हैं। ऋक्-संहितामें ये सात आदित्य इस तरह कथित हुए हैं—

"इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नुः सनाद्राजभ्योजुहा जुहोमि।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो न स्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः॥"

मैं जुहु द्वारा सदा शोभायमान आदित्योंके उद्देश्यसे घृतस्रावी स्तुति कर रहा हूं। मित्र, अर्यमा, भग, तुविजात या धाता, वरुण, दक्ष* और अंश मेरे स्तवको सुनें।

जो हो, सबसे पहले ये सात या आठ आदित्य

भाष्यकारने दक्षकी गणना आदित्यमें नहीं की है। किन्तु उक्त ऋक्में और यास्कके निरुक्तमें इस दक्षको भी एक आदित्य कहा है। इस ऋक्में सूर्यका नाम नहीं रहने पर भी १०।८८। ११ ऋक्में सूर्य आदित्य नामसे ही वर्णित हुए हैं।

सूर्य देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध थे। वेदके संहिताभागमें १२ आदित्योंका उल्लेख न रहने पर भी शतपथब्राह्मणमें १२ आदित्योंका उल्लेख है। महाभारत और पुराणोंमें इन्ही बारह आदित्योंके नाम मिलते हैं।

"धातार्य्यमा च मित्रश्च वरुणोऽंशो भगस्तथा।
इन्द्रो विवस्वान् पूषाच त्वष्टा च सविता तथा॥
पर्ज्जन्यश्चैव विष्णुश्च आदित्या द्वादश स्मृताः॥"
(भारत आदि० १२१ अ०)

धाता, अर्य्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, इन्द्र विवस्वान, पूषा, सविता, पर्ज्जन्य और विष्णु ये ही द्वादश आदित्य हैं। (विष्णुपु० १।१५।९०)

महाभारत और पुराणमें आदित्योंके मध्य मित्रका स्थान बहुत पीछे रहने पर भी वेदमें मित्र ही आदित्योंमें प्रथम गिने गये हैं।

यास्कनिरुक्तमें लिखा है—"आदित्यः कस्मादादत्ते रसान्। आदत्तेः पुत्र इति वा। अल्पप्रयोगन्तु अस्यै तदार्चाभ्याख्याये सूक्तभाक् सूर्यमादितेयमदितैः पुत्रम्। एवमन्यासामपि देवतानामादित्यप्रवादाः स्तुतये भवन्ति। तद्यथा एतन्मित्रस्य वरुणस्य अर्य्यम्णो दक्षस्य भगस्य अंशस्य इति।" (२।१३)

आदित्य नाम क्यों पड़ा? इससे, कि ये रसोंका आदान प्रदान करते हैं। वे प्रकाश देते हैं और उसी प्रकाशसे प्रकाशित होते हैं। अथवा वे अदितिके पुत्र हैं इससे उनका नाम आदित्य है। ऋग्वेदमें इनका अल्प ही प्रयोग मिलता है। अदितिके पुत्र होनेसे सूक्तमें अदिति सूर्यका नाम दिखाई देता है। इसी तरह अदिति-पुत्र अन्यान्य देवगण भी स्तुतिके समय आदित्य नामसे पुकारे जाते हैं। जैसे वरुण, अर्य्यमा, दक्ष, भग और अंशके सम्बन्धमें भी इसी तरह हैं।

ऋग्वेदके अनेक सूक्तोंमें मित्र और मित्रावरुणकी स्तुति लिखी है। इससे स्पष्ट मालूम होता है, कि मित्र और वरुण प्राचीन वैदिक ऋषियोंके प्रधान देवता थे। सायणने लिखा है, कि—"मैत्रं वै अहरिति श्रुते... श्रुयते च वारुण रात्रीति' मित्रसे ही दिन और वरुणसे रात्रि होती है, ऐसा वेदमें कहा है। अर्थात् मित्र ही आलोकदेव और वरुण आवरण देव हैं।

वेदमें मित्रावरुणका जैसा प्रभाव और उज्ज्वल चित्र दिया गया है, परवर्त्ती संस्कृतशास्त्रोंमें उस सम्मानका बहुत कुछ ह्रास देखा जाता है।

ऋक्संहितामें (३।५९ सूक्तमें) विश्वामित्र मित्रदेवका स्तव करते हैं।

"मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्यां।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभिचष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत॥१
प्र स मित्र मर्त्तो अस्तु प्रयस्वान् यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन।
न हन्यते न जीयते त्वेतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात्॥२
अनमीवास इड्या मदन्तो मितज्ञवो रविमन्ना पृथिव्याः।
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम॥३
अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसेस्याम्॥४
महां आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः।
तस्मा एतत् पयतमाय जुष्टमग्नो मित्राय हरिराजुहोत॥५
मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्यसानपि।
द्युम्नं चित्रश्रवस्तमं॥६
अभि यो महिना दिवं मित्रो बभव सप्रथाः।
अभि श्रवोभिः पृथिवीं॥७
मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टि शवसे।
स देवान् विश्वान् विभर्त्ति॥८
मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तबर्हिषे। इष इष्टव्रता अरः॥९

मित्र जनसाधारणको कार्यमें प्रवर्त्तित करते हैं। मित्र पृथ्वी और आकाशको थामे हुए हैं। मित्र अपने निर्निमेषलोचनसे सबके कामोंको देखते हैं, मित्रको घृतयुक्त हव्य निवेदन करो। हे आदित्य मित्र! जो मनुष्य व्रत नियमसे तुमको हव्य निवेदन करते हैं, वह अन्नवान् (धनी) बनें। तुम जिसकी रक्षा करते हो उसको कोई मार नहीं सकता तथा पराजित नहीं कर सकता। हम लोग नीरोग और अन्नलाभसे हृष्ट पुष्ट हो कर पृथ्वीके विस्तृत क्षेत्रमें घुटने टेक कर स्वर्गगामी आदित्यव्रत करते हैं। मित्र, मुझ पर दया करें। ३ ये मित्र उतर आये हैं। ये नमस्कार करने योग्य हैं; सुन्दर मुख, राजा, अत्यन्त बलयुक्त, निखिलकी जनयिता और यज्ञार्ह हैं। हम लोग इनकी अनुकम्पा और कल्याणप्रद वात्सल्य प्राप्त करते हैं। ४ (यह) आदित्य महान् हैं, सब लोगोंके प्रवर्त्तक हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमें अवनत मस्तकसे उनकी पूजा करनी चाहिये। जो आपकी स्तुति करता है, उस पर आप सदा प्रसन्न रहते हैं। (उन्हीं) स्तुति करने योग्य मित्रके सन्तोषके लिये यह हव्य अग्निमें डाल देना चाहिये।५ मनुष्योंके पालन करनेवाले मित्र देव, अन्न और भजनार्ह धन बड़ा ही कीर्त्तिमय है।६ जिस मित्रने अपनी महिमासे द्युलोक-(स्वर्ग)-को वशीभूत कर रखा है, उन्होंने ही कीर्त्तिमान् हो कर पृथ्वीको खूब शस्यशालिनी बनाया है।७ जो लोग शत्रुओंके जीतनेमें सक्षम (इन) बलवान् मित्रको हव्य देते वे मानो सब देवताओंको धारण करते हैं। देव और मनुष्योंमें जो वर्हि अर्पण किया करते हैं, उनको मित्र कल्याणकर अन्न दिया करते हैं।

किन्तु मनुसंहितामें क्या लिखा है, सुनिये,—

"मनसीन्दुं दिशः श्रोत्रे क्रान्ते विष्णुं बले हरं।
वाच्यग्निं मित्रमुत्सर्गे प्रजने च प्रजापतिम्॥" (१२।१२१)

मनमें चन्द्र, कर्णमें दिक्, यात्राके समय विष्णु, बलमें हर, वातमें अग्नि, मलमें मित्र और उत्पादन कालमें प्रजापतिका नाम लिया करना चाहिये। यहां मनुसंहिताकारके हाथ मित्रदेवकी अवस्था शोचनीय हो गई है। उनका एक समय अत्यन्त ऊंचा आसन था। अवश्य ही उनको कोई परित्याग कर न सका। वेदमें सूर्य और मित्र भिन्न भिन्न देवता हैं किन्तु पौराणिक-युगमें मित्र और सूर्य एकमें मिल गये हैं।

सूर्य शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

मित्र केवल वैदिक ऋषियोंके ही उपास्यदेवता नहीं वरन् एक दिन सारे सभ्य जगत्के आर्य्योंके उपास्यदेवता थे।

पारसियोंके प्राचीन अवस्ताशास्त्रमें यह मित्रदेव 'मिथ्र' नामसे और इसके बादके पह्लवीशास्त्रमें 'मिहिर' नामसे विख्यात हैं। ऋग्वेदमें जैसी मित्रकी स्तुति है, अवस्ताशास्त्रके मिहिरषषतमें भी 'मिथ्र'-देवकी वैसी ही स्तुति दिखाई देती है। इस मिहिरषषतके आरम्भमें ही लिखा है,—

"यहां आओ, हम लोगोंको साहाय्य करो। हम लोगोंके सामने आओ और सुखी करो। अग्र, अजेय, पूज्य, प्रशस्य और अमित्रध्रुक् मित्र विस्तीर्ण क्षेत्रोंके शासयिता है।"

इसके बाद जगह जगह पर इस तरहके मन्त्र पाये जाते हैं—'सदा सत्यवादी मित्रके सहस्र कर्ण और सहस्र नेत्र हैं। ये अपने विस्फारित नेत्रोंसे जगत्के लोगोंका काम देख रहे हैं और मङ्गलका विधान करते हैं।'

उन्होंने पहले ही द्युलोक (स्वर्गलोक)-में वैदुर्य्य शैलके पूर्व देशको पार किया, जहां आशुगति (अत्यन्त शीघ्रगामी) घोड़ोंके साथ अमर्त्य सूर्य रहते हैं। मिथ्र-स्वर्णसे भूषित हो कर उस शैलके शिखरसे सारे इरानको देखा था। उन्हींकी कृपासे राजन्यवर्ग दुर्गोंका निर्माण करते हैं। उन्हींके प्रभावसे बहु क्षेत्र-मण्डित सारे शैलों पर जीवोंका आहार उत्पन्न होता है। उन्हींके कारणोंसे गंभीर कूपमें अधिक जल रहता है और उन्हींकी कृपासे नावें चलानेवाली स्रोतस्विनियां ऐस्कत, पौरुत्, मरु, हरोयु (सरयू), गोमुग्ध और काईरिजेम प्रवाहित हो रही है। वे सप्तलोकमें प्रकाश दिया करते हैं। जो याग-यज्ञमें उपयुक्त स्तोत्रोंसे उनकी पूजा करते हैं उनके कानोंमें जयध्वनि निनादित हो रही है।

मिहिर-षषतमें मित्रको वज्रधर, अमित्रध्रुक् और अहुरमजद्से ऊंचा स्थान दिया गया है। फिर अवस्ताके यश्नमें अहुरमजद् ही सर्वप्रधान सृष्टिकर्त्ताके रूपमें वर्णित है।

'अहुरमजद् स्तितम जरथुस्त्रको कहते हैं, जब मैंने विस्तृत क्षेत्रके अधिपति मिथ्रकी सृष्टि की, तब मैंने अपनी तरह ही उसको भी याग और प्रजाके उपयुक्त बना कर सृष्टि की थी।"

पाश्चात्य पण्डितोंके मतसे वेदमें जिस तरह मित्रावरुण हैं, अवस्तामें उसी तरह मिथ्र और अहुरमजद् हैं।

वरुण देखो।

प्राचीन इरानमें सर्वत्र इन्हीं मिथ्रकी उपासना प्रचलित थी। इन मित्ररूप सौरज्योतिकी उपासनाका शाकद्वीपमें भी प्रचार था। जरथुस्त्रके अहुरमजद्को सर्वशक्तिमान् और सर्वप्रधान कह कर प्रचार करनेसे मित्रके पूजनेवाले दो भागोंमें विभक्त हो गये। जरथुस्त्रके मतावलम्बियोंने अहुरमजदको सर्वशक्तिमान् और सर्वप्रधान तथा मिथ्रको अपना आदि और पवित्रतम विकाश स्वीकार किया। किन्तु वे दिन और रातके अधिदेवता थे। दूसरा दल अहुरमजदकी श्रेष्ठताको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार नहीं करता और पूर्वापर मिथ्रको ही सर्व प्रधान और सर्वशक्तिमान् समझ पूजा करने लगा। इसी शेषोक्त सम्प्रदायके पुरोहितगण भारतवर्षमें आ कर शाकद्वीपीय नामसे पुकारे गये। भोजक ब्राह्मण देखो।

ईसाके ५०० वर्ष पहले भी फारसमें सर्वत्र मित्रकी ही उपासना प्रचलित थी। वे आदि सृष्टिकर्त्ता और आदि प्रकृतिके नामसे ही पुकारे जाते थे। ये ही मित्र-देव फारसीमें प्रकाश और अग्निके अधिष्ठाता देवस्वरूप इथुपीय, मिश्र और यूनानदेशमें पूजित होते थे। इथुपीय इन्हीं अग्निदेवको आदि धर्मशास्त्रकार और धर्म्म-प्रवर्त्तक समझ कर उनकी पूजा भी करते थे। नीलनदके तीरवर्त्ती अधिवासियोंका एक दिन विश्वास था, कि मित्रने ओं या होलिओपलिस (सूर्यनगर स्थापित किया। यहांके सर्वप्रथम राजा मित्रः (Metres नामसे परिचित थे। भगवान्के सिंहासनसे जो दिव्यज्योति निकलती है उसका चिह्न दिखानेके लिये मित्रराजाने अपूर्व सूर्य-स्तम्भकी प्रतिष्ठा की।

रोमक-बादशाहके यत्नसे मित्रपूजा समस्त रोम-साम्राज्यमें प्रचलित हुई थी। पूसके महीनेमें जिस दिन यहां बड़ा दिन होता है उस दिन रोम-नगरमें मित्रका जन्मोत्सव खूब धूमधामसे मनाया जाता था। इस दिन तमाम नाच गान होता था और सारी नगरी रोशनीसे सजाई जाती थी। रोमसाम्राज्यके विस्तारके साथ साथ मित्रपूजा (Mittriaca) का समस्त जर्मनीमें प्रचार हुआ था। भूगर्भसे जो चित्रलिपि आविष्कृत हुई है उसके भग्नावशेषसे उसका निदर्शन निकला है। फोटीयस (Photias)-ने लिखा है, कि ग्रीक और रोमक-गण मित्रके उद्देशसे नरबलि देते थे। सुइदास (Suidas) ने कहा है, कि मित्रपूजाका रहस्याधिकारी होनेमें पूजक-को अग्नि-परीक्षा देनी होती थी।

भारतवर्षमें भी कई समय सर्वत्र मित्रपूजा प्रचलित थी। आज भी शाकद्वीपी ब्राह्मण सूर्यरूपमें इस मित्रकी पूजा करते हैं। पारसिक लोग 'मिथ्रिवन' वा मित्र मन्दिरमें उनकी पूजा करते थे। भविष्य और वराहपुराणमें 'मित्रवन' नामक मित्रके पूजास्थानका माहात्म्य वर्णन किया गया है। मित्रकी तरह उनकी पत्नी मित्रा (Mithra) देवीकी पूजा भी प्राचीन पारसिकोंमें प्रचलित थी। वे अग्निकी अधिष्ठात्री देवी समझी जाती थीं। आसिरियामें उनका मायलित्ता (Myletta) नामसे तथा प्राचीन अरबमें आलिता नामसे पूजन होता था। लोग उन्हें जगज्जननी और प्रजाविवर्द्धिनी समझते थे।

आदि पारसिकगण मित्र और मित्राका पुरुष और प्रकृतिरूपमें वर्णन कर गये हैं। मित्राने प्रजापति अहुरमजदेकी सहायतासे जागतिक देह धारण कर सृष्टि बीजरूप वह्निको अपने गर्भमें धारण किया था।

मित्रक (सं० पु०) मित्र स्वार्थे कन्। मित्र, दोस्त।

मित्रकरण (सं० क्ली०) बन्धुतास्थापन, दोस्ती करना।

मित्रकर्मण (सं० क्ली०) बन्धु या मित्रका कार्य।

मित्रकाम (सं० त्रि०) बन्धुसङ्गलाभेच्छु, मित्रका साथ चाहनेवाला।

मित्रकार्य (सं० क्ली०) बन्धुत्व, मित्रता-स्थापन।

मित्रकृत (सं० पु०) १ पुराणानुसार बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम। २ सह्याद्रिवर्णित एक राजा।

मित्रकृति (सं० स्त्री०) मित्रका कार्य।

मित्रकृत्य (सं० क्ली०) मित्रका कार्य।

मित्रक्रु (सं० पु०) वह जो मित्रका अपकार करता हो।

"मित्रक्रुवो यच्छसनेन गावः।" (ऋक् १०।८६।१४)

"मित्रक्रुवो मित्राणां क्रूरस्य कर्मणः कर्त्तारः।" (सायण)

मित्रगुप्त (सं० त्रि०) १ मित्र द्वारा रक्षित, वह जो मित्र द्वारा बचाया गया हो। (पु०) नायकभेद।

मित्रघ्न (सं० पु०) १ मित्रहननकारी, वह जो मित्रकी हत्या करता हो। २ विश्वासघातक। ३ राक्षसभेद, एक राक्षसका नाम।

मित्रघ्ना (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम।

मित्रघ्न (सं० पु०) यज्ञद्रव्यापहारी राक्षसभेद, एक राक्षस-का नाम जो यज्ञकी सामग्री आदि छीन ले जाया करता था।

मित्रता (सं० स्त्री०) मित्रस्य भावः, तल् टाप्। १ मित्र होनेका भाव, दोस्ती। २ मित्रका धर्म।

मित्रतूर्य (सं० क्ली०) बन्धुवर्गका जयोल्लास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मित्रत्व (सं० क्ली०) मित्रस्य भावः त्व। मित्र होनेका भाव, सौहार्द, दोस्ती।

मित्रदात—एक बहुत प्राचीन पार्थिव सम्राट्। युक्रेटाइडेसका साम्राज्य जब अन्तर्विप्लवके कारण छिन्न भिन्न हो गया, तब इस (Mithridates I) ने उस राज्यके अधिकांशको जीत लिया। ईसाके १४० वर्ष पहले इसने भारत पर भी चढ़ाई की थी। पञ्जाब जीत कर यह वहां "छत्रप" या छत्रपतिको शासनकर्त्ता नियुक्त कर गया था। आज भी पञ्जाबमें उस पार्थिव सम्राटोंके आनेका मुद्रा-चिह्न मिल रहा है। अब तक जो पार्थिव-मुद्रा मिली हैं, वे सब ईसाके ९० से ६० सन् पहलेकी बनी हुई है।

मित्रदेव (सं० पु०) १ महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम। २ बारवें मनुके एक पुत्रका नाम। ३ आदित्यदेव, मित्र नामके आदित्य।

मित्रद्रुह् (सं० त्रि०) मित्रके साथ शत्रुता करनेवाला। जन्द भाषामें इसे 'मिथ्रध्रुह' कहते हैं।

मित्रद्रोह (सं० पु०) बन्धुसे शत्रुता करना।

मित्रद्राहिन् (सं० त्रि०) मित्रं द्रुह्यतीति मित्रद्रुह-णिनि। मित्रसे शत्रुता करनेवाला।

मित्रद्विष् (सं० त्रि०) मित्रकी हिंसा करनेवाला।

"मित्रद्रोही कृतघ्नश्च ये च विश्वासघातकाः।
ते नरा नरकं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥"

(द्वात्रिंशपुत्तलिका)

मित्रधर्मन् (सं० पु०) यज्ञविघ्नकारी असुरभेद, एक राक्षस जो यज्ञमें बाधा डालता था।

मित्रधित (सं० क्ली०) मित्रनिहित धन, मित्र द्वारा रखा हुआ धन।

मित्रधिति (सं० स्त्री०) मित्रका धारण, बन्धुओंकी रक्षा।

मित्रधेय (सं० त्रि०) यजमानके यागलक्षण कार्य।

मित्रध्रुह् (सं० त्रि०) मित्रद्रोहकारी, मित्रद्वेषी।

मित्रनाड़ु—सह्याद्रिवर्णित एक राजा।

मित्रपञ्चक (सं० क्ली०) रसेन्द्रसारसंग्रहके अनुसार घी, शहद, गुंजा, सुहागा और गुग्गुल इन पांचोंका समूह।

मित्रपति (सं० पु०) मित्रप्रतिपालक, वह जो दोस्तोंकी परवरिश करता हो।

मित्रपद (सं० क्ली०) पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम। (मत्स्यपु० २२।११ अ०)

मित्रप्रतीक्षा (सं० स्त्री०) १ मित्रके प्रति सम्मान। २ दोस्तके लिये इन्तजार।

मित्रबाहु (सं० पु०) १ बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम। २ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम।

मित्रभानु (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक राजकुमारका नाम। (भारत १३ पर्व)

मित्रभाव (सं० पु०) मित्रका धर्म, मित्रता।

मित्रभृत् (सं० त्रि०) मित्रपोषणकारी, मित्रकी परवरिश करनेवाला।

मित्रभेद (सं० पु०) मित्रके साथ विवादकारी, वह जो मित्रोंमें लड़ाई कराया करता हो।

मित्रमहस् (सं० त्रि०) अनुकूल-दीप्तियुक्त, हितकारी तेजस।

मित्रमिश्र (सं० पु०) वीरमित्रोदय नामक याज्ञवल्क्य-स्मृति टीकाके रचयिता। ये परशुराम मिश्रके पुत्र और हंस पण्डितके पौत्र थे। राजा प्रतापरुद्रके पौत्र राजा वीरसिंहके आदेशसे इन्होंने उक्त ग्रन्थकी रचना की। २ आनन्दचम्पू के प्रणेता।

मित्रयज्ञ (सं० पु०) एक व्यक्तिका नाम। (संस्कारकौस्तुभ)।

मित्रयु (सं० त्रि०) मित्रं यातीति या-उ (क्याच्छन्दसि। पा ३।२।१७०) मित्रवत्सल। मृग-या-कुः निपातितश्च (मृगश्वादयश्च। उण् १।३८) (पु०) २ लोकययाचिक। ३ लोमहर्षण ऋषिके एक शिष्यका नाम।

"सुमतिश्चाग्निवर्च्चाश्च मित्रयुः शांशपायनः।"

(विष्णुपु० ३।६।१८)

मित्रयुज् (सं० स्त्री०) १ मैत्रीयुक्त। (पु०) २ उपाधिभेद।

मित्रयुद्ध (सं० क्ली०) मित्रेण सह युद्धम्। सुहृत् संग्राम, दोस्तोंकी लड़ाई। पर्याय—मैत्रेयिका।

मित्रराज (सं० पु०) सह्याद्रि-वर्णित दो राजोंके नाम। (सह्या० ३२।१४, १३।५)

मित्रलब्धि (सं० स्त्री०) मित्रस्य लब्धिः ६-तत्। मित्र प्राप्ति।

मित्रलाभ (सं० पु०) मित्रस्य लाभः। १ मित्रके साथ सम्मिलन, दोस्तोंका मिलना। २ हितोपदेशका एक अंश।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मित्रलाभः सुहृद्भेदो विग्रहः सन्धिरेव च ॥" (हितोप०)

मित्रवंश—भारतका स्वनामधन्य राजवंश। औदुम्बर, पञ्चाल स्थानोंमें इस वंशने राज्य किया था।

कुछ लोग इनको शुङ्ग-सम्राटोंकी शाखा कहते हैं। किन्तु मालूम होता है, कि पञ्चाल और औदुम्बरके मित्र स्वतन्त्र वंशके थे। इस वंशके अधिकांश राजा हिन्दू थे। कोई इनको शाक क्षत्रिय और कोई शाकद्वीपीय ब्राह्मण भी कहते हैं। ईसाकी पहली और दूसरी शताब्दिमें इस वंशका अभ्युदय हुआ था। औदुम्बरसे अजमित्र, महीमित्र, विश्वामित्र, भानुमित्र तकके सिक्के मिले हैं। पञ्चालसे भानुमित्र, ध्रुवमित्र, सूर्यमित्र, फाल्गुनिमित्र, भूमिमित्र, अग्निमित्र, जयमित्र, इन्द्रमित्र, विष्णुमित्र और अयोध्यासे सत्यमित्र, सङ्घमित्र और विजयमित्रके सोनेके सिक्के मिले हैं। सिक्केके चिह्नोंको देख किसीको शैव, किसीको वैष्णव और किसीको सौर होनेका अनुमान होता है।

मित्रवती (सं० स्त्री०) पुराणानुसार श्रीकृष्णकी एक कन्याका नाम।

मित्रवत्सल (सं० त्रि०) मित्रस्य मित्रे वा वत्सलः। मित्रप्रिय। पर्याय—मित्रयु।

मित्रवन (सं० क्ली०) पञ्जाबके मुलतान नामक नगरका प्राचीन नाम।

मित्रवत् (सं० त्रि०) मित्र-मस्यास्तीति मित्र-मतुप्, मस्य व। १ सुहृद्युक्त, जिसे मित्र हो। (पु०) २ एक असुरका नाम। ३ द्वादश मनुके एक पुत्रका नाम। ४ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम।

मित्रवर्च्चस् (सं० पु०) १ एक ऋषिका नाम।

मित्रवर्द्धन (सं० पु०) १ महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम। २ दस्युभेद, एक डकैतका नाम। ३ सह्याद्रि-वर्णित एक राजाका नाम। ४ बन्धु वृद्धिकारी, मित्रकी संख्या बढ़ानेवाला।

मित्रवर्मन् (सं० पु०) एक प्राचीन हिन्दू राजाका नाम।

मित्रवान् (हिं० वि०) मित्रवत् देखो।

मित्रवाह (सं० पु०) बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम।

मित्रविद् (सं० पु०) मित्रं वेत्तीति मित्रविद्-क्विप्। गुप्तचर, जासूस।

मित्रविन्द (सं० पु०) १ अग्नि। २ बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम। ३ पुराणानुसार श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। ४ एक आचार्यका नाम।

मित्रविन्दा (सं० स्त्री०) पुराणानुसार श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम।

मित्रवैर (सं० क्ली०) बन्धुद्वेषी, वह जो मित्रसे वैर या द्वेष करता हो।

मित्रशर्मन् (सं० पु०) कुछ पण्डितोंके नाम।

मित्रशस् (सं० त्रि०) मित्रं शास्ति इति शास् क्विप् (शास इदङ्हलोः। पा ३।४।३८) इत्यत्र काशिकोक्तेः क्विप् इत्वं ततो दीर्घश्च। सुहृच्छास्ता।

मित्रसप्तमी (सं० स्त्री०) मित्राय मित्र जन्मने मित्रस्य या सप्तमी। १ मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी। इसी दिन कश्यपके औरससे अदितिके गर्भसे मित्र नामके दिवाकरकी उत्पत्ति हुई थी। इसीसे यह तिथि मित्रसप्तमीके नामसे विख्यात हुई है। इस दिन उपवास या फलाहार किया जाता है।

"अदितेः कश्यपाज्जज्ञे मित्रो नाम दिवाकरः।
मार्गशीर्षस्य मासस्य शुक्ले पक्षे शुभे तिथौ ॥
सप्तम्यां तेन सा ख्याता लोकेऽस्मिन् मित्रसप्तमी।
तत्रोपवासः कर्त्तव्यो भक्ष्यणायथ फलानि वा ॥"

(संवत्सरकौमुदीधृत भविष्यपुराण)

मित्रसम्प्राप्ति (सं० स्त्री०) मित्रसमागम, मित्रलाभ।

मित्रसह (सं० पु०) कल्माषपाद राजाका एक नाम। २ हरिवंशवर्णित एक ब्राह्मणका नाम। (त्रि०) ३ मित्रके साथ वास करनेवाला।

मित्रसाह (सं० त्रि०) मित्र-सङ्ग, मित्रके साथ।

मित्रसाह्वया (सं० स्त्री०) महाभारतके अनुसार स्वर्गमें रहनेवाली एक देवीका नाम।

मित्रसाह्वया (सं० स्त्री०) स्वर्गस्थ देवताभेद।

"गौरी विद्याथ गान्धारी केशिनी मित्रसाह्वया।
सावित्र्या सह सर्वास्ताः पार्वत्या यास्ति पृष्ठतः ॥"

(महाभारत वनपर्व)

मित्रसेन (सं० पु०) १ बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम। २ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। ३ एक बुद्धका नाम। ४ एक द्राविड़देशके राजाका नाम।

मित्रहत्या (सं० स्त्री०) बन्धुविनाश।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मित्रहिंसक (सं० त्रि०) मित्रकी हत्या करनेवाला।

मित्रा (सं० स्त्री०) मित्र स्त्रियां टाप्। १ मित्रदेवकी स्त्रीका नाम। २ सुमित्रा, शत्रुघ्नकी माता। ३ एक अप्सराका नाम।

"अलम्बुषा धृताची च मित्रा मित्राङ्गदा रुचिः।"

(महाभारत १३।६।४४)

४ पराशरके शिष्य मैत्रेयकी माताका नाम।

(भाग० ३।४।३५)

मित्राक्षर (सं० क्ली०) छन्दो-बद्ध पद, छन्दके रूपमें बना हुआ पद।

मित्राख्य (सं० त्रि०) मित्र नामधेय। "आग्नेयं मित्राख्यंपर्व"

(बृहत्सं०)

मित्राणवली—पञ्जाब-प्रदेशके सियालकोट जिलान्तर्गत एक नगर। यह स्थान सूती कपड़े और अनाजके वाणिज्य-व्यवसायके लिये मशहूर है।

मित्रातिथि (सं० पु०) एक राजाका नाम। (ऋक् १०।३३।७)

मित्रानुग्रहण (सं० क्ली०) बन्धुके प्रति अनुग्रह दिखलाना।

मित्राभिद्रोह (सं० पु०) बन्धु-विद्वेषक, मित्रसे वैर वा द्वेष रखनेवाला।

मित्रायु (सं० पु०) १ राजा दिवोदासके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) २ मित्रकी इच्छा करनेवाला।

मित्रावरुण (सं० पु०) मित्रश्चासौ वरुणश्चेति (देवताद्वन्द्वे च। पा ६।२।१४१) मित्र और वरुण नामक देवता। मित्र और वरुण देखो। २ उत्सवभेद।

मित्रावरुणवत् (सं० पु०) मित्रावरुणयुक्त। (ऋक ८।३५।१३)

मित्रावरुणीय (सं० क्ली०) ऋत्विज मित्रावरुण सम्बन्धीय।

मित्रावसु (सं० पु०) १ विश्वावसुके एक पुत्रका नाम। २ सिद्धगणके राजा।

मित्रिन् (सं० त्रि०) बन्धुयुक्त, जिसे मित्र हो।

मित्रिय (सं० त्रि०) बन्धु सम्बन्धीय। (अथर्व २।२८।१)

मित्री (सं० स्त्री०) दशरथकी पत्नी सुमित्रा जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थीं।

मित्रेयु (सं० पु०) राजा दिवोदासके एक पुत्रका नाम।

(भाग० ९।२३।१)

मित्रेरु (सं० त्रि०) यजमानोंके, ईरयितावाधक। "जघन्या इन्द्र मित्रेरून्" (ऋक् १।१७४।३) "मित्रेरून् मित्राणां यजमाना नामीरयितॄन् वाधकान्।" (सायण)

मित्रेश्वर (सं० पु०) मित्रशर्म प्रतिष्ठित काश्मीरके एक शिवलिङ्गका नाम।

मित्रोदय (सं० पु०) १ सूर्योदय। २ बन्धुओंके सौभाग्यका उदय।

मित्र्य (सं० त्रि०) त्रिमिदास्नेहने इति मिद-स्वार्थे यत्। अनुरक्त। (ऋक् ५।८५।७)

मिथनो (सं० स्त्री०) मेथी।

मिथस् (सं० अव्य०) मेथति इति मथृ सङ्गमे असुन्, पृषोदरादित्वात् ह्रस्वः। १ अन्योन्य, परस्पर। २ रहः।

"व्यवहारी मिस्तेषां विवाहः सदृशैःसह।" (मनु १०।५३)

मिथस्तुर (सं० त्रि०) परस्पर वाधमान वा संश्लिष्ट।

"मिथस्तुर ऊतयो यस्य" (ऋक् ७।२६।६)

"मिथः परस्परं तुरो वाधमाना संश्लिष्टा वा।" (सायण)

मिथास्पृध्य (सं० त्रि०) परस्पर स्पर्द्धाविषय।

(ऋक् १।१६६।६)

मिथि (सं० पु०) मेथते हिनस्ति शत्रुकुलमिति मिथि-इन (सर्वधातुभ्य इन। उण् ४।११७) राजा निमिके पुत्रका नाम। विष्णुपुराणमें यही जनक राजाके नामसे प्रसिद्ध हैं। राजा निमिको कोई पुत्र न था। इसीलिये मुनियोंने अराजकता बढ़ जानेके डरसे उनके शरीरको अरणीमें मथ डाला। मथनेके कारण उससे एक कुमार उत्पन्न हुआ। इसी कुमारका नाम जनक हुआ। इनका पिता विदेह अर्थात् देहरहित थे, इसीसे उनका दूसरा नाम विदेह भी हुआ। मथनेसे उत्पन्न होनेके कारण इनको संज्ञा मिथि हुई। इनको एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम था उदावसु। (विष्णुपु० ४।५ अ०) रामायणमें मिथिवंशका उल्लेख मिलता है। यथा—

"निमिः परमधर्मात्मा सर्वसत्त्ववतां वर।
तस्य पुत्रो मिथिर्नामि जनका मिथिपुत्रकः॥"

(रामायण १।७१।४)

मिथित (सं० पु०) राजभेद।

मिथिनी (सं० स्त्री०) मेथी।

मिथिल (सं० स्त्री०) राजर्षि जनकका एक नाम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिथिला (सं० स्त्री०) मथ्यन्ते शत्रवो यस्यां, मथ इलच् (मिथिलादयश्च । उण् १।५८) ततोऽकारस्येत्वं निपातितञ्च । अतिप्राचीन जनपदभेद । इसकी राजधानी मिथिला नगरी है और यही राजर्षि जनककी नगरी थी। इसका दूसरा नाम विदेह है। इसी कारण मिथिला-राजकन्या सीतादेवीका नाम मैथिली और वैदेही भी पड़ा था।

रामायण महाकाव्यमें इस जनपदका विशेष विवरण लिखा है। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ताड़कानिधनके लिये राम लक्ष्मणके साथ वन जङ्गलोंको पार कर मिथिलामें पहुंचे थे। इसी समय राजर्षि जनकने एक महायज्ञ किया था।

यह मिथिला है कहां ? इसके सम्बन्धमें अनेक लोगोंके अनेक मत हैं। रामायण, पुराण या तन्त्र आदि ग्रन्थोंमें इसके जो प्रमाण दिखाई देते हैं, उन्हें यथा स्थान लिखेंगे। यहां देखना है, कि महाकवि वाल्मीकजीने इस मिथिलाके सम्बन्धमें क्या लिखा है ?

तपोधन विश्वामित्र राम लक्ष्मणको साथ ले कर अयोध्यासे दो कोससे भी दूर सरयूके दक्षिण किनारे आ उपस्थित हुए। यहां उन्होंने रामचन्द्र और लक्ष्मणको बला और अतिबला दो मन्त्रोंकी शिक्षा दी। यहां रात बिता कर दूसरे दिन ये लोग गङ्गा-सरयूके सङ्गम पर आये। यहां कामदेवके पुण्याश्रममें वे रात बिता दूसरे दिन सबेरे नित्य कर्म पूरा कर नावमें चढ़ गङ्गाके दक्षिण चले। राहमें उन्होंने एक निविड़ वन देखा। रामचन्द्रने विश्वामित्रसे पूछा, 'महामुने! इस वनका क्या नाम है? इसके विषयमें आप जो जानते हों, उसे कहिये।' इस पर विश्वामित्रने कहा,—"प्राचीनकालमें यहां मलद और करूष नामके दो देवनिर्मित जनपद थे। ताड़का नाम्नी राक्षसी और उसका पुत्र मारीच राक्षसने इन दोनों जनपदोंका ध्वंस किया है। नदीके किनारेसे दो कोस पर ही ताड़का रहती है।" यह सुन कर राम और लक्ष्मणने वहां जा ताड़काको मारा। इसके बाद वे महात्मा वामनके आश्रममें आये। इसी आश्रममें विश्वामित्र रहते थे। उन्होंने आश्रममें पहुंचते ही यज्ञ आरम्भ किया। राम और लक्ष्मणने ६ रात जाग कर राक्षसोंके उपद्रवसे यज्ञकी रक्षा की थी।

यज्ञ समाप्त होनेके बाद विश्वामित्र उन्हें साथ ले वहांसे राजर्षि जनकके धनुस्-यज्ञ देखनेके लिये जनकपुरी मिथिलामें आये। पथमें उनको पहले मगध (गिरिव्रज) राज्यके अन्तर्गत सोन नदीके किनारे आना पड़ा। यहां रात बिता कर दूसरे दिन वे फिर चलने लगे। दो पहरके समय वे गङ्गाके किनारे पहुंचे। भोजन आदिसे निवृत हो कर गङ्गाको पार कर उत्तर किनारे आये। यहां ही विशाला नामक महापुरी थी। यहां वे लोग विशालाके राजा सुमतिके अतिथि हुए। यह रात यहां ही बीती। दूसरे दिन सवेरे वे मिथिलामें गौतमाश्रममें पहुंच अहल्याको शापमुक्त कर पूर्वोत्तर कोनमें अवस्थित जनकके यज्ञक्षेत्रमें पहुंचे।

रामायणके वर्णनसे स्पष्टतया मिथिलाका कोई प्रकाशतः प्रमाण नहीं मिलता फिर भी इतना अवश्य मालूम होता है, कि मिथिला विशालाके उत्तर-पूर्व कोन पर अवस्थित थी। विशालाके उत्तर ही मिथिलाराज्य है। चीन परिव्राजक यूएनचुवँगके समय गंगाके उत्तर समूचा प्रदेश वृज्जि नामसे प्रसिद्ध था। यह प्रदेश तीन छोटे छोटे भागोंमें बंटा हुआ था—१ वैशाली या विशाला, २ तीरभुक्ति, ३ वृज्जि या मिथारि। पुराणके अनुसार निमिषके पुत्र मिथिके नाम पर ही मिथिला-राज्यकी स्थापना हुई। इसलिये इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि मिथिला वर्त्तमान तिरहुत (तीरभुक्ति)-का कोई न कोई अंश ही होगी।

पुराण-प्रसङ्गसे मालूम होता है, कि वैवस्वतमनुके पुत्र इक्ष्वाकु सूर्य्यवंशीय सर्व-प्रथम राजा थे। उनके सौ पुत्रोंमें विकुक्षि, निमि और दण्ड नामके तीन पुत्र श्रेष्ठ थे। विकुक्षिसे ही रामचन्द्रादि सूर्य्यवंशीय राजाने जन्म लिया था। निमि मिथिलाधिपति जनकके आदि पुरुष हैं।

भविष्यपुराणमें लिखा है,—

"निमेः पुत्रस्तु तत्रैव मिथिर्नाम महान् स्मृतः।
प्रथमं भुजवलैर्येन तैरहूतस्य पार्श्वतः॥
निर्मितं स्वीय नाम्ना च मिथिलापुरमुत्तमम्।
पुरीजननसामर्थ्याज्जनकः स च कीर्त्तितः॥"

निमिके पुत्र मिथि हैं। इन्हीं मिथिने तिरहुतके एक प्रदेशमें अपने नाम पर मिथिलापुर-नगरी बसाई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरी-निर्माण करनेमें सामथ्यशाली होनेके कारण ही ये जनक नामसे विख्यात हुए। इनके तीन नाम हैं, मिथिल, वैदेह और जनक। विष्णु-पुराणमें लिखा है, कि मृतदेहसे जन्म होनेसे ही जनक नाम पड़ा। उनके पिता विदेह (देहविहीन) हुए इससे इनका नाम विदेह था। मथन द्वारा उनका जन्म हुआ इससे वे मिथि नामसे प्रसिद्ध हुए। श्रीमद्भागवत्ने भी इसी बातका समर्थन किया है। * वाल्मीकीय रामायणमें भी निमिके पुत्र मिथि और मिथि-के पुत्र जनक—ऐसा ही कहा गया है—

"निमिः परमधर्म्मात्मा सर्वतत्त्ववतां वरः।
तस्य पुत्रो मिथिर्नाम् जनको मिथिपुत्रकः॥"

इसी जनक नामसे उनके पीछेके राजाओंने भी जनककी उपाधि ग्रहणकी थी। अयोध्याधिपति दशरथ-तनय रामचन्द्रने जिस जनक-दुहिता सीताका पाणिग्रहण किया था, वे सीता राजा ह्रस्वरोमाके ज्येष्ठ पुत्र राजर्षि सीरध्वजकी यज्ञभूमिसे उदय हुई थीं। इसीलिये उस यज्ञभूमिका नाम सीतामढ़ी रखा गया था। राजा ह्रस्वरोमाके कनिष्ठ पुत्र साङ्काश्य नगराधिप कुशध्वजकी कन्या माण्डवीका भरतने और श्रुतकीर्त्तिका शत्रुघ्नने पाणिग्रहण किया। सीरध्वजकी दूसरी पुत्री उर्मिला-देवी लक्ष्मणको ब्याही गई थीं।

रामायणमें जनकवंशकी एक नामावली पाई जाती है। वह इस तरह है,—"१ निमि, २ मिथि, ३ जनक, ४ उदावसु, ५ ननिवर्द्धन, ६ सुकेतु, ७ देवरात, ८ वृहद्रथ, ९ महावीर्य्य, १० सुधृति, ११ धृष्टकेतु, १२ हर्य्यश्व, १३ मरु, १४ प्रसिद्धक, १५ कृत्तिरथ, १६ देवमीढ़, १७ विवृध, १८ अन्धक, १९ कृतिराथ, २० कृत्तिरोमा, २१ स्वर्णरोमा, २२ ह्रस्वरोमा, २३ जनक और कुशध्वज। किन्तु विष्णु-पुराणके चतुर्थ अंशके पांचवें अध्यायमें उन वंशकी एक बड़ी सूची लिखी है। यथा,—१ निमि (विदेह), २ जनक, ३ उदावसु, ४ नन्दीवर्द्धन, ५ सुकेतु (केतु), ६ देवरात, ७ वृहद्रथ (वृहदुक्थ), महावीर्य्य, ९ सुधृति, १० धृष्टकेतु, ११ हर्य्यश्व, १२ मरु, १३ प्रतिवन्धक, १४ कृतरथ (कृतिरथ), १५ कृति (देवामोढ, १६ विवुध, १७ महाधृति, १८ कृतिरात, १९ महारोमा, २० सुवर्णरोमा, २१ ह्रस्वरोमा, २२ सीरध्वज और कुशध्वज, २३ सीरध्वजके पुत्र भानुमान् और कन्या सीतादेवी, २४ शतद्युम्न, २५ शुचि, २६ ईर्जवह (ऊर्जवाहु), २७ सत्यध्वज (भारद्वाज), २८ कुणि, २९ अञ्जन, ३० ऋतुजित् (क्रतुजित्), ३१ अरिष्ट-नेमि, ३२ श्रुतायु (शतायु), ३३ श्रुतायुध, ३४ सुपार्श्व (सूर्याश्व), ३५ सञ्जय (संनय), ३६ क्षेमारि, ३७ अनेना, ३८ मीनरथ (मानरथ), ३९ सत्यरथ, ४० सात्यरथि, ४१ उपगु, ४२ श्रुत (उपगुप्त), ४३ शाश्वत, ४४ सुधन्या, ४५ सुभास (भास या सुभाष), ४६ सुश्रुत, ४७ जय, ४८ विजय, ४९ ऋत, ५० सुनय, ५१ वीतहव्य, ५२ सञ्जय, ५३ क्षेमाश्व, ५४ धृति, ५५ वहुलाश्व और ५६ कृति। ये सभी राजर्षि कहलाते थे।

न्यायदर्शनके रचयिता महर्षि गौतम इसी जनकवंश-के पुरोहित थे। इसी समयसे मिथिलामें न्यायकी चर्चा विशेष रूपसे चली आती है।*

महर्षि गौतम मिथिलामें जहां तपस्या करते थे, आज भी उस स्थानको गौतमाश्रम कहते हैं। यह गौतमा-श्रम आज कलके भरोरा परगनेके ब्रह्मपुर मौजेमें अव-स्थित है। गौतमपत्नी अहल्या जहां केवल वायु पी कर जीवित और भस्मराशि पर योगनिमग्न रह कर रामचन्द्रके दर्शनसे पापमुक्त हुई थीं, वह स्थान आज

---

* श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्धमें लिखा है,—
"अराजकभयं नृणां मन्यमाना महर्षयः।
देहं ममस्थुः स्म निमेः कुमारः समजायत॥
जन्मना जनकं सोऽभूद्विदेहस्तु विदेहजः।
मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता॥"
(भागवत ९।१३।१३-१४)

† उर्दू भाषामें लिखी आईन तिरहुत नामक पुस्तकमें लिखा है, कि प्रजा पालनमें राजा जनक पिताके जैसे थे, इससे इस वंशकी 'जनक' उपाधि हो गई।

* नवद्वीप (नदिया)-के मुखोज्ज्वल करनेवाले प्रसिद्ध नैया-यिक वासुदेव सार्वभौमने मिथिलासे न्यायशास्त्र अध्ययन किया था। स्वनामधन्य रघुनाथ शिरोमणि और स्मार्त रघुनन्दन दरभङ्गके सप्तपं ग्रामवासी पक्षधरमिश्रके छात्र थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी अहल्याके नामसे प्रसिद्ध है। यह स्थान जारेल परगनेके महुआरी मौजेमें मौजूद है। शिवका धनुष भङ्ग कर जिस समय रामचन्द्रजीने जानकीसे विवाह किया, उस समय अहल्याके पुत्र शतानन्द जनक सीरध्वजके यहां पुरोहितका काम करते थे।

भविष्यपुराणके 'तैरहुतस्य पार्श्वतो' वचनके प्रमाणसे अनुमान किया जाता है, कि यह राज्य तिरहुत नामसे भी प्रसिद्ध था। अन्य कई संस्कृत ग्रन्थोंमें तीरभूक्ति शब्द पाया जाता है। 'तीरभुक्ति' नदीके किनारेवाली भूमिको कह सकते हैं। तीरहूत शब्दके मूल शब्द तीरभूक्ति या तीरमूक्ति शब्दका अपभ्रंश तिरहुत है। इससे अब जरा भी सन्देह नहीं रह जाता, कि आज कलका तिरहुत प्रदेश प्राचीनकालका तीरभूक्ति राज्य है। शक्तिसङ्गम तन्त्रमें इस राज्यकी सीमा इस तरह निर्द्धारित हुई है :—

"गण्डकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तगं शिवे।
विदेहभूः समाख्याता तैरभुक्ता मिथः स तु॥"

अर्थात् विदेह या तीरभुक्ति देश गण्डकी नदीके तीरसे ले कर चम्पारण्य (चम्पारण)-की अन्तिम सीमा-तक फैला हुआ है।

पञ्जीधृत वृहद्विष्णुपुराणमें लिखा है—

"कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्य वै।
योजनानि चतुर्विंश द्वयायामाः परिकीर्त्तितः॥
गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम्।
विस्तारः षोड़श प्राक्तो देशस्य कुलनन्दन॥
मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता॥"

कौशिकीसे ले कर गण्डकी तक मिथिलाकी पूर्वी पश्चिमी लम्बाई २४ योजन या ९६ कोस और गङ्गासे ले कर हैमवत् वन तक चौड़ाई १६ योजन यानी ६४ कोस है। इससे मालूम होता है, कि मिथिलाके पश्चिम गण्डकी, पूर्व कौशिकी, दक्षिण गङ्गा और उत्तर हिमवत्-वन या हिमालय पर्वत था। इससे अब तिरहुत या तीरभुक्ति शब्द सार्थक हो जाता है।

यहां अब प्रश्न हो सकता है, कि रामायणमें लिखी विशालापुरी कहां गई? यह स्वीकार करना होगा, कि मिथिलाका प्रभाव बढ़नेके कारण विशालानगरी मिथिलाके अन्तर्गत आ गई थी। वृहद्विष्णुपुराणमें लिखे विशालपुरको भी (हाजीपुर) तिरहुतमें मिला लिया गया है। अथवा विशाला-राजवंश विलुप्त होने पर उक्त राज्य मिथिलामें मिला लिया गया था। यह अनुमान भी असङ्गत नहीं जान पड़ता।

महाभारतमें भी इस विशाल जनपदका उल्लेख मिलता है :—

"ततः कोषं समादाय वाहनानि च भूरिशः।
पाण्डुनां मिथिलां गत्वा विदेहाः समरे जिताः॥

पाण्डवोंने मिथिलामें आ कर विदेहराजको पराजित किया था। इससे स्पष्ट है, कि उस समय तक मिथिला राज्यकी समृद्धिमें कमी नहीं हुई थी। महाभारतमें विदेहराजने कौरवोंकी ओरसे युद्ध किया था।

(भीष्मपर्व)

निमिसे ५६ पीढ़ीके बाद महाराज कृतिके समयसे जनकवंशकी इतिश्री हुई। उसके बाद जनकवंशका नाम दिखाई नहीं देता। 'आइने तिरहुत' उर्दू पुस्तकके लेखकका कहना है, जनक शब्दके अपभ्रंशसे 'जङ्ग' शब्दकी उत्पत्ति हुई है। यह शब्द जनक शब्दका बोधक है।

जनकवंशके अवसानके बाद हम संवत् १९४६ वि०में (सन् १०८९ ई०) न्यायदेव नामक एक क्षत्रियको तिरहुतका शासन करते देखते हैं। नेपालकी तराईके दोस्तिया परगने सिमरांवगढ़ नान्यदेवकी कीर्त्ति है। उक्त गढ़के शिलालेखमें लिखा है :—

"नन्देन्दुविन्दु विधु सम्मित शाकवर्षे १०१९
तत्श्रावणे सितदले मुनिसिद्धितिथ्याम।
स्वातिशनैश्चर दिने करिवैरिलग्ने
श्रीनान्यदेव नृपतिर्विदधीत वास्तुम॥"

राजा नान्यदेव १०११ शाके अर्थात् १०८९ ई०में तिरहुतमें आये। इसके बाद उन्होंने १०१९ शाके श्रावण महीनेकी सप्तमी तिथिमें स्वाति नक्षत्राश्रित शनिवारको सिंहलग्नमें यह गढ़ तैयार किया। आज भी तराईमें ५।७ कोस दूर तक इस गढ़ या किलेका नमूना दिखाई देता है। यही नैपाल तराईका प्रदेश पूर्वकथित हिमवत्वन है। तराईका अर्थ वन और पर्वतका पार्श्व है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज्यारोहणके पहले नान्यदेवने एक सर्पकी फणि पर यह श्लोक देखा था, ऐसी दन्तकथा है—

"रामो वेत्ति नलो वेत्ति वेत्ति राजा पुरूरवाः।
अलर्कस्य धनं प्राप्य नान्यो राजा भविष्यति॥"

(भारत १८।११३।१)

जो हो, उन्होंने सीतामढ़ी महकूमेके मानपुरमें अपनी राजधानी कायम की थी।

इस वंशके छः राजाओंके राज्य करनेके बाद ही नान्यदेवकावंश लुप्त हुआ। नीचे उनके नाम और सन्‌की सूची दी जाती है:—

	नाम	सन्
१	नान्यदेव (नानादेव)	१०८६—११२५
२	गङ्गदेव	११२५—११३६
३	नरसिंहदेव	११३६—११६१
४	रामसिंहदेव	११६१—१२८३
५	शक्तिसिंहदेव	१२८३—१२६५
६	हरिसिंहदेव	१२६५—१३२४

१०११ शाकेसे इस राजवंशने १२४५ शाके तक अर्थात् सन् १०८६ ई०से १३२४ ई० तक कुल २३५ वर्ष राजत्व किया था। इसके बाद दूसरे राजा भवसिंह-वंशका उद्भव हुआ।

सुलतान शमसुदीन आलतमसके राजत्वकाल-में बङ्गालके सूबेदार सुलतान गयासुद्दीनने तिरहुतराज नरसिंहदेवको पराजित कर उनसे कर वसूल किया था। इसका पता नहीं चलता, कि किस वर्षमें राजा नरसिंह देव मुसमानोंके अधीन हुए। किन्तु यह प्रायः सभी इतिहासके पढ़नेवाले जानते हैं, कि गयासुद्दीन सन् १२१२ से १२२७ ई० तक बङ्गालके सूबेदार थे। इसी अवधिमें किसी समय गयासुद्दीनने चढ़ाई की होगी।

गयासुद्दीन तुगलक दिल्लीके सिंहासन पर बैठ कर सन् १३२४ ई०में बङ्गालके विद्रोही सूबेदार बहादुर खांके विरुद्ध ससैन्य सुवर्णग्रामकी ओर यात्रा की। बहा-दुर खाँको राजच्युत कर लौटते समय तिरहुत-राज्य पर उसने आक्रमण किया था। इस समय हरिदेवसिंह तिरहुत सिंहासन पर बैठे थे। फिरिस्तामें इनका नाम 'राय तिरहुत' लिखा है।

हरिसिंहदेवकी पराजयके सम्बन्धमें वहांके ग्रन्थमें इस तरह लिखा है—

"वाणाब्धियुग्मशशिसम्मिते शाकवर्षे।
पौषस्य शुक्लनवमी रविसूनुवारे।
त्यक्त्वा सुपट्टनपुरीं हरिसिंहदेवो।
दुर्दैवदेशितपथोत्थगिरिं विवेश॥"

अर्थात् १२४५ शाके (१३२४ ई०)-में हरिसिंहदेव सुपट्टनपुरीको छोड़ कर पर्वतवासी हुए। उक्त वर्षसे ही मुसलमानोंका तिरहुत पर अधिकार मानना होगा। गयासुद्दीनने जङ्गल कटवा कर राजाको गिरफ्तार किया। इस समय तिरहुत एक अलग सूबेके रूपमें परिणत हुआ अहमद खांको इसका शासनकर्त्ता बनाया गया। जङ्गल काट कर बस्ती बसा दी गई। आइन-तिरहुतमें लिखा है, कि दरभङ्गा भी इसी तरह जङ्गल साफ करके बसाया गया था। इसके बाद २४ वर्षों तक यहांके शासनमें कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ।

शायद मुसलमान-शासनकी विशृङ्खलता तथा अस-जकताके कारण ही राजा हरिसिंहदेवके सभापण्डित कामेश्वर झाने (यह मैथिल-ब्राह्मण थे) दिल्लीके बाद-शाह महम्मद तुगलकसे सन् १३८४ ई०में तिरहुतका पट्टा अपने नामसे लिखा लिया और अपने ज्येष्ठ पुत्र भव-सिंहदेवको दे दिया। महाराज भवसिंहदेवने सन् १३४५से १३८५ ई० तक राज्य किया। इनके समयमें गौड़ाधिपति मालिक हाजी इलायस शमसुद्दीन बाङ्गड़ने हाजीपुरमें राजधानी कायम की।

भवसिंहकी मृत्युके बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र देवसिंह १३८५ से १४४६ ई० तक ६१ वर्ष राज्य कर पर-लोकगामी हुए। सकुरी ग्राममें उनका बनाया एक बड़ा तालाब विद्यमान है।

शिवसिंह और पद्मसिंह नामके उनके दो लड़के थे। उनमें ज्येष्ठ पुत्र शिवसिंहने ही गद्दी पाई थी। परिहारपुर जब्दी परगनेके लहाराज ग्राममें उनकी अट्टालिका तथा किला जङ्गल और खण्डहरके रूपमें विद्यमान है। इस राज-अट्टालिकाके सामने एक कोस लम्बी दिग्गी खुद-वाई गई थी।

सन् १४४६से १४४६ ई० तक ३ वर्ष ६ मास राज्य भोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर उन्होंने परलोकगमन किया। उनके मरनेके बाद उनक छः पत्नियोंमें महारानी लक्ष्मीदेवी और महारानी विश्वास देवी यथाक्रम १४४६से लगायत १४६० तक ११ वर्ष और १४६०से १४७२ ई० तक १२ वर्ष राज्य किया।

विश्वासदेवीकी मृत्युके बाद देवसिंहके सौतेले भाई हरिसिंहदेवके पुत्र दर्पनारायण (नरसिंह)ने सन् १४७८ ई० तक ६ वर्ष राज्य किया। इसके बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र हृदयनारायण (धीरनारायण) सन् १५१३ ई० ३५ वर्ष तक गद्दी पर बैठे। हृदयनारायणकी मृत्युके बाद उनके सहोदर हरिनारायण सन् १५२७ ई० तक निरापद राज्य भोग कर गौड़ाधिप नसरत शाहके साथ युद्धमें मारे गये।

नसरत खांने तिरहुत पर क्यों आक्रमण किया, इसके बारेमें इतिहास हमें यों बता रहा है—६०५ हिजरी (सन् १५६६)में दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीन सिकन्दर शाह विहारको जीतनेके लिये आगे बढ़े। जब गौड़ाधिपतिने देखा, कि बादशाह विहारको जीतने चले, तब उन्होंने बादशाहको विहार, तिरहुत और सारण प्रदेश आप ही आप दे दिया। सन्धि हो गई, शिरकी बला टल गई। बाबर शाहने जब भारत पर आक्रमण किया था, तब मौका पा कर अपने खोये हुए स्थानोंको फिर लौटानेकी चेष्टासे नसरत शाहने तिरहुत पर आक्रमण किया। उन्होंने युद्धमें हरिनारायणको मार कर अपने दामाद अलाउद्दीनको शासनकर्त्ता नियुक्त कर दिया।

इसके बाद रूपनारायण १५१२-१५४२ ई०से और उनका पुत्र कंसनारायण १५४२से १५४८ ई० तक अपने पैतृक सिंहासन पर बैठे थे सही; किन्तु यथार्थमें उस समय भी अलाउद्दीन ही तिरहुतके सूबेदार थे। वे केवल नाममात्रको राजा थे। विद्यापति ठाकुरने अपनी पदावलीमें इस राजवंशके कई राजाओंकी गुणावली वर्णन की है।

नीचे भवसिंहकी वंशावली दी जाती है—

कामेश्वर झा
|
भवसिंह
|
देवसिंह — हरिसिंहदेव
|
नरसिंहदेव (दर्पनारायण)
|
पद्मसिंह
|
शिवसिंह (इनकी ६ पत्नी महादेवी, विश्वास, गजाहयनी, रत्ना, लखिमा, उमा और गुणा)

पद्मसिंह → धीरनारायण (हृदयनारायण) → राघवसिंह (स्त्री महादेवी हासिनी) → कुमारगदाधर (निःसन्तान)

हरिनारायण (भैरवसिंह) → रूपनारायण (स्त्री अनुमती, भानुमती, मेधा, और एक स्त्री) → कंसनारायण (निःसन्तान)

इस विषयमें पञ्जी नामक एक ग्रन्थमें बड़ा मतभेद दिखाई देता है, कि कामेश्वर झाके वंशके बाद तिरहुतका कौन वंश राजा हुआ? किसी मतसे राजा कंसनारायणके कायस्थ कर्मचारी मजुमदारने सन् ६५३ से ६५४ फसली तक राजत्व किया था और इसके बाद ६५५ से ६६३ फसली तक तिरहुतमें कोई राजा न था। अन्य पञ्जीकार कहते हैं, कि ६५६ फसली तक महाराज भवसिंहके वंशजोंने ही यहांका राज्य किया। इसके बाद महेशठाकुरके वंशके हाथ तिरहुतका राजत्व आया। दूसरे एक पञ्जीकारने लिखा है, कि ६५६ से ६५६ फसली तक ३ वर्ष मजलीस खांके हुक्मसे यहांका राजकाज चलता रहा। ये जातिके मैथिल ब्राह्मण थे। सुलतानके दरबारसे इनको खाँकी उपाधि मिली थी। फिर एक पञ्जीकारने लिखा है, कि ६५६ से ६६५ फसली तक ६ वर्ष आठ मास ७ दिन विहौर राजपूतवंशने राजत्व किया था। इन पांच विहौर राजपूतोंके नाम नीचे लिखते हैं—

	नाम	राज्यकाल
१	बीरबल उर्फ रूपनारायण	७ महीना
२	उन्मादसिंह	११ महीना
३	खड्गसिंह	३ वर्ष २ महीना
४	कोशेश्वरसिंह	५ वर्ष
५	मन्मथसिंह	७ दिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये यह देखा जा रहा है, कि कंसनारायणके बाद कायस्थ तथा मजलीस खां और विहौर राजपूतोंका शासनकाल आरम्भ हुआ। सम्राट् अकबरशाहने इसी तिरहुतके कुछ अंशको महेशठाकुरके एक मैथिल ब्राह्मण छात्र (रघुनन्दनराय)को विद्याके पारितोषिक रूपमें दान किया था। फिर उस छात्रने इसे गुरुदक्षिणाके रूपमें महेश ठाकुरको दे दिया। महेश ठाकुरके पुत्र गोपाल ठाकुरने इस तिरहुत सम्पत्तिको किस तरह हस्तगत किया, इसका पूरा विवरण दरभङ्गा शब्दमें दिया गया है। दरभङ्गा देखो।

पूर्वोक्त मिथिलाजनपद आगे चल कर तिरहुत और दरभङ्गा-राजसरकारके अधिकारभुक्त हुआ था। विभिन्न वंशीय पठान और मुगल शासकोंके समयमें विभिन्न स्थानमें इसकी राजधानी कायम हुई थी।

किन्तु वह प्राचीन मिथिलापुरी कहां गई? कितनों ही का कहना है, कि मुजफ्फरपुर जिलेमें सीतामढ़ीके १३ या १४ कोस उत्तर-पूर्वमें अवस्थित जनकपुर ग्राम ही मिथिलाराज जनकके नामानुसार मिथिलाके बदले रखा गया। यह नगर इस समय नेपालकी तराई और नेपाल-राज्यके अधीनमें है।

विलियम बोल्टस्-कृत सन् १७७१ ई०के बङ्गाल-मानचित्रमें उक्त जनकपुर ग्राम मघवान्, मोरावान, मोङ्गल या मोरङ्ग राज्यके अन्तर्गत दिखाई देता है। जनक-पुरकी देवोत्तर सम्पत्तिके सम्बन्धमें वहां श्रीरामचन्द्रके मन्दिरके महन्तके पास दो दानपत्र दिखाई देते हैं, इनमें पहला मघवान्पुरके राजा माणिक द्वारा सन् १७८४ संवत्में (१७२८ ई०) दिया गया था। गोरखा सैन्यने जब मघवान्पुरके राजाको हरा कर तराई राज्यको अपना लिया तब गुरखाराज गीर्वाण विक्रमशाहने राजा माणिक सेनका दान स्वीकार कर सन् १८१२ ई०में दूसरा दान-पत्र प्रदान किया। गोरखाराज पृथ्वीनारायण शाहके पौत्र रणबहादुर शाहके औरससे गीर्वाण विक्रमका जन्म हुआ था।

मिथु (सं० अव्य) मिथ्या, असत्य।

मिथुन (सं० क्ली०) मेथतीति मिथ् (तुधिपिशिमिथः कित्। उण् ३।५५) इति उनन्किच्चावादगुणाभावश्च। स्त्री और पुरुषका युग्म, स्त्री और पुरुषका जोड़ा।

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥"
(रामायण १।२।१५)

पर्याय—द्वन्द्व, युगल। ३ संयोग, समागम।

४ मेषादि बारह राशियोंमेंसे तीसरी राशि। मृग-शिरा नक्षत्रके शेषार्द्ध और समूचा आर्द्रा नक्षत्र तथा पुनर्वसु नक्षत्रके तृतीय पाद तक यही मिथुन राशि है। इसका अधिष्ठाता देवता गदाधारी पुरुष और वीणा-धारिणी स्त्री है।

यह राशि शीर्षोदय, पश्चिम दिशाका स्वामी, वायु प्रकृतिकी, हरे रंगकी, वनमें रहनेवाली, शूद्रवर्णकी, स्निग्ध, मध्यम स्त्रीसङ्ग और मध्यम सन्तानकी है।

इस राशिमें जन्म लेनेवाला बालक स्त्रैण, सुरत-कुशल, ताम्रदृष्ट, शास्त्रार्थवेत्ता, दूतकर्म करनेवाला, कुञ्चितकेशविशिष्ट, हास्य, इशारेबाज, जुआरी, मनोहर शरीर-सम्पन्न, प्रियभाषी या मधुर बोलनेवाला, अत्यन्त भोजन करनेवाला, गीत गाने (नृत्यगान)में पटु और ऊंची नाकवाला होता है।

कोष्ठीप्रदीपके मतसे मिथुनराशिमें जन्म होनेसे बालक मृदुगतिका, परोपकारी, मलिन स्वभावका, मलिन वेशधारी और वातश्लेष्मयुक्त होता है तथा गीतवाद्यमें उसकी विशेष अनुरक्ति रहती है।

४ मेषादि १२ लग्नोंमेंसे तीसरा लग्न। अयनांशशो-धित लग्नमान ५।२८।२० है। यह मान कलकत्तेके निकट-वर्त्ती स्थानोंका समझना चाहिये। इस लग्नका होरा २।४४।२०; द्रेक्काण १।४६।२६।४०; नवांश ०।३६।२८।५३।२०; द्वादशांश ०।२६।२१।४०, त्रिंशांश ०।१३।४६।४० है।

इस लग्नमें जन्म लेनेवाला बालक मधुरभाषी, काम करनेवाला, मिलनसार स्वभावका, अल्प मतिमान्, गुरु और साधुओंके पूजक, अल्प सहोदर और अल्प चेष्टान्वित, शत्रुमर्दनकारी, गुणी, धर्मसाधक, अनेक कर्म एक साथ करनेवाला, सर्वदा रोगयुक्त रहनेवाला होता है। इस लग्नमें पैदा होनेवाला बालक मनुष्य, सर्प, विष, मृग या जलसे मरता है।

राशि और लग्नमें जो बलवान् है, उसीके अनुसार फल गणना होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रवि आदि ग्रहोंके मिथुन राशिमें रहनेसे नीचे लिखे अनुसार फल होता है। मिथुनराशिमें रवि रहनेसे मेधावी, मधुरभाषी, वात्सल्यगुणवाला, वेदाचार-परायण, विज्ञानवेत्ता, धनवान्, उदार, निपुण, ज्योतिर्वेत्ता, सौभाग्यसम्पन्न और नम्र होता है।

यह रवि यदि चन्द्रसे दिखाई देता हो, तो रिपु और बान्धव द्वारा पीड़ित, विदेश-यात्रामें पीड़ित और बहुत विलापयुक्त होता है। यदि मङ्गल देखता हो, तो उसे सदा शत्रुभय लगा रहता है और वह झगड़ेमें रहता तथा दरिद्र और लज्जावान् होता है। बुधके देखने पर राजाकी तरह विख्यात, शत्रु-रहित, बान्धवयुक्त और ज्ञानवृद्ध हुआ करता है। बृहस्पतिके देखने पर शास्त्रदर्शी, सुखी, राजासे आदर पानेवाला, विदेश जानेवाला, स्वस्थ और सर्वदा उत्साह-सम्पन्न रहता है। शुक्रके देखने पर धन, स्त्री और पुत्रवान्, अल्प स्नेहवाला, रोगहीन, सौभाग्यशाली और चंचल हुआ करता है। शनिके देखनेसे बहुतेरे नौकर रखनेवाला, उद्विग्नचित्त, सर्वदा खिन्न और धूर्त्त हुआ करता है।

मिथुन राशिमें चन्द्र रहनेसे सर्वदा सन्तुष्ट, शृङ्गार और काव्यकलाभिज्ञ, विषयसुखभोगी, शिरायुक्त, सौभाग्यशाली, हंसमुख और मधुरभाषी, स्त्रीजित और द्वैमातृक हुआ करता है। इस चन्द्रको यदि रवि देखता हो, तो वह प्राज्ञ, धनहीन, रूपवान्, धार्मिक और दुःखी होता है। मङ्गल यदि देखता हो, तो वह अतिशय शूरवीर, अतिप्राज्ञ, सुखी, वाहनयुक्त और विभव-सम्पन्न होता है। बुध यदि देखता हो, तो अर्थ उपार्जन करनेमें कुशल, अपराजित और धीरवान होता है। बृहस्पति यदि देखता हो तो विद्या और शास्त्रमें गुरु, विख्यात, सच बोलनेवाला, रूपवान्, मान्य और वक्ता होता है। यदि शुक्र देखता हो, तो सदा उत्तम युवती, माल्य, वस्त्र उत्तम वाहन और भूषणादि द्वारा अलंकृत रहता है। शनि द्वारा देखने पर मित्रहीन, दरिद्र और लोकद्वेष्टा होता है।

मिथुनराशिमें यदि बुध हो तो सुन्दर वेशधारी, मधुरभाषी, मतिमान्, श्लाघान्वित, मानी, विख्यात, सुखी, घोड़ेकी तरह खिलाड़ी, स्त्रीपुत्रके साथ विवाद करनेवाला, कवि काव्यकुशल, बहुकर्मशील और बहुतेरे मित्रोंका मित्र होता है। बुध मिथुनका अपना घर है इसीलिये यहां शुभ फलदायी हुआ करता है।

इस बुधको यदि रवि देखता हो, तो सत्य बोलनेवाला, न्यायी, मीठा वचन बोलनेवाला, वाचाल, राजवल्लभ, प्रभु, सुन्दर चेष्टा करनेवाला और दयावान् होता है। चन्द्रके देखनेसे सुन्दर, मीठा वचन बोलनेवाला, बकवादी, शत्रुवत्सल, लम्बा चौड़ा जवान और सब कामोंमें माङ्गलिक होता है। मङ्गलके देखने पर शरीरमें फोड़े (क्षत), मलिन देह, प्रतिभा-सम्पन्न, राजाका नौकर और प्रियतर होता है। बृहस्पतिके देखने पर राजाका मन्त्री, उत्तम रूपवान्, उदार स्वभाव, विभव-सम्पन्न और शूर होता है। शुक्रके देखने पर पण्डित, राजाका नौकर, नृत्यगानरत होता है। शनिके देखने पर सदा बुद्धिमान्, विनीत और अपने आरम्भ किये कामोंमें सफलता प्राप्त करता है।

मिथुन राशिमें बृहस्पतिके रहनेसे अन्याय उपायसे धनका सञ्चय करनेवाला, विज्ञ, वाग्मी, सुन्दर कार्य करनेवाला, गुरु और भाइयोंका मान्य लब्ध प्रतिष्ठ, सच्चे कवि और उत्तम पुरुष हुआ करता है।

इस बृहस्पतिको यदि रवि देखता हो, तो उत्तम ग्रामोंमें वह प्रधान, बहुत कुटुम्बवाला, पुत्रदारा और अधिक धनसम्पन्न हुआ करता है। चन्द्रके देखनेसे धनवान्, मातृवत्सल, सुकीर्त्तिसम्पन्न, सुखी और व्ययहीन हुआ करता है। यदि मङ्गल देखता हो, तो वह क्षतरहित शरीर, धनी और लोकपूजित होता है। यदि बुध देखता हो, तो वह ज्योर्विद्, बहुत पुत्रवाला, विरूपवाक्य-सम्पन्न होता है। शुक्रके देखने पर वह देवमन्दिरका कार्य करनेवाला होता, वेश्यासक्त और स्त्रियोंके प्रियभाजन बनता है, शनिके देखने पर वह ग्राम और नगरका अधिपति और प्रधान होता है।

मिथुन राशिमें शुक्र रहनेसे विज्ञानकला और शास्त्रमें प्रखर बुद्धिवाला, अत्यन्त विख्यात, वाचाल, नृत्यगीतादिमें कुशल, मित्रवान्, देवद्विजानुरक्त और उत्तम वाक्य बोलनेवाला होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस शुक्रको यदि रवि देखता हो, तो राजाकी तरह पुत्रवान्, पतित धनसे धनवान् और सुखी होता है। चन्द्रके देखनेसे काली आंखवाला, सुन्दर बालवाला, कमनीय मूर्त्ति, अत्यन्त मृदुस्वभावका और उत्तम भाग्यवाला होता है। मङ्गलके देखनेसे अतिशय कामी और स्त्रियोंके पीछे द्रव्य नष्ट करनेवाला होता है। बुधके देखनेसे पंडित, मधुरभाषी, धनवान्, उत्तम भाग्यवान् और मालिक हो कर रहता है। वृहस्पतिके देखनेसे अत्यन्त दुःखी और प्राज्ञ या आचार्य होता है। शनिके देखनेसे दुःखी, चचल और मूर्ख होता है। उसका सारा धन दुष्ट हरण कर लेते हैं। मिथुन राशिमें शनिके रहने पर बन्धनयुक्त, परिश्रमी, दाम्भिक, शिल्प जाननेवाला और वाक् पटु हुआ करता है।

इस शनिको यदि रवि देखता हो, तो वह सुखविहीन, अत्यन्त प्रधान, धार्मिक, क्लेश सहनेवाला और धीरवान् होता है। चन्द्रके देखनेसे वह राजा जैसा शरीरवाला, और स्त्री धन द्वारा धनवान् होता है। मङ्गलके देखनेसे विख्यात्, मूर्ख, बोझ ढोनेवाला और निर्द्धन होता है। वृहस्पतिके देखनेसे राजकुलका विश्वासी, सर्वगुणयुक्त, और साधुजनोंका वांछनीय होता है। शुक्रके देखनेसे स्त्रियोंका प्रिय और उसे स्त्रियोंसे धनागम होता है।

(वृहज्जातक)

ऊपर लिखे फल ग्रहोंके नैसर्गिक फल हैं। ग्रहगण बालकके जिस भावमें रहते हैं उसके तथा अन्यान्य ग्रहोंकी स्थिति आदिके विचारसे फलका निश्चय किया जाता है। नामकरणकी जगह खनाके नियमानुसार 'क' 'छ' ये दो अक्षर नामके आद्यक्षर होंगे। ज्योतिर्गन्थमें शतपदचक्रानुसारसे ही नामकरणकी व्यवस्था देखी जाती है।

मिथुनत्व (सं० क्ली०) मिथुनका भाव।
मिथुनभाव (सं० पु०) मिथुनावस्था।
मिथुनव्रतिन् (सं० त्रि०) मैथुनव्रताचारी।
मिथुनाभाव (सं० पु०) सङ्गमावस्था।
मिथुनेचर (सं० त्रि०) स्त्री-पुरुषमें वासकारी।
मिथुया (सं० अव्य०) मिथ्या-भूत, मिथ्यास्वरूप।
मिथुस् (सं० अव्य०) अन्योन्य, परस्पर।
मिथूनद्रुश् (सं० त्रि०) आपसमें मिलना।
मिथो (सं० अव्य०) मिथुस्, परस्पर।
मिथोयोध (सं० पु०) आपसमें लड़नेवाला।

मिथ्या (सं० अव्य०) मथ-विलोड़ने मथते अथवा मेथते हिनस्तीति मथा-क्यप् निपातनात् सिद्धम्। असत्य, झूठ। इसका पर्याय—मृषा, वितथ, अनृत।

(शब्दरत्नाकर)

"यदसद्भासनं तन्मिथ्या, स्वप्नगजादिवत्।"

(सांख्यप्र० भाष्यधृत)

पुराण ग्रन्थोंमें मिथ्याको अधर्मकी पत्नी कहा गया है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके प्रकृतिखण्डमें लिखा है,—अधर्मकी पत्नी मिथ्या धूर्त्तों द्वारा पूजित होती है। सत्ययुगमें इसका रूप किसीको दिखाई नहीं देता था। त्रेतायुगमें यह अतीव सूक्ष्म अवयवमें दिखाई देती थी। द्वापरमें भी इसका सारा शरीर दिखाई नहीं दिया था। उस समय भी धर्मके डरसे इसका अर्द्ध शरीर प्रकट हुआ था। किन्तु कलिकालके समागम होते ही इसकी विश्वव्यापी मूर्त्ति प्रकाशमान् हुई। कलिके कल्याणके लिये यह सर्वत्र विद्यमान है। मिथ्याका भाई कपट है। मिथ्या अपने सहधर्मी भाईके साथ घर-घर (सर्वत्र) घूमती है।*

कल्किपुराणमें लिखा है,—अधर्मकी प्रियतमा पत्नी मिथ्या है। मिथ्याकी आँखें बिल्लीकी तरह पीली पीली होती हैं। अत्यन्त तेजस्वी मिथ्याका पुत्र दम्भ है। दम्भने अपनी बहन मायाके गर्भसे लोभ नामका पुत्र और निकृति नामकी एक कन्या पैदा की। इसी लोभसे बहन निकृतिके गर्भसे श्रीमान् क्रोधका आविर्भाव हुआ।†

---

* "अधर्मपत्नी मिथ्या सा सर्वधूर्त्तैश्च पूजिता।
यया विना जगन्मुक्तमुच्छन्नं विधिनिर्मितम्॥
सत्ये चादर्शना या च त्रेतायां सूक्ष्मरूपिणी।
अर्द्धावयवरूपा च द्वापरे संवृता मिया॥
कलौ महाप्रमत्ता च सर्वत्र व्यापिका बलात्।
कपटेन समं भ्रात्रा भ्रमत्येव गृहे गृहे॥"

(ब्रह्मवैवर्त्तपु० प्र०ख० १ अ०)

† "अधर्मस्य प्रिया रम्या मिथ्या मार्जारलोचना।
तस्याः पुत्रोऽतितेजस्वी दम्भः परमकोपनः॥
स मायायां भगिन्यान्तु लोभं पुत्रञ्च कन्यकाम्।
निकृतिं जनयामास तयोः क्रोधः सुतोऽभवत्॥"

(कल्किपु० १ अ०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिथ्या व्यवहार या असत्य भाषण बड़ा ही दोषावह है। उन्नतचेता और उदार चरित्रवाला साधुजन प्राण जाते समय भी झूठ नहीं बोलते। जिनका अन्तःकरण अति क्षुद्र है वही दुर्बल अन्तःकरण नीचाशय मनुष्य अपनी झूठी ख्याति तथा अपनी स्वार्थसिद्धिके लिये पद पद पर झूठ बोला करते हैं। और तो क्या, अपनी स्वार्थसिद्धिके लिये दूसरेका गला भी कट जाय, तो भी वे झूठ बोलनेसे बाज नहीं आते।

हमारे सभी धर्मशास्त्रोंमें मिथ्या व्यवहारकी निंदा की गई है। यदि दैवात् कभी झूठ बोल दिया, तो उसके लिये प्रायश्चित्तका विधान है। फलतः किसी भी सम्प्रदायके धर्म वा नैतिक शिक्षामें झूठका प्रसार नहीं है। मिथ्या साधुसमाजके लिये गर्हित और धर्मपथकी बाधक है।

विष्णुपुराणमें लिखा है—यदि भूलसे एक बार झूठ कहा गया, तो श्रीकृष्ण नामके स्मरणसे ही उस पापका प्रायश्चित्त हो जाता है।

"कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते।
प्रायश्चित्तन्तु तस्यैकं कृष्णानुस्मरणं परम्॥"
(विष्णुपु०)

विष्णुसंहितामें लिखा है—निन्दित प्रतिग्रह, वाणिज्य, कुसीदवृत्ति, असत्यभाषण और शूद्रसेवन आदि पापोंकी तप्तकृच्छ्र द्वारा शुद्धि करनी चाहिये। "निन्दितेभ्यो धनादानं वाणिज्यं कुसीदजीवनं। असत्यभाषणं शूद्रसेवनमिथ्यापात्रीकरणं कृत्य तप्तकृच्छ्रेण शुद्ध्यति।" (विष्णुपुराण) मनु भगवान्के अनुसार झूठ बोलने पर चन्द्रायणव्रत करना चाहिये।

"सङ्करापात्रकृत्यासु मासं शोधनमैन्दवम्।" (मनु ११)

चारों वर्णोंके प्राणदण्डके विषयमें गवाही देते समय झूठ बोलनेका कठोर प्रायश्चित्त नहीं होता। याज्ञवल्क्यने इसके सम्बन्धमें एक छोटे दण्डकी व्यवस्था बतलाई है।

"वर्णिनां हि वधो यत्र तत्र साक्ष्येऽनृतं वदेत्।
तत्पावनाय निर्वाप्यश्चरुः सारस्वतो द्विजैः॥"
(याज्ञवल्क्यस०)

हारीतके मतसे सोम विक्रय, कन्याविवाह, भय, मैथुन, बालक-हत्या और गोब्राह्मणकी रक्षाके लिये यदि झूठ बोला जाय तो दोषावह नहीं होता।

यमने भी कहा है—नर्म बातें, मैथुन, स्त्रियोंके साथ रहस्य, प्राणविनाश और सर्वस्व अपहरण—इन पांच जगहोंमें झूठ बोलनेसे पाप नहीं होता।

"न नर्मयुक्त वचनं हिनस्ति न स्त्रैरवाक्यं न च मैथुनार्थे।
प्राणात्यये सर्वधनापहारे पञ्चानृतान्याहुरपातकानि॥"
(प्रायश्चित्तविवेकधृत यमव०)

आधुनिक युगमें भी परस्परके व्यवहारमें झूठ बोलनेसे महा अनर्थ उपस्थित होता है। झूठेका कोई विश्वास नहीं करता। जो झूठ बोलता है, उससे कोई भी सात्त्विक व्यवहार नहीं रखता।

मिथ्याकर्म (सं० क्ली०) असत् कार्य।
मिथ्याकोप (सं० पु०) वृथा क्रोध।
मिथ्याक्रय (सं० पु०) वृथा खरीदना।
मिथ्याचर्या (सं० स्त्री०) मिथ्या व्यवहार, मूढ या कपटपूर्ण व्यवहार।
मिथ्याचार (सं० पु०) मिथ्या आचारो यस्य। कपटाचार, कपटपूर्ण आचरण। २ दाम्भिक, वह जो कपटपूर्ण आचरण करता हो। जो व्यक्ति सभी कर्मेन्द्रियोंको संयत कर मन ही मन समस्त इन्द्रियोंका स्मरण वा भावना करता है, भगवत्गीतामें वैसे मूढ़ व्यक्तिको भी मिथ्याचार कहा है।

"कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढ़ात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥"
(गीता २ अ०)

मिथ्याजल्पित (सं० क्ली०) वृथा जल्पना।
मिथ्याज्ञान (सं० क्ली०) असत्य बोध, भ्रान्ति।
मिथ्यात्व (सं० क्ली०) १ मिथ्या होनेका भाव। २ माया। ३ जैनोंके अनुसार अठारह दोषोंमेंसे एक।
मिथ्यात्विन् (सं० त्रि०) मायाच्छन्न।
मिथ्यादर्शन (सं० क्ली०) १ भूल देखना। २ भ्रान्तमय। ३ वह दर्शन जिसमें झूठी बात लिखी गई है।
मिथ्यादृष्टि (सं० त्रि०) मिथ्या च सा दृष्टिश्चेति कर्मधा०। कर्मफलापवादक ज्ञान, नास्तिकता।
मिथ्याध्यवसिति (सं० स्त्री०) मिथ्या असत्या च सा अध्यवसितिश्चेति। १ मिथ्या अध्यवसाय। २ असत् उत्साह। ३ एक अर्थालङ्कार। इसमें कोई एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असंभव मिथ्या बात निश्चित करके तब कोई दूसरी बात कही जाती है और इस प्रकार वह दूसरी बात भी मिथ्या हो जाती है।

मिथ्यानिरसन (सं० क्ली०) मिथ्या असत्यं निरस्यतेऽनेनेति निर-अस-करणे ल्युट्। शपथ पूर्वक किसी सच्ची बातका अस्वीकार करना।

मिथ्यापण्डित (सं० पु०) वह जो कुछ न जानता हो और झूठ मूठ पण्डित बनता हो।

मिथ्यापुरुष (सं० पु०) १ छायापुरुष, वह पुरुष जिसके प्रकृत स्वरूप नहीं है।

मिथ्याप्रतिज्ञ (सं० त्रि०) मिथ्या-शपथकारी, अविश्वासी।

मिथ्याप्रवादिन् (सं० त्रि०) मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला

मिथ्याप्रवृत्ति (सं० स्त्री०) असत् इच्छा, वृथा कार्यमें अनुराग।

मिथ्याफल (सं० क्ली०) काल्पनिक फल, मिथ्या पुरस्कार।

मिथ्याभिधान (सं० क्ली०) झूठ कहना।

मिथ्याभियोग (सं० क्ली०) मिथ्या असत्यमभियोगः। मिथ्यापवाद, किसी पर झूठ मूठ अभियोग लगाना। पर्याय—अभ्याख्यान।

मिथ्याभिशंसन (सं० क्ली०) मिथ्या असत्यस्य अभिशंसनं कथनम्। मिथ्या कथाचार, किसी पर झूठ मूठ कलंक लगाना। पर्याय—अभिशाप।

मिथ्याभिशस्ति (सं० क्ली०) मिथ्या अभियोग।

मिथ्याभिशाप (सं० पु०) मिथ्या अभिशापः। मिथ्यावाद। भाद्रमासकी शुक्ला चतुर्थीकी रातको चन्द्रदर्शन नहीं करना चाहिये, करनेसे अपवादग्रस्त यानी कलंकित होना पड़ता है।

"शुक्लपक्षे चतुर्थ्यान्तु सिंहे चन्द्रस्य दर्शनम्।
मिथ्याभिशापं कुरुते न पश्येत्तत्र तं ततः॥"

(तिथ्यादितत्वधृत भोजराज)

मिथ्यामति (सं० स्त्री०) मिथ्या चासौ मतिश्चेति। १ भ्रान्ति, भूल। २ असत्य बुद्धि।

मिथ्यामान (सं० पु०) वृथा सम्मान।

मिथ्यायोग (सं० पु०) चरकके अनुसार वह कार्य जो रूप, रस या प्रकृति आदिके विरुद्ध हो। जैसे मल, मूत्र आदिका वेग रोकना शरीरका मिथ्यायोग है, कठोर वचन आदि कहना वाणीका मिथ्यायोग है, तीव्र गन्ध आदि सूंघना और भीषण शब्द आदि सुनना घ्राण और श्रवणका मिथ्यायोग है। (चरकसू० १६ अ०)

मिथ्यावाक्य (सं० क्ली०) मिथ्यावाद, झूठी बात।

मिथ्यावाच् (सं० त्रि०) मिथ्यावादी, झठा।

मिथ्यावाद (सं० पु०) झूठी बात।

मिथ्यावादिन् (सं० त्रि०) असत्यवादी, झूठ बोलनेवाला।

मिथ्याविहार (सं० क्ली०) १ वृथा अटन, फिजूल इधर उधर घूमना। २ कुव्यवहार।

मिथ्याव्याहार (सं० पु०) २ असत् कार्य। २ अनधिकार चर्चा, किसी विषयको न जानते हुए भी उसमें दखल देना।

मिथ्यासाक्षिन् (सं० त्रि०) मिथ्याभाषी साक्षी, झूठी गवाही देनेवाला।

"उक्तेऽपि साक्षिभिः साध्ये यदन्ये गुणवत्तमाः।
द्विगुणा वान्यथा ब्रूयुः कूटाः स्युः पूर्वसाक्षिणः॥"

(याज्ञवल्क्य)

मिताक्षरामें लिखा है,—पातकी, महापातकी, अग्निदायी तथा स्त्री और बालक-घातियोंकी जिस लोकमें गति होती है, मिथ्या वा कूटसाक्षी देनेवाले भी उसी लोकको प्राप्त होते हैं। उन्होंने जन्मजन्मान्तरमें जो पुण्यसञ्चय किया था वह उसी व्यक्तिका हो जाता है जिसके विरुद्ध उन्होंने झूठी गवाही दी है।

"ये पातककृतां लोका महापातकिनां तथा।
अग्निदानाञ्च ये लोका ये च स्त्रीबालघातिनां॥
एतान् सर्वानवाप्नोति यः साध्यमनृतं वदेत्।
सुकृतं यत्त्वया किञ्चित् जन्मान्तरशतैः कृतम्॥
तत्सर्वं तस्य जानीहि यं पराजयसेमृषा॥" (मिताक्षरा)

मिथ्याहार (सं० पु०) अनुचित या प्रकृतिके विरुद्ध भोजन करना।

मिथ्योत्तर (सं० क्ली०) मिथ्या असत्यमुत्तरम्। चार प्रकारके उत्तरोंमेंसे एक प्रकारका उत्तर। इसका लक्षण—अभियुक्त व्यक्ति यदि अभियोग-विवरणको छिपा रखे तो उसे मिथ्योत्तर कहना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"अभियुक्तोऽभियोगस्य यदि कुर्य्यादपह्नवम्।
मिथ्या तन्तु विजानीयादुत्तरं व्यवहारतः॥" (नारद)

चार प्रकारके उत्तर ये हैं—१ला जो सरासर झूठ है, २रा मैं यह नहीं जानता, ३रा मैं वहां उपस्थित नहीं था और ४था उस समय मेरा जन्म भी नहीं हुआ था।

"मिथ्यैतन्नाभिजानामि मम तत्र न सन्निधिः।
अजातश्चामि तत्काले इति मिथ्या चतुर्विधम्॥"
(व्यवहारतत्त्व)

मिथ्योपचार (सं० पु०) प्रवातादि-सेवनरूप अनुचित आचार।

मिदिया—एशियाखण्डका एक प्राचीन साम्राज्य (Media) वेदमें इस स्थानको उत्तर-मद्र लिखा है। यह देश दो भागोंमें विभक्त है। १ बड़ा मेडिया और २ मेडिया अत्रोपटीन। पहला भूभाग एशियामें स्वास्थ्य और उर्वरताके लिये प्रसिद्ध था। ताइग्रिस और यूफ्रेटिस नदिया इसी भूभागसे होती हुई बहती है तथा जाग्रस् और परच्छत पर्वत इसके बीचमें मौजूद है। पर्यटकगण आज भी मिदिया का मनमोहन प्राकृतिक सौन्दर्य देख मुग्ध होते रहते हैं और चार हजार वर्ष पहलेकी मिदियाका प्राचीन गौरव हृदयङ्गम करते हैं। इस साम्राज्यके पूर्व ओर कास्पियन पर्वत और बीचमें एशियाकी मरुभूमि, उत्तर और पश्चिम-कादुसाई पर्वत, अत्रोपतीन् और मटिनी, दक्षिण जाग्रस् और परच्छत पहाड़ियां विद्यमान थीं। अतएव वर्त्तमान इराक प्रदेशका कुछ अंश इसमें आ जाता है। इस समय यह वर्त्तमान फारस राज्यकी सीमाके अन्तर्गत है।

एकबतना या अग्रबतना मिदिया राज्यकी राजधानी थी। पीछे यह फारसके राजाओंकी हवाखोरीका स्थान बन गया। वाजिस्थान भी इसका प्रधान नगर था। मिदियाके अधिवासियोंने ईसाके दो हजार वर्ष पहले बाबेरुया बाबिलन पर आक्रमण किया था। आक्रमण ही क्यों, अधिकार भी उन्होंने उसी समय कर लिया। इसी विजयके उपलक्ष्यमें मिदियाकी महारानी सेमिरानीने एकबतना नगरमें इन्द्रके नन्दनकाननकी तरह एक प्रमोदोद्यान बनवाया था।

मद्र (मद्र) जाति ही मिदियाकी आदि-अधिवासी है। प्रत्नतत्त्वविद् पण्डितोंका कहना है, कि भारतीय पञ्जाब और सिन्धुप्रदेशकी प्राचीन मद्रजाति मिदिया जातिकी अवान्तर शाखामात्र है। कुरुक्षेत्रके मैदानमें युद्धके समय युधिष्ठिरके मामा शल्य मद्रदेशके राजा थे। मद्रराजकन्या माद्रीके साथ राजा पाण्डुका विवाह हुआ था। किन्तु यह मद्रदेश विराट्देश और पाण्ड्यदेशके बीचमें अवस्थित था। यह भी निश्चयरूपसे नहीं कहा जा सकता, कि इसी भारतीय मद्रजातिने एशियाखण्डमें आ कर मिदिया राज्यकी स्थापना की या मिदियावासियोंने भारतमें आ कर मद्रराज्यकी स्थापना की। फिर इसके बहुत प्रमाण हैं, कि कुरुक्षेत्रके युद्धके बाद मिदगण प्रबल पराक्रान्त हो उठे थे और इन्होंने बबेरु या बाबिलन और आसुर या आसिरीय राज्यका ध्वंसावशेष पर ही मिदियाराज्य स्थापित किया। मिदियावासियोंके अद्भुत पराक्रमके फलसे ही आसुर और बबेरूका ध्वंस हुआ।

ईसाके ३००० हजार वर्ष पहले मिदियावासियोंके बबेरू जीत कर २२४ वर्ष राज्य करनेके बाद आसुरियोंने नाइनासकी अधीनतामें फिर मिदिया पर आक्रमण किया। नाइनासने मिदियाको जीत कर उसकी रानी उन्नेश राजाकी पत्नी सम्राज्ञी सेमिरानीसे विवाह किया। इसके बाद सेमिरानीने विधवा होने पर भी बहुत दिनों तक राज्य किया। उन्होंने यूफ्रेटिस नदीके किनारे बाबेरूनगरकी स्थापना की। उनका स्थापित किया हुआ सेमिराणगढ़ आज भी फारिसमें विद्यमान है।

इसका वंश १२०० वर्ष तक मिदिया राज्यमें कायम रहा। इसके बाद ईसाके पहले ६ शताब्दीके अन्तमें मिदियावासियोंने बलसञ्चय किया। इन्होंने हजार वर्षसे अधिक समय तक गुलामीका दुःख झेलनेके बाद ईसाके ८७६ वर्ष पहले बाबेरू पर अधिकार कर उसे मिदियामें मिला लिया और वहांके राजासे कर वसूल किया। इसके बाद ईसाके ६०६ वर्ष पहले मिदियावासियोंने बाबिलन पर आक्रमण कर उसकी राजधानी निनेभ नगरका विध्वंस किया। इसी समयसे आसुरी साम्राज्यका लोप हुआ।

एक सौ वर्ष राज्य करनेके बाद फारसके राजा कैपसने ईसाके ५५० वर्ष पूर्व मिदिया पर अधिकार किया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राचीन मिद्गण ६ जातियोंमें विभक्त थे। उनमें मद्-गण वर्णगुरु समझे जाते थे। इनका दूसरा नाम आर्य या आरिया (Aria) है। यूनानके ऐतिहासिक हिरोदोतसके मतसे इन चार राजाओंने मिदियाका पीछले समयमें राज्य किया था,—

१ दायूसिस (७१०-६५७ ईसाके पूर्व) इन्होंने ५३ वर्ष तक राज्य किया।

२ फ्रवर्त्तीस (६५७-६५३ ईसासे पूर्व) इन्होंने २२ वर्ष तक राज्य किया। इनके समयमें मिदियाने चरम सीमाकी उन्नति की थी।

३ सियाकजेरास (६३५ ५९५ ईसासे पूर्व) इन्होंने ४० वर्ष तक राज्य किया। इन्होंने अपने समयमें युद्ध-विद्याकी बड़ी उन्नति की थी। इन्होंने निनेभ नगर पर आक्रमण किया था; किन्तु ये पराजित हुए। इन्होंने सिंहासनच्युत हो कर २८ वर्ष तक अज्ञातवास किया था। फिर बलसञ्चय कर शत्रुओंको अपने देशसे भगाया और सिंहासनारोहण किया था।

४ अष्टाइजेस (अस्त्याग) (५९५ ५६० ईसासे पूर्व) इन्होंने ३५ राज्य किया। पीछे इनके नातीने इनको सिंहासन-च्युत कर मिदियाको फारसमें मिला लिया। यह घटना ईसासे ६५१ वर्ष पहलेकी है। ये फारसके राजा थे; फरैस इनका नाम था।

ईसाके ४०८ वर्ष पहले कैरसके पुत्र द्वितीय दरायुस-की अधीनताको अस्वीकार कर मिदियावासी विद्रोही हुए। किन्तु दुर्भाग्यवश ये पराजित हो फिर अधी नतापाशमें जकड़ दिये गये। इसी समयसे मिदियाकी स्वतन्त्रता सर्वदाके लिये पृथ्वीपृष्ठसे अन्तर्हित हो गई।

एकवतना-नगरका शिलालेख आज भी दरायुसकी विजय-कहानीका साक्ष्य दे रहा है। सुप्रसिद्ध प्राचीन इतिहास-संग्रहकर्त्ता कर्नल रविन्सनने उक्त शिलालेखोंका अनुवाद करा कर एशियाटिक सोसाइटीके १०वें भागमें प्रकाशित कराया है।

मिदियाके आर्कमिदवंशी राजोंने एक समय अट-लाण्टिकसे भारत महासागर और उत्तर ध्रुवसे सहारा भूमि तक अपना प्राधान्य फैलाया था। अति प्राचीन देश मिस्र भी इनके ही हाथ आया था। किन्तु इस समय शिलालेखों तथा इतिहासके पन्नोंके सिवा पृथ्वीमें उस जातिका चिह्न कहीं दिखाई नहीं देता।

मिद्ध (सं० क्ली०) १ आलस्य। २ निद्रालुता, निद्रा-शीलता। ३ जड़ता, मूर्खता।

मिनती (अ० स्त्री०) विनति देखो।

मिनती (हिं० पु०) मक्खीकी बोलीके समान कुछ नाकसे निकला हुआ स्वर।

मिनमिन (हिं० वि०) मक्खीकी भनभनाहटके रूपमें, कुछ नाकसे निकले धीमे स्वरमें।

मिनमिना (हिं० वि०) १ मिनमिन शब्द करनेवाला, नाक-से स्वर निकाल कर धीमे बोलनेवाला। २ थोड़ी-सी बात पर कुढ़नेवाला। ३ सुस्त, मट्ठर।

मिनमिनाना (हिं० क्रि०) १ मिन् मिन् शब्द करना, नाकसे बोलना। २ कोई काम बहुत धीरे धीरे करना, बहुत सुस्तीसे काम करना।

मिनवाल (अ० पु०) करघेमेंका वह बेलन जिस पर बुना हुआ कपड़ा लपेटा जाता है और जो बुननेवालेके ठीक आगे रहता है।

मिनहा (अ० वि०) जो काट या घटा लिया गया हो, मुजरा किया हुआ।

मिनाकोपी—अण्डमनद्वीपकी रहनेवाली जातिविशेष। समग्र सुसभ्य जातिके विदित भूभागोंमें कहीं भी ऐसी वन्यजातिका नमूना दिखाई नहीं देता। यथार्थमें यदि कहें, तो कह सकते हैं, कि यह जाति प्रकृतिकी सुन्दर गोदमें विश्राम कर रही है। सभ्यताके कोमल प्रकाशने आज भी मानो इस जातिको स्पर्श तक नहीं किया है। मनुष्य जातिमें इस तरहकी निकृष्ट और हेय अवस्था और किसीकी दिखाई नहीं देती। शवरादि पर्णधारी नीच जाति इसकी अपेक्षा कुछ अंशोंमें श्रेष्ठ है।

इसके रहनेके लिये घर नहीं। वृष्टि और रौद्रसे बचनेके लिये कोई उपाय नहीं। लज्जा रक्षाके लिये कोई वस्त्र नहीं। नरनारी दोनों ही वनमें छिपे पशुओंकी तरह नङ्गे विचरण करते हैं। एक दूसरेको देख कर नहीं लजाता। सिवा इसके ये अपने व्यवहारोपयोगी किसी तरहका शिल्प नहीं जानते। और तो क्या, लोहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीतल आदि धातुसे भोजनोपयोगी बरतन तथा लकड़ी आदि काटनेका हथियार बनाना भी नहीं जानते।

किस युगमें इस समुद्रके किनारे वनमें आ कर इन्होंने आश्रय लिया है, उसका निर्णय करना कठिन है। इनकी काली सूरत और कठोर प्रकृति देखनेसे अनुमान होता है, कि ये इस द्वीपकी उत्पत्तिके साथ साथ यहां आये हैं। इस बातकी मीमांसा अत्यन्त सरल नहीं है। इस नीलाम्बुराशि परिवेष्टित बङ्गोपसागरमें इस तरहकी वन्य जातिका रहना असम्भव है। भूतत्त्वकी आलोचनासे मालूम हुआ है, कि एक समय मलयप्राय-द्वीपसे ले कर भारतमहासागरके द्वीपपुञ्ज तक एक बड़ा राज्य सुगठित हुआ था। वह सागराम्बरा सुविशाल राजधानी राक्षस-राज रावणकी लङ्कापुरी समझी जाती थी। रामचन्द्रजी द्वारा रावणके मारे जानेके बाद लङ्का राज्यमें जब विप्लव मच गया था उस समय जिसने जहां जगह पाई वह वहीं बस गया। उस समयसे आज तक सभ्यताका बीज उनमें उत्पन्न नहीं हुआ है।

सन् १८५८ ई० अङ्गरेजोंने यहां पदार्पण किया। इन्होंने यहां आ कर इस जातिको प्रकृतिकी गोदमें सोते देखा। मनुष्य जातिको इस तरहकी हीनावस्था देख कर यथार्थमें वे आश्चर्य्यान्वित हुए थे। सभी प्रायः नंगे हैं। स्त्रियां कभी कभी कमरमें पत्ते लपेट लेती हैं सही, किंतु अधिकांश समयमें वे भी नंगी ही घूमती हैं। वैदेशिकके देखने पर भी उनके किसी तरहकी लज्जा नहीं आती। लज्जानिवारण उनके लिये प्रकृतिके विरुद्धके सिवा और कुछ नहीं है।

इनका पुरुष-समाज स्वभावतः ही चतुर होता है। ये क्रूर और प्रतिहिंसापरायण भी होते है। विदेशी लोगों-को देखते ही ये घोर चीत्कार करते और अपनी विरक्ति प्रकट करते हैं। कभी कभी ये इशारेसे अपनी निर्भीकता तथा अङ्गकी विकृतिसे मानसिक घृणा प्रकट किया करते हैं। कभी कभी ये उच्च हृदयका भी परि-चय देते हैं। उस समयका इनका नम्र भाव देख कर चमत्कृत होना पड़ता है।

ये स्वभावसे ही छोटे हैं। ये ५ फीटसे अधिक ऊंचे नहीं होते। स्त्रियां साधारणतः ४ फीट ७ इञ्च लम्बी होती हैं। इनका शरीर नीलापन लिये काले रंगका होता है। कालेपनके साथ साथ इनमें चिकनाहट भी दिखाई देती है। ये चकमक पत्थरसे अपने शरीरमें पाछ लगाते हैं। मस्तककी क्षुद्रता तथा अन्य अङ्गको देखनेसे मालूम होता है, कि ये हबशी हैं।

ये नाच गानके प्रेमी हैं। कभी कभी तीर धनुष ले कर वनमें घूमते रहते हैं। शिकार पर इनका अचूक लक्ष्य होता है। मछली पकड़नेके लिये ये एक तरहके वृक्षको छालसे सूता तय्यार करते हैं। फिर ये वृक्षके टुकड़े टुकड़े काट कर छोटी छोटी नावें भी बना लेते हैं। इनके तीरके फल चकमक पत्थरके बने होते हैं।

मिनजानिब (अ० क्रि० वि०) ओरसे, तरफसे।

मिनजुमला (अ० क्रि० वि०) सबमेंसे, कुलमेंसे।

मिन्ना—मलय प्रायोद्वीपवासी एक आदिम जाति। इस जातिके लोग भूत प्रेतादि पर विश्वास करते हैं। ये चैत्रके महीनेमें जङ्गल जला कर आश्विनके महीनेमें उस राखवाली जमीनमें खेती करते हैं। ये हमेशा तीर-धनुष ले कर घूमते हैं। पशु पक्षी देखते ही ये उस पर तीर छोड़ते और उसे मार कर मांस खाते हैं। सबसे भी अधिक ऊँचे पशु पर तीर चलानेमें ये लक्ष्य-भ्रष्ट नहीं होते।

मिन्दा (सं० स्त्री०) दैहिक दोष।

मिन्दानाव—प्रशान्त महासागरके फिलिपाइन द्वीपपुञ्जके अन्तर्गत एक द्वीप। यहां पालावङ्ग और सुलुद्वीपमाला अवस्थित है। दुभग, तगवलय, मालनो, मनबो, मिन्दा नाव आदि निरीह जातियां इसके आस पासके द्वीपोंमें रहती हैं। इनकी भाषा विभिन्न होने पर भी इन्हें पापु-यान जातिमें शामिल कर सकते हैं।

मिन्दोरा—बोर्णियो द्वीपके समीप अवस्थित एक छोटा द्वीप। मिन्दोरा और बोर्णियो द्वीपके बीच जो छोटी प्रणाली बह गई है उसमें अङ्गरेज-नाविक मछलीका शिकार करते हैं। यह स्थान कहीं कहीं २७से ३३ मील तक विस्तृत है। यहांका जल ऐसा साफ है, कि २५ फादम नीचेमें अवस्थित प्रवाल कीट भी ऊपरसे साफ साफ दिखाई देते हैं।

हांके बेनगान नामक पहाड़ी प्रदेशमें निग्रेटो जातिका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वास है। ये लोग अपने पड़ोस मानगुआनिस जाति-के साथ मिल कर रहते हैं, कभी भी आपसमें विवाद नहीं करते।

मिन्न (सं० त्रि०) क्लिन्न, पीड़ित।

मिन्नत (अ० स्त्री०) १ प्रार्थना, निवेदन। २ दीनता। ३ एहसान, कृतज्ञता।

मिन्मिन (सं० त्रि०) सानुनासिक वाक्यविशिष्ट, कुछ नाकसे निकले धीमे स्वरमें। वायु-कफके साथ मिल कर शब्दवाहिनी धमनियोंको आच्छादित किये रखती है, इसीसे बहुतेरे मनुष्य बहुत नहीं बोल सकते तथा मूक, गद्गद भाषी और मिन्मिथ होते हैं।

"आवृत्या वायुः सकफो धमनी शब्दवाहिनीं।
नरान् करोत्यक्रियकान् मूकमिन्मिनगद्गदान् ॥"

इस रोगकी चिकित्सा—घी ४ सेर; चूर्णके लिये सोहिञ्जनकी छाल, वच, सैंधव, धवफूल, लोध और आकनादि प्रत्येक आध पाव, जल १६ सेर और बकरी-का दूध ४ सेर, इन सबसे नियमपूर्वक घृत पाक करना होगा। उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे जड़ता, मूकता और गद्गद स्वर नष्ट होता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है और उच्चारण स्पष्ट होता है।

मिनहाज-इ सिराज—तवकत्-इ-नासीरी नामक प्रसिद्ध इसलाम राज्यके इतिहास-लेखक। इनका घर जर्जियामें था। यह एक प्रसिद्ध कवि भी थे। ये मुसलमानी राज्यकी आदि प्रतिष्ठासे ले कर सन् १२५९ ई० (६५८ हि०) तकको सारी घटनाओंका उल्लेख अपने इति-हास-ग्रन्थमें कर गये हैं। इनका यथार्थ नाम है, आबू-उमर मिनहाज उद्दीन-ओसमान विन्द सिराज उद्दीन अल्-जुर्जानी (जर्जिया)। ये सन् १२२७ ई० (६२४ हि०) में घोर राज्यसे सिन्धुप्रदेशमें आये थे। क्रमशः वहां-से उच्चा और मुलतानका परिभ्रमण कर दिल्लीके सुलतान शमसुद्दीन अलतमशके अधीन राजकार्यमें नियुक्त हुए। इसके बाद क्रमसे इन्होंने सुलताना रजिया और सुलतान बहरामशाहके अधीन भी कुछ दिनों तक कार्य किया। बहादुरशाहके मृत्युपरान्त ये हि० ६३९में लक्ष्मणावतीको देखनेके लिये गये थे। यहां ये तीन वर्ष रहनेके बाद हि० सन् ६४२में फिर दिल्ली लौट गये। इसके बाद ये नासिरिया विश्वविद्यालयके सभापति हुए थे। सन् १२५२ ई०में दिल्लीके बादशाह सुलतान नासीरउद्दीन महमूदके शासनकालमें उक्त इतिहासकी रचना कर उसे इन्होंने बादशाहके कर-कमलोंमें समर्पण किया था। दिल्लीमें ये "सदरे-जहां" आदि कई उपाधियोंसे विभू-षित किये गये थे।

मिमङ्क्षा (सं० स्त्री०) मज्जनेच्छा, मांजनेके लिये चेष्टा।

मिमङ्क्ष (सं० त्रि०) मस्ज्र इच्छार्थे सन् तत डः। मज्जनेच्छु।

"यद्दन्तिनः कटकटाहतटामिमङ्क्षो-
र्मङ्क्षूदपादिपरितः पटलैरलीनाम ॥" (माघ ५।३७)

मिमत (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

मिमन्थिषा (सं० स्त्री०) मन्थनेच्छा, मथनेकी इच्छा।

मिमन्थिषु (सं० त्रि०) मन्थनेच्छु, मथनेकी इच्छा करने-वाला।

मिमर्दयिषु (सं० त्रि०) मर्दन करानेमें इच्छुक।

मिमर्दिषु (सं० त्रि०) मर्दनेच्छु, दलनाभिलाषी।

मिमिक्ष (सं० त्रि०) जलसिक्त, पानीमें सींचा हुआ।

मिमिक्ष (सं० त्रि०) स्तोतृगणके इच्छानुसार फलवर्ष-नेच्छु।

मियाँ (फा० पु०) १ स्वामी, मालिक। २ पति, खसम। ३ बड़ोंके लिये एक प्रकारका सम्बोधन, महाशय। ४ बच्चोंके लिये एक प्रकारका सम्बोधन। ५ मुसल-मान। ६ शिक्षक, उस्ताद। ७ पहाड़ी राजपूतोंकी एक उपाधि।

मियाँगञ्ज—अयोध्या-प्रदेशके उनाव जिलान्तर्गत एक बड़ा गाँव। यह अक्षा० २६° ४८′ उ० तथा देशा० ८०° ३४′ पू०के मध्य विस्तृत है। नवाब आसफ उद्दौला और सयादत अली खाँके राजस्व-सचिव मियाँ अनमस अलीने १७७१ ई०में यह नगर बसाया। किन्तु दुर्भाग्यवशतः वह अभी श्रीभ्रष्ट हो पड़ा है। १८०३ ई०में लार्ड भालेन्सिया (Valentia)-ने इस नगरकी समृद्धिका वर्णन किया है। किन्तु दुःखका विषय है, कि उसके २० वर्ष बाद ईसा-धर्मयाजक हेबर १८२५ ई०में उसकी इमारतोंके कुछ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खंडहरोंका विवरण लिख गये हैं। आज भी यहां २ पान्थ-निवास, १३ मसजिद और ४ हिन्दू मन्दिरोंका निदर्शन देखनेमें आता है। १८५७ ई०में विद्रोही सिपाही-दल इस नगरमें परास्त हुआ था।

मियाँनी—पञ्जाब-प्रदेशके होशियारपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० ३१° ४३´ उ० तथा देशा० ७५° ३४´ पू० व्यास नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः छः हजारसे ऊपर है। मामन्द जातिका पठानवंश इस नगरका प्रकृत स्वत्वाधिकारी है। यहां चमड़े, गेहूं, चीनी और मवेशीका विस्तृत कारबार है। शहरमें एक सरकारी अस्पताल है।

मियाँनी—पञ्जाबके शाहपुर जिलेके अन्तर्गत भेरा तहसील-का एक शहर। यह अक्षा० ३२° ३४´ उ० तथा देशा० ७३° ५´ पू०के मध्य झेलम नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। जनसंख्या सातहजारसे ऊपर है। यह स्थान बहु प्राचीन कालसे खनिज लवणके वाणिज्यके लिये प्रसिद्ध है। पहले इसका नाम शासनाबाद था। नदीकी प्रबल बाढ़से जब वह तहस-नहस हो गया, तब बादशाह शाह-जहांके श्वसुर आसफ खाँने वहां पर वर्त्तमान नगर बसाया। १७५४ ई०में शाहके सेनापति नूर उद्दीनने इस नगरको लूटा और तहस-नहस कर डाला। १७८७ ई०में रणजित्सिंहके पिता महासिंहने नगरका संस्कार कर लवण-वाणिज्यमें बहुत कुछ उन्नति की। यहां उत्तर पंजाब-ष्टेट-रेलवेके खुल जानेसे लवण-वाणिज्यमें बहुत सुविधा हो गई है। अलावा इसके उत्कृष्ट घीका कारो-बार भी होता है। नगर म्युनिस्पलिटीकी देख रेखमें रहने पर भी इसका पथघाट उतना साफ नहीं रहता। शहर-में एक ऐंङ्गलो-वर्नाक्युलर हाई स्कूल और एक सरकारी अस्पताल है।

मियांनी—बम्बई-प्रदेशके काठियावाड़ विभागके अन्तर्गत एक प्राचीन बंदर। यह वर्त्तु नदीके मुहाने पर अवस्थित है। नदीमुखमें बालू भर जानेसे वाणिज्यमें बहुत धक्का पहुंचा है। बहुतेरे इस स्थानको प्राचीन मीननगर कहते हैं।

मियांनी—बम्बई प्रदेशके हैदराबाद जिलान्तर्गत एक बड़ा गांव। यह हैदराबाद नगरसे तीन कोस उत्तरमें अव-स्थित है। यहां १८४३ ई०की १७वीं फरवरीको अंगरेज सेनापति सर चार्लस् नेपियरने २८०० सेना और १२ कमान ले कर कुलेली नदीके किनारे २२ हजार बलूची सेनाको परास्त किया था। शत्रुसेना सम्पूर्ण-रूपसे परास्त हुई और करीब ५ हजार योद्धे मारे गये। जो सब अंगरेज-सैनिक इस युद्धमें खेत रहे उनके स्मरणार्थ एक स्मृतिस्तम्भ खड़ा किया गया था। स्तम्भके चारों ओ अभी एक सुरम्य उद्यान लगाया गया है। हैदराबाद नगरसे प्रायः सात मील विस्तृत घाससे ढके हुए इस रणप्राङ्गणको पार कर उद्यानमें आना होता है। उद्यान बड़ा ही सुखप्रद मालूम होता है। यहां एक समय सिन्धु प्रदेशीय उष्ट्रवाही सेनादलकी छावनी थी। मछली पक-ड़नेके लिये यह स्थान बहुत मशहूर है। यहां तीन स्कूल हैं, जिनमेंसे एक बालिकाके लिये है।

मियाँमज्जू—सुलतान इब्राहिम निजामशाहका प्रधान मन्त्री। इन्होंने अपने बुद्धिबलसे निजामशाही राज्यकी बहुत कुछ उन्नति की थी।

मियांमिट्ठू (हिं० पु०) १ मीठी बोली बोलनेवाला, मधुर-भाषी। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ तोता।

मियाँमीर—पञ्जाब-प्रदेशके लाहोर जिलान्तर्गत एक नगर। यहां एक सेनाबास प्रतिष्ठित है। लाहोरके सैनिक विभाग-का सदर यही नगर है। यह अक्षा० ३१° ३१´ १५´´ उ० तथा देशा० ७४° ३५´ १५´´ पू०के मध्य विस्तृत है। पहले यह सेनावास लाहोर नगरके मध्य अनारवली नामक स्थानमें था। उस स्थानका स्वास्थ्य वैसा सुविधाजनक न होनेके कारण १८५१-५२ ई०में वहांसे ३ मील पूर्व दूसरी जगह उठा कर लाया गया। लाहोरके दुर्गमें यहांसे सेना ले जा कर रखा जाता है।

इस स्थानका प्राचीन नाम हसलिमपुर था। मुलन-शाह उर्फ मियांमीर नामक एक मुसलमान पीर यहां रहता था। सम्राट् शाहजहांके लड़के शाहजादा दाराशिकोह-ने हसलिमपुर ग्राम खरीद कर अपने धर्मगुरुको प्रदान किया। उसी पीरके नामानुसार इस स्थानका मियां-मीर नाम पड़ा। यहां उक्त पीरका मकबरा और एक मसजिद मौजूद है। वह मकबरा सफेद मरमर पत्थर-का बना हुआ है। सेनावासके पूर्व और पश्चिममें दो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेलवे स्टेशन है। एकसे लाहोरसे मूलतान जाया जाता है।

मियाँराजू—मालिक अम्बरका सहकारी एक सेनापति। इसने मुगलसेनाके विरुद्ध युद्ध करके निजामशाही राज्यकी रक्षाकी थी।

मियांवाली—१ पञ्जाबप्रदेशके मूलतान विभागका एक जिला। यह अक्षा० ३०° ३६′ से ३३° १४′ उ० तथा देशा० ७०° ४६′ से ७२° ० पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १८१६ वर्गमील है। इसके पूर्वमें अटक, शाहपुर और झङ्ग; दक्षिणमें मुजफ्फरगढ़; पश्चिममें इसा-खेल तहसील तथा उत्तरमें बन्नू और कोहट जिला है।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। १४वीं सदीमें दक्षिणसे जाटोंने आ कर इस स्थान पर दखल जमाया। १७वीं सदीके आरम्भमें हम जसकनी बलोचका नाम पाते हैं। इसका राज्य सिन्धसे चनाब और चक्करसे लियाद तक विस्तृत था। मनकेरामें उसकी राजधानी थी। पीछे यह गक्करोंके हाथ आया। उन्होंने १७४८ ई० तक यहांका शासन किया। अनन्तर दुर्रानीने इन्हें मार भगाया और सिंहासन पर कब्जा किया। द्वितीय सिख-युद्धमें सर एच एडवर्डने मूलतानका कुछ भाग दखल किया और उसके साथ साथ १८४८ ई०में मियाँवालीको भी उसमें मिला लिया। १९०१ ई०में यह जिला संगठित हुआ। ५७के गदरमें यह जिला एक तरह शान्त था। कुछ घुड़सवार बागी हो गये थे, पर उनका शीघ्र ही दमन किया गया।

इस जिलेमें ४ शहर और ४२६ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या चार लाखसे ऊपर है। मुसलमानोंकी संख्या सबसे ज्यादा है। विद्या-शिक्षामें इस जिलेका स्थान २८ जिलोंमें १६वां आया है। अभी कुल मिला कर ५ सिकेण्ड्री, ७२ प्राइमरी, ३ पबलिक, १३ उच्च श्रेणीके और २०४ एलिमेण्ट्री स्कूल हैं। इन सब स्कूलोंमें सबसे बड़ा हाई स्कूल है जो मियांवाली शहरमें अवस्थित है। स्कूलके अलावा सिभिल अस्पताल और पांच चिकित्सालय हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२° ११′ से ३३° २′ उ० तथा देशा० ७१° १६′ से ७१° ५८′ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १४७८ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें इसी नामका एक शहर और ७० ग्राम लगते हैं। जबसे सिन्धु सागरसे दोआब की नहर काट निकाली गई है, तबसे यहां फसल अच्छी लगती है। यहांके अधिवासियोंमें मुसलमानोंकी संख्या ही अधिक है।

३ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० ३२° ३५′ उ० तथा देशा० ७१° ३१′ पू०के मध्य अवस्थित है। यहांका सुप्रसिद्ध सैयदवंश मियांवाली मियां नामसे मशहूर है। ये लोग स्थानीय किसी मुसलमान साधुके वंशधर हैं। अपनी उदारता और दयालुताके गुणसे इन्होंने सर्वसाधारणमें अच्छा नाम कमाया है। उक्त मियांवंश जहां वास करते हैं वह वल्लोवखेल कहलाता है। वर्त्तमान मियांवाली नगर उस वल्लोवखेल नगरका अंशमात्र है। एक तहसीलदार और असिष्टण्ट कमिश्नर यहांका विचार कार्य करते हैं।

मियाँवाली—पञ्जाबके गुजरानवाला जिलान्तर्गत एक प्राचीन नगर। अभी यह खंडहरमें पड़ा है। यह खाननगर असरूर वा अस्रूब नामसे मशहूर था। यहां बहुत पुराने जमानेके ईंटोंके स्तूप पड़े हुए हैं। प्रत्नतत्त्वित् कनिंहम इसे चीन-परिव्राजक यूएनचुवङ्ग द्वारा वर्णित तसेकिया। (तकि) नगर बतलाते हैं। एक समय यह तकि-राज्य बहुत बढ़ा चढ़ा था। पश्चिममें सिन्धुनद, उत्तरमें हिमालय पर्वत, पूर्वमें वितस्ता और दक्षिणमें सिन्धु-पञ्चनद-सङ्गम तक इसका विस्तार था।

उक्त बड़े बड़े स्तूप देखनेसे मालूम हुआ है, कि उनके भीतर जो ईंटें हैं वह बहुत पुरानी और नानाचित्रनैपुण्ययुक्त हैं। आज भी वर्षा ऋतुके समय उन स्तूपोंसे शकजातिके सिक्के निकलते हैं।

सम्राट् अकबर शाहके जमानेमें उग्रशाह नामक एक दोग्रा-सरकारने इस स्तूपसे कुछ ईंटें निकाल कर मस जिदकी छत बनवाई थी। यूएनचुवङ्गने तकि नगरसे दो मील उत्तर-पूर्व सम्राट् अशोक-प्रतिष्ठित बुद्धस्मृति चिह्न सम्बलित स्तूपका वर्णन किया है वहांसे थोड़ी दूरके फासले पर भी एक स्तूप देखा जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मियान (फा० स्त्री०) १ म्यान देखो । (पु०) २ मध्य-भाग, बीचका हिस्सा ।

मियानतह (हिं० स्त्री०) वह साधारण कपड़ा जो किसी अच्छे कपड़ेके नीचे उसकी रक्षा आदिके लिये दिया जाता है।

मियानतही (हिं० स्त्री०) मियानतह देखो ।

मियाना (फा० वि०) १ न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, मध्यम आकारका । (पु०) २ वे खेत जो किसी गांवके बीचमें हों । ३ गाड़ीमें आगेकी ओर बीचमें लगा हुआ वह बाँस जिसके दोनों ओर घोड़े जोते जाते हैं। इसे बम भी कहते हैं । ४ एक प्रकारकी पालकी ।

मियाना—बम्बई प्रेसीडेन्सीके काठियावाड़ विभागमें रहने-वाली एक डाकू-जाति । मूचा नदीके किनारे मूचाकान्ता नामक स्थानके मल्लिया गांवमें इस जातिका वास है। यह अपने चौहट्टियों या सरदारको दलपति स्वीकार करने पर भी वहांके ठाकुर उपाधिधारी सामन्त राजका आदर करते हैं। किन्तु उसकी आज्ञाके अनुसार कोई काम नहीं करते ।

मियाना—सिन्धुप्रदेशवासी मल्लाहकी एक जाति । मै, मोग्राना और मेयानी नामसे भी यह जाति पुकारी जाती है। वहांके कृषक जाट और बलूचियोंसे यह बिलकुल पृथक् जाति है। इसकी संख्या भी इन सबोंसे अधिक है।

ये कर्मदक्ष और व्यायामपटु होते हैं। इनका हृदय सरल और उदार है। ये नदीके किनारोंके गांवोंमें नाव और मछली पकड़नेवाला जाल ले कर बसते हैं। मछली पकड़ना तथा बेचना इनकी प्रधान जीविका है। बहुतेरे इसी नदीमें या मंचूर नामकी झीलमें चीनियों-की तरह नावों पर ही वास करते हैं। वहां इनके रहने-के लिये कोई घर नहीं देखा जाता। स्त्रियां भी नावें चला चला कर पुरुषोंकी सहायता करता हैं। पुरुष जब जाल ले कर समुद्रके किनारे मछली पकड़नेमें लगे रहते हैं, तब स्त्रियां एक छोटी नावमें मछलियोंको ले कर अपने सन्तानोंके साथ नाव चला कर चली जाती है। समुद्रकी प्रणालीके अज्ञात स्थानोंमें ये अद्वितीय नाव चलानेवाले हैं।

सिन्धुनदीके प्रसिद्ध पुल्ल नामक मछली पकड़नेकी प्रथा इनके द्वारा ही सम्पन्न होती है। यह प्रथा जालसे मछली पकड़नेकी प्रथासे पृथक् है। उस समय ये एक मिट्टीका घड़ा ले कर जलमें कूद पड़ते हैं। पहले अल्लाह कह कर घड़ेके मुंहको पेटमें लगा दोनों हाथ से पानी चीरते जाते हैं। इसी तरह वे जहां चाहते हैं वहां जा सकते हैं। उस समय ये १५ फीट लम्बी चिमटेके आकारकी एक डण्डोके मुंहमें जाल बांध कर जलमें डुबाये रहते हैं। मछलियां जब जालमें आ जाती हैं, तब चिमटेका मुख बंद कर देते हैं। इस समय मछलियां फँस जातीं और निकल नहीं सकती हैं। इसके बाद किनारे आ कर उसे अपनी छूरीसे टुकड़े टुकड़े कर डालते हैं।

इनकी स्त्रियां काली होने पर भी इनके मुख-की श्री उतनी खराब नहीं। कोई कोई तो परम सुन्दरी दिखाई देती हैं। कितनी ही वैश्याका काम करती हैं। नाचने गानेमें भी निपुण देखी जाती है, ये नदी किनारे परकी एक तरहकी घाससे चटाई बनाया करती हैं और इसे बेचा करती हैं। नगर या ग्रामके साधारण अधि-वासीसे दूर स्वतन्त्र हो अपना गांव बसा कर अलग रहते हैं। पुरुष मद्य भी बेचते हैं और बाजा बजा कर गान गाते फिरते हैं। स्त्रियां पथ हाटमें गाना गाती फिरती हैं। वेश्याकी तरह इनका हाव भाव देख कर कितने ही मुसाफिर इनके पञ्जेमें फंस जाते हैं।

मियाना—ग्वालियर-राज्यकी गुणा सब-एजेन्सीके अन्तर्भुक्त एक जागीर ।

मियानी (फा० स्त्री०) पायजामेमें वह कपड़ा जो दोनों पायंचोंके बीचमें पड़ता है । इसे कहीं कहीं रूमाल कहते हैं ।

मियार (हिं० पु०) वह लड़की जो कूएं के ऊपर दो खंभों पर लगी होती है और जिसमें गराड़ी पड़ी रहती है।

मियाल (हिं० पु०) मियार देखो ।

मियेध (सं० पु०) १ पशु । २ यज्ञ ।

मियेध्य (सं० त्रि०) यज्ञके योग्य, यज्ञार्ह ।

मिरंगा (फा० पु०) प्रवाल, मूंगा ।

मिरकी (हिं० स्त्री०) चौपायोंको होनेवाली एक प्रकारका मुंहकी बीमारी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिरखम्भ (सं० पु०) मिरखम देखो।

मिरखम (हिं० पु०) कोल्हूमें वह लकड़ी जो बैठ कर हांकनेकी जगह खड़े बलमें लगी रहती है।

मिरगचिड़ा (हिं० पु०) एक प्रकारका छोटा पक्षी।

मिरगिया (हिं० पु०) वह जिसे मिरगीका रोग हो।

मिरगी (हिं० स्त्री०) मृगी देखो।

मिरचा (हिं० पु०) लाल मिच।

मिरचाई (हिं० स्त्री०) १ मरिच देखो। २ काला दाना देखो।

मिरचियागंध (हिं० पु०) रूसा घास।

मिरचा (हिं० स्त्री०) छोटी पर बहुत तेज लाल मिर्च।

मिरजई (फा० स्त्री०) एक प्रकारका बंददार अंगा जो कमर तक और प्रायः पूरी बाँहका होता है।

मिरज़ा (फा० पु०) १ मीर या अमीरका लड़का, सीरजाया। २ राजकुमार, कुंवर। ३ तैमूरवंशके शाहजादोंकी उपाधि। ४ मुगलोंकी एक उपाधि। (वि०) ५ कोमल, नाजुक।

मिरजाई (फा० स्त्री०) १ मिरजाका भाव या पद। २ अभिमान, घमण्ड। २ सरदारी, नेतृत्व। ४ मिरजई देखो।

मिरजान (फा० पु०) प्रवाल, मूंगा।

मिरजामिजाज (फा० वि०) नाजुक दिमागका।

मिरदंग (हिं० पु०) मृदङ्ग देखो।

मिरदंगी (हिं० पु०) वह जो मृदंग बजाता हो; पखावजी।

मिरनजै—अफगानी सीमाके निकटकी कोहाट उपत्यकाका एक अंश। कोहाटको पार कर १० कोसमें फैली हङ्गर उपत्यकामें जाना होता है। इसके बाद ही मिरनजैका समतल क्षेत्र दिखाई देता है। इसका क्षेत्रफल ६ वर्गमील है। इसके दक्षिण-पश्चिम ओर कुरम नदी बहती है। यहां दुर्गादि द्वारा सुरक्षित सात ग्राम हैं। यहाँके अधिवासी अफगानी हैं। इनमें जिल्लोस्त अफगान संख्यामें कम होने पर भी विशेष वीर्यशाली और बुद्धिमान् हैं। इनमें घुड़सवार सेनादल भी हैं। पश्चिम मिरनजैसे पवार कोथूल पर्वतमाला तक इनकी वस्ती दिखाई देती है।

काबुलकी यात्रा करते समय अङ्गरेज-सेनापति लार्ड राबर्टसने इसी स्थानसे भारतीय-सैन्यकी परिचालना की थी।

मिरफ (सं० क्ली०) बौद्धमतसे एक बहुत बड़ी संख्याका नाम।

मिरा (सं० स्त्री०) १ मूर्वा। २ मदिरा, शराब।

मिराज (बड़ा)—बम्बई प्रेसिडेन्सीके दक्षिण महाराष्ट्र प्रदेश के पोलिटिकल एजेन्सीके अधीन एक सामन्त राज्य। इसका क्षेत्रफल ३४० वर्गमील है। यह प्रधानतः ३ खण्डोंमें विभाजित हुआ है, १ कृष्णनदीका उपत्यकांश, २ धारवाड़ जिलेका दक्षिण विभाग और ३ शोलापुर जिलेके अन्तर्गत प्रदेश।

इस राज्यका कृष्णनदीके किनारेका प्रदेश बहुत ही उर्वर और समतल है। सिवा इसके अन्य स्थान पार्वत्य और वन्यभूमिसे परिपूर्ण हैं। बीच बीचमें गण्डशैलमाला भी दिखाई देती है। इसकी मिट्टी काली तथा कपास उत्पन्न करनेके लिये परम उपयोगी है। यहां जलका अभाव भी नहीं। नहर, कुएं, तालाव आदि जलाशय यहांके जलकष्टको भगाये रहते हैं। दाक्षिणात्यके अन्यान्य स्थानोंकी अपेक्षा यह स्थान अपेक्षाकृत सूख जाता है। ग्रीष्म ऋतुमें यहांकी धप सही नहीं जाती।

महाराष्ट्रके पेशवाने वहांके पटवर्द्धनवंशको यह स्थान जागीरमें दिया था। सन् १८२० ई०में सरकारने उक्त पटवर्द्धन-वंशका अधिकार स्वीकार कर इसको चार भागोमें बांट दिया है। इनमें प्रत्येकने स्वीकार किया है कि वे घुड़सवार-सैनिक दिया करेंगे।

सन् १८४२ और १८४५ ई०में क्रमसे पुत्राभाववश इसके दो भागों पर अङ्गरेजोंने अधिकार कर लिया। बाकी दोमें बड़े मिराजके सरदार गङ्गाधरराव गणपत जातिके ब्राह्मण हैं। यह इन्दोरके राजकुमार-कालेजमें विद्याभ्यास करते थे। दक्षिण महाराष्ट्र प्रदेशमें वे ही सर्वश्रेष्ठ सरदार समझे जाते हैं। उन्हें हत्याके अपराधीको दण्डविधान करनेमें पोलिटिकल एजेण्टसे राय लेनी नहीं पड़ती। सरदार-वंशमें दत्तक (गोद) लेनेका अधिकार है। ज्येष्ठ पुत्र राज्यासन पर बैठ कर शासन करते हैं। यहांका मिराज और लक्ष्मीश्वर नगर समृद्धिशाली है।

मिराज (छोटा)—दक्षिण महाराष्ट्र देशका दूसरा सामन्त राज्य। धारवाड़ जिलेके वङ्कापुर उपविभागके, सतारा जिलेके तासगांव उपविभागके और शोलापुर जिलेके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पण्ढरपुर उपविभागके कई ग्रामोंको ले कर इस भूखण्ड-का संगठन हुआ है। इस जागीरका क्षेत्रफल २०८ वर्ग-मील है। यहां कपास बहुतायतसे पैदा होती है। सूती वस्त्रके कारखाने भी हैं।

यहां सरदारवंश भी बड़े मिराजके सरदारकी तरह ही अधिकार रखते हैं। सरदार लक्ष्मणराव हरिहर ब्राह्मण-वंशके थे। नाबालिगी अवस्थामें राज्यका काम पोलिटिकल एजेण्टकी देख रेखमें हुआ। हत्यापराधीको दण्ड देनेकी भी क्षमता बड़े मिराजके सरदारकी तरह इनको भी है। इनकी सैन्य-संख्या २०० है और पहरे-दारोंकी संख्या २१६ है।

मिराज—बड़े मिराजका प्रधान नगर। यह कृष्णानदीके किनारे बसा हुआ है। अक्षा० १६° ४६′ १०″ उ० और देशा० ७४° ४१′ २०″ पू०के मध्य विस्तृत है। म्यूनिसि-पलिटीके होनेसे इस नगरकी दिनों दिन अवस्था बदलती जाती है।

मिराज इ-महम्मद—इसलाम धर्मियोंका उत्सवभेद। धर्म-प्रवर्त्तक महम्मदकी परलोक-यात्राके स्मरणार्थ २७वीं रजबको यह पर्व हुआ करता है। यह पर्व मुसलमानोंमें लड्डु-इ-महम्मद नामसे परिचित है। कुरानके १७वें परिच्छेदमें इसका विस्तारित रूपसे वर्णन मिलता है। कातिब-अल-वकीदीका कहना है, कि १७वीं रमजानको यह घटना संघटित हुई थी। उस समय ईश्वर-दूत जिब्राइल धराधाममें आ कर महम्मदको बुरफ् नामक घोड़े पर चढ़ा स्वर्ग (Heaven) (वहिश्त)-में ले गये थे।

मिराज शब्द ऊर्ज्जधातुसे उत्पन्न हुआ है। यह संस्कृतका उर्ज शब्दार्थबोधक है। मिराज-इ-महम्मद-का अर्थ—महम्मदका स्वर्गारोहण है।

मिरि—औषधार्थमें प्रयोज्य बीजभेद।

मिरि (मीरी या मिड़ी)—आसामकी पार्वत्य उपत्यका-वासी जातिविशेष। आसामसे तिब्बतीय सीमा तक इस अनार्य जातिकी बस्ती है। वन्य आवर जाति इसकी केवल एक शाखा है। अका, आवर और दफला नामकी तीनों पार्वत्य असभ्य जातियां इस मिरी जातिसे उत्पन्न हैं। लखीमपुर, शिवसागर, दरङ्ग आदि जिलोंकी उपत्यका-भूमिमें इस जातिकी बस्ती है। अका नाम्नी जातिके लोग समतलक्षेत्रमें, दफले पार्वत्य उपत्यकाओंमें और मिरी पहाड़ी जङ्गलोंमें अकेले रहते हैं।

अका, आवर और दफला देखो।

मिरियोंमें मुख्यतः दो दल हैं। १ बारगाम और २ दह-गाम। बारगाममें बारह श्रेणियां हैं और दहगाममें दश। ये दो दल स्वतन्त्र हैं। एक दूसरेसे नहीं मिलता।

आसामके समतलक्षेत्रमें बहुतेरे मिरी रहते हैं। आवरोंका कहना है, कि पहले ये गुलाम थे। भाग कर यहां चले आये और रहने लगे। किन्तु ये इस बात को नहीं मानते। इनमें इस तरहकी कहावत प्रचलित है—पहले पहाड़ी मिरी और आवरोंमें घोर विवाद चलता था। इस विवादके कारण ही इन दोनों जातियोंमें एक विकराल युद्ध हुआ। इसी युद्धके समय मिरी जातिके सभी लोग पहाड़ोंसे समतलक्षेत्र उतर आये थे। ये फिर पर्वतों पर नहीं जा सके। आवरोंको पराजित कर ये समतलक्षेत्रमें ही रहने लगे।

आसामके डिहिङ्ग नदीके सैकत भूमिमें बहुत प्राचीन-कालसे मिरियोंकी बस्ती है। ये 'खलास' नामसे परि-चित हैं। यानी ये जाति बन्धनसे मुक्त हो कर यहां आ कर बास करते हैं। छुटियामिरी अपनेको दिहिङ्ग नदीके उडम स्थानसे आये बताते हैं।

इनका मुगल जातिकी तरह कच्चो हल्दीका रङ्ग, लम्बाई और दृढ़ गठन देख कर अनुमान होता है, कि ये उत्तर देशसे आ कर क्रमशः आसामकी पार्वत्य उपत्यका-भूमि पर अधिकार कर बस गये हैं और वहांसे आगे बढ़ इन्होंने स्वजाति आबरोंको भगा कर समतल क्षेत्रमें भेज दिया है। दृढ़काय होने पर भी इनका चेहरा देखते ही इनके आलसी होनेका पता लग जाता है।

ये बहुत दिनोंसे आसाम-सरकारके अधीनमें रह आये हैं। ये आसामवासियों और आबर जातिके मध्य व्यवसायका परिचालन किया करते हैं। आबरजातिके पार्वत्य प्रदेशमें उत्पन्न हुई चीजोंको ले ये आसामके बाजारोंमें बेचते हैं और आसामसे कुछ आबरोंके आव-श्यकीय चीजोंको खरीद कर आबरोंके हाथ बेचा करते हैं। इस तरह ये दो जातियोंके बीच वाणिज्य-कार्य चलाते हैं। इसीसे इनका नाम मिरी हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ये मुख्यतः नदीके किनारे छोटे छोटे गांवोंमें ४।५ फुट ऊंचे मचान बांध कर घर बनाते हैं। ये मुरगी और सूअर पालते हैं। गांवोंमें किसी भोजका समारोह होने पर स्वेच्छापूर्वक इन जीवोंका वध कर भक्षण करते हैं। किसी गाँवमें इनको भैंस पालते देखा गया है। ये भैंसके दूध दूहते हैं। साधारणतः जङ्गल काट कर ये खेती करते हैं। धान, सरसों, मकई और कपास यहां-की प्रधान उपज है।

ये बलशाली और स्वभावतः हृष्टपुष्ट होते हैं। ये सब जीवोंके मांस भक्षण करते हैं। अब मिरी जातिके लोग समतलक्षेत्रके गाँवोंमें आ कर बस गये। फलतः हिन्दुओं-के संसर्ग होनेके कारण इन्होंने गोमांसका भक्षण करना छोड़ दिया है।

इनमें बाल्यविवाह आज तक प्रचलित नहीं है। किंतु बाल्यकालमें ही विवाह-सम्बन्धकी मंगनी हो जाती है। जब ये दोनों अपने खाने कमाने लायक हो जाते हैं तब इनका विवाह प्रकाशरूपसे विघोषित होता है। कभी कभी वरको कन्याके घर जा कर नौकरकी तरह काम करना पड़ता है। जब तक कन्याका स्थिर किया हुआ रुपया नहीं चुकता, तब तक वह वहीं नौकरका काम करता है।

स्त्रियां अपने पहननेके लिये कपड़ा बुन लेती हैं, सूती छींट बना कर उससे अंगरखा तय्यार करती हैं। इनका 'जीन' नामका मोटा गमछा गृहस्थोंके लिये विशेष उप-योगी होता है। पुरुष जङ्गल काट कर खेती करते हैं, इनकी स्त्रियां भी खेतोंमें जा कर शारीरिक परिश्रम करनेमें कोई कसर नहीं रखतीं।

ये सब मृतदेहको नीचे गाड़ते है। गाड़ देनेके बाद इनको मृतकके लिये अशौचको शुद्धिके लिये कोई तूल तवाल नहीं करना पड़ता।

इनका धर्म कर्म अन्य जङ्गली जातिकी तरह है। इन-को कोई विपद् उपस्थित होने पर ये प्रेतोंकी परितृप्तिके लिये उनकी पूजा करते हैं। ये प्रेतात्मा नेकिरी और निकिरान नामसे मशहूर हैं। नेकिरीकी पूजा पुरुष और नेकिरानकी पूजा स्त्रियां करती हैं। सिवा इनके ये सूर्य (देन्या) स्वर्ग (तलङ्ग) और पृथ्वी (मरासिन)की विशेष भक्ति करते हैं।

ऊपर लिखे देवताकी पूजा करानेवाले मीबी या मिम्बोया नामके पुरोहित रहते हैं। रोगीको हवा देना और क्रियाकर्ममें जीवकी बलि देना इनका प्रधान कार्य है। मिम्बोया (पुरोहित) वंशानुक्रमसे होते हैं। ये इस पदको प्राप्त करना ईश्वरकी इच्छा कहते हैं। कैसे ये देवताओंका आह्वान करते हैं नीचे उसका उल्लेख किया जाता है।

१८ वर्षकी उम्रके समय प्रेतात्मा द्वारा परिचालित हो कर वनमें अपने इष्टदेवको ले जाते हैं। ये इस समय वन फल खा कर कुछ समय बिताते हैं। इसके बाद मानो ये नये उपादानसे गठित हो जाते हैं। उनकी आत्मा भी हर तरहसे परिमार्जित हो जाती है। ये दिव्यज्ञान प्राप्त कर अदृश्य वस्तुकी यथार्थता बतलाते हैं। ये स्तुति पाठ द्वारा चित्त परिशुद्ध कर रोगीको रोगसे मुक्त कर सकते हैं और सारी पठनावलीको दैववाणी रूपमें कह देते हैं।

समतलक्षेत्रके गांवोंमें रहनेवाले मिरी प्राचीन प्रथाके अनुसार नेकिरी और नेकिरानकी पूजा छोड़ कर इस समय शङ्कर और परमेश्वरकी पूजा करने लग गये हैं। यह पूजा (बोरखेवा या बरखेवा) विशेष धूमधामसे की जाती हैं। गृहस्थ कभी कभी नेकिरी और नेकिरानकी पूजा करते हैं। मिम्बोया इस उत्सवमें पुरोहितका काय्य करते हैं सही, किन्तु पहलेकी तरह ईश्वरका कोलपनिक आदान नहीं करते। कोई भी देवता क्यों न हो, इनकी पूजाकी पद्धति एक ही प्रकारकी है। सभी पूजाओंमें मुर्गों, बकरे, शूकर और भैंसेकी बलि दिया करते हैं। उत्सवोंमें चावलसे तैयार किये हुए मद्यपानका विशेष प्रचार है।

धर्माचरणके सम्बन्धमें इनमें भकतिया और अभक-तिया नामकी दो श्रेणियां दिखाई देती हैं। अर्थात् जो 'गोसांई' के चेले हैं, वे भकतिया और जो गोसांइयोंसे मन्त्र-दीक्षा नहीं लेते, वे अभकतिया नामसे परिचित हैं। आसाम-शिवसागरमें गोसाइयोंका अड्डा है। वे प्रायः ब्रह्मपुत्रके दक्षिणी किनारे पर रहते हैं। कभी कभी यत्र माकुली द्वीपमें और ब्रह्मपुत्रके उत्तरतटवासियोंके

CC0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिरियोंके यहां आ कर अपनी गुरुदक्षिणा चुकाते हैं।

ये कोई मूर्त्ति बना कर उसकी पूजा नहीं करते। किसीको भी ब्राह्मण-पुरोहित नहीं हैं। बहुतेरे भैंस या निषिद्ध मांसोंका भक्षण परित्याग कर हिन्दू-सम्प्रदायमें मिलनेकी चेष्टा कर रहे हैं। माटी मिरी अपनी स्वजातियों की तरह मचान बांध कर बननेवाले घरोंमें बास नहीं करते। वे अन्यान्य छोटे छोटे हिन्दुओंकी तरह मट्टीका घर बना कर रहते हैं और जातीय प्राचीन नीति रीति और धर्माचारको छोड़ कर हिन्दू-जातिके धर्माचारका अनुकरण कर रहे हैं।

जो पार्वत्य मिरी अङ्गरेज राज्यत्वमें सुवर्णश्री नदीके किनारे रहते हैं, उनमें भी कई श्रेणियां हैं। उनमें घत-घासी, सराक, पानीबुटिया और तरबुटिया ही प्रधान हैं। सीमान्त प्रदेशकी रक्षाके लिये आसामके राजासे ये कुछ वार्षिक वृत्ति पाते थे। इस समय अङ्गरेज-सरकार शान्ति-रक्षाके लिये उनको कुछ कुछ दिया करती है। पार्वत्य मिरी जातिके लोग एक दलपतिके अधीन वास करते हैं। किसी किसी ग्राममें एक एक कुटुम्बके लोग समूचे गांव पर आधिपत्य करते हैं। आबरोंकी तरह उनकी शासन-शृङ्खला नहीं। वे रातमें जाग कर पहरा नहीं देते। अथवा मोरङ्ग नामक सभामें सम्मिलित हो कर्त्तव्याकर्त्तव्यका अवधारण नहीं किया करते।

पानीबुटियोंके सरदारका नाम डेमा है। इनके रहनेका घर बांससे बना होता है और ७० फीट लम्बा होता है। इनकी स्त्रियां वेशभूषा और आभूषण पहना करती हैं। साधारणतः ये पहाड़ी निकृष्ट मणियोंकी माला गलेमें डालती हैं। पुरुष बड़े बलिष्ठ होते हैं। सिंहलियोंकी तरह सरमें जूड़ा बांधते हैं। इनके कानोंमें चाँदीके कुण्डल और सरमें बाघम्बरसे छाई हुई बेंतकी टोपी रहती है। कुरता और वस्त्रका विशेष व्यवहार नहीं करते।

हाथी आदि जन्तुओंको पकड़नेका कौशल इनको अच्छी तरहसे मालूम है। प्रायः फांदा लगा कर पशुओंको पकड़ा करते हैं। पुरुष शेरका मांस खाते हैं। इनका विश्वास है, कि शेरके मांस खानेसे शरीरमें बलका सञ्चार होता है। स्त्रियां शेरका मांस नहीं खातीं।

इनमें बहुविवाह भी प्रचलित है। सरदार स्वेच्छापूर्वक बहुत सी पत्नियां खरीद सकते हैं। पिताके मरने पर अपनी गर्भधारिणी माताको छोड़ अन्य विमाताओंके साथ पुत्र विवाह कर सकता है। दरिद्रोंको पत्नी पानेकी आशामें घोर परिश्रम करना पड़ता है। कन्याको पण न दे सकनेके कारण विवाहमें बड़ी अड़चन होती है। इसीके फलसे स्त्रियां बहुतसे मर्द करने पर बाध्य होती हैं।

मिरी स्त्रियां अपने स्वामीकी बड़ी भक्ति करती हैं। कितना ही कष्ट होने पर भी अपने स्वामीको कटुवाक्य नहीं बोलतीं। वे जिस स्वामीके पास जब रहती हैं, तब उनसे किसी तरह अविश्वास नहीं करतीं। पुरुषके संग जमीन कोड़नेमें भी वे जरा सङ्कोच नहीं करतीं। पहले कह चुके हैं, कि ये प्रत्येक कार्यमें जीव-बलि देते हैं। इनका विश्वास है, कि जीवमात्र किसीके द्वारा मारे जाने या मरने पर स्वर्ग जाता है और उस प्रेतात्मा पर यम शासन किया करते हैं। प्रेतात्मा स्वर्गमें जाता है, इस लिये पूजा आदिमें जीवहिंसा करनेमें जरा भी नहीं हिचकते। इनके यमराज हिन्दुओंके यमराजके सिवा और दूसरा कोई नहीं। ये मृतदेहको जमीनमें गाड़ देते हैं। यदि कोई समतलक्षेत्रमें आ कर परलोकवासी होता है तो भी उसको पर्वत पर ला कर पूर्वपुरुषोंकी कब्रोंके पास गाड़ते हैं। किसी संक्रामक रोगसे मरने पर उसे पर्वत पर नहीं लाते। कब्रमें गाड़ते समय ये मृतात्माके लिये भोज्य पदार्थ, गहना और हांड़ी, लोटा आदि गाड़ा करते हैं। इनका विश्वास है, कि ये भोज्य-पदार्थ स्वर्गारोहणकी यात्रामें काम आयेगा। प्रेतात्माको स्वर्ग जानेके लिये पाथेय देनेकी प्रथा हिन्दुओंमें भी है जो बैतरणीके नामसे प्रसिद्ध है। प्रेतवालोंके गहनेको देख कर यमराज उसके गुरुत्वका हाल जान जायेंगे, ऐसा ही उनका विश्वास है।

ये अपनी उत्पत्ति तथा पर्वत पर रहनेके सम्बन्धमें कहा करते हैं, कि परम पिता द्वारा पर्वत पर वास करने योग्य उपादानोंसे हम लोगोंका शरीर गठित हुआ है और उन्हींकी आज्ञासे हम यहां वास करते हैं। पहले ये हिमालयके तिब्बतीय प्रान्तोंमें रहते थे। पक्षियोंको उड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर आसामकी ओर आते देख ये भी यहां आये हैं। ये पर्वतों पर चढ़नेमें बड़े ही दक्ष हैं। और तो क्या, पार्वतीय जिस पथसे बकरियां कठिनतासे आती जाती हैं, उस पथसे ये बोझ ले कर सरलतासे आते जाते हैं।

मिरिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी लता।

मिरिच (हिं० स्त्री०) मरिच देखो।

मिरिचियाकंद (हिं० पु०) रोहिस घास।

मिर्च (हिं० स्त्री०) कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियोंका एक वर्ग। इसके अन्तर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च और उनकी जातियां हैं। विशेष विवरण मरिच शब्दमें देखो।

मिर्चिया (हिं० स्त्री०) रोहिस घास।

मिर्जापुर,—संयुक्त-प्रदेशके गवर्नरके शासनमें बनारस विभागका एक प्रसिद्ध जिला। यह अक्षा० २३° ५२' से २५° ३२' उत्तर तथा देशा० ८२° ७' से ८३° ३९' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें जौनपुर और काशी, पूरबमें बङ्गालके शाहाबाद और लोहरडंगा, दक्षिणमें सरगुजा सामन्त राज्य, पश्चिममें इलाहाबाद तथा रेवा महाराजका राज्य है। इसमें ७ शहर और ४२५७ गांव लगते हैं। शहरोंमें मिर्जापुर सबसे बड़ा शहर है। इसकी आबादी करीब ११ लाख है।

प्राकृतिक दृश्य।

संयुक्तप्रान्तमें मिर्जापुर जिला सबसे बड़ा है और प्राकृतिक विचित्रतासे भरा है। उत्तर-दक्षिण इसकी लम्बाई १०२ मील तथा पूर्व-पश्चिम इसकी चौड़ाई ५२ मील है। विन्ध्याचल और कैमूर पर्वत श्रेणियां इसको पूर्वी और पश्चिमी हिस्सेमें बांटती हैं। विन्ध्य श्रेणीके उत्तर गङ्गा किनारेकी जमीन पंकोंसे भरी है। इस भागकी जमीन समतल है। दक्षिण भाग क्रमसे ऊंचा होता हुआ विन्ध्याचल पहाड़की तराई हो कर चला गया है। इस भागमें ऊंची नीची बहुत-सी तराइयां दिखाई देती हैं। विन्ध्याचल और चुनारके पासकी जमीन बहुत कुछ समतल है।

गङ्गाके दक्षिण किनारेसे शोन नदीके पास तक-की तराई ७० मील फैली हुई है। यह समतल क्षेत्रसे ३००-से ८०० फीट तक अधिक ऊंची है। इस तराईके बीच-से कर्म्मनाशा नदी निकली है।

कर्म्मनाशा नदी पहले धीमी चालसे बह कर केरामगौर परगनेमें गङ्गाजीसे मिलनेसे पहले चौड़ी हो गई है। यह स्थान काशीके हिन्दू राजाओंके वंशपरम्परासे शिकारका जङ्गल है। इसे नौगढ़ तालुका भी कहते हैं। इस भागमें हरे भरे वृक्षोंसे सुशोभित छोटी छोटी पहाड़ियां सुन्दरताका अपूर्व चित्र दिखाती हैं। यह भाग जङ्गलों और पहाड़ोंसे भरा है और इसमें अनेक छोटी छोटी पहाड़ी नदियां कलकल नाद करती हुई बहती हैं। यह तालुका प्रायः जङ्गलोंसे भरी है। यहांकी नदियोंमें कर्म्मनाशा और चन्द्रप्रभा प्रधान हैं। कर्म्मनाशा नदी ऊंचे स्थानसे अनेक जलप्रपातोंकी सृष्टि करती हुई समतल भूमिमें बहती है। जल-प्रपातोंमें देव-द्वारी और छानपाथर अत्यन्त प्रसिद्ध और रमणीय हैं। चन्द्रप्रभा नदीके पूर्वद्वारी नामक एक जलप्रपात है।

इस विभागके बाद शोन नदीके पासकी भूमि ही विशेष उल्लेखनीय है। यहां बहुत-सी छोटी छोटी घाटियां हैं। इनमें किवाइघाटी अत्यन्त रमणीय है। इसके दक्षिणमें सिंग्रौलीकी तराई है, जिसमें पत्थर कोयलेके बहुत स्तर मिलते हैं।

जंगली जानवरोंमें बाघ, चीते और भालू बहुतायतसे मिलते हैं। सांभर, हायना, भेड़िये, जंगली सूअर, चित्रमृग, नीलगाय तथा कृष्णसार आदि अनेक तरहके जन्तु यहां पाये जाते हैं। इस देशमें शिकारी और जलचर पक्षी अक्सर नहीं दीख पड़ते।

खेती और उपज।

गङ्गाके पासकी भूमिको छोड़ दूसरे दूसरे स्थानमें खेती नहीं होती। समूचे प्रदेशकी प्रायः आधी जमीन पर किसी राज्यकी मालगुजारी निश्चित नहीं है। इसको दुधि परगना कहते हैं। इस परगनेमें काशी, सिंग्रौली तथा कान्तित् इन कई राजोंके राज्यके कुछ अंश हैं। यहां धान, गेहूं, जौ आदि अनेक प्रकारके अन्न उपजते हैं। वसन्त ऋतु रब्बी और शरद ऋतु खरीफ काटनेका समय है। सभी जगहोंमें जौ खूब लगता है। वर्षाकालके अलावा भी पानी पड़ता है। लेकिन वसन्तमें प्रायः पानी नहीं पड़ता। अतएव बड़ी आसानीसे खेती चलती है। उपजका तृतीयांश खरीफ फसल है। इसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अलावा बाजरा और जुआर भी बहुतायतसे होता है। अनेक स्थानोंमें अफीमकी खेती होती है। गढ़वालके पास पान खूब उपजता है।

कलकत्ते और बम्बईको छोड़ मिर्जापुरके जैसा वाणिज्य प्रधान स्थान दूसरा और नहीं है। कुछ समय पहले गल्ले और रुईके व्यापारके लिये मिर्जापुर भारतमें पहला स्थान समझा जाता था। लेकिन बम्बई-जब्बलपुर रेलवेके खुलने पर यहांका व्यापार बहुत कम हो गया है। तो भी इस प्रदेशको व्यापारका एक प्रधान केन्द्र कह सकते हैं। यहांसे पीतलके बरतन, लाह और दरी बहुत जगहमें भेजी जाती है। इस जिलेंके उत्तर इष्ट-इण्डिया-रेलवे और गङ्गा रहनेके कारण व्यापारमें विशेष सुविधा हुई है। ग्रैण्ड-ट्रंक रोड और दाक्षिणात्यके राजपथके कुछ भाग इस जिले हो कर गये हैं। अनेक कारणोंसे मिर्जापुरमें कई बार दुर्भिक्ष हुआ जिससे बहुतेरे लोग कराल कालके ग्रास बने।

आज कल बहुत जगहोंमें जङ्गल काट खेती बढ़ाई जा रही है, लेकिन अभी तक दो तिहाई जमीन जङ्गलोंसे भरी है। सरकारके बन्दोबस्ती महालकी मालगुजारीको पत्तिदारी कहते हैं। काशीराजके अधीन जो पतनीदार हैं मंजूरीदार उनका नाम है। जमींदारके नीचे इन्हींका स्थान है। ये लोग किसानोंसे मालगुजारी वसूल करते हैं। यहांके किसानकी हालत और जगहोंसे अच्छी है। लेकिन ये लोग बड़े आलसी होते हैं। पानी नहीं पड़ने पर सिंचाईसे खेतीकी उन्नतिकी चेष्टा ये नहीं करते। इसलिये दक्षिणके गृहस्थ लोग अकालके दिन बड़ी मुसीबतमें पड़ जाते हैं।

इतिहास।

मिर्जापुर जिला काशी-प्रदेशका एक भाग समझा जाता है। अतएव इसका पुराना इतिहास काशीराज्यके इतिहासमें मिला हुआ है। मिर्जापुर शब्द किसी मिरजा के नामसे लिया गया है। अतएव खास मिर्जापुरका ब्योरा मुसलमानी सल्तनतके समयसे चला है। मिर्जापुरका पुराना इतिहास चुनार या चरणाद्रिगढ़के सम्बन्धमें कुछ दिया गया है। चुनार देखो।

प्राचीन कालमें मिर्जापुर हिन्दू राजोंके अधीन था। विजयगढ़ और चरणाद्रिगढ़ आदि शब्दोंके ब्योरे से तथा विन्ध्याचलके पासवाले प्रदेशमें खण्डहरोंके देखनेसे इसके पुराने इतिहासका बहुत कुछ पता चलता है।

विन्ध्याचलकी तराईमें दुर्भेद्य प्रसिद्ध चुनारगढ़ बना हुआ है जिसे गंगा अपने जलसे पवित्र करती है। कहा जाता है, कि द्वापरयुगमें कोई देवता हिमालयसे कुमारी-अन्तरीपको जा रहे थे। रास्तेमें उन्हें गंगा-तटवर्त्ती विन्ध्याचलकी तराई मिली। वहां कुछ काल उन्होंने विश्राम किया। उन्हींके चरणचिह्नसे चुनार या चनार नाम हुआ है।

उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके भाई भर्त्तृहरिने राज्य-भोगका त्याग कर विन्ध्याचलमें बहुत दिनों तक योगाभ्यास किया था। आज भी उनका मन्दिर मौजूद है जो इस स्थानका माहात्म्य बतलाता है। भर्त्तृनाथका मन्दिर पत्थरोंका बना है। इसकी शिल्पकला देखने योग्य है।

पश्चात् गङ्गाजल और विन्ध्याचलकी इस रमणीय और प्रशान्त भावोंसे भरी सुन्दरता पर मोहित हो पृथ्वीराज इस प्रदेशमें रहने लगे थे। कुछ ही दिन बाद खैरउद्दीन सुबुक्तगीनने मिर्जापुर पर अधिकार किया और मुसलमानी शासन चलाया। फिर कुछ समयके बाद खामिराज नामके किसी हिंदू राजाने मिर्जापुर विजय किया था। चुनारगढ़के तोरणद्वार पर एक स्थानमें एक शिलालिपि है जिसमें १३३० सम्बत्(१२७३ ई०) खुदा हुआ है। इस शिलालिपिसे उक्त घटनाका प्रमाण मिलता है।

इसके बाद महम्मद साहबके रोहिल-सेनापति साहबुद्दीनने पूर्णरूपसे यहां मुसलमान-राज्य स्थापित किया। इस वंशके एक शासककी विधवा स्त्रीसे विवाह कर शेर खां या शेरशाहने १५३० ई०में इस स्थान पर अपना अधिकार जमाया। १५१६ ई०में हुमायूंने रूमी खांकी सहायतासे ६ महीने इस स्थानको घेर पीछे दखल कर लिया। शेरशाहने चुनारगढ़में आश्रय लिया। कुछ दिन बाद यह स्थान फिर उसके हाथ लगा।

१५७५ ई०में मुगलोंने फिर चुनारगढ़ पर कब्जा कर अपने शासनको दृढ़ कर लिया। १७५० ई०में काशीराज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलरामने मिर्जापुर पर अधिकार किया। अंग्रेज सेनापति मेजर मनरोने बक्सर युद्धके बाद ही चुनारगढ़में घेरा डाला। १७७२ ई०में चुनारगढ़ अंग्रेजी शासनमें लाया गया।

१७८१ ई०में लार्ड वार्नहेष्टिंग्सने काशीराज चेतसिंहको राजच्युत करनेकी चेष्ट की। फलतः राजा मेजर पपहामसे लतीफपुरमें पराजित हुए और ग्वालियर भाग गये।

पश्चात् अंग्रेजोंकी कृपासे महीपनारायणसिंह काशी और मिर्जापुर प्रदेशके राजा हुये। १८५७ ई०में मिर्जापुरमें सिपाहियोंका गदर हुआ। पहले मिर्जापुरके एक खजानचीने सिपाहियोंको उभाड़ा। १ली जूनको बनारसमें और ५वीं जूनको जौनपुरमें सिपाही बागी हुए। कर्नल पट ८७ सौ पैदल सेना ले बलवा दबाने चले। ८वीं जूनको सिक्ख लोग इलाहाबादमें इकट्ठे हुए। दूसरे दिन बागी सिपाहियोंके हमलाके डरसे मिष्टर टूकरको छोड़ कर समूची अंग्रेजी फौजने चुनारगढ़में आश्रय लिया। १० जूनको सेनापति मिष्टर टूकरने बागियों पर हमला किया और उन्हें हराया। ११ जूनको मद्रासी अंग्रेजी फौज मिर्जापुर आई तथा इसने जल-डकैतोंके एक खास अड्डे गौरको ध्वंस किया। भदोही परगनेके ठाकुर सरदार आदवन्तसिंह बागी हुए। पीछे वे पकड़े गये और फांसी पर लटका दिये गये।

ठाकुर लोगोंने बदला लेनेके लिये वहांके ज्वाइंट मैजिष्ट्रेट पर हमला किया और उनको तथा दो और नीलहे गोरोंको पाली गांवकी कोठीमें मार डाला। २६ जूनको बन्दा और फतहपुरके तथा ११ अगस्तको दानापुरके बागी सिपाही लोग मिर्जापुरमें आ पहुंचे। अंग्रेजी सेनासे हार खा वे लोग मिर्जापुरसे भाग गये। ता० ८ को बागी जमींदार कमरसिंह मिर्जापुर आये और ता० १६ को नागर नामक स्थानसे ५००० देशी सिपाहियोंका दल बागी हो मिर्जापुर आया। १८५८ ई०के जनवरीमें सेनापति मिष्टर टूकरने विजयगढ़ नामक स्थानमें बागियों पर हमला किया और उन्हें हराया। बागी लोग शोन नदीके उस पार भाग गये। तभीसे मिर्जापुरमें शान्ति विराजती है।

मिर्जापुरमें प्राचीन कीर्त्तिके अनेक खण्डहर मिलते हैं। इसके पास ही दुर्गाकुंड नामका एक झरना है। इसके उत्तरमें कामाक्षा देवीका मन्दिर है। पर्वत-खंडों पर बहुत-सी खुदी हुई मूर्त्तियां अभी तक वर्त्तमान हैं जो इस स्थानकी प्राचीनताका परिचय देती हैं। यहांके सिंह, घोड़े और हाथीकी प्रतिमायें अत्यन्त सुन्दर हैं।

मन्दिरके दूसरे पार्श्वमें गुप्तवंशीय राजाओंके समयके खुदे हुए बहुतसे शिलालेख हैं। बहुतोंमें चन्द्र और समुद्र नाम अंकित है। यह देख पुरातत्त्ववेत्ता अनुमान करते हैं, कि ये चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्तकी लीपियां हैं। हर साल यहां दुर्गापूजाके बाद एक मेला लगता है। पूर्व समयमें जो सब यात्री इस दुर्गा-मन्दिरके दर्शनार्थ आये थे उनके नाम अभी तक पर्वत पर खुदे हुए हैं। इन लीपियोंमें अधिकांश गुप्तवंशके पहलेका लिखा हुआ है।

मिर्जापुर-तहसीलके अन्दर बरियाघाट नामके स्थानमें हिन्दुओंका प्रसिद्ध विन्ध्याचल तीर्थ है। यहां विन्ध्येश्वरी या विन्ध्यावासिनी देवीका पुराना मन्दिर है। पुरानी कथासे मालूम होता है, कि विन्ध्याचलमें विलुप्त पम्पापुरकी राजधानी थी। प्रवाद है, कि इस स्थानमें १५० दुर्गाके मन्दिर थे। औरङ्गजेबके समयमें वे सब नष्ट किये गये। पुरातत्त्ववेत्ता कनिंहम, फर्गुसन और फूरर आदि कहते हैं, कि यहां प्राचीन समयमें एक बड़ी राजधानी थी। परन्तु उस पम्पापुरका इतिहास घोर अन्धकारसे ढका है। विन्ध्याचलसे थोड़ी दूर पर रामेश्वरनाथका वर्त्तमान मन्दिर है। इसके पासमें पत्थर-मूर्त्तियोंके अनेक टुकड़े पाये जाते हैं। उनमें एक देवीमूर्त्ति कौतुहलोद्दीपक वस्तु है। यह गोदमें बालक लिये किसी पूर्णांगी युवतीकी प्रतिमूर्त्ति है। ये अपने कोमल अंगोंमें पुत्र लिये सिंहासन पर बैठी हुई है। मुखका आकार बिगड़ा हुआ है। हिन्दूद्रोही बौद्ध लोगोंने इनके मुखको बदल कर तीर्थङ्कर या बुद्धदेवका मुख गढ़ना चाहा था। दहिना हाथ केहुनीसे नीचे टूटा हुआ है। बायें हाथमें सुकुमार शिशुमूर्त्ति देखनेसे मालूम होता है, कि बौद्ध लोगोंको दया आई और इसीलिये प्राचीन हिन्दू कीर्त्तिका चिह्न अभी भी वर्त्तमान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है और बौद्ध समयके पहलेके स्थापत्य शिल्पका परिचय दे रहा है।

प्रतिमाके पीछे आज तक पत्तों पुष्पोंसे लदा हुआ एक वृक्ष वर्त्तमान है। सिंहासनके नीचे एक सिंहकी मूर्त्ति है। प्रतिमाके बायें और दाहिने सात सखीकी मूर्त्तियां हैं। दो, आकाशमें उड़ती अवस्थाके खुदे हुए चित्र हैं और शेष ५ मूर्त्तियां दोनों ओर खड़ी हैं। यहांके लोग इन्हें संकटादेवी कहते हैं। कनिंहमका कहना है, कि यह षष्ठीदेवीकी प्रतिमा है। डाक्टर फूरर भी कहते हैं वह सम्भवतः महावीरनाथकी माता त्रिशलाकी प्रतिमा हो सकती है।

इसे छोड़ और भी अनेक स्थानों में प्राचीन कीर्त्तिके खण्डहर हैं। आधेश्वर पर्वत पर एक दुर्भेद्य गढ़का निदर्शन है। उसके चारों ओर बहुतसे गह्वर मौजूद हैं। वहांके कोल उसमें उतरनेका साहस नहीं करते। कहा जाता है, कि विजयपुरके एक राजा एक गह्वरमें सीढ़ीसे उतरे थे। उसमें पार्वतीकी एक प्रतिमा है। आधेश्वरका पहाड़ी-गढ़ कालञ्जर और अजयगढ़के समान सुरक्षित है और लोगोंका उस पर चढ़ना कठिन है। अद्धा नदी इससे थोड़ी दूरी पर बहती है। उसी नदीके नाम पर गढ़ और पर्वतके नाम रक्खे गये हैं। अथवा यहांके अद्धेश्वर शिवकी मूर्त्तिके नाम पर गढ़का नाम पड़ा होगा।

रेहन्द और शोनके सङ्गम पर वालंद-राजवंशकी राजधानीका खण्डहर दीख पड़ता है। पहले यह राजधानी काशीके समान थी। पुराने गढ़के खण्डहरोंके बीच एक स्थानमें वर्त्तमान गढ़ बनाया गया है। उसमें जो पारसी अक्षर खुदे हैं उसे पढ़नेसे मालूम होता है, कि राजा मदन शाहके भाई माधवसिंहने १६१६ ई०में यह गढ़ बनवाया था। बलवन्तसिंहके समयमें इस गढ़ और विजयगढ़ दोनोंकी मरम्मत हुई थी। लोग कहते हैं, कि वालन्द राजाओंकी आज्ञासे असुरोंने यह गढ़ बनाया था।

इससे कुछ दक्षिण बेलखारा गांवके मैदानमें एक स्मारक स्तम्भ है। उसके ऊपर एक गणेश-मूर्त्ति और नीचे खोदी हुई दो शिलालिपियां हैं। इन दो शिलालिपियोंके मध्यभागमें पक्षी और घोड़े के चित्र हैं। ऊपरका शिलालेख ११८६ ई०में कन्नौज राज लक्ष्मणदेवके समयका खुदा हुआ है। इससे साफ मालूम होता है, कि राठौर-वंशी कन्नौजराज जयचन्दके मुसलमानोंसे हारनेके तीन वर्ष बाद यह शिलालिपि लिखी गई थी। उस समय मुसलमान लोग कन्नौजकी वास्तविक स्वाधीनताको नहीं छीन सके थे।

यहांसे कई कोस पूरब बहुतसे चौखूंटे स्मारक स्तम्भ हैं। उनसे उस समयकी सामाजिक पद्धतिका बहुत कुछ पता चलता है। कई स्तम्भों पर स्त्री और पुरुष एक दूसरेका हाथ पकड़े हुए हैं तथा कहीं कहीं केवल स्त्रियां ही वीणा बजाती हुई तरह तरहसे नाचती हैं। फर कहीं यज्ञ समयके पशु बधका चित्र वर्त्तमान है। कितने ही स्तम्भों पर वराह और नरसिंह अवतारकी अनेक घटनाओंका चित्र अंकित है। कहीं गोपियां दही मथ रही हैं। अनेक स्तम्भों पर हनुमानका शरीर अंकित है। कहीं भैंसे पर चढ़ी हुई महिषासुर मर्दिनीकी टूटी प्रतिमा है। पश्चिमी विद्वान् कहते हैं, कि ये सब शिल्प कीर्त्तियां शवर राजाओंके राज्यकालमें रची गई थीं।

अष्टभुज नामक स्थानमें अष्टभुजादेवी और पर्वतीकी बहुतेरी प्रतिमायें पाई जाती हैं। इस स्थानमें सीता-कुण्ड नामका एक गरम झरना है। मिर्जापुर जिलेमें इस प्रकार प्राचीन कीर्त्तियोंके अनेक चिह्न अनेक स्थानोंमें पड़े हुए हैं।

२ उक्त जिलेकी पश्चिमी तहसील। यह उपरौध, चौरासी, छियानवे और कान्तित परगनेका कोन, तथा कसवार परगनेका तालुक मझवा ले कर बना हुई है। यह अक्षा० २४° ३६´ से २५° १७´ उ० और देशा० ८२° ७´ से ८२° ५०´ पू०के बीच अवस्थित है। इसमें ६६४ गांव तथा २ शहर लगते हैं। इसका रकबा ११८५ वर्गमील है। इसकी आबादी करीब सवा तीन लाख है। हरएक वर्गमीलकी आबादी २८१ है। तहसीलका बड़ा हिस्सा गंगाके दक्षिण है। गंगा इस भागकी उत्तरी सीमा है। अतएव इसका अधिकांश भाग विन्ध्याचलकी अधित्यकामें पाता है। इसकी दक्षिणी भाग बेलन नदीसे सींचा जाता है। दक्षिण-पश्चिमी सीमाके पास कैमूर पहाड़ियां अधित्यका पर एकाएक उठी हुई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३ उक्त जिलेका प्रधान शहर। यह अक्षा० २५° ६ उत्तर तथा देशा० ८२° ३५' पूरवके बीच गङ्गाके किनारे बसा हुआ है। जनसंख्या ६० हजारके करीब है। भारतमें वह शहर वाणिज्य प्रधान कह कर प्रसिद्ध है। लेकिन अनेक स्थानोंसे रेलवेका संयोग होनेके कारण इसकी प्रधानतामें धक्का पहुंचा है। गङ्गा किन रेसे सुन्दर मन्दिर, मसजिद, बड़े बड़े मकान तथा नौकायें दर्शकोंके चित्तको मोहती हैं। यहां अनेक धनवान् व्यापारी रहते हैं। यहां यूरोपियनके गिरजे तथा अनेक तरहके विद्यालय हैं। पहले यहां फौजकी छावनी थी। लेकिन सिपाहियोंके गदरके बाद अब यहां फौज नहीं रक्खी जाती।

यहां चपड़े लाखके (Shellac) कारबारमें ८०००से अधिक लोग अपनी जीविका-निर्वाह करते हैं। यहां पीतल और पत्थरके बरतन, खिलौने, गलीचे, अनेक प्रकारके गल्ले, चीनी, कपड़े, धातु, फल, मसाले, तम्बाकू, नमक, रुई और घीका व्यवसाय जोरों चलता है। यहां इष्ट इंडिया रेलवेका एक स्टेशन है।

मिल् (जान स्टुअर्ट)—सुप्रसिद्ध अंगरेज दार्शनिक। इन्होंने लण्डननगरमें सन् १८०६ ई०में जन्म लिया था। इनके पिता जेम्स मिल् एक गरीब किसानके लड़के थे। किन्तु किसी धनवान् स्त्रीके साहाय्यसे एडिनवर्गके विश्व विद्यालयमें उन्होंने शिक्षा पाई थी। इसके बाद वे ग्रन्थ रचनाके काममें लगे। उन्होंने पहले अनेक शास्त्रोंका अध्ययन कर पाण्डित्य लाभ किया था। उनके बनाये हुए बहुतसे उपादेय ग्रन्थ विद्यमान हैं जिनमें भारतवर्षका इतिहास ग्रन्थ अतीव प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ में उन्होंने भारतियोंके साथ आन्तरिक सहृदयता और समवेदनाका परिचय दिया है। वे स्वाधीनचेता तथा स्पष्टवादी थे। साधारणके मनोरञ्जन करनेके लिये अपने मतका परिवर्त्तन नहीं करते थे।

उनकी ये सारी गुणावली और प्रकृति पुत्रमें अधिक आ गई थी। जान स्टुअर्ट मिल् उनके ज्येष्ठ पुत्र हैं। जान स्टुअर्टके लिये उन्होंने जैसी शिक्षाकी सुव्यवस्था कर दी थी, वैसी सबके भाग्यमें नहीं होती। स्नेहमय परिजनवर्गकी शान्तिशीतल गोदमें बैठ कर जान विद्या-रूपी कल्पवृक्षका आनन्द लूटनेमें समर्थ हुए थे। घर ही उनका विद्यालय था। उच्च शिक्षा पानेके लिये उन्हें विश्वविद्यालयकी सीमाको पार करना नहीं पड़ा था।

छात्रजीवन।

जान स्टुअर्ट मिलके पिताने इनकी ३ वर्षकी अवस्थामें ही व्याकरणकी शिक्षा दी थी। एक वर्षमें ही इन्होंने यूनानी भाषामें अनुवाद करना आरम्भ कर दिया और शीघ्र ही 'ईशप' रचित कथामालाका अध्ययन किया। इस तरह विद्यामन्दिरकी प्राथमिक सीढ़ी पर चढ़ कर मिलने ८ वर्षमें हिरोदोतास, जेनोफन, सक्रेटिस, डायूजिनिस, आइसोक्रेटिस और प्लेटो आदि प्रसिद्ध ग्रन्थकारोंके विशाल ज्ञानभाण्डारमें प्रवेश किया था। जेम्स पुत्रको एक मिनटके लिये भी आंखसे अलग करते न थे। सोने, खाने, पढ़ने और टहलनेके समय सदा पुत्रके साथ रहते थे। मिल समवयस्क बालकोंके साथ एक बात भी करने नहीं पाते थे। इसलिये पिताको सदा पुत्रके शैशवावस्थासुलभ कौतुहलकी मीमांसा करनी पड़ती थी। पिता पुत्रको केवल पाठ अभ्यास करा कर ही चुप नहीं हो जाते थे, पुत्रकी प्रच्छन्न प्रतिभा उद्दीपित करनेके लिये पुस्तकके कठिन अंशोंको स्वयं समझ लेनेको कहते थे।

प्रातःकाल और संध्याको जेम्स पुत्रको साथमें ले कर टहलनेके लिये निकलते थे। वे कहानियों द्वारा सारगर्भित उपदेश देते थे। जान स्टुअर्ट सन्ध्या समय पिताके गणितशास्त्रका अध्ययन करते थे सही, किन्तु इस विषयमें उनका जरा भी अनुराग न था। टहलनेके समय भी पुत्रसे पढ़ा हुआ पाठ पूछते थे। इस तरह थोड़े ही दिनमें प्रेममय पिताके परमयत्नसे रावर्टसन ह्यम, गीवन, प्लुटर्क और वर्नेट आदिका इतिहास पढ़ गये। जेम्स टहलनेके समय मौखिक धर्मनीति, राजनीति मनोविज्ञान और सभ्यताका इतिहास-सम्बन्धीय जो कौतुहलोद्दीपक उपदेश देते थे, उनको दूसरे दिन टहलते समय ही पूछ लिया करते थे और पुत्रकी अध्ययनप्रवृत्ति बलवती बनानेके लिये मिलसे नाना शास्त्रोंके सारगर्भ प्रसङ्गकी अवतारणा करते थे। इसके अनुसार मिल घर लौट आनेके बाद पिताके मुखसे सुने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रंथोंको पढे विना नहीं रहते। जेम्स पुत्रको नाटक और उपान्यास पढ़ने नहीं देते थे। आमोदजनक पुस्तकोंमें केवल रविन्सन क्रुसोको पढ़ सकते थे।

आठ वर्षकी अवस्थामें मिल यूनानी व्याकरण, साहित्य और इतिहासमें विशेष व्युत्पत्ति लाभ कर होमरका इलियड़ पढ़ने लगे। इसी समयसे वे लैटिन भाषा भी सीखने लगे। सिवा इसके इन्हें अपने छोटे छोटे भाई बहनोंको भी लैटिनकी शिक्षा देनी पड़ती थी। इस से भी इनका विशेष उपकार होता था। दूसरेके समझाये जाने पर पढ़ाये हुए विषयकी स्वयं दृढ़ता हो जाती है। इसके कुछ दिन बाद पितासे युकलिडकी ज्यामिति तथा बीजगणित पढ़ने लगे। इस तरहसे २२ वर्षकी अवस्थामें अलौकिक प्रतिभासे मिल यूनानी, लेटिन भाषाके प्रायः सभी ग्रन्थोंका अध्ययन कर लिया। मानो स्वाभाविक संस्कारके बलसे प्राक्तन-विद्यायें भी उनकी आयत्त हुईं। मिलने अपने जीवन-चरितमें अपनी शिक्षाके विषयमें लिखा है,—"पाण्डित्य मण्डित पुत्रवत्सल पिताके विशेष यत्न और ध्यान देनेसे ही उन्होंने यह सफलता प्राप्त की थी।"

मिलको पृथ्वीके इतिहास पढ़नेमें बड़ा आनन्द आता था। यूनान और रोमके इतिहास सम्बन्धीय सभी ग्रन्थों-को उन्होंने पढ़ डाला था। इनमें मिरफोर्डका यूनान और फर्गुसनका रोम उनका प्रियपाठ था।

मिलने बाल्यावस्थामें ही रोमका इतिहास, पृथ्वीका इतिहास, इङ्गलैण्डका इतिहास, और रोमकी शासन-प्रणाली नामक इतिहासकी चार पुस्तकें बनाईं। इन सब पुस्तकोंमें उन्होंने प्रजातन्त्रका ही पक्ष समर्थन किया था।

पिताकी आज्ञासे मिल किशोर अवस्थामें ही कविताकी रचना करने लगे। किन्तु वे कवि न हो सके। जेम्सने पुत्रको कवि बनानेके लिये होमर, होरेस, वर्जिल, सेक्सपियर, मिल्टन, टामसन, पोप, स्पेनसार, स्काट, ड्राइडेन आदि कवियोंकी कविता पढ़ाई थी। किंतु चिन्तामणि प्राप्त करनेमें उत्सुक मिल गम्भीर चिन्ता-शीलताको छोड़ कर काव्यभावकी तन्मयता प्राप्त न कर सके। वे विज्ञान और रसायनशास्त्रके परीक्षित विषयों-का पाठ और उनकी परीक्षा करनेमें लग गये।

१२ वर्षकी अवस्थामें मिल बाल्यकालकी शिक्षा समाप्त कर चिन्ता राज्यका पथ खोजने लगे। वे इस समयसे ही तर्काशास्त्रकी आलोचनामें लग गये। अगो-नन् (Organon) द्वारा रचित तर्काशास्त्रको उन्होंने पहले पहल पढ़ा था। तर्कविद्याकी युक्तियां उनके चिन्ताप्रवण चित्तमें आनन्दकी वृष्टि करने लगीं। इसके बारेमें उन्होंने अपनी जीवनीमें लिखा है,—"तर्काशास्त्रकी तरह कोई भी शास्त्र बुद्धिको परिमार्जित कर नहीं सकता।

उन्होंने इसी समय प्रसिद्ध यूनानी वक्ता डिमस्-थिनिसकी "फिलिपिकस" नामकी वक्तृता पढ़ी और यूनान देशकी रीति-नीतिकी जानकारी प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने तासितास, जुविनल और कुइण्टिलिअन आदि विख्यात ग्रन्थकारोंकी पुस्तकोंको पढ़ा। फिर प्लेटोके जर्जियानने 'प्रोरोगोइस' और 'रिपबलिक' या साधारणतन्त्र नामके नये ग्रन्थोंको पढ़ने लगे। मिल स्वयं कह गये है, कि आत्मोत्कर्ष लाभ करने जा कर प्लेटोका ग्रन्थ न पढ़नेसे शिक्षाकी समाप्ति नहीं होती।

इसी समय सन् १८१८ ई०में उनके पिताने भारत-वर्षका इतिहास खतम कर डाला। यह पुस्तक भी मिलकी शिक्षाका प्रधान उपादान हुई थी। यह पुस्तक पढ़ कर वे हिन्दुओंकी प्राचीन सभ्यता और समाज-पद्धतिकी जानकारी प्राप्त कर हिन्दुओंके आन्तरिक हितैषी हो गये।

इसके कुछ दिनोंके बाद रिकार्डोंकी अर्थनीति और राजनीतिकी एक पुस्तक उन्होंने लिखी। जेम्सने पुत्र-की चिन्ताशक्ति उत्तरोत्तर मार्जित करनेके लिये मिलको इस पुस्तककी मोटी-मोटी बातोंकी मौखिक शिक्षा देना आरम्भ किया। पीछे पुत्रको रिकार्डोंकी पुस्तकके साथ आडाम स्मिथकी बनाई अर्थनीतिशास्त्रको मिला कर उत्कर्षापकर्षकी समालोचना करनेको कहते थे। जेम्स जैसे शिक्षागुरु पृथ्वीमें विरले ही आदमीको मिला होगा। फिर मिलकी तरह छात्र भी संसारमें विरला ही होगा। विधाताके विचित्रविधानसे पितापुत्र गुरु-शिष्यरूपसे ज्ञानराज्यके दुर्गमदुर्गमें बढ़ने लगे। इस तरह मिलने १४ वर्षकी अवस्थामें विद्याभ्यास समाप्त कर दी। इस समय वे अब पिताके छात्र नहीं रहे; स्वयं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(History of music)-में उनके संगीत उद्धृत हैं। वर्त्तमान ग्रन्थकार अंगरेजीमें उनका नाम *Milton* लिखते हैं। किन्तु उनके ईसाई-मत ग्रहणकी फिहरिस्तमें उनका नाम *Mylton* लिखा है।

मिल्टन पहले केम्ब्रिज नगरके युसूफ कालेजमें और बाद सेण्टपाल और खाइष्ट कालेजमें विद्याध्ययन करनेके लिये गये। यह १६२४ ई०की बात है। बाल्यावस्था उनका अङ्कशास्त्रमें विशेष आग्रह न रहनेके कारण मालूम होता है, कि उन्होंने केम्ब्रिज विद्यालयमें बेंतकी मार खाई थी। उन्हों ने लेटिनभाषामें कविता लिख कर साधारणकी श्रद्धा आकर्षण की थी। उनके बाल्यकालका इस कवित्व-प्रेमने भविष्यमें उनको उनके सहयोगियोंमें उच्च आसन दिया था।

शिक्षा समाप्त कर वे अपने पिताके वङ्किम शायर-वाले मकानमें आये। इसी समय उन्होंने अपने धर्म मतका परिवर्त्तन किया था। वहां पांच वर्ष रह कर उन्होंने लेटिन और यूनानी भाषाके प्रसिद्ध प्रसिद्ध काव्योंको पढ़ा। इसी काव्यामोदमें रह कर उन्होंने कल्पना प्रसूनसे Comus, L' Allegro, 11 Penseroso और Lycidas काव्यमालाको गूंथा था।

सन् १६३७ ई०में अपनी माताके मरनेके बाद उन्होंने फ्लोरेन्स, रोम, नेपल्स और मिनिसकी यात्रा की थी। इस समय तात्कालिक सुप्रसिद्ध पण्डित ग्रोसियस, गेलिलो और टासोके प्रतिपालक मनसोके साथ उनका परिचय हुआ। इसके बाद उन्होंने सिसली और यूनान-का परिभ्रमण किया। किन्तु इङ्गलैण्डका राजनैतिक-विप्लव धीरे धीरे बढ़ता देख सन् १६३९ ई०में वे स्वदेश लौट आये और राजनीतिक कार्यावलीका पर्यवेक्षण करनेमें दत्तचित्त हुए।

राजनीतिक कार्यमें लिप्त रह कर राजनीतिक आलोचना करनेके बाद उन्होंने सन् १६४१ ई०में Of Reformation, *Prelatical Episcopacy*, The Reason of Church Government urged against *Prelacy*, An Apology for Smectymnuns और विशप हालके मतके खण्डनमें कई ग्रन्थोंकी रचना की।

सन् १५७३ ई०में उन्होंने पहली बार विवाह किया। किन्तु उनकी पत्नी अप पिताके घर आना न चाहती थी इससे उन्होंने सन् १६४४ ई०में अपनी पत्नीके तिरस्कार-सूचक चार लेख प्रकाशित कराये। इस समय उनकी Tractate on *Education* और *Areopagitica* या मुद्रायन्त्रकी स्वतन्त्रता सम्बन्धीय वक्तृता प्रकाशित हुई।

राजनैतिक क्षेत्रमें भिड़ जानेके समयसे ही उनकी सांसारिक अवस्था असच्छल हो गई थी। इस दारुण कष्टके समय स्त्रीके साथ मिल कर भी वे सुखी न हो सके। इङ्गलैण्डके अधीश्वर चार्लसके हत्याकाण्डके बाद उन्होंने इङ्गलैण्डके इतिहास और राज्यकी शान्तिविधान विषयक एक छोटी-सी पुस्तिकाकी रचना की। इसके बाद मंत्री-सभा द्वारा लेटिन सेक्रेटरी नियुक्त हुए। इस समय उन्होंने राजनैतिक वितण्डावादको दूर करनेके लिये *Eikonoklastes* और Defensio *Populi* Anglicau नामक दो ग्रंथ लिखे।

लेटिन सेक्रेटरी पद पर नियुक्त होनेके बाद वे वेष्ट-मिनिष्टरमें आ कर रहने लगे।

अपनी पहली पत्नीके परलोक-गमनके बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया, किन्तु उनकी यह पत्नी भी एक वर्ष के भीतर ही सूतिकागारमें मर गई।

सन् १६६० ई०में पलिजवेथ मिनसूल नामक एक रमणीको उन्होंने अपनी तीसरी पत्नी बनाया। सन् १६६५ ई०में पाराडाइज लाष्ट (स्वर्गच्युति) नामक उनके विख्यात काव्यकी रचना समाप्त हुई। सामुएल-साइमनस् नामके एक पुस्तक-प्रकाशकने ५ पाउण्ड अर्थात् ७५) रुपये पर उनसे इसका सत्त्व (Copy Right) खरीदा। १३ सौ पुस्तकोंके बिक जानेके बाद उन्होंने लेखकको और भी ५ पाउण्ड देना स्वीकार किया था। उक्त ग्रंथका सन् १६७० ई०में दूसरा संस्करण १२ सर्गोंमें प्रकाशित हुआ। सन् १६७१ ई०में उनकी *Paradise Regained* और Samson Agonistes नामक और भी दो पुस्तकोंकी रचना हुई। इसके बाद उन्होंने अपने अन्तिम जीवन तक कितने ही ग्रंथोंकी रचना की थी। सन् १६७४ ई०की ८वीं नवम्बरको उनकी मृत्यु हुई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वे अलिवर क्रमवेलके सहयोगी और स्वाधीनताप्रयासी दल (Independants)-के थे।

मिल्टन विद्यालयकी पढ़ाई खतम कर जब ग्रीको-लेटिन (Greaco-Latin) भाषाके कविता-काननमें पहुंचे, तब कविकीर्त्ति लाभके लिये दुर्निवार अभिलाषने उनके हृदयमें चित्त-चाञ्चल्य पैदा कर दिया। उन्होंने इसके अनुसार युरोपके नाना देशोंमें परिभ्रमण कर निसर्गके निरूपम दृश्यको देखा और वे जातीय महाकाव्यका मसाला एकत्र करने लगे। यौवनके प्रारम्भसे उन्होंने मनुष्यका अधःपतन अवलम्बन कर एक अविनश्वर काव्य लिखनेका संकल्प किया। यौवन-सुलभ रचनावलीमें उन्होंने मुक्त कण्ठसे लिखा था, "मैं अध्यवसाय और परिश्रमसे इसमें ऐसी कविताकी रचना करूंगा, जिससे हमारे वंशज भूल न सकेंगे। (which the posterity will not let it die) बङ्गीय कवि माईकेलकी तरह कवियशः प्रार्थी मिल्टनने सोचा था, कि मेरे रचे हुए मधुचक्रसे लोग चिरसुधा पान करेंगे।

किस भाषामें यह काव्य रचा जायगा, इसका भी पहले उन्होंने विचार नहीं किया था। अन्तमें निश्चय किया, कि लेटिन भाषामें इस काव्यकी रचना करूंगा। इसके बाद उन्होंने स्वजाति वात्सल्यकी प्रेरणासे प्रेरित हो मातृभाषाके कण्ठमें अपनी अलङ्कारभूमिष्ठा गांभीर्य्य गुण भूषिता अपूर्व काव्यमालाको पहनाना चाहा। मालूम होता है, कि कुललक्ष्मीने उनसे स्वप्नमें कह दिया था, "वत्स! तुम्हारे घरमें रत्नोंकी राशि है—तुम्हारी मातृ भाषाके भाण्डारमें रत्नका अभाव नहीं। तुम उन्हीं रत्न से कीर्त्तिमयी काव्य मेखलाको मातृभाषाके कटि-देशमें अर्पण करो।"

मिल्टन साम्प्रदायिक मतके लिये उनका महाकाव्य नाना स्थानोंमें तीव्रभावसे समालोचित हुआ था। उनकी पैराडाइज लोष्ट नामक कवितामें राजद्रोहकी गन्ध पा कर राजकीय पुस्तक-परीक्षकने उसको छापनेकी आज्ञा देनेमें आनाकानी की थी। किन्तु अन्तमें यह काव्य छप ही गया।

मिल्टनके जीवनकी पर्य्यालोचना करने पर स्पष्ट दिखाई देता है, कि वे बाल्यकालसे महाकाव्य-रचनाके प्रयासमें आत्मोत्कर्ष लाभ कर रहे थे। चालीस वर्षके पहले उन्होंने अपनेको महाकाव्य लिखनेके अयोग्य कहा था।

लक्ष्मी सरस्वतीका सौतियाडाह सब देशोंमें प्रचलित है। इसीसे कविता देवीके प्रसिद्ध सेवक मिल्टन दरिद्र थे।

किन्तु विधाताके विचित्र नियमसे परस्पर विरोधिनी लक्ष्मी सरस्वतीकी संगति सदा ही एकाश्रय दुलभ है। अतएव विद्याभिलाषी धनवान् नहीं होते। इन्हीं सनातन नियमोंके अनुसार मिल्टनका दारिद्र्य विस्मयजनक नहीं। उन्हें पैराडाइजलोष्टके प्रथम संस्करणमें ५०) रुपये मिले थे।

मिल्टनके चित्तकी दृढ़ता और गम्भीरता सभीके चित्तको आकर्षण करती है। दारुण दरिद्रता और निर्य्यातनकी कठोर यन्त्रणाको सहते हुए दृष्टहीनतारूप दुर्दैवसे विडम्बित होने पर भी कवितारूपिणी उद्दाम लीलामयी कल्पनाने स्वच्छन्दविहारिणी विद्याधरीकी तरह मन्दारकुसुमालंकृत नन्दनकाननकी विचित्र शोभा, नरककी घोरयन्त्रणा और वीभत्स दृश्य दिखलाया था। अंगरेजी भाषामें मिल्टनका नाम सदा गौरवान्वित रहेगा।

मिल्टनने अपने सैमसन गोनिष्टिस (Samson Agonistis) नामक छोटेसे नाटकमें अपने अन्धजीवनके जिस करुण चित्रको अङ्कित किया है, वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। दाम्पत्य-जीवनमें मिल्टन सुखलाभ कर न सके, इसीलिये डेलाइलार चरित्रको उन्होंने दारुण कलङ्क कालिमासे लोप पोत दिया है। स्त्रीजातिके प्रति मिल्टनकी श्रद्धा बहुत कम थी। सैमसनकी विलापहानीमें अश्रु-संवरण किया नहीं जा सकता। यही मिल्टनका यथार्थ चित्र है। मिल्टनके हृदयकी वीरता देखनेके लिये (Satan) शैतानकी उक्तिका स्मरण करना होता है। स्वर्गके दासत्वकी अपेक्षा नरकका राजत्व सहस्र गुणा उत्तम है। मनुष्यका मनशिक्षा और दीक्षाके प्रभावसे दुग्धफेननिभशय्याके कोमलाभरण पर या जेलकी कण्टकाकीर्ण दुःखद शय्या पर सो कर समान भावसे रह सकता है। मिल्टनने इसी तरहका भाव अपनी कवितावलीमें भर दिया है। पैराडाइज लोष्टमें वीररस तथा देवासुर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संग्रामकी तरह नाना घटनाओंसे परिपूर्ण है। मिल्टन पिउरिटन (पवित्रभाव सम्बन्धीय) समितिके प्रतिनिधि थे। सङ्गीतशास्त्र भी मिल्टनको प्रिय न था। वे मूर्त्तियों-के बड़े विरोधी थे। उन्होंने यूनानी देवदेवियोंको नाना कुत्सितचित्रमें चित्रित किया था। किन्तु यूनानी साहित्यके रसलुब्ध अन्धकवि मिल्टनने हेलनाके अन्ध-कवि होमरकी तरह वाक्यारम्भमें वाग्देवीकी वन्दना की है काव्य-निर्माणके विषयमें उनके अनुग्रहकी प्रार्थना कर पूर्व-कवियोंका पथानुसरण किया है। मिल्टनके काव्यों-में जहां भारतवर्षका उल्लेख है, वहां मिल्टनने भारतके अतुल ऐश्वर्यका वर्णन किया है। पैराडाइज लोष्ट ग्रन्थमें नन्दन कानन एवं आदम और इभ-का वर्णन अतीव हृदयग्राही है।

मिल्लत (हिं० स्त्री०) १ घनिष्टता, मेल-जोल। २ मिलन-सार। ३ समूह, मण्डली, जत्था।

मिल्लत (अ० स्त्री०) सम्प्रदाय, मजहब।

मिल्ला (सं० स्त्री०) विजयराजकी माता।

"विजयस्याथ जननी मिल्लाख्या स्वामिनोऽर्ज्जितम्॥"

(राजतर० ८।१०७१)

मिशन (अं० पु०) १ वह व्यक्ति अथवा व्यक्तियोंका समूह जो किसी विशेष कार्य वा उद्देश्यसे कहीं भेजा जाय, विशिष्ट कार्यके लिये भेजे हुए आदमी। २ उद्देश्य मतलब। ३ राजनीतिक उद्देश्यसे भेजा हुआ दूत-मण्डल। ४ वह संस्था, विशेषतः ईसाइयोंकी संस्था जो संघटित-रूपसे धर्म-प्रचारका उद्योग करती है। ५ ऐसी संस्थाका केन्द्र या कार्यालय आदि।

मिशनरी (अं० पु०) १ वह ईसाई पादरी जो किसी मिशनका सदस्य होता है और अनेक स्थानोंमें ईसाई धर्मका प्रचार करनेके लिये जाता है। २ ईसाइयोंका कोई धर्म-पुरोहित, पादरी।

मिशमी—आसाम प्रदेशकी पूर्वी सीमामें अवस्थित एक पहाड़ी प्रदेश। यह तिब्बतके प्रान्तभाग तक विस्तृत है। यहांकी पर्वतमालाको मिशमीशैल और अधिवासीको मिशमी कहते हैं।

मिशमी—आसामकी मिशमी शैलवासी आदिम जाति-विशेष। इनका वास इरावती नदीकी नैमैलङ्ग शाखाके किनारे, दफाभूम पर्वत पर तिब्बतके पार्वतीय जङ्गलमें तथा दिहिङ्ग नदीतट तक विस्तृत स्थानोंमें देखा जाता है।

जातितत्त्वानुसन्धिसु कर्नल डालटनका अनुमान है, कि ये मिशमीगण पश्चिम-चीनकी यनानप्रदेशवासी असभ्य मियान्-त्जे जातिकी एक शाखा हैं। दोनों जातिके वर्ण और आकृतिमें बहुत कुछ सदृशता देखी जाती है।

ये लोग कदमें छोटे मजबूत और सुन्दर होते हैं। ये मोङ्गलीके जैसे साहसी और बलवीर्यशाली हैं। तल-वार, बर्छा और शिरस्त्राण इनका प्रधान युद्धास्त्र है।

ये लोग एक स्थानमें रह कर खेती नहीं करते। इच्छानुसार नोमादियोंकी तरह एक स्थानसे दूसरे स्थान जाया करते हैं। वाणिज्य व्यवसायकी ओर इनका विशेष ध्यान रहता है। तिब्बत आदि देशोंमें भी जा कर ये लोग वाणिज्य-व्यवसाय करते हैं।

जो सब मिशमी अङ्गरेजी सीमा पर जा कर बस गये हैं उनके साथ अंगरेजोंका विशेष सद्भाव है। ये लोग निरीह और शान्तिप्रिय होते हैं। अङ्गरेज-परिव्राजक जब मिशमी-पर्वत देखने आये, तब इन लोगोंके आचार-व्यवहार देख कर बड़े संतुष्ट हुए थे। १८२७ ई०में कप्तान विलकाक्स, १८३६ ई०में डा० ग्रिफिथस और १८४५ ई०में कर्नल इ, ए रोलट तथा १८८१ ई०में फरासी मिश-नरी मुसौंकुक कुछ खामती-सरदारोंके साथ तिब्बत-सीमा तक आये थे। पर दुःखका विषय है, कि शेषोक्त धर्मयाजकको लौटते समय कहसा नामक एक स्वाधीन मिशमी-सरदारने मार डाला। इस घटनासे उत्तेजित हो गवर्मेण्टने मिशमी-सरदारको दण्ड देनेके लिये एक दल सेना भेजी। १८८५ ई०में मिशकी-सरदार सपरिवार पकड़ा गया था।

पहले कहा जा चुका है, कि ये लोग नाना स्थानोंमें घूम कर पर्वतजात मेषादि, मृगनाभि आदि बेचते हैं। गो महिषादि पशुकी ये बड़े यत्नसे रक्षा करते हैं। ये लोग शिकार प्रिय और मांसभोजी हैं। पहले ये लोग बहुत अत्याचारी थे। निकटवर्त्ती ग्रामोंमें आ कर स्त्री और बालकको चुरा ले जाते थे। वर्त्तमान समयमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वे अलिवर क्रमवेलके सहयोगी और स्वाधीनताप्रयासी दल (Independants)-के थे।

मिल्टन विद्यालयकी पढ़ाई खतम कर जब ग्रीको-लेटिन (Greaco-Latin) भाषाके कविता-काननमें पहुंचे, तब कविकीर्त्ति लाभके लिये दुर्निवार अभिलाषने उनके हृदयमें चित्त-चाञ्चल्य पैदा कर दिया। उन्होंने इसके अनुसार युरोपके नाना देशोंमें परिभ्रमण कर निसर्गके निरूपम दृश्यको देखा और वे जातीय महाकाव्यका मसाला एकत्र करने लगे। यौवनके प्रारम्भसे उन्होंने मनुष्यका अधःपतन अवलम्बन कर एक अविनश्वर काव्य लिखनेका संकल्प किया। यौवन-सुलभ रचनावलीमें उन्होंने मुक्त कण्ठसे लिखा था, "मैं अध्यवसाय और परिश्रमसे इसमें ऐसी कविताकी रचना करूंगा, जिससे हमारे वंशज भूल न सकेंगे। (which the posterity will not let it die) वङ्गीय कवि माईकेलकी तरह कवियशः प्रार्थी मिल्टनने सोचा था, कि मेरे रचे हुए मधुचक्रसे लोग चिरसुधा पान करेंगे।

किस भाषामें यह काव्य रचा जायगा, इसका भी पहले उन्होंने विचार नहीं किया था। अन्तमें निश्चय किया, कि लेटिन भाषामें इस काव्यकी रचना करूंगा। इसके बाद उन्होंने स्वजाति वात्सल्यकी प्रेरणासे प्रेरित हो मातृभाषाके कण्ठमें अपनी अलङ्कारभूमिष्ठा गांभीर्य्य गुण भूषिता अपूर्व काव्यमालाको पहनाना चाहा। मालूम होता है, कि कुललक्ष्मीने उनसे स्वप्नमें कह दिया था, "वत्स! तुम्हारे घरमें रत्नोंकी राशि है—तुम्हारी मातृ भाषाके भाण्डारमें रत्नका अभाव नहीं। तुम उन्हीं रत्न से कीर्त्तिमयी काव्य मेखलाको मातृभाषाके कटि-देशमें अर्पण करो।"

मिल्टन साम्प्रदायिक मतके लिये उनका महाकाव्य नाना स्थानोंमें तीव्रभावसे समालोचित हुआ था। उनकी पैराडाइज लोष्ट नामक कवितामें राजद्रोहकी गन्ध पा कर राजकीय पुस्तक-परीक्षकने उसको छापनेकी आज्ञा देनेमें आनाकानी की थी। किन्तु अन्तमें यह काव्य छप ही गया।

मिल्टनके जीवनकी पर्य्यालोचना करने पर स्पष्ट दिखाई देता है, कि वे बाल्यकालसे महाकाव्य रचनाके प्रयासमें आत्मोत्कर्ष लाभ कर रहे थे। चालीस वर्षके पहले उन्होंने अपनेको महाकाव्य लिखनेके अयोग्य कहा था।

लक्ष्मी सरस्वतीका सौतियाडाह सब देशोंमें प्रचलित है। इसीसे कविता देवीके प्रसिद्ध सेवक मिल्टन दरिद्र थे।

किन्तु विधाताके विचित्र नियमसे परस्पर विरोधिनी लक्ष्मी सरस्वतीकी संगति सदा ही एकाश्रय दुलभ है। अतएव विद्याभिलाषी धनवान् नहीं होते। इन्हीं सनातन नियमोंके अनुसार मिल्टनका दारिद्र्य विस्मयजनक नहीं। उन्हें पैराडाइजलोष्टके प्रथम संस्करणमें ५०) रुपये मिले थे।

मिल्टनके चित्तकी दृढ़ता और गम्भीरता सभीके चित्तको आकर्षण करती है। दारुण दरिद्रता और निर्य्यातनकी कठोर यन्त्रणाको सहते हुए दृष्टहीनतारूप दुर्दैवसे विडम्बित होने पर भी कवितारूपिणी उद्दाम लीलामयी कल्पनाने स्वच्छन्दविहारिणी विद्याधरीकी तरह मन्दारकुसुमालंकृत नन्दनकाननकी विचित्र शोभा, नरककी घोरयन्त्रणा और वीभत्स दृश्य दिखलाया था। अंगरेजी भाषामें मिल्टनका नाम सदा गौरवान्वित रहेगा।

मिल्टनने अपने सैमसन गोनिष्टिस (Samson Agonistis) नामक छोटेसे नाटकमें अपने अन्धजीवनके जिस करुण चित्रको अङ्कित किया है, वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। दाम्पत्य-जीवनमें मिल्टन सुखलाभ कर न सके, इसीलिये डेलाइलार चरित्रको उन्होंने दारुण कलङ्क कालिमासे लोप पोत दिया है। स्त्रीजातिके प्रति मिल्टनकी श्रद्धा बहुत कम थी। सैमसनकी विलापहानीमें अश्रु-संवरण किया नहीं जा सकता। यही मिल्टनका यथार्थ चित्र है। मिल्टनके हृदयकी वीरता देखनेके लिये (Satan) शैतानकी उक्तिका स्मरण करना होता है। स्वर्गके दासत्वकी अपेक्षा नरकका राजत्व सहस्र गुणा उत्तम है। मनुष्यका मनशिक्षा और दीक्षाके प्रभावसे दुग्धफेननिभशय्याके कोमलाभरण पर या जेलकी कण्टकाकीर्ण दुःखद शय्या पर सो कर समान भावसे रह सकता है। मिल्टनने इसी तरहका भाव अपनी कवितावलीमें भर दिया है। पैराडाइज लोष्टमें वीररस तथा देवासुर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संग्रामकी तरह नाना घटनाओंसे परिपूर्ण है। मिल्टन पिउरिटन (पवित्रभाव सम्बन्धीय) समितिके प्रतिनिधि थे। सङ्गीतशास्त्र भी मिल्टनको प्रिय न था। वे मूर्त्तियों-के बड़े विरोधी थे। उन्होंने यूनानी देवदेवियोंको नाना कुत्सितचित्रमें चित्रित किया था। किन्तु यूनानी साहित्यके रसलुब्ध अन्धकवि मिल्टनने हेलनाके अन्ध-कवि होमरकी तरह वाक्यारम्भमें वाग्देवीकी वन्दना की है काव्य-निर्माणके विषयमें उनके अनुग्रहकी प्रार्थना कर पूर्व-कवियोंका पथानुसरण किया है। मिल्टनके काव्यों-में जहां भारतवर्षका उल्लेख है, वहां मिल्टनने भारतके अतुल ऐश्वर्यका वर्णन किया है। पैराडाइज लोष्ट ग्रन्थमें नन्दन कानन एवं आदम और इभ-का वर्णन अतीव हृदयग्राही है।

मिल्लत (हिं० स्त्री०) १ घनिष्टता, मेल-जोल। २ मिलन-सारी। ३ समूह, मण्डली, जत्था।

मिल्लत (अ० स्त्री०) सम्प्रदाय, मजहब।

मिल्ला (सं० स्त्री०) विजयराजकी माता।

"विजयस्याथ जननी मिल्लाख्या स्वामिनोऽर्ज्जितम् ॥"

(राजतर० ८।१०७१)

मिशन (अं० पु०) १ वह व्यक्ति अथवा व्यक्तियोंका समूह जो किसी विशेष कार्य वा उद्देश्यसे कहीं भेजा जाय, विशिष्ट कार्यके लिये भेजे हुए आदमी। २ उद्देश्य मतलब। ३ राजनीतिक उद्देश्यसे भेजा हुआ दूत-मण्डल। ४ वह संस्था, विशेषतः ईसाइयोंकी संस्था जो संघटित-रूपसे धर्म-प्रचारका उद्योग करती है। ५ ऐसी संस्थाका केन्द्र या कार्यालय आदि।

मिशनरी (अं० पु०) १ वह ईसाई पादरी जो किसी मिशनका सदस्य होता है और अनेक स्थानोंमें ईसाई धर्मका प्रचार करनेके लिये जाता है। २ ईसाइयोंका कोई धर्म-पुरोहित, पादरी।

मिशमी—आसाम प्रदेशकी पूर्वी सीमामें अवस्थित एक पहाड़ी प्रदेश। यह तिब्बतके प्रान्तभाग तक विस्तृत है। यहांकी पर्वतमालाको मिशमीशैल और अधिवासीको मिशमी कहते हैं।

मिशमी—आसामकी मिशमी शैलवासी आदिम जाति-विशेष। इनका वास इरावती नदीकी नैमलङ्ग शाखाके किनारे, दफाभूम पर्वत पर तिब्बतके पार्वतीय जङ्गलमें तथा दिहिङ्ग नदीतट तक विस्तृत स्थानोंमें देखा जाता है।

जातितत्त्वानुसन्धिसु कर्नल डालटनका अनुमान है, कि ये मिशमीगण पश्चिम-चीनकी यनानप्रदेशवासी असभ्य मियान्-त्जे जातिकी एक शाखा हैं। दोनों जातिके वर्ण और आकृतिमें बहुत कुछ सदृशता देखी जाती है।

ये लोग कदमें छोटे मजबूत और सुन्दर होते हैं। ये मोङ्गलीके जैसे साहसी और बलवीर्यशाली हैं। तल-वार, बर्छा और शिरस्त्राण इनका प्रधान युद्धास्त्र है।

ये लोग एक स्थानमें रह कर खेती नहीं करते। इच्छानुसार नोमादियोंकी तरह एक स्थानसे दूसरे स्थान जाया करते हैं। वाणिज्य व्यवसायकी ओर इनका विशेष ध्यान रहता है। तिब्बत आदि देशोंमें भी जा कर ये लोग वाणिज्य-व्यवसाय करते हैं।

जो सब मिशमी अङ्गरेजी सीमा पर जा कर बस गये हैं उनके साथ अंगरेजोंका विशेष सद्भाव है। ये लोग निरीह और शान्तिप्रिय होते हैं। अङ्गरेज-परिव्राजक जब मिशमी-पर्वत देखने आये; तब इन लोगोंके आचार-व्यवहार देख कर बड़े संतुष्ट हुए थे। १८२७ ई०में कप्तान विलकाक्स, १८३६ ई०में डा० ग्रिफिथस और १८४५ ई०में कर्नल इ, ए रोलट तथा १८८१ ई०में फरासी मिश-नरी मुसौंकक कुछ खामती-सरदारोंके साथ तिब्बत-सीमा तक आये थे। पर दुःखका विषय है, कि शेषोक्त धमयाजकको लौटते समय कहसा नामक एक स्वाधीन मिशमी-सरदारने मार डाला। इस घटनासे उत्तेजित हो गवर्मेण्टने मिशमी-सरदारको दण्ड देनेके लिये एक दल सेना भेजी। १८८५ ई०में मिशकी-सरदार सपरिवार पकड़ा गया था।

पहले कहा जा चुका है, कि ये लोग नाना स्थानोंमें घूम कर पर्वतजात मेषादि, मृगनाभि आदि बेचते हैं। गो महिषादि पशुकी ये बड़े यत्नसे रक्षा करते हैं। ये लोग शिकार प्रिय और मांसभोजी हैं। पहले ये लोग बहुत अत्याचारी थे। निकटवर्त्ती ग्रामोंमें आ कर स्त्री और बालकको चुरा ले जाते थे। वर्त्तमान समयमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वे अलिवर क्रमवेलके सहयोगी और स्वाधीनताप्रयासी दल (Independants)-के थे।

मिल्टन विद्यालयकी पढ़ाई खतम कर जब ग्रीको-लेटिन (Greaco-Latin) भाषाके कविता-काननमें पहुंचे, तब कविकीर्त्ति लाभके लिये दुर्निवार अभिलाषने उनके हृदयमें चित्त-चाञ्चल्य पैदा कर दिया। उन्होंने इसके अनुसार युरोपके नाना देशोंमें परिभ्रमण कर निसर्गके निरूपम दृश्यको देखा और वे जातीय महाकाव्यका मसाला एकत्र करने लगे। यौवनके प्रारम्भसे उन्होंने मनुष्यका अधःपतन अवलम्बन कर एक अविनश्वर काव्य लिखनेका संकल्प किया। यौवन-सुलभ रचनावलीमें उन्होंने मुक्त कण्ठसे लिखा था, "मैं अध्यवसाय और परिश्रमसे इसमें ऐसी कविताकी रचना करूंगा, जिससे हमारे वंशज भूल न सकेंगे। (which the posterity will not let it die) बङ्गीय कवि माईकेलकी तरह कवियशः प्रार्थी मिल्टनने सोचा था, कि मेरे रचे हुए मधुचक्रसे लोग चिरसुधा पान करेंगे।

किस भाषामें यह काव्य रचा जायगा, इसका भी पहले उन्होंने विचार नहीं किया था। अन्तमें निश्चय किया, कि लेटिन भाषामें इस काव्यकी रचना करूंगा। इसके बाद उन्होंने स्वजाति वात्सल्यकी प्रेरणासे प्रेरित हो मातृभाषाके कण्ठमें अपनी अलङ्कारभूमिष्ठा गांभीर्य्य गुण भूषिता अपूर्व काव्यमालाको पहनाना चाहा। मालूम होता है, कि कुललक्ष्मीने उनसे स्वप्नमें कह दिया था, "वत्स! तुम्हारे घरमें रत्नोंकी राशि है—तुम्हारी मातृ भाषाके भाण्डारमें रत्नका अभाव नहीं। तुम उन्हीं रत्न से कीर्त्तिमयी काव्य मेखलाको मातृभाषाके कटि-देशमें अर्पण करो।"

मिल्टन साम्प्रदायिक मतके लिये उनका महाकाव्य नाना स्थानोंमें तीव्रभावसे समालोचित हुआ था। उनकी पैराडाइज लोष्ट नामक कवितामें राजद्रोहकी गन्ध पा कर राजकीय पुस्तक-परीक्षकने उसको छापनेकी आज्ञा देनेमें आनाकानी की थी। किन्तु अन्तमें यह काव्य छप ही गया।

मिल्टनके जीवनकी पर्य्यालोचना करने पर स्पष्ट दिखाई देता है, कि वे बाल्यकालसे महाकाव्य-रचनाके प्रयासमें आत्मोत्कर्ष लाभ कर रहे थे। चालीस वर्षके पहले उन्होंने अपनेको महाकाव्य लिखनेके अयोग्य कहा था।

लक्ष्मी सरस्वतीका सौतियाडाह सब देशोंमें प्रचलित है। इसीसे कविता देवीके प्रसिद्ध सेवक मिल्टन दरिद्र थे।

किन्तु विधाताके विचित्र नियमसे परस्पर विरोधिनी लक्ष्मी सरस्वतीकी संगति सदा ही एकाश्रय दुलभ है। अतएव विद्याभिलाषी धनवान् नहीं होते। इन्हीं सनातन नियमोंके अनुसार मिल्टनका दारिद्र्य विस्मयजनक नहीं। उन्हें पैराडाइजलोष्टके प्रथम संस्करणमें ५०) रुपये मिले थे।

मिल्टनके चित्तकी दृढ़ता और गम्भीरता सभीके चित्तको आकर्षण करती है। दारुण दरिद्रता और निर्य्यातनकी कठोर यन्त्रणाको सहते हुए दृष्टहीनतारूप दुर्दैवसे विडम्बित होने पर भी कवितारूपिणी उद्दाम लीलामयी कल्पनाने स्वच्छन्दविहारिणी विद्याधरीकी तरह मन्दारकुसुमालंकृत नन्दनकाननकी विचित्र शोभा, नरककी घोरयन्त्रणा और वीभत्स दृश्य दिखलाया था। अंगरेजी भाषामें मिल्टनका नाम सदा गौरवान्वित रहेगा।

मिल्टनने अपने सैमसन गोनिष्टिस (Samson Agonistis) नामक छोटेसे नाटकमें अपने अन्धजीवनके जिस करुण चित्रको अङ्कित किया है, वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। दाम्पत्य-जीवनमें मिल्टन सुखलाभ कर न सके, इसीलिये डेलाइलार चरित्रको उन्होंने दारुण कलङ्क कालिमासे लीप पोत दिया है। स्त्रीजातिके प्रति मिल्टनकी श्रद्धा बहुत कम थी। सैमसनकी विलापहानीमें अश्रु-संवरण किया नहीं जा सकता। यही मिल्टनका यथार्थ चित्र है। मिल्टनके हृदयकी वीरता देखनेके लिये (Satan) शैतानकी उक्तिका स्मरण करना होता है। स्वर्गके दासत्वकी अपेक्षा नरकका राजत्व सहस्र गुणा उत्तम है। मनुष्यका मनशिक्षा और दीक्षाके प्रभावसे दुग्धफेननिभशय्याके कोमलाभरण पर या जेलकी कण्टकाकीर्ण दुःखद शय्या पर सो कर समान भावसे रह सकता है। मिल्टनने इसी तरहका भाव अपनी कवितावलीमें भर दिया है। पैराडाइज लोष्टमें वीररस तथा देवासुर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संग्रामकी तरह नाना घटनाओंसे परिपूर्ण है। मिल्टन पिउरिटन (पवित्रभाव सम्बन्धीय) समितिके प्रतिनिधि थे। सङ्गीतशास्त्र भी मिल्टनको प्रिय न था। वे मूर्त्तियों-के बड़े विरोधी थे। उन्होंने यूनानी देवदेवियोंको नाना कुत्सितचित्रमें चित्रित किया था। किन्तु यूनानी साहित्यके रसलुब्ध अन्धकवि मिल्टनने हेलनाके अन्ध-कवि होमरकी तरह वाक्यारम्भमें वाग्देवीकी वन्दना की है काव्य-निर्माणके विषयमें उनके अनुग्रहकी प्रार्थना कर पूर्व-कवियोंका पथानुसरण किया है। मिल्टनके काव्यों-में जहां भारतवर्षका उल्लेख है, वहां मिल्टनने भारतके अतुल ऐश्वर्यका वर्णन किया है। पैराडाइज लोष्ट ग्रन्थमें नन्दन कानन एवं आदम और इभ-का वर्णन अतीव हृदयग्राही है।

मिल्लत (हिं० स्त्री०) १ घनिष्टता, मेल-जोल। २ मिलन-सारी। ३ समूह, मण्डली, जत्था।

मिल्लत (अ० स्त्री०) सम्प्रदाय, मजहब।

मिल्ला (सं० स्त्री०) विजयराजकी माता।

"विजयस्याथ जननी मिल्लाख्या स्वामिनोऽर्जितम् ॥"

(राजतर० ८।१०७१)

मिशन (अं० पु०) १ वह व्यक्ति अथवा व्यक्तियोंका समूह जो किसी विशेष कार्य वा उद्देश्यसे कहीं भेजा जाय, विशिष्ट कार्यके लिये भेजे हुए आदमी। २ उद्देश्य मतलब। ३ राजनीतिक उद्देश्यसे भेजा हुआ दूत-मण्डल। ४ वह संस्था, विशेषतः ईसाइयोंकी संस्था जो संघटित-रूपसे धर्म-प्रचारका उद्योग करती है। ५ ऐसी संस्थाका केन्द्र या कार्यालय आदि।

मिशनरी (अं० पु०) १ वह ईसाई पादरी जो किसी मिशनका सदस्य होता है और अनेक स्थानोंमें ईसाई धर्मका प्रचार करनेके लिये जाता है। २ ईसाइयोंका कोई धर्म-पुरोहित, पादरी।

मिशमी—आसाम प्रदेशकी पूर्वी सीमामें अवस्थित एक पहाड़ी प्रदेश। यह तिब्बतके प्रान्तभाग तक विस्तृत है। यहांकी पर्वतमालाको मिशमीशैल और अधिवासीको मिशमी कहते हैं।

मिशमी—आसामकी मिशमी शैलवासी आदिम जाति-विशेष। इनका वास इरावती नदीकी नमेलङ्ग शाखाके किनारे, दफाभूम पर्वत पर तिब्बतके पार्वतीय जङ्गलमें तथा दिहिङ्ग नदीतट तक विस्तृत स्थानोंमें देखा जाता है।

जातितत्त्वानुसन्धिसु कर्नल डालटनका अनुमान है, कि ये मिशमीगण पश्चिम-चीनकी यनानप्रदेशवासी असभ्य मियान्-त्जे जातिकी एक शाखा हैं। दोनों जातिके वर्ण और आकृतिमें बहुत कुछ सदृशता देखी जाती है।

ये लोग कदमें छोटे मजबूत और सुन्दर होते हैं। ये मोङ्गलीके जैसे साहसी और बलवीर्यशाली हैं। तल-वार, बर्छा और शिरस्त्राण इनका प्रधान युद्धास्त्र है।

ये लोग एक स्थानमें रह कर खेती नहीं करते। इच्छानुसार नोमादियोंकी तरह एक स्थानसे दूसरे स्थान जाया करते हैं। वाणिज्य व्यवसायकी ओर इनका विशेष ध्यान रहता है। तिब्बत आदि देशोंमें भी जा कर ये लोग वाणिज्य-व्यवसाय करते हैं।

जो सब मिशमी अङ्गरेजी सीमा पर जा कर बस गये हैं उनके साथ अंगरेजोंका विशेष सद्भाव है। ये लोग निरीह और शान्तिप्रिय होते हैं। अङ्गरेज-परिव्राजक जब मिशमी-पर्वत देखने आये; तब इन लोगोंके आचार-व्यवहार देख कर बड़े संतुष्ट हुए थे। १८२७ ई०में कप्तान विलकाक्स, १८३६ ई०में डा० ग्रिफिथस और १८४५ ई०में कर्नल इ, ए रोलट तथा १८८१ ई०में फरासी मिश-नरी मुसौंकक कुछ खामती-सरदारोंके साथ तिब्बत-सीमा तक आये थे। पर दुःखका विषय है, कि शेषोक्त धर्मयाजकको लौटते समय कहसा नामक एक स्वाधीन मिशमी-सरदारने मार डाला। इस घटनासे उत्तेजित हो गवर्मेण्टने मिशमी-सरदारको दण्ड देनेके लिये एक दल सेना भेजी। १८८५ ई०में मिशकी-सरदार सपरिवार पकड़ा गया था।

पहले कहा जा चुका है, कि ये लोग नाना स्थानोंमें घूम कर पर्वतजात मेषादि, मृगनाभि आदि बेचते हैं। गो महिषादि पशुकी ये बड़े यत्नसे रक्षा करते हैं। ये लोग शिकार प्रिय और मांसभोजी हैं। पहले ये लोग बहुत अत्याचारी थे। निकटवर्त्ती ग्रामोंमें आ कर स्त्री और बालककी चुरा ले जाते थे। वर्त्तमान समयमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्गरेज-राज और अरब-जातिके भयसे इन्होंने शान्त-स्वभाव धारण कर लिया है।

मिशि (सं० स्त्री०) १ मधुरिका, सौंफ। २ शतपुष्पा, सोयाँ। ३ मेथिका, मेथी। ४ कासभेद, दाभ। ५ जटामांसी, बालछड़।

मिशी (सं० स्त्री०) मिशि-कृदिकारादिति पक्षे ङीष्। १ जटामांसी। २ मधुरिका, सौंफ।

मिश्र (सं० पु०) मिश्र-बाहुलकात् रक्। १ चाणक्य मूलक, मूली। २ हाथियोंकी चार जातियोंमेंसे एक जाति।

भद्रो मन्दो मृगो मिश्रश्चतस्रो गजजातयः।" (हेम)

३ सन्निपात। ४ रक्त, लेहू। ५ ज्योतिषके अनुसार उग्र आदि सात प्रकारके गणोंमेंसे अन्तिम या सातवां गण। यह वृत्तिका और विशाखा नक्षत्रके योगसे होता है। (त्रि०) ६ मिश्रित मिला या मिलाया हुआ। ७ श्रेष्ठ, बड़ा। ८ जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकारकी रकमोंकी संख्या हो। जैसे;—मिश्र भाग, मिश्र गुण।

मिश्र—युक्तप्रदेशके गोरखपुर, आजिमगढ़ और वाराणसी-वासी कृषिजीवी जातिविशेष। इस जातिके लोग अपने को भुंइहार तथा ब्राह्मणवंशके बतलाते हैं। ठाकुर, मिश्र और तिवारी इनकी वंशोपाधि है।

सर्य्यूपारीण, कान्य-कुब्ज, सारस्वत और मैथिल आदि ब्राह्मणोंमें भी 'मिश्र' की उपाधि देखी जाती है। शाण्डिल्य, कात्यायन और विश्वामित्र आदि इनके गोत्र हैं। इन लोगोंकी 'मिश्र' उपाधि देख कर जातितत्त्ववेत्ता अनुमान करते हैं, कि ये लोग शायद 'मिस्र' देशसे इस देशमें आये होंगे।

मिश्र—कुछ ग्रन्थकारोंके नाम। जैसे—१ कुसुमाञ्जलि-टीका और शब्दालोकप्रणेता। २ पाणिनीयोणादि-सूत्रोद्धाटनके रचयिता। ३ छटा नामक मुग्धबोध टीकाके प्रणेता। ४ कात्यायन श्रौतसूत्र भाष्य-कर्त्ता। अग्निहोत्रिन् इनकी उपाधि थी।

मिश्रक (सं० क्ली०) मिश्र कन्। १ औषर लवण, खारी नमक। २ यशद, जस्ता। ३ मूलक, मूली। ४ वङ्गभेद, वैद्यकके अनुसार एक प्रकारका रांगा जिसे खुरा रांगा भी कहते हैं।

"खुरकं मिश्रकं चेति द्विविधं वङ्गमुच्यते।" (भाव प्र०)

५ देवोद्यान, देवताओंका उद्यान। ६ तीर्थभेद, एक तीर्थका नाम।

"ततो गच्छेत धर्मज्ञ! मिश्रकं लोकविश्रुतं।"
तत्र तीर्थानि राजेन्द्र! मिश्रितानि महात्मना॥
(महाभारत ३।८३।८८)

(त्रि०) ७ मिश्रणकर्त्ता, मिलानेवाला।

मिश्रकस्नेह (सं० पु०) गुल्मादि रोगोंमें प्रयोज्य औषध-भेद। प्रस्तुत प्रणाली—निसोथ, त्रिफला, दन्तिमूल और दशमूल प्रत्येक १ पल, जल १६ सेर, शेष ४ सेर, घी २ सेर, रेंड़ीका तेल २ सेर, दूध ४ सेर। इन सब वस्तुओंसे यथाविधान उक्त औषध तैयार कर गुल्मादि रोगोंमें उसका प्रयोग करनेसे बहुत लाभ पहुंचता है।

"त्रिवृतां त्रिफलां दन्तीं दशमूलंपलोन्मितम्।
जले चतुर्गुणे पक्त्वा चतुर्भागस्थितं रसम्॥
सर्पिरेरण्डजं तैलं क्षीरञ्चैकत्र साधयेत्।
स सिद्धो मिश्रकस्नेहः स क्षौद्रः कफगुल्मनुत्॥
कफवातविबन्धेषु कण्ठप्लीहोदरेषु च।
प्रयोज्या मिश्रकस्नेहः योनिशूलेषु चाधिकारं॥"
(चरक त्रि० ५ अ०)

मिश्रकावण (सं० क्ली०) मिश्रकाना वनं, अकारस्याकार (वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकिंशुलकादीनां। पा ६।३।११७ ततो णत्वं (वनं पुरगामिमिश्रकासिध्रकशारिकाकोटराग्रेभ्यः। पा ८।४।४) इन्द्रका उद्यान, नन्दनवन। मिश्र देखो

मिश्रकेशव (सं० पु०) एक प्राचीन कवि।

मिश्रकेशी (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम। यह मेनकाकी सखी थी।

मिश्रचतुर्भुज (सं० पु०) एक ग्रन्थकारका नाम।

मिश्रज (सं० पु०) मिश्रात् भिन्नजातीययोः सम्मेलनत् जात इति जन-ड। १ वह जो दो भिन्न जातियोंके मिश्रणसे उत्पन्न हुआ हो। २ खच्चर।

मिश्रजाति (सं० त्रि०) जो दो भिन्न जातियोंके मिश्रणसे उत्पन्न हुआ हो, वर्णसङ्कर, दोगला।

मिश्रण (सं० क्ली०) मिश्र ल्युट्। १ संयोजन, जोड़ना। २ एकत्रीकरण, दो या दो से अधिक पदार्थोंको एकमें मिलानेकी क्रिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिश्रणीय (सं० त्रि०) मिश्रणयोग्य, मिलाने लायक।

मिश्रता (सं० स्त्री०) मिश्रका भाव, मिलने या मिलानेका भाव।

मिश्रदिनकर—शिशुपालवधके टीकाकार।

मिश्रधान्य (सं० क्ली०) मिश्रित धान्य, एकमें मिलाये हुए कई प्रकारके धान।

मिश्रपुष्पा (सं० स्त्री०) मिश्राणि परस्पर संश्लिष्टानि पुष्पाणि यस्याः। मेथिका, मेथी।

मिश्रवन (सं० पु०) वार्त्ताकी, भंटा।

मिश्रवनफला (सं० स्त्री०) वार्त्ताकी, भंटा।

मिश्रवर्ण (सं० क्ली०) मिश्रः मिलितः वर्णोऽस्य। १ कृष्णा-गुरु, काला अगरु। २ गन्ना, पौंढा। (त्रि०) ३ नानावर्ण समन्वित, भिन्न भिन्न रंगका।

मिश्रवर्णफल (सं० क्ली०) मिश्रवर्णं फलमस्याः। वार्त्ताकी, भंटा, बैंगन।

मिश्रव्यवहार (सं० पु०) लीलावत्युक्त गणनाविशेष, गणितकी एक क्रिया।

मिश्रशब्द (सं० पु०) मिश्रः मिलितः अश्वरासभचोरिवशब्दो यस्य। खच्चर।

मिश्रित (सं० त्रि०) मिश्रः श्रेष्ठत्वमस्य संजातमिति मिश्र-इतच् अथवा मिश्र-क्त। १ युक्त, एकमें मिला हुआ। २ गौरवित। ३ सम्मिलित।

मिश्रिता (सं० स्त्री०) मिश्रित टाप्। मन्दा आदि सात प्रकारकी संक्रान्तियोंमेंसे एक प्रकारकी संक्रान्ति, वह सूर्य-संक्रमण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्रके समय हो।

"मन्दा ध्रुवेषु विज्ञेया मृदौ मन्दाकिनी तथा।
क्षिप्रे ध्वाङ्क्षी विजानीयादुग्रे घोरा प्रकीर्त्तिताः॥
चरैर्महोदरी ज्ञेया क्रूरैर्भृदैस्तु संक्रमे॥" (तिथितत्त्व)

मिश्रिन् (सं० त्रि०) १ मिश्रकारी, मिलानेवाला। (पु०) २ नागभेद एक नागका नाम।

मिश्री (हिं० स्त्री०) मिसरी देखो।

मिश्रीकरण (सं० क्ली०) एकत्रकरण, मिलानेकी क्रिया।

मिश्रीतुत्थ (सं० क्ली०) खर्पर, खपरिया।

मिश्रीभाव (सं० पु०) विमिश्रावस्था, मिलानेकी क्रिया या भाव।

मिश्रीभूत (सं० त्रि०) अमिश्रो मिश्रः सम्पन्न इति मिश्र-अभूतद्भावे च्विः। एकत्रीभूत, एकमें मिला हुआ।

"मिश्रीभूता विरेजुस्ते नभश्चरमहीचराः॥"

(योगवाशिष्ठ वैराग्य०)

मिश्रेया (सं० स्त्री०) १ मधुरिका, सौंफ। २ शाकविशेष, एक प्रकारका साग। ३ शतपुष्पा, तालपर्ण। पर्याय—तालपर्णी, मिषि, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वनजा, अवाकपुष्पी, मधुरिका, छत्रा, संहित-पुष्पिका, सुपुष्पा, सुरसा, वल्या। गुण—मधुर, स्निग्ध, कटु, प्रबलकफहर, वातपित्तोत्थ दोष और प्लीहादिनाशक।

मिश्रोदन (सं० क्ली०) खेचरिका, खिचड़ी।

मिष (सं० क्ली०) १ छल, कपट। २ बहना, हांला। २ ईर्षा, डाह। ३ स्पर्द्धा, होड़। ४ दर्शन। ५ सेचन, सींचना।

मिषि (सं० स्त्री०) १ जटामांसी। २ मधुरिका, सौंफ। ३ अजमोदा। ४ उशीर, खस।

मिषिका (सं० स्त्री०) मिषि-कन् टाप्। १ जटामांसी, बालछड़। २ मधुरिका, सौंफ। ३ शताह्वा, सोया।

मिष्ट (सं० क्ली०) १ मधुररस, मीठा रस। (त्रि०) २ मीठा, मधुर। ३ सेका, भूना या पकाया हुआ।

मिष्टकर्त्तृ (सं० त्रि०) जो उत्तम रसोई बनाता हो।

मिष्टजिम्बु (सं० पु०) निम्बवृक्ष, मीठा नीम।

मिष्टनिम्ब (सं० पु०) मीठा नीबू, जमीरा नीबू। गुण—स्वादिष्ट, गुरु, वायुपित्तहर, विषरोग और विषनाशक, कफघ्न, रक्तकर, कोष, अरुचि, तृष्णा और छर्दिनाशक तथा बलकर और बृंहण। (भावप्र०)

मिष्टपाक (सं० पु०) मिष्टेन पाको यस्य। १ मिष्टान्न, मुरब्बा। मुरब्बा अनेक प्रकारसे बनाया जाता है। इन में एक प्रकार यों है—कच्चे आमको दो दो खण्ड कर उनमें छेद करे। पीछे उन्हें चूनेके जलमें चार दण्ड (१॥ घंटा) तक रख छोड़े। अनन्तर उन्हें जलसे धो कर धीमी आंचमें सिद्ध करे। जब सिद्ध हो जाय तब उन निर्जल आमके टुकड़ोंको चीनीकी चाशनीमें डुबो कर आंच पर चढ़ावे। आध दण्ड तक इस प्रकार आंच पर चढ़ाये रखनेसे जब रस गाढ़ा होने लगेगा तब जानना चाहिये कि मुरब्बा ठीक पर आ गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिष्टपाचक (सं० त्रि०) सुमिष्टरूपसे रन्धनकारी, जो बहुत अच्छा भोजन बनाता हो।

मिष्टपाट (सं० पु०) वृक्षभेद।

मिष्टभाषी (सं० त्रि०) सुमधुर कथनशील, मधुरभाषी जो मीठा बोलता हो।

मिष्टरस (सं० क्ली०) मीठा रस।

मिष्टान्न (सं० पु०) मिष्टमन्नं। मधुरद्रव्य, मिठाई।

मिस (हिं० पु० १ बहाना, होला। २ पाषण्ड, नकल। (फा०) ३ ताम्र, ताँबा।

मिस (अं० स्त्री०) कुमारी, कुँआरी लड़की।

मिसकीन (अ० वि०) १ जिसमें कुछ भी सामर्थ्य या बल न हो, बेचारा। २ निर्धन, गरीब। ३ सीधा सादा।

मिसकीनता (अ० स्त्री०) दीनता, गरीबी।

मिसकीनी (अ० स्त्री०) मिसकीन होनेका भाव, दीन या दरिद्र होनेका भाव।

मिसन (हिं० स्त्री०) बालू मिली हुई मिट्टीकी जमीन, ऐसी भूमि जिसकी मिट्टीमें बालू भी मिला हुआ हो।

मिसनरी (मिशनरी)—धर्मप्रचारके उद्देशसे प्रचारक याजक यानी पादरीका भिन्न भिन्न देशमें जाना। पूर्व समयमें ये सब प्रचारकगण देश देशमें घूमते और जनताके मध्य अपना अपना धर्म-मत प्रकट कर उन्हें अपने मतमें लानेकी कोशिश करते थे। संस्कृत-ग्रन्थमें मिशनरी 'परिव्राजक' शब्दमें लिखा है।

ईसा जन्मसे बहुत पहले शाक्य-बुद्धके तिरोधानके बादसे ही हम लोग भारतीय बौद्धोंके बीच धर्मप्रचार-वासनाका उदय होते देखते हैं। उस समय बौद्धसम्प्रदायने बौद्धधर्म फैलानेकी आशासे चीन, तिब्बत, सिंहल, ब्रह्म, श्याम, कोचीन, चीन, यव और जापान देशमें परिव्राजकोंको भेजा था। अलावा इसके चेरि, पार्थिया, बक्त्रिया, खोतन, काबुल (गान्धार), बुखारा आदि देशोंमें भी बहुत परिव्राजक भेजे गये थे। सम्राट् अशोकके शासनकालमें भारतवर्षमें तमाम बौद्धधर्मका प्रचार था। चीनसम्राट् मिन-तीने ६५ ई०में बौद्ध-परिव्राजक काश्यपको अपने राज्यमें बुलाया था। बुद्धभद्रने भी चीनदेशमें रह कर सभी धर्मग्रन्थोंका मर्मानुवाद कर डाला था। चीन-परिव्राजक फा-हियन और यूएन-चुवंग धर्मग्रन्थ संग्रहके लिये जो भारतवर्ष आये थे, वह उसीका फल था। बौद्ध शब्द देखो।

बौद्धप्रधानताकी हतश्री होनेके बाद शङ्कराचार्य, कुमारिलभट्ट, माधवाचार्य, कबीर, नामदेव, रामदास, दादु, कृष्ण और तुकाराम आदिके यत्नसे हिन्दूधर्ममें शैव, वैष्णव आदि धर्मसंप्रदायका विस्तार हुआ था। १९वीं सदीमें राममोहनराय, केशवचन्द्रसेन आदिके यत्नसे ब्राह्मधर्मका प्रचार हुआ। ईसाई धर्म और इसलाम धर्मका ईसाई-मिशनरी और मुसलमानोंने प्रचार किया था।

खीष्टान, मुसलमान और ब्राह्म शब्द देखो।

मिसर (सं० क्ली०) देशभेद, इजिप्त। मिस्र देखो।

मिसरा (अ० पु०) कविता, विशेषतः उर्दू या फारसी आदिकी कविताका एक चरण, पद।

मिसरा तरह (अ० पु०) वह दिया हुआ मिसरा जिसके आधार पर उसी तरहकी गजल कही जाती है, पूर्त्तिकी लिये दी हुई समस्या।

मिसरी (हिं० स्त्री०) १ मिस्रदेशका निवासी। २ मिस्र देशकी भाषा। ३ दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी जो प्रायः कुजे या कतरेके रूपमें बाजारोंमें बिकती है।

पहले हम लोगोंके देशमें दानेदार मिसरी तैयार होती थी या नहीं, कह नहीं सकते। पर हां, मिसरीके रूपान्तरमें दोबारा और खांड़ (Loaf-Sugar) जरूर तैयार होती थी। सच पूछिये तो हम लोग अपने देशमें खांड़का ही बहुत दिनोंसे प्रचार देखने आ रहे हैं। बहुत प्राचीनकालमें इजिप्त वा मिस्रदेशमें एक प्रकारकी सफेद दानेदार शक्कर बनती थी। जब मिस्रके साथ भारतवर्ष और अरबका वाणिज्य व्यापार चलता था उस समय मिस्रदेशकी दानेदार चीनी अरबी अथवा भारतीय प्राचीन वणिक्-सम्प्रदायसे भारतवर्षमें लाई गई थी। मालूम होता है, कि जबसे मिस्रदेशकी चीनी इस देशमें आने लगी, तबसे भारतीय खांड़के कारबारमें भारी धक्का पहुंचा और वह एक तरह उठ-सा गया। तभीसे हम लोग अपने देशकी बनी हुई पुरानी खांड़का स्वाद और नाम भूल कर मिसरीके ही पक्षपाती हो गये हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतके भिन्न भिन्न स्थानमें इसका भिन्न भिन्न नाम है। जैसे,—बङ्गालमें—मिश्री, मिछरी; पञ्जाबमें—चीनी वा भूरा, मिश्री; तामिल—कर्कण्डु; तेलगू—मलकण्ड; कनाड़ी—कलकण्ड; मलयालम—कुलकण्टू; सिंहली—शकरी; संस्कृत—खण्ड, सितोपला, शर्करा, मत्स्याण्डी; अरबी—नबात, खन्द; पारसी—काण्डे-सफिद; कन्दे—सुपेद; अङ्गरेजीमें—Sugar Candy।

मिसरी बनानेका तरीका—ईखके रससे गुड़ और गुड़से चीनी बनती है। अपरिष्कृत चीनीको जलमें डाल कर आंच पर चढ़ावे। जब जल फूटने लगे तब उसमें थोड़ा दूध डाल कर उसके कुल मैलको बाहर निकाल ले। मैल बिलकुल निकल जाने पर चीनीका रस परिष्कार और सफेद हो जायगा। अनन्तर उस गाढ़े रस ( )को मट्टीके कूजे या कतरेमें डाल कर ठंढी जगहमें छोड़ दे। कुछ समय बाद ठंढ लगनेसे वह रस जम जाता और उसमें दाना पड़ जाता है तथा बर्फकी तरह बरतनके जैसा उसका आकार हो जाता है। यही मिसरी कूजे या कतरेके रूपमें बाजारोंमें बिकती है।

वर्त्तमान समयमें विज्ञानविद् युरोपीय सौदागरोंने चीनीके कारबारमें लाभ देख कर भारतमें ईखकी खेतीकी ओर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने भारतवासियोंके मट्टीके कड़ाहके बदलेमें विभिन्न प्रकारके लोहेके कड़ाहोंकी सृष्टि की है। इनमें (क) Pans heated by fire, (ख) Pans heated by steam, (ग) Film evaporation, (घ) Vacuum pans, (ङ) Bath evaporators, (च) Fryo's concretor आदि उल्लेखनीय है।

लगभग ६० वर्ष हुए, बेलर साहबने मिसरीकी सांचेमें ढालनेके बाद उसमें जो मैला रस रह जाता है उस रसको दानेदार बनानेकी विशेष चेष्टा की, केवल चेष्टा ही नहीं की, वरन् उसमें वे कामयाब भी हुए थे। उन्होंने जो तरीका निकाला उसीका अनुसरण कर Chevallier और १८७६ ई०में Alvers Reynoso ने अपनी चेष्टामें सफलता पाई थी।

वैद्यकमें मिसरीके अनेक गुण बतलाये गये हैं। तुरतकी तैयार की हुई मिसरीका शरबत दुर्बल व्यक्तिके लिये बहुत उपकारी है। यदि डकार आती हो, तो मिसरीके शरबतमें नीबूका रस डाल कर पीनेसे डकारका आना बंद हो जाता है। रातको गरम जलके साथ मिसरी मिला कर खानेसे सर्दी और कब्जियत दूर हो जाती है। मिसरी और कालीमिर्चको एक साथ सिद्ध कर पान करनेसे सर्दीका पता नहीं रहता। धूपमें सफर करनेवाले मुसाफिरोंके लिये मिसरी बहुत फायदेमंद है। यह प्यास नहीं लगने देती और थकावटको दूर करती है।

मिसर (सं० पु०) देशभेद।

मिसरूमिश्र—पदार्थचन्द्रिका और विवादचन्द्र नामक स्मार्त्त ग्रन्थके प्रणेता। इन्होंने राजा चन्द्रसिंहकी पत्नी लछिया (लक्ष्मी) देवीके आदेशसे १४वीं शताब्दीके मध्य भागमें उक्त दोनों ग्रन्थोंकी रचना की।

मिसरोटी (हिं० स्त्री०) १ मिस्से आटेकी बनी हुई रोटी। २ कंडे आदि पर सेंक कर बनाई हुई चारी, अंगाकड़ी।

मिसल (अ० स्त्री०) सिक्ख धर्मसङ्घ। गुरु नानक प्रवर्त्तित धर्ममार्गानुचारी सिक्ख सम्प्रदाय पिछले समयमें धनकी लालसामें उन्मत्त हो कर एक दलपतिके अधीन एक एक विभिन्न दल या मिसल रूपसे संगठित हुआ।

गुरु नानकके बाद क्रमसे अङ्गद, अमरदास, रामदास, अर्जुन, हरगोविन्द, हरराय, हरेकृष्ण, तेगबहादुर और गुरुगोविन्दसिंह आदि गुरुपद पर अभिषिक्त हुए थे। ऐसा नहीं, कि वे केवल धर्म और नीतिपालनमें ही लगे हों, किन्तु उन्होंने युद्धविग्रहमें भी वे लिप्त होते थे। गुरुगोविन्दसिंह बन्दा नामक एक वैरागीको उत्तराधिकारी बना गये। इनके अधीनमें रह कर सिक्ख-सम्प्रदायकी राजनीतिक शृङ्खला समधिक दृढ़ हुई थी। बन्दाने डकैती कर जो प्रभुत अर्थ उपार्जन किया था, उसीके लोभमें पड़ कर तथा ईर्ष्यान्वित हो कर उनके पीछेके सिक्ख नेताओंने अपने अपने दलकी स्वतन्त्रतारक्षा करते हुए डकैतीसे अर्थ सञ्चय किया और कई मिसल या दलके सर्दार-वंश पीछे सामन्तराजके रूपमें परिणत हुए। जब पञ्जाबकेशरी सरदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रणजित्सिंहका अभ्युदय हुआ, तब सभी सिक्ख-दल उनके अधीन हो गये थे। इस सिक्ख-सम्प्रदायकी एकताने एक दिन अंगरेज सरकारको भी कंपा दिया था। नीचे मिसलोंके नाम दिये गये हैं—

संस्थापक।	मिसल।
१ छज्जासिंह	भङ्गी।
२ खुशालसिंह	रामगढ़िया।
३ जयसिंह	कन्हिया।
४ हीरासिंह	नकई।
५ सदर्सिंह	अहलूवलिया।
६ गुलाब क्षत्रिय	दलीवलिया।
७ सङ्गत और मोहरसिंह	निशानवाला।
८ कवोड़ीमल	कयोरासिंही।
९ कर्म और गुरुसिंह	सहीद और निहङ्ग।
१० फूल	चुलकिया।
११	सुकक्राचकिया।

मिसाल (अ० स्त्री०) १ उपमा। २ उदाहरण, नमूना। ३ लोकोक्ति, मसल, कहावत।

मिसि (सं० स्त्री०) मस्यति परिणमतीति मिस्-इन, बाहुलकादत इकारः, पक्षे स्त्रियां ङीष्। १ मधुरिका, सौंफ। २ जटामांसी, बालछड़। ३ शतपुष्पी, सोयां। ४ उशीर, खस। ५ अजमोदा।

मिसिरी (हिं० स्त्री०) मिसरी देखो।

मिसिल (अ० वि०) १ तुल्य, समान। मिस्ल देखो। (स्त्री०) २ किसी एक मुकदमे या विषयसे संबंध रखनेवाले कुल कागज पत्रों आदिका ढूह। ३ किसी पुस्तकके अलग अलग छपे फार्म जो सिलाई आदिके कामके लिये क्रमसे लगा कर रखे गए हों।

मिसिली (हिं० वि०) १ जिसके सम्बन्धमें अदालतमें कोई मिसिल बन चुकी हो। २ जिसे न्यायालयसे दण्ड मिल चुका हो, सजायाफ्ता।

मिसी (हिं० स्त्री०) मिसि देखो।

मिस्कला (अ० पु०) सिकली करनेवालोंका वह औजार जिसकी सहायतासे वे सिकलो करते हैं।

मिस्कील (अ० पु०) १ दीन, बेचारा। २ दरिद्र, गरीब। ३ भूखा-नंगा, कंगाल। ४ सीधा-सादा, सुशील।

मिस्कीन सूरत (अ० वि०) जो देखनेमें सीधा-सादा या दीन, पर वास्तवमें दुष्ट या पाजी हो।

मिस्कीनी (अ० स्त्री०) दीनता, गरीबी। २ सुशीलता।

मिस्कोट (अ० पु०) १ भोजन, खाना। २ एक साथ बैठ कर खाने पीनेवालोंका समूह। ३ गुप्त परामर्श।

मिस्टर (अं० पु०) महोदय, महाशय। इस शब्दका इस्तेमाल अकसर अङ्गरेजोंमें अथवा अङ्गरेजी ढंगसे रहनेवाले लोगोंके नामके साथ होता है।

मिस्तर (हिं० पु०) १ काठका वह औजार जिससे राज लोग छत या पलस्तर आदि पीटते हैं, पिटना। २ वह कल जिससे नीलकी टिकियां बनाई जाती हैं।

मिस्तर (अ० पु०) दफ्तीका वह बड़ा टुकड़ा जिस पर समानान्तर पर डोरे लपेट या सी लेते हैं। यह लिखनेके समय लकीरें सीधी रखनेके लिये लिखे जानेवाले कागजके नीचे रखा जाता है। कभी कभी इससे कागज भी दबाया जाता है। २ मेहतर देखो।

मिस्तरी (अ० पु०) वह जो हाथका बहुत अच्छा कारीगर हो, चतुर शिल्पका। इस शब्दका प्रयोग अकसर लोहारों, बढ़इयों, राजगीरों और कल-पेंच आदिका काम करनेवालोंके लिये ही होता है।

मिस्तरीखाना (हिं० पु०) वह स्थान जहां लोहार, बढ़ई या कल पेचका काम जाननेवाले बैठ कर काम करते हैं।

मिस्ता (हिं० पु०) १ वह मैदान जिसमें किसी प्रकारकी हरियाली न हो, बंजर। २ वह समभूमि जो अनाज दांनेके लिये तैयार की जाती है।

मिस्र (मिसर) (Egypt)—अफ्रिकाके उत्तर-पूर्वमें अवस्थित देशविशेष। इसकी उत्तरी सीमा पर भूमध्यसागर, पूर्व पेलेस्टाइन, अरव और लालसागर, दक्षिणी सीमा पर न्यूबिया और पश्चिमी सीमा पर सहाराभूमि है। यह अक्षा० २४° ३' से ३१° ३६' उ० तथा देशा० ३०° से ३४° ४०' पू०में अवस्थित है।

नामकी उत्पत्ति।

मिस्र शब्द अति प्राचीनकालसे भारतमें प्रचलित है। विलसन आदि विद्वानोंका अनुमान है, कि भारतीय मिश्र उपाधिधारी ब्राह्मणोंने अति प्राचीनकालमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अफ्रिकाके किनारे उपनिवेश स्थापित किया था, इसीके अनुसार मिश्र शब्दके अपभ्रंशसे 'मिस्र' या मिसर हो गया है। कुछ लोगोंका कहना है, कि संस्कृत 'मिश्र' (to mix) धातुसे मिसर या मिस्र शब्दकी उत्पत्ति है। बहुत पुराने जमानेमें फिनिक, सिरीय, आसिरीय, बाबिलनीय, कालड़ीय, मिदीय, प्राथियं और भारतीय आदि कई देशोंके वणिक् भूमध्यसागरमें व्यवसाय करते थे। मिस्रमें वाणिज्य आदिके लिये कई जातियोंके 'मिश्रण'-से मिसर अर्थात् मिश्र देश या मिस्र शब्दकी उत्पत्ति हुई है। किन्तु इस विषयमें कोई उपयुक्त प्रमाण नहीं मिलता।

अब देखना चाहिये, कि इजिप्ट भाषामें मिश्र या मिस्र शब्दकी व्युत्पत्ति किस तरह है। एनसाइक्लोपिडिया-ब्रिटेनिका नामक ग्रंथमें बृटिश-म्यूजियमके ऐतिहासिक पण्डित रेजिनाल्ड ष्टुआर्ट पुलने (Raginald stuart Poole) मिष्टर पिक्ट (Mr. Picte)-के मतके अनुसार लिखा है, कि 'सेमितिक भाषा' को धातुके अर्थमें 'इजिप्त' शब्दकी कोई सन्तोषजनक व्युत्पत्ति नहीं है। यह संस्कृत 'गुप्' (रक्षणमें) (to guard) धातुसे उत्पन्न है। इजिप्त = आगुप्त (Guarded about, ie-fortified) अर्थात् सुरक्षित देश। हिब्रु और अरबी भाषामें मिसर शब्दकी व्युत्पत्ति भी इसी अर्थमें मिलती है। मिसर शब्द हिब्रु भाषामें मजर (Mazr) और अरबी भाषामें (misr) शब्द भी बहुधा 'सुरक्षित' (fortified)-के अर्थमें व्यवहृत होता है। मालूम होता है, कि हिब्रुमें मेजर, अरबोमें मिसर, इसके बाद भारतमें इसका रूप मिस्र या मिश्र हो गया है। आसिरीय भाषामें यह मुसर (musr) और फारसीमें मुद्राया (Mudraya), यनानीमें इजिप्त (Aiguptos) या आगुप्तभावसे प्रचलित है। होमरके काव्यमें आगुप्तका बारंबार नाम आया है। हिब्रुभाषामें मजर और मिजरम (mizraim) दो तरहके शब्द आये हैं। निम्न मिस्रके बदलेमें मिलरमका व्यवहार होता था। इसका प्रमाण मिलता है। हिब्रुभाषामें सीमान्तके अर्थमें कभी कभी 'मजर' शब्दका व्यवहार भी देखा जाता है।

जो हो, पण्डित लोग संस्कृत अर्थानुयायी यूनानी भाषाका 'आगुप्त' शब्द ही इस समय व्यवहारमें लाते हैं। उनका कहना है, कि आदि राजा मेना (मनु)-ने राज्य स्थापन कर किले बना कर इसको सुरक्षित किया था। इसीलिये 'इजिप्त' आगुप्त या हिब्रु मजर और पीछेके मिस्र शब्द एकार्थबोधक हैं।

मिश्र या मिस्रका दूसरा अर्थ कृष्णदेश है। अधिकांश पाश्चात्य पण्डित यही अर्थ लेते हैं। क्योंकि इस अर्थबोधकके अनेक प्रमाण हैं। मिस्रके पवित्र लेख या हाइरोग्लिफिक (Hieroglyphics) भाषामें इजिप्तका नाम केम या केमी (em) आया है। इसका अर्थ है—काला देश। इजिप्तकी भूमि काली है, इसीसे इस नामकी उत्पत्ति हुई है। कोप्ट (Copt) भाषामें भी इजिप्टका अर्थ काला देश है। इजिप्टके पुरातत्त्वज्ञ पण्डित डाक्टर ब्रागसस (Dr. Brugsch)-का कहना है, कि 'केम' शब्द और बाइबिलका हाम (Ham) शब्द एकार्थबोधक है। क्योंकि 'क' स्थानभेदसे 'ह' के रूपमें परिणत हुआ है। ये दोनों शब्द ही काले देश और गर्म देशके अर्थमें प्रयोग हो सकते हैं। कुछ लोगोंका कहना है, कि यूनान आगुप्त (Aiguptos) शब्द गृध्रके अर्थमें व्यवहृत हो सकता है। इजिप्तमें गृध्र देवताके रूपमें पूजित हुआ है। इस गृध्र पक्षी के सम्बन्धमें कोई पौराणिक कहानी प्रचलित थी, जिसका इस समय नामोनिशान नहीं मिलता।

धात्वर्थके इस सन्दिग्ध अनुमानको छोड़ कर यूनानी और लेटिन भाषाके प्रति दृष्टिपात करनेसे दिखाई देता है, कि इजिप्त एशियाके अंशविशेषसे उल्लिखित हुआ है। बहुत प्राचीनकालके भौगोलिक संस्थानके अनुसार नील-नद एशिया और अफ्रिका इन दोनों देशोंके भीतरसे प्रवाहित होता था।

राज्यका विभाग।

भारतवर्षकी तरह बहुत पुराने जमानेसे मिस्रके दो विभाग दिखाई देते हैं, उत्तर-विभाग और दक्षिण-विभाग या उच्च और निम्न-विभाग। प्राचीनकालमें मिस्रके ४४ विभाग या प्रदेश (Nomes) थे। उत्तर-मिस्र और दक्षिण मिस्रमें २२-२२विभाग थे। इन सबोंके उल्लेख करनेकी कोई जरूरत दिखाई नहीं देती। प्रत्येक विभागके एक-एक शासनकर्त्ता अलग अलग शासन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते थे। शासकोंका नाम 'हा' (Ha) होता था। प्रत्येक विभागमें स्वायत्तशासन या म्यूनिसिपल शासन-प्रणाली प्रचलित थी। प्रत्वेक विभागमें ही धर्माधिकरण रहता था और उसके उपयुक्त विचारक और अन्यान्य कर्मचारी शासनव्यवस्था किया करते थे। दूसरे राजाके शासनकालमें विभागका परिवर्त्तन हो जाता था। भूमिका सरवेकर या नाप जोख कर भूमिका कर लगाया जाता था। प्रत्येक विभागके सीमान्तसूचक अलग-अलग चिह्न बनाये गये थे।

सेथस या सिसस्त्रिस् (sethos or sisostris) के राजत्वकालमें मिस्रके ३६ विभाग बनाये गये थे। भूगोलविद् टलेमीके समयमें ४७ विभाग थे। उस समय उच्च, निम्न और मध्य—ये तीन ही विभाग मुख्य थे।

सन् ४०० ई०में अरबोंके राजत्वकालमें मिस्रके तीन ही विभाग दृष्टिगोचर होते हैं, मसर एल वहरी या निम्न मिस्र, फैयूमेल वास्तामी या मध्य मिस्र, एस् सैद या उच्च मिस्र।

वर्त्तमान समयमें इजिप्तके जो विभाग हैं, वे नीचे लिखे जाते हैं,—

१। निम्न मिस्रके सात विभाग।

विभाग	प्रधान नगर।
१। बोह्यरिह	देमेनहुर
२। एलगिजे	एलगिजे
३। काल्युबुये	काल्युब
४। सरकिये	जगाजिव
५। मेनुफिये	सेयविन्
६। घरबिये	तान्ता
७। दखलिये	मनसुरा।

२। मध्य मिस्रके दो विभाग।

१। बेनीसुरेफ फेयूम	बेनीसुवेफ
२। एलमिन्ये बेनीमेजर	एलमिन्ये।

३। उच्च मिस्रके चार विभाग।

१। आस्युत	आस्युत।
२। गिर्जी	सुहाग।
३। किने कुसर	किने।
४। इसने	इसने।

भूतत्त्व।

भूतत्त्वविद् पण्डितोंने मिस्रके उच्च और निम्न विभागकी परीक्षा कर कहा है,—"किसी विषयमें इनका सादृश्य नहीं। इसीलिये ये दोनों विभिन्न देश मालूम होते हैं। और तो क्या—पशु, उद्भिद् और प्राणि-राज्यमें भी सम्पूर्ण रूपसे विभिन्नता दिखाई देती है। निम्न मिस्रकी भूमि समतल है, किन्तु उच्च-विभागकी भूमि सवत्र ही वालुकामयी और पत्थरके टुकड़ों तथा नदीके किनारेकी भूमि ग्रानाइट नामके पत्थरोंसे परिपूर्ण है। प्राचीनकालमें इन्हीं सब पत्थरोंसे वहां पिरेमिड तय्यार हुआ था।

नीलनद मिस्रके बीचसे बहता है, इसके अगल-बगलकी भूमि उर्वरा हो गई है। मिस्रमें प्रायः वृष्टि नहीं होती। प्रतिवर्ष नीलनदकी बाढ़से दोनों किनारेकी भूमि डूब जाती है। इसलिये मिस्रका नाम नदी-मातृक देश है। प्राचीन मिस्रवासी नीलनदकी पवित्रता की प्रशंसा कर गये हैं। मिस्रके पश्चिममें पृथ्वीकी सबसे बड़ी मरुभूमि, मध्यस्थलमें पृथ्वीकी सबसे बड़ी नदी और मनुष्योंकी कीर्त्तियोंके बहुत बड़े नमूने विद्यमान हैं। ये दर्शकोंके मनमें अद्भुत भावका उद्रेक करते हैं। निम्न मिस्र या डेल्टेकी भूमि नाना शस्यसम्पदोंसे भूषित रहती है। चारों ओर विविध स्मृति-स्तम्भ अतीत कीर्त्तियोंकी अक्षय महिमाकी स्मृति उद्रेक करते रहते हैं। मिस्रमें प्राकृतिक दृश्य और मनुष्य-कीर्त्तिने समभावसे ही कालस्रोतमें प्रतिद्वन्द्विता की है। मिस्रमें सभी जगह पर्वतश्रेणी विराजमान है। ये सभी पर्वत-मालायें मनुष्य-शिल्पकी प्राचीन कीर्त्तियोंके निदशन अपने गात्र पर लिये खड़ी हैं। पृथ्वीके किसी देशमें अतीत कीर्त्तियोंके इतने चिह्न नहीं पाये जाते। थीरस नगरीका ध्वंसावशेष आज भी ५।६ कोसोंमें पड़ा हुआ है।

यहांकी आबोहवा साधारणतः उष्णप्रधान देशोंकी तरह है। यहांकी वायु अत्यन्त उत्तप्त और सूखी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहांकी वायुमें जलकी भापका पूर्णतः अभाव है। इसीलिये मिस्रमें वृष्टि, तूफान या वज्रपात नहीं होता। समुद्रके किनारेके स्थानोंमें कुछ वर्षा होती है। उत्तरकी ओरसे वायु प्रवाहित होती है। शीत-ऋतु ही यहांकी आबो-हवाके लिये बहुत रमणीय है। वसन्तके अन्तमें 'साइमून' और 'सिरक्को' आदि मरुभूमिमें विषाक्त वायु प्रवाहित होती है। इसी वायुके स्पर्शसे प्राणिमात्र ही मुहूर्त्त भरमें काल-ग्रसित होते हैं।

प्राणि-राज्यमें नाना तरहके वैचित्र्य दिखाई देते हैं। नील-नदमें दरियाई घोड़े बहुतायतसे देखे जाते हैं। बहुत सहस्र वर्षोंसे ही यह प्राणी मिस्रमें पाये जाते हैं। आदि राजा 'मेना' दरियाई घोड़ोंका शिकार खेलनेमें ही मारे गये थे। इस समय नील-नदके दक्षिणांश-के सिवा ये दूसरी जगह नहीं दिखाई देते, मिस्रमें ही सबसे अधिक अहिनकुलका प्रादुर्भाव है। नीलनदके घड़ियाल पृथ्वीमें मशहूर हैं। गृहपालित सब तरहके पशु पक्षियोंके सिवा हिरण, शृगाल (सियार या गीदड़) और सींगवाले सर्प यहांके अद्भुत जन्तु हैं। टिड्डी बहुतायतसे देखी जाती हैं। तरह तरहके कीट-पतङ्गोंका भी यहां अभाव नहीं है।

मिस्रमें धातुद्रव्यकी खान नहीं है। ७००० वर्ष पहले मेनाके राजत्वकालमें पत्थरके बने अस्त्रोंका प्रयोग होता था। किन्तु ये इस तरहके कौशल-से बनाये जाते थे, कि उनसे हजामत तक भी बन सकती थी और अस्त्र-चिकित्सा तकमें भी काम लिया जा सकता था, लकड़ी काटने और अन्यान्य कामोंको कौन कहे।

खनिज द्रव्योंमें—मर्मर पत्थर, गन्धक, सोरा और नमक तथा छोटे छोटे हीरे ही प्रधान हैं।

धान, मक्का (मकई), बाजरा, कपास, जौ, गेहूं, ककड़ी, खीरे, ईख, अफीम, तम्बाकू, पटुआ और नील यहांकी प्रधान ऊपज हैं। भूमि अत्यन्त उर्वरा है। वर्षा न होने पर भी असंख्य नहरोंके जलसे खेतीका काम होता है। मिस्रके फलोद्यान पृथ्वीमें सबसे अधिक मश-हूर हैं। नारंगी (संतरा) आदि कई तरहके निम्बू, अञ्जीर, अखरोट, खजूर, बादाम, केला बहुतायतसे पाये जाते हैं। ताड़के पेड़ हर जगह दिखाई देते हैं। मिस्रमें अरण्य नहीं है। यहां "पेपाइरस" नामक पेड़ उत्पन्न होते हैं। ७००० वर्ष पहले मिस्रमें इसके वल्कल या छालसे कागज तैयार किया गया था। मिस्र-भाषाके प्रायः प्राचीन ग्रन्थ इसी छाल पर लिखे गये थे।

पहले जो यहांके राजा थे, उसकी उपाधि खदीव होती थी। पहले इन्हीं खदीवके अधीन एक मन्त्री-मण्डल रहता था। इसी मन्त्री-मण्डल द्वारा यहांका राज्यकार्य निर्वाहित होता था। इसमें सैनिकोंके विभाग-से ४ और विचारकोंके विभागसे ४ मन्त्री चुने जाते थे।

खदीवोंके जमानेमें मिस्रकी बड़ी श्रीवृद्धि हुई है। पाश्चात्य आदर्श पर कितने ही विद्यालय स्थान स्थान पर प्रतिष्ठित हुए हैं। सुएज-केनेल (नहर) खुदवा देनेसे यहांके व्यवसाय-वाणिज्यकी बड़ी उन्नति हो रही है और पाश्चात्य सभ्यता यहांके अधिवासियोंका चित्त अपहरण कर रही है।

पुरातत्त्व।

मिस्रका पौराणिक इतिहास अन्धकारसे आच्छन्न है। ऐतिहासिकोंको पर्वत पर खुदे लेखोंसे पता लगा है, कि देवोंने सत्ययुगमें मिस्रमें २४६०० वर्ष तक राज्य किया था। इसके बाद मिस्रमें त्रेता और द्वापर युगमें देववंशसम्भूत राजाओंने ६००० वर्षों तक राज्य किया है। इसके बाद ईसाके ५००४ (या ७००४) वर्ष पहले मनुष्य जातिके आदि राजा मेनाने नये राज्यकी स्थापना कर राजवंशकी प्रतिष्ठा की थी। उस समयसे आज तक ७००० वर्षका धारावाहिक इतिहास मौजद है। इस-लिये मिस्रका अतीत वृत्तान्त दुर्भेद्यतमसाच्छन्न नहीं है। अङ्गरेज पहले मिस्रके प्राचीनत्वमें सन्देह करते थे। क्योंकि अङ्गरेज-धर्मयाजक 'आसार' (Usher)-ने गणना कर बतलाया था, कि ईसाके ४००४ वर्ष पहले पृथ्वीकी सृष्टि हुई और २३४८ वर्ष ईसासे पूर्व जलप्लावन या प्रलय हो गया था। उस समयके लोग आसारकी गणनाको निर्मूल कहते थे। किन्तु प्रत्नतत्त्वविदोंने पर्वत पर लिखे विचित्र चित्रलिपियोंका (Hieroglyphics) यथार्थ तत्त्व जान कर भी आसीरिया, इनानी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिब्रू, लेटिन और अरबी भाषामें लिखे पुरावृत्तोंको पढ़ देखा, कि मिस्रके पुरातत्त्वमें सन्देह करनेका कोई कारण दिखाई नहीं देता। इसके बाद मिस्रकी प्राचीन कीर्त्तियां एक स्वरसे उनके अनुकूलमें साक्ष्य प्रदान करने लगी। जिन सब प्राचीन ग्रन्थकारोंने मिस्रका इतिहास लिखा है, उनमें कई ग्रन्थकारोंके नाम लिखे जाते हैं।

होलिओ पालिसके पुरोहित शिवनितास (Sebennytus) नगरवासी प्राचीनतम ऐतिहासिक 'मनेथो' (*Manetho*)-ने सबसे प्रथम राजाके हुक्मसे मिस्रके इतिहासकी रचना की। इसे पढ़नेसे मालूम होता है, कि मेनाके राजत्वकाल (ईसा ५०६४ ५४००)-से दूसरे दरायुसके राजत्वके समय (३०० वर्ष ईसासे पहले) तक ३० राजवंशोंने मिस्रका राजत्व किया था। इसके बाद ३०० ई०में जुलियस अफेरिकनस् (Julius *Africanus*) ने मिस्रका इतिहास संग्रह किया। इसके बाद ८०० ई० तकका इतिहास यूसिदियस (Eusebius) और जाज सिन्सेलस (*George*, the syncellus)ने मिस्रका इतिहास लिखा। हिरोदोतस, दिउदोरस (Diodorus) जोसेफास् (Josephus) आदि बहुतेरे लेखक प्राचीन मिस्रका इतिहास लिख गये हैं। बाइबिलके सृष्टिविषयमें मिस्रमें बहुत-सी बातें मिलती हैं। होमरका काव्य मिस्रके वर्णनसे परिपूर्ण है। कुरानमें भी मिस्रका पूरा विवरण है। इन सब ग्रन्थोंके प्रमाणोंके सिवा प्राचीन मिस्रकी सभ्यताका अक्षुण्ण निदर्शन-स्वरूप प्रकाण्ड-पाषाणस्तूप (*Pyramid*) और पवित्र चित्रलिपि या प्रस्तर-खोदित देवाक्षरनिबद्ध-वर्णन सुस्पष्टरूपसे मिस्रका इतिहास प्रकट कर रहा है।

इस समय जर्मनी, फ्रान्स, इटली और इङ्गलैण्डके सैकड़ों प्रत्नतत्त्वविदोंने अपने अटूट परिश्रमसे मिस्रका इतिहास लिखा है। इन्होंने भूगर्भसे शिलालेखोंका उद्धार कर विविध तत्त्वोंकी मीमांसा की है। बुक (Boockh), लेपसियस (Lepsius आदि बहुत मनुष्योंने जीवन-व्यापी परिश्रमसे मिस्रके अतीत तत्त्वका उद्धार किया है।

सत्य या दैव-युग।

मिस्रके पुराणोंमें ऐसा लिखा है, कि सूर्य आदि देवोंने (*Path* या *Vulcan*, Ran या Helios or Sun, Sos or shu, Saturn (शनि) or Seb, Osiris or Heshar, Typhon or Seti and *Horns* or Hor) समुद्रसे घिरे और समुद्र द्वारा पादप्रक्षालित मिस्रका बहुत दिनों तक राजत्व किया था। उस समय इस मिस्रकी आभा और रमणीय दृश्यसे देवताओंको भी मुग्ध होना पड़ा था। देवोंके जो नाम लिखे गये, वे सभी सूर्यके ही नामान्तर या सूयके ही अर्थबोधक हैं; केवल शनि सूर्यके पुत्र हैं। इसलिये सूर्य आदि देवोंने और उनके वंशजोंने सबसे पहले मिस्रका राजत्व किया।

इसके बाद त्रेता और द्वापर युगमें देवकल्प मनेस (manes) आदि राजाओंने बहुत दिनों तक राज्य किया। इन सब राजाओंके अधिकांश नाम सूर्यके एकार्थ-बोधक हैं। इससे मालूम होता है, कि सूर्यवंशने बहुत दिनों तक राज्य किया था।

एसारमस विलसन (*Erasmas* Wilson) अपने रचित मिस्रके पुरातत्त्वमें लिखा है, कि इस देशके हर्सेषु (Horsesu) राजाके राजत्वकालमें एक शिलालेख और बकरीके चमड़े पर लिखी एक पुस्तक मिली है। लिखन प्रणाली परीक्षा द्वारा प्रमाणित हुआ है, कि उक्त प्रस्तर-लिपि या शिलालेख मेनाके राजत्वकालके बहुत समय पहलेका है। कुछ प्रत्नतत्त्वविद् पण्डितोंका कहना है, कि मिस्रमें १००० वर्ष तक पौराणिक काल था। ईसाके ५७०२ वर्ष पहले (किसी किसीके मतसे ५००४ और ४०००) मिस्रके आदिम राजा मेना ('मेना' क्या मनु थे ?)-ने सिंहासन पर आरोहण किया था।

यहां हम मेनाकी वंशावली (मनुवंश)-की आलोचना करेंगे। बाइबिलके सृष्टितत्त्व प्रकरणके १०वें अध्याय (*Genesis*, Chap. x) में उल्लेख है, कि हाम (Ham)-के चौथे पुत्र (Mizrama)-से ही इजिप्टका नाम मिजराम हुआ है। हामके चार पुत्र थे,—कुश (*Cush*), मिजराम (mizram), फूत (Phut) और केनान (*Canaan*) इनमें मिजरामने ही मिस्रकी स्थापना की थी। मिजराम-के सात पुत्रोंमें चारने मिस्रका आधिपत्य किया था। इन चारोंके नाम इस तरह हैं—१ लूद (*Lud*), २ अनम् (Anam), ३ पाथरस (*Pathrus*) और नप्त (*Napthu*)। लूद और रुत् पृथक् पृथक् हैं। अनमके वंशधरोंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हेलियोपोलिस (Heliopolis) या सौर नगरकी प्रतिष्ठा कर सूर्यपूजाका प्रचार किया। इन लोगोंने पीछे गोसेन (Goshen) भूमि पर अधिकार कर मिस्रकी निम्न-भूमि पर अधिकार जमाया और सिरिया तक अपना राज्य फैलाया। सूर्य-कन्या पास्त (Pasht) या वास्त (Bast) उनकी अधिष्ठात्री देवी हैं।

पाथरस या पाथमिमगण उत्तरके विभागमें रहते थे। होलिओ या सूर्यनगरवासी पीछे मेमफाईट (Memphite) नामसे प्रसिद्ध हुए। पूर्व समयमें अरबी निम्न मिस्रके देवता सेट (Set या Typhon) की पूजा करते थे और पश्चिम एशियामें सर्वत्र सूर्यकी ही पूजा प्रचलित थी।

प्राचीन मिस्र जातिकी कहावतें कुछ बाइबिलकी वर्णनासे मिलती जुलती है। असुर जब पापाचार फैलानेके लिये तत्पर हुए, तब सूर्यदेव (Hor-em-kha)-ने युद्धमें उन सभीको पराजित किया। असुरगण पराजित हो कर कुशस्थलमें अर्थात् दक्षिण-अफ्रिका (यही क्या कुशद्वीप है ?) भागे। पीछे यही निग्रो नामसे विख्यात हुए। निग्रोको ही हब्शी कहते हैं। सुरोंमें या देवताओंमें कितनोंने ही श्वेत द्वीप और अफ्रिकाके उत्तर भूमध्य-सागर तट पर जा कर उपनिवेशकी स्थापना की। तामाहु (Tamahu—तमोहा ?) इनके अग्रगण्य (नेता) थे।

अनम या आम् (Amn)-के वंशधरोंने एशिया-खण्डमें प्रवेश कर पेलेष्टाइन, सिरिया, एशिया माइनर, अरब और कालदिया आदि देशोंमें जा कर उपनिवेशोंकी स्थापना की। चतुर्थ जाति शाशुकोन निर्दिष्ट स्थानमें न रह कर बेदुइनरूपमें परिणत हुई। इस जातिके लोग प्रायः अरबमें ही रहते थे। मिस्रके जातितत्त्वमें इन्हीं प्रधान चार जातियोंका उल्लेख है।

आज कलकी वैज्ञानिक मण्डलीने बाइबिलकी बातोंकी उपेक्षा कर और वहांके किस्से-कहानियोंकी परवाह न कर सुसंस्कृत विज्ञानानुमोदित प्रमाणके साहाय्यसे यह सिद्धान्त किया है, कि काकेशीय जातिके मानव सुदूरवर्त्ती प्राचीन कालमें ऐशियासे मिस्रमें गये थे। निग्रो जाति या इथ्रोपाइट और अरब जातिसे यह पृथक् है। उपनिवेशिकोंने पहले भूमध्यसागरके तटोंके नाना स्थानोंमें वास किया। उनमें लिबू (libu) जाति पीछे लाइवियस नामसे परिचित हुई। अफ्रिकाका प्राचीन नाम लाइविया है। प्राचीन मिस्रकी पौराणिक कहावत इस तरह है, कि उनके पूर्व-पुरुष दक्षिण-पूर्वसे मिस्रमें आये थे। इनका आदिनिवास तानेतार (Taneter) या देवभूमि है।

आदि राजा मेनाके राजत्वकालमें सभ्यताका विकाश देखनेसे मालूम होता है, कितने सहस्र वर्ष पहले मिस्रमें मनुष्योंकी वसती हुई थी, इसका अनुमान लगाना कठिन है।

जो हो, द्वापर युगके अवसानमें मेनाने अपने सुशिक्षित और पराक्रमशाली सैनिकोंके साहाय्यसे ५००४ वर्ष ईसासे पूर्व (दूसरे मतसे ७००४ वर्ष) मिस्रके सिंहासन पर आरोहण किया। उन्होंने समाजमें विलास-वासनाकी सृष्टि कर पृथ्वीमें पापका बीज वपन किया। मिस्रके इतिहासमें उसके पूर्ववर्त्ती जनसमाजका रूप इस प्रकार अंकित हुआ है।

मेनाने ही सरलतामय मानव-जीवनमें पापका प्रवाह प्रवाहित किया था। उसके पहले मनुष्य जाति प्रकृतिके शिशुकी तरह वनमें, पर्वत कन्दरों और तराई आदि जङ्गलोंमें वास करती थी। मनुष्य अयत्नसम्भूत वनके फल-मूलोंको भक्षण कर अरण्य जन्तुकी तरह स्वच्छन्द-रूपसे विचरण करते थे। वह दिगम्बर मानवदल सरलताकी प्रतिमूर्त्ति था।

झरने और नदीका जल ही जिसका पीनेका जल था, वन-फल ही आहार था, दिग् ही जिसका अम्बर था, चन्द्र ही दीपके प्रकाश थे, नीलाम्बर जिसकी चाँदनी था; वृक्ष, लता, पशु, पक्षी जिसके सहचर थे और विशाल विश्वमन्दिर जिसका वासगृह था, उनमें किस लिये परस्पर द्वेष भावका सञ्चार होता ?

क्रमशः यह मानवदल सभ्यताकी आड़में उच्चतर सोपान पर चढ़ा। तरु लता द्वारा आच्छादि व कुञ्जकुटि और पर्वतके निविड़ कन्दरको छोड़ कर वे पशु चर्म द्वारा शिविर (शामियाना) तय्यार कर वसुन्धराकी पीठ पर विचरण करने लगे। उस समय उनके रहनेका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोई निर्दिष्ट घर न था। प्रकृतिका वैचित्र्यमय विशाल राज्य उनका आवास-स्थल था।

किन्तु प्रकृतिने उनके प्रतिकूल आचरण करना आरम्भ किया। नैदाघ सूर्यकी तीक्ष्ण रश्मि और वर्षाकी अविराम धारामें अपने स्त्री-पुत्रको ले कर वे व्याकुल हो उठे।

ऐसे समय एक मानवीय महापुरुषने उनके अनन्त वासगृहको छुड़ा दिया; विशालत्व छोड़ कर क्षुद्रत्वकी सङ्कीर्ण सीमामें आवद्ध कर दिया; भ्रमणकारियों स्वेच्छा पूर्वक गमन परित्याग कर नये मानव-समाजकी सृष्टिके साथ साथ झोपड़ोंको बनाया। ये मानवीय महापुरुष ही मेना (या मनु) या फारोवंशके (pharoah) प्रतिष्ठाता हैं। 'फारो' शब्दका अर्थ गृह है अर्थात् जिन्होंने सबसे पहले गृहका निर्माण किया और मनुष्यको गृहमें वास करनेकी शिक्षा दी वे ही फारवा या फारो हैं।

मेनाने सिंहासन पर बैठ नवप्रतिष्ठित राज्यकी रक्षा करनेके लिये लाइवियनोंको युद्धमें पराजित किया और सुरक्षित मेमफिस् नगरकी स्थापना की। पीछे उच्छृङ्खल मानव-जातिको सामाजिक नियमोंमें बद्ध करनेके लिये नियमका बन्धन तय्यार किया अर्थात् आईन कानून बनाया। यही मिस्रकी 'मेना' या 'मनुसंहिता' है। इस तरह बनावटी समाजकी स्थापना कर उन्होंने नाना प्रकारकी बनावटी चीजों पर मनुष्यका मन आसक्त करा दिया; नये नये विलास और अभावकी सृष्टि की। आप्त (ptah) मन्दिर निर्माण कर सूर्यकी पूजाका प्रचार किया। इसके सिवा मेनाने राज्यमें सर्व प्रकारकी सुशृङ्खला और सुख समृद्धिकी सृष्टि की। ६२ वर्ष राज्य कर उन्होंने दरियाई घोड़ोंके साथ युद्ध कर प्राणत्याग किया। कुछ लोगोंका कहना है, कि नीलनदमें स्नान करते समय उनको घड़ियालने पकड़ लिया था।

उनकी मृत्युके बाद उनके वंशके नौ राजाओंने ३५० वर्ष तक राजत्व किया था। मेनाके पुत्र तेता (Teta) या आथोथिस (Athothis)-ने मेम्फिस् नगरमें एक वृहत् अट्टालिका निर्माण की। इसके पहले थिनिस (Thinis) नगरमें मेनाकी राजधानी थी। इसीलिये मेनावंशको थिनाइट (Thinete) राजवंश कहते हैं। अथोथिस्ने शरीर-विज्ञान (Anatomy)-के सम्बन्धमें एक बड़े ग्रन्थकी रचना की। ईसाके ५००० वर्ष पूर्व मिस्रमें शरीर-विज्ञानका सम्यक् अनुशीलन देख कर पाश्चात्य पण्डित विस्मित हुए थे। अथोथिस्ने एक प्रकारके केशवर्द्धन तेलकी सृष्टि की थी और अस्त्रचिकित्सामें भी अद्भुत निपुणता दिखलाई थी।

थिनाइटवंशीय चतुर्थ राजा यूनेफेसके राजत्वकालमें मिस्रमें एक बहुत बड़ा अकाल पड़ा था। इसमें बहुत आदमी मर गये। उनके समयमें कोचोम (Kochome) नगरमें सबसे पहले पिरामिड़ तय्यार हुआ। इसी समय स्त्रियोंके राज्याधिकारको न्याय संगत स्वीकार कर इसे राजकीय कानूनोंमें मिला दिया गया। प्रथम वंशके राजत्वकालमें ही सभ्यताका (पूर्ण अंग हो) यथासम्भव विकाश हुआ था। दूसरे फारोंके राजत्वकालमें साहित्यविज्ञानकी आलोचना आरम्भ हुई। चतुर्थ फारो उयेनफेसके राजत्वकालमें सक्काराका पहला पिरामिड तय्यार हुआ। पञ्चम फारोंके राजत्वकालमें दर्शनशास्त्रकी उन्नति हुई और देव-देवीकी पूजा-पद्धति श्राद्ध-तत्त्वादि विषयक व्यवस्थाशास्त्र संगृहीत हुआ। आत्माका विनाश नहीं है यह मत उसी समय प्रचलित हुआ था।

तृतीय वंशसे चतुर्थ वंशके अन्त तक मिस्रके बड़े बड़े कई पिरामिड तैयार हुए थे। इसीलिये इस समयको पिरामिड-युग कहते हैं। तृतीय वंशके दूसरे राजाने चिकित्साके शास्त्रमें इतनी उन्नति की थी, कि उस समयके लोग उसको Esculapius या धन्वन्तरी कहते थे। इसी समय बड़े बड़े जहाज तैयार हुए थे और वाणिज्यके लिये नाना देशोंमें आते जाते थे। शिल्पविद्या और वस्तु-शिल्प तथा स्थापत्यने बड़ी उन्नति की। सब विषयोंमें साम्राज्यके बाहरी और भीतरी वैभवकी वृद्धि हुई।

इस युगमें मिस्रदेश शतरंग खेलना जानता था। चतुर्थवंशके राजा खुफुके राजत्वकालमें सर्वोच्च पिरामिड निर्म्मित हुआ। इसी समय ६४ अध्यायोंसे पूर्ण एक धर्मपुस्तक लिखी गई। इसी तरह प्रथम वंशसे दशम वंशके राजत्वकाल तक अर्थात् २००० वर्षों तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्र सब तरहके ऐश्वर्य्यसे विभूषित हो चुका था। इसके बाद कुछ समय तक मिस्रने कुछ भी उन्नति नहीं की। इसके बाद भिल्लवंशीय राजाओंके सिंहासनारूढ़ होने पर मिस्रकी फिर उन्नति होने लगी। तृतीय आमेनहातके राजत्वकालमें वर्त्तमान अलेकजेण्ड्रिया नगरके निकट मारिस झील (Maris Lake) खोदी गई। इस झीलसे नीलनदकी पथ-प्रणालीका संयोग था। इसके समान बड़ा बनावटी जलाशय पृथ्वीमें कहीं भी न था। आमेनहातने इस झीलमें एक अजीब गोरखधन्धेकी सृष्टि की थी। यह मिस्रकी अतीत कीर्त्तिका एक उज्ज्वल नमूना है। यहां प्राचीन मिस्र साम्राज्यके प्राचीन राजाओंका विशेष वर्णन करना कठिन है। संक्षेपमें यह कहा जा सकता है, कि मिस्रके सम्राट्ने बहुत दूर तक अपना राज्य विस्तार किया था। फिनकिया, बाबिलन, आसीरिया आदि प्रसिद्ध और पराक्रान्त प्राचीन साम्राज्य भी उन्होंने हस्तगत कर लिया था। इसके बाद आसीरियाका राजवंश कुछ काल तक मिस्रके सिंहासन पर बैठा। इसी समयसे विदेशी जातिके संसर्गसे मिश्रके राजाओंकी नीतिरीति कुछ कुछ बदलने लगी।

मिस्रका राजवंश ५००० वर्ष स्वाधीन भावसे राजत्व करनेके बाद ३४० वर्ष ईसासे पहले फारसके राजा दरायुस द्वारा पराजित हुआ।

राज-वंशावली।

१ला वंश। राजधानी थिनिस् थी, राज्यकाल (५७०४ वष ई० पू० ५४५१)-२५३ वर्ष था।

१। मेना।
२। तेता या अथोथिस।
३। आतेथ।
४। आता।
५। हेसेप्ती।
६। मेरिबा।
७। सेमेपसेस।
८। कुइबे। (मेनावंशके ये आठ राजाओंने राजत्व किया। थिनिसमें उनकी राजधानी थी)

२रा वंश। राजधानी थिनीस। राज्यकाल (ई०से पू० ५४५१-५१४६) ३०२ वर्ष।

९। बेतो।
१०। काकौ।
११। बेन्नोतार।
१२। औतनेस।
१३। सेन्तो।

३रा राजवंश। राजधानी मेम्फिस्। राज्यकाल। (ईसासे पहले ५१०६ ४६२५)—२१४ वर्ष।

१४। ताती।
१५। नबका।
१६। सरसा।
१७। तेता।
१८। सेतेस्।
१९। नेफेरकारा।
२०। सेनेफेरु।

४थे वंशमें पांच राजे। राजधानी मेसफिस। राज्यकाल (ई०से पू० ४६३५-५६५१)—२८४ वर्ष।

२१। खुफु।
२२। तेतेफ्रा।
२३। मैनकौरा।
२४। खाफ्रा।
२५। असिसकाफ।

५वें वंशमें १० राजे। राजधानी मेमफिस्। राज्यकाल (ई०सें पू० ४६६०-४४०३)—२४८ वर्ष।

२६। उसेरकाफ।
२७। सेबुरा।
२८। काका।
२९। नेफरकारा।
३०। उसरेनरा।
३१। मेनकौहर।
३२। तेतकारा।
३३। उनास्।
३४। आहतेस्।
३५। आकौहर।

६ठें वंशमें ७ राजे। राजधानी एलिफेण्टोनिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई निर्दिष्ट घर न था। प्रकृतिका वैचित्र्यमय विशाल राज्य उनका आवास-स्थल था।

किन्तु प्रकृतिने उनके प्रतिकूल आचरण करना आरम्भ किया। नैदाघ सूर्यकी तीक्ष्ण रश्मि और वर्षाकी अविराम धारामें अपने स्त्री-पुत्रको ले कर वे व्याकुल हो उठे।

ऐसे समय एक मानवीय महापुरुषने उनके अनन्त वासगृहको छुड़ा दिया; विशालत्व छोड़ कर क्षुद्रत्वकी सङ्कीर्ण सीमामें आवद्ध कर दिया; भ्रमणकारियों स्वेच्छा पूर्वक गमन परित्याग कर नये मानव-समाजकी सृष्टिके साथ साथ झोपड़ोंको बनाया। ये मानवीय महापुरुष ही मेना (या मनु) या फारोवंशके (pharoah) प्रतिष्ठाता हैं। 'फारो' शब्दका अर्थ गृह है अर्थात् जिन्होंने सबसे पहले गृहका निर्माण किया और मनुष्यको गृहमें वास करनेकी शिक्षा दी वे ही फारवा या फारो हैं।

मेनाने सिंहासन पर बैठ नवप्रतिष्ठित राज्यकी रक्षा करनेके लिये लाईवियनोंको युद्धमें पराजित किया और सुरक्षित मेमफिस् नगरकी स्थापना की। पीछे उच्छृङ्खल मानव-जातिको सामाजिक नियमोंमें बद्ध करनेके लिये नियमका बन्धन तय्यार किया अर्थात् आईन कानून बनाया। यही मिस्रकी 'मेना' या 'मनुसंहिता' है। इस तरह बनावटी समाजकी स्थापना कर उन्होंने नाना प्रकारकी बनावटी चीजों पर मनुष्यका मन आसक्त करा दिया; नये नये विलास और अभावकी सृष्टि की। आप्त (ptah) मन्दिर निर्माण कर सूर्यकी पूजाका प्रचार किया। इसके सिवा मेनाने राज्यमें सर्व प्रकारकी सुशृङ्खला और सुख समृद्धिकी सृष्टि की। ६२ वर्ष राज्य कर उन्होंने दरियाई घोड़ोंके साथ युद्ध कर प्राणत्याग किया। कुछ लोगोंका कहना है, कि नीलनदमें स्नान करते समय उनको घड़ियालने पकड़ लिया था।

उनकी मृत्युके बाद उनके वंशके नौ राजाओंने ३५० वर्ष तक राजत्व किया था। मेनाके पुत्र तेता (Teta) या आथोथिस (Athothis)-ने मेम्फिस् नगरमें एक वृहत् अट्टालिका निर्माण की। इसके पहले थिनिस (Thinis) नगरमें मेनाकी राजधानी थी। इसीलिये मेनावंशको थिनाइट (Thinete) राजवंश कहते हैं। अथोथिस्ने शरीर-विज्ञान (Anatomy)-के सम्बन्धमें एक वड़ ग्रन्थकी रचना की। ईसाके ५००० वर्ष पूर्व मिस्रमें शरीर-विज्ञानका सम्यक् अनुशीलन देख कर पाश्चात्य पण्डित विस्मित हुए थे। अथोथिस्ने एक प्रकारके केशवर्द्धन तेलकी सृष्टि की थी और अस्त्रचिकित्सामें भी अद्भुत निपुणता दिखलाई थी।

थिनाइटवंशीय चतुर्थ राजा यूनेफेसके राजत्वकालमें मिस्रमें एक वहुत बड़ा अकाल पड़ा था। इसमें वहुत आदमी मर गये। उनके समयमें कोचोम (Kochome) नगरमें सबसे पहले पिरामिड़ तय्यार हुआ। इसी समय स्त्रियोंके राज्याधिकारको न्याय संगत स्वीकार कर इसे राजकीय कानूनोंमें मिला दिया गया। प्रथम वंशके राजत्वकालमें ही सभ्यताका (पूर्ण अंग हो) यथासम्भव विकाश हुआ था। दूसरे फारोंके राजत्वकालमें साहित्यविज्ञानकी आलोचना आरम्भ हुई। चतुर्थ फारो उयेनफेसके राजत्वकालमें सक्काराका पहला पिरामिड तय्यार हुआ। पञ्चम फारोंके राजत्वकालमें दर्शनशास्त्रकी उन्नति हुई और देवदेवीकी पूजा पद्धति श्राद्ध-तत्त्वादि विषयक व्यवस्थाशास्त्र संगृहीत हुआ। आत्माका विनाश नहीं है यह मत उसी समय प्रचलित हुआ था।

तृतीय वंशसे चतुर्थ वंशके अन्त तक मिस्रके बड़े बड़े कई पिरामिड तैयार हुए थे। इसीलिये इस समयको पिरामिड-युग कहते हैं। तृतीय वंशके दूसरे राजाने चिकित्साके शास्त्रमें इतनी उन्नति की थी, कि उस समयके लोग उसको Esculapius या धन्वन्तरी कहते थे। इसी समय बड़े बड़े जहाज तैयार हुए थे और वाणिज्यके लिये नाना देशोंमें आते जाते थे। शिल्पविद्या और वस्तु-शिल्प तथा स्थापत्यने बड़ी उन्नति की। सब विषयोंमें साम्राज्यके वाहरी और भीतरी वैभवकी वृद्धि हुई।

इस युगमें मिस्रदेश शतरंग खेलना जानता था। चतुर्थवंशके राजा खुफुके राजत्वकालमें सर्वोच्च पिरामिड निर्म्मित हुआ। इसी समय ६४ अध्यायोंसे पूर्ण एक धर्मपुस्तक लिखी गई। इसी तरह प्रथम वंशसे दशम वंशके राजत्वकाल तक अर्थात् २००० वर्षों तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्र सब तरहके ऐश्वर्य्यसे विभूषित हो चुका था। इसके बाद कुछ समय तक मिस्रने कुछ भी उन्नति नहीं की। इसके बाद मिल्लवंशीय राजाओंके सिंहासनारूढ़ होने पर मिस्रकी फिर उन्नति होने लगी। तृतीय आमेनहातके राजत्वकालमें वर्त्तमान अलेकजेण्ड्रिया नगरके निकट मारिस झील (Maris Lake) खोदी गई। इस झीलसे नीलनदकी पथ-प्रणालीका संयोग था। इसके समान बड़ा बनावटी जलाशय पृथ्वीमें कहीं भी न था। आमेनहातने इस झीलमें एक अजीब गोरखधन्धेकी सृष्टि की थी। यह मिस्रकी अतीत कीर्त्तिका एक उज्ज्वल नमूना है। यहां प्राचीन मिस्र साम्राज्यके प्राचीन राजाओंका विशेष वर्णन करना कठिन है। संक्षेपमें यह कहा जा सकता है, कि मिस्रके सम्राट्ने बहुत दूर तक अपना राज्य विस्तार किया था। फिनकिया, बाबिलन, आसीरिया आदि प्रसिद्ध और पराक्रान्त प्राचीन साम्राज्य भी उन्होंने हस्तगत कर लिया था। इसके बाद आसीरियाका राजवंश कुछ काल तक मिस्रके सिंहासन पर बैठा। इसी समयसे विदेशी जातिके संसर्गसे मिश्रके राजाओंकी नीतिरीति कुछ कुछ बदलने लगी।

मिस्रका राजवंश ५००० वर्ष स्वाधीन भावसे राजत्व करनेके बाद ३४० वर्ष ईसासे पहले फारसके राजा दरायुस द्वारा पराजित हुआ।

राज-वंशावली।

१ला वंश। राजधानी थिनिस् थी, राज्यकाल (५७०४ वष ई० पू० ५४५१)-२५३ वर्ष था।

१। मेना।
२। तेता या अथोथिस।
३। आतेथ।
४। आता।
५। हेसेप्तो।
६। मेरिबा।
७। सेमेपसेस।
८। कुइबे। (मेनावंशके ये आठ राजाओंने राजत्व किया। थिनिसमें उनकी राजधानी थी)

२रा वंश। राजधानी थिनीस। राज्यकाल—(ई०से पू० ५४५१-५१४६) ३०२ वर्ष।

९। बेतो।
१०। काकौ।
११। बेन्नोतार।
१२। औतनेस।
१३। सेन्तो।

३रा राजवंश। राजधानी मेम्फिस्। राज्यकाल। (ईसासे पहले ५१०६ ४६२५)—२१४ वर्ष।

१४। ताती।
१५। नवका।
१६। सरसा।
१७। तेता।
१८। सेतेस्।
१९। नेफेरकारा।
२०। सेनेफेरु।

४थे वंशमें पांच राजे। राजधानी मेसफिस। राज्यकाल (ई०से पू० ४६३५-५६५१)—२८४ वर्ष।

२१। खुफु।
२२। तेतेफ्रा।
२३। मैनकौरा।
२४। खाफ्रा।
२५। असिसकाफ।

५वें वंशमें १० राजे। राजधानी मेमफिस्। राज्यकाल (ई०से पू० ४६६०-४४०३)—२४८ वर्ष।

२६। उसेरकाफ।
२७। सेहुरा।
२८। काका।
२९। नेफरकारा।
३०। उसरेनरा।
३१। मेनकौहर।
३२। तेतकारा।
३३। उनास्।
३४। आहतेस्।
३५। आकौहर।

६ठें वंशमें ७ राजे। राजधानी पलिफेण्टोनिस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(या हस्तिना) राज्यकाल (ई०से पू० ४४०३-४२००) २०३ वर्ष ।

३६ । तेता ।
३७ । उसेरकारातो ।
३८ । मेरीरापेपी ।
३९ । मेरेनरा मेन्तुहोतेप ।
४० । नेतेरकारा ।
४१ । मेरेनरा तेतेमसाफ ।
४२ । नेतेरकारा ।

७वें ८वें वंशमें १६ राजे । राजधानी मेमफिस । राज्यकाल (ई०से पू० ४२००-३५००) ७०० वर्ष ।

४३ । मेनकाकारा ।
४४ । नेफेरकारा ।
४५ । नेफेरकारा नेवी ।
४६ । तेतकारासेमा ।
४७ । नेफेकारा खेन्तुरे
४८ । मेरेनहर ।
४९ । सेनेफेका ।
५० । एनकारा ।
५१ । नेफेरकारा तरेल ।
५२ । नेफेरकाहर ।
५३ । सेनफर्का अन्नू ।
५४ । नेनेफर्कारा पेपिसेसेनेब ।
५५ । कौरा ।
५६ । नेफेरकौरा ।
५७ । नेफेरकौहर ।
५८ । नेफेरकारा ।

९वें वंशकी राजाधानी हेराक्लियुपोलिस ।

इस वंशके फारोंके नाम नहीं मिलते, किन्तु स्मृति स्तम्भोंसे मालूम होता है, कि इस वंशने २४२ वर्ष तक राजत्व किया था ।

१०वें, ११वें और १२वें राजवंशोंकी राजधानी हेराक्लियो पोलिस और थीवस राज्यकाल (ई०सं पू० ३३५८-३०६४)-२९४ वर्ष ।

५९ । आन्तेफ ।
६० । मेन्तु होतेप ।
६१ । नेबखेरा ।
६२ । शङ्कारा ।
६३ । (१ला) अमेनहात ।
६४ । (१ला) उसेरतेसेस् ।
६५ । (२रा) अमेनहात ।
६६ । (३रा) उसेरतेसस ।
६७ । (३रा) उसरतेसेम् ।
६८ । (३रा) अमेनहात ।
६९ । (४था) अमेनहात ।
७० । रानोसेवेक नेफसरा ।

१३वें राजवंशकी राजधानी थीरस राज्यकाल (ई० से पू० २८५१-२२२४) ६५७ वर्ष । इस राजवंशके केवल दो राजाओंके नाम मिलते हैं ।

७१ । सेवक होतेप ।
७२ । स्मेङ्कारा ।

१४वें राजवंश राजधानी क्षाइस (Xofs) इस वंशमें ७६ राजाओंने ५८५ वर्षों तक राज्य किया था । उनके नाम सब नहीं दिये जाते । १५वें, १६वें और १७वें वंशने (ई० से पू० २२२४-१७०२) एकत्र ५२१ राजत्व किया । १५वें राजवंशकी राजधानी तानिस् मेम्फिस थी ।

१४७ । सलातीस ।
१४८ । बिउन ।
१४९ । अपखनस ।
१५० । अपोफिस ।
१५१ जोनियस ।
१५२ आसिस ।

इस वंशके राजे हिकस्स (Hyksos or Sepherd king) या मेषपालक राजा कहे गये हैं ।

१६वें राजवंश—१० राजाओंनेराज़त्व किया, इनमें १७३वां राजा नूतवी (Nutbf) प्रसिद्ध था ।

१७वें वंशमें तीन राजाओंने राजत्व किया ।

१७४ । सेतोपोथी ।
१७५ । सेतनेतनि ।
१७६ । अपेपी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद ३ स्वदेश प्रेमिक सामन्त थीब्सने राज्य किया था।

१६८। सेककेनेनरा ता।

१६९। ...

१७०। ...

१८वां राजवंश—राजधानी थीवस। राययकाल (ई० से पू० १६०३-१४६२) २४१ वर्ष।

१७१ (१ला) आहमेष।

१७२ (१ला) अमेने होतेप।

१७३। (१ला) टथमेष।

१७४। हतासु।

१७५। (२रा) टथमेष।

१७६। (३रा) „

१७७। (२रा) अमेने होतेप।

१७८। (४था) टथमेष।

१७९। (३रा) अमेने होतेप।

१८०। (४था) अमेने होतेप।

१८१। सा नेख्त।

१८२। तुताङ्क मेन।

१८३। आई।

१८४। होरेम हेब।

१९वां राजवंश—राजधानी थीवस्। राज्यकाल (ई०से पू० १४६२-१२८८)—१७४ वर्ष।

१८५। (१ला) रामेसस्।

१८६। (१ला) सेती।

१८७। (२रा) रामेसस्।

१८८। (१ला) मेरेनप्ता।

१८९। (२रा) सेती।

१९०। मेरेनप्ता।

१९१। अमेन मेसेस्।

१९२। सिप्ता।

१९३। सेत नेख्त।

२०वें राजवंशकी राजधानी थीब्स, राज्यकाल (ई०से पू० १२८८-१११०)—१७८ वर्ष। इस वंशमें १३ रामेसेसोंने राजत्व किया। (Rameses III to Ramescs XII.)

२१वें राजवंशमें—पुरोहित-राजे। राजधानी थीवस् और तानिस। राज्यकाल—(ई०से पू० १११०-९८०) १३० वर्ष।

२०४। हेरहर।

२०५। (१ला) पिनोतम।

२०६। (२रा) „

२०७। (१ला) पिसेव खाँ।

२०८। (२रा) पिसेव खाँ

२२वें राजवंशकी राजधानी बुबास्थेस (Bubasthes) राज्यकाल ई०से पू० ९८०-८१०।

प्रायः २२० स्वदेशीय स्वाधीन राजाओंने ४५०० वर्ष तक मिस् पर राजत्व किया। इसके बाद ईसाके पूर्व ९८०ई०में असीरीय राजाओंने प्रबलता लाभ कर मिस् पर अधिकार किया।

प्रथम असीरीय राजवंश।

(१ला) शेषेङ्क (शशाङ्क ?)

(१ला) उषार्केन (उषार्क ?)

(१ला) तकेलाथ।

(२रा) उषार्केन।

(२रा) शेषेङ्क।

(२रा) तकेलाथ।

(२रा) शेषेङ्क।

पिमाई

४था शेषङ्क।

२३वें राजवंशकी राजधानी तानीस। राज्यकाल (ई०से पू० ८१०-७२१) ८९ वर्ष।

पेतुवास्त।

उषार्केन।

सेमौथ।

२४वें राजवंशकी राजधानी सेस और मेसफिस राज्यकाल ई०से पू० ७२१-७१५।

बच्छोरिव।

२५वां राजवंश—इथियोपोय राजे। राज्यकाल (ई०से पू० ७१५-६६५)-५० वर्ष।

इसी समय यानी ७१५ ई०से ५० वर्षमें इथियोपोय जातिने प्रबल हो कर मिस्र पर आक्रमण किया। इस जातिके राजाओंके नाम इस तरह हैं,—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पियाखी !
नूत मेरामेन्।
तीर्थ।
रुतामेन।
२६वां राजवंश—राजधानी सैस्। राज्यकाल (ई०से पू० ६६५-५२७)-१३८ वर्ष।
१ला सेमेथेक।
नेकौ।
२रा सेमेथेक।
आप्रिस या होफरा।
अमसेस।
३रा सेमेथेक। (*Psemethek III*) इसी समय प्रबल पराक्रान्त फारसके राजाओंने मिस्र पर अधिकार किया।

२७वां राज्यवंश—पहला पारस्य राजवंश। राज्यकाल (ई०से पू० ५२७-४०६) १२१ वर्ष।
काम्बयसेस।
१ला दरायुस्।
१ला जरक्सेस्।
२रा „
शक्दीयानस्।
२रा दरायुस।

२८वां राजवंश—राज्यकाल (ई०से पू० ४०६-३९९) ७ वर्ष। अमर्त्तयास (Amyrtaeus)

२९वां राजवंश—राजधानी मेण्डीस। राज्यकाल (ई०से पू० ३९९-३७८) २१ वर्ष।
नेफाराइटिस्
आकोरिस।
सिमौत।
नेफोरोत।

३०वां राजवंश—सेबेन्नितस् (Sebennytos) राज्यकाल (ई०से पू० ३७८-३३०) ३८ वर्ष।
नेक्थोरेब।
टेथेरे या तियस।
नेकथानेब।

३१वां राजवंश—फारसका दूसरा आक्रमण। (ईसासे पूर्व ३४० वर्ष।)
३रा आर्त्त-जरकसेस।
आर्सानेस।
३रा दरायुस।

इसके बाद मिस्र रोमक और यूनानी राजाओंके हाथ आया। फारसका दूसरा राजवंश यूनानी वीर दिग्विजयी सिकन्दर द्वारा पराजित हुआ था। (ई०से पू० ३३३ वर्ष) सिकन्दरने मिस्रको यूनानके अधीन कर अपनी विजय कहानी चिरस्मरणीय करनेके लिये भूमध्य-सागरके किनारे अलेकजण्ड्रिया नगरीका निर्माण किया था। इनके दस वर्ष राज्य करनेके बाद (ईसासे पूर्व ३२३) टलेमी मिस्रका राजा हुआ। इसके बाद १० यूनानी राजाओंने ३०० वर्ष तक मिस्रका शासन किया था। पीछे ईसाके जन्मसे ५१ वर्ष पहले टलेमी आरमटीस (यह अन्तिम टलेमी हैं)-की बहन क्लिउपेट्राने मिस्रके सिंहासन पर आरोहण किया। ये भुवनमोहिनी सुन्दरी थी और अपने सहोदर टलेमी दिउनिसियाससे व्याही गई थी। दोनों (भाई बहन) पती-पत्नी रूपसे दम्पति बन कर मिस्रका राज्य करते थे। पीछे दोनोंमें मनोमालिन्य हो गया। इससे क्लिउपेट्रा सिजरके साहाय्यसे भाई और पति दिउनिसियसको युद्धमें पराजित कर स्वयं सिंहासन पर बैठ गईं।

इसी समय मिस्र रोमके हाथ आया। रोमवालोंने ७०० वर्ष तक राज्य किया। पीछे ६४० ई०में महम्मदके उत्तराधिकारी २रे खलीफा उमरने रोमियोंके हाथसे मिस्रको छीन लिया। इसीने अलेकजेण्ड्रियाके विशाल पुस्तकागारमें आग लगा दी थी। इसको गजनीका महमूद भी कह सकते हैं। क्योंकि इसीने मिस्रकी प्राचीन कीर्त्तियोंके स्तम्भको नष्ट किया था। इसने ३६००० सुन्दर नगर और नाना शिल्प-नैपुण्यसे अलंकृत ४००० प्राचीन धर्म-मन्दिरोंको ढाह दिया था।

उमरके वंशजोंने ५०० वर्षों तक मिस्रका राजत्व किया।

पीछे ११७१ ई०में कुर्दीस-वंशीय युसुफ सालादिनने उमरवंशके अन्तिम राजा नूरउद्दीनकी मृत्युके बाद सिंहासन पर आरोहण किया।

इसके बाद ममेलुक-वंशीय राजोंने १२५० ई०में मिस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और अफ्रिकाके अधिकांश भाग पर अधिकार कर मिस्र का सिंहासन ग्रहण किया। इस वंशने ३०० वर्ष तक राजत्व किया। इसके बाद तुर्क-सम्राट् सलीमतने मिस्र पर अधिकार किया। इस समयसे कोई १०० वर्ष तक मिस्रमें घोर अराजकता फैली रही। पीछे तुर्क-सम्राट्के सेनापति हुसेन अली सन् १७४६ ई०में प्रतिद्वन्द्वी पक्षको पराजित कर मिस्रमें तुर्की-शासन प्रचलित किया। इसके बाद नेपोलियन बोनापार्टकी अधिनायकतामें फ्रान्सीसियोंने सन् १७९८ ई०में मिस्र पर अधिकार किया।

सन् १८०२ ई०में अंगरेजोंने फ्रान्सिसीयोंको भगा कर मिस्र पर अधिकार किया। इस समय महम्मद अलोने अंगरेजोंको सहायता दे कर फ्रान्सीसियोंके साथ युद्ध किया। महम्मद अली पहले एक दुकान पर आटा चावल बेचते थे। पीछे सैन्यमें भर्त्ती हो कर थोड़े ही दिनमें सेनापति हो गये। सन् १८०२ ई०में युद्धमें मुहम्मद अलोने अङ्गरेजोंका पक्ष लिया था। क्रमसे उनकी रागलोलुपता बढ़ती गई। वे अपने पराक्रमके प्रभावसे शीघ्र ही सर्वप्रिय हो उठे। पीछे मामेलुक-वंशीय भूतपूर्व राजवंशके साथ मित्रता कर उन्होंने उनके खोये हुए राज्यको पुनः लौटा देना चाहा। उनके बाहुबलसे मामेलुकवंशीयगण १८०६ ई०में मिस्रके सुलतान और महम्मद सुलतान द्वारा सन् १८०६ ई०में कायरोके पाशा या शासनकर्त्ता नियुक्त हुए। दूसरे ही वर्ष अपनी कार्यदक्षताके गुणसे वे अलेकजेण्ड्रियाके भी शासक बन गये।

क्रमशः उन्होंने उच्च पद पा कर सिंहासनकी ओर दृष्टिपात किया और १८११ ई०में ४७० मामेलुक-वंशीय भले आदमियोंको अपने राजभवनमें आमन्त्रित कर घोर नृशंसताके साथ उनका वध किया। इसके बाद बाकी १२०० सौ भले आदमियोंको भी मार कर मिस्रके अद्वितीय अधीश्वर बन गये और चारों ओर अपना राज्य विस्तार किया।

जिस समय युनानने तुर्कोंकी अधीनताकी शृङ्खला (जञ्जीर) तोड़नेके लिये तुर्क-सम्राट्के विरुद्ध सर उठाया था, उस समय महम्मद अलीने तुर्कोंकी ओरसे यूनानके विरुद्ध १६३ जङ्गी जहाज भेजे थे। किन्तु इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और रूसने यूनानको सहायता कर इन जङ्गी जहाजोंका सत्यानाश कर दिया।

महम्मद अलीकी राज्यलिप्सा इतनी अधिक बढ़ी, कि उसने तुर्कीके सिरिया-राज्य पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद तुर्क-सम्राट् २रे महम्मदने ५ यूरोपीय नरपतियोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की।

अन्तमें महम्मद अली यूरोपीय शक्तियोंसे पराजित हो कर शान्त भावसे मिस्रका राज्य करने लगा। यूरोपीय पांच पराक्रान्त राजाओंने उसको मिस्रका स्वाधीन राजा स्वीकार कर लिया। महम्मदने १८४८ ई०में अपने पुत्र इब्राहिमको राज्य-भार सौंप कर अवसर ले लिया। किन्तु इब्राहिमकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। इससे उसका पुत्र महम्मदका पौत्र अब्बास पाशा मिस्रके सिंहासन पर बैठा।

महम्मद ८० वर्षकी उम्रमें सन् १८४९ ई०को परलोक सिधारा।

१९वीं शताब्दीका इतिहास महम्मद अलीके साथ दृढ़ सम्बन्ध रखता है। उसके शासनकालसे ही वर्त्तमान मिस्रकी श्रीवृद्धि हुई है। महम्मदने यूरोपीय ढंगकी शासन-शृङ्खलाको स्थान दिया था। महम्मदके वंशधर उसीके बताये मार्ग पर चलने लगे। कृषि, वाणिज्य, शिल्प आदि सब विषयोंमें ही मिस्र दिनों दिन उन्नत कर रहा है।

सन् १८५४ ई०में अब्बास पाशाकी मृत्युके बाद महम्मद अलीका चौथा पुत्र सैयदपाशा मिस्रके राजसिंहासन पर बैठा। उसीने पिताकी तरह राज्यकी श्रीवृद्धि करनेके लिये यथेष्ट चेष्टा करना आरम्भ किया और सुएज नहर खुदवानेकी आज्ञा दी थी। सन् १८६३ ई०में उनकी मृत्यु होने पर उनका भतीजा इस्माइल पाशा मिस्रके सिंहासन पर बैठे। उसके सुशृङ्खल शासनसे मिस्रमें नये युगका आविर्भाव हुआ है। राज्यके सारे विभागोंको उसने शिक्षा और सभ्यताके संस्कारसे परिमार्जित किया है और उसकी विलक्षणतासे शासन-प्रणालीकी सर्वांगीन उन्नति साधित हुई है। उसने सन् १८७१ ई०में यूरोपीय विचार-प्रणालीका अनुसरण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर कई बिचारालय स्थापित किये। दक्षिणमें बहुत दूर तक राज्यका विस्तार हुआ। सन १८७७ ई०में इस्माइलने अङ्गरेजोंके साथ परामर्श कर दासत्व-प्रथाको उठा देनेके लिये प्राणपणसे प्रयत्न किया। मूल बात है, कि उसके राजत्वकालमें मिस्रने हर तरहकी उन्नति की।

व्यवहार-शास्त्र और शासन-प्रणाली।

मिष्टर चाबास (*M. Chabas*)-ने मिस्रके प्राचीन विचारको वर्णना की है। फारोगण (*Pharoah*)-के शासनकालमें मिस्रमें राजतन्त्र-प्रणाली प्रचलित थी। २रे वंशके राजत्वकालमें यह कानून बना कि स्त्रियां भी राजत्व कर सकेंगी। इसके बाद स्त्रियोंने मिस्रका राज्यसिंहासन लाभ किया; किन्तु इसमें कुछ विशेष सफलता न होती देख १९वें वंशके राजत्वकालमें स्त्रियोंकी उत्तराधिकारिताको अनिष्ट-जनक बता कानून रद कर दिया गया। इस समय राजवंशमें शेम-नाइट (Shemnite)-का प्रभाव दिखाई दिया। राजे यथेच्छाचारी न थे। स्वायत्तशासन सर्वत्र ही प्रचलित था। सब नगरोंमें म्युनिस्पलिटियां अपने अपने विभाग-का कार्य सम्पादन करती थीं। राज्यके प्रत्येक विभागमें बिचारालय होनेसे राजकर्मचारी विचार-व्यवस्था कर शान्तिस्थापनमें जरा भी कसर नहीं रखते थे। किसी किसी जगह जूरी-प्रथाकी भी गन्ध मिलती है। उस समय अच्छी तरह जांच पड़ताल न कर राजाका हुक्म सुनाया न जाता था। सामाजिक सम्मानमें पुरोहित ही अधिक सम्मान पाते थे। ये जङ्गलमें कुटि बना कर दर्शनशास्त्रकी आलोचना किया करते थे।

असीरीय और बाबिलिनयोंकी शासन-प्रणालीके साथ मिस्रकी शासन-प्रणालीकी समानता दिखाई देती है। फिर कानूनभी एक-से नहीं हैं। प्राचीन स्मृतिस्तम्भोंके लेखोंके पढ़नेसे मालूम होता है, कि वहांके राजे पुत्र, पौत्रादि क्रमसे सिंहासन पर बैठते थे। किन्तु १८वें और २०वें वंशके राजत्वकालमें राज-वंशके उत्तराधिकारीके सम्बन्धमें व्यतिक्रम दिखाई देता है। सिवा इनके अन्यान्य सभी वंशके राजत्वकालमें राजा ही सर्वमय कर्त्ता थे। प्रकृतिपुञ्जका शुभाशुभ उनकी इच्छा पर ही निर्भर करता था। राजा प्रजाके लिये परमदेवता माना जाता था और देववंशसम्भूत समझा जाता था। ऐतिहासिकोंका कहना है, कि इस स्वेच्छाचारी शासनसे ही मिस्रकी अवनति हुई। राजा द्वारा चुने हुए बिचारक (जज) बिचारका कार्य (फैसला) किया करते थे। किसी सन्देह-जनक अपराधका अनुसन्धान गुप्तचरोंसे करा कर उसका विचार या फैसला दिया जाता था। किसी किसी जगह (Commission)-समिति संगठित होती थी। गवाहोंकी गवाही लिखी जाती थी। इसके लिये लेखक बिचारकोंके साथ साथ घूमते थे। आईन कानून जाननेवाले व्यक्ति वंशानुक्रमसे बिचारक बनाये जाते थे। दूसरा कोई बिचारक नहीं हो सकता था। बिचारका फलाफल लिपिबद्ध किया जाता था। बिचार-प्रणाली और दण्डाज्ञा लिखी जाती थी और राजाके पास भेजी जाती थी। अपराधीको कसम दिला कर उसका बयान लिया जाता था। शास्ति उतनी कठोर न थी। उत्तेजनाके कारणके सिवा नर-हत्या करनेसे अपराधीको प्राणदण्ड दिया जाता था। चोरी और व्यभिचारके लिये खूब कठोर दण्ड-विधान होता था। व्यभिचारीको निर्वासित किया जाता था। देवस्वको चोरी करनेवाला कभी कभी प्राण-दण्ड भी पा जाता था। ऋणके सम्बन्धमें कोई खास कानून नहीं था। भूमिके सम्बन्धमें या प्रजा-सत्वके विषयमें कोई भी कानून आज तक नहीं देखी जाती। देवोत्तर-सम्पत्ति चिरस्थायी रूपसे कर-रहित थी। थिबकेस धर्म्माधिकरणमें प्रधान बिचारकके सिवा ६ और धर्माधिकारी या बिचारक थे।

सैन्यबल।

प्राचीन मिस्रके युद्धके विषयमें बहुत बातें जानी जा सकती हैं। स्वदेशी और विदेशी लोगों द्वारा सेनायें संगृहीत होती थीं। योद्धाओंकी एक स्वतन्त्र जाति थीं। प्रायः उनके कई आचरण क्षत्रियोंके जैसे थे। सैन्योंको जागीर दी जाती थी। सैन्यके दो विभाग थे:—रथारोही और पैदल। रथ दो घोड़ोंसे परिचालित होता था। सारथी रथ चलाता था और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योद्धा रथारूढ़ हो धनुषबाण ले कर युद्ध करता था। पैदल नाना तरहके अस्त्र-शस्त्रोंसे सज्जित हो कर युद्ध करते थे। इनमें धनुषबाण और तलवार, भाला, बरछा और कुठार आदि प्रधान अस्त्र थे। शिकारमें सूक्ष्माग्र-आग्नेय शिलाखण्डका व्यवहार होता था। सेनायें युद्धक्षेत्रमें नाना तरहके व्यूहाकारमें सुसज्जित होती थीं।

रीति-नीति।

उत्कीर्ण शिलालेखों और प्राचीन पत्रोंमें (Hieratic papyri) प्राचीन मिस्रवासियोंका गार्हस्थ्य-जीवन स्पष्टरूपसे अङ्कित है। जिस शिक्षासे पौरुष-महिमाका यथार्थ विकाश होता था, विद्यालयोंमें उसी तरहकी शिक्षायें दी जाती थीं। जो परीक्षामें उत्तीर्ण होते थे, वे राज्यके उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किये जाते थे। बाल्य-कालमें सुन्नी-प्रथा प्रचलित थी। किन्तु वह धर्मका अनु-ष्ठान नहीं समझी जाती थी, स्त्रियोंका प्राधान्य था। वे याजक और पुरोहितोंके आसन पर बैठ सकती थीं और पुरुषोंके समानाधिकारको प्राप्त हो कर सांसारिक जीवनके बहुतसे कामोंमें भाग लेती थीं। पुरुष एक पत्नी रखते थे। स्त्री ही घरकी मालकिन रहती थी। उस समय भी उपपति और उपपत्नीका व्यवहार जारी था।

७००० वर्ष पहले वर्त्तमान सभ्य-समाजकी तरह मिस्रमें स्त्री-स्वाधीनता थी। जातिभेद भी कुछ कुछ था ही। हिरोदोतस, दिउदोरास और प्लेटोके मतसे जातिभेद प्रचलित था। गुण-कर्म-विभागके अनुसार सात जातियों-की सृष्टि हुई थी। पीछे ये पांच जातियां रह गईं, पौरोहित्य, योद्धा, कृषक, शिल्पी और पशुपालक या सेवक। भारतीय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, इन चार वर्णोंके अनुसरणसे ही सम्भवतः उनकी जातियां कायम हुई थीं, एक जातिके साथ दूसरी जातिका विवाह होता न था। पुत्र पिताके दिखाये हुए पथका अनुसरण किया करता था। पौरोहित्य या ब्राह्मण-शास्त्रकी सृष्टि करते थे। पुरोहित विचारकके पद पर भी नियुक्त किये जाते थे।

राजाओंके यहां पटरानियोंके सिवा विलासिनी स्त्रियोंका अभाव न रहता था। परिवारके सभी व्यक्ति एकान्नभोजी थे। जीविकार्जनके लिये जो काम किया जाता था, वह कर्म, जातिभेद और पुरुषानुक्रमसे किया जाता था। दरिद्र प्रजा अपने दुःखोंको राजाके समीप कह सकती थी। वैदेशिकोंके प्रति विजातीय घृणा इनकी कम न थी। शिल्प-व्यवसायी उच्चवर्णका आदर नहीं पाते थे। और तो क्या, बढ़ई और चित्रकार भी निम्न श्रेणीमें गिने जाते थे। बड़े आदमी श्रमसाध्य कार्योंसे घृणा करते थे। पुरोहित-सम्प्रदाय वर्णगुरु थे। वे यजन, याजन, अध्ययन और अध्यापन करते थे।

राजकीय कर्मचारीगण उच्च वर्णोंसे लिये जाते थे। विज्ञानविदोंकी उच्च श्रेणीमें गिनती होती थी। सेवक-सम्प्रदाय श्रमजीवियोंसे अधिक आदर पाते थे। युद्धमें पकड़े गये कैदी गुलाम बनाये जाते थे।

शैलमय स्मृति-स्तम्भके गात्रमें मिस्री गार्हस्थ्य जीवनका उज्ज्वल चित्र अङ्कित है। धनाढ्य व्यक्ति प्रायः विलास सागरमें निमग्न रहते थे। किन्तु वे भोज-समारम्भ बड़े उत्सवके साथ करते थे। गृहस्थ और गृहिणी एकासन पर बैठ सकती थी। सब निम-न्त्रित व्यक्ति अपनी स्त्रियोंके साथ भोज-समारम्भमें उपस्थित होते थे। दम्पतीके लिये एकत्र दो कुर्सियां (Chair) और अविवाहित पुरुषोंके लिये एक एक आसन रखा जाता था। सम्भ्रान्त व्यक्ति या भले आदमी कुर्सियों पर और साधारण व्यक्ति फर्श पर बैठते थे। प्रत्येक निमन्त्रित व्यक्ति और अभ्यागतके उपस्थित होते ही गृहस्वामीके सेवक उनके गलेमें पुष्पहार पह-नाते थे और कस्तूरीमिश्रित एक पद्मपुष्प उनके मस्तक या हस्तमें अर्पण करते थे। इसके बाद चारों ओर रखी कुर्सियोंके बीच मेज पर भोजन-सामग्री रख उनको ला कर वहां बैठाते और भोजन करनेका निवेदन करते थे। फल, मिष्टान्न, मांस, मद्य, मछली आदि अन्यान्य भोज्य-सामग्रीकी ढेर लगा दी जाती थी। गिलासमें मद्य ढाल कर रख दिया जाता था। भोजके पहले मधुरभाषिणी सौन्दर्यशालिनी युवती नर्त्तकियां विविधरूपसे नाच गान कर अभ्यागत व्यक्तियोंका मनोरञ्जन किया करती थीं।

नृत्य गीत आमोदका एक प्रधान अङ्ग समझा जाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

था। कहीं कहीं जमनाष्टिक (सर्कस) व्यायाम दिखलाया जाता था। धनशाली व्यक्ति कभी कभी शस्यश्यामल ग्राम्योद्यानमें जा कर प्रमोद-भवनमें प्राकृतिक दृश्यकी चमत्कारिताका उपभोग करते थे। कभी कभी पशुपाल अथवा कृषिकार्य द्वारा उत्पन्न शस्यों और शिल्पजात द्रव्योंको संग्रह कर वाणिज्य-व्यवसाय के लिये समुद्र-यात्रा करते थे। कभी वे कभी स्त्री-पुत्रके साथ नावों पर चढ़ कर दरियाई घोड़ोंके शिकारके लिये जल-यात्रा करते थे। ये कभी कभी जलचर पक्षियोंके विनाशके लिये धनुषबाण अथवा "सातनल" ले दल बांध कर शिकार खेलने जाते थे। कभी कभी तालाब की सीढ़ियों पर बैठ कर मछलीका शिकार करते थे। कभी कभी शिकारी कुत्तोंको ले कर बनमें हरिणोंके बच्चोंको पकड़ते फिरते थे।

धनशाली व्यक्तिमात्र ही दो घोड़ोंकी जोड़ी बग्घी रखते थे। वे स्वयं भी रथ चलाते थे।

धर्मतत्त्व।

पाश्चात्य प्रत्नतत्त्वविद् पण्डित-मण्डलीने गत ५० वर्षोंके अक्लान्त परिश्रमके बाद मिस्रके पुरातत्त्वकी आलोचना कर स्थिर किया है, कि मिस्रका धर्मतत्त्व आर्य ऋषियोंके वैदिक धर्मका रूपान्तरमात्र है। प्राचीन मिस्रवासियोंने सर्वशक्तिमान् एक विराट् विश्वस्रष्टाका अस्तित्व अनुभव किया था। शिलालेखोंसे जाना जाता है, कि उपनिषद्का ब्रह्मतत्त्व मिस्रवासियोंके हृदय पर अंकित था।

कई शताब्द पहले भारतवर्षमें गार्गी और नचिकेता, जनक और याज्ञवल्क्यने जिन रहस्यमय गूढ़ प्रश्नोंको हल करनेकी चेष्टा की थी, जो प्रश्न चिन्ताशील मानवचित्तका साधारण धर्म था, जिस प्रश्नके उत्तर देने में यमराजको भी आशंकित होना पड़ा था, जो प्रश्न मिथिला या मिस्र, बदरिकाश्रम या बाराणसी (काशी), बुगदाद या बरलिन, नवद्वीप (नदिया) या न्यूयार्क, लण्डन या लिपसिग, पारी या पाटलीपुत्र—सब स्थानों-में सब समयोंमें मनुष्योंके मनमें विस्मय समन्वत महा-रहस्यकी सृष्टि करता है। प्राचीन मिस्रके पुरोहितोंने भी उस नित्य नये और बहुत पुराने प्रश्नोंकी समस्या पूर्त्ति करनेकी चेष्टा की थी। वे कोलाहलमय नगरोंके दूरवर्त्ती स्थान पर्वतोंके कन्दरोंमें या किसी वननिकुञ्जमें शान्तिमय प्रकृतिकी गोदमें बैठ कर वैदिक ऋषियोंके सुरोंमें सुर मिला कर कहते हैं,—

"द्यावाभूमि जनयन् देव एक आस्ते
विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता।"

इस परिदृश्यमान जगत्का रचयिता कोई एक हैं। वही स्वर्गमर्त्यके विधाता हैं। वह स्वयम्भू स्वयम् प्रकाश और सर्वभूतोंमें अवस्थित है। उसी अनादि विधाताकी इच्छासे सृष्टि, स्थिति और लय हुआ करता है। वही मिस्रीय शास्त्रका आप्त (*Ptah*), यूनान और रोमका वलकान (Vulcan) या आर्य ऋषियोंका ब्रह्मा हैं। उसने सहस्रांशुसमप्रभ हेममय अण्डको सृष्टि की। (Creator of the cosmic egg) इसी अण्डसे इस विशाल विश्वकी सृष्टि हुई थी। इसी ब्रह्माण्डसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदिकी सृष्टि हुई। सूर्य ही विधाताका विराट् प्रतिनिधि है। अन्यान्य देव सूर्यके भिन्न भिन्न रूपान्तर हैं।

पाश्चात्य पण्डितोंका कहना है, कि मिस्री-धर्म पहले बैदिकभावमें अणुप्राणित हुआ था। पीछे निग्रो जातिके संबन्धसे बहुतेरे देवदेवियोंकी सृष्टि हुई। देवोंके ३ या ९ विभाग हैं। सूर्यके १२ समाज (द्वादशादित्य) हैं, पीछे अनेक देवदेवियां कल्पित हुई हैं। प्रत्येक मन्दिरमें देवगण, स्त्री, पुत्र या कन्या इन त्रिमूर्त्तियोंमें गठित हैं। कोई भी देवता अकेला नहीं रहते थे। मिस्रके प्रति नगरमें एक एक देवसमाज या प्रत्येक नगर ही किसी देवताके नामसे पुकारा जाता था। जैसे—अनहुर (Anhur), थिनिसेर, ओसिरिस (Osiris), आविडस (Abydos) और आप्त (Ptah) मेमफिस नगरके अधिष्ठातृ देवता थे। आप्त या वलकानके सङ्गिनीद्वय पस्त (*Pasht*) और वस्त (Basht)-को मिला कर इन तीनोंसे मेमफिस नगरका देवसमाज कल्पित हुआ था। रा (Ra)के अनहुर पुत्र थे। शु (Shu) और तेफनेट (Tefnet) अनहुरके भ्राता थे।

रा (Ra) यूनानियोंके सोल (Sol) या जुपिटर (Jupiter=द्यौष्पितर) है। देवसमाजके दो प्रधान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभाग थे। मेमफाइट समाज और थेवान समाज। सूर्यके आठवें समाजमें आठ देवता थे। आप्त (*Ptah*), रा (*Ra*), शु (Shu), सेव (seb), ओसिरिस् (Osiris), सेट या टाइफेन (Set or typhon) और होरास (Horus) इनमें अधिकांश ही सूर्य्यके भिन्न रूपान्तरमात्र थे। दूसरे समाजमें अमेन (*Amen*), मेन्थू (*Menthu*), आत्मू (Atmu), शु (Shu), सेव (Seb), ओसिरिस (Osiris), सेट (*Set*), होरस (*Horus*) और सेवेक। किसी किसी देवताकी आकृति मनुष्योंकी तरह थी। जैसे :—आप्त ओसिरिस आइसिस। कुछ देवताओंका शरीर मनुष्यकी तरह किन्तु मुख पशुकी तरह था।

रा या सूर्यका आकार मनुष्य जैसा है, किन्तु उसके मस्तक पर एक श्वेतपक्षी (Hawk) अपना पंख फैलाये हुए है। अर्थात् गरुड़ाग्रज अरुण सूर्यके सारथी-रूपसे रथ चला रहा है। उसके मस्तक पर सूर्य्यमण्डल-की परिधि विद्यमान था।

ओसिरिस (ये ग्रीस या यूनान और रोममें बाकास (Bachus) या सुरादेव रूपसे माने गये थे) जुपिटरके पुत्र थे। किन्तु पिताकी अपेक्षा पुत्रकी पूजा अधिकतर प्रचलित था। रा-का पुत्र ओसिरिस और कन्याका नाम आइसिस था। भाई बहनमें विवाहका सम्बन्ध था। अतएव आइसिस ओसिरिसकी बहन और स्त्री दोनों थीं। ये ही मिस्रवासियोंके प्रधान देवदेवी थे। मनुष्यके हितसाधन करनेके लिये अवनी-मण्डलमें अवतीर्ण हो इन्होंने सत्ययुगमें मिस्रदेशमें राजत्व किया। इन्होंने ही सबसे पहले सभ्यताका प्रदीप जलाया था और मनुष्योंको कृषि-वाणिज्यकी शिक्षा भी दी थी। उन्होंने मनुष्योंकी उन्नतिके लिये अपनी बहन और पत्नी आइसिसके हाथ मिस्रका शासन-भार सौंप कर यूरोप और एशियाके सब भागोंमें परिभ्रमण किया था। हर जगहमें उन्होंने ईश्वरकी पूजा प्रचलित कराई थी। उन्होंने ही जगत्में सबसे पहले ब्रह्मविद्याके गूढ़ रहस्यका प्रचार किया था। आइसिस स्वर्गमें जुपिटर रा (Ra)-की प्रण-यिनी थी। पीछे प्रणयकलहके कारण प्रणयीके अभि-शापसे उन्होंने गो-का रूप धारण किया। अन्तमें उन्होंने नारिमूर्त्ति धारण कर मिस्रमें ओसिरिसकी बहनके रूपमें जन्म ले कर ओसिरिसके साथ विवाह कर लिया। उन्हीं की साइप्रेसमें मिनास (Venus), एथेन्समें मिनार्भा (Minerva), फ्रिजियादेशमें (*Phrygians*) साइबिल (*Cybele*), इलिउसिया (*Elusia*) देशमें सिरिस (ceres), सिसिलीमें प्रसापाइन (Proserpine), क्रीतिद्वीपमें डायन (Diana), और रोममें बेलोना (Be-lona)-के रूपमें पूजा होती थी। वे विद्या-बुद्धिकी अधिष्ठात्री और शिल्प-विज्ञानकी जननी थी। उन्होंने इन्द्रजाल और जादूविद्याको प्रसव किया था। वे भाई बहन या स्वामी-स्त्रीके रूपमें पृथ्वीकी कल्याणकामनासे मनु-योंके ज्ञानराज्यके पथ-प्रदर्शक हुए।

किन्तु ओसिरिस और उनके भ्राता (किसीके मतसे पुत्र) टाइफन या सेटमें बहुत दिनोंसे शत्रुता चली आ रही थी। ओसिरिस जब देश-देशान्तरमें सभ्यताकी ज्योति फैला कर स्वदेश लौटे, तब टाइफनने कौशलसे उनका प्राणसंहार कर सैकड़ों टुकड़े कर एक बक्समें बन्द कर समुद्रमें फेंक दिया। आइसिसने समुद्र-गर्भसे उस बक्सको निकाल कर अपने मृत् पतिके कटे हुए टुकड़ेको जोड़ दिया और सञ्जीवनी विद्याके बलसे उनको जीवन प्रदान किया। पतिके वियोगमें आइसिसने जो अश्रु बहाया था उससे नीलनदको उत्पत्ति हुई। नीलनद आज भी मिस्रकी अधिष्ठात्रीदेवी आइसिस-के दुःखसे द्रवीभूत हो कल-कल नादसे छल-छल नेत्रों द्वारा हाहाकार करता रो रहा है। ओसिरिस पातालमें जा कर प्रेतात्माओंके विचारक (धर्मराज) हुए और उनकी पत्नी आइसिस पाताल जा कर पतिके साथ मिल गईं।

शास्त्रमें लिखा है, सूर्य अस्ताचल जा ओसिरिसकी गोदमें जा कर विश्राम करता है। मिस्रकी भाषामें इस तरहका वर्णन आया है, कि जिस किसीकी मृत्यु होती है, वह ओसिरिसकी गोदमें सो जाता है। यमदण्डकी तरह उसके हाथमें न्यायदण्ड विराजता रहता है और ओसरिसके मस्तक पर उष्ट्रपक्षीकी पंखोंसे बना एक सुन्दर मुकुट रहता है।

आइसिसके गोरूपके चिह्नस्वरूप आसनमें एक गोका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सींग दिखाई देता है। उनके शिर पर अर्द्ध चन्द्रकार मुकुट है। दाहिने हाथमें मृत् संजीवनी विद्या (Crux Ansatas), बायें हाथमें वल्कल या छालका बना (वल्कलमें पुस्तक लिखी जाती थी) एक ऐन्द्रजालिक विद्यादण्ड अर्थात् विद्याकी भुवनमोहिनी शक्ति "ऐन्द्रजालिक दण्ड" है और सञ्जीवनी विद्याके रूपमें चित्रित हुआ है।

उनके पुत्र होरास (Horus) थे। यह यूनानी देशके आपोलो (Apollo) देवता थे। टाइफेनके भयसे आइसिसने अपने पुत्र होरास (Horus)-का गुप्तरूपसे प्रतिपालन किया था। होरास यौवन-सीमामें पहुंच पितृघातकका विनाश करनेके लिये यत्न करने लगे। टाइफेन अन्धकारके देवता माने गये हैं। होरासने कुछ दिनोंके बाद पितृघातकको मार कर पितृहत्याका बदला चुकाया और पीछे सारे मिस्रदेशका परिभ्रमण कर सर्वत्र शिल्पविज्ञानका प्रचार किया था।

ओसिरिस, आयसिस और होरास यह तीनों मिस्रमें सार्वभौमिक रूपसे पूजा पाते थे। क्योंकि उन्होंने मनुष्योंके हितके लिये जीवन उत्सर्ग किया था।

आप्त (*Ptah*)-की पत्नी पस्त या सेखेट (*Pasht or Sekhet*) और उनके पुत्र नेफेरसतुम (*Nefertum*) इमहोतेप (*Imhotep*) या आमेनरा (Amenra) आदिसे त्रिमूर्त्तिकी सृष्टि हुई थी। यह फिनिकियामें पातैकोस् (*Pataikos*) नामसे प्रसिद्ध थे। आप्तकी दो प्रकारकी मूर्त्ति देखी जाती है। १ली मनुष्यमूर्त्ति, इसके मस्तक पर उज्ज्वल मुकुट, हाथमें संजीवनी विद्या और विश्वप्रसविता या सवितारूपसे भविष्यत् सृष्टिका मूलसूत्रज्ञापक चिह्न है, दूसरे हाथमें केशमण्डित राजदण्ड और गलेमें गलाबन्ध है। उनका पैर टेढा (कुशपा) है। दूसरी मूर्त्ति—छोटा कद, दो शिर और उनके मस्तक पर सञ्जीवनी विद्या विद्यमान है। अन्धकार और पापकी मूर्त्तिने एक घड़ियालको पैरसे मर्दन कर (अर्थात् सूर्य्यालोकसे अन्धकारका विनाश कर) जगत्में आलोकरश्मिको विस्तार किया है और हाथमें पाप मूर्त्ति दो भीषण सर्पके गलेको दबाये उन पर दण्डायमान हैं। ये ही ब्रह्माण्डके सृष्टिकर्त्ता थे।

सेखेत

उनकी पत्नी पास्त या सेखेट (Sekhet) सिंहवदना हैं। ये आप्त-पत्नी या सूर्यकी मरीचि-अर्थात् सूर्य्य किरणकी अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका मुंह सिंहकी तरह है। इनके मस्तक पर सूर्य्यमण्डलका गोलाकार परिधिस्वरूप मुकुट है। ये जगत्में ताप विस्तार करते हैं।

इनका पुत्र नेफेरतुम या इमहोतेप है। (यूनानके इमियोथेस Imiuthes या Esculapius नामसे परिचित थे) ये थिवस् नगरमें आमेन-रा नामसे पूजित हुए थे। अन्य मतसे ये दूसरे देवता थे। नीचे इनकी प्रतिकीर्त्ति दी गई है।

आमन-रा (सूर्य्यपुत्र)

इनके मस्तक पर सूर्यमण्डलका चिह्न और एक पद्मपुष्प है। इन्होंने मू (Mu = mother or matter) या जड़प्रकृति, निट या नट (Nit or nat = shuttle the menerva) और खूनसू (Khonsu = Force or Hercules)के साथ मिल कर—एक देवसंघ संगठन किया था।

जब ओसिरिसने शरीर त्याग किया, तब अनूप या अनुबीसने सुगन्ध भैषजके संयोगसे देहकी रक्षा की थी। आमेन-राकी माताका नाम मूत (Sut) था। अमेनराने माताके साथ विवाह किया था। इसलिये उन्हें का-मूत्फ (Ka-mutf or husband of his mother) मातृपति कहते थे। किसी किसी मूर्त्तिमें उनका मस्तक मेड़ेकी तरह है। (सच है, कि बकरेकी जातिके सिवा ऐसा जघन्य कर्म अन्य किसी जातिमें होना असम्भव है) इसका आध्यात्मिक अर्थ हम लोग कह नहीं सकते। इनके पुत्रका नाम खुनस (Khuns) है—इसके मस्तक पर चन्द्रकला सुशोभित हैं। उनकी केशराजि कौवेके पंखके समान (जुल्फी) दोनों पार्श्वमें लटक रही है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किन्तु उन्होंने आत्मविसर्जनके महामन्त्रकी शिक्षा नहीं दी। वहां साम्य, स्वाधीनता और साधारण स्वत्वाधिकारके प्रश्न पर बहुत वातचितण्डाके बाद यह निश्चित हुआ था, कि सहस्र सूर्यसमप्रभ हैमाण्डप्रसूत नरनारियोंमें कोई विषमता नहीं। मिस्रवासी स्त्री-जातिको साधारण सम्पत्ति समझते थे। भ्राता भगिनीका पतिपत्नीत्व समाजबन्धनका मूलमन्त्र था। वे केवल भोगको ही धर्म जानते थे, त्याग करना नहीं जानते थे, अर्जन करते थे किन्तु वर्जन नहीं करते थे। वहां मनु या याज्ञवल्क्यकी तरह मानवके मङ्गलमय विग्रह धर्मशास्त्र-की व्यवस्था देनेवाले भी नहीं थे। वहां धर्मकी ग्लानि और अधर्मका अभ्युत्थान हुआ था, कि तु साधुजनोंके बचाने और दुष्टोंके दमन करने अथवा धर्मकी संस्था-पनाके लिये विधातृ-शक्ति पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई न थी। इसीसे मिस्रमें सभ्यताका प्रवाह कालभेदसे परि-मार्जित हो कर पवित्र प्रणाली द्वारा प्रवाहित नहीं हो सका। इसीसे सभ्यत गर्वित पराक्रान्त तथा प्राचीन-तम मिस्र जाति अवनीमण्डलीसे लुप्त हो गई हैं। उसका आज पृथ्वी पर कोई सजीव नमूना रहने न पाया।

मिस्रियोंके पिरामिड या मम्मी आदि कीर्त्तिस्तम्भा-वली) अथवा शिल्पोद्यानकी प्रफुल्ल पुष्पराजि आज भी नूतन विकसित गुलाबके कमनीय सौन्दर्यसे यूरोपीय चित्रशाला उज्ज्वल हो रही है, किन्तु कपिल या कणाद, व्यास या वाल्मीकि, पाणिनि या पतञ्जलि, जैमिनि या याज्ञवल्क्य, शाक्यमुनि या शङ्कराचार्यकी तरह मनीषियों-की महनीय मानस-महिमा युगयुगान्तरसे देशदेशान्तरमें मनुष्योंके चित्तको आत्मोत्कर्षके उच्चतम सोपान पर अधिरोहण करानेमें समर्थ नहीं हुई। इसीसे कहते हैं, कि मिस्रकी प्राचीन सभ्यता बाह्यवैभवके विराट् आड-म्बरसे पूर्ण है। वहां चिन्तामणिका उज्ज्वल प्रकाश अन्ध-कारमय भविष्यतके राज्यमें किरण प्रदान कर न सका। पिछले समयमें मिस्रके पुरोहित राज्यभोगकी विलास लालसामें धर्मचिन्ताको परित्याग कर सस्त्रीक सिंहा सन पर बैठे थे। उन्होंने राजप्रासाद अथवा पिरामिड-के निकट बने रक्तमय मर्मर पत्थरके प्रमोद-भवनमें भोग वासनाकी परीतृप्ति की थी। किन्तु प्राचीन भारतके ऋषियोंने संसारके सभी प्रलोभनोंको पद-दलित कर भोग सुखकी तिलाञ्जलि दे नैमिषारण्य या बदरिकाश्रम-की शान्तिमय प्रकृतिकी गोदमें बैठ शास्त्रसमुद्रको मन्थन कर मनुष्यके लिये अमृत पैदा किया था। उनके उस अपार्थिव सुधासमुद्रमें तत्त्वजिज्ञासु मानवप्राण सदा अमृतपान कर सकेंगे।

मनु आदि भारतीय मुनि ऋषियोंने विवाह विज्ञानके गूढ़तत्त्वको समझ कर कालोपयोगी कल्याणकारी नियमोंको प्रवर्त्तित किया था। देश, काल और पात्र-भेदसे लोगोंने मनुके अनुशासनका पालन किया था। किन्तु मिस्रके किसी संस्कारकने लौकिक युगमें स्त्री-जातिकी पवित्रतारक्षाके लिये कोई व्यवस्था नहीं की। मिस्रके दैव और लौकिक युगकी रीतिनीति एक पथसे परिचालित हुई थी। किन्तु भारतीय व्यवस्था लौकिक युगमें कालोपयोगी नई प्रणालीसे प्रचलित हुई थी। इसी लिये हिन्दू जातिने लाखों वैदेशिक संघर्षोंके निदारुण प्रहारसे जर्जरित हो कर आज भी अपनी धार्मिक स्वत-न्त्रताकी रक्षा की है। किन्तु भारतीय सभ्यताकी शाखा मिस्रमें जो वर्द्धित हुआ था, वह समूल विनष्ट हुआ है।

जातीय और सामाजिक पवित्रताका अभाव ही मिस्र-वासियोंके अधःपतनका कारण हुआ था। सिकन्दरने मिस्र और भारत दोनों देशों पर आक्रमण किया था; किन्तु उस समयके वृत्तान्तोंको पढ़नेसे मिस्रवासियोंकी अपेक्षा भारतवासियोंको सहस्र गुना श्रेष्ठ कहा जा सकता है।

जहां भारतमें ब्रह्मचर्य और पवित्रता है, वहां मिस्रमें उच्छृङ्खलता और पापस्रोत है। स्त्री जाति ही पवित्रता-रक्षाकी मुख्यपात्र है। स्त्रीचरित्रमें व्यभिचारके स्पर्श करनेसे शीघ्र ही समाजतरु जड़से उखड़ जाता है। यही कारण है, कि मिस्रकी प्राचीन जातियोंका आज संसार-में नामोनिशान दिखाई नहीं देता। मिस्रकी सभ्यताकी आलोचना करनेसे दिखाई देता है, कि वहांकी सभ्यता दूसरे देशकी है। आर्योंने जब प्राचीनतम मिस्रदेशमें उपनिवेश स्थापित किया था, तब स्वर्ग और नरकका चित्रमात्र उनको मालूम था, किन्तु उन्होंने स्वर्गारोहणके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये किसी तरहकी सीढ़ी नहीं बनाई। साधारणको यागयज्ञ या धारणाके अनुष्ठानके पथका पथिक न बनाया। मुक्तिके लिये उन्होंने कोई पथका निर्देश नहीं किया। वे आत्माकी अमरताको स्वीकार करते थे। किन्तु शरीरकी नश्वरता वे नहीं मानते थे। सब देशोंके असभ्योंमें समाधि-प्रथा दिखाई देती है। मालूम होता है, कि उपनिविष्ट आर्योंने संसर्गके दोषसे असभ्योंकी समाधि-प्रथा ले ली थी। किन्तु पूर्वपुरुष आत्माकी अमरताकी बात नहीं भूल सके। वे कभी भी शरीरके साथ जीवात्माके पृथक् भावको हृदयङ्गम नहीं कर सके। पुरोहित मन्त्र तन्त्रकी सृष्टि कर प्रेतात्माको परिशुद्ध करके स्वर्गमें भेज देते थे।

पीछले समयमें यूरोपियोंके धर्मयाजकोंकी तरह स्वर्ग-नरककी कुञ्जीको उन्होंने अपने करायत्त कर लिया था। समाधिके समय उनको अधिक दक्षिणाके सिवा स्वर्ग जानेका और कोई पथ नहीं था। पीछे मिस्रमें समाधि-मन्दिरका बनाना ही मनुष्यजीवनका उच्चतम लक्ष्य हो गया था। धनाढ्य और निर्द्धन अपना सर्वस्व बेच कर भी मृत देहकी रक्षामें लगे रहते थे। किन्तु आत्माकी परिशुद्धिके लिये किसी पथका अवलम्ब नहीं लेते थे। राजा पिरामिड निर्माण करनेमें ही लग जाते थे, कर भारसे प्रजाको दबा देते थे। इसी तरह प्रजा भी यथासर्वस्व बेच कर परलोकके लोभनीय राज्यका सोपान निर्माण करती थी। भारतीय आर्यगण पुनर्जन्म मानते थे। किन्तु जीर्णवस्त्रकी तरह परित्यक्त नश्वर देहके स्थायित्वकी कोई व्यवस्था नहीं करते थे।

मिस्रके धर्मशास्त्रमें पृथ्वीकी सृष्टिका कोई नया तत्त्व नहीं मिला है। उसमें महाप्रलयका कोई उल्लेख नहीं। धर्मतत्त्वका मूल सूत्र और दार्शनिक भित्ति, दोनों एक हैं। किन्तु पिछले समयके परिवर्त्तन या विवर्त्त स्रोत दोनों जातियोंका बिलकुल स्वतन्त्र है। मिस्रने पार्थिव और भारतियोंने अपार्थिव सुखका अनुसन्धान किया था। प्रत्येक विषयमें दो जातियोंके कीर्त्तिस्तम्भ मौजूद हैं। किन्तु चिन्ताकी संकीर्णताके कारण मिस्र जाति पृथ्वीमें प्राधान्य लाभ न कर सके। इसीलिये गिरिगात्र जिनका लेखपत्र, शैलशलाका जिनकी लेखनी और प्रकृतिके विशालोद्यानके पदार्थपुञ्जकी आकृति जिनका चिह्नितात्तर था, ३००० सहस्र जिनकी वर्णमालायें थीं, उनकी उस आश्चर्य-पुष्पपल्लवमयी चित्रलिपिमें कोई गम्भीर भाव क्यों न रहेगा? भारतमें भी शिल्प-विज्ञान उन्नतिके उच्च शिखर पर चढ़ा हुआ था, किन्तु संसारको जो कारागार समझते थे, काञ्चनको कांच समझते थे, सब प्रकारके भोग सुखको पददलित करते थे, स्वर्गीय अनन्त सम्पद्को भी जो घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, निःश्रेयस जिनका एकमात्र लक्ष्य था, वह अपनी महिमाको विज्ञापन करनेके लिये हिमालय या विन्ध्य शिखरमें विराट् विग्रह किस लिये खोदेंगे? वे मनुष्योंके मानस-राज्यमें जिस स्तम्भोंका निर्माण कर गये हैं, उसमें कालका भी हाथ नहीं। मुसलमानोंने सहस्र वर्षों तक लूट पाट कर कारुकार्यसमन्वित गगनभेदी मन्दिरोंको विनष्ट किया है, किन्तु आर्य ऋषियोंके कीर्त्तिस्तम्भमें चोट तक भी न पहुंचा सके हैं।

मिस्रकी देव-देवियां इस समय चित्रशाला या चिड़ियाखानेकी कौतुहल बनी हैं। उनकी उपासक-मण्डली सम्पूर्णतः निर्वंश हो गई है। कौन अब बेलपत्र और फूल ले कर उनकी पूजा करेगा?

जिस सुसभ्य पराक्रान्त जातिने सहस्रों वर्ष तक राजदण्डकी परिचालना की थी, बनावटी शिल्पनैपुण्यसे प्रकृति देवीके साथ प्रतिद्वन्द्विता की थी, आज वह किस पापके कारण अपनी स्वतन्त्रता खो कर पृथ्वीकी पीठसे सदाके लिये विलुप्त हो गई? किस पापके कारण आसीरिय, बाबिलनीय, मिदिय, पार्थिय, और पारसिक आदि प्राचीन जातियां पृथ्वीसे विलुप्त हो गईं। क्यों ऐसा हुआ? इसका उत्तर कौन देगा? मुट्ठीभर हिन्दूसन्तान आज भी जीवित रह किस कारणसे जातीय स्वतन्त्रताकी रक्षा कर सके हैं? कौन इसका निर्णय करेगा? भारत ही क्या आर्यशास्त्रका मूल काण्ड है? इसीसे सैकड़ों विपत्तियोंको झेल कर भी आज प्राचीन हिन्दूशास्त्र सनातन और पुरातन क्षुण्ण मार्गमें सशङ्क भावसे चल रहा है।

इस समय कुछ लोग विश्वास करते हैं, कि मिस्रके पुरातत्त्वके साथ वैदिक युगका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। हम इस जगह इसका निर्णय करनेमें असमर्थ हैं। आशा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, कि वैदिक तत्त्वज्ञ कोई मनीषी गवेषणाके बलसे इस तत्त्वकी मीमांसा कर सकेंगे।

मिस्रा (हिं० पु०) मिसरा देखो।

मिस्री (हिं० स्त्री०) मिसरी देखो।

मिस्ल (हिं० पु०) समान, तुल्य।

मिस्सा (हिं० पु०) १ मूंग, मोठ आदिका भूसा। भेंड़ और ऊंट इसे बड़े चावसे खाता है। २ एक प्रकारका आटा जो कई तरहकी दालों आदिको पीस कर तैयार किया जाता है। इसकी रोटी गरीब लोग बना कर खाया करते हैं।

मिस्सी (फा० स्त्री०) १ एक प्रकारका प्रसिद्ध मञ्जन। इसे प्रायः सधवा स्त्रियां दांतोंमें लगाती हैं। इससे दांतोंकी जड़ मजबूत होती तथा दांत काले हो जाते और सुन्दर दिखाई देते हैं। यह माजूफल, लोहचून और तूतिए आदिसे तैयार की जाती है।

यह मिस्सी सफेद और कालीके भेदसे दो प्रकारकी होती है। सफेद मिस्सीमें सफेद सुरमा और दारचीनीका चूर्ण मिलाया जाता है। यह दाँतके रोगोंमें बहुत उपकारी माना गया है। काली मिस्सी माङ्गानिसका अक्सिस मिला कर बनाई जाती है। अलावा इसके हीराकसीस (Persulphate of iron) नामक मिस्सी चमड़े आदिको काले करनेमें व्यवहृत होती है।

२ किसी वेश्याका पहले पहल किसी पुरुषसे समागम होना। इसके उपलक्षमें प्रायः कुछ गाना बजाना और जलसा भी होता है। इसका दूसरा नाम सिरढकाई वा नथनी उतारन भी है।

मिह (सं० पु०) वृष्टिवर्षक मेघ, बरसता हुआ बादल।

मिहतर (फा० पु०) मेहतर देखो।

मिहदार (फा० पु०) वह मजदूर जिसे नकद मजदूरी दी जाती हो, अन्न आदिके रूपमें न दी जाती हो।

मिहनत (अ० स्त्री०) मेहनत देखो।

मिहनताना (अ० पु०) मेहनताना देखो।

मिहनती (अ० वि०) मेहनती देखो।

मिहना (हिं० पु०) मेहना देखो।

मिहमान (फा० पु०) मेहमान देखो।

मिहमानदारी (फा० स्त्री०) मेहमानदारी देखो।

मिहमानी (फा० स्त्री०) मेहमानी देखो।

मिहर (फा० स्त्री०) मेहर देखो।

मिहरवान (फा० पु०) मेहरवान देखो।

मिहरवानी (फा० स्त्री०) मेहरवानी देखो।

मिहरा (फा० पु०) मेहरा और महरा देखो।

मिहराव (फा० स्त्री०) मेहराव देखो।

मिहिका (सं० स्त्री०) मिहति स्नेह्यतीति मिह संज्ञायां क्वुन्, ततष्टाप् अत इत्वञ्च। १ नीहार, आसमानसे पड़नेवाला बरफ, पाला।

"विशति युवतित्यागे रात्रीमुचं मिहिकारुचम्" (नैषध १९।३५)

२ कर्पूर, कपूर।

मिहिर (सं० पु०) मेहयति सेचयति मेघजलेन भूमिमिति मिह किरच्। (इषम—दिमुदिखिदिच्छिदिभिदिमन्दिचन्दितिर्मिमिहीति। उण् १।५२) १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष, आकका पौधा। ३ ताम्र, ताँबा। ४ मेघ, बादल। ५ वायु, हवा। ६ चन्द्रमा। ७ भूपति, राजा। ८ विक्रमादित्यके नौ रत्नोंमेंसे एक। इनका असल नाम वराहमिहिर होने पर लोग इन्हें मिहिर ही कहा करते थे।

वराहमिहिर देखो।

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥" (नवरत्न०) (वि०) ९ वृद्ध, बुड्ढा।

मिहिरकुल (सं० पु०) सूर्यवंश।

मिहिरकुल—शाकल प्रदेशके प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाणके पुत्रका नाम। तोरमाणके मरने पर ये पितृ-राजसिंहासन पर बैठे। इन्होंने गुप्तसम्राटों पर विजय करके मध्यभारत तक अधिकार जमाया था। अन्तमें प्रायः ५३० ई०को ये मालवाधिप यशोधर्मासे करूकी लड़ाईमें परास्त हो कर काश्मीरको भाग गये। चीन-परिव्राजक यूएनचुवंगके वर्णनसे मालूम होता है, कि मिहिरकुल बौद्धोंके कट्टर शत्रु थे। इसी कारण एक बार मगधके राजा बालादित्यने इन्हें पकड़ लिया था, पर फिर अपनी माताके कहनेसे छोड़ दिया था। हुर्व-वु-तै-मुसुरने चीनकी टीकामें लिखा है, कि मिहिरकुलने २४वें बौद्धस्थविर आर्यसिंहकी हत्या की थी—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजतरङ्गिणीमें मिहिरकुलका विवरण इस प्रकार आया है,—मिहिरकुल काश्मीरके एक राजा थे। इनके पिताका नाम वसुकुल था। अपनी क्रूरताके लिये ये प्रसिद्ध थे। इनके शासन-कालमें बकरे भेंड़ की तरह मानव हत्या होती थी। वृद्ध और बालककी हत्या करना इनके लिये कोई बात ही न थी। एक दिन इनकी महारानी सिंहलदेशके कपड़ेका कुरता पहने हुए थीं। कपड़ेमें पैर का चिह्न बना हुआ था। महारानीके स्तन पर पैरका चिह्न देख राजाके क्रोधका पारावार न रहा, परन्तु कञ्चुकी (अन्तःपुररक्षक)-के कहने पर राजाका सन्देह दूर हुआ। पीछे उन्होंने फौरन सिंहलदेशको जीतनेके लिये प्रस्थान किया। सिंहलराजको राज्यच्युत करके मिहिरकुलने वहां एक प्रबल राजाको प्रतिष्ठित किया। सिंहलसे लौट कर मिहिरकुलने चोल द्रविड़ कर्णाट आदि देशोंको जीतनेके लिये प्रस्थान किया। किन्तु वहांके अधिवासी राजा मिहिरकुलके आनेसे पहले ही देश छोड़ कर भाग गये थे। मिहिरकुल काश्मीर लौट आये और वहां उन्होंने मिहिरपुर नामक एक विशाल नगर तथा श्रीनगरमें मिहिरेश्वर नामक शिवकी स्थापना की थी।

भारतवर्ष, शक, हूण आदि शब्द देखो।

मिहिरदत्त—काश्मीर राजरानी प्रकाश देवीके गुरु।

(राजत० ४।८०)

मिहिरपुर (सं० क्ली०) मिहिरकुल-प्रतिष्ठित एक प्राचीन नगर। इसका वर्त्तमान नाम मिहिरौलि है।

मिहिररति (सं० क्ली) भगनरायके पुत्र।

मिहिराणा (सं० पु०) मिहिरेणाप्यण्यते स्तूयत इति मिहिर अण घञ्। शिव, महादेव।

मिहिरेश्वर (सं० पु०) मिहिरकुल प्रतिष्ठित शिव।

मिहिलारोप्य (सं० क्ली०) दक्षिणपथमें अवस्थित एक नगरका नाम।

मिही (हिं० स्त्री०) मध्यप्रदेशमें होनेवाली एक प्रकारकी अरहर। इसके दाने कुछ बड़े होते हैं और कुछ देरमें तैयार होती है।

मींजना (हिं० क्रि०) १ हाथोंसे मलना, मसलना। २ मर्दन करना, दलना।

मींड़ (हिं० स्त्री०) सङ्गीतमें एक स्वरसे दूसरे स्वर पर जाते समय मध्यका अंश इस बखूबीसे कहना जिसमें दोनों स्वरोंके बीचका संबंध स्पष्ट हो जाय और यह न जान पड़े कि गानेवाला एक स्वरसे कूद कर दूसरे स्वर पर चला आया है। मींड़की जरूरत किसी स्वरसे केवल उसके दूसरे परवर्त्ती स्वर पर ही जानेमें नहीं पड़ती, बल्कि किसी एक स्वरसे किसी दूसरे स्वर पर जाने अथवा उतरनेमें भी पड़ती है। स्वरोंकी मूर्च्छनाओंका उच्चारण मींड़की सहायतासे ही होता है। देशी बाजोंमेंसे वीन, रबाब, सरोद, सितार, सारंगी आदिमें मींड़ बहुत अच्छी तरह निकाली जाती है, परन्तु पियानो और हारमोनियम आदि अंगरेजी ढंगके बाजोंमें यह किसी प्रकार निकल ही नहीं सकती। विद्वानोंका यह भी मत है, कि मींड़ निकालनेके लिये स्त्रियोंके कण्ठकी अपेक्षा पुरुषोंका कण्ठ बहुत अधिक उपयुक्त होता है।

मींड़ना (हिं० क्रि०) हाथोंसे मलना, मसलना।

मींड़ासींगी (हिं० स्त्री०) मेंढ़ासींगी देखो।

मीआद (अ० स्त्री०) १ किसी कार्य्यकी समाप्ति आदिके लिये नियत समय, अवधि। २ कारागारके दण्डका काल। कैदकी अवधि।

मीआदी (हिं० वि०) १ जिसके लिये कोई समय वा अवधि नियत हो। २ जो कारागारमें रह चुका हो, जो जेलखानेमें रह कर सजा भुगत चुका हो।

मीआदीहुंडी (हिं० स्त्री०) वह हुण्डी जिसका रुपया तुरंत न देना पड़े, बल्कि एक नियत समय या अवधि पर देना पड़े, वह हुण्डी जो मिती पूरने पर भुगताई जाय।

मीचना (हिं० क्रि०) बन्द करना, मूंदना।

मीजा (हिं० स्त्री०) १ अनुकूलता। २ स्वभाव। ३ सम्मति, राय।

मीजान (अ० स्त्री०) १ तुला, तराजू। २ तुलाराशि। ३ कुल संख्याओंका योग, जोड़ा। ४ मीजा देखो।

मीटना (हिं० क्रि०) मीचना देखो।

मीटिंग (अं० स्त्री०) परामर्श आदिके लिये एक स्थान पर बहुतसे लोगोंका जमावड़ा, अधिवेशन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीठा (हिं० वि०) १ जो स्वादमें मधुर और प्रिय हो, चीनी या शहद आदिके स्वादवाला। २ स्वादिष्ट, जायकेदार। ३ प्रिय, रुचिकर। ४ जो बहुत अधिक सुशील हो, किसीका कुछ भी अनिष्ट न करनेवाला, बहुअधिक सीधा। ५ जो गुदा-भञ्जन कराता हो, औंधा। ६ जिसमें पुंसत्व न हो, नामर्द। ७ जो तीव्र या अधिक न हो, हलका। ८ साधारण या मध्यम श्रेणीका, मामूली। ९ धीमा, सुस्त। (पु०) १० मीठा खाद्य, मिठाई। ११ गुड़। १२ हलुआ। १३ मुसलमानोंके पहननेका एक प्रकारका कपड़ा। इसे शोरीवाफ भी कहते हैं। १४ मीठा नीबू। १५ मीठा तेलिया या बछनाग नामक विष।

मीठा अमृतफल (हिं० पु०) मीठा चकोतरा।

मीठा आलू (हिं० पु०) शकरकन्द।

मीठा इन्द्रजौ (हिं० पु०) कृष्ण कुरज, काली कुड़ा।

मीठा कद्दू (हिं० पु०) कुम्हड़ा।

मीठा गोखरू (हिं० पु०) छोटा गोखरू।

मीठा चावल (हिं० पु०) वह चावल जो चीनी या गुड़के शरबतमें पकाया गया हो।

मीठाजहर (हिं० पु०) विष, वत्सनाभ, बछनाग।

मीठाजीरा (हिं० पु०) १ कालाजीरा। २ सौंफ।

मीठाठग (हिं० पु०) झूठा और कपटी मित्र, जो ऊपरसे मिला रहे, पर धोखा दे।

मीठातेल (हिं० पु०) १ तिलका तेल। २ पोस्तके दाने या खस-खसका तेल।

मीठातेलिया (हिं० पु०) वत्सनाभ, विष।

मीठानीबू (हिं० पु०) जमीरी नीबू, चकोतरा।

मीठानीम (हिं० पु०) भारतवर्षमें मिलनेवाला एक प्रकारका छोटा वृक्ष। इसमेंसे एक प्रकारकी मीठी गंध निकलती है। इसके छिलके पतले और खाकी रंगके और पत्ते बकायन या नीमके पत्तोंके समान होते हैं। फल भी नीमके फलके ही समान होते हैं। फल कच्चे रहने पर हरे और पकने पर काले हो जाते हैं। इनमें दो बीज रहते हैं। चैत-बैशाखमें इसके गुच्छोंमें छोटे छोटे फूल लगते हैं। इसके मूल, छिलके और पत्ते औषधके रूपमें काम आते हैं। इसका गुण चरपरा, कड़ुआ, कसैला और दाह बवासीर, शूल आदिका नाशक माना गया है।

मीठापानी (हिं० पु०) नीबूका अंगरेजी सत मिला हुआ पानी। यह बाजारोंमें मिलता है।

मीठापोइया (हिं० पु०) घोड़ेकी वह चाल जो न बहुत तेज हो और न बहुत धीमी।

मीठाप्रमेह (हिं० पु०) मधुमेह।

मीठाबरस (हिं० पु०) स्त्रियोंको अवस्थाका अठारहवां और किसीके मतसे तेरहवां बरस जो उनके लिये कठिन समझा जाता है, मीठा साल।

मीठाभात (हिं० पु०) मीठाचावल देखो।

मीठाविष (हिं० पु०) वत्सनाभ, बछनाग।

मीठासाल (हिं० पु०) मीठाबरस देखो।

मीठी खरखोड़ी (हिं० पु०) स्वर्ण जीवंती, पीली जीवंती।

मीठीछुरी (हिं० स्त्री०) १ वह जो देखनेमें मित्र पर वास्तवमें शत्रु हो। २ कपटी, कुटिल।

मीठोतूंबी (हिं० स्त्री०) कद्दू।

मीठीदियार (हिं० स्त्री०) महापीलू वृक्ष।

मीठी मार (हिं० स्त्री०) ऐसी मार जिसकी चोट अंदर हो और जिसका ऊपरसे कोई चिह्न न दिखाई दे, भीतरी मार।

मीठोलकड़ी (हिं० स्त्री०) मुलेठी।

मीड़म (सं० क्लो०) १ विवाद, द्वन्द्व। (अव्य०) २ अति मृदु वा क्षीण स्वरसे।

मीढ़ (सं० त्रि०) मिह क्त। १ मूत्रित, पेशाब किया हुआ। २ मूत्रकी तरह जलीय, मूत्रके समान।

मीढुष (सं० त्रि०) १ दयार्द्र, दयालु। (पु०) २ इन्द्रके पुत्रका नाम।

मीढुष्टम (सं० पु०) मीढ्वस् तमप्, पृषोदरादित्वात् साधुः। शिव, महादेव।

"तदा सर्वाणि भूतानि श्रुत्वा मीढुष्टमोदितम्।
परितुष्टात्मभिस्तात साधु साध्वित्यथाब्रुवन्॥"
(भाग० ४।७६)

२ सूर्य। ३ चौर, चोर।

मीढ्वस् (सं० पु०) मिह-सेव-नार्थे छन्दसि क्वसुः (दाश्वान् साहान् मीढ्वांश्च। पा ६।१।१२) ततो द्वित्वा भावं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनिरत्वं उपधदीर्यत्वं ढत्वञ्च निपात्यते। १ शिव, महादेव। २ वर्षिता, वर्षक।

मीन (सं० पु०) मीयते इति मीञ् हिंसायां (फेनमीनौ। उण् ३।३।३) इति नक् निपातितश्च। १ मत्स्य, मछली। मत्स्य देखो। २ मेष आदि राशियोंमेंसे अन्तिम या बारहवीं राशि। इस राशिमें पूर्वभाद्रपद नक्षत्रका अन्तिम पद और उत्तर भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र हैं। इस राशिकी अधिष्ठात्री देवियां दो मछलियां हैं। इसका पर्याय और संज्ञा है अन्त्यभ, कीट, जलज, सौम्य, अङ्गन, युग्म, सम, द्वयात्मक, भक्ष्य, उत्तर दिङ्नाथ, गुरुक्षेत्र, दिनात्मक। (ज्योतिस्तत्त्व) यह राशि चरण रहित, कफ-प्रकृति, जलचारी, निःशब्द, पिङ्गल वर्ण, स्निग्ध, बहुत संन्तानवाली और ब्राह्मणवर्णकी मानी गई है। इस राशिमें जो जन्म लेता है वह क्रोधी, तेज चलनेवाला, अपवित्र और अनेक विवाह करनेवाला होता है।

कोष्ठीप्रदीपके मतसे यह जलराशि है। इसमें जो जन्म लेता वह सलिलोत्पन्न, मौक्तिकादि सुखभोक्ता, मैथुनप्रसक्त, समान रुचिविशिष्ट, स्वल्पकाय, शत्रुका दमनकारी, स्त्रीजित लावण्ययुक्त, अतिशय धनलोभी और पण्डित होता है। (कोष्ठीप्र०)

३ लग्नभेद, मेष आदि बारह लग्नोंमेंसे अन्तिम लग्न। अयनांशशोधित कलकत्ते आदि स्थानोंका लग्नमान ३।४७।४६।८ है। इस लग्नमें जिसका जन्म होता है, वह कार्यदक्ष, अल्पभोजी, अल्पस्त्रीसंग, सुवर्णादि रत्नयुक्त, चञ्चल, नाना वाग्विन्यासमें अति धूर्त्त, प्रियजनहितकारी, तेजस्वी, बलवान्, विद्वान्, धनवान्, छेदन, कर्मविरत, चर्मरोगी, विकृतमुख, कीर्त्तिशाली, विश्वासी, असहनीय, विनाशशाली, बहुकुटुम्बयुक्त, सौभाग्यशाली, धीर, भ्रातृयुक्त, सर्पदंशन, अग्निदाह, रक्त-पतन और विषप्रवेश इत्यादि द्वारा पीड़िताङ्ग, स्थूल ओष्ठ, क्षुद्र चक्षु, उच्च नासिक, कफवातप्रकृति, महात्मा, बहुचेष्टायुक्त, काव्यज्ञानसम्पन्न, स्वजन और स्त्रीपूजित, धार्मिक, पित्तरोगी, नीचाचार और शोभनीभार्यायुक्त, क्रूर और दारुण शत्रुयुक्त होता है। इस लग्नजात व्यक्तिकी मूत्रकृच्छ्रादि रोग, गुह्यरोग, मारणादि विद्यौषध प्रयोग, उपवास और मार्गदोष आदिसे मृत्यु होती है।

मीनलग्नका साधारणतः ऐसा ही फल जानना चाहिये। यदि इस लग्नमें रवि आदि कोई ग्रह रहे, तो उनके स्थितिजनित विभिन्नरूप फल हुआ करते हैं।

इस मीन राशिमें रवि आदि ग्रहोंकी स्थितिके लिये नीचे लिखे फल होते हैं।

मीनमें रविके रहनेसे अनेक मित्रवाला, शोक और सन्तापको सह्य करनेवाला, प्राज्ञ, अनेक शत्रुवाला, यशस्वी, मुक्तादि द्वारा धनवान्, सुन्दर, मिथ्यावादी, तेजस्वी, गुह्यरोगार्त्त और अनेक भाईवाला होता है।

यदि चन्द्रादि ग्रह इस राशिको देखते हों, तो विभिन्न फल हुआ करता है। जैसे—मीनराशिस्थित रवि यदि चन्द्रमासे देखे जाते हों, तो वाक्पटु, धनवान्, बुद्धिवान् और पुत्रयुक्त, राजाके सदृश, शोकहीन और सुन्दर शरीर वाला होता है। मीनस्थ रवि यदि मङ्गलसे दिखाई देता जाता हो, तो जातबालक संग्राममें विजयी, स्पष्टभाषी, धैर्यशील, सुखी और तीक्ष्ण होता है। मीनस्थ रवि बुधसे दिखाई देने पर मधुरभाषी, लिपिवेत्ता, काव्यकलाविद्, गोष्ठीपाल और धानुज्ञ होता है। बृहस्पतिसे दिखाई देने पर राजभवन-विचरणकारी वा राजा, हाथी घोड़े और धनयुक्त तथा बुद्धिमान् होता है। शुक्रसे देखे जाने पर सुगन्धि माल्यादिके साथ सर्वदा दिव्य स्त्रीभोगरत और शान्त तथा शनिसे देखे जाने पर अशुचि, परान्नाकाङ्क्षी, नीचानुरत, चतुष्पद-क्रीड़नशील और अतिशय चपल होता है।

मीन राशिमें चन्द्रमाके रहनेसे शिल्पकुशल, अभिचारवेत्ता, शास्त्रवेत्ता, विवेचक, कमनीय देह, गीतज्ञ, धार्मिक, अनेक स्त्रीवाला, मधुरभाषी, भूपसेवी, कुछ क्रोधी, महात्मा, सुखी, धनवान्, स्त्रीजित, स्त्रीभावापन्न, पानारक्त और दानशील होता है।

मीन राशिस्थित चन्द्रमा यदि रविसे देखे जाते हों, तो अतिशय कामुक, सुखी, दीप्तिशील, सेनापति, धनी और सुन्दर स्त्रीवाला होता है। मङ्गलसे दिखाई देने पर पराभूत, असुखी, पापी और शूर होता है। बुधसे दिखाई देने पर पुरुषश्रेष्ठ, राजा, अतीव सुखी और अनेक स्त्रीवाला, बृहस्पतिसे दिखाई देने पर कोमल, कान्तिविशिष्ट, गुणग्रामविभूषित, मण्डलाध्यक्ष, अमात्ययुक्त और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रीजित ; शुक्रसे देखे जाने पर सुशील, नृत्यगीतादि कुशल और स्त्रियोंका अति प्रियपात्र तथा शनिसे देखे जाने पर जातबालक अहितकर, विकलदेह, कामातुर, नीच और कुरूप स्त्रीवाला होता है।

यदि राशि और राशिपति तथा चन्द्र बलवान् रहें, तो उक्त राशिफल होते हैं, अन्यथा फलमें तारतम्य देखा जाता है।

मीन राशिमें मङ्गल रहनेसे जातबालक रोगी, कुत्सित संतानवाला, प्रवासशील, आत्मबन्धुसे तिरस्कृत, मायावी, ठग, विवादी, कुटिल, बार बार शोकातुर गुरु और विप्रका अवज्ञाकारी, सर्वदा असाधु वृत्तिसम्पन्न, इङ्गितवेत्ता, ज्ञानवान् और श्रुतिप्रिय होता है। मीनस्थ मङ्गल रविसे दिखाई देने पर पूजनीय, सुन्दर और दुर्गम स्थानमें भी गृहवासीकी तरह रहनेवाला तथा क्रूर स्वभाववाला; चन्द्रमासे दिखाई देने पर विकलदेह, कलहकारी, बुद्धिमान्, पण्डित और राजाके विरुद्ध काम करनेवाला ; बुधसे दिखाई देने पर मेधावी, शिल्पज्ञ और पण्डित; बृहस्पतिसे दिखाई देने पर सुन्दर स्त्रीवाला, सुखी, विजयी, धनी और व्यायामशील; शुक्रसे दिखाई देने पर स्त्रियोंका प्रिय, उदारप्रकृतिका, विषयी और सौभाग्य संपन्न; शनिसे दिखाई देने पर कुत्सितदेह, उदार, युद्धप्रिय, मूर्ख, असुखी, धनहीन और परोपकारी होता है।

मीन राशिमें बुधके रहनेसे आचार और शौच-निरत देवतारत, सन्तति-विहीन, दरिद्र, परिहासरत, दूसरेके धनसे धनी और विख्यात हुआ करता है।

मीनमें बुध रह कर यदि रविसे दिखाई देता हो, तो शूर, प्रमेह रोगी, अग्नि पीड़ित और शान्तस्वभाववाला; चन्द्रमासे दिखाई देने पर लेखक, सुकुमार शरीरवाला, विश्वासी, माननीय और सुखी; मङ्गलसे देखे जाने पर लिपिकर्मकारी, धनहीन, राजभृत्य और वनवासियोंका नेता; बृहस्पतिसे दिखाई देने पर मेधावी, शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, धनरक्षक और लिपिकर्मकर ; शुक्रसे दिखाई देने पर कन्या और कुमारवर्गका लेखकाचार्य, धनी, रूपवान् और शौर्य-युक्त; शनिसे दिखाई देने पर दुर्ग वा अरण्यवासी, बहुभोजी, दुष्टस्वभावका, अतिशय मैला कुचैला रहनेवाला और सर्वकार्यहीन होता है।

मीन राशिमें बृहस्पतिके रहनेसे बालक वेद और अथशास्त्रवेत्ता, साधु और सुहृदोंका पूज्य, राजाका नेता, धनी, सर्वदा सन्तुष्टचित्त, दर्पित, स्थिर, उद्यमवाला और विख्यात होता है। मीन राशिस्थित गुरु यदि रविसे दिखाई देता हो, तो राजविरोधी, सर्वदा परितृप्त तथा धन और आप्तबन्धुविहीन; चन्द्रमासे दिखाई देने पर स्त्रियोंका प्रिय, मानी, धनी और ऐश्वर्यवाला; मङ्गलसे देखने पर संग्राममें जखमी, क्रूर, परपीड़क और स्त्री पुत्रादिविहीन ; बुधके देखने पर राजमन्त्री वा राजा, सुत, धन और सौभाग्ययुक्त, सभी मनुष्योंका आनन्दकर तथा अतिशय रूपवान् ; शुक्रके देखने पर सुखी, धनवान्, पण्डित, दोषशून्य, उत्तम भाग्यवान् और स्त्रीयुक्त तथा शनिसे देखने पर अतिशय मलिनदेह, भीरु, दीन, सुखभोगरहित और इष्टविहीन हुआ करता है।

मीनराशि शुक्रका तुङ्गस्थान है। इस स्थानमें शुक्र सबसे बलवान् माना गया है। इस राशिमें शुक्रके रहनेसे जातबालक अत्यन्त गुणवान्, बहुत धनी, शत्रुकुलविजयी, लोकविख्यात, श्रेष्ठ, राजप्रिय, दाता, सज्जनप्रतिपालनकारी, चतुर्वेदवेत्ता, वंशधर, और ज्ञानवान्; मीनस्थ शुक्र रविसे देखे जाने पर अतिशय क्रूर, अत्यन्त शूर, पण्डित, धन और सत्त्वविशिष्ट, अतिप्रिय और विदेशगमनरत ; चन्द्रके देखने पर विख्यात, राजपुरुष, अतिशय भोगी, लुब्ध और बलहीन ; मङ्गलके देखने पर स्त्रीद्रोही, सुखी, श्रेष्ठ और गोधनयुक्त ; बुधके देखने पर आभरण, भूषण, अन्न, पान और विचित्र-वसनादियुक्त तथा अर्थशाली ; बृहस्पतिके देखने पर हस्ती, घोड़े और गोधनादियुक्त, अनेक सन्तानवाला और सुखी, शनिके देखने पर बहुत धनी, रोगी और शूर तथा मीनमें शनिके रहनेसे यज्ञप्रिय, शिल्पविद्याविशारद, शान्तस्वभाव, धनवान्, विनयी, रत्नपरीक्षक और धर्म-व्यवहाररत होता है।

मीन-राशिस्थित शनिके रविसे दिखाई देने पर परदारानिरत, धनी और विख्यात होता है। चन्द्रसे दिखाई देने पर मातृहीन, सच्चरित्र और धनी ; मङ्गलके देखने पर वातव्याधि रोगयुक्त, लोकद्रोही, प्रवासशील और निन्दित स्वभाववाला ; बुधके देखने पर राजाके जैसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुखी, अध्यापक, माननीय, धनी और उत्तम भाग्ययुक्त, बृहस्पतिके देखने पर राजा वा राजसदृश, मन्त्री अथवा सेनानायक और सर्वोपद विहीन; शनिके देखने पर जनप्रिय, सुशील और सर्व सम्पद्युक्त होता है। राहु-ग्रह जिस ग्रहके साथ रहते हैं, फल उसी ग्रहके अनुसार होता है। विशेषतः राहु मीनमें शुभ फलप्रद नहीं होते। इसमें प्राय अशुभ फल ही हुआ करता है।

(बृहज्जातक और कोष्ठीप्र०)

४ दशावतारके मध्य प्रथमावतार, मत्स्यावतार।

"शेते स चित्तशयने मम मीन कूर्म्म-
कोलोऽभवत् नृहरिवामनजामदग्न्य।
योऽभूद्बुभव भरताग्रजकृष्णबुद्धः
कल्की सताञ्च भविता प्रहारिष्यतऽरीन्॥"

(मुग्धबोधव्या०)

तन्त्रके मतसे मीन ही धूमावती है।

"कृष्णरूपा कालिका स्याद्रामरूपा च तारिणी।
वगला कूर्ममूर्तिः स्यान्मीनो धूमावती भवेत्॥"

(मुण्डमालातन्त्र)

मीनक (सं० क्ली०) नयनाञ्जनविशेष, एक तरहका सुरमा।

मीनकाक्ष (सं० पु०) शुक्ल करवीर, सफेद कनेर।

मीनकेतन (सं० पु० मीनः केतनमस्य। १ कन्दर्प, कामदेव। २ सह्याद्रिवर्णित एक राजा। ३ एक पाण्ड्य-राज। पाण्ड्यराजवंश देखो।

मीनगन्धा (सं० स्त्री०) मत्स्यगन्धा, सत्यवती।

मीनगोधिका (सं० स्त्री०) मीनगोधिकानामावासोऽत्र। जलाशय, तलाव या झील आदि।

मीनघातो (सं० पु०) मीनं हन्तीति हन-णिनि। १ वक, वगला। (त्रि०) २ मत्स्यघातक, मछली मारनेवाला।

मीननगर—पञ्जाबप्रदेशका एक प्राचीन जनपद और उसकी राजधानी। यह सिंधुनदके किनारे वा गौरशाखाके किनारे बसा हुआ था। पार्थिय-राजगण यहांका शासन करते थे। यद्यपि इस नगरका कोई वर्त्तमान निदर्शन नहीं मिलता तो भी विभिन्न देशीय सुप्राचीन इतिहासोंमें इसकी समृद्धिका विशेष उल्लेख देखनेमें आता है।

खलीफा अलमनसुरके सेनापति ओमरने सिन्धुको जीत कर इस नगरका मनसुरा नाम रखा था। प्रत्नतत्त्व-विद् कनिंहम उलुघ और आबुरिहन (अलबेरुणी) आदिका मतानुसरण कर २६° ४०´ उ० अक्षा०में इसका स्थान निर्णय कर गये हैं। उनके मतसे पेरिप्लस-वर्णित यदु झारेजाकी राजधानी समी-नगर (सेहस्तान) तथा अलेकजान्दरके शत्रु साम्बुसकी राजधानी शाम्बनगर मीन-नगरका अस्तित्वसूचक है। पेरिप्लस अलबेरुणी, आरियन टलेमी, एद्रिसो, डिएनभीले, दि ला रोकेट आदिने इस स्थानकी प्राचीनताका प्रमाण दिया है।

मीननाथ (सं० पु०) १ गोरखनाथके गुरु मत्स्येन्द्रनाथका एक नाम। मत्स्येन्द्रनाथ देखो। २ स्मरदीपिकाके प्रणेता।

मीननेत्रा (सं० स्त्री०) मीनस्य नेत्राकारा ग्रन्थिरस्याः। गण्डदूर्वा, गाडर दूब।

मीनपित्त (सं० क्ली०) कुटकी नामक ओषधि।

मीनर (सं० पु०) मीना भक्षणत्वेन सन्त्यस्य, मीन अश्वादित्वात् र, (बुञ् छण्कठजिलेति। पा ४।२।८०) शाखोट वृक्ष, सिहोरा।

मीनरङ्क (सं० पु०) मीनरङ्ग-पृषोदरादित्वात् साधुः। मत्स्याशन पक्षी, मछरंग नामक पक्षी जो मछली खाता है। २ जलकाक, जलकौवा, मुरगावी।

मीनरङ्ग (सं० पु०) मीनरङ्क देखो।

मीनरथ (सं० पु०) जनकवंशीय राजा अनेनाके एक पुत्र-का नाम।

मीनराज (सं० पु०) १ मत्स्यराज। २ जातकप्रणेता एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्। ये यवनेश्वर नामसे प्रसिद्ध थे।

मीनवत् (सं० त्रि०) मत्स्यमय, जिसमें बहुत मछली हो।

मीना (सं० स्त्री०) ऊषाकी कन्याका नाम जिसका विवाह कश्यपसे हुआ था।

"ऊषायास्तु प्रवक्ष्यामि सर्गं पञ्च सुतास्ततः।
मीना मेनो तथा वृत्ता अनुवृत्ता तथैव च।
परिवृत्ता च विज्ञेया तासाञ्च शृणुत प्रजाः॥"

(अग्निपु०)

मीना—राजपूतानेकी एक युद्धप्रिय जातिका नाम। इति-हासमें ये मेओ, मेवाती, मीन, मीना-मेओ आदि नामोंसे परिचित हैं। प्राचीन मेवात (मीनवती)-में रहने-के कारण इनके ऐसे नाम पड़े हैं। आज कल जयपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज्यके अजमेरसे दिल्ली तक समूचे राजपूतानेमें इनका वास पाया जाता है। शेखावतीके पूरब पहाड़ी जमीन ही इन लोगोंका प्रधान अड्डा है। यहां ये लुक छिप कर चोरी और डकैती करते हैं। यहां ये २५ मीलके घेरेमें जहां ये रहते हैं वह स्थान ६ राजाओंके राज्यमें है। जयपुरराजके अधिकारमें शेखावती राज्य और झालरापाटनके कुछ अंश हैं। क्षत्रिराजका अधिकृत कुलपुत्ती नामक स्थान आज कल अंग्रेज-सरकारके अधीन है। इनके अलावा दद्रिसे झिद्, नूरनौलसे पतियाला, कान्तिसे नाभाके बीच तथा अलवर, लोहरू, बीकानेर और गुरगांव जिलेके शाहजहानपुरमें मीना-जातिके लोग बसे हुए हैं। मिरासि नामक भाट लोग इनकी विवाह-सभाओंमें जो वंशमहिमा गाते हैं उससे मालूम होता है, कि सम्राट् अकबरके प्रसिद्ध राजनैतिक टोडरमलके साथ मीना-सरदार बादरावकी दोस्ती थी। इस दोस्तीकी बदौलत टोडरमलके लड़के दरिया खां मेओके साथ बादरावकी लड़की शशिवदनीका विवाह हुआ। बारातके लोग बादरावके घर मीना लोगोंके साथ मांस मछली खानेको राजी न हुए। अतएव दोनों पक्षोंमें विवाद चला। इस कारण विवाहके बाद मेओ लोग राजधानी अजानगढ़ (अञ्जनगढ़) लौट आये। रानी शशिवदनी अपने मैके हीमें रही।

शशिवदनीने युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पतिको पत्र लिखा। अतएव वे अपनी स्त्रीको लिवाने ससुराल आये। बादरावने जमाईकी खूब खातिरदारी की। इस बार भी ससुर जमाईमें मदिरा पीते पीते नशेके कारण विवाद चला। दरिया खांने क्रोधसे पागल हो अपने ससुरका एक दांत तोड़ डाला। सरदारके इस अपमान पर मीना लोग दरिया खांके प्राण लेनेको उतारू हुए। यह देख शशिवदनीके भाईने दरिया खांको आंगनमें छिपा रक्खा। रातमें दरिया खां अपनी स्त्रीके साथ अपने देशको चल पड़े। मीना लोगोंने उनका पीछा किया, लेकिन उन्हें पकड़ न सके।

अजानगढ़में आज तक भी इस वंशावलीको मिरासि लोग प्रत्येक विवाहके अवसर पर गाते हैं। अगर इस किस्सेके अन्दर कोई सत्य न हो, तो भी इससे मालूम होता है, कि मेओ और मीना जातियोंमें प्रचलित विवाहसम्बन्ध इस विवाहके बादसे ही बंद हो गया तथा पहलेके विवाहकी आलोचनासे अनुमान होता है, कि मीना और मेओ पहले एक ही शाखाके अन्तर्गत थे पीछे सामाजिक उन्नति और अवनतिके कारण ये अलग अलग हो गए हैं। जाति-विद्याविशारद इन लोगोंको प्लिनि-वर्णित सिन्धु नदीसे यमुना तीर तक बसनेवाली Megallae (मीगाली) जाति बतलाते हैं।

मीना और मेओ लोगोंमें आज कल कोई सम्पर्क है, वा नहीं, इस विषयका विचार न कर वर्त्तमान समयमें दोनों जातियोंमें किस तरहकी सामाजिक रीति नीति प्रचलित है, नीचे उसीका विवरण दिया जाता है—

मेओ लोग अपनेको राजपूत कहते हैं। इन लोगोंमें १३ पाल या दल तथा ५२ गोत्र पाये जाते हैं। डाक्टर कनिंगहमके मतसे ये दल इस प्रकार हैं:—

४ यादोन—छिंकिलाट, दलात, दमरोत, नाई और पडलोत। ५ तोमर—बलोत, धारवाड़, कलेसा, लुन्दावत और रक्तावत। १ कछवाहा—दिंगल, १ बड़गूजर—सिंगल, अर्द्ध मिश्र—पलाकड़ा।

मर्दुमशुमारीसे मालूम होता है, कि वर्त्तमान हिन्दू मेओ लोगोंकी ६७ तथा मुसलमान मेओ लोगोंकी ४७ भिन्न भिन्न शाखायें हैं। हिन्दू मेओ लोगोंमें बड़गूजर, हर, जनवार, बानपुरिया, रघुवंशी, चन्देला, चाहमान, गहलोत, यादन, कछवाहा, रावत, तोमर और रठौरिया आदि राजपूत जातियोंका सम्मिश्रण पाया जाता है। साथ साथ भाट, दकौत, गदारिया, घोसी, गूजर, गुआल, गुलाहा, कवरिया, कोरि, नाई और रंगरेज आदि जातियां भी आ कर इनमें मिल गई हैं।

परिहार शाखाके मीना लोग हरवतोके अन्तर्गत खेवार नामक स्थानमें रहते हैं। ये लोग अपनेको परिहारराज नाहरसिंहके पुत्र सोमके वंशधर बतलाते हैं। किंवदन्ती है, कि राजकुमार सोमने मीनाकी कन्याको ब्याहा था। उन्हींके वंशमें परिहार मीना जातिकी उत्पत्ति हुई।

मीना लोग ही मेवाड़ और मारवाड़के आदिम निवासी हैं। राजपूत लोगोंने वहां आ कर इन्हें मार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भगाया और देश पर अधिकार कर लिया। मारवाड़के जबरदस्त और बहादुर मीना लोग बूंदी, मेवाड़ और अजमेरके सरहदमें तथा जयपुरी मीना लोग अलवर, जयपुर और सरहदी अंगरेजी जिलाओंमें बसे हुए हैं। शिरोहीके रहनेवाले मीना लोगोंकी अवस्था अच्छी नहीं है।

चितामीना मैरवाड़ाके पहाड़ी जंगलोंमें रहते हैं। इस श्रेणीसे मेर या मैर नामकी शाखा निकली है। यह मैर शाखा मेरवाड़, मैरात या मैरोत नामसे प्रसिद्ध है। संस्कृत मेरु पर्वतके नाम पर इन लोगोंका नाम पड़ा है। कमलमेरुसे अजमेर तक अरवली श्रेणीकी फैली हुई पहाड़ी भूमिमें मैर जातिके रहनेके कारण इस स्थानका नाम मैरवाड़ हुआ है।

चितामीना लोग दिल्लीके अन्तिम चौहान राजाके किसी पौत्रसे अपनी उत्पत्ति बताते हैं। प्रवाद है, कि उक्त चौहान राजाके भतीजे लाक्षाके अनिल और अनूप नामक दो लड़के थे। बात चली कि ये दोनों लड़के लाक्षाको मीना जातिकी किसी रखेलीसे उत्पन्न हुए हैं इससे वे दोनों लड़के लज्जित हो राज्यलोभ छोड़ अजमेर आ अपने ननिहालके लोगोंमें मिल गये।

अनिलने किसी मीना-सरदारकी लड़कीसे विवाह किया। इनके चिता (चित्र) नामक एक लड़का हुआ। उस लड़केने मैरवाड़ाकी सारी मीना-शक्तिको हस्तगत किया और वह एक प्रधान सरदार समझा जाने लगा। अजमेरकी उत्तरी-सीमाके चितावंशीय लोगोंने इस्लाम-धर्म कबूल किया था। इस वंशकी १६ पीढ़ी नीचेमें दुधा हुए। ये दाउद खांके द्वारा अजमेरके हाकिम बनाये गये। अथून नगरमें इनका महल था। इसलिये इनके वंशके मैरात सरदार लोग 'अथूनकी खान्' नामसे प्रसिद्ध थे। अथून, चंग, झक और राजोसि नामके नगर मैर लोगोंके अधिकारमें थे।

अनूपने भी अपने भाईकी तरह एक मीना स्त्रीसे विवाह किया। इनके बुराड नामका एक लड़का हुआ। बुराड़, भैरवाड़ा और मन्दिल्ल नामक स्थानोंमें बुराड़के वंशधर रहते हैं।

अलवर-राज्यके मेवाति या मेओ लोग अधिकांश खेती करते हैं। लेकिन डाका मारनेमें भी ये लोग पहले हीसे प्रसिद्ध हैं। मुसलमानोंके राजत्वकालमें लूट, अत्याचार और उपद्रवके कारण आम लोगोंके लिये ये भयावह हो गये थे। पीछे भक्तावर और बन्नि (बह्नि) सिंहने अपने राज्यकालमें इन लोगों पर अच्छा शासन किया। उन्होंने इनके गाँवोंको छोटे छोटे टुकड़ोंमें बांट कर शासनकी सुव्यवस्था की। १८५७ ई०में इन्होंने अलवर राज्यके अनेक स्थानोंको लूटा और जला दिया। सरकारी फिरोजपुर और उसके आस पासके स्थानोंमें भी ये लोग अत्याचार और उपद्रव करनेसे बाज नहीं आये। अंगरेजी सेनाने जा कर इन लोगोंको पकड़ा और बहुतोंको फांसी दे दी।

वर्त्तमान समयमें मुसलमानोंकी संगतमें आ इनमेंसे बहुतेरे मुसलमानी नामोंका अनुकरण करने लगे हैं। होली जन्माष्टमी, दशहरा और दीवाली आदि हिन्दू त्योहारोंके साथ साथ मुहर्रम, ईद, सूबेबरात आदि मुसलमानी त्योहार भी मनाते हैं। अमावसके दिन ये कोई काम नहीं करते। उस दिन ये केवल भैरव या हनुमान्‌जीकी पूजा करते हैं। मुसलमान मेओंमें अधिकांश कलमा पढ़ना नहीं जानते।

हिन्दू मेओ लोग विवाहके समय ब्राह्मण बुलाते हैं। ब्राह्मण ही लग्नपत्र लिख देते हैं। विवाहका दहेज दो सौ रुपये होता है। नियम है, कि मुसलमान लोगोंमें भी ब्राह्मण लग्नपत्र लिख देते हैं, लेकिन विवाह समयमें काजी आता है और मन्त्रपाठके साथ कार्य समाप्त करता है। खतनेके समय नाई और फकीर मौजूद रहते हैं। ये लोग अपने वंशके लोगोंमें शादी नहीं करते। माताके गोत्रमें विवाह मना है, लेकिन चार पीढ़ी छोड़ विवाह करनेकी रीति है।

जयपुरके महाराजके अभिषेक-कालमें इन लोगोंके हाथसे टीका लेने पर अभिषेक पूरा समझा जाता है। ये लोग जयपुर राजभवनमें पहरा देनेका काम करते हैं। मैरवाड़के परिहार-मीना लोगोंके साथ जयपुरी मीना-जातिका कोई लगाव नहीं है।

वर्त्तमान समयमें हिन्दू मीना लोग मेओ और मीना-के नामसे और मुसलमान मीना मेवाति नामसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिचित हैं। युक्तप्रदेशके मीना लोगोंमें एक कहावत है, कि राजा यशवन्तके दो लड़के शिकार करने जङ्गल गये और वहांसे दो गाय साथ ले आये. लेकिन उनके बछड़ोंको उन्होंने जङ्गल हीमें छोड़ दिया। उनके पिता बछड़े के बिना दोनों गौओंके दुःखसे बड़े दुःखित हुए। अतएव उन्होंने अपने दोनों लड़कोंको घरसे निकाल दिया। उनमें एकने यामुन देशमें (गंगा यमुनाके बीचका स्थान) जा डकैतीसे बहुत धन जमा किया। ये धनके साथ अपना घर लौट आये और अन्तमें पिताकी गद्दी पर बैठे। जहां तहां डकैती करते करते हिन्दूधर्ममें इनकी श्रद्धा बहुत घट गई। इनकी जातिके लोगोंको अपनी श्रद्धा खोनी पड़ी। कोई कोई कहते हैं, कि ये मैदानमें गौ चराते थे, इसीलिये ये मेओ कहलाये। फिर एक दूसरी कहानीसे मालूम होता है, कि मुसलमान होने पर विशुद्ध हिन्दू लोग 'आमीना मेओ' कहलाने लगे, पीछे उसीसे 'मीना' नामकी उत्पत्ति हुई।

मुसलमान मेवाति लोग कहते हैं, कि वे यादव और मेवातवासी दूसरी दूसरी राजपूत शाखाओंसे उत्पन्न हुए हैं। अलाउद्दीन गोरीने इन्हें मुसलमान बनाया। इन लोगोंमें 'धरीवा' प्रथाके अनुसार विधवा विवाह प्रचलित है। जन्म और मरणके सभी क्रिया-कर्म्म इनके मुसलमानोंके जैसे होते हैं।

हिन्दू मीना लोग मुर्दोंको जलाते है। अन्त्येष्टि क्रियाके बाद ये लोग एक भोज देते हैं। इस भोजमें चीनीका खर्च खूब होता है। अतः इन्हें 'शर्करान' कहते हैं।

इस मीना जातिकी वीरता-कहानी राजपूत इतिहासके साथ मिली हुई है। चाँद कविकी कवितासे पता चलता है, कि अजमेरके प्रसिद्ध राजा विशालदेव इन लोगोंको हरा कर अपने वशमें लाये थे। हजारसे ऊपर वर्ष पहले मीना-सरदार जयपुर महाराजके अधिकृत अधिकांश प्रदेशों पर शासन करते थे। अभी भी नगरके फाटक, गढ़ और खजाने-घरके रक्षकके रूपमें ये राजकाज करते हैं।

रोहिला अफगानोंकी जैसी इन लोगोंकी शूरता और वीरता भारतके इतिहासमें अमर हो गई है। इन लोगोंके समान साहसी जाति भारतमें कहीं नहीं देखी जाती। राजपूतानेके कोलि लोगोंके साथ इन लोगोंका विवाह सम्बन्ध पाया जाता है। क्रमशः अनेक जातिच्युत लोगोंके इनमें आ मिलनेसे ये लोग एक वर्णसंकर जातिके हो गये हैं।

इतिहाससे पता चलता है, कि दिल्लीके राजा पृथ्वीराजके समयमें राजपूतोंने इन्हें उत्तर-दोआबसे मार भगाया। मुसलमान-राज्यके शुरूमें इन लोगोंका उपद्रव बहुत बढ़ गया। गियासुद्दीनने दिल्लीके आस पासमें इनके उपद्रवके बारेमें लिखा है। गियासुद्दीन बलबन इन्हें अपने शासनमें लाये। मुबारकशाहने १४२५ ई०में घोर युद्धके बाद इन्हें हराया था। इसके तीन वर्ष बाद ये फिर बागी हुए। १३३५ ई०की लड़ाईमें परास्त हो कर इन्होंने शान्तभाव धारण किया। बाबरके आक्रमणकालमें मेवाति-सरदार हसन खां बागियोंका नेता था। फिरिस्तामें लिखा है, कि नासिरुद्दीन मुहम्मदके मन्त्री इमानुद्दीनने १२५६ और १२६५ ई०में मेवाति डकैतोंको जड़से उखाड़ दिया था। गदरके समय इन्होंने गुर्जर जातिके साथ मिल विद्रोहाग्नि प्रज्वलित करनेकी विशेष चेष्टा की थी।

अंग्रेजी शासनके आरम्भमें भी इनकी डकैती पूर्ववत् जारी थी। असीम साहससे और निर्भय हो ये अंग्रेज-सरकारके डाक लूटने, गांव जलाने तथा तहसील हड़पनेमें लगे रहते थे। सामन्त राजे तथा सरकारकी ठगी और डकैती विभागके कर्मचारी लाख चेष्टा करके भी इन लोगोंका दमन न कर सके। अन्तमें कर्नल यंग हलवैंडने खेएड पुलिसकी सहायतासे इन लोगोंको दबाया। कहीं पीछे ये गांवसे बाहर हो डकैती न करें इसके लिये घरसे बाहर होनेके रास्ते पर पहरा बैठा दिया गया था। उनके बताये ढंग पर चल कर अन्तमें कर्नल हाविने इस काममें सफलता प्राप्त की थी।

मीना (फा० पु०) १ रंग बिरंगा शीशा। २ एक प्रकारका नीले रंगका कीमती पत्थर। ३ कीमिया। ४ सोने, चांदी आदि पर किया जानेवाला रंग-बिरंगका काल। ५ शराब रखनेका कंटर या सुराही।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीना—काचके जैसा थोडा सफेद और चिकना पदार्थविशेष। धातुद्रव्यके अलङ्कार और बरतन आदि पर तरह तरह मीना बैठाया जाता है। बहुत प्राचीन समयसे भारत वर्षमें इसका प्रचार है। जड़ाऊ गहनोंके इस तरहके चित्तनैपुण्यको मीनाकारी (Art of enamelling) या मीना-शिल्प कहते हैं। उक्त शिल्प इस समय प्रायः विलुप्त होता दिखाई देता है। केवल जयपुर-राज्यमें आज भी इस शिल्पकी सजीव अवस्था दिखाई देती है। इसके कारु नैपुण्यको देख कर सुसभ्य पाश्चात्य जातियां भी विमुग्ध हुई है।

जयपुर, अलवर, दिल्ली और काशीका स्वर्णमीना; मुलतान, वहवलपुर, काश्मीर, कांगड़ा, कुलू, लाहौर, हैदराबाद, करांची अब्बटाबाद, नूरपुर, लखनऊ, कच्छ और जयपुरका रौप्य-मीना तथा काश्मीर और जयपुर आदि स्थानोंका ताम्रमीना आज भी पृथ्वीमें मीनाशिल्पको प्रसिद्धि लाभ कर रहा है।

डाक्टर हेण्डली साहबने भारतीय शिल्प-पत्रिकामें लिखा है, कि जयपुरके शिल्पी इस तरह अपने शिल्प नैपुण्यकी सहायतासे सोनेका मीना तय्यार करते हैं, ऐसा तैयार करते हैं, कि सात रंगका इन्द्रधनुष भी उसके सामने मात हो जाता है। यानी उसकी उज्ज्वलता तथा निर्मलतामें इन्द्रधनुष भी बराबरी नहीं कर सकता। मीनाके ऊपर मणिखचित करने पर भी मीना की चमकमें कमी नहीं होती।

जो सोनार पहले सोनेके पत्तर पर पुराना पुस्तकका नमूना देख चित्र अङ्कित किया करते हैं, उनको चितेरा या चित्रकार कहते हैं। ये बङ्गालके नक्काशी करने वालोंकी तरह हैं। पहले गहनों पर घर बनाते हैं, पीछे इन्हीं घरोंमें मीना बैठा देते हैं। घरोंमें मीना बैठाने पर गहनोंका अपूर्व सौन्दर्य हो जाता है।

पहलेके घर बनानेवाले दूसरे दूसरे कारीगर हैं। किन्तु मीना बैठानेवाले दूसरे हैं। इनको मीनाकार कहते हैं। मीना बैठानेके पहले सोनेके गहनोंके बने घरको चिकना कर लिया जाता है। इसका रंडा नाना तरहकी मिलावटसे तय्यार किया जाता है। जयपुरके शिल्पी रंग बनाना नहीं जानते।

रंग तय्यार रहनेसे पहले तूतिएका मिलाना अत्यन्त आवश्यक होता है। विना इसके पक्का या टिकाऊ रंग नहीं होता। पीछे लोह और कोबाल्ट धातुकी अक्साइद (Oxide)-से रंग तय्यार होता है। जयपुरके भगोड़ सामन्त-राज्यमें कोबाल्ट धातु बहुतायतसे मिलती है। इसी धातुसे नीले रंगका उत्तम मीना तय्यार होता है। स्वर्णके ऊपर सब रंगके मीनेकी जड़ाई हो सकती है। रौप्य पर हरा, काला, गाढ़ा, पीला और लोहित रंगके मीनेकी जड़ाई होती है। तांबे पर सादा और कालेके सिवा किसी दूसरे रंगके मीनेकी जड़ाई होना सम्भव नहीं। किसी भी देशके शिल्पी लोहित वर्णके मीनेको किसी धातु पर स्थायीरूपसे प्रयुक्त न कर सके हैं, किन्तु ग्लासगो नगरकी शिल्पप्रदर्शनीमें जयपुरके लोहित-मीनेकी चमत्कारिता देख वहांके शिल्पी चकितस्तम्भित हुए थे।

जयपुरमें नाना प्रकारके गहनों पर मीनाकी जड़ाई होती हैं। कड़ा, वाला, वाजू और हार आदि गहने बड़े खूबसूरत मीनेसे जड़े जाते हैं। हीरा और मुक्तःखचित गहनोंकी बगलमें दूसरी ओर मीना लगाया जाता है। एक जोड़ा घड़ियालमुखी मीनासे जड़ी हुई चूड़ी (Bracelet) १००) रुपयेको मिलती है। मणिखचित होने पर इसका मूल्य २००) रुपये तक हो जाता है। एक जोड़ा कर्णफूल १८), मछलीके रूपके कर्णफूल ६) और शिरके कांटे १२ रुपयेको मिलते हैं। बहुत प्रकारके गहने तैयार होते हैं। आमकी शक्लकी 'घुकघुकी' अत्यन्त नैपुण्यके साथ बनाई जाती है। हिन्दू-मुसलमान इसका बड़े आदरके साथ व्यवहार करते हैं। मोहनमाला आदि गहनोंको देख आंखें चकमका जाती हैं। प्रायः ७० वर्ष पहले मीनाकारोंका काम दिल्लीसे बङ्गालमें आया था, किन्तु यह पटनेमें कुछ दिनों तक रह कर लुप्त हो गया।

मिष्टर बादेन पावल (Mr. Baden Powel)-ने मीना-शिल्पमें बनारसको जयपुरके नीचे ही स्थान दिया है। किन्तु इस समय बनारसमें इसकी अधिकता देखी नहीं जाती। लखनऊ और रामपुर अञ्चलमें आज भी बरतनोंमें मीना लगाया जाता है।

दिल्ली, काङ्गड़ा, मुलतान, झङ्ग आदि प्रदेशोंमें मीना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिल्पका काम बड़ी निपुणताके साथ होता है। इनमें दिल्लीका शिल्प कुछ कुछ जयपुरकी बराबरी कर सकता है।

बहवलपुरमें बड़ी बड़ी वस्तुओंमें मीनाका काम होता है। कहा गया है, कि ४०० वर्ष पहले सुलू नामके एक मनुष्यने इस मीना-शिल्पका आविष्कार किया था। उस समयसे इसकी बड़ी उन्नति हुई है।

बङ्गालमें किसी गहनेमें मीना लगानेमें एक रुपये भरीसे लगायत २ रुपये भरी तक खर्च पड़ जाता है। योधपुरमें 'हिमनिया' नामका एक सोनेका गहना तैयार होता है। यह कण्ठके रूपमें पहना जाता है। यह गहना भारतीय और औपनिवेशिक प्रदर्शिनियोंमें विशेष प्रशंसित हुआ था। इसका मूल्य २०) से २००) रुपया तक है। मारवाड़की हिन्दू स्त्रियां इसका आनन्दके साथ व्यवहार करती हैं। बीकानेरमें भी मीना-शिल्पका प्रचलन है। मीना लगानेमें ३) रुपये भरी मजदूरी पड़ जाती है। आसामके अन्तर्गत जोडहाट प्रान्तमें स्वर्ण मीनाका प्रचार है। किन्तु विक्री अधिक न रहनेके कारण क्रमशः इसका ह्रास हो रहा है। इन्दौरमें भी मीनाका काम होता है।

१६वीं शताब्दीमें जयपुरमें मीनाशिल्पकी अत्यन्त उन्नति हुई थी। मुगल-सम्राट् अकबरके दरबारमें मानसिंहके मीनाशिल्पकी एक छड़ी थी। यह अकबरके सिंहासनके समीप रखी रहती थी। मानसिंह यह छड़ी ले कर अकबरके दरबारमें जाया करते थे। ५२ इञ्च लम्बी इस छड़ीमें ३३ स्वर्ण-मण्डित तांबेकी चुङ्गी लगाई गई थी। इसके बीच बीचमें रंग बिरंगे स्वर्णके साथ हीरेकी जड़ाई हुई थी। इसमें मीनाके कामका शिल्प-नैपुण्य देख कर अवाक् रह जाना पड़ता था। इसके किसी किसी स्थानमें मीनाके काममें हरी हरी घास चरती हुई गायें दिखाई देती थी, किसी किसी जगह खिले हुए हरे पीले पुष्प-वृक्ष अपूर्व सोभा धारण करते दिखाई देते थे। जिस शिल्पीने इसे तैयार किया था, इस सभ्य जगत्में उस तरहके शिल्पी अत्यन्त बिरल हैं। इस समय भी जयपुरसे मीनाकामका जो पात्र प्रिन्स आफ वेल्सको उपहारमें दिया गया था, वह भी अत्यन्त उल्लेखनीय है। इसके बनानेमें चार वर्ष लगा था। इसको देख कर सर जार्ज वांडेउड्ने कहा था, कि यह भारतीय मीना-शिल्पका अद्वितीय स्मृति-स्तम्भ है। कहा गया है, कि इस मीनाशिल्पको मानसिंह लाहोरसे जयपुरमें लाये थे। जयपुरमें जो सब भुवनविख्यात शिल्पी उत्पन्न हुए थे, उनमें कुछके नाम इस तरह हैं:— हरिसिंह, अमरसिंह, कृष्णसिंह आदि। इनमें हरिसिंह और कृष्णसिंह समधिक प्रसिद्ध हैं।

काश्मीरमें भी मीनाके कामकी बड़ी उन्नति हुई है। भारतवर्षके अनेक स्थलोंमें काश्मीरके मीनाशिल्पकी चीजें विकती हैं। काश्मीरका मीना प्रायः नीले रंगका होता है। यहां तरह तरहके लोटे, गिलास, डमरू आदि बाजे और विविध अलंकारों पर मीनाका काम होता है। कश्मीरी शालकी बारीक दस्तकारीमें मीना-शिल्पका नैपुण्य भी दिखाई देता है। मीनाके कामका बरतन वजनके हिसाबसे विकता है। चांदीका मीना सवा रुपये भरी और तांबेका मीना ढाई आनेसे चार आने तक विकता है।

दिल्लीके मीनाके शिल्पमें पानदान और हुक्के बहुत विख्यात हैं। झङ्ग, मुलतानका गिलास मशहूर है। जयपुरकी शिल्पप्रदर्शनीके समय बहवलपुरसे मीना शिल्पका एक बोतल गिलास और शिशियां भेजी गई थीं। इनका शिल्प बड़ा ही मनोहर था। इनमें प्रत्येक यथाक्रम ८५), ८७) और १७) को विका था।

कलकत्तेकी अन्तर्जातीय महाप्रदर्शनीमें लखनऊसे एक हुक्का मीनाका काम किया हुआ आया था। इस पर जैसा कारुकार्य खचित हुआ था, उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। राजपूतानेके प्रतापगढ़में एक तरहके नकली नीले मीनाका काम होता है। यह इस तरह छिपा कर तैयार किया जाता है, कि शिल्पियोंके कुटुम्बके सिवा और दूसरा कोई नहीं जान सकता। ये सब शिल्पी हाथी घोड़े आदि कई तरहके जीव जन्तुओंकी पौराणिक चित्रावली और नाना तरहके विचित्र वस्तुओं पर नकली मीनाका काम करते हैं। इनकी इस शिल्पनैपुण्यकी पराकाष्ठा देख कर चमत्कृत होना पड़ता है। आज भी इनकी शिल्पसम्बन्धी बातें कोई नहीं जानता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मदेशमें भी मीनाशिल्पका थोड़ा बहुत प्रचार दिखाई देता है। प्रत्नतत्त्वविद् पण्डितोंका कहना है, कि मीना-शिल्पका काम पहले तूरानदेशमें आरम्भ हुआ। इसके बाद भारतवर्षमें आया। फिर चीनदेशमें गया। बादमें चीनसे असिरिया और वहांसे मिस्रदेशमें इसका प्रचार हुआ। इसके बाद क्रमशः यूरोपमें भी फैल गया।

मीनाकार (फा० पु०) वह जो चांदी या सोने आदि पर रंगीन काम करता हो, मीना करनेवाला।

मीनाकारी (फा० स्त्री०) १ सोने या चांदी पर होनेवाला रंगीन काम। २ किसी काममें निकाली या की हुई बहुत बड़ी बारीकी।

मीनाक्ष (सं० पु०) १ एक राक्षसका नाम। (त्रि०) २ मछलीके समान सुन्दर आंखोंवाला।

मीनाक्षी (सं० स्त्री०) मीनस्येवाक्षिणीव, अक्षिणी अस्याः। १ मत्स्याक्षी, वह जिसकी आंखें मछलीके समान सुन्दर हों। २ गण्डदूर्वा, गाड़र दूब। ३ कुबेरकी एक कन्याका नाम। ४ ब्राह्मी बूटी। ५ शक्कर, चीनी।

मीनाक्षी—मदुराकी एक रानी, राजा विजयराज चोक्कनाथ नायककी महिषी। त्रिचीनपल्ली जिलेके समरपुर और श्रीरङ्ग नगरमें इनकी कीर्त्तिका निदर्शन देखनेमें आता है।

मीनाघातिन्—मीनाण्ड देखो।

मीनाण्ड (सं० क्ली०) मत्स्याण्ड, मछलीका अण्डा।

मीनाण्डी (सं० स्त्री०) शर्कराभेद, एक प्रकारकी शक्कर।

मीनाम्बीण (सं० पु०) १ मछलीका जूस। २ खञ्जरीट पक्षी, खंजन।

मीनार (अ० स्त्री०) १ स्तम्भ, ईंट पत्थर आदिकी वह चुनाई जो प्रायः गोलाकार चलती है और ऊपरकी ओर बहुत अधिक तक चली जाती है। यह प्रायः किसी प्रकारकी स्मृतिके रूपमें तैयार की जाती है। २ मसजिदों आदिके कोनों पर बहुत ऊंची उठी हुई इसी प्रकारकी गोल इमारत जो खंभे के रूपमें होती है।

मीनारा (अ० पु०) मीनार देखो।

मीनालय (सं० पु०) मीनानामालयः। सागर, समुद्र।

मीनावाई—मध्यभारतके धारराज्यकी एक रानी, राजा २य आनन्दरावकी महिषी। स्वामीके मरने पर इन्होंने अपनी विलक्षण बुद्धि और शौर्य-बलसे सिन्धे और होल्कर राजके आक्रमणसे धार राज्यकी रक्षा की थी। अंगरेज राजके मालवा जीतनेके बाद इन्हें किसी विदेशी राजाका उपद्रव सह्य नहीं करना पड़ा था। राजा रामचन्द्र पंवारको इन्होंने गोद लिया था। इस बालकके शासनकालमें भी मीनाबाई अभिभावकरूपसे राजकार्य चलाती थीं।

मीमांसक (सं० पु०) मीमांसामधीयते वेद इति मीमांसा बुन् (कूमादिभ्यो बुन्। पा ४।२।६१) १ मीमांसा शास्त्र, वह जो मीमांसा-शास्त्रका ज्ञाता हो। पर्याय—सिद्धान्ती, मीमांसाशास्त्राध्येता।

"छायायास्तमसश्चापि सम्बन्धाद्गुण कर्मणोः।
द्रव्यत्वं केचिदिच्छन्ति मीमांसकसताश्रयाः॥"

(वैद्यकराजवल्लभधृत वादार्थदर्पण)

२ पूर्वमीमांसाके सूत्रकार जैमिनिऋषि। ३ कुमारिल भट्टका एक नाम। ४ भाष्यकार शवर स्वामीका एक नाम। ५ प्रभाकर। ये कुमारिल भट्टके छात्र और 'गुरु' नामसे प्रसिद्ध थे। इनका मत 'गुरुमत' कहलाता है। स्मार्त्त भट्टाचार्यने प्रभाकरके छात्रोंको प्राभाकर कहा है। ६ उत्तरमीमांसाके भाष्यकार शङ्कराचार्य। ये अद्वैतवादी थे। ७ रामानुज, ये विशिष्टाद्वैतवादी थे। ८ मध्वाचार्य। ये द्वैतवादी थे। यथा—

"मीमांसको वड़वाग्नेः कठिनामपि कुण्ठयन्नसौ जिह्वाम्॥"

(भक्तिरसामृत सिन्धु १।१।३)

मीमांसन (सं० क्ली०) मीमांसाकरण, किसी प्रश्नकी मीमांसा या निर्णय करनेका काम।

मीमांसा (सं० त्रि०) मान-विचारे (मानबधदान शानभ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य। पा ३।१।६) इति सन् अ-टाप्, अभ्यासस्येकारस्य दीर्घश्च। १ विचारपूर्वक तत्त्व-निर्णय। २ छः दर्शनोंमेंसे एक दर्शनशास्त्रविशेष। इसके दो भाग हैं—पूर्वमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा। पूर्वमीमांसाके ग्रन्थकार जैमिनि हैं और उत्तरमीमांसाके बादरायण। उत्तरमीमांसा वेदान्तके नामसे ही प्रसिद्ध है। जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा ही मीमांसादर्शन कहलाती है। पूर्वकाण्ड, कर्ममीमांसा, कर्मकाण्ड, यज्ञविद्या, अध्वरमीमांसा, धर्म्ममीमांसा ये सभी इसके नाम हैं। कोई कोई इसे द्वादश-लक्षणी भी कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नामकरण ।

वैदिक याग-यज्ञादि इस दर्शनके द्वारा मीमांसित हुए हैं, इसलिये इसका नाम मीमांसादर्शन है। विना प्रयोजनके कोई किसी कार्यमें नहीं लगता, धर्मनिरूपणके उद्देश्यसे जैमिनिने इस दर्शनका सूत्रपात किया ; इसलिये इस दर्शनका नाम धर्ममीमांसा हुआ है।

वेदके तीन काण्ड हैं—कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड। इनमें जिस वेदभागको कर्मकाण्डात्मक कहते हैं उसका इस दर्शनमें विचार हुआ है, इस लिये इस दर्शनका नाम पूर्वकाण्ड, पूर्वमीमांसा और कर्ममीमांसा है।

कर्मकाण्डात्मक वेदमें याग, दान और होम आदि नाना प्रकारके कर्म्मोंका उल्लेख रहने पर भी, यागको प्रधानता तथा उस सम्बन्धके विचार इस दर्शनमें यथोचित रूपसे आलोचित हुए हैं, इसलिये यह दर्शन यज्ञविद्या या अध्वरविद्या कहलाता है।

दर्शनमें धर्मसम्बन्धी विचारोंका बारह अध्यायोंमें वर्णन है, इसलिये इसको द्वादशलक्षणी भी कहते हैं।

वेदके मन्त्रभागकी मीमांसा करना इस शास्त्रका मुख्य उद्देश्य नहीं है। जहां कोई विधि निषेध नहीं पाया जाता, केवल उसी स्थानमें मन्त्रका अर्थ ले कर मीमांसा करनेका विधान है। विशेषतः कर्म्मकाण्डात्मक ब्राह्मणभागकी मीमांसा करनेके लिये ही इस मीमांसाशास्त्रकी रचना हुई है। उपसंहारमें इतिहास देखो।

प्रतिपाद्य विषय ।

जैमिनिकृत मीमांसादर्शनमें प्रायः सभी स्थानोंमें धर्मतत्त्वके विचार हैं। इससे साफ मालूम होता है कि एकमात्र धर्ममीमांसा ही इस दर्शनका उद्देश्य और प्रतिपाद्य है।

"धर्म्माख्यं विषयं वक्तुं मीमांसायाः प्रयोजनम्।"

धर्मके लक्षण तथा प्रमाणादिका निरूपण करना ही मीमांसादर्शनका एकमात्र उद्देश्य है। प्रायः सभी स्थानोंमें जो विषय प्रतिपादित होगा पहले वही निरूपित होता है। वेदान्तदर्शनमें 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' यही पहला सूत्र है। इससे जाना जाता है, कि ब्रह्मनिरूपण ही वेदान्तका प्रधान उद्देश्य है। इसलिये किसी दूसरी बातका आरम्भ न कर सूत्रकारने 'ब्रह्मजिज्ञासा' यही लिखा है। सांख्यदर्शनमें "अथ त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः" यही पहला सूत्र है। त्रिविध दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्तिको परमपुरुषार्थ कहते हैं। दुःख उसकी उत्पत्ति तथा निवृत्ति आदि हीका सांख्यदर्शनमें प्रतिपादन हुआ है। दुःखनिवृत्तिका उपाय निरूपण ही सांख्यदर्शनका उद्देश्य है। इसलिये इस दर्शनमें पहले ही दुःख शब्दका उल्लेख आया है। इसी प्रकार मीमांसादर्शनका धर्मनिरूपण ही मुख्य उद्देश्य है। इसलिये 'अथातो धर्म जिज्ञासा' इस सूत्रका आरम्भमें ही समावेश हुआ है।

वर्त्तमान समयमें जो मीमांसादर्शन प्रचलित है वह बारह अध्यायोंमें बंटा हुआ है। प्रथम अध्यायमें धर्मज्ञानका प्रयोजन, धर्मके लक्षण धर्मके प्रमाण और वेदविहित क्रियाकलाप इन्हें धर्म क्यों कहा जाता है, इन सब विषयोंकी आलोचना हुई है।

दूसरे अध्यायमें धर्मकर्मोंके अर्थात् यागयज्ञादिके प्रभेद यानी अनेकत्वका निर्देश है। तीसरे अध्यायमें यागयज्ञादिका अङ्ग प्रधान-भावनानिर्णय है अर्थात् किस यागका क्या अङ्ग है उसका निरूपण तथा कौन अंश प्रधान और कौन अंश अप्रधान उसका अवधारण है। चौथे अध्यायमें याग करनेवालेका गुण तथा जिस योगमें जो करना पड़ता है उस विषयका निर्णय है। पांचवें अध्यायमें यज्ञकर्मोंका क्रम निर्णय और छठेमें अधिकारोंका निर्व्वाचन है। सातवेंमें साधारणतया अतिदेश वाक्योंकी विवेचना है। आठवेंमें विशेषातिदेश-वाक्योंकी मीमांसा है। (अमुक कर्म अमुक कर्मके जैसा करना होगा ऐसे वाक्यको अतिदेश कहते हैं)। नवें अध्यायमें ऊह विचार है। ऊह शब्दका इस तरह अर्थ लगाया जाता है,—'अपूर्वोत् प्रेक्षणमूहः' मन्त्रादिमें जो पदार्थ नहीं है उसकी उत्प्रेक्षा या उसके उल्लेखको ऊह कहते हैं। इस ऊहको कैसे स्थानमें करना चाहिये, कैसे स्थानमें नहीं। इसका निर्णय करना ऊहके विचारका उद्देश्य है। जिस स्थानमें लिखा हुआ द्रव्य नहीं मिलता, वहां उसके बदलेमें दूसरे द्रव्यसे काम चलाया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है। ऐसे स्थानमें भी अतिदेश-विधान और कार्य-करणकालमें ऊह-विचारके सिद्धान्तोंका आश्रय लेना पड़ता है। जैसे, मधुके स्थानमें गुड़ देनेकी व्यवस्था है, लेकिन जहां मधुके स्थानमें गुड़ दे कर काम चलाया जाता है वहां "मधुवाता ऋतायते" इत्यादि मन्त्र पढ़ना चाहिये कि नहीं यह प्रश्न उठ सकता है। कारण मधु रहने पर तो वह मन्त्र अवश्य पढ़ना होता, लेकिन जब मधु न रहे, तब प्रश्न है, कि ऐसे स्थानमें उस मन्त्रको पढ़नेकी आवश्यकता है कि नहीं। अब ऊह विचारका सिद्धान्त है कि ऐसे स्थानमें भी उक्त मन्त्र ज्योंका त्यों पढ़ना चाहिये।

दशवें अध्यायमें बाध-निर्णय है। बाध शब्दका अर्थ निवृत्ति है। कहां किस मन्त्र या द्रव्यका निवृत्ति त्याग करना होगा उसका निर्णय करना बाध-विचारका उद्देश्य है।

ग्यारहवें अध्यायमें तन्त्रता है। इसका लक्षण—"अनेकमुद्दिश्य सकृत् प्रवृत्तिस्तन्त्रता" बहुत कर्मोंके उद्देशसे अंगोभूत एक कर्म करनेको तन्त्रसिद्धि कहते हैं। अर्थात् जिस स्थानमें एक कर्त्ताको अनेक कर्म करना है ऐसे स्थानमें एक अर्गके अनुष्ठानसे औरोंका फल मिल जायेगा। इस तरहका निर्णय करना तन्त्रता विचारका उद्देश्य है। जैसे स्नान प्रत्येक क्रियाका अंग है, शास्त्रकी सभी क्रियायें स्नानके बाद ही की जाती हैं लेकिन कर्त्ता यदि एक दिनमें पांच कर्म करे तो एक ही वार स्नान करना होता है, वार वार स्नान नहीं करना होता। उस एक ही स्नानसे और स्नानोंका फल मिल जायगा।

बारहवें अध्यायमें प्रसङ्गनिर्णय है। इसका अर्थ है—"अन्योद्देशेऽन्य सिद्धिः प्रसङ्गः" एक कार्यके उद्देशमें दूसरे कार्यकी सिद्धिको प्रसंग कहते हैं यानी "एक पंथ दो काज।" एक कार्यके लिये कुछ करने पर यदि अनिवार्यरूपसे दूसरा कोई फल सिद्ध हो जाय, तो उसे प्रसंगसिद्ध कहते हैं। जैसे आमके लिये वृक्ष रोपा जाता है लेकिन साथ ही छाया आप ही मिल जाती है। किसी एक प्रधान यागके लिये पुरोडास तैयार करने पर फिर दूसरे यागके लिये उसे तैयार करनेका जरूरत नहीं पड़ती। अंगयागका पुरोडास प्रसंगसिद्ध हुआ।

ऊपर लिखे १२ अध्यायोंको छोड़ चार और अध्याय पाये गये हैं, इन चार अध्यायोंका नाम सङ्कर्षकाण्ड है। भाष्यकार शवर स्वामी अथवा वार्त्तिककार कुमारिल अन्तके इन चार अध्यायोंका कोई उल्लेख नहीं करते हैं, इसलिये शंकराचार्यके मतवाले इन्हें मीमांसासूत्रमें नहीं। लेते लेकिन रामानुजके मत माननेवाले इन चारों अध्यायोंकी मौलिकताको स्वीकार करते हैं। उपसंहारमें मीमांसाके इतिहासमें आलोचना देखो।

इस दर्शनकी आवश्यकता।

महामुनि जैमिनिने अपने दर्शनमें विशेषतः इन्हीं सब विषयोंका विचार और सिद्धान्त निर्णय किया है तथा प्रसंगवश और और विषयोंकी भी पर्य्यालोचना की है। मीमांसा दर्शनमें जिन सब विषयोंका विचार किया गया है वे सभी वैदिक हैं।

वेदोंमें याग, दान और होमादि विषय भिन्न भिन्न स्थानोंमें जिधर तिधर लिखे गये हैं, उन्हें देख कर योगादि करना अत्यन्त कठिन है और पद पद पर भूल होनेकी सम्भावना है। महामुनि जैमिनिने मीमांसादर्शनकी रचना कर याज्ञिक लोगोंके कष्ट और सन्देहको दूर कर दिया है। मीमांसादर्शनके बाद हीसे कर्मकाण्डकी पद्धति और शिक्षा सुगम हो गई है।

वेद।

महामुनि जैमिनिने वेदको मन्त्र और ब्राह्मण इन दो भागोंमें बांटा है। "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" मन्त्र और ब्राह्मण दोनों भाग ही वेदके नामसे प्रसिद्ध हैं। पीछे फिर इन दो विभागोंके दूसरे तरहके विभाग किये गये हैं। जैसे ऋक्, यजुः और साम यही तीन विभाग।

मन्त्र और ब्राह्मणका इस प्रकार लक्षण निर्धारित हुआ है। "तच्चोदकेषु मन्त्राख्या" "शेषे ब्राह्मण-शब्दः" जो अनुष्ठान करनेके समय उपयुक्त अनुष्ठेय अर्थका ज्ञान कराता है, उसको मन्त्र तथा उसे छोड़ वाक्यसन्दर्भको ब्राह्मण कहते हैं। फिर भी किसी किसीके मतसे ऊपर कहे गये लक्षण प्रायिक हैं। "प्रयोगसमवेतार्थ स्मारका मन्त्राः" किन्तु जो मन्त्र कह कर सब दिनोंसे प्रसिद्ध है केवल वही मन्त्र हैं। सूत्रस्थानके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण उनको व्याख्यास्वरूप हैं। आचार्य शवर स्वामीने अपने भाष्यके अनेक स्थानोंमें ही ब्राह्मण भागको मन्त्रोंकी व्याख्यास्वरूप कहा है।

"ब्रह्मणो वेदस्य व्याख्यानामति ब्राह्मणम्।"

वेद ऋक्, यजुः और साम इन तीन भागोंमें विभक्त हैं। इन्हें छोड़ और भी दूसरे तरहके विभाग हैं, ये सब विभाग इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, नाराशंसी इत्यादि नामोंसे प्रसिद्ध हैं। वेदके उस अंशको जिसमें पुरानी घटनाओंका वर्णन है, इतिहास कहते हैं। पूर्वावस्था प्रकाशक वेदांशको पुराण, कर्त्तव्याकर्त्तव्य विषयक वेदभागको कल्प, प्रशंसा और गानयोग्य सन्दर्भको गाथा तथा मनुष्य चरित्र-बोधक सन्दर्भको नाराशंसी कहते हैं। वेदके ऋक् आदि जो तीन भाग हैं उनके लक्षण इस तरह निर्धारित हुए हैं।

"तेषामृक् यथार्थवशेन पादव्यवस्था" "गीतिषु सामाख्या" "शेषे यजुःशब्दः" मन्त्र और ब्राह्मण दोनों प्रकार वेद वाक्योंमें जो वाक्य अर्थानुसार पादवद्ध हैं वे सब ऋक् कहलाते हैं। जो सब वाक्य गाये जा सकते हैं वे साम और बाकी यजुः कहलाते हैं। ऋक्, यजुः और साम ये तीन भाग पूर्वकथित दोनों भागोंके अन्तर्गत हैं।

समूचे वेदसे हम लोग जो समझते हैं उसीको समझानेके लिये पूर्वमीमांसाकी रचना हुई है। और तो क्या, पूर्वमीमांसाकी सहायताके बिना वेदका प्रतिपाद्य अर्थ क्या है, उसे हम लोग नहीं समझ सकते। इसलिये ऐसा कोई न समझें, कि पूर्वमीमांसा वेदकी एक टीका या भाष्य है। वास्तवमें मीमांसादर्शनके एक भी सूत्रमें वैदिकपदकी व्याख्या नहीं है। फिर भी पूर्वमीमांसाकी सहायताके बिना वेदार्थ समझनेका कोई उपाय नहीं।

अत्यन्त प्राचीन कालसे उपदेशके कितने ही वाक्य इस देशमें प्रमाण माने जाते हैं, इन सब वाक्योंसे लोग जिसे कर्त्तव्य समझते हैं वही वास्तविक मनुष्यका कर्त्तव्य है। वही सब वाक्य "वेद" के नामसे प्रसिद्ध हैं। ये वेद श्रेष्ठ लाभका एकमात्र उपाय है।

वेदका अर्थ क्या है? इसके उत्तरमें पूर्वमीमांसाके रचयिता कहते हैं, कि कर्म ही वेदका अर्थ है। जिन कर्मोंके द्वारा किसी प्रकार दुनियादारी नहीं चलती और जिन्हें लौकिक प्रमाणकी सहायताके बिना हम लोग नहीं समझ सकते, वे ही कर्म वेदके प्रतिपाद्य विषय हैं।

जैमिनिने सम्पूर्ण वेदविभागोंके ऊपर लिखे लक्षण और उदाहरण दिखा सभोंमें विधि, अर्थवाद, मन्त्र और नामधेय इन चार प्रधान विभागोंको स्थिर किया है। पश्चात् उन्होंने उनके द्वारा धर्म्म और धर्म्म-जनक याग, दान और होमादि कर्म्मोंके स्वरूप और अनुष्ठान-प्रणालीको निश्चित किया है। मीमांसक लोग कहते हैं कि वैदिक वाक्यकी याग, दान या होमस्वरूप जो अर्थ नहीं निकल सकता उसका प्रमाण नहीं है अर्थात् उसको वेद नहीं कह सकते। यही जैमिनिका कर्मवाद है।

अवयव।

छः दर्शनोंमें मीमांसा दर्शन सबसे बड़ा है। इसके १६ अध्याय हैं। पहले १२ अध्यायोंमें पादसंख्या ४८ है। सूत्रसंख्या हजारसे कुछ कम और अधिकरणसंख्या भी हजार है। अधिकरणका अर्थ विचार है। मीमांसाशास्त्रका प्रत्येक अधिकरण पांच अवयवका है अर्थात् पांच अवयवमें समाप्त होता है।

"विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम्।
निर्णयश्चेति पंचाङ्गं शास्त्रेष्वधिकरणं स्मृतम्।" (भट्ट)

विषय—विचार्य वाक्य, जिसका विचार किया जायगा। विशय—संशय; पूर्वपक्ष—संशयके अनुसार किसी एक पक्षका अवलम्बन; उत्तर—पूर्वपक्षके दोषोंको दिखलाना; निर्णय—दोषोंको दूर कर अपने पक्षको सिद्ध करना। निर्णयका दूसरा नाम सिद्धान्त है।

ऊपर लिखे शास्त्रके पांच अंगोंका तात्पय यों है—पहले अंगमें विषय अर्थात् विचार्य वाक्यका उल्लेख रहता है। दूसरेमें उसके अर्थमें संशय किया जाता है। तीसरा अंग पूर्वपक्ष है। चौथे अङ्गमें पूर्वपक्षका प्रतिवाद रहता है। पांचवें अर्थात् अन्तमें प्रामाणादिके साथ सिद्धान्त निश्चित किया जाता है। इस प्रणालीके अनुसार किये गये विचारको मीमांसाशास्त्रमें अधिकरण कहते हैं।

न्याय आदि शास्त्रोंके विचारके पांच अंग हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मीमांसा-शास्त्रके विचारके भी पांच अंग है। इन दोनों-में अन्तर यही है, कि मीमांसामें वेद वाक्योंका विचार है और न्याय शास्त्रमें दृश्य पदार्थों तथा उनसे उत्पन्न ज्ञानका विचार किया गया है।

और सब दर्शनोंके जैसा मीमांसादर्शन भी सूत्रोंमें लिखा गया है। हर एक सूत्रकी रचना पंचाङ्ग विचार-प्रणालीके अनुसार हुई है।

मीमांसाके प्रथम सूत्रमें धर्म्म-विचारकी आवश्यकता-की विवेचना हुई है और दूसरे सूत्रके आरम्भसे ले कर पादके अन्त तक धर्म्म क्या है? धर्म्मके लक्षण क्या हैं? धर्म्म किन प्रमाणोंका प्रमेय अर्थात् सिद्धान्त है इस सब विषयोंके विचार तथा मीमांसा हुई हैं। दूसरे पादके आरम्भसे ले कर अन्त तक धर्म्मके साधन फल तथा धर्म्म-मूल वेदोंका प्रामाण्य स्थिर किया गया है।

आलोच्य विषय।

इस दर्शनका प्रधान आलोच्य विषय है "अथातो धर्म्म जिज्ञासा" पहला सूत्र। इसका अर्थ यह है, धर्म्म जिज्ञासा इसका नाम है या विचार द्वारा धर्म्मतत्त्व जानना अवश्य कर्त्तव्य है।

केवल वेदबोध्य अर्थ ही धर्म्म है तथा वेद ही धर्म्मके प्रमाण हैं। इसलिये ब्रह्मचारी वेदाध्ययनके बाद भी गुरुकुलमें वास कर धर्म्मकी जिज्ञासा करे। यहां जिज्ञासा शब्दका अर्थ विचारपूर्वक ज्ञानगोचर करना है। इस सूत्रका भी अधिकरणके अनुसार समझना होगा अर्थात् अधिकरणके अनुसार इसका अर्थ स्थिर करना आवश्यक है।

अधिकरण।

विषय—"स्वाध्यायोऽध्येतव्यः" "वेदमधीत्य स्नायात्" वेद अध्ययन करे और वेद अध्ययनके बाद स्नान अर्थात् समावर्त्तन करना पड़ता है। (वेदको अध्ययन करने-वाले ब्रह्मचर्य्यव्रतको समाप्त कर गृहस्थीमें प्रवेश करनेसे पहले जो विधियुक्त कर्म करते हैं, उसका समावर्त्तन है)। यह विधिवाक्य विचारनेके जोग्य विषय है।

संशय—वेदके अध्ययनके बाद ही समावर्त्तन करना होगा, या कुछ समय तक धर्म निर्णयके लिये गुरुगृहमें रहना आवश्यक होगा?

पूर्वपक्ष—वेदाध्ययनके बाद ही समावर्त्तन होता है, इस विधिके बल अध्ययनके बाद ही समावर्त्तन करना कर्त्तव्य है।

उत्तर-पक्ष—"स्वाध्यायोऽध्येतव्यः" यह विधि केवल अक्षर प्रत्यक्षर अर्थ ग्रहण करने नहीं कहती, तात्पर्य्य ग्रहण करनेका भी उपदेश देती है। लेकिन विचारके बिना तात्पर्य्यका ज्ञान नहीं हो सकता। अतएव अक्षरभक्त होने से निश्चित ज्ञान प्राप्त नहीं होता और निश्चत ज्ञान न मिला तो अध्ययनको सफलता हो नहीं सकती। इस-लिये समझना चाहिये, कि साधारण अध्ययनके बाद ही समावर्त्तन करना होगा, ऐसी विधि नहीं है।

सिद्धान्त—उक्त कारणसे अध्ययन समाप्तिके बाद भी धर्मजिज्ञासाके लिये गुरुके घर पर कुछ समय तक रहना अवश्य कर्त्तव्य है।

मीमांसक आचार्योंने जिस प्रकार सूत्रोंको अधिकरण-में शामिल किया है उसका एक अंश दिखलाया जा चुका। इसी दर्शनमें बराबर इस प्रणालीसे काम लिया गया है। "अथातो धर्मजिज्ञासा" इस सूत्रमें धर्म शब्द अधर्म शब्दका उपलक्षक है अर्थात् धर्मके जैसा अधर्मकी भी जिज्ञासा करनी चाहिये। धर्मकी जिज्ञासा जैसे धर्म-प्राप्तिके लिये करनी होती है उसी प्रकार अधर्मसे बचनेके लिये अधर्मकी भी जिज्ञासा करनी चाहिये। फलतः धर्म-लक्षणके निश्चित होने पर विपरीतके कारण अधर्मके लक्षण आपे आप निश्चित हो जाते हैं। इसके लिये अलग विचारकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

धर्म्म।

जैमिनिने धर्मके ये लक्षण बतलाये हैं—"चोदना-लक्षणोऽर्थो धर्मः।" चोदनाका अर्थ प्रवर्त्तक वाक्य है इसका दूसरा नाम विधि और नियोग है। लक्षण—इस-का अर्थ ज्ञापक या बोधक। अर्थ—अनिष्टविपरीत अर्थात् श्रेयस्कर। जिसका ज्ञापक या बोधक विधिवाक्य है, जो अनर्थ विपरीत अर्थात् श्रेयस्कर या इष्ट है उसे ही धर्म कहते हैं। तात्पर्य यह, कि विधिबोधित भविष्यत् श्रेय स्कर क्रियाकलाप याग, दान और होमादि धर्म कहे जाते हैं। इसका प्रमाण चोदना अर्थात् वैदिक विधिवाक्य है। क्योंकि अभावसे आत्मामें उत्पन्न भविष्यत् मंगलके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारणस्वरूप गुणविशेष या संस्कारविशेषको धर्म कहते हैं। इस धर्मको दूसरे शास्त्रोंमें पुण्य या शुभादृष्ट कहा गया है। इस सूत्रका भी अधिकरणके अनुसार विचार किया गया है।

विषय—धर्म।

संशय—धर्ममें प्रमाण है या नहीं? यदि प्रमाण है तो वह प्रसिद्ध प्रत्क्षादि प्रमाणोंमें है या केवल विधि-वाक्यका दृष्टिगत है। इसमें प्रत्यक्षादि प्रमाणोंकी सहायता है वा नहीं?

पूर्वपक्ष—विधिवाक्य प्रमाण नहीं है। वाक्यमात्र प्रत्यक्षादि प्रमाण हैं, समर्पित पदार्थका अनुवादक है। अतएव यह पृथक् प्रमाण नहीं है। अतएव कहना पड़ेगा, कि धर्ममें प्रमाण नहीं है।

अथवा धर्म प्रत्यक्ष और अनुमान अथवा दूसरे प्रमाण का प्रमेय है। अथवा धर्म योगियोंके लिये प्रत्यक्ष है और हम लोगोंको अनुमान या विधिवाक्यके द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

किसी निश्चित कारणके बिना यह संसार इतना विचित्र न होता और न इस इतनी विषमता ही रहती। कहा गया है, कि जगत्की विचित्रताका कोई दूसरा कारण नहीं है, धर्म ही एकमात्र कारण है। धर्म केवल विधि-वाक्योंसे प्राप्य नहीं वरन् अर्थापत्तिके साथ विधिवाक्य द्वारा प्राप्य है। धर्मप्रमाणके सम्बन्धमें ये चार पक्ष स्थापित हो सकते हैं।

उत्तर—विधिके शब्द सुननेसे जो ज्ञान होता है उस ज्ञानके विरुद्ध दूसरा प्रमाण न रहने पर शब्दज्ञान संशय-रहित प्रमाण हुआ। अतएव शब्द रहने पर धर्ममें प्रमाण नहीं है ऐसा कहना नितान्त अनुचित है। (मनुष्य) वक्ताके दोषसे उसके वाक्यका प्रमाण न हो तो न हो, वेद मनुष्यका वाक्य नहीं, अतएव वेदके सम्बन्धमें यह संशय न रहनेके कारण वेद धर्मके विषयमें स्वतःसिद्ध और आदि प्रमाण है। प्रत्यक्षादि प्रमाण वर्त्तमान पदार्थका उपलम्भक अर्थात् बोधक है, भविष्यत् पदार्थका बोधक नहीं है। धर्म भी वर्त्तमान पदार्थ नहीं है यह भविष्यत है, कारण इसे उत्पन्न करना पड़ता है। अतएव यह प्रत्यक्षादि प्रमाण द्वारा स्थिर हो नहीं सकता। योगी लोगोंका योगसे उत्पन्न ज्ञान भी भावनासे उत्पन्न होता है वह पहले अनुभव किये गये या सोचे गये पदार्थोंको स्मृतिविशेष है। किस प्रकार वह ज्ञान जिसका कभी अनुभव न हुआ, जो कभी सोचा न गया, जिसकी उत्पत्ति करनी पड़ती है, उस धर्मका प्रमाण दे सकता है।

सिद्धान्त—ऊपर लिखे कारणोंसे यह स्थिर हुआ कि एकमात्र विधिवाक्य (चोदना) ही धर्मका प्रमाण है।

मीमांसाशास्त्रके अधिकरण अर्थात् विधिवाक्यकी विचार-प्रणालीके दो उदाहरण दिये गये। सभी सूत्रोंका इसी प्रकार अधिकरणके अनुसार अर्थ लगाना होगा।

चोदना (विधिवाक्य) ही धर्मका प्रमाण है और चोदनागम्य (विधिवाक्यसे प्राप्य) अर्थ ही धर्म्म है। इन लक्षणोंके स्थिर होने पर "चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म्मः" इस तरहका सूत्र दिया गया है।

प्रमाण द्वारा इस धर्मका निर्णय करना आवश्यक है। कौन धर्म कौन प्रमाणका प्रमेय है, पहले इसका विचार करना परमावश्यक है। धर्म प्रत्यक्ष ज्ञानकी वस्तु है या नहीं, यह निश्चित करनेके लिये पहले प्रत्यक्ष ज्ञान किसको कहते हैं यह निश्चय करना चाहिये। इन्द्रिय वर्त्तमान वस्तुओंमें संयुक्त होती है इसलिये आत्मामें इन्द्रियसंयुक्तवस्तुका ज्ञान होता, इस ज्ञानको प्रत्यक्षज्ञान कहते हैं। इस प्रकार वर्त्तमान वस्तुका बोधक और अवर्त्तमान वस्तुका अबोधक धर्मका प्रमाण नहीं है। जो धर्म विद्यमान नहीं है उसे स्थिर करने-के लिये प्रत्यक्षके प्रत्यक्षमूलक अनुमानादि प्रमाण काम-में नहीं ला सकते।

शब्दवाद।

अर्थके साथ शब्दका जो सम्बन्ध है अर्थात् बोध्यबोधक भाव है वह नित्य है। यह कृत्रिम या सांकेतिक नहीं है लेकिन स्वाभाविक है और इसीलिये औपदेशिक ज्ञान अर्थात् सुना हुआ अव्यतिरेक अर्थात् अबाधित और अव्यभिचारी सत्य है। शब्द अज्ञात विषयका सच्चा ज्ञान उत्पन्न करता हैं इसलिये यह स्थायी प्रमाण है। इसका प्रमाण भी दूसरे पर निर्भर नहीं करता अर्थात् वह स्वतः सिद्ध है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे स्थानमें उसको या उसके जैसे दूसरेको देखने पर उसके सम्बन्धमें अदृश्य पदार्थोंका जो ज्ञान होता है उस ज्ञानको अनुमिति कहते हैं। आगके साथ धुआं उठता है। हम लोग बराबर देखते हैं, कि धुआं और आग बराबर साथ रहती है। अब हृदयमें एक वास्तविक ज्ञान सञ्चित रहता है, कि धुआंका कारण आग है, आग धुआंके साथ रहती है। इस सञ्चित ज्ञानके कारण पहाड़ आदि पर धुआं देख कर अनुमान करते हैं कि जहां से धुआं उठता है वहां आग अवश्य होगी। यही अनुमिति है। इस प्रकारकी अनुमिति भी धर्मका प्रमाण नहीं हो सकती अर्थात् इस अनुमानके प्रमाणसे भी धर्मनिर्णय नहीं हो सकता।

जैमिनिने निश्चय किया है, कि शब्द और अर्थ दोनों ही नित्य है तथा उनका बोधकबोध्य सम्बन्ध भी नित्य अर्थात् स्वाभाविक है। जैमिनिने पहले यह प्रतिज्ञा कर इसकी ६ आपत्तियां की है और पीछे उनका खण्डन किया है।

कोई कोई दर्शनकार (गौतम और कणाद) शायद कह सकते हैं, कि शब्द एक प्रकारकी उच्चारण क्रिया है, यह क्षणस्थायी है और चेष्टाविशेषसे उत्पन्न होता है। शब्द जो क्रियमाण है वह प्रत्यक्ष है। जैसे उच्चारणके पहले शब्द नहीं रहता, उच्चारणके बाद अनुभवमें आता है। अतएव क्रियमाण और क्षणस्थायी शब्दके साथ अक्रियमाण स्थायी अर्थका नित्य सम्बन्ध सम्भव नहीं।

शब्द स्थिर नहीं रहता और मुहूर्त्तकाल भी नहीं ठहरता। इसीसे जाना जाता है, कि शब्द पहले क्षणमें उत्पन्न हो कर दूसरे क्षणमें अस्तित्वको प्राप्त कर तीसरे क्षणमें विलीन हो जाता है।

लोग कहते हैं 'शब्द करो' 'शब्द मत करो'। शब्द करो, शब्द मत करो इस तरहका प्रयोग पूर्वकालसे प्रचलित है और इससे निश्चित होता है, कि शब्द मनुष्यकृत है, नित्य नहीं है।

एक ही शब्दका एक समयमें यहां, वहां, अनेक स्थानोंमें, अनेक देशोंमें मनुष्य उच्चारण करते हैं और सुनते भी हैं। अगर शब्द एक और नित्य होता तो इस प्रकार यौगपद्य नहीं हो सकता था। व्याकरणकी प्रक्रियामें भी देखी जाती है, कि शब्दोंकी प्रकृतिमें विकार होता है। 'इ' शब्द प्रकृति है 'उ' शब्द उसकी विकृति है अर्थात् व्याकरणमें 'इ' के 'य' होनेका विधान है। सभी नित्य पदार्थ अधिकारी हैं। शब्द नित्य होता तो इस प्रकार विलासविषयक न हो सकता था।

शब्दकी वृद्धि और उसका ह्रास देखा जाता है। अगर उच्चारण करनेवाले अधिक रहें तो शब्द बढ़ता है और कम रहें तो शब्द घटता है। जिसका ह्रास और वृद्धि होती है वह नित्य नहीं है।

शब्दकी नित्यताके सम्बन्धमें ये आपत्तियां कर फिर नीचे लिखे अनुसार उनका खण्डन किया है। शब्द उच्चारणके पूर्व उपलब्ध नहीं होता, उच्चारणके बाद उपलब्ध होता है। सिर्फ यही देख कर शब्दकी अनित्यताका निर्णय करना उचित नहीं। इस दर्शनमें नित्यताका भी विचार हो सकता है। नित्य निराकार शब्द भी उच्चारणके पहले अज्ञात रहता है अर्थात् शब्द उच्चारणके पहले अव्यक्त रहता है। उच्चारणचेष्टासे वह व्यक्त होता है। अतएव उच्चारण क्रियाके बाद शब्दका अनुभव होते देखा जाता है सही, लेकिन यह शब्दकी अनित्यताका कारण नहीं हो सकता। सारांश यह कि शब्द हम लोगोंकी नित्यताका यह प्रमाण हो सकता है।

शब्दके सम्बन्धमें दूसरी आपत्ति भी ठहर नहीं सकती। शब्द उच्चारणके बाद ही विनष्ट हो जाता है, यह भी तुच्छ आपत्ति है। शब्द नष्ट नहीं होता, यह जैसेका तैसा रहता है केवल सुननेमें नहीं आता। ऐसी बहुत चीजें हैं, जो हैं लेकिन इन्द्रियगम्य नहीं हैं। 'शब्द करो' 'शब्द मत करो' यह लौकिक प्रयोग ध्वनिके सम्बन्धमें है, शब्दके सम्बन्धमें नहीं। लोग स्थित शब्दके प्रकाशक ध्वनिविशेषको ही करने कहते हैं, शब्द करने नहीं कहते।

जिस प्रकार एक नित्यसूर्य्यको एक समय बहुत स्थानोंमें बहुत लोग देखते हैं उसी प्रकार एक नित्य वर्त्तमान वर्ण शब्दको अनेक स्थानोंमें अनेक लोग सुनते भी हैं।

व्याकरणमें 'इ' के स्थानमें 'य' वर्णका विधान है सही परन्तु दोनों वर्णोंमें प्रकृति-विकृतिका सम्बन्ध नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ये दोनों वर्ण एकदम स्वतन्त्र हैं। कोई किसीकी प्रकृति नहीं, और न कोई किसीकी विकृति ही आपत्ति है।

दूसरी आपत्ति यह है, कि शब्द बढ़ता है। यह भी अत्यन्त तुच्छ है। शब्द नहीं बढ़ता, वरन् उच्चारण करनेवालोंके कंठकी आवाज ही बढ़ती है। बहुत लोग जब एक साथ बोलते हैं, तब बड़ी आवाज होती है, शब्द जैसेका तैसा रहता है।

जैमिनिने इस प्रकार सभी आपत्तियोंका खण्डन कर शब्दकी नित्यताका प्रतिपादन किया है। शब्द नित्य है, क्योंकि उच्चारणमात्र ही परार्थ है। लोग अपने जाने हुए शब्दार्थका दूसरेको ज्ञान दिलानेके लिये उस शब्दार्थको व्यक्त करनेवाली ध्वनि करते हैं जिसको उच्चारण कहते हैं। यदि शब्द पहले होसे रहे तो दूसरोंको उसका ज्ञान करानेके लिये उस शब्दको बतलानेवाली ध्वनि करनेकी लोगोंकी प्रवृत्ति हो सकती है। अगर नहीं, तो यह प्रवृत्ति हो ही नहीं सकती।

गो शब्दका उच्चारण करने पर उस समय सभी गौओंका ज्ञान हो जाता है। यदि शब्द नित्य न रहता तो इस सम्पूर्णताका ज्ञान न होता। लोग ऐसा नहीं कहते, कि आठ बार गो शब्द करो। यह सब लोगोंका अनादिकालसे आता हुआ व्यवहार शब्दको एकता और नित्यता सिद्ध कर सकता है।

उत्पन्न द्रव्यमात्रका उपादान या कारण रहता है किन्तु शब्द उत्पादनका उपादान दुर्लभ है। क्योंकि, शब्दकी उत्पत्ति और विनाशका कारण (जिसको अपेक्षा कहते हैं) नहीं है अतएव शब्दकी उत्पत्ति नहीं, और न विनाश ही है।

कोई कोई आचार्य समझते हैं, कि वायु ही शब्दका उपादान अर्थात् कारण है। ये सब आचार्य शब्दकी उत्पत्ति और विनाश है, ऐसा कह सकते हैं लेकिन यह बात नहीं है। शब्दका कारण वायु नहीं। वायु ध्वनिका कारण है। वायु घातप्रतिघातोंसे उत्पन्न संयोग-विभागादिके बशसे ध्वनियोंको गुणी हो चारों ओर तरंगके रूपमें फैल जाती है। अनन्तर वह कानोंमें पड़ अनुभवमें आ जाती है। अतएव शब्दध्वनि व्यङ्ग होनेके कारण ध्वनिसे भिन्न है। इसलिये भी शब्द वायुसे उत्पन्न नहीं होता। जब वायु शब्दके उत्पत्ति-विनाशका कारण नहीं हुई, तो वह दूसरे पदार्थोंके शब्दका कारण होगी, सम्भव नहीं।

इसलिये वेद भी कहते हैं, कि शब्द नित्य है। इस दर्शनके व्याख्याकारोंने और भी कहा है, कि शब्द ज्ञानका मूल शब्द है, शब्दज्ञान पुरुष (कर्त्ता)के अधीन है। भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा और इन्द्रिया पाटव ये चार दोष पुरुषके हो सकते हैं। अतएव पुरुषकल्पित शब्द अप्रमाण है, तो भी वेद-शब्द अपौरुषेय हैं। इनमें वे दोष न रहनेके कारण वेद शब्दका प्रमाण अक्षत और स्वतः सिद्ध है। शब्द और शब्दार्थ कभी भी (पुरुषकृत) कृत्रिम नहीं। दोनोंका सम्बन्ध भी पुरुषकृत सङ्केतमूलक नहीं है। अतएव किसी भी प्रकार वैदिक शब्दमें पुरुष-सम्पर्क दिखाया नहीं जा सकता। फिर शब्दके उत्पत्तिपक्षका उत्थान और उसका खण्डन किया गया है तथा पद, वाक्य और वाक्यार्थके बोध्य-बोधक सम्बन्धकी सङ्केत-मूलकता कहां तक मनुष्य करते हैं। इस पक्षका उत्थापन और खण्डन किया गया है। पश्चात् जैमिनिने वाङ्मय वेदमें काठक, कालापक, पैप्पलादक आदि संज्ञा शब्दोंका दृष्टान्त दे ऋषि-प्रणीत आशंका कर उन प्रयोगोंको कृतिमूलकताको छोड़ प्रवचन मूलकताके व्यवस्था की है। (कठेन कृतं काठकं, ऐसा नहीं, कठेन प्रोक्तं कठेन आचरितं) इस प्रकार कठने जैसा आचरण किया, वहां कठ है। कठ ऋषिने वैसा किया नहीं, केवल प्रचार किया था। इस शब्दवादके बल पर जैमिनिने वेदको अपौरुषेय निश्चित किया है।

और और दर्शनोंके जैसे इस दर्शनमें प्रत्याक्षादि प्रमाण और उनके प्रमेय अनेक पदार्थोंका विचार दिखाया गया है। किन्तु ये सब अत्यन्त संक्षेपमें हैं। इसमें केवल वेदवाक्यके विचार ही बहुत विस्तार हैं तथा वैदिक विधिवाक्य, अभ्रान्त, स्वतः प्रमाण और श्रेष्ठ प्रमाण हैं इसीका इसमें प्रतिपादन हुआ है।

सामर्थ्य या अपूर्व।

धर्म्म है, इसमें मतान्तर नहीं। यह धर्म्म याग, दान और होमादि रूपमें वर्णित हुआ है। याग, दान और होमादि विशेष कार्यमें विशेषफल देते हैं। अतएव याग, दान और होमादि ही धर्म्म है। याग, दान और होमादि इन्हें (अनुष्ठान)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेवालेकी आत्मामें जो सामर्थ्य विशेष उत्पन्न करते हैं वह सामर्थ्यविशेष याग, दानादिका फल है। इस फलविशेषके कारण कर्त्ता अनुष्ठाता) भविष्यत्में स्वर्गादि उपभोगका योग्य हो जन्मग्रहण करता है।

मीमांसादर्शनमें इस सामर्थ्यको "अपूर्व" कहते हैं दूसरे दूसरे शास्त्रोंमें इसे अदृष्ट, पुण्य और धर्म्म बतलाया है। इस मतके अनुसार भी याग, दान और होमादि नामक क्रिया-कलाप धर्म्म है। यह द्रव्य, गुण और क्रियाका शिल्पविशेष है। अतएव धर्म्मका प्रथमरूप प्रत्यक्ष है किन्तु इसका अपूर्व नामक व्यापार या शक्ति अनुमेय है।

दूसरोंकी विवेचनासे याग, दान होमादि क्रियाके बलसे उत्पन्न अपूर्व नामक सामर्थ्य ही स्वर्गादि फल देनेवाला है। यह अपूर्व सामर्थ्य ही धर्म है। तब लोग या शास्त्र जो यागादि कर्म्मको धर्म्म कहते हैं ऐसा उपचार क्रमसे ही कहा करते हैं। आयु बढ़ानेवाले घीको आयु कहना वैसा ही है जैसा धर्म्म देनेवाली क्रियाको धर्म्म कहना। इस मतसे धर्म्म जनसाधारणके अनुभवसे बाहर होने पर भी योग अनुभवका विषय है। योगी लोग योगज सन्निकर्षके बलसे धर्म्माधर्म्म जान लेते हैं।

कोई कोई कहते हैं, कि क्रिया जनित अपूर्व शक्ति ही धर्म्म है। यह बात सत्य है, लेकिन यह ऋषि-ज्ञानके दृष्टिगत है। इस सम्बन्धमें मीमांसक लोग कहते हैं, कि धर्म्म और अधर्म्म कायिक, वाचिक और मानसिक हैं। ये क्रियासे उत्पन्न होते है तथा ये ही भविष्यत् सुख-दुःखके बीज होते हैं। धर्म उन फलों का जन्मान्तरभावी है। अर्थात् यह फलभोग दूसरे जन्म में होता है। इसलिये यह लौकिक अनुभवसे बाहर है किन्तु वदिक वाक्योंसे इसका ज्ञान होता है।

प्रामाण्यवाद।

ज्ञान उत्पन्न करनेकी सामर्थ्य रहनेके कारण वाक्य ही प्रमाण हैं। यह स्वतन्त्र और स्वतःप्रमाण है। यों तो अयथार्थ वाक्य भी बुद्धि उत्पन्न करता है, पर उस बुद्धिमें कारणदोष और बाधकज्ञान रहनेके कारण उसे प्रमाण नहीं कह सकते। फिर भी, वेदवाक्य अपौरुषेय अर्थात् मनुष्यकृत नहीं है। अतएव यह उक्त दोषोंसे रहित है, इस कारण वेदवाक्यका प्रमाण अक्षत है।

यहां पर देखना होगा, कि मनुष्यके किस प्रकार प्रामाण्यज्ञान उत्पन्न होता है। यह प्रमाण है, वह प्रमाण नहीं है, यह ज्ञान क्या ज्ञानके स्वभावसे आपे आप उन्नत होता है? अथवा यह कारणके गुणदोष देखनेसे अथवा अर्थक्रिया ज्ञानके द्वारा अर्थात् ज्ञेयपदार्थ-को कार्यकारिता देखनेसे उत्पन्न होता है। अथवा ज्ञानके स्वभावसे पहले प्रामाण्य-ज्ञान उत्पन्न होता है और पीछे ज्ञेयका अन्यथाभाव और कारणका दोष ज्ञानगम्य हो कर उसे दूर करता है। यह भी देखा जाता है, कि जहां ज्ञेयका तथात्व है, बाधक ज्ञानका अनुदय और कारणदोषका अनवधारण है, वहीं पर प्रामाण्य बोधका स्थायित्व देखा जाता है। इस विषयमें किसी किसी मीमांसकका सिद्धान्त इस प्रकार है—कारणकी कार्यशक्ति स्वाभाविक है, इसीलिये ज्ञान भी अपने स्वभाव और सामर्थ्यसे प्रामाण्य इन दोनोंको अवधारण करता है। इसमें दूसरेका विचार इस प्रकार है—ज्ञानपदार्थ एक समयमें अपनी अवगाह्य वस्तुके तथात्व और अ-तथात्वको समझने वा ग्रहण करनेमें समर्थ नहीं है। क्योंकि, तथात्व और अतथात्व ये दोनों ही भाव परस्पर विरोधी हैं, इस कारण एक समयमें और एक ज्ञानमें उक्त दोनों ज्ञान अवस्थान नहीं कर सकते। अतः यह स्वीकार करना होगा, कि कारणके गुणदोषके ज्ञान द्वारा ही प्रामाण्यादिका अवधारण हुआ करता है। इस पर कोई कोई मीमांसक कहते हैं, कि जब तक कारणका गुण दोष मालूम न हो जाय तब तक यदि उससे उत्पन्न वाक्यादि प्रमाण हैं वा अप्रमाण यह स्थिर न हो तो ज्ञानको निःस्वभाव वा निःशक्ति स्वीकार करना पड़ेगा। किन्तु इसे वे लोग स्वीकार नहीं करते। अतएव यह कहना उचित है, कि पहले अप्रामाण्य और पीछे संवाद ज्ञानादि द्वारा उसका अपनोदन और प्रामाण्य ज्ञानका उद्भव हुआ करता है। थोड़ा गौर कर देखनेसे मालूम होगा, कि ज्ञान उत्पन्न होते ही वह ज्ञेयका तथात्व अवधारण नहीं कराता। जब कारणका गुण और अर्थका तथात्व प्रतीत होता है, तभी प्रमाणजनित ज्ञानसे प्रामाण्यका उदय होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दज्ञानका कारण शब्द है, उसका गुण आप्त-प्रणीतत्व है। जब तक 'यह आप्त वाक्य है' ऐसा ज्ञान उत्पन्न न होगा, तब तक उस वाक्यमें प्रामाण्यका अवधारण नहीं होगा। विशेषतः जो वेदको अपौरुषेय कहते हैं, उनके मतसे वेदमें आप्तप्रणीतत्व गुणका अभाव है और यह बात भी है, कि वेदमें 'वनस्पतयः सत्रमासत' 'शृणोत ग्रावाणः' 'वनस्पतियोंने यज्ञ किया था' हे पत्थर! तुम लोग सुनो, इत्यादि अनेक असम्बद्ध वाक्य दिखाई देते हैं। इन सब बातोंको देख कर कौन नहीं कह सकता, कि वेद अनाप्त-प्रणीत है। यदि यह अनाप्त प्रणीत है, तो यह अप्रामाणिक है। इसका खण्डन कर मीमांसक कहते हैं—

"परापेक्षं प्रमाणत्वं नात्मानं लभते क्वचित्।
मूलोच्छेदकरं पक्षं कोहि नामाध्यवस्यति॥"

परापेक्ष प्रामाण्य आत्म-प्राप्तिमें असमर्थ है। कौन बुद्धिमान् पुरुष मूलनाशक पक्षको स्वीकार कर सकता है? इसका तात्पर्य यह है, कि यदि सभी ज्ञान अपनी क्षमतासे स्वग्राह्य विषयोंके तथात्वको अवधारण नहीं करते, तो मनुष्य हजारों जन्ममें भी किसी एक वस्तुका तथात्व अवधारण नहीं कर सकता। अतएव प्रामाण्यका व्यवहार दिखाई नहीं देता; लोप हो जाता। यह सोचनेकी बात है, कि कारण गुण-ज्ञान भी ज्ञान ही है। इससे उसको भी अपने विषयके तथात्वको अवधारण करनेके लिये दूसरे ज्ञानका साहाय्य लेना पड़ेगा। फिर उस ज्ञानको भी अन्य ज्ञानका साहाय्य लेना पड़ेगा। इस तरहका साहाय्य लेना अवश्य ही मूलमें हानिकारक है, अर्थात् प्रामाण्य व्यवहारका उच्छेदक हैं। किन्तु अर्थ क्रियाका ज्ञान परापेक्ष नहीं, वरं वह स्वतः प्रमाण है। वह ज्ञान अपनी सामर्थ्यसे ही अपने विषयोंका तथात्व अवधारण करता है, यह बात भी अव्यभिचारी नहीं है। स्वप्नावस्थामें जलाहरण नामकी क्रिया नहीं रहती, फिर भी उसका ज्ञान होता है। 'स्वप्नमें जल ला रहा हूं' ऐसा ज्ञान होता है, किन्तु यथार्थमें झूठ है। अतएव वादीका सिद्धान्त अपसिद्धान्त है। इस विषयमें मीमांसकका यह सिद्धान्त है,—ज्ञानमात्र ही स्वतः प्रमाण है। "वस्तुपक्षपातो हि धियां स्वभावः" वस्तु याथार्थ्यकी ओर ही ज्ञानकी गति है। ज्ञान ही प्रमाण है और उसका प्रामाण्य भी स्वतोग्राह्य है। थोड़ा गौर कर देखनेसे साफ दिखाई देगा, कि प्रामाण्य ज्ञान ही प्रथम है। भ्रमस्थलमें भी पहले प्रामाण्य ही है, पीछे उसका अपवाद हुआ करता है। ऐसे स्थलमें पहले उत्पन्न हुआ ज्ञान पीछे पदार्थान्यथा ज्ञान और कारणदोषज्ञानके द्वारा दूर होते देखा जाता है। जहां अपवाद नहीं होता, वहां अविवादमें पहले उत्पन्न हुआ प्रामाण्य ही स्थायी होता है।

लौकिक शब्दमें अनाप्त पुरुषोंका सम्पर्क रहता है। इसी कारणसे वह अप्रामाण्य दोषसे दूषित है। वेद शब्द वैसा नहीं है। इसमें पुरुष दोषका अनुप्रवेश रहनेसे वेद शब्दमें अप्रामाण्यकी आशङ्का नहीं।

ऐसा कोई प्रबल प्रमाण नहीं जो वेदबोध्य अर्थका अपवाद करनेमें या मिथ्यात्व प्रमाणित करनेमें समर्थ हो। 'अश्वमेध यागसे स्वर्ग होता है' यह एक वेदार्थ है। इस अर्थके विरुद्धमें अर्थात् स्वर्ग नहीं होगा, ऐसे अर्थमें प्रत्यक्ष या अनुमान कोई भी प्रमाण उपस्थित नहीं। ऐसे स्थलमें कुछ लोग कहते हैं कि शब्दका पृथक् प्रमाण नहीं। शब्द केवल वक्ताके अन्तराभिप्रायका अनुवादक है। वाक्य सुनने पर श्रोताको वक्ताके भीतरी ज्ञानका पता लग जाता है। जिन सब ज्ञानोंके आकारवक्ताके भीतर अङ्कित हो जाते हैं, वे सब ज्ञान वक्ताके प्रत्यक्ष आदिसे अनतिरिक्त हैं। वक्ता जो देखता है, या सुनता है उसे समझाने या व्यक्त करनेकी आशासे शब्दविशेष उच्चारण करता है, श्रोता उसे सुन अनुमानसे समझ लेता है। अतएव वाक्य-प्रत्यक्ष आदि ज्ञानोंके अनुवादके सिवा और कुछ नहीं। इसके उत्तरमें मीमांसक कहते हैं—ऐसा नहीं, शब्द भी प्रमाण है, प्रत्यक्ष आदिकी तरह स्वतः प्रमाण हैं। मनुष्य कहता है, इस बातका अर्थ क्या। तात्पर्य यह कि यथावस्थित शब्द कण्ठध्वनिमें सजाता है या आरोहण कराता है, उत्पन्न नहीं करता। वर्ण अनादि निधन है, पदार्थ अनादिनिधन तथा बोध्यबोधक शब्द भी अनादि निधन है, वेद अपौरुषेय है अतएव अनाप्त वाक्य है, अर्थात् लोकवाक्यके प्रमाणशून्य होने पर भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेदवाक्यका प्रामाण्य उपरोक्त युक्तियोंसे किया जा सकता है।

कारणदोष और बाधकज्ञानवर्जित अगृहीतग्राही ज्ञान ही प्रमाण है अथवा अज्ञात ज्ञापक अबाधित या अविसंवादी विज्ञान ही प्रमाण है। यह लक्षण शाब्द-ज्ञानमें सम्पूर्णरूपसे विद्यमान है।

'शास्त्रं शब्द विज्ञानात् असन्निकृष्टेऽर्थे विज्ञानं' ज्ञातार्थ शब्द सुननेके बाद पदार्थबोध द्वारा जो वाक्यार्थ-विज्ञान उत्पन्न होता है, वही वाक्यार्थ विज्ञान अविसंवादी या अबाधित असन्निकृष्ट और अज्ञात-विषय में अव्यभिचारी है; अतएव प्रमाण है। यह शब्दविज्ञान सर्वापेक्षा उत्तम और पूर्ण प्रमाणके नामसे प्रसिद्ध है।

यह प्रमाण दो भागोंमें विभक्त है, पौरुषेय और अपौरुषेय। आप्तवाक्य पौरुषेय है और वेदवाक्य अपौरुषेय। जो शब्द है, वह दोषग्रस्त नहीं—दोष वक्ता-का है। वक्ताके दोषसे ही शब्दमें दोष आरोप होता है। इसीलिये आप्तप्रणीत वाक्य विसंवादिनी बुद्धि उत्पन्न करता है, किन्तु आप्तप्रणीत वाक्य अथवा अनादि अपौ-रुषेय वाक्य संवादी होता है। किसी समयमें भी वह असं-वादिनी बुद्धि अथवा मिथ्याज्ञान उत्पन्न नहीं करता। न उत्पन्न करनेका कारण चाहे आप्तप्रणीत हो या अपौरुषेय।

अपौरुषेय भी दो तरहका है—एक सिद्धार्थ, दूसरा विधायक है। जो सिद्ध वस्तु विषयक विज्ञान उत्पन्न करता है, वह सिद्धार्थ है, जैसे—यह तुम्हारा पुत्र है, इत्यादि वाक्य। जो वाक्य कुछ करनेको कहता है, वह विधायक है, जैसे :—'स्वर्ग कामोयजेत्' स्वर्गको कामना कर याग करना, इत्यादि वाक्य। विधायक वाक्य भी प्राकारान्तरसे दो तरह-का है, उपदेश और अतिदेश। 'यह कार्य्य इस तरहसे करना' इस तरहका वाक्य उपदेश; 'अमुक कार्य्यके अनु-सार अमुक कार्य्य करना चाहिये' यह वाक्य अतिदेश है।

शब्दप्रमाणवादी मीमांसकोंकी दूसरी एक गूढ़ अभिसन्धि दिखाई देती है। उसीके प्रभावसे मीमांसक शब्दको स्वतः प्रपाण कहनेसे नहीं डरते। इनकी अभि-सन्धि यह है, कि काल, दिक् आत्मा, प्रमाणु आदि जैसे अनादि निधन निरयव द्रव्य हैं, उसी तरह शब्द भी अनादि निधन निरयव द्रव्य है। शब्द अन्याय दर्शनोंमें आकाश-का गुण और उत्पन्न प्रध्वंसी है; किन्तु मीमांसादर्शनके मतानुसार यह अनादि और अविनाशी है।

स्फोटवाद।

मनुष्य सङ्केतात्मक वाक्य नामक ध्वनिविशेष (कण्ठध्वनिमात्र) उच्चारण द्वारा उन सबोंका आकार दूसरेके ज्ञानमें बैठाता है और कुछ नहीं करता। जो सुना जाता है, अर्थात् जो कर्णगोचर होता है, वह शब्द नहीं। वह यथा अवस्थित उन शब्दोंके व्यञ्जकरूप कण्ठ-ध्वनि है। सङ्केतमय कण्ठध्वनि द्वारा नित्यनिराकार शब्दका व्यवहार सिद्ध हुआ करता है। जैसे अक्षर रूपी साङ्केतिक रेखा द्वारा आकाररहित ध्वन्यात्मक शब्द का ज्ञान और व्यवहार निष्पन्न होता है, वैसे ध्वन्यात्मक शब्दके द्वारा भी आकाररहित, अदृष्टचर, नित्यावस्थित शब्दका ज्ञान भी व्यहार-सम्पन्न हुआ करता है। क्रम, छेद, भङ्ग और मृदु मधुर या कर्कश सभी ध्वनिस्थित या ध्वनिका गुण शब्दमें आरोपित होता है, इसीसे लोग कहते हैं, कि यह शब्द कर्कश या मधुर है। मीमांसकों-के मतसे ध्वनि शब्द नित्य नहीं, वर्ण शब्द नित्य है। वर्णपद, वाक्य सभी नित्य या निरवयव हैं ये ही नित्य-निरयव वर्ण, पद और वाक्य स्फोट नामसे प्रसिद्ध है।

ध्वन्यारुढ़ वर्ण, पद और शब्द सुननेके बाद श्रोता-के भीतर जो अर्थ प्रत्यायक ज्ञानमय वर्ण, पद और वाक्यका उदय होता है वही अमूर्त्त पदार्थ स्फोट है। निराकार वर्णको, पदकी और वाक्यकी प्रतिच्छाया है। अथवा वे स्फोट ही अनादि निधन हैं। वर्ण, पद और वाक्य नामसे प्रसिद्ध ही इस तरह शब्दरहस्यके संसा-धित करनेके लिये मीमांसकोंने नाना तरहकी युक्तियों और तर्कोंका प्रयोग किया है। मीमांसकोंके मतसे केवल शब्द ही नित्य नहीं, वरं शब्दशब्दार्थ और वाक्य-वाक्यार्थका बोध्यबोधक सम्बन्ध भी नित्य है। वह साङ्केतिक नहीं, वरं स्वाभाविक है। पदपदार्थका बोध्य-बोधक सम्बन्धस्वाभाविक है बनावटी या सङ्केतमूलक नहीं। यह निम्नक युक्तियोंसे प्रतिष्ठित हुआ है।

शब्द और अर्थकी आपसमें निःसम्पर्कता नहीं है। सम्पर्क या सम्बन्ध रहने पर भी वह प्रसिद्ध संयोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समवाय आदि नहीं है और उनमें किसी तरहके कार्य्य-कारण भाव आदि भी दिखाई नहीं देते। उसी कारणसे इनका सिद्धान्त इस तरह है,—शब्दके साथ अर्थका सम्बन्ध है, वह संज्ञासंज्ञी, नामनामी या बोधक बोध्य-इन तीनों में एक है। शब्द नाम है—अर्थ उसका नामी है। शब्द संज्ञा है—अर्थ उसका संज्ञी है। शब्द बोधक है—अर्थ उसका बोध्य है। अभिहित सम्बन्ध रहनेका प्रमाण प्रत्यक्ष है, अर्थात् शब्द प्रचारके अव्यवहित दोनोंके बाद ही अर्थकी प्रतीत होना सबके अनुभवकी बात है। फिर भी, प्रोक्त सम्बन्ध स्वाभाविक और अनादि प्रवाह-परम्परागत है। इसको किसीने तय्यार नहीं किया, अथवा सङ्केत स्थापना द्वारा प्रचार भी नहीं किया। जो कहते हैं, कि शब्द वक्ताके हृदयगत अभिप्रायका अनुमापक होता है, तो पूछना यह है, कि रोगविशेष अवस्थामें या स्वप्नावस्थामें उच्चारित अर्थाभिप्रायशून्य शब्दोंके अर्थमें प्रतीति क्यों होती है? अर्थानभिज्ञकी बात कैसे समझमें आ जाती है? प्रत्युत्तर देनेमें अक्षम होने पर भी यह स्वीकार करना उचित है, कि शब्द यथा वस्थित अर्थका ही प्रत्यायक है; अभिप्रायविशेषका अनुमापक नहीं। इसके उत्तरमें यह कहा जा सकता है, कि तब पहले सुननेसे ही समझमें क्यों नहीं आ जाता? अर्थप्रतीति क्यों नहीं होती? इसका यथार्थ प्रत्युत्तर यह कि सहकारीको कारणोंका अभाव है। सहकारी कारण संज्ञाज्ञान हैं, उसका अभाव अर्थात् उनका न होना या न रहना। नेत्र जैसे प्रकाशके साहाय्यके बिना अर्थका दर्शन नहीं करते और कराते भी नहीं; वैसे शब्द भी संज्ञा संविज्ञान न रहनेसे श्रोताके चित्तमें स्वार्थ-प्रत्यय नहीं उत्पन्न करता। जिन्होंने दूसरोंसे अर्थकी संज्ञा या नाम मालूम किया है, शब्द उसी मनुष्यके भीतर स्वार्थप्रमिति उत्पन्न करेगा।

वादी यहां इस तरह पूर्वपक्ष कर सकेंगे। वे कह सकते हैं, कि शब्दार्थका सम्बन्ध पौरुषेय है, अर्थात् पुरुषकृत सङ्केत मूलक है। पहले उसे अभिज्ञोंसे जान लेना चाहिये। जिसको दूसरा कह देता है, या दूसरा ही शिक्षा देता है, वह कैसे पौरुषेयके सिवा अपौरुषेय हो सकता है। पूर्व पक्षके प्रतिपक्षमें यह कहना यथेष्ट हो सकता है, कि वह सम्बन्ध तय्यार कर नहीं देता, यथावस्थित सम्बन्ध कह देता है। तय्यार कर देनेसे अथवा गोशब्द उच्चारण करनेके बाद अश्व कह देनेसे अभिज्ञ व्यक्ति उसको ग्रहण नहीं करता, करने भी नहीं देता वरं उसका निषेध करता है। जिसको अभिज्ञ कहा गया, वह भी शैशवमें अनभिज्ञ था और उसने भी दूसरेसे शिक्षा पाई थी। इस तरह परम्पराक्रमसे अनुसन्धान करने पर स्थिर रूपसे मालूम हो सकता है, कि शब्दके अर्थका और इन दोनोंका अनादित्व-सम्बन्ध स्वयं ही स्थिरीकृत हुआ करता है।

यदि ऐसा है, कि आदि सृष्टिकालमें भगवान् स्वयम्भूने पहले स्थावर जङ्गम, धर्म्माधर्म और शब्द-काण्डकी सृष्टि कर उन सबोंके व्यवहार्य शब्दोंके साथ अर्थके सम्बन्धकी कल्पना की थी, पीछे उन सबोंको समझानेके लिये कृतसङ्केत शब्द सन्दर्भित कर अर्थात् वेद प्रस्तुत कर मरीच्यादि पुत्रोंको दिया था। पीछे मरी आदि पुत्रोंने अपने नीचेवालोंको और उन्होंने फिर अपनेसे जो नीचे थे उनको दिया। इसी तरह हमें प्राप्त हुआ है, तो यह संगतियुक्त हो सकता है सही; किन्तु इस सिद्धान्तमें प्रमाणाभाव है। ऐसा कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता जिसके द्वारा इस तरहका ज्ञान संवादी हो सके। इसमें और एक दोष होता है, कि साङ्केतिक शब्दार्थ घटित शास्त्रके प्रमाणकी रक्षा कठिन हो जाती है। परवर्त्ती साङ्केतिक शब्दार्थ घटित शास्त्र किस तरह पूर्ववर्त्ती विषयोंका साक्ष्य प्रदान कर सकता है। अतएव पहले कुछ भी नहीं था, होने पर भी इसका कुछ प्रमाण नहीं।

आदि सृष्टि और महाप्रलयका कुछ प्रमाण न रहनेसे ब्रह्मा द्वारा पदपदार्थोंका सम्बन्धकरण प्रमाण रहित है। शब्द भी असंख्य हैं और अर्थ भी असंख्य। एक एक करके उन सबोंका सम्बन्ध-करण एक व्यक्तिके लिये असम्भव है। यदि किसी भी शब्दका अर्थके साथ नैसर्गिक रूपसे सम्बन्ध न हो, तो वह अशक्य-करण है या नहीं, विचारना चाहिये। सम्बन्ध-करण करने पर किसी न किसी वाक्यको आवश्यकता होती है। यदि उस वाक्यके अर्थके समझानेकी सामर्थ्य न हो, तो वह कौन निर्वाह कर सकता है? वालुकामें तेल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैदा करनेकी शक्ति नहीं है, इसीसे शिल्पी 'तेली' बालुकासे तेल निकालनेमें असमर्थ हैं। गो शब्दका अर्थ गलकम्बलादिमान् जीव यह समझानेकी सामर्थ्य न रहने पर कोई भी व्यक्ति गो शब्दका उदाहरण नहीं करता और उसको समझा नहीं सकता। उक्त नमूनेको देख यह स्थिर करना उचित है; कि वक्ता पदपदार्थका यथावस्थित शब्द-सम्बन्ध केवल मात्र व्यक्त करता है, उत्पादन नहीं कर सकता, करनेका कोई उपाय भी नहीं। वर करनेका उपाय है। बालक जिन सब पदपदार्थोंका सम्बन्ध वृद्धोंसे अर्जन करते हैं उन सबको वृद्धोंने भी बालक-अवस्थामें वृद्धोंसे क्रमशः प्राप्त किया था। पर्य्यालोचना द्वारा इस तरह शब्द रहस्यके प्रतिभात होने पर स्थिर होता है कि शब्दार्थका सम्बन्ध भी अपौरुषेय है अर्थात् वह अनादि और स्वाभाविक है।

दिखलाये हुए विचारों द्वारा यह स्थिर किया जाता है, कि लौकिक वाक्य-सन्दर्भको उनकी बुद्धिके दोषसे बाधित अर्थमें प्रकाश करने पर भी इसके अपौरुषेय होनेसे वेद शब्दमें पूर्वोक्त दोषकी कुछ भी आशङ्का नहीं। वेद-सन्दर्भ निर्दोष और स्वतःप्रमाण है।

पहले ही कहा गया है, कि अज्ञातज्ञापक अविसंवादी विज्ञान ही प्रमाण है। जो लक्षण विधि अंशमें विद्यमान है अन्यान्य अंशोंमें नहीं है उसका न रहना केवल विधिभागको ही अर्थात् वैदिक चोदनाको ही धर्म-प्रमितिका कारण कहा गया है।

वेद-विभाग।

ऐसा प्रश्न हो सकता है, कि वेदमें ऐसे कितने ही वाक्य दिखाई देते है, जिनसे हम किसी तरहकी शिक्षा नहीं पाते। जैसे—"सोऽरोदीत्, यदरोदीत्, तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्" अर्थात् उन्होंने रोदन किया था, रोदन करनेसे ही उनका नाम रुद्र हुआ। इस तरहके वाक्य हम वेदमें कई जगह देखते हैं। ऐसे वाक्योंसे किसी तरहके कर्त्तव्यकर्मका स्वरूप प्रकाशित नहीं होता। अतएव कहना होगा, कि ऐसे शब्द वेदके नहीं हैं। सदासे पण्डित लोग कहते आते हैं, कि ये शब्द वेदके हैं। इस तरह आशङ्काको दूर करते हुए जैमिनि क्या कहते हैं, सुनिये,—"यह सत्य है सही, कि वेद कहनेसे ही धर्मका ज्ञान होता है। किन्तु सभी वेदवाक्य साक्षात्रूपसे कर्त्तव्य कर्मका स्वरूप प्रतिपादन नहीं करते। कितने ही शब्द साक्षात् याग दान या होमरूप कर्मके प्रकाशक हैं और कितने ही याग दान या होमरूप कर्मके अपेक्षित पदार्थोंको साक्षात् समझा कर परोक्षभावसे उन पदार्थोंके साथ संसृष्ट याग दान या होमरूप कर्मोंके प्रकाशक हैं। याग करनेमें घृत, होमकुण्ड, देवता, अधिकारी और समय चाहिये; इतने पदार्थोंको न समझ सकने पर याग, दान और होम आदि वैदिक कार्योंके समझनेकी शक्ति किसीमें नहीं। यागक्रिया होने पर भी घृत, अग्नि, होमकुण्ड, देवता या अधिकारी आदि तो कार्य या क्रिया नहीं, यह सभी द्रव्य हैं। इन सब द्रव्योंको न जाननेसे किसी भी यागका स्वरूपनिर्णय नहीं हो सकता। इसीसे वेदके कई वाक्य साक्षात्रूपसे किसी क्रियाके स्वरूपका बोध न करा वाक्यान्तर द्वारा बोधित क्रियाके साथ नियत सम्बन्ध द्रव्य या देवता अथवा उस क्रियाके अनुष्ठानोपयोगी किसी वस्तुका साक्षात्रूपसे बोध करा देते हैं। फलतः ये परोक्षभावसे किसी न किसी क्रियाका स्वरूप प्रतिपादन कर उसके अनुष्ठानमें सुविधा करा देते हैं। इसी भावके अनुसार वाक्योंको चुन लेनेसे वेदवाक्योंका विभिन्नार्थ ही प्रतिपादित होता है।

इसीसे ऋषि जैमिनिने स्वतः प्रमाण वेदवाक्योंको चार भागोंमें विभक्त किया है। जैसे—विधि, अर्थवाद, मन्त्र और नामधेय। पहले 'चोदना' शब्दका उल्लेख किया गया है, उसीका दूसरा नाम विधि है।

विधि।

जैमिनिसूत्रको व्याख्या करनेवालोंने 'विधि' शब्दका अर्थ इस तरह कहा है—

"विधिरत्यन्तमप्राप्तौ नियमः पाक्षिके सति।
तत्र चान्यत्र च प्राप्तौ परिसंख्येति गीयते॥"

वेदके जिस अंश द्वारा किसी प्रयोजन सिद्धिका अनुकूल उपाय कर्त्तव्य बताया जाता है, यह उपाय वैसे ही प्रयोजनका साधन है, फिर भी उसे हम अन्य किसी लौकिक प्रमाण द्वारा जान नहीं सकते, जैमिनिके मतसे वही अंश विधि' है। जैसे "स्वर्गकामो यजेत" अर्थात्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गकी कामना होनेसे ही याग करना। यहां 'स्वर्ग-कामो यजेत' इस वाक्यमें 'यजेत' इस अंशको विधि कहते हैं। क्योंकि, 'याग करना' इस तरहके कर्त्तव्य कर्मका निर्देश केवल 'यजेत' इस अंश द्वारा ही हुआ करता है, इसलिये यही 'अंश' विधि है। विधि भी तीन प्रकारकी हैं—उत्पत्तिविधि, नियमविधि और परिसंख्याविधि।

१ उत्पत्ति विधि—जिस कर्त्तव्य कर्मका स्वरूप पहले अन्य किसी प्रमाण द्वारा प्रतिपादित नहीं हुआ है, इसी तरहका कर्म कर्त्तव्य जान कर पहले हम जिस वाक्यसे जान जाते हैं उसी विधि वाक्यको उत्पत्ति-विधि कहते हैं। जैसे—"अग्निहोत्रं जुहूयात्' अर्थात् "अग्निहोत्र नामक होम करना।"

यह अग्निहोत्र नामक होम एक तरहकी क्रिया है। इस क्रियाको कर्त्तव्य समझनेके लिये हम "अग्निहोत्रं जुहुयात्" इस वाक्यके सिवा अन्य कोई प्रमाण नहीं पाते। अतएव इस विधिवाक्यको उत्पत्तिविधि कहा जा सकता है।

२ नियम विधि—लौकिक प्रमाणके साहाय्यसे हम जो समझते हैं, उसीको समझानेके लिये वेदमें जो विधि वाक्य दिखाई देता है, उसको नियमविधि कहते हैं। जैसे—"व्रीहिन् अवहन्ति" अर्थात् व्रीहि (अर्थात् धान) को अवघात करना या कूटना।

चावल, घी और दूध मिला कर पाक करनेसे पायस तय्यार होता है। दशपूर्णमास नामक यागमें देवताके लिये यही पायस तय्यार किया जाता है। इस पायसके लिये चावलकी जरूरत होती है। यह चावल कैसा होना चाहिये? इस प्रश्नके उत्तरमें 'व्रीहिन् अवहन्ति" यह विधिवाक्य कहा गया है। इस व्रीहिको अवघात करने-से क्या फल निकलेगा? तण्डुल निष्पत्ति ही अर्थात् चावल निर्माण करना इसका फल है। अवघात कर या ढेकीसे कूट कर धानकी भूसी निकाल चावल तय्यार किया जाता है। वेदमें कुछ भी उपदेश न रहने पर हम इसको समझते हैं। फिर वेदमें इस तरहका उप देश क्यों किया गया, कि व्रीहि पर अवघात करना? इस के उत्तरमें मीमांसक कहा करते है, कि यदि अवघात न कर अर्थात् न कूट कर नखसे चावलकी भूसीको हटा या छांट कर, आदि अन्य किसी उपायसे हम यागके समय धानसे चावल निकाल कर पायस तय्यार करते हैं, ऐसा होनेसे इस प्रकारके पायससे यागका जो शुभादिष्ट फल होगा, वह सिद्ध नहीं। इसलिये वेदका उपदेश होता है, कि व्रीहियोंसे अपघात द्वारा यानी चोट दे कर चावल निकालना।

यदि किसी एक कार्यके दो या तीन उपाय मौजूद हैं, फिर भी ऐसा होता है, कि दो तीन उपायोंमें केवल एक उपायसे कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो जाता है, अन्य उपायोंसे कार्योंकी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, ऐसे स्थल में किसी एक उपाय द्वारा यह कार्य साधित होनेमें दूसरे एक या दो उपायोंकी अप्राप्तिकी सम्भावना रहती है,—अर्थात् कार्य करनेके लिये दूसरे उपायका अवलम्बन लेना भी नहीं पड़ता, इस प्रकार अप्राप्ति सम्भावनाको मीमां-सकगण पाक्षिकअप्राप्ति कहा करते हैं। इसी पाक्षिक अप्राप्तिके निराकरण करनेके लिये शास्त्रमें जो विधि दिखाई देती है, उसको नियम विधि कहते हैं। इसी नियमके अनुसार "व्रीहीन् अवहन्ति" यह नियम विधि हुई। क्योंकि, धानके भीतर जो चावल है, उसको बाहर निकालनेके लिये उसके ऊपरके छिलकेको छुड़ाना चाहिये। उसी छिलके या भूसीको हटानेके लिये धानको कूटना पड़ता है, उसी तरह नखसे भी छुड़ाया सकता है। यदि कोई नखसे भूसी हटा दे, तो धानके कूटनेकी क्या आवश्यकता है? इसलिये उसकी अप्राप्तिकी सम्भावना है। इस अप्राप्ति सम्भावनाके परिहार करनेके लिये ही शास्त्र कहता है, कि धान कूटना। इससे यह धान नियमविधि हुआ।

किन्तु कहा जा सकता है, कि तण्डुल (चावल)-निष्पत्ति कार्य नखसे भूसी छुड़ा देनेसे भी हो जाता है, फिर विशेष करके अवघात (चोट) नियमका प्रयोजन क्या? इसके उत्तरमें मीमांसक कहते हैं, कि इस नियम विधिका एक अदृष्ट फल भी है। अवघातके द्वारा तण्डुल निष्पत्तिरूप दृष्ट फल भी जैसा होता है, वैसे ही अवघातके द्वारा तण्डुल निष्पन्न होने पर भी इस तंडुल के द्वारा यज्ञ सम्पादित होनेसे यज्ञकी सम्पूर्णता होती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात् उसके अनुष्ठान द्वारा जो अदृष्ट उत्पन्न होता है, वह अविकल होता है।

३ परिसंख्या विधि—यदि एक कार्यके साधक कई उपाय विद्यमान हैं, फिर इन सब उपायोंमें किसीको भी न छोड़ यदि सब उपायोंको व्यवहारमें लानेकी सम्भावना रहे, ऐसे स्थलमें अन्य उपायोंके ग्रहणका निवारण करनेके लिये यदि किसी एक उपायके ग्रहण करनेकी 'विधि' दिखाई दे, तो इसी विधिको परिसंख्याविधि कहते हैं। जैसे—"पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः" अर्थात् "जिनके पैरमें पांच नख हैं, उन पशुओंको पांचनखा (पचनोहा) कहते हैं। इन्हीं पञ्चनखा पशुओंमें खरगोश आदि पांच प्रकारके पशुओंको भक्षण करना।" यह पांच प्रकार पञ्चनख भक्षणको जो विधि है उसको ही परिसंख्याविधि कहते हैं, क्यों कहते हैं।

मीमांसकोंका कहना है, कि हम कोई वस्तु अन्य किसी प्रमाण द्वारा नहीं समझते या समझनेको कोई आशा भी नहीं, उसी वस्तुको यदि वेद समझा सके, तो वेदको सार्थक कह सकते हैं। वेदविधि द्वारा यदि कोई ऐसा पदार्थ प्रतिपादित हो, जो वेदविधिके सिवा अन्य किसी प्रमाण द्वारा समझ सकते हैं, तो वह पदार्थ कभी भी वेदके प्रतिपाद्य अर्थ नहीं हो सकता। जहां वेदकी इस प्रकार अनर्थकताकी सम्भावना हो जाती है, वहां हो वाध्य हो कर मीमांसक वेदका अर्थ घुमा फिरा कर करते हैं। यहां उसी नियमानुसार हमें वेद या वेदमूलक स्मृतिका अर्थ घुमा फिरा न करनेसे नहीं चलता। क्योंकि जो मांस खाता है, वह क्षधानिवृत्तिके लिये इच्छा होने पर सब प्रकारके पञ्चनख पशुओंके मांस खा सकता है, अथवा करता भी है। यह सदा होता आया है! अतएव मांस-भक्षी मनुष्यके लिये "खरगोश आदि पांच प्रकारके पञ्च-नख पशुओंका मांस-भक्षण करना पड़ेगा" इस तरहका शास्त्रीय विधान न रहने पर भी वह आदमी अन्य प्रमाणोंके साहाय्यसे अपनी क्षधा-निवृत्तिके लिये पञ्च-नख पशुओंके मांस भक्षणका उपाय स्थिर कर सकता है और स्थिर कर बिना बाधाके भक्षण भी कर सकता है। यहां शास्त्र यों कहते हैं, कि "तुम पञ्च-नख पशुओंमें ये खरगोश आदि पांच नखवाले ही पशुका मांस भक्षण करना।" शास्त्र न रहनेसे क्या यह मांस-भक्षी पांच तरहके पञ्चनखी पशुओंके मांस न खाते? यह तो सम्भव नहीं, तब शास्त्र ऐसा विधान क्यों देते हैं? इस तरहका शास्त्रीय अप्रामाण्य दूर करनेके लिये मीमांसक कल्पना करते हैं, कि ऐसे स्थलमें शास्त्रका अर्थ ऐसा नहीं। अर्थात् हमको पांच प्रकारके पंचनख पशुओंके मांस भक्षणका जो आदेश देता है, वह ठीक नहीं। इस शास्त्रका तात्पर्य यह है, कि खरगोश आदि पांच तरहके पंचनखके सिवा अन्य बिल्ली बन्दर आदि पंचनखका भक्षण मत करना। अर्थात् अन्य पंचनखका भक्षण करनेसे परकालमें विशेषरूपसे अनिष्ट होगा। इस तरहके शास्त्रका अर्थ किया जाय, तो फिर पूर्वोक्तरूपसे शास्त्रके अप्रामाण्यकी सम्भावना नहीं रह जाती। अतएव "पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या" इस शास्त्रका प्रामाण्य भी अवाधित रहा। इसी कारणसे मीमांसकगण इस प्रकार विधिवाक्योंको परिसंख्या विधि कहते हैं।

भट्टका कहना है, विधिलिङ्, लोट् और तव्यादि प्रत्ययका अर्थ विधि और उसका अन्य नाम भावना है। अतएव शाब्दी भावना और विधि समान बात है। प्रभाकरके मतसे विधि प्रत्ययमात्र ही नियोगवाची है। अतएव नियोगका ही अन्य नाम विधि है। जो जिस प्रकार बातोंमें विधि-लक्षण वर्णन क्यों न करें, सर्वत्र ही अप्राप्तार्थ-विषयक प्रवर्त्तनका भाव दिखाई देता हो है। सर्वत्र ही विधिका आकार 'कुर्यात्' 'क्रियते' 'कर्त्तव्य' 'यजेत' इत्यादि है।

"स्वर्गकामो यजेत" यही एक विधि है। यह विधि अर्थी, विद्वान् और समर्थ श्रोतृपुरुषको यागकरणक और स्वर्गफलक, भावनामें प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। अथवा स्वर्गजनक याग अनुष्ठानमें नियुक्त करती है। जो स्वर्गार्थी, फिर भी अधिकारी हैं, वे याग करेंगे और अपनेमें स्वर्गजनक अपूर्व अर्थात् पुण्य विशेष उत्पन्न करेंगे। लक्षणका निष्कर्ष यही है, कि जिस वाक्य कामनायुक्त पुरुषको काम्य फललाभका उपाय कह देनेसे उसके अनुष्ठानिक प्रवृत्ति उत्पन्न हो, उस वाक्यको ही विधि कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाक्य या पद धातु और प्रत्यय दोनों योगमें निष्पन्न

है। वाक्यके या पदके एकदेशमें जो लिङ्गादि प्रत्यय योजित रहता है उसी लिङ्गादि प्रत्ययका मुख्य अर्थ भावना अथवा नियोग है। भावना शब्दका अर्थ उत्पादन है—अर्थात् यह कुछ उत्पादन करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। यह भावना शाब्दी और आर्थीभेदसे दो तरहकी है। 'यजेत' इस वाक्यके एकदेशमें जो लिङ्ग प्रत्यय है, उसका अर्थ भावना है, तात्पर्य यह है, कि 'भावयेत्' अर्थात् जन्माना। यह भावना आर्थी अर्थात् प्रत्ययार्थलभ्य है। किस किस तरह किस प्रकारकी हत्याकार आकांक्षा या प्रश्न उठने पर उसके पूरण करनेके लिये "स्वर्ग, यागेन, अग्न्याधानादिभिः" इन सबके योगसे एक समन्वित विधि ही सम्पन्न होती है?

मीमांसकोंके मतसे आर्थी भावना—'किं, केन्, कथं' इन तीन अंशोंमें पूर्ण होती है। जो आकांक्षाको पूरण करता है, वह आकांक्षोत्थाप्य है। आकांक्षोत्थाप्य-विधि मुख्य विधि नहीं। इस तरहकी आर्थी भावना भाव्य स्वर्ग, करणयाग और प्रकरण-पठित समूचे वाक्य-सन्दर्भ यागोंकी इति-कर्त्तव्यताबोधक है। 'किं, केन, कथं' इन तीनों आकांक्षाओंको सामर्थ्यसे वाक्यान्तर संयोजित होने पर जो एक विधिवाक्य या महाविधि संगठित होती है, उसका आकार इस तरह हुआ करता है,—

"भावयेत् किं? स्वर्गं। केन? योगेन। कथं?..अग्न्याधानादिभिरूपकारं कृत्वा योगेन स्वर्गं भावयेत्।"

अग्न्याधानादि क्रियाकलापके द्वारा याग और याग द्वारा स्वर्ग (स्वर्गसाधक पुण्य) उत्पादन करना।

लिङ्युक्त लौकिक वाक्य श्रवण करने पर भी प्रतीत होती है, कि यह व्यक्ति हमको इस वाक्यमें अमुक विषयमें प्रवृत्त होनेको कह रहे हैं और मैं अमुक कार्यमें प्रवृत्त होऊं, यही इसका अभिप्रेत है। वक्ताका अभिप्राय तदुक्त विधिवाक्यके लिङ्गादि प्रत्ययका बोध्य है। अतएव वह वक्तृगामी है। अपौरुषेय वेद वाक्यमें यह शब्दगामी है। अर्थात् लिङ्गादि शब्द ही वह श्रोताको समझा देता है। क्योंकि, शब्दगामी है, इसीलिये वह शाब्दी भावना नामसे अभिहित होता है। "स्वास्थ्यकामी प्रातर्भ्रमण करे"। यह एक लौकिक विधिवाक्य है। इस वाक्यको सुननेसे दो प्रकारका ज्ञान उत्पन्न होता है। एक प्रातर्भ्रमण स्वास्थ्य लाभका उपाय, जो मेरा कर्त्तव्य है और दूसरे जो कहते हैं, उनका अभिप्राय है, कि प्रातर्भ्रमण कर मैं स्वस्थ होऊं' यह वाक्य वैदिक होने पर कहा जा सकता था, कि पहला ज्ञान आर्थी और दूसरा ज्ञान शास्त्रीय है।

कही हुई लक्षणाक्रान्त विधिकी दूसरी तरहका विभाग दिखाई देता है। यह विभाग चार प्रकारका है, उत्पत्ति, विनियोग, अधिकार और प्रयोग। जो एकमात्र कर्त्तव्य कर्मका बोधक है, वह उत्पत्ति विधि है। जैसे,—'अग्निहोत्रं जुहोति'। अग्निहोत्र वाक्य केवल अग्निहोत्र नामक कर्मका विधान करता है। अन्य किसी फल आदिकी बात कुछ नहीं करता। जो अङ्ग-कर्मका विधायक है, वह विनियोग विधि है। जैसे—'व्रीहिभिर्यजेत' 'दध्ना जुहोति'। व्रीहिहोम और दधिहोम अग्निहोम यागके अङ्ग हैं। जो फलस्वाम्यबोधक है, वह अधिकार विधि है। जैसे—'स्वर्गकामो यजेत' इसी विधि द्वारा मालूम होता है, कि यागकारी स्वर्ग लाभ करते हैं। इन तीन विधियोंके सम्मेलनको प्रयोगविधि कहते है। इस पर किसी मीमांसकका कहना है, कि प्रयोग विधिकल्प है और किसीके मतसे श्रौत है। जिस क्रम या जिस पद्धतिसे साङ्गप्रधान यागादि कर्म अनुष्ठित होंगे, वह क्रम या पद्धति प्रयोगविधि द्वारा विज्ञापित होती है।

अङ्ग और प्रधान।

जो अन्यार्थ है, वह अङ्ग है, जो अन्यार्थ नहीं, वह प्रधान है। अङ्गमात्र ही प्रधानका उपकारक है। अर्थात् मूल कर्मका सहाय या स्वरूपसम्पादक और प्रधानमात्र ही स्वयं फलजनक है। जैसे—कालीजीकी पूजा एक प्रधान क्रिया है, किन्तु स्नान आचमन और संकल्पादि उसकी अङ्गक्रिया है। यह अङ्गक्रिया भी दो तरहकी है—सिद्धरूप और क्रियारूप। द्रव्य और संख्या प्रभृति सिद्धरूप और बाकी क्रियारूप हैं। क्रियारूप अङ्ग भी दो है—सन्निपत्योपकारक और आरादुपकारक।

सिद्धरूप अङ्गके अर्थात् द्रव्यादिके लिये जो क्रियाका विधान है, वह क्रिया सन्निपत्योपकारक है। 'व्रीहिन्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात् उसके अनुष्ठान द्वारा जो अदृष्ट उत्पन्न होता है, वह अविकल होता है।

३ परिसंख्या विधि—यदि एक कार्यके साधक कई उपाय विद्यमान हैं, फिर इन सब उपायोंमें किसीको भी न छोड़ यदि सब उपायोंको व्यवहारमें लानेकी सम्भावना रहे, ऐसे स्थलमें अन्य उपायोंके ग्रहणका निवारण करनेके लिये यदि किसी एक उपायके ग्रहण करनेकी 'विधि' दिखाई दे, तो इसी विधिको परिसंख्याविधि कहते हैं। जैसे—"पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः" अर्थात् "जिनके पैरमें पांच नख हैं, उन पशुओंको पांचनखा (पचनोहा) कहते हैं। इन्हीं पञ्चनखा पशुओंमें खरगोश आदि पांच प्रकारके पशुओंको भक्षण करना।" यह पांच प्रकार पञ्चनख भक्षणकी जो विधि है उसको ही परिसंख्याविधि कहते हैं, क्यों कहते हैं।

मीमांसकोंका कहना है, कि हम कोई वस्तु अन्य किसी प्रमाण द्वारा नहीं समझते या समझनेको कोई आशा भी नहीं, उसी वस्तुको यदि वेद समझा सके, तो वेदको सार्थक कह सकते हैं। वेदविधि द्वारा यदि कोई ऐसा पदार्थ प्रतिपादित हो, जो वेदविधिके सिवा अन्य किसी प्रमाण द्वारा समझ सकते हैं, तो वह पदार्थ कभी भी वेदके प्रतिपाद्य अर्थ नहीं हो सकता। जहां वेदकी इस प्रकार अनर्थकताकी सम्भावना हो जाती है, वहां हो वाध्य हो कर मीमांसक वेदका अर्थ घुमा फिरा कर करते हैं। यहां उसी नियमानुसार हमे वेद या वेदमूलक स्मृतिका अर्थ घुमा फिरा न करनेसे नहीं चलता। क्योंकि जो मांस खाता है, वह क्षधानिवृत्तिके लिये इच्छा होने पर सब प्रकारके पञ्चनख पशुओंके मांस खा सकता है, अथवा करता भी है। यह सदा होता आया है। अतएव मांस-भक्षी मनुष्यके लिये "खरगोश आदि पांच प्रकारके पञ्च-नख पशुओंका मांस-भक्षण करना पड़ेगा" इस तरहका शास्त्रीय विधान न रहने पर भी वह आदमी अन्य प्रमाणोंके साहाय्यसे अपनी क्षधा-निवृत्तिके लिये पञ्च-नख पशुओंके मांस भक्षणका उपाय स्थिर कर सकता है और स्थिर कर बिना बाधाके भक्षण भी कर सकता है। यहां शास्त्र यों कहते हैं, कि "तुम पञ्च-नख पशुओंमें ये खरगोश आदि पांच नखवाले ही पशुका मांस भक्षण करना।" शास्त्र न रहनेसे क्या यह मांस-भक्षी पांच तरहके पञ्चनखी पशुओंके मांस न खाते? यह तो सम्भव नहीं, तब शास्त्र ऐसा विधान क्यों देते है? इस तरहका शास्त्रीय अप्रामाण्य दूर करनेके लिये मीमांसक कल्पना करते हैं, कि ऐसे स्थलमें शास्त्रका अर्थ ऐसा नहीं। अर्थात् हमको पांच प्रकारके पंचनख पशुओंके मांस भक्षणका जो आदेश देता है, वह ठीक नहीं। इस शास्त्रका तात्पर्य यह है, कि खरगोश आदि पांच तरहके पंचनखके सिवा अन्य बिल्ली बन्दर आदि पंचनखका भक्षण मत करना। अर्थात् अन्य पंचनखका भक्षण करनेसे परकालमें विशेषरूपसे अनिष्ट होगा। इस तरहके शास्त्रका अर्थ किया जाय, तो फिर पूर्वोक्तरूपसे शास्त्रके अप्रामाण्यकी सम्भावना नहीं रह जाती। अतएव "पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या" इस शास्त्रका प्रामाण्य भी अवाधित रहा। इसी कारणसे मीमांसकगण इस प्रकार विधिवाक्योंको परिसंख्या विधि कहते हैं।

भट्टका कहना है, विधिलिङ्, लोट् और तव्यादि प्रत्ययका अर्थ विधि और उसका अन्य नाम भावना है। अतएव शाब्दी भावना और विधि समान बात है। प्रभाकरके मतसे विधि प्रत्ययमात्र ही नियोगवाची है। अतएव नियोगका ही अन्य नाम विधि है। जो जिस प्रकार बातोंमें विधि-लक्षण वर्णन क्यों न करें, सर्वत्र ही अप्राप्तार्थ-विषयक प्रवर्त्तनका भाव दिखाई देता हो है। सर्वत्र ही विधिका आकार 'कुर्यात्' 'क्रियते' 'कर्त्तव्य' 'यजेत' इत्यादि है।

"स्वर्गकामो यजेत" यही एक विधि है। यह विधि अर्थी, विद्वान् और समर्थ श्रोतृपुरुषको यागकरणक और स्वर्गफलक, भावनामें प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। अथवा स्वर्गजनक याग अनुष्ठानमें नियुक्त करती है। जो स्वर्गार्थी, फिर भी अधिकारी हैं, वे याग करेंगे और अपनेमें स्वर्गजनक अपूर्व अर्थात् पुण्य विशेष उत्पन्न करेंगे। लक्षणका निष्कर्ष यही है, कि जिस वाक्य कामनायुक्त पुरुषको काम्य फललाभका उपाय कह देनेसे उसके अनुष्ठानिक प्रवृत्ति उत्पन्न हो, उस वाक्यको ही विधि कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाक्य या पद धातु और प्रत्यय दोनों योगमें निष्पन्न

है। वाक्यके या पदके एकदेशमें जो लिङ्गादि प्रत्यय योजित रहता है उसी लिङ्गादि प्रत्ययका मुख्य अर्थ भावना अथवा नियोग है। भावना शब्दका अर्थ उत्पादन है—अर्थात् यह कुछ उत्पादन करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। यह भावना शाब्दी और आर्थीभेदसे दो तरहकी है। 'यजेत' इस वाक्यके एकदेशमें जो लिङ्ग प्रत्यय है, उसका अर्थ भावना है, तात्पर्य यह है, कि 'भावयेत्' अर्थात् जन्माना। यह भावना आर्थी अर्थात् प्रत्ययार्थलभ्य है। किस किस तरह किस प्रकारकी हत्याकार आकांक्षा या प्रश्न उठने पर उसके पूरण करनेके लिये "स्वर्ग, यागेन, अग्न्याधानादिभिः" इन सबके योगसे एक समन्वित विधि ही सम्पन्न होती है?

मीमांसकोंके मतसे आर्थी भावना—'किं, केन, कथं' इन तीन अंशोंमें पूर्ण होती है। जो आकांक्षाको पूरण करता है, वह आकांक्षोत्थाप्य है। आकांक्षोत्थाप्य-विधि मुख्य विधि नहीं। इस तरहकी आर्थी भावना भाव्य स्वर्ग, करणयाग और प्रकरण-पठित समूचे वाक्य-सन्दर्भ यागोंकी इति-कर्त्तव्यतावोधक है। 'किं, केन, कथं' इन तीनों आकांक्षाओंकी सामर्थ्यसे वाक्यान्तर संयोजित होने पर जो एक विधिवाक्य या महाविधि संगठित होती है, उसका आकार इस तरह हुआ करता है,—

"भावयेत् किं? स्वर्गं। केन? योगेन। कथं?..अग्न्याधानादिभिरूपकारं कृत्वा योगेन स्वर्गं भावयेत्।"

अग्न्याधानादि क्रियाकलापके द्वारा याग और याग द्वारा स्वर्ग (स्वर्गसाधक पुण्य) उत्पादन करना।

लिङ्युक्त लौकिक वाक्य श्रवण करने पर भी प्रतीत होती है, कि यह व्यक्ति हमको इस वाक्यमें अमुक विषयमें प्रवृत्त होनेको कह रहे हैं और मैं अमुक कार्यमें प्रवृत्त होऊं, यही इसका अभिप्रेत है। वक्ताका अभिप्राय तदुक्त विधिवाक्यके लिङ्गादि प्रत्ययका बोध्य है। अतएव वह वक्तृगामी है। अपौरुषेय वेद वाक्यमें यह शब्दगामी है। अर्थात् लिङ्गादि शब्द ही वह श्रोताको समझा देता है। क्योंकि, शब्दगामी है, इसीलिये वह शाब्दी भावना नामसे अभिहित होता है। "स्वास्थ्यकामी प्रातर्भ्रमण करे"। यह एक लौकिक विधि-वाक्य है। इस वाक्यको सुननेसे दो प्रकारका ज्ञान उत्पन्न होता है। एक प्रातर्भ्रमण स्वास्थ्य लाभका उपाय, जो मेरा कर्त्तव्य है और दूसरे जो कहते हैं, उनका अभिप्राय है, कि प्रातर्भ्रमण कर मैं स्वस्थ होऊं' यह वाक्य वैदिक होने पर कहा जा सकता था, कि पहला ज्ञान आर्थी और दूसरा ज्ञान शास्त्रीय है।

कही हुई लक्षणाक्रान्त विधिकी दूसरी तरहका विभाग दिखाई देता है। यह विभाग चार प्रकारका है, उत्पत्ति, विनियोग, अधिकार और प्रयोग। जो एकमात्र कर्त्तव्य कर्मका वाधक है, वह उत्पत्ति विधि है। जैसे,—'अग्निहोत्रं जुहोति'। अग्निहोत्र वाक्य केवल अग्निहोत्र नामक कर्मका विधान करता है। अन्य किसी फल आदिकी बात कुछ नहीं करता। जो अङ्ग-कर्मका विधायक है, वह विनियोग विधि है। जैसे—'व्रीहिभिर्यजेत' 'दध्ना जुहोति'। व्रीहिहोम और दधिहोम अग्निहोम यागके अङ्ग हैं। जो फलस्वाम्यबोधक है, वह अधिकार विधि है। जैसे—'स्वर्गकामो यजेत' इसी विधि द्वारा मालूम होता है, कि यागकारी स्वर्ग लाभ करते हैं। इन तीन विधियोंके सम्मेलनको प्रयोगविधि कहते है। इस पर किसी मीमांसकका कहना है, कि प्रयोग विधिकल्प है और किसीके मतसे श्रौत है। जिस क्रम या जिस पद्धतिसे साङ्गप्रधान यागादि कर्म अनुष्ठित होंगे, वह क्रम या पद्धति प्रयोगविधि द्वारा विज्ञापित होती है।

अङ्ग और प्रधान।

जो अन्यार्थ है, वह अङ्ग है, जो अन्यार्थ नहीं, वह प्रधान है। अङ्गमात्र ही प्रधानका उपकारक है। अर्थात् मूल कर्मका सहाय या स्वरूपसम्पादक और प्रधानमात्र ही स्वयं फलजनक है। जैसे—कालीजीकी पूजा एक प्रधान क्रिया है, किन्तु स्नान आचमन और संकल्पादि उसकी अङ्गक्रिया है। यह अङ्गक्रिया भी दो तरहकी है—सिद्धरूप और क्रियारूप। द्रव्य और संख्या प्रभृति सिद्धरूप और बाकी क्रियारूप हैं। क्रियारूप अङ्ग भी दो है—सन्निपत्योपकारक और आरादुपकारक।

सिद्धरूप अङ्गके अर्थात् द्रव्यादिके लिये जो क्रियाका विधान है, वह क्रिया सन्निपत्योपकारक है। 'व्रीहिन्

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवहन्ति' 'सोमं अभिषुनोति' इत्यादि वाक्यमें व्रीहि और सोम द्रव्यमें अवघात और अभिषव क्रियाका विधान है जहां द्रव्यादिका उद्देश दिखाई नहीं देता, फिर भी, क्रियाका विधान है, वहां वह अङ्ग आरादुपकारक है। पूर्वोक्त सन्निपत्योपकारक कर्म प्रधान कर्मका उपकारक है और प्रधान कर्म उसका उपकार्य है। यह उपकार्य्य उपकारक भाव वाक्यगम्य है—प्रमाणान्तरगम्य नहीं। शेषोक्त आरादुपकारक कर्मके साथ प्रधान कर्मका जो उपकार्य और उपकारक भाव है, वह प्रकरणके अनुसार उन्नेय है।

अर्थवाद।

किसी विहित कर्म या किसी निषिद्धाचरणके क्रमसे प्रशंसा या निन्दा कर विधि या निषेधरूप वाक्य वेद भागके प्रामाण्य व्यवस्थापन करना ही वेदके जिस अंगका उद्देश है, उसी अंशको मीमांसक (वैदिक) अर्थवाद कहते हैं। ये अर्थवाद वाक्य गुणवाद, अनुवाद और भूतार्थ भेदसे तीन प्रकारका है।

"विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते।
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थ वादस्त्रिधा मतः॥"

जो प्रमाण विरुद्ध अर्थका अभिधायक है, वह गुणवाद कहलाता है। जैसे 'आदित्योः यूपः' इस वाक्यका यूप ही आदित्य है। इस प्रकारका अर्थ प्रत्यक्षविरुद्ध है। अतएव समझना होगा, कि यह उक्ति किसी एक गुण सादृश्यको अनुसारिणी है। आदित्य जिस तरह दिन पैदा कर यागका निर्वाह करता है उसी तरह यूप भी पशुबन्धन आश्रय द्वारा याग निर्वाह करता है।

जो प्रमाणसिद्ध अर्थ प्रकाश करता है, वह अनुवाद कहलाता है। जैसे—"वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता, वायुमेव स्वेन भागेनोपधावति, स एनं भूतिं गमयति" इत्यादि वाक्य है। वायु क्षिप्रगामी देवता है। यह अर्थ प्रत्यक्षप्रमाणलभ्य है, अतएव वायुको तदुचित भाग दे कर सन्तुष्ट करनेसे वह ऐश्वर्य प्रदान करता है। इस तरहका अर्थ ले कर "वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः" इस विधिवाक्यकी पोषकता करनी पड़ती है। जो प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध नहीं है फिर भी अप्राप्त या अज्ञात अर्थका ज्ञान पैदा करते हैं, वह भूतार्थवाद हैं। जैसे 'इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छ' इत्यादि वाक्य हैं। ये महाभारत और रामायणादि ग्रन्थोंके सम्बन्धके हैं ये प्रमाणविरुद्ध भी नहो हैं प्रमाणान्तर प्राप्त भी नहीं। इसिलिये भूतार्थवाद हैं।

अर्थवादमात्र ही विधिशक्तिका उत्तेजक हैं और विधिके साथ मिल कर विधिके अनुकूल अर्थका प्रकाशक बनता है। मीमांसक कहते हैं,—अर्थवाद वाक्यका यथाश्रुत आक्षरिक अर्थ अग्राह्य है। गुणवाद और अनुवाद इन दोनों अर्थवादोंके यथाश्रुत आक्षरिक अर्थका प्रामाण्य स्वीकार बिलकुल नहीं हुआ है। केवल भूतार्थवादके प्रामाण्य स्वीकृत दिखाई देता है।

अर्थवाद वाक्यमें जिस फलका उल्लेख रहता है, वह प्रलोभनमात्र है। फिर बहुत स्थानमें निन्दाश्रुति भी देखी जाती है, वह केवल भयप्रदर्शनमात्र है। अर्थवादके फलके विषयमें मीमांसकोंकी इस तरहकी एक उक्ति दिखाई देती है।

'पिब निम्बं प्रदास्यामि खलु ते खण्डलड्डुकम्।
पित्रैव मुक्तः पिबति न फलं तावदेव तु॥"

जैसे आरोग्यकामी पिता प्रलोभन दिखा कर अपने छोटे बालकको तिक्त भोजनको प्रवृत्ति उत्तेजित करते हैं, वैसे ही कुशलकामी शास्त्र भी फलका लोभ दिखा मनुष्योंको सद्प्रवृत्तिका उन्मेषण और असद् प्रवृत्तिका निवारण करनेको चेष्टा करता है। बालक मिष्टान्नके लोभसे तिक्त पदार्थ खाता है सही, किन्तु पिता उसको मिष्टान्न नहीं देता, वैसे ही शास्त्र भी स्वोपदिष्ट अर्थके अनुष्ठाताको स्वोक्त फल प्रदान नहीं करता। पिताकी इच्छा पुत्र आरोगी हो, शास्त्रकी इच्छा मानवमण्डल ऐहिक और पारत्रिक कुशल लाभ करे। पिताकी प्ररोचनासे पुत्र यदि तिक्त भोजन करे, तो आरोग्यताके सिवा उसको कुछ नहीं मिलता अर्थात् उसे मिष्टान्न नहीं मिलता, उसी तरह शास्त्रकी प्ररोचनासे शास्त्र उपदिष्टपथमें अवस्थान करनेसे जीव ऐहिक और पारत्रिक कुशलके सिवा दूसरा कोई फल नहीं पाता।

मन्त्र।

"प्रयोगसमवेतार्थस्मारका मन्त्राः" अर्थात् अनुष्ठान सम्बन्धीय द्रव्य देवतादिका स्मारक है और उस अर्थका प्रकाशक ही वेदमन्त्र है। यज्ञ करनेके समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब 'होता' किसी देवताको लक्ष कर प्रज्वलित अग्निमें कोई द्रव्य डालता है, उस समय उस द्रव्य या देवताके स्मरण कर लेनेके लिये वेदका जो अंश उस समय उच्चारित होता है, उसके उस उस अंशको मन्त्र कहते हैं। जैसे—"अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजं होतारं रत्नधातमं" (ऋक् १।१।१) यह मन्त्र पढ़नेसे अग्नि-देवताका स्मरण होता है। अतएव इसको अग्नि देवताका मन्त्र कह सकते हैं। इसी तरह अन्य मन्त्रोंके लक्षण हैं। यह मन्त्र ऋक्, यजुः और सामवेदसे तीन हैं। अनुष्ठानके समय मन्त्रकी आवृत्तिमें द्रव्य और देवतादिकी आत्मामें क्रमविशेषका स्मरण होता है। उसके द्वारा अदृष्ट विषयकी उत्पत्ति होती है। मन्त्रके प्रामाण्य और प्रयोग विधिके साथ ऐक्यसे परिगृहीत हुआ करता है, स्वातन्त्र्यसे नहीं होता।

नामेय।

"उद्भिदा यजेत पशुकामः" "विश्वजिता यजेत स्वर्गकामः", "गोमेधेन यजेत" इत्यादि वाक्यमें जो उद्भिद् विश्वजित्, गोमेध आदि शब्द हैं, वे सब नामधेय है अर्थात् विशेष विशेष यागोंके नाम हैं। इन सब अंशोंमें अर्थात् वाक्यों-विधिका लक्षण न रहने विधि नहीं है, स्तुति या निन्दा न रहनेसे अर्थवाद नहीं है, मन्त्रचिह्न न रहनेसे मन्त्र भी नहीं है। अतएव केवलमात्र नाम ही है। ये सब नाम भागविधि अंशमें अवस्थित यागादिके साथ विना भेदके अन्वय प्राप्त होते हैं।

यज्ञकी तरह वैदिक होम और दान यह तीनों कर्म ही नामधेय हैं। इसी तरह मीमांसादर्शनमें शब्द, शब्द-प्रामाण्य, विधि, अर्थवाद, मन्त्र और नामधेय आदि विषयकी आलोचना हुई।

अन्यान्य दर्शनोंकी तरह इस दर्शनमें भी शरीर, इन्द्रिय मन, जीव, ईश्वर, ब्रह्म; इनका मूलपदार्थ, स्वर्ग, नरक, मोक्ष, सुख, दुःख, प्रमाण और प्रमेय और सृष्टि, स्थिति और प्रलय आदिका विचार हुआ है। इन सब विषयोंकी भी संक्षिप्त आलोचना हुई।

शरीर, इन्द्रिय और मन।

मीमांसक मतसे शरीर पाञ्चभौतिक है। इन्द्रियां भी भौतिक हैं, किन्तु उन सका भौतिकत्वप्राय न्यायदर्शनकी तरह है। इस दर्शनमें घ्राण, रसना, चक्षुः और त्वक् ये चार इन्द्रियां क्रमसे पृथ्वी, जल, तेज और वायुभूतकी विकृतिरूपसे निर्दिष्ट हैं। केवल श्रोत्रको इस दर्शनमें दिगात्मक कहा गया है। दिक् ही कर्णशष्कुल्य-वच्छिन्न हो कर शब्द ज्ञानका कारण हुआ है। "दिशः श्रोत्रं" यह वेदवाक्य उसका प्रमाण है। मीमांसक कहते हैं—मन भी भौतिक है, किन्तु पृथिव्यादिका अन्यतम है; अर्थात् वह पृथिवी प्रकृतिक ही हो या वायु-प्रकृतिक ही हो, उसमें हमें कोई आपत्ति नहीं। फलतः यह नश्वर है।

जीव।

इस दर्शनके मतसे जीव अनेक हैं, मीमांसकगण वेदान्तकी तरह एक-जीववादी नहीं। जीव आत्माका ही अवस्थाविशेष है।

वेदान्तप्रसिद्ध ब्रह्माद्वैत मीमांसादर्शनका अभिमत है। इस दर्शनके मतसे अद्वय ब्रह्मबोधक है और नित्येश्वरबोधिका श्रुतियां केवल अर्थवाद हैं। ब्रह्म और ईश्वरके सम्बन्धमें इस दर्शनका मत प्रायः सांख्यदर्शन-की तरह है। मीमांसक द्वैतवादी और नित्य जगद्वादी हैं।

मीमांसादर्शनमें वैशेषिक दर्शनकी तरह सात पदार्थ स्वीकृत हुए हैं। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव—ये ही सात पदार्थ हैं। इनमें कुछ विशेषतायें ये हैं, कि वैशेषिकदर्शनमें नौ प्रकारके द्रव्य पदार्थ हैं, यथा—क्षिति, अप, (जल) तेजः मरुद्, व्योम, काल, दिक्, देह और मन किन्तु मीमांसक विशेष-रूपसे दश द्रव्यवादी हैं, फिर कोई-कोई मीमांसक एकादश द्रव्यवादी हैं। दश द्रव्यवादियोंके मतसे तम अर्थात् अन्धकार भी एक द्रव्य पदार्थ है। एकादश वादियों के मतसे शब्द एक अतिरिक्त नित्य द्रव्य है। जो ध्वनिसे व्यक्त होता है, वही शब्द है। शब्दव्यञ्जक ध्वनि बुद्धिगम्य है अर्थात् समझ आती है। ध्वनि गुण होने पर उस-का व्यङ्ग्य शब्दपदार्थ गुण नहीं, वह द्रव्य है। इसके मतसे गन्ध नित्य है, बोध्यबोधकका सम्बन्ध भी नित्य है। केवलमात्र रचनामें अर्थात् व्यक्त करणमें पुरुषका कर्तृत्व है। वैदिक सन्दर्भ अलौकिक है अर्थात् अपौरुषेय है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतएव उसके अनुवाद या उच्चारणके सिवा अन्य किसी विषयमें पुरुषका कर्त्तृत्व नहीं है।

शरीर भौतिक है, आत्मा उससे भिन्न है। इस दर्शनके मतसे आत्मा अनेक और प्रति शरीरमें भिन्न, अजर, अमर और ज्ञानशक्तिविशिष्ट है। आत्मा सुख दुःख भोक्ता है और मानस अहंप्रत्ययका अधिगम्य है। आत्मा विभु है, अत्माकी ज्ञान, शक्ति आदि शरीरमें ही स्फुर्त्ति होती है, शरीरके बाहर नहीं। ज्ञान आत्माको शक्ति या गुण है। मोक्षकालमें आत्मा इन्द्रियातीत आगमपायिनी बुद्धि और सुख आदिसे रहित हो जाती है और स्वरूपगत ज्ञानशक्ति और सुख आविष्कृत होता है।

इस मतसे स्वर्ग सुखविशेष और नरक दुःखविशेष है। यह शरीर स्थानभेदसे भोग्य है। स्वर्ग सुखका और नरक भोगका उपभोग्य भोग्यस्थान भी है और शरीर भी है।

जो अतिशय आनन्दस्वरूप और दुःखविवर्जित है वही स्वर्ग है। अथवा जहां कभी दुःखदैन्यका दर्शन नहीं होता और अभिलाषोपनीत होता है अर्थात् उसकी इच्छा होते ही उत्पन्न होता है, वही स्वर्ग है। इसी स्वर्गके लिये जीव प्रार्थना करता है। यागादि कर्म द्वारा जीवको स्वर्ग प्राप्त हुआ करता है।

वैशेषिक दर्शनकी तरह इस दर्शनके मतसे सुख दुःखादि विशेष गुणोंके विच्छेदसे ही मोक्ष होता है। भोगायतन शरीर, भोगसाधन और भोग्यविषय यहसब प्रपञ्चान्तर्गत हैं। अतएव त्रिधाविभक्तप्रपञ्च उक्त तीन प्रकारसे पुरुषको बन्धन करता है अर्थात् भोग कराता है। भोग शब्दका अर्थ—सुखदुःखका साक्षात् करना है। इन तीनोंका सम्बन्ध परित्याग कर सकनेसे जीव मोक्ष पाता है। संसार-दशामें आत्माका निजानंद अभिभूत या आच्छन्न रहता है। मोक्षकालमें उसकी स्फूर्त्ति होती है। मोक्ष होने पर शरीर और इन्द्रियां नहीं रहतीं, केवल मन रहता है। अन्यान्य दार्शनिकोंके मतसे मन भी नहीं रहता। क्योंकि उनके मतसे इन्द्रिय ही मन है, अतएव यह प्राकृतिक है। प्राकृतिक किसी तरहका सम्बन्ध रहनेसे मुक्ति नहीं होती। प्रकृति या मायाके बन्धनमें जीव बंधा हुआ है। यदि उसके साथ सम्बन्ध ही रहा, तो मुक्ति हुई किस तरह? सुतरां प्राकृतिक कोई भी बन्धन रहनेसे मुक्तिकी सम्भावना नहीं। मीमांसकोंके मतसे मन रहनेसे ही मुक्तजीव अनन्त कालके लिये अपरिच्छिन्न सुखका स्वादग्राही होता है।

चैतन्य अर्थात् ज्ञानशक्ति, आनन्द अर्थात् सुख, नित्यत्व और विभुत्व अर्थात् सर्वव्यापित्व—ये ही सब आत्माके अपने धर्म हैं। जब जीवका मोक्ष होता है, उस समय उसमें ये सब विद्यमान रहते हैं। इसका उच्छेद होता।

मोक्षकी प्रणाली—काम्य, निषिद्ध शारीर और मानसक्रियाका वर्जन कर केवल निष्काम नित्य नैमित्तिक कर्ममें रत रह सकने पर या आत्मतत्त्व ज्ञानमें डुबे रहने पर पूर्णजन्मके कारणीभूत धर्माधर्मकी उत्पत्ति रुक जाती है। सञ्चित धर्माधर्म भी दग्ध बीजकी तरह निःशक्तिवान् हो जाता है। जब तक देह रहती है, तब तक जो भोग होता है, उसी भोगसे प्रारब्ध कर्म क्षयको प्राप्त होता है। सुतरां सुखदुःख और शरीरोत्पत्तिका कारणीभूत प्रारब्ध सञ्चित और आगामी धर्माधर्मके अभावमें भविष्यत्में सुख दुःख और शरीर उत्पन्न नहीं होता। यह न होनेसे ही मोक्ष है। मुक्त तब अशरीर हो केवलमात्र मूल मनको ले करनवरत आत्म सुखास्वादसे परितृप्तहुआ करता है।

शास्त्रमें जिस तत्त्वज्ञानकी प्रशंसा दिखाई देती है, वह यज्ञाङ्ग और मोक्षाङ्ग दो तरहका है। यज्ञादिकालका आत्मज्ञान यज्ञफलका पोष करता है, फलका आधिक्य उत्पन्न करता है औपनिषदभौमिक आत्मज्ञान मोक्षफलके कारणभावको प्राप्तोता है।

कर्मका फल अदृष्ट है। अदृष्ट शुभाशुभ भेदसे दो तरहका है। विहित कर्मका फल शुदिष्ट, निषिद्ध कर्मका फल अशुभादिष्ट है। इसीको पुण्य और पाप कहा जाता है। शुभादृष्ट भी दो तरहका है—एक अुदयका हेतु और दूसरा निःश्रेयसका उपाय। सब कर्ममें अभ्युदय लाभ होता है और निष्काम कर्ममें श्रेयस अर्थात् मोक्षलाभ होता है। निष्काम कर्म जो अदृष्ट उत्पादन करता है कर्मी उसीकी सामार्थ्यसे निःस प्राप्त कर कृतार्थ होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Acc No - 218

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri